Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NAVNEET MAR NOV 1981 © K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

41289

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3548
२२।१।७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेमदीदी : प्रेम और निष्ठा की प्रतीक

आपका हृदय जीतने को प्रस्तुत है।

तनुजा–केसी मेहरा–धुमाल

साथ में

डेविड, जयन्त और

ललिता पवार

पटकथा–दिग्दर्शक :

हृषिकेश मुकर्जी

संगीत सलिल चौधरी

गीत : शैलेंद्र

छाया : जयवंत पाठारे

कथा : सुचिन भौमिक | संवाद :

कला : सुधेंदु राय – राजेंद्रसिंह बेदी

अजित बनर्जी

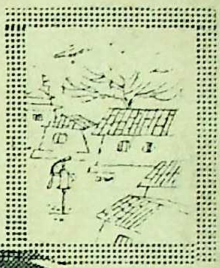

एल.बी.लछमन कृत

मेम दीदी

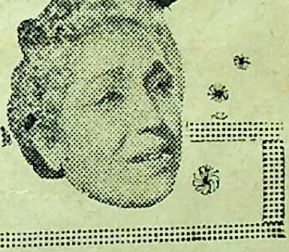

ध्वनि . जॉर्ज डिक्रूज –

संकलन : दास थईमडे

इरोज इम्पीरियल लोटस

बांद्रा टाकीज – उषा (अंधेरी) – अशोक (थाना) – उदय

(घाटकोपर) – विजय (चेम्बूर) – रीजेन्ट (क. कैम्प)

एम. बी. फिल्मस प्रेजेन्टेशन्स एण्ड मन प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद के दिन

स्कूल, कालेज के वर्ष अर्थात् निश्चिततापूर्वक आनंद के साथ बिताने के दिन...शरीर पर आकर्षक मोरारजी के कपड़े और पुष्प के समान कोमल जीवन—मोरारजी के कपड़े आपका सौंदर्य बढ़ाते हैं, क्योंकि उसकी खास आकर्षक डिजाइनें, उच्च श्रेणी की बनावट और विदेशी कपड़ों के समान मनोहर एवं चित्ताकर्षक रंग।

मोरारजी प्रिंटेड वायल्स्, लॉन्स और पॉपलीन ही हमें पसंद है।

यह विविध रंगों और डिजाइनों में मिलते हैं।

मोरारजी के कपड़े उपयोग कीजिये। ध्यान रहे, गत ८९ वर्षों का समृद्ध अनुभव इनके साथ है।

मोरारजी मिल्स्

बम्बई--१२

MORARJEE GOCULDAS & MFG. CO. LTD. BOMBAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
111289

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
★
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे
★
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता
वितरण-व्यवस्थापक
नारायण पुराणिक
★

स्वर-साधना
दीनानाथ दलाल की तूलिका से

विषय-सूची

संयम का भ्रम	'नवपुराण' से	१
मुक्तिदायिनी	कृष्ण शंकर व्यास	१
आनंद ही आनंद	गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी	२
आत्म-तिरस्कार: उत्कर्ष का शत्रु	डा० प्रभाकर कुलकर्णी	२
क्रांतिदूत डी वेलेरा	... ...	२
दो पाठ	आंद्रे जीद	२
अपने ही पैरों पर	राबर्ट मुलर	२
दो बहनें	हेलन केलर	३
रात की बात (कविता)	देवीप्रसाद 'राही'	३
मुझे याद नहीं आता	केशवचंद्र वर्मा	३
नादानी	चंद्रभूषण झा	३
बांडुंग की अबोध लड़की	बासिल लांग	३
कलंगा अजेय है	अनंत चौरसिया	४
कभी न भूलूं	... ...	४
महाकाल ने रक्षा की	श्रीनिधि सिद्धांतालंकार	४
जंतु-जगत् का नीतिशास्त्र	संतराम बी० ए०	५
फूल भी काँटे भी	स० का० वि०	५
मौत मामूली बात	श्याम व्यास	५
दीवानी अदालत	ज्ञानचंद्र	६
'मोठाजी'	रामनारायण उपाध्याय	६
अफ्रीकी शिलाचित्र	सर हर्बर्ट रीड	६
शिकारी उकाब	अनिल देसाई	७
सब सम्भव	... ...	७
लाओस: शीत-युद्ध का नया क्षेत्र	एस० जेड० हसन	७
स्वर्ण-नगरी के स्वर्णकोष	जीवन सिन्हा	८
गलती	मसऊद मुफ्ती	८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible]	... ...	८९
जवानी को जाने न दें	मोहनजीत सिंह	९१
विशिष्ट वाङ्मय	... ...	९४
साँझ के साये	विष्णु प्रभाकर	९७
अभिन्न (कविता)	प्यारासिंह सहराई	१०३
मणि-मुक्ता	महाभारत से	१०९
अड़तालीसवाँ साल (आयरिश कहानी)	जेम्स स्टीफन्स	११२
सधन्यवाद (बँगला कहानी)	आशादेवी	११७
वंचना	ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक'	१२५
पंक्ति-दान	ताहिर हाशमी	१२८
आत्मा की जीत (पुस्तक-संक्षेप)	जान स्टीनबेक	१२९
प्राण-पूजन (कविता)	पीताम्बरनाथ 'फानी'	१३३
कस्तूरी-मृग और शिकारी	प्रतिभा शर्मा	१५२

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—चित्रकार—

हेब्बार, हुसैन, कुर्ट लहमान, कुमारिल स्वामी, ओके, सोनवलकर, सुरेश बेदक

—अगले पृष्ठ पर—

ताड-पत्र पर अंकित एक प्राचीन चित्र की अनुकृति

आगामी अंक के आकर्षण

१. **ब्रह्मचारी नरहरजी**
—गुलाबदास ब्रोकर

२. **रासायनिक युद्ध**
—अवनींद्रकुमार विद्यालंकार

३. **शरीर के रसस्रोत**
—डा० बी० के० गुप्त

४. **हेब्बार की तूलिका**
—ए० एस० रामन्

५. **जीवन स्नेह के लिए**
—जाँ गियानो

६. **यदा-कदा रोइये**
—एनी डारविल

७. **साहित्यकार के दायित्व**
—ताराशंकर बंदोपाध्याय

८. **एफ्रोडाइट (उपन्यास)**
—प्येर लुई

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस**, ३६।४८ खेतवाडी, बेक रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष : १०
अंक : ३

नवनीत
[हिन्दी डाइजेस्ट]

मार्च
१९६१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

संयम का भ्रम

प्रातःकाल सम्राट् पुष्यमित्र के अश्वमेध की पूर्णाहुति हो चुकी थी। रात को अतिथियों के सत्कार में नृत्योत्सव था। जब यज्ञ के ब्रह्मा महर्षि पतंजलि उसमें उपस्थित हुए, उनके शिष्य चैत्र के मन में गुरु के व्यवहार के औचित्य के विषय में शंकाशूल चुभ गया। उस दिन से उसका मन महाभाष्य और योगसूत्रों के अध्ययन में नहीं रमा। अंत में एक दिन जब महर्षि चित्तवृत्ति-निरोध के साधनों पर प्रवचन कर रहे थे, चैत्र ने यह प्रासंगिक प्रश्न किया – "भगवन्, क्या नृत्य-गीत और रस-रंग भी चित्तवृत्ति-निरोध में सहायक हैं?" पारदर्शी पतंजलि साभिप्राय मुस्कराये और बोले –"वत्स, वास्तव में तुम्हारा प्रश्न तो यह है कि, क्या उस रात को मेरा सम्राट् के नृत्योत्सव में सम्मिलित होना संयम-व्रत के विरुद्ध नहीं था। संयम के सच्चे अर्थ को तुम नहीं समझे। सुनो सौम्य, आत्मा का स्वरूप है रस – रसो वै सः। उस रस को परिशुद्ध और अविकृत रखना ही संयम है। विकृति की आशंका से रस-विमुख होना ऐसा ही है, जैसे कोई गृहिणी भिखारियों के भय से घर में भोजन पकाना बंद कर दे, अथवा कोई कृषक भेड़-बकरियों के भय से खेती करना छोड़ दे। यह संयम नहीं, पलायन है–आत्मघात का दूसरा रूप है। आत्मा को रस-वर्जित बनाने का प्रयत्न ऐसा ही भ्रमपूर्ण है, जैसे जल को तरलता से अथवा अग्नि को ऊष्मा से वियुक्त करने का प्रयास। इस भ्रम में मत फँसो।"

– 'नवपुराण' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तिदायिनी

इस आख्यायिका में चित्रित मृत्यु का यह रूप केवल काल्पनिक नहीं है, विज्ञ चिकित्सकों की भी यही धारणा है कि; मृत्यु के क्षणों में भी मनुष्य को परम विश्रांति का आभास होता है; मृत्यु स्वयं कष्ट का हेतु नहीं बनती।

कृष्ण शंकर व्यास

ब्रह्मांड के सृजन का कार्य पूर्ण करने के बाद से ही लोकपिता ब्रह्मा देख रहे थे कि, यह सृष्टि निरंतर बढ़ती ही जा रही है, प्रतिदिन नये-नये लोक-लोकांतर, चेतन और जड़ पदार्थ निर्मित होते जाते हैं; परंतु विनाश किसी का नहीं होता। कालांतर में इसका क्या परिणाम होगा, इसकी कल्पना उनके मन को मथने लगी। सोच-सोचकर वे थक गये; पर कोई समाधान न मिला। इस खीज में उनका क्रोध भभक उठा और उसकी ज्वाला से लोकलो-कांतर दग्ध होने लगे, सर्वनाश की आशंका उपस्थित हो गयी।

ऐसी अवस्था में भगवान् विष्णु लोकपिता के निकट पहुँचे। समस्त सचराचर जगत् की ओर से करुणा-भिक्षा माँगते हुए उन्होंने कहा—"विभो, जिस प्रजा की सृष्टि आपने इतने यत्न से की, वही अब आपके क्रोधानल में भस्म होती जा रही है। कृपया इस क्रोध को वश में कीजिये।"

इस प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवान् ब्रह्मा ने क्रोध को अपने में लीन कर लिया और मुहूर्त-भर ध्यानयोग साधकर सृष्टि के लिए प्रवृत्ति-धर्म की तथा मोक्ष के लिए निवृत्ति-धर्म की कल्पना की।

इधर क्रोधाग्नि की ज्वालाएँ विलीन हुईं और उधर एक नारी का आविर्भाव हुआ। बड़ी रहस्यमय थी यह ललना। लालिमा-मिश्रित कृष्ण कांति से उसके अंग दमक रहे थे। मुख, जिह्वा और नेत्र अंगारे के समान लाल थे। स्वर्ण-कुंडलों और विविध रत्नाभूषणों से अलंकृत होने पर भी वह अत्यंत क्रूर दीखती थी।

उसके प्रकट होते ही ब्रह्मा ने उसे सम्बोधित करके आदेश दिया—"मेरी संहारबुद्धि से तुम्हारा जन्म हुआ है। मेरी आज्ञा से तुम जड़-चेतन सृष्टि का विनाश करो।"

ये शब्द सुनते ही ललना के नेत्रों से अश्रु की अविरल धारा प्रवाहित होने लगी। काँपते हुए स्वर से उसने निवेदन किया—"भगवन्, मुझ अभागिन की सृष्टि से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका यही प्रयोजन है ! जानते-समझते हुए मैं यह संहार-रूप क्रूर कर्म कैसे कर सकूँगी ? प्राण-मोह से विलाप करते हुए प्राणियों के प्राण मैं कैसे हर सकूँगी ? फिर जिनके प्रिय बंधु-मित्रों के प्राण मैं हरूँगी, उनके उष्ण निःश्वास, उनके दग्ध हृदय से निकले शाप क्या मुझे जीने देंगे ? कृपया इस महान् धर्म-संकट में मुझे न डालिये ।"

ब्रह्माजी बोले—"परंतु तुम्हारी उत्पत्ति तो इसी संहार-कार्य के लिए हुई है । जाओ, मेरे आदेश का पालन करो । इस सम्बंध में और तर्क-वितर्क की आवश्यकता नहीं । वैसे भी तुम निमित्त मात्र हो, प्राणियों का नाश तो होना ही है ।"

परंतु ये अंतिम शब्द मृत्यु को सांत्वना नहीं दे सके । संहार करना उसे स्वीकार्य नहीं था । ब्रह्मलोक से विदा लेकर उसने तपस्या करने के उद्देश्य से धेनुकाश्रम की ओर प्रस्थान किया ।

वर्षों तक मृत्यु ने धेनुकाश्रम में उग्र तप किया । वर्षों की उस एकाग्र साधना से प्रसन्न ब्रह्माजी प्रत्यक्ष हुए । उन्होंने पूछा—"बेटी, किस निमित्त तुम यह कठोर तपस्या कर रही हो ?"

"भगवन्, आपने भी देखा होगा कि, समस्त प्राणी अपने-अपने नियत कार्य में लगे हुए हैं । कोई किसी का वचन और विचार द्वारा भी अहित नहीं करता । ऐसी अवस्था में मैं उनका विनाश करके महान् अधर्म करूँगी । उसी अधर्म से डरकर मैं यह तप कर रही हूँ । कृपया मुझे आश्रय दीजिये, इस संकट से बचाइये ।" मृत्यु ने उनके चरण पकड़ लिये ।

त्रिकालज्ञ ब्रह्मा ने कहा—"पुत्री, प्रजा-संहार से तुम्हें अधर्म न लगेगा । मैं तुम्हें आश्वासन देता हूँ । मेरे आदेश का पालन करो । धर्म तुम्हें पवित्र रखेगा । लोकपाल, यमराज, रोग और देवगण सहित मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा । मेरा तुम्हें यह वर है कि, संहार-कार्य करते हुए भी तुम निष्पाप और रजोगुण-विमुक्त रहोगी ।"

"यह तो ठीक है; परंतु निष्पाप प्राणियों को पीड़ित करते हुए मेरी आत्मा क्या शांत रह सकेगी ?"

ब्रह्माजी ने क्षण-भर विचार किया और फिर ये शब्द कहे—"तुम्हारी बात ठीक है । लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या, द्रोह, निर्लज्जता, निर्दयता और कटुवाणी – ये रजोगुणी और तमोगुणी प्रवृत्तियाँ प्राणियों के शरीर को खोखला करती रहेंगी, उनके धर्म-संचय को खाली करती रहेंगी, जिससे अंत में वे स्वयं ही तुम्हारे ग्रास बन जायेंगे । अब जाओ, काम और क्रोध से विमुक्त रह-कर जीवों का संहार करो ।"

उसी दिन से मृत्यु लोकपिता की आज्ञा का पालन करती आ रही है । मद-मात्सर्य, द्वेष-असूया, काम और क्रूरता आदि मनो-विकार मनुष्य में दैहिक विकार को उत्पन्न करते हैं । और ये दोनों विकार मनुष्य के पुण्य और स्वास्थ्य को क्षय करते हैं । तब दयामयी मृत्यु आकर उन्हें खोखले जीवन से मुक्त कर देती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद ही आनंद

रसात्मकता सत्काव्य का लक्षण ही नहीं, जीवन का सच्चा स्वरूप भी है; क्योंकि रस से ही संसार निःसृत हुआ है। मनीषी लेखक ने इसी गूढ़ तत्व की सुबोध व्याख्या यहाँ प्रस्तुत की है।

★

म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी

सृष्टि का मूलतत्व एक ही है—यह वेदों का घंटाघोष है।

आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परं किञ्चनास। एकं वा इदं विबभूव सर्वम् (ऋग्वेद)॥

इत्यादि शतशः श्रुतियाँ बार-बार इसी सिद्धांत को घोषित कर रही हैं। यह मूलतत्व सब अवस्थाओं से परे है, उसमें कोई गुण व धर्म नहीं। इसीलिए वह न किसी इंद्रिय से जाना जा सकता है, न वाणी से कहा जा सकता है, न मन में ही आ सकता है — **न तत्र चक्षुर्गच्छति, न वाग्गच्छति, नो मनः।**

क्योंकि मूलतत्व सारी अवस्थाओं से रहित है, इसलिए न उसका कोई नामकरण हो सकता है, न कोई गुण-धर्म ही उसमें कहे जा सकते हैं। परंतु क्योंकि उसी को आधार बनाकर सारा विषय कहना है, इसलिए श्रुतियों ने उस तत्व के लिए काल्पनिक 'रस' शब्द का प्रयोग किया है—**रसो वै सः।**

यह विचार करना आवश्यक है कि, किस आधार पर उसके लिए 'रस' शब्द का प्रयोग हुआ। काल्पनिक शब्द की मूलभूत कल्पना का भी तो कोई आधार होना चाहिये। यहाँ 'रस' शब्द आनंद का वाचक है और मूलतत्व की आनंदरूपता अनेक युक्तियों से सिद्ध होती है।

शास्त्रों में आनंद के दो स्वरूप वर्णित हैं। एक शांत्यानंद, दूसरा समृद्ध्यानंद। चित्त में किसी प्रकार की चंचलता का न उठना शांत्यानंद कहा जाता है और नयी वस्तु की प्राप्ति पर चित्त का उल्लास समृद्ध्यानंद है।

इनमें शांत्यानंद को ही हमारे शास्त्र बड़ा मानते हैं। इसके पक्ष में प्रमाण यह है कि, विलासी मनुष्य भी आनंदप्रद आमोद-प्रमोद को छोड़कर शयन की इच्छा अवश्य करता है। शयन में कोई समृद्ध्यानंद नहीं; किंतु शांत्यानंद वहाँ अवश्य है। इससे शांत्यानंद की प्रधानता स्पष्ट होती है।

संसार में सर्वत्र शांत्यानंद का प्रसार देखा जाता है। परस्पर विरुद्ध रहनेवाले तत्व भी एक प्रकार के सहयोग का पालन करते हुए संसार में शांति की व्यवस्था करते हैं। उदाहरणार्थ, जल और अग्नि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों परस्पर विरुद्ध तत्व हैं। किंतु अग्नि का उत्ताप जब ग्रीष्म ऋतु में जगत् की शांति भंग करना चाहता है, तब जल वर्षा-रूप से गिरकर शांति की व्यवस्था कर देता है। इसी प्रकार जब जल अधिक मात्रा में बढ़कर अपने आप्लावन से शांति भंग करने को उद्यत होता है, तब अग्नि उसका शोषण कर जगत् में शांति ले आती है। इस प्रकार सारे तत्वों में शांतिरूप आनंद का अनुस्यूत होना प्रकट होता है। कारण से ही कार्यों में धर्मों का प्रादुर्भाव होता है; इसलिए कारण को भी आनंदरूप मानना उचित है।

समृद्ध्यानंद का स्वरूप क्या है, यह भी विचार्य विषय है। श्रुति ने कहा है—**"यो वै भूमा तत्सुखं, यदल्पं तद्दुःखम्"** अर्थात् महत्व में सुख और अल्पता में दुःख है। अनुभवसिद्ध भी यही बात है कि, जिस मनुष्य के पास जितनी सम्पत्ति—धन, पशु, भूमि—होती है, वह अपने को उतना सुखी मानता है और जिसके पास सम्पत्ति जितनी अल्प मात्रा में होती है, वह अपने को उतना ही दुःखी समझता है। जब किसी को कोई नयी वस्तु— गृह, भूमि, धन, सम्पत्ति आदि —मिलती है, तब वह अपने को आनंदमग्न पाता है। यही समृद्ध्यानंद है।

व्यावहारिक आत्मा की पाँच कलाएँ हैं। इनमें से पाँचवीं सम्पत्तिरूप कला अपनी सम्पत्ति में भी व्याप्त रहती है। जब कोई नयी वस्तु प्राप्त होती है, तब व्यावहारिक आत्मा की पाँचवीं कला उसे अपने स्वरूप में प्रविष्ट करने के लिए विस्तृत होती है। यही आनंद के अनुभव का हेतु है। और जब हमारी सम्पत्ति का कोई अंश निकल जाता है, तब उस कला के क्षीण होने के कारण हमें दुःख का अनुभव होता है।

पुस्तकालय
11287
गुरुकुल विश्वविद्यालय

लेखक

इससे सिद्ध हो गया कि, महत्व में आनंद है और अल्पता में दुःख है। सृष्टि का मूल-तत्व तो परम महान् है, विभु अर्थात् सर्वत्र व्यापक है, तब उसकी परमानंदरूपता में संशय नहीं हो सकता है।

उक्त प्रक्रिया को ही दूसरी रीति से भी देखा जा सकता है। जहाँ जितनी शक्ति है, वहाँ उतना ही आनंद है। पशु-पक्षी आदि तिर्यग्योनि की अपेक्षा मनुष्य में प्रकृति-दत्त शक्ति अधिक है। इसलिए मनुष्य उन पशु-पक्षी आदि को काम में लेता हुआ आनंद अनुभव करता है।

मनुष्यों में भी ज्ञान-शक्ति, बल-शक्ति, या प्रभुत्व-शक्ति, जिसमें जितनी अधिक हो, वह उतना ही अधिक आनंद अनुभव करता है। तैत्तिरीय उपनिषद् में यह विषय स्पष्ट किया गया है कि, जो मनुष्य बलवान्, धनवान् और युवा है, वह मनुष्य आनंद की एक सीमा पर पहुँचा हुआ है। उसे जितना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद है, उससे शतगुणित आनंद गंधर्वों को, उससे शतगुणित पितृ, देव आदि को—इस प्रकार का तारतम्य दिखाया गया है। इस प्रकार शक्ति के साथ आनंद की मात्रा बढ़ती जाती है। तब जो मूलतत्व सर्वशक्ति-सम्पन्न है, जिससे अधिक शक्ति कहीं सम्भव ही नहीं, उसके परमानंदरूप होने में विवाद का कहाँ स्थान रहा ?

प्रत्येक प्राणी सदा आनंद की इच्छा करता है और जहाँ आनंद का अनुभव करे, वहीं उसका प्रेम होता है। इसलिए आनंद का ही दूसरा रूप प्रेम है। संसार में दो ही तत्व अनुभव में आते हैं – सत्ता और ज्ञान। ये दोनों ही हमें सर्वदा प्रिय होते हैं। इनके संग्रह में हमारी सदा प्रवृत्ति रहती है। इस प्रियता के साथ ही इनकी आनंदरूपता भी सिद्ध है। जब इनमें आनंदरूपता है, तब इनके मूलतत्व में भी आनंदरूपता होगी।

वैदिक सिद्धांत है कि, जगत् का मूल-तत्व ही आत्मा रूप होकर हमारे भीतर बैठा हुआ है। और आत्मा के रूप पर जब हम विचार करते हैं, तब उसकी आनंद-रूपता स्पष्ट हो जाती है। जो चेतन या अचेतन आत्मा के अनुकूल होता है, उसी पर हमें प्रेम होता है और प्रतिकूल होने पर प्रेम का स्थान द्वेष ले लेता है। इस बात को श्रुतियों ने अनेक स्थानों पर स्पष्ट दिखाया है :

न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति;
आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति।
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवति;
आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति ॥

अर्थात् पत्नी का पति के प्रति प्रेम पति के लिए नहीं, अपनी इच्छारति के लिए होता है; इसी प्रकार पति का स्त्री के प्रति प्रम स्त्री के लिए नहीं, अपनी इच्छापूर्ति के लिए होता है—इत्यादि रूप से पुत्र, मित्र आदि सबका विस्तार दिखाकर अंत में श्रुति ने यह कहा है कि, अपनी ही कामना के लिए सबसे प्रेम होता है। इसलिए आत्मा ही प्रेम का मुख्य स्थान है और वही आनंद-मय है। यही अनुभवसिद्ध बात भी है। और परतत्व या मूलतत्व आत्मा से पृथक् नहीं; इसलिए उसकी भी आनंदरूपता स्पष्ट हो जाती है।

संसार में जितने दुःख हैं, मृत्यु का दुःख उन सबसे प्रबल है। मृत्यु अभावरूप है। वह जब दुःखरूप है, तो उसका विपरीत तत्व सत्ता अवश्य ही आनंदरूप सिद्ध हुई। ऐसी स्थिति में जो शुद्ध सत्तारूप है और अपने अनुप्रवेश से सबको सत्ता देता है, उस सद्रूप को अवश्य ही आनंद कहना पड़ेगा।

इस प्रकार अनेक युक्तियों से मूलतत्व की रसरूपता—आनंदरूपता—सिद्ध हो जाती है। और इसी आधार पर श्रुति ने मूलतत्व को रसरूप या आनंदरूप बताया है।

★

जीत वैर को पनपाती है; क्योंकि हार दुःख देती है। जो जीत-हार को छोड़कर उप-शांत है, वही सुखी है।

—धम्मपद से

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आत्म-तिरस्कार : उत्कर्ष का शत्रु

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत का सुभाषित है 'आत्मार्थे पृथिवीं त्यजेत्।' पाश्चात्य मनोविज्ञान के प्रसिद्ध मनीषी युंग ने भी जीवन में आत्मभाव को ही प्राथमिकता दी है। प्रस्तुत लेख में आत्मनिष्ठ बनने की क्रियात्मक योजना दी गयी है, जिसे प्रत्येक स्थिति का मनुष्य जीवन में चरितार्थ कर सकता है।

डा० प्रभाकर कुलकर्णी

मेरे एक मित्र हैं—बड़े अच्छे लेखक, वक्ता और सार्वजनिक कार्यकर्ता। स्वभाव से काफी भावुक, कल्पनाशील एवं स्नेही। मस्तिष्क भी उनका बड़ा उपजाऊ और सूझबूझवाला है। लेकिन जब कभी वे निराशा में डूब जाते या किसी विपत्ति में फँसकर बेदम हो जाते, तो उनका स्वर भीगा-भीगा हो जाता, वे बड़े दयनीय भाव से कहा करते—"क्या बताऊँ दोस्त, जिंदगी बड़ी दूभर हो गयी है। चौथी क्लास तक का भी मेरे पास सर्टिफिकेट नहीं। हाथ से घंटे-भर मेहनत नहीं कर सकता। व्यापार-व्यवसाय वैसे मेरे बूते की बात नहीं। ऐसी हालत में मैं करूँ भी तो क्या करूँ? मुझे तो कोई नौकरी देनेवाला भी नहीं?" और यह कहते-कहते उनकी सूरत रोनी हो जाती।

अपनी हीनता, विवशता और लाचारी पर वे स्वयं तो वेदना के आँसू बहाते ही, हमें भी उनकी इस दीन-हीन अवस्था पर तरस आन लगता। वास्तव में ऐसा आत्म-तिरस्कार बड़ा घातक सिद्ध होता है। जीवन में कठिनाइयों के बवंडर उठते हैं—सबके जीवन में उठते हैं; लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि, उनसे पस्त होकर हम अपने-आपको कोसने ही लगें। देखा जाये तो संकटों और बाधाओं का अपने आप में बहुत थोड़ा महत्व है। मुख्य बात तो यह है कि, हम उन परेशानियों और मुसीबतों को लेते किस रूप में हैं।

हमारे पड़ोसी पं० रामेश्वर प्रसाद का ही उदाहरण लीजिये। उनके एक के बाद एक लगातार तीन लड़कियाँ हैं। सबसे बड़ी लड़की की उम्र अभी ५-६ वर्ष की ही है; लेकिन समाज में तो एक लड़की का अर्थ समझा जाता है, जैसे एक 'डिक्री'। सो पंडितजी की अवस्था पर तरस खाकर जब कोई व्यक्ति उनका ध्यान इस समस्या पर ले जाता है, तो वे बड़े सहज भाव से कहा करते हैं—"देखो भाई, अभी तो इनकी ब्याह-शादी के १५-२० साल पड़े हैं। तब तक जमाना न जाने कहाँ से कहाँ पहुँचेगा—मैं अभी से उसकी चिंता में क्यों घुलूँ? फिर मेरा न बाल-विवाह में विश्वास है, न जात-पाँत में। लड़की पढ़-लिखकर स्वयं योग्य वर का चुनाव कर ले, तो उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी मुझे कोई अभाव नहीं रहा मेरी बात, सो मैं अपने सामर्थ्य के अनुसार इनके लालन-पालन की अच्छी-से-अच्छी व्यवस्था कर ही रहा हूँ, आगे भी करता रहूँगा।"

व्यावहारिक दृष्टि से पंडित रामेश्वर प्रसाद का यह दृष्टिकोण ठीक है या गलत—इस बारे में अलग-अलग मत हो सकते हैं; परंतु यह उनकी स्वस्थ-संतुलित मानसिक अवस्था का संकेत जरूर है। हमारी अधिकांश परेशानियों का रूप कुछ ऐसा ही होता है। चाहें तो बैठकर उन पर आँसू बहा लें—चाहें ठंडे दिमाग से उनका कोई सही समाधान खोज निकालें।

संसार में ऐसा कोई भी संकट नहीं, जिसका सही और सुनिश्चित ढंग से सामना न किया जा सके। हम बड़े-से-बड़े दुर्भाग्य को भी ललकार सकते हैं, उससे हिम्मत के साथ मुकाबला कर सकते हैं और जीवन की कठिनाइयों का मुँह मरोड़कर अपना मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। हमारे भीतर जो 'हम' (आत्म-विश्वास) बैठा हुआ है, उसमें यह सब कर गुजरने की ताकत है।

लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो संकट के समय निराशावादी और नकारात्मक दृष्टिकोण अपनाये रहते हैं। उनके सामने जहाँ कोई परेशानी या विपदा आयी, वे झट अपने दुर्भाग्य का रोना शुरू कर देते हैं या परिस्थितियों को कोसने लगते हैं। और कुछ नहीं, तो खुद अपनी दुर्बलताओं और कमियों को सोच-सोचकर ही आधे हो जाते हैं। इस तरह उनका जीवन जानते-बूझते और निरर्थक हो जाता है।

वे लोग यह विचार नहीं करते कि, कमियाँ तो हर आदमी में होती हैं। कोई व्यक्ति चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, उसे दूध का धोया नहीं कहा जा सकता। फिर दूसरों की तुलना में अपने आपको हीन समझने का प्रश्न ही क्या? पर इसका अभिप्राय यह भी नहीं कि, कोई व्यक्ति अपनी दुर्बलताओं की ओर से आँख मींचकर बिल्कुल निश्चिंत ही हो जाये। इसलिए जहाँ एक ओर आत्म-तिरस्कार की घातक मनोवृत्ति से बचने की आवश्यकता है, वहाँ अपनी कमजोरियों के प्रति सतत जागरूक बने रहकर उन्हें दूर करने की भी जरूरत है।

आप भी अपने चारित्रिक या व्यक्तित्व-सम्बंधी अभावों को दूर करने के लिए आज ही तैयार हो जाइये। इसके लिए सबसे पहली बात यह है कि, हम अपने को भला-बुरा कहना और अपनी कमजोरियों पर रोना-झींकना एकदम बंद कर दें। यह ठीक है कि, हर व्यक्ति के जीवन में अभिशाप भी होते हैं और वरदान भी; लेकिन जीवन के आँगन में एक-से-एक बढ़कर अमूल्य वरदान बिखरे पड़े हैं। बस, आप दिल खोलकर उन्हें स्वीकार कीजिये और बटोरिये।

महर्षि टाल्सटाय के जीवन का एक बड़ा प्रचलित एवं रोचक प्रसंग है। उनके पास एक नवयुवक आया और बोला—"मैं इस जीवन से ऊब चुका हूँ। मेरे पास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ भी तो नहीं बचा है ! ऐसी हालत में आत्महत्या के अतिरिक्त और कोई दूसरा उपाय सूझता नहीं।" महर्षि हँसे, फिर कहने लगे—"भाई, मेरी जान-पहचान का एक व्यापारी है। वह दो आँखें चाहता है, बदले में बीस हजार रुपये देगा। दो हाथ मिल जायें, तो चालीस हजार देने को तैयार है। इसी तरह वह दो पैरों के लिए भी चालीस हजार देता है। बोलो, तुम अपना कोई अंग देना चाहते हो ?" नवयुवक हक्का-बक्का रह गया, बोला—"यह कैसे हो सकता है ?" महर्षि के मुख पर एक बार फिर मुस्कान उभर आयी, बोले—"अरे, तब तुम यह कैसे कहते हो कि, तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है।"

सच में हम लोगों की हालत कुछ-कुछ उस नवयुवक-जैसी होती है। हमें बहुत कुछ मिला हुआ है, फिर भी हम अपने आपको दीन-दुर्बल ही समझे बैठे हैं।

अब तनिक दूसरे उपाय पर विचार करके देखें। जीवन में कड़ुवे-मीठे सब तरह के अनुभव मिलते हैं। दोनों के पीछे एक चेतावनी रहती है। सुख-समृद्धि के मीठे दिन कहते हैं—"भाई, खूब आनंद लूटो, खूब ! पर आनंद की खुमारी में कर्तव्य-च्युतन हो जाओ, अपने झूठे 'अहं' को मुँह न उठाने दो।" इसके विपरीत कटु अनुभवों से जहाँ जीवन की वास्तविकताओं का बोध होता है, वहाँ भविष्य में और भी ज्यादा सजग-सचेष्ट रहने का सबक मिलता है।

तीसरा उपाय यह है कि, आप किसी भी हालत में निठल्लेपन को बढ़ावा न दें। निष्क्रिय व्यक्ति प्रायः निराशावादी होता है और जब कुछ सोचने-विचारने की कोशिश भी करता है, तो अनाप-शनाप बातें ही सोचता है। जो व्यक्ति सतत कर्म-रत रहता है, उसमें सदैव उत्साह एवं स्फूर्ति रहती है।

चौथा और अंतिम उपाय है सेवा का। सेवा-कार्यों से व्यक्ति में सद्गुणों का विकास होता है; उसे विश्व के विराट् वैभव तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का बोध होता है। इसके अलावा सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि, सेवा से कई बार व्यक्ति अपने दैनंदिन जीवन की एकांगिता या नीरसता से भी बच जाता है। बहुत-से व्यक्तियों की रुचि कुछ और होती है; लेकिन परिस्थिति-वश उन्हें काम कुछ और करना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए सेवा-कार्य वरदान सिद्ध हो सकते हैं। मान लीजिये, कोई व्यक्ति शिक्षक बनना चाहता है और आ फँसा क्लर्की के काम में, तो वह अपने पास-पड़ोस के गरीब विद्यार्थियों को पढ़ाकर उस शौक को पूरा कर सकता है।

इसलिए अपने बारे में न निराश होइये, न आत्म-तिरस्कार कीजिये। बस, प्राप्त वरदानों का सदुपयोग करते हुए अपने चिर-अभिलषित स्वप्नों को साकार करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील बने रहिये। तब परिस्थितियाँ आपके अनुकूल होकर रहेंगी – भविष्य आपका अनुगामी होकर रहेगा !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वतंत्रता के एक अनन्य आराधक की व्यक्तित्व-महिमा का शब्द-दर्पण में प्रतिबिम्ब—पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके।

हजारों की भीड़ में भी अलग दीख जाने-वाला देवदार-सा सीधा-समुन्नत शरीर; प्रशस्त ललाट; प्रशांत नेत्र; जीवन में हजारों कष्ट व संकट प्रहार कर हारकर लौट गये हैं, इसका प्रमाण देनेवाली गहरी रेखाओं से मंडित मुख-मंडल—ईमोन डी वेलरा का यह रूप देखकर वीरगाथा-काल की याद आ जाती है।

उनका जन्म १४ अक्टूबर १८८२ को न्यूयार्क में हुआ। पिता स्पेन की संतान थे और माता आयरलैंड की पुत्री। पिता के स्वर्गवास के बाद दो वर्ष की अवस्था से आयरलैंड में अपनी नानी के यहाँ रहने लगे। वहीं शिक्षा-दीक्षा हुई और गणित के अध्यापक के रूप में जीवन आरम्भ किया।

आयरलैंड की मृतभाषा गेलिक के पुनरुद्धार-अभियान के द्वारा वे देश की स्वतंत्रता के आंदोलन में कूद पड़े। १९१६ में ईस्टर-सप्ताह की बगावत के नेता के रूप में उन्हें प्राणदंड दिया गया। परंतु जेल में वे गणित के सवाल हल करते रहे और फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के पूर्व जेलर से एक सिगरेट माँगकर पी। तभी आज्ञा आयी कि, सजा कारावास में बदल दी गयी है। जेलर ने बधाई देकर एक सिगरेट आगे बढ़ायी, तो बोले—"मैं अपनी आखिरी सिगरेट पी चुका हूँ।" साल-भर बाद आप आम रिहाई में छोड़ दिये गये। १९१७ में जब क्रांतिकारियों ने स्वतंत्र आयरलैंड की सरकार स्थापित की, उसके अध्यक्ष बनाये गये।

जब १९२१ में उन्हीं के प्रतिनिधियों ने आयरलैंड के विभाजन की शर्त स्वीकार कर आयरिश फ्री स्टेट की स्थापना की, उन्होंने पूर्ण स्वराज्य का नारा लगाया। इस बार स्वदेशी सरकार ने उन्हें विद्रोही के रूप में जेल भेज दिया। परंतु अंत में उन्हें देश का शासन-सूत्र अपने हाथ में लेना पड़ा। आर्थिक स्वालम्बन और तटस्थता उनकी शासन-नीति के मुख्य अंग रहे। १९३३ और १९३८-३९ में वे 'लीग आव नेशन्स' के अध्यक्ष रहे।

१९३२ से—बीच में थोड़े से समय को छोड़कर—वे अपने देश के कर्णधार रहे हैं। १९५९ में वे राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। परंतु राष्ट्रपतित्व डी वेलरा का गौण रूप है। दुनिया उन्हें आयरिश क्रांति के अग्रणी के रूप में जानती-पूजती है। गैरीबाल्डी, मैजिनी और कासुथ की भाँति वे स्वाधीनता के पुजारियों के प्रातःस्मरणीय हैं।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो पाठ

सरस्वती के आराधकों के नाम आस्कर वाइल्ड की वसीयत।

आंद्रे जीद

जनवरी, १८९५ में एक दिन बिल्डा (अलजीरिया) से रवाना होते हुए, अचानक होटल के बोर्ड पर नजर पड़ी, तो देखता क्या हूँ कि, अतिथियों की नामावली में मेरे नाम के पास ही लिखा हुआ है – आस्कर वाइल्ड। वाइल्ड तब तक अपमान और जेल-दंड भुगत चुके थे। उनका नाम पढ़ते ही मेरी वहाँ से भाग जाने की इच्छा हुई। पर ऐसा करना कायरता होगी, यह सोचकर यात्रा स्थगित कर दी और उनसे मिला। फिर तो कई दिन तक साहित्य-चर्चा होती रही। एक दिन न जाने किस प्रसंग में मैंने उनसे पूछा–"आपने 'हाउस आव द डेड' पढ़ी है?" पर वे मेरे प्रश्न का उत्तर न देकर कहने लगे–"रूसी लेखक गजब के होते हैं। उनकी रचनाएँ महान् हैं; उन्होंने उनमें करुणा जो उड़ेल दी है! तुम जानते हो आंद्रे, मुझे 'मदाम बोवारी' बहुत पसंद थी। परंतु फ्लोबा उसमें करुणा का कणमात्र भी नहीं लाना चाहता था। तभी वह पुस्तक क्षुद्र है, अपठनीय है। पुस्तक को पठनीय और शाश्वत बनानेवाली चीज है–करुणा। कमाल की चीज है करुणा! जेलवास में शुरू के छः महीने मैं बेहद दुःखी रहा–इतना दुःखी कि आत्महत्या कर लेना चाहता था। पर जब मैंने दूसरों पर दृष्टि डाली, तो देखा कि, वे भी मेरे जितने ही दुःखी हैं। उनके प्रति मेरी करुणा उमड़ पड़ी। उसी करुणा ने मुझे आत्मघात से बचाया।"

जब मेरे बिल्डा से चलने का दिन आया, वाइल्ड मुझे छोड़ने घोड़ा-गाड़ी में कुछ दूर तक आये। रास्ते में उन्होंने मेरी पुस्तक की चर्चा की और प्रशंसा भी; परंतु मैं जानता था कि, वे कुछ कहना चाहते हुए भी कह नहीं पा रहे हैं। अंत में गाड़ी रुकी। वे अलविदा कहकर उतरने लगे; पर बीच में ही रुक गये और बोले–"आंद्रे तुम्हें एक बात का वचन देना पड़ेगा। तुम्हारी 'फ्रूट्स आव द अर्थ' सुंदर है... बहुत सुंदर... लेकिन वचन दो कि, आगे कभी 'मैं' नहीं लिखोगे।" फिर यह देखकर कि, मैं उनका अभिप्राय समझ नहीं पा रहा हूँ, उन्होंने दोहराया–"देखो भैया, कला में 'मैं' के लिए–'अहं' के लिए–कोई स्थान नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपने ही पैरों पर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनवरत चलते रहनेवाले मनुष्य की जंघाएँ पुष्ट होती हैं और आत्मा फलवती—इस आर्ष-वचन का जीवित निदर्शन।

राबर्ट मुलर

लैम्बेथ के लार्ड मारिसन ने चुस्ती के साथ अपनी बैठक में प्रवेश किया। दीवारों पर लटके हुए फ्रेम-युक्त प्रमाण-पत्रों को अगर क्षण-भर के लिए भुला दें, तो बैठक बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी लंदन के किसी निम्न मध्यम-वर्गीय परिवार की होती है। हाँ तो लार्ड मारिसन ने आले पर रखे आईने पर उड़ती-सी नजर डाली, अपने हिम-धवल बालों को हाथ से सँवारा। फिर वे विचार-मग्न से होकर अपनी पाइप को अँगुलियों से सहलाने लगे, मानो पुराने दिनों को याद करने की कोशिश कर रहे हों।

लगभग ७३ वर्ष के हैं लार्ड मारिसन, जिनके पिता पुलिस के सिपाही थे और माँ महरी। ब्रिटिश समाजवाद की वे जीती-जागती प्रतिमा समझे जाते रहे हैं। अपने दीर्घ राजनीतिक जीवन में वे ब्रिटिश सरकार के सप्लाई, संचार, गृह और विदेश विभागों के मंत्री, कौंसिल के लार्ड प्रेसिडेंट और उप-प्रधान मंत्री रह चुके हैं। परंतु आज से ५९ साल पहले वे दक्षिण लंदन की एक किराने की दुकान में चपरासी थे। उन्होंने तो क्या, किसी ने भी तब यह नहीं सोचा था कि, उनके संघर्षमय जीवन की संध्या हाउस आव लार्ड्स के भव्य कक्ष में बीतेगी।

ब्रिटिश फिल्म सेन्सर बोर्ड के अध्यक्ष लार्ड मारिसन ने उन दिनों की चर्चा करते हुए कहा—"तब मुझे सदा चिंता रहती थी अपने पैरों की। पैरों की समस्या कभी न मिटती थी। बढ़ने की उम्र थी। पर हर चार-छः महीने में तंग हो जानेवाले जूतों का क्या इलाज हो? माता-पिता के हाथ तंग रहते थे।

"सो हरदम मेरा ध्यान पैरों पर रहता था—पैरों पर, आगे बढ़ने पर, अपना काम अच्छी तरह करने और ग्राहकों को प्रसन्न करने पर। यही जीवन में मेरी फिलासफी रही है। फिर मैं एक दुकान में सहायक का काम करने लगा। चीजों को आले में सजाना मेरा काम था। खूब मन लगाकर यह काम करता, खूब कलात्मक सजावट करता। दुकान जगमगाने लगी।

"पर जब मैं अभी चपरासी ही था, दो बातें हुईं। ब्रिक्स्टन की टेट गैलरी के पास एक आदमी बैठा करता था, जो किसी के भी सिर की बनावट देखकर उसका स्वभाव, व्यक्तित्व और बौद्धिक क्षमता आदि बता सकता था। मैंने पाँच शिलिंग की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमाई में से छः पेन्स उसके हवाले किये और अपने बारे में पूछा। उसने कहा—'बेटा, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ा करो—इतिहास, राजनीति और अर्थशास्त्र आदि की पुस्तकें।' इसके कुछ समय बाद मैंने एक मद्यनिषेध-प्रचारक का भाषण सुना। तभी से मैं समाजवाद की राह पर चल पड़ा।"

पुस्तकों का अध्ययन उन्होंने किस प्रकार किया होगा, उसकी कहानी भी उन्हीं के शब्दों में सुनिये—"मुझे दुकान में पूरे बारह घंटे काम करना पड़ता था। अब तो हम साढ़े छः घंटे के कार्य-दिवस की बात करते हैं।" वे रुके और पाइप सुलगा-कर फिर कहने लगे—"कुछ समय बाद मैं टेलीफोन-आपरेटर बन गया। काम आसान था और काम के घंटे भी कम थे। अधिक समय समाजवाद पर खर्च होने लगा। उन दिनों मैं काफी असामाजिक था। हरदम किताबों से चिपटा रहता था। फिर पिताजी से भी मेरा झगड़ा था—वे कट्टर टोरी थे।"

लार्ड मारिसन

बाद में यही दुकान का चपरासी जब बड़े ओहदों पर पहुँचा, तब भी उसे किसी काम में घबराहट महसूस नहीं हुई, कभी कोई काम आफत नहीं मालूम पड़ा।

दूसरे विश्व-युद्ध के समय हर्बर्ट मारिसन को सप्लाई-विभाग सौंपा गया। काम उनके लिए सर्वथा नया था। वहाँ कोई सामान, कोई व्यक्ति नाम से नहीं जाना जाता था—सबके नम्बर थे। उन सबको याद करना और याद रखना आसान काम नहीं था। शुरू में कुछ परेशानी हुई। परंतु मन ने कहा—"पिल पड़ो; देखते क्या हो!" और वे जुट गये। युद्ध-विभाग से उनकी जोरदार झड़प हुई। उस विभाग के लोग बहस कर रहे थे कि, किस किस्म के टैंक बनाये जायें। इस कारण टैंकों का निर्माण रुका पड़ा था, जबकि मोर्चे पर स टैंकों की माँग आ रही थी। जब मारिसन ने उनकी नाक में दम कर दिया, तब कहीं निर्णय हुआ।

वे बोले—"पर तभी विंस्टन (सर विंस्टन चर्चिल) ने मुझे इस पचड़े से उबारकर गृह-विभाग और आंतरिक सुरक्षा का मंत्री बना दिया। काम खतरे का था; परंतु था मेरी पसंद का।

"पर विदेश-विभाग तो मेरे लिए रहस्य ही बना रहा। शायद कुछ अधिक दिन वहाँ रहता, तो उसे भी समझ लेता।" युद्ध के बाद लेबर-पार्टी के मंत्रि-मंडल में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वे कुछ समय विदेश-मंत्री रहे थे।

फिर मारिसन दार्शनिक दृष्टि से बात करने लगे—"राजनीति एक जंगल है; जंगल का न्याय ही उसमें चलता है। हर कोई यही चाहता है कि, आपकी कुर्सी उसे मिले। कुर्सी जितनी ही ऊँची हो, उतनी ही मुश्किल। जब अपनी ही पार्टी के लोग और अखबार पीछे पड़ जायें, तब तो मुसीबत ही हो जाती है। यदि इन झगड़ों की जड़ में वैयक्तिक कारण भी हों, तब तो फिर पूछिये ही मत।"

और यह बात उन्होंने अपने अनुभव से ही कही थी। प्रधान मंत्री का पद आपके हाथ में आते-आते छिन गया। परंतु उसका उन्हें कोई अफसोस नहीं है। उन्होंने कहा—"हाँ, प्रधान-मंत्रित्व मेरे हाथ आ ही गया था। मैं वह काम करना चाहता था, कर सकता भी था। खैर जो हुआ, ठीक ही हुआ; मुझे कोई शिकायत नहीं है।"

मैंने पूछा, क्या लार्ड बनना उनके सारे राजनीतिक जीवन का बड़ा व्यंग्य नहीं है? वे बोले—"मैं लार्ड नहीं बनना चाहता था। मुझे कोई सैद्धांतिक आपत्ति रही हो, ऐसी बात नहीं। परंतु किराने की दुकान का चपरासी मारिसन 'लार्ड' कहलाये, यह मुझे कुछ अटपटा-सा लगा और सच कहूँ, तो आज भी लगता है। हो सकता है, यह वर्ग-भावना की निशानी हो। पर पार्टी-वालों का आग्रह था। मुझे भी लगा कि, मेरा हाउस आव लार्ड्स में होना सार्वजनिक दृष्टि से हितकर है। मैंने हार मान ली।"

यह बुद्धि की हार थी, आत्मा की नहीं। किराने की दुकान के चपरासी मारिसन और लार्ड मारिसन में कोई मौलिक अंतर है तो यही कि, एक युवक था, दूसरा बूढ़ा है; एक अनुभवहीन और उत्साही था, दूसरा अनुभवी और उदार है। उन्होंने कहा—"बेशक तब के मुकाबले आज मेरे रहन-सहन का दर्जा अधिक ऊँचा है। पर लार्डों की शान-शौकत मैं नहीं अपनाऊँगा। मुझ तो वही श्रमिक-वर्ग का जीवन-क्रम पसंद है।" जिन्होंने लार्ड मारिसन को उनके घर में देखा है, वे जानते हैं कि, ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं।

दो बहनें

प्लूटार्क ने लिखा है: "अपनी मृत्यु से कुछ समय पूर्व डायोजेनीस को झपकी-सी लग गयी। वैद्य ने जगाकर पूछा—'कौन-सी वेदना तुम्हें सता रही है?' उत्तर मिला—'कोई नहीं भाई! बस एक बहन के आगमन के पूर्व दूसरी बहन आ पहुँची है।' इस प्रकार मृत्यु को मित्र और सामान्य वस्तु के रूप में देखना कितना अच्छा है! रोज रात को हम बहन नींद का स्वागत करते हैं; उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं समझते। फिर हम दूसरी बहन—मृत्यु—से ही क्यों डरें? —हेलन केलर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात की बात

चाँद से रात की बात मैं पूछ लूँ
चाँद भी पास है, रात भी पास है।
जानता हूँ, सुबह की किरन देखकर
छोड़ देना पड़ेगा बसेरा मुझे,
मौत का भी यहाँ पर नगर एक है
बात करने न देगा सवेरा मुझे,
गीत सुन लो मिलन के, रुको रात-भर
अश्रु भी पास है, हास भी पास है॥
प्यार के सत्य को स्वप्न कैसे कहूँ ?
स्वप्न के हाथ अनुभूति बिकती नहीं,
कल्पना के परों पर सधी जिंदगी
छोड़ नभ को धरा पर उतरती नहीं।
स्वप्न औ' सत्य की आज कर लूँ परख
तृप्ति भी पास है, प्यास भी पास है॥
जो समय की लहर को बदलता चला
तैरकर यदि नहीं, डूबकर ही सही;
रोक पाये उसे कूल, मझधार कब ?
हारकर भी सदा जीत उसकी हुई।
लक्ष्य की पूर्ति जैसे बने, तुम करो;
मौत भी पास है, साँस भी पास है॥

—देवीप्रसाद 'राही'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद और भूल के विरोधाभास पर हिन्दी के एक प्रसिद्ध हास्य-लेखक का शब्द-चित्र।

केशवचंद्र वर्मा

मेरे मोहल्ले में एक हैं भाई कृष्ण नारायण पांडेय। उनसे यूँ ही अच्छी जान-पहचान हो गयी है। पहले तो उनसे बात करते हुए मुझे बड़ा अच्छा लगता था; पर अब डर लगता है। उनसे एकाध घंटे बात कीजिये, तो आप संत्रस्त हो जायेंगे। हर मिनिट पर वे जो बात कहेंगे, उसके प्रमाण में वे किसी-न-किसी किताब से प्रसंगों का जबानी उल्लेख करते रहेंगे। हर क्षण वे तारीखें और दिन इस तरह गिनाते रहते हैं, जैसे यह अभी बिल्कुल कल की ही बात हो। अगर बात जरा बड़ी हुई या बड़े आदमियों के बारे में हुई, तो वे अखबार में छपी खबरों का उल्लेख भी करेंगे, हर अखबार में उस घटना पर निकले हुए अग्रलेखों के टुकड़े जबानी सुनाने लगेंगे और आपको जब वे छोड़ेंगे, तो आप अपनी निगाह में ही एकदम घोर मूर्ख सिद्ध होते दिखाई देंगे। इसीलिए मैंने कहा कि, पहले उनकी मुलाकात में मैं रुचि लेता था; लेकिन अब उनसे डर लगने लगा है। थोड़ी देर बाद लगने लगता है कि, ये कोई आदमी नहीं हैं सिर्फ पुराने कलैंडर और रद्दी अखबारों की जीती-जागती फ़ाइल हैं।

एक और सज्जन हैं – इनका नाम ही सुधींद्रजी है। उनकी 'सुधियों' की फौज से तो मैं एकदम त्रस्त हो जाता हूँ। जब देखिये, तब उनको किसी-न-किसी की 'सुधि' ही आ रही होती है। कभी-किसी भूली-बिसरी गाँव की अल्हड़ नायिका की, कभी गाँव के खेत की, कभी सड़क के किनारे-किनारे चलनेवाली एक छायामूर्ति की – पता नहीं मुझे तो यह भी याद नहीं है कि, उन्हें किन-किन चीजों की सुधि आती है। अच्छा हुआ सुधींद्रजी कवि न हुए, नहीं तो पता नहीं कितने 'सुधि के सावन' आते और उन पर लहराते हुए चले जाते और फिर अभी जो केवल बातचीत में सुन-सुना-कर फुरसत मिल जाती है, वही गानों के माध्यम से सुनना पड़ता। मैं कान लगा कर बैठता और वे तानपूरे पर सुर भरते–
"याद पिया की आय ऽऽऽऽऽऽऽ।"

मुझे बिल्कुल याद नहीं रहता। बहुत-सी बातें, जिन्हें मैं अगर याद करने की कोशिश करता, तो अनेकानेक लाभ आस-मान से उतरते चले आते, याद न रहने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मुझे बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। बहुत-से लोग, जो ऐसे व्यंग्य-वचन बोलकर यह आशा रखते हैं कि, मैंने उसे याद कर लिया होगा, वह मुझे एकदम साफ भूल जाता है। कई बार याद न रहने के कारण मैं जिन-जिन लोगों से बदला लेना चाहता था, वह एकदम भूलकर उन्हीं से दोस्ती का प्रस्ताव कर बैठा। न जाने कितने पत्रों ने मुझसे अपने संस्मरण लिख-लिखकर भेजने का अनुरोध किया होगा; लेकिन कुछ भी याद न रख सकने के कारण न तो मैं अपने जन्म-स्थान की प्राकृतिक शोभा का वर्णन कर सका, और न अपने बालसखाओं और गुरुओं की यशोगाथा गा सका और न यही बता सका कि, किन घटनाओं और परिस्थितियों ने मुझे इस हालत तक पहुँचाया है। मुझे यह भी याद नहीं कि, मैं गांधीजी से कब मिला था और उन्होंने मुझसे क्या-क्या कहा था। इस युग में जिसे यह सब भी याद न हो, उससे संस्मरण क्या लिखा जायेगा? हमेशा सादी और साफ स्लेट पर लिखना ही बहुत लाभदायक नहीं होता। अगर पहले से कुछ लिखा हो, तो उसकी सहायता से आगे की इबारत पूरी की जा सकती है। इसे 'पूर्वाग्रह' नहीं कहते पर यह 'पूर्वाग्रह' भी तो याद रखने पर ही बन सकता है।

लेकिन मुझे कुछ भी याद नहीं रह पाता।

अपनी कमजोरी को शक्ति में परिवर्तित करना आज के युग की सबसे बड़ी कला है और उसकी माँग है। मैं कला की इस माँग की पूर्ति करना चाहता हूँ। इसीलिए अपने भुलक्कड़पन को अपनी शक्ति समझने और समझाने की चेष्टा करता रहा हूँ। भूलना अपने आप में बड़ी अच्छी वस्तु है। अगर हम भूलते न होते तो – आपने कभी ऐसे घर देखे हैं, चीजें आती जाती हैं, टूटती जाती हैं, घर के हर कोने में जमा होती रहती हैं, मगर कभी कबाड़ी का मुँह नहीं देखतीं– ठीक वही हालत हमारे दिमाग की भी होती। हर कोने में काठ-कम्बर-लोहा, लक्कड़, जरूरत-बेजरूरत की चीजें होती और काम की या मतलब की चीजें छाँटना 'पंडोरा के बक्स' को उलटना होता। इतने किस्म के 'दर्द' हमने पाल लिये होते कि, अब तक 'दर्द' शब्द के अर्थ ही कोश-वालों ने बदल दिये होते।

भूलना बड़प्पन की निशानी है। आप भूलकर देखिये लोग आपको फिलासफर, कवि या प्रोफेसर कह देंगे। आपका किसी से परिचय हो गया हो और आप उसे हर बार नये सिलसिले से पहचानने की चेष्टा करके देखिये। आपका एक अजीब-सा रोब पड़ेगा (यद्यपि वे महानुभाव आपसे कुछ-कुछ खीझते हुए दीखेंगे)। इससे यह साफ पता चलेगा कि, आपके पास फिजूल कामों, फिजूल बातों और फिजूल आदमियों को याद रखने की फुरसत नहीं है। इसका लोग बुरा नहीं मानेंगे। सिर्फ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरबार अपने प्रयत्नों से इस बात की भरसक चेष्टा करेंगे कि, आप उनको याद रख सकें; क्योंकि तब वे अपने आप ही इस 'फिजूल' की संज्ञा से मुक्ति पा जायेंगे।

भूलने की 'स्नाबरी' बड़ा पैना अस्त्र है, इसलिए इसका प्रयोग करते समय, उतना ही ध्यान रखना चाहिये, जितना महाभारत युग में ब्रह्मास्त्र को चलानेवालों ने रखा था। सही मौके पर निशाना चूकने पर अक्सर इसमें बड़े खतरे निहित होते हैं। इसका सिर्फ मनोवैज्ञानिक असर ही हो, ऐसा नहीं है।

जिन्होंने भी इस महान् कला को धीरे-धीरे माँजना प्रारम्भ किया है, उन्हें इसके भौतिक लाभ भी प्राप्त हुए हैं। यदि आप अपना काम-काज उधार लेकर चलाने में विश्वास करते हैं, तो आपको सहज अनुभव होगा कि, यह कला कितनी सुफला होती है। दिया हुआ पैसा माँगनेवाला जब तक अपनी लाज ताक पर ही न रखकर आया हो, तब तक आप निश्चित रह सकते हैं। जब आपके सामने सरीहन दूसरा आदमी गाली-गलौज करने के लिए उतरा हो, जब वह आपसे डंके की चोट पर लड़ाई लड़ने आया हो, जब वह आपसे बीस पड़ता हो, तो जाहिर है कि, आपको भूलने की कला न केवल उस विपत्ति से उबारेगी, वरन् वह आपके गँदले चित्र को क्रमशः निर्मल करेगी और शांति भी प्रदान करेगी। जब आप किसी से नहीं मिलना चाहते और किसी दबसट में पड़कर हुँकारी भर देते हैं, फिर बाद में मिलने पर और उनके याद दिलाने पर भूल जाने का बहाना बनाते हैं, तो आप ही जानते होंगे कि, किस सरलता से आप उस 'बोरडम' को फतह किये जा रहे हैं।

इसीलिए जो लोग मेरे भूलने की निंदा करते हैं, उनकी बातों पर हँसता रहता हूँ; क्योंकि मैं जानता हूँ कि, उन्हें मेरा भूलना याद है। पर मैं उनका यह याद रखना सब भूल जाता हूँ। वे अपने याद रखने की ताकत पर गुमान करते हैं और मैं अपनी भूलने की शक्ति पर। मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि, जब कभी पूरा लेखा जोखा लिया जायेगा, तो मेरा हिसाब उनसे हमेशा भारी निकलेगा।

★

नादानी

वायु प्रबल वेग से बहती है। पीपल के पत्ते हड़हड़ा उठते हैं। दो-चार सूखे पत्ते पेड़ की डाल से बलखाते-लहराते जमीन पर आ रहते हैं। उनका पतन देखकर वृक्ष के अन्य हरे पत्ते इतनी जोरदार हँसी हँसते हैं कि, सम्पूर्ण वृक्ष सिहर उठता है। पर उनसे कहीं जोर की हँसी जमीन पर पड़े वे सूखे पत्ते हँसते हैं—उनकी इस नादानी पर!

—चंद्रभूषण झा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बांडुंग की अबोध लड़की

युद्ध की नृशंस परिस्थिति में भी मानव-हृदय अपनी सहज कोमलता से रिक्त नहीं होता—अमेरिका के एक योद्धा की यह सत्यकथा इसका जीवित प्रमाण है।

बासिल लांग

मेरे स्मृति-पटों पर पिछले पंद्रह वर्षों से एक अमिट छबि अंकित है, जो आज तक धुँधली नहीं हो पायी है। जब भी मैं भोजन करने बैठता हूँ अथवा किसी होटल में जाता हूँ, तो एक ग्यारह-वर्षीय बाला का मुस्कराता हुआ चेहरा उभर आता है और मेरी आँखों में बूँदें तैरने लगती हैं। हम लोग भीषण मारकाट और ऐसे भयानक समय में मिले थे, जबकि मनुष्य का मूल्य एक रायफल की गोली और जवान लड़की के दाम चंद चाँदी के सिक्के थे।

हम मुश्किल से दो बार मिले होंगे। उसके बाद मैं अब तक उससे नहीं मिल पाया। फिर भी मेरे मन में इतना विश्वास अवश्य है कि, वक्त की इस लम्बी दौड़ में वह चाहे कितनी भी क्यों न बदल गयी हो, मैं उसे पहचान अवश्य लूँगा। अगर मेरी आँखें धोखा भी खा जायें, तो वह मुझे देखते ही पुकार उठेगी। मैंने उसका पता लगाने के लिए अथक प्रयत्न किये; परंतु वह नहीं मिली। और आज जब मैं निराश होकर वापस स्वदेश लौट रहा हूँ, तो मेरी यह तीव्र इच्छा है कि, मैं इस सत्य घटना को आपके सामने रखकर अपना जी हल्का कर लूँ।

उन दिनों हमारी टुकड़ी सिंगापुर में थी। मैं ब्रिटिश सैन्य चिकित्सा-दल में था। सिंगापुर पर जापानी सेना के अधिकार कर लेने पर हमें पीछे हटना पड़ा। शाही वायुसेना के घायलों की देखरेख के लिए हमें बांडुंग भेजा गया, जहाँ हमने एक चिकित्सा-शिबिर स्थापित कर रखा था। मेरे टखने में मामूली-सी चोट लग जाने के कारण, मैं अच्छी तरह सम्भलकर नहीं चल पाता था। इसलिए मुझे या तो किसी के सहारे चलना पड़ता या फिर मैं लंगड़ा कर ही खुद इधर-उधर आ-जा पाता। पैर में चोट के कारण मैं अवकाश पर था।

ऐसी ही एक रात की बात है। बांडुंग के एक चीनी होटल से निकलकर मैं गाड़ी के इंतजार में खड़ा था। मैंने देखा कि, एक लड़की सीढ़ियों पर खड़ी-खड़ी सुबक रही है। अपनी उत्सुकता न रोक पाने के कारण या सौजन्यवश मैंने टूटी-फूटी मलय भाषा में उससे इस तरह सिसकने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का कारण पूछा। यह सुनकर वह और भी सिसक उठी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार-बार दिलासा देने पर उसने जो कुछ कहा, उससे मैं बड़ी मुश्किल से कुछ अंदाज लगा सका। फिर भी मैं इतना अवश्य समझ गया कि, वह दस गुलडेन (सोने का एक सिक्का) के लिए कह रही है। मैंने अनुमान लगाया कि, शायद वह इस होटल के मालिक से दस गुलडेन उधार लेने आयी थी और उसने मना कर दिया होगा।

लड़की की यह दयनीय मुद्रा देखकर मैं अपना हाथ न रोक सका और बटुए में से दस गुलडेन का सिक्का निकालकर उसे देने लगा। एक बार उसने सिक्का लेने को हाथ बढ़ाया; लेकिन फिर न जाने क्यों मेरी ओर देखकर सहम गयी।

मैंने कहा—"रो मत, ये ले दस गुलडेन!"

तभी मन के एक कोने में हल्की-सी आशंका उठी कि, मैं यह क्या कर रहा हूँ। इस अजाने देश में एक अपरिचिता से यह कैसा मूर्खतापूर्ण सौदा कर रहा हूँ।

लड़की ने सिर हिलाकर उसे लेने से मना कर दिया।

मैंने उसकी मुट्ठी में वह सिक्का थमा दिया। वह सहमी-सी वहीं खड़ी रही और पैर के अँगूठे से जमीन कुरेदने लगी। फिर उसने आँखें ऊपर उठाये बिना ही कहा—"परंतु इन रुपयों के बदले मैं तुम्हारे साथ सो नहीं सकूँगी।"

पलक मारते ही मेरे चेहरे का रंग उड़ गया। एक अबोध बालिका ने मेरी सहानुभूति को किस अर्थ में लिया है। मेरा मस्तिष्क भन्ना उठा। मैं शर्म से पानी-पानी होने लगा। पर इसमें उस बेचारी का भी कोई दोष नहीं था। उन भुखमरी और तबाही के दिनों में कुछ सैनिक रोटी, कपड़ा और सामान देकर एवज में औरतों से खूब मनबहलाव किया करते थे।

मैंने उसकी पीठ थपथपाकर कहा—"पगली, यह बात नहीं है। मुझे तुझसे बदले में कुछ नहीं चाहिये।" यह सुनते ही लड़की की मुखमुद्रा स्वाभाविक प्रसन्नता से खिल उठी। वह मुझे टुकुर-टुकुर देखने लगी। मैंने कहा—"अब जाती क्यों नहीं तू?"

वह उसी तरह खड़ी रही और बोली—"मुझे एक चीज और चाहिये।"

"और क्या चाहिये, बोल?"

टोपी पर लगे गिलट के सैनिक तमगे की ओर संकेत करते हुए उसने कहा—"मुझे यह चाहिये।"

मैंने हँसते हुए

जावा की दो तरुणियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमगा भी उतार दिया। वह अपनी मुट्ठी में तमगे को निहारती हुई सीढ़ियाँ उतर गयी और नीचे जाकर उसने हार्दिक धन्यवाद प्रकट करते हुए अपना हाथ हिलाया। इसके बाद वह दौड़कर सामने की झोपड़ियों की ओट में गायब हो गयी।

मैं इस घटना को लगभग भूल ही चुका था। याद भी कैसे रहती ? वहाँ तो प्राण बचाने के भी लाले पड़ रहे थे। रात-दिन केवल एक ही चीज आँखों के सामने रहने लगी। हाय कहीं से रोटी मिले। भूख और बेबसी—बस ये ही दो चीजें जीवन में शेष रह गयी थीं। जापानी सैनिक बांडुंग में उतर आये थे और उन लोगों ने हमें युद्धबंदी बना डाला था। रायफलों के कुंदों की मार के नीचे हमें अधभूखा रहकर जानवरों की तरह काम करना पड़ता था। रोज एक-न-एक सैनिक भूख या घाव से छटपटाकर मरने लगा।

इस तरह की यंत्रणा भोगते हुए दो वर्ष बीत गये। शरीर कंकाल मात्र रह गया। उस पर भी काम करना पड़ता था। पेट में चौबीस घंटे भूख की भट्टी सुलगती रहती। बस, प्राण ही नहीं निकल रहे थे, अन्यथा सब कुछ शेष हो चला था।

बरसात के कारण हमारे शिबिर के पासवाली सड़क के किनारे घास उग आयी थी। सड़क के दोनों ओर कँटीले तार लगे थे और शहर के लोगों को इन तारों के पास फटकने की सख्त मनाही थी। तार तक पहुँचने का अर्थ था—अपनी जान से हाथ धो बैठना।

एक संतरी की देखरेख में हम लोगों की टुकड़ी घास काटने पर तैनात थी। मैं तारों के पास ही कंधों तक उगी हुई घास को हँसिये से काट रहा था। मेरे से कुछ दूर दूसरे युद्धबंदी काम कर रहे थे। दो दिनों से मैं घास के गट्ठर लगा रहा था। रह-रहकर हाथ काँपने लगता, शक्ति जवाब दे देती और ज्यों ही दम लेने के लिए सुस्ताता कि, पहरेदार डाँटकर फिर खड़ा कर देता। घास काटते-काटते मैं सामने के तारों तक पहुँच गया था कि, अचानक ही घास में से 'सी-सी' की हल्की-सी आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा, मानो मुझे कोई इशारे से बुला रहा है। मैंने पीछे मुड़कर देखा। संतरी दूर था, साथी काम में लगे थे और मैं नजरें बचाता हुआ उस ओर बढ़ चला, जिधर से वह आवाज आयी थी। इसी बीच एक हाथ उठता नजर आया, फिर एक लड़की का चेहरा उभरा। वह सतर्कता से मेरी ओर देख रही थी और अपने होठों पर अँगुली रखे मुझे चुप रहने का संकेत कर रही थी।

उसने एक पोटली मेरी ओर बढ़ा दी और धीरे-से बोली—"इसमें कुछ खाना है, जल्दी से खा लो...म पिछले दो दिन से तुम्हें देख रही हूँ। लेकिन इन कँटीले तारों के कारण नजदीक नहीं आ सकती थी।" और वह रेंगकर मेरे पास चली आयी। पोटली में भुना हुआ मांस, मछली और डबल रोटी के टुकड़े थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने अपने हाथों से मेरा कंधा थपथपाया—"मुझे पहचानते हो ?"

मैंने जिज्ञासावश सिर हिला दिया—"नहीं तो।"

वास्तव में पिछले दो वर्षों में मैं सब कुछ--यहाँ तक कि, स्वयं अपने बारे में भी--भूल गया था। बस, यही याद था कि, मैं किसी तरह सिर्फ जिंदा हूँ।

"तुमने मुझे दस गुलडेन दिये थे न ?" तभी आस-पास कुछ आवाज होने लगी। मैं मोटे-मोटे ग्रास मुँह में भर रहा था। वह रेंगकर तारों से दूर खिसक गयी।

एक मिनिट भी नहीं हुआ होगा कि, संतरी की निगाह लड़की पर पड़ी, उसने अपनी रायफल तान ली और कड़े स्वर में उसे रुक जाने की आज्ञा दी। डर के मारे लड़की वहीं सड़क के बीच खड़ी हो गयी।

संतरी को इस बात का पता नहीं चला था कि, वह मुझे खाना पहुँचाने आयी थी। वरना उस दिन हम दोनों को ही गोली से उड़ा दिया जाता। संतरी लड़की को बुरी तरह से गालियाँ देने लगा और फिर उसने उसके मुँह पर दनादन तमाचे जड़ने शुरू कर दिये। मैं और दूसरे युद्ध-बंदी निरुपाय-से खड़े यह सब देख रहे थे। लड़की भय से काँप रही थी। मार से बचने के लिए जब उसने हाथों से अपना मुँह ढंकना चाहा, तो निर्दयी संतरी ने उसके जबड़े पर रायफल का कुंदा दे मारा और बाँह मरोड़कर उसे सड़क के किनारे धकेल दिया। लड़की का सारा चेहरा खून से लथपथ हो गया। उसने लड़खड़ाते हुए उठने का प्रयत्न भी किया; परंतु वह सम्भल नहीं सकी और धम्म-से नीचे गिर गयी।

बाली की नर्त्तकी

[चित्रकार : के० के० हेब्बार]

मैं यह दृश्य नहीं देख सका और मुड़कर कँटीले तारों की ओर बढ़ चला। मेरा रोम-रोम रो रहा था। अचानक संतरी ने मुझे आवाज दी। उसने मुझे और मेरे एक दूसरे साथी को आदेश दिया कि, हम उस लड़की को उठाकर सड़क के पास ही किसी घर में रख आयें।

संतरी ने यह कार्रवाई किसी तरह के पश्चात्ताप या दया के भाव से नहीं की थी। दरअसल वह उस लड़की को वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हटवाना चाहता था।

मैं लपककर उस लड़की के पास पहुँच गया। धीरे-से उसे उठाया। वह बेहोश पड़ी थी। हमने उसे सड़क के पार पड़ोस के एक मकान में ले जाकर लिटा दिया। वह धीरे-धीरे होश में आ रही थी। उसने आँखें खोलीं और मुझे देखते ही उसके रक्त-स्नात मुख पर मुस्कराहट नाच उठी। उसकी बाँह उखड़ गयी थी। पीड़ा से कराहते हुए उसने अपना हाथ गले में डाला और पीतल की एक पतली जंजीर को टटोलने लगी। उस लटकती हुई जंजीर में मेरा दिया हुआ तमगा जड़ा हुआ था। फिर भी वह मुस्करा रही थी। उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर पूछा—"क्यों, खाना अच्छा था न?"

मैं क्या उत्तर देता। आँसुओं से मेरी दृष्टि धुँधली हो गयी और रुलाई रोके नहीं रुक पा रही थी। वह फिर बेहोश हो चली।

× × ×

कुछ दिनों बाद, हमारे दुर्दिनों का अंत आया। मित्र-राष्ट्रों की सेना ने हमें मुक्त किया। हम लोगों को स्वास्थ्य-लाभ के लिए बटाविया पहुँचाया गया; और एक दिन हमें स्वदेश ले जाने के लिए जहाज आ पहुँचे।

जहाज पर चढ़ने के पहले मैंने अपने अफसर से यह इच्छा व्यक्त की कि, मैं एक बार बांडुंग जाना चाहता हूँ।

उसने परेशानी के भाव से मुझे घूरते हुए कहा—"क्यों क्या बात है? घर जाने के बजाय बांडुंग क्यों जाना चाहते हो? क्या अभी मन नहीं भरा, कुछ और भी भुगतना बाकी रह गया है क्या?"

मैंने धीरे से कहा—"मुझे एक लड़की से मिलना है?"

बात पूरी भी न हो पायी थी कि, चारों ओर से एक कहकहा लग गया और मेरी बात हँसी में डूब गयी। उनमें से एक ने मेरे कंधे को थपथपाते हुए कहा—"सार्जेंट, घर जाओ, तुम्हारी पत्नी बाट देख रही होगी। वहाँ पहुँचते ही वह तुम्हें अपने भुजपाश में बाँध लेगी। यहाँ की लड़कियों में कुछ नहीं रखा है।" और फिर मुझे लेकर जोरों से एक कहकहा लग गया।

जहाज चल पड़ा। भला मैं उन्हें कैसे समझाता कि, मैं उस लड़की से क्यों मिलना चाहता था। काश, वे मेरा दर्द समझ पाते।

★

जब बर्नर्ड शा एक अखबार के संगीत-समालोचक थे, एक दिन सड़क पर एक भिखारी को मधुर कंठ से गाना गाते देखकर, सुनने के लिए खड़े हो गये। गाना खत्म होने पर भिखारी ने शा से भीख माँगी और जब कुछ नहीं मिला, तो ताना दिया— "वाह साहब, संगीत-सम्मेलन म तो आ गये, पर टिकट के पैसे देना नहीं चाहते।"

शा मस्कराये—"अरे भाई, मैं तो पत्रकार हूँ, प्रेस-पास से आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलंगा अजेय है

युद्धभूमि में मृत्युंजयी बनने का जो उपाय कलंगा दुर्ग के अधिपति ने अपनाया, वह सम्पूर्ण विश्व-इतिहास की दृष्टि से भी अनुपम था।

अनंत चौरसिया

उस समय अंग्रेज भारतवर्ष में राज्य-विस्तार की योजना में लगे हुए थे और साम, दान, दंड, भेद का आश्रय लेकर बढ़ते ही चले जा रहे थे। चारों तरफ लूट-खसोट का बोलबाला था। प्लासी की लड़ाई के बाद से इस काल (१८१४) तक पंद्रह अरब रुपया इंग्लैंड पहुँच चुका था।

राज्य-विस्तार की लालसा में कम्पनी सरकार की गिद्ध-दृष्टि नेपाल पर भी पड़ी। आबोहवा के लिए वह उसे अत्यधिक मुफीद लगा, और अंग्रेजों को ऐसी जगह की जरूरत भी थी। यों नैतिकता के दिखावे के लिए शोषक और अत्याचारियों को कोई-न-कोई बहाना तो चाहिये ही। इत्तिफाकन वह भी मिल गया। सारन और गोरखपुर के जिलों में नेपाली सरहदें मिलती थीं। पर कुछ भूमि कम्पनी और नेपाल सरकार के बीच विवादग्रस्त थी। बस, तिल को ताड़ बना दिया गया।

दोनों राज्यों के बीच पंजाब में सतलज से लेकर बिहार की कोसी तक ६०० मील लम्बी सीमा थी। इसी सरहद पर अँग्रेजों ने पाँच मोर्चे बाँधे और पाँचों जगहों से नेपाल पर आक्रमण करने का प्रबंध किया। तीस हजार अंग्रेजी सेना के मुकाबले नेपाल मुश्किल से बारह हजार सेना जुटा सका। फिर उसके पास न उत्तम हथियार थे, न धूर्तता और न ही दूसरी कोई विशेषता।

मेजर जनरल जिलप्सी ने जब नेपाल-सीमा पार करके देहरादून में प्रवेश किया, तो सीमांत प्रदेश में कलंगा नाम का एक पुराना खंडहर किला था, जिसमें बलभद्र-सिंह थापा की अधीनता में तीन सौ गोरखा सैनिकों का एक दल रहता था। इन लोगों के पास कुछ धनुष-बाण, खुखरियाँ तथा पुरानी बंदूकें थीं। युद्ध की कोई आशंका भी नहीं; इसलिए ये सैनिक निश्चितता से अपने बाल-बच्चों सहित किले में रहते थे। जब युद्ध का समाचार मिला, तो बल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्रसिंह ने दुर्ग की मरम्मत करानी शुरू कर दी । स्त्री-बच्चों की बड़ी चिंता थी । उन्हें सुरक्षित रूप से नेपाल भी नहीं भेजा जा सकता था; क्योंकि अँग्रेज कप्तान माओब्री ने पैंतीस सौ सैनिकों और तोपों के साथ २५ अक्टूबर को चारों ओर से नाकेबंदी कर ली थी । साथ ही थापा के पास संदेश भेज दिया था – " अपने से ज्यादा ताकतवर दुश्मन के सामने हार मान लेना कोई शर्म या ग्लानि की बात नहीं है । अच्छा है, गोरखा सरकार बिना लड़े ही किले से अपना कब्जा उठा ले । इसी में उसकी भलाई है । "

किंतु बलभद्रसिंह इससे तनिक भी नहीं घबराया । उसने दूत से कह दिया – "जाओ अपने सेनापति से कह दो कि, इसका जवाब उन्हें कल लड़ाई के मैदान में ही मिलेगा । उनके स्वागत के लिए नेपालियों की खुखरियाँ तैयार हैं । "

दूसरे दिन युद्ध का डंका बज गया । माओब्री ने कलंगा पर तोप का गोला फेंककर युद्ध का श्रीगणेश किया और तुरंत सारी सेना लेकर किले पर आक्रमण कर दिया । जवाब में किले से भी गोलियों की बौछार होने लगी । तोपों के गोलों के जवाब में गोलियाँ देखकर माओब्री अट्टहास करने लगा । पर उसकी यह हँसी थोड़ी देर में ही धूल में मिल गयी, जब कई कोशिशों और हमलों के बावजूद, किले का कोई भी भाग नहीं टूट सका । असफलता ही उसके हाथ लगी । अतः माओब्री निराश होकर पीछे लौट आया ।

जनरल जिलप्सी को जब सहारनपुर में इस पराजय का समाचार मिला, तो वह क्रोध से लाल हो उठा और भारी भरकम सेना लेकर नालापानी जा धमका । फिर उसने सेना के चार भाग करके, कलंगा पर चारों ओर से धावा बोल दिया । किले पर धड़ाधड़ गोले बरसने लगे और उन तोपों के जवाब में अंदर से बंदूकें चल रही थीं । अँग्रेजी सेना का जो भी सिपाही दीवार के नजदीक जाने की कोशिश करता, वहीं ढेर हो जाता । कई कोशिशों के बाद भी, उन्हें सफलता नहीं मिली ।

इन बार-बार की असफलताओं ने जनरल जिलप्सी को बुरी तरह उत्तेजित कर दिया । वह तीन कम्पनियों के गोरे सिपाहियों को लेकर दुर्ग के दरवाजे की ओर बढ़ा । इस भयानक आक्रमण को कलंगा दुर्ग सम्भाल न सका । उसकी दीवारों के पत्थर तहस-नहस होकर गिरने लगे । मुट्ठी-भर गोरखा बहादुरों के मुखों पर क्षण-भर के लिए उदासी छा गयी । परंतु उस समय लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब सारी नेपाली औरतों ने उस टूटी हुई दीवार की जगह अपने जिंदा शरीरों की दीवार खड़ी कर दी और अँग्रेज सैनिकों पर गोलियों तथा पत्थरों की भयानक बौछार शुरू कर दी । इस मार से गोरी पलटन के पैर फिर उखड़ गये । गुस्से और खीझ के मारे जिलप्सी पागल हो उठा और नंगी तलवार चमकाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हुआ फाटक की तरफ बढ़ा; मगर किसी गोरखे की गोली ने उसे ढेर कर दिया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद में २४ नवम्बर को दिल्ली सेंटर की मदद लेकर माओब्री ने फिर तोपखाने के साथ कलंगा पर जोरदार आक्रमण किया। चारों ओर विकराल मृत्यु तांडव करने लगी।

धीरे-धीरे किले के आदमी कम होने लगे। गोली-बारूद भी निबटने लगा। फिर भी आक्रमण के प्रत्युत्तर में वही जोश-खरोश और सावधानी बनी रही। गोली-बारूद कम पड़ी, तो बाणों की बौछार तेज हो गयी और बाण कम पड़ने पर पत्थरों की बौछार गजब ढाती रही। और इस बार भी एक माह की भयानक लड़ाई में गोरखों ने मैदान मार लिया।

अंत में विवश होकर अँग्रेज सेना फिर देहरादून लौट जाने की तैयारी करने लगी; पर तभी एक गुप्तचर ने माओब्री को सूचना दी कि, किले के भीतर बिलकुल पानी नहीं है और गोरखा सैनिक बाहर के एक सोते से पानी ले जाते हैं। माओब्री ने तत्काल उस सोते पर अधिकार करके पानी बंद करा दिया।

अब किले में बड़ी नाजुक हालत हो गयी। घायल जवान, अर्धमृत महिलाएँ तथा बच्चे पानी के लिए चीत्कार करने लगे और तड़प-तड़पकर मरने लगे। इधर दुर्ग के चारों ओर अँग्रेज सेना घेरा डाले खड़ी थी।

बलभद्रसिंह ने अपने शेष सत्तर साथियों के साथ जैसे-तैसे चार दिन काटे और पाँचवें दिन फैसला किया कि, किले का दरवाजा खोल दिया जाये। जब मरना ही है, तो क्यों न लड़कर बहादुरों की तरह मरा जाये। और फिर किले पर से चलनेवाले तीर बंद हो गये, गोलियों की बौछार भी रुक गयी। माओब्री ने सोचा शायद बलभद्रसिंह अब आत्म-समर्पण करना चाहता है; इसीलिए उसने अपने सैनिकों को युद्ध बंद करने का आदेश दिया है।

इसी बीच सभी लोगों ने स्तब्धतापूर्वक देखा कि, जो द्वार तोप-संगीनों की मार के आगे न खुला, वह अपने-आप खुल गया और सबसे पहले बलभद्रसिंह निकला। उसके कंधे पर बंदूक, हाथ में नंगी तलवार, कमर में खुखरी, सिर पर फौलादी चक्र और गले में लाल गुलूबंद पड़ा था। उसके पीछे-पीछे कुछ घायल-बेघायल जवान थे और सभी के चेहरे प्यास से कुम्हलाये हुए थे।

बलभद्रसिंह अपने दल के साथ, सैनिक चाल से बढ़ता ही चला गया, अँग्रेज सेना के बीच अपना रास्ता बनाता हुआ। किसी को उसे टोकने की हिम्मत न हुई।

उन सब लोगों ने पहले नालापानी के झरने से जी-भरकर पानी पिया। फिर बलभद्रसिंह ने माओब्री की ओर देखा और तलवार उठाकर गरजकर कहा—"कर्नल, कलंगा अजेय है! हम सब लोग तो अब बाहर आ चुके हैं। तुम चाहो तो उस पर कब्जा कर सकते हो।" और वह अपने साथियों के साथ घने जंगल में अदृश्य हो गया।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

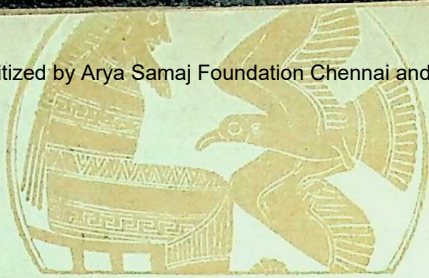

कभी न भूलूँ

हमारी पारिवारिक दशा बड़ी खराब थी। फिर भी मैंने जबरदस्ती कालेज 'ज्वाइन' कर लिया। वैसे मेरा ज्यादा ध्यान खेल-कूद में ही रहता था। पिताजी खून-पसीना एक करके पैसा कमा-कमाकर खर्च के लिए मेरे पास भेजते रहे; और मैं उनका 'सपूत' जैसे-तैसे पढ़ता रहा—गुलछर्रे भी उड़ाता रहा।

उस साल मैं बी० ए० प्रथम वर्ष में था। अचानक एक दिन 'मूड' खराब हुआ और मैंने घर जाने का निश्चय किया। सौभाग्य से उसी दिन पिताजी का दस रुपये का मनी-आर्डर भी मिल गया। बस, मैं पाँच घंटे में ट्रेन द्वारा अपने यहाँ के स्टेशन पर पहुँच गया। रात के दस बजे का समय, बिजली न होने से चारों तरफ अँधेरा छाया हुआ था। सिर्फ पासवाले होटल में एक लालटेन जल रही थी। मैं कुली की इंतजार में वहाँ जा बैठा और सिगरेट के कश-पर-कश खींचने लगा। तभी एक बूढ़े ने आकर पूछा—"कुली चाहिये बाबूजी?" मैंने कहा—"हाँ, जल्दी उठा बे! सूरत क्या देखता है? बैठे-बैठे दिमाग खराब हो गया। पता नहीं इन साले कुलियों को क्या हो गया—कहीं दिखाई ही नहीं पड़ते!" और मैंने उसे अपने घर का पता बता दिया।

कुछ देर बाद मैं घर पहुँच गया। उस बूढ़े ने दरवाजा खोलकर सामान नीचे रखा, फिर भरे हुए गले से कहा—"आओ बेटा, कैसे हो?" और उसके नेत्र सजल हो गये। पिताजी को इस रूप में अपने सामने देख, मेरे पैरों तले से जमीन खिसक गयी। आज भी उस हृदय-विदारक दृश्य को याद करता हूँ, तो बरबस आँखों में आँसुओं की झड़ी लग जाती है।

— सी० एम० श्रीवास्तव, राजनंदगाँव

०००

यह भारत-विभाजन के समय की घटना है। हम पाँच मित्र लाहौर से भारत आ रहे थे। हमें लखनऊ जाना था। छोटी लाइन से जाने के कारण हमें मर्थना स्टेशन पर रुकना पड़ा। कई दिन के सफर में हमारी दाढ़ी-मूँछ बढ़ गयी थी। साथ ही चार-पाँच साल पाकिस्तान में रहने के कारण बोली में भी मुसलमानी लहजा आ गया था। इसलिए जब कोई पास से गुजरता, हमें बड़े आश्चर्य से देखता। हम चार दिन के भूखे थे; मगर रास्ते में हमने इस डर से कुछ न खाया कि, कहीं कोई जहर न खिला दे। परंतु मर्थना पर हमारे एक मित्र ने एक खानेवाले को आवाज दे ही दी। मित्र की आवाज सुनते ही दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठेलेवाले आ गये—एक हिन्दू था, दूसरा मुसलमान। हमने हिन्दू ठेलेवाले से कुछ खाना खरीद लिया। खाने में वे चीजें बड़ी स्वादिष्ट थीं। अतः मित्र ने चार-पाँच दिन की भूख में खूब ढेर-सा खा लिया। ५-६ मिनिट बाद ही उसे उल्टी और दस्त आन लगे। हम सब घबरा गये। फौरन ध्यान आया कि, जरूर उस ठेलेवाले की ही कोई बदमाशी होगी। बस फिर क्या था? हम सब उस पर पिल पड़े। उसके ठेले का सामान भी फैल गया। फिर हमने उसे पुलिस में दे दिया। डाक्टर ने मित्र की जाँच करके बतलाया—"चार-पाँच दिन की भूख के बाद, तुरंत इतना खा लेने से ऐसा हुआ है, भोजन में कोई जहरीली चीज नहीं थी।" हमें बड़ी आत्म-ग्लानि हुई—देखो, बेकार एक गरीब को मार-मारकर उसकी दुर्दशा कर दी।

— अतुलकुमार मिश्र, अजमेर

०००

सन् १९४८ की बात है। मैं उच्च शिक्षा-प्राप्ति के लिए अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी था। छात्रावास में रहता था। मैं नियमित रूप से हर सोमवार को एक पत्र अपने घर लिखा करता था। एक दिन मैं अपने कमरे में बैठा पिताजी को अँग्रेजी में पत्र लिख रहा था कि, एक अमेरिकन विद्यार्थी मेरे कमरे में आया। उसने पूछा—"आप किसको पत्र लिख रहे हैं?" मैंने कहा—"अपने पिताजी को?" वह कुछ आश्चर्य से बोला—"पर आप तो अँग्रेजी में लिख रहे हैं! क्या आपकी अपनी कोई भाषा नहीं है?"

उसके इस वाक्य ने मुझे हिला दिया। मैंने उसी समय वह पत्र फाड़ डाला और उसके बाद कभी भी अपने घर अँग्रेजी में पत्र नहीं लिखा।

— आनंदसिंह विशनोई, गढ़मुक्तेश्वर

०००

मेरे गाँव में एक वैद्य थे। हम सब उन्हें 'वैद बाबा' कहते थे। एक दिन वे बड़े सवेरे अपनी घोड़ी पर सवार होकर निकले। मैंने पूछा—"आज कहाँ गये थे वैद बाबा?" उन्होंने रुककर जवाब दिया "अरे बच्चा, पासवाले गाँव तक गया-था, एक मरीज देखने।"

"क्या हो गया था उसको?"

"कुछ नहीं। मामूली-सा बुखार था। बीस दिन से उपवास कर रहा था। मैं गया, तो मैंने दही, चावल, रोटी और आम, निब्बू, आँवले का अचार खिलाया।" फिर वे हाथ में रुपये की थैली खनकाते हुए बोले—"और ये रुपये ले आया।"

वे खुश होते हुए आगे बढ़ गये। पर अभी दस कदम भी न गये थे कि, लौट आये और कहने लगे—"लेकिन बच्चा, एक बात हो गयी। वह मर गया।"

— हरिकृष्ण देवसरे, भोपाल

०००

एक दिन मैं राजा महेंद्रप्रताप के निवास-स्थान पर बैठा था। वे कुछ अस्वस्थ-से थे। लेकिन 'संसार संघ' और 'विश्व सर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार ' की योजनाओं पर बातें हुईं। वे अपूर्व उत्साह से भर उठे। उन्होंने वचन दिया।

सहसा जग-से गये। इसी बीच वहाँ एक ' अपटूडेट ' नवयुवक पधारे। पूछने पर पता चला कि, वे जींद रियासत से आ रहे हैं। (जींद का राज-परिवार राजा साहब की ससुराल के रिश्ते से सम्बंधित था। शायद इसीलिए वे कुछ ज्यादा अपेक्षा रखते थे।) पर राजा साहब उसी आत्मीयता से बातें करते रहे। अंत में ज्ञात हुआ कि, वे यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन के किसी कम्पिटीशन के सिलसिले में दिल्ली आये हैं। कल इंटरव्यू है।

राजा साहब ने उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी हिम्मत बढ़ायी। लेकिन वे सज्जन संतुष्ट न दीखे। कुछ क्षणों का सन्नाटा भंग करते हुए वे बोले—"मैं आसानी से इंटरव्यू में आ सकता हूँ यदि ....." राजा साहब उनकी मुखाकृति देखते रहे। "...यदि आप कमीशन के मेम्बरों में से किसी एक को भी फोन कर दें।" अपना

इतना सुनना था कि, राजा साहब सोफे पर ही एकाएक उछल पड़े, जैसे बिजली छू गयी हो। गरजकर बोले—"क्या ऐसा कहते आपको शरम मालूम नहीं होती। यही तो आज की सरकार से मेरी लड़ाई है। भाई, यह भाई-भतीजावाद बंद करो। सबको उठने का समान अवसर दो। किसी का हक यों न छीनो।"

आगंतुक का मुँह सूख गया। काटो तो खून नहीं। वे गरदन झुकाये देर तक बैठे रहे। राजा साहब ने बाद में शांत होकर उसी आत्मीयता से उनसे फिर बातें कीं—"देखिये, आपको यहाँ रहने की, खाने की या ऐसी ही कोई और असुविधा हो तो मुझसे निःसंकोच कहिये। मैं आपकी हर खिदमत के लिए तैयार हूँ। लेकिन ऐसी गलत चीज न कीजिये, न कहिये। आप नवयुवक हैं। देश के होनहार नागरिक हैं।"

— हिमांशु जोशी, दिल्ली

★

न्यायाधीश : तुम यह स्वीकार करते हो कि, तुमने इन सज्जन का कोट चुराया और फिर भी तुम्हारी प्रार्थना है कि, जुर्माने की रकम में तीन रुपये कम किये जायें। ऐसा क्यों ?

अपराधी : जज साहब, तीन रुपये इसलिए कम किये जाने चाहिये कि, उस कोट को छोटा करने के लिए मुझे तीन रुपये खर्च करने पड़े।

★

गर्म-मिजाज अफसर के चार हफ्ते की छुट्टी से लौटते ही, क्लर्क ने छुट्टी की अर्जी पेश कर दी। "साहब, अब तो मुझे एक महीने की छुट्टी मिल जाये।"

"चार हफ्ते मैं दफ्तर नहीं आया," अफसर गुर्राया—"क्या तुम्हारे लिए उतनी छुट्टी काफी नहीं है ?"

—'रंग-तरंग' से

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाकाल ने रक्षा की

यह रोमांचकारी सच्ची घटना है मालिनी नदी-तट के उन वनों की, जहाँ एक तपोवन में आखेट-प्रिय राजा दुष्यंत का शकुंतला से प्रथम मिलन हुआ।

श्रीनिधि सिद्धांतालंकार

दिन के साढ़े तीन बज रहे थे। नवम्बर का दिन कुछ फीका हो उठा था। मालिनी नदी के तटों पर दूर तक बिछी हुई शुभ्र रेत देर से निमंत्रण दे रही है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। उपेक्षा करता भी कैसे ? मेरी खूब परिचिता जो है वह। आज से नहीं, छात्र-जीवन से। इसलिए आज इतने वर्षों के बाद भी उसे देखकर अतीत की कितनी ही स्मृतियाँ एक साथ जागृत हो उठी हैं। यद्यपि उसमें काफी परिवर्तन हो गया है, तथापि उसकी बहुत-सी बातें आज भी वैसी ही बनी हैं।

मगर आँखें जिसे खोज रही हैं, वह नहीं दिखाई पड़ रहा। मेरा मतलब पापड़ी के उस वृक्ष से है, जो उस एक ही रात में मेरे लिए अभिशाप और वरदान बन उठा था। उसी को तो खोज रहा हूँ। इन बत्तीस वर्षों में कभी एक दिन के लिए भी मैं उसे नहीं भूल सका हूँ। भूलता भी कैसे ? उस दिन उसी पर तो मुझे पुनर्जीवन मिला था।

उन दिनों यद्यपि हम उन खंडहरों में ही ठहरे हुए थे ; मगर रातें इस रेत में ही आकर बिताते थे। खंडहरों में एक तो साँप-बिच्छुओं का डर था, दूसरे आषाढ़ के महीने में ठंडी रेत में सोना लगता भी बहुत अच्छा था। सो उस दिन भी शाम के भोजन से निबट हम इस रेत में ही आ पहुँचे थे। सामान कुछ विशेष था नहीं। बस, दो-दो ठंडी चादरें—एक बिछाने की, दूसरी ओढ़ने की। सो उन्हें ही बिछाकर लेट गये।

आकाश बादलों से घिरा था और समय से पहले ही नाले में अँधेरा घिर आया था। नदी के ऊँचे किनारों पर खड़े हुए वनों में से कभी-कभी किसी वन्य-पशु का शब्द कानों में आ लगता था। घंटे-दो घंटे तो कुशल से बीते; मगर उसके बाद बादल ऐसे गरजने लगे कि, आज शायद वे किसी भी तरह हमें इस नाले में न सोने देंगे—बरस कर ही रहेंगे। मगर रात बिताने के लिए दूसरी कोई जगह भी तो नहीं थी। इसलिए यही सोचा कि, चाहे जो हो यहाँ से हटेंगे नहीं और चादरें तान वहीं पड़ गये। 'पड़ गये' से मेरा मतलब पड़ जाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है, सो जाने से नहीं। वेग को ऐसा ही सम्भव ही नहीं था। कभी मेघ गरज उठते, कभी बिजली कौंध जाती, और जब यह सब न होता तो पास के वन में से किसी वन्यपशु की आवाज ही सुन जाती।

तभी हठात् दूर से आते हुए किसी विचित्र शब्द ने स्तम्भित कर दिया। लगा जैसे पीछे की किन्हीं शून्य पर्वतघाटियों में से कोई प्रबल आँधी तीव्र वेग से हमारी ही तरफ भागी चली आ रही है। सुन रखा था कि, इस देश में या तो आँधी आती नहीं; और जब आती है, बहुत ही भयंकर होती है—विशेषकर इन सूखे नालों में। जब वह इन नालों की सैकड़ों मन रेत को इधर-से-उधर पटकने लगती है, तब यदि कोई अभागा उसकी चपेट में आ जाये, तो उसकी जीवित समाधि बने बिना नहीं रह पाती।

पहले तो हमने सोचा, चलो भागकर खंडहरों में ही चले जायें। मगर आँधी की गति को देखते हुए अब उधर जाना व्यर्थ प्रतीत हुआ। हाँ, हमारे पास ही रेत के पुलिनों पर कुछ वृक्ष इधर-उधर अवश्य खड़े थे। हम लोगों ने न जाने कैसे यह मान लिया कि, इन पर चढ़ जाने से हम शायद आँधी की रेत में दबने से बच जायेंगे। अतः भागकर जिसे जिस वृक्ष पर स्थान मिला, जा बैठा और आँधी की प्रतीक्षा करने लगा।

शब्द जितना ही निकट आने लगा, अँधेरा उतना ही प्रगाढ़ होने लगा। मानों दोनों में होड़ लगी हो कौन नाले को अधिक भयंकर बना सकता है? . . . . धीरे-धीरे शब्द सिर पर आ पहुँचा। वाह! उसके घर-घर, हर-हर, शब्दों से तो कुछ दूसरी ही बात जान पड़ रही है। इस अँधेरे में भी समझा जा सकता है कि, जिसे अब तक आँधी समझ रहे थे, वह इस नदी का जल-प्लावन है, जो इसके लिए कोई नयी बात नहीं है। वर्षा के दिनों में यहाँ एक-दो बार ऐसा हो ही जाता है। देखते-देखते समूची घाटी उसके शब्द से गूँज उठी। समूचा नाला, जो अभी दो ही मिनिट पूर्व प्रायः सूखा पड़ा था, छः-छः फुट गहरे जल से भर उठा। लहरें उठने लगीं और मेरे वृक्ष के तने से टकराकर मुझे भी भिगोने लगीं।

यह वृक्ष बेचारा छोटा-सा ही था—बहुत ही निर्बल। उससे इतनी प्रबल बाढ़ का मुकाबला कर सकने की आशा करना एक प्रकार से व्यर्थ ही था। अतएव बाढ़ के तरंगाघातों से जब वह रह-रहकर काँपने लगा, तो मुझे यह समझने में कोई कठिनाई न रही कि, अब पर्यटक बनने का सारा मजा शायद मुझे एक ही साथ मिल जायेगा। दुनिया करती है जान बचाने के ढंग, तुम करते हो उसे गँवाने के, सो लो उसका मजा! और हुआ भी वही। न जाने किधर से आकर कोई अभागा शहतीर उसके तने से टकराया और देखते ही-देखते वृक्ष एक तरफ झुककर लहरों में बह उठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका गिरना था कि, साथी आनंद की पुकार सुनायी पड़ी—"कौन गिरा ?" मगर मुश्किल यह थी कि, जो गिरा था उस बेचारे को बाढ़ बहाये लिये जा रही थी, आँख-मुख में पानी भरा जा रहा था, चेतना लुप्त हो रही थी, वह भला क्या उत्तर देता ? तो भी, जान पड़ता है जीवन अभी शेष था : नहीं तो उन भयंकर लहरों में डूबते-उतराते हुए भी मेरे हाथ क्यों अचानक ही किसी चीज से जा टकराये और क्यों उन्होंने अचानक ही उसे कसकर पकड़ लिया, इसका उत्तर आज भी मुझे ढूँढ़े से भी नहीं मिल रहा। जो भी हो; मगर हाथों के छूते ही यह अच्छी तरह समझ में आ गया कि, जिसे दोनों हाथों से पकड़ रहा हूँ, वह किसी वृक्ष का तना है, जो अंगद के पैर की तरह अब तक भी इस निष्ठुर बाढ़ को चुनौती देता हुआ अटल खड़ा है। लेकिन बहाव इतना तेज कि, तने को पकड़कर भी हाथ उस पर जम नहीं पा रहे थे। लहरें बार-बार उन्हें छुड़ा देती थीं। फिर भी मैं अपनी पूरी कोशिश कर ही रहा था।

तभी किसी के हाथ मेरे पैरों से टकराये और मैं चौंक उठा—जलदस्यु! "नहीं, मैं हूँ श्याम। चिंता न करो। मेरे कंधे पर पैर रखकर जल्दी चढ़ जाओ। अरे, सोच क्या रहे हो जी। मेरी तुम कतई चिंता न करो। मैंने खूब मजबूती से

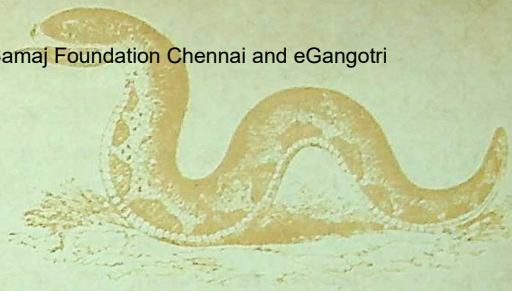

क्रुद्ध अजगर

पेड़ के तने को पकड़ा हुआ है।"

"अरे, तू यहाँ श्याम ? तो तेरा वृक्ष भी उखड़ गया क्या ? आ, जल्दी आ। मैं तो ऊपर पहुँच गया हूँ। मगर जरा सम्भलकर आना। तना बहुत ही फिसलना हो रहा है।" कहते हुए मैं जैसे ही वृक्ष की डाल पर पहुँचा, वह भी पीछे-पीछे ऊपर आ पहुँचा। मगर इस थोड़े से ही परिश्रम ने हमें इतना बेहाल कर दिया था कि, कुछ देर तक हाँफने के सिवाय कोई किसी से बातचीत न कर सका। लेकिन थकावट मिट जाने के बाद श्याम ने जब यह बताया कि, यथार्थ में उसका वृक्ष उखड़ा नहीं था, केवल तैरने का आनंद लेने के लिए ही वह पानी में उतरा था, तब मुझे यह समझने में जरा भी देर न लगी कि, वह केवल मुझे बचाने के लिए ही उस भयंकर प्रवाह में कूद पड़ा था। मेरी आँखें कृतज्ञता से गीली हो आयीं।

दो ही घंटे में पता चल गया कि, बाढ़ चिरस्थायी नहीं है। क्रमशः मंद पड़ते हुए उसके शब्दों ने उस अँधेरे में भी बता दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि, दूध के उफान-सा उसका यौवन शायद दो घंटे से अधिक न टिक सकेगा। . . . सो कुछ आश्वस्त हुआ। मगर कपड़े सब भीग गये थे। कैन्वस के दोनों शू पैरों में कसकर जकड़ गये थे। गले में लिपटी हुई रेशमी चादर भीगकर रस्सा बन गयी थी। गीली कमीज और नेकर के कारण देह में ठिठुरन चढ़ी जा रही थी। सोचा, क्यों न सबको उतारकर, निचोड़कर पास की डालियों पर फैला दूँ। रात तो अभी काफी है। सुबह तक सूख ही जायेंगे। मगर फिर न जाने क्या सोचकर वैसा नहीं किया।

धीरे-धीरे पूर्व में अरुण प्रकाश निकल आया। दिशाएँ स्वच्छ हो गयीं और उनकी मंद ज्योति में जैसे ही अपने वृक्ष पर एक सरसरी-सी नजर दौड़ायी, अवाक् रह गया। वाह, वह तो एक खासा चिड़ियाघर बना हुआ है। इधर एक गोह बैठा है, उधर एक नेवला और उसके आस-पास कितनी ही डालियों पर दूसरे प्रकार के कितने ही पंछी, कितनी ही गिलहरियाँ, एकाध वन-बिलाव और तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े, न जाने कौन-कौन दिखाई पड़ रहा है। मगर इनसे भी अधिक आश्चर्य उन तीन-चार साँपों पर हो रहा था, जो इधर-उधर की डालियों पर रस्सियों की तरह लिपटे हुए चुपचाप पड़े थे। कितने सरल और भोले दिखाई पड़ रहे थे बेचारे!

मैं शायद और भी काफी देर तक इस विस्मय को देखता, यदि सहसा श्याम की पुकार मुझे चौकन्ना न कर देती। वह कह रहा था – "अरे निधि, कौड़िया! तुम्हारे पीछे ही। अरे, बैठे क्या हो, जी। जल्दी उतर आओ।"

उसकी चिल्लाहट से चौंककर मैंने जैसे ही एक उड़ती-सी नजर पीछे फेंकी, देखा सचमुच मुझ से केवल गज-भर दूर एक काला साँप, जिस पर सफेद छल्ले बने थे, डाल पर लिपटा हुआ था। यही कौड़िया है। मगर तभी श्याम से एक गलती हो गयी; जान-बूझकर नहीं अनजाने में ही। मुझे और अपने को बचाने की चिंता में वह जैसे ही अपनी डाल पर से उठकर नीचे उतरने लगा, उसका दायाँ हाथ मेरे ऊपर की एक पतली डाल से, जो शायद सूखी हुई थी, इस तरह छू गया कि, अगले ही क्षण टूटकर वह मुझ पर आ गिरी। डाल अत्यंत पतली और क्षुद्र थी। उसके गिरने से मुझे कुछ भी हानि न पहुँची। न चोट आयी, न कोई दूसरे प्रकार की क्षति ही हुई। तो भी, वह जरा-सी बात ही एक भयंकर घटना का कारण बन गयी। हुआ यह कि, वह अभागी डाल केवल मुझ पर गिरी ही नहीं, उसका एक भाग मेरे पास बैठे हुए उस सहज क्रोधी साँप से भी छू गया और देखते ही देखते राई का पहाड़ बन गया।

डाल का छूना था कि, वह एकदम सचेत हो गया और यह समझकर कि, मैंने ही उसे मारा है, अपनी गर्दन उठा तुरंत मुझ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

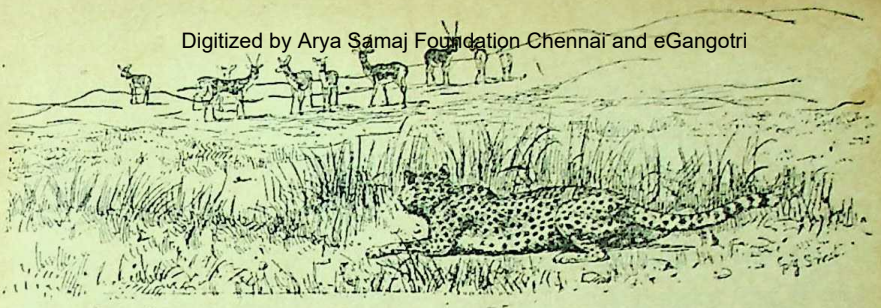

शिवालक की तराई का एक दृश्य

पर ही झपटा । विपत्ति इतनी आकस्मिक थी कि, मैं उसके लिए जरा भी तैयार न था । तिस पर कौड़िया मेरे इतने निकट बठा था कि, उसकी झपट से बच सकना मेरे लिए किसी भी तरह सम्भव न था । तो भी न जाने कौन उस समय उस साँप से भी अधिक फुर्ती मुझ में भर गया कि, मैं जहाँ बैठा था, वहीं से कूद गया और नीचे बहते हुए गँदले पानी में, जो अब डेढ़-दो फुट से अधिक गहरा न रहा था, गिरकर स्नान का दूसरा दौर समाप्त किया ।

लेकिन साँप भी कम नहीं था । उसने भी हार नहीं मानी और मेरे पीछे ही पीछे वह भी वृक्ष से नीचे कूद पड़ा । यद्यपि वृक्ष से गिरते ही पानी में डूबकर वह प्रारम्भ में कुछ तिलमिला तो अवश्य उठा; मगर अगले ही क्षण सँभलकर तैरता हुआ मेरी तरफ दौड़ उठा । मैंने भी सिर पर पैर रखकर भागने में कोई कसर नहीं छोड़ी । फिर इसके अतिरिक्त मेरे पास और चारा भी क्या था ? दोनों हाथ एकदम खाली । न लाठी, न छड़ी–पत्थर तक नहीं ।

पर कठिनाई यह थी कि, पानी के कारण पूरी तरह भागा नहीं जा रहा था । सूखी जमीन रही होती या सूखी रेत ही होती, तो अवश्य ही मैं उसे दौड़ में मात दे देता । मगर इस घुटने-भर पानी में मेरा कुछ भी वश नहीं चल रहा था । फिर भी मैं निरंतर पानी उछालता, गिरता-पड़ता भागा ही जा रहा था । पानी पर मजे में तैर सकनेवाले साँप की दौड़ मुझसे कहीं अधिक तेज है–यह मैं जानता था; और इसीलिए मुझे जरा भी संदेह न रह गया था कि, जब तक श्याम मेरी सहायता का कोई उपाय करेगा, मैं अवश्य ही साँप के विषैले दाँत का शिकार बन जाऊँगा ।

अब भी मेरे गले में चादर उसी तरह लिपटी हुई थी । रात-भर में वह यद्यपि सूख तो गयी थी; मगर घुटनों तक लटकी रहने कारण वह मेरे पैरों से उछलते हुए पानी के से एक बार फिर पूरी तरह गीली हो गयी थी । मेरे भागने में भी वह काफी बाधा पहुँचा रही थी । सो मैंने भागते-भागते ही उसे गले में से उतार लिया और घूमकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँप पर फेंक दिया।

परिणाम अद्भुत निकला। लम्बी-चौड़ी चादर ने साँप पर गिरते ही, केवल उसकी प्रगति ही नहीं रोक दी, पानी में भीगकर और भी भारी हो गयी और उसे अपने में इस तरह उलझा दिया कि, अब उसका पानी से ऊपर आ सकना शायद किसी भी तरह सम्भव न रहा।

सम्भव भले ही न रहा हो; मगर एक प्रश्न आज भी मेरे मन में रह-रहकर उठा करता है। सोचा करता हूँ, आखिर यह सब कैसे हो गया? इतनी सारी विपत्तियों से मैं बच कैसे गया? कहते हैं काल महाबली है—उस पर किसी का वश नहीं। मगर मेरा खयाल है, उपनिषदों ने जिसे महाकाल कहकर पुकारा है, वह शायद इस काल से भी बलवान् है। कालस्येदं वशे सर्वम् . . .। लगता है, रहस्यों के परम रहस्य इस महाकाल ने ही मुझे उस दिन बचा लिया था।

ऐसी ही थी वह घटना, और ऐसा ही था वह वृक्ष, जो मेरे मन में आज भी अभिन्न साथी बनकर बसा हुआ था। आज बत्तीस वर्ष बाद भी मैं उसे भूल नहीं सका था और इस सूखे नाले में भटकता हुआ उसे ही खोज रहा था।

साथी अभी पीछे थे। इधर मैं घूमते-फिरते काफी थक गया था। सो उनकी प्रतीक्षा में एक चट्टान पर बैठ गया। तभी देखा, उधर के एक छोटे-से नाले में से निकल वे लोग मेरी ही तरफ चले आ रहे हैं। पहल हेमंत ने ही की। पास आकर बोला— "आपके ही कारण हमें देर लग गयी। नहीं तो इससे पहले ही आ जाते।"

मैं सुनकर मुस्करा दिया। कुछ उत्तर नहीं दिया।

"मुस्कराने की बात नहीं है, जी। सच ही कह रहा हूँ" और फिर वह मेरी तरफ प्रशंसापूर्ण नेत्रों से देखते हुए बोला— "जान पड़ता है, आप अपनी उस घटना को भूल गये हैं, जो कितने ही वर्ष पहले आपके साथ इस नाले में घटी थी। श्याम भाई साहब अब तक हमें वही सब सुना रहे थे। मगर आपका वह पापड़ी का वृक्ष तो बहुत छोटा-सा है, जी। इतने वर्ष बाद भी वह अब तक कैसे बचा हुआ है, यही आश्चर्य है।"

मैंने व्यग्र होकर पूछा— "किसकी बात कह रहे हो तुम? उस पापड़ी वृक्ष की?"

"और नहीं तो किसकी? आपकी शायद उससे अब तक भेंट नहीं हो पायी है?" हेमंत ने बड़े आश्चर्य से कहा।

समाचार कल्पनातीत था। चौंक उठा— "अरे, क्या कहते हो? मुझे तो वह ढूँढ़ने पर भी नहीं मिला। चलो तो सही। जरा दिखाओ तो कहाँ है वह?" कहकर आनंद के आवेश में मैं सभी को साथ लेकर पीछे लौट पड़ा और वृक्ष के पास पहुँच जैसे ही उसे पहचाना, दौड़कर उसके तने से लिपट गया। आँखें गीली हो आयीं और मैं अतीत की उन प्रिय स्मृतियों में डूब गया, जो सदा ही मेरे हृदय में किसी अज्ञात सुख का रोमांच भरती रहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंतु-जगत् का नीति शास्त्र

अनैतिकता और उच्छृंखलता के इस युग में शायद जंतु-जगत् की नैतिकता ही मनुष्य-समाज के लिए अनुकरणीय रह गयी है।

संतराम बी० ए०

नीतिशास्त्र पर मनुष्य का एकाधिकार नहीं है। जंगल के जीव-जंतुओं का भी अपना नीतिशास्त्र है। और कौतुक की बात यह है कि, वह हमारे शिष्टाचार से काफी मिलता-जुलता है। प्रायः वे आदरशील, कोमल हृदय और विवेकी होते हैं। उनमें भी शांतिप्रियता पायी जाती है, जो संतुलित आत्मा की निशानी है।

अनेक बार पशु-पक्षी ऐसा आचरण करते हैं, जिससे बड़ी सुरुचि और गहरी अनुभूति का परिचय मिलता है। उदाहरणार्थ, पशु-समाज में विश्वास का व्यतिक्रम करनेवाले को विश्वासघाती मनुष्य से कहीं अधिक कठोर दंड दिया जाता है। कारण यह है कि, पशु-जगत् के नीति-नियमों का उनकी सुरक्षा से गहरा सम्बंध है; और जो जंतु उनका पालन नहीं करता, वह अपने साथ अपने साथियों के जीवन को भी खतरे में डालता है।

आपने सुना होगा कि, पशु-पक्षियों के प्रत्येक समूह में प्रायः पहरेदार रखने की रीति है। एक बार कौवों का एक झुंड एक खेत में चुगने गया। खेत के साथ एक खाई थी और उसके किनारे एक सूखे पेड़ का ठूँठ था। कौवों ने अपना एक पहरेदार वहाँ बैठा दिया। परंतु खेत का मालिक पहरेदार कौवे की आँख बचाकर खाई में उतर गया और उसने वहाँ से गोली चलानी शुरू कर दी। कई कौवे मारे गये, शेष उड़ गये; परंतु इस भगदड़ में भी लगभग एक दर्जन कौवे घृणा-भरी काँव-काँव के साथ पहरेदार कौवे पर टूट पड़े। उन्होंने उसे बड़ी निर्दयता से पीटा और अपने समाज से ही नहीं, अपितु उस वन से ही बहिष्कृत कर दिया। शत्रु के आने की चेतावनी देना पहरेदार का कर्त्तव्य था; परंतु वह तो पहरे की जगह पर सो गया था।

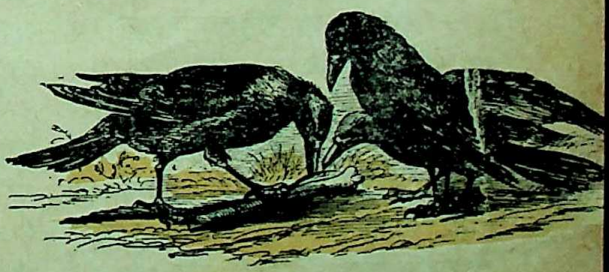

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी प्रकार की एक और कथा भी एक कृषक ने लिखी है। एक दिन उसने दो लोमड़ियों को धान के खेत के पास शिकार की तलाश में घूमते देखा। वह झाड़ी के पीछे छिपकर उन्हें देखने लगा। एक लोमड़ी रास्ते के निकट एक झाड़ी के नीचे लेट गयी, दूसरी खेत की मेंड़ के नीचे खिसक गयी। तभी किसान को हल्की-सी आवाज सुनाई दी और उसने देखा कि, दूसरी लोमड़ी झाड़ी के नीचे घात में बैठी हुई लोमड़ी की ओर पूरी तेजी के साथ भागती हुई आयी। उसके आगे-आगे एक भयभीत खरगोश दौड़ रहा था। झाड़ी में बैठी हुई लोमड़ी तुरंत उस पर लपकी; परंतु किसी कारण से वह दाँव चूक गयी और खरगोश बच निकला। इस पर हाँका लगाने-वाली लोमड़ी झुंझला उठी और अपने साझीदार पर टूट पड़ी। बड़ी देर तक उनका गुत्थमगुत्थ चलता रहा। वे तभी अलग हुई, जब किसान उनके पास पहुँचा।

यदि पशुओं को कभी ऐसा प्रतीत हो कि, उनके किसी साथी ने उन्हें बेवकूफ बनाया है, तो वे उसका बदला लिये बिना नहीं रहत। कपास के एक बड़े खेत के किनारे पर ही वन था। एक दिन खेत का मालिक वन के पास खड़ा था। उसने देखा, एक लोमड़ी दस सेर का एक पेरू मारकर बड़ी मेहनत से उसे घसीटकर ला रही है। कुछ दूर घसीटने के बाद लोमड़ी पेरू को एक झाड़ी के पास छोड़कर जंगल में चली गयी। किसान ने पेरू उठा लिया। पर वह

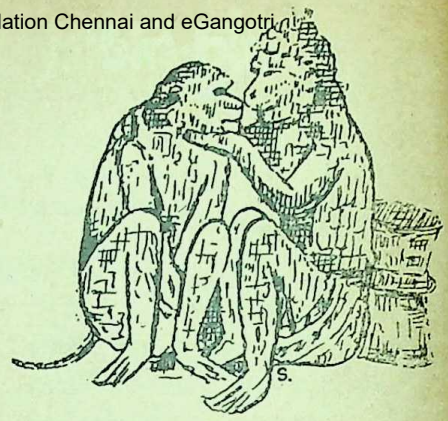

केलि-क्रीड़ा

हेब्वार के चित्र की सोनवलकर द्वारा अनुकृति।

झाड़ी की ओट में हुआ ही था कि, उसने उसी लोमड़ी को अपने से दुगुनी बड़ी एक और लोमड़ी के साथ आते देखा। दोनों ने कुछ मिनिट बड़ी उत्सुकता और व्यग्रता से इधर-उधर सूंघा; पर पेरू उन्हें नहीं मिला। शायद पहली लोमड़ी उसे सहा-यता के लिए अथवा भोज के लिए बुला-कर लायी थी। जब दूसरी लोमड़ी ने देखा कि, उसे जो बताया गया था, वह वहाँ नहीं है, तो शायद उसने अनुभव किया कि, उसे बनाया गया है और वह पहली लोमड़ी पर झपट पड़ी। दोनों में बहुत देर तक युद्ध होता रहा।

प्राणि-जगत् में दल के नेता का बड़ा वर्चस्व होता है। उन्हें काम भी बड़ी लगन का दिया जाता है, और अगर वह उस काम में चूक जाये, तो उसका अपमान किया जाता है। एक बार की बात है, एक बूढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजहंस तीस राजहंसों को लेकर उत्तर की यात्रा कर रहा था। वे सब जरा नीचे उड़ रहे थे और जब वे एक खेत पर से गुजरे, किसानों ने उन पर गोलियाँ दाग दीं। तत्काल पक्षियों को अपनी विपदा का ज्ञान हो गया। वे समझ गये कि, उनके मार्ग-दर्शक ने भयंकर भूल की है। उन्होंने कर्कश ध्वनि द्वारा मार्ग-दर्शक की भर्त्सना की और उसे अपने व्यूह के अग्रभाग से हटा दिया।

वैयक्तिक स्वच्छता जंतु-जगत् के शिष्टाचार का बड़ा प्रमुख अंग है। स्वच्छता के नियमों का पालन वे अपने सहज ज्ञान से ही करते हैं। गंदगी खानेवाले पक्षी, जिनसे हम लोग प्रायः घृणा करते हैं, विशेष रूप से साफ रहते हैं। एक शिकारी ने लिखा है कि जीवन में उसने कोई दो-तीन हजार हिरन देखे होंगे; परंतु घायल हिरनों को छोड़कर एक भी ऐसा नहीं था, जिसने अपनी चारुता और बल से उसे मुग्ध न किया हो। यह चारुता और बल वैयक्तिक स्वास्थ्य के नियमों के पालन से ही प्राप्त हो सकते हैं।

अपने चारों ओर वनों में, खेतों में, बस्तियों में और आकाश में हम पशु-पक्षियों के प्रणय-विषयक शिष्टाचार को देख सकते हैं। उनके नर-मादा के जोड़ों में एक-दूसरे के प्रति एक प्रकार की विवेक-पूर्ण कोमलता रहती है और यह इस बात का प्रमाण है कि, उनमें केवल शारीरिक आकर्षण ही नहीं; बल्कि गहरा हार्दिक अनुराग भी होता है। उदाहरण के लिए कार्डिनल पक्षी उम्र-भर अपने जीवन-संगी को नहीं बदलते। शरद्-ऋतु की ठंडी रातों में वे अपने पति या पत्नी को याद करके प्रेम के गीत गाते हैं।

शिष्टाचार का सबसे बड़ा लक्षण सहिष्णुता है और जंगली जीव-जंतु एक-दूसरे के प्रति भरपूर सहिष्णुता दिखाते हैं। निस्संदेह प्रणय-स्पर्धा के कारण उनमें आपस में लड़ाइयाँ होती हैं और शिकारी जीवों और शिकार के बीच शाश्वत विरोध चला आता है। परंतु उनमें सामाजिक द्वेष नहीं है, व्यापारिक विरोध नहीं है, पद और सत्ता के लिए झगड़ा नहीं है। वे एक-दूसरे के अधिकारों का सम्मान करते हैं। वे साधारणतया जितना समझा जाता है, उससे कहीं अधिक मिल-जुलकर रहते हैं।

एक सज्जन ने उनके सह-अस्तित्व का बड़ा सुंदर वर्णन किया है – "मेरे बगीचे में देवदार का एक बहुत पुराना सूखा पेड़ है। उसमें सैकड़ों कोटर हैं–सबसे निचला जमीन से ३० फुट की ऊँचाई पर और सबसे ऊँचा ६३ फुट पर। बच्चे देने के मौसम में मैंने इन खोखलों में विभिन्न जातियों के जीव-जंतुओं को एक साथ बसे देखा है। एक में हुदहुद का जोड़ा था, दूसरे में गिलहरी का, तीसरे में दो चुगल-दम्पति रहते थे और उनके ऊपर एक उल्लू-परिवार का निवास था। सब बड़े प्रेम और शांति से रहते थे।"

सचमुच ऐसा जीवन शिष्टता और नैतिकता से ही सम्भव है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनूठी भी

परमार्थ-साधन का एक अनुकरणीय उदाहरण अभी हाल में जनरल मेकार्थर ने यह घोषणा करके प्रस्तुत किया कि, "मृत्यु के बाद मुझे मेरे जन्म-स्थान पर ही दफनाया जाये।" इस समाधिस्थल की नयी सज्जा पर ५ लाख डालर खर्च होगा। मेकार्थर के शव के साथ उनके सैनिक पदक, ट्राफी, पुरस्कार आदि भी समाधिस्थ किये जायेंगे। अभी तक यह बात मशहूर थी कि, परमार्थ-साधन भारतीय ही करते हैं; अब अमेरिका इस दिशा में भी अग्रणी हो रहा है।

—०—

"ऋणोपार्जन धनोपार्जन की पहली सीढ़ी है," यह उक्ति सत्य ही मालूम होती है। 'धनोपार्जन के अचूक उपाय' पुस्तक के यशस्वी लेखक राबर्ट एलन ने अभी हाल में दिवालिया होने की दरख्वास्त दी है। उस पर २० हजार डालर का कर्ज था।

—०—

कभी-कभी वैज्ञानिक अनुसंधान से चमत्कारी परिणाम पैदा होते हैं। अमेरिका के मोरेगन कालेज की ओर से खाद्य पदार्थ सम्बंधी परीक्षण हो रहे थे। खाद्य वस्तु में विष मिलाकर कुत्तों के शरीर में विष-प्रवेश की प्रतिक्रिया का निरीक्षण हो रहा था। विष का प्रभाव यह हुआ कि, कुत्ते को काटनेवाली मक्खियाँ वहीं मर गयीं।

—०—

'डबलिन ओपीनियन' के एक लेखक ने विनाशकारी हथियार बनानेवाले वैज्ञानिकों पर यह कटाक्ष किया है—"वैज्ञानिकों को इस प्रगति पर गर्व अनुभव करने की कोई आवश्यकता नहीं; जमीन पर रेंगनेवाले कोटि-कोटि कीटाणु यही काम अनायास कर रहे हैं'।

—०—

अमेरिका में टेलिविजन कैमरा के प्रतिष्ठान ने एक नयी समस्या को जन्म दे दिया था। टेलिविजन पर आनेवाले सम्मानित व्यक्तियों में कुछ श्वेत-धवल केशोंवाले थे, तो कुछ काले केशोंवाले भी। उनके लिए अनुकूल यवनिका तैयार करने के लिए दो-तीन रंगों के परदे लगाये जाते हैं। भारत में यह समस्या नहीं है। यहाँ राष्ट्रपति-भवन में सम्मानित व्यक्ति प्रायः ६० से ऊपर के धवलकेशी ही हैं।

—०—

कांगो की आजादी ने केवल लुमुम्बा और राष्ट्रसंघ को

चौंकाते भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही संकट में नहीं डाला, बल्कि कांगो के उस महिला-संघ को भी उलझन में डाल दिया है, जो कल तक किंग लुकेंगु के संरक्षण में था। किंग लुकेंगु की ८०० पत्नियाँ कल तक लुकेंगु की रानियाँ थीं; परंतु आज उन बेचारियों से पत्नी बनने का अधिकार छिन गया है।

—०—

'टाइम्स' के कार्टूनिस्ट श्री० आर० के० लक्ष्मण ने एक कार्टून का परिचय इन शब्दों में दिया है: (कारपोरेशन के दो अधिकारी आपस में बात करते हुए) हम सड़कों का उत्खनन कार्टूनिस्ट को व्यंग्य-चित्र बनाने की सामग्री देने के लिए ही नहीं करवाते; बल्कि उसकी सचमुच जरूरत होती है।

अमेरिका के मशहूर विदूषक 'विल रोजर्स' ने भी अपने व्यंग्य-विनोद का आधार बताते हुए लिखा था—'मैं कटाक्ष के लिए कटाक्ष नहीं करता। नग्न सत्य ही कहता हूँ। नग्न सत्य से बड़ा कटाक्ष कोई नहीं है!" —स० का० वि०

★

पीकदान की शान

झूठी शान और ऊँच-नीच की भावना कई बार राजनीतिक संकट भी उपस्थित कर देती है। बैंटिक के समय में बर्मा से कुछ दूत भारत आये थे। उनके स्वागत में मेटकाफ ने एक भोज का आयोजन किया। उस भोज को शानदार बनाने के लिए उन्होंने काफी रकम खर्च की। लेकिन भोज का समय आने से एक घंटे पूर्व बर्मी दूतों ने भोज में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया; क्योंकि उन्हें अपना पीकदान साथ लाने की मनाही थी। बर्मा में शिष्टाचार है कि, यदि कोई व्यक्ति अपने से छोटी हैसियतवाले के यहाँ जाता है, तो पीकदान लेकर जाता है; और बड़ी हैसियतवाले के यहाँ जाता है, तो पीकदान नहीं ले जाता। बस, शान के इस छोटे-से प्रश्न को लेकर भोज का सारा आयोजन रद कर देना पड़ा।

★

जब पोलैंड की सुपुत्री मदाम क्यूरी ने वारसा के मदाम क्यूरी रेडियालाजी प्रतिष्ठान का उद्घाटन किया, तब समारोह के अध्यक्ष राष्ट्रपति पेडेरेव्स्की ने अपने भाषण में कहा—"बंधुओ, मदाम उत्कट देशभक्त भी हैं। स्वातंत्र्य-संग्राम के दिनों मे वे पेरिस में क्रांतिकारियों की बड़ी मदद किया करती थीं। एक बार जब मैं रेल से यात्रा कर रहा था, उन्होंने मुझे एक तकिया दिया था। आज तक मुझे याद है कि, उससे मुझे कितना आराम रहा।" बीच में ही मदाम बोल उठीं—"मुझे भी आज तक याद है कि, राष्ट्रपतिजी ने मेरा वह तकिया अभी तक लौटाया नहीं है।"

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौत : मामूली बात

आधारभूत मान्यताओं को जीवन से भी अधिक मूल्यवान् समझनेवाले भी यदि मौत को तुच्छ समझें, तो आश्चर्य क्या है ? भील-समाज में रहनेवाले श्री श्याम व्यास ने इस लेख में अपनी आँखों देखी घटना का वर्णन किया है।

श्याम व्यास

एक भील जंगल में ढोर चरा रहा था कि, उसे एक खरगोश नजर आया। भील के पास संयोग से उस समय तीर-कामटी नहीं थे। अतः जाते-जाते उसने अपने एक साथी भील से कहा—"देख, मैं अभी घर जाकर तीर-कामटी ले आता हूँ। तब तक तू इस खरगोश की निगरानी रखना।"

इसी बीच खरगोश भाग गया। जब पहला भील तीर-कामटी लेकर लौटा और खरगोश को वहाँ नहीं पाया, तो बहुत क्रोधित हुआ और उसने अपने साथी पर खरगोश भगाने का आरोप लगाते हुए उसके तीर मार दिया। देखते-देखते साथी की मृत्यु हो गयी। थोड़ी देर में इस हत्या का पता मृत भील के भाई को लगा। वह क्रोध से लाल-पीला होकर वहाँ पहुँचा, जहाँ यह भील ढोर चरा रहा था। मृत भील के भाई ने तुरंत उसे तीर का निशाना बना लिया। मगर पहला भील भी कम नहीं था। वह मरते-मरते भी अपना तीर चला गया। इस तरह ये दोनों भी परस्पर एक-दूसरे के तीर द्वारा बिंध मरे।

खरगोश तो कभी का जान बचाकर भाग चुका था; परंतु उसके पीछे इन तीन भील युवकों ने देखते-देखते जान गँवा दी।

यह घटना नवीन गुजरात राज्य और मध्यप्रदेश के संधि-स्थल झाबुआ जिले की है, जहाँ प्रति दस व्यक्तियों में नौ आदिवासी हैं। यद्यपि इन आदिवासियों का जीवन-क्रम बड़ा सहज है; परंतु उतनी ही आसानी के साथ ये लोग हत्याएँ भी कर डालते हैं।

ऐसी ही एक घटना एक समाज-शिक्षा-अधिकारी के साथ घटी। वे झाबुआ जिले के अलिरामपुर विकास-खंड के एक ग्राम में दौरे पर गये हुए थे। साथ में उनका चपरासी भी था। वे गाँव के 'तड़वी' के यहाँ ठहरे। 'तड़वी' ने हमेशा की तरह उनका यथाशक्ति स्वागत-सत्कार किया।

रात को 'तड़वी' ने महुआ की शराब पी और नशे में उसे यह धुन सवार हो गयी कि, उन दोनों को मार डाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाये। बस फिर क्या था? वह हाथ में नंगी तलवार लिये, इन दोनों निद्रा-निमग्न व्यक्तियों की ओर लपका। 'तड़वी' की औरत ने उसकी बदली हुई आँखें और चढ़ी हुई तेवर देखीं और वह सारी स्थिति भाँप गयी। उसने मजबूती से 'तड़वी' को पकड़ लिया। वह अपने को छुड़ान के लिए जोर करने लगा और चिल्लाने लगा—"छोड़ दे रांड, छोड़ दे, आज मैं इनकी मोंडी (सिर) काटकर ही रहूँगा।"

इस शोरगुल में चपरासी की नींद खुल गयी और उसने झकझोर कर अपने साहब को जगाया। समाज-शिक्षा अधिकारी ने जागकर अपने सामने साक्षात् यमराज को खड़े पाया। एकबारगी तो उनकी घिग्घी बँध गयीं; परंतु दूसरे ही क्षण उन्होंने गरजकर चपरासी से कहा—"लाना रे मेरी पिस्तौल, अभी 'तड़वी' को शूट कर देता हूँ।" इतना-सुनना था कि, 'तड़वी' का सारा नशा हिरन हो गया और वह घिघियाने लगा।

हालाँकि उन महाशय के पास कोई पिस्तोल वगैरह नहीं थी; मगर उस समय यदि वे अपना संतुलन न रख पाते, तो निश्चय ही उन दोनों के सिर धड़ से अलग हो गये होते।

कहा जाता है कि, झाबुआ—जिले के इस अलिरामपुर अंचल में बहुत ज्यादा हत्याएँ हुआ करती थीं। यद्यपि आज यह स्थिति नहीं है, तथापि भीलों के जीवन में जो मान्यताएँ हैं, उनके विपरीत कोई कार्य हो जाने पर, उसकी अंतिम परिणति हत्या में ही होती है।

भीलों के कुछ अपने कानून हैं, जिन पर वे सब चलना चाहते हैं। मार-काट की दुर्घटनाएँ तभी होती हैं, जब उन नियमों का उल्लंघन होता है। शादी-विवाह में सभी अतिथियों को डटकर शराब पिलायी जानी चाहिये। इसमें कंजूसी होने पर अतिथि व्यंग्य कसते हैं और कभी-कभी उसे लेकर झगड़ भी पड़ते हैं। तीज-त्यौहार पर किसी व्यक्ति-विशेष को नहीं न्यौतने पर भी कलह हो जाती है। या फिर एक लड़की के लिए दो-दो इच्छुक रहने पर तीर-तलवारें खिंच जाती हैं।

तीर-कमान व गंडा से लैस भील सदा मरने-मारने को सन्नध रहता है।

यदि कोई भील युवक किसी लड़की को भगा ले जाता है, तो पंचायत बैठती है और उस युवक पर जुर्माना करती है। साथ ही निर्देश देती है कि, वह इतना रुपया लड़की के बाप को दे। अगर युवक निर्धारित रकम भी न दे और लड़की को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लौटाये भी नहीं, तो उसकी हत्या हो जाती है और हत्यारा स्वीकार कर लेता है। स्वाभाविक है।

कभी-कभी कुकड़ी और बोकड़ी (मुर्गी और बकरी) की चोरी पर भी हत्याएँ हो जाती हैं। जैसे रात को कोई भील जाकर किसी दूसरे भील की मुर्गी चुरा लाया। सुबह जब उस भील को पता लगा, तो उसने तीर से उसकी जान ले ली। ऐसी अनेकानेक घटनाएँ इस अंचल में आये दिन घटती रहती हैं। लेकिन प्रायः एक बात होती है कि, खून करने के बाद हत्यारा आत्म-समर्पण कर देता है। कभी-कभी तो हत्यारा मृत व्यक्ति का कटा हुआ सिर लेकर खुद ही थाने में पहुँच जाता है और कह देता है—"इसे मैंने मार डाला है।"

नयी सामाजिक व्यवस्था में सामाजिक कार्यकर्ताओं की बढ़ती हुई गतिविधियों और सतत जागरुकता के कारण भीलों की इस प्रवृत्ति में कमी अवश्य हुई है; पर अभी भी भील लोग मौत से नहीं डरते। उनके लिए तो मौत जैसे अपना महत्व खो ही बैठी है।

★

सम्भवतः सन् ३५ या ३६ का हेमंत-काल था। पंडित माखनलाल चतुर्वेदी अपने छोटे भाई श्री ब्रजभूषण चतुर्वेदी का विवाह सम्पन्न कराकर बारात वापस लिये लौटे रहे थे। सुबह के लगभग आठ बजे का समय। बारात इटारसी जंकशन पर गाड़ी बदलने के लिए रुकी थी। पंडितजी निकट की धर्मशाला में चले गये थे। अचानक पुलिस ने प्लैटफार्म पर आकर पंडितजी के मंझले भाई स्व० श्री रामदयाल चतुर्वेदी को राजद्रोहात्मक भाषण देने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। मैंने धर्मशाला में जाकर पंडितजी से कहा—"दादा, मँझले को पुलिस गिरफ्तार कर ले गयी।"

पंडितजी उस समय कोई अखबार देख रहे थे। इस सूचना पर चतुर्वेदीजी ने न तो आश्चर्य व्यक्त किया और न चिंता ही। बल्कि उन्होंने शांत भाव से मेरी ओर दृष्टि घुमायी, फिर सहज मुस्कान के साथ बोले—"सचमुच है, विवाह सफल हो गया। बहू बड़ी भाग्यवान् निकली।"

—रामरतन लाल द्विवेदी

★

त्याग बिल्कुल जड़ पर आघात करनेवाला है, दान ऊपर कोंपलें काटने जैसा है। त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की खाँट है। त्याग में अन्याय के प्रति चिढ़ है, दान में नाम का लिहाज है। त्याग से पाप का मूलधन चुकता है और दान से पाप का ब्याज। त्याग का स्वभाव दयालु है, दान का ममतामय। धर्म दोनों से ही पूर्ण है। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसकी तलहटी में। —विनोबा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीवानी अदालत

नवाबी जमाने की तिलस्मी बातें भारतीय इतिहास की सबसे अधिक रोचक घटनाएँ मानी जाती हैं, लेकिन यह लेख प्रमाणित कर देता है कि, अँग्रेज हाकिम भी नवाबों से किसी बात में कम नहीं थे।

ज्ञानचंद्र

अकबर के एक शेर की दूसरी पंक्ति है – "मैं जिस अदालत का मुंसिफ हूँ, वह दीवानी है।"

और उनकी यह उक्ति केवल शायराना खयाल-भर नहीं थी, सचमुच कभी ऐसे अफसर हुआ भी करते थे, जिन पर कुर्सी की दीवानगी का पूरा-पूरा प्रभाव रहता था।

ब्रिटिश काल में एक जज थे। उनका मन-मौजीपन बड़े विचित्र ढंग का था। वे अपने आफिस में केवल एक कुर्सी रखते। नतीजा यह होता कि, जो भी उनसे मिलने जाता, उसे खड़ा रहना पड़ता। एक बार एक ताल्लुकेदार साहब उनसे मिलने गये। नमस्कार-प्रणाम के बाद जो थोड़ी बात शुरू हुई, तो उससे जज साहब को ज्ञात हुआ कि, आगंतुक महोदय ताल्लुकेदार हैं। जज ने तुरंत एक मोढ़ा मँगवाया और क्षमा-याचना करते हुए ताल्लुकेदार साहब से उस पर बैठने का अनुरोध किया। वह मोढ़ा केवल ९ इंच ऊँचा था। लेकिन ताल्लुकेदार के लिए और चारा भी क्या था? अपनी शान - शौकत भूलकर वे उस पर बैठ गये–लगता कि, जैसे वे जमीन पर ही बैठे हों। बातचीत के दौरान में जज साहब को जब यह पता चला कि, वे ऐसे वंश के हैं, जिन्से ब्रिटिश सरकार से उपाधि भी मिल चुकी है, तो उन्होंने फौरन घंटी बजायी और चौकीदार से ऊँचा मोढ़ा मँगवाया। फिर ताल्लुकेदार साहब से उस पर बैठने का आग्रह किया। थोड़ी देर बाद ताल्लुकेदार ने बताया कि, उनके पूर्वजों को ही नहीं, स्वयं उन्हें भी 'सर' की उपाधि मिली हुई है। तब तो जज ने क्षमा-याचना करते हुए उससे भी ऊँचा मोढ़ा मँगवाया। इस प्रकार मोढ़ की ऊँचाई बातचीत के दरमियान इस कदर बढ़ती गयी कि, अंत में नौबत ऐसी आ पहुँची कि, आगंतुक को मोढ़े पर चढ़कर बैठना ही मुश्किल हो गया।

यह घटना डा० पट्टाभि सीतारामैया ने 'फेदर्स ऐंड स्टोन्स' में लिखी है। यह पुस्तक वस्तुतः डा० पट्टाभि की अहमद-नगर जेल की डायरी है, जिसमें उन्होंने अपने तात्कालिक अध्ययन में आयी कितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही मनोरंजक और [illegible] कर रखी हैं।

यों सुनने में यह घटना एक गप्प-सी लगती है; पर सचमुच यह उस बीते युग की प्रतिछाया है। सामंतशाही की जो छाप १९-वीं शती तक थी, उसकी अगणित कहानियाँ अब दंतकथाओं का रूप ले चुकी हैं। उस युग की विचित्रताओं की छाप केवल जमींदारों, रईसों और राजाओं तक सीमित रही हो, ऐसी बात नहीं है। तत्कालीन सरकारी अफसर भी उसी रंग में डूबे हुए थे और उस रंग की बदौलत जो हुक्म न दे दें, थोड़ा था।

डा० पट्टाभि ने उपर्युक्त जज की एक दूसरी कथा भी लिखी है। एक दिन जज साहब की इजलास में कुछ वकील पहुँचे। उस दिन सुबह उन लोगों ने अपनी दाढ़ी नहीं बनवायी थी। जज ने तुरंत नाई बुलाया और इजलास में ही उनकी दाढ़ी बनवायी। थोड़ी देर के लिए वह इजलास नाई की दूकान बन गयी।

अँग्रेज अफसर ऐसे विचित्र व्यवहार केवल जनता के साथ करते रहे हों, सो बात नहीं थी। वे अपने अफसरों से भी – यदि वे भारतीय हुए – वैसा ही दुर्व्यवहार करते थे। सन् [illegible] में स्काट नाम के कलक्टर थे। इससे पहले कुछ समय तक वे करनूल में डिप्टी कलक्टर थे। उन दिनों वहाँ के कलक्टर एक वयोवृद्ध मुसलमान थे। एक बार उक्त जिले में गवर्नर साहब आनेवाले थे। उनके स्वागत के लिए सभी अफसर स्टेशन पर उपस्थित थे। कलक्टर साहब ने उस दिन शेरवानी पहन रखी थी। लेकिन गवर्नर के आने के कुछ ही मिनिट पूर्व, उनके अधीनस्थ डिप्टी कलक्टर स्काट ने कैंची ली और उनकी पूरी शेरवानी की लम्बाई काट डाली।

इस तरह आई० सी० एस० अफसरों की ये सनकें केवल व्यवहार में रही हों, सो बात नहीं। उनकी ये सनकें सरकारी काम में भी उनका साथ नहीं छोड़ती थीं। एक दिन एक अफसर के सामने व्यभिचार का मुकदमा पेश हुआ। शुरू में तो वे ढीले-ढाले रहे; पर जब सफाई-पक्ष के वकील ने बहस शुरू की, तो बड़ी मुस्तैदी और चुस्ती से बैठ गये। लेकिन हमेशा की तरह उनका सरिश्तेदार ही मैजिस्ट्रेट का पार्ट अदा कर रहा था और बीच-बीच में वकील से प्रश्न पूछता रहता था। सफाई-पक्ष के वकील ने खीझकर कहा – "मैं अदालत के सामने बहस

साहब की नजरों में ज्यों-ज्यों भारतीय अतिथि की इज्जत बढ़ती गयी, आसन ऊँचा होता गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने आया हूँ, न कि सरिश्तेदार के सामने।" मैजिस्ट्रेट ने क्षमा माँगी। वकील ने फिर बहस शुरू की और अपनी आदत के अनुसार सरिश्तेदार ने फिर प्रश्न पूछना शुरू किया। वकील का रुख बदला देखकर मैजिस्ट्रेट ने अपनी इज्जत बचाने के लिए कुछ और मुस्तैदी दिखायी और पूछ बैठे – "मामला क्या है ?" वकील ने एक वाक्य में जो अपना मामला बताया, तो मैजिस्ट्रेट ने ताव में आकर कहा – "मैं अपराधी को छोड़ता हूँ। भला व्यभिचार कैसा जुर्म ?" अपने मुवक्किल को लेकर वकील हँसी-खुशी अदालत से बाहर निकला ही था कि, सरिश्तेदार पीछे-पीछे दौड़ता हुआ पहुँचा और बोला–" आपका मुवक्किल छूट गया, यह तो ठीक है वकील साहब! पर बताइये, मैं फैसला कैसे लिखूँ ?"

उस समय के गोरे फौजी अफसरों की भी अपनी ही अदा थी।

यह घटना भी डा० पट्टाभि की उसी पुस्तक की है। कभी-कभी ऐसी सनकें कई लोगों का भला भी कर देती थीं। लखनऊ की तरफ की एक बेगम साहिबा किसी वजह से अपने इकलौते लड़के को लेकर रियासत से भाग निकलीं और मिर्जापुर आकर एक धर्मशाला में ठहरीं। पैसों की जरूरत पड़ने पर उन्होंने अपना सोने का कड़ा बेचने के लिए लड़के को बाजार भेजा। एक छोटे लड़के को कीमती कड़ा बेचते देख कुछ लोगों ने पुलिस में खबर कर दी। बात कलक्टर के कान तक पहुँची। वे अपना कुतूहल शांत करने के लिए अपनी मेम साहब के साथ धर्मशाला पहुँचे। बेगम साहिबा की रियासती आदत भला कष्ट की घड़ी में भी कहाँ छूटनेवाली थी! उन्होंने एक जोड़ी कड़ा मेम साहब को पहना दिया। इस बात पर कलक्टर साहब इतने प्रसन्न हुए कि, उन्होंने उस नाबालिग लड़के को अपना पेशकार बना लिया। वह लड़का जब कचहरी जाता, तो तलवार लेकर, जैसे राजा ही हो। एक बार उसे तहसीलदारी मिली, तो वह पुनः स्वेच्छा से पेशकार हो गया। किसी नाबालिग को सरकारी नौकरी देने की बात कभी कानूनन जायज नहीं थी ; पर कलक्टर की सनक को क्या कहा जाये ?

इन शान-शौकतों और सामंतशाही मन-मौजीपन के साथ कभी-कभी अफसरों में मूर्खता और अज्ञान की भी झलक दिखलाई पड़ जाती थी।

गोरखपुर में एक सज्जन जज होकर आये। वे एम० ए०, एल-एल० बी० थे। उनके पास कहीं से अलायंस बैंक, शिमला का पचीस रुपये का चेक आ गया। चेक पाते ही जज महोदय ने अर्दली भेजकर वहाँ का रेल-भाड़ा पुछवाया। मालूम हुआ कि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि तीसरे दर्जे में भी कोई शिमला जाकर रुपया लाये, तो पचास रुपये खर्च हो जायेंगे। इसलिए मामले पर सब तरह से गौर करके जज महोदय ने फैसला किया कि, पचास रुपये खर्च करने के बजाय पचीस रुपये का चेक फाड़ डालना बेहतर होगा।

पेशकार सुन रहा था। जज के फैसले पर वह क्या बोलता। फिर भी उसने बहुत डरते-डरते कुछ कहने की इजाजत माँगी। जज के काफी आश्वासन देने पर उसने कहा– "हुजूर! यहाँ एक बाबू जुगुल-किशोर अग्रवाल हैं। वे अच्छे वकीलों में हैं और बैंक भी चलाते हैं। चेक फाड़ने से पहले अगर उनसे दरियाफ्त कर लें, तो अच्छा हो।" वकील साहब बुलाये गये। जज ने बहुत झेंपते हुए अपनी समस्या उन्हें बतायी। उन्होंने चेक देखा और बोले – "चौबीस रुपये बारह आने मैं अभी दे सकता हूँ।" और उन्होंने अपने मुहर्रिर से चौबीस रुपये बारह आने मँगाकर जज की मेज पर रख दिये।

जज को आश्चर्य में डूबा देख वकील साहब बोले – "मेरे पास एक चिड़िया है। उसे भेज दूँगा। वह जाकर शिमला से रुपये ले आयेगी।" जज साहब बड़े खुश हुए। पेशकार से बोले – "देखो, जिस दुकान की इमरती तुम खाते हो, वहाँ से दो रुपये की इमरती लाकर लौटने पर उस चिड़िया को खिलाना।" और बाद में भी जब कभी वकील साहब उन्हें नजर आते वे पूछते – "कहिये, आपकी चिड़िया तो अच्छी है। साहब, बड़े आड़े वक्त में काम आयी वह!"

अपनी शान और बड़प्पन में उस समय के लोग मरा करते थे। डा० पट्टाभि ने अपनी पुस्तक में एक उदाहरण और दिया है। एक बार एक कमिश्नर साहब फर्स्ट क्लास के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे। संयोग-वश उसी डिब्बे मे पं० मोतीलाल नेहरू भी थे। दोनों एक-दूसरे को शक्ल से जानते थे; पर मर्यादा के विचार से कोई किसी से नहीं बोला। रात हुई, मोती-लालजी ने अपना बिस्तर खोला और आराम से सो गये। लेकिन कमिश्नर साहब अपने बँधे बिस्तर पर ही लुढ़के रात-भर ऊँघते रहे। बाद में पता चला कि, मोतीलालजी का बिस्तर देखकर उक्त कमिश्नर को अपना बिस्तर खोलने की हिम्मत ही नहीं हुई – वह भी महज इस-लिए कि, उनका बिस्तर मोतीलाल-सरीखा न था।

शान में भूले रहने की ही दूसरी कहानी सुनिये। पं० जवाहरलाल नेहरू जब बैरि-स्टरी पास कर आये और वकालत करने लगे, तो लोगों ने उन्हें प्रयाग के तात्का-लिक कमिश्नर से मिलने की सलाह दी। वे कमिश्नर से मिल आये, तो एक दिन कमिश्नर भी उनसे मिलने आया और बोला- "मैं आपसे मिलने आया हूँ, न कि आपके पिता से। क्योंकि वे मेरे घर कभी आये ही नहीं।"

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दुर्लभ विभूति 'मौलाजी'

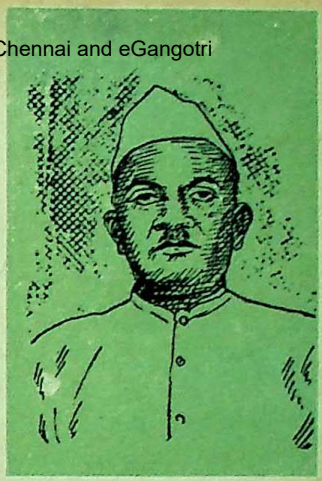

इस स्तम्भ में हम अभी तक पाँच निःस्वार्थ-सेवी एवं अनुकरणीय चरित्र के ऐसे व्यक्तियों का परिचय दे चुके हैं, जो अप्रसिद्ध हैं परंतु जिनकी परहित-साधना अनेक व्यक्तियों के जीवन में आलोक और आनंद का संचार कर रही है। उसी शृंखला की यह छठी कड़ी है।

रामनारायण उपाध्याय

बात है सन् ३० की। एक छोटे-से गाँव के गंदे नाले से एक व्यक्ति पानी भर रहा था।

नजदीक ही खड़े एक किसान युवक ने उसे देखा और पूछा—"अरे भाई, तुम इस गंदे नाले का पानी क्यों पीते हो? गाँव में तो साफ पानी के कई कुएँ हैं।"

उत्तर मिला—"हम नीची जात के हैं। हमें अपने कुएँ से कौन पानी भरने देता है!"

युवक ने कहा—"तो चलो मेरे साथ। मैं तुम्हें एक कुआँ दिखाता हूँ।" और उसे ले जाकर अपने घर के कुएँ पर खड़ा कर दिया और कहा—"आज से तुम यहाँ से पानी भरा करो। यहाँ पर तुम्हें कोई रोकनेवाला नहीं है।"

खबर बिजली की तरह समूचे गाँव में फैल गयी। बड़े-बूढ़ों के क्रोध का ठिकाना न रहा। साँझ होते ही चौपाल में पंचायत बुलायी गयी और युवक किसान से पूछा गया—"क्यों रे, क्या तूने उस शूद्र को अपने कुएँ से पानी भरने दिया है?"

उत्तर मिला—"हाँ।"

"क्या तू नहीं जानता, नीची जाति-वालों को हमारे कुओं पर चढ़ने का अधिकार नहीं है?"

"मैं ऐसा नहीं मानता। प्यास सबकी बराबर होती है। ब्राह्मण की प्यास और शूद्र की प्यास में कोई फर्क नहीं होता। फिर शास्त्रों में तो लिखा है कि, जहाँ भी बीस घड़े जल हो, वह स्थान कभी अशुद्ध नहीं होता।"

"चुप रह! बड़ा आया शास्त्र की दुहाई देनेवाला!" एक वृद्ध ने डपट दिया—"अपनी गलती मंजूर करके पंचों से माफी माँग ले। नहीं तो..."

इस "नहीं तो" में जो धमकी छिपी हुई थी, उससे युवक बेखबर नहीं था; परंतु उसने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं इसे गलती नहीं मानता। मैंने तो उसे रोज कुएँ से पानी भरने को कह दिया है और मैं अपना वचन नहीं तोड़ सकता।" सुनते ही पंचायत बौखला उठी। तत्काल उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया गया।

लेकिन बाईस वर्ष का वह युवक झुका नहीं। वह उस शूद्र को अपने कुएँ पर पानी भरने देता रहा और साथ ही खासकर अपनी उम्र के युवकों और बालकों को छुआछूत की बुराई के बारे में समझाता भी रहा। परिणाम यह हुआ कि, कुछ ही वर्षों के अंदर उस गाँव के सारे कुएँ हरिजनों के लिए खुल गये। आज तो यह स्थिति है कि, गाँव के हरिजन निःसंकोच किसानों के कुएँ पर मोट हकालते हैं, उनके निजी कुओं स पानी भरते हैं तथा सामाजिक समारोहों में उनके साथ घुटने से घुटना लगाकर बैठते हैं।

अब तो जात-पाँत की भावना तो वहाँ से इस प्रकार मिट गयी है कि, गाँव में शादी-ब्याह के मौकों पर ब्राह्मण, राजपूत, गूजर, कुनबी और अहीर – सब एक ही पंक्ति में बैठकर भोजन करते हैं। अलग-अलग जाति की अलग-अलग पंगतें अब वहाँ नहीं बैठतीं।

जहाँ यह क्रांति हुई, वह खंडवा तहसील (मध्य प्रदेश) का एक छोटा-सा गाँव है। नाम है कमठी। और आज से तीस बरस पहले जिस साहसी युवक ने वहाँ क्रांति की चिनगारी जलायी, उसका नाम है– चम्पालाल भाई।

चम्पालाल भाई का जन्म सन् १९०८ में एक साधारण से किसान-परिवार में हुआ। वे घर के सबसे बड़े लड़के थे। इसलिए बचपन से ही खेती के काम में पिता की सहायता करते थे। २०-२२ वर्ष की अवस्था में ही माता-पिता का देहांत हो गया और गृहस्थी के संचालन का भार उनके कंधों पर आ पड़ा। इन सब कारणों से उन्हें पर्याप्त स्कूली शिक्षा नहीं मिल पायी। लेकिन घर पर ही सद्ग्रंथों के अध्ययन-मनन से उन्होंने जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त कर लिया और ग्रामीण जन-जीवन के निकट सम्पर्क से उन्हें निःस्वार्थ सेवा की दीक्षा मिली।

जब मैं उनसे मिलने के लिए कमठी पहुँचा, वे दवाइयों का एक छोटा-सा बक्सा लिये कहीं बाहर जाने की तैयारी में थे। पूछा, तो पता चला कि, किसी मरीज को देखने किसी गाँव जा रहे हैं। जाते-जाते कह गये–"दो-तीन घंटे में आ जाऊँगा। तब तक फुर्सत हो तो ठहरिये।' दोपहर को वे लौट आये और भोजनोपरांत आराम करते हुए मैंने पूछा–"अरे, आप बावन-तिरपन वर्ष की उम्र में भी साइकल पर चलते हैं!"

वे बोले–"देहात के लिए यही पुष्पक विमान है। जब कच्ची सड़कों पर चलना हो, इससे बढ़कर सुविधाजनक साधन दूसरा नहीं।"

मैंने पूछा–"आपको वैद्यक करने की प्रेरणा कैसे मिली?" वे बोले–"एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे पाँव में दर्द हुआ। यह करीब सन् २८ की बात है। मैंने बहुत इलाज करवाया। लेकिन तीन वर्ष तक मुझे बड़ी तीव्र पीड़ा रही। तभी मैंने विचार किया कि, गाँव-वालों के छोटे-मोटे रोगों के इलाज का कोई प्रबंध होना चाहिये। कुछ ही समय बाद बिना किसी इलाज के मेरा पाँव ठीक हो गया।

"बीमारी के दिनों में ही मैं आयु-र्वैदिक दवाइयाँ तथा उससे सम्बद्ध साहित्य मँगाया करता था। उसी के आधार पर कभी-कभी किसी रोगी पड़ोसी को दवाई भी दे देता था। एक बार एक छोटे बच्चे को लेकर एक आदमी मेरे पास आया। बात यह हुई थी कि, बच्चे को पिलाने के लिए जो दूध रखा गया, था उसमें बिच्छू गिर गया और उस दूध को पीने से बच्चा बेहोश हो गया। मेरी दवा से वह ठीक हो गया। इससे मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला। मेरे पास काफी दूर-दूर से मरीज आने लगे।"

उनके मरीजों में अधिकांश व्यक्ति ऐसे होते हैं, जिनके पास दवा का पैसा भी नहीं होता। जो पैसा दे सकते हैं, उनसे वे दवा का पैसा-भर ले लेते हैं। यदि कोई विशेष आग्रह करके अधिक रकम दे देता हैं, तो उसे अपने पास न रख-कर जरूरतमंद ग्रामवासियों के इलाज में खर्च कर देते हैं।

एक बार खाटला नामक गाँव में उन्होंने एक भील का इलाज किया। वह अच्छा हो गया और उसने दस रुपये देने चाहे। जब बहुत मना करने पर भी वह नहीं माना, तो उन्होंने घोषणा कर दी कि, उनके पास दान के दस रुपये हैं; जिस भाई को जरूरत हो, वह उतने की दवाई मुफ्त ले जाये।

परंतु चिकित्सा तो गौण अंग है उनके जीवन का। उनके यहाँ मिलने–जुलनेवालों का ताँता लगा ही रहता है। कोई खेती के झगड़े का हल कराने, कोई अपनी पारिवारिक समस्या को सुलझाने, तो कोई लड़के की पढ़ाई के सम्बंध में सलाह लेने के लिए आता ही रहता हैं। और चम्पालालभाई सबकी बातें ध्यानपूर्वक सुनकर उनका उचित समाधान कर देते हैं। यही कारण है कि, आस-पास के सारे इलाके में वे 'मोठाजी' (बड़े भाई) के नाम से मशहूर हैं।

एक बार 'मोठाजी' गांधीजी से मिले और उनसे पूछा–"मेरे लिए क्या आदेश है बापू?" गांधीजी ने कहा–"अपने गाँव को ही विश्व मानो और उसकी सेवा में अपने आपको खपा दो।" और तब से वे इस आदेश का अक्षरशः पालन करते आये हैं।

बेशक दो बार 'मोठाजी' सत्याग्रही के रूप में जेल जा चुके हैं और अधिक विस्तृत राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने का अवसर उन्हें सुलभ है; परंतु वे कहते है–"नहीं भाई, मैंने तो अपनी दुनिया चुन ली है।"

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

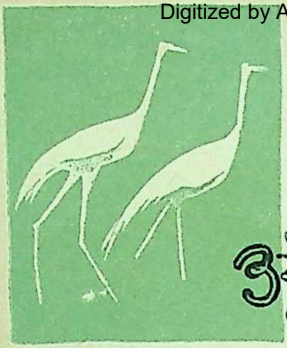

दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त आदिम शिला-चित्रों का कला-जगत् के एक सर्वमान्य समीक्षक द्वारा विवेचन। शीर्षक के साथ बत्सुटोलैंड की प्रसिद्ध बुशमन कलाकृति 'सारस-युगल' की अनुकृति है।

अफ्रीका की शिलाचित्र

सर हर्बर्ट रीड

दक्षिण अफ्रीका के विभिन्न प्रदेशों में तथा सहारा मरुस्थल में पाये गये प्राचीन शिला-चित्रों ने पुरातत्व के जगत् में एक एसी समस्या उपस्थित कर दी है, जिसका अभी तक समाधान नहीं हो पाया है। शैली की दृष्टि से ये चित्र स्पेन क पूर्वीय भाग में लेरिडा से काडिज तक पाये गये गुहा-चित्रों से मिलते-जुलते हैं और इनमें कुछ ऐसी विशेषताएँ है, जो इन्हें पुराश्म-युगीन गुहा-चित्रों से पृथक् करती हैं। इनमें मनुष्य एकाकी नहीं, अपितु समूह में चित्रित किये गये हैं, अन्य मनुष्यों तथा पशुओं के साथ उनका सम्बंध दिखाया गया है।

ये चित्र मैसोलिथिक युग के माने गये हैं। पुराश्म और नवाश्म युग के बीच का समय मैसोलिथिक माना जाता है। इस युग के चित्रों की शैली में सर्वत्र इतनी समानता है कि, प्रोफेसर सी० बर्किट आदि विद्वानों का मत है कि, जिस जाति ने ये चित्र बनाये हैं, उसका मूल स्थान उत्तरी अफ्रीका है और वहीं से वह उत्तर में स्पेन और दक्षिण में दक्षिण अफ्रीका तक फैली।

दक्षिण अफ्रीका में इस चित्रकला के विकास का श्रेय 'बुशमन' नामक एक खानाबदोश आदिम जाति को दिया जाता है। 'बुशमन' अफ्रीका की मूल जातियों में से एक है और नीग्रो तथा हाटेंनटाट से भिन्न है। शुद्ध बुशमन रक्त आजकल शायद ही कहीं मिलेगा। मध्य अफ्रीका की पिग्मी जातियाँ ही शायद इस चित्रकला के जन्मदाताओं के सच्चे उत्तराधिकारी हैं। वस्तुतः उन चित्रकारों की नस्ल भी अनिश्चित है। निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता कि, वे नीग्रो थे, उनकी त्वचा काली थी। हाँ, इतना तो लगभग निश्चित है कि, वे नाटे थे। उनके बनाये चित्रों में प्राप्त होनेवाले कुछ तथ्य हमें बहुत ही असमंजस में डाल देते हैं।

इस सामग्री का बाकायदा वर्गीकरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

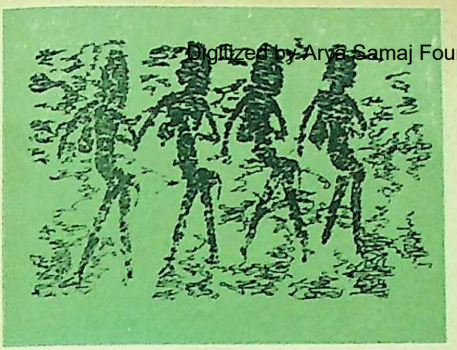

स्त्रियों का जुलूस

टिसिसाब घाटी का एक शिला-चित्र

एवं प्रकाशन होना अभी बाकी है। बेशक स्पेन, सहारा और दक्षिण अफ्रीका के चित्रों के अलग-अलग संकलन एवं विवेचन प्रकाशित होने लगे हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान में (जनवरी १९४२) में फील्ड मार्शल स्मट्स ने एबे ब्रेइल को दक्षिण अफ्रीका में प्राप्त सामग्री का सर्वेक्षण करने के लिए निमंत्रित किया और कैलूस्ट गलबैकियन फाउंडेशन की सहायता से एक शानदार ग्रंथमाला का प्रकाशन भी आरम्भ किया गया।

अब तक इस ग्रंथमाला में तीन संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। सब दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका के नमीब रेगिस्तान में स्थित ब्रैंडबर्ग पहाड़ियोंवाले चित्रों के विषय में हैं। तीसरा संग्रह हाल में प्रकाशित हुआ है और उसमें उन चित्रों का वर्णन है, जिनकी खोज १९०९ में लेफ्टिनेंट वान जोखमन ने टिसिसाब नदी की घाटी में की थी। उसी घाटी में 'ब्रैंडबर्ग की महाश्वेता' (द ह्वाइट लेडी आव ब्रैंडबर्ग) का वह चित्र है, जो एबे की प्रथम पुस्तक का विषय है। एबे ने इस 'महाश्वेता' का वर्णन अत्यंत काव्यमय भाषा में किया है। परंतु डा० कुह्न ने १९३० में यह चित्र देखकर इसमें भी संदेह प्रकट किया कि, यह स्त्री का ही चित्र है। वैसे उस आकृति की लयात्मक सुंदरता पर वे भी मुग्ध हुए बिना नहीं रह सके।

एबे ब्रेइल बड़े माननीय विद्वान् हैं और प्रागैतिहासिक चित्रकला की उन्होंने उल्लेखनीय सेवा की है। परंतु वे अति भावुक हैं; अतः इन शिला-चित्रों का उन्होंने जो विवेचन किया है, वह कल्पनामय अधिक है और वैज्ञानिक कम। वर्णन की सुगमता के लिए चित्रबद्ध आकृतियों और दृश्यों को सुंदर नाम देना ठीक हो सकता है। परंतु एबे ब्रेइल वर्णनात्मक नामकरण से ही संतोष नहीं कर लेते; वे चित्रों की काल्प-

गजराज

लूकहाफ (आरेंज फ्री स्टेट) के पास पत्थर पर खुदी एक बुशमन कलाकृति।

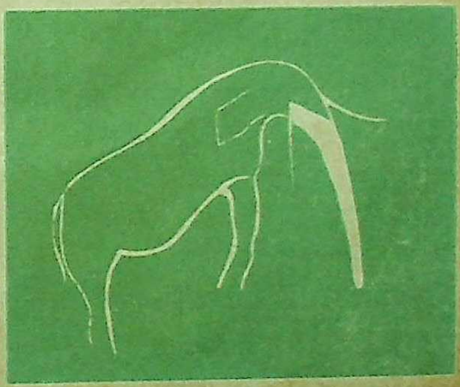

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निक व्याख्याएँ करने लगते हैं। ये व्याख्याएँ भ्रांतिजनक न भी हों तो भी दुविधाजनक तो अवश्य हैं। टिसिसाब घाटी के एक चित्र 'स्त्रियों का जुलूस' की एबे-कृत व्याख्या इसका उदाहरण है।

दूसरे चित्रों की व्याख्या में भी एबे ने इसी प्रकार कल्पना और भावुकता का सहारा लिया है। उदाहरण के लिए, जोर से हाथ हिलाते हुए कुछ मनुष्यों के एक चित्र का नाम उन्होंने 'विवाद-शिला' दिया है। उन्होंने उसे "दैनिक जीवन की एक घटना का विनोदपूर्ण चित्रण" कहा है। उनकी राय में इस चित्र में एक व्यक्ति "तीव्र आवेश में जोर-जोर से हाथ हिलाते हुए गाली और धमकी दे रहा है। दूसरी आकृति (एक स्त्री) बिल्कुल लापरवाही से उसे सुन रही है ..... घर का मालिक धीमे-धीमे वहाँ आता है और एक और व्यक्ति (यह भी ज़ोर-जोर से हाथ हिला रहा है) विवाद का कारण बताता है, जबकि एक अन्य व्यक्ति घर के मालिक से क्षमा माँग रहा है।"

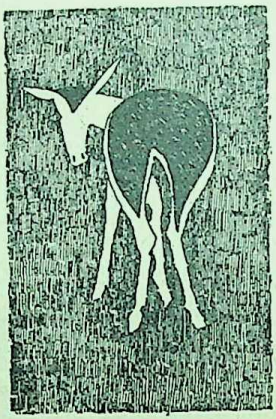

गर्दभ

निवेटवान (नाटाल) स्थित चित्र की टाइलर द्वारा अनुकृति

हमारा आक्षेप इतना ही नहीं है कि, ये व्याख्याएँ काल्पनिक और निराधार हैं। उन पर हमें आपत्ति इसलिए है कि, प्रागैतिहासिक कला की प्रकृति से इन व्याख्याओं का ताल-मेल नहीं बैठता। एबे ब्रेइल के समर्थन में कोई कह सकता है कि, इन चित्रों के बनानेवालों के आचार-विचार और रीति-रिवाज के बारे में जब तक कोई बात निश्चित रूप से ज्ञात न हो, तब तक सभी कल्पनाएँ एक-सी प्रामाणिक एवं वैध मानी जा सकती हैं।

परंतु बुशमनों के बारे में हमें कुछ बातें निश्चित रूप से ज्ञात हैं। उदाहरण के लिए, वे जीवन को जादू टोने की दृष्टि से देखते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि उनकी कला प्रकृति-परक थी, जैसा कि डा० कुह्न ने दिखाया है। बुशमन की दृष्टि में प्रत्येक वस्तु यथार्थ है; प्रतीक या भावात्मक सार नहीं, जैसा कि प्राणवादी नीग्रो की मान्यता है। इसीलिए इस चित्रकला में यथार्थ और यथार्थ की नकल को ही स्थान मिला है। इसमें मूर्तियाँ या देवी-देवता नहीं हैं। जो कुछ भी चित्रित किया गया है, वह दैनिक जीवन के अनुभव में आनेवाली वस्तु है।

और ये दैनिक जीवन के अनुभव एक ऐसी जंगली जाति के हैं, जो खानाबदोश थी, जिसकी जीविका का प्रधान साधन था पशुवध। उसके सारे कर्मकांड और जादू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोने का आधार भी यही पशवध था। वस्तुतः दक्षिण अफ्रीका के अधिकांश शिला-चित्रों की संतोषजनक व्याख्या इस तथ्य के आधार पर की जा सकती है। इसे छोड़ दें, तो मृत्यु और मृत्यु का भय दूसरा विचार है, जो इन प्रागैतिहासिक मानवों के मन पर सदा छाया रहता था। टिसिसाव-घाटी में मिले एक अति आकर्षक चित्र में मनुष्यों को निगलती हुई एक आकृति है। यह माना जाता है कि, यह मृत्यु है। इसके पास ही दो पतले, लम्बे कंकाल चित्रित हैं, जिन्हें एबे ने प्रेतात्माएँ माना है। परंतु उनकी यह व्याख्या उतनी संगत नहीं लगती; क्योंकि आस्ट्रेलिया में पाये जानेवाले शिला-चित्रों में भी मनुष्य शरीर को धागे-जैसा पतला दिखाया गया है। इससे ज्ञात होता है कि, यह एक सामान्य कला-शैली थी। वैसे इन चित्रों में आकार और मुखाकृतियों में बड़ा आश्चर्यकारी वैविध्य है और जादू-टोने के सिवा उनका कोई अर्थ है, तो यही कि, इनके चित्रकार अपनी कल्पना-शक्ति को स्वच्छंद विचरण करने देते थे।

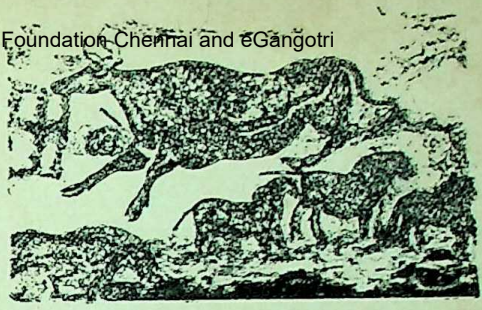

ग्रोट द लास्को के इस विख्यात गुफा-चित्र का दक्षिण अफ्रीकी शिला-चित्रों के साथ शैलीगत सादृश्य दर्शनीय है।

दक्षिण अफ्रीकी शिला-चित्रों का अथवा इस प्रकार के सभी प्रागैतिहासिक चित्रों का वास्तविक अभिप्राय क्या है? यह समस्या अभी बहुत समय तक पुरातत्व तथा नृवंश-विज्ञान के विशेषज्ञों को अपनी कल्पना-शक्ति का उपयोग करने का अवसर देती रहेगी।

परंतु विशुद्ध कलाकृतियों के रूप में तो उनका रसास्वादन किया ही जा सकता है। इन चित्रों के सौंदर्य और ओज (विशेषतः पशुओं की आकृतियों की सप्राणता) को देखते हुए, उनके प्रति वैसा ही उत्साह व आकर्षण दर्शक के मन में भी उठता है, जैसा एबे ब्रेइल के मन में उठा था।

★

साहित्य या बही-खाता ?

एक बार किसी ने विनोबाजी से कहा—"बाबा, आप रोज लिखते जाइये, इससे साहित्य की श्रीवृद्धि होगी।"

विनोबाजी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"भाई, क्या साहित्य कोई बही-खाता है, जो रोज-रोज लिखा जाये?"

— उषा शर्मा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

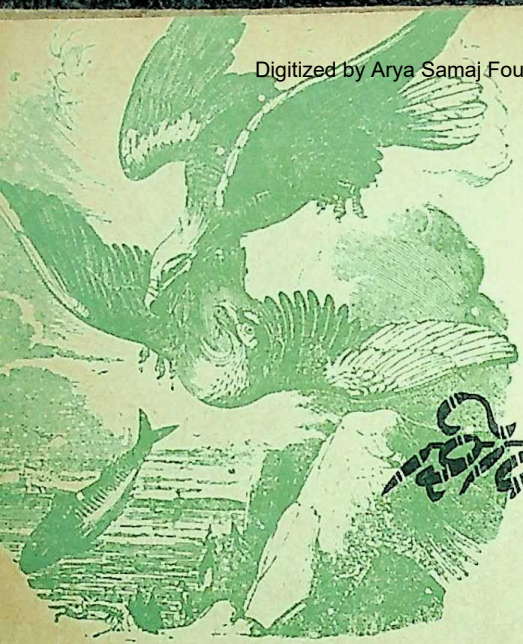

आकाश के शेर उकाबकी अनेक आश्चर्य-जनक कथाओं का रोचक वर्णन

हमारे पड़ोसी उकाब

अनिल देसाई

उकाब, गरुड़ और ईगल वास्तव में एक ही पक्षी के कई नाम हैं। यूनानी पारसी, मिस्री और भारतीय पौराणिक गाथाओं में पक्षिराज गरुड़ का महत्वपूर्ण उल्लख मिलता है। महाभारत में भी गरुड़ के शिकार का वर्णन है कि, किस तरह यह साँपों पर आक्रमण करके, उन्हें साबुत-का-साबुत निगल जाता था। ऐसी भी कई घटनाएँ घटी हैं, जबकि उकाब द्वारा झपटकर उड़ाये गये साँपों ने खुद उसकी ही जान ले ली। मैक्सिको में एक बार एक उकाब बड़ी ऊँचाई से नीचे गिरकर मरा। बाद में लोगों ने देखा कि, मृत उकाब के गले को साँप ने कसकर जकड़ रखा था और यही उसके मरने का कारण भी था।

आंग्ल-इतिहास के सेक्सन-युग में एक बड़ा रोचक प्रसंग पाया जाता है। पश्चिमी सेक्सनों का सम्राट् अल्फ्रेड एक बार शिकार खेलने गया। वहाँ एक जंगल से गुजरते समय उसने किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनी। सम्राट ने आश्चर्य-चकित होकर जब उसका पता लगाया, तो देखा – आवाज एक ऊँचे पेड़ पर स्थित घोंसले से आ रही थी। उसने तत्काल एक कुशल शिकारी को पेड़ पर चढ़ने का आदेश दिया। उकाब के घोंसले में जो सुंदर शिशु लेटा हुआ था और जिसकी भुजाओं में सोने के बाजूबंद पड़े थे, उसे नीचे उतार लिया गया। बच्चे के स्वर्णा-भूषण सिद्ध कर रहे थे कि, वह किसी अभिजात परिवार का था। सम्राट् ने अपनी देखरेख में उसका लालन-पालन करवाया और बड़े होने पर उसे 'अर्ल आव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सल्हम' की उपाधि दी। घोंसले में पालने के कारण ही उसका यह नाम रखा गया।

कहते हैं कि, उकाब तीन हजार फुट से भी ज्यादा ऊँचाई पर उड़ सकता है और दो हजार फुट की ऊँचाई से नीचे पानी में तैरती हुई मछली को देखकर बड़ी तेजी से उसे अपने पंजों में दबोच सकता है। लेकिन पिछली शताब्दी में उकाबों का इतना शिकार किया गया कि, धीरे-धीरे इसका नाम केवल धार्मिक कथाओं और किस्से-कहानियों में ही रह गया है।

एक बड़े उकाब का वजन लगभग बारह पौंड होता है। इसकी लम्बाई तीन फुट तथा दोनों डैनों का विस्तार सात से दस फुट तक होता है। इनमें सुनहरी उकाब सबसे बड़ा, अत्यंत सुंदर और शानदार पक्षी होता है। इसके सिर और गले पर उठे हुए छोटे-छोटे सुनहरे बाल होते हैं। वृद्ध उकाब के सिर पर ये बाल सफेद पड़कर मुकुट की तरह लगने लगते हैं और डैने सिकुड़ने पर पूँछ के अंत तक फैल जाते हैं। इसकी पीले रंग की छोटी-छोटी टाँगें बहुत ही मजबूत होती हैं। जब यह लम्बे नाखून और बड़े मजबूत पंजों में अपने शिकार को जकड़ लेता है, तो उसका बच निकलना असंभव-सा हो जाता है। शेर की तरह उकाब भी शिकार को अकेला खाना पसंद करता है।

उकाब के स्वभाव की विशेषता है कि, वह छोटा-मोटा झपट्टा मारने के बजाय, बड़े शिकार पर पूरा जोर लगाकर टूटता है। इसकी भूख भी गजब की होती है। कई उकाब मछलियाँ पसंद करते हैं; परंतु ज्यादातर उकाब खरगोश भेड़, बत्तखें व ताजा नर्म मांस पसंद करते हैं। उकाब में संग्रह की प्रवृत्ति भी पायी जाती है। ऊँची दुर्गम चट्टानों पर यह अपने बच्चों के लिए या आड़े दिनों के लिए आवश्यकता से अधिक सामग्री जुटाकर रख लेता है। उत्तरी अमरीका के आदिवासी यह मान

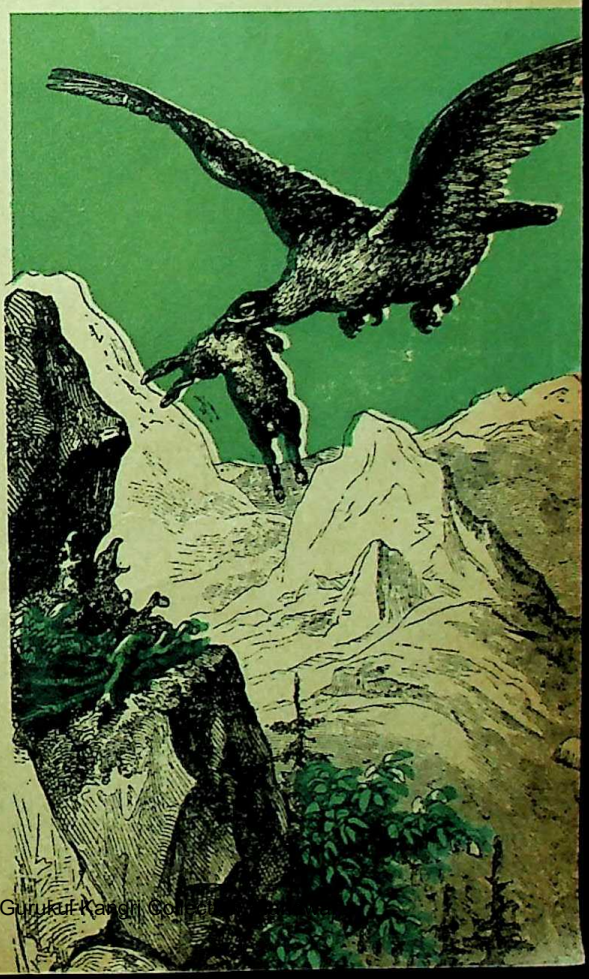

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चलते हैं कि, उकाब का घोंसला उनके लिए खाद्य-भंडार है और कुशल शिकारी यदा-कदा इनके घोंसलों से खरगोश, बत्तखें, चूजें और मछलियाँ आदि बटोर भी लेते हैं।

स्काटलैंड की एक पर्वतीय चट्टान पर, दो उकाबों ने अपने घोंसले में न जाने कितना सामान भर रखा था। जब इनके बच्चे होते, तो घोंसले में बटेर, तीतर, खरगोश, शशक, बत्तखें, साँप, चूहे, बकरी के बच्चे, मेमने और भेड़ें आदि पायी जातीं। ये चीजें एक ऊँची चट्टान पर रखी रहती थीं। जब तक मादा उकाब अंडे सेती, नर ला-लाकर उसे खिलाता और सामग्री इकट्ठी किये जाता; और जब बच्चे उस चट्टान तक चलने लायक हो जाते, तो उकाब उनके लिए जीवित खरगोश पकड़कर लाते और उन्हें शिकार करने व चीरने की शिक्षा देते। कभी-कभी तो ये खरगोश या चूहे इन छोटे उकाबों के पंजों से बचकर जिंदा भाग भी निकलते। एक बार एक लोमड़ी का शावक इन शिशु उकाबों को बुरी तरह काट-नोचकर भाग निकला और घायल हालत में एक गड़रिये के हाथ लगा।

जर्मन-समुद्र में एक चट्टानी द्वीप हेलिगोलैंड-स्थित उकाबों के बारे में कहा जाता है कि, वे बैलों तक का शिकार कर लिया करते थे। पहले उकाब दूर समुद्र की ओर उड़ जाता और लहरों में डूबकर बाद में रेती पर लोटता, जिससे उसके डैनों पर धूल जम जाती। इसके बाद उकाब उड़कर अपने शिकार पर टूट पड़ता और जब आक्रमण की स्थिति आती, तो वह अपने डैने हिला-हिलाकर बैल की आँखों और नथुनों में इस तरह रेत भर देता कि, बेचारा बैल अंधा हो जाता। तेज डैनों की मार से बैल परेशान होकर भड़क उठता और आँखें बंद किये इधर-उधर अंधा-धुंध दौड़ पड़ता। इससे या तो वह थककर गिर जाता या फिर किसी चट्टान से नीचे गिरकर मर जाया करता। बाद में उकाब इत्मीनान से उसके लोथड़े चीर-चीरकर अपने घोंसले में ले जाता।

कई वर्ष पहले इस भयानक पक्षी से छुटकारा पाने के लिए आरकने द्वीपों में एक नियम बना हुआ था—जो भी शिकारी उकाब का शिकार कर लेते, उन्हें कस्बे के हर घर से एक-एक मुर्गी भेंट में दी जाया करती।

हिमाचल और पर्वतीय प्रदेशों में कई बार ऐसी दुःखद घटनाएँ भी घटी हैं, जब उकाब बच्चों को उठाकर ले गया। फेरो द्वीप-समूह के टिर्स्टहोम में एक माँ के सामने सोये शिशु को उकाब उड़ाकर ले गया और उसे ऐसे दुर्गम पर्वतीय शिखर पर ले जाकर रख दिया, जहाँ कुशल पर्वतारोही का भी साहस काँप जाता था। ममता की मारी माँ बच्चे को पाने के लिए पागल की तरह वहाँ जा पहुँची और घोंसले तक चली गयी; परंतु बहुत देर हो चुकी थी—शिशु मर चुका था।

कई बार कुछ लोगों ने अपहृत बच्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को उकाबों के बच्चों के बीच हँसी-खुशी किलकारी मारते जी देखा है। इस दृश्य से तो शिकारियों के हृदय भी ममता से भर गये और उन्होंने उकाब-शावकों को जीवित छोड़ दिया और अपहृत बच्चे को लेकर घर लौट आये।

न्यूयार्क के निकट एक खेत में पाँच और सात वर्ष के दो बालक खेल रहे थे और उनके माँ-बाप पास ही घर में खाना खा रहे थे। अचानक तेजी से एक बड़े उकाब ने झपट्टा मारा और बड़े लड़के को उड़ाकर ले जाना चाहा; लेकिन एकाएक वह निशाना चूक गया और शिकार को पुनः पकड़ने की नियत से कुछ दूरी पर उतर गया। कुछ देर बाद उसने फिर प्रयत्न किया। ये लड़के हँसिया लिये हुए थे, दूसरी बार अपहृत करते ही, वहादुर बच्चों ने हंसिये से उकाब पर प्रहार किया। उसके बाएँ डैने के बीच गहरी चोट बैठी और उसका गुर्दा चिर गया और वह तड़फड़ा कर वहीं ढेर हो गया। इस उकाब का जब पेट चीरा गया, तो पता चला कि, वह बिल्कुल खाली था। शायद अधिक भूखा होने के कारण ही वह ऐसी दुस्साहसपूर्ण हरकत कर बैठा। अगर उकाब भूख से कमजोर न होता, तो उसे इस तरह मार गिराना आसान काम नहीं था, क्योंकि उसकी पैनी चोंच की मार ही इतनी तेज होती है कि, खोपड़ी फोड़कर भेजा बाहर निकाल देती है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★

यह सच है

युगोस्लाविया के एक शराबी की अंतिम इच्छा यह थी कि, लोग उसे एक शराबी की हैसियत से जानें। मृत्यु से कुछ दिन पूर्व उसने अपनी वसीयत में लिखा कि, प्रति वर्ष उसकी बरसी के दिन शराब से उसकी कब्र धोयी जाये और शहर के जो पियक्कड़ आर्थिक कमी के कारण जी खोलकर शराब न पी सकते हों, उन्हें जी-भर शराब पिलायी जाये। सुना है, इन शराबी महोदय की मृत्यु हुए ९६ वर्ष हो गये हैं और वसीयत के अनुसार उनकी कब्र शराब से धोयी जाती है और उनकी कब्र के इर्द-गिर्द बैठकर पियक्कड़ मजे से शराब पीते हैं।

दो वर्ष पूर्व अमेरिका के एक कैदी ने एक पुस्तक लिखी। उसमें उसने वर्णन किया कि, उसने किस प्रकार जाली चेक चलाये, किस तरह सेफ तोड़े और बंद मकानों में किस तरह घुसा। पुस्तक के कारण तहलका-सा मच गया। उसकी एक प्रति पुलिस को मिल गयी। पुलिस ने लेखक महोदय को पकड़ लिया। एक मोटी रकम देकर पुस्तक का कापी राइट ले लिया और भविष्य में इस प्रकार की कोई पुस्तक नहीं लिखेगा, ऐसा इकरारनामा भी लिखवा लिया। इस प्रकार वह पुस्तक बाजार से अवश्य गायब हो गयी; लेकिन उससे लेखक को इतनी रकम मिल गयी कि, वह घर बैठकर खा सके। — कुँ० सरला जैन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सत्य संसार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूना से पंद्रह मील की दूरी पर स्थित खेड़ शिवपुर गाँव में कमर अली दरवेश का मशहूर मजार है। उसके अहाते में दो पत्थर के गोले पड़े हैं – एक ३०० पौंड का, दूसरा २५० पौंड का। बड़े-से-बड़े पहलवान भी इन्हें उठा नहीं पाते। परंतु यदि नौ अथवा ग्यारह आदमी अपनी तर्जनी अँगुलियाँ पत्थर के नीचे लगाकर "करम अली दरवेश" इन शब्दों का उच्चारण करें, तो पत्थर आपही - आप ऊपर उठने लगता है। अन्य किसी शब्द का उच्चारण करने पर पत्थर नहीं उठता।

० ० ०

अठारहवीं सदी का चीनी बौद्ध भिक्षु युएन-टोंग लगातार ६२ वर्ष तक पद्मासन लगाकर बैठा रहा। बाईस वर्ष की अवस्था में उसने यह आसन लगाया और फिर कभी नहीं उठा। १७६० में उसी स्थिति में उसकी मृत्यु हुई। उसी अवस्था में उसे दफन किया गया।

० ० ०

डेनमार्क के कैप्टन एज कारसन ने अपनी पत्नी को तलाक देने के ९२ वर्ष पश्चात् उसी से पुनर्विवाह किया। कैप्टन एज का प्रथम विवाह २० वर्ष की उम्र में १८११ में हुआ था। विवाह के कुछ ही महीने बाद उसने विश्वपर्यटन करने का निश्चय किया और जब पत्नी साथ चलने को तैयार नहीं हुई, तो उसे तलाक दे दिया। अंत में सन् १९०३ में जब वह स्वदेश लौटा, तो उसने अपनी भूतपूर्व बीवी से पुनः विवाह कर लिया। बीच में उस महिला ने और किसी से शादी नहीं की थी। अपने प्रथम विवाह का शताब्दी–उत्सव मनाने के एक वर्ष बाद सन् १९१२ में एज - दम्पति की मृत्यु हुई।

० ० ०

सन् १८२७ में वर्जीनिया (अमेरिका) में एक ऐसा बालक पैदा हुआ, जिसके मुँह में जन्मकाल से ही पूरे ३२ दाँत थे। जब छटे – सातवें वर्ष बच्चों के दूध के दाँत गिरते हैं, तब भी उसके दाँत नहीं गिरे। जब १९२८ में १०१ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई, तब भी उसके सबके सब दाँत मौजूद थे।

० ० ०

बर्मा में पैदा होनेवाला पादौक नामक पौधा बैरोमीटर का काम देता है। वह मौसम की भविष्यवाणी करता है। देखा गया है कि, उसमें फूल खिलने के चौबीस घंटे के भीतर वर्षा अवश्य होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीत-युद्ध का नया क्षेत्र

बम्बई से आधी आबादी का देश लाओस विश्व की अनेक संस्कृतियों का ही सम्मिश्रण स्थल नहीं है, अपितु अनेक राजनीतिक स्वार्थों के संघर्ष का भी केंद्र-बिंदु बना हुआ है। इसी प्रदेश की अनेक कौतुक-भरी प्रथाओं का यहाँ वर्णन है।

एस० जेड० हसन

स्त्री-राज्य की चर्चा हममें बहुतों ने दंत-कथाओं में सुनी होगी; पर मानिये-न-मानिये अंतर्राष्ट्रीय उथल-पुथल के केंद्र लाओस में आज भी 'स्त्री-राज्य' है। वहाँ की रेड व खासी आदि जातियों में नारियाँ ही परिवार की सरगना होती हैं। परिवार की सम्पत्ति उनके ही नाम होती है। वे ही उसे बेच सकती हैं और उनके ही नाम से कोई चीज खरीदी जाती है। परिवार के लिए किस वस्तु की आवश्यकता है, क्या वस्तु खरीदी जायेगी और क्या नहीं—इसका निर्णय नारियाँ ही करती हैं।

वहाँ के पुरुष नारियों की बड़ी इज्जत करते हैं। अगर किसी पुरुष को कुछ खरीदने की इच्छा हुई अथवा किसी को चावल से बनी शराब पीने की इच्छा हुई, तो उसके लिए उसे पहले अपनी पत्नी की अनुमति लेनी पड़ती है। इन मामलों में वहाँ की महिलाएँ साधारणतः उदार होती हैं और अपने पतियों को इजाजत दे ही देती हैं।

उत्सवों और पूजा के अवसर पर जब भोज होते हैं, तो घर की सरगना नारी ही सबसे पहले शराब पीती है, फिर वह अपनी पुत्री और उसके बाद पौत्री को अवसर देती है। सभी महिलाओं के शराब पी चुकने के बाद पुरुषों का नम्बर आता है।

लाओस में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है। इसलिए भी वहाँ विवाह में नारियों को ही अधिक महत्व प्राप्त हो जाता है। विवाह का प्रस्ताव लानेवालों से नारी मोल-तोल कर सकती है। लेकिन विवाह के प्रसंग में नारी को ही पहल करनी पड़ती है। यदि किसी लड़की का लड़के से प्रेम हो गया, तो उसके लिए वह पहले अपने परिवार की सरगना से अनुमति माँगती है। अनुमति मिल जाने पर कन्या पान और कुछ खाद्य-पदार्थ लेकर वर के घर जाती है। यदि वर ने खाद्य-पदार्थ स्वीकार कर लिया, तो उन दोनों के विवाहित हो जाने की बात घोषित कर दी जाती है।

मोई जाति में वर को स्वयं कन्या ढूँढ़ने जाना पड़ता है और कन्या को प्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के लिए उसको पसंद के काफी आभूषण आदि देने पड़ते हैं। इस जाति के लोगों में बलि चढ़ाने की भी प्रथा है। जाति की पुजारिनें (स्त्री-प्रधान जाति होने के कारण वहाँ नारियाँ ही पूजा-पाठ आदि करती हैं) देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलिदान देती हैं और पूजा करती हैं। वहाँ प्रायः हर गाँव में देवताओं के छोटे-छोटे मंदिर देखने को मिलते हैं।

मियो भी वहाँ की एक महत्वपूर्ण जाति है। यद्यपि उनका आवास-स्थल समुद्र-तट से काफी दूर है; पर इस जाति की नारियाँ ऐसे कपड़े पहनती हैं, जैसे जहाजी पहनते हैं। ये लोग वस्तुतः चीन के मूल निवासी हैं और अपने कपड़ों के ही आधार पर विभिन्न वर्गों में बँटे हुए हैं। जैसे लाल कपड़े पहननेवाली, काले कपड़े पहननेवाली, गुलाबी कपड़े पहननेवाली अथवा फूलदार कपड़े पहननेवाली जाति – वे लोग इन्हीं नामों से अपनी उपजातियों की गणना करते हैं।

यद्यपि लाओस का इतिहास अतीत के गर्भ में विस्मृत हो गया है। फिर भी वहाँ का क्रमबद्ध राजनीतिक इतिहास काफी प्राचीन है। लाओस में नाम-चाओ नामक व्यक्ति ने ७१३ ईस्वी सन् में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। १३-वीं शताब्दी के अंत में स्यामवालों ने लाओस क अधिकांश भाग को जीत लिया और उसके दक्षिणी-पूर्वी भाग को अनम (वियेतनाम) के राजा ने अपने राज्य में मिला लिया। उत्तर में स्थित लुआंग-प्रबांग प्रांत की स्वतंत्रता बनी रही; लेकिन १८३० ई० से उसे भी अनम को कर देना पड़ता था।

१८९३ में फ्रांसीसियों ने अनम पर अपनी पताका फहरायी। उसके साथ ही साथ उन्होंने लाओस के उस भाग को भी जीत लिया, जो स्याम के आधीन था। लेकिन साम्राज्यवादी फ्रांस उतने से ही संतुष्ट न हुआ। उसने १९०४ में लुआंग-प्रबांग को भी अपने आधीन कर लिया।

द्वितीय महायुद्ध में, पूरे लाओस पर जापान ने अधिकार कर लिया और उसकी अधीनता में ही वहाँ सरकार बनायी गयी। अगस्त १९४५ में जापान के हथियार डालने के पश्चात् भी यह सरकार स्वतंत्र सरकार के रूप में बनी रही। लेकिन अप्रैल १९४६ में फ्रांस ने पुनः इस राज्य को जीत लिया। १९ जुलाई १९४६ को संधि हुई और फ्रांसीसी संघ के अंतर्गत वहाँ स्वतंत्र सरकार बनी। पर तथाकथित स्वतंत्रता के काल में भी वहाँ फ्रांसीसी सेना बनी रही।

लाओस की इस स्वतंत्र सरकार में लुआंग-प्रबांग के राजवंश के सिबावांग वांग सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त किये गये और राजकुमार सोउवाना फोउमा प्रधान मंत्री थे। पर लाओस की भूमि पर फ्रांसीसियों के रहने और सरकार की फ्रांस-समर्थक नीति के कारण प्रधान मंत्री के भाई राजकुमार सोउफानोन वान ने उस राज्य को स्वीकार करने से मना कर दिया और वियेतमिन्ह की सहायता से उन्होंने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वतंत्र सरकार की स्थापना की। उस सरकार का केंद्र उत्तरी लाओस में था। उसने लाओस पर कई बार आक्रमण किये और उसमें वान को सफलता भी मिली।

मोटे तौर पर वहाँ की कुल उथल-पुथल की यही पृष्ठभूमि है। जुलाई १९५४ में भारत की अध्यक्षता में वहाँ अंतर्राष्ट्रीय शांति-आयोग की नियुक्ति हुई। उस आयोग ने शांतिपूर्ण ढंग से मामला सुलझाने का प्रयास किया। फ्रांसीसी सेना लाओस से हट गयी और वियेतमिन्ह-समर्थित सरकार की सेना भी पीछे हट गयी।

मई १९५८ में वहाँ निर्वाचन हुए; लेकिन निर्वाचन के बाद वहाँ की हालत और ज्यादा खराब हो गयी। आज तो वह विश्व के दोनों शक्तिशाली राजनीतिक गुटों की शक्ति के परीक्षण का अखाड़ा ही बना हुआ है।

भौगोलिक दृष्टि से लाओस के उत्तरी भाग में पहाड़ों की ऊँची-ऊँची चोटियाँ हैं, नदियों की गहरी घाटियाँ हैं और 'टीक' के वन हैं। दक्षिण के मैदानों में मुख्य व्यवसाय पशु-पालन है। उत्तर में एक पर्वत है, जो उसे चीन और बर्मा से पृथक करता है।

वहाँ की मुख्य पैदावार चावल है। इसके अतिरिक्त मक्का, चाय, रबर, तिलहन और गन्ना भी वहाँ पैदा होता है। खनिज पदार्थ भी वहाँ काफी हैं; पर अधिकांश खनिज-सम्पत्ति अभी तक अछूती पड़ी है – केवल टिन ही एक ऐसा खनिज पदार्थ है, जिसका नाम महत्व के साथ लिया जाता है।

लाओस के अधिकांश निवासी बौद्ध हैं और हीनयान सम्प्रदाय के माननेवाले हैं। लाओस की दो राजधानियाँ हैं। एक तो है विएनटियान, जहाँ से शासन-संचालन होता है। यहीं असेम्बली की बैठक होती है। दूसरी राजधानी लुआंग-प्रबांग है, जहाँ राजा निवास करता है।

वहाँ के दो उत्सव बड़े महत्वपूर्ण हैं। एक तो चाँदनी रात में होता है, जबकि लड़कियाँ प्रेम-पर्व मनाती हैं।

दूसरा उत्सव वस्तुतः 'उत्सव' नहीं है; पर वहाँ के लोकजीवन में उसका बड़ा भारी महत्त्व है। जब राज-घराने के हाथी स्नान करने के लिए नदी तट पर ले जाये जाते हैं अथवा मंदिर के सम्मुख भोजन करने के लिए रुकते हैं, तो लुआंग-प्रबांग में एक मेला-सा लग जाता है। सड़कें दर्शकों से इस कदर भर जाती हैं कि, किसी का इस पार से उस पार जाना तक असम्भव हो जाता है।

इस तरह हम देखते हैं कि, लाओस भारत और चीन की संस्कृतियों का संयुक्त रूप है। वंशतः वहाँ के ज्यादातर निवासी चीनी हैं; लेकिन उन पर भारत की प्राचीन संस्कृति की अमिट छाप है। ईस्वी सन् के आरम्भ से ही भारत-लाओस का सांस्कृतिक सम्बंध रहा है। वहाँ के धर्म, कला, दर्शन सब पर आज भी भारत की अमिट छाप देखी जा सकती है।

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

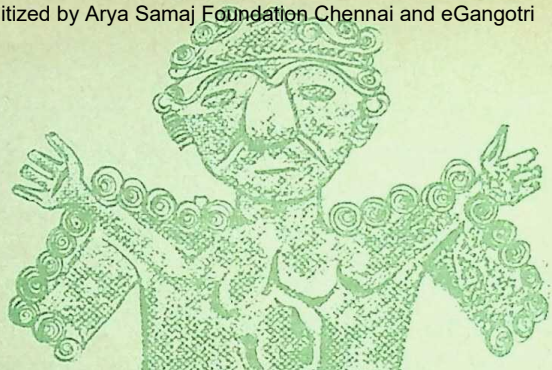

स्वर्ण-नगरी के स्वर्णकोष

जो सोना संसार की समस्त आर्थिक शक्ति का स्रोत बना हुआ है, उसका उपयोग स्वर्णभूमि कोलम्बिया (दक्षिण अमेरिका) के निवासी रेड इंडियन बड़ी उदारता से करते थे।

जीवन सिन्हा

विश्व इतिहास में रुचि रखनेवाले सभी व्यक्तियों ने मेक्सिको और पेरू के सम्बंध में बहुत-कुछ सुना होगा। परंतु कोलम्बिया की क्विम्बाया, चिब्चा और जिमेनेजदे क्विसेदा की स्वर्ण-नगरी के रहस्य अभी तक अश्रुत ही होंगे।

क्विम्बाया जाति हजार-दो हजार वर्ष पुरानी नहीं है; बल्कि इसके अस्तित्व का पता १६-वीं शताब्दी से चलता है। उस समय यह जाति मध्य कोलम्बिया में रहती थी। पर इतने अल्पकाल में ही यह नृशंस और विलासप्रिय जाति अब केवल नामशेष रह गयी है।

पिछले ३०० वर्षों में क्विम्बाया जाति के रहन-सहन का रूप ही बदल गया है। इनके व्यवहार में अनेक विचित्रताएँ थीं। वास्तु-शिल्प का काम बखूबी जानकर भी इन्होंने कभी अपने रहने के लिए पत्थर के प्रासाद नहीं बनाये। सदा झोपड़ियों में ही रहना पसंद किया, किंतु बड़े ही अमीराना ठाठ से। उनकी झोपड़ी के फर्श पर भी पत्थर के स्थान पर सोना जड़ा जाता था। वे सिला हुआ कपड़ा बहुत ही कम अवसरों पर पहनते थे। नहीं तो अपना सामान्य जीवन नंगा ही व्यतीत किया करते थे। फिर उनका शरीर सोने के बहुमूल्य एवं कलापूर्ण आभूषणों से आच्छादित रहता था। वे एक विचित्र प्रकार की भाषा बोलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थ, जिसकी कोई लिपि नहीं थी । इसका परिणाम यह हुआ कि, ऐसी समृद्धशाली, वीर जाति के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करने का कोई साधन उपलब्ध नहीं हो सका है । केवल उनके सम्बंध में स्पेन में प्रचलित दंत-कथाएँ ही एकमात्र साधन-स्रोत रह गयी हैं । थोड़ी-बहुत जानकारी हमें पुरातत्ववेत्ताओं से भी प्राप्त हुई है । क्विम्बाया जाति की भाषा का अब केवल एक शब्द हमारी जानकारी में रह गया है और वह है–"बटाटाबाटी", जिसका अर्थ होता है–आओ, खेलें ।"

स्पेनिश दंत-कथाओं के आधार पर यह पता चला है कि, यह जाति बड़ी ही आमोद-प्रमोदप्रिय थी । जन्म, विवाह, मृत्यु और विजय आदि अवसरों पर उत्सव मनाना इनका स्वभाव था । इन उत्सवों पर वे कपड़ा पहनते थे और जाति का सरदार तथा योद्धा सुंदर परों की कलगियाँ धारण करते तथा सोने का मुकुट पहनते और सीने पर ठोस सोने का बना कवच धारण करते थे ।

वे मक्के से बनी विशेष प्रकार की शराब पिया करते थे, जिसका नाम 'चिचा' था । शराब पी लेने के बाद वे उन्मत्त और स्वच्छंद हो जाया करते थे । फिर वे कुछ भी योग्य-अयोग्य कार्य कर सकने के लिए स्वतंत्र हो जाते । भले ही अपने सरदार को ही बेइज्जत कर दें, अथवा अन्य कोई भी अपराध कर दें; लेकिन कोई कुछ नहीं बोल पाता था । और जब उनका नशा उतर जाता, तो इस बात की वे कतई चिंता नहीं करते थे कि, उन्मत्तता की अवस्था में उन्होंने क्या-क्या कर डाला ।

कुछ देर इस प्रकार आमोद-प्रमोद करने के बाद अचानक ही कोई नारा लगा देता–बटाटाबाटी । और सुनते ही सभी स्त्री-पुरुष हाथ में भाले-बर्छे और तीर-धनुष लेकर अचानक एक-दूसरे पर फेंकने लग जाते । और स्वाभाविक था कि, इस प्रकार के खतरनाक खेल के बाद कुछ लोगों का अंग-भंग हो जाता, कुछ अपनी आँखों से हाथ धो बैठते और कुछ बेचारे तो इह-लीला ही समाप्त कर देते ।

जब वे किसी से युद्ध करने का निर्णय कर लेते थे, तो युद्ध-

धनदेवी

बोगोटो - घाटी में प्राप्त स्वर्ण-प्रतिमा

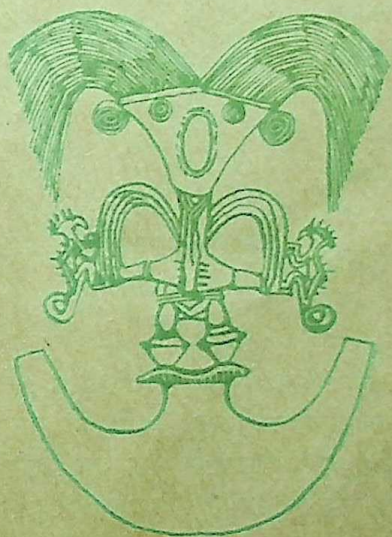

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि में जाने से पूर्व अपने-अपने चेहरे को विविध प्रकार के रंगों से रंग लेते थे। साथ ही अपने मुकुट, पंखों के शिरस्त्राण, अँगुठियाँ तथा सोने के कवच आदि भी पहन लेते। वे बड़े वीरतापूर्वक और अदम्य उत्साह से लड़ाई के मैदान में लड़ते, ताकि उनकी अवश्य विजय हो। वरना वे जानते थे कि, बंदी बनाये जाने पर भीषण यंत्रणा दी जायेगी और कई दिनों के त्रास के बाद शत्रु उन्हें मारकर खा जायेंगे। वे लोग भी अपने बंदियों के प्रति ऐसा ही व्यवहार करते थे।

आज इस विचित्र आदिम क्विम्बाया जाति के आचार-व्यवहार का परिचय देने वाली बहुत कम सामग्री प्राप्त है। बोगोटा – संग्रहालय में उनके जो आभूषण प्रदर्शित हैं, उन्हें देखकर इन आदिवासियों की कला-प्रियता पर आज के सभ्य मानव को भी दाँतों तले अँगुली दबानी पड़ती है।

क्विम्बाया लोगों द्वारा निर्मित बहुत-सी वस्तुएँ आज नष्ट हो गयी हैं। पर बैंक आव रिपब्लिक आव कोलम्बिया ने सन १९३९ में 'बोगोटा स्वर्ण-संग्रहालय' की स्थापना करके इस इतिहास से नष्टप्राय जाति की सभ्यता के प्रतीकों को सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। इस संग्रहालय में आभूषणों के अतिरिक्त मानवाकृतियाँ भी संगृहीत हैं। क्विम्बाया जाति में यह प्रथा थी कि, मृत देह के साथ उस व्यक्ति की स्वर्ण-प्रतिमा भी रखी जाती थी।

उक्त संग्रहालय में सुरक्षित प्रतिमाओं के आधार पर हमें क्विम्बाया लोगों के डील-डौल तथा शरीर के गठन का पता चलता है। ठिगने कद के ये क्विम्बाया बड़े ही हृष्ट-पुष्ट; मांसल और वृषभ - स्कंधीय हुआ करते थे।

क्विम्बाया पुरुष
चिब्चा-सुनारों की कला का नमूना

इस संग्रहालय में क्विम्बाया जाति की स्वर्ण - संस्कृति पर प्रकाश डालनेवाली ६,७०० वस्तुएँ प्रदर्शित हैं। इन संग्रहीत वस्तुओं को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता कि, ये किसी आदिवासी अथवा असभ्य कही जानेवाली जाति की कलाकृतियाँ हैं।

इस जाति के समान ही एक अन्य आदिवासी जाति थी 'चिब्चा'। जो मैराडोलेना नदी के पूर्वी किनारे पर रहती थी और इस जाति की बस्तियों पर सन् १५३८ में स्पेनिशों ने अधिकार कर लिया। इस जाति की संस्कृति भी अब नष्ट हो चुकी है। इस जाति के सम्बंध में खोज–बीन करने और पता लगाने का श्रेय क्वेसदा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोजालो जिमेनेज को है। सन १६३७ की बात है, कोलम्बिया के उत्तरी तट पर स्थित नगर सैंटामार्टा से प्रस्थान करके मैग्डेलेना नदी के उद्गम तक जाने का जिमेनेज ने निश्चय किया। ८० घोड़ों और ८०० आदमियों का पूरा दल लेकर वे अपनी खोज-यात्रा पर चल पड़े।

जिमेनेज की प्रथम यात्रा बड़ी ही कष्ट-प्रद थी। नदी में मगर थे। किनारे पर दलदल थी और जंगल में मलेरिया आदि बीमारियों का बड़ा खतरा था। रास्ते में चूहे और मेढ़क मारकर भी उदर पूर्ति करनी पड़ी थी और इस प्रकार की कठिन यात्रा में उन्हें ग्यारह महीने लग गये।

अंत में वे बोगोटा के मैदान में पहुँच ही गये। जब उन्होंने दूर से चहारदीवारी और लकड़ी के मीनारोंवाले नगर को देखा, तो उन्होंने समझा कि, यह सभ्य लोगों की कोई बस्ती है। पर रास्ते में जिन आदिवासियों को उन लोगों ने पकड़ रखा था, उनसे ज्ञात हुआ कि, इस नगर में सोने की अपार राशि मिलेगी। यह बस्ती 'चिब्चा' लोगों की थी। ये चिब्चा लोग अपने ढंग के हल इत्यादि से खेती भी करते थे और मक्का, आलू आदि उपजा लेते थे।

जिमेनेज ने अपने संस्मरणों में इस जाति की कुछ अद्भुत प्रथाओं का उल्लेख किया है। इस जाति के मर्द एक से अधिक स्त्रियाँ रख अवश्य सकते थे; पर विवाह वे एक से ही करते थे। अगर किसी स्त्री पर उसके कुलटा होने का संदेह होता, तो उसे लाल मिर्च खाने का दंड दिया जाता था। इस दंड से यदि वह अपनी गलती स्वीकार कर लेती, तो उसे छोड़ दिया जाता था।

एक दिन जिमेनेज जब एक सरदार के घर पहुँचे, तो वे यह देखकर चकित रह गये कि, सरदार महोदय एक पेड़ से बँधे हुए खड़े हैं और उनकी पत्नी निर्दयतापूर्वक उन्हें कोड़ों से पीट रही हैं। सरदार ने अपनी पत्नी की इच्छा के विरुद्ध शराब पी ली थी।

इस जाति के लोग तोते को बहुत चाव से पालते थे। वे तोते को बोलना सिखाते और जब तोता खूब बोलने लगता, तो उसे बलि दे देते। उनका विश्वास था कि, मानवीय भाषा सीखे हुए तोते की बलि से उतना ही पुण्य प्राप्त होता है, जितना नर-बलि देने से।

'चिब्चा' जाति के लोग नर-बलि भी देते थे। नर-बलि में उनका आराध्य देव सूर्य होता था। बलि आम तौर पर बच्चों, कैदियों और गुलामों की दी जाती थी।

'चिब्चा' लोग भी सोने का प्रयोग खूब करते थे; पर उनके आभूषण उतने कलात्मक नहीं होते थे, जितने क्विम्बाया लोगों के। ये चिब्चा लोग विनिमय के लिए भी कभी-कभी सोने का प्रयोग करते थे। परंतु अपने देवता के मंदिर में ये हीरे-जवाहरात ही चढ़ाते थे। इनके मंदिर के सामने सोने की बनी एक चौड़ी पट्टी झूलती रहती थी, जिसका अर्थ था कि, यह देव-स्थान है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूल

मसऊद मुफ्ती उर्दू के प्रसिद्ध हास्य-लेखक हैं। छोटी-सी गलती पर इतनी दिलचस्प कहानी गढ़ लेना उर्दू के हास्य-लेखकों की अपनी ही विशेषता है।

मसऊद मुफ्ती

अब आप ही बताइये, इसमें हमारा क्या दोष ! गलती अवश्य हुई। अधिकांश लोगों से हो जाती है। स्वयं हमारे पूर्वज बाबा आदम से भी हुई; लेकिन सितम तो यह है कि, आदम-जैसे बंदे की खता पर उनके खुदा ने इतना शोर न किया होगा, जितना हम-जैसे बनावटी खुदा की भूल पर हमारी ही बंदी कर रही है। शौहराना ढंग से समझौते का कई बार प्रयत्न किया, विश्वास दिलाया कि, गलती से गलती हो गयी है; कृत्रिम क्रोध से डाँटा; एक्टरों के ढंग से बेगम को मारने दौड़े; लेकिन बेगम हैं कि, जबान के हथियारों से हलाकू और चंगेज़ की याद ताजा करने पर तुली हुई हैं और यह नहीं सोचतीं कि, जो व्यक्ति उनके साथ शादी-जैसी भयंकर गलती कर सकता है, उससे छोटी-मोटी दूसरी गलतियाँ हो जाना न केवल सम्भव है, बल्कि क्षमा के योग्य भी है।

हमारे पक्ष में सबसे वजनदार दलील तो यह थी कि, पहले तो यह अपराध हमसे अनजाने में हुआ और दूसरे उस समय हुआ जब हम एक अच्छा पति होने का सबूत देने के लिए बेगम ही की सेवा पर आदिष्ट थे। बात केवल इतनी थी कि, हमारी दर्जन-भर सालियों में से किसी एक के होनेवाले पति का इंटरव्यू था, जिसके बोर्ड में हमें भी बैठना था। भगवान ज़ाने विधाता की क्या इच्छा थी कि, हम उसे चुनें या वह हमें देखकर शिक्षा ग्रहण करे और इस घर का नाम न ले।

अस्तु, इसी उद्देश्य से हम यात्रा कर रहे थे। सौभाग्य या दुर्भाग्य से गाड़ी में हमारी सहयात्री एक महिला थीं। यानी एक तो सहयात्री और फिर स्त्री ! विश्वास कीजिये, यात्रा करने का पता भी न चला। वैसे तो स्त्रियों की उपस्थिति का एहसास उनके जाने के बाद ही हुआ करता है; लेकिन उस दिन इस एहसास को प्रबल करनेवाली वस्तु एक किताबों का बंडल था, जो वह गलती से छोड़ गयी थीं। हमने दूसरे दिन वह बंडल डाक द्वारा उनको भिजवा दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साथ ही उनकी भूल का जिक्र करते हुए एक रस्मी-सा पत्र भी लिख डाला। उन महोदया को हमारा पत्र पुस्तकों सहित मिला। उन्होंने धन्यवाद देते हुए उसका जवाब लिखा। यदि मेरी स्मरण-शक्ति मुझे धोखा नहीं दे रही है, तो खत क्या था—एक सादे से कागज पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं से एक ऐसी आकृति बनी हुई थी, जो केवल तर्क की दलीलों की सहायता ही से शब्द कहला सकती थी। पत्र होने के कारण यह मान लिया गया कि, सबसे पहली दुमकटी लाइन में हमें किसी आदरसूचक शब्द से सम्बोधित किया गया होगा। और पत्र में ऊँकड़ूँ बैठे शब्दों में गुच्छे के सम्बंध में पिछली जानकारी की बिना पर अनुमान लगाया कि, यह उन महोदया का नाम या पता होगा।

हमने उसे पहली दृष्टि में तावीज समझा। दूसरी में बहराम डाकू का कोई गुप्त संदेश। और फिर सोचते रहे कि, इसे क्या समझें। ऐनक उतार कर पढ़ा; लेटकर पढ़ा; कुर्सी-मेज पर सर थामकर पढ़ने का प्रयत्न किया। ऊकड़ूँ बैठकर दिमाग अजमाई की। टहलते-टहलते, आँखें मूंदकर, दीदे-फाड़कर, एक आँख बंद करके इस रहस्य को खोजना चाहा। दीवार पर लटकाया, दरी पर बिछाया। सैंकड़ों सिगरेट फूँक डाले, बच्चों को अनेक बार धुनक डाला। खाना खाते समय कितने ही कौर मुँह के बजाय नाक में दे डाले; लेकिन कसम ले लीजिये, जो इस भावना के अलावा कि, यह एक महिला का खत है, कुछ भी पल्ले पड़ा हो।

इस पर सितम यह कि, बेगम ने कुछ तैमूरी और कुछ माशूकाना ढंग से तकाजा शुरू कर दिया कि, जो रुपये इन निगोड़ी वर्ग पहेलियों पर खर्च करते हो, उनसे मेरी घड़ी का पट्टा क्यों नहीं ला देते? इस तकाजे का अंत तो खैर वही हुआ, जो ऐसे तकाजों का ऐसे मौकों पर हुआ करता है। लेकिन एक सप्ताह तक दिमाग खपाने के बाद हमने भी तंग आकर निश्चय कर लिया कि, उसे अपने पड़ौसी क्लर्क को दिखाना चाहिये। हमने इतनी बुद्धिमानी से अवश्य काम लिया कि, पत्र का आरम्भ और अंत का हिस्सा फाड़कर अपने पास रख लिया और बाकी खत उन्हें दिया, क्योंकि आखिर हम भी तो इज्जतदार आदमी हैं, न मालूम खत में क्या लिखा निकल आये।

अगल दिन हम उनके यहाँ जाने की तैयारी कर ही रहे थे कि, घंटी बजी। बाहर निकले तो उन्हीं सज्जन को प्रश्नवाचक चिह्न बने खड़े पाया। छूटते ही बोले—"यह कागज आपने कहाँ से लिया था?"

"साहब, मेरे एक मित्र ने मुझे पढ़ने को दिया था और मैंने आप से सहायता माँगी।" हमने घबराहट में बात बना डाली।

"तो, भाई साहब!" वह राजदाराना ढंग से बोले—"मेरी मानिये तो यह कागज फौरन उन्हें वापस दे दीजिये और आप इस मामले में न पड़िये।"

"क्यों, कुशल तो है?" हम हक्का-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बक्का रह गये।

"सच पूछिये तो पूरा खत मैं भी नहीं पढ़ सका; लेकिन बीच-बीच में से पढ़ने से विषय का पता चल गया है। यह दरअसल दफ्तर का कोई केस है, जो इन साहब ने किसी पर्सनल फाइल से फाड़ लिया है। पूरा ख़त होता, तो शायद कुछ पता चल जाता। मेरी दोस्ताना राय तो यह है कि, आप यह कागज उनके हवाले कीजिये और अपनी जान बचाइये।"

इसके बाद हमने अपने एक डाक्टर मित्र से सहायता माँगी। एक-दो दिन तो डाक्टर साहब को फुरसत ही न मिली; लेकिन तीसरे दिन जब हम उनकी डिस्पेन्सरी के सामने से गुजर रहे थे, तो वे अंदर से ही चिल्लाये—"अरे भाई, उस तुम्हारे कागज ने बहुत तंग किया। आज लगातार तीन घंटे की मेहनत के बाद पता चला। बस अभी बनाकर आया हूँ।"

"क्या बनाकर आये हैं?"

बोले—"आप सिर्फ चपाती-शोरबा खाइये। खट्टी और बादी चीजों से बचे रहिये। और हाँ भई, एक दवाई तो मिलती ही नहीं थी।" और कुछ क्षण के बाद कम्पाउंडर ने एक बड़े भद्दे रंग की दवाई की शीशी हमारे हाथ में थमा दी, जिसका कार्क मजबूती से बंद होने के बावजूद, दुर्गंध के भपके लपक-लपककर दिमाग को चढ़ रहे थे। और साथ ही उन महोदया का पत्र देते हुए कम्पाउंडर बोला—"यह रहा साहब, आपका नुस्खा।"

यकीन करिये, उस वक्त दवाई पिये बिना ही पेट में जुलाब की-सी स्थिति अनुभव होने लगी। ठीक उसी समय डाक्टर साहब की चीख़ कान में पड़ी—"न, ना ना... अनार हरगिज़ न खाइये। नुकसान देगा। और भाई, यह नुस्खा कहाँ से लिया था। उस डाक्टर से कहिये कि, कम-से-कम किसी बाजाब्ता तरीके से ढंग के कागज पर नुस्खा लिखा करे। यह क्या हिमाकत है.....?"

लेकिन उनकी बात समाप्त होने से पहले हम दुकान से कूदे और दवा की शीशी को गंदे पानी की नाली में फेंककर घर की तरफ़ चल दिये।

अगले दिन सुबह हम अपने एक वकील के यहाँ पहुँचे। जब उन्होंने उसे ध्यानपूर्वक पढ़ने का विश्वास दिलाया, तो हम वापस लौटे। सारा दिन बेचैनी में गुजरा। और अंत में शाम को धड़कते दिल से उनके बंगले पर पहुँचे। वे लान में बैठे अपने मुवक्किलों को फाँसने की कोशिश कर रहे थे। मुझे देखते ही उन्होंने उपस्थित सज्जनों से क्षमा चाही और सारे बंगले को पार करके अलग कमरे में ले गये।

"अरे राम्!" नौकर को ललकारते हुए बोले—"इस तरफ कोई न आये।"

उनका ढंग और स्वर ऐसा था कि हमारा माथा ठनका और दिल में हजारों अंदेशे जाग उठे। मुझे कुर्सी में धकेलते हुए बोले—"मियाँ, मुझ से क्या परदा है जो शुरू और आखिर के नाम भी फाड़ डाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तो मैं फिर भी जान गया हूँ कि, यह एक जनानी लिखावट है। अच्छा यह बताओ कि, खत तुम्हारे ही नाम है ?"

अब कुछ छुपाना व्यर्थ था, अतएव हमने अपराधियों की तरह सिर हिला दिया।

वकील साहब ने नाक से "हूँ" किया, और कुर्सी की पीठ पर सर झुकाकर छत को घूरने लगे। फिर मुझे सम्बोधित करके बोले—"भई माफ करना, लेकिन तुम्हारी पत्नी बहुत सख्त औरत मालूम होती है।"

हम सचमुच उछल पड़े। उनकी विद्वता के दिल-ही-दिल में समर्थक होते हुए हमने सोचा कि, यह कमबख्त तो सब कुछ जान गया है। ऐसी बातें भी जिनका खत से कोई सम्बंध नहीं। बल्कि सच तो यह है कि, शैतान और वकीलों के जिस परम्परागत रिश्ते का आमतौर पर जिक्र किया जाता है, उस पर हमें भी विश्वास होने लगा। लेकिन इस विश्वास की दृढ़ता से अधिक उस पत्र के बारे में हमारी जिज्ञासा चुटकियाँ ले रही थी।

"खैर ! खैर !! कोई बात नहीं। ऐसा ही होता है। पत्नी पहले वर्ष सहयोग सहती है, दूसरे वर्ष सहयोग कराती है—और फिर सारी आयु सहयोग कराती है। कोई नयी बात नहीं। आम तौर पर पत्नियाँ सख्त ही होती हैं; क्योंकि वे समझती हैं कि, उम्र में एक ही तो शिकार सख्ती करने को मिला है...लेकिन, मेरा मतलब है कि, तुम्हारा मामला....यानी बात यह है कि, मामला तुम्हारे हाथ से अब बाहर हो चुका है।"

"क्या मतलब ?" हमने तंग आकर पूछा।

"मतलब यह कि, खत निहायत गुस्से की हालत में लिखा गया है और तुम्हारी पत्नी ने साफ-साफ लिख दिया है कि, वह तुम से सम्बंध-विच्छेद करना चाहती है।"

वकील साहब के हाथ से खत छीनकर हम बाहर को लपके और वह—"सुनो तो, अरे भई, सुनो तो" ही पुकारते रह गये।

बड़ों का कहना है कि, हर तरफ निराश होकर जब कोई व्यक्ति अंतिम प्रयास करता है, तो वह आमतौर पर सफल हो जाता है। हमारे साथ भी यही हुआ। और पंद्रह दिन की सिर-तोड़ कोशिश के बाद वह "लेटिन" कुछ-कुछ हमारी समझ में आने लगी। नतीजा यह हुआ कि, और पंद्रह दिन बाद हम उसका हर अक्षर समझ गये। पूरी इबारत तो खैर परदे की बात है; लेकिन सिर्फ आपको इतना बताये देते हैं कि, इस खत में जो फरमाइश की गयी थी, उसे हमने बाजार से चार किताबें खरीद कर और उन महोदया के पास भेजकर पूरा किया। साथ ही एक खत भी लिखा। आप जानते हैं कि, रस्मी खत तो एक ही काफी होता है और हम तो दूसरा लिख रहे थे।

तीसरे ही दिन साफ टाइप किया हुआ एक खत मिला, जिसका हर अक्षर कई गज दूर से पढ़ा जा सकता था। खत का मजमून यह था :

".....मैं नहीं जानती आप कौन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। मेरी एक सहेली मुझसे वे किताबें माँगकर ले गयी थी, जो आपने पहली बार भिजवायी थीं। मेरा खयाल था, उसने आपसे परिचय होने के कारण ये इसलिए मुझे भेजने को कहा होगा। उस पर मैंने नैतिकता से विवश होकर उन चारों किताबों के मिलने की सूचना दे दी थी। लेकिन आपकी तरफ से किताबों का दूसरा बंडल और खत मिलने पर मैं हैरान हूँ कि, पहली किताबें आपके हत्थे कैसे चढ़ गयीं। मैं आप जैसे.....!"

अधिक क्या लिखें! व्यर्थ ही आपकी तबीयत खराब होगी और कानून के ज्ञाता मानहानि-सम्बंधी कानून की किताबों में ताँकना शुरू कर देंगे। लेकिन झगड़ा सारा इस बात का था कि, वह खत हमारी अनुपस्थिति में बेगम ने वसूल कर लिया था। और अपने बेगमानी अधिकारों का अनुचित लाभ उठाते हुए उसे खोल भी लिया था। नतीजा यह हुआ कि, पिछले चार घंटे से हम कोई तहखाना ढूंढ़ रहे थे और अब बेगम बाल खोले, एक हाथ में खत पकड़े ड्रेसिंग टेबल के सामने खड़ी अपने चेहरे पर क्रीम और हमारे चेहरे पर कालख मल रही थीं। इधर हम यह सोच रहे थे कि, गलती हमारी है, जिससे गलतफहमी में वे किताबें भेज दीं या उन महोदया की जिन्होंने पहला ही खत टाइप करके क्यों न भेजा। —उर्दू से रूपांतर: मुगनी अब्बासी

★

अपनी स्पेनिश पत्नी को जन्मदिन पर देने के लिए उपयुक्त उपहार खोजते-खोजते एक सज्जन पालतू चिड़ियाँ बेचनेवाले की दुकान में जा पहुँचे। वहाँ उन्हें एक अद्भुत अफ्रीकी चिड़िया दिखायी गयी, जो दिखती तो मुर्गी-जैसी थी, परंतु मैना की तरह आदमी की बोली बोल सकती थी। उन सज्जन ने तुरंत एक हजार डालर दुकानदार के हाथ में रख दिये और अपना पता बताते हुए कहा—"तुरंत इसे हमारे घर पहुँचवा दीजिये।" शाम को घर पहुँचने पर उन्होंने पत्नी से पूछा—"एक चिड़िया भिजवायी थी, मिली क्या?" उत्तर मिला—"हाँ, मिली और मैंने उसका मुर्ग-मुसल्लम बनवाया है।"

"अरे बड़ा अनर्थ हो गया। वह चिड़िया तो एक हजार डालर की थी और बारह भाषाएँ बोलती थी!"

इसपर स्पेनी पत्नी ने बड़े आश्चर्य से पूछा—"फिर उस मूर्ख चिड़िया ने मुझे यह बात बतायी क्यों नहीं?"

★

डिब्बाबंद चटनी-मुरब्बे के एक व्यापारी ने हाल में इंग्लैंड के अखबार 'शील्ड्स गेजट' में पुदीने की खुशबू वाला विज्ञापक प्रकाशित कराया है। इस विज्ञापन को छापते समय स्याही में पुदीने का अर्क मिला दिया गया था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान की राहें

१. सुरक्षित काक-पिट :

लाकहीड एयरक्राफ्ट कम्पनी ने वायुयानों के लिए ऐसे काक-पिट (चालक-कक्ष) का निर्माण किया है, जो संकट-काल में वायुयान से अलग किया जा सकता है। कैपस्यूल-जैसा यह काक-पिट चारों ओर से सुरक्षित रहेगा और घर्षण तथा वातावरण के दबाव से चालक की रक्षा करेगा।

धरती से १९ मील ऊँचाई पर, शब्द से चार गुना वेग से चलते हुए सुपरसानिक वायुयान का चालक एक बटन दबायेगा। तुरंत कैपस्यूल के तीन पुछल्ले निकल आयेंगे। और तभी कैपस्यूल के साथ लगा राकेट आधे सेकेंड के लिए भभक उठेगा और जोरदार धक्के के साथ कैपस्यूल वायुयान से अलग होकर ऊपर उछलेगा। थोड़ी देर बाद पैराशूट खुल जायेगा। यदि कैपस्यूल पानी पर उतरा, तो तैरने लगेगा। कैपस्यूल में आक्सिजन-यंत्र, संदेश भेजने के लिए रेडियो-यंत्र तथा प्राण-रक्षा के लिए आवश्यक अन्य उपकरण रहेंगे। १९६४ से यह काक-पिट सुपरसानिक वायुयानों में लगाया जाने लगेगा।

२. जेबी जलशोधक :

एक छोटा-सा नया उपकरण 'प्योरिफिल्टर', जिसका हाल में पेटेंट लिया गया है, यात्रियों की प्यास की समस्या हल कर देगा। पानी कितना भी गंदा या दूषित हो, उसे यह साफ कर देगा। 'प्योरिफिल्टर' में एक छोटी, चपटी, गोल डिबिया और रबर की नली होती है। नली के बीच एक गेंद होता है। नली का एक सिरा डिबिया से जोड़ दें और दूसरा पानी में डालकर गेंद को दबायें, तो डिबिया में पंद्रह औंस पानी पहुँचेगा। वहाँ वह दो चलनियों में से गुजरेगा, जो उसमें स्थित मैल और रोग-कीटाणुओं को रोक लेंगी।

३. समुद्र से मीठा जल :

सागर से मीठा जल प्राप्त करने के लिए एक नयी चलनी का आविष्कार भारतीय वैज्ञानिक श्री शौरिराजन् और उनके साथी सिडनी लोब ने कैलिफोर्निया विश्व-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालय में मिला है। यह पानी एक पतली झिल्ली के रूप में है। इसमें अत्यंत सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जो पानी में घुले नमक के कणों को पार नहीं होने देते। एक वर्ग फुट झिल्ली से दिन में आठ गैलन पानी साफ किया जा सकता है।

४. 'भारी पानी' से कैन्सर-चिकित्सा :

अणु-भट्ठी में काम आनेवाले 'भारी पानी' की माँग शायद कुछ समय बाद और बढ़ जायेगी। इलिनाय्स (अमेरिका) की आरेगान नेशनल लैबोरेटरी में किये गये प्रयोगों से प्रकट हुआ है कि, 'भारी पानी' कैन्सर की चिकित्सा में उपयोगी होगा। 'भारी पानी' में हाइड्रोजन के अणु का प्रभार सामान्य हाइड्रोजन अणु से दुगना होता है। वह अणु-भट्ठी में अणुओं के विभक्त होने की रफ्तार कम करता है। 'भारी पानी' शरीर में कैन्सर के कोषों की वृद्धि की रफ्तार को भी नियंत्रित करता है।

५. कैन्सर से कोई मुक्त नहीं :

कार्नेल विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० जार्ज टी० पैक की यह खोज कम भयोत्पादक नहीं है कि, प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन-काल में एक-न-एक बार कैन्सर से अवश्य पीड़ित होता है। डा० पैक का कहना है कि, मानव-शरीर में कैन्सर-प्रतिरोध की प्राकृतिक व्यवस्था होती है। उससे कैन्सर उग्र रूप नहीं धारण करता और यह पता नहीं चलता कि, वह कब आया, कब गया।

६. कीड़ा-मार कागज :

संदूकों और अलमारियों में घुसकर [illegible] कपड़ों का सत्यानाश करने वाले कीड़ों को मारनेवाला एक कागज न्यूयार्क के स्टैंडर्ड पैकिंग कारपोरेशन ने तैयार किया है। यह कागज देखने में सुंदर है, सुगंधित भी। इसे संदूक या अलमारी की दीवारों पर आसानी से चिपकाया जा सकता है। जो भी कीड़ा-पतंगा कागज को छुएगा, मर जायेगा।

७. रबर का हृदय :

वह दिन दूर नहीं जब हृद्रोगों के मरीज अस्पताल जाकर रबर के हृदय लगवायेंगे। हृदय के अत्यंत महत्वपूर्ण भागों में मुख्य चार वाल्व, जो रक्त के आगमन-निर्गमन का नियंत्रण करते हैं। जब किसी कारण ये अपनी कार्यक्षमता खो बैठते हैं, मनुष्य अनेक रोगों का शिकार हो जाता है। परीक्षणों से पाया गया है कि, रबर के वाल्व प्राकृतिक वाल्वों जैसी ही दक्षता से काम कर सकते हैं और वे ज्यादा टिकाऊ भी होते हैं।

८. मनुष्य-निर्मित रेडियो-वलय :

रेडियो-संदेशों को अधिक दूरगामी और शक्तिशाली बनाने की एक योजना एम० आई० टी० के वैज्ञानिकों ने तैयार की है। पतल धातु के तार के आधे इंच लम्बे खरे टुकड़े राकेट की सहायता से अंतरिक्ष में इस तरह भेजे जायेंगे कि, वे हजारों मील की ऊँचाई पर पृथ्वी की परिक्रमा करने लगें। धरती से भेजे गये रेडियो संदेश इन कणों से टकराकर लौटेंगे और सारी धरती पर सुने जा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवानी को जाने न दें

आत्मा अमर ही नहीं 'अक्षर' भी है; क्षय केवल देह का होता है; निस्तेज केवल इंद्रियाँ होती हैं—इस शास्त्रोक्त सत्य को जाननेवाला व्यक्ति सदा जवान रहने के निम्न-लिखित संदेश को अनायास जीवन में चरितार्थ कर लेगा।

मोहनजीत सिंह

मिलिट्री में हर किसी को जवान माना जाता है। वहाँ भला बूढ़ों का क्या काम? सरदार जवाहरसिंह मिलिट्री के अवकाश-प्राप्त अफसर हैं। पेन्शन पाते ग्यारह साल हो गये; लेकिन वे अब भी अपने को जवान मानते हैं।

अभी उस दिन हमारे एक मित्र के घर शादी थी। जश्न हो रहे थे। सरदार जवाहर सिंह वहाँ आये हुए थे। मैं भी वहीं था। कुछ नौजवानों ने उन्हें घेरा, तो बातों-बातों में एक ने उनकी आयु पूछ डाली। वे छूटते ही बोले – "आई एम ओनली सिक्सटीसिक्स ईअर्स यंग।" (मैं केवल छासठ साल का जवान हूँ।)

सुनते ही सब मुस्करा दिये। मुझे उनकी बात में से कुछ खोजने की इच्छा हुई। फिर उन्हीं से मैंने पूछा – "छासठ साल की आयु में जवान कैसे हैं?"

वे बोले – "मैं समझता हूँ अभी बूढ़ा नहीं हुआ। तभी तो आप-जैसे जवानों की महफिल में बैठकर मुझे आनंद आता है।"

वे इस आयु में भी शारीरिक स्वास्थ्य के लिहाज से पूर्ण स्वस्थ हैं। अपने सभी कार्य स्वयं करते हैं।

जवानी में उत्साह, साहस, उमंग भरपूर होते हैं। किसी का सहारा लेने की इच्छा नहीं होती और शेर से भी भिड़ जाने का साहस होता है।

साधारणतः बाल पक जाने को बुढ़ापे का आगमन कहा जाता है। लेकिन वास्तविकता कुछ और ही है।

एक दिन सरदारजी के घर उनसे मिलने गया, तो वे अपनी कोठी के लान में अपनी युवा पुत्री सरन के साथ बैडमिंटन खेल रहे थे। मुझे आते देख उन्होंने खेल छोड़ दिया और ड्राइंग रूम में आ बैठे। उनके जवान रहने का रहस्य मैं जान गया था।

स्वभावतः उम्र तो आपकी बढ़ेगी ही और जीवन के प्रत्येक आयु-विशेष में करने लायक काम भी बदलते रहेंगे। इस तथ्य को अस्वीकार करना कि, आपकी उम्र बढ़ रही है, सरासर मूर्खता है।

मेरे मित्र सरदार साहब, जिनका मैं ऊपर उल्लेख कर आया हूँ, यह मानने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से इन्कार नहीं [illegible] करना पड़ता । वैसे रही है ; लेकिन उनके जवान होने का प्रमाण हमें मिल ही जाता है । जब हम देखते हैं कि, उनके कदमों में फुर्ती है, आँखों में तेज है और मस्तिष्क में तीव्र ग्रहणशीलता है । वे जवानों की तरह सोचते हैं । उनका मस्तिष्क जवान है और उनकी जिंदा-दिली उनके शरीर को भी जवान बनाये हुए है ।

हमारे देश में एक पुरानी कहावत चली आती है कि, जवानी जाकर नहीं आती और बुढ़ापा आकर नहीं जाता । और अब यह कहावत तो क्या, नियम बन गया है और हम सब इस नियम के सामने घुटने टेकते आये हैं ।

लेकिन मेरी बात मानें । यदि आप जवानी को जाने ही न दें, तो बुढ़ापा आयेगा ही नहीं । आप कहेंगे, क्या अटपटी बात कह दी, जिसका सिर न पैर ।

तो सुनिये साहब, यह बात अटपटी नहीं है ; बल्कि रहस्यों से भरपूर है । आप मेरे मित्र हैं, इसलिए आपको यह रहस्य बताता हूँ । च्यवन महर्षि ने आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व सदा जवान रहने का नुस्खा बताया था । लेकिन आप उसे अपने ऊपर आजमा नहीं पाये ; क्योंकि उसकी सेवन-विधि टेढ़ी है ।

बरसात हो चुकने के बाद आप बाजार जाते हैं, तो अपने साफ कपड़ों का जरा खयाल रखकर चलते हैं—कहीं छींटे न पड़ जायें । ऐसा करने के लिए आपको कोई विशेष [illegible] नहीं करना पड़ता । वैसे ही यदि आप जवान रहना चाहते हैं, तो कुछ नियमों को सदा याद रखें और कभी भी उनकी अवहेलना न करें ।

पहला सूत्र है कि, आप अपनी चाल धीमी न करें, अपने को बूढ़ा कभी न समझें, तो बुढ़ापा आपके पास फटकेगा नहीं । पोलैंड-निवासी प्रसिद्ध अभिनेता-निर्माता स्टालस्की ने १०९ वर्ष की आयु तक बखूबी रंगमंच पर नाटक प्रस्तुत किये हैं तथा स्वयं भी उनमें भाग लिया है ।

बुढ़ापे के आगमन के साथ ही लोग धीमे चलने लगते हैं, धीमे वाहनों पर सवारी करते हैं । लेकिन स्टालस्की १०९ वर्ष की उम्र में भी अपनी चाल को धीमी नहीं होने देना चाहते थे, तभी तो कुछ दिन पहले एक नयी अभिनेत्री का अभिनय देखकर उन्होंने कहा था—" काश, मैं फिर से ९० वर्ष का हो जाता ।" ९० वर्ष भी उनके लिए युवावस्था है ।

दूसरा सूत्र है, दुनिया के प्रति अपनी आसक्ति बनाये रखना। अनासक्ति भी वृद्धावस्था को आमंत्रित करती है । प्रसिद्ध दार्शनिक जान ड्यूई से उनकी ९०-वीं वर्षगाँठ पर बातचीत करते समय एक डाक्टर ने कहा — " दर्शन ? दर्शन में क्या रखा है जी ? बताइये क्या रखा है ? "

ड्यूई ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया - " दर्शन का एक लाभ तो यह है कि, उसके अध्ययन के बाद पहाड़ों पर चढ़ाई सम्भव हो जाती है ! "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहाड़ों पर चढ़ाई सम्भव हो जाती है? अच्छा, मान लिया यहाँ लाभ है दर्शन का, तो भी प्रश्न शेष रह जाता है कि, पहाड़ों पर चढ़ाई से ही कौन-सा लाभ है?"

"लाभ यह है कि, एक पहाड़ पर चढ़ने के बाद दूसरा ऐसा पहाड़ दिखना आरम्भ हो जाता है, जिस पर चढ़ना कठिन प्रतीत होता है और उसकी चढ़ाई समाप्त हुई कि, फिर तीसरा ऐसा पहाड़ दिखाई पड़ जाता है, जिस पर चढ़ना और भी कठिन प्रतीत होता है। पर जब पहाड़ों पर चढ़ने की रुचि समाप्त हो जाती है, तब समझ लेना चाहिये कि, जीवन में अब कुछ शेष नहीं रहा!"

जब रुचि समाप्त हुई, तो जीवन-सफर की भी समाप्ति समझें; लेकिन जब तक आपमें रुचि है, तब तक आप जवान हैं।

तीसरा सूत्र है कि, आप जवानों का-सा दृष्टिकोण अपनाये रहें और जवानों तथा बच्चों में दिलचस्पी लें। प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी ७१-वीं वर्ष-गाँठ के अवसर पर दिल्ली से प्रसारित टेलिविजन प्रोग्राम के दौरान में बताया — "आश्चर्य होता है कि, इस उम्र में भी बुढ़ापा मुझ पर अपना असर नहीं डाल सका। स्वतंत्रता-संग्राम के दिनों में गांधी-जी के साथ मिलकर बड़े-बड़े कामों में उलझने का अवसर मिला, जिसमें हमें छोटी-छोटी बातों को भूल जाना पड़ता था। तभी से छोटी बातों को मस्तिष्क में न आने देने की आदत पड़ गयी है। दूसरा कारण है बच्चों के प्रति मेरा प्रेम। मुझे पहाड़ों, जानवरों, पक्षियों, पेड़ों और पुष्पों में बहुत दिलचस्पी है।"

प्रायः यह देखा गया है कि, जब लोगों की उम्र बढ़ जाती है, तो दुनिया के प्रति उनका दृष्टिकोण बदल जाता है और नयी पीढ़ी की वे तीव्र आलोचना करने लग जाते हैं। हम साठ साल की उम्र में एक मील दौड़ नहीं सकते, नदी को तैरकर पार नहीं कर सकते; लेकिन इनके बारे में सोचकर आनंद तो ले ही सकते हैं।

चौथा सूत्र है, आप दुनिया से अपना सम्पर्क न टूटने दें। मित्रों के बीच अपना स्थान बनाये रहें। वरना एकाकी जीवन आपको खा जायेगा। यदि हम जवान रहना चाहते हैं, तो जीवन और समाज के बीच सामंजस्य रखना ही होगा।

पाँचवाँ और सबसे महत्त्वपूर्ण सूत्र यह है कि, आप सदा प्रसन्न रहें और अन्य लोगों के लिए कुछ किया करें। समाज के हेतु किये जानेवाले कामों में समय का उपयोग करने में आपको बड़ा आनंद आयेगा। इस आनंद से आपको जवान रहने की अद्भुत शक्ति मिलेगी। इन्सान जब तक किसी के उपयोग का है, तब तक वह जवान रहना चाहता है।

इस प्रकार जवानी काफी हद तक हमारी विचार-दृष्टि पर निर्भर है। इसका सम्बंध जितना शारीरिक शक्ति से है, उतना ही मानसिक स्थिति से भी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

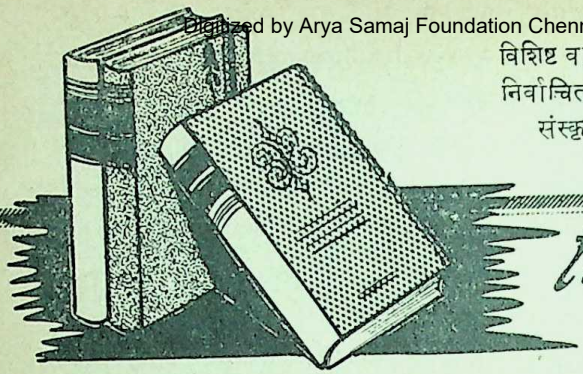

विशिष्ट वाङ्मय योजना की निर्णायक समिति द्वारा निर्वाचित दो ग्रंथों–'वैदिक विज्ञान आर भारतीय संस्कृति' तथा 'अछूता प्यार' परिचय।

विशिष्ट वाङ्मय

वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृतिः

लेखक : म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी; प्रकाशक : बिहार–राष्ट्रभाषा–परिषद्, पटना; पृष्ठसंख्या २९५; मूल्य ५ रुपये (सजिल्द)।

वैदिक ऋचाओं का अर्थ करना सामान्य विद्वान् का कार्य नहीं है। सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि, वेदों में एक ही शब्द अनेक अर्थों में प्रयुक्त होता है। सबसे अधिक प्रयुक्त "अग्नि" शब्द सर्वाधिक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। प्रसंग-भेद एवं विशेषण-भेद से यद्यपि शब्द के वास्तविक अर्थ का ज्ञान सम्भव हो जाता है; किंतु जब तक अन्वेषक को वैदिक परिभाषाओं का सम्यक् ज्ञान न हो, तब तक कोई भी अन्वेषण-कार्य पूर्णतया प्रामाणिक नहीं हो सकता।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक महामहोपाध्याय श्री गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी वैदिक भाषा के विद्वान् अन्वेषक हैं। उन्होंने 'वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति' ग्रंथ में वेदों के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक पक्ष का सुंदर विवेचन किया है। वैदिक परिभाषाओं की जो व्याख्या विद्वान् लेखक ने की है, वह यद्यपि सर्वथा मौलिक नहीं है; किंतु उनका प्रतिपाद्य विषय बिल्कुल नया है। ग्रंथ में अनेक प्रश्नों का समाधान मिलता है। त्रयी-विद्या क्या है; मनु-तत्व से क्या अभिप्रेत है; यज्ञाग्नि क्या है; सूर्यमंडल, चंद्रमंडल आदि में क्या विभिन्नता है; त्रेताग्नि, संवत्सराग्नि, यज्ञाग्नि, वैश्वानर अग्नि आदि में क्या भेद है – इत्यादि अनेक प्रश्नों के समाधान में ग्रंथकार को पूरी सफलता मिली है।

वैदिक भाषा में प्रतीकों का महत्व समझते हुए ही लेखक ने सृष्टि-क्रम के वैदिक विज्ञान का अनुसंधान किया है। वेद में गौ मातृत्व या प्रजनन का प्रतीक है। विश्वमाता को कामधेनु कहा गया है। इसलिए प्राणिमात्र की जितनी माताएं हैं, सबको गौ की संज्ञा दे दी गयी है। सूर्य की रश्मियाँ भी गौएँ हैं। सूर्य की उष्णता से ही पृथ्वी गर्भिता होती है। वाणी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

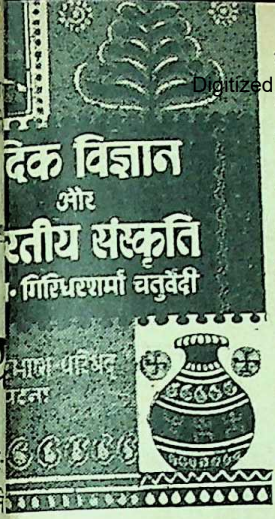

गौ है ; क्योंकि वह मन रूपी वृषभ से गर्भित होती है ।

वेदों की इस तत्व - निरूपण शैली ने समस्त भारतीय साहित्य और चिंतनधारा को प्रभावित किया है ।

प्रसंग के अनुसार विद्वान् लेखक ने ऋचाओं के आधार पर वेदों के वैज्ञानिक शिल्प पर भी प्रकाश डाला है। भारतीय संस्कृति, वर्ण-व्यवस्था, संस्कार, पर्व आदि विषयों पर भी लेखक ने आकर्षण शली में विचार किया है ।

जो पाठक वैज्ञानिक शैली से वैदिक ऋचाओं का अध्ययन करना चाहते हैं,उनके लिए यह ग्रंथ बहुत उपयोगी है और बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्-ग्रंथमाला की श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक है । **–स०का०वि०**

★

अछूता प्यार

लेखक : मामा वरेरकर; अनुवादक : रामचंद्र रघुनाथ सर्वटे; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, दिल्ली; पृष्ठसंख्या : २६३; मूल्य ४ रुपये ।

मराठी के प्रख्यात नाटककार एवं उपन्यास-लेखक मामा वरेरकर-लिखित 'विकारी वात्सल्य' उपन्यास का यह हिन्दी रूपांतर है । इस उपन्यास का कथानक मनोवैज्ञानिक समस्यापूर्ण है । मूल कथानक कुछ भिन्न-सा है । एक एकांतप्रिय गृहस्थ स्वास्थ्य-लाभ के लिए माथेरान गये हुए थे । वहाँ उन्हें एक पांडुलिपि मिली । उससे यह स्पष्ट था कि, पहले वहाँ पर रहनेवाली किसी स्त्री ने अपने मनोरंजन के लिए उसे लिखा था । परंतु वह पांडुलिपि अधूरी थी । यहाँ तक कि, उसका अंतिम वाक्य भी पूरा नहीं था । वह उस स्त्री का आत्म-चरित्र था । लेकिन उसने स्वयं को संबोधित करके नहीं लिखा था ।

उसका असली नाम चिंगी था । उसके पिता राजस्व-न्यायालय के प्रधान कर्मचारी थे; परंतु कुछ कारणों से उनकी नौकरी अचानक छूट गयी । चिंगी के पिता की सारी जमीन-जायदाद की देखभाल करनेवाला एक दादबा नाम का असामी था । उसके जनी नाम की एक लड़की और नारू नाम का एक लड़का था । लड़का बम्बई के जिस परिवार में घरेलू नौकर का काम करता था, उसी परिवार की ललिता नाम की लड़की से उसका प्रेम हो गया । जब प्रेम-प्रकरण की बात लोगों को ज्ञात हुई, तो ललिता की माँ और भाइयों ने उसे घर से निकाल दिया और वह पागल हो गया । चिंगी ने निश्चय किया कि, वह बम्बई जाकर ललिता को अवश्य ढूँढ़ निकालेगी । साथ में जनी भी जाने को तैयार हो गयी । जनी का हृदय ललिता को देखने के लिए बड़ा व्याकुल था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौकरी छूट जाने के कारण मनोहर पंत बम्बई जा रहे थे। उन्हीं के साथ ये भी बम्बई जा पहुँची। मनोहर पंत के पड़ोस के ब्लाक में ही एक छोटा परिवार—पति-पत्नी और एक बच्चा-रहता था। संयोग से पड़ोसिन और चिंगी का परिचय हो गया और चिंगी को यह भी पता लग गया कि, यही वह ललिता है, जिसकी खोज करने वह बम्बई आयी है।

इसके पूर्व ललिता के पिता माधवराव, मनोहर पंत के आफिस में वरिष्ठ अधिकारी थे। उनके आदेशानुसार दादवा अपनी पत्नी तुलसी के साथ नारू को लेकर उसे पागलों के हास्पिटल में भरती कराने जा रहा था।

नारू को पागलों के हास्पिटल में भरती कराकर दादबा और तुलसी घर आये। उस समय रात में मनोहर पंत ने छुपकर उनसे मुलाकात की। उनकी रात की बातचीत को चिंगी ने सुन लिया और उसे मालूम हो गया कि, नारू मनोहर पंत से उत्पन्न तुलसी का पुत्र है।

जब ललिता को मालूम हुआ, तो वह नारू से मिलने के लिए बैचैन हो उठी। ललिता के पिता ने डाक्टर की अनुमति प्राप्त कर नारू से उसकी खूब अच्छी तरह मुलाकात करा दी। ललिता की संतान नारू की संतान थी।

ललिता और उसकी कन्या की नारू से मुलाकात का परिणाम अच्छा हुआ। धीरे - धीरे उसकी चेतना पुनः लौटने लगी। वह चिंगी से बार—बार मिलने लगी।

ललिता के पति को संदेह होने लगा और उसने ललिता को मारना-पीटना प्रारम्भ कर दिया। नारू के घर आने के समय ललिता के पति ने उसे घर से निकाल दिया

उधर नारू को घर लाना मनोहर प के लिए सम्भव न था। उनकी पत्नी पाग शूद्र को अपने घर रखना पसंद नहीं कर इसलिए वे लोग चिंगी के शिक्षक आन राव बर्वे के घर ठहरे। बर्वे उपनाम ब्राह्मणों का होता है, यह समझकर चि की माँने उसके विवाह की अनुमति दे दी परंतु अंत में जब ज्ञात हुआ कि, बर्वे ब्राह्म नहीं जाति के दर्जी हैं, तो चिंगी को घर से निकाल दिया गया।

उपन्यास—लेखक ने विषय परिस्थिति में उत्पन्न निर्मल प्रेम - सम्बंध को कसौ बनाकर जात-पात की विवेंचना की है।

उपन्यास का अंत पाठकों के मन में ए ज्वलंत समस्या की तरह उठ खड़ा हो है और यहीं से उसका चिंतनशील मान विचलित हो उठता है। एक नयी दिशा विचार करने के लिए, समस्या के समाधा के लिए, सबके अपने-अपने हल होंगे; पर उपन्यास की यही सबसे बड़ी सफलता कि, पाठक का सारा चिंतन इसी ओर मु जाता है कि, इसका समाधान क्या है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दर्पण के दरारे

विष्णु प्रभाकर

प्रिय याज्ञिक,

उस दिन तुमसे कुछ कहना चाहता था; लेकिन कह न सका। उसी को आज लिखकर कह रहा हूँ। जानता हूँ, इस कहानी में जिन व्यक्तियों का जिक्र है, वे सब अभी इस दुनिया में हैं। उनसे क्षमा माँग लेता हूँ; क्योंकि कहानी वास्तव में उनकी नहीं है; यों तो मेरी भी नहीं है, मेरे मन की है। विज्ञान के इस युग में 'मैं' और 'मेरे मन' को आसानी से अलग किया जा सकता है। कभी-कभी तो मैं अपने ही भीतर तीन-तीन, चार-चार व्यक्तियों की खोज पा लेता हूँ।

लेकिन जाने दो इस मनोविज्ञान को। कहानी सुनो। जानते हो, जब अनेक कठिनाइयों के बाद मेरा विवाह हुआ, मुझे कितनी बधाइयाँ मिली थीं। हर बधाई मेरे दिल को गुदगुदा देती थी। और मैं यही अनुभव करता था, जैसे मैं बहुत खुश हूँ। लेकिन क्या सचमुच मैं खुश था?

एक दिन मैंने अनुभव किया, जैसे मेरे अपने अंतर में कोई मुझे पुकार रहा है। पहचाना, वह मेरा मन था। बोला—"तुम खुश दिखाई देते हो; लेकिन हो नहीं।"

चकित स्वर में मैंने पूछा—"कैसे रे?"

वह मुस्कराकर बोला—"तुम्हारी पत्नी सुशिक्षित है; परंतु उसका रूप? क्या वह तुम्हारे योग्य है?"

एकबारगी काँप उठा—"छिः छिः क्या बोलते हो! तन का रूप दो दिन की शोभा है। मैं जिस रूप का उपासक हूँ, वह हृदय में बसता है।"

मन क्रुद्ध हो गया। एकदम बोला—"तुम झूठे हो।"

"मैं?"

"हाँ तुम।"

मैंने शांत स्वर में कहा—"नहीं, नहीं, मैं सच कहता हूँ। विज्ञापन में रूप का शब्द तक नहीं था। मैंने सदा यही माना है कि, शरीर की सुंदरता से बढ़कर हृदय की सुंदरता है।"

विद्रूप की हँसी हँसते हुए उसने उत्तर दिया—"यही तो; यह बात तुम इसीलिए कहते थे कि, तुम रूप के अनन्य उपासक हो। बार-बार के इन्कार का अर्थ है—तीव्र वासना।

मैं सिहर-सिहर उठा। कुछ कहना चाहा; लेकिन वह बीच ही में बोल उठा—"न, न, व्यर्थ चेष्टा मत करो। प्रमाण मेरे पास हैं। अनेक प्रार्थी हाथ जोड़कर तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

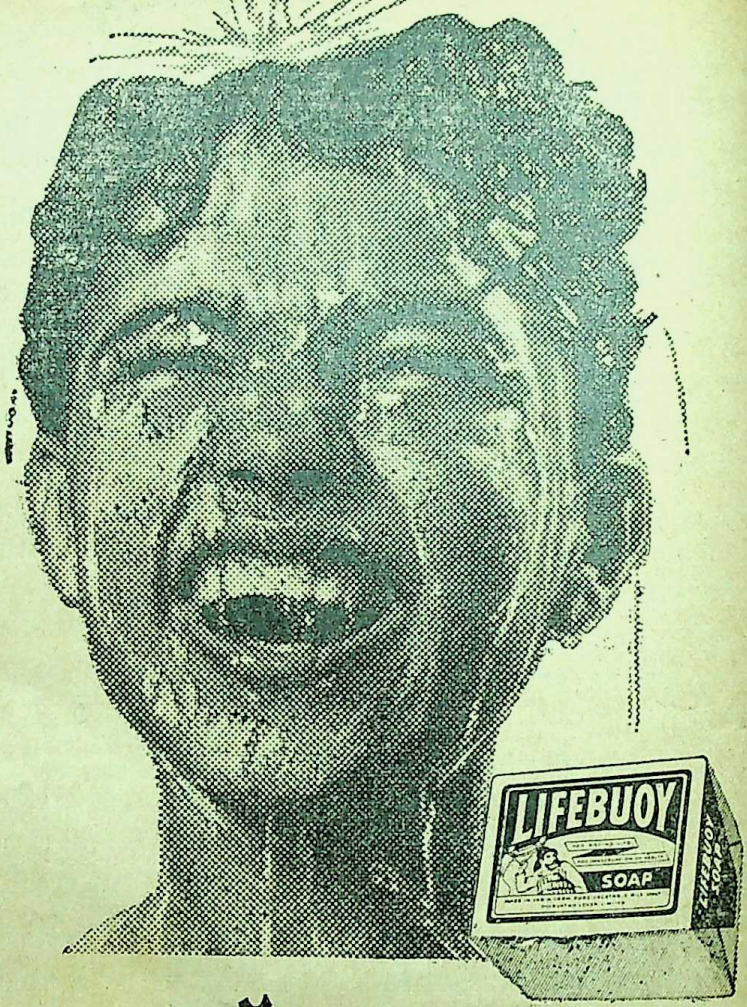

लाइफ़बॉय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहां!

लाइफ़बॉय से नहाने का आनन्द ही अनोखा है!
ऐसी ताज़गी मिलती है कि तबीअत खिल उठती है।

आप काम-काज में लगे हों या खेल-कूद में, गन्दगी से नहीं बच सकते। लाइफ़बॉय का भरपूर झाग गन्दगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है और आपकी तन्दुरुस्ती की रक्षा करता है। आज ही से घर भर की तन्दुरुस्ती के लिए लाइफ़बॉय इस्तेमाल कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास आते थे कि, तुम उनकी लड़की का हाथ थामकर उन्हें मुक्ति दो; लेकिन तुम थे कि, सदा उनकी उपेक्षा करते रहे। तुम्हारा एक ही उत्तर था—'अभी विवाह नहीं करूँगा, क्षमा कर दें।' लेकिन जानते हो, तुम्हरी वह क्षमा-याचना उन अभागी कन्याओं के अभागे पिताओं के लिए क्या अर्थ रखती थी ?"

मैंने एकाएक तीव्र स्वर में कहा—"तुम झूठ बोल रहे हो। तब मैं सचमुच विवाह करना नहीं चाहता था। मैं उनको बुलाने नहीं जाता था। वे गिड़गिड़ाते क्यों थे ? लड़के की राह क्यों नहीं देखते थे ?"

मन ठहाका मारकर हँसा—"लड़की-वाला लड़के की राह देखे। अपने को धोखा देना तुम खूब जानते हो। क्योंकि दुनिया तुम्हारा आदर करती है; क्योंकि तुम्हें विश्वास था कि, कोई रूपसी एक-न-एक दिन तुम्हारे द्वार पर प्रार्थी बनकर आयेगी....."

मैं चीख उठा—"चुप रहो !"

मन ने अत्यंत मृदु स्वर में कहा—"उत्तेजित होना अपराध को स्वीकार करना है। क्या तुम्हें याद नहीं कि, उस दिन जब तुम दफ्तर से लौट आये थे, तुम्हारी माँ न तुमसे क्या कहा था ?... अब क्यों बोलो ? मैं ही कहता हूँ। तुम्हारी माँ ने कहा था—"तू पढ़ी-लिखी लड़की चाहता है, वह सचमुच पढ़ी-लिखी है। इसी वर्ष मैट्रिक किया है। प्रभाकर भी कर चुकी है। घर का काम-धंधा खूब जानती है। सीधी ऐसी है कि, सदा जमीन में दृष्टि गड़ी रहती है। और सुना है, रूप में देवी है।".....तब जानते हो क्या हुआ था ? तुमने एकाएक कहा था—'हूँ', बोलो, कहा था न ?"

मैं तब था भी और नहीं भी। उत्तर न दे सका। उसी ने कहा—"यही लड़की तुम्हारी पत्नी है। यही लड़की है, जिसके कारण तुम्हें शत-सहस्र बधाइयाँ मिल रही हैं।"

मैंने गर्दन नीची कर ली। मानो सिर झुकाकर उसकी सभी बातें स्वीकार कर लीं। लेकिन दूसरे ही क्षण मैं काँप उठा और तीव्र स्वर में बोला—"लेकिन यह तुम हो, जिसने यह आग लगायी है। यह तुम ही हो, जिसने मेरे शांत जीवन में अशांति के अंगारे दहकाये हैं। हाँ तुम ही।"

क्षण-भर के लिए जैसे तूफान आ गया। लेकिन जब शांत हुआ, तो मन वहाँ नहीं था। मैं एकाएक फुस-फुसा उठा—"देवी का रूप।" मुझे याद आ गया कि,

उदासी के क्षण

चित्रकार : मकबूल फिदा हुसैन

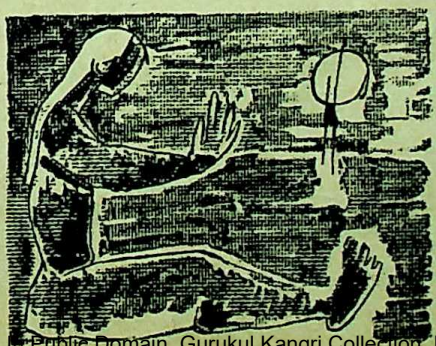

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें गुण की परख है वे हमेशा **'लोमा'** ही पसंद करते हैं, फिर देश हो या विदेश, कुछ भी क्यों न हो। **'लोमा'** के उत्कृष्ट गुण का प्रमाण उसकी बढ़ती हुई बिक्री ही है। अब यह अन्तरराष्ट्रीय बाजार की वस्तु बन गया है और दुनिया के करीबन हर हिस्से को इसका निर्यात होता है। निर्यात के जरिये बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत तो होती ही है, इसके अलावा अन्तरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय माल की उत्कृष्टता का उदाहरण कायम हुआ है। हर जगह लाखों लोग पूरे विश्वास के साथ **'लोमा'** इस्तेमाल करते हैं और लाखों बोतलों की संख्या में **'लोमा'** की बिक्री उनके विश्वास का प्रमाण है। यह बालों को श्याम बनानेवाला आदर्श तेल है।

विश्व भर में प्रशंसित बालों को श्याम बनानेवाला तेल

लोमा

एकमात्र एजेंट्स : **एम. एम. खम्भातवाला** अहमदाबाद-१

एजेंट्स : **सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,** बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जब प्रथम दर्शन के समय मैंने अपनी पत्नी को देखा, तो जैसे मैं चौंक उठा था। देवी का रूप, देवी का रूप यह !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन कह चुका था कि, मैं रूप का उपासक नहीं हूँ। इसलिए इस निराशा को पीकर भी मैं परम शांत बना रहा। परंतु रजनी की दृष्टि बड़ी तीव्र थी। एक दिन उसने एकाएक पूछा—"एक बात बताओगे ?"

मैंने मृदु मंद स्वर में कहा—"पूछो।"

वह बोली—"सच बताओगे न ?"

"तुमसे झूठ बोलूँगा ?"

"तुम सुंदर पत्नी चाहते थे न ?"

मैं इस प्रश्न के लिए एकदम तैयार नहीं था। विमूढ़-सा बोल उठा—" किसने कहा तुमसे ?"

"मेरे मन ने।"

"नहीं, नहीं। तुम सुंदर हो। सुंदरता शरीर की नहीं, हृदय की होती है।"

उसके रोम-रोम से कृतज्ञता जैसे बरस आयी हो। जैसे वह मेरे भीतर सिमटना चाहती हो। मेरी आँखों में प्यार का काजल लगाती हुई बोली—"सच कहते हो ?"

"सच प्रिये।"

"मेरे प्रियतम।"

कहते-कहते उसने मेरे चरण छू लिये। मैं हिल-हिल आया। क्योंकि तभी छाती के भीतर बैठा कोई बोल उठा—"लबाड़ी कहीं के।" लेकिन यह आवाज बहुत धीमी थी और ठीक उसी समय मेरे एक मित्र भी आ गये थे; इसलिए मैंने उस ओर ध्यान नहीं दिया। मित्र की शादी अभी हुई थी। कुशल-क्षेम के उपरांत मैंने पूछा—"पत्नी कैसी है ?"

"इसी साल मैट्रिक किया है।"

"सुंदर है ?"

"हाँ।"

"तब मेरी बधाई स्वीकार करो।"

मित्र मुक्त मन खिलखिला आये, बोले—"पत्नी ठीक मिलती है, तो जीवन में रस आ जाता है। मैं भाग्यशाली हूँ। वे सभी लोग सुशिक्षित सभ्य और प्रतिष्ठित हैं। लक्ष्मी की कृपा भी उन पर है।"

"अच्छा। तब तो सचमुच भाग्यशाली हो।"

लेकिन तभी एकाएक मेरा मन कड़ुवा हो उठा। छाती के भीतर का स्वर इस बार तेज था—"सुना, भाग्यशाली यह है। रूप के भुलावे में तुम ठोकरें ही खाते रहे।"

मैंने तीव्रता से गर्दन को झटका दिया। चकित-विस्मित मित्र बोले—"क्यों, क्या हुआ ?"

मैंने कहा,—"कुछ भी तो नहीं।" और मैं फिर बातों में घुल-मिल गया। मित्र ने बताया कि, उसके विवाह के अवसर पर अनेक प्रसिद्ध नेताओं के संदेश आये थे। राजधानी के दैनिक पत्र में विवाह की सूचना छपी थी। और 'हनीमून' के लिए वे मसूरी गये थे।

मैं सुनता रहा और हँसता रहा। जोर से इसीलिए हँसना पड़ा कि, मेरे भीतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

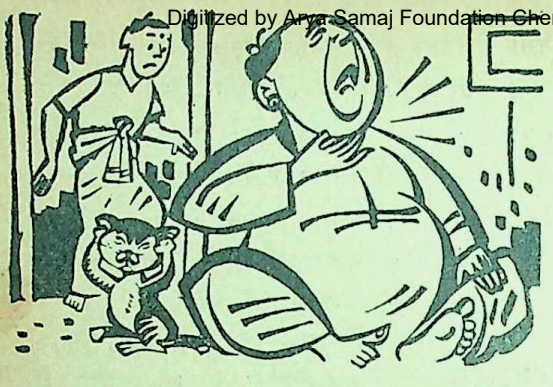

गले में खसखसाहट ?

जरा सा अमृतांजन
लगा दीजिए

अमृतांजन

इससे तुरन्त
फायदा होता है

न जाने कब अमृतांजन की जरूरत पड़ जाय। अपने घर में एक शीशी अवश्य रक्खें। आप इस पर भरोसा रख सकते हैं।

अमृतांजन लिमिटेड

१४/१५, लुज चर्च रोड, मद्रास-४ ; बम्बई-१, कलकत्ता-१ और नई दिल्ली में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा मन जो बैठा था, वह बहुत व्यथित हो रहा था। और बार-बार टोक देता था—"और तुम्हारा विवाह और तुम्हारा विवाह...।" इसका परिणाम यह हुआ कि, मित्र के चले जाने के बाद मैं क्रुद्ध हो उठा। चीखकर बोला—"मैं अभी दफ्तर जाऊँगा। अभी भोजन तैयार करो। तुम रोज देर कर देती हो।"

रजनी ने मृदु स्वर में उत्तर दिया—"आइये न, आपको स्नान ही तो करना है। भोजन तैयार है!"

लकिन उस दिन मैंने स्नान नहीं किया। दफ्तर भी समय पर नहीं पहुँचा। मार्ग में न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहा।

× × ×

फिर एक परिवर्तन मुझ में आ गया। मित्रों के विवाह होते और मैं तुरंत कल्पना कर लेता कि, उनकी पत्नियाँ सभ्य, सुशिक्षित और रूपसियाँ हैं। तब दिल में हूक-सी उठती। इतने ऊँचे स्वर में बधाई देता कि, मित्र लोग भी विस्मित-विमूढ़ मेरी ओर देखते रह जाते। और तब मैं जोर से अट्टहास कर उठता। जब-जब भी मैं अपने मित्रों को पत्नियों के साथ घूमते देखता, तो ईर्ष्या से मेरा तन-मन राख हो जाता।

एक दिन रजनी मेरे पास आयी। साहस बटोरकर अत्यंत मृदु स्वर में उसने याचना की—"आओ घूमने चलें।"

उपेक्षा से मैंने उत्तर दिया—"जाना हो तो तुम जाओ। कृष्ण को साथ ले जाओ।"

वह मेरे पास खिसक आयी। स्वर में और भी मृदुता बटोरकर उसने कहा—"तुम नहीं चलोगे?"

मैं जैसे हिल उठा। उत्तर दिया—"मैं बहुत तेज चलता हूँ और दूर भी जाता हूँ। तुम मेरा साथ न दे सकोगी।"

उसका मन बुझ गया। वह लौटने को हुई, तो मैंने धीरे-से जैसे कोई सुन न ले, कहा—"सुनो, शहर के बाहर मैं तुम्हें मिलूँगा। अच्छा।"

याद नहीं आता। कभी रजनी को साथ लेकर गया हूँ। लेकिन यह खूब याद है कि, जब वह अपने पिता के घर चली गयी, तो मैं न विरह से व्याकुल हुआ, न लम्बे-लम्बे पत्र ही लिखे। एक दिन मैंने देखा—जैसे तारवाला आया है,—"बाबूजी आपका तार है।"

"मेरा।"

"जी हाँ।"

तार लेकर पढ़ता हूँ। लिखा है—"कल

अभिन्न

तू मेरे पास थी
एक दीवार थी हमारे बीच में।
तू जो चली गयी
भीत वह ढह गयी
और तू
मेरे इतने निकट आ गयी—
हमारे बीच अब
स्वप्न के लिए भी स्थान बाकी नहीं।

पंजाबी कविता — **—प्यारासिंह सहराई**
रूपांतर : अमरजीत सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिनोपाल

लड़की से
मित्रता
कीजिए

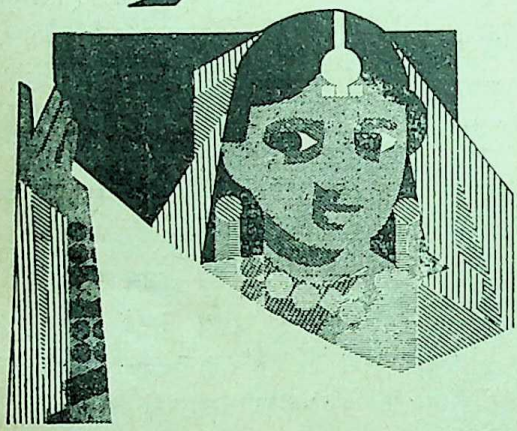

यह लड़की सूती और रेयान के कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनानेवाले आश्चर्यकारी टिनोपाल बीवीएन के खास, नये व आकर्षक खोखे से आपको देख कर मुस्कुराती है।

यह लड़की टिनोपाल की ऊँचे स्तर की गारंटी देती है क्योंकि आपको नकली माल से बचाने के लिए गायगी का ट्रेड मार्क रजिस्टर्ड है।

यह लड़की आपको पारदर्शी प्लास्टिक की मुहरबन्द व सुरक्षित, डिबिया में २५ ग्राम टिनोपाल प्रदान करती है।

टिनोपाल बीवीएन

सफ़ेद कपड़ों
को अत्यधिक सफ़ेद
बनाता है

टिनोपाल जे. आर. गायगी एस. ए. बॉल स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

निर्माता : सुहृद गायगी प्राइवेट लिमिटेड, बड़ी वाड़ी, बड़ोदा
एकमात्र वितरक : सुहृद गायगी ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स ९६५, बम्बई – १

SISTA'S-SG-125

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात अचानक हृदय की गति बंद हो गयी। मैं घर पहुंचा तो विवाह से पूर्व ही मैंने
से रजनी की मृत्यु हो गयी।"

धक्-से रह जाता हूँ। जैसे संज्ञा खो जाती है। माँ ने देखा, घबराकर पूछा—"क्या है रे! किसका तार है?"

"रजनी अब नहीं रही।"

माँ चीख उठी—"क्या कहता है?"

क्षण-भर में कोहराम मच गया। बड़ी साध के बाद पायी हुई बहू को खोकर माँ जैसे पागल हो गयी। शोक प्रकट करनेवालों का अंत नहीं था। लेकिन देखता हूँ, एक दिन इस शोक के स्थान पर एक नई समस्या पैदा हो गयी है। बंधु-बांधव बोले—"संतोष करना ही होगा। अभी उम्र ही क्या है। नया प्रबंध...।"

मैं उन्हें देखता ही रह गया—"क्या कहते हो? फिर विवाह करना होगा?"

वे बोले—"हाँ। यह तो सृष्टि का नियम है।"

मैंने चीखकर कहा—"मैं किसी नियम-वियम को नहीं मानता।"

मुस्कराकर वे मित्र चले गये, दूसरे आ गये और एक दिन अपने निर्णय पर मैं स्वयं चकित हो उठा। मैंने कहा—"विवाह करन में मुझे आपत्ति नहीं; पर इस बार मैं विधवा से विवाह करूँगा।"

मुझे ठीक याद है। विरोध का एक बवंडर उठ खड़ा हुआ। माँ की आँखों से अश्रु-धारा रुकती नहीं थी। लेकिन मैं अडिग रहा। और कुछ दिन बाद पाया कि, मेरी नयी पत्नी परम सुंदरी अक्षतयोनि

उससे भेंट की और अपने विचारों और अपने जीवन की भावी योजनाओं पर एक लम्बी बहस की। स्पष्ट कह दिया—"मैं तुम्हारे रूप के कारण तुम्हारा वरण नहीं कर रहा। मैं तुम से सहयोग चाहता हूँ और जानता हूँ कि, तुम वह सहयोग दे सकती हो।"

वह विवाह नहीं, एक सामाजिक क्रांति थी। नेताओं ने मेरी पीठ थपथपायी। पत्रों ने मेरे चित्र छापे। मित्र बधाई देते और गद्गद् हो उठते। और पहली ही संध्या को प्रभा मेरे पास आकर मृदु-मधुर कंठ में बोली—"उठो, उठो घूमने चलें।"

जैसे मेरे चारों ओर सुगंध महक उठी हो। कहा—"चलो चलो।"

दोनों पैदल ही चले। उस समय का उसका रूप, जैसे रति पृथ्वी पर उतर आयी हो। मैंने अपने होंठ उसके कानों से छुआकर कहा—"प्रिये तुम बड़ी सुंदर हो।"

उसका समूचा सौंदर्य जैसे झिलमिला उठा, सारा मार्ग सुबह की धूप जैसा खिल आया। राह चलनेवालों ने हमारी ओर देखा। दुष्टता से मुस्कराये, दूकानदारों ने सहसा दृष्टि उठायी और चकित-विस्मित देखते ही रह गये। ऊपर खिड़कियों से अनेक हसरत-भरी नजरें हम दोनों पर आ अटकीं। सब जैसे हमारे भाग्य को सराह रहे थे। इसी समय सहसा न जाने कहाँ से कोई आ टपका। कर्कश स्वर में चिल्लाया—"कांत।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AYD 280A HIN

खाँसी
खाँसी
खाँसी

लगातार की खाँसी कितनी कष्टदायक होती है। यह आप को चूर चूर कर देती है तथा आप की रात की नींद हराम कर देती है। खाँसी के पहले लक्षण पर कास्फ़ो का प्रयोग कीजिये। कास्फ़ो की खाँसी की मधुर टिकियाँ गले की ख़राश को फ़ौरन दूर कर देती हैं तथा आराम पहुँचाती हैं।

हमेशा कास्फ़ो की १२ टिकियों के ट्यूब को अपने पास रखिये। कास्फ़ो की टिकियाँ ख़राश, खाँसी या जलन से तुरन्त छुटकारा देती हैं।

कास्फ़ो

कफ़शामक मधुर टिकियाँ

आयुर्वेदाश्रम
फ़ार्मसी लिमिटेड
स्टेशन रोड, अहमदनगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं एकबारगी चौंक उठा। मानो किसी ने मुझे नंदन-कानन से नीचे धकेल दिया हो। मानो मैं नहुष की तरह उल्टे मुंह पृथ्वी पर आ पड़ा हूँ। न वहाँ प्रभा है, न उसका रति रूप है, न मधुर मलयानिल है। बस मैं अपने पलंग पर लेटा हूँ, इधर-उधर पुस्तकें बिखरी हैं। कागज हवा में उड़ रहे हैं, तो...तो यह स्वप्न था। ओह!

सच अगर उस समय मेरे सामने कोई होता, तो मैं उसका गला घोंट देता। पर देखता हूँ, माँ घबरायी हुई ऊपर चली आ रही हैं। "अरे कांत, तूने सुना! फिर दंगा हो गया। स्टेशन पर, कहते हैं पाँच आदमी मर गये।"

मैं ठगा-ठगा सा बोल उठा "कब?"

अभी-अभी प्र का श आया है और यह देख यह तेरी चिट्ठी भी।

मैं अब भी संज्ञाहीन-सा था। चिट्ठी खोली। रजनी की थी। लिखा था—"मेरा जी यहाँ नहीं लगता। मैं कल वहाँ पहुँच रही हूँ।" कल यानी आज? यानी अभी। उसकी गाड़ी तो अभी-अभी आयी होगी।

माँ ने पूछा—"किसकी चिट्ठी है?"

मैंने बताया, तो वह काँप उठी। अब क्या होगा? मैं अब पूर्ण स्वतंत्र हो चुका था। उत्तर दिया—"चिंता मत करो। मैं जाऊँगा।"

और तेजी-से मैं नीचे उतरता चला गया। मैंने हाथ में लाठी ली और निकल पड़ा बाहर। भय से विह्वल माँ बोली—"तू कैसे जायेगा?"

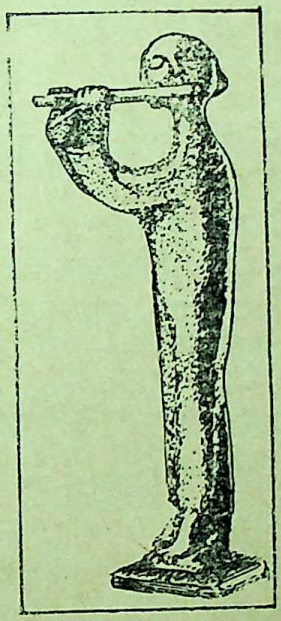

सुप्त स्वप्नों का प्रबोधन

शिल्पी: कुर्ट लहमान

किसी तरह माँ को समझाकर मैं बाहर आया। देखता हूँ—मनहूस सन्नाटा चारों ओर छा गया है। झगड़ का स्थान दूर होने पर भी उसका प्रभाव बड़ा व्यापक है। कस्बे के लोग वैसे भी भय को अधिकाधिक पहचानते हैं। मैं और आगे बढ़ा। लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ता था, तैसे-तैसे सन्नाटा भी उभरता जाता था। मैंने पुलिस को देखा और शहर के दरवाजे तक पहुँचते-पहुँचते उन्होंने मेरी लाठी रखवा ली।

एकाएक तब मेरा मन जाग उठा, बोला—"पागल हो, कहाँ जा रहे हो?"

मैंने उत्तर दिया—"रजनी आ रही है।"

"तो आने दो।"

"वह स्त्री है। घबरा जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तिगत सेवा

दीर्घकाल के अपने अनुभवों से प्राप्त विशेष ज्ञान के बल पर पंजाब नैशनल बैंक आज आपकी सहायता करने के लिये ऐसी अपूर्व स्थिति में है कि व्यक्तिगत रूप से आपकी सेवा कर सके।

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार किया जाता है।

दि पंजाब नैशनल बैंक लिमिटेड

स्थापित : १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन हँस पड़ा—"भूल कहीं कोई यहाँ तो अवसर है।"

मैं एकाएक काँपा—"कैसा अवसर?"

वह शरारत से धीमे-धीमे जैसे मुस्करा रहा हो। मैंने उसकी आँखों में वह शरारत स्पष्ट देखी। क्रोध से काँप उठा। लेकिन दूसरे ही क्षण लज्जा ने मुझे जकड़ लिया। चेहरा राख हो आया। भृकुटि-तर्जन से जैस मैंने अपने आपसे ही कहा हो—"उसे आज आने के लिए किसने कहा था? मैं क्या करूँ? मरती है तो मरे।"

और मैं लौट पड़ा। आश्चर्य, मैं तब भाग रहा था और मेरे साथ विचारों का प्रवाह जैसे मेरे मस्तिष्क को मथ रहा था। एकाएक देखता हूँ—सामने मेरा घर है और घर के द्वार पर माँ खड़ी है। वह कुछ पूछती कि, मैं बोल उठा—"लड़ाई बहुत तेज हो गयी है माँ।"

माँ बोली—"तो अब क्या होगा?"

मैंने भी जैसे उस प्रश्न को दोहराया। [illegible] था। मैं ऊपर चढ़ता चला गया। मैंने अपने कमरे में प्रवेश किया। सामने टंगे रजनी के चित्र को देखा। लगा, जैसे वह बोल उठी है; लेकिन नहीं, वह स्वर मेरी माँ का था। तभी नीचे झाँककर क्या देखता हूँ—रजनी को आगे करके मेरे बड़े साले ने गली में प्रवेश किया है और मेरी माँ का चेहरा प्रकाश से खिल-खिल आया है। लेकिन मैं...।

मैं जैसे था, नहीं। जैसे आकाश टूटकर पृथ्वी पर आ रहा था। जैसे मेरे कमरे की दीवार धरती में धँसी जा रही थी। जैसे मेरे प्राण घुट रहे थे। लेकिन यह क्या? यह किसका स्पर्श? मैंने बड़े कष्ट से धीमे-धीमे आँखें खोलीं और पाया कि, रजनी आकर मेरे चरणों में इस प्रकार झुक गयी है; मानो अब उठेगी ही नहीं।

तुम्हारा—कांत

✶

मणि-मुक्ता

विरूपो यावदादर्शे नात्मनो वीक्षते मुखम्।
मन्यते तावदात्मानमन्येभ्यो रूपवत्तरम्॥

कुरूप मनुष्य जब तक दर्पण में अपना मुँह नहीं देखता, तब तक अपने को सबसे सुंदर समझता है।

एकः स्वादु न भुञ्जीत एकश्चार्थान्न चिन्तयेत्।
एको न गच्छेदध्वानं नैकः सुप्तेषु जागृयात्॥

मिष्टान्न अकेला न खाये; महत्वपूर्ण विषयों का चिंतन अकेला न करे; अकेले यात्रा पर न निकले; जब सब सो रहे हों, अकेला न जागे। —महाभारत से

✶

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

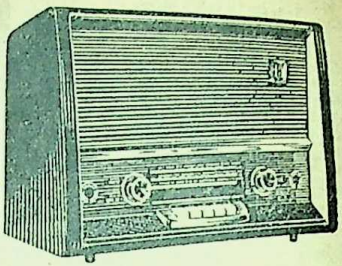

माडल ०३७४ ६ वाल्व. आल वेव-
४ बैन्ड पियानो-की स्विच
एसी या एसी।डीसी (दो माडल)

आप जो भी हों.....

मर्फी रेडियो से आप खुश होंगे

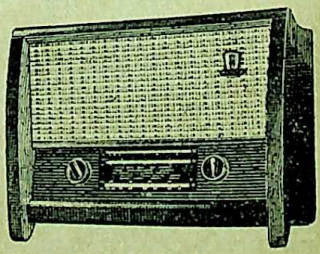

माडल ०३२२ ६ वाल्व. आल वेव-३
बैन्ड एसी या एसी।डीसी (दो माडल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

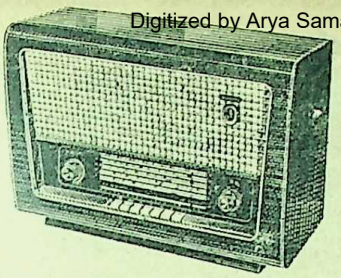

माडल २६६
७ वाल्व. आल वेव-५ बैन्ड
पियानो की स्विच . **एसी**

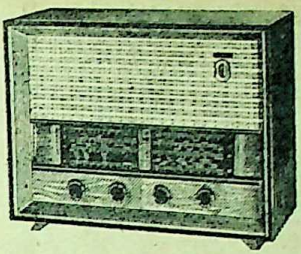

माडल ०७२४
६ वाल्व आलवेव
८ बैन्ड-बैन्ड स्प्रेड
एसीयाएसी।डी-सी (दो माडल)
माडल ०७३७
(ड्राइ बैटरी)
७ वाल्व

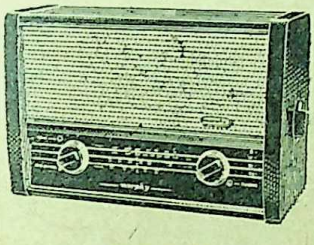

माडल ०३५२
५ वाल्व- आल वेव - ३ बैन्ड
एसी या एसी।डीसी (दो माडल)

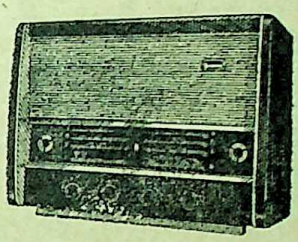

माडल ०७२६
७ वाल्व
आलवेव ८ बैन्ड,
बैन्ड स्प्रेड **एसी या एसी।डीसी**
(दो माडल)

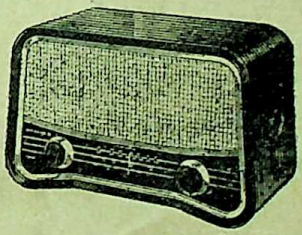

माडल ०७५२
५ वाल्व आलवेव
३ बैन्ड **एसी या एसी।डीसी**
(दो माडल)
माडल ०७५१
(ड्राइ बैटरी)
५ वाल्व

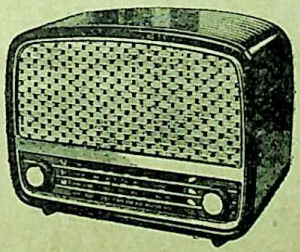

माडल ०२९८
५ वाल्व-आल वेव-३ बैड **एसी।डीसी**
माडल ०२९९ (ड्राइ बैटरी)
४ वाल्व

murphy radio
delights
the home!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अड़तालीसवाँ साल

जेम्स स्टीफन्स

आज वह उत्तेजित था—शायद जीवन में पहली बार। यह इतनी अनहोनी बात थी कि, उसकी पत्नी को सहसा विश्वास ही नहीं हुआ।

उसके सारे कार्य ठोस व्यावहारिकता के धरातल पर होते थे। यहाँ तक कि, प्रेम-विवाह और विवाह के पश्चात् गृहस्थ-जीवन – सब उसी नपे-तुले क्रम से होते रहे। इसलिए आज जब वह भावोद्वेग में भरकर अपनी पत्नी को यह घटना सुनाने लगा, तो बेचारी पत्नी पहले तो कुछ समझ ही नहीं पायी।

उसने जो घटना सुनायी, वह इस प्रकार थी :

"आज दोपहर को जब मैं लंच के लिए दफ्तर से निकला, तो देखा कि, उस तंग-सी गली में भी एक कार पीछे से बड़ी तेजी से आ रही है। एक आदमी आगे-आगे जा रहा था, जो सड़क पार करने के लिए बिना आगे देखे ही घूम गया। मैंने लपककर उस आदमी की बाँह थाम ली। कार पास से घड़घड़ाती हुई निकल गयी। 'अगर मैं पीछे न होता, तो बस आज तो आप गये ही थे।' मैंने उस अजनबी से कहा।"

"दोनों एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्करा पड़े और इस दोस्ती के आधार पर दोनों ने लंच साथ ही किया। लंच के बाद भी काफी देर तक दोनों बैठे रहे। सिगरेट के धुएँ में कई विषयों पर हमारी बातें होती रहीं।"

जब पति उस व्यक्ति का ब्यौरा देने लगा, तो उसे पता चला—उसने यह भी ध्यान नहीं दिया था कि, वह व्यक्ति लम्बा था या नाटा, मोटा था या दुबला, गोरा था या सांवला। उसे याद थीं केवल उस अजनबी की आँखें। उन आँखों में कोई असाधारणता नहीं थीं। पर हाँ उनका देखने का ढंग निराला था।

"लगता है, तुम उसे प्यार करने लगे हो," पत्नी ने हँसते हुए कहा। पर आगे की कहानी तो परियों के किस्से-जैसी थी। पति ने बताया—"उसने मुझसे पूछा कि मेरी उत्कट अभिलाषा क्या है? तुम समझती हो, यह कितना जटिल प्रश्न है। हम लगभग आध घंटा बैठकर इसी पर विचारते रहे।"

"मैंने लगभग वे सब बातें सोचीं जो ऐसा सवाल उठने पर सबसे पहले मन में आती हैं। और वह घिसीपिटी कहावत है न 'हेल्थी, वेल्थी एंड वाइज,' वही मनुष्य की इच्छाओं की सीमा है। मैंने पहले धन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की बात उससे कही। लेकिन सोचने-विचारने पर दोनों इसी नतीजे पर पहुँचे कि, मुझे धन की उतनी आवश्यकता नहीं है।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर धन तो हमेशा काम आता है।" पत्नी ने टोका।

"हाँ ठीक है। पर जरा सोचकर देखो। हमारे कोई लड़के-बच्चे नहीं हैं। हमारी आवश्यकताएँ इतनी कम हैं कि, मेरे वेतन से आसानी से पूरी हो सकती हैं और हो भी रही हैं। अगर काम करना बंद कर दूँ, तो भी शेयरों में इतना काफी लगा रखा है कि, आराम से जिंदगी-भर खाते-पीते रहें। इसीलिए काफी सोच-विचार के बाद मैं इस निश्चय पर पहुँचा कि, मुझे धन की आवश्यकता नहीं है। स्वास्थ्य और बुद्धि के विषय में भी हमने बातें कीं और यही पाया कि, मेरे पास इनकी भी कमी नहीं है। वैसे भी, अगर कहीं अपने साथियों से अधिक बुद्धि पा गया, तो मैं संसार में अकेला पड़ जाऊँगा। जीवन 'बोरिंग' हो जायेगा।"

पत्नी ने कहा—"तुमने ठीक ही किया। वरना तुम अधिक बुद्धिमान् हो जाते, तो मैं क्या करती?"

पति ने कहानी जारी रखते हुए कहा—"जब मेरी समझ में कुछ नहीं आया, तो मैंने उसकी ही राय माँगी। पर वह कहने लगा—"इस काम में मैं आपकी कुछ भी सहायता नहीं कर सकूँगा; क्योंकि हर वस्तु के पीछे कोई उत्कृष्ट अभिलाषा कार्य कर रही होती है और आपकी उत्कट अभिलाषा क्या है, यह आपको ही खोजनी होगी।

"तब मैंने उस अजनबी से कहा—'मान लीजिये कि, मेरे स्थान पर आप हैं और बताइये कि, आप क्या माँगेंगे!" मैं उसकी अभिलाषा की नकल करना नहीं चाहता था; यों ही उत्सुकतावश पूछ रहा था उसने कहा—'मैं तो कुछ भी न माँगता। मैं आश्चर्यचकित रह गया; पर मैंने जितनी गहराई से उसकी बात पर विचार किया, वह मुझे उतनी ही उचित लगी और मैं यही कहने जा ही रहा था..."

"ओ..." पत्नी बीच में बोल उठी।

"सुनो तो पूरी बात," पति अपनी कहानी जारी रखते हुए बोला—"तब मुझे एकाएक ध्यान आया। मैंने सोचा, मेरी आयु अड़तालीस वर्ष की है। मैं काफी सम्पन्न हूँ, स्वस्थ हूँ, जितनी चाहता हूँ उतनी बुद्धि भी है। मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। पर वह क्या चीज है, जो मेरी अपनी है, जिसे मैं हमेशा रखना चाहता हूँ। तब मुझे ध्यान आया कि, दिन-प्रति-दिन, प्रतिघंटा और प्रतिपल मेरा अड़तालीसवाँ साल समाप्ति की ओर बढ़ता जा रहा है। इसलिए मुझे यह ध्यान आया कि, जब तक मैं जीवित रहूँ अड़तालीसवाँ वर्ष ही चलता रहे, तो कैसा रहे। मैंने अमरता के वरदान पर भी विचार किया था। पर अमर रहने से अधिक मूर्खता और बोरियत की चीज क्या होगी? लेकिन जब तक जीवित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य का रहस्य बताया, धन्यवाद !

जैसे कि आपने बताया कि उसकी
नींव बहुत सीधी बातों में है जैसे अपने बाल
सँवारने का प्रतिदिन का साधन होः

स्वस्तिक सुगन्धित कॅस्टर ऑईल

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहूँ; जब तक मेरे शरीर में प्राण रहें, जब तक [illegible] जीवन में स्पंदन रहे, इससे बढ़कर स्पृहणीय चीज क्या होगी ? यह सोचकर मैंने अपनी उत्कृष्ट अभिलाषा प्रकट की कि, मैं जब तक रहूँ, इसी प्रकार रहूँ।"

पत्नी ने क्रोध में कहा—"तुम्हें ऐसी अभिलाषा रखने का क्या अधिकार है, जो मेरे प्रति न्यायपूर्ण न हो ? इस समय तुम मुझसे उम्र में बड़े हो; पर अब तो कुछ ही वर्षों में मैं तुमसे बड़ी हो जाऊँगी !"

"मैंने इस पर भी विचार किया था," पति ने बताया—"लेकिन मैंने सोचा कि, मैं अब उस बचपने को लाँघ चुका हूँ, जब तुम्हारे शारीरिक आकर्षण से मेरे प्रेम में कुछ अंतर पड़ता। अब तो मुझ पर इन आकर्षणों का असर नहीं होता। इसलिए मैंने अपनी अभिलाषा उसे बता दी।"

"उसने क्या कहा ?" पत्नी ने पूछा।

"कुछ भी नहीं। सिर्फ सिर हिला दिया। और फिर हम अपनी बातों में लग गये। धर्म, जीवन, मृत्यु, मन और न जाने किन-किन विषयों पर बातें करते रहे। और सच कहता हूँ, मैं जितना संतुष्ट आज हूँ, उतना पहले कभी नहीं रहा।"

पत्नी मानो सोते से जग गयी और हँसते हुए बोली—"तुम भी निरे बुद्धू हो। कोई हमें इस प्रकार की बातें करते सुन ले, तो [illegible] हँसने लगे।"

वह भी हँसने लगा। फिर दोनों ने भोजन किया और सोने चले गये।

नींद में पत्नी को एक स्वप्न आया। ध्रुवतारे की ओर कोई जहाज जा रहा है कुछ अनुसंधान करने। वह उस पर सवार है। और भी कई लोग जहाज पर हैं। सवेरा होता है। वह बाहर झाँककर देखती है कि, वे किसी बर्फीले प्रदेश में हैं। सब बर्फ में पहने जानेवाले कपड़ों से लैस हैं; पर सर्दी कड़ाके की है। फिर सब लोग जहाज से निकलकर बर्फ पर फिसलने और दौड़ने लगते हैं। न जाने कितनी देर तक यही चलता रहता है। अंत में सब लोग इसे छोड़कर भाग जाते हैं। वह पीछे रह जाती है। और लुढ़कने लगती है, लुढ़कते-लुढ़कते बर्फ के एक विशाल खंड को पकड़ लेती है, दोनों बाँहों में समेट लेती है। अब उसे कहीं कोई नजर नहीं आता—न आदमी, न जहाज। बस बर्फ है और है शरीर को भेदती हुई कड़ाके की ठंड।

उसकी नींद खुल गयी और उसने देखा कि, पति उसकी बाँहों में सिमटा पड़ा है—बिल्कुल बर्फ की तरह ठंडा, लाश की तरह ठंडा।

—रूपांतर : ब्रह्मदेव

★

मैं एक मामूली-सी चीज, दाम धेला भी नहीं, मोल लाख रुपये से ज्यादा। बंद ताले खोलकर अंतराल में चली जाती हूँ, न तो कानून ही भंग होता है और न चोरी। सभी स्वागत में कहते हैं—"आओ सद्भावना।"

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

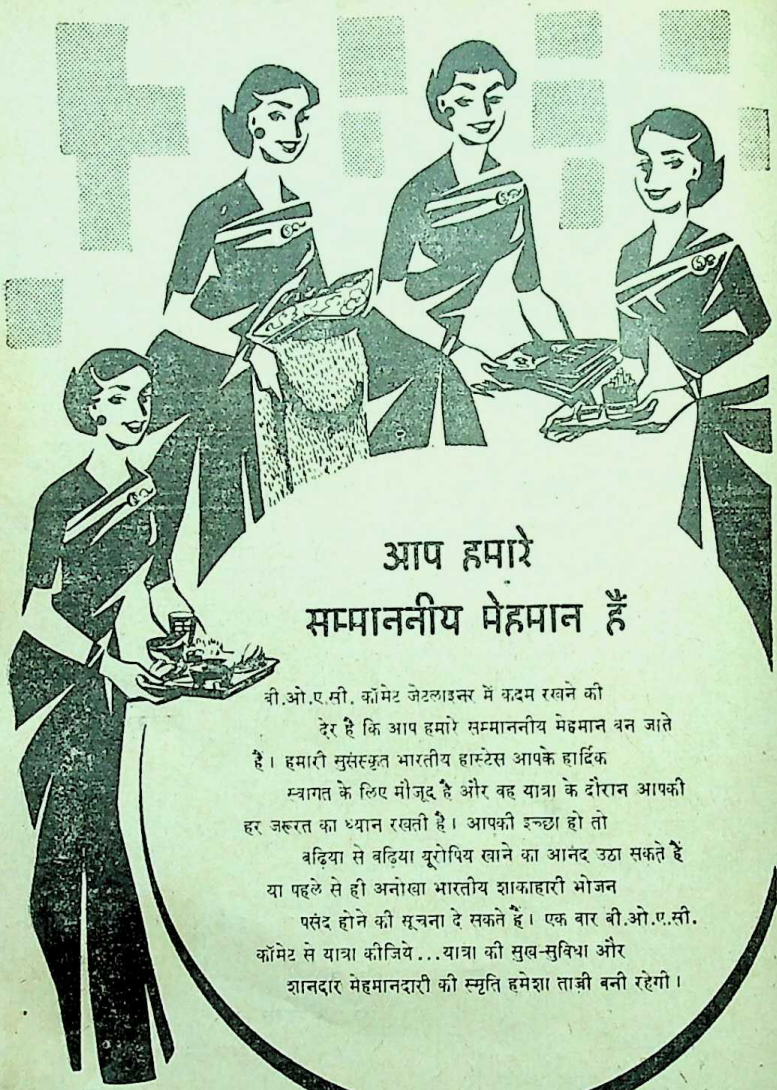

B·O·A·C बी.ओ.ए.सी. दुनिया भर मे आपका ध्यान रखता है

ब्रिटिश ओवरसीज एअरवेज़ कॉर्पोरेशन, एअर-इण्डिया और कान्टास के साथ-सहयोग में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा वैराग्य

आशादेवी

मकान में पाँव रखते ही अनंत को लगा कि, उसने कोई भारी भूल कर दी है। भूल नहीं तो और क्या? हवड़ा स्टेशन से सीधे किसी बड़े होटल में जाकर ठहर जाता। तीन दिन में अपना काम पूरा करके दिल्ली लौट जाता—यतीनदा पता भी नहीं पाते।

लेकिन दुर्बुद्धि समायी, तो हवड़ा में टैक्सी पर चढ़ते ही बागबाजारवाला पता बता दिया। पहले उसने सोचा भी नहीं था। पिछले बारह साल तक दिल्ली में था। ठेकेदारी से काफी रुपया कमाकर बड़ा आदमी हो गया था। बागबाजार के दो कमरोंवाले मकान में वह कैसे रहेगा? आदतें बदल गयी थी, शरीफ आदमियों की तरह बचकर रहना किसको कहते हैं, यह भी अनंत जान गया था। बारह साल पहले कालेज में पढ़ते समय, गाँव के सम्बंधी यतीनदा ने उसे दो-एक साल अपने साथ रखा था। उसी भावुक स्मृति के कारण इस मकान में आया, तो पाँव रखते ही उसके अनुताप की सीमा न रही। दिन का वक्त तो फिर भी काम-धाम में कट जायेगा; लेकिन जिस कमरे में पंखा नहीं, उसमें रात कैसे कटेगी? बैठने से ही जो चारपाई मच-मच करती है, उस पर नींद आयेगी? इसके अतिरिक्त जो चिंता है, वह तो और दुखदायी है।

टूटे हाथवाली कुर्सी पर पायजामा और गंजी पहने अनंत चिंतित-सा बैठा पुराने अखबार से पंखा झल रहा था। तभी चाय लेकर अमला भाभी आ गयीं।

"लो, चाय पी लो। ऐसी चाय तुम्हें अच्छी तो नहीं लगेगी; लेकिन जब गरीब आत्मीय के घर आ ही गये हो तो क्या होगा, बोलो?"

टूटी मूठवाले प्याले में काली चाय और प्लेट में रखे हलुए की तरफ़ ताककर ही अनंत काँप उठा; लेकिन ऊपर से प्रसन्न होते हुए बोला—"क्या कहती हो भाभी? बाबर्ची चाहे जैसी बिरियानी, पुलाव और मुर्ग-मुसल्लम तैयार करे, आपके हाथ के पोय साग या पंचमेल तरकारी की कभी बराबरी नहीं कर सकता।"

बात पर अमला ने पूरा विश्वास किया या नहीं, यह कहना कठिन है; परंतु हँसती हुई बोली—"इतनी अच्छी लगती है, तो पंचमेल तरकारी ही खाओ। असुविधा होने पर मुँह से कुछ कहोगे थोड़े।"

अमला कमरे से चली गयी, तो अनंत कुछ क्षणों तक उदासी से नाश्ते के सामान की ओर ताकता रहा। प्याले की टूटी मूठ के पास कई दिनों का मैल जमा था। चाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो रंग करोड़ हर सतह को

चमका सकता है

वह है शालीमार सुपरलैक

सिन्थेटिक एनामेल

- जल्दी सूखकर कड़ा होनेवाला बेहद चिकना सिन्थेटिक एनामेल
- चाहे अन्दर लगाइये या बाहर
- कूँची से, छिड़क कर या डुबोकर चाहे जैसे लगाइये
- आपस में मिलानेलायक ३८ रगों में

SHALIMAR

JWTSPW 549 HIN

SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH CO., PRIVATE LTD.

Calcutta · Bombay · Madras · New Delhi · Kanpur

(बर्मा और सीलोन को निर्यात करनेवाले)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रंग से ही पता चल जाता था कि, किसी सस्ती चाय से तैयार हुई है। हलुआ बाजारू घी से बना था—खाते ही गले से खट्टी डकारें आने लगेंगी।

दरवाजे की ओर ताककर अनंत ने आधा हलुआ खिड़की के बाहर फेंक दिया। उसके बाद नाक दबाकर गंदी चीज खा जाने के बाद जैसी आवाज़ करते हुए आधी चाय गिरा दी। थोड़ा-सा हलुआ मुँह में रखकर बाकी को भी खिड़की के बाहर फेंक देने की सोच ही रहा था कि, पानी का गिलास लिये अमला कमरे में आ गयी। खूब बच गया—अनंत ने मन ही मन सोचा। जरा-सा और होने पर वह पकड़ा जाता।

अमला के कुछ बोलने के पहले ही अनंत ने कहा—"गजब का हलुआ बना है भाभी, बहुत दिनों से ऐसा खाया नहीं था।"

अमला का मुख चमक उठा। इस हलुए के पीछे दुःख की लम्बी गाथा थी। महीने का अंत है। एक-एक दिन पहाड़ की तरह भारी है। एक-एक पैसा रुपये जितना कीमती है। यतीन सुबह मूढ़ी-लाई खाकर ही संतोष कर लेता है। पर बारह बरस बाद अनंत आया था, इस कारण कुछ खास प्रबंध न करने से भी तो नहीं चलता। यतीन को किसी दोस्त से दस रुपये उधार लेने पड़े। अमला हँसी—"हलुए की तारीफ तो कर रहे हो; लेकिन सब खाया कहाँ?"

भाभी

"इतना तो खाया; पर अब नहीं खा पा रहा हूँ।"

"कहाँ खाया? बाकी भी खा जाओ।"

मुँह और पेट में जो हो रहा था, उसे छिपाकर निपुण अभिनेता की तरह अनंत ने बचे हुए हलुए को भी साफ करना शुरू किया। मन-ही-मन सोचा—"कुछ देर बाद ही बाहर जाकर चौरंगी के किसी होटल में पेट-पूजा करूँगा; फिर कोई और काम होगा। आज सारे दिन दौड़-धूप करनी है, डटकर भोजन किये बिना चलेगा नहीं।"

संतुष्ट होकर अमला बोली—"तुम्हें पोय का साग और पंचमेल तरकारी अच्छी लगती है, यह मैं जानती हूँ। तुम्हारे भैया बाजार गये हैं, उन्हें साग और चिंगड़ी माछ लाने को कह दिया है।"

"माई गाड!" अनंत को अशोक होटल का लंच याद आ गया। किंतु "दिल्ली तो बहुत दूर है।" और स्वेच्छा से जब बाग-बाजार की इस गली में घुसा था, तभी चौरंगी के होटलों के दरवाज उसके लिए बंद हो गये थे। तब भी तो प्रबंध करना ही होगा। अनंत ने एक गिलास पानी की सहायता से बाकी हलुए को गले के नीचे उतारा और उठ खड़ा हुआ।

"मैं थोड़ा घूम आता हूँ भाभी। लौटने में बारह बज जायेंगे। यतीनदा के संग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

JVTSPW 549 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में

सुपरिचित

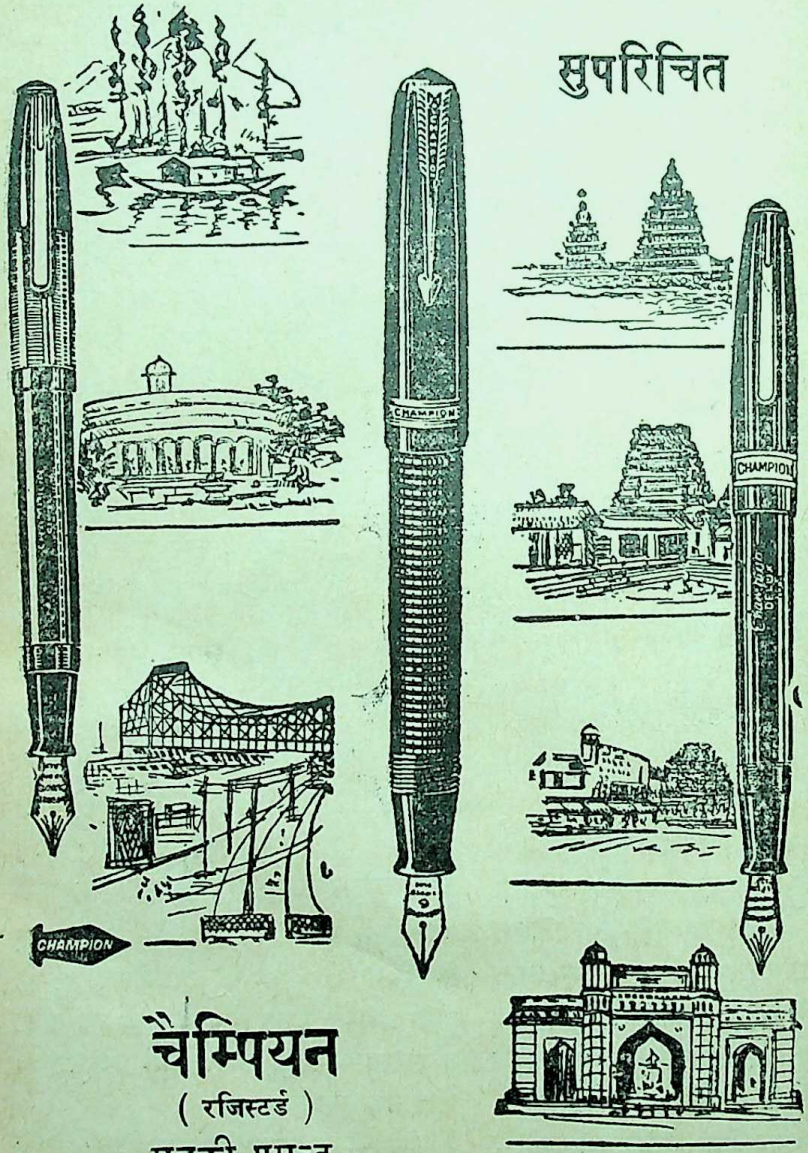

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं खा पाऊँगा । उससे कहियेगा कि वह खयाल न करें ।"

"नहीं, नहीं, खयाल क्या करेंगे । काम से आये हो, तो उसे पूरा कर लो । रात को दोनों भाई साथ-साथ खाना ।"

अनंत ने कहा—" अच्छा, यही ठीक रहा । तब तक मैं घूम आता हूँ ।"

रास्ते में टैक्सी से पार्क स्ट्रीट की ओर आते हुए अनंत के मन में अनेक विचार उठने लगे । दो-एक दिन यतीनदा के घर में तकलीफ से काट देना बड़ी बात नहीं है । लेकिन समस्या तो दूसरी ही है । यहाँ आने से पहले दिल्ली से पी० डब्ल्यू० डी० के चौधरी को उसने ट्रंक-काल किया था । चौधरी के साथ जैसी लेन-देन की बात थी, वह एकांत जगह में ही हो सकती थी । आगा-पीछा न सोचकर उसने कल सुबह चौधरी को यतीनदा के घर चाय पर बुला लिया था । सोचा था कि , घर बाल-बच्चे नहीं हैं , सो बातचीत ठीक से हो सकेगी । लेकिन अब सोच रहा था कि, बेवकूफी हो गयी । यतीनदा के बाहरवाले कमरे में रखे का कोई प्रबंध नहीं है । जहाँ जर्जर चारपाई पर बैठते ही वह चरमरा उठती है, ऐसी जगह चौधरी को बुलाकर बैठाऊँगा कहाँ ? गली के मोड़ पर एक बिजलीवाले की दुकान देखी थी । वहाँ से टेबल-फैन भाड़े पर लेकर काम चला लिया जायेगा । एक बेड-कवर और एक मेजपोश तो अपने खर्चे से खरीद लेना होगा । लेकिन अमला के प्यालों में चाय पिलाकर मुँह दिखाने लायक नहीं रहूँगा । इसीलिए एक सेट कप-प्लेट भी खरीदना होगा ।

इतना झंझट बढ़ाने से अच्छा यह है कि, चौधरी के साथ किसी होटल में ही प्रोग्राम बना लिया जाये । इसी उद्देश्य से अनंत बाहर निकला था ।

'ओलम्पिआ' में जाकर पहले उसने ब्रेकफास्ट किया । अमला के हलुए पर सेंडविच और डबल अंडे के आमलेट की तह चढ़ाने के बाद उसका मन कुछ शांत हुआ । अब चौधरी से भेंट करना जरूरी था । वह एडवर्ड कोर्ट की ओर रवाना हुआ ।

लेकिन चौधरी फ्लैट में नहीं था । किसी काम से कलकत्ते के बाहर गया था । पता चला कि, दस बजे रात या कल तक वापस आयेगा ।

अनंत अनिश्चय की दशा में क्षण-भर रास्ते में खड़ा रहा । इसका मतलब है कि, चौधरी के साथ मुलाकात की जगह बदलने की कोई गुंजाइश नहीं रही ।

अब यतीनदा के घर में ही उसकी यथासाध्य खातिर करनी होगी । भौंह सिकोड़कर अनंत ने हिसाब लगाया । कलकत्ते के किसी बड़े होटल में दो दिन रहने के सौ रुपये से कम नहीं लगेंगे । उतने रुपये में यतीनदा का घर अच्छी तरह से सजाया जा सकता है । टेबल-फैन भाड़े पर लिया जायेगा और चाय के बर्तन खरीदने होंगे ।

इसके अलावा.....अनंत के मुख-मंडल पर सौजन्य की मुस्कराहट खिल उठी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमकदार स्वच्छ साडी मे सनेज मुस्कान —

डेट-स्वस्तिक का सिंथेटिक डिटर्जेण्ट-
शुभ्र वस्त्रों को अद्भुत शुभ्रता देता है
और रंगीन वस्त्रों को मनोहारी चमक
प्रदान करता है। यह सूती तथा
नाजुक वस्त्रों की धुलाई के लिये समान
रूपसे लाभ कारी है।

डेट भारी या हल्के पानी में साबुन
की अपेक्षा अधिक तेजी से काम
करता है और खूब झाग पैदा करता
है। इस में उज्वलताकारक तत्व
मिला रहता है।

अपने कपड़ों की धुलाई आधुनिक
ढंग से डेट के द्वारा कीजिये।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि. बम्बई।

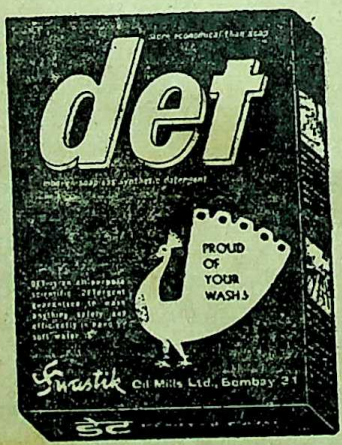

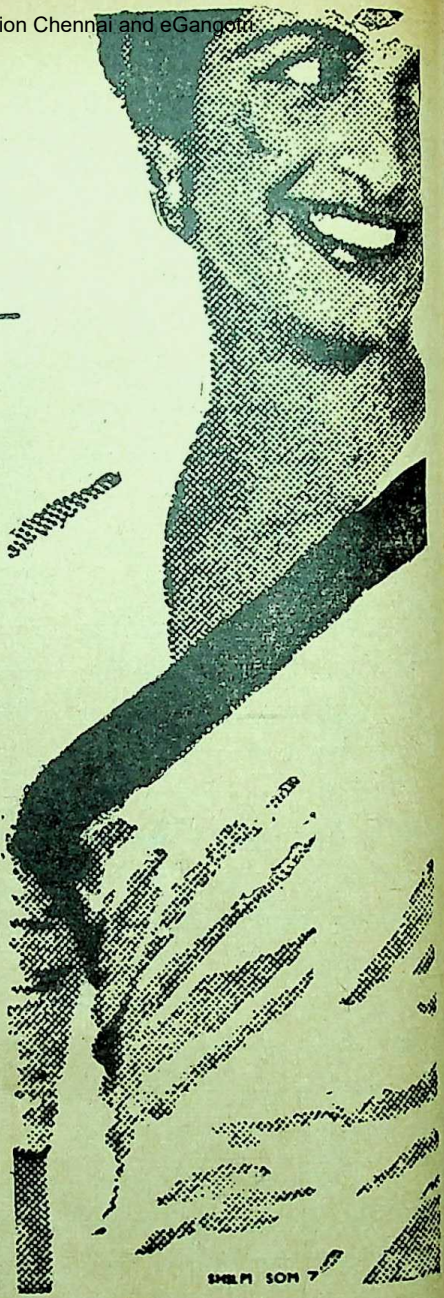

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी यतीनदा के घर पर रहकर उसने लिखना-पढ़ना सीखा था। अमला भाभी या यतीनदा को तब से आज तक कुछ नहीं दे पाया, देने का सामर्थ्य भी नहीं था। आज अनंत दो अच्छे बेड-कवर, एक मेजपोश, कई परदे और चाय का सेट उन्हें उपहार दे जायेगा। उसने सोचा – सचमुच यतीनदा के लिए यह सब करना उचित ही है, कृतज्ञता भी कोई चीज है। वह टूटे प्याले में ही सही, प्याले में चाय पाता है; यतीनदा तो शायद कांसे के गिलास में ही पीते हैं।

शाम के वक्त कुली के सिर पर पंखा और सामान उठवाये अनंत जब घर में घुसा, तो अमला चौंककर बोल उठी– "ये सब क्या है, भैया ?"

अनंत हंसा–"बड़ी गर्मी है, इसीलिए पंखा भाड़े पर लाया हूँ।"

अमला को मन-ही-मन धक्का लगा। अनंत ने कहा–"और बाहरी कमरे के लिए कई परदे, बेड-कवर वगैरह भी लाया हूँ। यह चाय का सेट यतीनदा के लिए..."

कुली को विदा करके पैकिंग खोलते हुए अनंत ने कहा–"देखो भाभी, अच्छा है या नहीं ?"

अमला के चेहरे पर कई भाव आये-गये। फिर उसने शांत, मृदु कंठ से कहा–"लेकिन यह सब खर्च करने क्यों गये ? इतने अच्छे प्याले-प्लेट में तो उन्हें खाने की आदत नहीं है।" अनंत हँस पड़ा। "अच्छा भाभी अब ज्यादा हँसी न करो। सुनो एक बात

गृहकृत्य

कुमारिल स्वामी के एक चित्र की अनुकृति

और है। कल आठ बजे मेरा एक दोस्त चाय पर आयेगा। यह सब केक-रोटी-अंडा उसी वास्ते लाया हूँ। यह मक्खन की टिकिया है। यह हेपी वैली चाय-पैकेट है।" गर्वित स्वर में अनंत ने कहा–"खूब अच्छी चाय पिलानी होगी, भाभी। यतीनदा, आपकी और मेरी प्रेस्टिज का सवाल है।"

होंठ दबाये कुछ क्षणों तक अमला खड़ी रही। उसके बाद उसने मृदु स्वर में कहा–"कोई बात नहीं भाई। तुम्हारी प्रेस्टिज पूरी-की-पूरी बची रहे, इसका हम खयाल रखेंगे।"

छुट्टी का दिन होने से भी यतीनदा की छुट्टी नहीं थी। बाजार के सिरे पर साढ़े सात बजे का ट्यूशन पढ़ाने के लिए जब यतीनदा बैठक की ओर से बाहर निकले, उसे देखकर चौंक उठे।

"वाह, खूब सजावट हुई है कमरे की। अब तो पहचाना भी नहीं जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्मोल

सफेद बालों को काला और चमकीला बनाता है

वस्मोल एक असली वैज्ञानिक नुसखा है, जो अपने एक ही फ़ार्म्युले में सही ढंग से बालों को काला करता है, बालों को निरोग रखता है और बालों के सुगंधित विन्यास के लिए उत्कृष्ट है—तो भी इसकी कीमत किसी भी अच्छे केशतेल से ज़्यादा नहीं है।

वस्मोल

केश काला करनेवाला जो अपना वादा पूरा करता है

वस्मोल तैलयुक्त सफेद मिश्रण केशतेल और पोमेड इन दो रूपों में सभी स्टोर्स व केमिस्टों के यहां मिलता है।

लेनोलिन से परिपूर्ण वस्मोल आपके बालों के लिए सर्वोत्तम है।

उत्पादक :

हाइजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट,

पोस्ट बॉक्स ११९२, बम्बई-१.

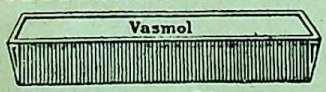

मुफ़्त भेंट

वस्मोल की एक शीशी खरीदने पर एक सुन्दर कंघा मुफ़्त मिलेगा। यह भेंट अक्तूबर और नवम्बर १९६० में या स्टाक खत्म होने तक ही मिलेगी।

NATIONAL V 760 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये सामान पर एक दृष्टि डालते हुए यतीन मुस्करा उठे।

अनंत कहना चाहता था—"यह सब तुमको दे जाऊँगा;" लेकिन कह नहीं सका। इस वक्त नहीं कहेगा, चलते समय उदारता दिखाकर चकित कर देगा।

यतीन ने जाते-जाते कहा— "यह तो एकदम बड़े आदमियों के बैठकखाने-जैसा लगने लगा है। तेरी मेहनत सफल हुई है।"

अनंत बिना बोले हँसा। उसके बाद महरी के साथ परदा लगाने में व्यस्त हो गया।

रसोईघर में टोस्ट सेकते वक्त अमला के कान में सारी बातें पड़ीं। कुछ क्षणों तक उसके हाथ काम करते-करते रुक गये, जबड़े कस गये।

ठीक आठ बजे चौधरी की मोटर गली के भीतर घुसी।

घर की ओर देखकर शायद चौधरी को यकीन नहीं हुआ। लेकिन अनंत झटपट बाहर निकलकर उसे कमरे में ले आया।

चाय भी समय से आ गयी। पर अमला खुद नहीं लायी। साफ कपड़े पहने महरी अपने अनाड़ी हाथों से खाने की चीजें रख गयी। अनंत विस्मित हो उठा। अमला भाभी कब से इतनी पर्दानशीन हो गयीं कि, चौधरी के सामने नहीं निकलीं। लेकिन बात ज्यादा देर तक दिमाग में टिकी नहीं। चौधरी काम-काजी आदमी था; आते ही काम की बातें शुरू कर दी। अनंत की विरक्तता विलीन हो गयी।

उसी दिन काम खत्म हो जाने से अब ज्यादा रुकने की जरूरत नहीं रह गयी थी। दोपहर को फोन करके अनंत ने कालका मेल से सीट रिजर्व करा ली।

अमला आकर बोली—"दो दिन खूब तकलीफ हुई न?" अनंत ने प्रसन्न मुख से कहा—"तकलीफ? जो खातिर आपने की भाभी, उसे मैं बहुत दिनों तक याद रखूँगा।"

"याद रहेगी क्या? बहुत अच्छी बात"—अमला के होठों पर एक विचित्र-सी मुस्कराहट क्षण-भर के लिए फैलकर विलीन हो गयी। पर अनंत ने देखा नहीं।

सूटकेस सहेजकर अनंत बोला—"आज घर में नहीं खाऊँगा भाभी, चौधरी ने अपने यहाँ डिनर दिया है। वहाँ से आकर बक्स-बिस्तरा लेकर हवड़ा चला जाऊँगा।"

अमला ने कहा—"अच्छा।"

वंचना

सूर्य अस्तोन्मुख था। विस्तार के लोभ में छाया फैलती ही जा रही थी। सूर्य ने व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ एक बार छाया की ओर देखा और पश्चिम-सागर में डुबकी लगा दी। और तभी छाया ने देखा कि, जिस सूर्य के अवसान के लिए वह इतनी आतुर थी, उसके अदृश्य होते ही वह स्वयं अपने अस्तित्व से भी हाथ धो बठी।

—ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजकल की औरतें कह रही हैं...

सर्फ़ जैसी अपूर्व सफ़ेद धुलाई पहले कभी देखने में नहीं आई

आपके सफ़ेद कपड़े कितने सफ़ेद हो सकते हैं ?—यह सर्फ़ से धोकर देखिए ! केवल साफ़ या साधारण सफ़ेद ही नहीं, बल्कि जगमगाते हुए उजले और चमकदार ! और रंगदार कपड़े भी कितने शानदार धुलते हैं ! यह सब सर्फ़ में धुलाई की अधिक शक्ति ही का चमत्कार है ! सर्फ़ से धुलाई करने में न कोई मेहनत है न कपड़े रगड़ने की ज़रूरत—धोकर देखिए कि सर्फ़ का ढेरों झाग किस प्रकार ताने बाने से मैल को निकाल कर बहा ले जाता है !

आप भी हज़ारों औरतों के आज़माये हुए धुलाई के साधन का लाभ उठाइये। अपने सभी कपड़े—कमीज़ें, साड़ियाँ, फ़्राकें, तौलिए—घर में सर्फ़ से धोइये !

अपूर्व सफ़ेद धुलाई

के लिए घर में नीले सर्फ़ से कपड़े धोइये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SU. 13B-50 HI

13A-50 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डिनर समाप्त कर टैक्सी लिये अनंत जिस वक्त वापस आया, समय बिलकुल नहीं रह गया था। पंद्रह-बीस मिनिट में गाड़ी छूट जायेगी।

अमला और यतीन को प्रणाम करके सूटकेस और बिस्तर लेकर खड़ा हो गया, बोला—"अब चलूँ यतीनदा, चलूँ भाभी? बड़ी तकलीफ दी, खयाल न कीजियेगा।"

यतीनदा ने खिलखिलाकर कहा—"नहीं, नहीं, खयाल क्या करना है! तुझे ही तकलीफ हुई। बीच-बीच में चिट्ठी-पत्री देते रहना।"

"जरूर जरूर।" बक्स और बिस्तर लेकर अनंत टैक्सी में बैठ गया। टैक्सी चल पड़ी।

गाड़ी में होल्डाल खोलते ही अनंत चौंक उठा। इसीलिए बिस्तर इतना भारी लग रहा था!

खिड़की के परदे, बेड-कवर, चाय के बर्तन—सभी तो हैं, चाय का पैकेट, यहाँ तक कि, पावरोटी सेंकने का चिमटा भी अमला भाभी ने नहीं रखा, सब कुछ लौटा दिया।

क्रुद्ध भाव से उस ओर देखते हुए अनंत ने एक कीमती विलायती सिगरेट सुलगायी। कोई भद्दी अँग्रेजी गाली होठों तक आकर रुक गयी। इससे तो चौरंगी के होटल में ठहरना ही अच्छा था। कीमती सिगरेट से राख झाड़ता हुआ अनंत बड़बड़ाया—"डैम इट।" — बँगला से रूपांतर : अनंत

★

पंक्ति-दान

लाहौर में मुशायरा था। 'जिगर' और 'जोश' भी आये हुए थे। मुशायरा शुरू होने से पहले शायरों में गप-शप हो रही थी। 'जोश' ने 'जिगर' की तरफ जरा झुककर मुस्करा कर पूछा—"कहिये हजरत, क्या हाल है उनका?"

'जिगर' ने बेसाख्ता जवाब दिया—"**कोई नहीं जो यार की ला दे खबर मुझे।**"

यह लाइन सुनकर मंच पर बैठे हुए सब ही शायर फड़क उठे और 'फिराक' ने उठकर एलान कर दिया कि, मुशायरा इसी लाइन पर होगा।

लाहौर के एक नौजवान शायर ने 'जिगर' की इस लाइन पर गिरह लगायी :

ऐ सैले-अश्क[1] तू ही बहा दे उधर मुझे।
कोई नहीं जो यार की ला दे खबर मुझे॥

और 'जिगर' साहब ने खुश होकर अपनी लाइन उसी शायर को दे दी।

१ अश्रु-धारा

—**ताहिर हाशमी**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा की जीत

– जान स्टीनबेक

प्रजातंत्र की अजेयता उसके शस्त्रास्त्रों की संहार-शक्ति पर नहीं, अपितु नागरिकों के अदम्य आत्मतेज पर अवलम्बित है–इस चिरविदित परंतु प्रायः विस्मृत सत्य के संदेश-वाहक अमरीकी उपन्यास 'द मून इज डाउन' का कथासार।

रूपांतरकार : परदेशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस पैंतालिस पर सब कुछ समाप्त। कस्बे पर शत्रु का कब्जा हो गया। संरक्षक-दल हार गया। युद्ध का अंत हुआ।

रविवार की सुबह थी। कस्बे का डाकिया और पुलिस का सिपाही नाव में बैठकर मछली पकड़ने के लिए गये थे। तभी उन्हें काली-काली ट्रकों पर लदे शत्रु-सैनिक दीख पड़े। सरकारी नौकर होने के कारण, जो कुछ देखा, उसकी सूचना कारेल को देना उनका फर्ज था। कारेल एक स्टोर का मालिक था और गाँव के सभी मामलों में आगे बढ़कर काम करता था। लेकिन डाकिया और पुलिस का सिपाही उसकी दुकान तक पहुँचें, इसके पूर्व ही उनका रास्ता रोक लिया गया और जब उन्होंने आगे बढ़ने की तत्परता दिखायी, अपनी स्वतंत्रता का दावा किया, पकड़-कर जेल में ठूँस दिये गये।

दुर्भाग्यवश आज कस्बे की सैनिक टुकड़ी के बारहों जवान चाँदमारी के लिए बाहर गये हुए थे। उनके लिए कारतूसों से लेकर खान-पान तक का सारा प्रबंध कारेल ने ही किया था। जवानों ने जब देखा कि, आकाश में हवाई जहाज मँडरा रहे हैं और छतरी-धारी सैनिक उतर रहे हैं, वे "डबल क्विक मार्च" की चाल से कस्बे की ओर लौट पड़े। लेकिन तब तक तो हमलावरों ने सड़क के दोनों ओर मशीन-गनें लगा दी थीं।

इन बेचारों ने न कभी लड़ाई देखी थी और न उन्हें कोई अनुभव था जय-पराजय का। वे तत्काल अपनी बेढंगी बंदूकें तान-कर गोली चलाने लगे। उत्तर में शत्रु की मशीन-गनें पल-भर के लिए चलीं और दो जवानों के शरीर गोलियों से चलनी होकर जमीन पर लुढ़क गये। तीन अधमरे हो गये। शेष तीन अपनी बंदूकें उठाये पहाड़ियों के पीछे भाग गये।

दस बजकर तीन मिनिट पर शत्रु की फौजी बैंड़ टाउनहाल के सामने के चौक में बड़ी मस्ती से बजाया जा रहा था और भोले-भाले नागरिक मुँह बाये संगीत सुन रहे थे और आँखें फाड़-फाड़कर मशीन-गनों को देख रहे थे।

आठ मिनिट बाद, छहों मृत सिपाही दनफा दिये जा चुके थे। शत्रु सैनिक पैरा-शूट समेटकर कारेल साहब के माल गोदाम में डेरा जमा चुके थे।

दस पैंतालिस पर कस्बे के मेयर आर्डेन को शत्रु-सेना के प्रधान अधिकारी कर्नल लान्सर का पत्र मिला कि, वह उनसे भेंट करना चाहता है।

मेयर की पाँच-मंजिली कोठी में भेंट का प्रबंध हुआ। कोठी की बैठक में अँगीठी के पास डाक्टर विंटर बैठा था। अजीब-सा दढ़ियल आदमी था वह – बड़ा सनकी और अड़ियल। गाँव का इतिहासज्ञ और दार्श-निक भी वही था।

मेयर के नौकर जोसेफ ने मेज के इर्द-गिर्द कुर्सियाँ भली भाँति लगा दी थीं। लेकिन डाक्टर विंटर अपनी कुर्सी को कभी आगे कर लेता था, कभी पीछे; और उसकी यह हरकत जोसेफ को बहुत बुरी लग रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। डाक्टर के हटते ही वह कुर्सी को यथा-स्थान रख देता था; लेकिन डाक्टर था कि, फिर से उसे उधर-इधर सरका देता था। जोसेफ कुर्सी को फिर ठीक स्थान पर रखता और क्रोध-भरी आँखों से डाक्टर को देखता।

डाक्टर न कहा – "ठीक ग्यारह बजे वे आ धमकेंगे। वक्त के बड़े पाबंद हैं ये लोग। क्यों है न ?"

जोसेफ ने बिना सुने ही कहा–"जी।"

"वक्त के पाबंद। वक्त और मशीन, काल और यंत्र। ठीक है न ?"

"जी।"

"ये अपनी किस्मत के पीछे इस तरह भागते हैं, मानो वह उन्हें छोड़-कर कहीं भाग जायेगी।"

इस बेमानी बातचीत में जोसेफ की जरा भी दिलचस्पी नहीं थी। एक बार उसने डाक्टर से सुनी हुई कुछ बातें नौकरानी एनी को सुनायी थीं, तो उसने जोसेफ को पागल समझ लिया था। तभी से जोसेफ जान गया कि, डाक्टर की बातें बिल्कुल ऊलजुलूल होती हैं।

डाक्टर अँगीठी की आँच में अपने हाथ तपा रहा था। जोसेफ एक ओर सीधा खड़ा था। मेयर आर्डेन भेंट के लिए अपने पद के उपयुक्त पोशाक धारण करके बैठक में आने ही वाले थे।

आग तापते हुए डाक्टर ने अचानक अट्टहास किया–"देश हार गया! कस्बा जीत लिया गया और हमारा मेयर विजेता के स्वागत की तैयारी कर रहा है!"

तभी दरवाजे पर एक फौजी की छाया पड़ी। थोड़ी देर में किवाड़ खटखटाया गया। डाक्टर के आदेश पर जोसेफ ने द्वार खोल दिया। दोनों ने देखा–सिपाही के कंधे से मशीन-गन झूल रही है और उसके पीछे एक फौजी अफसर खड़ा है।

जान स्टीनबेक

डाक्टर विंटर को ही मेयर मानकर, अफसर ने आगे बढ़कर सलाम बजाया। जब डाक्टर ने बताया कि, वह मेयर नहीं है, तो अफसर कहने लगा – "तो क्षमा करें। कमांडर के आने से पूर्व फौजी नियम के अनुसार, हमें कमरे की तलाशी लेनी पड़ती है – यह देखने के लिए कि, कहीं कोई हथियार तो नहीं छिपा है। बेअदबी दिखाना हमारा उद्देश्य नहीं है।"

तलाशी पूरी होने पर अफसर ने संतोष की साँस ली और चुपचाप बैठ गया। डाक्टर ने बात चलायी – "सब ठीक है ?"

"हाँ सब ठीक ही है। हमारा एक आदमी कुछ अरसे से यहाँ काम करता रहा है न।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका मतलब है, 'उस कैदी विंटर' को जीता, न किसी ने हमें।"

न पूछा – "आप उस आदमी का नाम तो बतलायेंगे नहीं।"

अफसर बैंटिक ने कहा – "अब तो वह अपना काम पूरा कर चुका है; इसलिए नाम बताने में कोई हर्ज नहीं। उसका नाम है कारेल।"

डाक्टर विंटर चकित रह गया – "जार्ज कारेल! असम्भव! उसने तो कस्बे के लिए बड़ा काम किया है।" कुछ देर बाद उसकी समझ में आया कि, कारेल ने योजना-पूर्वक ही चाँदमारी के बहाने सारे सिपाही दूर भेज दिये थे।

तभी बायीं ओर का द्वार खुला और मेयर आर्डेन ने बड़ी शान से प्रवेश किया। उसके पीछे-पीछे उसकी पत्नी थी, जो हमेशा यह समझती थी कि, उसी ने मिट्टी के पुतले आर्डेन को मेयर बनाया है। कप्तान बैंटिक ने मेयर की भी तलाशी ली और पूछा–"आपके पास जो दो बंदूकें थीं, वे कहाँ हैं?"

उसके बाद कप्तान अपने सिपाही क हाथों दोनों बंदूकें उठवाकर चला गया। मेयर और उसकी बीवी कमांडर की राह देखने लगे। जोसेफ फिर से कमरे की सफाई में जुट गया।

मेयर की पत्नी ने पूछा–"कमांडर को चाय दें या शराब?"

डाक्टर ने सिर हिलाया और मुस्कराते हुए कहा–"नहीं मालूम हमें क्या देना चाहिये! युग बीत गये – न हमने किसी

मेयर आर्डेन बोला– "मुझे भी नहीं मालूम। पर हम कमांडर का स्वागत करें यह लोगों को अच्छा नहीं लगेगा। मैं भी नये आदमियों के साथ मद्य पीना पसंद नहीं करता, न जाने क्यों!"

मदाम आर्डेन ने विंटर से अपील-सी करते हुए पूछा– "डाक्टर साहब, क्या पिछले जमाने में शासक-वर्ग के लोग, एक-दूसरे की सराहना करते हुए, एक-एक प्याला नहीं पीते थे?"

"जरूर! पर वे दिन और थे। तब के राजा और राजकुमार लड़ाई इस तरह लड़ते थे, जिस तरह आज अँग्रेज शिकार खेलते हैं। लोमड़ी को मार करके वे उसके चारों ओर बैठ जाते थे और नाश्ता करते थे। लेकिन मेयर का खयाल दुरुस्त है – लोग यह पसंद नहीं करेंगे कि, उनका मेयर आक्रमणकारी के साथ सुरापान करे।"

मदाम बोली – "नीचे चौक में तो लोग शत्रु-सेना का बैंड सुन रहे हैं। अगर वे यह कर सकते हैं, तो हमारे सुरापान को क्यों नहीं सह सकते?"

मेयर ने अपनी पत्नी को पल-भर निर्निमेष दृष्टि से देखा और दृढ़ स्वर में कहा– "मदाम, तुम बुरा न मानो। हम सुरा का प्रयोग नहीं करेंगे। कस्बे के लोग उलझन में पड़े हुए हैं। वे इतने लम्बे अरसे से शांतिपूर्वक रहते आये हैं कि, यह भूल से गये हैं कि, युद्ध क्या चीज है। जब युद्ध की रीति-नीति जान जायेंगे, तब वे दुबारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुलावे में नहीं आयेंगे। लोगों ने मुझे इसलिए मेयर नहीं बनाया है कि, मैं उन्हें उलझन में डालूँ। आज हमारे छः जवान मारे गये हैं; इसलिए हमें अँग्रेज शिकारियों का नाश्ता नहीं करना चाहिये। लोग मन बहलाने के लिए लड़ाई नहीं लड़ते।"

फौजी बैंड की आवाज आयी और कवायदी सिपाहियों की ध्वनि सुनाई दी। दरवाजे पर हल्की-सी थपकी दी गयी। जोसेफ ने दरवाजा खोला। एक अर्दली ने तभी भीतर प्रवेश करके कहा—"कर्नल लान्सर हुजूर से भेंट की आज्ञा चाहते हैं।" फिर अर्दली एक ओर हट गया और कर्नल आगे बढ़ा। उसने अपना टोप उतार दिया और फौजी अदब व फुर्ती के साथ झुककर कहा—"श्रीमन् नमस्कार! और श्रीमतीजी नमस्कार!"

जब मेयर ने इतिहासज्ञ डाक्टर विंटर का परिचय दिया, कर्नल ने मुस्कराते हुए पूछा—"श्रीमन्, आपके इतिहास में आज की घटना के लिए एक-आध पृष्ठ सुरक्षित रहेगा न?"

डाक्टर मुस्कराया—"एक क्या, कई।"

"जार्ज कारेल को तो आप जानते ही होंगे?" कर्नल ने अपने साथी की ओर कनखियों से देखकर कहा।

"वाह, क्यों नहीं। कैसे हो जार्ज?" मेयर कारेल की ओर मुड़कर बोला।

तभी डाक्टर बोल उठा—"श्रीमन्, हमारे मित्र जार्ज कारेल ने ही शहर पर आक्रमण करवाया है। हमारे इन परम हितैषी ने सिपाहियों को चाँदमारी के बहाने पहाड़ियों पर भेज दिया। हमारे परम मित्र जार्ज कारेल ने कस्बे में जितने हथियार थे, उन सबकी सूची पहले ही बना ली थी।"

कारेल ने गुस्से से जलते हुए कहा—"मैं अपनी अंतरात्मा के अनुसार कार्य करता हूँ। और इसे सम्मान की चीज समझता हूँ।"

प्राण-पूजन

सोहती है वह जीवन-नाव
जो खेलती मौत की लहरों से।
खींचती उन्हें हवा मँझधार
जो चलते बचकर भँवरों से॥
लौटते कब वे खाली हाथ
जो चलते दुख में सीना तान।
डाल देती है लहर स्वयं
उनके दामन में मोती-दान॥
चूमते उनके हाथ, कदम
लपककर स्वयं गुलाब बलात्।
खोजते जाते अपनी राह
दिन काँटों में ही जो-रात॥

कश्मीरी कविता } —पीताम्बरनाथ 'फानी'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एनासिन'

अब आरोग्य की दृष्टि से मुहरबंद नये सेलोफेन पाकिट में

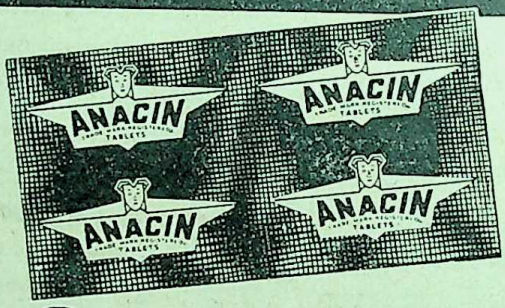

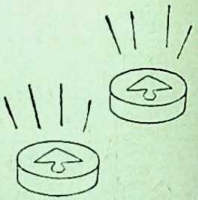

एनासिन ४ दवाइयों के कारण बेहतर है

'एनासिन' में—जो आरोग्य की दृष्टि से मुहरबंद नये सेलोफेन पाकिट में मिलती है—डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे जैसी वैज्ञानिक रूप से सम्मिश्रित चार दवाइयां हैं, जिससे वह दर्द से शीघ्र पूर्ण आराम देती है। एनासिन (१) सिर-दर्द, सर्दी ज़ुकाम, दान्तदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र आराम देती है, (२) स्नायुओं के कारण होनेवाली घबराहट व बेचैनी को दूर करती है—आप सुख का अनुभव करते हैं (३) सुस्ती-उदासी को भगाती है, (४) बुखार को घटाती है। 'एनासिन' उसकी चार दवाइयों के कारण दर्द से आराम पाने के लिए बेहतर है। अपने घर में हमेशा 'एनासिन' रखिए।

३२ टिकियों की मुहरबंद शीशियों में भी मिलती है

Registered User : GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD.

HIN.

Z 41

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनकर मेयर आर्डेन का मुँह खुला-का-खुला रह गया। कुछ देर वह स्तब्ध रहा, फिर बोला– "जार्ज, यह झूठ है, ऐसा कभी नहीं हो सकता। हम दोनों ने एक थाली में खाना खाया है और एक ही प्याले में शराब पी है।" वह कारेल की ओर अनिमेष देख रहा था और कारेल कुटिल दृष्टि से उसे घूर रहा था। कमरे में निस्तब्धता व्याप्त थी।

धीरे-धीरे मेयर का चेहरा गम्भीरतर होता गया और उसकी मुख-मुद्रा अत्यंत कठोर हो गयी। अंत में उसने कर्नल लान्सर से कहा –"मैं इस आदमी की मौजूदगी में कोई बात नहीं करूँगा।"

"मुझे यहाँ रहने का हक है। मैं भी औरों की तरह सैनिक हूँ, सिर्फ वर्दीधारी चपरासी नहीं हूँ।"

मेयर अड़ गया कि, कारेल को वहाँ से जाना ही होगा। कर्नल ने कारेल से कहा– "कृपया यहाँ से चले जाइये।" परंतु कारेल अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंत में कर्नल चिल्ला उठा –"तो क्या आप नहीं जायेंगे? क्या आप मेरे अफसर हैं?"

"जी नहीं।"

"तो कृपया चले जाइये।"

कारेल मेयर को वक्रदृष्टि से देखता हुआ, वहाँ से चला गया। डा० विंटर ने सिर हिला-हिलाकर कहा –"यह भी मेरे इतिहास का एक अनमोल पृष्ठ है।"

तभी एनी हड़बड़ाती हुई बैठक में घुस आयी और मेयर से शिकायत करने लगी कि, शत्रु के सैनिक रसोईघर के पास ऊधम मचा रहे हैं। उसने यह भी बताया कि, उन्होंने उससे छेड़खानी की और उसने उन पर खौलता हुआ पानी डाल दिया।

कर्नल लान्सर ने मेयर से कहा –"इस नौकरानी को फौरन नौकरी से निकाल दिया जाये।"

"नहीं, यह असम्भव है।"

"देखिये, यह युद्धकाल है। आपको इसे निकालना ही होगा।"

डा० विंटर ने विद्रूप की हँसी हँसकर कहा–"इसे निकाल दिया, तो यह आपके आदमियों पर और अधिक पानी डालेगी।"

अब कर्नल जरा नरम पड़ा और कहने लगा –"श्रीमन्, हम लोग बहुत थके हुए हैं। इसलिए काम की बातें पहले पूरी कर लें। हमारे अभियान का एक पहलू व्यापार भी है। हम यहाँ की कोयले की खानों और मछली-उद्योग पर कब्जा करना चाहते हैं।"

मेयर ने जवाब दिया –"ठीक है। पर मुझे तो कोई खबर ही नहीं मिल रही है। देश के दूसरे हिस्सों की क्या हालत है?"

"सारा देश हमारे अधीन हो चुका है। हमारा हमला योजनाबद्ध था।"

"क्या, कहीं भी प्रतिरोध नहीं हुआ?"

"अच्छा तो यही होता कि, प्रतिरोध न होता। कुछ लोगों ने प्रतिरोध किया। परिणामतः खून-खराबी हुई। हमारी योजना बहुत जबर्दस्त थी। प्रतिरोध करना बड़ी बेवकूफी की बात थी।"

"हाँ जी, वे लोग बेवकूफ तो थे ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछले तीस वर्षों से

डालडा के उत्तम गुणों पर

लाखों भरोसा करते आ रहे हैं

क्या आप का परिवार इस का हक़दार नहीं?

डालडा

वनस्पति

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

DL. 54-50 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फिर भी उन्होंने डटकर मुकाबला किया।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर ने चुटकी ली। इस पर कर्नल ने रोषपूर्वक डाक्टर को देखा और अपनी बात आगे बढ़ायी – "देखिये श्रीमन्, मेरा काम इंजीनियर का भी है। यहाँ की खानों से कोयला निकाला जाये और जहाजों में भरकर हमारे देश में भेजा जाये – यह भी मुझे देखना है। टेक्नीशियन हमारे साथ है। मजदूर आप देंगे। समझ गये न आप? हम सख्ती से पेश आना नहीं चाहते।"

मेयर ने जवाब दिया –"आपकी बात साफ और सीधी है; लेकिन अगर हमारे आदमी खानों में काम करने से इन्कार कर दें, तो?"

"मुझे भी यही लगता है कि, वे इन्कार करेंगे; लेकिन मैं यह आशा करता हूँ कि, वे अधिक समझदारी दिखायेंगे और बखेड़ा नहीं खड़ा करेंगे। उन्हें खान में काम करना ही होगा।"

"मैं कुछ नहीं कह सकता।" मेयर कह रहा था – "अपनी सरकार के शासन में हमारे लोग सदा शांत और समझदार रहे हैं। मगर मैं कह नहीं सकता कि, आपके शासन में वे कैसा व्यवहार करेंगे। कम-से-कम पिछले चार सौ वर्ष से तो उन्हें विदेशी शासन के नीचे रहने का अनुभव नहीं है।"

कर्नल तुनककर बोला –"जी, हमें भी यह मालूम है। और इसीलिए हम आपकी सरकार को बनाये रखना चाहते हैं, आपको ही मेयर के पद पर रखना चाहते हैं। जिसको भी, जो भी दंड या इनाम देना है, वह आप ही देंगे। आप ही शासन-कार्य का संचालन करेंगे। इससे लोग ऊधम नहीं मचायेंगे।"

"कुछ नहीं कहा जा सकता श्रीमन्। लोग क्या करेंगे, क्या नहीं – इसका अनुमान लगाना सर्वथा कठिन है। कुछ लोग जो भी नेता नियुक्त हो जाये, उसे स्वीकार कर उसका हुक्म मानते हैं। परंतु मुझे तो मेरी प्रजा ने चुना हैं। वह मुझे बना सकती है और बिगाड़ भी सकती है। अगर लोगों का यह खयाल बन जाये कि, मेरा झुकाव आपकी ओर है, तो वे मुझे हटा भी देंगे। और क्या कहूँ आपसे?"

"लेकिन आप उन्हें शांत रखें। इसमें उन्हीं की ही भलाई है। और उन्हें नुक्सान से

क्या हुआ यदि शत्रु ने तुम्हारे खेत-खलिहान उजाड़ डाले! जब तक तुम्हारे आत्मोद्यान में साहस और करुणा के सुमन खिले हुए हैं, तुम अजेय हो। –वाल्ट ह्विटमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पा प्लि न्स

शा टिं ग्स

म र्से रा इ ज्ड धो ति यां

छ पी हु ई वा इ ल्स

त था ला न्स

SANFORIZED
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT PEABODY & CO. INC., U.S.A.

रा य पु र मि ल्स लि.,

अ ह म दा बा द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बचाना आपका कर्तव्य है। यदि वे बगावत करेंगे, तो बड़ा खतरा मोल लेंगे। हमें कोयला चाहिये और जरूर चाहिये। यह तो हमारे नेताओं ने नहीं बताया कि, यह कोयला कैसे प्राप्त करना है; उन्होंने सिर्फ यह हुक्म दिया है कि, कोयला मिलना चाहिये। इसलिए आप अपने आदमियों को काम पर लगा दीजिये। और उनकी रक्षा कीजिये।"

मेयर आर्डेन ने पूछा – "मान लीजिये, वे अपनी रक्षा कराना नहीं चाहते?"

"तब उनके बारे में आपको सोचना चाहिये।"

आर्डेन ने साभिमान उत्तर दिया – "मेरे देशवासी यह नहीं पसंद करते कि, उनके हित-अहित के बारे में दूसरा कोई निर्णय करे। हो सकता है, वे आपको अजीब किस्म के आदमी लगें।"

अंत में कर्नल न पूछा– "श्रीमन्, क्या यह सम्भव है कि, मैं और मेरे चंद आदमी आपके यहाँ ठहर जायें?"

"कस्बे में और भी बहुत जगह हैं, जो इससे भी विस्तृत और आरामदेह हैं।"

"सिर्फ आराम की बात नहीं है। हमने देखा है कि, यदि बाहरी कर्मचारी स्थानीय अफसर के साथ रहते हैं, तो उनका प्रभाव बढ़ जाता है और शांति भी बनी रहती है।"

"लेकिन इससे लोग समझेंगे कि, कोई षड्यंत्र चल रहा है। इसलिए क्या मैं आप का मेजबान बनने का सम्मान अस्वीकार कर सकता हूँ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे अफसोस है कि, यह हमारे नेता के आदेश के प्रतिकूल होगा।"

"मगर लोग इसे पसंद नहीं करेंगे।"

"लोग, लोग! हर बात में लोग! लोग निःशस्त्र हैं। उनकी बात सुनता ही कौन है?"

"आप नहीं जानते साहब!"

"देखिये, कृपया हमें सहयोग देने का प्रयत्न कीजिये।"

"निर्णय तो जनता करेगी और मैं उसी निर्णय का पालन करूँगा।"

"लेकिन सत्ता तो आपके हाथ में है।"

"आप यकीन नहीं करेंगे," मेयर आर्डेन ने मुस्कराते हुए कहा–"सच्ची सत्ता नागरिकों के पास है। इस देश में हमेशा से ऐसा होता रहा है। यह ठीक है कि, हम आपकी तरह तेजी से काम नहीं निबटा सकते; लेकिन जब दिशा निर्धारित हो जाती है, तो हम सब मिल-जुलकर जुट जाते हैं।"

"मुझे आशा है, मेयर साहब, कि आप और हम मिलकर काम कर सकेंगे और हम आपका विश्वास भी प्राप्त कर लेंगे।" और कर्नल लान्सर वहाँ से चला गया।

× × ×

मेयर की कोठी की ऊपरी मंजिल पर कर्नल का हेड-क्वार्टर लग गया। इंजीनियर मेजर हंटर, कप्तान बैंटिक, कप्तान लोफ्ट और लेफ्टिनेंट प्रेकल और टांडर भी कर्नल के साथ ही रहने लगे।

मेजर हंटर इंजीनियर और गणितज्ञ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

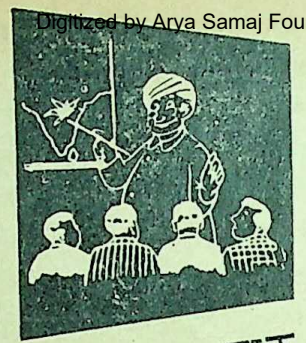

गुण्टूर, कृष्णा, पूर्वी व पश्चिमी गोदावरी जिलों की काली नरम धरती व नम आबोहवा वर्जीनिया तम्बाकू-उत्पादन के लिए उत्तम है। इसीलिए आंध्र तम्बाकू उत्पादन का केन्द्र है। यहां देश के कुल तम्बाकू-उत्पादन का करीब ४० प्रतिशत और भारतीय वर्जीनिया सिगरेट तम्बाकू का ९० प्रतिशत भाग पैदा होता है।

तम्बाकू की कहानी....नं. ४

बम्बई—५७

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है —
यह आख़िरी कश तक मज़ा देती है!

भारत में
इस प्रकार का सबसे बड़ा
राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

था। जीवन में गणित के सिवाय और भी कोई चीज रसप्रद हो सकती है, यह उसकी कल्पना से परे था। वह कई बार शादी कर चुका था; पर यह नहीं समझ पाता था कि, शादी के कुछ ही समय बाद उसकी पत्नियाँ निराश और सुस्त क्यों हो जाती थीं, उसे छोड़ क्यों जाती थीं।

कप्तान बैंटिक सैनिक-पद के सर्वथा अयोग्य और वृद्ध था। युद्ध से पहले उसे अँग्रेजों से बहुत मोह था, उसके जीवन में अँग्रेजियत का बोलबाला था। वह अँग्रेजी पोशाक पहनता, अँग्रेजी कुत्ते रखता और अँग्रेजी पाइप में अँग्रेजी तम्बाकू पीता।

कप्तान लोफ्ट एकदम नौजवान था। वह नख से शिख तक सैनिक था। दिन-रात सेना की नियमावलियों को रटते रहने की उसे टेव थी। उसे भ्रम था कि, वर्दीधारी व्यक्ति से स्त्रियाँ अवश्य प्रेम करती हैं।

लेफ्टिनेंट प्रेकल और टांडर अपने देश की राजनीति में पाल-पोसकर बड़े किये गये नौजवान थे – भावुक और भीरु। प्रेकल हर बात में अपने नेता के अनुकरण की कोशिश करता था। उसकी कई बहनें थीं, जिनके कारण उसने कई तरुणों से बखेड़े मोल लिये थे। लेकिन वह खुद दिन-रात यह सपना देखा करता था कि, किस तरह लेफ्टिनेंट टांडर की खूबसूरत बहन को प्रेमजाल में फँसाऊँ। वह इस बात पर हैरान था कि, यह लड़की, जो अपने से कई गुना बड़ी उम्रवाले बूढ़ों से प्रेम कर चुकी है, उसे क्यों शह नहीं देती। स्वभाव से वह अत्यंत भावुक था और प्रेमरस-भीगी कविताएं लिखा करता था।

कर्नल लान्सर की टोली में से किसी को युद्ध एक खिलवाड़ से अधिक नहीं लगा था। अभी तक उन्होंने बढ़िया हथियारों और सुव्यवस्थित योजनाओं के बल पर निःशस्त्र और बेगुनाह लोगों को जीता था। अभी तक वे हारे नहीं थे और न उन्होंने अधिक हानि उठायी थी। वे नहीं जानते थे कि, घाव किसे कहते हैं और दर्द क्या चीज है। कोई शक्ति, कोई दबाव, उनसे काम करा रहा था। उन सबमें सिर्फ कर्नल लान्सर ही ऐसा था, जो जानता था कि, युद्ध क्या चीज है और उसका अंतिम परिणाम क्या निकलता है।

लान्सर ने बीस वर्ष पूर्व बेल्जियम और फ्रांस में लड़ाई देखी थी। इसलिए वह लड़ाई के बारे में जानता था; और जो कुछ वह जानता था, उसके बारे में सोचना नहीं चाहता था। वह जानता था कि, युद्ध केवल षड्यंत्र, धोखाधड़ी और घृणा का प्रपंच है, अयोग्य सेनापतियों का गोरखधंधा है; उसका परिणाम है उत्पीड़न, हत्या, बीमारियाँ। किंतु लान्सर यह भी जानता था कि, वह सैनिक है; ऊपर से मिली आज्ञा का पालन करना उसका काम है; प्रश्न या तर्क-वितर्क करना उसका काम नहीं। वह पिछली लड़ाई की दुःखद स्मृतियों को बिसार देना चाहता था, इस सचाई को भूल जाना चाहता था कि, यह लड़ाई भी वही रूप दिखायेगी। तथापि न जाने क्यों,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाबी जैसे गुलाबकी शर्मीली कलियाँ

गुलाबी जैसे गुलाबकी शर्मीली कलियाँ

गुलाबी रंगमें अब आपका

ब्रीज़

सौंदर्य साबुन

ब्रीज़...सुंदर, अति सुंदर... गुलाबी आवरणमें अब गुलाबी रंगकी टिकिया! अनुपम गुलाबी ब्रीज़...सुगंधित, मुलायम झाग-वाला ब्रीज़...आपकी सुंदरताको संवारता है...निखारता है!

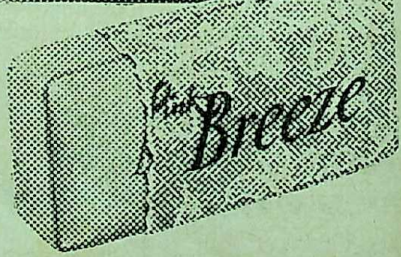

ब्रीज़ अधिक सुंदर रंगरूप के लिए

हिंदुस्तान लीवर लि. ने इरॅस्मिक लण्डन के लिए भारतमें बनाया

BZ. 19-50 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन में पचास बार वह अपने आपसे कहने लगता था – "यह युद्ध और तरह का साबित होगा . . . और तरह का !"

सेना के कूच के समय लोगों की जबर्दस्त भीड़ में, फुटबाल के मैच में और लड़ाई के मोर्चे पर दृश्य की बाहरी रेखाएँ धुँधली पड़ जाती हैं, यथार्थ अयथार्थ बन जाता है और मस्तिष्क पर अजीब-सा कुहरा छा जाता है । उत्तेजना, थकान, तनाव, हलचल सभी एक बड़े सपने में घुल-मिल जाते हैं–इस भाँति कि, अंत में यह याद करना कठिन हो जाता है कि, किसने किसको मारा ? किस हालत में, कब कहाँ मारा ? या आपने क्या हुक्म दिया ? और जब दूसरे लोग, जो वहाँ हाजिर नहीं थे, आपसे कहते हैं कि, इस तरह या उस तरह यह सब कुछ हुआ और इसने उसको, उसने इसको इस तरह मारा, तब उसके जवाब में धीमे-से आप यही कहते हैं– "हाँ, मेरा भी खयाल है कि, यही हुआ ।"

हाँ तो मेयर की कोठी में पाँचों सैनिक अधिकारी आराम से रहने लगे । एक दिन कर्नल लान्सर ने हंटर से कप्तान लोफ्ट के बारे में कहा – "हंटर, वह ठीक उसी तरह सिपाही है, जिस तरह बहुत-से आदमी राजनीतिज्ञ और नेता बन जाते हैं । आप देख लीजियेगा, यह आदमी जल्द ही जनरल स्टाफ का सदस्य बन जायेगा और वहाँ बैठकर युद्ध को देखता रहेगा ।"

प्रेकल ने पूछा–"साहब, आपका क्या खयाल है ? जंग कब खत्म हो जायेगी ?

" खत्म ? खत्म से तुम्हारा मतलब क्या है ?"

प्रेकल बोला – "यही कि, जल्द-से-जल्द कब तक हम जीत जायेंगे ?"

लान्सर ने सिर हिलाते हुए कहा– "ओह, कुछ नहीं कहा जा सकता । अभी तो दुनिया में शत्रु मौजूद है ।"

"लेकिन हम उसे खत्म कर देंगे ।"

लेफ्टिनेंट टांडर बीच में ही कहने लगा–" कौन कह सकता है, लड़ाई खत्म हो जाने पर हमें दूसरा काम मिले, न मिले । अच्छा तो यही है कि, कुछ खेत-खलिहान खरीद कर हम यहीं बस जायें ।"

" क्यों, तुम्हारे पास पुश्तैनी जमीन नहीं है क्या ? " लान्सर ने पूछा ।

" नहीं जी । बेकारी में सब-कुछ समाप्त हो गया । "

" अभी हमें बहुत लड़ना है । खानों से

भावी युद्धों की रोक-थाम शांतिकाल में होती है और भविष्य के भव्य भवन का निर्माण भी शांतिकाल में ही होता है। परंतु शांति की रक्षा उन गुणों के बिना असम्भव है, जिनसे युद्ध में विजय पायी जाती है । –विंस्टन चर्चिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

ये व्यापारी सज्जन
बवासीर से बेचैन थे
लेकिन
हडेन्सा
लगाने के बाद वे सुखी हो गये

हडेन्सा में चेतना-अपहरणकारी तत्व नहीं हैं और
कपड़ों पर दाग भी नहीं पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयला निकालना है और कोयला व्यापार अपने अधिकार में रखना है।"

तभी दरवाजे पर दस्तक दी गयी। सिपाही ने भीतर झाँककर कहा – "श्रीमन्, कारेल साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

"उन्हें भीतर भेज दो।" कर्नल ने कहा और अपने साथियों से कहने लगा–"इस आदमी से निभाना बहुत कठिन है।"

"लेकिन, इसने तो यहाँ अच्छा काम किया है।" टांडर बोला।

"जरूर, लेकिन यहाँ के लोग इसे पसंद नहीं करते।"

कारेल भीतर आया। वह अपनी प्रशंसा आप ही करने लगा। वह बताने लगा कि, किस भाँति उसने इस मुल्क में रहकर इसके खिलाफ जासूसी की और कैसे मुल्क को हराने में योग दिया। उसकी बातों का आशय था कि, उन्हें इतने अच्छे शहर और इतनी बड़ी कोयला-खानों पर अधिकार मिला और सिर्फ छः ही आदमी मरे, यह सब उसी की कृपा है। लान्सर बोल पड़ा– "क्या ही अच्छा होता, ये छः आदमी भी न मरते।" फिर कारेल के सिर पर बँधी हुई पट्टी देखकर पूछा – "क्या यहाँ के लोगों ने तुम्हें मारने की कोशिश की है? मेरा खयाल है, तुम्हें अब इस देश में नहीं रहना चाहिये, अन्यत्र चले जाना चाहिये।"

"मैं आपसे सिर की पट्टी के बारे में बातचीत करने नहीं आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि, अब मेयर का पद आर्डेन से लेकर मुझे दिया जाये।"

कारेल ने बायें से दायें सिर हिलाते हुए कहा– "मुझे ऐसा कोई आदेश ऊपर से नहीं मिला है। मेरा खयाल है कि, तुम्हें मेयर बना दें, तो लोग तुम्हारी जान के ग्राहक बन जायेंगे। तुम यहाँ के हालात भी नहीं जान सकोगे; क्योंकि जनता से तुम्हारा कोई सम्बंध नहीं रह जायेगा।"

"कुछ भी हो, मैं मेयर का पद चाहता हूँ।"

"तुम्हारी सेवाओं की हम बहुत कद्र करते हैं; पर तुम्हें यह नहीं भूल जाना चाहिये कि, मेयर आर्डेन मेयर ही नहीं है, और भी बहुत कुछ है। वह स्वयं जनता है। वह लोगों से पूछे बिना ही यह जान सकता है कि, किस वक्त लोग क्या सोच रहे हैं और क्या कर रहे हैं; क्योंकि जो कुछ वे सोचते हैं या सोचेंगे, वही मेयर आर्डेन सोचता है।"

"साहब, मेरी सेवाओं का क्या यही पुरस्कार है कि, आप मुझे दूर भेज दें।"

"पर हम तो तुम्हारे ही हित के लिए ऐसा कह रहे हैं। यहाँ के लोग तुमसे नफरत करते हैं। अब तुम हमारे काम में सहायक भी नहीं हो सकते। बेहतर तो यही है कि, तुम किसी नये मुल्क में, नये शहर में बस जाओ और नये विश्वास के साथ कार्य करो। कारेल, तुम्हारे ही हित के लिए कह रहा हूँ – सिर पर लोहे का टोप पहना करो, अधिक-से-अधिक समय घर में रहा करो, रात को घर से बाहर न निकलो, किसी तरह का नशा मत करो और मनुष्य का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दावत खा कर वे पछता रही थीं, पर...

एक गिलास पानी में चायवाली एक चम्मचभर **ईनो** मिलाइए। वह फ़ौरन घुल कर उभर आएगा। **ईनो** पीने में स्वादिष्ट व स्फूर्तिदायक होता है। चमकदार **ईनो** 'फ़्रूट साल्ट' का असर हलका होता है। पेट की ख़राबी में यह जल्द और पूरा आराम देता है तथा पाचन-क्रिया को ठीक करता है।

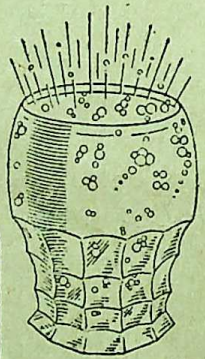

ईनो ने उनकी तबीयत जल्द ठीक कर दी

ईनो 'फ़्रूट साल्ट'

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट'—ये शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं
नीचन (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास मत करो।"

"कर्नल साहब, मेरा खयाल है कि, आप मेरी हालत को नहीं समझ सकते। यहाँ मेरा अपना घर है। यहीं की एक लड़की से मेरी मुहब्बत है। यहाँ के लोग बहुत सीधे और शांतिप्रिय हैं। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ।"

लान्सर बोला– "संसार में कहीं भी लोग शांतिप्रिय नहीं हैं। क्या तुम इस छोटी-सी बात को समझने की कोशिश नहीं करोगे? हमने इस मुल्क पर हमला किया है और तुमने, लोग जिसे गद्दारी कहते हैं, उसके जरिये हमारा रास्ता आसान किया है। तुमने इन लोगों को धोखा दिया है। क्या तुम नहीं जानते कि, इन लोगों से हमारी लड़ाई चल रही है?"

"हम तो इन्हें हरा चुके हैं।" कारेल ने कहा।

इस पर कर्नल लान्सर गुस्से में उछलकर खड़ा हो गया– "जनाब, हार एक क्षणिक चीज है। वह अधिक देर तक नहीं टिकती। लोग हार जाते हैं, फिर हमला कर बैठते हैं। क्या तुम्हें मालूम है, लोग क्या फुस-फुसा रहे हैं?"

"कर्नल, तो आप लोगों की फुसफुसाहट से डरते हैं?"

"हो सकता है। मैं ऐसे लोगों से ऊब गया हूँ, जिन्होंने कभी जंग देखी नहीं, फिर भी जंग के बारे में बहुत जानने का दिखावा करते हैं। सुनो, ब्रुसेल्स में एक बूढ़ी औरत थी–बहुत ही नाटी और दुबली-पतली। वह हमारी बड़ी सेवा करती थी और बड़े ही मधुर स्वर में हमारी राष्ट्रगीत गाया करती थी। हमें मालूम नहीं था कि, हमारी सेना ने उसके लड़के को फाँसी दी थी। अंत में जब हमने उस औरत को गोली मार दी, तब तक वह हमारे बारह आदमियों को जहर दे चुकी थी।"

कारेल ने कहा– "लेकिन, आपने उसे गोली मार दी?"

"हाँ, लेकिन इससे हत्याएँ रुकी नहीं। और हम पीछे लौटने पर मजबूर हो गये। क्योंकि जनता जाग चुकी थी। लोगों ने हमारे सैनिकों से चुन-चुनकर बदला लिया। कुछ की आँखें फोड़ दीं, कुछ को सूली पर चढ़ा दिया।"

तभी घबराये-से कैप्टन लोफ्ट ने कमरे में प्रवेश करते हुए कहा– "श्रीमन्, बड़ी मुसीबत खड़ी हो गयी है।"

"क्या हुआ?" लान्सर ने पूछा।

"कप्तान बैंटिक साहब मारे गये।"

सुनकर कमरे में उपस्थित लोग स्तब्ध रह गये। लोफ्ट कहने लगा–"कोयले की खान में एक मजदूर से मेरा झगड़ा हो गया। वह काम बंद करना चाहता था। मैंने काम जारी रखने को कहा, तो चिल्लाकर बोला– "मैं आजाद आदमी हूँ।" इस पर मैंने उसे मुँह बंद करके काम करने का हुक्म दिया। वह कुदाल लेकर मेरी ओर झपटा। कप्तान बैंटिक बीच-बचाव करने आये और मारे गये।"

"तुमने उस आदमी को गिरफ्तार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PHILLIPS फ़िलिप्स साइकिल

फ़िलिप्स साइकिलें दिखने में सुन्दर और चलने में हलकी होती हैं। आजकल के फुर्तीले नौजवानों की ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए इन्हें ख़ास तौर से बनाया जाता है। ये साइकिलें अच्छे से अच्छे फ़ौलाद से तैयार की जाती हैं ताकि लापरवाही से इस्तेमाल करने पर भी बरसों तक बढ़िया काम देती रहें।

दुनियाभर में लगभग ७० वर्षों से मशहूर फ़िलिप्स साइकिलें अब टी. आइ. साइकिल्स के आधुनिक कारख़ाने में कुशल कारीगरों द्वारा बनायी जाती हैं।

टी. आइ. साइकिल्स ऑफ़ इण्डिया, म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया कि नहीं ?"

"जी, किया।"

कर्नल लान्सर खड़ा हो गया और अपने आपसे कहने लगा—"बस शुरुआत हो गयी।.....अब अगर हम इस आदमी को गोली मारेंगे, तो बीस नये आदमियों को अपना दुश्मन बना लेंगे।"

हारे हुए शहराती गलियों में इधर-उधर घूम रहे थे। ये लोग वही थे, जो दो-चार या आठ दिन पहले थे। परंतु अब उनकी निगाहों में शर्म और पराजय की झलक नहीं थी। उनकी आँखें अंगारे उगल रही थीं। बेशक, वे अब भी कोयले की गाड़ियाँ खींचते थे; परंतु गुर्राते हुए और मजबूरी में। वे बहुत ही कम शब्दों में, प्रायः संकेतों द्वारा, आपस में बातचीत करते थे। प्रत्येक आदमी युद्ध के विषय में, अपने विषय में और अतीत के विषय में सोच रहा था।

× × ×

मेयर आर्डेन के रसोईघर में एनी और जोसेफ कामकाज करते हुए बातें कर रहे थे। जोसेफ ने मेज के निकट कुर्सी रखते हुए कहा—"ये लोग मजदूर अलेग्जैंडर मार्डेन पर मुकदमा चलायेंगे। वह गिरफ्तार हो चुका है।"

"क्या करेंगे वे एलेक्स का ?"

"गोली मार देंगे।"

एनी ने सिर हिलाया और एक अँगुली उठाते हुए कहा—"पर लोग इस सलूक को बरदाश्त नहीं करेंगे। लोग एलेक्स से प्यार करते हैं। वह बहुत भला और नेक आदमी है। आज तक उसने किसी को कभी चोट नहीं पहुँचायी। अगर उसे कुछ हो गया, तो लोग पागल हो जायेंगे। मैं भी पागल हो जाऊँगी। मैं इस बात को कभी सहन नहीं करूँगी।"

"और तुम क्या कर लोगी ?" जोसेफ ने पूछा।"

"क्या करूँगी ? मैं दुश्मन के आदमियों को मार डालूँगी।" एनी बोली।

"तब वे तुम्हें भी गोली मार देंगे।"

"मारने दो।"

जोसेफ समीप खिसक आया और बड़े ही सधे हुए ढंग-से धीमे-से बोला—"किसी से कहना नहीं एनी। विलियम और वाल्टर डागेल कल रात यहाँ से भाग निकले।"

"बहुत अच्छा हुआ।"

"और जानती हो ? वह शैतान कारेल अब ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहेगा।"

"क्या मतलब ?"

"हाँ, लोग यही कानाफूसी कर रहे हैं। अब लोग संगठित हो रहे हैं। अब लोग गुलामी को सहन नहीं करेंगे। अब गड़बड़ होकर रहेगी।"

इसी बीच मेयर आर्डेन ने कमरे में प्रवेश किया। वह अलेग्जैंडर मार्डेन के विषय में चिंतित था। तभी मार्डेन की पत्नी मॉली भी वहाँ आयी। मेयर इस परिवार से परिचित था। मॉली ने आते ही पूछा—"क्या आप एलेक को सजा देंगे?"

"नहीं," मेयर ने कहा—"मैं कैसे सजा दे सकता हूँ उसे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लोग तो कहते हैं कि, आप ही सजा देंगे। क्योंकि आप शांति और अनुशासन बनाये रखना चाहते हैं।"

"मॉली, क्या लोग अनुशासन चाहते हैं?"

"मैं वह सब नहीं जानती। मैं तो इतना जानती हूँ कि, लोग आजाद होना चाहते हैं।"

"तो, क्या वे यह भी जानते हैं कि, आजादी कैसे हासिल की जाती है। हथियारों से लैस शत्रु से कैसे लड़ा जा सकता है? हमें कौन-सा तरीका अपनाना चाहिये?"

"जी नहीं।"

"मॉली, तुम चतुर लड़की हो। तुम्हारा क्या खयाल है?"

"जी यही कि, लोग महसूस कर रहे हैं कि, अगर वे दबकर रहेंगे, तो मारे जायेंगे। इसलिए वे शत्रुको दिखा देना चाहते हैं कि, हमें हराया नहीं जा सकता।"

इस पर डाक्टर विंटर बोल उठा—"पर लोगों को लड़ने का मौका मिले तब न! मशीन-गनों के सामने निहत्थे खड़े होने का नाम लड़ाई नहीं है।"

आर्डेन ने मॉली से कहा—"और अगर तुम्हें लोगों की कोई योजना मालूम हुई तो, तुम मुझे बताओगी न?"

मॉली मेयर की ओर संदेह की दृष्टि से देखते हुए बोली—"जी.....।"

"तुम्हारा मतलब है, नहीं। तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं?"

"लेकिन एलेक्स का क्या होगा?"

"मैं उसे सजा नहीं दूँगा। उसने हमारे नियमानुसार कोई अपराध नहीं किया है।"

"क्या वे.....वे एलेक्स को मार डालेंगे?"

मेयर आर्डेन ने मॉली के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"बच्ची, मेरी बच्ची।"

तभी नौकरानी एनी ने आकर सूचना दी कि, कर्नल लान्सर आये हुए हैं और मेयर से अकेले में मिलना चाहते हैं। मेयर ने सबको स्नेहपूर्वक विदा किया और कर्नल को भीतर बुलवाया। कर्नल ने फौजी अदब के साथ मेयर से कहा कि, मॉली के पति पर कानून के मुताबिक मुकदमा चलाया जायेगा।

"इससे तो यही अच्छा है कि, आप उसे गोली मार दें। समय भी ऐसा ही है।"

"श्रीमन्, आप अच्छी तरह जानते हैं कि, दंड अपराधी के लिए उतना नहीं होता जितना कि दूसरे लोगों के लिए। दंड तो समाज को दिया जाता है। इसलिए उसका पूरा-पूरा प्रचार करना पड़ता है, नाटकीय ढंग से उसे जनता के सामने पेश करना पड़ता है।.....मेयर आर्डेन, आप जानते हैं कि, ऊपर से जो भी हुक्म मिले उसका पालन करना हमारे लिए अनिवार्य है। हमें कोयला चाहिये। अगर आपकी जनता इसमें मदद नहीं देगी और बखेड़ा पैदा करेगी, तो हमें बल-प्रयोग करना पड़ेगा। जरूरत पड़ने पर हम गोली भी चलायेंगे। और हमारी सरकार ने तय किया है कि, यहाँ अपराधियों को जो दंड दिये जायें, वे स्थानीय अधिकारियों के द्वारा ही दिलाये जायें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेयर ने पूछा– "तो आप यह चाहते हैं कि, मैं मुकदमे का ढकोसला रचकर अलग्जैंडर मार्डेन को मौत की सजा दूँ ?"

"जी, यदि आपने ऐसा किया, तो बहुत-सी खून-खराबी से हम बच जायेंगे ।"

"कर्नल, आपकी सरकार और आप कुछ नहीं समझते । सारी दुनिया में आपकी सरकार और आपकी जनता ही ऐसी है, जिसका इतिहास निरंतर पराजयों से भरा रहा है । इसलिए आप स्वतंत्र जनता की मनोभावना को समझने में असमर्थ हैं । मैं मेयर हूँ; मैं मौत की सजा नहीं दे सकता । हमारे समाज में यह अधिकार किसी को नहीं है । अगर मैं यह काम करूँगा, तो यह कानून का उल्लंघन होगा

"कानून का उल्लंघन ?" लान्सर ने विस्मयपूर्वक पूछा ।

"आपने आक्रमण के समय हमारे छः आदमी मार डाले । इसलिए हमारे कानून के मुताबिक आप सभी हत्या के अपराधी हैं । कर्नल, आप कानून-वानून के पचड़े में क्यों पड़ते हैं ? आपके हमारे बीच में कोई कानून नहीं है । यह युद्ध-काल है । और युद्ध-काल का यह अर्थ है कि, या तो आप हम सबको मार डालेंगे, अन्यथा अवसर पाकर हम आपको समाप्त कर देंगे । जब आप लोग यहाँ आये, आपने कानून का खात्मा कर दिया । अब एक नये कानून ने उस मृत कानून की जगह ले ली है ।"

कर्नल लान्सर बोला– "श्रीमन्, मेरे मन में आपके प्रति बहुत आदर है । मैं काफी उम्र और अनुभववाला आदमी हूँ । मैंने कई युद्ध देखे हैं और उनकी कड़वी स्मृतियाँ मेरे मन पर अंकित हैं । लेकिन जिस समाज में मैं रहता हूँ, उसमें मेरा कोई महत्व नहीं है । मैं आपसे सहमत हो सकता हूँ, किंतु उससे कोई फर्क नहीं पड़ता । जिस फौजी और राजनीतिक योजना और सरकार के अधीन मैं काम करता हूँ, वह एक पथरायी हुई और जड़ परम्परा है ।"

"और सृष्टि के आरम्भ से आज तक आपकी ये युद्ध-परम्पराएँ झूठी और गलत साबित हुई हैं ।"

"मैंने कहा न, मैं आपसे सहमत हूँ; परंतु उस उद्धत मजदूर को खुलेआम प्राणदंड दिया ही जायेगा । तभी दूसरे लोग हमारे आदमियों को मारने से बाज आयेंगे ।"

"उस सूरत में हमारी बातचीत यहीं खत्म होती है ।"

"नहीं, हम आपकी मदद चाहते हैं ।"

"मैं कह चुका हूँ कि, आप अपने उन सैनिकों को सजा दीजिये, जिन्होंने हमारे सैनिकों को मारा है । कितने थे वे ?"

"लगभग बीस ।"

"अच्छी बात है । आप उन बीस सिपाहियों को गोली मार दीजिये; मैं भी मार्डेन को प्राणदंड दे दूँगा ।"

"यह नहीं हो सकता ।"

"तो, जो आप चाहते हैं, वह भी नहीं हो सकता ।"

लान्सर ने कहा– "तब तो मुझे कारेल को मेयर बनाना होगा । आप मुकदमे के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय उपस्थित तो रहेंगे ?"

"हाँ, मैं रहूँगा, जिससे एलेक्स को अकेलापन महसूस न हो।"

लान्सर ने मेयर की ओर अपलक दृष्टि से कुछ क्षण देखा, फिर खेदपूर्वक मुस्कराते हुए कहा– "हमारे कंधों पर बड़ा भारी काम लाद दिया गया है न ?"

"हाँ," मेयर न उत्तर दिया–"बहुत भारी काम, संसार का एकमात्र असम्भव काम–ऐसा काम जो कभी पूरा नहीं होगा।"

"वह क्या है ?" कर्नल ने पूछा।

"मनुष्य की हिम्मत को हमेशा के लिए नष्ट कर देना। कर्नल साहब, कोई भी हमलावर, चाहे वह कितना ही महाबली क्यों न हो, मनुष्य की आत्मा को नहीं मार सक बल-प्रयोग द्वारा उसे वश में नहीं सकता।" और यह कहते-कहते मे आर्डेन का सिर मेज की ओर तनिक गया और उसने सिर उठाये बिना खिड़की की ओर देखते हुए कहा–" गिरने लगी है।....शायद रात गिरती रहेगी। बर्फ की शीतल गंध बहुत अच्छी लगती है।"

मेयर आर्डेन का प्रशांत मुख नयी दी से दमक रहा था। उस पर अजेय मानव आत्मा की उजली परछाईं पड़ रही थी कर्नल लान्सर बोला–"श्रीमन्, मैं आप गिरफ्तार करने के लिए बाध्य हूँ।"

कस्तूरी-मृग और शिकारी

कई दिन से बर्फ गिर रही थी; इसलिए सारी पहाड़ियाँ बर्फ से ढँक गयी थीं एक कस्तूरी-मृग अपनी गुफा से बाहर झाँककर बोला–" खूब, मुझे तो यही मौ अच्छा लगता है। मेरे पास रहने के लिए खूब गर्म जगह और खाने के लिए भी ब कुछ है। अब मैं यहीं कुछ दिन चैन से काट सकता हूँ। शिकारी भी मुझे नहीं सकता; क्योंकि मेरे पाँवों के सारे निशान बर्फ के नीचे दब गये होंगे।" फिर वह चा खाने लगा और बर्फ से ढँकी चोटियों का नजारा देखने लगा। अचानक उसने अ आप से कहा–" नहीं, इस बंद जगह से बर्फ का नजारा देखना और उसका आ उठाना असम्भव है। पहाड़ी की चोटी पर एक और गुफा है। मैं कविता की किताब लेकर जाता हूँ और वहीं कुछ दिन गुजारूँगा।" गुफा से निकलकर पहाड़ चोटी की तरफ दौड़ा। इस कार्रवाई से बर्फ पर उसके पाँवों के निशान फिर बन और उन्हीं निशानों को देखते हुए शिकारी भी दूसरी गुफा तक पहुँच गया।

सच है; अगर आप अपनी कार्रवाई नहीं छिपा सकते, तो विचार भी छिपा सकते; क्योंकि विचारों के चिह्न ही कार्रवाइयों के चिह्न होते हैं।
(एक चीनी लघुकथा)

–प्रतिभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

मई १९६१

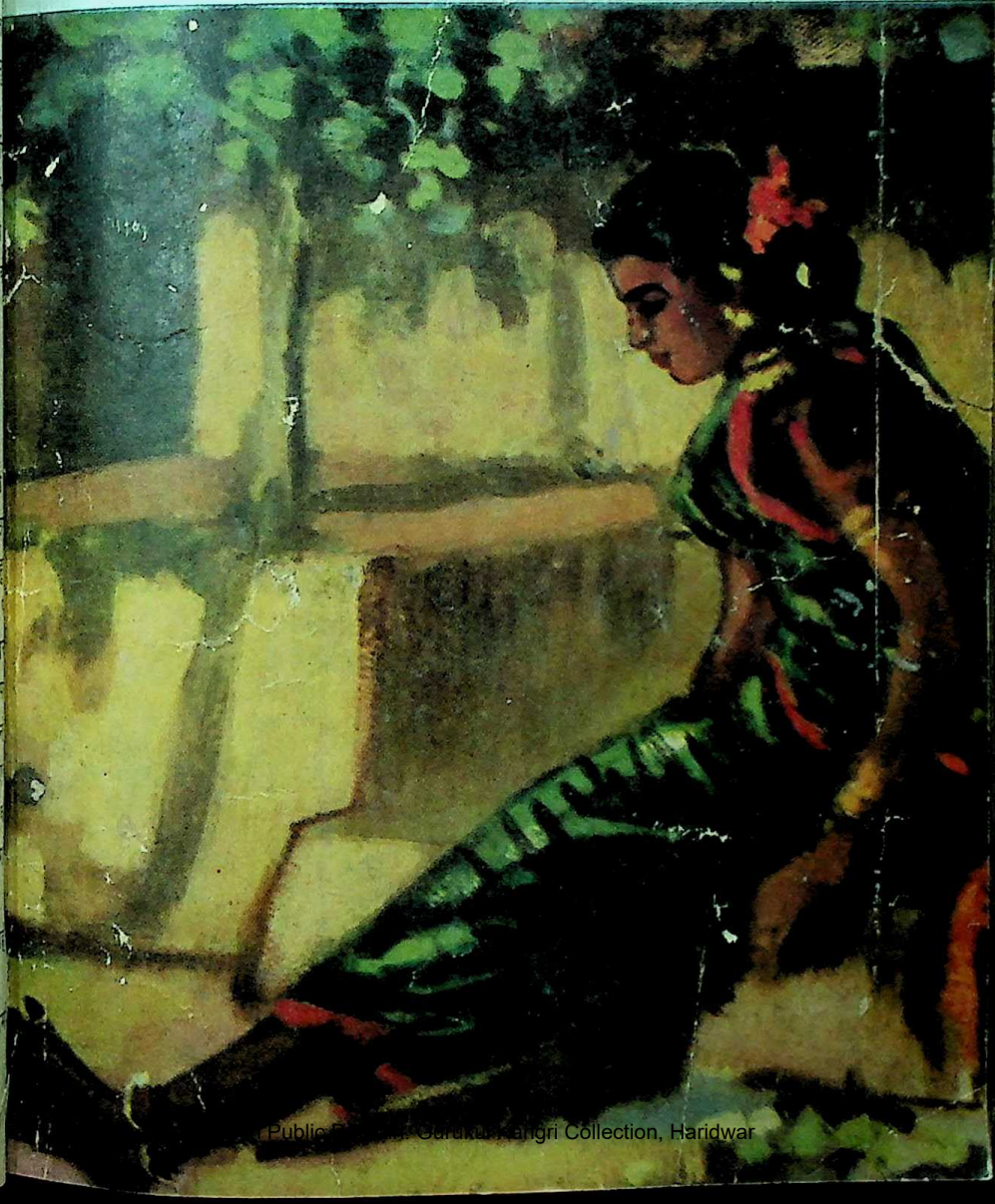

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन पोषण के लिए मां की ममता और ऑस्टरमिल्क

भविष्य के सुनहले सपने आपकी आंखों में झूमते हैं ... आप प्रसन्न हैं कि मुन्ने के सर्वोत्तम पालन पोषण के लिए आप उसे ऑस्टरमिल्क दे रही हैं, क्योंकि आप जानती हैं कि ऑस्टरमिल्क मां के दूध के समान है। ऑस्टरमिल्क ... शुद्ध दूध का आहार, जो ख़ास तौर पर नन्हे मुन्नों के लिए बनाया जाता है।

ऑस्टरमिल्क, बढ़िया से बढ़िया शुद्ध दूध से बनता है और मुन्ने की कच्ची पाचनशक्ति के लिए इसे उचित विधि से सुधारा जाता है। रक्त-हीनता की रोकथाम के लिए अधिक लोह, और दांतों की पुष्टि के लिए विटामिन 'डी' इस में मिलाये जाते हैं।

... मां के दूध के समान

मुफ़्त! 'ऑस्टरमिल्क पुस्तिका' (अंग्रेज़ी में) ... बच्चों की देखभाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें। डाकख़र्च के लिए ५० नये पैसे इस पते पर भेजिये: 'ऑस्टरमिल्क', पोस्ट आफ़िस बक्स नं. २०२, बम्बई १।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित— OS. 4-50-D. HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्मोल

सफेद बालों को काला और चमकीला बनाता है

वस्मोल एक असली वैज्ञानिक नुसखा है, जो अपने एक ही फ़ार्म्युले मे सही ढंग से बालों को काला करता है, बालों को निरोग रखता है और बालों के सुगंधित विन्यास के लिए उत्कृष्ट है—तो भी इसकी कीमत किसी भी अच्छे केशतेल से ज़्यादा नहीं है।

वस्मोल

केश काला करनेवाला जो अपना वादा पूरा करता है

वस्मोल तैलयुक्त सफेद मिश्रण केशतेल और पोमेड इन दो रूपों में सभी स्टोर्स व केमिस्टों के यहां मिलता है।

लैनोलिन से परिपूर्ण वस्मोल आपके बालों के लिए सर्वोत्तम है।

उत्पादक :

हाइजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट,

पोस्ट बॉक्स ११९२, बम्बई-१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में

सुपरिचित

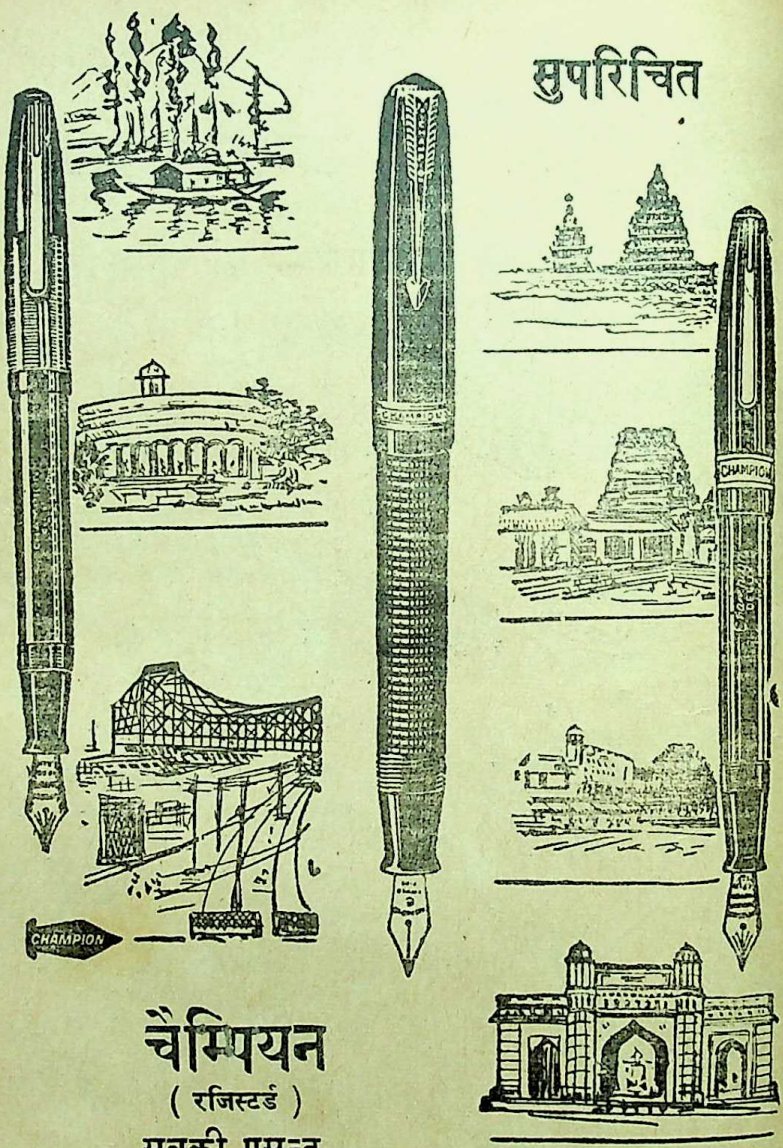

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई–२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

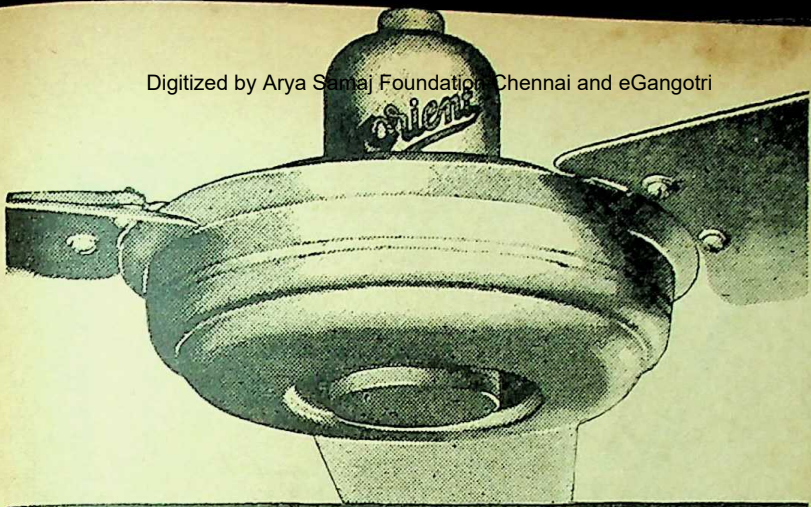

अनुपम निर्माण-कला के योग से उत्तम
पंखे बनते हैं

यही है
ओरिएन्ट
प्रणाली

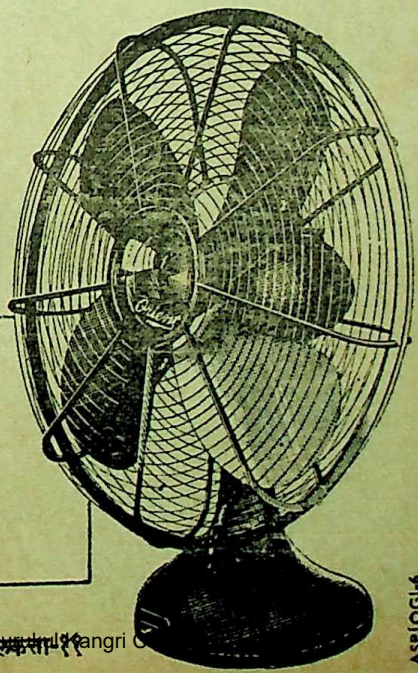

ओरिएन्ट
पंखा

सौन्दर्य और सेवा में
सदा अग्रगामी

ओरिएन्ट जनरल इण्डस्ट्रीज लि०, कलकत्ता ११

ASP/OGI-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

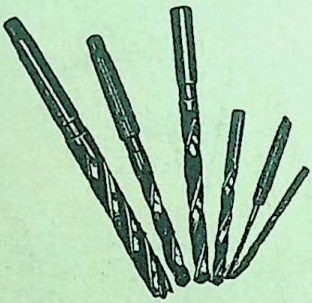

ड्रिल

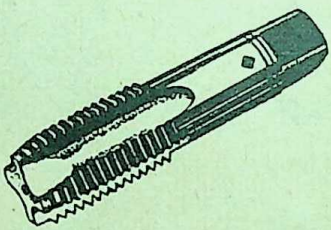

टैप

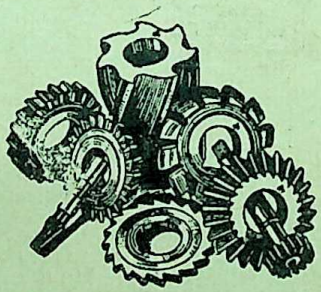

कटर

दी इंडियन टूल
मैन्यूफेक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर समय.....

हर स्थान पर....

हर अवसर पर....

ख टा ऊ

वायल्स में आप बहुत ही अच्छी दिखती हैं,

दि खटाऊ मकनजी स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी लिमिटेड

मिल्स : भायखला बम्बई, ऑफिस : लक्ष्मी बिल्डिंग, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई–१

दुकानें:–हाशिम बिल्डिंग, वीर नरिमन रोड, बम्बई–१, गणेशवाड़ी, शेख मेमन स्ट्रीट, बम्बई–२, मिल अहाता, हेन्स रोड, भायखला, बम्बई–२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेव तोलस्तोय :

बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था

अमर रूसी कलाकार लेव तोलस्तोय का कालजयी आत्मकथात्मक उपन्यास।

पृष्ठ संख्या ५१२, मूल्य रु० २.८१ रजिस्टर्ड पोस्टेज रु० १.४६

पावेल लुकनीत्स्की :

शिकारी के शब्द-चित्र

एक अमर रूसी शब्द-चित्रकार की लेखनी से प्रसूत ज़ारशाही रूस की जीवन झांकियां।

पृष्ठ संख्या ५८७, मूल्य रु० २.८१

रजिटर्ड पोस्टेज रु० १.४६

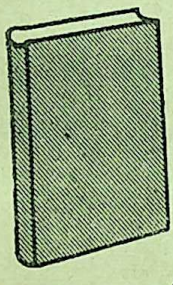

इवान तुर्गेनेव :

ओइकुमेना

आधुनिक सोवियत लेखक का लिखा रोचक उपन्यास—नये ताजिकिस्तान के जन्म' की घटनाओं से परिपूर्ण कहानी।

पृष्ठ संख्या ४१२, मूल्य रु० ३.१२ रजि० पोस्टेज रु० १.६९

इवान येफ्रीमोव :

पहाड़ों की बेटी

प्राचीन मिस्र और यूनान की पृष्ठभूमि पर लिखा किशोरोपयोगी उपन्यास, रोचक, शिक्षापूर्ण और सरस।

पृष्ठ संख्या ४४९, मूल्य रु० २.०६

रजि० पोस्टेज रु० १.३४

प्राप्ति - स्थान :

१ पिपुल्स पब्लिशिंग हाउस प्रा० लिमि०, एम० एम० रोड, नयी दिल्ली।
२ पी० पी० एच० बुकस्टाल, १९०—बी० खेतवाड़ी मेनरोड, बम्बई—४।
३ नेशनल बुक एजेंसी प्रा० लिमि०, १२ बंकिम चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता—१२,
४ पिपुल्स बुक हाऊस, ७, विश्वेश्वरनाथ रोड, लखनऊ।
५ पिपुल्स बुक हाऊस, फ्रासर रोड, पटना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप गर्व कीजिये

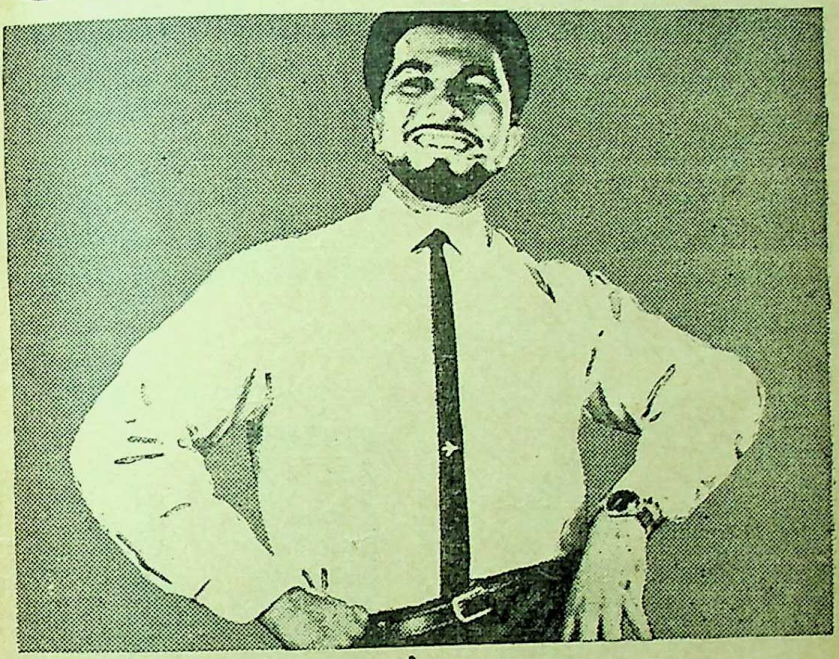

डेट धुले वस्त्रों पर

- डेट-धुले वस्त्र अधिक चमकीले दीखते हैं—
  डेट के विशेष स्वच्छताकारक गुण आप के कपड़ोंको नवीन जैसा चमक देते हैं।
- डेट-धुले वस्त्र अधिक शुभ्र दीखते हैं—
  डेट में उज्वलताकारक तत्व मिला रहता है। डेट वस्त्रों को बेदाग़ सफ़ाई से धोता है और शुभ्र को शुभ्र-तर करता है।
- डेट द्वारा—अपने वस्त्रों का आधुनिक ढंग से धोइये
  डेट, हल्के और भारी दोनों तरह के पानी में कुशलता से धोता है और खूब झाग पैदा करता है। डेट, सूती, रेशमी, रेऑन, ऊनी—सफेद अथवा रंगीन सब प्रकार के वस्त्रों के लिये सुरक्षापूर्ण है।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लिमिटेड, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

आपकी प्रिय चीजों को रंगीन कलात्मक रेडिमेड टीन बॉक्सीस में पेक कीजिये

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले:- **बॉम्बे टिन प्रिन्टर्स**
२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन ३४५७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी

युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी ८,००,००,०००
लागत पूँजी ४,००,००,०००
चुकती पूँजी २,००,००,०००
सुरक्षित कोष २,०५,००,०००

शाखाएँ

भारत में :—सभी प्रमुख नगरों तथा व्यापारिक व औद्योगिक महत्व के सभी कस्बों में ।
पाकिस्तान में :—चटगांव व करांची ।
बर्मा में :—रंगून, मोलमेन, मांडले ।
मलाया में :—पेनांग, कौला, लुमपुर, क्लांग ।
सिंगापुर में :—दी' आलमीड़ा स्ट्रीट, सेरांगून रोड ।
यू० के० — लंदन ।
अन्य हांगकांग और काझलून ।
एजेंट — विश्व में हर जगह ।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है । अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक सम्बंधी सेवा प्रदान करती है ।

जी० डी० बिड़ला
चेयरमैन

एस० टी० सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाडी और फेस पाउडर
भारत में विख्यात जनप्रिय

हिमानी प्राइवेट लि०
कलकत्ता–२

इस सफर में नवनीत (हिन्दी डाइजेस्ट)
समय काटने में खूब मदद करेगा ।

हकलाना

और बोलते समय होनेवाली दूसरी दिक्कतों का वैज्ञानिक इलाज, केवल कुछ सप्ताह में न दवाएँ, न सरजरी कोर्स में वाक्-शक्ति का पूरा पुन-शिक्षण है, सैकड़ों इस विनाशकारी कमजोरी से मुक्ति पा चुके हैं, आप भी क्यों न पाएँ ?

पूरे विवरण के लिए लिखें :

रामी क्लीनिक
कामालेन, घाटकोपर, बम्बई-७७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बादल से मुलायम
और रेशम से
चमकीले बालों
के लिये

स्वस्तिक शिकाकाई

बालों के लिये विशेष साबुन शैम्पू। टॉयलेट साबुन

स्वस्तिक शिकाकाई शैम्पू/टॉयलेट साबुन बहुत अच्छा झाग पैदा करता है तथा आप के बालों को मुलायम रेशमी सुकुमार सुगंधपूर्ण और चेहरे को स्वच्छ एवं गौर बनाता है। स्वस्तिक शिकाकाई साबुन में शिकाकाई का सार मिला रहता है जो शताब्दियों से सुंदर भारतीय नारियों के द्वारा अपने बालों और सौंदर्य की रक्षा के लिये इस्तेमाल किया जाता रहा है।

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लि. बम्बई १

Shilpi SOM. 6 HIN.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नहाना हो तो हमाम से!

हमाम

परिवार में हर एक का
प्रिय साबुन है

...और चलता भी ज्यादा दिन है!

टाटा-उत्पादन

THY-8 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दृष्टि में

क्या हम अपने 'नवनीत' में ऐसा स्तम्भ नहीं खोल सकते, जिसमें नये और उभरते हुए लेखकों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले ?

—विनोदकुमार रूपारेल, सम्भलपुर

पृथक् स्तम्भ खोलकर प्रतिभा पर 'नयी-पुरानी' के लेबल चिपकाने की क्या आवश्यकता, जब सारा 'नवनीत' उत्तम रचनाओं के लिए खुला हुआ है ?—सम्पादक

—०—

कृपया पाठकों के लिए कुछ स्तम्भ और बढ़ा दें । इससे पाठक अपनी ओर से कुछ सामग्री भेज सकेंगे ।

—सैयद शम्सुज्जमाँ, हिंगनघाट

वही सामग्री आप लेखक की हैसियत से भी तो भेज सकते हैं। —सम्पादक

—०—

'प्रेरणा-पुष्प' स्तम्भ में आपने अभी तक टाल्सटाय, रस्किन, इमर्सन और थारो के चित्र क्यों नहीं छापे ?

—आनंदशंकर, कलकत्ता

यह शिकायत और भी कई पाठकों ने की है । 'प्रेरणा-पुष्प' में हमने केवल जीवित सत्पुरुषों के चित्र देने की योजना बनायी है। केवल बंडारनायक (नवम्बर १९५९) इसके अपवाद थे । उनकी हत्या के पूर्व उस चित्र की छपाई हो चुकी थी । —सम्पादक

—०—

फ्रेंच कवि जाँ गियानो के लेख 'जीवन स्नेह के लिए' (नवनीत, अप्रैल १९६१) में कहा गया है—"इंद्रियों से सम्बद्ध प्रत्येक अनुभूति को हमें सम्भालकर, संजोकर रखना चाहिये । उनके गुणों की रक्षा करनी चाहिये ।" यह विचार तो इंद्रिय-संयम के भारतीय आदर्श के विरुद्ध है ।

—पं० विश्वनाथ शर्मा, काशी

इंद्रिय-संयम और इंद्रिय-शोषण के अंतर को न समझने से आपको यह भ्रम हुआ है । हमें सभी देशों व युगों के सद्विचार समझने चाहिये । —सम्पादक

—०—

'नवनीत' में पहले जितनी संख्या में चित्र नहीं छपते । चित्र 'नवनीत' की शोभा हैं ।

—कृष्णवल्लभ, कानपुर

आपकी शिकायत के विपरीत कुछ पाठकों की यह शिकायत है कि, 'नवनीत' में बहुत ज्यादा चित्र छपते हैं । हमारी यह दृष्टि रही है कि, चित्र लेख के विषयानुकूल हों और शोभावर्धक भी । इसीलिए प्रसिद्ध कलाकारों पर एक सचित्र लेख हर अंक में दिया जाता है। —सम्पादक

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घ काल तक चलने के लिए
सब सीलिंग पंखे
डबल
बाल बेयरिंग
युक्त हैं।

कार्य में कुशल
उत्तम क्वालिटी
सुन्दर रूपरंग

NIH 95-31

अब आसान किश्तों में भी मिलते हैं

उषा

मर्वोत्तम क्वालिटी
के लिए सुविख्यात नाम

सर्वाधिक

बिकने वाला

जय इंजिनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
★
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे
★
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
★
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता
★

विश्राम
इंद्र दुरगड, कलकत्ता की एक कृति

विषय-सूची

स्थितप्रज्ञ	जातक-कथा
सौंदर्य-सिंधु	अम्बालाल पुराणी
चिंता : मन की छाया	फ्राँस्वा मोरियेक
शत वत्सर परे	डा० प्रभाकर माचवे
सम्मिलित तान	रवींद्रनाथ ठाकुर [रूपांतर: दिनकर]
विश्वकवि और विश्वशांति	नार्मन कजिन्स
युग-भीष्म राजाजी	... ...
धरती का उदर-रोग	शिवतोष दास
नृत्य-सरस्वती बाला	सुनील कोठारी
फूल और शूल	बाबा बलवंत [रूपांतर : सुरजीत]
आत्मोद्यान का अमृत-फल	जे० एल० वुडहाउस
आँख-भर देखा कहाँ	डा० जगदीश गुप्त
इलियट में भारतीय तत्व	रमा सिंह
तीन मुक्तक	कमलप्रसाद 'कमल'
देखा इस बीमारी-ए-दिल को !	शौकत थानवी
तीन सेकेंड में भाग्य-निर्णय	परदेसी
सब सम्भव	... ...
वंशी का स्वर-विज्ञान	प्रवीण कुमार
जिगर साहब हार गये !	जिगर मुरादाबादी
कभी न भूलूँ	... ...
वेल्लोर की संजीवनी	डा० अब्राहम पाल
आ भैंसे, मुझे मार	पीटर एनवाया
एक दुर्लभ विभूति : तेजमलजी	अमरचंद शुक्ल
मकड़ी का जाल	थियोडोर ए० सेवोरी
प्राणमय परम्परा के उपासक	मोहन किशोर
विज्ञान की तहें	... ...
फूल भी काँटे भी	स० का० वि०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा बाग नजर आता है	गोरख	८८
बेरुत में चंद घंटे	कुदरतुल्लाह शहाब	८९
बंधक (मैथिली कहानी)	मनमोहन झा	९३
गुलगूना (उर्दू कहानी)	अली अब्बास हुसैनी	९७
इज्जत (बल्गारियन कहानी)	इवान बाजोव	११३
विशिष्ट वाङ्मय	... ...	१२३
अखंड ज्योति (पुस्तक-संक्षेप)	आरवी	१२९

–चित्रकार–

कुमारिल, बद्रीनारायण, बी०एम०कुलकर्णी, प्रद्युम्न तन्ना, ओके, सोनवलकर, डा० जगदीश गुप्त, शणै ।

–अगले पृष्ठ का चित्र–

सुजाता द्वारा बुद्ध को पायस-निवेदन

–सूचना–

'दुर्लभ-विभूति-प्रतियोगिता' का परिणाम जून १९६१ के 'नवनीत' में प्रकाशित किया जायेगा । – सम्पादक

आगामी अंक के आकर्षण

१. **पीली मौत का पराभव**
–प्रकाश खन्ना

२. **जब बर्फ पिघलने लगी**
–योगेंद्र चौधरी

३. **खर्राटे क्यों भरते हैं आप ?**
–नोह डी० फैब्रिकैंट

४. **बाप (उर्दू कहानी)**
–रतन सिंह

५. **वह मुस्कान बाँटती है**
–शांति पुणेंकर

६. **लामाओं के देश में**
(पुस्तक-संक्षेप)

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस**, ३६।४८ खेतवाडी, बैक रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष : १० नवनीत मई
अंक : ५ [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासि

स्थितप्रज्ञ

श्रावस्ती में अचिरवती नदी के तट पर पाँच सौ उपासक रहते थे। उनके साथ पाँच सौ सेवक भी थे। उपासक सदैव शांत और ध्यानरत रहते; किंतु सेवकों का कोलाहल असह्य हो जाता था।

दोनों के इस व्यवहार-वैषम्य का कारण बतलाते हुए शास्ता ने एक दृष्टांत दिया :

"पूर्व समय में एक बार वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त ने विजयोपरांत वापस आये सैंधव घोड़ों को अँगूर का पेय पिलाने की आज्ञा दी। सैंधव घोड़े पेय पीकर अश्वशाला में अपने-अपने नियत स्थानों पर आकर खड़े हो गये; प्रमत्त नहीं हुए। किंतु उसी पेय का दशांश ही जब भारवाही गधों को पिलाया गया, तो वे उन्मत्त होकर रेंकते हुए राजप्रसाद के आँगन में अस्त-व्यस्त भागने लगे। राजा ने अमात्य से इस व्यवहार-विभिन्नता का कारण पूछा, तो अमात्य ने कहा—"राजन्! जिनका शील स्थिर होता है, उसके लिए द्राक्षारस रसायन बन जाता है; किंतु जिनका शील-संकोच केवल मूढ़ता पर अवलम्बित होता है, जो स्वभाव से दुःशील होते हैं, वे यत्किंचित् उत्तेजना पाने पर भी उन्मत्त हो जाते हैं, अशिष्ट और उच्छृंखल हो जाते हैं।"

श्रावस्ती के उपासक भी निरंतर चिंतन और अभ्यास से शीलवान् बन गये थे। उन्होंने अंतर्बाह्य परिस्थितियों पर विजय पायी थी। इसीलिए वे स्थितप्रज्ञ बने रहे और सेवक अस्थिर होकर उन्मत्त हो गये। स्थिरशील होने के लिए जिन संस्कारों की आवश्यकता है, वे निरंतर अभ्यास और वैराग्य से सिद्ध होते हैं।

—जातक-कथा

CC-0.In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

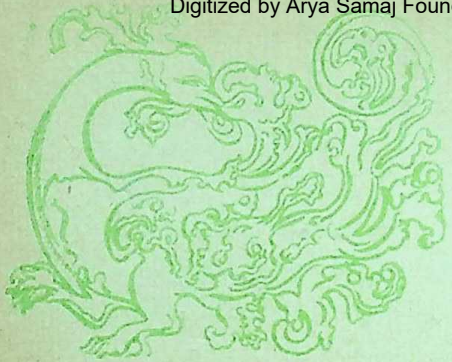

सौंदर्य-सिंधु

सौंदर्य भगवान् की विभूति है; उसकी उपासना आत्म-साधना का मार्ग है।

अम्बालाल पुराणी

प्राचीन काल में हमारी संस्कृति प्रभु की एक विभूति के रूप में, वस्तुतः प्रभु के ही एक स्वरूप के तौर पर सौंदर्य की अनुभूति को प्रोत्साहन देती थी। हमारे धर्म ने प्रभु को हमेशा सुंदरता की मूर्ति माना है।

उपनिषद् में प्रभु का रस के रूप में वर्णन किया गया है–" रसो वै सः।" श्री अरविंद ने 'फ्यूचर पोएट्री' में 'रस' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है–"रस यानी एकाग्र स्वाद की अनुभूति, भावना का आध्यात्मिक निष्कर्ष, भौतिक सौंदर्य की भुक्ति, भाव का शुद्ध और पूर्णतायुक्त मूल प्राप्त होने पर अंतरात्मा को अनुभव होनेवाला सुख।"

मध्ययुग में शैव और वैष्णव सम्प्रदायों का जब प्रचार हुआ, तब उसमें सौंदर्य प्रभु का केवल एक नहीं अपितु उत्तमोत्तम स्वरूप माना गया है। इनका प्रभु 'भुवन-सुंदर' है, 'रसरूपी अमृत सर्वस्व का सिंधु' है, 'अखिल सौंदर्यनिधि' है। मध्ययुग के लगभग सभी संत प्रभु के इस स्वरूप को स्वीकार करते और उसका गुणगान करते हैं।

कवि रवींद्र कहते हैं–"वैराग्य साधना से मुक्ति से आमार नय–त्याग से और वैराग्य-प्रधान साधना से प्राप्त होनेवाली मुक्ति मेरे लिए नहीं।" "और आनंद के हजारों बंधनों में मुझे मुक्ति के स्पर्श का अनुभव होता है।" कवि इंद्रियों के सब द्वार खुले रखकर उनके द्वारा विश्वव्यापी आनंद का स्पर्श करना चाहता है। चार पाँच सदी पहले संत कबीर ने भी ऐसी ही अनुभूति का उल्लेख किया है–

संतो, सहज समाध भली . . .
आँख न मूँदूँ कान न रूँधूँ,
काया कष्ट न धारूँ,
खुले नयन मैं हँस-हँस देखूँ,
सुंदर रूप निहारूँ,
सब ही मूरत बीच अमूरत,
मूरत की बलिहारी।

इंद्रियों की साहजिक क्रिया द्वारा विश्वव्यापी दिव्य सौंदर्य के और इस सौंदर्य को धारण करनेवाले भुवन-सुंदर प्रभु के दर्शन होते हैं। इसे सौंदर्य-अनुभूति की पराकाष्ठा कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की इस सर्वोच्च अनुभूति को अलग रखकर जीवन की सामान्य सौंदर्यानुभूति की प्रक्रिया को भी समझ लें।

रवींद्र के बाल्यकाल का एक अनुभव है। ठाकुर-परिवार के बालकों के लिए घर में ही एक पाठशाला चलायी जाती थी। शरीर-रचना भी वहाँ पढ़ाये जानेवाले विषयों में थी। एक दिन इस विषय के अध्यापक मनुष्य के हाथ की एक हड्डी विद्यार्थियों को दिखाने के लिए ले आये। मनुष्य के शरीर से और उसके अस्थि-पंजर से भी वियुक्त इस हड्डी को देखकर रवींद्र को बड़ा आघात लगा। मानव-शरीर से विलग हुए हाथ की कल्पना उनको बड़ी भद्दी और अभद्र प्रतीत हुई। अपने स्वाभाविक स्थान और धर्म से वियुक्त यह हाथ सर्वथा अर्थहीन और इसलिए नितांत सौंदर्यहीन था।

अपना एक और अनुभव रवींद्र ने इस प्रकार लिखा है—"एक दिन नाव में बैठकर मैं गंगा की सैर करने निकला। पतझड़ की रमणीय संध्या चारों ओर बिखरी पड़ी थी। अभी सूर्यास्त हुआ था। आकाश का मौन शांति और सौंदर्य से लबालब भरा हुआ था। सूर्यास्त के रंगों की बदलती छायाओं को प्रतिबिम्बित करती गंगा-जल की सतह पर एक भी तरंग नहीं उठ रही थी। मीलों तक फैला नदी का निर्जन रेतीला तट मानव के उद्भव से पूर्व पृथ्वी पर विचरनेवाले, चमकीले, रंग-बिरंगी फलकोंवाले राक्षस प्राणी की तरह पड़ा हुआ था। सन्ध्याकाल की निःस्तब्ध शांति में नदी के ऊँचे किनारों के पास होती हुई हमारी नाव चली जा रही थी। कगारों की खोहों में पक्षी नीड़ बनाकर निवास कर रहे थे।

"इतने में गंगा में से एक बड़ी मछली पानी की सतह से ऊपर उछली और तुरंत पानी में अदृश्य हो गयी और अदृश्य होने के पूर्व अपनी देह पर सायंकालीन आकाश के सभी रंगों की चमक दिखाती गयी। जल की सतह का रंग-बिरंगा परदा एक क्षण के लिए दूर हो गया और उसके पीछे आती हुई, जीवन के आनंद के साथ कल्लोल करती हुई, जलचर-सृष्टि के मुझे दर्शन हुए। अतल गहराई से नृत्यमय अभिनय के साथ मछली सतह पर आयी और अस्त होते हुए दिन के मूक संगीत-संवाद में उसने अपना सुर मिला दिया। मानव-सृष्टि से भिन्न एक दूसरी सृष्टि ने अपनी भाषा में मेरा मैत्रीपूर्ण अभिनंदन किया और उस अभिनंदन से मेरे हृदय में हर्ष का उद्रेक हुआ।

"इतने में माँझी निराशापूर्ण स्वर से बोल उठा—'ओहो! कितनी बड़ी मछली।'"

अपनी इच्छा के आवरण में से उसने मछली को देखा; इसलिए वह उसका पूरा सत्य न प्राप्त कर सका।

उपयोगिता, व्यवहार, स्थूलता आदि मनुष्य के सौंदर्य के अनुभव में बाधा डालते हैं। चित्रकार को नदी जैसी दिखाई देती है, प्यास से बेचैन आदमी को वैसी नहीं दिखाई देती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

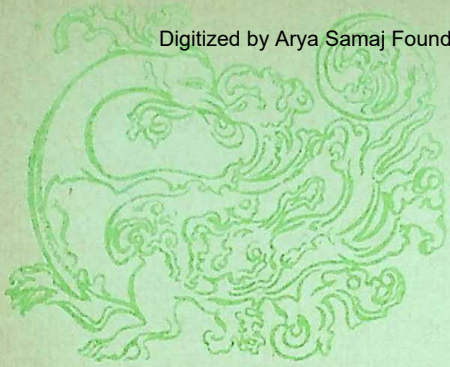

सौंदर्य-सिंधु

सौंदर्य भगवान् की विभूति है; उसकी उपासना आत्म-साधना का मार्ग है।

अम्बालाल पुराणी

प्राचीन काल में हमारी संस्कृति प्रभु की एक विभूति के रूप में, वस्तुतः प्रभु के ही एक स्वरूप के तौर पर सौंदर्य की अनुभूति को प्रोत्साहन देती थी। हमारे धर्म ने प्रभु को हमेशा सुंदरता की मूर्ति माना है।

उपनिषद् में प्रभु का रस के रूप में वर्णन किया गया है–" रसो वै सः।" श्री अरविंद ने 'फ्यूचर पोएट्री' में 'रस' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है–"रस यानी एकाग्र स्वाद की अनुभूति, भावना का आध्यात्मिक निष्कर्ष, भौतिक सौंदर्य की भुक्ति, भाव का शुद्ध और पूर्णतायुक्त मूल प्राप्त होने पर अंतरात्मा को अनुभव होनेवाला सुख।"

मध्ययुग में शैव और वैष्णव सम्प्रदायों का जब प्रचार हुआ, तब उसमें सौंदर्य प्रभु का केवल एक नहीं अपितु उत्तमोत्तम स्वरूप माना गया है। इनका प्रभु 'भुवन-सुंदर' है, 'रसरूपी अमृत सर्वस्व का सिंधु' है, 'अखिल सौंदर्यनिधि' है। मध्ययुग के लगभग सभी संत प्रभु के इस स्वरूप को स्वीकार करते और उसका गुणगान करते हैं।

कवि रवींद्र कहते हैं–"वैराग्य साधना मुक्ति से आमार नय–त्याग से और वैराग्य-प्रधान साधना से प्राप्त होनेवाली मुक्ति मेरे लिए नहीं।" "और आनंद के हजारों बंधनों में मुझे मुक्ति के स्पर्श का अनुभव होता है।" कवि इंद्रियों के सब द्वार खुले रखकर उनके द्वारा विश्वव्यापी आनंद का स्पर्श करना चाहता है। चार पाँच सदी पहले संत कबीर ने भी ऐसी ही अनुभूति का उल्लेख किया है–

संतो, सहज समाध भली . . .
आँख न मूँदूँ कान न रूँधूँ,
काया कष्ट न धारूँ,
खुले नयन मैं हँस-हँस देखूँ,
सुंदर रूप निहारूँ,
सब ही मूरत बीच अमूरत,
मूरत की बलिहारी।

इंद्रियों की साहजिक क्रिया द्वारा विश्वव्यापी दिव्य सौंदर्य के और इस सौंदर्य को धारण करनेवाले भुवन-सुंदर प्रभु के दर्शन होते हैं। इसे सौंदर्य-अनुभूति की पराकाष्ठा कह सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य की इन्द्रियों की अनुभूति को अलग रखकर जीवन की सामान्य सौंदर्यानुभूति की प्रक्रिया को भी समझ लें।

रवींद्र के बाल्यकाल का एक अनुभव है। ठाकुर-परिवार के बालकों के लिए घर में ही एक पाठशाला चलायी जाती थी। शरीर-रचना भी वहाँ पढ़ाये जानेवाले विषयों में थी। एक दिन इस विषय के अध्यापक मनुष्य के हाथ की एक हड्डी विद्यार्थियों को दिखाने के लिए ले आये। मनुष्य के शरीर से और उसके अस्थि-पंजर से भी वियुक्त इस हड्डी को देखकर रवींद्र को बड़ा आघात लगा। मानव-शरीर से विलग हुए हाथ की कल्पना उनको बड़ी भद्दी और अभद्र प्रतीत हुई। अपने स्वाभाविक स्थान और धर्म से वियुक्त यह हाथ सर्वथा अर्थहीन और इसलिए नितांत सौंदर्यहीन था।

अपना एक और अनुभव रवींद्र ने इस प्रकार लिखा है—"एक दिन नाव में बैठकर मैं गंगा की सैर करने निकला। पतझड़ की रमणीय संध्या चारों ओर बिखरी पड़ी थी। अभी सूर्यास्त हुआ था। आकाश का मौन शांति और सौंदर्य से लबालब भरा हुआ था। सूर्यास्त के रंगों की बदलती छायाओं को प्रतिबिम्बित करती गंगा-जल की सतह पर एक भी तरंग नहीं उठ रही थी। मीलों तक फैला नदी का निर्जन रेतीला तट मानव के उद्भव से पूर्व पृथ्वी पर विचरनेवाले, चमकीले, रंग-बिरंगी फलकोंवाले राक्षस प्राणी की तरह पड़ा हुआ था। सन्ध्याकाल की निःस्तब्ध शांति में नदी के ऊँचे किनारों के पास होती हुई हमारी नाव चली जा रही थी। कगारों की खोहों में पक्षी नीड़ बनाकर निवास कर रहे थे।

"इतने में गंगा में से एक बड़ी मछली पानी की सतह से ऊपर उछली और तुरंत पानी में अदृश्य हो गयी और अदृश्य होने के पूर्व अपनी देह पर सायंकालीन आकाश के सभी रंगों की चमक दिखाती गयी। जल की सतह का रंग-बिरंगा परदा एक क्षण के लिए दूर हो गया और उसके पीछे आती हुई, जीवन के आनंद के साथ कल्लोल करती हुई, जलचर-सृष्टि के मुझे दर्शन हुए। अतल गहराई से नृत्यमय अभिनय के साथ मछली सतह पर आयी और अस्त होते हुए दिन के मूक संगीत-संवाद में उसने अपना सुर मिला दिया। मानव-सृष्टि से भिन्न एक दूसरी सृष्टि ने अपनी भाषा में मेरा मैत्रीपूर्ण अभिनंदन किया और उस अभिनंदन से मेरे हृदय में हर्ष का उद्रेक हुआ।

"इतने में माँझी निराशापूर्ण स्वर से बोल उठा—'ओहो! कितनी बड़ी मछली।"

अपनी इच्छा के आवरण में से उसने मछली को देखा; इसलिए वह उसका पूरा सत्य न प्राप्त कर सका।

उपयोगिता, व्यवहार, स्थूलता आदि मनुष्य के सौंदर्य के अनुभव में बाधा डालते हैं। चित्रकार को नदी जैसी दिखाई देती है, प्यास से बेचैन आदमी को वैसी नहीं दिखाई देती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंता : मन की छाया

काँटे से काँटे की तरह चिंता से चिंता का उन्मूलन किया जा सकता है–प्रसिद्ध फ्रेंच मनीषी के बताये इस 'आध्यात्मिक होमियोपैथी' के नुस्खे में 'ईसाइयत' के स्थान पर धर्म शब्द रख लें, तो वह सबके लिए गुणकारी सिद्ध होगा।

फ्राँस्वा मोरियेक

जीवन की इस गोधूलि-वेला में यदि कोई मुझसे पूछे कि, ईसा में तुम्हें इतनी श्रद्धा क्यों है, तो मेरा उत्तर यही होगा–"क्योंकि उसने मुझे चिंताओं से मुक्त कर दिया है।"

मनुष्य के साथ चिंता का कुछ ऐसा गहरा, अटूट सम्बंध है कि, बचपन में ही हमारे जीवन में चिंता का प्रवेश हो जाता है। अँधेरे कमरों से हमें बचपन में कितना डर लगता है! रात की नीरवता में जीने पर किसी के चढ़ने-उतरने की धम्म-धम्म आवाज कितना आतंकित कर देती है!

रात को लालटेन की काँपती हुई लौ के प्रकाश में दीवार पर नाचती हुई परछाइयाँ देखकर भय के मारे हमने कभी जो गर्म आँसू बहाये थे, उनकी नमी आज भी हम अपने गालों पर अनुभव करते हैं। हममें से कई अपनी कक्षा में सबसे छोटे और कमजोर बालक थे; पढ़ाई में कच्चे थे और क्लास में सहमे-सहमे रहते थे कि, कहीं मास्टरजी हमसे ही सवाल न पूछ बैठें और सबके सामने हमारी बड़ी बेइज्जती हो।

सचमुच बहुत-से बच्चों के जीवन में चिंता एक अविभाज्य अंग, एक स्थायी अवस्था बन जाती है। यह चिंता उन्हें पागल न बना दे, इसके लिए माँ की वह ममता आवश्यक है, जो हरदम बच्चे को अपने आँचल में लपेटे रहती है, जो रात को बच्चे के भय से चौंककर उठ बैठने पर पीठ सहलाते हुए शांतिपूर्वक कहती है–"डरता क्यों है रे मूरख? मैं पास हूँ; सो जा।"

बचपन की ये अनुभूतियाँ चिंता के विषय में एक बुनियादी बात हमें बताती हैं–चिंता कहीं बाहर से नहीं आती; देश-काल से उसका कोई सम्बंध नहीं होता। मैं एक खुशहाल मध्यम-वर्गीय परिवार का लाड़ला बेटा था और मेरा देश फ्रांस तब अपनी शक्ति के चरमोत्कर्ष पर था। पर मेरी प्रौढ़ावस्था की सारी चिंताएँ, बीज रूप में ही सही, बचपन में भी विद्यमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं; किशोरावस्था में मैं हरदम संत्रस्त रहता था।

इसका यह अर्थ नहीं कि, सन् १९१४ से जो यातना-युग आरम्भ हुआ, उसने हमारी चिंताओं की सेना को रसद नहीं पहुँचायी है। मेरा यह भी अभिप्राय नहीं कि, मानव को आज अपने अस्तित्व के विषय में ही जो भय हो चला है, उसका वर्तमान युग से कोई सम्बंध नहीं है। सम्बंध अवश्य है। परंतु ऐतिहासिक घटना-क्रम कितना ही विषम और विषादपूर्ण क्यों न रहा हो, उसे चिंताओं का जनक नहीं कहा जा सकता।

मेरा कहना यह है कि, इतिहास के जो सबसे सुखमय, शांतिमय युग थे, उनमें भी मानव चिंताग्रस्त और व्यग्र रहा है। क्योंकि वह मानव जो ठहरा! कभी उसकी चिंता का कारण यह होता है कि, वह प्रेम देता है पर प्रेम पाता नहीं; कभी यह कि, उसके न चाहने पर भी कोई उसे प्रेम अर्पित कर रहा है; कभी वह इसलिए व्यग्र होता है कि, उसके संतान थी और अब नहीं रही, या इसलिए कि, कभी वह स्वस्थ-सशक्त था पर अब वैसा नहीं है।

बस, यहीं मैं आपसे कहता हूँ—"बंधु, मैं आपको बताता हूँ आनंद का मार्ग।" यह मार्ग है उस आनंद का, जिसका दर्शन श्रद्धालु ईसाई को—किसी भी धर्म के निष्ठावान् अनुयायी को—मेरी उम्र में होता है। सच कहता हूँ, उम्र ढलने के साथ-साथ मेरी चिंताओं के बंधन शिथिल हुए हैं।

ईसा कोई दीवार नहीं है, जिसे हमने संकट से बचने के लिए खड़ा कर लिया है। वास्तव में उल्टी ही बात है। युवावस्था में, जब चिंताएँ हमारे मन की चिरसहचरी थीं, हम लोग ईसा से विमुख रहे। नहीं, यह कहना सरासर गलत है कि, हमारी चिंताओं और भीतियों ने भगवान् को जन्म दिया है; वे तो हमें भगवान् से विमुख रखती हैं।

तो वह क्या चीज है, जिसे मैं जवानी में नहीं जानता था और अब बुढ़ापे में जान गया हूँ? और कुछ नहीं, सिर्फ यही कि, तब मुझे सुख-शांति से लगाव नहीं था। सुख-शांति में रस लेना सीखना पड़ता है। और बड़ा समय लगता है उसे सीखने में। यह सब मैं स्वानुभव से कह रहा हूँ। जवानी में मुझे चिंताएँ प्यारी लगती थीं; भगवान् से भी अधिक प्यारी थीं वे।

ईसा ने एक बार एक नारी से पूछा था—"जानती हो तुम भगवान् के वरदान

लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को ?" क्या है यह भगवान् का वरदान ? यह है चिंता से छुटकारा। "मैं तुम्हें शांति देता हूँ, अपनी शांति तुम्हें देता हूँ" –ईसा ने सूली पर चढ़ने से पिछली रात को कहा था। पर यह शांति ही हम नहीं चाहते। यह शांति ही तो हमें डरावनी लगती है। सच्ची बात यह है कि, हमें शांति प्रिय नहीं है। हममें से अधिकांश की हार्दिक कामना तो फ्रेंच लेखक शातोब्रियाँ के इन वचनों में प्रकट होती है–"उठो, हे चिरप्रतीक्षित तूफान, उठो !"

आप कहेंगे कि, ईसाइयत–धर्म मात्र–भी तो चिंता का ही एक रूप है। बात गलत नहीं है। प्रभु ने कहा था–"मेरे पिता के प्रासाद में कई खंड हैं।" और उनमें से एक खंड है चिंता और भय का। भक्ति-प्रधान धर्मों ने मुक्ति को भगवान् का प्रसाद माना है और भगवान् का प्रसाद अहैतुक होता है। सो यह भय साधकों को सताता रहता है कि, "यदि मुझ पर कृपा न हुई तो ?"

मोक्ष की यह चिंता कभी-कभी अत्यंत पीड़ादायक रोग का रूप धारण कर लेती है। उसी के कारण कई श्रद्धालु धर्म से बचकर भाग निकलते हैं। ईसाइयत से मार्क्सवाद की शरण में जानेवाले एक तरुण मित्र ने मुझसे कहा था–"साम्यवाद की सबसे शानदार बात यह है कि, अब मुझे अपनी मुक्ति की चिंता नहीं सताती।"

इस प्रकार की चिंता की एक अच्छी दवा मेरे पास है। एक अन्य प्रकार की चिंता ही वह दवा है। चिंता द्वारा चिंता का उपचार। इसे एक प्रकार की 'आध्यात्मिक होमियोपैथी' समझिये।

आप अपनी चिंता छोड़कर दूसरों की चिंता करने लग जाइये। चिंता तभी पराजित और वशीभूत होगी, जब हम उसे करुणा में परिवर्त्तित कर दें। करुणा का चोला पहन लेने पर, परार्थ पर केंद्रित हो जाने पर, चिंता हमें अपने भविष्य की चिंता से मुक्त कर देती है।

सार्त्र ने कहा है–"मेरे सिवा जो कुछ है, नरक है।" पर सच्चे ईसाई के लिए "मेरे सिवा जो कुछ है, ईसा है।" और कहना न होगा कि, चिंता की परिधि को फैलाना, उसे स्वार्थ के बजाय परार्थ पर केंद्रित करना तभी सार्थक होगा, जब हम ईसा की यह व्यापक व्याख्या स्वीकार करें।

संतों और साधकों ने ईसा से अपना पूर्ण तादात्म्य जोड़कर उसके शूलारोहण की यातना को स्वयं अनुभव किया है। हम-जैसे सामान्य जनों के लिए यही काफी है कि, हम अपने भाइयों की, मित्रों और पड़ोसियों की चिंता को अपनी चिंता बना लें। और हम ईसा के इन शब्दों के अर्थ का साक्षात्कार कर लेंगे –"मैं तुम्हें शांति देता हूँ; अपनी वह शांति, जो दुनिया तुम्हें नहीं देती।"

चिंता द्वारा शांति और आनंद ! बड़ा विचित्र उपचार मैं बता रहा हूँ। पर यह आध्यात्मिक और लौकिक सब प्रकार की चिंताओं का, चिंता मात्र का, उपचार है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शत वत्सर परे

रवि ठाकुर, सौ वर्ष हो गये आज तुम्हारे जन्म-दिवस को
ऐसे ही सौ वर्ष और बीतेंगे ? याद रहेंगे किसको–
उठते-गिरते राजनीति के छोटे-मोटे विवाद बुद्बुद
याद रहेगी क्षणिका, चित्रा, कथा, बलाका, शिशु-रस-संपद् !
युगों-युगों से बंशी बजती आयी, घाट पुनः क्यों सूने
जल-भरने की बेला, पथ पर छाया, सुख-दुख होते दूने
वही ऊर्वशी, वही मानसी, वही श्यामली, वही रंगिणी
लेकिन कोई अबूझ पीड़ा हुई अकारण मर्म-संगिनी
नहीं मुक्ति वैराग्य-विरति में, नहीं दार्शनिक प्रश्नोत्तर में
नहीं देवता रुद्ध द्वार देवालय-कोने तम-पत्थर में
मोह यहाँ पर जला और वह ना जाने कब मुक्ति बन गया
भोग यहाँ पर फला और वह ना जाने कब भक्ति बन गया
कवि के 'अ-क्षर' देश-काल-बंधन से उठकर उस श्रुति-स्मृति के
जहाँ शतक या एक सहस्रक अब्ज-वर्ष क्या प्रकाश-गति के ?

—प्रभाकर माचवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मिलित गान

रवींद्रनाथ ठाकुर

इस बड़ी पृथ्वी को कितना-भर जानता हूँ ? न जाने कितने नगर हैं, कितनी राजधानि हैं, मनुष्य की कितनी कीर्ति है, कितनी नदियाँ, कितने पहाड़, समुद्र और मरु-प्र हैं, कितने जीव हैं, जिन्हें नहीं जानता; न जाने, कितने पेड़ हैं, जिन्हें नहीं पहचानता। सब अगोचर रह गये। विश्व का आयोजन विशाल है। मेरा मन उसके एक अत्यंत कोने से जुड़ा रहता है। इसी बेचैनी में उन ग्रंथों को अक्षय उत्साह से पढ़ता हूँ, जिनमें भ्रम वृत्तांत हैं। जहाँ भी चित्र खींच देनेवाले वर्णन पाता हूँ, उन्हें चुनकर ले आता हूँ। अ मन के इस ज्ञान-दारिद्र्य को, जहाँ तक भर सकता हूँ, भिक्षा से प्राप्त धन से भर लेता हूँ

मैं पृथ्वी का कवि हूँ। पृथ्वी से जहाँ भी जो ध्वनि उठती है, मेरी बाँसुरी के सु उसका स्पंदन उसी समय जाग उठता है। इस स्वर-साधना में बहुतों की पुकार नहीं पहुँचे कुछ दरार रह गयी। धरित्री की सम्मिलित महातान ने कल्पना और अनुमान में न ज कितने निस्तब्ध क्षणों में मेरे प्राणों को भर दिया है। दुर्गम हिमाचल निस्सीम नी नीलिमा में, जो अश्रुत गान गाता है, उसका निमंत्रण उसने मेरे हृदय में बार-बार भे है। दक्षिण मेरु के ऊपर के अज्ञात नक्षत्र ने, जो विराट् जनशून्यता में रात्रि-यापन क रहा है, अर्धरात्रि के समय मेरे अनिद्रित-अपलक नयनों का अपूर्व आलोक से स्पर्श किया है अत्यंत दूर पर बहनेवाले महाप्लावनकारी प्रचंड निर्झर ने मेरे मन की गहराई में अप आवाज भेजी है।

प्रकृति के सम्मिलित गान के स्रोत में नाना दिशाओं से नाना कवि अपने गीत ढालते है उन सबके साथ मेरा इतना-भर योग है कि, मैं उनकी संगति पाता हूँ, आनंद का भोग-ला करता हूँ, गीत-भारती का प्रसाद और सबके संगीत का स्वाद पाता हूँ।

मनुष्य सबसे अधिक दुर्गम अपने अंतराल में है; बाहर के देश-काल में उसकी कोई मा नहीं है। मनुष्य अंतरंमय होता है; और अंतर के साथ घुल-मिल जाने पर ही, उसके अंतर क परिचय मिलता है। उसमें प्रवेश करने का द्वार सर्वत्र नहीं मिला। मेरी जीवन-यात्रा के बाधा बनकर आ गये।

किसान खेत में हल चला रहे हैं। ताँती (जुलाहे) बैठकर ताँत बुनते हैं, मछुआ जाल फेंकते हैं। इनके विचित्र कर्म-कलाप बहुत दूर तक फैले हुए हैं। उसी का सहा लेकर समस्त संसार चल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

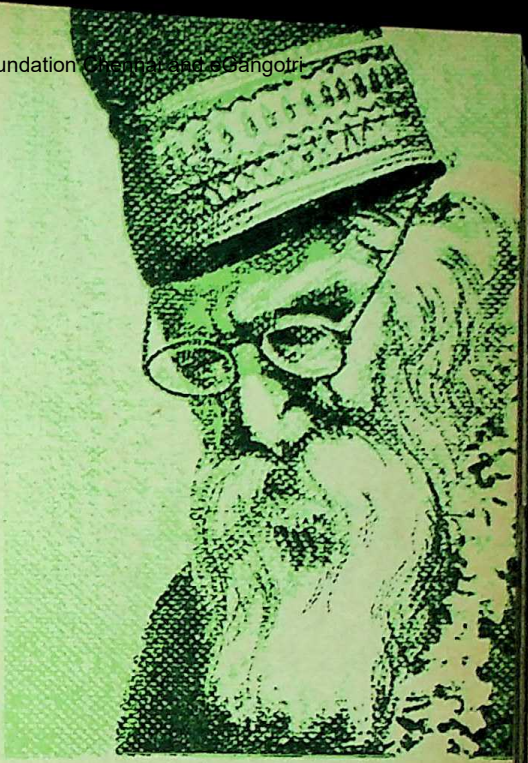

उस संसार के अत्यंत [illegible] में जो सम्मान के निर्वासन का स्थान है, मैं समाज के उच्च मंच, किंतु संकीर्ण वातायन पर बैठा हूँ। बीच-बीच में उस मुहल्ले के आँगन के किनारे तक चला गया हूँ। किंतु भीतर प्रवेश करूँ, यह शक्ति बिल्कुल नहीं थी।

जीवन के साथ जीवन का योग न होने से बाजार के नकली माल के समान गीतों के सौदे व्यर्थ होते हैं। इसीलिए निंदा की यह बात मैं मान लेता हूँ कि, मेरे सुर अधूरे हैं। मैं जानता हूँ, मेरी कविता चित्र-विचित्र मार्गों पर चलने पर भी सर्वत्रगामिनी नहीं हुई।

जो व्यक्ति किसान के जीवन में शरीक है, कर्म और वाणी में जिसने किसान के साथ सच्ची आत्मीयता अर्जित की है, जो मिट्टी के बिल्कुल पास है, उस कवि की वाणी सुनने को मैं कान लगाये बैठा हूँ। साहित्य के आनंद-भोज में जो वस्तु मैं स्वयं नहीं दे सका, मैं हमेशा उसी की खोज में हूँ। वह सत्य हो, केवल भावभंगी द्वारा वह आँखों को न ठगे। वास्तविक मूल्य दिये बिना साहित्य में ख्याति का अर्जन चोरी है। नकल करना शौकीनों की मजदूरी है।

अख्यात जन के कवि आओ ; मूक मन के कवि आओ ! हृदय में जितनी भी वेदना है, सबका उद्धार करो। इस निष्प्राण देश में चारों ओर जहाँ-जहाँ उपेक्षा के ताप से शुष्क गानहीन निरानंद मरुभूमि है, उसे तुम रसपूर्ण कर दो। उसके अंतर में जो अपना उत्स है, तुम उसे ही उद्वेलित कर दो। संसार के सामने जो नतशिर, निस्तब्ध हैं, जो खुद दुःख में मूक रहते हैं, जिन लोगों के पास केवल एकतारा भर है, ऐसा करो कि, साहित्य की सम्मिलित संगीत-सभा में वे भी सम्मान पायें।

हे गुणी, कुछ ऐसा करो कि, जो लोग पास रहकर भी दूर हैं, उनकी वाणी मैं सुन सकूँ। तुम उनके सगोत्र बने रहो, जिससे तुम्हारी ख्याति से वे अपनी ख्याति पा सकें। मैं बार-बार तुम्हें नमस्कार करूँगा।

– रूपांतरकार : दिनकर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वकवि और विश्वशांति

'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'–यह विश्वभारती का ही नहीं रवींद्र के समस्त दर्शन का ध्येयवाक्य था। अमरीका की विख्यात साहित्यिक पत्रिका 'सैटर्डे रिव्यू' के यशस्वी सम्पादक ने इस लेख में दिखाया है कि, रवींद्र की यह सुभग दृष्टि ही विश्व को वर्तमान संकट से मुक्त होने का मार्ग दिखायेगी।

नार्मन कजिन्स

मैं समझता हूँ कि, रवींद्रनाथ ठाकुर के तत्वज्ञान की आज के विश्व को सबसे अधिक आवश्यकता है। क्योंकि आज संसार जेट-विमान की गति से आत्म-विनाश की ओर अग्रसर हो रहा है।

यदि यह सत्य है कि, संकट-काल साहस कृत्यों के लिए अवसर पैदा करते हैं, तो यह भी सत्य है कि, साहस-कृत्य साहसपूर्ण विचारों के परिणाम होते हैं। और रवींद्र का तत्वज्ञान, दृष्टिकोण और शैली सभी कुछ साहस से ओतप्रोत हैं। अति कठिन और घोर अंधकारमय परिस्थिति में भी हर चीज की तह तक पहुँच जाने की अंतर्दृष्टि उनमें थी। प्रज्ञा और भावना की वह विभूति उनके पास थी, जिसे अमरीकी दार्शनिक विलियम जेम्स ने 'पारदर्शिनी दृष्टि' (क्राइसिस क्लैरिटी) कहा है।

आज की संकट-वेला में उसी पारदर्शिनी दृष्टि का सबसे अधिक अभाव है। बात को और स्पष्ट करन के लिए एक उदाहरण लें। रवींद्र के समूचे जीवन-काल में भारत पर अँग्रेजी जोर-जबर्दस्ती जारी रही। खुल्लमखुल्ला दमन चलता रहा; परोक्ष रूप से सामाजिक एवं मानसिक उत्पीड़न भी। रवींद्र पर उसकी जो प्रतिक्रिया हुई, वह अत्यंत अर्थपूर्ण है–केवल भारत और ब्रिटेन के लिए ही नहीं, समस्त विश्व की दृष्टि से भी।

आज एक महान् संकट उपस्थित है, जो अणुबम तथा द्वेषग्रस्त अस्थिरचित्त राष्ट्रों की उपस्थिति का परिणाम है। हम ऐसे संसार में जी रहे हैं, जिसे चंद सेकेंडों में जलाकर राख बना दिया जा सकता है, मानो चिड़िया के घोंसले में मशाल लगा दी गयी हो। शक्की राष्ट्र हाथों में अणुबम लिये एक दूसरे को घूर रहे हैं, उनमें आपसी बोलचाल बंद है। इस संकट से पार पाने की राह निकालना मुश्किल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु अगर कभी राह निकलेगी तो उसे निकालनेवाले वही लोग होंगे, जो अतीत की प्राणवान् परम्परा और वर्तमान की अनिवार्य शृंखला से परिचित हैं, जो विश्व की महाप्रज्ञाओं के प्रकाश से लाभान्वित हुए हैं। और इन महाप्रज्ञाओं में रवींद्रनाथ का स्थान बहुत ऊँचा है; क्योंकि हमें वे विचारों की वह थाती सौंप गये हैं, जो मानव-समाज की नवरचना में हमें सहायता दे सकती है।

कवि रवींद्र से मेरा प्रथम परिचय रोमाँ रोलाँ की एक पुस्तक के जरिये हुआ। पुस्तक में रोलाँ ने प्रसंगवश गांधीजी और रवींद्र की विचारधाराओं की तुलना की है और बड़े नाटकीय ढंग से दिखाया है कि, भारतीय जागरण में उनके विचार-द्वैत का क्या महत्व है। गांधीजी विश्व को भारत के माध्यम से देखते थे और रवींद्र भारत को विश्व के माध्यम से। रोलाँ की पुस्तक से मुझे इस बात का परिचय मिला कि, किस प्रकार गांधीजी के उपदेशों और असहयोग आंदोलन को रवींद्र की सतत जागरूक विश्वजनीन दृष्टि ने समृद्ध और सशक्त बनाया।

उसने मुझे अपशब्द कहे, मुझे मारा, हराया और लूट लिया – ये विचार जिसके मन में बसे हुए हैं, वह कभी क्रोध को नहीं जीत सकता; और जिसके मन में ये विचार स्थान नहीं पाते, उसे क्रोध कभी नहीं जीत सकता। –बुद्धवाणी

एक और कोरा राष्ट्रीय आंदोलन शुरू होने से विश्व को कितना खतरा है–इसे रवींद्र ने स्पष्ट देख लिया था। उनकी दृष्टि में भारत की समस्या विश्व की समस्या का अविभाज्य अंग थी। वे जानते थे कि, कोई भी राष्ट्र अलग रहकर निस्तार नहीं पा सकता। वे जानते थे कि, भारत की जागृति विश्व-जागृति से सम्बद्ध है। विश्वजनीनता की रवींद्र की वह प्रसिद्ध परिभाषा, जिसके अंतिम शब्द हैं "हे पिता, उस स्वातंत्र्य-स्वर्ग में मेरा देश जगे" पहली बार पढ़कर मैं किस प्रकार रोमांचित हो उठा था, यह मुझे अब भी स्मरण है।

जो संघर्ष को अनदेखा करके, उसके अस्तित्व का अपलाप करके, संघर्ष से विमुक्त हो जाता है, वह यदि रहस्यवादी है, तो रवींद्र रहस्यवादी नहीं थे। युग के अभिशाप-रूप अन्याय और दारिद्र्य से वे सुपरिचित थे। एक बार उन्होंने लिखा था–"यूरोप की सरहद के पार यूरोपीय सभ्यता की मशाल आलोक नहीं फैलाती, बल्कि आग लगाती है।"

फिर भी उन्होंने कभी यूरोप को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्महीन, भौतिकतापरायण और बर्बर कहकर निंदित नहीं किया ।

वे अपने देशवासियों को यूरोप के उत्तम विचारों और आदर्शों को अपनाने और यूरोप के आक्रमण के प्रतिरोध को यूरोप के गुणों के प्रतिरोध का रूप न दे देने की प्रेरणा देते रहे। और स्वतंत्रता-संग्राम के उस युग में यह प्रेरणा देना आसान नहीं था ।

परंतु यह सलाह उन्होंने निर्बलतावश नहीं दी थी। बड़े स्पष्ट शब्दों में उन्होंने कहा था—"अपने प्राण और मान को बनाये रखने के कितने कम साधन हमें उपलब्ध हैं, यह किसी से नहीं छिपा। अन्न, अक्षरज्ञान और चिकित्सा की जबर्दस्त कमी है; पीने का पानी भी हमें कीचड़ में से निथारकर निकालना पड़ता है। पर पुलिसवालों की कोई कमी नहीं! मोटी-मोटी तनख्वाहोंवाले अफसर भी कम नहीं हैं। अपनी अंत्येष्टि के खर्चे में से हमें उनकी पेन्शन चुकानी पड़ती है। इन सबका कारण यह है कि, लोभ अंधा और निष्करुण होता है; और भारत अपने मालिकों के लोभ का शिकार है।"

स्वभावतः यह उम्मीद होती है कि, इन शब्दों के अंत में अँग्रेजों से प्रतिशोध लेने की अपील की गयी होगी। पर नहीं। कवि रवींद्र का विवेक और औदार्य इसकी अनुमति नहीं देता। वे जानते हैं कि, अँग्रेज का एक और भी रूप है। वह रूप है दास्य-विरोधी, न्याय के अनुरागी और पराधीन देशों की स्वतंत्रता के समर्थक का रूप। भारत में अँग्रेजों के व्यवहार का इस से मेल नहीं बैठा—यह परिस्थिति दुर्भाग्य की बात थी।

यहाँ हमें रवींद्र की एक बड़ी विशेष देखने को मिलती है। उनका कहना अपने शत्रु को समझो। उसका प्रति करो; परंतु साथ ही उसके सहज को पहचानने का प्रयत्न भी करो, ता संघर्ष की समाप्ति पर समझौता और समाधान सम्भव हो।

एशिया पर यूरोप के अत्याचार देख संत्रस्त और विक्षुब्ध होते हुए भी रवींद्र उस दिन की कल्पना कर सके, पदच्युत अँग्रेज अंतर्राष्ट्रीय समाज भारत का सर्वोत्तम मित्र बन जायेगा, क्या हम जो रवींद्र के कंधों पर खड़े अंतर्राष्ट्रीय विद्वेष और अविश्वास कुहासे को चीरकर उन तत्वों का दर्शन कर सकते, जो विश्वशांति का आश्वा दिलाते हैं? परंतु जैसा कि कवि ने स्वयं है—"अपरिचित के आवरण को चीर उसके पीछे अच्छाई को देखने की क्षम बड़ी विरलता से मिलती है।"

ब्रिटेन और यूरोप के चौधरीपन परदे के पीछे जो ठोस सुभग तत्व रवी ने देखे, उनमें से एक था विज्ञान-बल उन्होंने कहा—"जिस ज्ञान ने पश्चिम विश्वविजय में समर्थ बनाया, उसका खं करके हम स्वयं अपना ही अहित करेंगे

लेकिन वे यह भी कहना नहीं भू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब यूरोप ने विज्ञान की कुंजी से प्रकृति-भवन के रहस्य-कोश को खोला, तब उसकी जहाँ भी नजर पड़ी, उसे स्थिर नियम दिखाई पड़े। बहुत समय तक उन्हीं नियमों से परिचित रहने के कारण यूरोपवाले उस वस्तु को दृष्टि से ओझल कर बैठे हैं, जो इन सब नियमों से परे है, जिसका मानव-आत्मा से अधिक गहरा सम्बंध है .... आध्यात्मिक चिंता-ग्रस्तता ने पूर्व को निर्बल और दब्बू बना दिया है। परंतु क्या यह कहा जा सकता है कि, पश्चिम की इकतरफा भौतिकता, जो उसे एक पाँव पर कूदने को मजबूर कर रही है, आत्म-परिपूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने में सहायक सिद्ध हो रही है ?"

भौतिकता के अतिरेक का खंडन करते हुए कवि ने मेरी अपनी मातृभूमि के बारे में कहा था—"वहाँ शोर तो बहुत हो रहा है; पर संगीत कहाँ है ? 'और दो, और दो' की रट से तो संगीत नहीं बन सकता।"

परंतु उनका स्पष्ट कथन था कि, पूर्व और पश्चिम का संगम दोनों के दोषों को दूर करेगा। "पूर्व एवं पश्चिम के संगम से विज्ञान और आत्मज्ञान का समन्वय हो सकेगा।" और विज्ञान और अध्यात्म की मिलन-भूमि है मानव, जो अच्छाई-बुराई का अंतिम निकष है।

कवि के उद्धरणों की यह लम्बी लड़ी मैंने इसलिए गूँथी है कि, उसके आधार पर हम यह देख सकें कि, वर्त्तमान संकट में हमें कवि की "संकट-पारदर्शिनी दृष्टि" से क्या मार्गदर्शन मिल सकता है।

रवींद्र के जीवन-काल में अणु-बम का अवतरण नहीं हुआ था। परंतु उन्होंने स्पष्ट ही देख लिया था कि, विज्ञान हमें किस ओर लिये जा रहा है। उन्होंने लिखा था—"विज्ञान ने आज इतने यात्रा-पथ खोल दिये हैं कि, भौगोलिक बाधाएँ टूट गयी हैं। मनुष्य और राष्ट्र इतने निकट आ गये हैं कि, समग्र मानवता का समन्वय आज पहले से अधिक आवश्यक हो गया है। विज्ञान द्वारा समीप लाये गये इन सबको एकता-सूत्र में कौन पिरोयेगा ? बाह्य शक्तियाँ इस काम में विफल हो चुकी हैं। राष्ट्र एकत्र हो रहे हैं, पर एक नहीं हो रहे हैं। और उसका दुष्फल सारे संसार को भुगतना पड़ रहा है।"

कैसी पैनी अंतर्दृष्टि है ! आज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि, संयुक्त राष्ट्रसंघ के रूप में राष्ट्र भौतिक दृष्टि से पास आ गये हैं; परंतु मानसिक दृष्टि से समीप नहीं आ पाये हैं। आज का अंतर्राष्ट्रीय सामीप्य नितांत यांत्रिक है। आज जो बात एक कटु यथार्थ है, उसे कवि की अंतर्दृष्टि ने दशकों पूर्व भाँप लिया था।

और उसका परिहार भी उन्होंने जान लिया था—"कल के इतिहास का आरम्भ अंतर्राष्ट्रीयता के माध्यम से होगा और जो रीति-रिवाज, सोचने-समझने के ढंग अंतर्राष्ट्रीयता के अनुकूल नहीं, यदि उनसे हम चिपके रहे, तो हम कल के लायक नहीं रह जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

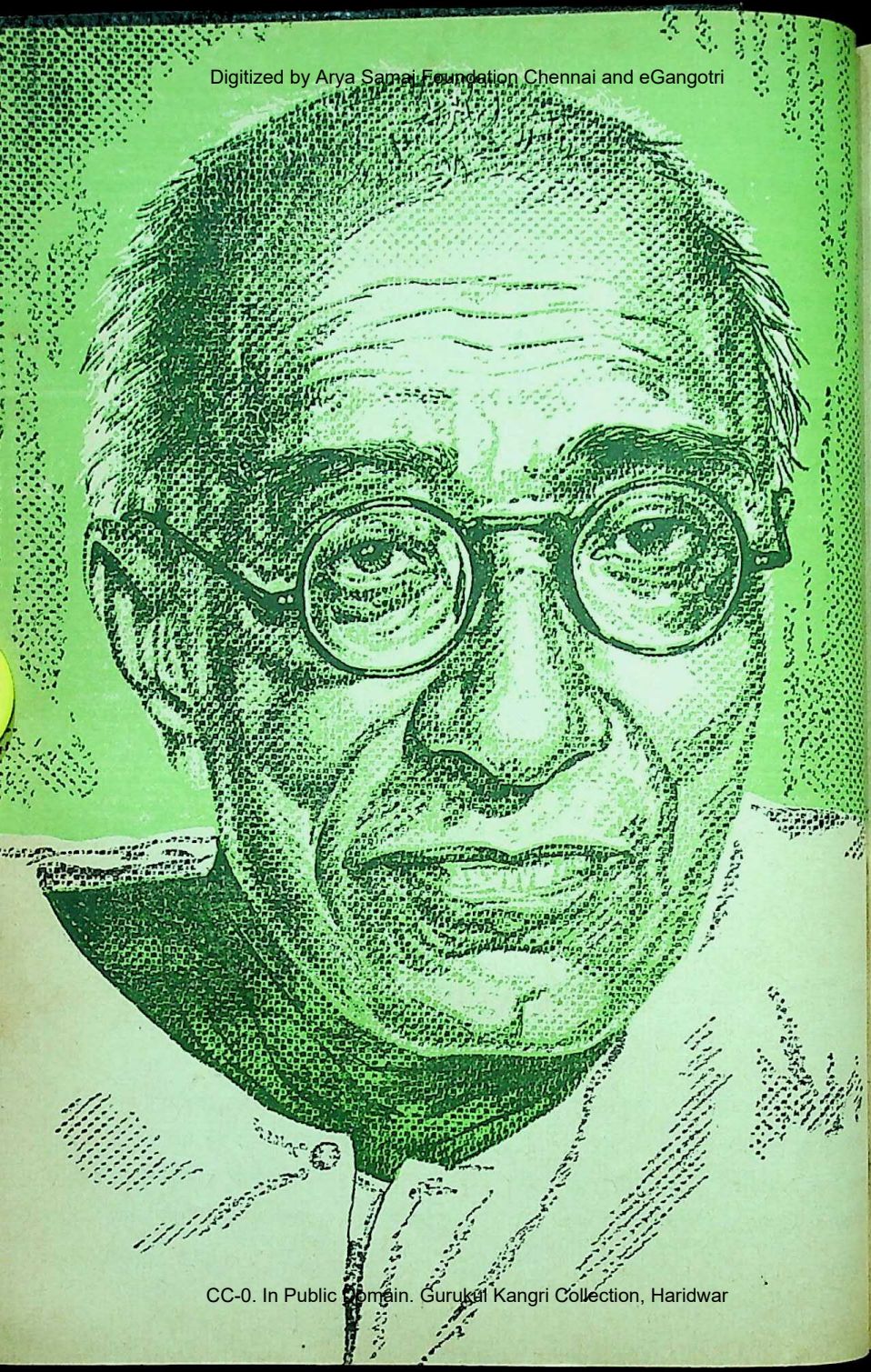

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग-भीष्म राजाजी

अभय और अदैन्य के व्रती एक कृती पुरुष का जीवनामृत—चित्रकार : बी० एन० ओके।

राजाजी की तुलना यदि किसी प्राचीन-अर्वाचीन व्यक्ति से की जा सकती है, तो वे हैं भीष्म। दीर्घायुष्य, समर-रसिकता तत्त्वप्रज्ञा—सबमें वे भीष्म-तुल्य हैं।

एक बात में वे भिन्न भी हैं। भीष्म स्वपक्ष का मोह नहीं छोड़ सके; "अर्थस्य पुरुषो दासः" कहकर अपनी इस कमजोरी का समर्थन करते रहे। परंतु जिस झंडे की छाया में जूझते हुए जीवन बिता दिया, उसके नीचे न्याय के लिए स्थान नहीं रहा है, यह प्रतीत होते ही राजाजी ने नया झंडा फहरा दिया; वह भी उस वय में जब प्रायः राजनीतिज्ञ निवृत्त जीवन की शांति की कामना करते हैं।

आलोचकों ने इसे उनके संघर्ष-प्रेम का चिह्न कहकर टालना चाहा है। निस्संदेह राजाजी को जूझने में आनंद आता है। वे बिना बुलाये विवाद में प्रवेश करते हैं, नये विवादों को जन्म देते हैं। विवाद में उनका यत्न विपक्षी को "शापादपि शरादपि" हराने का रहता है। वे विरोधी के समस्त विरोधियों को साथ जुटा लेते हैं; विपक्ष की दलीलें काटने के लिए हेतु, हेत्वाभास, वाक्छल सबका प्रयोग कर लेते हैं। प्रायः यह युद्धनीति, यह वकील-मनोवृत्ति उनके व्यक्तित्व के मूल तत्वों को ढँक-सा लेती है और वे जनता के लिए अनबूझ पहेली बन जाते हैं।

सन् १८७९ में होसूर (जिला सेलम, मद्रास राज्य) के समीप एक गाँव में राजाजी (चक्रवर्ती राजगोपालाचारी) का जन्म हुआ। उच्च शिक्षा उन्होंने बंगलोर के सेंट्रल कालेज (बी० ए०) और मद्रास के ला कालेज (बी० एल०) में पायी। बंग-भंग के पाँच वर्ष पूर्व वकालत आरम्भ करके वे असहयोग-आंदोलन के समय तक सेलम के सबसे बड़े वकील बन चुके थे।

मेधाविता और ज्ञान-पिपासा तब भी उनके व्यक्तित्व के मुख्य लक्षण थे, आज भी हैं। बौद्धिक जड़ता से उन्हें चिढ़-सी है। विज्ञान, दर्शन, साहित्य, कानून—सबमें उनकी बुद्धि एक-सी सुविधा से विचरण करती है; उसके गूढ़तम तत्वों को सर्वसुबोध रूप में प्रस्तुत कर सकती है। वे प्रश्न की जड़ पर सीधे पहुँच जाते हैं। बात बी० सी० जी० की हो या अणु-ईंधन के अवशेष (वेस्ट) की, विशेषज्ञ उन्हें बहकावे में नहीं डाल सकते। विशेषज्ञों के उत्पात के इन दिनों में ऐसी स्वतंत्र प्रज्ञा प्रायः दुर्लभ है।

अपने विचार-स्वातंत्र्य को उन्होंने कभी रेहन नहीं रखा। श्रीवैष्णव सम्प्रदाय की 'स्वयमाचार्य' शाखा के इस अनुयायी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर्क और चिंतन को अपना आचार्य नहीं माना । स्वातंत्र्य-संग्राम में गांधीजी को अगुवा जरूर माना (वह भी सदा नहीं) ; शिष्यत्व स्वीकार नहीं किया ।

इस तर्क-प्रधान स्वतंत्र चेतना के कारण उन्हें बहुधा भविष्य के वे अनिवार्य और अप्रिय चरण स्पष्ट दीख जाते हैं, जिन्हें दूसरे भावुकतावश देख नहीं पाते, या देख-कर भी नहीं देखते । राजाजी उन्हें देखते हैं, देखकर दूसरों को चेताते हैं । यह साहस उनकी लोकप्रियता की राह का सबसे बड़ा काँटा है । परंतु राजाजी ने लोकप्रियता की पूँछ पकड़ने की तत्परता कम दिखायी है ।

वस्तुतः भारतीय इतिहास में ऐसा दूसरा व्यक्ति मिलना मुश्किल है, जिसका सार्वजनिक जीवन इतना दीर्घ एवं उज्वल हो और जिसकी भक्त-मंडली इतनी छोटी ।

और यह एक विडम्बना ही है । क्योंकि उन्हें निकट से और गहराई से देखनेवालों को कभी इसमें संदेह नहीं रहा कि, उनमें वैज्ञानिक की सत्यनिष्ठा एवं शोधक-वृत्ति, दार्शनिक का सार्थक्य - दर्शन - कुतूहल, साहित्यकार की पूर्णत्व-प्राप्ति की तत्प-रता और भक्त की समर्पण की साध है । साहित्यकार के रूप में तमिळ् गद्य को निखारनेवालों में उनका स्थान बहुत ऊँचा है । समर्पण-भाव का प्रमाण यह है कि देश की पुकार पर उन्होंने छोटे-बड़े का अंतर किये बिना अनेक पद सम्भाले हैं और अपने अनुभव एवं प्रशासन-कौशल से जनता का हित किया है ।

अचूक समय-प्रज्ञा के साथ-साथ राजाजी में परम्परा का परिज्ञान है । सिर्फ साम-यिकता के लिए उन्होंने न विचार बदले न आचार । उनका सादा-स्वच्छ निजी जीवन ब्राह्मण-धर्म का सटीक भाष्य है । भारतीय धर्म-चिंतन की परम्परा को सर्वसुलभ बनाने के लिए उन्होंने भाषण और लेखन द्वारा जो कुछ किया है, वह वंदनीय है । अपने अँग्रेजी 'रामायण' की भूमिका में उन्होंने लिखा था—"मैं इसे अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य मानता हूँ ।" सम्भव है, आनेवाली पीढ़ियों का भी यही निर्णय हो ।

सन् १८९९ में जब मैं मद्रास में पढ़ता था, गर्मी की छुट्टियों में मेरे मित्र व सहपाठी सी० आर० (राजाजी) मुझसे मिलने बंगलोर में मेरे चाचाजी के यहाँ आये । जब वे चले गये, मैंने उनके बारे में चाचाजी की राय पूछी । वे बोले-"लड़का असाधारण है । उसे देख-कर अपने समय के 'कालेज-हीरो' विश्वेश्वरय्या की याद आती है ।" पर मैं तो सी० आर० को बेजोड़ मानता था । मैंने बड़ी अवज्ञा से पूछा कि,यह विश्वेश्वरय्या कौन है । उत्तर मिला—"मैसूर का सबसे प्रतिभाशाली पुत्र है । आगे चलकर देश में उसका बड़ा नाम होगा ।" मैंने कहा—"मेरे सी० आर० का भी कम नाम नहीं होगा ।" सौभाग्य की बात देखिये कि, चाचाजी ने ये दोनों भविष्यवाणियाँ सच होती देखीं । —नवरत्न रामराव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूकम्प : धरती का उदर-रोग

भूकम्प को हम प्रायः जन-धन के संहारक के रूप में ही जानते हैं; परंतु उसका एक सृजनकारी रूप भी है।

शिवतोष दास

विज्ञान की प्रगति ने जिन प्रश्नों के समाधान का अधिकार पौराणिकों और लालबुझक्कड़ों के हाथों से छीन लिया है, उनमें एक है भूकम्प। पहले बड़े-बड़े विद्वान् भी इसका निश्चय नहीं कर पाते थे कि, भूकम्प शेषनाग के सिर झुमाने से होता है या दिग्गजों के अंगड़ाई लेने से। पर आज छोटे बालक भी जानते हैं कि, भूकम्प एक प्राकृतिक घटना है।

परंतु भूकम्प के कारणों का अभी तक ठीक-ठीक पता वैज्ञानिक नहीं लगा सके हैं। ज्ञात कारणों में निम्नलिखित तीन मुख्य हैं :

(क) ठंडी होने की प्रक्रिया में पृथ्वी कहीं अधिक और कहीं कम सिकुड़ती है और भूपटल क्षत-विक्षत हो जाता है। इसी प्रक्रिया के आघात से प्रायः भूकम्प होने लगते हैं।

(ख) कभी-कभी भूगर्भ में समाया हुआ जल वाष्प बन जाता है तथा भूगर्भ की धातु-निर्मित चट्टानें पिघल जाती हैं। जब यह वाष्प और द्रव फैलते तथा भूपटल पर आघात करते हैं, तो पृथ्वी में कम्पन उत्पन्न होता है।

(ग) कभी-कभी ज्वालामुखी के विस्फोट के साथ होनेवाली भीषण गड़गड़ाहट की ध्वनि-तरंगों से भी पृथ्वी काँपने लगती है।

प्रथम दो कारणों से होनेवाले भूकम्पों को 'अभिविवर्तनिक' तथा तीसरे प्रकार के भूकम्प को 'ज्वालामुखीय' भूकम्प कहते हैं।

पृथ्वी के भीतर अधिक भार के कारण चट्टानें अक्सर टूटकर नीचे धँसती रहती हैं। पृथ्वी का जो भाग टूटनवाली शिला के निकट होता है, वह सबसे अधिक कम्पित होता है।

वैज्ञानिकों का विश्वास है कि, कुछ हजार वर्ष पहले भूकम्प अधिक भयंकर हुआ करते थे; क्योंकि उन दिनों आज की अपेक्षा पृथ्वी अधिक गर्म थी और चट्टानों का टूटना-फूटना और नये-नये पर्वतों का बनना भी जारी था।

ज्वालामुखीय भूकम्पों का विस्तार बहुत कम होता है। उसका प्रभाव बहुत सीमित क्षेत्र तक ही देखा जाता है। विशेष रूप से भयंकर साबित होनेवाले प्रायः सभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिपुत्री सीता

एक लोक-कलाकार द्वारा चमड़े पर अंकित चित्र

भूकम्प पृथ्वी के अंदर की चट्टानों के टूटने से होते हैं।

सामान्यतया लोग समझते हैं कि, भूकम्प का केंद्र पृथ्वी के भीतर बहुत गहराई पर होता है; किंतु भूगर्भशास्त्रियों ने खोज करके यह निष्कर्ष निकाला है कि, भूकम्प का केंद्र, जिसे 'हाइपो-केंद्र' कहते हैं, २० मील से अधिक गहराई पर नहीं होता। प्रायः १० या ५ मील की निचाई पर ही शिलाएँ टूटती और सरकती हैं। जो स्थान 'हाइपो-केंद्र' के ठीक ऊपर होता है, भूकम्प का 'अधिकेंद्र' कहलाता है।

भूकम्प के झटके के कारण पृथ्वी में तीन भिन्न प्रकार की तरंगें उत्पन्न होती हैं:

(क) धरातल की तरंग : यह तरंग पृथ्वी की ऊपरी ठोस पपड़ी से होकर आगे बढ़ती है। भूकम्प के समय हम प्रायः इसी कम्पन को महसूस करते हैं। उत्पत्ति-स्थान से भूकम्प-केंद्र पर पहुँचकर कम्पन-लहरें वहाँ से पृथ्वी की बाहरी परिक्रमा और भीतरी यात्रा करने लग जाती हैं। इसी कारण इन लहरों का प्रभाव किसी-किसी स्थान पर दो बार होता है। इनकी गति लगभग दो मील प्रति सेकेंड होती है। इनका प्रभाव भी धरातल से अधिक गहराई पर नहीं होता। गहराई में जाने पर ये तरंगें शांत हो जाती हैं। जन-धन की क्षति मुख्यतया इन्हीं लहरों से होती है।

(ख) प्रधान या लम्बी लहर : इनमें अणुओं का कम्पन लहरों की दिशा में होता है। यदि हम रबर के एक टुकड़े के दोनों सिरों को पकड़कर खींचें, तो रबर पर लम्बाई में खिचाव पड़ता है। प्रधान तरंगों में भी ठीक इसी प्रकार, लहर की लम्बाई की दिशा में, कम्पन होता है। मध्य भाग का घनत्व जितना अधिक होगा, कम्पन की लहरें उतनी ही वेगवान् होंगी। इन लहरों की गति मध्य में ५ से ९ मील प्रति सेकेंड तक होती है।

(ग) अनुप्रस्थ लहर : यदि हम एक रबर के किसी पतले, लम्बे टुकड़े को सीधे खींचने के बजाय मरोड़ दें, तो आड़ी दिशा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में लहरें उत्पन्न होंगी। इन लहरों की गति प्रधान लहरों से कम होती है और ये द्रव में होकर नहीं जा सकतीं।

पृथ्वी के भूकम्प-मानचित्र को देखने से पता चलता है कि, कुछ विशेष भागों में भूकम्पों का प्रकोप अधिक होता है। अध्ययन से पता चला है कि, पर्वतों और समुद्र-तटों से भूकम्प का गहरा सम्बंध है। पृथ्वी पर भूकम्प का क्षेत्र दो पट्टियों में फैला हुआ है। एक पट्टी पैसिफिक महासागर को घेरे हुए है। इसी क्षेत्र में ज्वालामुखी पर्वत और विवर भी हैं।

दूसरी पट्टी नवीनतम वलित पर्वतों के सहारे-सहारे लगभग भूमध्य-रेखा के समानांतर चली गयी है। इस कटिबंध के बहुत-से भाग ज्वालामुखी-क्षेत्रों से सहस्रों मील दूर स्थित हैं। भूमध्य-सागर के क्षेत्र और हिमालय पर्वत इसी पट्टी में आते हैं।

जापान, इटली तथा यूनान-सरीखे प्रदेशों में, जहाँ भूकम्प बहुत आया करते हैं, लोग यह विपदा सहने के अभ्यस्त हो गये हैं। संसार में सबसे अधिक भूकम्प जापान में आते हैं। टोकियो नगर में हर तीसरे दिन छोटा-मोटा भूकम्प आता रहता है। वहाँ के लोगों ने अनुभव और प्रयोगों के आधार पर ऐसे मकान बनाये हैं, जिन पर भूकम्प का विशेष प्रभाव नहीं होता। भारत-सरीखे प्रदेशों में भूकम्प कभी-कभी ही आते हैं। फलस्वरूप उनसे धन-जन को बेहद क्षति पहुँचती है। सन् १९३४ के बिहार के भूकम्प की याद से हम आज भी सिहर उठते हैं। अनुमान है कि, आसाम का सन् १८९७ का भूकम्प सम्भवतः मानव-इतिहास का सबसे अधिक विध्वंसकारी भूकम्प था।

प्रायः देखा गया है कि, भूकम्प-बहुल देशों में नियत अवधि के अंतर से भूकम्प की पुनरावृत्ति हुआ करती है। जापान में हुए भयंकर भूकम्पों के विवरणों की जाँच से मालूम होता है कि, प्रति १३-वें वर्ष वहाँ एक भयंकर भूकम्प अवश्य आता है। और भी कई दिलचस्प बातें देखी गयी हैं। उदाहरण के लिए, बड़े भूकम्प प्रायः जाड़े की ऋतु में आते हैं। अमावस्या या पूर्णिमा के दिन उनके आने की सम्भावना अधिक रहती है। भारत में हुए भूकम्पों का इतिहास देखने से पता चलता है कि, यहाँ अधिक विध्वंसकारी भूकम्प हिमालय की ढाल से लगे प्रदेशों में ही आते हैं।

भूकम्प मानव द्वारा हजारों वर्षों के परिश्रम से किये गये आयोजनों को क्षण-भर में विनष्ट कर डालते हैं और जीवन की क्षणिकता का पाठ पढ़ाते हैं। परंतु उनके कई हितकारी फल भी हैं। पृथ्वी के धरातल पर जो विषमताएँ हैं, जैसे पर्वत, पठार, झीलें, द्वीप आदि, उनमें अधिकांश का निर्माण भूकम्पों ने ही किया है। भूगर्भ में बहुत गहराई में पड़ी हुई भिन्न-भिन्न प्रकार की धातुओं से युक्त चट्टानें भूकम्प की क्रिया से धरातल के अधिक समीप आ जाती हैं, जिससे मनुष्य उन्हें अधिक सुगमतापूर्वक निकाल लेता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवज्ञा की धूप में मुरझायी हुई एक भव्य कला-परम्परा को प्राण और प्रतिभा से सींचकर पुनः पुष्पित करने-वाली एक साधिका से साक्षात्कार।

नृत्य-सरस्वती बाला

सुनील कोठारी

पहली अप्रैल १९५८। प्रथम अखिल भारतीय नृत्य-परिषद् की प्रथम बैठक हो चुकी थी। दोपहर को तीन बजे दूसरी बैठक शुरू हुई। दिल्ली के विज्ञान-भवन का सभागृह वक्ताओं, दर्शकों, विवेचकों और नृत्य-विशारदों से खचाखच भरा था।

डा० राघवन् के भाषण के बाद श्रीमती बालसरस्वती खड़ी हुईं। वेष-भूषा अत्यंत सादी—टेम्पल बार्डर की लाल साड़ी, जरी के किनारेवाली हरी चोली, हाथों में हीरे-जड़ी एक-एक चूड़ी, कानों में हीरे की जग-मग बालियाँ; और कोई मेकअप नहीं। आँखें स्थिर और शांत, हाथ कमर पर—स्थिरता की मूर्ति। तभी मृदंग पर थाप पड़ी और अत्यंत मधुर स्वर में बालसर-स्वती ने गीत शुरू किया :

कृष्ण नी बेगने बारो....

सभागृह में आनंद और आश्चर्य की लहर दौड़ गयी। सामान्यतया वे स्वयं 'पद' नहीं गातीं। आज नृत्य ही नहीं, उनके सुरीले कंठ का परिचय पाकर दर्शकों के हृदय आँखों में आ बैठे।

गीत जारी है—हे कृष्ण, आ, जल्दी आ। तेरे नूपुर की झंकार मैं सर्वत्र सुन रही हूँ। हे घनश्याम, मेरे मुग्ध नेत्रों के सामने तू नृत्य करता हुआ आ। तेरे कर्णकुंडल झूम रहे हैं। गले में सोहती वैजयंतीमाला, कटि-मेखला, स्वर्गिक सुरों की धारा बहाती मुरली—तेरा यह रूप मैं देखा ही करूँ। ओ कान्ह, अब देर न कर। याद है! एक बार तुझे यशोदा ने मिट्टी खाते पकड़ा था और जब उसने मुँह खोलने को कहा, तब तूने उसे विश्वरूप-दर्शन कराया था। कृष्ण, जल्दी आ।

गीत के आधार पर अभिनय-सृष्टि आकार लेने लगी। स्थायी और संचारी भाव-भावांतरों की मोहक अभिनय-लीला आरम्भ हुई। भरे दरबार में कौरवों ने पांचाली का चीर-हरण करके द्यूत में सर्वस्व हारनेवाले पांडवों की क्रूर विडम्बना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करन का विचार किया। तब द्रौपदी आर्त स्वर से पुकार उठी—"हे जगदुद्धारक!" कृष्ण ने वसन-प्रवाह करके भक्त की लाज रख ली। कृतज्ञता से गद्गद द्रुपदतनया फिर पुकार उठी—"हे जगदुद्धारक!" दोनों प्रसंगों में इस कलाधात्री ने दर्शकों के हृदय हिला दिये। दर्शकों की आँखों में आँसू आ गये। दर्शक समझ नहीं पाये कि, इस उत्कृष्ट प्रयोग की कैसे प्रशंसा करें। कत्थक के महान् गुरु शम्भु महाराज 'वाह वाह' कर उठे और दूसरे नृत्य की फरमाइश करते हुए भाव-विह्वल कंठ से बोले—"माँ बहुत खूब, बहुत खूब।" दो महान् कलाकारों का एक-दूसरे के प्रति यह आदर बड़ा हृदयस्पर्शी था।

पदों का अभिनय बालसरस्वती की उत्कृष्ट प्रतिभा की झाँकी कराता है। भरत-नाट्य के उत्तरार्ध में प्रस्तुत किये जाने-वाले पदों में अभिनय का प्राधान्य होता है। उनमें कलाकार को अतिसूक्ष्म और स्वयं-स्फूर्त भावों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है। इस क्षेत्र में बालसरस्वती अद्वि-तीय हैं। परंतु यह सिद्धि इन्हें अकस्मात् नहीं प्राप्त हुई। इसके लिए की गयी साधना-तपस्या का इतिहास भी इतना ही प्रेरक और स्तुत्य है।

कर्नाटक संगीत की महान् पुरस्कारक और प्रसिद्ध वीणा-वादक श्रीमती वीणा धनम् के परिवार में सन् १९१८ में बाल-सरस्वती का जन्म हुआ। कला की उपा-सना को ही जीवन-धर्म माननेवाले देव-दासी-वर्ग की अद्वितीय नृत्य-परम्परा 'बाला' को बचपन में ही अधिकार में मिली। नानी वीणा-वादन में बेजोड़ थी, तो माता जयम्माळ् दक्षिण भारत की श्रेष्ठ गायिकाओं में गिनी जाती थीं। घर कर्ना-टक संगीत के धुरंधर विद्वानों का मिलन-स्थान था। कठोर अनुशासन और पर-म्परागत शैली की संगीत-शिक्षा इस कुटुम्ब की विशिष्ट कीर्ति के आधार थे।

उस समय भरतनाट्य की बुरी दशा थी। जो नृत्य-साधना प्रभु को रिझाने के साधन के रूप में शुरू हुई थी, उसका उपयोग चंद ऐयाशों के मनोविनोद के लिए हो रहा था। गणिका-धर्म अपनाकर देवदासियों ने कला

नृत्य-सरस्वती

हळेबीड मंदिर की एक प्रतिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बड़ी विडम्बना की थी। भद्र समाज की भरतनाट्य के प्रति अच्छी धारणा न थी। परिवार के कई हितैषियों ने बाला की नृत्य-शिक्षा का विरोध किया; परंतु माता जयम्माळ् ने पुत्री की शक्तियाँ पहचान ली थीं। चार वर्ष की अवस्था से ही बाला की नृत्य-शिक्षा आरम्भ हुई।

वर्तमान भरतनाट्य के आचार्य माने जानेवाले चार भाई सन् १७९८ से १८२४ के बीच दक्षिण भारत में हुए थे। उन्हीं के वंशज स्वर्गीय कंदप्प पिळ्ळे बालसरस्वती के प्रथम गुरु हुए। ये शुद्ध नृत्त के आग्रही थे। नृत्य-शिक्षा घंटे-दो घंटे नहीं, आठ-आठ घंटे तक चलती थी। रियाज के बाद गुरु स्वयं ही बाला को घर पर छोड़ने आते और घर पर नृत्य की शास्त्रीय भूमिका भी विस्तार से समझाते। रात को माता जयम्माळ् संगीत सिखातीं।

इस कठोर तपस्या के बाद बाला का 'अरंगेत्रम्' (प्रथम सार्वजनिक नृत्य-प्रदर्शन) हुआ। अरंगेत्रम् में नये कलाकार को नृत्य-विवेचकों, संगीतज्ञों और विज्ञ दर्शकों की कड़ी परीक्षा में उत्तीर्ण होना पड़ता है। सात वर्ष की बाला का अरंगेत्रम् में असाधारण सफलता प्राप्त हुई और इस तरह आधुनिक भारत की सर्वश्रेष्ठ नृत्यांगना के सार्वजनिक कला-प्रदर्शन का प्रारम्भ हुआ।

माता जयम्माळ् और कंदप्प पिळ्ळे के अतिरिक्त बाला की नृत्य-शिक्षा में मैलापुर की गौरी, चिन्नय्य नायडू और स्वर्गीय वेदांतं लक्ष्मण शास्त्री का प्रमुख हाथ था। श्री चिन्नय्य नायडू संस्कृत के प्रखर विद्वान् थे। उनकी और जयम्माळ् की संयुक्त देखरेख में बाला ने पदों का अर्थ हृदयंगम किया। पदों में बालसरस्वती जो सहज-स्फूर्त भावछायाएँ प्रकट करती हैं, उनका मूल इसी ज्ञानोपासना में है।

बाला की एक मुद्रा
स्केच : प्रद्युम्न तन्ना

बालसरस्वती की जीवनी एक प्रकार से भरतनाट्य के पुनरुत्थान का इतिहास है। उस समय एक नृत्य-विरोधी आंदोलन चल रहा था। मिस टेनेंट नाम की एक विदेशी महिला एक नृत्य-विरोधी स्मृति-पत्र पर उच्च पदाधिकारी भारतीयों और सम्भावित सज्जनों के हस्ताक्षर लेकर ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही थी कि, वह अभिनय के पर प्रतिबंध लगा दे। श्री ई० कृष्ण अय्यर ने इस आंदोलन का तीव्र विरोध किया। भाषण और लेखों के अतिरिक्त, स्वयं स्त्री-वेश धारण करके वे इस नृत्य का रहस्य लोगों को समझाते रहे। इस प्रकार जी-तोड़ मेहनत करके और संगीत-परिषदों में श्रेष्ठ नर्तकियों के कार्यक्रम प्रस्तुत करके उन्होंने इस नृत्य के प्रति जनरुचि को जागृत किया और इस अमूल्य कला का गौरव पुनः स्थापित किया। १९३४ में बनारस में आयोजित अखिल भारतीय संगीत-परिषद् में षोड़शी बालसरस्वती को प्रस्तुत करके उत्तर भारत को भरतनाट्य की कला-समृद्धि से परिचित कराने का श्रेय भी श्री कृष्ण अय्यर को ही है।

फिर तो बालसरस्वती ने अनेक परिषदों में नृत्य प्रस्तुत करना आरम्भ किया। ऐसी प्रतिभाशाली कलाकार के नृत्य को देखकर लोग भी नृत्य के अंतरंग की तरफ आकृष्ट हुए।

इन सब प्रवृत्तियों में और बाद में भी बालसरस्वती को शारीरिक कष्टों का सामना करना पड़ा। उम्र बढ़ने के साथ शरीर भी सप्रमाण न रहा, जिससे वे नृत्य के शारीरिक अंश को गौण बनाकर अभिनय एवं भावव्यंजना को प्रधानता देने लगीं। परंतु इतनी विशुद्ध एवं ऊँचे धरातल की कला को समझने के लिए आवश्यक ज्ञान एवं संस्कारिता सामान्य दर्शक में प्रायः नहीं होती। इससे उनकी लोकप्रियता घटने लगी। किसी संवेदनशील कलाकार के लिए इससे बड़ा आघात क्या हो सकता है। उन्होंने सार्वजनिक कार्यक्रमों से मुँह मोड़ लिया।

इसी निराशापूर्ण काल में प्रख्यात नृत्यकार रामगोपाल ने भारतीय नृत्य-सम्बंधी सुंदर पुस्तक 'द अदर माइंड' की लेखिका श्रीमती बेरिल डी जोट से बालसरस्वती का नृत्य देखने की सिफारिश की। श्रीमती डी जोट ने अपने संस्मरणों में लिखा है:

"बाला हथिनी-जैसी स्थूलकाय हैं—यह बात मुझसे अनेक लोगों ने कही थी। परंतु मैंने उनकी प्रतिभा और उच्च कला के बारे में भी बहुत सुना था। जब मैं उनके घर गयी, उन्होंने बड़े प्रेम से मेरा स्वागत किया। वे बड़े डील-डौल की अवश्य मालूम हुईं, पर हाथी-जैसी स्थूलकाय तो नहीं थीं, जैसा कि लोगों ने बताया था। उल्टे वे बड़ी गौरवमयी और उच्च संस्कारवाली महिला प्रतीत हुईं। मेरी जिज्ञासा की

फूल और शूल

ये रस-भरे, ये रंगीले
नये नवीले फल
किसी के मद-भरे
अधरों से रसीले फल
मैं लेकर जाता था
चमेली की एक कली के लिए
अजीब शूल-सा बन गया
गली के लिए।

पंजाबी कविता

— बाबा बलवंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृप्ति के लिए उन्होंने पुनः अपने अभिनय प्रयोग दिखाये।

"लगभग एक महीने बाद श्री रामगोपाल के अत्यंत आग्रह से वे सार्वजनिक नृत्य-प्रयोग के लिए तैयार हुईं। मैलापुर के एक छोटे-से रंगभवन में नृत्य हुआ। बाला ने किसी प्रकार का मुख-शोभन नहीं किया था। पुष्पवेणी तक नहीं थी। केवल नकबेसर और कान में कुंडल थे। सादी साड़ी पहने, कमर पर हाथ रखे, भरतनाट्य की प्रारम्भिक भूमिका में वे खड़ी रहीं। इस सादगी से बाला का सौंदर्य एक नये ही रूप में मेरे सम्मुख प्रकट हुआ। वे स्थूलकाय हैं, इसकी मैं कल्पना ही न कर सकी। कृष्ण की बाललीला उन्होंने प्रस्तुत की। इस नृत्य की भावभंगी में संयम था; प्रत्येक दृष्टिक्षेप अर्थपूर्ण था। दर्शक एक महान् कलाकार का सान्निध्य अनुभव कर रहे थे। एक भावस्थिति से दूसरी भावदशा में स्थित्यंतर, एक मुद्रा-दर्शन के बाद दूसरी मुद्रा का मानो सवाक् भापांतर—ये सब हमें आनंदप्रद और कल्पनोत्थित थे कि मेरा आश्चर्य किसी तरह शांत न होता था। बाला के मंदस्मित-भरे चेहरे पर भाव-लहरियाँ पहाड़ी नदी के वेग से दौड़ रही थीं। उनका समग्र व्यक्तित्व उनके सब नृत्य-प्रक्रियाओं को उज्वल बनाता हुआ एक अवर्णनीय जीवन-तत्व का संचार कर रहा था।"

इन शब्दों में बालसरस्वती की कला का नखदर्पण में दर्शन हो जाता है। सभी कला रसिक बालसरस्वती के नृत्य देखकर उनका भाव-सौंदर्य पहचानकर उनके प्रशंसक बन जाते हैं। सम्मोहन की यह प्रक्रिया इतनी शीघ्रता, सहजता और सूक्ष्मता से सम्पन्न होती है कि, उसे अनुमान द्वारा ही जाना जा सकता है।

आजकल बालसरस्वती मद्रास के म्यूजिक अकादमी में शिक्षार्थियों को ज्ञानदान कर रही हैं। उनकी सेवाओं के सम्मान में भारत-सरकार ने उन्हें 'पद्म भूषण' की उपाधि से सुशोभित किया है।

फिर आ जाना

रवींद्रनाथ ठाकुर अपने पुस्तकालय में बैठे काम कर रहे थे। एकाएक उनके सामने एक अनजान व्यक्ति आ खड़ा हुआ और बोला—"मैं तुम्हारा वध करने आया हूँ।"

गुरुदेव ने शांत स्वर में कहा—"तो करो; पर तुम आये बड़े बेमौके हो।"

वह नहीं माना और कहने लगा—"नहीं, मैं तुम्हें जरूर मारूँगा, आज ही।"

"अरे भाई, यह तो बड़ी मुश्किल हो गयी। मुझे अभी बहुत-से पत्र लिखने हैं, मैं बहुत व्यस्त हूँ। थोड़ी देर बाद आ जाना, मैं तुम्हें तैयार मिलूँगा।" और गुरुदेव बराबर अपने पत्रों की लिखा-पढ़ी में लगे रहे। हत्यारा इस दृढ़, अचल बुड्ढे का धैर्य और आत्म संयम देख सन्नाटे में आ गया और चुपचाप वहाँ से खिसक गया। — रामगोपाल बंसल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मोद्धान का अमृत-फल

सद्गुण-सरिता के दो कगार हैं—सब्र और संयम। संयम भी वस्तुतः सब्र का ही निषेधात्मक रूप है।

जे० एल० वुडहाउस

धीरज या सब्र उन गुणों में से है, जिसकी प्रशंसा सभी करते हैं; परंतु जिसे जीवन में बहुत कम लोग उतारते हैं। वैसे सद्गुणों की सूची में उसका नाम प्रायः बहुत ऊपर ही रहता है; परंतु लोक-व्यवहार में यही समझा जाता है कि, "सब्र करो" के बजाय "जल्दी करो" अधिक अच्छा सूत्र है।

फिर भी संसार में अज्ञान या शक्ति के अभाव ने उतने काम नहीं बिगाड़े हैं, जितने सब्र की कमी ने। अभी कुछ समय पूर्व अमरीका में ४,३०० व्यक्तियों के व्यक्तित्व और स्वभाव की जाँच की गयी। ये सब अपने-अपने काम से हटा दिये गये थे। और उनके हटाये जाने का मुख्य कारण था सब्र का अभाव।

रस्किन ने ठीक ही कहा है—"कुछ लोग हर काम में सफलता प्राप्त कर लेते हैं; कुछ लोग सर्वत्र विफल होते हैं। सारा अंतर सब्र-बेसब्री के कारण पड़ता है। धैर्यवान् निर्बल बेसब्र बलवान् को पछाड़ देता है।"

यह सब जानते हुए भी हम सब्र या धीरज को जो उचित महत्व नहीं देते, उसका कारण यह है कि, हमने सब्र और निष्क्रियता के अंतर को नहीं समझा है, दृढ़तापूर्ण कार्यशक्ति और अस्थिर क्रियाशीलता को एक ही वस्तु समझ लिया है।

अधीरता अव्यवस्थित मस्तिष्क की निशानी है। अव्यवस्थित मस्तिष्कवाला व्यक्ति हर काम को चुटकी बजाते पूरा कर लेना चाहता है, जल्दी-से-जल्दी अपने परिश्रम का फल पा लेना चाहता है। यदि काम उसकी योजना के अनुसार नहीं चलता, तो वह उतावली में कुछ-का-कुछ करने लग जाता है, या काम को अधूरा ही छोड़ देता है। जब अधूरे कामों का ढेर लग जाता है, उसका आत्मविश्वास खोखला होने लगता है, उसके मन में घोर नैराश्य और आत्महीनता के दयनीय भाव घर कर जाते हैं।

इंग्लैंड के प्रधान मंत्री पिट से किसी ने पूछा—"प्रधान मंत्री में सबसे बड़ा गुण क्या होना चाहिये—भाषण-पटुता, ज्ञान, कार्यशक्ति?" पिट ने उत्तर दिया—"नहीं, सबसे बड़ा गुण है धीरज, जो प्रधान मंत्री में होना चाहिये।"

पर धीरज की आवश्यकता प्रधान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मंत्रियों को ही नहीं, हम-आप सभी को है। दुनियावी कामकाज और व्यवहार में जो भी व्यक्ति दृढ़ और शांत दिखाई देते हैं, उनका अच्छी तरह निरीक्षण कीजिये, आप पायेंगे कि, वे सब अपार धीरजवाले होते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव्वल हमें अपने साथ धीरज से काम लेना सीखना चाहिये। अक्सर हम सब अपने साथ ही सब्र खो बैठते हैं। जब हम अपनी आदतों और तौर-तरीकों पर नजर डालते हैं और देखते हैं कि, हममें बहुत-सी कम-जोरियाँ हैं, खामियाँ हैं, हम अपनी आदतों को सुधारने पर पिल पड़ते हैं। एक साथ सभी मोर्चों पर लड़ाई घोषित कर देते हैं। जल्दी ही हम थक भी जाते हैं। हमारा उत्साह ठंडा पड़ जाता है। बेचैनी और पस्तहिम्मती हमें जकड़ लेती है। फिर यह स्थिति आ पहुँचती है कि, आत्म-सुधार की हर पुकार को हमारा मन "अरे यह सब बेकार है" कहकर अनसुना करने लग जाता है।

निखरे व्यक्तित्व एवं परिपक्व भाव-नाओं के विकास में बेसब्री सबसे बड़ी बाधा है। अभी चलना भी नहीं सीखा कि, हम दौड़ने की कोशिश करने लगते हैं और गिर पड़ते हैं।

अपने मन का मालिक बनने का, शांत और स्थिर चित्त बनने का कोई कीमिया बाजार में नहीं मिलता। पर मन को स्थिर और दृढ़ बनाया जा सकता है अनुशासन द्वारा, आत्म-निरीक्षण द्वारा। धैर्य ही आत्मविजय का शस्त्र है।

दूसरों के साथ बरताव करते समय भी सब्र जरूरी है। यहीं हम सब मुसीबत में पड़ जाते हैं। दुनिया में रोज ही हमें ऐसे बीसों लोगों से मिलते रहना पड़ता है, जिनसे हमें चिढ़ होती है, खीज होती है। हर दिन, हर दम हमें सब्र से काम लेना पड़ता है, नहीं तो व्यापार, सामाजिक सम्बंध और पारिवारिक जीवन सभी असम्भव हो जाये।

इन सभी प्रसंगों में हमें अपने मन के गुस्से को पी लेना पड़ता है। प्राय: पेट के खातिर मन के गुबार को निकालने के आनंद से हमें अपने आपको वंचित रखना पड़ जाता है।

निश्चय ही निराश हो जाने या अपनी भावनाओं को कुचलकर दिल का बोझ बढ़ा लेने से काम नहीं चलेगा। उससे तो हम स्नायु-विकारों के शिकार हो जायेंगे।

तो क्या करें? कहना बड़ा कठिन है। परंतु सब्र और सहानुभूति से हम मनुष्यों में छिपे हुए बड़े-बड़े सद्गुणों का परिचय पा सकते हैं।

सब्र ही सही राह है। वह कठिन जरूर है; पर बहुत लाभदायक है। सब्र से हम सही दृष्टिकोण व मानसिक संतुलन कायम रख सकते हैं। सब्र हमें तटस्थ भाव से सोचने की शक्ति देता है, दूसरों के पहलू को सहानुभूति से समझने की क्षमता देता है। सहानुभूतिपूर्ण समझ उतावली का रामबाण औषध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब प्रसिद्ध [illegible] दक्षिण अफ्रीका गया, उसने हीरे की वे खाने खरीदीं, जो पुरानी और बेकार कह कर छोड़ दी गयी थीं। लोग ऊपर-ऊपर से कुछ खुदाई करके उतावली में उन्हें छोड़कर चले गये थे। बार्नेटो ने बड़े धीरज के साथ उन्हीं खानों को फिर खोदना शुरू किया और उसे इतने सारे अनमोल हीरे मिले कि, वह संसार में हीरों का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया।

लोक-व्यवहार में हमारा नारा होना चाहिये "गहरे पैठो।" बेसब्री का यही व्यावहारिक उपचार है। मानव-स्वभाव बड़ी विचित्र चीज है, कौन वास्तव में क्या है और कब क्या करेगा, यह कहना बड़ा कठिन है।

अधिकांश लोगों का जीवन एक संग्राम है। सब अपनी-अपनी परेशानियों से जूझ रहे हैं। इसलिए दूसरों के प्रति उदार दृष्टि से काम लो।

और सबसे अधिक सब्र दिखाना चाहिये जीवन के प्रति। जीवन में जो भी सुखमय हैं, स्पृहणीय हैं, वे सब लम्बी साधना से सिद्ध होते हैं। जीवन का आनंदफल डाल पर ही पकता है, पाल में रखकर जल्दी नहीं पकाया जा सकता।

प्रकृति भी उसी को अपना रूप दिखाती है, जो धैर्यवान् है। चार्ल्ड डारविन ने पूरे २९ वर्ष तक केचुओं का अध्ययन किया, तब कहीं विकासवाद के सिद्धांत का सूत्र उनके हाथ लग पाया। प्रसिद्ध चित्रकार रिचर्ड [illegible] एक सुंदर प्राकृतिक दृश्य को देखकर एक मित्र ने पूछा—"जंगलों में इतना सौंदर्य तुम्हें क्यों दीख जाता है?" कलाकार ने उत्तर दिया—"क्योंकि एक वृक्ष या चिड़िया का निरीक्षण करने के लिए मैं दो-दो तीन-तीन घंटे कमर तक गहरे कीचड़ में खड़ा रहता हूँ।"

बहुत-सी बातों में धीरज के बिना काम ही नहीं चलता। किसान को बीज बोकर, धूप व वर्षा के लिए उन्हें छोड़ देना होता है। कुशल सर्जन टूटी हड्डी को जोड़ सकता है; परंतु उन्हें फिर से स्वाभाविक रूप में लाने का काम शरीर स्वयं करता है और उसमें समय लगता है। यहाँ न तो उसकी चातुरी और न ज्ञान ही कुछ सहायता दे सकता है। यही बात लोक-व्यवहार में भी देखी जाती है।

'यह काम अभी होना चाहिये, इसी समय।" ऐसी बातें अपरिपक्व मस्तिष्क-वाले ही किया करते हैं। परिपक्व व्यक्ति इस तरह की उछल-कूद व हड़बड़ाहट पसंद नहीं करता। आगा-पीछा सोचकर ही कुछ निर्णय लेता है।

और इस तरह की सहनशीलता-धीरता निराशा या निष्ठुरता का चिह्न नहीं है, वरन् वह तो दृढ़ आत्म-विश्वास से, सफलता में दृढ़ विश्वास से पैदा होती है। धैर्यवान् व्यक्ति जीवन-संघर्ष में यह मानकर चलता है कि, आपत्तियों व विपदाओं के मेघ-गर्जन के बाद नीलाकाश में इंद्रधनुष भी अवश्य लहराता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

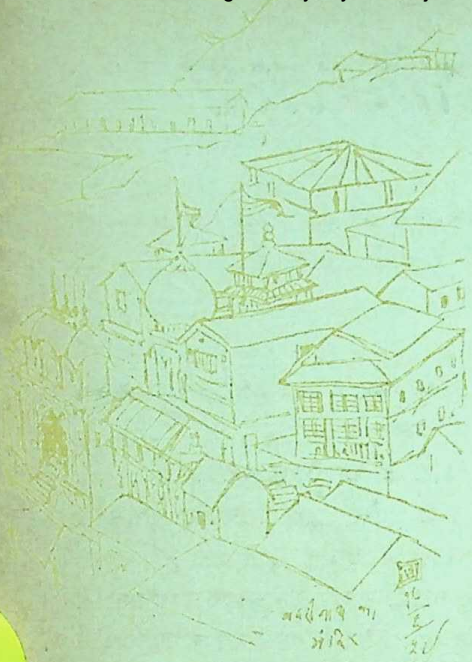

कविता और चित्र
—डा० जगदीश गुप्त

आँख-भर देखा कहाँ.....

*

आँख-भर देखा कहाँ, आँख भर आयी
उलझी ही रही दीठ;
वह हिम गिरिमाल ढीठ—
मेरे ही आँसू के झीने पट ओट छिपी,
देखता रहा जी-भर, दी नहीं दिखायी

पंक्ति-बद्ध देवदारु——
रोमिल, श्लथ दीर्घ, चारु।
चंदन पर श्यामल कस्तूरी की गंध-सी,
जलदों की छाया हिम-शृंगों पर छायी।

शिखरों के पार शिखर,
बिंध कर दृग गये बिखर;
घाटी के पंछी-सी गहरे मन में उतरी
बदरी-केदारमयी मरकत गहरायी।
आँख-भर देखा कहाँ, आँख भर आयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इलियट में भारतीय तत्व

चहुँ ओर से शुभ विचार मेरे पास आयें—इस आर्ष प्रार्थना के व्रती कवि इलियट ने ज्ञान-चयन में भारतीय चिंतन की मणि-मुक्ताओं को सादर अपनाया है।

रमा सिंह

आज के साहित्य-जगत् में टी० एस० इलियट की रचनाएँ एक नये मोड़ के रूप में स्वीकार की गयी हैं। वे युगस्रष्टा माने गये हैं। न केवल अँग्रेजी के, अपितु संसार की सभी समुन्नत आधुनिक भाषाओं के साहित्य पर उनका गहरा प्रभाव है। इसका मुख्य कारण यही है कि, कवि इलियट का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक है। उन्होंने विभिन्न भाषाओं के साहित्य का अध्ययन और मनन किया है तथा उन्हें अत्यंत मौलिक ढंग से आत्मसात् किया है।

इलियट की कविताओं में स्थान-स्थान पर उनके गम्भीर दार्शनिक दृष्टिकोण के दर्शन होते हैं और यह गम्भीरता भारतीय मनीषियों के चिंतन का वातावरण-सा उपस्थित करती है। उदाहरण के लिए 'ऐश वनसडे' के चौथे अंश को लीजिये, जिसमें कवि शब्द की खोज में लिखता है :

शब्द कहाँ मिलेगा ? शब्द कहाँ
प्रतिध्वनित होगा ? यहाँ नहीं,
यहाँ पर्याप्त मौन नहीं।
उनके लिए आनंद कहाँ, जो कोलाहल
में चलते हैं और
'नाद' को अस्वीकृत करते हैं।

'शब्द' और 'नाद' भारतीय चिंतन में परमात्मा के प्रतीक माने गये हैं। राम-भक्त तुलसी ने राम के नामरूप का माहात्म्य गाया है, तो सूर ने वेणु-गीत के माध्यम से कृष्ण के नाम-रूप की व्यंजना की है। तुलसी के शब्दों में नाम ही योगियों की सतत प्रेरणा है—"नाम जीह जपि जागहि जोगी" या "साधक नाम जपहिं लय लाये।" यही 'नाम' ब्रह्म का बोध करानेवाला है, यही 'शब्द' है, जो अर्थ का बोध कराता और वास्तविक रूप को प्रत्यक्ष करता है। इलियट ने भी ऊपर उद्धृत पंक्तियों में 'नाद' को' आनंद की प्रतिमा माना है। वे भी 'शब्द की खोज में अग्रसर हैं; क्योंकि वही आनंद की प्राप्ति करानेवाला है।

इलियट की एक अन्य कविता 'ह्वाट द थंडर सेड' में बृहदारण्यक उपनिषद् का एक प्रसंग बड़ी सजीवता के साथ अंकित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है। प्रसंग इस प्रकार है। प्रजापति के तीन पुत्र देव, मानव और दानवों ने शिष्यों के रूप में उनके सामने अपनी जिज्ञासा प्रकट की। देवताओं ने कहा–"हमें कुछ बताइये।" प्रजापति ने कहा–"द" और पूछा "क्या समझे ?" देवताओं ने उत्तर दिया "आपने कहा 'दाम्यत' अर्थात् नियंत्रण करो।" इसके बाद मानवों ने वही प्रश्न दोहराया, तो प्रजापति ने उत्तर में फिर 'द' कहा और पूछा–"समझे ?" मानव बोले–"हाँ, आपने कहा 'दत्त', दो।" दानवों ने भी वही जिज्ञासा की और प्रजापति ने उन्हें भी वही उत्तर दिया और पूछा–"समझे न?" दानवों ने कहा–"जी, आपने कहा 'दयध्वं', दया रखो।" उन सबसे प्रजापति ने कहा–"तुमने ठीक समझा।"

इलियट की इस प्रसंग से प्रेरित पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:

तब बिजली ने कहा:
"द"
"दत्त" : हमने क्या किया है ?
मेरे मित्र, मेरे हृदय में कम्पन है।
एक क्षण के समर्पण का
भयानक साहस,
जिसे बुद्धिमानी का एक युग भी
वापस नहीं ले सकता।

० ० ०

"द"
"दयध्वम्": मैंने कुंजी को सुना है
दरवाजे में एक बार, केवल एक बार
घूमते हुए।
"द"
"दाम्यत" : नौका ने प्रत्युत्तर दिया
प्रसन्नता से, उस "कुशल हाथ" से
जिसके पास पाल और पतवार थी।

० ० ०

...हिरण्मयी फिर विक्षिप्त है
दत्त। दाम्यत। दयध्वम्।
शांतिः शांतिः शांतिः।

प्रस्तुत कविता में बृहदारण्यक का यह प्रसंग एक नये रूप में ढलकर सामने आया है। पूरे प्रसंग को कवि ने हृदयंगम किया है और सफलता से उसका निर्वाह भी।

"हिरण्मयी फिर विक्षिप्त है," इस वाक्य में संसार की समस्त भौतिक इच्छाओं की ओर संकेत है। भौतिकता से परे रहने की चेष्टा, माया के आवरण से मुक्त होने का प्रयास, हम भारतीय दर्शन की हर धारा में देखते हैं। सगुणोपासक, निर्गुणोपासक–सभी माया के जादू की बात करते हैं। इलियट ने भी हिरण्मयी की विक्षिप्तता में संसार का मायावी रूप देखा। मनुष्य के खोखलेपन को 'द हालोमे मेन' नामक कविता में अंकित किया गया है।

गीता के कर्मयोग सिद्धांत का चित्रण भी इलियट की कविता में हुआ है। कृष्ण-अर्जुन-संवाद का उल्लेख उनकी कविता 'द डाइ साल्वेजेस' में मिलता है। जिसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

"और कार्यफल के बारे में मत सोचो
आगे बढ़ो !
ओ यात्रियो ! ओ नाविको !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम जो बंदरगाह पर आते हो और
जिनकी देह
का समुद्र न्याय करेगा, निर्णय देगा
या अन्य जो भी घटना हो,
यही तुम्हारा वास्तविक गंतव्य है।"
—इसी प्रकार कृष्ण ने अर्जुन को
सचेत किया था युद्धभूमि में।
विदा न लो,
किंतु आगे बढ़ो, ओ यात्रियो!

गीता का समग्र संदेश इस अंश में देखने को मिलता है। 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का ही भाव इन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है। देह की जिस नश्वरता की ओर संकेत कर कृष्ण ने अर्जुन का मोह-जाल काटा, देह की वही क्षण-भंगुरता यहाँ प्रकट की गयी है।

टी० एस० इलियट ने आधुनिक अंग्रेजी काव्य के क्षेत्र में शिल्प-विधान की दृष्टि से तो क्रांति की ही है, भाव और विचार-तत्व की दृष्टि से भी जो सम्पन्नता उनके काव्य में है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। भारतीय अध्यात्म और चिंतन का प्रभाव इलियट के काव्य में अनेक स्थलों पर स्पष्ट है। अपने विशाल और विशद अध्ययन के कारण जीवन के प्रति इलियट ने ऐसा संतुलित दृष्टिकोण विकसित किया है कि, उनका काव्य सभी साहित्यकों के लिए प्रेरणापद बन सका है।

★

तीन मुक्तक

हर फाँस, जो दिल में है निकल सकती है,
इक आन में तकदीर बदल सकती है।
जब गर्मी-ए-एहसास हो दिल में पैदा,
फौलाद की जंजीर पिघल सकती है।

मायूसियों में मौत का चरचा न कीजिये,
तकदीर के बिगाड़ का शिकवा न कीजिये,
है जिंदगी अजाबे-मुसलसिल[1] तो हो मगर,
रो-रो के उसकी आन को रुसवा[2] न कीजिये।

न दीन से मतलब है, न दुनिया से मुझे,
बस एक मुहब्बत का भिखारी हूँ मैं।
भगवान् की मूरत को अभी रहने दे,
इन्सान की अजमत का पुजारी हूँ मैं।

— कमलप्रसाद 'कमल'

---

१. बड़ी दुःख-भरी, २. बदनाम.

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा इस बीमारी-ए-दिल को!

शौकत थानवी

एक तो दिल यूँ ही कमजोर था, इस पर रूसी प्रोफेसर क्वातोफ के लेक्चर ने इस कमजोर दिल को ऐसा हिलाया कि, जब मैं लेक्चर सुनकर हाल से बाहर निकला, तो ऐसा लग रहा था, जैसे सर से पैर तक दिल ही दिल था; और दिल भी वह जिसे धड़कने की बीमारी हो ! दिमाग का कहीं पता न था। मैं अपना अंजाम सोच-सोचकर डर रहा था कि, कहीं यह डूबता हुआ दिल एक दिन मुझे ही न डुबो दे, जिसके बाद जोहरा बेचारी जो मेरी वफाओं का दम भरती रहती है,ठीक तौर पर समझ जायेगी कि, मैं कितना बड़ा बेवफा था। मुझे रह-रहकर खयाल आ रहा था कि, कहीं मेरी यह मोहब्बत भी दिल की कमजोरी ही का तो नतीजा नहीं ?

मुझे यह सवाल उलझाने लगा कि, क्या इसी का नाम मोहब्बत है कि, मैं अपने दिल की इस खौफनाक बीमारी को जोहरा से छिपाये हुए हूँ। आखिर मैं हिम्मत करके उससे कह क्यों नहीं देता कि, इस मोहब्बत में तुम जहाँ तक पहुँच गयी हो, वहीं से वापस लौट जाओ, इसलिए कि, मैं कुछ ही दिनों का मेहमान हूँ। मैं इतना खुदगर्ज भी नहीं हूँ कि, इन कुछ दिनों के लिए तुम्हें अपनी जिंदगी का साथी बनाकर बाकी उम्र के लिए बेवा बना दूँ। मगर यह मैं कैसे कहूँ ?

न जाने क्या खुदा की मार थी कि, आज मैं प्रोफेसर क्वानोफ का लेक्चर सुनने चला गया। दिल की बीमारी की क्या डरावनी तस्वीर खीचीं इस आदमी ने ! बीमारी की जिस मंजिल पर मैं एक साल बाद पहुँचता, इस आदमी ने मुझे आधे घंटे के अंदर पहुँचा दिया। मगर उसने यह भी तो कहा था कि, साइंस की तरक्की की वजह से मौत जीती जा चुकी है। इन्सान को हमेशा जिंदा रखा जा सकता है। हमने यहाँ तक कामयाबी हासिल कर ली है कि, आपरेशन करके दिल को सीने से बाहर निकाल लें, और एक घंटे तक मशीनी तरीके से बदन में खून का दौरा जारी रखकर बीमार दिल की मरम्मत करें और फिर उसको उसकी जगह पर रख दें। और अगर वह बिल्कुल ही नाकारा हो चुका है, तो उसकी जगह किसी जानवर का दिल लगाकर इन्सान को मौत के हाथ से बचा लें। मगर अल्लाह जाने इसमें कुछ सच भी है या झूठ ही झूठ है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पहुँचकर भी मुझे चैन न मिला। मैंने हर तरह इस खयाल को टालने की कोशिश की; मगर मेरे दिल की बीमारी हर तरफ से मुझे घेरे हुए थी। आज से ज्यादा जिंदा रहने की तड़प मुझमें शायद कभी पैदा न हुई थी। मैं जिंदा रहना चाहता था; मगर दिल का ऐसा बीमार भी कभी जिंदा रहा है, जैसा मैं हूँ! उलझन बढ़ती ही जा रही थी, न दिल को चैन था न आँखों में नींद।

एकाएक मैं तड़पकर उठा और बाहर जाने के लिए तैयार हो गया। मैंने तय कर लिया था कि, मुझे जिंदा रहना है। मुझे प्रोफेसर क्वानोफ से अभी और इसी वक्त मिलना है। मैं तीर की तरह घर से निकला और उस होटल में जाकर दम लिया, जहाँ प्रोफेसर ठहरे हुए थे। उन्होंने बड़े ध्यान से मेरी बातें सुनीं और पचासों तरह के औजारों की मदद से मुझे देखा। मुझे देखने के बाद पहले तो वे कुछ देर तक खामोश बैठे रहे, फिर जबर्दस्ती की मुस्कराहट होंठों पर लाकर बोले—"मैं आपको मुबारकबाद देता हूँ, आप अपनी मौत से ठीक पौन घंटा पहले मेरे पास पहुँच गये हैं। और जब किस्मत ने आपको यहाँ तक पहुँचा दिया है, तो मेरा दिल गवाही दे रहा है कि, आप जिंदा रहेंगे।"

इसके बाद उन्होंने कहीं टेलीफोन किया, फिर मुझसे मेरे घर का पता पूछकर अपनी सेक्रेटरी को लिखाया रात को सोने के कपड़ों में ही बाहर जाने के लिए तैयार हो गये। मुझे सहारा देकर उठाते हुए उन्होंने कहा—"आइये मेरे साथ, अस्पताल में सब कुछ तैयार है।"

अस्पताल पहुँचते ही प्रोफेसर ने मुझे आपरेशन थियेटर में पहुँचा दिया, जहाँ कई डाक्टर और नर्सें पहले से ही तैयार थीं। इन सबने मिलकर मुझे आपरेशन टेबल पर लिटा दिया, जहाँ मैं शायद दो मिनिट से ज्यादा होश में नहीं रह सका।

साबुन के चूरे से जब किसी बर्तन में झाग उठाये जाते हैं, वैसे ही झागों से मैंने अपने आपको उभरता हुआ महसूस किया। जब आँख खुली, तो देखा कि, बहुत-सी धुनी हुई रुई है, जिसमें मैं लिपटा हुआ हूँ। मैं समझ गया कि, मैं मर चुका हूँ और यह मेरी रूह है, जो उड़ रही है। मगर इन्हीं बादलों में कुछ धुँधले-धुँधले जाने-पह-

यूथपतित्व के लिए युद्ध
हळेबीड मंदिर की भित्ति पर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाने चेहरे भी दिखाई देने शुरू हो गये। ये चेहरे बड़ी तेजी से साफ होते जाते थे और अब मैं एक-एक को साफ पहचान सकता था। ये मेरे वालिद हैं, ये मेरी बूढ़ी माँ हैं और यह दुपट्टे के आँचल से बार-बार आँसू साफ करनेवाली जोहरा है और ये प्रोफेसर क्वानोफ हैं, जो मेरे माँ-बाप और जोहरा को समझा रहे हैं—"अब आप लोग इन्हें मरीज न कहिये, ये अब बिल्कुल तंदुरुस्त हैं, मैंने इनको मौत के मुँह से छीन लिया है, ये चाहें तो हमेशा जिंदा रह सकते हैं। मगर इस वक्त इन्हें आराम और चैन की जरूरत है, इसलिए आप इन्हें खामोश पड़ा रहने दें।" और प्रोफेसर अपने साथ ही इन सबको लेकर बाहर चला गया।

मैं अकेला रह गया और अपने आपको बेहोशी के हवाले कर दिया। यह हालत न जाने कब तक रही कि, थोड़ी-थोड़ी देर बाद खुद को उड़ता हुआ महसूस करता था। दूसरे-तीसरे दिन मुझे अपने जिंदा रहने का यकीन आने लगा। धीरे-धीरे प्रोफेसर ने मुझे बैठने की इजाजत दे दी। अब मेरे अजीज भी मेरे पास ज्यादा देर तक ठहर सकते थे। और लोग तो खैर सुबह या शाम को ही जाते थे; मगर जोहरा सुबह को आकर शाम तक मेरे पास ही ठहरी रहती। मैं हैरान था कि, मुझे उसकी मौजूदगी एक बोझ-सा महसूस होती।

मेरा दिमाग मुझे याद दिलाता कि, मैंने उसको किस-किस तरह चाहा है; मगर मैं अब अपने दिल में उसके लिए वह बात नहीं पाता था। पहले जिस तरह उसने दिल की बीमारी छिपाता था, अब उसे तरह दिल की तंदुरुस्ती छिपाने को चाहता था। मेरी समझ में नहीं आता कि, मुझे क्या होता जा रहा है। मेरा दिमाग मोहब्बत की पूरी दास्तान दोहराता; मगर मेरा दिल उसको मानने से इन्कार कर देता। वह बेचारी मेरी हालत से अनजान मेरी देख-रेख में लगी रहती। मैं यह चाहता था कि, वह मुझसे दूर ही रहे तो अच्छा है।

एक दिन उसने प्रोफेसर से मेरे सामने ही कहा—"प्रोफेसर साहब, आप खुद देख लीजिये, रोज की तरह आज भी फल वैसे के-वैसे ही रखे हुए हैं। मैंने अंगूर खिलाने चाहे, तो मना कर दिया, मालटे का रस देना चाहा, तो मुँह फेर लिया। कहते हैं गोश्त के पार्चे लाओ, हड्डियाँ चबाने को दिल चाहता है। दूध शौक से पी लेते हैं यखनी की भी एक के बाद दूसरी और तीसरी प्याली माँगते हैं; मगर फलों से तो जैसे नफरत ही हो गयी है।"

प्रोफेसर ने मुस्कराकर कहा—"कुदरती बात है, बिल्कुल कुदरती बात है। अब आप इनको फल न खिला सकेंगी, इनकी खातिर सिर्फ गोश्त से कीजिये, गोश्त इनके लिए अच्छा भी है।"

"मगर डाक्टर साहब, फल भी तो इनके लिए अच्छे हैं।" जोहरा ने कहा।

मेरा जी चाहा कि, इस बदतमीज लड़की को भंबोड़ खाऊँ, इसकी टाँगों से लिपटकर अपने पूरे दाँत इसकी पिंडलियों में जमा दूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized By Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं इतने जोर से गुर्राया कि वह डरकर रह गयी। उसके सामने ही प्रोफेसर ने मेरे लिए एक प्लेट गोश्त मँगाकर मेरे सामने रख दिया, जिसे मैं आनन-फानन में चट कर गया। और जब प्लेट में कुछ न रहा, तो मैंने उसे अपनी जबान से इस तरह साफ कर दिया कि, वह धुली-धुलायी नजर आने लगी। जोहरा मेरी इस हालत को डरी हुई नजरों से देखती रही; मगर मैंने उसकी नजरों की परवाह किये बिना डाक्टर से कहा—"आपने मुझ पर वह एहसान किया है कि, जी चाहता है, आपके पैरों में गिर-कर आपके तलवे चाट लूँ!"

प्रोफेसर ने फिर कहा—"कुदरती बात है, बिल्कुल कुदरती; मगर आप दिल पर ज्यादा बोझ न डालिये, दिमाग से भी काम लिया कीजिये।" और वे कमरे से बाहर चले गये।

प्रोफेसर के जाने के बाद जब जोहरा ने मेरा दिमाग चाटना चाहा, तो मैंने उससे कह दिया कि, मैं सोना चाहता हूँ और वह खामोश होकर बैठ गयी। उसी दिन एक अजीब बात हुई। अस्पताल की एक नर्स के साथ एक होश-हवास की दुश्मन, काफिर-अदा कुतिया भी मेरे कमरे में आ गयी। उसको देखते ही मेरे दिल में वे जज्बात (भावनाएँ) एकाएक जाग उठे, जिन्हें दिमाग के बार-बार याद दिलाने पर भी मेरा दिल नहीं मानता था। मैं उसे देखकर एकदम उठकर बैठ गया और उसकी तरफ हाथ फैला दिये! लेकिन वह अपने भौंकने की आदत मेरे होंठों पर बेइख्तियार आ गया—

उनको आता है प्यार पर गुस्सा।
मुझको गुस्से पं प्यार आता है॥

और उसके भौंकने पर भी जब मैं उसकी तरफ बढ़ने से बाज न आया, तो नर्स ने भी कहा—"ब्यूटी, तुम कैसी नट-खट हो! वे प्यार करते हैं और तुम भौंकती हो! शटअप!"

मैंने कहा—"डाँटिये मत, इस गुस्से की कद्र मेरे दिल से पूछिये।"

नर्स ने मुझे गौर से देखा और बोली—"ओह, हाँ, ठीक तो है। आप ठीक कह रहे हैं।"

नर्स बाहर जाने लगी, तो वह काफिर-अदा भी उसके साथ बाहर निकल गयी। मैंने नर्स को आवाज देकर बुलाया और कहा—"सिस्टर, जरा मेरी बात सुन लीजिये। अगर आपका कोई हर्ज न हो, तो इनको रोज साथ ले आया कीजिये।"

सिस्टर ने कहा—"यह कैसे हो सकता है? अस्पताल में इसे लाने की इजाजत नहीं। न जाने आज कैसे मेरे पीछे चली आयी है। प्रोफेसर ने देख लिया, तो मुसीबत हो जायेगी।"

"मैं प्रोफेसर से इजाजत दिला दूंगा।" मैंने कहा। और जब वह नर्स के साथ चली गयी, तो मैं एक आह भरकर रह गया। जोहरा ने बड़े ताज्जुब के साथ कहा—"आपको तो कुत्तों का शौक कभी न था, यह कुतिया इतनी क्यों पसंद आयी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ये बातें समझने-समझाने की नहीं होतीं, काश इसको तुम मेरी निगाहों से देख सकती !" मैंने जवाब दिया।

और यह सच है कि, जब से मैंने ब्यूटी को देखा था, वह मेरे दिल में समायी हुई थी। रात को देर तक उसी के ध्यान में खोया रहा। सुबह प्रोफेसर के आने पर जोहरा ने उनसे कहा कि, मैं रात को सोते में भी ब्यूटी-ब्यूटी करता रहा था। प्रोफेसर ने इत्मीनान के साथ बैठते हुए कहा—"देखिये मिस, मैं आपको और खुद इनको ज्यादा देर तक अँधेरे में नहीं रखना चाहता। यह जो कुछ हो रहा है, बिल्कुल कुदरती है। असल बात यह है कि, ये जिस हालत में मेरे पास आये थे, उस वक्त इनका दिल अपनी उम्र खत्म कर चुका था और सिर्फ पैंतालीस मिनिट बाकी थे। मैंने फौरन इनके आपरेशन का इंतजाम किया और इनका दिल निकालकर चाहा कि, उसी को ठीक-ठाक कर दूँ; मगर वह बिल्कुल बेकार हो चुका था। इसलिए मैंने फौरन तंदुरुस्त अलसेशियन का सीना चीर उसका दिल निकाला और इनके दिल जगह रख दिया। यह तजुर्बा कहाँ कामयाब रहा, वह तो आप खुद देख रही मगर चूँकि इनका दिल बदल चुका है, लिए दिल की कैफियत (भावनाएँ) भी चुकी हैं। अब इनका दिल हर वही चाहेगा, जो कुत्ते का दिल चाह सकता ये जिंदा जरूर रहेंगे, मगर कुत्ते के दिल साथ और उसी की खासियत के साथ मैंने कहा—"यानी मैं जहाँ तक दिल ताल्लुक है, कुत्ता हो चुका हूँ !"

"मगर जिंदा हो, यही क्या कम है प्रोफेसर ने कहा।

इस वक्त मेरे दिल पर मेरा दिमाग गया और मैं कुत्ते की जिंदगी बसर करने वाले प्रोफेसर पर झपटा ही था कि, भंबोड़ खाऊँ कि, एकाएक आँख खुल और प्रोफेसर साहब हाथ से निकल गये

कहीं देर न हो जाये

एक आदमी एक बार अपने किसी मित्र के यहाँ भोजन करने गया। रात लौटते समय कहीं देर न हो जाये, इस डर से उसने अपने साथ एक लालटेन ले ली।

भोजन आदि से निवृत्त होकर बहुत रात गये नशे में चूर घर लौटा। दूसरे दिन उसे अपने मित्र का पत्र मिला, जो उसका नौकर लाया था। पत्र में लिखा था—"भाई साहब ! अभी-अभी मुझे अपने कमरे में आपकी लालटेन रखी मिली। उसे नौकर के हाथ भेज रहा हूँ। कृपया मेरे तोते का पिंजरा वापस दीजियेगा।"

—मुगनी अब्बास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन सेकंड में मृत्यु-तांडव

अणु-परमाणु-शस्त्रों से सज्जित इस राकेट-युग में जीवन और मृत्यु का अंतर है—केवल तीन सेकेंड।

परदेसी

राकेटों और अणुशस्त्रों के इस युग में सर्वनाश प्रस्तुत होने में केवल तीन सेकेंड ही पर्याप्त है। शब्द से भी तेज गति से वार करनेवाले विनाशकारी शस्त्रास्त्रों से सज्जित शक्तिशाली राष्ट्र इन क्षणों की दूरी को भी मिटाने जा रहे हैं। विशाल राकेटों के मालिक रूस, ब्रिटेन व अमरीका के पास आज के सर्वनाश व सृजन की कुंजी है।

लंदन के नारफाक नामक युद्ध-अड्डे पर चार स्थलों पर 'थोर मिसाइल' आणविक अस्त्र सुसज्जित हैं। अमरीका में बने हुए ये साठ थोर मिसाइल किसी भी घड़ी, सिर्फ पंद्रह मिनिट की पूर्व सूचना पर रूस की ओर छोड़े जा सकते हैं। ये राकेट अर्द्ध-वृत्त गति-रेखा की १७०० मील की दूरी, लगभग एक हजार सेकेंड में पूरी कर लेंगे। इनके छोड़ दिये जाने पर रूस के पास बचाव की तैयारी के लिए अधिक-से-अधिक पाँच या छः मिनिट रह जायेंगे। किंतु उधर रूस के पास 'इंटर कांटिनेंटल बेलिस्टिक मिसाइल" हैं जो थोर मिसाइल से भी अधिक गतिमान व अचूक राकेट हैं।

ये सर्वसंहारक अस्त्र कब छोड़े जायें, इसका निर्णय राजनीतिज्ञों द्वारा होगा। ब्रिटेन में स्थित थोर मिसाइल के छोड़ने के आदेश देने और उनके नियंत्रण और संचालन का अधिकार अमरीकी राष्ट्रपति और ब्रिटेन के प्रधान मंत्री के हाथ में सम्मिलित रूप से है। यों यह द्वैध शासन है। मिसाइल की चाबियाँ भी दो हैं। एक ब्रिटेन के सेनाधिकारी के पास रहती है, दूसरी अमरीकी सेनाधिकारी के पास। आज्ञा मिलने पर दोनों सेनाधिकारी एक साथ चाबी लगाकर, मिसाइल का ताला खोल सकेंगे। यदि चाबी घुमायी जा चुकी है, तो फिर राकेट को रोका नहीं जा सकेगा। चाबी घूमी और शांति का दम घुटा। मिनिट-दो मिनिट पश्चात् संसार में सर्वनाश की घड़ियाँ पैदा हो जायेंगी।

थोर मिसाइलों के निर्माण में यह सावधानी रखी गयी कि, छोड़े जाने पर वे लौटकर, पागल कुत्ते की तरह अपने ही मालिक को न काट खायें और लक्ष्यभ्रष्ट न हो जायें। वैज्ञानिकों का कहना है कि, ये व्यवस्थाएँ बड़ी मजबूत हैं। परंतु अभी तक यह संदेहास्पद ही है कि, इन अस्त्रों को छोड़ना अपने पर मुसीबत मोल लेना नहीं है।

राकेटों में भरे जानेवाले आणविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्रों के प्रमुख अंग, उच्चतम अधिकारियों के पास पहरे में रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर उन्हें राकेट के सिरे पर चढ़ाया जा सकता है। परंतु इसकी सम्भावना बनी ही रहेगी कि, संकट-काल में अणु-अस्त्रों को राकेट के सिरों पर चढ़ाने में जल्दबाजी की गयी और तनिक सी भूल हो गयी, तो चलाने वाला राष्ट्र ही खुद शिकार बन जाये। जल्दी काम शैतान का और जंग तो शैतान का खास खिलौना है; सो वह अपनी लीला दिखलायेगा ही। अभी पिछले वर्ष पेरिस का शीर्ष सम्मेलन भंग होने पर अमरीका ने अपनी सेनाओं को सावधान रहने का संकेत दिया था; उस समय फेल्टवेल नाम के स्थान में अमरीकी वायुसेना के अधिकारियों ने थोर मिसाइलों पर आणविक अस्त्र भी चढ़ा दिये थे।

आक्रमण का आदेश मिलने पर थोर मिसाइल के छूटने में पंद्रह मिनिट लगते हैं। यदि ब्रिटेन के नारफोक अड्डे से अस्त्र छोड़ना है, तो पहले ब्रिटिश सेनाधिकारी अपनी चाबी राकेट के ताले में डालेगा। इसके बाद पाँच प्रकार की गिनतियाँ जायेंगी, जिसमें १४ मिनिट ५७ लगेंगे। इस ५७ वें सेकेंड पर अम सैनिक अधिकारी अपनी चाबी राके ताले में डालेगा और उसे 'शांति' से की ओर घुमा देगा। इसमें तीन लगेंगे। बस शांति और युद्ध में इतनी दूरी है।

आधा सेकेंड

अमरीका और रूस के परमाणु वैज्ञानिक एक ऐसे न्यूट्रन बम के निर्माण में लगे हैं, जिसके विस्फोट से न तो ध्वनि ही उत्पन्न होगी और न ध्वंस आदि होगा। केवल आकाश में न्यूट्रन बम के विस्फोट करने से न्यूट्रन कणों की तीव्र-भेदी रश्मियाँ धरती पर गिरेंगी और जीवधारियों के शरीर में प्रविष्ट होकर उनके कोष-तंतुओं में ऐसे विकार उत्पन्न कर देंगी कि, कुछ ही समय में उनकी मृत्यु हो जायेगी। मृत्यु भी इतनी सरल होगी कि, प्रभावित व्यक्तियों को पता भी नहीं चलेगा। और यह सारी क्रिया आधे सेकंड के अंदर-अंदर समाप्त हो जायेगी।

—'विज्ञान-लोक' से

यह दूसरी घूमने के पंद्रहवें पर चारों ओर हरी रोशनी जायेगी और गर्जना के साथ मिसाइल आकाश ओर उड़ेंगे। में ऐसे पाँच अड्डे जिनमें से प्रत्येक पाँच-पाँच नियंत्र यंत्र लगे हुए प्रत्येक अड्डा दूसरे बारह मील की पर बना हुआ है।

यह तो पहले कह चुके हैं कि, चाबी घूम जाने पर राके या मिसाइलों को वापस नहीं गिराया सकेगा और न ही उड़ान की उनकी दि ही बदली जा सकेगी। यह तो ब्रह्मास्त्र छूट गया तो छूट गया। इन अस्त्रों आकाश में या मार्ग के मध्य में वि नहीं किया जा सकता। हाँ, पहली च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

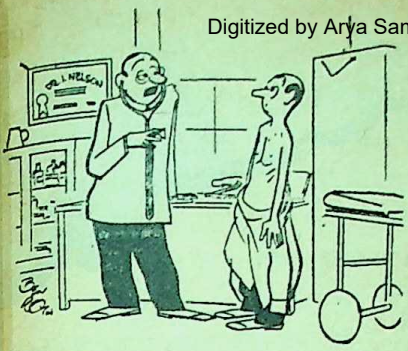

हर चीज का उजला पहलू देखिये। जैसे अब हाइड्रोजन बम से डरने की आवश्यकता नहीं; क्योंकि कोबाल्ट बम बन चुका है।

घूमने और राकेट छूटने के बीच के समय १४ मिनिट और ५७ सेकेंड में आप चाहें तो अस्त्र के प्रहार को रोक सकते हैं, उसके बाद नहीं; क्योंकि ज्योंही दूसरी चाबी घुमायी, भीषण प्रकोप और सर्वनाश प्रारम्भ हो जायेगा।

फेल्टवेल के बीस और नारफोक के पाँच नियंत्रक अड्डों में इन राकेटों के प्रयोग का अभ्यास निरंतर होता रहता है। यहाँ तक कि, स्थानीय कुत्ते भी इस दैनिक कवायद को देख चुके हैं। १९६० के आरम्भ में जब ब्रिटेन में थोर मिसाइल की स्थापना हुई थी, तब पश्चिमी राष्ट्रों की यह धारणा थी कि, इनके बल पर सोवियत रूस को एक या दो साल तक भयभीत रखा जा सकेगा। लेकिन जब रूस ने तत्काल अपने "आई० सी० बी० एम०" ब्रह्मास्त्र की घोषणा की, तो ब्रिटेन के लिए अपने थोर अस्त्र एक मुसीबत बन गये। उसके कारण रूस द्वारा ब्रिटेन पर अचानक आक्रमण का भय बहुत बढ़ गया; क्योंकि रूसी ब्रह्मास्त्र के छूटने पर चार मिनिट की रक्षात्मक अवधि पर्याप्त सिद्ध नहीं होगी। इधर रूस ने भी अपने ब्रह्मास्त्रों के अड्डे ब्रिटेन की दिशा में प्रस्थापित कर दिये हैं। कुछ ही दिनों पूर्व युद्ध-विशारदों ने घोषणा की थी कि, रूस के ब्रह्मास्त्र सैनिक दृष्टि से अधिक उपयुक्त अड्डों में स्थापित हैं।

सर्व-संहारक प्रचंड शस्त्रास्त्रों से सज्जित इन शक्तिशाली राष्ट्रों की टक्कर में न जाने कब यह सर्वनाश की विभीषिका फूट पड़े; परंतु यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि, जिस दिन वह घड़ी आयेगी, मानव सभ्यता को मिटने में तीन सेकेंड भी नहीं लगेंगे।

★

क्या देखा करते हो ?

"क्यों जी रात को सोते वक्त रोज तुम दियासलाई जलाकर क्या देखा करते हो ?"

"बात यह है कि, राशन की वजह से तेल बहुत कम मिलता है— इसलिए दियासलाई जलाकर देख लेता हूँ कि, कहीं लालटैन जलती तो नहीं रह गयी ?"

— मुगनी अब्बासी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दयाला संसार की एकमात्र नदी है, जिसे मृत्युदंड दिया जा चुका है। छठी सदी ई० पू० में जब ईरानी सम्राट् कुरुस की सेना इस नदी को पार कर रही थी, सम्राट् का एक अत्यंत प्रिय सफेद घोड़ा उसमें डूबकर मर गया। इस अपराध के लिए दयाला नदी को मृत्युदंड दिया गया। तुरंत राज और मजदूर लगा दिये गये। उन्होंने ३६० नहरें खोद डालीं। सारा पानी नहरों में बहने लगा और नदी सूख गयी। अगले हजार वर्ष तक नदी मृत्युदंड भोगती रही, जब तक रेगिस्तान ने रेत भरकर नहरों को नष्ट नहीं कर दिया।

—००—

इटली के इस्किया द्वीप के फोरियो बंदरगाह में समुद्र-जल इतना गर्म होता है कि, उसमें अंडा उबाला जा सकता है। पानी के गर्म होने का कारण है खाड़ी में स्थित ज्वालामुखी-विवर।

—००—

हंगरी का प्रसिद्ध वैज्ञानिक काउंट इस्तवान जेकेन्यी (१७९१–१८६०) जब विक्षिप्त हो गया, तो वैद्यों ने कहा कि, शतरंज खेलने से उसका दिमाग ठीक हो जायेगा। एक युवक को वेतन देकर उसके साथ शतरंज खेलने के लिए रख लिया गया। छः वर्ष तक दोनों प्रतिदिन शतरंज खेलते रहे, जिसके अंत में काउंट ठीक हो गया और युवक पागल।

—००—

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर आइजेक न्यूटन (१६४२-१७२७) का एक दाँत १८१६ में लगभग ११,००० रुपये में बेचा गया। खरीददार थे लार्ड शैफ्टसबरी।

—००—

बुनजलो (साइलीशिया, जर्मनी) में एक चीनी बर्तन बनानेवाले कुम्हार का सहायक अपने मालिक की पुत्री से प्रेम करता था। जब मालिक ने प्रेमियों को विवाह करने की अनुमति नहीं दी, तो युवक ने १७५३ में चीनी का एक भीमकाय फूलदान बनाया, जिसमें तीन मन गेहूँ भरा जा सकता था। फूलदान को देखकर नगर के मेयर इतना प्रभावित हुआ कि, उसने कुम्हार पर दबाव डालकर प्रेमियों को विवाह की अनुमति दिला दी। यह फूलदान आज भी सुरक्षित है और बुनजलो नगरपालिका की राजमुद्रा पर उसका चिह्न है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंशी का स्वर-विज्ञान

प्राणों को विह्वल कर देनेवाले बाँसुरी के स्वरों की उत्पत्ति पर वैज्ञानिक प्रकाश।

प्रवीण कुमार

वाद्य में आखिर कौन-सा तत्व है, जो मनुष्य का मन मोह लेता है; इस बात की ओर अतीत से तत्व-अन्वेषियों का ध्यान जाता रहा है। पाइथागोरस ने भी वाद्य-संगीत के रहस्य पर चिंतन किया था और यह सिद्धांत स्थिर किया था कि, ध्वनि का भी वैज्ञानिक महत्त्व है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के साथ-साथ वाद्य-यंत्रों के ध्वनि सम्बंधी रहस्यों के अध्ययन में रुचि बढ़ने लगी। रेने डेस्काटे के सहयोगी मार्टिन मेरसे ने तो वाद्य-यंत्रों की ध्वनि प्रतिक्रिया पर एक विशिष्ट समीकरण तक तैयार किया।

इस दिशा में पहले भी अठारहवीं शताब्दी के एक वैज्ञानिक जीन ली रोंड द अलेम्बर्ट ने पहल की थी। इनके बाद उन्नीसवीं शताब्दी में एक अन्य वैज्ञानिक हरमन फान हेलमोल्त्ज् ने शब्द तरंगों का रहस्य ढूँढ़ने का प्रयास किया। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में इस दिशा में व्यापक प्रगति हुई और अब वाद्यों के भौतिक तत्व और संगीत ध्वनि के सम्बंध में विशेष शोध प्रारम्भ हो गयी है।

मुँह से बजाये जानेवाले इन बाजों की यांत्रिक-रचना क्लिष्ट नहीं है। हम इन्हें मोटे तौर पर तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—१. रीड (मुखनलिका), जिसमें से फूँकने पर हवा निकलती है; २. नली जिसमें हवा प्रवाहित होती है; और ३. उस नली में बने हुए छिद्र, जिनके कारण ध्वनि को संगीत का रूप प्राप्त होता है। मुखनलिका से जो हवा फूँकी जाती है, वह नलिका के रिक्त स्थान में ध्वनि का प्रकम्पन उत्पन्न करती है और प्रकम्पनयुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह नलिका छिद्रों में संगीतमय ध्वनि उत्पादित करती है ।

नलिका में किस अंतर पर उस प्रकम्पन की आवृत्ति होती है, यह उस नलिका के आकार पर निर्भर करता है । यदि नलिका में छिद्र न हों तो बाँसुरी एक ही स्वर में बराबर सीटी की तरह ध्वनि उत्पादित करती रहेगी । बाँसुरी की नलिका में बने छिद्र अप्रत्यक्ष रूप में बांसुरी की नलिका के आकार में परिवर्तन करके ध्वनि को तान में परिवर्तित करते हैं । यह परिवर्तन कब और किस रूप में अपेक्षित है, वस्तुतः इसी की जानकारी द्वारा ध्वनि को संगीत में परिवर्तित किया जा सकता है ।

हमने बाजों के जिस अंग के लिए मुखनलिका शब्द का प्रयोग किया है, उस अंग की वैज्ञानिकता का भी अपना महत्व है । हारमोनियम में लगी 'रीडों' में ध्वनि-उत्पादक वस्तु वस्तुतः धातु की वह झिल्ली होती है; जो हवा का चाप पाकर एक निश्चित मात्रा में स्वर पैदा करती है । मुखवाद्य भी प्रायः इसी सिद्धांत पर बने होते हैं । परंतु बाँसुरी की यांत्रिक-रचना इनसे भिन्न है । उसमें हवा फूंकने पर कोई झिल्ली पीछे हटकर ध्वनि उत्पादित नहीं करती; बल्कि उसमें एक निश्चित छिद्र ही ऐसा होता है, जिससे गुजरकर हवा ध्वनि का प्रकम्पन उत्पन्न करती है ।

शहनाई सरीखे बाजे की मुखनलिका बाँसुरी और हारमोनियम दोनों की रीडों से भिन्न होती है । उसमें दो फलोंवाली बेंत या किसी दूसरी वस्तु की एक चाप रहती है । बेंत के इन टुकड़ों का माप उनका लचीलापन उन्नीस तरह के में प्रयुक्त होता है । रीडों के लचीलेपन माप तथा घनत्व पर ध्वनि का प्र बहुत कुछ आधारित होता है । बेंत की नलिका भी चाप संचलित होने के क तभी कार्यरत होती है, जब नलिका हवा का प्रकम्पन नली के उस भाग मुँह में होता है, उससे अधिक से अ विभिन्नता लिए हो । मुख-वाद्यों का सिरा खुला होता है, अतः निश्चय ही सिरे पर ध्वनि-प्रकम्पन अत्यल्प होगा ।

ध्वनि-प्रकम्पन की आवृत्ति और स्थिरता बहुत कुछ नली की लम्बाई उसके आकार पर आधारित है । यदि सीधी होगी तो उसमें ध्वनि के प्रकम्पन गति भिन्न होगी और यदि वह चो समान होगी, तो ध्वनि प्रकम्पन दूस ढंग का होगा ।

मुखवाद्यों के सम्बंध में बेनाडे का अ यन केवल भौतिक विज्ञान पर आधारित है । उन्हें मुँह से फूंककर बजाये जाने बाजों का भी क्रियात्मक अनुभव है । तक उन्होंने इन वाद्यों को खुद बजा तथा बाद में नये ढंग की नलिका की करके एक नये वाद्य का ही आविष्कार डाला ।

वाद्यों में जितना महत्व मुखनलिका नलिका का है, उतना ही महत्व नलि बने छिद्रों का भी है । नलिका के ये छि

केवल ध्व
बल्कि सं
तक ध्वनि
प्लास्टिक
'रीड' ल
निकलती
कर दिये
कुछ खुले
सुनने को
जब बजा
लेता है, त
में भिन्नत
वह सीधी
रह जाती
के ठहरने
हो जाता
गणि
आधार
के आक
संख्या त
दूरी के
और उन्
ढूंढ निक
किये जा
संगीत त
जा सक
निष्कर्ष
में छिद्र
चाहिये
इन छिद्र
निश्चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ध्वनि को नियंत्रित ही करते हैं, बल्कि संगीत को लय देते हैं और श्रोताओं तक ध्वनि को संगीत के रूप में पहुँचाते हैं। प्लास्टिक की नलिका में क्लैरिनेट का 'रीड' लगाकर बजाने से बड़ी भद्दी आवाज निकलती है, पर जब उसी नलिका में छिद्र कर दिये जाते हैं तो कुछ छिद्र बंद रखने और कुछ खुले रखने से इससे पूर्णतः भिन्न ध्वनि सुनने को मिलती है। बाँसुरी बजाते समय जब बजानेवाला बाँसुरी का छिद्र बंदकर लेता है, तो इससे वस्तुतः नलिका के आकार में भिन्नता आ जाती है। फिर वह सीधी नलिका मात्र नहीं रह जाती, बल्कि उसमें हवा के ठहरने के लिए गोल छेद हो जाता है।

गणित के सिद्धांत के आधार पर बेनाडे ने नलिका के आकार और छिद्रों की संख्या तथा उनकी पारस्परिक दूरी के सम्बंध में जाँच की और उन्होंने इस प्रश्न का हल ढूंढ निकाला कि, छिद्रों के बंद किये जाने पर भी नलिका के संगीत तत्व को सुरक्षित रखा जा सकता है। बेनाडे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि, मुखवाद्यों में छिद्र दूसरे छोर के निकट ही होने चाहिये। उन्होंने नलिका के अनुपात में इन छिद्रों के माप और दूरी को भी निश्चित किया।

वेणुगोपाल
मैसूर के सोमनाथपुर मंदिर की प्रमुख देवमूर्ति

अतीत में ही वाद्य बनानेवाले कारीगर अँगुलियों से मापकर छिद्रों का स्थान निश्चित करते रहे हैं। पर कारीगरों का यह परम्परागत गणित सभी प्रकार के बाजों पर लागू नहीं होता। बाजा बजानेवालों में से प्रत्येक की अपनी-अपनी पृथक पद्धति होती है, और यही कारण है कि, परम्परा से ये निर्माता केवल उसी ढंग का बाजा बना सकते हैं, जैसा कि, वे या उनके पूर्वज बनाते आये हैं; पर परम्परा से बाँसुरी बनानेवाला जो बाँसुरी बनाता रहा है, वह अजाने ही भौतिक शास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप रही है।

क्लार्क विश्वविद्यालय के ए० वेब्स्टर नामक वैज्ञानिक ने एक विद्युतीय यंत्र बनाया तथा श्री रिचार्डसन ने एक पाइप में केवल एक छिद्र रखकर उसके स्वर की परीक्षा की। इस आधार पर उन्होंने अन्य छिद्र स्थापित किये और नलिका के आकार तथा छिद्रों की दूरी के आकार का अनुपात निकाला।

पर रिचार्डसन के सिद्धांत में यह दोष था कि, हर छिद्र का पहले स्वतंत्र परीक्षण करना पड़ता था और फिर एक ही नलिका में उन सभी छिद्रों को बनाकर उनका परस्पर-सम्बंध देखना पड़ता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे भी अधिक विकसित पद्धति बल टेलीफोन लबारेटरी के डब्ल्यू० पी० मसन ने ध्वनि की गूँज के अध्ययन द्वारा बनायी तथा विभिन्न ध्वनियों के सम्बंध में कुछ समीकरण बनाये । रेले के सिद्धांतों के आधार पर ही विलियम डेट ने वाद्यों में गणित सम्बंधी कुछ नय सिद्धांत किये हैं । गणित और भौतिक-विज्ञ कसौटी पर कसे जानेवाले मनोरंजक की शल्यक्रिया निश्चित ही सं रहस्य की गुत्थियों को अब सुल ही रहेगी ।

जिगर साहब हार गये

साहब, जिंदगी में सबसे बड़ी चोट हैदराबाद में एक नौजवान के हाथों नसी किस्सा यह हुआ कि, मेरी जवानी के दिनों में हैदराबाद (दक्खन) में शाहजादा मीर जाह के यहाँ एक मुशायरा हुआ, जिसमें निजाम से लेकर दक्खन के सब ही अमीर और शरीक हुए। हर शायर की यही कोशिश थी कि, उनपर अपना रंग जमाये इनाम-व-इकराम की कोई सूरत निकल सके । मुशायरा जारी था कि, एक वान अपनी गजल पढ़ने के लिए बैठा और उसने एक बड़ा ही पोच-सा शेर यह तो आप जानते ही हैं कि, फुसफुसा शेर आज भी मुझसे सहा नहीं जाता और वह तो मेरी जवानी का था, जब मैं खराब शेर सुनते ही गाली दे बैठता था । चुनांचे उस नौजवान ने शेर पढ़ा, मैंने कहा–"लाहौलवला कूवत !" लेकिन मैंने अभी पूरी पढ़ी भी नहीं थी कि, उस नौजवान ने वहीं दुहरे होकर मुझे आदाब-त शुरू कर दिये । नतीजा यह हुआ कि, लोग यह समझे कि, मैंने उसके शेर की की; इसलिए उन्होंने भी उस जाहिल पर वाहवाही के डोंगरे बरसाने शुरू कर दिये

यह सूरत देखकर मैंने जरा जोर से लाहौल पढ़ी; मगर उस जाहि और ज्यादा झुककर और ज्यादा जोश के साथ आदाब-तस्लीम शुरू कर दी पर मुझे बड़ा गुस्सा आया और मैंने ज्यादा जोर लगाकर लाहौल पढ़ी; मगर फिर वही हरकत की और इस बार उसे इतनी दाद मिली कि, छतें उड़ आखिर मैं तंग आकर खामोश हो गया ।

अब उसने दूसरा शेर पढ़ा; लेकिन यह पहले से भी गया-गुजरा था मैंने गला फाड़कर कहा–"लाहौलवला कूवत !" मगर उस खबीस ने फिर वही हरक और लोगों ने गलतफहमी में आकर उसे खूब दाद दी । आखिर थक बिल्कुल ही चुप होकर बैठ गया और वह नौजवान अपने हर शेर पर धूम कर चला गया और चलते वक्त एक और कयामत तोड़ गया । गजल करके मेरी तरफ मुड़ा और बोला–"बस जिगर साहब, हार गये !" –जिगर मुरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी न भूलूँ

मैं किसी कार्यवश बम्बई गयी थी। लौटते वक्त मैंने बच्चों के लिए एक मोटरनुमा तीन पहिये की साइकिल खरीद ली। सामान कुछ ज्यादा था, अतः तुलवाकर महसूल चुका देना आवश्यक था। लेकिन सम्बंधित रेलवे क्लर्क ने बच्चों की गाड़ी के लिए एतराज उठाया कि, वह बगैर लकड़ी के कटघरे में बंद किये नहीं रखी जा सकेगी। मैंने उसे बहुतेरा समझाया कि, अब इतना समय नहीं है कि, मैं इसे वापस ले जाकर पेटी में बंद करा सकूँ। उसे कुछ प्रलोभन भी दिया; परंतु वह न माना।

अंत में क्लर्क से पूछा—"आपके यहाँ छोटे बच्चे हैं?" उसने कुछ हैरानी से कहा—"हाँ, लेकिन आप यह सब क्यों पूछ रही हैं?"

मैंने कहा—"यदि ऐसा है, तो यह गाड़ी आप अपने बच्चों को ही दे दें। मुझे संतोष हो जायेगा कि, मेरे बच्चे न सही, आपके बच्चे ही खुश हो गये।" वह क्षण-भर चुप रहा, फिर बोला—"बहन, आपसे हमारा कानून भी नहीं जीत सकता। आप बिस्तर से दरी निकाल दीजिये।" जब तक मैं दरी निकालूँ, वह थोड़ी-सी रस्सी ले आया और साइकिल को दरी में लपेटकर रस्सी से कस दिया। इसके बाद उसने लगेज करके रसीद काट दी। मैंने कृतज्ञतावश उसे दो रुपये देने चाहे; परंतु उसने सिर हिलाकर मुँह फेर लिया।

—तारा, जबलपुर

०००

दुकान के काउंटर पर मैंने डेढ़ रुपये के बिल के साथ पाँच रुपये का नोट दिया था; परंतु कैशियर ने मुझे साढ़े आठ रुपये लौटाये। जब मैंने पाँच रुपये वापस दिये, तो वह बड़ी कृतज्ञता से हाथ मिलाते हुए बोला—"आप-जैसे ग्राहक कितने होते हैं?" इससे मुझे पाँच साल पहले की एक घटना और भर्तृहरि के एक श्लोक की स्मृति हो आयी।

घटना यों थी। मैं तब बेकार था और किसी ने लेन-देन में मुझे दस का एक ऐसा नोट दे दिया था, जिसका एक पार्श्व बैंगनी रंग का था और दूसरा हरा। बाद में पता चला, वह जाली नोट है। मैंने बड़े धड़कते दिल से उसे एक होटल में चलाया। बिल का भुगतान करके मैं तीर की तरह निकल गया था होटल से।

और भर्तृहरि के श्लोक का अर्थ है:

"तंगी के दिनों में जो आदमी अंजुल-भर जौ के लिए तरसता है, वही सम्पन्न होने पर धरती और उसके वैभव को तृणवत् समझता है। अतः वस्तुओं का मूल्य मनुष्य की आर्थिक अवस्था के अनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक या कम होता रहता है।"

—विष्णुप्रसाद, बम्बई

०००

बारिश के दिन थे। हमने घर के छप्पर की मरम्मत के लिए एक मिस्त्री को बुलाया। वह छप्पर के खपरों को उतार-कर बाँस को काड़ों से बाँध रहा था। काम की अधिकता और तल्लीनता में मिस्त्री कुछ ऐसा खोया कि, जल्दी-जल्दी में उसने रस्सी के साथ एक मरा साँप भी बाँध दिया और छप्पर की मरम्मत करके नीचे उतर आया। कुछ दिन बाद, उसी मिस्त्री को फिर मरम्मत के लिए बुलाया गया। तब उसने देखा कि रस्सी के साथ तो एक साँप बँधा है, जो अब मर चुका है। उसे खयाल आया कि, हो न हो यह साँप उसी ने बाँधा होगा। फिर वह हमसे कहने लगा—"बाबू, रस्सी बाँधते वक्त इस साँप ने मुझे जरूर काटा होगा और मेरे बदन में इसका जहर भी फैल गया होगा," यह कहते-कहते वह डर के मारे जमीन पर कूद पड़ा और उसकी वहीं मृत्यु हो गयी। झूठा भय व डर कितना घातक सिद्ध हो सकता है, यह मुझे उस दिन मालूम पड़ा।

—चिंतामणि श्रीवास्तव, कवर्धा

०००

हमारे गाँव में एक खेत के लिए दो व्यक्तियों में मुकदमेबाजी शुरू हो गयी। मैंने जिस व्यक्ति का पक्ष लिया था, उसकी ओर से कालीसिंह नाम के एक बड़े सीधे-सादे किसान गवाही देने के लिए नियुक्त किये गये थे। गवाही पहले वकील ने उन्हें सब कुछ बुझाकर सिखा-पढ़ा दिया था।

नियत तारीख को कचहरी में गवाहों के बयान के बाद कालीसिंह नम्बर आया। वकील ने उन्हें जैसे सिखाया था, उहोंने ठीक वैसे गवाही दे दी। उनकी गवाही से हम को पूरा विश्वास हो गया कि, अब दमा जरूर जीत जायेंगे। लेकिन जब कालीसिंह की गवाही समाप्त हो गयी, तो स्ट्रेट के सामने ही विपक्षी दल के एक ने उनसे कहा-"अरे कालीसिंह, मैं समझता था कि, तुम इतने साधु होकर कचहरी में कसम खाकर प्रकार झूठ बोलोगे!"

उस व्यक्ति की बात सुनते ही कालीसिंह झट बोल पड़े—"अरे भाई, क बदले की बात है। आप लोग झूठ बो तो क्या मैं नहीं बोलूँगा?"

कालीसिंह की इस अंतिम बात से दमे का सारा परिणाम उल्टा हो और हम लोग हार गये।

—गोविंदजी, इलाह

०००

गाँव के प्राइमरी स्कूल की मास्ट मुझे और भी ज्यादा आलसी बना था। कभी-कभी मैं अपनी इस कमजो खीझ भी उठता था। एक बार जाड़ रात थी। ९ बजे होंगे। मेरे पड़ौस की बूढ़ी औरत ठिठुरती हुई आयी और बो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मास्टरजी, तुमऔ राम भली करै तक मेरा रमुआ ।"

अपई साइकिल लैके सैर से कऊके डाँकधर को बुला लाऊ । हमए रमुआ कौ जी अच्छौ नानै । गरे में जुज्जौर से घर्र-घर्र होवे लगी ऐ ।"

मैंने बिस्तर में लेटे-ही-लेटे कहा—"ताई, तू तो नाहक परेशान है । आजकल मौसम कुछ तीखा है न, इसलिए रमुआ को सर्दी लग गयी होगी । उसे अच्छी तरह ढककर सुला दे, सुबह तक तबीयत ठीक हो जायेगी।"

वह बेचारी निराश लौट गयी ।

शहर कोई नहीं गया, जाता भी कौन ? दूसरे दिन सुबह ९ बजते ही वृद्धा पुनः मेरे पास आयी और गिड़-गिड़ाती हुई बोली—"मास्टर जी, डाँकधर को जल्दी लाऊ । रमुआ की सुआंस भार को कढ़ी जा रईऐ ।"

कहते-कहते उसने मेरे दोनों पैर पकड़ लिये । मैंने वृद्धा को अलग किया और अनमना-सा साइकिल उठाकर शहर की ओर चल दिया । जब मैं डाक्टर को साथ लेकर लौटा, तो देखा—एक आदिवासिन रमुआ की माँ को चुप कराने का असफल प्रयास कर रही थी और वह बूढ़ी चीखें मार-मार कर रो रही थी—"हाय मेरा लाल. . . .

—हरिश्चंद्र भार्गव, शिवपुरी

०००

करीब ९ साल पहले की घटना है । मैं लगातार दो साल तक बीमारी से संघर्ष करता-करता हार मान चुका था । इसी बीच एक दिन अचानक रामेश्वरम् के दो पंडे आये । मेरे घरवाले ऐसे लोगों में बहुत विश्वास करते हैं । अतः मेरी माता-जी झट हाथ जोड़कर पूछ बैठीं—"म्हाराज,म्हारे छोरा के दो साल से तकलीफ होरी है, कोई-न-कोई उपाय बताओ।" थोड़ी देर बाद एक पंडा बोला—"तीन जन्म पूर्व यह बालक क्षत्रिय राजकुमार था । एक दिन यह शिकार खेलते-खेलते घने जंगल में पहुँच गया; किंतु कोई शिकार न मिला। अतः यह एक पेड़ की शीतल छाया में विश्राम करने के लिए बैठ गया । उसी समय इसने कुछ दूर तालाब पर एक गर्भवती गाय को देखा और उसे तीर का निशाना बना डाला। गर्भवती गाय ने अंतिम श्वास छोड़ते हुए शाप दिया कि, मुझे मारकर तू भी सुखी न होगा । इस बालक की यह सारी तकलीफ उसी शाप का परिणाम है ।" मेरे दादाजी ने बड़े करुणभाव से उस पाप

कारुण्य

जयपुर में प्राप्त सत्रहवीं सदी का एक काष्ठशिल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रायश्चित्त का उपाय पूछा। पंडे ने उत्तर दिया –"गोमती के तट पर सवा महीने तक प्रतिदिन एक जौ के आटे की गाय तथा एक शुद्ध घी का दीप दान दिया जाये और सवा लाख गायत्री के जाप किये जायें, तो बालक को पाप से मुक्ति मिल सकती है।" माताजी ने कहा–"महाराज, यह शुभ कार्य आप ही कीजिये," और उन पंडों को घी, आटे व गायत्री के जापों की दक्षिणा दे दी गयी। जाते-जाते उन्होंने कहा–"अभी हमें गोमती तक पहुँचने में एक महीना लगेगा और सवा महीना जाप में लगेगा। इसलिए आपका बालक करीब दो महीने पश्चात् ठीक हो जायेगा।" और वे पंडे ससम्मान विदा हो गये। उन्हीं दिनों मैंने अपने गाँव के एक अनुभवी वैद्य की दवा ली और मैं दो महीने व्यतीत होते-होते ठीक हो गया। लेकिन मेरे घरवालों का आज भी यही विश्वास है कि, पंडों ने जाकर जो जाप किये, मैं उसी से ठीक हुआ।

– श्रीराम चिरानियाँ 'प्रेमी', मुकुंदगढ़

०००

मैं उन दिनों नागपुर मेडिकल कालेज हास्पिटल में था। मुझे किसी कार्यवश सीता-बर्डी जाना था। इसलिए बस पकड़ने के लिए मैं वार्ड से निकला कि, वर्षा प्रारम्भ हो गयी। मैंने सोचा, बस स्टैंड करीब ही तो है, थोड़ा भीगने में कोई हर्ज नहीं। लेकिन वहाँ पहुँचते-पहुँचते बस छूट और मुझे विवश होकर वापस लौ पड़ा। इतनी देर में वर्षा काफी जो होने लगी और मुझे लाचार होकर गे दीवार से सटकर खड़ा होना पड़ा। ही छाता लगाये कई व्यक्ति खड़े थे; उसमें से किसी ने मुझे आश्रय नहीं दि वहीं एक बुढ़िया छाता लगाये फल रही थी। वह एकाएक उठकर मेरे पास और कहने लगी–"बेटा, भीग रहे हो, यह छाता लगा लो।" मैंने कहा–"माँ, तरह तो तुम भीगने लगोगी और तुम्हें लग जायेगी।" तब उसने वात्सल्य-स्वरों में कहा–"मैं तो जिंदगी की आ मंजिल पर हूँ, आज नहीं तो कल य जाना ही है मुझे। पर बेटा, तुम अभी हो। तुम्हारे मन में अभी बहुत-से अ होंगे। न जाने कितनी आशा-भरी टिकी होंगी तुम पर। इसलिए तु देखभाल जरूरी है।" कुछ रुकक फिर बोली–"मैं देख रही थी कि, सारे मनुष्य खड़े हैं, जो सब भाई ही कोई तो पसीजेगा; लेकिन ओह! दुनिया कितनी बदल गयी। खैर बेटा, तुम खुद छाता लगा लो, मेरा हाथ पहुँचता," और मैंने श्रद्धा-विभोर हो लगा लिया।

–सुमंतकुमार मिश्र

कृपण से बढ़कर दानी कोई नहीं। वह बिना हाथ लगाये ही अपना धन दूसरों को दे जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेल्लोर की संजीवनी
आइडा स्कडर

एक करुण अनुभूति की कसक को जनताप-निवारण के बृहत् आयोजन का रूप दे देनेवाली कर्तृत्वमयी ललना की पावन जीवनी।

डा० अब्राहम पाल

आजकल पढ़े-लिखे डाक्टर देहात में काम करने से भय खाते हैं। उनका तर्क है कि, आधुनिक चिकित्सा के लिए आवश्यक साधन वहाँ उपलब्ध नहीं हैं। परंतु डा० आइडा एस० स्कडर ने जिन अभावों व साधनहीन परिस्थितियों के बीच रहकर दक्षिण भारत के ग्रामों में चिकित्सा-कार्य किया, वह आश्चर्यजनक होने के साथ ही प्रेरणादायी भी है।

लाड़-प्यार में पली, सात भाइयों की अकेली बहन, माँ-बाप के आँखों की पुतली, तरुणी आइडा ने कभी विचार नहीं किया था कि, उसका जीवन इस प्रकार बीतेगा। वैसे स्कडर-परिवार ने ईसाई धर्म-प्रचारकों के रूप में भारतीय जनजीवन को ही अपना सेवा-क्षेत्र चुना। और आज यह अमरीकी स्कडर-परिवार भारतीय जीवन का ही अंग बन चला है।

आइडा का बाल्यकाल सुख और वैभव में बीता। दुबली-पतली आइडा उस समय रुआँसी हो जाती, जब उसके भाई उसे 'दुबली-दुबली' कहकर चिढ़ाया करते थे। प्रारम्भ में आइडा की रुचि धर्म-प्रचार, सेवा-कार्य आदि की ओर तनिक भी न थी। न वह डाक्टर ही बनना चाहती थी। अपने चाचा के पास वह अमरीका में शिक्षा ग्रहण कर रही थी और चाहती थी कि, उसका जीवन सुख और वैभव में बीते।

माँ की बीमारी का तार पाकर वह भारत आयी और यहाँ एक रात को घटी घटना ने उसके सारे जीवन-क्रम को ही मोड़ दिया। टिंडिवनम् में उन दिनों एक भी अस्पताल नहीं था और न आस-पास कहीं चिकित्सा की सुविधा थी। उस रात एक मुसलमान, एक ब्राह्मण और एक उच्च सवर्ण हिन्दू उसके पिता के पास आये। वे ईसाई मिशनरी के तौर पर ग्रामों में चिकित्सा-कार्य भी किया करते थे। ये लोग उनसे सहायता लेने आये थे।

प्रसव-वेदना से तीनों की पत्नियाँ परेशान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थीं। डाक्टर तैयार हो गये साथ चलने को। पर एक नयी समस्या उठ खड़ी हुई। चाहे उनकी पत्नियाँ प्रसव-वेदना से छटपटाकर मर ही क्यों न जायें, वे पुरुष डाक्टर से कदापि यह काम लेने को तैयार नहीं थे। सेवाभावी स्कडर अब क्या करें? उनकी बीमार पत्नी उठ-बैठ भी नहीं सकती थी। वह कैसे यह काम कर सकेगी? एकाएक आइडा पर उनकी निगाहें ठहर गयीं। चिकित्सा तथा प्रसूति-ज्ञान में कोरी आइडा भला क्या कर सकती थी! तीनों पुरुष निराश लौट गये। आइडा रात-भर भगवान् से प्रार्थना करती रही। इसके अतिरिक्त वह उस समय और कर भी क्या सकती थी। सुबह ही उसने रोने-पीटने की आवाजें सुनीं। तीनों औरतें चिकित्सा व सहायता के अभाव में मर गयीं। और यहीं आइडा ने एक दृढ़ संकल्प किया—वह डाक्टरी पढ़कर भारत आयेगी और यहीं दीन-दुखियों की सेवा को अपना परम कर्तव्य मानेगी।

मिस स्कडर
जिनकी पहली बरसी इस मास मनायी जा रही है।

वह वापस अमरीका लौट गयी और डाक्टरी पास करके जल्दी ही भारत लौट आयी। १ जनवरी, १९०० को उसने अपना कार्य आरम्भ किया। उसे आशा थी कि, डाक्टर पिता की सहायता से वह शीघ्र ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल होगी। परंतु पाँच माह बाद अचानक ही उसके पि की मृत्यु हो गयी।

यह वज्राघात भी आइडा को अप मार्ग से विचलित नहीं कर सका। आँ पोंछकर वह अपने काम में जुट गयी। छोटे-से कमरे में अत्यल्प साधनों चिकित्सालय खोल लिया। और इ कोठरी में दो साल में पाँच हजार रोगि का उपचार किया।

प्लेग की बीमारी फै हुई थी। न कोई सहायक, परिचारिकाएँ, न समुचि औजार और न पूरे साध ही। फिर भी आइडा छोटी-से-छोटी शल्य-क्रिया लेकर पेट तक के आपरेश किये। रसोइये की पत्नी उसने ट्रेंड कर लिया। वह परिचारिका थी और कम्पा उंडर भी।

सड़क के किनारे खड़े इ छोट-से अस्पताल की ओ लोगों का ध्यान गया। एक अमरीक सज्जन से आर्थिक सहायता पाकर १९ में उस कोठरी का कायाकल्प किया ग और चालीस शय्याओंवाला अस्पता खड़ा हो गया।

परंतु आइडा का लक्ष्य केवल चिकित्स करना ही तो नहीं था। उसके मन में बार बार यह विचार चक्कर काटता था कि, आज हूँ और कल पिताजी की तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक मर भी सकती हैं। तब सारा किया-कराया चौपट हो जायेगा। इसलिए १९०७ में उसने नर्सों के लिए ट्रेनिंग स्कूल व कम्पाउंडरों के लिए प्रशिक्षणशाला खोल दी।

इसके बाद उसने अगला कदम उठाया। क्या महिला-चिकित्सकों की शिक्षा की व्यवस्था नहीं की जा सकती ? प्रमुख सर्जन ने इसके लिए स्वीकृति तो दे दी; परंतु इतना और कहा कि, उसे यदि तीन महिलाओं के नाम भी भरती के लिए मिल जायेंगे, तो आश्चर्य की बात होगी। परंतु घोषणा करने की देर थी, डेढ़ सौ से भी अधिक महिला उम्मीदवारों ने भरती के लिए आवेदन किया और दूसरे वर्ष आवेदन देनेवालों की संख्या दुगुनी हो गयी।

इस कालेज की हालत भी अजीब थी। किराये का मकान था। टिन के शेड में शल्य-क्रिया-कक्ष था। महिलाओं को रसायन-शास्त्र के लेक्चर सुनने के लिए पुरुषों के कालेज में जाना पड़ता था। एक ब्रिटिश अधिकारी ने तो यहाँ तक कह डाला कि, ऐसी सूरत में एक भी लड़की पास नहीं होगी।

परंतु आइडा हताश न हुई। वह स्वयं प्राणिशास्त्र पढ़ाने लगी। १४ युवतियाँ फाइनल परीक्षा में बैठीं, जिनमें सभी पास हुईं और चार प्रथम आयीं।

इसके बाद आइडा व उसकी योजनाओं को तिरस्कृत करना असम्भव था। तोट्टपालयम में शीघ्र एक बड़े अस्पताल की शानदार इमारत खड़ी हो चली। १९३२ में आइडा के प्रयत्नों के फलस्वरूप वेल्लोर में एक नये मेडिकल कालेज ने जन्म लिया। आइडा का यह कालेज आज देश के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा-कालेजों में प्रमुख है और कुष्ठ रोग के उपचार और मस्तिष्क की शल्य-चिकित्सा का समूचे एशिया में सबसे बड़ा केंद्र है।

देश-विदेश के विख्यात एवं सेवा-भावी चिकित्सकों से सम्पर्क साधकर आइडा ने उन्हें अपने यहाँ आने की प्रेरणा दी। उसकी एक अंतरंग सहेली जी० डोड भी अमरीका से वेल्लोर चली आयी और आइडा के कामों में हाथ बँटाने लगी। दोनों एक ही जीवट की थी और शीघ्र उन दोनों की संयुक्त कीर्ति 'स्को-डोड' के नाम से फैलने लगी।

२४ मई, १९६० को ९० वर्ष की परिपक्व वय में आइडा का देहोत्सर्ग हो गया। परंतु मृत्यु के समय वे प्रसन्न थीं; क्योंकि उनका सपना साकार रूप ग्रहण कर चुका था। उन्होंने जो नन्हा-सा पौधा लगाया था, वह अब विशाल वट-वृक्ष हो चुका था विश्व-विख्यात वेल्लोर मेडिकल कालेज के रूप में।

फ्लारेंस नाइटिंगेल की तरह ही इस अदम्य साहसी महिला ने अपने सतत परिश्रम, लगन व तप से सेवा-कार्यों की जो ज्योति प्रज्वलित की, उसके लिए भारत सदा उसका ऋणी रहेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ भैंसे, मुझे मार

मगरों से भरी नदी और वन्य भसों से भरे जंगल में एकाकी अफ्रीकी युवक का पराक्रम।

पीटर एनवाया

जिस कबीले में मैं जन्मा, उसका नेतृत्व मेरे परिवार में ही बना रहे, इसी चिंता में मैं घुला जा रहा था। वैसे हम मसाई लोगों की एक विशेषता यह है कि, हम जीवन में शौर्य, पराक्रम व साहस को सर्वाधिक महत्व देते हैं। मेरे पिताजी ने अपनी युवावस्था में एक नहीं, दसों जंगली बिल्लियों को भाले की नोकों पर बींध लिया था और उन्हें तब तक संतोष नहीं मिलता था, जब तक कि वे झाड़ी में घुसकर इन बिल्लियों की दुम पकड़ ललकार नहीं लेते।

जंगली बिल्लियों से मेरा तात्पर्य अफ्रीकी शेरों से है। हम अश्वेत अफ्रीकी मसाई इन्हें वास्तव में जंगली बिल्ली ही मानते हैं। अफ्रीकी शेर तो शहरी बिल्ली से भी गया-गुजरा होता है। घिर जाने पर वह कुत्ते की तरह अपनी दुम दबा लेता है। मगर शेरनी! वह तो वास्तव में जीती-जागती मौत होती है। आज भी मेरी बाँयी भुजा पर उसके दाँतों के निशान मौजूद हैं।

सभी जानते हैं कि, जब तक मसाई जंगली शेर को भाले से नहीं मार लेता, वह कबीले का सम्मान्य सदस्य नहीं बन सकता। ऐसे ही शूरवीरों को हमारे कबीले की लड़कियाँ वरती हैं और इन्हीं शूरवीरों को गाँवों में रहने का अधिकार मिलता है।

एक दुर्घटना में हाथी का शिकार करते समय मेरे पिताजी की मृत्यु हो गयी। तब तक न मेरा विवाह हो पाया था और न मैंने एक भी जंगली बिल्ली का शिकार किया था। मैं चाहता तो इन जंगली बिल्लियों को मारकर ढेर लगा सकता था; क्योंकि मुझे एक गोरे शिकारी ने रायफल व कारतूस भी भेंट में दे दिये थे। परंतु मसाई कबीला गोली व तीर से मारे गये शिकार को महत्व नहीं देता और जब तक भाले की नोंक पर हिंसक जानवर को नहीं झुला लिया जाये, युवक अपने पुरुषार्थ को समाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नजरों में सिद्ध नहीं कर सकता ।

भाले से शेर के शिकार की चर्चा तो बाद में करूँगा; परंतु इन्हीं दिनों मुझे जिस दुर्घटना में उलझना पड़ा और उसमें मैं किस तरह मरते-मरते बचा, इसकी चर्चा पहले कर देना चाहता हूँ । क्योंकि इसी घटना ने मुझे गाँव का मुखिया बना डाला। और कबीले की सर्वोत्तम सुंदरी ने अपन बाहुपाश से मुझे बाँध लिया ।

उन दिनों गाँव के पास के खेतों में मकई की फसल लहलहा रही थी । दूर-दूर तक फैले खेत और उनके बीच बसे हमारे घरौंदों एवं आस-पास के वातावरण में फसल की सोंधी महक उठ रही थी । मैं तथा तीन अन्य मसाई युवक एक पहाड़ी के शिखर से खेतों की रखवाली भी कर रहे थे और साथ-साथ नये शिकार की योजना भी बना रहे थे । नदी की तलहटी तक फैले खेतों की हरियाली ऐसी लग रही थी, मानो दूर-दूर तक हरी घास की चटाई बिछी हो । मैं नदी-तट के किनारे-किनारे फैले इन खेतों को देख-देखकर पुलकित हो रहा था कि, अचानक मुझे काले-काले से कुछ धब्बे नजर आए । मैंने पहले तो सोचा शायद तेज धूप के कारण चकाचौंध होगी । परंतु जब दुबारा देखने पर भी वे धब्बे यथावत् दिखाई दिये, तो संदेह की कहीं गुंजायश नहीं रही । दाल में काला जरूर था । बस यही पता चलाना शेष रह गया कि, वे जंगली भैंसे हैं या हाथी ।

मेरे तीनों साथी चौकन्ने हो गये । रात-दिन मर-पचकर उपार्जित खेती को क्या हम जंगली जानवरों को चर लेने देते ! एक किलकारी मारकर हम चारों तीर की तरह नदी की तलहटी की ओर दौड़ पड़े । निकट पहुँचते ही हमारा रहा-सहा संदेह दूर हो गया । विशालकाय जंगली भैंसों की टोली दो ओर से खेतों में घुस आयी थी ।

जंगली भैंसे यदि टोली में हों, तो अधिक खतरनाक नहीं होते हैं । क्योंकि तब वे

अफ्रीकी सिंह-दम्पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने व्यक्तित्व का विचार खोकर दब्बू बन जाते हैं। और तीन-चार आदमी उन्हें आसानी से खदेड़ सकते हैं। हाँ तो, भैंसों को हाँकते हुए हम बहुत दूर निकल गये। मेरे तीन साथी उन्हें एक ओर से खदेड़ रहे थे और मैं नदी की ओर उन्हें भगा रहा था।

भैंसों की टोली में भगदड़ मच गयी थी। तितर-बितर होकर वे नदी की ओर बढ़ रहे थे; पानी में तैरकर उस पार उतर रहे थे। साथी पीछे रह गये थे। न जाने किस प्रेरणा से मैं अधिक उत्साहित होकर इनके पीछे-पीछे नदी में कूद पड़ा। सोचा-रोज-रोज के इस झंझट से छुटकारा पाने के लिए क्यों न इन्हें खूब दूर के जंगल में खदेड़ दिया जाये।

नदी में कूदने की देर ही थी कि, मेरे पीछे से दो-तीन भैंसे भी धार में उतर गये। मेरी स्थिति अजीब हो गयी। तीनों ओर से भैंसों से घिरा मैं बीच में तैर रहा था। अचानक ही सामने मुझे लकड़ी की तरह की काली-काली चीज तैरती नजर आयी। मैंने उसे भैंसे की पूँछ समझा और सहारे के लिए पकड़ने को हाथ बढ़ा दिया। तत्काल एक तेज झटका लगा, मानो मेरी बाँह पर किसी ने तलवार का वार कर दिया हो। हाथ में झूलता भाला पानी में छपाक-से गिर गया। दर्द से मैं तिलमिला उठा। तैरना दूर रहा, मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। मैं नीचे डूबने लगा। दो-तीन सेकेंड तक यही स्थिति रही होगी। पर होश सम्भालकर मैंने ऊपर उठने को हाथ-पैर मारे। पानी की सतह पर आ ही मेरा सिर एक भैंस के पेट से टकराया मैंने फिर नीचे डुबकी ले ली।

ऐसी घड़ियों में मानसिक संतुलन खो देने का क्या परिणाम होता है, यह मैं जीवन की पाठशाला में अच्छी तरह सीख चुका था। घायल बाँह से खून बहने लगा था मैंने पानी में और गहरी डुबकी ली। तली में पड़े भाले का फल चमक रहा था। एक हाथ से उठाकर मैंने उसे मुँह में दबा लिया और तेजी से पानी चीरता हुआ पीछे की ओर निकला। अब भैंसे मेरे आगे थे और मैं उनके पीछे था।

एक बार तो मैंने सोचा– लौट जाऊँ परंतु अब तक नदी का किनारा काफी पीछे हट चुका था और न इतना लम्बा तैरने का ही साहस था। हारकर आगे-आगे बढ़ता रहा। भैंसे बाहर निकल रहे थे। दूसरे किनारे का छिछला पानी आ गया था। एक हाथ तो वैसे ही मेरा बेकार हो चला था। फिर भी मैं पैर जमा कर खड़ा हो गया। पानी मुश्किल से कमर तक होगा।

अब जो मैंने अपने चोट खाये हाथ की ओर देखा, तो ऐसा मालूम हुआ कि, मानो तेज दराँते से वार किया गया था। सिर अभी तक भन्ना रहा था। मैं किनारे पर जाने के बजाय, पानी में ही खड़े होकर दम लेने लगा। एक हाथ से तैरने के कारण काफी थक चुका था। भैंसों की टोली किनारे लग चुकी थी। केवल एक भैंसा पीछे रह गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

था। वह मुझसे अधिक-से-अधिक बीस गज दूर होगा। अचानक मुझे पानी में कूदने की आवाज आयी। यह खतरे की सूचना थी। खतरा भी छोटा-मोटा नहीं बहुत बड़ा। पलक मारते ही किनारे के भैंसे हवा हो गये और सामने का तट खाली हो चला। मैं जान चुका था कि, खतरा कहाँ है और मुझे किधर निकलना चाहिये।

जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाकर मैं तट की रेती पर आ पहुँचा। अब जो पलटकर देखता हूँ, तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं। दो विशालकाय घड़ियाल एक भैंसे के चारों ओर चक्कर काट रहे थ। उनकी थूथन व शरीर का अधिकांश भाग पानी के बाहर निकला हुआ था।

आम तौर पर मगर या घड़ियाल शिकार की ताक में पहले से रहते हैं और एकाकी होने पर ही घात करते हैं। उन्हें किसी बड़े जानवर को घेरने का साहस नहीं होता। परंतु इस बार नर और मादा घड़ियाल ने जिस साहस के साथ भैंसे को घेरा, वह आश्चर्यजनक था। कुछ देर के लिए मैं भी अपने घावों को भूल गया और सारा दृश्य देखने को उत्सुक हो चला। जीवन में ऐसे बहुत कम अवसर मिल पाते हैं, जब इन वन-पशुओं का द्वंद्व निकट से देखा जा सके। जब हम स्वयं शिकारी होते हैं, तो हमें अधिक सतर्कता बरतनी पड़ती है। परंतु तटस्थ दर्शक के तौर पर हमें वन्य पशुओं के आक्रमण व बचाव के सभी तरीके देखने का अवसर मिल जाता है।

मुझे तो ऐसा लगा कि, घड़ियाल और भैंसे शिकार की टोह में थे कि, भैंसे पानी में कूद पड़े। शायद अपने शिकार की घेराबंदी करते समय मैंने जिसे भैंसे की दुम समझकर पकड़ना चाहा था, वह घड़ियाल की थूथन ही रही हो।

तट पर से मैंने देखा, दो घड़ियालों में से एक पानी में डुबकी ले चुका था। किनारा काफी नजदीक आ गया था और वे भैंसे को आगे बढ़ने नहीं देना चाहते थे। देखते-देखते दूसरा घड़ियाल भी डूब गया। भैंसा भयाक्रांत होकर रम्भाया और फिर पानी में पीछे की ओर घिसटने लगा। एकाएक एक घड़ियाल ऊपर उठ आया और उसने अपनी पूँछ से भैंसे के कसकर सात-आठ झपट्टे मारे। भैंसे की सारी पीठ लहू-लोहान हो उठी।

मगर वह भी जंगली भैंसा था। एका-एक उसकी चीखें क्रोध की हुँकारों में बदल गयीं और खिंचकर वह नदी की रेती तक उठ आया। दोनों घड़ियाल अभी तक उसकी टाँगों से चिपटे हुए थे। पर रेती पर आकर भी भैंसा अपना संतुलन न बना पाया और भहरा कर गिर गया। घड़ियाल घसीटकर उसे एक-डेढ़ फुट गहरे पानी में ले जा रहे थे। दोनों घड़ियाल पूँछों से प्रबल चोटें भी कर रहे थे।

तभी न जाने कैसे एक घड़ियाल के मुँह से भैंसे की टाँग छूट गयी और वह किट-किटाकर पुनः टाँग पकड़ने को लपका। परंतु भैंसा भी सम्भल कर बैठ गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक घड़ियाल ने उछलकर अपना खुला जबड़ा भैंसे की गर्दन की ओर बढ़ा दिया और उसके पैने दाँत गर्दन के गोश्त में गड़ गये।

भैंसा रेत की ओर लौटने की कोशिश कर रहा था। मैंने अनुभव किया कि, भैंसे को अगर थोड़ा-सा सहारा मिल जाये, तो वह इन घड़ियालों से डटकर मुकाबला कर लेगा। तीनों प्राणी अपने ही संघर्ष में इस तरह उलझे हुए थे कि, मेरी उपस्थिति को बिल्कुल भुला बैठे। मैंने एक दुस्साहस भरा काम कर डाला। अब सोचता हूँ, तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि, मैंने क्या कर डाला।

भैंसे की गर्दन से झूलते हुए घड़ियाल के पेट की मुलायम त्वचा मेरी ओर थी। मैंने आव देखा न ताव, अपना भाला खींच-कर घड़ियाल के पेट में भोंक दिया। सात इंच चौड़ा फल उसकी गर्दन के बीच में से होकर आर-पार हो चला था, और दर्द-नाक तड़प के साथ घड़ियाल ने भैंसे की गर्दन छोड़ दी। भाला घड़ियाल के बदन में ही रह गया और वह खून से लथपथ अपनी पूँछ से खड़े भाले पर प्रहार करने लगा। रह-रह कर वह अपनी लम्बी पूँछ से भाले की लकड़ी पर वार करता। अंत में पूँछ की गति शिथिल हो चली तथा वह पूर्ण निश्चेष्ट हो चला। आ[illegible] खतरे की सूचना दूसरे घड़ियाल को [illegible] मिल चुकी थी और वह भी भैंसे को छोड़[illegible] छपाक के साथ पानी में भाग [illegible] और वहीं से थूथनी निकालकर भैंसे [illegible] देखने लगा।

मुक्ति पाकर लहू-लोहान भैंसा [illegible] खड़ा हुआ। मैं मरे घड़ियाल के पेट में [illegible] अपना भाला खींच रहा था। तभी भैं[illegible] दौड़कर एक झाड़ी में छिप गया। यहीं मैं[illegible] शिकारी जीवन की सबसे बड़ी भूल कर दी। मुझे जब इसका पता चला, तब तक [illegible] जमीन सूँघ रहा था।

भैंसा हमेशा आक्रमण करने के पहले भागकर छिप जाता है। फिर दौड़कर अपने सिर की टक्कर मारकर प्रतिद्वंद्वी को धराशायी कर देता है। यहाँ भी यही हुआ।

घड़ियालों की खीज उसने मुझ पर आक्रमण करके उतारी।

मृत घड़ियाल के पेट में से खींचकर मैंने भाला निकाल लिया और जब तक सम्भला, तब तक उस घायल भैंसे ने लपककर मुझे

नदी-तट पर आराम करता हुआ मगर

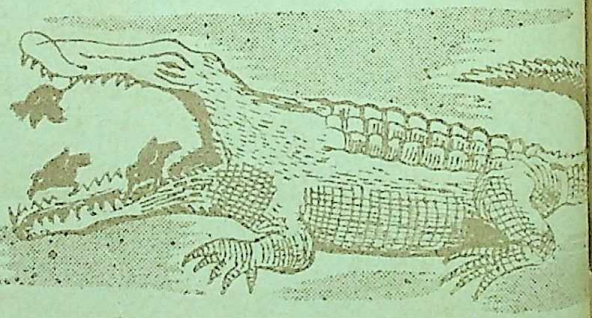

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टक्कर मार ही दी। मैं जमीन से ऊपर गेंद की तरह उछाल दिया गया और कोई दस फुट दूर एक झाड़ी में गिरा। चोट इतनी कसकर लगी कि, मेरी जांघों से खून चूने लगा था। निचला भाग इस कदर बेकार हो चला कि, मानो लकवा हो गया हो। तीव्र वेदना से शरीर टूटा जा रहा था। ऐसा लगा कि, अंतिम समय आ गया। फिर भी शरीर में चेतना शेष थी और भाला हाथ में था।

भैंसे ने फिर दूसरी बार टक्कर मारी, मैंने आँखें मूँद ली। मृत्यु आ ही चुकी थी। फिर भी न जाने किस प्रेरणा से मैंने भाला तानकर भैंसे के पेट में भोंक दिया। तब भी टक्कर नहीं रुकी और मैं एक बार फिर हवा में उछाल दिया गया।

दो दिन बाद जब मेरी बेहोशी टूटी, तो मैंने अपने को एक खेमे में पाया। मेरे सारे शरीर पर पट्टियाँ बंधी हुई थीं। मेरे 'कैम्प काट' के पास डेक चेयर पर एक आदमी बैठा हुआ था। थोड़ी देर तक देखने पर मैं उसे पहचान गया। वह मेरे गाँव से पचीस मील की दूरी पर स्थित धर्मार्थ अस्पताल का डच मिशनरी डाक्टर था। एक पखवारे के उपचार के बाद मैं जब बोलने लायक हुआ, तो मुझे बताया गया कि, किसी मरीज को देखने के लिए नदी में किश्ती से जाते समय डाक्टर और उसके मसाई सहायकों ने मुझे एक झाड़ी में पड़े हुए पाया और चारों ओर मँडराते हुए गिद्धों का भोजन बनने से बाल-बाल बचा लिया।

डाक्टर से जब मैंने विदाई ली, तब उसने खेमे के एक कोने में रखे जंगली भैंसे के सींगों की ओर इशारा करते हुए कहा—"अपना विजयोपहार नहीं ले जाओगे?" मैंने कृतज्ञतापूर्वक कहा—"नहीं डाक्टर साहब, यह मेरा प्रेमोपहार है आपको।"

*

एक बहुत पुराना महल देखने के लिए कई यात्री आये थे। बूढ़ा गाइड उन्हें महत्वपूर्ण चीजें दिखा रहा था। एक कमरे में पहुँचकर बूढ़े ने यात्रियों से कहा—"इस कमरे में रानी खाना खा रही थीं कि, शहद की मक्खी ने उन्हें काट खाया और उनकी मृत्यु हो गयी।" एक बूढ़ा यात्री बोला—"मगर पिछले साल जब मैं आया था, तो तुमने इस घटना का स्थान वह बगलवाला कमरा बताया था!" गाइड बोला—"जी हाँ, आजकल उस कमरे की मरम्मत हो रही है।"

*

पागलखाने में नया डाक्टर आया था। उससे पहली बार बात करते हुए एक पागल ने कहा—"पिछले डाक्टर के मुकाबले में आप हमें ज्यादा पसंद हैं। वह तो जैसे कोई बाहर के आदमी थे; लेकिन आपको देखकर ऐसा लगता है कि, आप हमीं लोगों में से एक हैं।"

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दुर्लभ विभूति

तेजमलजी

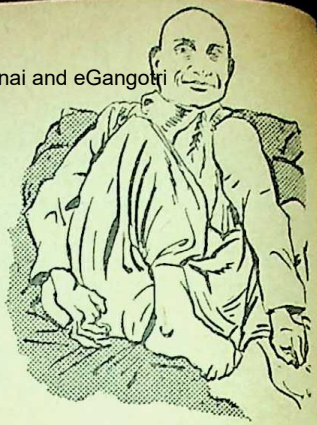

जिसे प्रकृति की क्रूरता ने आत्माविलम्बी जीवन के सब साधनों से वंचित कर दिया है, वह समाज पर बोझ न बनने का संकल्प कर धीरता से उसका निभाव करे—यह क्या कम समाज-सेवा है ?

अमरचंद शुक्ल

राजस्थान के पश्चिम में जैसलमेर एक ऐतिहासिक नगर है। वहाँ 'पटवों की हवेली' से पूर्व की ओर एक गली गढ़ीसर तालाब को जाती है। इसी गली में हवेलीसे कोई दो सौ गज दूर जाने पर एक जगह गली के दोनों तरफ चबूतरों पर छोटे-छोटे बच्चे पाटी-पोथी लिये पढते नजर आयेंगे। बीच-बीच में बच्चों के बढ़ते हुए शोरगुल के बीच एकाएक आपको एक डाँटती हुई आवाज़ सुनाई देगी, जिसे सुन सारे बच्चे सहमकर चुप हो जायेंगे।

आप आश्चर्य करेंगे कि, आवाज कहाँ से आयी; क्योंकि आपको वहाँ कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देगा। हाँ, इधर-उधर नजर दौड़ाने पर आपको एक कोने में एक खटिया दिखाई देगी। अगर ध्यान से देखेंगे तो आपको उसपर दीख पड़ेगा एक छोटा-सा हाथ-भर लम्बा मानव शरीर—या कहिये—मानव-शरीर का आभास मात्र। एकाएक आपको अनुमान भी नहीं होगा कि खटिया पर कोई लेटा हुआ है।

यही मानव इस छोटी-सी पाठशाला का संस्थापक, संचालक, मुख्याध्यापक, सहाध्यापक सब-कुछ है।

बच्चे समय पर आते और पढ़कर चले जाते हैं। लेकिन गुरुजी दिन-रात, बारहों मास वहीं अपनी उसी खटिया पर पड़े रहते हैं। बच्चे ही पाठशाला की सफाई और देखभाल करते हैं। पानी भरते हैं। यही नहीं; वे गुरुजी को भी सम्भालते हैं। सवेरे गुरुजी की खटिया को कमरे के बाहर लाकर रख देते हैं, दिन-भर पढ़कर घर लौटते हुए फिर खटिया को भीतर रख जाते हैं। वे ही ढाबे से दोनों समय थाली ले आते हैं।

छात्रों से इतनी सेवा लेकर भी गुरुजी उनके अहसानों से दब नहीं जाते। आदत से लाचार बच्चे जब कुछ ज्यादा शोर करने लगते हैं, तो गुरुजी खटिया पर पडे-पड़े ही जोर की एक हाँक लगाते हैं, हाथ में छड़ी लेकर हवा में घुमाते हैं, कसूरवार को बुलाकर यथोचित दंड भी देते हैं और यह सब खटिया पर पड़े-पड़े ही होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही क्रम आज बत्तीस वर्षों से चल रहा है। जमाना बदल गया, सरकार पलट गयी; लेकिन 'लूलिया मास्टर साहब' और उनकी 'पोशाल' आज भी बदस्तूर कायम हैं।

शारीरिक असमर्थताओं पर संकल्प शक्ति की विजय का यह प्रतीक है—श्री तेजमल कोठारी, जिनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि, प्रत्येक व्यक्ति स्वावलम्बन द्वारा समाज को कुछ-न-कुछ दे सकता है।

तेजमलजी का जन्म जैसलमेर के एक सम्पन्न माहेश्वरी वणिक-परिवार में हुआ। किंतु दुर्भाग्य से एक वर्ष की अवस्था में ही वे पितृस्नेह से वंचित हो गये और आठ वर्ष बाद स्नेहमयी माता भी स्वर्ग सिधार गयी। व्यापार में भी घाटा लग गया और रिश्तेदारों ने बचे-खुचे नकद आदि का बटवारा कर बेचारे बालक को घर से अलग कर दिया।

जैसे यही काफी नहीं था। बारह वर्ष की आयु में उन्हें एक असाध्य रोग लग गया। मुँह पीला पड़ गया। हाथ-पाँव सूखकर और सारे जोड़ मुड़-सिकुड़कर शरीर केवल दो-ढ़ाई फुट रह गया और वजन रह गया दस-बारह सेर। सदा के लिए खटिया की शरण लेनी पड़ी। बिना सहारे के उठना-चलना भी असम्भव हो गया।

रही सहारे की बात। वह उनकी पत्नी थी। जिन रिश्तेदारों ने अबोध-असहाय बालक के हिस्से की सम्पत्ति हजम करने में संकोच नहीं किया, उन्होंने कुल की मर्यादा के नाम पर बारह वर्ष के रोगी बालक का विवाह एक कन्या से कर दिया। बात यह थी कि पिता के जीवन-काल में ही सगाई हो चुकी थी और अब यदि लड़की की शादी अन्यत्र हो तो बिरादरी में उस घराने की बदनामी होती।

उस अबोध बाला ने पति की दिन-रात सेवा की। परंतु तेजमलजी की तो और भी कठिन परीक्षा होनी थी। सात-आठ वर्ष के बाद पत्नी भी चल बसी और वे रह गये—असहाय, अपंग और एकाकी। सगे-सम्बंधियों तक ने हाथ हटा लिये।

परंतु इससे भी विकट समस्या थी जीविकोपार्जन की। विकट इसलिए कि, तेजमलजी में स्वाभिमान और कुल-गौरव का भाव अत्यंत तीव्र था। सेठ का बेटा और जाति का माहेश्वरी सेठ होकर किसी के दान पर कैसे जीवन निर्वाह करता। उन्होंने अपने आपसे कहा—"मैं माहेश्वरी सेठ हूँ। कहीं भी किसी भी हालत में भूखों नहीं मर सकता। अपना पेट तो भर ही लूँगा और वह भी गौरवपूर्वक। हाथी मरे तो भी हजार का होता है। मैं तो जीवित हूँ। मुझे किसी की दया-माया की जरूरत नहीं। मैं किसी पर बोझ बनकर नहीं रहूँगा।"

और इस संकल्प ने उनकी 'पोशाल' को जन्म दिया। तेजमलजी 'मास्टर' हो गये। बत्तीस वर्ष से उनकी पोशाल चल रही है। सैकड़ों छात्र उनसे विद्या प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर चुके हैं। उनकी अध्यापन-कला बेशक पुराने ढर्रे की है; पर उनकी पढ़ाई बिल्कुल पक्की और ठोस होती है। उनके शिष्य पट्टी-पहाड़ों और हिसाब के ऐसे पक्के होते हैं कि, गणित के बड़े-बड़े सवाल सेकेंडों में हल कर देते हैं। उनके शिष्यों में से कई व्यापार में चमके हैं तो कई ऊँचे सरकारी ओहदों पर हैं।

परंतु शिक्षा-विषयक मान्यताओं और दृष्टिकोण में जो परिवर्तन सर्वत्र हो रहा है, उसका असर उनकी 'पोशाल' पर भी पड़ने लगा है। पहले जहाँ साठ-पैंसठ विद्यार्थी हुआ करते थे, वहाँ अब दस-बारह ही रह गये हैं। इसलिए एक रुपया प्रति विद्यार्थी के हिसाब से मिलनेवाले शुल्क की राशि भी बहुत घट गयी है। हो सकता है, विद्यार्थियों का आना बंद ही हो जाये। तेजमलजी जो अब बावन वर्ष पार कर चुके हैं, इससे चिंतित हैं।

परंतु दान पर, दूसरों की दया पर, न जीने का उनका संकल्प आज भी वैसा ही अडिग है, जैसा आज से बत्तीस वर्ष पूर्व था। हाँ, वैसे मेरा अनुमान है कि सरकार, जो जनता की ही प्रतिनिधि है, कर्त्तव्य मानकर यदि उनकी जीविका के लिए कुछ आर्थिक व्यवस्था कर दे, तो तेजमलजी को अस्वीकार नहीं होगा, फिर भी वे इसके लिए स्वयं हाथ न फैलायेंगे।

★

एक दिन एक अँग्रेज ने एक स्काट से पूछा—"क्या तुम जानते हो, गधे और स्काट में क्या फर्क होता है?"

"नहीं तो।"

"स्काट लालची होता है, जबकि गधा निःस्वार्थ होता है।"

थोड़ी देर बाद स्काट ने उस अँग्रेज से पूछा—"और गधे व अँग्रेज में क्या फर्क होता है, बता सकते हो?"

कुछ देर सोचकर अँग्रेज ने कहा—"मैं नहीं जानता।"

स्काट ने कहा—"और मैं भी उन दोनों में किसी तरह का फर्क नहीं जान पाया हूँ।"

★

पादरी न शराबी से कहा—"देखो भाई, शराब प्राणघातक शत्रु है।"

"हाँ, साहब मैं जानता हूँ," शराबी ने उत्तर दिया और कहा—"लेकिन गत रविवार को तो आपने ही कहा था कि, शत्रु से भी प्रेम करना चाहिये।"

★

नर्स : डाक्टर, आपने डथ-सर्टिफिकेट पर तो सही भी नहीं की है।

डाक्टर : क्या कहती हो? देखती नहीं, नीचे हस्ताक्षर कर तो रखे हैं।

नर्स : यह सही तो आपने मरने का कारण बतानेवाले खाने में की है!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकड़े का जाल

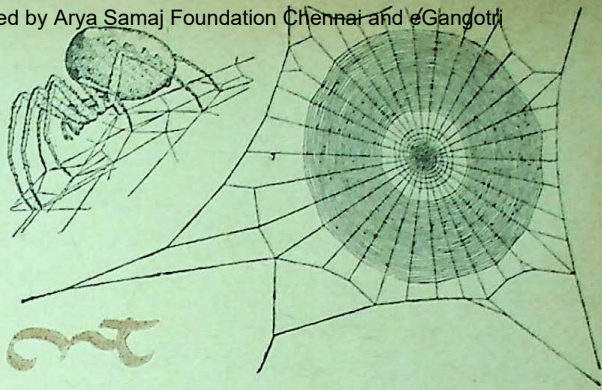

ब्रह्म से ब्रह्मांड के निःसृत होने की रहस्यमय प्रक्रिया को समझाने के लिए उपनिषत्कारों ने मकड़े से जाल की उत्पत्ति की उपमा दी थी। यहाँ जाल की उत्पत्ति की जीवशास्त्रीय प्रक्रिया समझायी गयी है।

थियोडोर ए० सेवोरी

एक चीनी कवि का यह कथन कि, जीवन रेशम की डोर से झूल रहा है, मकड़े के विषय में शतशः सत्य है। मकड़े का बच्चा रेशमी धागे पर ही पाँव रख विश्व में पदार्पण करता है। जाल से ही वह कीट-पतंग फँसाकर भोजन प्राप्त करता है और खतरा उपस्थित होने पर रेशमी तागे के सहारे ही सुरक्षित स्थान में पहुँच जाता है। सहवास के समय भी पुरुष मकड़ा अपना शुक्र एक विशेष रेशमी जाल पर ही डाल देता है और जब वह मरता है, तब रेशमी कफन से ही आच्छादित होता है।

वैसे तो कुछ अन्य जीव भी रेशम का निर्माण करते हैं; परंतु वे मकड़े की तरह उसका पूर्ण उपयोग नहीं कर पाते। मकड़े ने इसमें उस्तादी हासिल कर पूरे विश्व में अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा है।

मकड़ों की लगभग ४० हजार जातियाँ ज्ञात हैं। उनमें से कुछ ऐसे भी हैं, जो रेशम का जाल नहीं भी बनाते। अतः उनके शिकार करने के तरीके अलग ही हैं। उदाहरणार्थ भेड़िया-जाति का मकड़ा पीछा करके, और कर्कट जाति का मकड़ा छापा मारकर अपने शिकार को दबोच लेता है।

अधिकांश मकड़े भोजन-प्राप्ति के लिए जाल पर निर्भर रहते हैं। जाल की रचना अत्यंत जटिल होती है। तनिक-सा जोर किसी तंतु पर पड़ते ही वह झन्ना उठता है। और मकड़े की स्पर्श-शक्ति इतनी तीव्र होती है कि, कम्पन की गति से ही इस बात का पता पा लेता है कि, कब शिकार ने जाले में प्रवेश किया या कब मादा मकड़ी उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकड़ी के तीन स्पिनरेट अर्थात् रेशम के तंतु का निर्माण करनेवाले अवयव

उपस्थित हुई ।

मकड़ा अपने पेट में स्थित एक कताई-तंतु की बैटरी से रेशम निःसृत करता है । वह अपने पीछे तागा बनाता चलता है और उसे थोड़ी-थोड़ी दूर पर जमीन से चिपका देता है । इधर-उधर तने हुए ये रेशमी तागे-से घने जाल का रूप धारण कर लेते हैं । कुछ मकड़े अपने बिलों को रेशमी टचूब से ढँक देते हैं ।

मकड़ी की जाल-निर्माण-विद्या भी क्रमशः विकसित हुई होगी । शायद पहले जाल जमीन पर बिछे रहते थे, जैसे आज भी शिकारियों के जाल जमीन पर बिछे रहते हैं । चट्टानों और पेड़ों के तनेवाले जाल अधिक सफल हुए; अतः ऊँचे ढालुए स्थानों पर रहनेवाले मकड़े भी नीचे की ओर सरकने लगे । और जाल भी अधिक सुडौल न रहकर नीचे की ओर लटकने तथा खूब विस्तृत होने लगे । चौड़ी झालरों से न केवल जीवों को पकड़ने की सम्भावना बढ़ गयी; बल्कि शत्रुओं के आगमन की पूर्व सूचना भी मिलने लगी । झूलनेवाला जाल ही आज सर्वव्यापक है । घरेलू मकड़ा (टेगेनेरिया) इसी शिल्प का व्यवहार करता है ।

'एजेलेनोप्सिस' नामक मकड़ा जमीन पर बड़ा ही सीधा-सादा दोलायमान जाल बनाता है । शिशु एजेलेना भी ऐसा ही करता है; परंतु जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे-वैसे वह शत्रुओं से बचने के लिए झाड़ियों में ऊँचा चढ़ता जाता है ।

अंतरिक्षीय जाल और भूमिस्थ जाल के रचना-विधान में फर्क केवल इतना होता है कि, पहले को तान रखनेवाले धारक तागे ऊपरी चद्दर को निचली की अपेक्षा अधिक स्थिर रखते हैं । धारक तागों का भी एक लाभ है; क्योंकि उड़ते हुए कीट-पतंग उनसे टकराकर चद्दर पर गिर पड़ते हैं । शायद इसी कारण धारक तागों की संख्या अधिक बढ़ गयी और आधुनिक जाल का युग शुरू हुआ ।

'एजेलेनाइडा' मकड़े अपने जाल ऊँचे स्थानों पर बुनते हैं; अतः उन्होंने रेशमी टचूब को कायम रखा है । 'लिनिफाइडा' ने टचूब का परित्याग कर दिया है । 'लिनिफाइडा' का परिवार बड़ा है । इस जाति के मकड़े इतनी बारीक रेशम उत्पन्न करते हैं कि, उसे केवल प्रातःकाल ही देखा जा

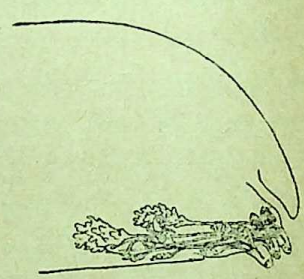

मकड़ी की वह ग्रंथि, जो रेशम का रूप धारण करनेवाला लेस उत्पन्न करती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता है, जब ओस के नन्हे-नन्हे कण उसके अस्तित्व का पता बता देते हैं।

'लिनिफाइडा' परिवार के कुछ सदस्य, कुछ छोटे मकड़े, काल 'एरिगोनिना' या 'मनी स्पाइडर' जमीन पर अपने जाल बनाते हैं। अतः वे धारक तागों का परित्याग कर केवल चादर से ही काम चला लेते हैं।

इसके सर्वथा विपरीत उसी परिवार के 'थोरिडाइडा' ने धारक तागों को कायम रखकर चादर का परित्याग कर दिया है; क्योंकि वह झाड़ियों में ऊँचाई पर जाल बनाता है। 'एरिगोनिना' ने मिट्टी से मेल खानेवाला काला रंग अपनाया है, तो 'थोरिडाइडा' ने चमकीले फूलों का रंग धारण किया है। 'थोरिडाइडा' का जाल बेडौल और अव्यवस्थित होने के बावजूद सुव्यवस्थित जाल से कम उपयोगी नहीं है।

'थोरिडाइडा' जाति के कुछ मकड़े, झाड़ियों में ऊँचाई पर जाल बुनते हैं, तो दूसरे जमीन से बहुत निकट अपने जाल बुनते हैं।

जमीन के निकट जाल बनानेवाले मकड़ों ने एक नया और दिलचस्प आविष्कार किया है। उनके जाल में जमीन से ऊपर कुछ लम्बवत् तागे लटके रहते हैं, जिसमें से हरएक के निचले सिरे पर एक लसलसा पदार्थ लगा होता है। गोल जाल के मंडलाकार तागों पर भी इसी प्रकार का एक पदार्थ पाया जाता है।

परिस्थिति, मौसम और मकड़े की उम्र के अनुसार एक ही जाति के मकड़ों के जालों में भी अंतर पाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो किसी जाल का आकार अंशतः मकड़े की तात्कालिक परिस्थितियों पर आधारित होता है।

सन १९३८ में पोलैंड के वैज्ञानिक ई० पेट्रुसेक्विजोन ने सिद्ध किया कि, अगर मकड़े को पैदा होते ही ऐसे स्थान में रख दिया जाये, जहाँ उसे बिना जाल बुने ही भोजन मिल जाये और बड़ा होने पर किसी खुले स्थान में छोड़ दिया जाये, तो वह पहले प्रयास में ही सर्वांगपूर्ण जाल बना लेता है। सारांश यह कि, अगर मकड़ा जाल बुननेवाली जाति का है, तो वह शुरू में ही वैसा जाल बना देता है, जैसा उसकी जाति-बिरादरी के भाई जीवन-भर के अनुभव के बाद बनाते हैं।

प्रकृति-निरीक्षकों के मत में अमरीकी 'अल्लेवीराका' जाति के मकड़े का जाल असाधारण होता है। इसे गोल जाल और दोलायमान जाल का समन्वित रूप कहा जा सकता है।

'उलेसानिस क्वाइड्रेटम' नामक मकड़े के जाल की बनावट अत्यंत सरल होती है। इसमें पृथ्वी के समानांतर एक ही लम्बा तागा तना होता है, जिस पर एक लसलसा पदार्थ लगा होता है। वस्तुतः मकड़े का जाल मनुष्य के लिए जितना ही आश्चर्यकारक है, उतना ही समस्यापूर्ण भी है। उसे समझना टेढ़ी खीर है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालिदास ने कहा था–"पुरानी होने मात्र से कोई वस्तु अच्छी और नयी होने मात्र से बुरी नहीं हो जाती।" चित्रकार कुमारिल की दृष्टि में सत्य का एक और भी पहलू है, वह यह कि, पुरानी होने मात्र से कोई वस्तु त्याज्य और नयी होने मात्र से ग्राह्य नहीं हो जाती।

प्राणमय परम्परा के उपासक

मोहन किशोर

भारतीय चित्रकला के पुनर्जागरण आंदोलन के अगुआ कलाकारों में कुमारिल स्वामी का विशिष्ट स्थान है। उनकी रेखाओं के सौष्ठव, रंगों के अद्भुत संमिश्रण और अभिव्यक्ति की मौलिक चारुता ने भारतीय चित्रकला की विशेषताओं को बड़े प्रांजल रूप में प्रस्तुत किया है।

प्राकृतिक सौंदर्य, पर्वतारोहण, बुद्ध-जीवन की घटनाएँ और जातक-कथाएँ कुमारिल के प्रिय विषय हैं। उनकी कला सादगी और सरलता के लिए बहुप्रशंसित है। उनकी कला मौलिक है। उन पर किसी देशी-विदेशी वाद या स्कूल के अंधानुकरण का अभियोग नहीं लगाया जा सकता।

गांधीजी का सामीप्य, बौद्ध साहित्य का विस्तृत अध्ययन एवं शांतिनिकेतन का वातावरण–इस त्रिवेणी ने उनकी आत्मा में भारतीय संस्कृति की अखंड लौ प्रदीप्त कर दी है।

चित्रों में बहुविस्तार के पक्षपाती नहीं हैं कुमारिलजी। वे सीधे चित्र के प्रमुख विषय को ही मुखरित करते हैं। वे हल्के रंगों के पक्षपाती हैं। उनके विचार में गहरे, चटक, शोख रंग भाव को ढँक देते हैं, जिससे कला का वास्तविक कलेवर नष्ट हो जाता है। वे मानते हैं कि, जीवन जितना रेखाओं में चमकता है, उतना रंगों में नहीं। शांत भाव के पोषक कपोताभ और धूम्रच्छाय रंगों का प्रयोग उनके चित्रों की विशे-

प्रकृति-सौंदर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

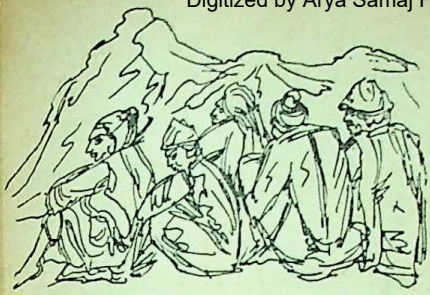

विश्राम

पता है। इस दृष्टि से कुमारिल स्वामी और विनायक मासोजी के चित्रों में कुछ समानता है।

कुमारिल स्वामी ने चित्रकला की विभिन्न शैलियों और भित्तिचित्र-प्रणाली के अभ्यास के साथ ही चित्रकला के उप-योग-पक्ष पर भी ध्यान दिया है। चमड़े के काम के लिए उन्होंने सुंदर डिजाइन बनाये हैं; रंगीन काठ-खुदाई के जापानी शिल्प का भी अभ्यास किया है।

अपनी संवेदना द्वारा कुमारिल ने प्रकृति और जीवन दोनों को अपने अंतर में घोल लिया है। इसी कारण हमें उनकी कला में एक सजीवता और मोहकता मिलती है। 'हिमालय में कलाकार यात्रियों का दल' तथा 'यात्री-दल' नामक चित्र उनके पर्वत-चित्रण के सुंदर उदाहरण हैं। इन चित्रों की संयत रंग-योजना तो उल्लेख्य है ही, रेखांकन भी मार्के का है। यद्यपि इनमें बारीक रेखाओं द्वारा विचित्रण यथेष्ट मात्रा में किया गया है, तथापि वह कहीं अखरता नहीं है।

पर्वत-यात्रा में जहाँ प्रकृति के सौंदर्य ने उन्हें आकर्षित किया, वहीं पर्वत-वासियों की दरिद्रता ने द्रवीभूत भी। वहाँ के कुलियों को भारी बोझ उठाते देख वे रो उठे। इसी पीड़ा को उन्होंने 'नेपाल के कुली' नामक चित्र का रूप दे अमर कर दिया है।

परंतु श्रम-जनित स्वेद बिंदुओं के सौंदर्य को भी उन्होंने समझा है। 'राँधना' शीर्षक स्केच में किसी सुकुमारी के सुंदर शरीर के कमनीय अंकन के साथ श्रम का जो चित्रण उन्होंने किया है, वह कितना मार्मिक और गौरवपूर्ण है!

'वसंताभरण' चित्र का स्थान कुमारिल की कलासृष्टि में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आचार्य नंदलाल वसु को यह चित्र इतना पसंद आया कि, उन्होंने इसे शांतिनिकेतन के कलाभवन में सादर स्थान दिया।

स्वावलम्बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी रचनाओं में नयेपन के प्रयोग
स्त्री' विशेष उल्लेखनीय है । इसमें एक
स्त्री चट्टान पर कमर टेके लेटी हुई है ।
चित्र में केवल उसका पृष्ठभाग दिखाई
पड़ता है । मगर चित्र पर दृष्टि पड़ते ही
यह अनुभूति हो जाती है कि, स्त्री किसी
की याद में खोकर प्रकृति के साथ एकात्म
हो गयी है । वातावरण इतना रोमांटिक है
कि, सुधबुध खो जाना स्वाभाविक है ।

उनके सभी चित्र टेम्परा में हैं; किंतु
वाश के कुछ चित्र, जिनमें भगवान् बुद्ध
के दो-तीन प्रमुख चित्र हैं, रंगों की दृष्टि
से सजीव एवं आकर्षक हैं । उनका विचार
है कि, मौसम के हिसाब से हमारे देश में
तैल-चित्रों की आवश्यकता नहीं ।

प्रकृति हो या आकृति—उसका चित्रांकन
कुमारिल बहुधा नीरव रात्रियों में करते
हैं । दिन में तो वे राजधानी के एक कोने
से दूसरे तक अनुभूति ग्रहण करने के लिए
भ्रमण करते मिलते हैं ।

ऐसे ही एक दिन सामना होने पर मैंने
उनसे प्रश्न किया—"पुराने कलाचार्यों की
तरह आज के आधुनिकतावादी कलाकार
अपनी कृतियों से मुग्ध नहीं कर पाते ।
आपकी दृष्टि में इसका कारण क्या है ?"
कुमारिल ने उत्तर में कहा—"आधुनिक
रंग-रेखाओं में प्रायः कला की आत्मा नहीं
अपितु उसका ढाँचा ही रहता है । आज के
कलाकारों में ईमानदारी नहीं है । अति-
यथार्थवादी कलाकारों की कृतियाँ उल-
झन-भरी होती हैं; उनमें कोई तत्त्व नहीं
होता, सार नहीं होता । आधुनिक क
फूहड़पन है, जिसे मैं ज्वराक्रांत अ
लक्षण कहता हूँ ।"

आधुनिक कला के सम्बंध में वे लंद
रायल एकेडमी आव आर्ट्स के अध्यक्ष
चार्ल्स ह्वीलर के इस कथन से सहम
"आज तो चिम्पाजी भी यदि पट पर तू
फेर दे, तो उसे उत्तम कलाकृति मा
विचार किया जाने लगता है ।"

इसका यह अर्थ नहीं कि, कुमारिल
प्रयोग और नयी दृष्टि के विरोधी
वे मानते हैं—"कला की चेतना और प्र
के लिए नये प्रयोग और नये उपक्रम
श्यक हैं; परंतु नयेपन के लिए ही
पन के पीछे भागना ठीक नहीं ।"

यूरोप की नयी कला के अंधानुकर
उन्हें आधुनिकता नहीं दिखाई देती ।
वे आधुनिकता के पुजारियों के इस
को स्वीकार करते हैं कि, आज की
स्याओं और प्रवृत्तियों की अभिव्य
केवल आधुनिक कला ही कर सकती
क्योंकि उनकी राय में "क्यूबिज्म, फ
इम्प्रेशनिज्म और सर्रियलिज्म के समर्थ
और उपासकों ने जो चित्रांकन किया
वह भारतीय जनजीवन से बहुत दूर
पड़ा है ।"

और ये विचार अतीत के मोह
बौद्धिक व्याख्या-भर नहीं है । इ
प्रमाण यह है कि, उनकी कला अवरुद्ध
हुई है, प्राकृतिक झरने की तरह
प्रवहमान है ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान की राहें

१. पानी पर चलना :

पानी पर चलने के जूते का निर्माण अमरीका में हो जाने से अब करामाती योगियों का महत्व शायद कम हो जायेगा। ये नये जूते रेशेदार काँच और प्लास्टिक के बने हैं और साढ़े पाँच फुट लम्बे हैं। एक-एक जूता वजन में सात पौंड होता है। इन्हें पहनकर २५० पौंड वजन का आदमी पानी पर उसी तरह चल सकता है, जिस तरह स्कीइंग में मनुष्य बर्फ पर चलता है।

२. जंग से रक्षा :

जंग लगने से प्रति वर्ष हमारे देश में लगभग एक सौ करोड़ रुपये के लोहे-इस्पात का नुकसान होता है और कल-कारखानों में मशीनों को जंग से बचाना बड़ी उद्योग-तंत्रीय समस्या है। अब तक इसके लिए डाइसाइक्लो-हैक्सिल अमोनियम नाइट्रेट और साइक्लो-हैक्सिल-अमीन कार्बोनेट जैसे रासायनिक पदार्थ उपयोग में लाये जाते हैं। ये महँगे भी पड़ते हैं और भारत की जलवायु में उतने कारगर भी नहीं होते। कारैकुडी (मद्रास) के केंद्रीय विद्युत्-रासायनिक अनुसंधान संस्थान ने पता लगाया है कि, यदि मशीनों को मेटा-डाइनाइट्रो बेंजीन और बीटा-नेप्थाल की भाप से घिरा रखा जाये, तो जंग लगने का डर नहीं रहता। ये पदार्थ सस्ते पड़ते हैं। इनके उपयोग से तेल और ग्रीज का खर्च भी बच जाता है।

३. पिस्टन-वाल्व के बिना इंजन :

जर्मनी का वेंकेल माडल मोटर इंजन छोटी कारों के लिए बड़ा उपयोगी होगा। इसकी विशेषता यह है, कि इसमें न वाल्व है, न पिस्टन; केवल घूमनेवाले हिस्से हैं। अतः यह कम जगह घेरता है। इसमें एक चक्कर के साथ एक विस्फोट (एक्सप्लोजन) होता है।

४. जेबी फ्लैश यूनिट :

कैमरामैन अब भारी फ्लैश-यूनिट को लादे फिरने से बच जायेंगे। गारसिया कारपोरेशन, न्यूयार्क द्वारा निर्मित नये जेबी फ्लैश-यूनिट में तीन प्रकार के फ्लैश बल्ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी के जूते पहनकर मछली का शिकार

काम में लाये जा सकते हैं और उसका रिफ्लेक्टर पाँच दिशाओं में घुमाया जा सकता है। यूनिट में चेकिंग वल्व, बैटरी, सरक्यूट, वल्व इजेक्टर, एक्सपोजर-मापक और सब प्रकार के कैमरों में काम देनेवाला काम्बिनेशन शटर कार्ड—सभी कुछ है। फिर भी यूनिट की ऊँचाई साढ़े चार इंच और वजन छः औंस है।

५. धूप से चलनेवाला रेडियो :

धूप की बैटरी से जगमगानेवाला समुद्री प्रकाशस्तम्भ बनाने के बाद अब जापान ने धूप से चलनेवाला ट्रान्सिस्टर रेडियो बनाया है। हयाकावा इलेक्ट्रिक कम्पनी द्वारा निर्मित इस रेडियो में सिलिकान की पतली पट्टी का उपयोग किया गया है। अभी इस रेडियो में एक खराबी है। वह केवल धूप में काम करता है।

६. खुदबीन के नीचे शल्य-क्रिया :

हृद्रोगों से पीड़ित नवजात शिशुओं आपरेशन करना प्रायः इसलिए असम्भ होता है कि, उनकी रक्तवाहिनियाँ अ सूक्ष्म होती हैं। प्रायः कई मास या कई तक बच्चों को तकलीफ सहते रहना प है। डा० जैकबसन (इलिनाय्स, अमरीक ने नया प्रयोग करके एक सरल हल स्थित किया है। आपरेशन-टेबल पर से १२ इंच की ऊँचाई पर सूक्ष्मदर्शक (मैग्निफाइंग ग्लास) लगा दिया जाता जिससे नीचे के अवयव चालीस बड़े आकार में दीखते हैं।

७. प्राचीनतम मनुष्य :

टांगानीका की प्रसिद्ध ओल्डुवाइ में दो अधूरे मानव-कंकाल मिले हैं- अधेड़ व्यक्ति का, दूसरा एक बालक उनकी खोज करनेवाले विद्वान् लुई लीकी कथन है, कि ये पीकिंग-मानव और जा मानव से कम-से-कम १,००,००० प्राचीन हैं। पीकिंग और जावा-मानव तक प्राप्त प्राचीनतम मानव अवशेष थे वे ५,००,००० वर्ष पुराने समझे जाते

★

वास्तविकता—स्वप्न = पशु-जीवन।
वास्तविकता+स्वप्न = एक हृद्रोग, जिसे आदर्शवाद कहते हैं।
वास्तविकता+विनोद = यथार्थवाद, जिसे रूढ़िवाद भी कहते हैं।
स्वप्न—विनोद = कट्टरता।
स्वप्न+विनोद = कल्पना।
वास्तविकता+स्वप्न+विनोद = विवेक।

—लिन यतांग

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बई से दिल्ली, हरिद्वार, ऋषिकेश-यात्रा की
कुछ टेढ़ी-सीधी, खरी-खोटी बातें

स० का० वि०

फूल भी बबूले भी

पिछले दिनों एक महीने का अवकाश लेकर मैं जब दिल्ली के लिए रवाना हुआ तो, होंठों पर बच्चन की कविता का यह पद तैर रहा था :

"यह समय का भार फेंक उतार, फिर से फूल चुन ।"

सोचा था, अवकाश में फूल चुनूँगा; लेकिन वापस आया, तो काँटों की गठरी बाँध लाया । मीठे अनुभव कम मिले, कड़वे अधिक ।

शुरू में ही मूड बिगड़ गया । डीलक्स ट्रेन की बड़ी शोहरत सुनी थी । रूप-सिंगार देखकर दिल में गुदगुदी भी हुई । लेकिन एकाध घंटे के बाद ही मन ऊब गया । अनुभव होने लगा कि, गाड़ी चल नहीं रही, खड़ी है । न तो पहियों की खड़-खड़ सुनाई देती थी, न इंजन की छक-छक, न गर्द न गुबार; जैसे किसी बेजान चीज को रस्सी बाँधकर घसीटा जा रहा हो, ऐसी बेबसी, निष्क्रिय परवशता महसूस होने लगी ।

डिब्बे में ऐसी मुर्दनी छायी थी । सब यात्री कुर्सी के सहारे ठोड़ी उठाये ऐसे बैठे थे, मानो हजामत के लिए हज्जाम का इंतजार कर रहे हों ।

सीटें कुछ उत्तराभिमुख थीं, कुछ दक्षिणाभिमुख । इस दिशा-भेद का हेतु रहस्यमय ही रहा ।

सीटों के मध्य में एक दो-तीन फुट चौड़ा मार्ग छूटा हुआ था । आधे से अधिक यात्री उसी 'कारिडार' में मटरगश्ती करने लगे, मानो वह सैरगाह हो । इन पर्यटकों की नुकीली कुहनियों के आघात-प्रत्याघात से सिर छलनी हो गया । ब्रह्मरंध्र तक इन आघातों का प्रभाव पहुँचता था ।

—०—

२२ घंटों की तपस्या के बाद दिल्ली के दर्शन हुए । दर्शन तो हर दो साल बाद होते ही हैं, लेकिन इस बार ही मैंने अनुभव किया कि, दिल्ली बदल गयी है । दिल्ली का दिल बदल गया है ।

कभी दिल्ली बादशाहों की दिल्ली थी, फिर अँग्रेज हाकिमों की हुई, अब वह सरकारी मुलाजिमों की होकर रह गयी है । ये मलाजिम ही आज के शासक हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु-जीवन की कुछ कल्पित झाँकियाँ एक प्राचीन मिस्री चित्रकार की नजरों में।

अँग्रेजों के जमाने में ये स्वभावतः लोभी मुलाजिम अँग्रेजों के हाथ की कठपुतली बनकर खेलते थे; स्वराज्य के बाद अपनी सरकार इनके हाथ की कठपुतली बनकर खेल रही है। मुलाजिम हाकिम बन गये और हाकिम मुलाजिमों के पक्ष-पोषक मात्र रह गये। सचिवों का काम केवल मुलाज़िमों के कुकृत्यों पर लोकसभा में परदे डालना रह गया है।

आज हमारी दिल्ली की सभ्यता भी वही है, जो इन हाकिम बने मुलजिमों की सभ्यता है।

मैं कई दफ्तरों में गया। सब जगह एक ही दृश्य देखा। अफसरों की कुर्सी खाली थी। कर्मचारी केवल अपने 'प्रमोशन' की योजना पर विचार-विनिमय करते दिखाई रहे थे।

बाद में कुछ अफसरों से भी भेंट हुई। ५५ से ऊपर की आयुवालों को एक्स्टेन्शन (परिवर्धित कार्यावधि) की चिंता में ग्रस्त पाया और ५५ से कमवालों को सीनियारिटी के नियमों पर परिचर्चा में व्यस्त पाया।

—०—

इन दिनों दिल्ली में अनेक संस्थाओं की चर्चा थी। लेकिन सबसे ज्यादा चस्पी 'आल इंडिया तवायफ कान्फ में ली गयी। तवायफों की माँग भी मानुकल ही है। उन्हें भी कलाकार जाये और उनके कला-प्रदर्शन के लि रेडियो का द्वार खोल दिया जाये, ही चाहती हैं वे। रेडियो-अधिकारी भी माँग का समर्थन ही करते हैं, लेकिन यह द्वार खुला नहीं है।

दिल्ली का चिड़ियाघर दिल्ली शोभा के अनुकूल ही है। अफ्रीका के शेरों की शान निराली है। लेकिन उ उदर-पूर्ति के लिए हम प्रतिदिन कि निरीह बकरों की बलि चढ़ाते हैं, यह कर मनुष्य की बर्बरता पर मन वि से भर जाता है।

—०—

दिल्ली से हरिद्वार दूर नहीं। ४ घं गंगा-तट पर पहुँच गया। होटल में प के कमरे में बम्बई के एक सेठ सधर्मपत्नी ठहरे हुए थे। पुण्य-संचयार्थ उन्होंने ब्राह्म भोज का आयोजन किया। भोज तो तै हो गया था, मगर ब्राह्मण नहीं मिल थे। मैंने सोचा—ब्राह्मण होता, तो आज भोजन-व्यय बच जाता। बम्बई के पापों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदरगाह में बंद घंटे

बेरुत के लोक-जीवन की कई विचित्रताओं को प्रस्तुत करनेवाला एक रोचक यात्रा-प्रसंग।

कुदरतुल्लाह शहाब

तीसरे रोज सवेरे ही बेरुत का साहिल नजर आने लगा। जहाज के बंदरगाह में दाखिल होते ही हमें सबसे पहले जो चीज नजर आयी, वह लोगों की भीड़ थी। वे किनारे पर खड़े जोर-जोर से चीख रहे थे। उनके हाथों और गर्दनों के खौफनाक इशारे उनकी आवाज का बराबर साथ दे रहे थे। दूर से ऐसा लगता था, जैसे बलवा हो रहा हो। पास पहुँचकर ऐसा लगा, जैसे लोग गुस्से में जहाजवालों को गालियाँ दे रहे हों। कुछ देर बाद यह भेद खुला और पता चला कि, ये बंदरगाह के कुली हैं और आने-जानेवालों को अपनी खिदमत पेश कर रहे हैं।

साहिल पर जगह-जगह सुर्ख टोपियाँ दिखाई देती थीं, जिनपर तेल की चिकनाहट और मैल दूर से दिखाई देते थे। कपड़े भी मैले-कुचैले और फटे-पुराने थे। ये पुलिस सिपाही थे। ये सिपाही गर्मी की वजह से अपनी 'यूनिफार्म' से उकताये हुए ठेलों या खम्बों का सहारा लिये ऊँघ रहे थे। जब कभी आँख खुलती तो यूँ ही किसी को धक्का देकर या डाँट-डपटकर अपना फर्ज अदा करने की कोशिश कर रहे थे।

जहाज को यहाँ कुछ ही घंटों के लिए रुकना था। मुसाफिरों को बेरुत शहर दिखाने के लिए एक टूरिस्ट एजेंसी ने बहुत-सी टैक्सियों का इंतजाम कर रखा था। जैसी शानदार टैक्सियाँ यहाँ नजर आ रही थीं, वैसी मोटरें शायद यूरोप के बड़े-बड़े शहरों को भी कम ही नसीब होंगी। फोर्ड, ब्यूक और शेवर्ले के नये-नये माडल आये थे। अमरीका के बड़े-बड़े शहरों के बाद बेरुत ही ऐसा शहर है, जिसकी सड़कों पर इतनी नयी अमरीकी गाड़ियाँ चलती हैं।

यूँ भी बेरुत के चेहरे-मोहरे पर कई तरह का इंटरनेशनल रंग चढ़ा हुआ है। जबान और अदब-आदाब में यह शहर फ्रांसीसी है; मोटरों के माडल, बुश-शर्टों के डिजाइन और यूनिवर्सिटी की डिगरियाँ अमरीकी हैं; होटलों के कारोबार और खूबसूरत पहाड़ी जगहों को देखते हुए यह शहर 'मिडिल ईस्ट' का स्विट्जरलैंड है। बेरुत की तफरीहगाहों और नाइट क्लबों को पेरिस की बराबरी का दावा है और वह बिल्कुल ठीक है। बहुत-से अरब शहजादे, जो अपने महलों में शराब नहीं पी सकते, अपने प्राइवेट हवाई जहाजों में यहाँ आते और रात-भर ऐश करके सुबह सूरज निक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लने के पहले [illegible] जाते हैं।

मेरी टैक्सी के ड्राइवर ने बड़े फख्र के साथ मुझे वह होटल भी दिखाया, जिसमें मिस्र के साबिक शाह फारुक की चहेती नर्तकी समीआ जमाल ठहरी हुई थी। होटल के दरवाजे पर समीआ जमाल की एक बड़ी तस्वीर लगी हुई थी, जो अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से बाहर चौक की तरफ देख रही थी, जहाँ एक पुलिस का सिपाही बड़ी होशियारी से ट्रेफिक को कंट्रोल कर रहा था।

टैक्सी-ड्राइवर ने मुझे बताया कि, इस चौक में हर तीस मिनिट के बाद एक-न-एक दुर्घटना होती है। यह भी शायद तीसवाँ ही मिनिट था; क्योंकि हमारी टैक्सी ने अचानक पहले एक राहगीर को और फिर खुद पुलिसमैन को अपनी लपेट में लेने की कोशिश की। राहगीर बेचारा तो कपड़े झाड़कर उठ खड़ा हुआ; मगर पुलिसमैन ने सीटी बजा-बजाकर हमारा पीछा करने की थोड़ी-बहुत कोशिश की। मगर ड्राइवर ने टैक्सी की रफ्तार बढ़ायी और हम साफ निकल गये।

बेरुत की सड़कों पर दुर्घटनाओं का होना कुछ समीआ जमाल की जादू-भरी आँखों के कारण ही नहीं था, बल्कि हम जहाँ कहीं भी जाते, मुझे ऐसा ही लगता, जैसे अब कोई दुर्घटना हुई। खुली सड़कों और गुंजान गलियों में टैक्सी एक ही रफ्तार से भागती जा रही थी और यह रफ्तार शायद ही कभी पैंतीस मील से नीचे जाती थी।

कोट-पतलूनवाले राहगीरों के बीच [illegible] तो टैक्सी बड़े इत्मीनान से हॉर्न बजाकर निकल जाती; लेकिन लम्बे-लम्बे कुर्ते और टखनों तक पहुँचनेवाली अबाओं के बीच ड्राइवर हैरान रह जाता था। कहने लगा—"पतलूनवाले राहगीर की टाँगें दूर से साफ नजर आ जाती हैं और पता चल जाता है कि, वह किधर से किधर को जा रहा है, मगर अबा के नीचे देखकर यह अंदाजा लगाना कठिन है कि, राहगीर आगे की तरफ जा रहा है या पीछे की तरफ!"

अमरीकी यूनिवर्सिटी के पास एक फैशनेबल रेस्टोराँ के पास टैक्सी रोककर ड्राइवर ने मुझे बताया कि, इस होटल में चाय पिये बिना कोई टूरिस्ट बेरुत से वापस नहीं जाता।

रेस्टोराँ में ज्यादातर परदेसी थे। एक नौजवान बैरे ने मुझे चाय लाकर दी। उसकी मूँछें बारीक और तीखी थीं। सफेद वर्दी में वह किसी जासूसी उपन्यास का हीरो लगता था, जो भेस बदलकर किसी गहरे भेद की तलाश में होटल में नौकरी कर रहा हो। चाय की ट्रे मेज पर रखकर वह अदब के साथ मेरे पास खड़ा हो गया और अँग्रेजी में मुझसे बोला—"आप कौन हैं?"

"मैं पाकिस्तानी हूँ।" मैंने जवाब दिया।

"मरहबा, मरहबा।" उसने खुशी से अपने हाथ पर हाथ मलते हुए कहा।

"और आप?" मैंने शिष्टाचार के तौर पर बैरे से पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"मैं मुसलमान हूँ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैरे के इस जवाब ने मुझे चौंका दिया। अरबों के बारे में मशहूर है कि, वे सबसे पहले अरब होते हैं; फिर शामी, इराकी, मिस्री या लुबनानी और इसके बाद में मुसलमान। लेकिन यह नोजवान बैरा न सिर्फ पहले मुसलमान था, बल्कि अपने मुसलमान होने पर खुदा का शुक्र भी अदा कर रहा था।

"मुझे भी मुसलमान होने का फख्र हासिल है।" मैंने कहा।

"अलहमदुलिल्लाह!" (खुदा का शुक्र है), बैरे ने फिर हाथ पर हाथ फेरते हुए कहा—"क्या आपने 'उखवानुल-मुसलिमीन' का नाम सुना है?"

"उखवान को कौन नहीं जानता!" मैंने जवाब दिया।

"मैं भी उखवान में शामिल हूँ।"

"क्या आप पाकिस्तान की 'फारेन सर्विस' में हैं?" बैरे ने अचानक पूछा।

"जी नहीं, आपको यह खयाल क्यों आया?"

"बात यह है कि, मिडिल ईस्ट में जो टूरिस्ट आते हैं, वे आम तौर से सफारतखानों के अफसर होते हैं या गिरजों के पादरी, या उनका वास्ता तेल के कुँओं से होता है।" बैरे के चेहरे पर तीखापन बढ़ गया—"सफारतखानों से वे हमारी हकूमतों पर अपना असर डालते हैं, गिरजों से वे हमारे दीन में दखल देते हैं और तेल के कुँओं से वे हमारे पेट कंट्रोल करते हैं।" फिर उसने कनखियों से इधर-उधर देखा और धीरे-से बोला—"हमें उखवान ऐसे टूरिस्ट पर कड़ी नजर रखते हैं।"

बातों-बातों में बैरे ने मुझे बताया कि, इस रेस्टोराँ का मालिक एक फलस्तीनी ईसाई है और यहाँ काम करनेवाला हर बैरा उसे हर हफ्ते पाँच से दस पौंड तक तनख्वाह देता है।

"बैरा रेस्टोराँ के मालिक को तनख्वाह देता है!" मैंने हैरत से कहा—"यह तो उलटी बात हुई।"

"यहाँ यह बात बिल्कुल सीधी है।" बैरे ने कहा—"हमारा गुजारा बिल्कुल गाहकों की बख्शीश पर है। अमरीकी टूरिस्ट बहुत हैं और वे हमें अच्छी 'टिप' देते हैं। हमें अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा मालिक की भेंट करना होता है।"

चाय खत्म करके मैंने बिल माँगा।

"आप मेरे मेहमान हैं, आपका बिल मैं खुद दूंगा।" बैरे ने बड़े दुलार से कहा।

मेरा दिल चाहता था कि, बैरे से कहूँ कि, बिल नहीं तो कम-से-कम 'टिप' तो ले ही लो, ताकि मालिक की तनख्वाह में कमी न हो; लेकिन मैं हिम्मत न कर सका।

वह मुझे बाहर टैक्सी तक छोड़ने के लिए आया।

बेरुत के आस-पास छोटे-छोटे झोंपड़ों की आबादियाँ फैली हुई थीं। इनमें फलस्तीन के अरब शरणार्थी रहते थे, जिनके आस-पास सीमेंट की बड़ी-बड़ी इमारतें उठ रही थीं। कुछ अमरीकी टूरिस्ट इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

झोंपड़ों और ऊँची बिल्डिंगों की तस्वीरें ले रहे थे, साथ ही अरबों की सियासत पर भी रोशनी डालते जा रहे थे।

बंदरगाह के पास एक खुला मैदान टाट, टीन और चटाई के बने हुए झोंपड़ों से खचाखच भरा हुआ था। मैदान के चारों तरफ कांटेदार तार खिंचे हुए थे और पुलिस के कुछ सिपाही पहरा दे रहे थे। यह हाजियों का कैम्प था, जो सरकार ने कायम किया था। कई-कई महीनों तक लोग दूर-दूर से आकर यहाँ इकट्ठे होते रहते हैं। जो खुशनसीब होते हैं, उन्हें हवाई या समंदरी जहाज में जगह मिल जाती है, बाकी लोग इंतजार करके वापस अंत में नाउम्मीद होकर चले जाते हैं।

बेरुत भी दुनिया के उन शहरों में है, जहाँ गरीब होना तो कोई गुनाह नहीं; मगर भीख माँगना बड़ा जुर्म है। बंदरगाह के बाहर पुलिस का एक सिपाही बेंत की छड़ी घुमा-घुमाकर बहुत-से भिखारियों को भगा रहा था, जो आते-जाते टूरिस्टों पर भूखी चीलों की तरह झपट रहे थे। फलस्तीनी पनाहगीरों का एक खानदान सिपाही की नज़र बचाकर एक कोने में सहमा खड़ा था। यूँ तो उनके हाथ फैले हुए नहीं थे मगर उनके चेहरे पुकार-पुकारकर अपनी भूख और बेबसी की फरियाद कर रहे थे।

इस खानदान में एक छः या सात साल का लड़का था, एक नौ साल की लड़की। उनकी माँ एक अधूरी बहार की तरह थी जिसे वक्त से पहले ही खिजाँ ने बरबाद कर डाला हो। वह कभी अपने बच्चों की तरफ देखती थी और कभी राहगीरों की तरफ़ और कभी उस सिपाही की तरफ जो बेंत की छड़ी घुमा-घुमाकर भिखारियों को भगा रहा था। मुझे रुकते देखकर लड़की मेरी तरफ़ बढ़ा और बोला—"क्या आप हमारी तस्वीर खींचना चाहते हैं?"

जिस तरह कराँची के फकीर माचिस या बूटपालिश का सहारा लेकर भीख माँगते हैं, इसी तरह फलस्तीन के शरणार्थी तस्वीर खिंचवाकर बख्शीश की फरियाद करते हैं। उनके खूबसूरत चेहरे और उदास आँखें टूरिस्टों को अपनी तरफ खींचती हैं और वे उनके फोटो खींचकर दिल खोलकर बख्शीश देते हैं और इस तरह उनकी अपनी हमदर्दी, मुनसिफ-मिजाजी और गैर-जानिबदारी जाहिर कर देते हैं।

★

तब और अब

"तुम उस एक्ट्रेस को जानती हो?"

"अच्छी तरह! बचपन में हम दोनों पड़ोसिनें थीं। उस वक्त हम दोनों की उम्र लगभग बराबर थी।"

"और अब?"

"अब मैं ३५ साल की हूँ; और वह केवल २३ की ही है।"

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधक

मनमोहन झा

ट्रेन से उतरते ही परिचितों ने घेर लिया—"कहिये, कहिये, कितने दिनों की छुट्टी में आये हैं ? आशा नहीं थी कि, आपसे फिर भेंट होगी । यह लड़ाई और कितने दिनों तक चलेगी ? हम लोग तो इससे 'आकच्छ' (परेशान) हो गये हैं ।"

उन लोगों को क्या पता कि, लड़ाई में मेरा कितना छोटा स्थान है । किंतु मैं अपनी लघुता क्यों दिखाता ? विशेषत: यह तो सैनिक का गुण ही है कि, जब तक वह सेना में रहेगा, सबको अपने से छोटा ही समझेगा । मैंने कहा—"आप लोग कुछ दिन और धीरज धरिये । हम शीघ्र विजय पा लेंगे । हाँ, आप लोगों को कोई कष्ट हो, तो कहिये । मैं कलक्टर साहब से कहकर सब ठीक करवा दूँगा ।" ग्रामीणों ने कृतज्ञतापूर्वक मेरा मूक अभिवादन किया, जैसे मैं ही इस महासमर का सर्वेसर्वा हूँ । पर मैं था एक हवलदार . . . मनीपुर फ्रंट पर नियुक्त; डेढ़ सौ रुपया मासिक वेतन ।

लड़ाई में जाने के बाद प्रथम बार गाँव आया था । इसलिए उस दिन मुझे एक क्षण भी 'स्वाच्छंद' (अवकाश) नहीं मिला । शाम को रुना मुझसे मिलने आयी । उसने मुझे प्रणाम किया और लजायी-सी, खाट के पास नीचे जमीन पर बैठ गयी । गाँव के रिश्ते में रुना मेरी बहन होती है । मैंने पूछा—"कहो, कुशल से हो न ? अभी यहाँ कितने दिन रहोगी ?"

वह बोली—"हाँ । आज सुना कि, भैया लड़ाई से छुट्टी लेकर आये हैं, तो सोचा कुछ वहाँ का भी समाचार जान लूँ ।" वह कुछ और कहनेवाली थी कि, मैंने देखा—उसकी आँखें आर्द्र हो गयी हैं, कंठ भर्रा गया है ।

मैंने पूछा—"तुम कुछ चिंतित-सी दीख पड़ती हो । क्या तुम्हारे भी कोई लड़ाई में है ?" वह अपनी सजल आँखों को मुझसे छिपाती हुई बोली—"हाँ, इसीलिए तो आयी हूँ । आज ढाई वर्ष बीत गये, हमें कुछ भी खबर नहीं मिली है ।"

बहुत प्रयास करने पर भी वह अपने उमड़ते आँसू नहीं रोक सकी । एक सोलह-सत्रह वर्ष की कन्या की यह परिस्थिति देख मैं विचलित हो गया । यह समझते देर न लगी कि, इसका स्वामी लड़ाई में है । मैंने पूछा—"तुम नाम-ठिकाना तो बताओगी नहीं, जो कुछ कह सकूँ । कम-से-कम उनका हुलिया ही मालूम हो जाये, तो मैं उनका पता लगाने का पूरा प्रयास करूँगा ।" मेरे इस कथन से ही वह कृतज्ञता के भार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दब गयी। उसने मेरे कुछ निकट कहा–"आपसे लाज करूँगी, तो काम कैसे चलेगा ? देख न लीजिये भैया, मैंने क्या लिखा है ?"

नाम पढ़ते मेरा हृदय आनंद से गद्गद हो गया। "चंद्रशेखर झा ? अरे, वे तो मेरे बड़े अच्छे मित्र हैं !"

मुझे मालूम पड़ा, जैसे रुना के सम्पूर्ण शरीर में नवजीवन आ गया हो। आनंदाश्रु से उसके कपोल भीग गये। उनकी बहुत-सी बातें मैंने रुना को सुनायीं। वह पुराण की कथा की तरह सब ध्यान से सुनती रही। अंत में मैंने पूछा–"रुना, एक बात कहोगी ? वे रुठकर क्यों चले गये ? वे तो बड़े विचार-वान् दीख पड़ते हैं।"

बड़े अनुरोध पर उसने संकोच से कहना शुरू किया – "वैसे तो लड़ाई में जाने की उनकी इच्छा बहुत दिनों से थी; पर माँ-बाप ने रोका। द्विरागमन के छः महीने बाद एक रात उन्होंने मुझसे कहा–'मैं तुम्हारी एक जाँच करूँगा।' मैंने कहा– 'कीजिये।' उन्होंने कहा– 'कहते तो लाज लगती है, किंतु बिना कहे बनता भी नहीं। मैं लड़ाई में भरती होने मेरठ जाना चाहता हूँ। लेकिन अपने पास कुछ है नहीं। तुम अपनी बेसर दे दो, तो गिरवी रखकर चला जाऊँ। गिरवी तो फिर छूट ही जाती है . . ."

"हाँ, हाँ, फिर क्या हुआ ?"

"तब मैं बहुत छोटी थी; पर मुझे गहने का मोह नहीं था। लेकिन सुना था, लोग लड़ाई से बचकर नहीं आते। इसलिए मैंने कहा–'यह तो मेरे पैर की दी हुई है, किसी को क्यों दूं ?' इस पर वे कुछ क्रो तो नहीं; पर शायद इसी कारण उन्हें मुझ से घृणा हो गयी। तीन-चार दिन बाद बिना किसी से कुछ कहे-सुने एकाएक लापता हो गये। इसके बाद उनका समा चार आप ही के मुख से सुनती हूँ।" रुना ने अपना मुँह आँचल में छिपा लिया।

मैंने आश्वासन के शब्दों में कहा–"अ इतनी-सी बात थी ! कैसे आदमी हैं वे मुझसे तो यह सब कभी नहीं कहा।"

वह बोली–"भैया, उन्हें मेरे विषय में बात करने में भी घृणा होती है। शायद उनका यह विचार हो कि, उनसे बढ़कर मैंने गहने को समझा। मैं जाँच में हार गयी। फिर वह आँचल से मुँह ढँककर एकाएक कोठरी से बाहर हो गयी। मैं भी बहुत खिन्न हो गया।

महीने-भर गाँव रहा। एक संध्या भी ऐसी नहीं बीती कि, रुना ने आकर मुझे भेंट न की हो। अगले दिन मुझे मनीपुर के लिए प्रस्थान करना था। सभी मिलने आये। संध्याकाल रुना भी खिन्न-सी आयी। मैंने कहा–"रुना, मैं तो कल चला जाऊँगा। निश्चय रखो, वहाँ जाकर मेरा पहला काम होगा, उन्हें मनाना। तुम कोई चिन्ता नहीं करना।"

रुना रोने लगी। कुछ देर बाद मेरे पैर छूकर प्रणाम करती हुई आँचल से मुँह ढँके आँगन की ओर चली गयी। मुझे उसका अवरुद्ध कंठ का एक ही वाक्य सुनाई पड़ा–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भैया, अब के आने लगिये, तो आप अकेल नहीं आइयेगा।"

मनीपुर फ्रंट पर पृथक्-पृथक् कैम्पों में रहने पर भी चंद्रशेखर झा से नित्य भेंट होती थी। इस बार मेरे हृदय में उनके प्रति स्वजन का मोह हो गया था। पहले उन्हें अपना सजातीय, समवयस्क मित्र-भर समझता था; अब वे मेरे आत्मीय थे।

एक दिन अवसर पाकर मैंने उनसे कहा—"आप मेरे ही गाँव के दामाद होकर मुझे ही ठगते थे। धन्य हैं!" अब वे लज्जित हो गये। मैंने रुना की कुशल कही और बताया कि, अभी वह मेरे ही गाँव में है। किंतु उन्हें यह न भान होने दिया कि, उनके विषय में मुझे बहुत-कुछ बातें मालूम हो गयी हैं और वह भी उसी व्यक्ति से, जिससे रूठकर वे आये हैं।

मेरी बात में उनकी एकाग्रता तथा रुना के नाम मात्र से उनकी मुखमुद्रा में हुआ परिवर्तन, ये सब इसके प्रमाण थे कि, उनके हृदय में रुना के लिए अनन्य स्नेह है। हाँ, जो कुछ मनोमालिन्य आते समय दोनों में हो गया था, वह भी उनके हृदय में अभी तक विद्यमान था। अस्तु, मैंने उन्हें इतना मना लिया कि, अब के जब मैं गाँव जाऊँगा, वे भी साथ चलेंगे।

इसके बाद छः-सात महीने भी नहीं बीते थे कि, गाँव से तार आया कि, माँ बीमार है, जल्दी आओ। लड़ाई में छुट्टी मिलना बहुत कठिन होता है। इस्तीफा भी नहीं मंजूर होता। भाग जायें, तो कोर्ट मार्शल। पर मेरे अफसर दयालु थे। माँ की बीमारी का नाम सुनकर दो सप्ताह का अवकाश मुझे दे दिया।

इधर पाँच-सात दिनों से चंद्रशेखर झा से मेरी भेंट नहीं हुई थी। गाँव जाने से पूर्व उनसे एक बार मिलना आवश्यक था। उनके कैम्प पहुँचा, तो पता लगा कि, मोर्चे पर घायल हो गये हैं और तीन नम्बर बैरक में हैं। वैसे लड़ाई में यह कोई असाधारण घटना नहीं; परंतु रुना का मुख स्मरण कर मेरा हृदय धक्-से रह गया। आयी विपत्ति की सूचना हृदय पहले ही दे देता है। तुरंत बैरक पहुँचा। वहाँ उनका बेड खाली मिला। बेड के साथ लगे चार्ट पर अंकित ये शब्द ही मैं पढ़ सका—"सोलजर नं० १८८..... रात १.३० पर देहांत।" आँखों के सामने अंधकार छा गया। अब मैं गाँव कैसे जाऊँगा? रुना के प्रश्नों का मैं क्या उत्तर दूँगा? जिस सरल बाला की ओर से रूठे प्रेमी के नाम मैं संधि का संदेश लेकर आया था, उसके समक्ष आने पर यह कैसे कह सकूँगा कि, तुम्हारी सुहाग-मंजूषा में आग लग गयी है?

गाँव आया, तो माँ अच्छी हो गयी थी। पर रुना को चार दिनों से ज्वर था। उसने कहला भेजा—"कहना भैया से कि, एक दिन आकर देख जायें। अकेले आये हैं क्या?" उसके संवाद का एक-एक शब्द मेरे हृदय पर आघात करता था। मेरे पाँव उसके घर की ओर सरकते ही न थे। मैं सोचता था कि, बीच में ही मनीपुर चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूँ। माँ ठीक हो ही रही है और रुना को कालक्रम से लड़ाई का समाचार मिल ही जायेगा। परंतु उसी दिन रुना सायंकाल देह-हाथ ढँके आ पहुँची। उसे देखते ही मेरा हृदय काँपने लगा।

कुछ समय तक मैं इधर-उधर की बातें करता रहा। लेकिन रुना अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सकी और पूछ बैठी—"भैया, 'लोक' ने नहीं माना क्या? आप अकेले आये हैं!" मेरी धमनियों में रक्त का चलना बंद हो गया। लाख प्रयास किया; लेकिन एक शब्द न निकला। उसने पुनः व्यग्र होकर पूछा—"भैया, 'सबसे' भेंट तो हुई? 'सब' कुशल हैं न?" मैं व्यग्र हो उठा। सत्य की शरण लेकर अपने सामने एक बाला पर इतना कठोर आघात कैसे करूँ? कुछ सोच-कर बोला—"कुशल क्यों न रहेंगे! लेकिन, रुना, अभी दो-चार सौ रुपये भी हाथ नहीं लगे हैं कि, गाँव आयें। भाग के गये हैं न!"

मैं झूठ तो बोल गया; किंतु रुना का रूप देख मन में सहस्रों बिच्छू डंक मारने लगे। उसके हाथों में चूड़ी देखी, माँग में सिंदूर देखा। सबमें यही दीखता था कि, ये सब भी तो अब मिथ्या ही हैं।

मुझसे यह पता लगाकर कि, मैं परसों जाऊँगा, रुना जल्द ही चली गयी।

गाँव से स्टेशन चला। मन में आया कल रुना नहीं आयी। फिर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि, अच्छा हुआ जो नहीं आयी। किसी तरह उसे यह खबर कोई दूसरा ही दे। फिर मन में हुआ कि, कितने दिन वह इस तरह मिथ्या आशा में रहेगी? किसी कह दूँ कि, मेरे जाने के बाद उसे मुझे दे दे? किंतु साहस नहीं हुआ।

गाँव की सीमा के भीतर ही था मालूम पड़ा, जैसे पीछे से कोई पुकार है। मुड़कर देखा, तो रुना तेजी से आ रही थी। धूप में परेशान हुई जिसने परसों ही पथ्य लिया था, आकर मेरे मुख की ओर देखने लगी मैं सकपका गया। हृदय का विचार अवरुद्ध हो गया। फिर भी मैंने उसे भला-बुरा कहा।

रुना की लाल-लाल आँखों में भरे थे। वह हाँफती हुई शिथिल स्वर बोली—"कल नहीं आ सकी। ...अ झंझरपुर चली गयी थी। ...यह उन्हें चुपचाप दे दीजियेगा।...मे शपथ... किसी और से नहीं कहि येगा।... 'उनसे' कहियेगा कि, गाँव पर यही कहें कि, कमाकर लाये हैं रहेंगे, तो बंधकी छूट जायेगी।" और कहकर अपनी खूँट खोलकर उसने हाथ में दस-दस रुपये के बीस नोट दिये। मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। मुझे किस प्रकार सत्य का उद्घाटन कि जायेगा? हाँ, जब फिर गाँव आऊँगा, किसी-न-किसी तरीके से रुपया वापस दूँगा। अपनी आँखों के आँसुओं को जैसे तैसे रोककर अवरुद्ध कंठ से इतना ही सका—"लाओ, दे दूँगा।"

— मैथिली से रूपांतर : सदन मि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुक्रिया

अली अब्बास हुसैनी

शेख अलीम रात की नमाज से निबटकर ईरानी कालीन पर लेटा हुआ एक किताब देख रहा था। कुछ देर बाद उसने कालीन पर कुहनियाँ टेककर उठने का इरादा किया ही था कि, उसके गुलाम मूसा ने अंदर आकर खबर दी कि, "शहर के सौदागरों का एक 'डेपुटेशन' आया है, जो इसी वक्त मिलना चाहता है।"

शेख उठकर बैठ गया। उसने कहा—"कोई ऐसा ही जरूरी काम होगा, जो ये लोग इतनी रात गये आये हैं। उन्हें अंदर बुला लो।"

डेपुटेशन में पाँच आदमी थे। शेख ने खड़े होकर हरएक से हाथ मिलाया और उन्हें अपने पास बिठाकर गुलाम को कहवा और मेवे लाने का हुक्म दिया। गुलाम दरवाजा बंद करके बाहर चला गया, तो शेख ने उनसे पूछा—"कहिये, आप लोगों ने कैसे तकलीफ की ?"

उनमें से एक आदमी ने, जो शायद लीडर था, इधर-उधर देखकर कहा—"हम आपके पास फरियाद लेकर आये हैं, मगर डरते हैं.... ।"

"आप इत्मीनान के साथ अपना मतलब बयान करें।" शेख ने कहा—"मेरा गुलाम भरोसे का आदमी है, इस कमरे में होनेवाली बात-चीत की किसी को कानो-कान खबर तक नहीं होगी।"

दूसरे ने कहा—"जी, अब हम आपस में भी बात करते हुए डरने लगे हैं, इसी की तो फरियाद लेकर आये हैं।"

शेख ने कहा—"तो ऐसी फरियाद का सुननेवाला सिर्फ खुदा है या किसी कदर बादशाह।"

तीसरे ने कहा—"बादशाह तक अपनी फरियाद पहुँचाने के लिए ही तो हम आपकी खिदमत में हाजिर हुए हैं।"

शेख ने अपना सिर हिलाकर कहा—"इसके लिए सरकार की तरफ से अफसर मुकर्रर हैं, पर्चानवीस, अर्जीनवीस, मुंशी, मुत्सद्दी.....।"

"किब्ला," चौथे ने जल्दी से कहा—"इन्हीं अफसरों की बेइन्साफी और जुल्मों के खिलाफ ही तो फरियाद है! वे भला अपने जुल्मो-सितम की दास्तान बादशाह के कानों तक क्यों पहुँचने देंगे ?"

शेख की आँखें चमक उठीं, उसकी आवाज में झुंझलाहट की झंकार पैदा हो गयी—"जी! बादशाह की उस्तादी की दस साल तक मुझे इज्जत हासिल रही है। मैं उसके मिजाज और तबीयत से अच्छी तरह वाकिफ हूँ। वह बड़ा ही मेहरबान और रिआया का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एनासिन'

चार दवाइयों के कारण

दर्द से आराम के लिए बेहतर है

१. एनासिन दर्द से शीघ्र आराम देती है : एनासिन में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक सम्मिश्रण है, इसी कारण वह सिरदर्द, सर्दी-जुकाम, बुखार, दाँतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र पूर्ण आराम देती है।

२. एनासिन स्नायुओंकी घबराहट व बेचैनी को दूर करती है : स्नायुओं के तनाव को अति प्रभावकर रूप से दूर करके एनासिन आपको सुख व चैन प्रदान करती है।

३. एनासिन सुस्ती को भगाती है : दर्द के साथ प्रायः पैदा होनेवाली सुस्ती-उदासी को एनासिन भगाती है।

४. एनासिन बुखार को घटाती है : एनासिन विधि में क्विनीन होने से वह बुखार को काबू में रखने के लिए परिपूर्ण मिश्रण बनती है।

* आरोग्य की दृष्टि से मुहरबंद २ टिकियों के सिलोफेन पाकिट में और घरेलू उपयोग के लिए ३२ टिकियों की मुहरबंद शीशियों में मिलती है।

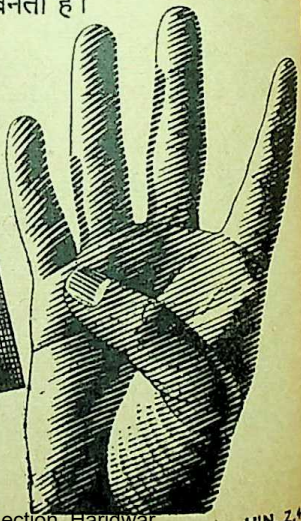

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LIMITED

HIN. Z.H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भला चाहनेवाला है और यकीनी तौर पर अपने अफसरों की करतूतों से बेखबर न होगा।"

पाँचवें ने हाथ बाँधकर कहा—"अगर वह बाखबर है, तो जुल्म को सराहता है, और अगर वह बेखबर है, तो उसे होशियार करना आपका फर्ज है।"

शेख ने कुछ रूखे लहजे में कहा—"जी, मैं अपनी जिम्मेदारियाँ अच्छी तरह समझता हूँ; मगर मुझे अपने बादशाह से ताज्जुब जरूर है कि, वह सिर्फ दो साल के अंदर ही सारी तालीम भूलकर अपने फर्ज की तरफ से लापरवाह हो गया!"

पहले ने हँसकर कहा—"जहाँपनाह जवान भी तो हैं, और 'जवानी दीवानी' आपने सुना ही है!"

तभी दूसरे ने कहा—"वह इस वक्त बादशाह नहीं, आशिक हैं, बल्कि 'फरहाद' और 'मजनूँ'।"

शेख ने पूछा—"और 'लैला' कौन है?"

"हकूमत के राज बादशाह ही जाने; लेकिन उड़ती हुई खबर है कि, काफ की रहनेवाली कोई कनीज है।" "'गुलगूना' नाम है।" तीसरे ने कहा—"खूबसूरती में चाँद-सूरज को हराती है।"

"नूर का गला पाया है।"

"और दिलों में गूँजनेवाली कोयल की लय!"

"सुना है, तलवारों की धार पर नाचती है!"

"अजी, बादशाह सलामत के दिल के तारों पर नाच करती है।"

"और हमारा बादशाह इसी गुलगना की नर्म बाँहों पर तकिया किये, हुकूमत और रय्यत से लापरवाह दिन-रात सोता रहता है। उसके यहाँ हर वक्त बहार-ही-बहार है और मुल्क में खिजाँ-ही-खिजाँ!" आखिर उन्होंने अपनी बात खत्म करते हुए कहा।

शेख कुछ देर सोचता रहा, फिर उसने ताली बजायी। गुलाम कहवा और मेवे रखकर बाहर चला गया। मेहमानों की मेहमानदारी खत्म हुई, तो शेख ने खड़े होकर कहा—"अब आप साहिबान तशरीफ ले जायें। मैं रात में खुदा से अपनी हिदायत की दुआ करूँगा। शायद वह सबकी फरियाद सुननेवाला इस गुत्थी को सुलझाने की कोई तरकीब मुझे सुझा दे।"

इन लोगों के चले जाने के बाद शेख ने कुछ देर आराम किया। रात के आखिरी पहर वह नमाज के लिए उठ खड़ा हुआ।

सुबह हुई, तो जरूरी कामों से निबटकर उसने दरबारी पोशाक पहनी और शाही महलसरा (रनवास) के लिए रवाना हो गया। बादशाह तब तक पूरी तरह नहीं जागा था। पूरे दो साल बाद इस तरह अचानक उस्ताद के आने से घबरा गया। बगैर नहाये और कपड़े बदले रात के लिबास पर ही एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

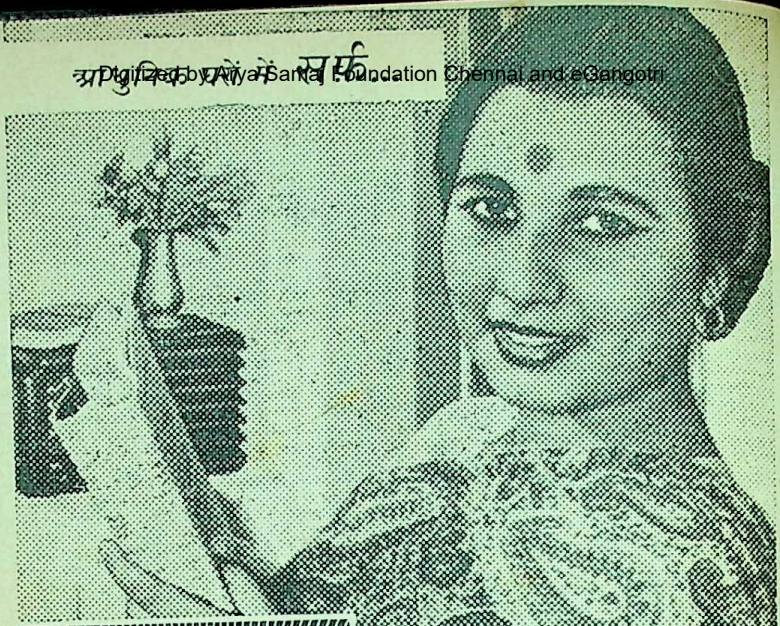

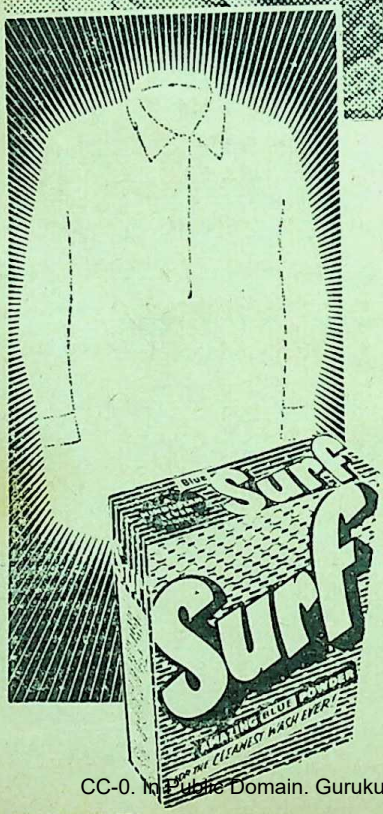

'जीवन के जिस नये ढंग की मुझे खोज है...'

बम्बई की सामाजिक कार्यकर्ता
श्रीमती नोरीन अमोलिक कहती हैं!

'जीवन के जिस नये ढंग की मुझे खोज है वह घर से संबंधित है'—सामाजिक कार्यकर्ता श्रीमती अमोलिक कहती हैं। 'अब सर्फ़ ही को लीजिए। मैंने इसे कितने ही घरों में देखा है। यह निस्संदेह एक बेहतर जीवन की निशानी है। सर्फ़ से सभी कपड़ों की सफ़ेदी चमक उठती है—वह साड़ियां हों या कमीज़ें या घर के दूसरे कपड़े!

आजकल की गृहिणियां एकमत हैं...
सर्फ़ से कपड़े अपूर्व सफ़ेद धुलते हैं। फिर आप के घर में सर्फ़ क्यों न हो?

सर्फ़ से कपड़े
[illegible] धुलते हैं।

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लबादा पहनकर बाहर निकल आये। शेख से भी ज्यादा झुककर उसका सलाम कबूल किया, उसके हाथों को आँखों से लगाया और होठों से चूमा।

शेख ने उसको सल्तनत की तरक्की और उम्र बढ़ने की दुआ दी और खामोश हो रहा।

बादशाह ने घबराकर पूछा—"किब्ला-ए-आलम ने इतने सवेरे कैसे तकलीफ की?"

शेख ने मुस्कराकर कहा—"आज मैं अपने सुलतान से अपनी उस्तादी का हक माँगने आया हूँ।"

बादशाह ने सीने पर हाथ रखकर, सर झुकाकर कहा—"मैं दिलो-जान से हाजिर हूँ, मेरी पूरी सल्तनत हाजिर है!"

"नहीं, सल्तनत आपको मुबारक हो। मुझे तो एक साथी चाहिये, जिंदगी-भर के लिए। मैंने पूरी जवानी आपकी तालीम और खिदमत में गुजार दी, अब अपना काम खत्म कर देने के बाद मुझे तन्हाई महसूस होती है।"

बादशाह ने कहा—"तो इस सल्तनत की जिस शहजादी, अमीरजादी से आप पसंद फरमायें.....।"

शेख ने हाथ के इशारे से अपने शागिर्द को रोका—"नहीं, मुझे तो सुलतान की महलसरा से सिर्फ एक कनीज चाहिये।"

बादशाह ने जोश में कहा—"हरमसरा में एक हजार से ज्यादा कनीजें मौजूद हैं, आप जिसे पसंद फरमायें, हाजिर की जाये।"

शेख ने कृतज्ञता-भरी नजरों से बादशाह को देखकर कहा—"मुझे अपने बादशाह से यही उम्मीद थी। हुक्म दिया जाये कि, 'गुलगूना' मेरे साथ कर दी जाये!"

बादशाह ने बेचैनी और हैरत से पूछा—"गुल?.....गुल.....गूना?"

शेख ने अनजान-सी सादगी के साथ जवाब दिया—"हाँ, सुना है, वह गाने में लाजवाब है।"

बादशाह ने दो बार काँपते हुए होंठों पर जबान फिरायी, माथे से पसीना पोंछा और घुटी हुई आवाज में कहा—"बहुत खूब!"

बादशाह ने ताली बजायी। हब्शी गुलाम हाजिर हुआ। उसने हुक्म दिया—"गुलगूना को मैंने आज से अपने बुजुर्ग उस्ताद की कनीजी में दे दिया है, उसे इज्जत के साथ आपके दौलतखाने पर पहुँचा दो।"

गुलाम सलाम करके पीछे हटने लगा, तो उसने कहा—"और देखो, उसके महल का सारा सामान भी वहीं पहुँचा देना।"

शेख ने कहा—"मैं बादशाह की इजाजत से हुक्म के आखिरी टुकड़े में तब्दीली चाहता हूँ। गुलगूना का सारा सामान काजी की खिदमत में भेज दिया जाये कि, बेवाओं और यतीम बच्चों में बाँट दें।"

बादशाह ने भर्रायी हुई आवाज में कहा—"मुझे इस पर फख्र है कि, मुझे अख्लाक (सदाचार) की तालीम आप-जैसे मर्दे-सर्खा ने दी है।"

शेख ने सिर झुकाकर सीने पर हाथ रखकर बादशाह का शुक्रिया अदा किया।

बादशाह ने मुस्कराकर पूछा—"लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें गुण की परख है वे हमेशा **'लोमा'** ही पसंद करते हैं, फिर देश हो या विदेश, कुछ भी क्यों न हो। **'लोमा'** के उत्कृष्ट गुण का प्रमाण उसकी बढ़ती हुई बिक्री ही है। अब यह अन्तरराष्ट्रीय बाजार की वस्तु बन गया है और दुनिया के करीबन हर हिस्से को इसका निर्यात होता है। निर्यात के जरिये बहुमूल्य विदेशी मुद्रा की बचत तो होती ही है, इसके अलावा अन्तरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय माल की उत्कृष्टता का उदाहरण कायम हुआ है। हर जगह लाखों लोग पूरे विश्वास के साथ **'लोमा'** इस्तेमाल करते हैं और लाखों बोतलों की संख्या में **'लोमा'** की बिक्री उनके विश्वास का प्रमाण है। यह बालों को श्याम बनानेवाला आदर्श तेल है।

विश्व भर में प्रशंसित बालों को श्याम बनानेवाला तेल

लोमा

एकमात्र एजेंट्स : एम. एम. खम्भातवाला अहमदाबाद-१

एजेंट्स : **सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी, बम्बई-२**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके नाच-गाने का सामान ?"

शेख ने कहा—"अब उनकी भी जरूरत नहीं। जहाँपनाह, अब वह एक नये साज पर गायेगी।"

हब्शी के जाते ही शेख ने तकलीफ देने की माफी चाही और उठ खड़ा हुआ। बादशाह ने शेख के हाथों को चूमकर पूछा—"कहिये, कोई और खिदमत ?" वह बोला—"नहीं, मुझे मेरा हक मिल गया।"

नौजवान बादशाह ने गुलगूना को दे तो दिया; मगर उसकी जान पर बन गयी। उसके दिल में गम का ज्वार-भाटा उठने लगा। वह शेख के सामने सीधा खड़ा तो हो गया; मगर उसका पूरा बदन काँपने लगा। शेख ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा—"मेरे बेटे, फरहाद और मजनूँ बनना आसान है; मगर बादशाह बनना बहुत मुश्किल है। इसके लिए एक के बजाय करोड़ों से मोहब्बत करना जरूरी है।" और वह कदम बढ़ाकर बाहर निकल गया। बादशाह फर्श के किनारे तक उस्ताद को पहुँचाकर लौटा और दीवान पर झूमकर गिरा और सिसकने लगा।

काठियावाड़ी गड़रिया

चित्रकार : बी० एम० कुलकर्णी

शेख को घर पर एक बफरी हुई शेरनी से मुकाबला करना पड़ा। वह अपनी बोटियाँ नोच रही थी और शेख के गुलामों पर बिजलियाँ गिरा रही थी! वह महल की रानी थी, बादशाह की महबूबा थी। और आज वह अपने सजे-सजाये महल से उठाकर मवेशी की तरह इस सादे कमरे में पहुँचा दी गयी थी। गुलगूना को यहाँ की एक-एक चीज काटे खाती थी। इसलिए और भी कि, वह एक कनीज थी, एक किसान की लड़की जिसके घर में इतना सामान भी नहीं था, जितना इस सादगी में यहाँ मौजूद था। वह डाकुओं के हाथों गिरफ्तार होकर बाजार में बेची गयी, बादशाह के सामने पेश करने के लिए उसे संगीत सिखाया गया और अपनी खूबसूरती और खुशआवाजी से वह शाही गर्दन का हार बनी। उसका गुस्सा और झल्लाहट रह-रहकर इसलिए और भी भड़क उठते थे कि, वह अपनी जिस असल को भूल चुकी थी, वह शेख के हाथों फिर सामने थी!

गुलगूना ने शेख पर सिर से पाँव तक एक नजर डाली। सूखा चेहरा, कमजोर बदन, चालीस-पैंतालीस की उम्र, सिर पर पगड़ी, सफेद जुब्बे पर काला लबादा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विदेशी उत्पादन है और भारत में बाहर से आती है। यह केवल भ्रम है। वर्जीनिया तम्बाकू का प्रकार मात्र है जो योग्य धरती व जलवायु मिलने पर कहीं भी पैदा होगी। बड़े पैमाने पर विदेशी सिगरेट निर्माता भारतीय वर्जीनिया तम्बाकू खरीदते हैं इसी से प्रकट है कि हम उत्तम वर्जीनिया तम्बाकू पैदा करते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम्बाकू की कहानी.... नं. ६

बम्बई—५७

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है —

यह आखिरी कश तक मजा देती है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लम्बी नाक, लम्बा कद, खिचड़ी दाढ़ी। पूरी सूरत में सिवा [illegible] आँखों के कोई चीज नहीं। उसने लम्बी साँस लेकर कहा—"यह आपकी ही कारस्तानी है कि, मैं महलसरा से निकालकर इस पापोशखाने (जूता-घर) में भेजी गयी ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेख ने कहा—"नहीं, इसमें मुझसे ज्यादा तकदीर लिखनेवाले का दखल है। वही झोंपड़े से निकालकर महल में ले गया, उसी ने शाही महल से एक फकीर के घर भेज दिया।"

गुलगूना गुस्से से थर्राकर उकड़ूँ बैठ गयी और घुटनों पर सिर रखकर बोली—"मगर मेरे मामले में तो आप ही तकदीर लिखनेवाले ठहरे! न जाने मैंने आपका क्या बिगाड़ा था।"

शेख ने कहा—"तुम अपनी ही नहीं, सारे मुल्क की किस्मत बिगाड़ रही थी। मैं तुम्हें एक बुरी जिंदगी से निकालकर एक अच्छी जिंदगी की तरफ लाया हूँ।"

गुलगूना झल्लाकर खड़ी हो गयी और झटका देकर कमीज कुछ और नीचे तक फाड़ डाली। शेख ने अपनी नजरें नीची कर लीं और कहा—"तुम्हें यहाँ लाने से मेरा मकसद वाकई रिआया और बादशाह की भलाई है। खैर, मैं तुम्हारे लिए बाजार से कुछ सिले-सिलाये कपड़े लाया हूँ, जो लौंडी के हाथ भेज देता हूँ। मुँह-हाथ धो डालो, कपड़े बदल लो, फिर कुछ देर आराम करके मुझसे बात करना।"

दो घंटे बाद शेख अपने कमरे में बैठा हुआ एक किताब देख रहा था कि, वह [illegible] खोलती, बंद करती बड़बड़ाती हुई दाखिल हुई—"मैं इस बालिश्त-भर के कमरे में कहाँ जाऊँ, कहाँ घूमूँ-फिरूँ? मुझे तो यहाँ कब्र-जैसी तन्हाई महसूस होती है!"

शेख ने अपने बाजू में कालीन थपककर कहा—"आओ मेरे पास बैठो।" और उसने मिस्री लहजे में कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। फिर उसने उनके बारे में गुलगूना से पूछा। उसने 'नहीं' में सिर हिलाया, तो उसे किरत के बारे में बताने लगा, और उसे कुछ देर मश्क (अभ्यास) कराता रहा। संगीत जानने की वजह से उसे यह सब सीखने में बड़ा लुत्फ आया और वह अपना गम भूल गयी।

बाद में जब वह गर्दन झुकाकर अपने कमरे की तरफ चली, तो शेख ने मुस्कराकर कहा—"तुम अपना दिल बहलाने के लिए बावर्चन को बुला लो, उसके साथ घर के सब सामान देख डालो कि, क्या चीज है क्या नहीं है; क्या होना चाहिये क्या मँगाना है। अब तुम्हीं को इस घर का इंतजाम करना है, तुम्हीं अब इसकी मालकिन हो।" और उसके हाथों में अशर्फियों की एक थैली थमा दी।

गुलगूना ने बंद मुट्ठी दाँत के नीचे दबाकर कहा—"मगर मैंने अब तक किसी घर का इंतजाम नहीं किया, मैं क्या जानूँ?"

शेख ने नर्मी से कहा—"तो तुमने औरत का सबसे बड़ा फर्ज अब तक अदा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

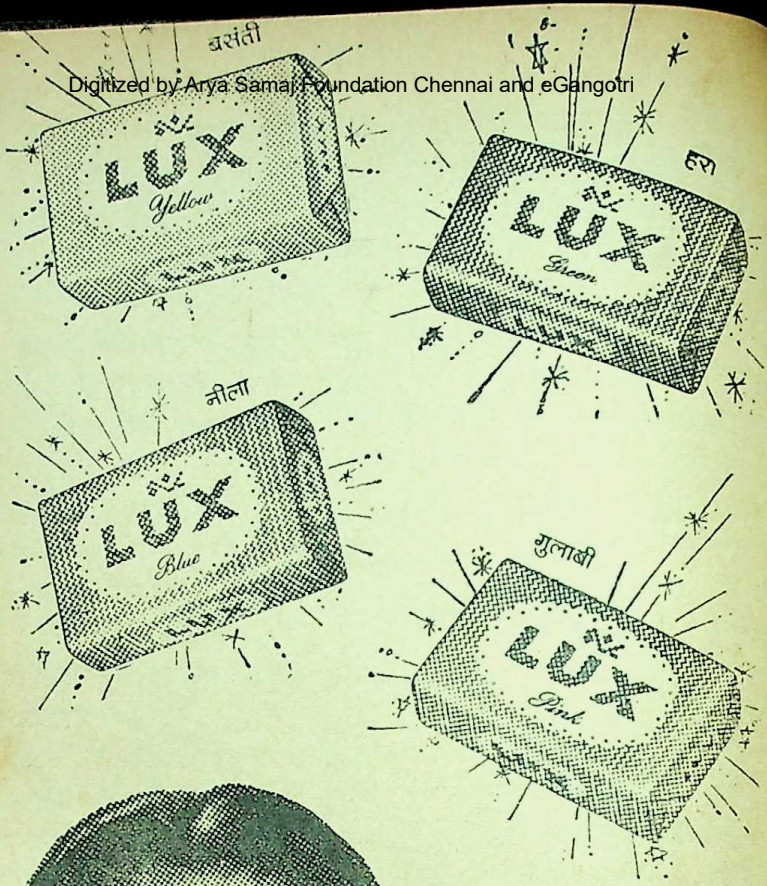

'मेरा मनपसंद
लक्स
इंद्रधनुष के
चार रंगों में
और सफ़ेद भी!'
वहीदा रेहमान
कहती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LTS. 81-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया! खैर, जाओ। आज से हिस्सा कपड़े पहनती तो किसी बहाने से एक बार शेख के कमरे में जरूर हो जाती।

शेख कोई पत्थर न था, इन्सान था। उसने अपने आपको किताबों में भुला रखा था; मगर रोज-रोज के वारों ने उसकी ढाल को काटना शुरू कर दिया। उसको गुलगूना की शरारतों पर जितना प्यार आता, उतना ही उसका गुस्सा बढ़ने लगा।

एक दिन शेख अपने कमरे में बैठा हुआ किसी फलसफियाना बात पर गौर कर रहा था कि, कानों में घुँघरू की आवाज आयी, फिर पर्दा हटा और गुलगूना तितली की तरह नाचती हुई कमरे में आ गयी। वह इतने बारीक कपड़े पहने हुए थी कि, बदन का रोयाँ-रोयाँ दिखाई दे रहा था।

शेख के दिल में वही थरथराहट पैदा हो गयी, जो सुबह के वक्त हवा के झोंकों से फूलों की खिलती हुई पंखुड़ियों में दिखाई देती है। शेख ने आँखें झुका लीं और बेसाख्ता उसके होंठों पर कुरान की वह आयत आ गयी, जिसको बिजली चमकने के वक्त पढ़ने का हुक्म है। फिर उसे अचानक ऐसा लगा, जैसे सारे बदन का खून सिर की तरफ चढ़ता चला आता हो। उसने गरजकर कहा—"तुमको मेरे कमरे में इस तरह नाचते

लाह करो, करने से सब कुछ आ जाता है।" और वह नमाज के लिए खड़ा हो गया।

दिन यूँ ही गुजरते रहे। शेख कभी गुलगूना के साथ चाय पी लेता, कभी खाना खा लेता, कभी उससे खुदा-रसूल की बातें करता, कभी उसे कुरान की आयतों का मतलब समझाता, और कभी उससे मिस्री और इराकी लहजों में कुरान पढ़वाकर उसकी गलतियाँ ठीक करता; मगर पहले दिन के बाद उसने कभी न तो उसकी खूबसूरती की तारीफ की और न उसे याद दिलाया कि, वह उसकी कनीज है और वह उसका मालिक! उन दोनों के बीच उस्ताद-शागिर्द का रिश्ता था या मालिक-मकान और घर का इंतजाम करनेवाली का। और बस!

भस्मदानी
एक प्राचीन रोमन पात्र

शेख की इस बेपरवाही से गुलगूना के अंदरवाली औरत जाग पड़ी। उसे एक आदमी का अपनी तरफ से यूँ बेपरवाह होना पूरी औरतजात की तौहीन महसूस हुई, और वह शेख में सोये हुए मर्द को जगाने पर तैयार हो गयी। अब जब भी वह शेख के पास बैठती, तो दो-एक बार उसके ठंडे और रूखे हाथों पर अपना नर्म-व-गर्म हाथ जरूर रख देती। वह इस तरह उसके पास आकर बैठती कि, बदन से बदन जरूर मस हो जाता और अब जब भी वह नये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके लिए, कलके करिश्मेकी एक झल

इन्हें नयी साड़ीकी प्राप्तिके उल्लासमें आगामी बेहतर चीजोंकी उम्मीद दीखती है। आज, भारतके सुविस्तृत सूती मील उद्योग द्वारा आश्चर्यजनक गतिसे कपड़े तैयार होते हैं। किसी समयकी सुसुप्त कला पुनर्जागृत हो उठी है, जिसमें यंत्र युग के प्रचुर उत्पादन एवं खूबसूरत बुनाईकी परंपराका समन्वय है।

राष्ट्रकी बढ़ती हुई जरूरतोंको मद्दे नजर रखते हुए मफतलाल ग्रुप् देशकी आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति में हाथ बटाकर अग्रसर होने में प्रयत्नशील हैं। आज, देश-भरमें सभी प्रकार की जनता के लिए मफतलाल ग्रुप् विभिन्न प्रकार के अनेकों उत्पादन — सूती कपड़े, जूट, शक्कर, रंग, रसायन-निर्मित करते हैं।

मफतलाल ग्रु

शोरॉक, अहमदाबाद. न्यु शोरॉक, नदियाद. स्टैंडर्ड, बम्बई. स्टैंडर्ड, देव
न्यु चायना, बम्बई. सासून, बम्बई.
न्यु युनियन, बम्बई. सूरत कॉटन,
मफतलाल फाइन, नवसारी. गगाल
जूट, कलकत्ता. इंडियन डायस्टफ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए आने की इजाजत किसने दी ?"

बिजली गिरानेवालों पर बिजली गिरी !

गुलगूना कुछ सेकेंड तो बुत बनी खड़ी रही, फिर सिसकती हुई अपने कमरे में भाग गयी।

शेख को महसूस हुआ, जैसे उसने गुलगूना के साथ बुरा सलूक किया, अपने आप पर आनेवाला गुस्सा उस बेचारी पर उतारा। अपनी ज्यादती पर शर्मिंदा होकर वह उठा कि, गुलगूना से माफी माँग ले। उसने जल्दी से कदम उठाकर पर्दा उठाया। सामने ही गुलगूना खड़ी नजर आयी। वह सिसकती जाती थी, अपने कपड़े नोचकर फेंकती जाती थी और पाँव पटकती जाती थी। शेख का इरादा टूटने लगा, उसके कदम रुकने लगे और बदन में चिनगारियाँ-सी उड़ती हुई महसूस होने लगीं। वह घबरा गया और उसका एक हाथ दाढ़ी के बालों तक पहुँच गया। खुश्क अँगुलियों में इन सूखे तारों की रगड़ ने जैसे उसे जगा दिया। उसने खुद को बुरा-भला कहा और अपने कमरे में लौट आया।

दो घंटे बाद शेख ने गुलगूना को आवाज दी। वह सिर झुकाये हुए आयी, तो शेख ने शर्मिंदगी जाहिर करते हुए कहा—"तुम मेरे सामने नीमबरहना (अधनंगी) नाचती हुई चली आयीं, इसमें तुमने कोई गुनाह नहीं किया, मैं तुम्हारा मालिक हूँ और तुम मेरी कनीज हो; लेकिन तुम्हारा यह काम बगैर मेरी इजाजत के था, इसलिए मुझे गुस्सा आ गया, और गुस्सा हराम है। इसलिए मैं खुद को सजा देने के तौर पर लगातार तीन दिन रोजा रखूँगा।"

बात शुरू होने पर गुलगूना को जो आस बंधी थी, वह खत्म होने पर टूट गयी। अपनी हार का अहसास उसके दिल में बढ़ गया। वह औरत थी, जो कभी अपनी हार नहीं मानती। इसलिए उसने अपने पुराने हथियार बदल डाले। उसने रोजों में भी शेख का साथ दिया, और पाँचों वक्त उसके पीछे आकर नमाज भी पढ़ने लगी। नमाजों और रोजों के इस साथ ने शेख की जिन्सी आग को और भी भड़काया। वह गलगूना को चोरी-चोरी और ललचायी हुई नजरों से देखने लगा। मगर जब भी उसके अंदर का शैतान उसे हद से ज्यादा सताता, वह रोजों में ज्यादती कर देता, नमाजें बढ़ा देता और कुरानशरीफ पढ़ने में कई घंटे ज्यादा लगा देता; लेकिन जज्बात और अक्ल की इस खींच-तान में उससे लिखने-लिखाने का कोई काम न बन पड़ा। दिमाग गुलगूना के सिवा किसी और चीज के बारे में सोच-विचार करने पर तैयार ही न होता था।

उधर गुलगूना ने भी अपना रंग-रूप खोना शुरू कर दिया था। रोजे और नमाज रूह की ताकत चाहे कितनी ही बढ़ायें, मगर बदन की तमाम कशिश छीन लेते हैं। गुलगूना के गुलाबी गाल अपना रंग खोने लगे, होंठों से ताजगी और आँखों से नशीलापन गायब होने लगा था। साथ ही उसे यह अहसास भी मारे डालता था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

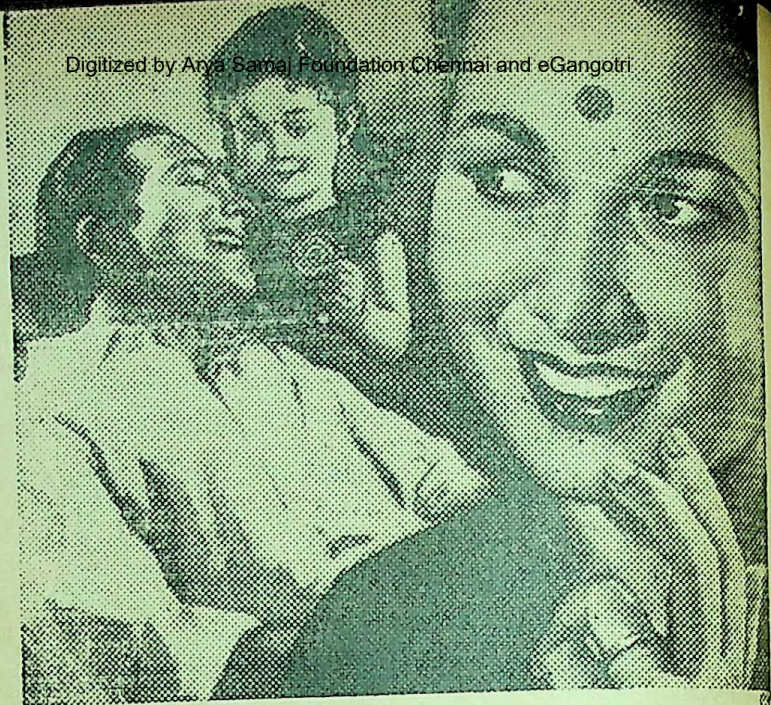

माँ के स्नेह-संसार में केवल सर्वोत्तम ही स्वीकार है...

परिवार के लिए माँ की पसंद डालडा

घर की छोटी सी दुनिया माँ के स्नेह की रचना है...अपने हंसमुख परिवार की हर छोटी छोटी बात पर माँ अपनी जान निछावर करती है... और खानपान की देखरेख पर उस का ध्यान सब से पहले जाता है। अपने सचेत अनुभव के कारण माँ को अपने परिवार के लिए डालडा ही पसंद है! डालडा बढ़िया वनस्पति तेलों से बनता है, और इस में विटामिन मिलाये जाते हैं जो आप के बाल-परिवार के लिए गुणकारी हैं। जी हाँ, स्वादिष्ट खानों के लिए आप का परिवार डालडा का हक़दार है!

डालडा वनस्पति

-एक विशेष; शुद्ध चिकनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि, जिसके कारण उसने ये सारे सामान के बदले किसी एक की होकर न बेले, वह अब भी बेपरवाह है ! एक दिन रहेगा !"

वह कमरे में नमाज के बाद खुदा से यही शिकायत कर रही थी, उसके गाल आँसुओं से तर थे कि, शेख किसी काम से अंदर दाखिल हुआ, और ठिटककर खड़ा हो गया। उसके दिल पर आरे चलने लगे। वह झपटता हुआ अपने कमरे में आया, दरबारी पोशाक पहनी और शाही महल की तरफ लपकता हुआ रवाना हो गया।

बादशाह की खिदमत में वह इसी तरह बदहवास पहुँचा।

"कैसे इज्जत बख्शी ?" बादशाह ने रस्मी बातों के बाद पूछा।

शेख ने जवाब दिया—"जो कनीज आलम-पनाह से माँगकर ले गया था, उसे वापस करने आया हूँ।"

"आप ही ने सिखाया था कि, बादशाह दी हुई चीज वापस नहीं लेता !"

"मैंने वह चीज आपसे सिर्फ कुछ दिनों के लिए ही ली थी, अपने बादशाह को रिआया की तरफ तवज्जोह दिलाने के लिए। वह एक पर्दा था, जिसका हटाना जरूरी था।"

"कहीं वह वापस होकर फिर पर्दा बन जाये ?" बादशाह ने मुस्कराकर पूछा।

"मुझे बादशाह पर भरोसा है कि, वह करोड़ों का दिलदार बनने के फायदे जानने

"आप उससे कुछ बेजार मालूम होते हैं।"

"हाँ, जो बादशाह की अमानत में खयानत करने पर उकसाये, उससे बेजारी जरूरी है।"

"तो आपने अमानत को अमानत की तरह रखा ?"

"जहाँपनाह, आप उससे ही पूछ सकते हैं।"

बादशाह ने कहा—"अच्छा, आप शाम को उसे यहाँ भेज दें; मगर वापस लेने की बात उससे बात करने के बाद ही तय होगी।"

उसी दिन शाम को गुलगूना अपने पुराने महलसरा में आयी और बादशाह को अपने नाच से इस कदर खुश किया कि, उसने उसे अपने पास बुलाकर कहा—"माँग, क्या माँगती है खास कनीज ?" और उसे बड़े यकीन की नजरों से देखने लगा कि, वह सिवाय बादशाह के पहलू के और कुछ माँग ही नहीं सकती। मगर गुलगूना ने हाथ जोड़कर अर्ज किया—"अपना घर, शेख की कनीजी !"

बादशाह तिलमिला उठा; मगर वह दिल का भी बादशाह था और शेख का शागिर्द ! उसने कहा—"जा, वहीं चली जा। तुझ पर भी मेरे उस्ताद का जादू चल गया !"

★

आरोग्य परम लाभ है। संतोष परम धन है। विश्वास परम बंधु है। निर्वाण परम सुख है।

—धम्मपद से

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो रंग करीब हर सतह को चमका सकता है

वह है शालीमार सुपरलैक

सिन्थेटिक एनामेल

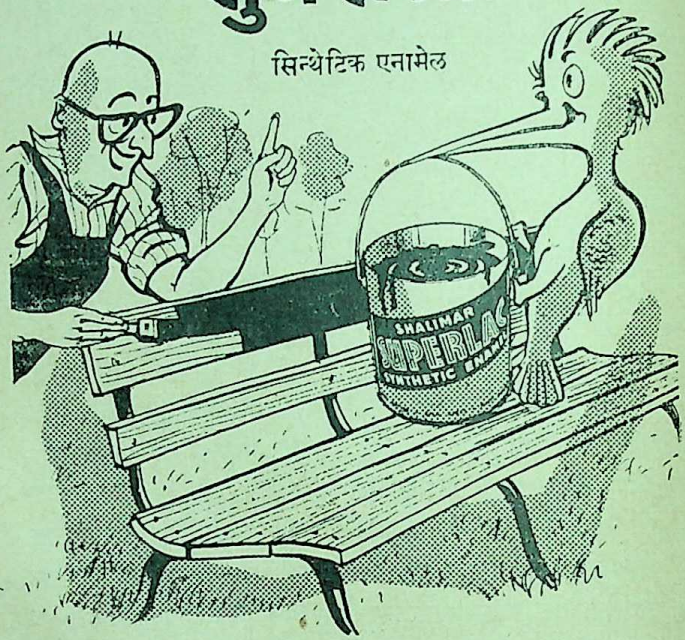

- जल्दी सूखकर कड़ा होनेवाला, बेहद चिकना सिन्थेटिक (कृत्रिम) एनामेल
- चाहे अन्दर लगाइये या बाहर
- कूँची से, छिड़क कर या डुबोकर चाहे जैसे लगाइये
- आपस में मिलानेलायक ३८ रंगों में

SHALIMAR PAINTS

JWTSPW 578 HIN

SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH COMPANY LIMITED

CALCUTTA . BOMBAY . MADRAS . NEW DELHI . KANPUR . (Agents overseas)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इज्जत

इवान बाजोव

जरा-सा खटका होते ही इवान क्रालिच दीवार पर से गली में कूद गया। कुछ क्षणों तक वह वहाँ भौंचक्का-सा खड़ा रहा। फिर उसने सतर्कता से अपने चारों ओर देखा। सघन अंधकार छाया हुआ था। आकाश में काले बादल उमड़े हुए थे। तेज ठंडी हवा सायं-सायं चल रही थी। सुनसान गलियों में चारों ओर निस्तब्धता व्याप्त थी। ऐसी निस्तब्धता मानो मौत का-सा सन्नाटा।

क्रालिच चिंतामग्न इधर-उधर चक्कर काटता रहा। वह किसी भी तरह इस कस्बे के दूसरी ओर जाना चाहता था। अचानक वह एक घर के निकट रुक गया। उसे दीवार से सटी कुछ काली आकृतियाँ दिखायी दीं। सांस रोककर वह दुबककर खड़ा हो गया और फिर तेजी से एक फाटक की ओर बढ़ चला। अचानक ही अँधेरे में उसका पैर एक सोये कुत्ते पर पड़ गया।

क्रालिच के कूदने व कुत्ते के भौंकने की आवाज से पहरेदार सतर्क हो गये और उनके हथियार खनकने की आवाज सुनायी देने लगी। दूर से किसी ने तुर्की भाषा में आदेश दिया—"रुक जाओ!" क्रालिच भाग खड़ा हुआ।

दूर से तेज आवाज आ रही थी—"रुक जाओ, वरना गोली मार देंगे।"

पर वह न रुका।

उसे लक्ष्य करके कई गोलियाँ छोड़ी गयीं; पर वह बच गया। अंधकार ने कवच की तरह उसकी रक्षा कर ली। वह भागा जा रहा था, जिधर उसके पैर लिये जा रहे थे। वह काफी दूर निकल आया था। उसकी साँस फूल गयी। थकावट के कारण उसके पाँव लड़खड़ाने लगे। हर कदम पर उसे यह लगने लगा कि, वह अब गिरा।

बिजली के तीव्र प्रकाश से आसपास का वातावरण पल-भर के लिए प्रकाशमान हो उठा। क्रालिच ने देखा कि, वह उस गाँव से बहुत दूर निकल आया है। पीछा करने वालों का कहीं पता नहीं था। लड़खड़ाकर वह धम्म-से एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसकी साँस धौंकनी की तरह चल रही थी।

आराम व ताजी हवा के कारण क्रालिच में उठ खड़े होने की शक्ति लौट आयी। बड़ी-बड़ी बूँदें टपकने लगी थीं। आँधी, मेह से बचने के लिए वह फिर बढ़ चला।

क्रालिच बुरी तरह भीग गया। वर्षा के कारण उसकी नजर धुँधआने लगी। वह और भी तेजी से भागने लगा। उसे पास ही कहीं ऊँचाई से पानी गिरने का तेज स्वर सुनायी दे रहा था। वहाँ कोई पनचक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भी चाहेंगी

कि 'मेरे भी बाल

ऐसे सुंदर हों!'

मुड़के जरा एक नज़र देखा! उसके सुंदर बालों की ओर आंखें बरबस खिंच गयीं-दिल में तमन्ना जाग उठी कि मेरे बाल भी ऐसे ही सुंदर होने चाहिए। अनोखी खुशबूवाला 'केशा' बालों के पोषक तत्वों से भरपूर है। इसे इस्तेमाल करने से सुंदर बाल उगते हैं। आप के बालों पर अनोखी बहार आ जाती है-ऐसी बहार जिसकी आप तमन्ना करते हैं।

आज ही अपने बालों की रक्षा के लिए इस्तेमाल करें

केशा

लोमा के उत्पादकों की एक और बढ़िया भेंट

HIN.

एकमात्र एजेंट्स:

एम. एम. खम्भातवाला,

अहमदाबाद-१

एजेंट्स:

सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,

बम्बई-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। बिजली के प्रकाश में उसे सामने ही और काफी दूर पनचक्की की इमारत नजर आयी। वह उसी ओर बढ़ चला। जरा-सा हाथ लगाते ही फाटक खुल गया और वह भीगा हुआ ही अंदर चला गया।

उस कमरे में अँधेरा था। कहीं कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। वह कुछ देर सुस्ताया। बाहर बरसात थम गयी थी। हवा का जोर कम पड़ चला था। आकाश में चंद्रमा काले मेघ-खंडों की कोरों को रजत कर रहा था। रात निखर आयी थी। वह सुस्ताने लगा।

बाहर कदमों की आवाज सुनाई दी। झट से क्रालिच वहाँ रखे अनाज की ओट में हो गया। दूसरे ही क्षण लैम्प जल उठा।

क्रालिच ने झांककर उस व्यक्ति को देखा। वह एक लम्बे कद का देहाती था। साथ में एक तेरह-चौदह साल की छरहरी लड़की, सुंदर व सादे लाल लिबास में थी। वह उसकी बेटी थी।

लड़की ने दरवाजा बंद कर दिया। उसके क्रिया-कलापों में बचपन की झलक थी। लम्बी बरौनियों वाली काली आँखों में सरलता की चमक थी।

वह घटवार कहने लगा—"अच्छा हुआ, जो हमने पनचक्की बंद कर दी, वरना यह बाढ़ इसे तोड़ ही देती। हमारा सौभाग्य है कि, पीछे से कोई चोर यहाँ नहीं घुसा।"

बिना कुछ कहे, मरीका ने कमरे के दूसरे सिरे पर अपने व पिता के लिए फर्श पर कम्बल बिछाये। फिर उसने प्रार्थना की

क्रालिच बड़ी उत्सुकता से इस दृश्य को देख रहा था। पिता का चेहरा अच्छे स्वभाव का परिचय दे रहा था। क्रालिच को संतोष हुआ। वह उसके पास जाकर सहायता माँगने ही वाला था कि, अचानक बाहर से किसी ने जोरों से दरवाजा खटखटाया।

घटवार ने छेद में से झाँककर बाहर देखा और जब वह वापस मुड़ा, तो उसका चेहरा फक था।

दरवाजे पर फिर से दस्तक पड़ी और किसी ने चिल्लाकर दरवाजा खोलने के लिए कहा। साथ ही कुत्ते के भौंकने की आवाज आयी।

इमेक्सिज पेखलीवान इस इलाके का बदनाम व्यक्ति था। उससे लोग तंग आये हुए थे। अभी पंद्रह दिन पहले उसने इवानोवो गाँव में गुंचो दालिया के सारे परिवार को मार डाला था। और एक दिन पहले उस बच्चे का सिर काट लिया था, जिसे इस गाँव में लाया गया था।

घटवार कुछ देर खड़ा सोचता रहा। उसने अपना सिर दोनों हाथों से पकड़ रखा था और वह समझ नहीं रहा था कि, क्या करे। जल्दी से उसने अपना कुल्हाड़ा अनाज के ढेर के पीछे छिपा दिया, जहाँ क्रालिच दुबका हुआ था। फिर उसने अच्छी तरह से मरीका को कम्बल से ढक दिया और दरवाजा खोला।

दो शस्त्रधारी तुर्क अपने कंधों पर बंदूकें उठाये अंदर घुसे। उनमें से जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ!

लाइफ़बॉय से नहाइये ... स्नान का आनंद
इसी में है! लाइफ़बॉय से नहा कर क्या मज़ा आता है ...
तन मन तरोताज़ा हो जाता है! लाइफ़बॉय,
गंदगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है। लाइफ़बॉय से
आपका सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा!

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खूंख्वार दिख रहा था, वहीं इमेक्सिज पेखलीवान था। अंदर घुसते ही उसने तेज निगाहों से इधर उधर देखा। दूसरा व्यक्ति खूब मोटा ताजा तो था; पर वह लंगड़ा था और उसके चेहरे पर निर्दयता झलक रही थी। वह शिकारी कुत्ते को पकड़े हुए था और अंदर घुसते ही उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया।

इमेक्सिज पेखलीवान ने क्रोध की नजरों से घटवार की ओर देखा। "तुमने दरवाजा क्यों नहीं खोला ?" उसने पूछा। घटवार ने जमीन तक झुककर उखड़े से शब्दों में बहाना बनाया। उसने एक बार घबरायी हुई दृष्टि से सो रही मरीका की ओर देखा।

"यहाँ क्या तुम अकेले ही हो ?" इमेक्सिज ने कहा।

"अकेला ही हूँ," घटवार ने जल्दी से उत्तर दिया। फिर यह जानकर कि, झूठ बोलने से कोई नतीजा नहीं निकलेगा। उसने कहा—"मेरी बच्ची वहाँ सो रही है।"

तभी मरीका ने अपना मुँह उघाड़ा और उन लोगों की ओर देखा। लैम्प का पीला प्रकाश उसकी गोरी गर्दन पर अठखेलियाँ कर रहा था। दोनों तुर्कों ने ललचाई आँखों से मरीका को ताका। इमेक्सिज ने चेहरे पर नरमी लाकर घटवार को कहा :

"चोरबादजी, घबराओ नहीं, जाओ और हमारे लिए रकिया की एक बोतल (शराब) लाओ।"

"पेखलीवान आगा, अब आधी रात का समय है और कस्बे की सभी दुकानें बंद हो चुकी हैं," घटवार ने कहा। वह यह सोचकर काँप रहा था कि, इन लोगों के बीच में मरीका को कैसे अकेली छोड़ा जा सकता है।

लंगड़े तुर्क ने कहा—"जाओ। कोई न कोई दुकान हमारी खातिर खुली ही होगी। हम चाहते हैं; तुम हमारी आवभगत करो। इसी से अच्छे सम्बंध बनेंगे..."

इमेक्सिज लड़की को एकटक घूर रहा था, जो वहाँ लापरवाही से लेटी हुई थी। जब उसने देखा कि, घटवार अभी तक वहाँ खड़ा है तो उसने नफरत से भौंहें सिकोड़ीं; पर फिर बनावटी नम्रता से उसने कहा।

"चोरबादजी, माशाल्हा कैसी प्यारी बेटी है तुम्हारी ! उसकी खुशकिस्मती है कि, वह आज हमारी आवभगत करेगी। अब जाओ; जाकर रकिया लाओ। हम तुम्हारी पनचक्की का खयाल रखेंगे। फिर उसने उसे धमकाते हुए कहा—"तुम जानते हो न इमेक्सिज-पेखलीवान को ?"

घटवार एक क्षण में ही आनेवाले खतरे को भाँप गया था। उसकी सरल और निष्कपट आत्मा क्रोध से तिलमिला उठी। पर वह जाल में फँस गया था। इन दो शस्त्रधारी गुंडों के सामने वह अकेला ही था। उनसे लड़ना पागलपन होगा और उसका कोई फायदा नहीं। यद्यपि उस समय उसे अपनी मौत से भी डर नहीं था, पर उसके मरने से बेटी तो बच नहीं सकेगी।

उसने अपने दुश्मनों के दिलों में दया पैदा करने का प्रयत्न किया—"अगालार,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

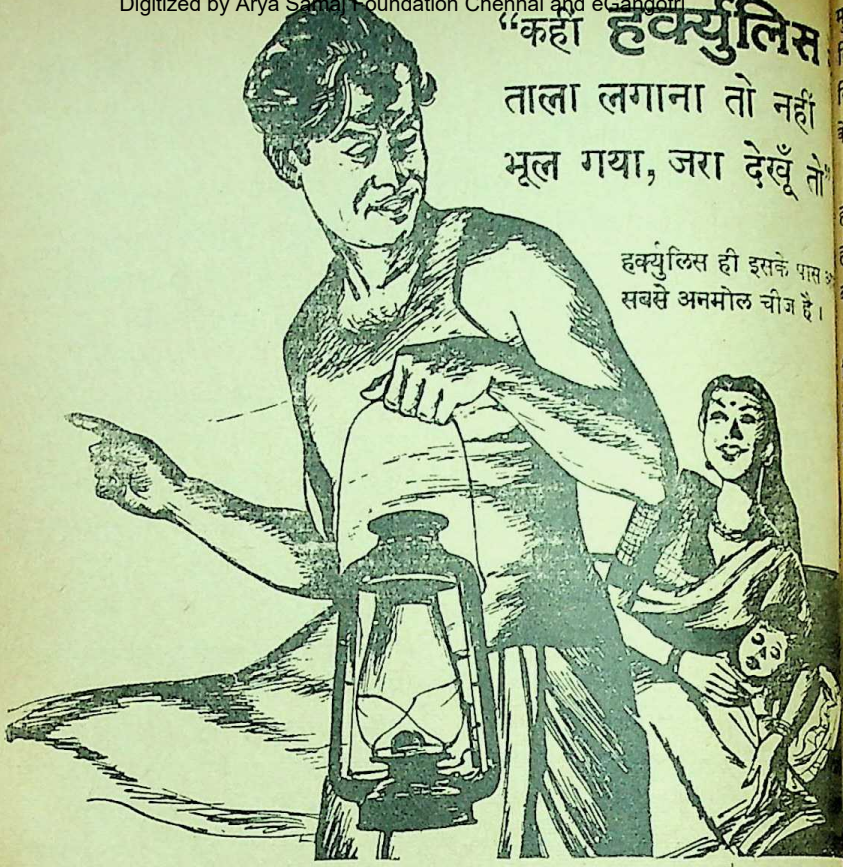

साइकिल खरीदने के लिए शायद आपको घर के दूसरे खर्चों में कुछ-कुछ बचाना पड़ता है जैसे बस का किराया, नास्ते का खर्च, साड़ियाँ और जेवर आदि।

इसलिए आप सबसे अच्छी साइकिल ही लेना पसन्द करेंगे। आप बेफिक्र होकर हर्क्युलिस ही खरीदिए। दुनिया के १३४ देशों में लोग यही साइकिल सबसे अधिक चाहते हैं। इतनी खूबसूरत बनावट की और पानी की तरह चलनेवाली साइकिल आपको दूसरी नहीं मिलेगी।

आधुनिक साज-सामानों से लैस भारत की सबसे बड़ी फैक्टरी में हर्क्युलिस साइकिल का हर कल-पुर्जा नि तरीके से तैयार किया जाता है। एक विशेष "स्प्रे-पेंट जिंग" प्रक्रिया से इसमें जंग लगने का डर नहीं इस पर तीन बार इनामेल चढ़ाया जाता है जिससे नई जैसी चमक-दमक बहुत दिनों तक बनी रहे।

आपकी साइकिल आपकी पूँजी है और हर्क्युलिस से बेहतर साइकिल भला कहाँ मिलेगी?

हर्क्युलिस

केवल साइकिल नहीं,
सारे जीवन की साथी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ बूढ़े और बीमार आदमी पर दया करो। दिन-भर के काम ने मुझे चकनाचूर कर दिया है। मुझे सोने दो। मेरी इज्जत आप के हाथ में है।"

लंगड़े ने क्रोध से कहा—"जल्दी करो, हमें प्यास लगी है। तुम इतनी बातें बनाते हो; क्योंकि यह पनचक्की तुम्हारी है। यही बात है न! जाओ, झट से रकिया लाओ।"

और उसने उसे दरवाजे की ओर ढकेल दिया। "इतनी रात गये मैं अपनी पनचक्की छोड़कर कभी बाहर नहीं जाता। मुझे यहाँ रहने दो।" घटवार ने कहा।

तब दोनों तुर्कों की बनावटी नम्रता जाती रही और उनकी बर्बर दृष्टि जैसे घटवार को भेद गयी।

"हरामी कुत्ते, दाँत दिखा रहा है। देखा तुमने?" इमेक्सिज ने कहा। उसकी आँखें सुर्ख हो चली थीं।

"मुझे मार डालो, पर मैं अपनी बच्ची को छोड़कर नहीं जाऊँगा।" घटवार ने यद्यपि दयनीयता से यह कहा; पर उसकी आवाज में दृढ़ता भी थी।

इमेक्सिज खड़ा हो गया।

"टोपल हसन, इस हरामी को बाहर निकाल दो, वरना मैं अपना चाकू निकालता हूँ।"

लंगड़ा घटवार की ओर बढ़ा और उसने उसे दरवाजे की ओर धक्का दिया। वह उसे ठोकरें मारकर बाहर निकालने लगा। घटवार गिरता हुआ उठा और चिल्लाने लगा—"बचाओ, बचाओ!"

आवाज सुनकर मरीका जाग उठी और घबराई होकर इधर-उधर देखने लगी। जब उसने इमेक्सिज को चाकू खोलते हुए देखा, तो वह चीख मारकर अपने पिता की ओर दौड़ी।

घटवार ने अपनी बेटी को अपनी छाती से चिपटाकर इमेक्सिज से कहा—"दया करो, मुझ पर दया करो।"

पर तभी इमेक्सिज का इशारा पाकर लंगड़ा क्रुद्ध शेर की तरह घटवार पर लपका। उसने उसकी बाँह पकड़कर मरोड़ी।

"मेरी मदद करो, लोगों, मेरी मदद करो!" घटवार हताशा से चिल्लाने लगा। "क्या यहाँ कोई नहीं है? मरीका, यहाँ आओ।" वह डर के मारे जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

इस समय तक क्रालिच बुत बना छिपा हुआ था। और अपने सामने हो रहे इस दृश्य को देख रहा था। उसके रोयें खड़े हो गये थे। उसके सारे शरीर में एक सिहरन दौड़ रही थी।

जब उसने घटवार को मदद के लिए पुकारते हुए सुना, तो उसका खून खौलने लगा। अब उसमें न हिचकिचाहट थी, न कमजोरी, और न डर ही। अनायास ही उसने दृढ़ हाथों से कुल्हाड़े को पकड़ा। वह अनाज के ढेर के पीछे से बाहर निकला। और तनकर खड़ा हो गया। फिर एक झटके से वह इमेक्सिज पर लपका, जो उसकी ओर पीठ किये हुए खड़ा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनसदा से पौष्टिक

आहार बनाइये

वनसदा

अ और ड
विटामिनयुक्त वनस्पति

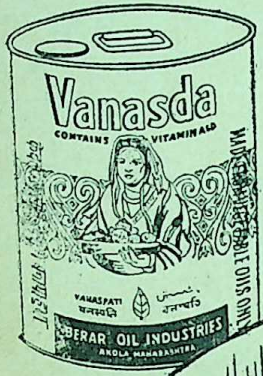

वनसदा से आहार की पोषणशक्ति बढती है। वनसदा पौष्टिक और ताजा होता है। वनसदा इस्तेमाल कीजिये और देखिये यह सात्विक आहार कितने स्वाद से खाया जाता है।

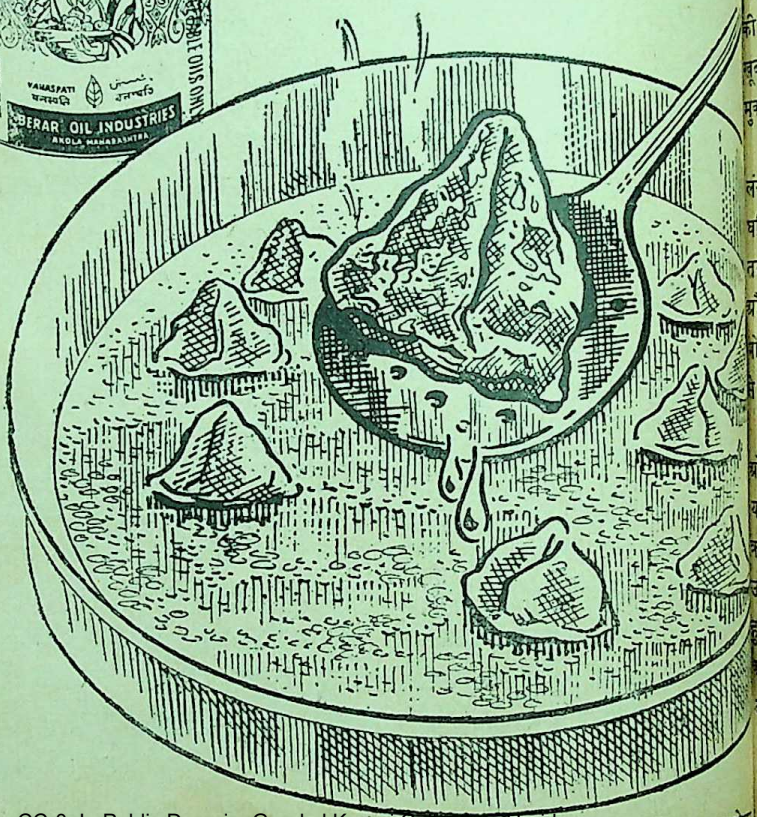

बेरार आईल इंडस्ट्रीज, अकोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने पूरे जोर से उसके सिर पर कुल्हाड़े का वार किया।

अचानक ही यह घटना देखकर वह लंगड़ा, जो घटवार को रस्सी से बाँध रहा था, मुड़ा और उसने पिस्तौल निकालकर क्रालिच पर गोली चलायी। कमरा धुँए से भर गया। लैम्प बुझ गया। अब अंधकार में एक भयानक संघर्ष शुरू हुआ। हाथापाई की आवाजें आ रही थीं। पहले लड़नेवाले दो थे, अब तीन हो गये। वे चीखते-चिल्लाते हुए अंधकार में गिरते और उठते, जोर-जोर से साँस लेते और गुर्राते थे। और कुत्ते के भौंकने की आवाज भी आ रही थी। लंगड़ा जो खूब हट्टा-कट्टा था, डटकर उन दोनों का मुकाबला कर रहा था।

जब दुबारा लैम्प जलाया गया, तो लंगड़ा फर्श पर गिरा मौत की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा था। क्रालिच ने किसी तरह से उसका चाकू काबू में कर लिया और फिर वही चाकू उसके गले में घोंप दिया। दोनों तुर्कों के शरीर खून से लथपथ थे।

अब घटवार ने आश्चर्य से क्रालिच की ओर देखा। वह सोचने लगा, पता नहीं, यह कहाँ से सहायता के लिए आ गया। क्रालिच एक लम्बा तगड़ा युवक था। उसका चेहरा थकान से पीला पड़ा हुआ था। उसकी काली और तीखी आँखें अंदर धँसी हुई थीं। उसके सघन बाल धूल से सने थे। फटी हुई गीली जैकट पर कीचड़ के धब्बे थे। वह बिना कमीज के कोट पहने हुए था, जिसके बटन नदारद थे। पतलून भी फटी हुई थी और जूते टूटे हुए। वह इस तरह दिखाई पड़ता था, मानो किसी जेल से भाग कर आया हो या जेल जा रहा हो। घटवार को वह ऐसा ही लगा। पर उसने उसे सहानुभूतिपूर्वक देखा और बड़ी नरमी से कहा—"मुझे नहीं पता, तुम कौन हो और कैसे यहाँ आये हो। पर मैं तुम्हारे अहसान का बदला सारी उम्र भी नहीं चुका सकूँगा। तुमने मुझे मौत के मुँह से बचाया है, और इससे भी अधिक तुमने मेरी बेटी की इज्जत को बचाया है। ईश्वर तुम पर दयादृष्टि रखे। सभी लोग तुम्हारे कृतज्ञ होंगे। क्या तुम जानते हो; यह मरनेवाला कौन है। यह इमेक्सिज है, जिसके भय से गर्भस्थ बच्चे तक माँ के पेट में बिलख उठते हैं। आखिर लोगों को इस जालिम से छटकारा मिला। बेटा, मैं तुम्हारा बार-बार शुक्रिया अदा करता हूँ।"

क्रालिच ने आँखों में आँसू भरकर सरल दिल से निकली हुई इन बातों को सुना और तब गहरी साँस भरकर कहा:

"मैंने अधिक कुछ नहीं किया। हमें अभी केवल दो से ही छटकारा मिला। पर अभी ऐसे हजारों दस्यु हमारी धरती पर छुट्टे घूम रहे हैं। लोग तब तक स्वतंत्र नहीं हो सकते, जब तक वे इन जालिमों से मुक्ति नहीं पा लेते।

— अनु० सुखबीर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरी
जरूरी
जरूरी

बहुत जरूरी खबर भेजनी है,

क्योंकि कोई सख्त बीमार है।

यह अग्रता तार (प्रायोरिटी टेलीग्राम) से भेजी जा सकती है।

बीमारी, दुर्घटना, या मृत्यु जैसे अवसरों पर अग्रता तार का प्रयोग कर सकते हैं।

इस तरह के तार तुरत (एक्सप्रेस) व आवश्यक (अर्जेण्ट) तारों से पहले भेजे जाते हैं, पर शुल्क केवल एक्सप्रेस तार का ही लिया जाता है।

इस तरह का तार भेजते समय फार्म पर अग्रता या प्रायोरिटी शब्द लिख दीजिए।

हमें उत्तम सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

डीए ६०/५११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

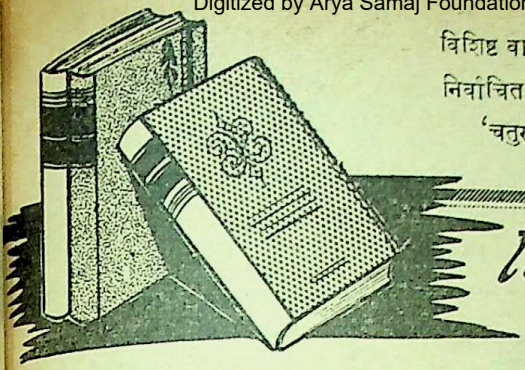

विशिष्ट वाङ्मय योजना की निर्णायक समिति द्वारा निर्वाचित दो ग्रंथों–'पहला नास्तिक' और 'चतुरसेन कथा-साहित्य'–का परिचय ।

विशिष्ट वाङ्मय

पहला नास्तिक

लेखक : चंद्रगुप्त विद्यालंकार; प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली; पृष्ठसंख्या: १८४; मूल्य : तीन रुपये ।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार हिन्दी के जाने-माने कहानी लेखक हैं । पिछले छत्तीस वर्षों से आप कहानियाँ लिख रहे हैं । प्रस्तुत कहानी संग्रह में पंद्रह कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं । अठारह वर्ष की अवस्था में आपने जो कहानी 'मेरे मास्टर साहब' शीर्षक से लिखी थी, वह भी इस संग्रह में है । और सबसे ताजी कहानी 'पहला नास्तिक' भी संग्रह में सम्मिलित की गई है ।

इस संग्रह में दी गयी कहानियों में यद्यपि ३५-३६ वर्ष का अंतर है; किंतु कहानियों की शैली और भाव-भूमि में विशेष अंतर नहीं आया है । जीवन के नये अनुभवों के साथ कहानी की पृष्ठभूमि में नवीनता और विविधता आती गयी है । कहानी का क्षेत्र अधिक विस्तीर्ण और गहरा होता गया है । कहानी के शिल्प-प्रयोग में भी अभिनव-शैली का समावेश दृष्टिगोचर होता है । लेकिन कहानी का स्तर प्रायः वही रहा है, जो वर्षों पहले था ।

इस संग्रह की कहानियाँ पढ़ने से यह बात बहुत ही स्पष्ट हो जाती है कि, चंद्रगुप्त विद्यालंकार का बौद्धिक धरातल पहले से ही पर्याप्त उन्नत था । मानव-मन और मानव-सम्बंधों की गहराई समझने में उन्हें देर नहीं लगी । समय के साथ उनकी प्रतिभा निरंतर वृद्धिशील रही । प्रस्तुत संग्रह की कहानियाँ इस प्रतिभा की प्रमाण हैं ।

इस पुस्तक की भूमिका लिखते हुए लेखक ने अपनी कहानियों की शैली के सम्बंध में कुछ पंक्तियाँ लिखीं हैं, वे उद्धरणीय हैं । आपने लिखा है–"अपनी रचनाओं को मैं सोद्देश्य बनाने का प्रयत्न करता हूँ । मानव-मस्तिष्क और मानव-क्रिया-कलाप जिन परिस्थितियों और शक्तियों से संचालित होता है, उनमें श्रेय और प्रेय दोनों श्रेणियाँ हैं । मैं अपनी रचनाओं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगरूप की नई मुसकान

आपके अपने हाथों में

आपका मुसकराता हुआ रूप-कमल धूप, हवा और धूल से क्यों कुम्हलाये? हिमालय बुके स्नो से अपने मुखमंडल की कान्ति को उभारिये — अपने असली रूप को निखारिये। इसके निरन्तर उपयोग से आपके चेहरे की खोई हुई ताजगी लौट आती है और कुम्हलाई हुई त्वचा पर फिर से बहार आ जाती है!

और हिमालय बुके स्नो से आपका चेहरा फुन्सियों और झुर्रियों से भी सुरक्षित रहता है! जरा अपने मुख-मंडल के नाज उठाइये — एक नई मुसकान खिलाने के लिए....

हिमालय बुके स्नो

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड ने, इरास्मिक, लण्डन, के लिए भारत में बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रय का आश्रय लेता हूँ। प्रत्येक मनुष्य के चरित्र और स्वभाव में अच्छे और बुरे दोनों पहलू रहते हैं। मैं चाहता हूँ कि, मेरी रचनाओं से अच्छे पहलुओं को प्रेरणा मिले।"

आज के युग में, जबकि कहानी-लेखकों के पास कहने को कोई मूल्यवान् वस्तु नहीं होती, चंद्रगुप्तजी का यह कहानी-संग्रह पुरानी परम्परा को नया गौरव प्रदान कर सकेगा। संग्रह की सभी कहानियों का मूल-भाव अत्यंत प्रेरणादायी है।

इस संग्रह में मैं जरूर बचा लूँगा, खन्ने का कुआँ, पहला नास्तिक, सपना, दुआ, डाक्टर की डायरी, मेरे मास्टर साहब, ताड़ का पत्ता, गोरा, आँसू, उत्तेजना, कैफियत, चोट, बदला और संदेश, शीर्षक कहानियाँ संगृहीत हैं।

—स० का० वि०

चतुरसेन कथा-साहित्य

बाहर-भीतर, दुखवा मैं कासे कहूँ, धरती और आसमान, सोया हुआ शहर— ये चार खंड; प्रकाशक: राजपाल एंड संस; मूल्य : ४ रुपये प्रति खंड।

हिन्दी-कथा-साहित्य में स्व० आचार्य चतुरसेन शास्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। वे प्रेमचंदजी के बाद तथा आधुनिक कथा-साहित्य के बीच की कड़ी हैं। कथा-साहित्य के उदय से लेकर उसकी आधुनिकता तक के काल को उन्होंने चित्रित किया है।

उनकी कहानियों की अपनी विशेषताएँ हैं। 'वे पाठकों के लिए लिखी गयी हैं समालोचकों के लिए नहीं', और यह सत्य भी है कि समालोचकों ने एक लम्बे काल तक उन्हें विस्मृति के गर्भ में डाले रखा। प्रारम्भिक कहानियों से ही उन्हें पर्याप्त प्रसिद्धि मिलने लगी और समालोचकों ने आज तक इन्हीं कहानियों को ही मापदंड बनाये रखा। जबकि आचार्य चतुरसेन शास्त्री का कथा-साहित्य विस्तृत होता गया, उसमें दिनों-दिन परिपाक एवं निखार आया।

इन कहानियों में राजपूती शौर्य, मुगल शैली, सामाजिक सुधारवाद, रंगमहलों की चित्रसारी, वेश्या-जीवन की पंकगत कमनीय कोमल मार्मिकता, राष्ट्रीय चेतना, विज्ञान, व आधुनिक भावात्मक शैलियों के व्यापक दर्शन होते हैं। भले ही हमारी समालोचनाओं के मापदंड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच परीक्षणोंसे श्रेष्ठ प्रमाणित

पकाने का तेल

शुद्धता
स्वाद
खुशबू
स्वास्थ्य
कमखर्ची

पेरेशूट
ब्रान्ड
शुद्ध किया हुआ
मूँगफली का
तेल

२, ४ व १५½ किलो की
मुहरबन्द टिन में प्राप्य

दि बोम्बे ऑइल इंडस्ट्रीज़
प्राइवेट लि., बम्बई ३

SRB

BOI-P-06 H

मुख्य स्टॉकिस्ट : अकबरअली इब्राहिमजी, वीर नरीमन रोड, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

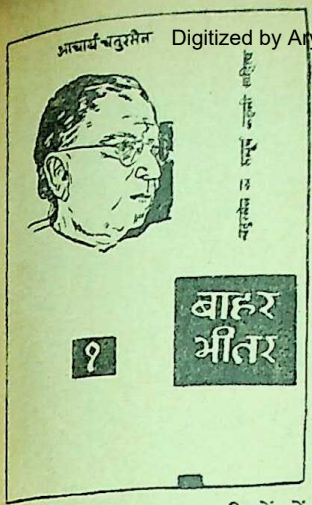

पुराने ही रहे हों, अथवा प्रतीकों में परिवर्तन हुआ हो, हिन्दी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंदजी के काल से लेकर आज के कथा-साहित्य के मध्य जो रिक्तता मिलती है, उसकी पूर्ति आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने की है।

कहानियों का गठन, शैली, पृष्ठभूमि और रस-प्रवाह प्रेमचंदजी के अनुकूल ही है। प्रेमचंदजी के कथा-साहित्य में ठेठ देहात के सजीव चित्रण ने व्यापक निखार पाया है, तो चतुरसेनजी की कहानियों में श्रीमंतों के केलि-कलाप, उनके छल-छिद्र, मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी उपेक्षा सचोट चित्रित हुई है।

कहानियों की रुचि व अरुचि का प्रश्न उन्होंने अपने पाठकों पर छोड़ा है। विशाल पृष्ठभूमि, बहुरंगी चित्रण, विविध शैली, समयानुकूल रस-प्रवाह तथा जनजीवन के मर्म को छूने की क्षमता इनमें है। यही कारण है कि वे आज भी लोकप्रिय हैं। समय-समय पर भावनाओं व सामाजिक परिवर्तनों के आधार पर लिखी गयी ये कहानियाँ स्वयं अपने काल के साहित्य का इतिहास हैं। कहीं भी विशृंखलता नहीं मिलती, जीवन की अगाध मार्मिकता, स्पष्टवादिता तथा सुरुचिपूर्ण सज्जा के अतिरिक्त इनमें सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, परिश्रमपूर्वक इन्हें सजाया व संवारा गया है।

समय के साथ-साथ ये कहानियाँ निखरती गयी हैं और उनकी अंतिम कहानियाँ तो इतनी सुंदर व सजीव हैं कि, वृद्ध चतुरसेनजी के चिर-युवा हृदय व तेजस्वी भावनाओं के अलावा धैर्य व गम्भीर चिंतन को भी प्रस्तुत करती हैं।

दीर्घकाल तक चिर-युवा की तरह उन्होंने प्रगतिशील परिवर्तन-चक्रों का अनुकरण किया। समयानुकूल जन-मानस को आलोड़ित करन व जन-जीवन का निकट से अध्ययन कर हिन्दी-साहित्याकाश को चित्रित करने में उनकी तूलिका सफल रही है।

जिस पृष्ठभूमि के आधार पर इन कहानियों की रचना की गयी है, उनमें से कई उस पृष्ठभूमि के लोप होने के कारण कुछ पुरानी पड़ गयी हैं; परंतु शैली, विवेचन, मार्मिकता, रस-प्रवाह के अनुसार आज भी लोकप्रिय हैं—वे उतनी ही पाठकों के हृदय के निकट हैं, जितनी वे स्वयं लेखक की लाड़ली थीं।

—युधिष्ठिर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक गौरवपूर्ण भूत, प्रगतिशील वर्तमान और आशामय जगमगाता हुआ भविष्य—यह है भारत का भाग्य लेखा। बालू की घड़ी से गिरते हुए बालू के कण बदलते हुए समय और समय के साथ होते हुए निर्माण के प्रतिक हैं—और आज एक नवीन भारत का निर्माण हो रहा है।

बदलते हुए समय के साथ भारत की बदलती हुई रुपरेखा को एसीसी ने अपना योग देते हुए ३५,००,००० टन सीमेंट प्रति वर्ष प्रदान किया है और आशा है कि भविष्य में वे अधिक सीमेंट प्रदान कर सकेंगे।

ACC

दि एसोसिएटेड सीमेंट कम्पनीज़ लिमिटेड

दि सीमेंट मार्केटिंग कम्पनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

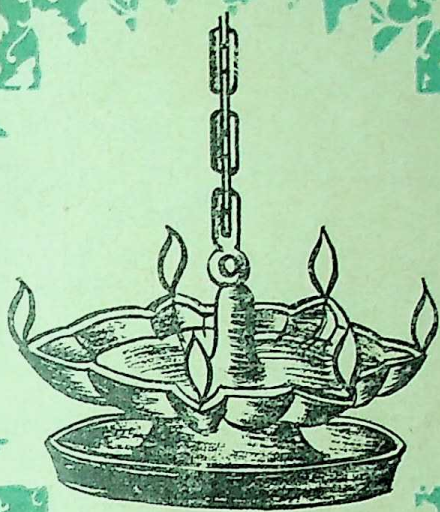

अखंड ज्योति

—आरवी

तमिळ-प्रदेश के ग्राम-जीवन के निरूपण में सिद्धहस्त लेखक श्री आरवी (आर० वेंकटरामन्) के इस लोकप्रिय उपन्यास (मूल नाम 'अणैय विळक्कु') में सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन के परिवेश में आदर्श प्रेम की उत्कटता एवं विविधरूपता दर्शायी गयी है।

रूपांतरकार : सरस्वती रामनाथन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुग्धफेन की चादर-सी ओढ़े मल्लै नदी का बालुकामय तट नीरव-निश्चल था। उसकी नर्म और शीतल गोद में लेटा था संतानम् – चाँद की उजली किरणों के शीतल स्पर्श में खोया-सा।

शरत्कालीन आकाश बिल्कुल धुला-धुला-सा था। धुनी हुई कपास-जैसे सफेद बादलों के छोटे खंड उसमें धीमे-धीमे तैर रहे थे। संतानम् मंत्रमुग्ध-सा उन्हें देख रहा था। तभी आवाज आयी कू कू कू... कोयल की नहीं, रेल के इंजन की। साढ़े सात की गाड़ी छूट रही है...संतानम् ने हाथ घड़ी पर नजर डालते हुए अपने आप से कहा।

कलाई पर से ज्यों ही नजर ऊपर उठायी, उसे वृक्षों की छाया में से एक आदमी बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया। यह और कोई नहीं, शिवस्वामी था–संतानम् का जिगरी दोस्त। सच्ची मित्रता किसे कहते हैं, इसके जीवंत उदाहरण थे ये दो मित्र।

संतानम् सम्पन्न जमींदार ब्राह्मण-परिवार की इकलौती संतान था। इसलिए जिद्दी था और इरादे का पक्का भी। शिवु यानी शिवस्वामी की दृढ़ता बेजोड़ थी; परंतु हृदय से वह बड़ा उदार और शीघ्र दयाद्रवित होनेवाला था। अपने भावों को छिपाना, दूसरों को छलना उसे आता ही नहीं था।

संतानम् चिदम्बरम् में रहकर कालेज में पढ़ रहा था। छुट्टियाँ बिताने पुदु नगर आया था, जहाँ उसकी विधवा माँ कावेरी अम्माळ रहती थीं। जमीन-जायदाद देखभाल मामा नटेश अय्यर करते थे।

शिवु के पिता की कपड़े की दुकान थी। उसके दो भाई पढ़-लिखकर बाहर नौकरी कर रहे थे। शिवु ने पढ़ाई पूरी करके पिता का व्यापार सम्भाला। वृद्ध माता-पिता चाहते थे कि, शिवु एक अच्छी-सी बहू घर ले आये। पर शिवु को मानो शादी से चिढ़ थी, या शायद उसे शादी के बारे में सोचने की फुरसत नहीं थी।

× × ×

खिड़कियाँ जोर से खड़खड़ा उठीं। पानी की तेज बौछार कमरे में आने लगी। दो-चार बूँदें संतानम् के माथे पर पड़ीं। उसकी आँखें खुल गयीं। दीवार-घड़ी देखी। "अरे! आठ बज गये! बड़ी देर हो गयी और पानी भी तो बरस रहा है।" खिड़की की तरफ नजर गयी, तो चौंक उठा और पलंग से उतरकर लपका। उसकी किस्मत से फोटो इस तरह रखी थी कि, काँच नहीं टूटा था। उसे उठाकर वह रूमाल से पोंछ ही रहा था कि, कान में ये शब्द पड़े–"भैया, बुआजी ने चाय के लिए काफी भिजवायी है।"

मुड़कर देखा, तो कल्याणी थी। "इसे मेज पर रख दो" कहकर संतानम् हाथ धोने गुसलखाने की ओर चला गया। जब लौटा, तो कल्याणी वहीं खड़ी थी। वह जरा झिझकते हुए पूछा–"भैया, एक बात पूछूँ?"

'हाँ 'पूछ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नाराज तो नहीं होंगे ?"

"नहीं।"

कल्याणी पलंग से उठकर दरवाजे के पास खड़ी हो गयी। फिर बोली—"वह जो फोटो मेज पर है, वह...वह तो गली के मोड़ पर जो मुदलियार लड़की पापा रहती है...उसी की है न ?"

संतानम् का चेहरा लाल हो गया। उस गुस्ताख किशोरी को पकड़ने के लिए उसने हाथ बढ़ाया; पर वह तो कभी की वहाँ से भाग चुकी थी।

कल्याणी को उस घर में पूरी स्वतंत्रता थी। चाहे जहाँ घूमती, चाहे जो करती। उसके पिता पुरोहिताई करते थे। परिवार बड़ा था, आमदनी कम। किसी तरह गुजारा हो रहा था। कावेरी अम्माळ् काफी मदद करती थीं। कल्याणी से उन्हें बड़ी ममता थी। रोज दोपहर को वह उन्हें पुराण पढ़कर सुनाया करती थी, घर के काम-काज में भी हाथ बटाती थी। बड़ी हँसमुख और खुशमिजाज लड़की थी और बड़ी समझदार।

कल्याणी के जाने के बाद बहुत देर तक संतानम् पापा के चित्र पर आँखें गड़ाये खड़ा रहा। पापा मानो उसके जीवन में सब-कुछ थी। जो बात खेल-खेल में शुरू हुई थी, वह यह रूप धारण कर लेगी, इसकी उसने कल्पना भी नहीं की थी। वह जानता था कि, दुनिया की नजरों में उसका प्रेम अनुचित है। शिवु ने भी कितनी ही बार समझाने की कोशिश की थी। वह स्वयं भी इसी कारण ही तो पढ़ाई के बहाने चिदम्बरम् चला गया था। सोचा था—दूरी प्रेम को खत्म कर देगी। परंतु यह उसका भ्रम था। दूरी ने उनके आपसी अनुराग को और भी गाढ़ा कर दिया। उसके प्रेम की जड़ें बहुत गहरी थीं। पापा नीच जाति की है, यह विचार उसके मन में कभी नहीं आया। समाज क्या कहेगा, इस विचार ने उसे कभी चिंतित नहीं किया। पापा का प्रेम उसके लिए समाज, जाति इन सबसे ऊँचा था।

गणेश

कन्नौज में प्राप्त एक प्रतिमा की अनुकृति

× × ×

अगले दिन जब सवेरे संतानम् दुमंजिले पर से नीचे आया, मामा नटेश अय्यर और जमींदारी का कारिंदा पकीर दोनों उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। पकीर उसके पिता के समय से इस घर की सेवा कर रहा था। संतानम् को उसकी ईमानदारी और स्वामिभक्ति पर बहुत भरोसा था। परंतु नटेश अय्यर की पकीर से पटती नहीं थी। आज भी किसी विवाद को लेकर ही उसके पास आये थे वे दोनों।

लोगों का खयाल था कि, नटेश अय्यर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतानम् के भाई-बहन हैं। बाद उनका भी यही इरादा था कि, बेटी देकर सारी जायदाद के सरमुख्तार बन जायें। कावेरी अम्माळ् यह सोचती थीं कि, भाई तीन-तीन लड़कियों का भार लिये बैठा है, तो एक को बहू बनाकर उसका कुछ तो बोझ हल्का करूँ। बड़ी सीधी और साफ दिल की महिला थीं वे। और भाई के प्रबंध में दखल देना ठीक नहीं समझती थीं।

पर नटेश अय्यर बड़े चतुर आदमी थे। उन्हें आशंका थी कि, लड़का सयाना हो गया है; न जाने कब हिसाब माँग बैठे। इसीलिए जब संतानम् ने कहा कि, "कल सवेरे गाड़ी भिजवा दीजिये; मैं स्वयं गाँव जाकर मामले का निपटारा करूँगा; शायद शिवु भी मेरे साथ चले" तो उन्हें आश्चर्य तो नहीं हुआ, मन-ही-मन कुढ़न अवश्य हुई। परंतु संतानम् उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही चला गया।

अगले दिन सवेरे जब शिवु, नटेश अय्यर और संतानम् गाँव जाने के लिए गाड़ी पर चढ़ने लगे, तो संतानम् ने देखा कि, कल्याणी हाँफती हुई उसी की ओर दौड़ी आ रही है। आते ही उसने एक कागज संतानम् के हाथ में दिया। खोलकर देखा, तो उसमें लिखा था—"आज शाम को मंदिर में आपकी प्रतीक्षा करूँगी—पापा।"

"शिवु, तुम मामा के साथ चले जाओ। मैं कल सवेरे आ जाऊँगा।" कहकर संतानम् गाड़ी से उतर गया। शिवु और नटेश अय्यर एक शब्द भी बिना कहे सिर झुकाकर गाड़ी में जाकर बैठ गये।

× × ×

शाम को सूर्यास्त के अनंतर जब रात्रि ने अपना काला आँचल आकाश में फैला दिया, संतानम् मुल्लै नदी के तट पर स्थित वट-वृक्ष के नीचे बने उस छोटे गणेश-मंदिर की ओर चल पड़ा, जहाँ वह और पापा प्रायः छिपकर मिला करते थे।

पापा मंदिर में प्रतीक्षा करती हुई मिली। वह बोली—"आपको गाँव जाने से रोकना नहीं चाहती थी, मगर..."

वह हकलायी। संतानम् ने उसे सांत्वना देते हुए कहा—"दिल खोलकर सारी बात कह दो पापा। कहना क्या चाहती हो?"

"मरणवाल मुदलि का भानजा...कहते हैं आपके साथ पढ़ता था...उसकी..." और पापा का गला भर आया।

"उसे क्या हो गया?"

"उसकी ओर से मँगनी आयी है। पिताजी ने तो इन्कार कर दिया है। फिर भी वह मेरे आगे-पीछे चक्कर लगाता रहता है। आठों पहर घर के सामने खड़ा होकर..."

धीरे-धीरे बात संतानम् की समझ में आने लगी। पापा का पिता अरुणाचलम् लेनदारों से बचने के लिए कई वर्ष तक छिपाये फिरता रहा था। पर अब अदालत में दिवालिया घोषित हो जाने के डर से निर्भीक होकर घर में आकर रहने लगा था। वह ऐसे समय आया, जब म्युनिसिपैलिटी के चुनाव की सरगर्मियों के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहर दो दलों में बँटा हुआ था। मणवाल मुदलि और शिवु दोनों एक ही सीट के लिए खड़े थे। ऐसे समय अरुणाचलम् की पूछ होना स्वाभाविक था। अव्वल दर्जे का गुंडा जो था वह !

पापा की माँ बहुत पहले ही परलोक सिधार चुकी थी। घर पर वह अपनी बूढ़ी दादी के साथ अकेली रहती थी। मणवाल मुदलि के भानजे वेणु की पापा पर पहले से गृध्र-दृष्टि थी। पापा और संतानम् का प्रेम-सम्बंध उससे छिपा नहीं था। एक दिन उसने राह रोककर पापा से कहा भी—"मैंने सुना है, तू उस ब्राह्मण के बेटे के भरोसे बैठी है। दो दिन बाद मेरे मामा मँगनी के लिए तेरे यहाँ आनेवाले हैं। इन्कार करेगी, तो भंडा फोड़ दूँगा।"

पहले पापा ने इन गीदड़-भभकियों पर ध्यान नहीं दिया। परंतु एक दिन मणवाल मुदलि आ टपके, तो घबरा गयी। मँगनी से इन्कार कर देना मामूली बात नहीं थी उनकी जाति में। और संतानम् के गाँव जाने की बात सुनकर वह एकदम घबरा उठी।

संतानम् ने सारी बात सुनकर सलाह दी—"पापा, तुम निश्चित रहो। मैं तुम्हारे पास लौटकर पुनर्वार तक मैं लौट आऊँगा।"

अगले दिन वह अपने गाँव शिवपुरम् पहुँचा और अपने पुरखों की हवेली पर ठहरा। काश्तकारों ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। गाँव के शांत वातावरण ने उसे मुग्ध कर लिया।

नटेश अय्यर ने भानजे के आगमन की खुशी में शानदार दावत दी। बड़ा प्रेम जतला रहे थे वे अपने भानज पर। परंतु संतानम् को यह सब बिल्कुल बनावटी और खोखला लग रहा था।

अंत में जब संतानम् बहीखातों की जाँच करने बैठ ही गया, तो नटेश अय्यर का चेहरा उतर गया। उन्हें अंदेशा नहीं था कि, यह कल का छोकरा इतनी गुस्ताखी करेगा। हिसाब-किताब को समझने में संतानम् को शिवु ने बड़ी मदद दी। धीरे-धीरे रहस्य खुलते गये। हिसाब ठीक मिल नहीं रहा था। किसानों पर जोर-जबर्दस्ती होने की शिकायतें भी सामने आयीं।

संतानम् ने दोनों पक्षों की दलीलें सबके सामने सुनीं। फकीर की बात उसे न्यायपूर्ण लगी। उसने उसी के पक्ष में निर्णय

मृदंगवादिनी
पाटण का एक काष्ठशिल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Arvind

QUALITY FABRICS

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
सफेद पोपलीन
कोल्ड ड्रिंक

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
रंगीन पोपलीन
ब्लू बर्ड

बुट्टास

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT PEABODY & CO., INC., U.S.A.

अरविंद मिल्स लि.
अहमदाबाद-२

REGISTERED USER OF THE TRADE MARK 'SANFORIZED'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। नटेश अय्यर की तो मानो नाक ही कट गयी।

शाम को जब वह शिवु के साथ सैर करके लौट रहा था, तो उसने देखा कि, हवेली के पास एक गाड़ी खड़ी है। जरा और नजदीक आने पर उसे पेड़ की छाया में खड़ी हुई पापा भी दीख गयी। वह चौंक पड़ा। विश्वास नहीं हुआ उसे अपनी आँखों पर। परिस्थिति को भाँपकर शिवु गाड़ीवान को विदाकर स्वयं चुपचाप वहाँ से सरक गया।

"यह क्या है पापा ?"

"माफ कर दीजिये। बहुत बड़ा अपराध हो गया मुझसे। लेकिन मैं करती भी क्या ? पिताजी ने वेणु से रुपया ले लिया है. और..." फिर वह साड़ी का छोर मुँह में ठूँसकर फफककर रोने लगी।

"ठहरो अभी मैं आता हूँ" कहकर संतानम् शिवु की तलाश में भागा। वही इस समय उसे मार्ग सुझा सकता था। थोड़ी खोज के बाद शिवु उसे तालाब की सीढ़ियों पर बैठा मिल गया। संतानम् जानता था कि, शिवु उसे गाली भले दे; पर सहायता अवश्य करेगा।

उसकी आशा निराधार नहीं थी। शिवु ने कहा—"पहले तुम हवेली में जाओ। मैं मौका देखकर सबकी नजर बचाकर पापा को भीतर ले आऊँगा।" और उसने अपना वचन पूरा भी कर दिखाया।

बात यह हुई थी कि, गाँव के विवादों में उलझ जाने के कारण संतानम् अपने वादे के अनुसार शुक्रवार को पुदु नगर वापस नहीं जा सका। उधर मणवाल मुदलि पान-सुपारी लेकर बात पक्की करने अरुणाचलम् के घर पहुँचे। चार सौ रुपये के नोट भी उन्होंने थाल में रख दिये थे। पापा की आँखों के सामने अँधेरा छा गया। और कुछ नहीं सूझा, तो वह गाड़ी करके शिवपुरम् भाग आयी।

हवेली की दूसरी मंजिल पर वे दोनों लेटे थे—संतानम् पलंग पर और नीचे होल्डाल पर पापा। उनमें प्रणय का उद्वेग था; परंतु साथ ही आश्चर्यजनक संयम भी। चाँदनी रात, अप्रत्याशित मिलन और एकांत भी उनके आत्मनियंत्रण को शिथिल नहीं कर सका। संतानम् आँखें मूँदें पड़ा था, बोला—"पापा, तुम डरो मत। मैं तुम्हारे साथ हूँ। लेकिन अभी तो तुम्हारा यहाँ से चला जाना ही अच्छा है। इसी में दोनों की भलाई है।"

भोर का तारा उगते-उगते पापा गाड़ी में बैठकर पुदु नगर लौट गयी।

उस दिन शिवु का व्यवहार बड़ा अजीब रहा। सवेरे ही वह चार सौ रुपये लेकर यह कहते हुए चला गया—"मैं इस पैसे का हिसाब तुम्हें नहीं दूँगा।" शाम को लौटा और बोला—"वेणु और पापा की शादी रुक गयी है। अरुणाचलम् ने मणवाल मदलि के चार सौ रुपये लौटा दिये हैं। मैंने मणवाल के मुकाबले में चुनाव से अपना नाम वापस ले लिया है, इस शर्त पर कि, वे फिर मँगनी की बात नहीं उठायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झिलमिल...जगमग...नई झलक...

-विम की है यह चमक दमक!

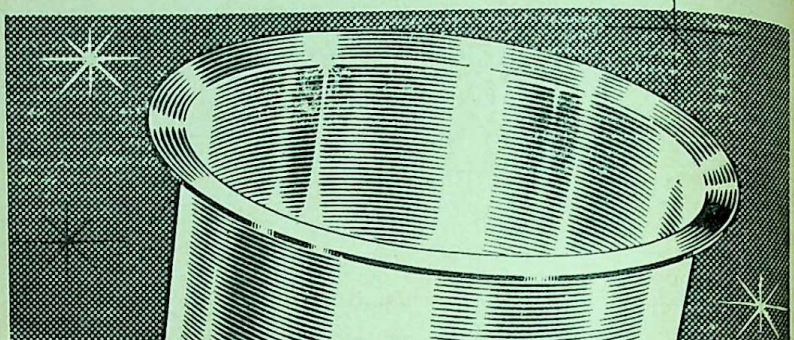

विम से एक बार साफ़ कीजिये और देखिए हर चीज़ कैसे जगमगाने लगती है—रसोईघर के साधारण या स्टेनलेस स्टील के बरतन हों या चीनी कांच का सामान, बरतन मांजने की चिलमचियाँ और फ़र्श। विम से सफ़ाई कीजिये तो न रगड़ के निशान पड़ते हैं न कड़ी मेहनत। और आराम कितना है! गीले कपड़े पर विम छिड़किये, हलके से मलिये—और बस! ऐसी चमक दमक आ जायेगी कि आप दंग रह जायेंगे! घर की शान बनानी है तो विम इस्तेमाल कीजिये!

विम से हर चीज़

चमक उठती है

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

V. 4.90 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संतानम् की आँखें डबडबा आयीं ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

× × ×

परीक्षा शुरू होने में दो महीने रह गये थे । इसलिए संतानम् चिदम्बरम् लौट गया और जैसे-तैसे तैयारी करने लगा । पापा के पत्र आते रहते थे । परीक्षा के दिनों यह लम्बा पत्र आया :

"कल्याणी के भैया को दासी के साष्टांग प्रणाम । न जाने आपने क्या आदेश दिया था कि, इस बार जब गाँव से चावल के बोरे आये, गाड़ीवान हमारे घर दो बोरे उतार गया । बिरादरी ने हमारा बहिष्कार कर दिया है । पर मैं दुःखी नहीं हूँ । गली-गली में हमारे बारे में चर्चा है ।

"जिस दिन चावल के बोरे आये, उसी दिन कल्याणी ने आकर बताया कि, माताजी बुला रही हैं । मैं गयी, तो उन्होंने 'आओ बेटी' कहकर मुझे बैठाया और फिर कहा—'सारे मोहल्ले में यह कैसी अफ़वाह उड़ रही है ? आज शिवु से पूछा, तो उसने कहा कि, लोगों की बातें बेबुनियाद नहीं हैं । तुम्हीं बताओ बेटी, क्या यह सब ठीक है ?' मैं क्या उत्तर देती, सिर झुकाये बैठी रही । फिर वे बोलीं—'अब तक जो हुआ सो हुआ । आगे से तुम उसे भूल जाओ । पापा, प्यारी बेटी, वह मेरा इकलौता बेटा है । मैं उसे कुछ नहीं कह सकती । तुम्हारे सामने आँचल पसारती हूँ । मुझे अपने बेटे की भीख दे दो । मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है । मेरा बेटा घर बसाये, बाल-बच्चेदार बने, यह आशा क्या दुराशा है ? बेटी, तुम्हें भी तो किसी का घर बसाना है...' यह सब कहते हुए उन बेचारी की बुरी हालत हो रही थी । मैं क्या उत्तर देती ? चुपचाप प्रणाम करके घर लौट आयी ।

"अब जी चाहता है कि, इस लिफाफे में बैठकर मैं भी आपके पास पहुँच जाऊँ और आपके पैरों में सिर छिपाकर खूब रोऊँ। उत्तर की नहीं, आपकी बड़ी प्रतीक्षा है ।

चरणों की दासी—पापा ।"

जब पत्र पढ़कर रख दिया, हृदय के कोने से क्षीण-सी आवाज उठी—"संतानम्, अच्छा हुआ जो माँ को अभी सब-कुछ मालूम हो गया । आगे स्थिति को सम्भालने में बड़ी दिक्कत होती ।" बात भी ठीक थी । परीक्षा देकर जिस दिन घर लौटा, उसे यह देखकर बड़ी तसल्ली हुई कि माँ के व्यवहार में किसी प्रकार का अंतर नहीं आया है ।

उसी दिन शाम को चिर-प्रतीक्षित मुलाकात के बाद जब पापा लौटने लगी, तो संतानम् ने धीमे-से कहा—"रात को जीने पर मेरे कमरे में आ जाना । दरवाजा खुला रखूँगा । माँ नीचे रहेंगी । पर कल्याणी को खबर न हो । समझी ?"

प्रेमियों का यह मिलन-नाटक यामिनी के परदे के भीतर चल रहा था । फिर भी प्रकाश में आ ही गया । तालाब के किनारे, नदी के घाट पर, मंदिर के प्रांगण में, गली के नुक्कड़ पर—जहाँ भी चार लोग जुटते, संतानम् और पापा का प्रेम उनकी चर्चा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी सुरक्षा का श्रेय इन्हें है
फायरस्टोन लगाइये—ज्यादा अर्से तक
सुरक्षित रहिये ।

Firestone

फा य र स्टो न

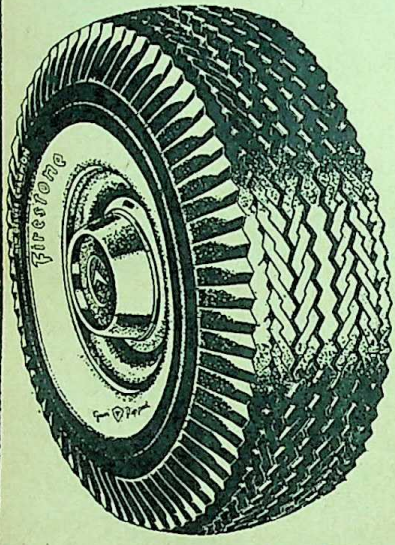

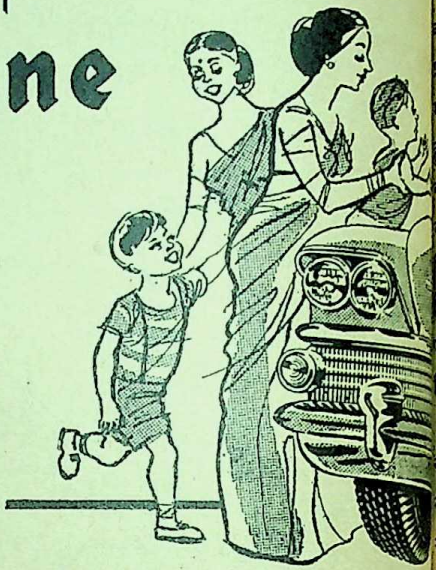

जीर्ण टायरों के बूते गाड़ी चलाना कोई किफायत है। इसमें खतरा ही खतरा है, फिसलने का, फटने का और ब्रेक न लगने का।

ऐसी हालत में आप और परिवार के लोग भी ही खतरे में रहते हैं, जितने में आपकी गाड़ी के ट

फायरस्टोन टायर खरीदिये और ये लाभ भी :

★ फायरस्टोन के सेफ्टी ट्रैड अब भी अद्वितीय हैं, ज्यादा से ज्यादा ब्रेक-नियंत्रण के इसमें न फिसलने की विशेषतावाले हजारों कोण हैं।

★ लम्बे अर्से तक सेवा : सहज ही न घिसनेवाली फायरस्टोन रबड़ के ये टायर लम्बे अर्से तक अधिक सुरक्षित रखने के लिए बनाये गये हैं।

★ मोटर-रेस के विश्वविजेता जिसके भरोसे अपनी जान को दाव पर लगाते हैं, इंजनीयरिंग विशेषता इन टायरों की भी प्रणेता है।

फायरस्टोन न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर आज सोना – कल सोने पे सुहागा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विषय होता था। जाति और कुल-मर्यादा के नाम पर प्रमियों के विरुद्ध एक तूफान खड़ा हो रहा था और इस आंदोलन का मुखिया था वेणु।

इस तूफान की तीव्रता को कम करने का कोई अच्छा अवसर मिले, इसकी प्रतीक्षा में था संतानम्। इसीलिए जब मंदिर के वसंतोत्सव में संगीत-सम्मेलन हुआ, उसने सब गायकों और कलाकारों को अपने ही यहाँ ठहराकर उनका शानदार आतिथ्य किया। सौभाग्य से इन्हीं दिनों शहर में नये तहसीलदार आये, जिनका दामाद पट्टाभिरामन् उसका सहपाठी रहा था। संतानम् की सामाजिक स्थिति इससे काफी मजबूत हो गयी।

तभी संतानम् ने एक और महत्वपूर्ण कदम उठाया। अपनी पैतृक जमीन जायदाद को स्वयं सम्भालने के लिए वह स्थायी रूप से शिवपुरम् चला आया। नटेश अय्यर ने बहुत कोशिश की कि, बागडोर उन्हीं के हाथ में रहे। संतानम् ने उसकी बेटी से विवाह करने से इन्कार कर दिया। और जब हिसाब-किताब लिया गया, तो पता चला कि, पूरी दस हजार की रकम नटेश अय्यर की जेब में जा चुकी है।

इस सारे मामले में बेचारी कावेरी अम्माळ् बिल्कुल तटस्थ रहीं। जब उनकी राय पूछी गयी, तो उन्होंने इतना ही कहा—"मुझ बुढ़िया को अब क्या चाहिये? मुट्ठीभर चावल—वह भी दिन में एक वक्त।"

संतानम् पापा को शिवपुरम् ले आया।

सुन मोरी सजनी हिये की बात

चित्रकार : बद्रीनारायण

वही अब उसका घर सम्भालने लगी, जैसे ब्याहता गृहिणी हो। कृषकों के प्रति संतानम् की सहानुभूति और पापा की सुशीलता ने किसी प्रकार के खुले विरोध या आक्षेप के लिए अवसर नहीं दिया। पुरानी हवेली के सामने ही नये ढंग का बँगला बन गया। संतानम् और पापा उसमें रहने लगे। कावेरी अम्माळ् शहर में रह गयीं।

माँ-बेटे का सम्बंध निराला था। भूलकर भी कावेरी अम्माळ् ने बेटे से कभी पापा के सम्बंध में चर्चा नहीं की। शायद आचार-परायण विधवा ने बेटे के सुख के लिए इस हलाहल को पी लेना ही अपना कर्तव्य समझ लिया था। वे इतनी निर्लिप्त और मौन हो गयी थीं कि, मानो सांसारिकता से ऊपर उठ गयी हों।

परंतु उन्हीं दिनों एक घटना हुई, जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

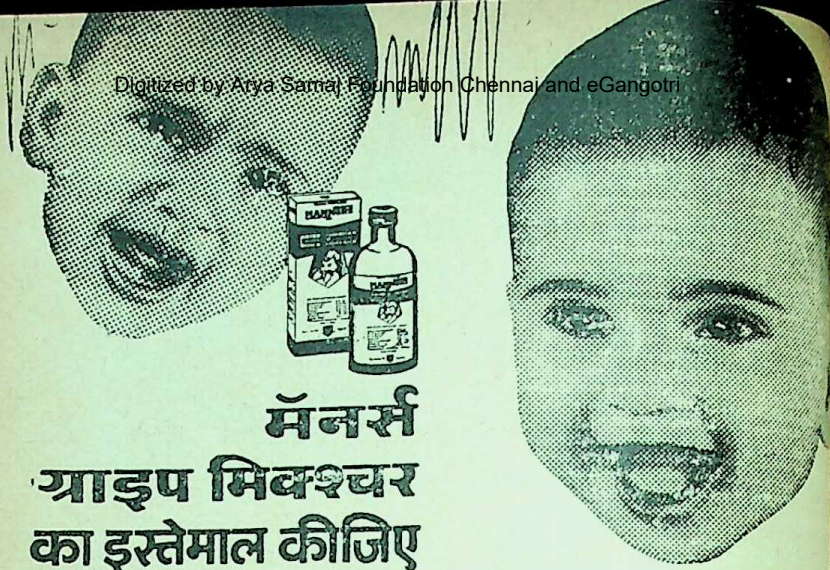

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर का इस्तेमाल कीजिए

और देखिए कि, बच्चों के मुँह पर कैसे हँसी लौट आती

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर आप के बच्चेकी वायु व पेट-दर्द की शिकायत दूर करता है, और दांत उगने के समय होनेवाली पेट की बिमारी को रोकता है।

यह मॅनर्स की बनावट है

ASP/C...

ग्लूकोविटा

अतिरिक्त शक्ति देता है

दैनिक आहार के पौष्टिक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए ग्लूकोविटा आदर्श है। आप के शरीर में जिसकी बहुत ही आवश्यकता है, उस रक्तशक्कर की पूर्ति भी यही करता है।

मेहनत करनेवाले व्यक्तियों, खेलाडियों, बढ़ते हुए बच्चों, उम्मीदवार और बच्चों को पिलानेवाली माताओं के शरीर में शक्ति-भण्डार पैदा करने के लिए ग्लूकोविटा एक आदर्श साधन है।

ग्लूकोविटा चाय, कॉफी, दूध और ठण्डे पेय पदार्थों में लीजिये। एक प्याले या गिलास में इसे एक से तीन चमच चम्मच भर डाल कर हिलाइये। यह आसानी से घुल-मिल जाता है।

अतिरिक्त शक्ति के लिए

ग्लूकोविटा

कॉनें प्रॉडक्ट्स कं. (इंडिया) प्राइवेट लि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतानम् और पापा के हृदय में शूल-सा चुभ गया। नवरात्र के दिन थे। हमेशा की तरह कावेरी अम्माळ् ने सरस्वती-पूजन की तैयारी की। संतानम् जो नवरात्र के लिए शहर आया था, स्नान करके तैयार बैठा था। परंतु कोई पुरोहित नहीं आया। पुरोहित की प्रतीक्षा होती रही। शुरू में संतानम् को इसमें कोई विचित्रता नहीं मालूम दी। परंतु जब दोपहर तक कोई न आया, तो उसे शक हुआ कि, इसके पीछे कोई योजना है। उसने देखा—हवेली के सामने से कई पुरोहित गुजरे; पर सभी मुँह फेरकर चले गये। एक को संतानम् ने रोका भी, तो वह "क्षमा कीजिये, एक और घर में वादा कर दिया है," कहकर तेजी से चलता बना।

धर्मनिष्ठ विधवा ब्राह्मणी मूक-भाव से सब देखती रही। पिछले दो दिन से उनका उपवास था। शारीरिक और मानसिक क्लांति से वे मुरझा गयी थीं। माँ की दशा देखकर संतानम् की आँखों में आँसू उमड़ आये।

तभी कल्याणी आयी, स्थिति को भाँप कर चली गयी। थोड़ी देर बाद उसके पिता ने आकर पूजा करायी। संतानम् जानता था कि, वे उसके लिए नहीं, उसकी माँ की खातिर आये हैं।

उस रात पापा ने संतानम् के गले में बाहें डालकर बड़ी अजीजी से कहा—"मेरी एक बात मानेंगे ?"

"कहो ?"

"किसी दूसरी लड़की से शादी कर लीजिये।"

"खबरदार आगे कुछ कहा तो..." संतानम् ने झटके के साथ उसकी बाहें हटा दीं। रात-भर वह सो न सका। सोचता रहा—"क्या पापा को मेरे प्रेम की गहराई का ज्ञान नहीं है!"

× × ×

कुछ दिन बाद जब अरुणाचलम् पापा से मिलने आया, उसने उसे अलग बुलाकर कहा—"बेटी सुना है, शिवु तुम्हारे पति की दूसरी शादी कराने के सिलसिले में मद्रास हो आया है। लोग तो यह भी कह रहे हैं, कावेरी अम्माळ् भी उसी के पक्ष में हैं। क्या यह सच है ?" जब उत्तर में पापा हँस पड़ी, तो अरुणाचलम् के आँसू आ गये। उसने भर्राये हुए कंठ से कहा—"जीवन में मुझे केवल यही एक संतोष है कि, तुम सुखी हो। अगर मेरा यह सुख भी छिन गया, तो मैं न जाने क्या कर बैठूँगा।" फिर वह वहाँ ज्यादा देर नहीं ठहरा।

पापा बड़ी देर तक उसी की बातों पर विचार करती रही। शिवु जरूर मद्रास गया था। पर वह किसलिए गया था, यह नहीं जानती थी।

लेकिन उसने सोचा—"यदि पिताजी की बात सच हो, तो भी उससे मेरा क्या बिगड़ता है। मेरी कामना भी तो यही थी। शारीरिक सम्बंध ही तो प्रेम नहीं है। यौन सुख ही तो जीवन में सब कुछ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दी-जल्दी खाने से उसका काम बिगड़ जाता.पर...

एक गिलास पानी में चायवाली एक चम्मचभर ईनो मिलाइए। वह फ़ौरन घुल कर उभर आएगा। ईनो पीने में स्वादिष्ट व स्फूर्ति-दायक होता है। चमकदार ईनो 'फ़्रूट साल्ट' का असर हलका होता है। पेट की ख़राबी में यह जल्द और पूरा आराम देता है तथा पाचन-क्रिया को ठीक करता है।

ईनो ने उसकी तबीयत जल्द ठीक कर दी

ईनो

'फ़्रूट साल्ट'

'ईनो' और 'फ़्रूट साल्ट' — ये शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं।
बीचम (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

J W T-ENO-1012

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। और मैं उन्हें इसके अलावा क्या दे रही हूँ ?"

परंतु संतानम् के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया था। उसका प्रेम और प्रगाढ़ ही होता जा रहा था। इससे पापा के हृदय की आशंका दूर हो गयी। उन्हीं दिनों जिले के कलेक्टर गाँव के दौरे पर आये। साथ पत्नी जलजा भी थीं। जलजा और पापा में शीघ्र ही मित्रता हो गयी और उसी के अधिकार से जलजा ने बात-ही-बात में कहा—"प्रेम कितना ही पवित्र हो, अवैधता शोभा नहीं देती। रजिस्टर्ड मैरेज कर लेना उचित है।"

बात मौके से कही गयी थी। संतानम् भी काफी समय से यही बात सोच रहा था और इसी विषय में कानूनी सलाह लेने उसने शिवु को मद्रास भेजा था। शीघ्र ही मद्रास जाकर विवाह करने का निश्चय हो गया।

तभी हुई एक घटना ने इस निर्णय को जल्दी-से-जल्दी कार्य रूप में परिणत करना आवश्यक कर दिया।

एक दिन शाम को संतानम् ने पापा से मंदिर चलने को कहा। पापा झिझकी, बोली—"क्या भगवान् से भी खिलवाड़ करेंगे ?" परंतु जब संतानम् ने जोर दिया, तो वह चुपचाप साथ चल पड़ी।

लौटते समय अँधेरा हो गया था। गली सूनी थी। मोड़ पर आते ही एकाएक कोई व्यक्ति संतानम् पर झपट पड़ा और उसके दोनों हाथ पकड़कर चिल्लाने लगा—

शिव-पार्वती-विवाह

मीनाक्षी-मंदिर, मदुरै की एक कलाकृति

"दुष्ट, तुझे इतना साहस हो गया कि, इस बदजात छोकरी को लेकर मंदिर को भी भ्रष्ट कर आया!" तभी और सात-आठ आदमी, जो इधर-उधर छिपे हुए थे, बाहर निकल आये। पापा और संतानम् चारों ओर से घिर गये। मारो...हड्डियाँ तोड़ दो...बच न पाये वह कलमुँही... कचूमर निकाल दो इस लफंगे का...आदि आवाजें गूँजने लगीं। तमाशबीनों की भारी भीड़ एकत्र हो गयी।

संतानम् भौंचक रह गया। पापा थरथर काँप रही थी। इतने में पीछे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BBR FILMS

न्याय मन्दिर में
अपूर्व और
असामान्य घटना
जो पहली बार
स्क्रीन पर
लाई गई है...

कानून की नजरमे
यह सब कातिल
हैं मगर खूनी केवल
एक है...
वह कौन है...!

अशोक कुमार राजेन्द्र कुमार नंदा जीवन शशीकला
नाना पलशीकर मनमोहन कृष्ण और मेहमुद

कानून

निर्माता निर्देशक **वी. आर. चोपड़ा**

कथा सी. जे. पावरी संवाद अख्तर-उल-ईमान छायाकार एम. एन. मलहोत्रा संगीत सलील चौधरी
संपादन प्राण मेहरा कला संच सिंह नृत्य गोपी कृष्ण माधुरी और वीरा बोखारीन्हा

भारत -- भर में प्रदर्शित हो रहा है

करदार फिल्म (प्रा.) लिमिटेड, बम्बई द्वारा रिलीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयंकर गुर्राहट सुनाई पड़ी। किसी ने घबरायी हुई आवाज में कहा– "अरुणाचलम् आ रहा है! हाथ में चाकू है!" सचमुच अरुणाचलम् दौड़ा आ रहा था। उसके हाथ में छुरी थी। वह चिल्ला रहा था–"खबरदार, खून कर दूँगा..." क्षण-भर बाद गली में तीन ही व्यक्ति शेष रह गये थे–संतानम्, पापा, उसका पिता अरुणाचलम्।

× × ×

पापा को मालूम ही नहीं था कि, पुदु नगर और शिवपुरम् के अलावा भी कोई दुनिया है। मद्रास उसक लिए सर्वथा नवीन अनुभव था। कलेक्टर की पत्नी जलजा, तहसीलदार साहब, उनका दामाद पट्टाभिरामन् आदि सभी मद्रास में थे। उनकी मदद से एक कार्तिकेय-मंदिर में वैदिक विधि से विवाह सम्पन्न हुआ। उसके पूर्व रजिस्ट्रेशन भी करा दिया गया।

शादी के अगले दिन ही अचानक शिवु मद्रास आ पहुँचा। उसका चेहरा देखते ही पापा का दिल धक् से रह गया। पता चला कि, कावेरी अम्माळ् सख्त बीमार हैं। उसी शाम को वे मद्रास से निकल गये। संतानम् ने पापा को सीधे शिवपुरम् भेज दिया और स्वयं पुदु नगर में रह गया। शिवु की सलाह थी कि, इस अवस्था में पापा का कावेरी अम्माळ् के सामने न आना ही उत्तम है।

बेटे को देखते ही माँ के मुरझाये चेहरे पर कांति आ गयी। उन्होंने पूछा– "बेटा, आ गये तुम! पापा कहाँ है?"

यही पहला अवसर था, जब उन्होंने बेटे के सामने पापा की चर्चा की थी। संतानम् अचकचाकर रह गया। बोला– "उसे मैंने सीधे गाँव भेज दिया है और तुम्हें भी गाँव ले जाने के लिए आया हूँ। कितने दिन अकेले रहोगी यहाँ?"

माँ को मनाने में उसे खास दिक्कत नहीं हुई। शाम को शिवु ने माँ-बेटे को गाड़ी में बैठाकर विदा किया। शिवपुरम् में जब गाड़ी हवेली के सामने रुकी, पापा एकदम बँगले से दौड़ती आयी और सास के चरणों में गिर पड़ी। सास के चरण उसने तब तक नहीं छोड़े, जब तक उन्होंने सिर पर हाथ फेरकर "उठो बहू" नहीं कह दिया।

कावेरी अम्माळ् हवेली में रहने लगीं। प्रतिदिन सूर्योदय से काफी पहले ही वे उठ जातीं और श्लोक गुनगुनाती हुई मंदिर के तालाब में स्नान करने चली जातीं। लौटकर चूल्हा जलाकर काफी तैयार करतीं। बेटे के लिए अलग एक गिलास रखकर स्वयं दो घूँट पीतीं। संतानम् को अब भी सवेरे माँ के हाथ की ही काफी चाहिये थी। जब कभी सास-बहू की मुलाकात होती, तो कुछ देर कुशल-क्षेम की बातें होतीं।

नदी में नया पूर आया। पापा और संतानम् एक बच्चे के माता-पिता बन गये। संतानम् ने उसका नाम अपने पिता के नाम पर गोपालकृष्णन् रखा। घर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहासों से मैं परेशान थी...

जिल्द की बीमारियों का शीघ्र इलाज — लिचेन्सा

अब दवाइयों की दुकानों में मिलती है।

क्षमा-प्रार्थना

'नवनीत' (फरवरी, १९६१) में श्री राबिन शा 'पुष्प' का 'एक दुर्लभ विभूति : श्रीमती डानियल' नाम से एक लेख प्रकाशित हुआ था। उसके सम्बंध में मुंगेर (बिहार) से श्रीमती एस० डानियल से हमें एक पत्र प्राप्त हुआ है। पत्र में कहा गया है कि, लेखक ने उक्त लेख श्रीमती डानियल की अनुमति लिये बिना, दुर्भावनापूर्वक लिखा है और उसमें उनके व्यक्तित्व, परिवार और आर्थिक स्थिति के सम्बंध में कई निराधार एवं मनगढंत बातें कही हैं, जिनसे श्रीमती डानियल तथा उनके परिवार की भावनाओं और प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची है।

श्रीमती डानियल अथवा उनके स्वजनों को ठेस पहुँचाना या उनकी प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाना 'नवनीत' का उद्देश्य नहीं था। लेखक की गैरजिम्मेदारी के लिए क्षोभ प्रकट करते हुए हम श्रीमती एस० डानियल से क्षमा-प्रार्थना करते हैं। —सम्पादक

कविता-कौमुदी

(चौथा भाग)

उर्दू शायर

सम्पादक

पं० रामनरेश त्रिपाठी

मूल्य ८)

प्रकाशक

नवनीत प्रकाशन लि०

बम्बई—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाने का नाम था गोपू।

कावेरी अम्माळ् अब भी बड़े सवेरे उठतीं; परंतु अब तुरंत नहाने नहीं चली जाती थीं। नौकरानी आँगन को लीपकर चौक पूरकर एक चौकी वहाँ लगा देती थी। कावेरी अम्माळ् उस पर बैठ जातीं और बँगले की ओर देखती रहतीं।

छः-सवा छः बजे के करीब बँगले का दरवाजा खुलता और दो नन्हे पैर सीढ़ियाँ उतरने लगते और तोतली आवाज मुखरित होती–"दादी।"

"मेरा राजा बेटा" कहकर कावेरी अम्माळ् लपककर पोते को उठा लेतीं, गोद में बैठाकर प्यार करतीं। उनका जीर्ण-शीर्ण शरीर रोमांचित हो उठता। नन्हा गोपू भी दादी की गोद में चाँद-सा खिल जाता।

इस प्रेम-सम्बंध में एक ही बात खटकती थी। कावेरी अम्माळ् स्नान के पूर्व ही पोते को गोद में उठाती और दुलराती थीं। स्नान के बाद और भोजन के पहले अगर बच्चा उन्हें छू भी जाता था, तो सारे दिन उपवास। और गोपू दादी से इतना हिलमिल गया था कि, पापा की सावधानी के बावजूद हफ्ते में दो-एक दिन ऐसा हो ही जाता था। कावेरी अम्माळ् उपवास कर लेती थीं; पर गोपू को कभी डाँटती-फटकारती न थीं।

पापा को यह बात अखरती थी। अक्सर वह सोचती कि, "यदि मेरी जगह कोई ब्राह्मण लड़की उनकी बहू होती, तो क्या उनके पुत्र के साथ भी सासजी का यही व्यवहार होता?" जाति-परम्परागत आचार-अनुष्ठान में बँधी उस वृद्धा के हृदय की थाह लेने में पापा असमर्थ रही।

व्रतों और उपवासों ने कावेरी अम्माळ् को बहुत जर्जरित कर दिया। कुछ समय बाद उनकी देखभाल के लिए कल्याणी को बुला लिया गया।

सास की मानसिक और शारीरिक वेदना के लिए पापा अपने को दोषी समझने लगी। उसकी आँखों के सामने सासजी इस प्रकार तिल-तिल करके क्षीण हो जायें, यह उसे सह्य नहीं था। एक दिन उनके चरणों पर सिर रखकर कह दिया–"माँजी, मैं प्रायश्चित्त के रूप में अपने प्राण भी देने को तैयार हूँ। आपकी शांति और संतोष से बढ़कर मेरे लिए कुछ नहीं।" और आगे उससे बोला नहीं गया।

"मेरी फिक्र मत करो बेटी। कल शिवु को बुलवा दो। उसके हाथ में कल्याणी को सौंपकर निश्चित हो जाऊँ। फिर सुख से मर सकूँगी। बस यही एक काम बाकी रह गया है।"

शिवु को बुलाया गया। पापा ने उसके पाँवों पड़कर अनुनय की कि, माँ की बात न टाले। शिवु हँस पड़ा, बोला–"बुवाजी की असली इच्छा यह नहीं है।"

"फिर क्या है?"

"वे चाहती हैं कि, कल्याणी संतानम् की पत्नी हो जाये।"

पापा को मानो काठ मार गया। आँखों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सामने मुँह खोल न सका। वह पत्थर की प्रतिमा की तरह वह अवाक्, विमूढ़ बैठी रह गयी।

बहुत देर बाद पापा जब अपने को सम्भालने लायक हुई, कावेरी अम्माळ् के पैरों में मुँह छिपाती हुई बोली—"माँजी, कल्याणी का भार मैं अपने ऊपर लेती हूँ। उसका विवाह आपके बेटे से करा दूँगी।" उसकी वाणी में मर्मव्यथा थी, आवाज में आँसुओं की आर्द्रता थी।

शिवु, कल्याणी, कावेरी अम्माळ् तीनों चौंक उठे। कावेरी अम्माळ् में न जाने कहाँ से इतनी शक्ति आ गयी कि, वे उठ बैठीं और बोलीं—"क्या बक रही है तू पापा? यह क्या हमारे हाथ की बात है! यह कैसे होगा? कल्याणी के पिता की सहमति भी तो चाहिये। और संतानम् क्या कहेगा? बेटी, तू यह भी भूल गयी कि, तू औरत है! अपने ही सुख की जड़ काटने की बात सोच रही है!" वृद्धा की साँस फूल गयी।

नटखट नंदलाल

पापा ने बड़ी दृढ़ता से उत्तर दिया—"आपके बेटे जरूर तैयार हो जायेंगे। उसकी जिम्मेदारी मुझ पर है।"

कह तो दिया; पर बात उतनी सरल नहीं थी। संतानम् के सामने मुँह खोलने की हिम्मत उसे नहीं हुई। पापा दिल-ही-दिल में घुटने लगी। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ने लगा। बात-बात में पति से झगड़ बैठती, फिर रो पड़ती। परंतु उसके आँसुओं से संतानम् विचलित नहीं हुआ। न उसने पापा को समझाया न आश्वासन दिया। पापा की इच्छा, पापा की प्रतिज्ञा, उसकी दृष्टि में पागलपन था। काल्पनिक कर्तव्य के नाम पर कुर्बान होने को तैयार इस आदमी पर उसे दया से अधिक क्रोध आ रहा था। फिर भी, यह नशा अपने आप उतर जायेगा, यह सोचकर वह चुप्पी सीधे रहा।

पापा ने इसका दूसरा अर्थ लगाया—"मैं नीच हूँ, सबकी भले हूँ, परंतु क्या पत्नी के नाते पति के सुख में, कुल की शांति में मेरा हाथ नहीं है? क्या मैं की जूती हूँ, जो मेरी अवहेलना कर रहे हैं!" एक दिन वह घर में किसी से कहे-सुने ही पुरम् से पुदु नगर चली गयी।

संतानम् भी उसके पीछे-पीछे पहुँचा गया। वहाँ बड़ी देर तक दोनों बहस चलती रही। अंत में पापा ने में आँसू भरकर उससे कहा—"मैं आप बड़े आदमी का प्रेम पा सकी. यह सौभाग्य है। आपने मुझ पर बहुत कार किये हैं। बस एक उपकार और दीजिये। करेंगे न?"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँजी को मैंने जो वचन दिया है, उसे मुझे पूरा करने दीजिये।" पापा की वाणी और आँखें ही नहीं, उसका रोम-रोम यह प्रार्थना कर रहा था।

"अच्छा बाबा, जो कहोगी, वही करूँगा, पहले घर तो चलो।" संतानम् ने कहा। वह सोच रहा था—पहले यह समस्या सुलझ जाये; बाद की बाद में देखी जायेगी।

उसी शाम को दोनों डाक्टर को लेकर शिवपुरम् वापस आ गये। गाड़ी से उतरते ही पापा दौड़कर अपनी सास के पास पहुँची और बोली—"माँजी, आपके बेटे ने सम्मति दे दी है।"

एक फीकी मुस्कान कावेरी अम्माळ् के मुँह पर खेल गयी।

अब पापा को पति से बात करने की भी फुरसत नहीं थी। कल्याणी के पिता से मिलकर उनकी स्वीकृति ले ली। अपनी दादी और पिता को बुलवाकर उन्हें भी राजी कर लिया और जुट गयी विवाह की तैयारी में। सुनार को बुलाकर गहनों के आर्डर दिये। स्वयं बाजार जाकर साड़ियाँ खरीद लायी। वह हरदम काम में व्यस्त रहती थी और कल्याणी को अपने साथ लिये रहती थी। परंतु यह अवश्य चाहती थी कि, जो-कुछ वह कर रही है, उसमें उसका पति दिलचस्पी ले।

परंतु संतानम् बाहर से बिल्कुल उदासीन बना हुआ था और भीतर अत्यंत व्यथित। अब वह शायद ही किसी से बात करता था। किसी की हिम्मत नहीं होती थी उससे बात करने की। उसकी आँखों में शून्यता घर कर गयी थी, मुँह पर दाढ़ी-मूँछ बढ़ आयी थी, मानो कोई तपस्वी हो।

गहने बनकर आ गये, तो पापा उन्हें लिये उसके सामने पहुँच गयी। "देखिये, ये सब ठीक हैं क्या?"— उसने पेटी खोलकर सामने रख दी। संतानम् चुपचाप कुछ देर तक गहने देखता रहा। अंत में वह बोला—"जानती हो इस त्याग का क्या नतीजा होगा? खूब विचार कर लो।"

"सोच लिया है। बस अब शुभ लग्न ढूँढ़ना बाकी है।"

"यही तुम्हारा निर्णय है?"

"हाँ।"

"लेकिन पापा, जिससे बचपन से आज तक छोटी बहन की तरह स्नेह करता आया हूँ, उसे मैं एकाएक पत्नी कैसे मान सकूँगा? और क्या इस आत्म-प्रवंचना से तुम्हें तृप्ति मिल जायेगी, ऐसी दुराशा करती हो?"

इस प्रश्न के लिए पापा तैयार नहीं थी। फिर भी अहिस्ते-से बोली—"अपना कर्तव्य पूरा कर रही हूँ। जो-कुछ करने का निश्चय कर लिया है, उसे पूरा करके मुझे अवश्य आत्मतृप्ति मिलेगी।"

"और गोपू का क्या होगा? पापा, क्या तुमने कभी यह भी सोचा कि, तुम्हारे इस क्षणिक उन्माद का उसके भविष्य पर क्या असर होगा? बड़ा होने पर वह हमारे बारे में क्या सोचेगा? उसकी आर्थिक-सामाजिक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?"

पापा को लगा जैसे उसके पाँव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे से [illegible] जा रही है।

संतानम् के प्रश्न अनबूझ पहेलियाँ बनकर उसके मस्तिष्क पर छाते जा रहे थे। परंतु वह इतना जानती थी कि, वह बहुत दूर तक बढ़ चुकी है; पीछे लौटने से उसकी प्रतिज्ञा टूटेगी। वह अपनी प्रतिज्ञा की दुहाई देकर अपने निश्चय पर अड़ी रही।

"अपने वचन के लिए मेरी जिंदगी, अपना सुख, गोपू का भविष्य – सब कुर्बान करने पर तुल गयी हो? और यह समझती हो कि, बड़ा त्याग कर रही हूँ! तुम भ्रम में हो। तुमने माँ को ठीक से समझा होता, तो तुम ऐसी भूल कभी न करती। परंतु...अगर तुम्हारा निश्चय यही है, तो मैं तुमसे और बहस नहीं करूँगा . . . तुम जो चाहो करो।"

पापा समझ नहीं पायी कि, यह उसकी हार है या जीत। उद्वेलित सागर में बहती हुई नैया की तरह उसका हृदय डगमगा रहा था। कोई उसे सहारा देनेवाला नहीं था। कभी एकांत में रोकर जी हलका कर लेती थी। कभी दबे पाँव हवेली में चली जाती थी। वहाँ निर्बल हाथों में जपमाला लिये बैठी हुई वृद्ध सास की दुर्बल किंतु शांत मूर्ति के दर्शन से उसे कुछ सांत्वना मिलती थी।

एक दिन ऐसे ही समय कावेरी अम्माळ् ने उसे देख लिया और पुकारा–"बेटी।"

"हाँ माँजी।"

"कल सवेरे यहाँ से रवाना हो रही हूँ। काशी जाना है। वेम्बैया को गाड़ी लाने के

हर-गौरी

लिए कह देना।"

"अभी क्या जल्दी है? शादी के बेटे को भी साथ लेकर जाइयेगा।"

"नहीं बेटी, मेरे रहने - न रहने में फर्क पड़ता है! ईश्वर की इच्छा बलवान है। अधिक क्या कहूँ?"

शब्द साधारण थे। परंतु उनकी ध्वनि पापा के हृदय में न जाने कैसी प्रतिध्वनि पैदा कर गये ये शब्द।

और सचमुच कावेरी अम्माळ् चली गयी। पापा लुटी-सी रह गयी।

× × ×

ज्येष्ठ आ गया। निमंत्रण-पत्रिका भेजी गयी। तैयारियाँ जोर-शोर से होने लगीं। संतानम् और भी उदास रहने लगा।

आखिर निश्चित तिथि आ पहुँची। कल ही लग्न था। कितनी ही रस्में अदा होनी थीं। सारा गाँव वहाँ आ जुटा था। सब काम-धाम और दौड़-धूप में व्यस्त थे। तभी डाकिया आकर एक तार दे गया। शिवु ने पढ़कर सुनाया–"रात की गाड़ी से माँ को लेकर आ रहा हूँ–पोन्नुस्वामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार मद्रास से आया। तुरन्त संतानम् की आँखों से अश्रुधारा बह निकली। लोग आये, जैसे-तैसे उसे नीचे ले गये।

तभी द्वार पर एक मोटर आकर रुकी। घबरायी हुई पापा द्वार की ओर दौड़ी। पोन्नुस्वामी ने नीचे उतरते हुए कहा—"माँजी की तबीयत खराब है। सहारा दो, भीतर ले चलें।"

सहारा देकर कावेरी अम्माळ् को हवेली में लाया गया। बिस्तर पर लेटे-लेटे उन्होंने नजर उठाकर कदली-स्तम्भ और मंगल-घट को देखा। "पापा," अतिक्षीण स्वर में उन्होंने कहा।

"हाँ माँजी," उनके चरणों पर सिर रखकर पापा बोली।

"गोपू कहाँ है बेटी ?"

वर की वेश-भूषा में सजा हुआ संतानम् माँ को देखने दौड़कर आ गया था। वधू-रूप में अलंकृत कल्याणी एक ओर खड़ी थी।

कावेरी अम्माळ् के मुख पर क्लेश के चिह्न थे; पर आँखों में एक प्रकार की शांति और तृप्ति थी।

"बेटा!" उन्होंने कहा। संतानम् उनके पास झुक गया। प्रेम से उसके सिर पर उन्होंने हाथ फेरा। कल्याणी उनके चरण छूने को झुकी, तो उन्होंने "आ बेटी" कहकर हाथ फैला दिये।

"जाओ, उनके पास जाओ" पापा ने कल्याणी को आगे धकेला। कावेरी अम्माळ् ने कल्याणी का हाथ लेकर अपनी छाती पर रख लिया। थकावट के कारण क्षणभर के लिए उनकी आँखें झपक गयीं। जब आँखें खुलीं, वे मानो भीड़ में किसी को खोज रही थीं—"वह कहाँ है ?"

"देखिये आपके पास ही है...सिरहाने खड़ा है न..." दो-तीन आवाजें निकलीं। सबका यही अनुमान था कि, वे संतानम् के बारे में पूछ रही हैं।

पर कावेरी अम्माळ् की आँखें तो किसी और को ही खोज रही थीं। थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा—"शिवु तू कहाँ है ?"

"यहीं हूँ न बुआजी।" शिवु आगे आया।

"पास.....आओ ...बेटा।" वृद्धा ने अपना हाथ बढ़ाया। शिवु ने आगे बढ़कर उसे थाम लिया।

सब चकित होकर देख रहे थे कि, यह क्या हो रहा है।

बड़े प्रयत्न से कावेरी अम्माळ् ने कल्याणी का हाथ शिवु के हाथ पर रख दिया। तभी उनकी आँखों से दो आँसू निकलकर उन संयुक्त हाथों पर गिर पड़े।

"ईश्वर तुम दोनों को सुखी रखे..."

"माँ तुमने बचा लिया" संतानम् चिल्ला उठा। महीनों से रुका हुआ उसका भावोद्वेग बाँध तोड़कर बह निकला।

कावेरी अम्माळ् बहुत देर तक निश्चेष्ट-सी पड़ी रहीं। फिर कैफियत-सी देती हुई बोलीं—"संतानम् मेरा बेटा है।... कल्याणी को मैंने बेटी माना है...दोनों भाई-बहन हैं...अब मेरे लिए यह शुभ कार्य मत रोको।...इसी लग्न में शिवु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कल्याणी का विवाह हो जाये। ... तब तक मैं मरूँगी नहीं।"

अगले दिन जल्दी-जल्दी में विवाह की रस्में पूरी की गयीं। शुभ लग्न में शिवु ने अग्नि को साक्षी बनाकर कल्याणी का पाणिग्रहण किया। नव-दम्पति को कल्याणी अम्माळ् ने जी भरकर देखा।

× × ×

"प्यास लगी है..." कल्याणी अम्माळ् क्षीण स्वर में बोलीं।

कोई पानी ले आया, कोई दूध, कोई काफी। और सभी पिलाने के लिए आगे बढ़े। पर वृद्धा ने इशारे से सबको रोक दिया। उनकी आवाज में नया बल आ गया था—"पापा कहाँ है?"

"यहीं तो हूँ माँजी!"

"बेटी, थोड़ा दूध पिला दो। तुम्हारे हाथ से पीने की बड़ी साध है।"

पापा ने चम्मच से धीमे-धीमे दूध में डाला। पर दो घूँट पीते ही अम्माळ् की साँस उखड़ गयी।

किसी ने दीपक जलाकर विस्तर पास रख दिया। सबकी आँखें सजल गयीं। एकाएक वृद्धा ने फिर आँखें खोलीं

"गोपू।"

"हाँ दादी," नन्हे गोपू ने उत्तर दिया

"मेरे लिए घी का पलीता ले चलोगे न?"

"हाँ दादी," अबोध शिशु बोला।

दादी का मुख-मंडल क्षण-भर के लिए मुस्कान से आलोकित हुआ, फिर उस प्राणदीप बुझ गया।

परंतु जो अंखड दीप वे जलाकर रही थीं, वह कभी न बुझेगा।

✱

एक बार मुगल सम्राट् बहादुरशाह 'जफर' के दरबार में बहुत बड़े मुशायरे आयोजन था। उसमें मिर्जा गालिब भी तशरीफ लाये थे। उनकी बारी आने उस्ताद 'जौक' ने उनका परिचय देते हुए कहा—"गालिब साहब तो शायरों के शाह हैं, उनके बारे में मैं कुछ कहना फिजूल समझता हूँ।" मिर्जा गालिब बोले- इस लायक नहीं कि, शायरों का बादशाह बन सकूँ।" जौक मजाक में बोले- बेगम बन जाइये।" गालिब बोले—"अरे हाँ, तुम्हारे शायरों में 'बे-गम' होने के लिए तो आ आया हूँ।"

दिनेश 'अ

✱

गांधीजी से किसी जिज्ञासु ने पूछा—"महात्माजी, रामायण सच है या झूठ?"

उन्होंने उत्तर दिया—"जब रामायण लिखी गयी, तब मैं नहीं था। राम जब रते थे, तब भी मैं नहीं था। इसलिए मैं किस प्रकार कहूँ कि, यह सच है या झूठ पर यह भले ही सच हो या झूठ, मैं तो इतना जानता हूँ कि, इसके पढ़ने से सच्चा बन गया।"

—'अखंड-आनंद'

✱

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

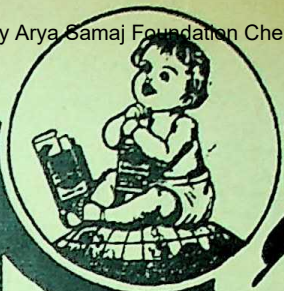

पावुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐन्ड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि वि ध भा र ती

प्रति सप्ताह मनोरंजन से भरपूर ६६
घण्टे का प्रसारण करती है ।

वि वि ध भा र ती

को प्रति मास ४५,००० श्रोताओं
के पत्र मिलते हैं ।

वि वि ध भा र ती

का कार्यक्रम भारत भर में और एशिया
अफ्रीका के कई देशों में सुना जाता है

डी ए–६०१६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहन, हमारे
मन की बात....
सभी लोग टिनोपाल का इस्तेमाल करते हैं।

आप अपने कपड़ों के लिए क्या करते हैं? क्या आप अपने सफेद सूती और रेयॉन के कपड़ों के लिए टिनोपाल का इस्तेमाल करते हैं। सफेद कपड़ों को केवल धोना पर्याप्त नहीं है। उन्हें धोने के बाद टिनोपाल का इस्तेमाल कीजिये और फिर देखिये कितना फर्क हो जाता है। अपने धोबी से भी इसका इस्तेमाल करने के लिए आग्रह कीजिये। टिनोपाल इतना किफायती होता है कि आपके सारे परिवार के कपड़ों के लिए इसकी बहुत कम मात्रा की जरूरत पड़ती है। इसे आज ही खरीदिये।

टिनोपाल
जे. आर. गायगी
एस. ए. बाउ
स्विटजरलैंड का
रजिस्टर्ड
ट्रेड मार्क है

थोड़ासा
टिनोपाल से
सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है।

निर्माता:
सुहृद गायगी लिमिटेड, वड़ी वाड़ी, बड़ोदा.

एकमात्र वितरक:
सुहृद गायगी ट्रेडिंग लिमिटेड, पो. ऑ. बॉक्स १६५, बम्बई-१

SISTA'S-137A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार के स्वास्थ्य का बीमा

घर में.....सफर में

कोई भी विकार लम्बा रोग न बनने दें

फीसों तथा दवाओं का सब खर्च बचाएँ

कवि विनोद वैद्य भूषण पं० ठाकुर दत्त शर्मा वैद्य की निर्मित

अ मृ त धा रा

(जेबी डाक्टर)

सदा पास रखें और अचानक होने वाले कष्टों का तुरन्त निवारण करें जैसे :–आमाशय (हाज्मे) के कष्ट, बाह्य दर्द, आन्तरिक पीड़ाएँ, जख्म, चोट, सूजन आदि।

और यह सात दवाएँ

शोधक (शुद्धि करे) अमृत अंजन (नेत्र रोग हरे) अमृत मंजन (दाँत रोग हरे) अमृत तैल (त्वचा रोग हरे) अमृत गोली विरेचक शिलाजीत (चोट आदि के बाद बलस्थिर करे) दिलानन्द (दिल दिमाग और रक्त शीतल करे चित्त स्थिर करे) अमृत धारा की ३।।) वाली शीशी के साथ लगभग (१३) की यह औषधियाँ केवल (१०) में खरीदकर घर में रखें (डाक खर्च १.७५)

बम्बई एजंट:– मेसर्स कांचनलाल वाडीलाल ॲन्ड कं० प्रिन्सेस स्ट्रीट, मंगलदास रोड, बम्बई –२.

अमृतधारा फार्मेसी प्रा० लिमिटेड (Health Deptt.) देहरादून

SWAIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीब ६००० वर्ष पूर्व, एक मिस्री निवासी ने पीने का पानी रखने के लिए हाथ का बना, धूप में पकाया दुनिया का पहला मिट्टी का बर्तन बनाया।

उसी की आविष्कारक बुद्धि ने मिस्री लोगों को पानी का घड़ा दिया। आधुनिक मानव की वैसी ही बुद्धि के कारण बिजली से पानी ठंडा करने की मशीन का आविष्कार हुआ।

प्राचीन पानी के घड़ों से आधुनिक कूलर

ब्लू स्टार सर्वाधिक किस्मों के वाटर कूलर बनाते हैं—स्टोरेज व तुरन्त ठंडा करनेवाले

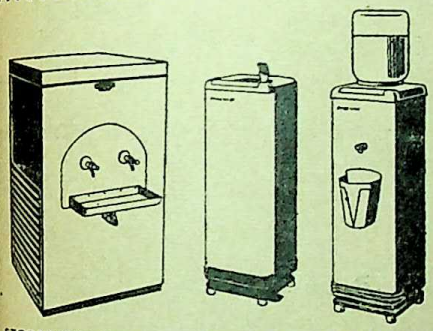

STORAGE TYPE MODEL 18P40 | PRESSURE TYPE MODEL PT-100 | BOTTLE TYPE MODEL BL-100

PSBS-WC 62/61

BLUE STAR

— The Greatest Name in Water Coolers

वाटर कूलरों में सर्वोच्च नाम

ब्लू स्टार इंजीनियरिंग कं० (बम्बई) प्राइवेट लि०

लोटस कोर्ट, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई-१

कलकत्ता—दिल्ली—मद्रास में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रियों को सूचनाएँ

यात्रियों के आराम के लिए रेलें काफी धन व्यय कर रही हैं, विशेषकर तीसरे दर्जे के यात्रियों के लिए।

आप से निवेदन है कि इन सुविधाओं का पूरा लाभ उठाएँ और ध्यान रखें कि इनका उचित उपयोग किया जाये और यथासम्भव साफ रखा जाये।

★ कृपया यात्रियों को पहले उतरने दें।

रेल के डिब्बों के दरवाजे से एक समय में एक ही मनुष्य घुस या निकल सकता है। यात्रियों के नीचे उतरने तक इन्तजार कीजिये और फिर भीतर घुसिये जिससे दरवाजे पर धक्का-मुक्की न हो।

★ 'क्यू' की आदत डालिये।

यदि आप 'क्यू' की आदत डालेंगे तो आपका काम जल्दी होगा।

★ भिखमंगों और फेरीवालों को प्रोत्साहन न दें।

भीख न देकर और फेरीवालों से न खरीद कर आप ही इनको निरुत्साहित कर सकते हैं।

प श्चि म रे ल वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हमारी शुभकामनाएं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफल उत्पादनका पार्श्वभूमी...

प्रथम पंचवर्षीय योजना में खाद्य सामग्री के उत्पादन में लगभग ३० प्रतिशत की अधिकता हुई है। योजनापूर्ण उत्पादन इस सफलता का मुख्य कारण है। योजनापूर्ण उत्पादन के लिए भूमि की उचित रूप से सिंचाई सबसे अधिक आवश्यक है। भारतवर्ष के ५० प्रतिशत से अधिक कृषक सिंचाई के लिए किर्लोस्कर ५ हार्स पावर एंजिन पंपिंग सेट का उपयोग करते हैं। किर्लोस्कर एंजिन की खपत आज हमारे देशमें सभी प्रकार के एंजिनो से अधिक है।

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटवर्ती किर्लोस्कर एंजिन के विक्रेता को स्वयं मिलिये या उनसे पत्र व्यवहार कीजिए।

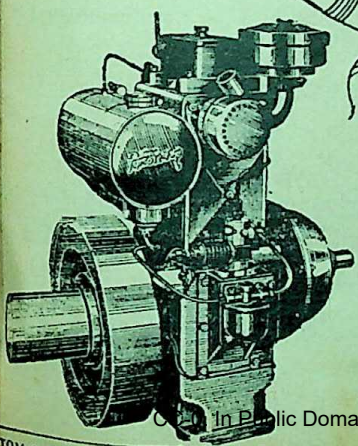

किर्लोस्कर ऑइल एंजिन्स लि.,

खडकी, पुणें ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभता और एकसूत्रता के लिए मैट्रिक पद्धति अपनाइए

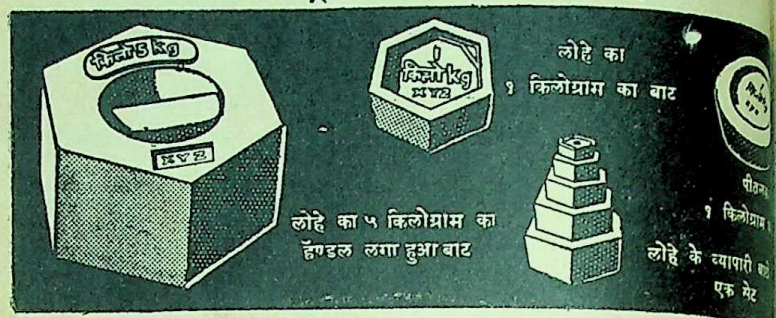

मैट्रिक बाट मुकतान तालिका

किलोग्राम से सेर

किलोग्राम	मन	सेर	तोला (निकटतम अनुमान)
१	—	१	६
२	—	२	११
५	—	५	२९
१०	—	१०	५७
२०	—	२१	३५
५०	१	१३	४७
१ क्वीन्टल (१०० किलोग्राम)	२	२७	—

किलोग्राम से पौंड

किलोग्राम	पौंण्ड
१	२
२	४
५	११
१०	२२
२०	४४
५०	११०
१ क्वीन्टल (१०० किलोग्राम)	२२०

१ किलोग्राम = १००० ग्राम

प्रकाशन विभाग महाराष्ट्र सरकार, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञान की खोज में

आपका बच्चा इस भव्य संसार को कुतूहल की दृष्टि से देखता है। उसका मन विश्व के विविध रहस्यों को जानने में व्यस्त रहता है। इसके अनुसन्धान की वास्तविक कुन्जी शिक्षा ही है। आप अपने बच्चे को जितनी ही उच्च शिक्षा दिला सकेंगे उतने ही अधिक सफलता के अवसर, इस विशाल विश्व में उसे सुलभ होंगे।

सुदृढ उच्च शिक्षा के लिए कितना खर्च आता है? यह खर्च साधारणतया ३०००) रु. से लेकर १००००) रु. तक हो सकता है। एक सीधासादा उदाहरण ही लिजिए। यदि पिता की आयु ३० वर्ष की हो और प्रतिमास, वह केवल २३) रु. ही बचाता हो तो बच्चे की चुनी हुई आयु होने पर, उसे की पढ़ाई के लिए ५०००) रु. का, छमाही किश्तों में, प्रबंध कर सकेगा। चाहे पिता जीवित रहे या न रहे बीमे की यह रकम बच्चे को निश्चित मिलेगी ही। प्रतिमास एक छोटी-सी किश्त देकर वह अपने बच्चेके उत्तम भविष्य का प्रबंध कर पायेगा।

इस विषय में अधिक जानकारी कारपोरेशन के किसी भी एजेन्ट से प्राप्त कीजिए।

जीवन बीमा

सुरक्षा का सब से बेजोड़ साधन है।

ASP/LIC-66 Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे गुलाब की नशीली पंखुड़ियाँ

गुलाबी

Breeze

रंग में अब आपका ब्रीज़ सौंदर्य साबुन

ब्रीज़...सुंदर, अति सुंदर...गुलाबी रंग में रचा हुआ! ब्रीज़...ऐसे सुहाने, मनमोहने गुलाबी रंग में, जो इस के छबीले गुलाबी आवरण की तरह आकर्षक है! अति कोमल, अति मुलायम, भोर के शीतल झोंके जैसी मनोहर सुगंधवाला...ब्रीज़!

जी हां...आपका संपूर्ण सौंदर्य जगमगा उठेगा...अनुपम गुलाबी ब्रीज़ से!

गुलाबी **ब्रीज़** - अधिक सुंदर रंगरूप के लिए

हिंदुस्तान लीवर लि. ने डर्रेसिक कम्पनी लि. लन्दन के लि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

जुलाई १९६१

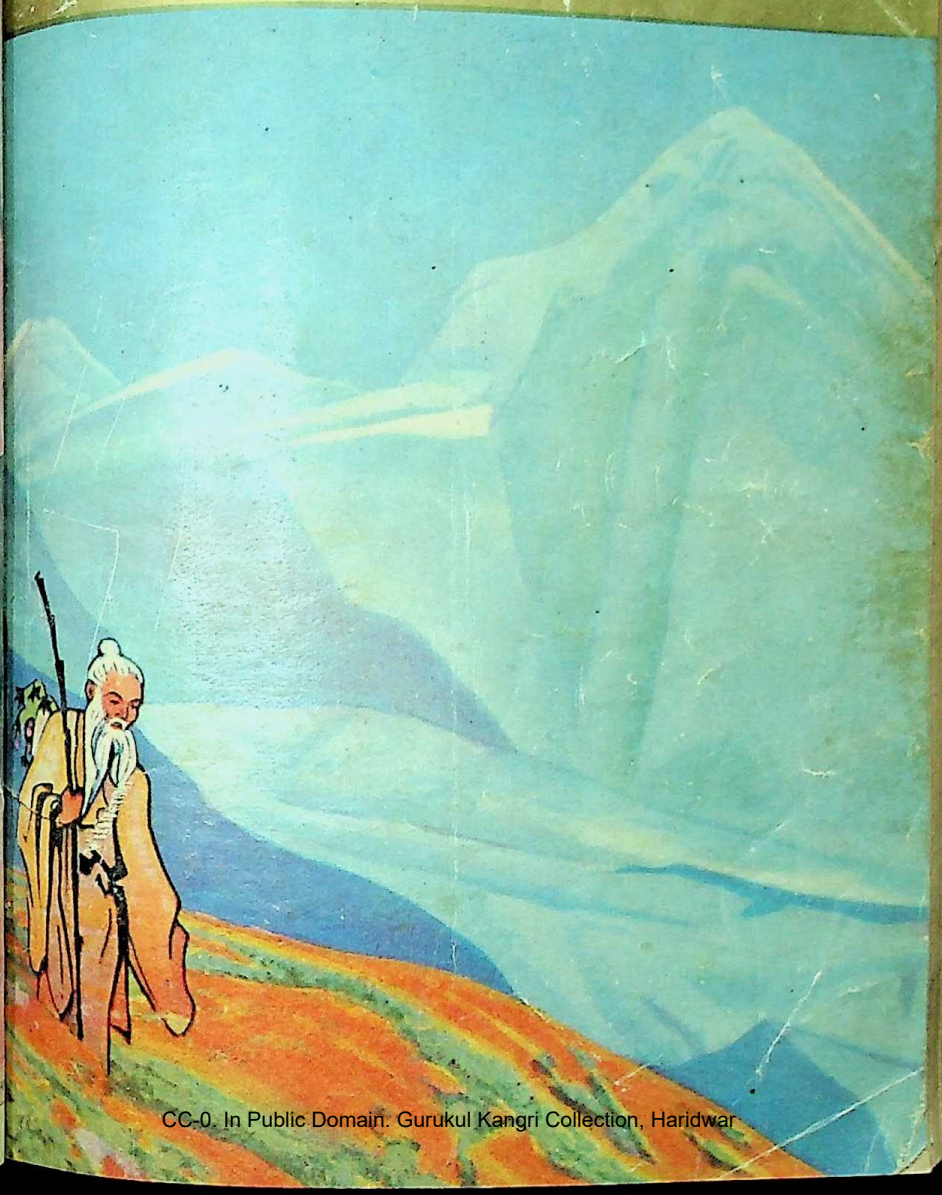

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति मास प्रकाशित 'नवनीत' की सामग्री इतने स्थायी उपयोग व सर्व-कालीन की होती है कि, उसका संग्रह प्रत्येक घर के लिए वांछनीय है। इसीलिए 'नवनीत' के पा व ग्राहक सब अंकों को जमाकर अपने घर में एक छोटा-सा पुस्तकालय बना लेते हैं।

जो लोग पुराने अंकों को जमा नहीं कर पाये हैं या नये ग्राहक बने हैं–उन्हें पुरानी जि मिल सकती हैं। छः–छः अंकों को एक सुन्दर जिल्द में बंधवा दिया गया है। इ अलावा छः महीने के अंकों में छपे लेखों की विषयानुसार सूची भी आरम्भ में लगा दी गई

अपने अवकाश के समय में कोई भी जिल्द ले लीजिये और अपने प्रिय विषय लेख या कहानियाँ पढ़िये।

जिल्दों का मूल्य

साधारण संस्करण ५) विशेष संस्करण ७॥) एक जिल्द पर १=) डाक खर्च लगता है, जो ग्राहक को नहीं देना पड़ता : हम देते हैं।

लिखिये : वितरण व्यवस्थापक, नवनीत, बम्बई-७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवरण पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

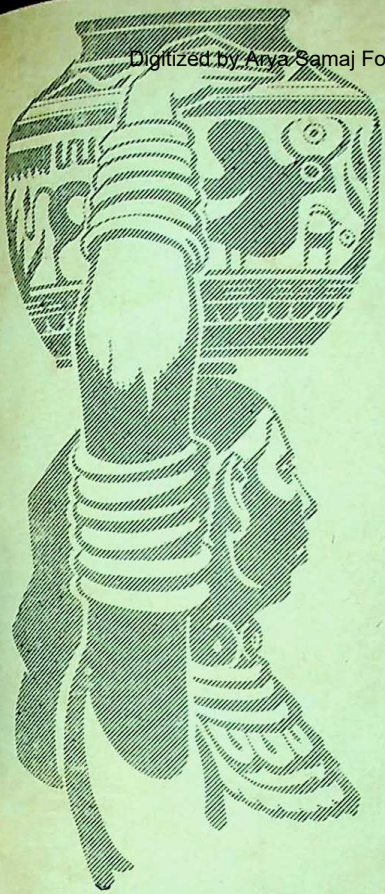

पानी के लिए सुन्दर प्रबन्ध और सार्वजनिक कुओं के चारों ओर बनाये हुए मिट्टी के सुन्दर बर्तनों से स्पष्ट है कि मोहिनजोदड़ो के निवासी पर्याप्त मात्रा में शुद्ध पानी की पूर्ति के लिए विशेष सावधानी रखते थे।

पर्याप्त शुद्ध पानी

आप भी ब्लू स्टार वाटर कूलर द्वारा लगातार साफ एवं स्वच्छ पानी प्राप्त कर सकते हैं।

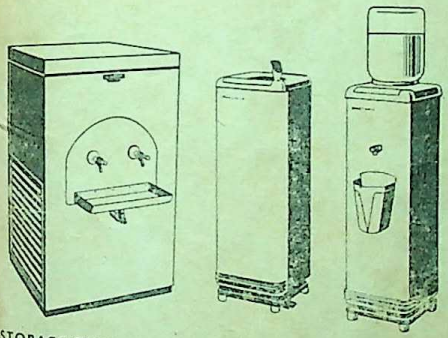

STORAGE TYPE MODEL 18P40 | PRESSURE TYPE MODEL PT-100 | BOTTLE TYPE MODEL BL-100

PSBS-WC 64/61

BLUE STAR

वाटर कूलरों में सर्वोच्च नाम

ब्लू स्टार इंजीनियरिंग

कं० (बम्बई) प्राइवेट लि०

लोटस कोर्ट, जमशेदजी टाटा रोड,

बम्बई–१

कलकत्ता–दिल्ली–मद्रास में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी	८,००,००,०००
लागत पूँजी	४,००,००,०००
चुकती पूँजी	२,००,००,०००
सुरक्षित कोष	२,०५,००,०००

शाखाएँ

भारत में :–सभी प्रमुख नगरों तथा व्यापारिक व औद्योगिक महत्व के सभी कस्बों में।
पाकिस्तान में :–चटगांव व करांची ।
बर्मा में :–रंगून, मोलमेन, मांडले ।
मलाया में :–पेनांग, क्वालालुमपुर, क्लांग ।
सिंगापुर में :–दी आलमीड़ा स्ट्रीट, सेरांगून रोड ।
यू० के० – लंदन ।
अन्य – हांगकांग और काझलून ।
एजेंट – विश्व में हर जगह ।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है । अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक सम्बंधी सेवा प्रदान करती है ।

जी० डी० बिड़ला — चेयरमैन

एस० टी० सदाशिवन — जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नहाना हो तो हमाम से!

हमाम

परिवार में हर एक का
प्रिय साबुन है

...और चलता भी ज़्यादा दिन है!

टाटा–उत्पादन

THY-9 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरल पदार्थ के मेट्रिक पैमाने

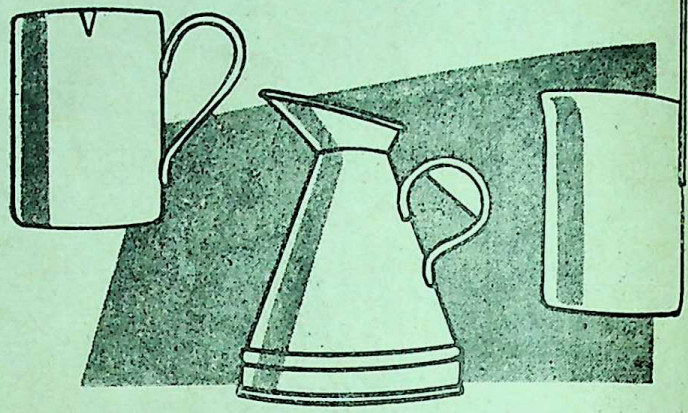

१ अप्रैल, १९६१ से केन्द्र शासित क्षेत्र दिल्ली में तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने का प्रयोग अनिवार्य हो गया है।

शेष देश के निर्धारित स्थानों पर भी तरल पदार्थ मापने के मेट्रिक पैमाने चालू हो चुके हैं। इन जगहों पर केवल एक वर्ष तक पुराने पैमानों का प्रयोग हो सकेगा।

समाई मापने की इकाई

लिटर

१ लिटर = लगभग १·१ सेर

मेट्रिक प्रणाली

सरलता व एकरूपता के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

DA 51/199

भारत सरकार द्वारा प्रचारित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे प्यारे दोस्त
क्या तुम्हारी पत्नी
टिनोपाल का इस्तेमाल
नहीं करती ?

आपके पति की कमीजें कैसे धुली हैं ? कभी–कभी साफ कपड़े भी गंदे और मटमैले दिखायी पड़ते हैं। आप देखेंगी कि सफ़ेद सूती और रेयान कपड़ों को केवल धोना पर्याप्त नहीं है। धोने के बाद टिनोपाल का इस्तेमाल कीजिये और देखिये कि आपके कपड़े कितने चमकदार सफ़ेद हो जाते हैं। अपने धोबी को भी इसका इस्तेमाल करने को कहिये। याद रखिये... सभी लोग टिनोपाल का इस्तेमाल करते हैं।

Ciba Geigy

टिनोपाल जे. आर. गायगी एस.ए. बाल, स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

थोड़ासा **टिनोपाल** सफ़ेद कपड़ों को अत्यधिक सफ़ेद बनाता है।

निर्माता :
सुहृद गायगी लिमिटेड, वडी वाड़ी, बड़ोदा.

एकमात्र वितरक :
सुहृद गायगी ट्रेडिंग लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स ९६५, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में

सुपरिचित

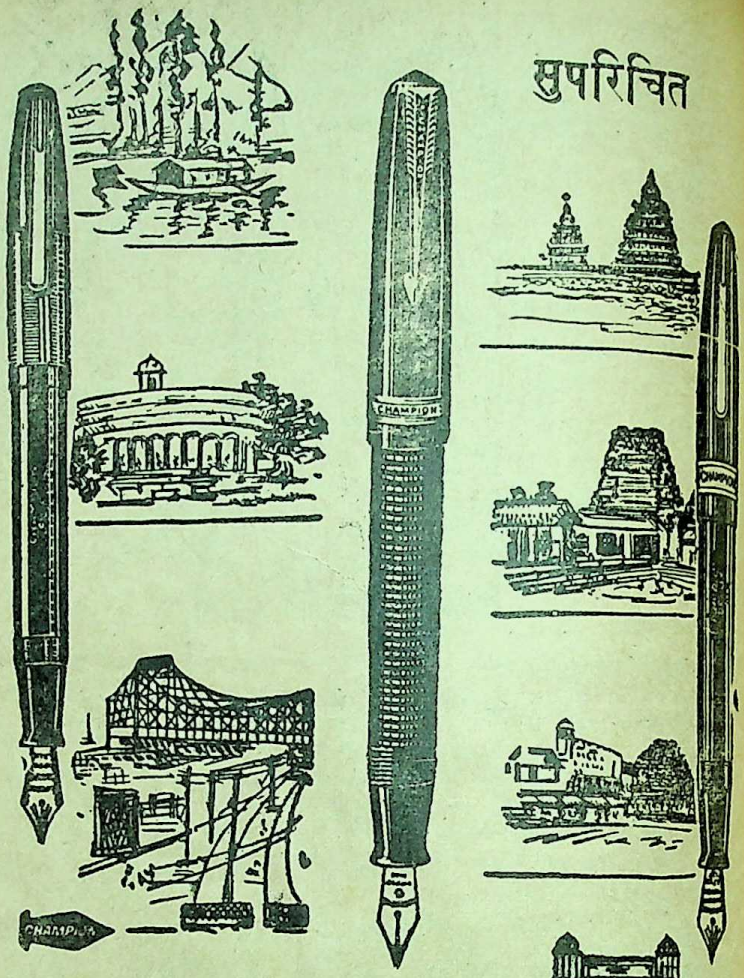

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५० वर्षों से अधिक समय से

भारत के घरों और उद्योगों में सर्वाधिक प्रिय

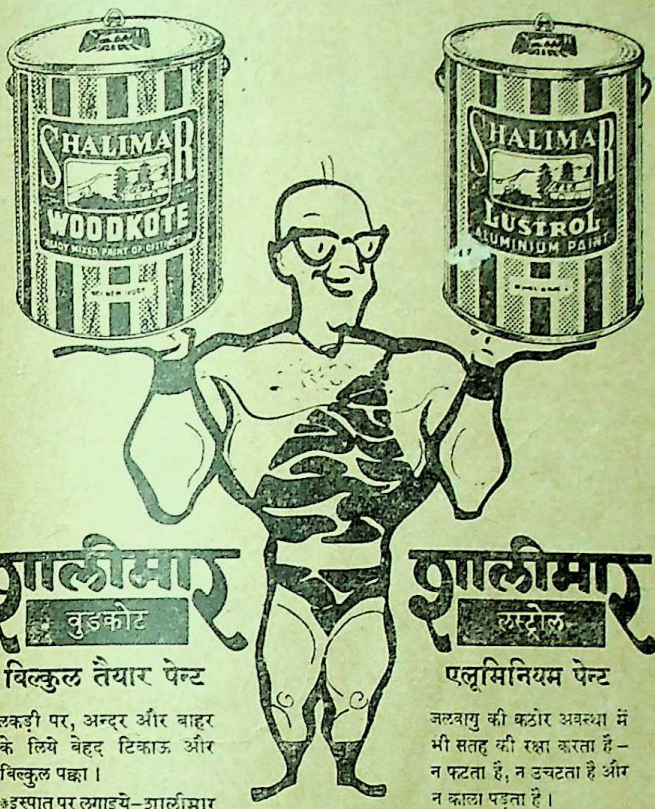

शालीमार वुडकोट

बिल्कुल तैयार पेन्ट

लकड़ी पर, अन्दर और बाहर के लिये बेहद टिकाऊ और बिल्कुल पक्का।

*इस्पात पर लगाइये—शालीमार स्टीलकोट।

शालीमार लस्ट्रोल

एलूमिनियम पेन्ट

जलवायु की कठोर अवस्था में भी सतह की रक्षा करता है—न फटता है, न उचटता है और न काला पड़ता है।

be BRIGHT- say

SHALIMAR

SHALIMAR PAINT, COLOUR & VARNISH CO., LIMITED.

Calcutta - Bombay - Madras - New Delhi - Kanpur

(बर्मा और सीलोन को निर्यात करनेवाले)

JWTSPW 544 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिट
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स

टिकियाँ लीजिए

पेप्स की गोलियाँ चूसिए—आप देखेंगी कि इनकी आरोग्यकारी भाप बहुत ख़ूबी से दर्द को हल्का करती है, गले की तकलीफ़ को साफ़ करती है और ब्रॉंकाइटिस, खाँसी और सर्दी पैदा करने वाले कीटाणुओं का नाश करने में सहायता देती है।

इनमें कोई
नुक़सानदेह दवाएँ
नहीं होतीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती है
**ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं**
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

FPY 55 HIN

बम्बई के सोल एजेन्ट
केम्प एण्ड कं. लि., पो. बा. ९३६

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं.
बम्बई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनसदा से पौष्टिक आहार बनाइये

वनसदा

अ और ड
विटामिनयुक्त वनस्पति

वनसदा से आहार की पोषणशक्ति बढती है। वनसदा पौष्टिक और ताजा होता है। वनसदा इस्तेमाल कीजिये और देखिये यह सात्विक आहार कितने स्वाद से खाया जाता है।

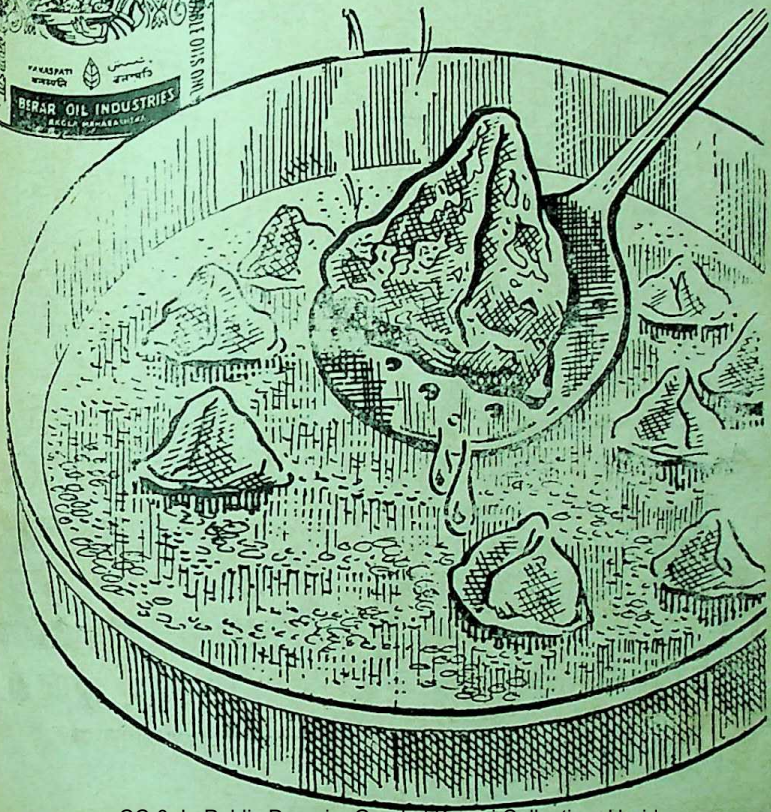

बरार आइल इंडस्ट्रीज, अकोला.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

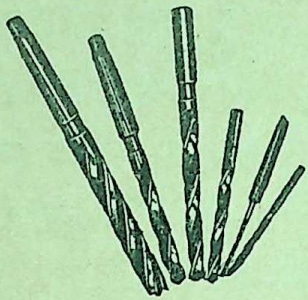

ड्रिल

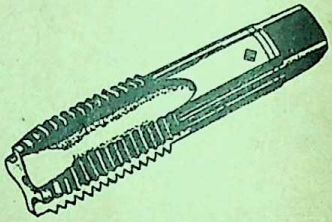

टैप

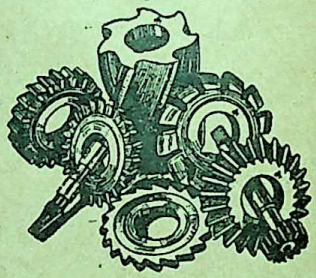

कटर

दी इंडियन टूल
मैन्यूफेक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्मोल

सफेद बालों को काला और चमकीला बनाता है

वस्मोल एक असली वैज्ञानिक नुसखा है, जो अपने एक ही फ़ार्म्युले में सही ढंग से बालों को काला करता है. बालों को निरोग रखता है और बालों के सुगंधित विन्यास के लिए उत्कृष्ट है—तो भी इसकी कीमत किसी भी अच्छे केशतेल से ज़्यादा नहीं है।

वस्मोल

केश काला करनेवाला जो अपना वादा पूरा करता है

वस्मोल तैलयुक्त सफेद मिश्रण केशतेल और पोमेड इन दो रूपों में सभी स्टोर्स व केमिस्टों के यहां मिलता है।

लेनोलिन से परिपूर्ण वस्मोल आपके बालों के लिए सर्वोत्तम है।

उत्पादक :

हाइजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट,

पोस्ट बॉक्स ११९२, बम्बई-१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंकिंग

राष्ट्रीय सम्पदा को बढ़ाती है

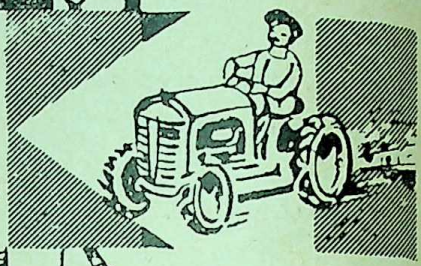

पंजाब नैशनल बैंक
राष्ट्र के उद्योग, कृषि और
व्यापार की सेवा करता है।

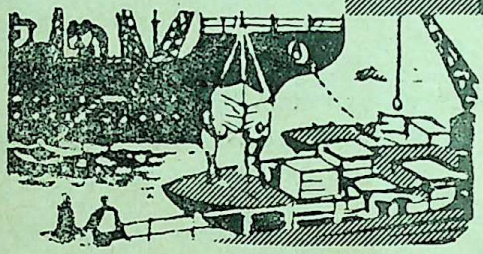

प्रत्येक प्रकार का
बैंकिंग व्यापार
होता है।

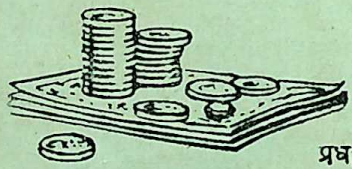

दि
पंजाब
नैशनल
बैंक
लि०

संस्थापित १८९५
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दृष्टि में

'नवनीत' में यदि नीरस विदेशी कथाओं को स्थान न देकर महाभारत-काल की रोचक कथाएँ प्रकाशित करें, तो सोने में सुगंध आ जाये ।

—हरिनारायण शर्मा, विशाखापट्टनम्

शायद आपके वाक्य में जोर 'विदेशी' शब्द पर नहीं, अपितु 'नीरस' शब्द पर है। सरसता और नीरसता बहुत अंश तक वैयक्तिक रुचि पर निर्भर हैं । —सम्पादक

—०—

अप्रैल अंक में पृष्ठ ६० पर महाद्वीपों के विचलन का जो चित्र दिया गया है, उसके परिचय में नं० ४ का महाद्वीप दक्षिण अमरीका होना चाहिये, न कि दक्षिण अफ्रीका ।

—एम० डी० कोली, बागेश्वर

आपकी बात सही है, सूचना के लिए धन्यवाद । —सम्पादक

—०—

शिकार-कथा की तरह ही आप उच्च कोटि की जासूस-कथा क्यों नहीं छापते ?

—मुनि सूर्योदय विजय, शिमोगा

क्योंकि सचमुच जिन्हें उच्च कोटि की कहा जा सके, ऐसी जासूसी कहानियाँ प्रायः दुर्लभ होती हैं । —सम्पादक

पुस्तक-संक्षेप के साथ लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया जाये, तो अच्छा रहे ।

—रमेशचंद्र प्र० सिंह, पटना

भूमिका में लेखक का परिचय तो प्रायः रहता है; उसे थोड़ा और विस्तृत करने का प्रयत्न करेंगे । —सम्पादक

—०—

'व्यंग्य-विदूषक चार्ली चैपलिन' (नवनीत, फरवरी १९६०) बड़ा रोचक व पठनीय है। किंतु उसमें 'मैकार्थीइज्म' के बड़े शिकारों में ओपनहाइमर और पाल राब्सन के साथ पाल ईली का नाम देखकर आश्चर्य हुआ। पाल ईली फ्रेंच सेना के जनरल हैं। वे नाटो के उप-प्रधान सेनापति थे और हाल में फ्रेंच सेना के चीफ आव स्टाफ पद से निवृत्त हुए हैं । शायद लेखक का आशय अमरीकी वैज्ञानिक डा० एल० पाउलिंग से है ।

—केशवदेव, कलकत्ता

धन्यवाद ! लेखक का आशय डाक्टर लिनस पाउलिंग से ही था । —सम्पादक

—०—

बिना टिप्पणि के

'हमारी दृष्टि में' स्तम्भ में उत्तर की जगह टालमटूल किया जाता है ।

— विश्वनाथ यादव, बरपुर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीर्घ काल तक चलने के लिए
सब सीलिंग फंखे
डबल
बाल बेयरिंग
युक्त हैं।

कार्य में कुशल
उत्तम क्वालिटी
सुन्दर रूपरंग

अब आसान किश्तों में भी मिलते हैं

उषा

सर्वोत्तम क्वालिटी
के लिए सुविख्यात नाम

सर्वाधिक

बिकने वाला

जय इंजिनियरिंग वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता-३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
श्यामराय भटनागर
★
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
★
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
★
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता
★

महर्षि चरक
चित्रकार : निकलस रोरिख

विषय-सूची

भाग्य का बीज	आचार्य तुलसी	१
जे पीर पराई जाणे रे	प्यारेलाल	१
काँपती अँगुलियाँ	सर्जी आइसेंस्टाइन	२
असफलता असम्भव	डरोथी ब्रैंड	२
जन-मानस का उद्गाता राब्सन	जयनारायण दास	२
पुरुषार्थ से परे	के० एम० पणिक्कर	२
मानवता निर्माण में	स्वामी गम्भीरानंद	३
अलपाईवाला	ठा० विश्वनारायण सिंह	३
गालिब के जनानखाने में	प्रो० हमीद अहमद खाँ	३
खुजली-महाभाष्य	ज्योतींद्र दवे	४
उन्माद : सामाजिक समस्या	राबर्ट एस० डी राप	४
रहस्य का निरूपक हेनरी मूर	कालिंदी मित्रा	४
मृत्यु-पथ	पीटर माइकलमोर	५
समय के साथ	... ...	५
फूल भी काँटे भी	स० का० वि०	५
चंद्रमा का अदृश्य भाग	टी० जे० ब्रिनिकूम्ब	५
बिजली के दिमाग	देशबंधु शर्मा	६
कभी न भूलूँ	... ...	६
दो का तप : करोड़ों का त्राण	प्रकाश खन्ना	६
स्वप्नदर्शी	मदाम क्यूरी	७
गीत (कविता)	सुमित्राकुमारी सिन्हा	७
विनोद से आत्म-उपचार	रेक्स होवाट	७
ये अजीब वसीयतें	श्रीकांत साठे	७
घायल बाघ की तलाश में	खानबहादुर हकीमुद्दीन	८
कोई अंधा न रहे	जी० डी० श्रीवास्तव	८
[illegible]	[illegible] शर्मा	८
नागवल्ली	गुणचंद्र सेन	९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोक-कण	. . .
दिप्पी (पंजाबी कहानी)	अमृता प्रीतम
अंधा कुत्ता (अँग्रेजी कहानी)	विलियम ब्रैंडन
मुजरिम (तमिळ कहानी)	कल्कि
ओ शिल्पकार !	नवल
विशिष्ट वाङ्मय	. . . . .
अनमोल मोती (पुस्तक-संक्षेप)	जान स्टीनबेक

–चित्रसज्जा–

हेनरी मूर, आइसेंस्टाइन, ओके, सोनवलकर, के० एम० शर्णे, सुरेश वेदक

–अगले पृष्ठ का चित्र–

अहमदाबाद के एक जैन भंडार में रखी एक हस्तलिखित पुस्तक में से

आगामी अंक के आकर्षण

१. **मेरा जीवन-दर्शन**
– आल्बर्ट आइंस्टीन

२. **संसार का प्राचीनतम बैंक**
– एन्यार क्विस्ट

३. **पुरुष कैसी पत्नियाँ चाहते हैं ?**
– सत्यकाम विद्यालंकार

४. **सुराही (हास्य)**
– केशव चंद्र वर्मा

५. **अंकों पर से विश्वभाषा**
– डा० शशिशेखर

६. **पुस्तकें : संजीवन औषध**
– आंद्रे मोरवा

७. **कपिला (कहानी)**
– अखिलन्

८. **आल्प्स के आरपार**
– गोपाल म्हात्रे

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६।४८ खेतवाडी बैक रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष : १० नवनीत जुलाई
अंक : ७ [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासिक

भाग्य का बीज

सकडाल-पुत्र कुम्हार का काम करता था। उसके मिट्टी के बर्तनों का व्यापार भी अच्छा चलता था। गोशालक का अनुयायी होने के कारण वह भाग्यवादी था। उसकी मान्यता थी कि, जो कुछ होता है, नियतिवश होता है; मानव के कृतित्व जैसा कुछ नहीं है। एक बार भगवान् महावीर उधर से निकले और उसके यहाँ ठहरे। बातचीत चली। उसी दौरान में उन्होंने पूछा—"भाई, एक बात बताओ! तुम्हारे यहाँ मिट्टी के बर्तन बनाये जाते हैं—भला यह सब कौन करता है?" सकडाल-पुत्र ने झट उत्तर दिया—"सब नियतिवश ही तो होता है—जब संयोग मिल जाता है, तब ऐसा हो जाता है।" उन्होंने फिर पूछा—"अच्छा, अगर तुम्हारे इन पके-पकाये बर्तनों को कोई फोड़ दे तो?" कुम्हार कुछ तमका—"फोड़ेगा कैसे, मेरा नुकसान जो होता है; और वह है कौन मेरा नुकसान करनेवाला?" भगवान् महावीर ने फिर पूछा—"अगर कोई अत्याचारी तुम्हारी पत्नी से बलात्कार करे तो...?" यह सुनना था कि, सकडाल-पुत्र आवेश में आ गया—"कौन माई का लाल है, जो मेरे रहते मेरी पत्नी की तरफ आँख उठाकर देखे—मैं उसकी खबर न ले लूं?" महावीर बोले—"लेकिन इसमें उसका क्या दोष? जो कुछ होता है, वह नियति वश ही तो होता है!" सकडाल-पुत्र की आँखें खुलीं। उसकी सारी भाग्यवादी मान्यता क्षण-भर में दूर हो गयी। वह बड़े विनम्र भाव से बोला—"नहीं महाराज, आप ठीक कहते हैं। भाग्य का बीज तो पुरुषार्थ ही है।"

— आचार्य तुलसी

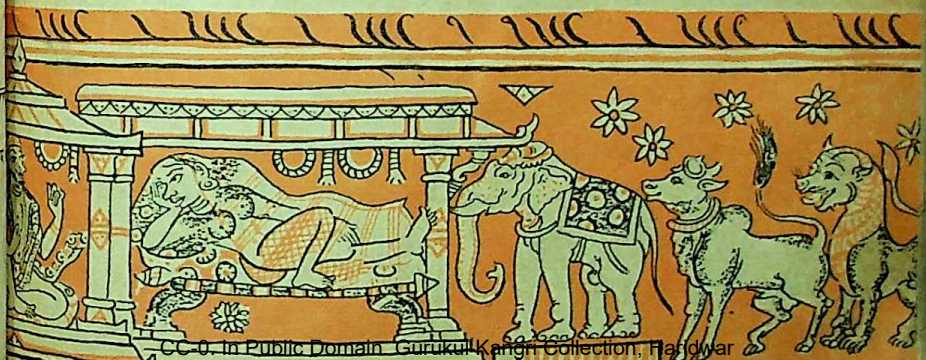

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

....जो पीर पराई जाने रे

ईश्वर-तत्व की सर्वसम्मत व्याख्या करनेवाला यह प्रसंग 'महात्मा गांधी : द लास्ट फेज' से उद्धृत
सौजन्य : नवजीवन ट्रस्ट ।

प्यारेलाल

एक ग्रैजुएट हरिजन युवक गांधीजी से मिलने सेवाग्राम पहुँचा । उसे ग्राम-सुधार के सिलसिले में उनसे कुछ मदद लेनी थी । उसने गांधीजी से कहा—"बापू, मेरा मानवतावादी दृष्टिकोण है; लेकिन ईश्वर में मुझे कतई विश्वास नहीं है ।"

गांधीजी बोले—"ठीक है, मानवतावादी दृष्टिकोण आवश्यक है; किंतु वह 'ईश्वर' का स्थान नहीं ले सकता । इसके पीछे वास्तव में ईश्वर है; मगर ईश्वर-सम्बंधी यह मान्यता हमारी मानसिक कुंठाओं और भौतिक परिस्थितियों के कारण अत्यंत सीमित-संकुचित बनी हुई है । मेरा खयाल है कि, तुम्हारा असंतोष सम्भवतः ईश्वर-सम्बंधी जो प्रचलित धारणा है, उसी से है। इसका सीधा-सा एक कारण यह भी है कि, जो लोग ईश्वर-भक्ति का दम भरते हैं, उनके दैनंदिन जीवन में ही अक्सर ईश्वर कोसों दूर रहता है ।"

और वे उसी तरह विषय को स्पष्ट करते रहे—"तुम अपने को ही लो, अगर तुम अपनी योग्यता और उत्साह के अतिरिक्त अपने जीवन में कोई नयी शक्ति—ईश्वर में जीती-जागती आस्था—उत्पन्न कर सको, तो तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होकर रहेगी। तुम्हारी यह सारी उदासीनता और उ[illegible] दुम दबाकर भाग खड़ी होगी । सो जब तुम ईश्वर में ऐसा विश्वास उत्पन्न कर लो, जो तुम्हारे अंतर को आलोड़ित कर और तुममें बाधाओं का सामना करने हौसला पैदा कर सके, तब तक तु[illegible] लिए चारों तरफ निराशा ही निराशा [illegible]

"इसलिए मेरी निजी सलाह तो [illegible] कि, जब तक तुम उस ईश्वर का साक्षात[illegible] न कर लो, यहाँ आश्रम में ही रहो। [illegible] के कुछ अपने नियम व आदर्श हैं—उन्हें प्रतिष्ठा के लिए यह आश्रम खड़ा किया है । उन सब आदर्शों के माध्यम से [illegible] सामूहिक शक्ति-चेतना का निर्माण होना सम्भव है, तुम्हें भी वे ईश्वर का साक्षात[illegible] करवा सकें और तुम उसी प्रकार विश्व[illegible] पूर्वक कह सको कि, 'ईश्वर यह है' [illegible] तुम यह कह रहे हो कि, 'सत्य यह' है [illegible]

गांधीजी की इन बातों को युवक [illegible] ध्यान से सुन रहा था । उसने [illegible] प्रकट की—"तब तो बापू, इसका मतलब [illegible] हुआ कि, सत्य भी एक तरह से झूठ [illegible] उलटा रूप है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, यह कहा जा सकता है। प्राचीन ऋषि-महर्षियों ने भी ईश्वर को 'नेति-नेति' कहकर वर्णन किया है। ऐसी हालत में एक-मात्र सत्य ही इस उलझन को मिटा सकता है। और कुल मिलाकर जो कुछ भी शुद्ध एवं वास्तविक है, वही सत्य है। तुम्हारा मस्तिष्क विश्लेषणात्मक है, यह अच्छी बात है; किंतु भाई, यहाँ कई चीजें ऐसी भी हैं, जिनकी कोई व्याख्या की ही नहीं जा सकती। मेरी छोटी-सी बुद्धि द्वारा ईश्वर का जो विश्लेषण होगा, उससे मुझे खुद ही संतोष नहीं मिल पायेगा। तब मैं उसकी परिभाषा करने का दुःसाहस कैसे करूँ? ऐसी अवस्था में मैं तो भगवत्-भक्तों का अनुसरण करके अपनी आत्मशांति बनाये रखता हूँ।"

युवक ने बात को फिर आगे बढ़ाया—"बापू, आपके जीवनादर्श मुझे बहुत अनुप्राणित करते हैं; क्योंकि उनमें वैयक्तिक स्वतंत्रता के लिए भी गुंजाइश है। लेकिन ईश्वर की कल्पना तो मेरी दृष्टि में कट्टरता को ही जन्म देती है; और वह कट्टरता व्यक्ति को जकड़ती है—उसकी स्वतंत्र सत्ता में बाधक सिद्ध होती है।"

उसकी यह दलील सुनकर गांधीजी तनिक मुस्कराये और बोले—"अच्छा, क्या यहाँ कोई स्वतंत्र सत्ता नाम की भी चीज है? बताओ तो जरा कि, यह क्या है? हम सब लोग तो उस ईश्वर के हाथों के खिलौने-मात्र हैं।"

"तो फिर ईश्वर और व्यक्ति, सत्य और ईश्वर आदि में पारस्परिक सम्बंध क्या है?"

"मैंने अभी कहा न, सत्य ही ईश्वर है। और ईश्वर तथा उसका विधान कोई अलग-अलग चीजें नहीं हैं। इसे समझने के लिए मनुष्य को एकाग्र चिंतन या प्रार्थना का आश्रय लेना पड़ता है, साथ ही अपने-आपको ईश्वर में लीन कर देना पड़ता है। इस तरह हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से इसकी व्याख्या करता है। जहाँ तक मनुष्य और ईश्वर के पारस्परिक सम्बंध की बात है, मेरी राय में मनुष्य केवल इसलिए मनुष्य नहीं है कि, उसके दो हाथ और दो पैर हैं। चूँकि उसमें स्वयं ईश्वर विराजता है, इसलिए वह मनुष्य है।"

"लेकिन बापू, अभी जब ईश्वर के बारे में ही मेरा दृष्टिकोण सुस्पष्ट नहीं है, तब मनुष्य को ईश्वर का निवास घोषित करनेवाली बात मेरे कहाँ पल्ले पड़ेगी? इससे तो उलटा भ्रम ही बढ़ेगा।"

गांधीजी बोले—"तो भी भाई, यही सिद्धांत ठीक है। जब तक हमें यह अनुभूति न हो कि, हमारा यह शरीर ईश्वर का निवास है, तब तक हम मनुष्यों की श्रेणी में नहीं गिने जा सकते। दूसरी बात यह है कि, सत्य को ही ईश्वर समझने या सोचने में कोई परेशानी या दुविधा भी क्या है? तुम खुद भी स्वीकार करोगे कि, मनुष्य झूठ या बुराई का आगार नहीं है—सत्य एवं शिव का ही है।"

एक क्षण की चुप्पी के बाद गांधीजी ने फिर कहना शुरू किया—"जो व्यक्ति पवित्र जीवन जीना चाहता है, उसे कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ता है—कभी-कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तो बड़ी भयंकर कठिनाइयों का ! उस वक्त ईश्वरीय प्रार्थना और उसमें विश्वास की भावना ही तुम्हें संतोष प्रदान कर सकेगी–वही तुम्हारी हिम्मत बढ़ा सकेगी।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक ने पुनः प्रश्न किया–"तो बापू क्या आप उस ईश्वर को जानते भी हैं, जिसकी प्रार्थना करते हैं ?"

"नहीं भाई, मैं नहीं जानता।"

"तो फिर किसकी प्रार्थना की जाये ?"

"उस ईश्वर की, जो हमारे लिए अगम-अगोचर है। लेकिन जिस व्यक्ति की हम प्रार्थना करते हैं, वह ज्ञेय है। बस वही ईश्वरीय तत्व भी है। चूँकि वह ज्ञेय है, इसलिए हम उसे खोजने-पाने की कोशिश करते हैं। कभी-कभी उसकी खोज में लोगों को वर्षों लग सकते हैं। लेकिन उससे क्या होता है ? मेरा तो कहना यह है कि, चाहे तुम्हारा ईश्वर में विश्वास नहीं हो, फिर भी तुम्हें प्रार्थना करनी चाहिये–अर्थात् उसकी खोज-बीन में लगे रहना चाहिये। इसके लिए तुम्हें बड़े धैर्य और अगाध श्रद्धा की आवश्यकता है। यह स्वयमेव इस तरह के प्रश्नों का समाधान कर देगी। बाइबिल का कथन है कि, श्रद्धा रखो.....और बस तुम खुद पूर्णत्व (देवत्व) प्राप्त कर लोगे।"

युवक ने गांधीजी से पूछा–"बापू, जब अपने-आप पर दृष्टि डालता हूँ, तो मन-ही-मन खयाल आता है कि, क्या सचमुच कोई सृष्टिकर्ता या ईश्वर है, जिसकी मुझे प्रार्थना करनी चाहिये ?"

गांधीजी ने कहा–"देखो, तुम फिर [illegible] पर उतर आये। वस्तुतः ईश्वर दलील [illegible] तर्क से परे की चीज है। लेकिन अगर [illegible] अपनी इन दलीलों से तसल्ली मिल [illegible] तो तुम जानो–मैं इससे ज्यादा ज्यादा [illegible] कह सकता हूँ ?"

वह युवक धीरे-धीरे विचारों की [illegible] राई में डूब गया।

गांधीजी समझाते गये–"भाई, अपने [illegible] बांधवों का दुःख-दर्द देख-सुनकर तुम्हारे [illegible] में जो सहानुभूति और वेदना की लहर दौ[illegible] है, वह क्या है ? वह सब ईश्वरत्व ही तो [illegible] तुम अपने-आपको चाहे कितना भी नास्ति[illegible] समझो; मगर जब तक तुम्हारा मन अ[illegible] मानवता के प्रति द्रवीभूत है, तुम अनज[illegible] ही सही, जीवन-व्यवहार में ईश्वरमय [illegible] उसके प्रति आस्थावान् हो। महान् नास्ति[illegible] ब्रेडला का ही उदाहरण लो। उसके मृ[illegible] संस्कार के समय कुछ पादरी भी उप[illegible] थे। उस वक्त उन्होंने कहा था कि, वे [illegible] के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने [illegible] लिए आये हैं कि, वह बड़ा पुण्यात्मा था।

अंत में गांधीजी इस प्रसंग को समा[illegible] करते हुए बोले–"तो भाई, अगर तुम [illegible] (आश्रम) से ईश्वर एवं सत्य के प्रति जी[illegible] जागती आस्था लेकर वापस जाते हो [illegible] निश्चय ही तुम्हारा कार्य खूब फूलेगा-फ[illegible] जब तक तुम उसे प्राप्त नहीं कर स[illegible] तुम्हारे मन में एक अजीब-सी बेचैनी या [illegible] अनुभव होनी चाहिये, तब तुम सच[illegible] ईश्वर से साक्षात्कार कर लोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काँपती अँगुलियाँ

गोर्की के व्यक्तित्व की एक विभूति का रूस के महानतम फिल्म-निर्देशक द्वारा उद्घाटन

सर्जी आइसेंस्टाइन

मैक्सिम गोर्की से उनके जीवन के अंतिम वर्षों में मैं कई बार मिला था। बड़ी प्रेरणादायी और अविस्मरणीय थीं वे मुलाकातें ; और इनमें उस महान् साहित्य-स्रष्टा के मुख से जो कुछ सुनने को मिला, उसे मैं कभी न भूल सकूँगा। लेकिन यहाँ पर मैं एक ही मुलाकात का संस्मरण सुनाऊँगा।

बात सन् १९३४ की है। ग्रीष्म-ऋतु आरम्भ हुई ही थी। गोर्की के हम कई युवक प्रशंसक और घनिष्ट मित्र एकत्र हुए थे। वे हमें एक फिल्म की पटकथा की रूपरेखा सुनाने-वाले थे। फिल्म रूसी गृहयुद्ध के समय बच्चों की हालत और बाद में उनकी शिक्षा के लिए किये गये प्रयत्नों के सम्बंध में थी। तब तक जो फिल्में बनी थीं, वे गोर्की को सख्त नापसंद थीं। लेकिन वे उनकी नुक्ताचीनी करने के बजाय नये ढंग की सच्ची फिल्म बनाना चाहते थे। इसी प्रसंग में मैंने उनके स्वभाव के एक अंग को देखा, जो बड़ा मर्मस्पर्शी था और भव्य भी।

हम युवकों को—उनके उत्साही प्रशंसकों को—जब पता चला कि, उन्होंने अपनी नवीन कृति सुनाने के लिए हमें चुना है, तो हमारे सम्भ्रम का पार न रहा। लेकिन हमसे अधिक सम्भ्रम स्वयं उन्हें था। दबी हुई किंतु सशक्त आवाज में पटकथा पढ़ना आरम्भ करने के पूर्व वे अँगुलियों से पन्ने पलटने लगे। वे अँगुलियाँ—अनेक अमर कृतियों के स्रष्टा और विश्वविख्यात लेखक गोर्की की अँगुलियाँ—काँप रही थीं।

अपनी मानस-पुत्री को विदा करते समय, अपनी नयी रचना को लाखों श्रोताओं और पाठकों के (जिनके प्रतिनिधि हम थे) समक्ष प्रस्तुत करते समय उनका यह उद्वेगपूर्ण सम्भ्रम इसका प्रमाण था कि, वे अपनी प्रत्येक रचना के प्रति कितनी जिम्मेदारी अनुभव करते थे। और यह कोई दिखावा नहीं था, उनके स्वभाव का अविभाज्य अंग था। गोर्की की वे काँपती अँगुलियाँ मेरे लिए दीपस्तम्भ हैं। वे याद दिलाती हैं—ईमानदारी और विनय हर कलाकार के लिए, रचनात्मक कार्य में निरत हर व्यक्ति के लिए, अत्यावश्यक हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असफलता असम्भव

सफलता की सहचरी हैं अनुशासन व आत्मविश्वासयुत भावनाएँ।

डरोथी ब्रैंड

सफलता उत्साह को जन्म देती है, जो हमें जीवन में क्रियाशील बनाये रखता है। असफलता निराशा पैदा करती है, जो रचनात्मक शक्तियों का अपव्यय करती हैं, जड़ता उत्पन्न करती है। इस तरह की नीरस जड़ता से जीवन में एक अजीब कुंठा पैदा हो जाती है और हम किसी भी नये काम में हाथ डालने से कतराने लगते हैं। उत्साह व चुस्ती का स्थान लापरवाही व तंद्रा ले लेती है।

परंतु एक छोटी-सी सफलता भी अधिक मूल्यवान् होती है। वह भावी क्रियाशीलता को प्रेरणा व उमंग तो देती ही है, साथ ही मन को स्वस्थ और दृढ़ बनाती है।

प्रत्येक नये कार्य के आरम्भ में झिझक व संदेह होता ही है। इसी दृष्टिकोण का दूसरा नाम हीन-भावनाएँ हैं। ये भावनाएँ पिछली असफलताओं से उत्पन्न कड़ुवाहट, अवज्ञाओं व निराशाओं के कारण उत्पन्न होती हैं, जो सदा ही जाने-अनजाने स्मृतियों पर छायी रहती हैं।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक मायर का कहना कि, किसी कार्य में सफल होने के लि यह आवश्यक है कि, स्मृतियों को हीन-भा नाओं से उत्पन्न दूषित विकारों के भार मुक्त किया जाये। मन से सारी कड़ुवा निकालकर ही किसी नये समारम्भ सफल बनाया जा सकता है। मान लीजि कि, आप एक बार सफल भी हो गये, प इससे स्मृतियों पर लदा भार हल्का अव हो जाता है, सदा के लिए मिट नहीं जाता सफलता को अपनी दासी बनाने के लि कठोर अनुशासन द्वारा मन को इन बोझि कुंठाओं से धीरे-धीरे मुक्त करना होगा

मन से असफलता की स्मृतियों की नष्ट कर दीजिये और उनके बजाय जीवन घटी प्रेरक स्मृतियों के गुलाब सजाइये फिर थोड़े दिनों में मन का स्वतः नये क की ओर झुकाव होगा। तब दृढ़ता व स्व मन से आप यह मानकर चलेंगे कि, बार असफलता असम्भव है। परंतु यह उठता है कि, क्या निराशा के बा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरण में आशा टिकी रह सकेगी ?

मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य के मस्तिष्क का गठन कुछ ऐसा है कि, हजार निराशाओं के बीच भी आशाप्रद स्मृतियाँ लुप्त नहीं होतीं। उन्हें पुनरुज्जीवित करना अवश्य कुछ कठिन है।

जीवन में एक नये विश्वास का स्फुरण और सफल मनःस्थिति से काम करने की उत्तेजना पैदा होगी। आप देखेंगे कि, काम करने के लिए मजबूरी आपको ठेल नहीं रही है, वरन् आपकी सारी क्रियाशक्ति लगन से काम को आगे बढ़ाने में संलग्न है।

कुछ प्रयोग ऐसे हैं, जिनके द्वारा असफलता उत्पन्न करनेवाले वातावरण से मुक्त हुआ जा सकता है।

हर रोज कुछ घंटे प्रश्नों के सीधे जवाब में बितायें। लेकिन जिससे आप बात करें, उसे इस बात का शक न हो कि, आपके बर्ताव में फर्क आ गया है। बिल्कुल स्वाभाविक बनकर बोलें। लेकिन अपनी तरफ से कुछ न कहकर सिर्फ पूछे गये प्रश्न का जवाब दें।

एक ही विषय पर पूरी तरह आधा घंटा सोचने की आदत डालें। इसे आप प्रतिदिन पाँच मिनिट एक ही विषय से सम्बंधित बातें सोचते हुए शुरू कर सकते हैं। धीरे-धीरे आप पायेंगे कि, आपने दिमाग के भटकने पर काबू पा लिया है। इससे आपको यह लाभ होगा कि, जब भी आप चाहेंगे, अपने दिमाग से इच्छित काम ले सकेंगे।

बिना इन शब्दों का प्रयोग किये पत्र लिखें—मैं, मेरा, मुझे, मेरा अपना। यह अभ्यास हमें अपने आपको निरपेक्ष होकर देखने में मदद करता है। पत्रों में व्यक्तिगत शिकायत के भाव निकाल दीजिये। आत्म-परीक्षण को विकसित करने के लिए आपको एक अच्छा पत्र-लेखक बनना होगा। अपने पत्र को सफलता की लय में लिखें।

रोज कुछ समय के लिए निश्चित दिनचर्या बना लें। दो घंटे का कार्यक्रम बनाकर शुरुआत की जा सकती है। उन दो घंटों के लिए आप कुछ प्रस्ताव नियत कर लें। और निर्धारित कार्यक्रम के मुताबिक अगर ठीक दस बजे आपको कोई दूसरा काम करना है और अपने हाथ का काम आप समाप्त नहीं कर पाये हैं, तो उसे वहीं छोड़ दीजिये। इस तरह अनुशासन-बद्ध जीवन में ढालकर हम असफलताओं की सृष्टि करनेवाले वातावरण को ही नष्ट कर देते हैं। सफलता के लिए आवश्यक एकाग्रता जीवन में प्राप्त कर लेने पर पुरुष निस्संकोच दृढ़ता से जीवन-रथ को प्रबल गति से प्रगति की दिशा में मोड़ सकता है।

★

दो-चार सपनों के सहारों पर जिये तो क्या जिये !
दो घड़ी की ही बहारों पर जिये तो क्या जिये !
जिंदगी को जानना हो तो जियो बस डूब कर;
बैठ पीड़ा के किनारों पर जिये तो क्या जिये ! — **हरीश मादानी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

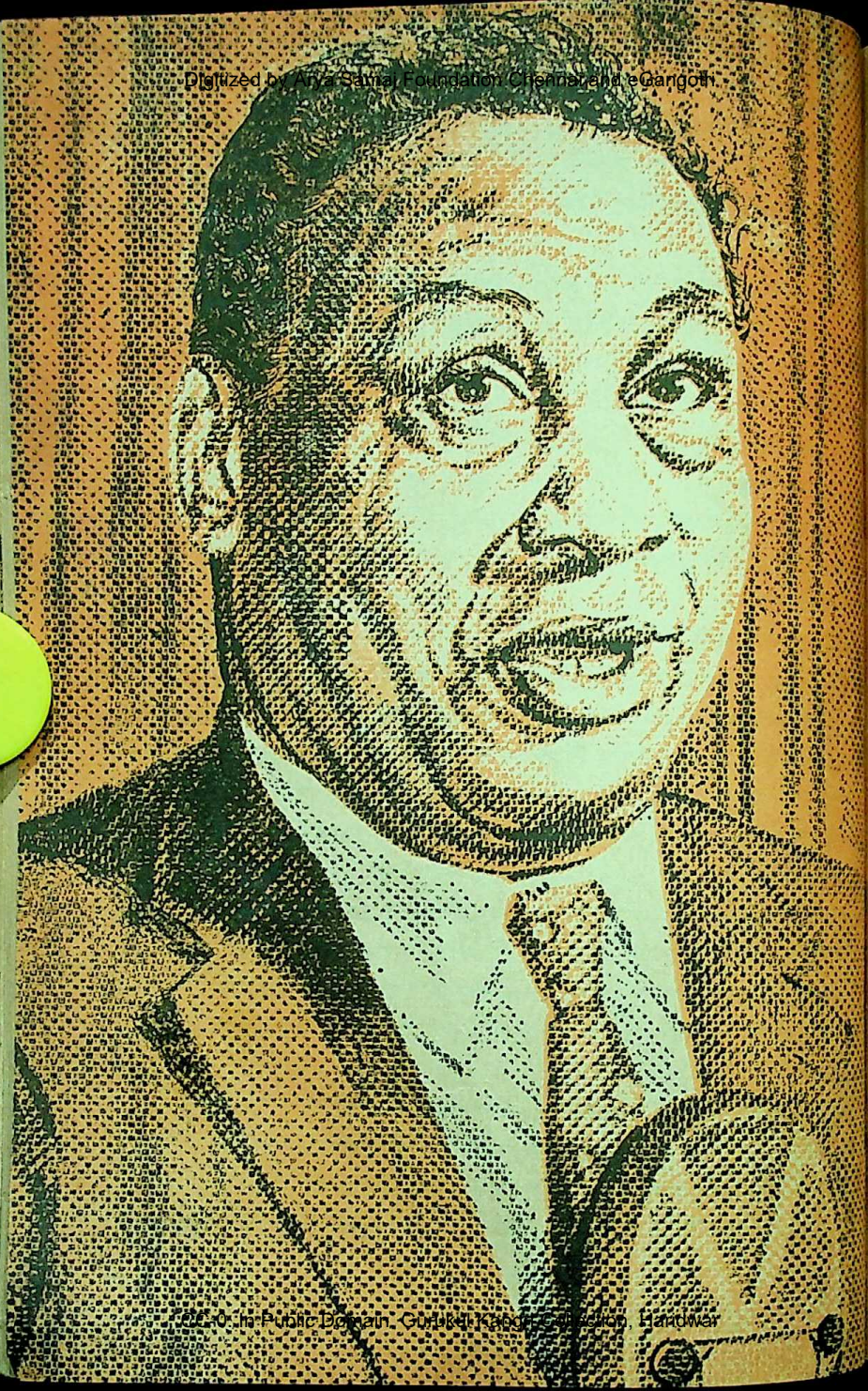

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन-मानस का उद्गाता राब्सन

एक महान् कलाधर का जीवन-परिचय जयनारायण दास के शब्दों में; पोर्ट्रेट—बी० एन० ओके।

कभी-कभी आदमी कोई महत्वकांक्षा लेकर एक क्षेत्र में काम शुरू करता है, दूसरे ही क्षेत्र में कृतकार्य होता है। गायक पाल राब्सन का जीवन इसका दृष्टांत है।

पाल ली राय राब्सन का जन्म ९ अप्रैल १८९८ को अमरीका के एक निर्धन नीग्रो मेथोडिस्ट पादरी के घर हुआ। पिता कभी गुलाम रहे थे। सो वर्णभेद बचपन से ही राब्सन के जीवन का कंटक रहा। लेकिन तीव्र बुद्धि, बलिष्ठ शरीर और बहुमुखी प्रतिभा से वे रट्जर्स विश्वविद्यालय के सर्वोत्तम छात्रों में रहे। वक्तृत्व-कला में वे सिद्धहस्त थे; फुटबाल, ट्रैक और बेसबाल के जबर्दस्त खिलाड़ी थे; कानून की कक्षा में कानूनी 'जादूगर' कहलाते थे।

फिर भी वकालत में उनका मन नहीं लगा और वे एक पेशेवर फुटबाल-खिलाड़ी बन गये। विद्यार्थी रहते हुए भी इसी रूप में वे अपनी फीस जुटाया करते थे। एक मैच में प्रतिपक्षी दल के एक खिलाड़ी ने कुछ गड़बड़ की, तो आपने अकेले ही सारी टीम की मरम्मत कर डाली। इस पर आपको बाक्सर बनने की सलाह दी गयी।

लेकिन राब्सन तो फिल्मी अभिनेता बनना चाहते थे। इसी इरादे से पहले वे एक नाटक कम्पनी में भरती हुए। 'टैबू' नामक नाटक से उन्होंने रंगमंच पर पदार्पण किया। फिर यूजीन ओ' नील के नाटक 'एम्परर जोन्स' में एम्परर की भूमिका की, जिसने उन्हें प्रथम श्रेणी का अभिनेता बना दिया। नाटक में एक गीत की धुन की सीटी बजानी थी। सीटी बजाना वे जानते नहीं थे; इसलिए गाने लगे। श्रोता मुग्ध हो गये उनकी गम्भीर, भावभीनी स्वर-लहरी पर।

इसके बाद संगीत-नाटकों (आपेरा) में उनकी बड़ी माँग रहने लगी। 'ओथेलो' ओपेरा में उनकी ओथेलो की भूमिका भावपूर्ण जीवंत अभिनय का पर्यायवाची बन गयी है। आखिर ओथेलो भी उनकी तरह वर्ण-विद्वेष का शिकार था न।

नीग्रो जाति के नेता और साम्यवादियों के विश्वशांति-आंदोलन के अगुआ के रूप में उन्होंने ख्याति, अप्रियता दोनों पायी हैं।

लेकिन मूलतः वे मानवतावादी कलाकार हैं। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लोकगीतों के भी वे बेजोड़ गायक हैं। जैसा कि फिनलैंड के महान् संगीत-स्रष्टा सिबिलियस ने कहा था—"वे गाते नहीं, बल्कि अपना हृदय उँडेल देते हैं।" हार्दिकता उनकी कला का ही नहीं, जीवन का भी मूलमंत्र है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुषार्थ से पर

जीवन के नाना क्षेत्रों में सफलता के शिखरों का आरोहण करनेवाले एक प्रशासक एवं साहित्यकार राजनेता के जीवन-अनुभवों का निष्कर्ष ।

के० एम० पणिक्कर

जीवन से सिर्फ एक सबक सीखने का दावा मैं कर सकता हूँ। वह यह है—मनुष्य के सभी प्रयत्नों की सफलता बहुत कुछ संयोग पर निर्भर है। बेशक दृढ़ निश्चय, अध्यवसाय तथा कई आत्मिक एवं बौद्धिक गुणों के बिना जीवन में कोई सफल नहीं हो सकता। लेकिन इन सबके रहते हुए भी अच्छे अवसर और अनुकूल परिस्थितियों के अभाव में मनुष्य कुछ भी हासिल नहीं कर सकता।

बचपन में मेरी पढ़ाई-लिखाई बहुत संतोषजनक नहीं रही। हाईस्कूल में मैं एक बार से अधिक ही फेल हुआ। अंत में लगभग निराश होकर मेरे अभिभावकों ने "भद्र-पुरुषोचित शिक्षा" दिलाने के लिए मुझे आक्सफोर्ड भेजने का निश्चय किया।

मैंने मद्रास की मैट्रिक भर पास की थी। इसलिए क्राइस्ट चर्च कालेज में प्रवेश का आवेदन-पत्र भरते समय मुझे विशेष आशा नहीं थी। और जब कई ग्रैजुएट असफल रह गये और मुझे सीट मिल गयी, तो सबसे अधिक आश्चर्य स्वयं मुझे हुआ।

बाद में पता चला कि, विद्यार्थियों का चुनाव करनेवाले अधिकारी डा० जान [illegible] में एक विलक्षण शक्ति थी, जिसे वे अपने 'छठी इंद्रिय' कहा करते थे। उम्मीदवार की लिखावट से ही वे उनका चरित्र जान लेते थे और उसी के आधार पर तय करते थे कि, किसे सीट दी जाये और किसे नहीं।

आधुनिक इतिहास को लेकर मैं प्रथम श्रेणी में परीक्षा पास की और ग्रैजुएट बना। बेशक इसका श्रेय मेरे परिश्रम को है। लेकिन इसमें भी संयोग का हाथ तो था ही। उन दिनों आक्सफोर्ड में पढ़ने वाले अधिकांश भारतीय विद्यार्थी आल ग्रैजुएट थे। मुझ मैट्रिक पास विद्यार्थी पर इन लोगों को बड़ा तरस आया करता था और अक्सर वे मुझे बताते रहते थे कि मेरी बुनियाद कितनी कच्ची है। यह बात मुझे बहुत अखरी और जो विद्यार्थी मुझे सबसे ज्यादा परेशान करता था, उसे मैंने चुनौती दे दी कि, चाहे अब तक की पढ़ाई में मैं कितना ही कच्चा रहा होऊँ; पर स्नातक परीक्षा में उससे आगे ही रहूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में भी ऐसे संयोगों ने ही निर्धारित की। उन दिनों श्री टी० के० स्वामिनाथन् नामक सज्जन के सम्पादकत्व में मद्रास से एक पत्रिका निकला करती थी। उसमें ब्रिटिश उपनिवेशों में भारतीयों की हालत के सम्बंध में एक लेख-प्रतियोगिता हुई, जिसमें मैं भी शरीक हुआ। सर्वोत्तम निबंध पर सौ रुपये का पुरस्कार दिया जानेवाला था। यह रकम सर सी० पी० रामस्वामी अय्यर ने दी थी। निर्णायक भी वही थे। मेरा लेख उन्हें सर्वोत्तम जँचा।

यह बड़ी सामान्य-सी सफलता थी। लेकिन इसका बड़ा ही विचित्र परिणाम निकला। श्री स्वामिनाथन् ने श्री सी० पी० रामस्वामी अय्यर की प्रस्तावना के साथ मेरे उस लेख को 'द प्राब्लम्स आव ग्रेटर इंडिया' नाम से पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया।

आक्सफोर्ड के एक अनामधेय भारतीय विद्यार्थी की लिखी उस छोटी-सी पुस्तिका की खासी लम्बी समालोचना सर रेजिनाल्ड विल्सन ने लंदन की एक पत्रिका में लिखी। इसके परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया एसोसिएशन ने मुझे भाषण देने के लिए निमंत्रित किया। एसोसिएशन भारत सरकार की नौकरी से निवृत्त अँग्रेज अधिकारियों का दुर्ग था। वहाँ मैंने जो भाषण दिया उसका विषय था—भारत में शिक्षा।

इस भाषण ने बहुतों का ध्यान आकृष्ट किया। लंदन 'टाइम्स' के शिक्षा-परिशिष्ट में उस पर सम्पादकीय टिप्पणी छपी। इस टिप्पणी से सर रास मसूद का ध्यान मेरी ओर गया। उन्होंने मेरे प्रथम श्रेणी में पास होने और 'टाइम्स' में मेरे विषय में छपे प्रशंसा-वचनों का हवाला देकर अलीगढ़-विश्वविद्यालय के अधिकारियों से मेरी सिफारिश की।

अलीगढ़ में मैं केवल तीन वर्ष रहा। असहयोग के प्रभाव में मैं भी आ गया और १९२२ से २५ तक राजनीतिक संघर्ष में उलझा रहा। उन्हीं दिनों की एक अद्भुत घटना का यहाँ उल्लेख करना चाहता हूँ। एक हस्तरेखा-विशेषज्ञ 'स्वराज्य' के दफ्तर में आया। उसने मुझसे मेरे हाथ का छाप माँगा। बहुत कहने पर मैंने दे दिया और वह उसे लेकर चला गया। दस दिन बाद मुझे टाइप किया हुआ एक पर्चा मिला। उसमें बताया गया था—"तुम साल-भर के भीतर राजनीति से अलग हो जाओगे और उत्तर भारत की एक रियासत में नौकरी कर लोगे।" उस समय मैंने उस पर विशेष ध्यान नहीं दिया। परंतु यह भविष्यवाणी अक्षरशः ठीक निकली।

पणिक्कर

सन् १९१९ में आक्सफोर्ड में रहते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने 'भारतीय रियासतों का भविष्य' नामक एक पुस्तक लिखी। उस समय इस विषय पर पुस्तक लिखने का मेरा विचार नहीं था। लेकिन छः वर्ष बाद दिल्ली में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का सम्पादन करते हुए फुरसत के समय मैं देशी रियासतों के प्रश्न का गहरा अध्ययन करने लगा। और इस अध्ययन का सार मैंने 'द रिलेशन्स आव द गवर्नमेंट आव इंडिया विद इंडियन स्टेट्स' नाम की एक पुस्तक में प्रस्तुत किया।

इस पुस्तक के प्रकाशन के कुछ दिन बाद की बात है। लंदन के रिट्ज होटल में एक रोबीले अपरिचित सज्जन मेरे पास आकर बोले—"आप.....हैं न?" मेरे हाँ कहने पर उन्होंने बिना किसी भूमिका के कहना शुरू किया—"मैं हूँ कर्नल हाकसर। कई दिन से आपसे मिलने की कोशिश कर रहा था। क्या आप ऊपर मेरे कमरे में तशरीफ लायेंगे? कुछ बात करनी है आपसे।"

मैं उनके साथ हो लिया। वे भूतपूर्व भारत-मंत्री लार्ड ओलिवियर से एक परिचय-पत्र लाये थे। उन्होंने बताया कि, भारत सरकार और देशी राज्यों के पारस्परिक सम्बंधों की जाँच कराने बटलर-कमेटी की नियुक्ति के लिए इंडिया [illegible] से [illegible] चलायी थी। वे [illegible] थे कि, कमेटी के समक्ष देशी राज्यों [illegible] प्रस्तुत करने में मैं उनकी सहायता [illegible]

इस तरह देशी राज्यों की सेवा [illegible] हुई, जो बीस वर्ष तक यानी १९२८ से १[illegible] तक मेरे जीवन का मुख्य कार्यक्षेत्र [illegible] कर्नल कैलाश हाकसर के कारण ही [illegible] में मेरी नियुक्ति एक देशी रियासत में [illegible]

'कुमारसम्भव' के प्रेरक
गिरिजा-गिरीश

१९१९ में 'मा[illegible] रिव्यू' में छपे लेख [illegible] तथा १९२७ में [illegible] अपनी पुस्तक में [illegible] कहा था कि, ब्रि[illegible] भारत से घनिष्ट सम्[illegible] रखने में ही देशी रा[illegible] का हित है और रियास[illegible] भारत और ब्रिटिश भा[illegible] के बीच की खाई [illegible] बढ़ाना दोनों के लि[illegible] विशेषतया देशी रा[illegible] के लिए—अत्यंत घा[illegible] होगा। देशी राज्यों में काम करते स[illegible] मैं इस विश्वास पर दृढ़ रहा और [illegible] कारण १९४६-४७ में देशी राज्यों [illegible] विलयन में मुझे देश को अपनी से[illegible] अर्पित करने का अवसर मिला।

सन् १९४८ से १९५८ के बीच मैं क्र[illegible] चीन, मिस्र, और फ्रांस में राजदूत रह[illegible] मेरे कार्यकाल में तीनों देशों में क्रांतिक[illegible] परिवर्तन हुए। किसी भी दृष्टि से [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो चीनी क्रांति [illegible] महत्वपूर्ण घटनाओं में से थी। मिस्री क्रांति उतनी न सही, परंतु सामरिक महत्व के इलाके में होने के कारण काफी अहम चीज थी। फ्रांस के चौथे प्रजातंत्र का पतन और दस वर्ष के राजनीतिक अज्ञातवास के बाद डी गाल का पुनः सत्ता प्राप्त करना बड़ी नाटकीय घटना थी। उसका यूरोप पर बड़ा व्यापक प्रभाव पड़ा।

इन तीन परस्पर असदृश परिस्थितियों में हुए राजनयिक अनुभवों से मैंने एक बात सीखी है। राजदूत को अपनी सरकार की नीति पर पूर्ण विश्वास एवं दृढ़ता के साथ जमे रहना चाहिये—भले ही जिस देश में वह नियुक्त है, उसकी सरकार को यह नीति कितनी ही नापसंद क्यों न हो। तभी राजदूत गौरव और सफलता पा सकता है।

राज्य-पुनःसंगठन आयोग (१९५४-५५) के काम से मैंने यह नसीहत सीखी कि, शांतिकाल में जनसामान्य को राष्ट्रीय हित की अपेक्षा स्थानीय स्वार्थ अधिक महत्वपूर्ण दीखते हैं।

साहित्यिक अभिरुचि तो मुझे पैतृक संस्कार में मिली है। स्कूल में पढ़ते समय ही मैं पद्य-रचना करने लगा था। मैं कह सकता हूँ कि, कठिनाई के समय में मुझे [illegible] काव्य-रचना से मिली है।

मैंने यह भी अनुभव किया है कि, अनुवाद-कार्य बड़ा अच्छा आंतरिक अनुशासन है और चिंता को दूर करने में बड़ा सहायक। नानकिंग में जब राजदूतों के घूमने-फिरने की आजादी चीनी साम्यवादियों ने छीन ली थी और हम अपने दूतावासों में नजरबंद-से थे, अनुवाद-कार्य से मुझे बल मिला। उन्हीं दिनों मैंने कालिदास के 'कुमार-सम्भव' का मलयालम् में पद्यानुवाद किया और प्रसिद्ध चीनी नाटक 'पश्चिमी प्रकोष्ठ' का अँग्रेजी से रूपांतर आरम्भ किया।

जीवन क्या है? पिछले अनुभवों की निरंतर नयी-नयी व्याख्या करना। और अनुभव यह बताता है कि, मनुष्य का प्रयत्न कितना ही सावधानी से आयोजित और बुद्धिमत्तापूर्वक संचालित क्यों न हो, फलसिद्धि में तो उसका योगदान आंशिक ही होता है।

भाग्य, अदृष्ट या अवसर—चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारें—अवश्य है और उसे हम नजर-अंदाज नहीं कर सकते। प्रबल-से-प्रबल मस्तिष्क भी एक छोटी-सी रक्तवाहिनी फट जाने से बेकार हो जाता है। इसलिए जीवन का सबसे बड़ा सबक है विनम्रता, जिसे सफलता के क्षणों में हम मानव अपनी आत्मनिर्भरता के अभिमान में भरकर बिसरा देते हैं।

★

मानव-जीवन में दो और दो चार का नियम सदा लागू नहीं होता। उसमें कभी दो और दो पाँच हो जाते है, कभी ऋण तीन भी। और कई बार तो सवाल पूरा होने के पहले ही स्लेट गिरकर टूट जाती है।

—सर विंस्टन चर्चिल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानवता विजय के

सृजनात्मक प्रवृत्तियों को प्रबुद्ध और प्रबल रखना ही मानव के भविष्य का आश्वासन है।

स्वामी गम्भीरानंद

प्रसिद्ध तत्वज्ञ बर्ट्रैंड रसल ने एक जगह कहा है कि, मानव की प्रकृति जब तक आमूल परिवर्तित नहीं हो जाती, तब तक वैयक्तिक तथा सामूहिक संघर्ष समाप्त नहीं होंगे। उनका कहना है :

"यह बहुत जरूरी है कि, व्यक्तियों में एक-दूसरे के प्रति द्वेष और भय की भावना कम हो, उनमें अपने प्राणों की सुरक्षा का विश्वास बढ़े तथा उन्हें इस सत्य का अधिक अच्छी तरह भान हो जाये कि, यंत्र-तंत्र द्वारा विकसित आधुनिक विश्व में विश्व-व्यापी सहयोग-भावना अत्यंत आवश्यक है। तभी हमरी मानव-जाति का जीवित रहना सम्भव है।"

इसी विचार को प्रसिद्ध विचारक और लेखक पितिरिम ए० सोरोकिन ने अपनी पुस्तक 'रीकंस्ट्रक्शन आव ह्युमैनिटी' में इस प्रकार व्यक्त किया है :

"आज की बौद्धिक व्यवस्था मरणासन्न है। अतः हमारे सामने इसके सिवा कोई विकल्प नहीं कि, हम पुनर्जागरण और कायाकल्प का मार्ग ग्रहण करें। हाँ, यदि मानव-सभ्यता का सर्वनाश हमें स्वीकार हो, तो और बात है। इतिहास की प्रक्रिया और उन्मुक्त अतिचेतन महाशक्तियों सहायता से मानव-जाति को इस मार्ग तब तक चलना होगा, जब तक सृजनात्म शांति और सुख का स्वर्गधाम उसे प्र नहीं हो जाता।

"इसके लिए आवश्यक है—अपनी त मानसिक और नैतिक शक्ति इसमें ल देना, अपनी प्रत्येक अवचेतन प्रवृत्ति चेतन और अतिचेतन तत्वों के नियंत्रण रखना और यात्रा-पथ के समस्त वि का साहसपूर्वक सामना करने का दृढ़ संक क्योंकि, अपने भाग्य का निर्णय मान जाति को स्वयं करना है।"

मानव की दो विशेषताएँ सदा से स हैं—संहारकता और सृजनशीलता। मानव का संहारक रूप उसके सृजनश रूप से प्रबल हो जाये, तो मानव-वि का मार्ग तब तक के लिए अवरुद्ध जायेगा, जब तक उसकी सृजनात्मक श पुनः प्रबल नहीं हो जाती। जब मानव शक्ति और क्षमता संगठित होकर संहा रूप धारण कर लेती है, तो उसका प णाम भयंकर होता है। आज हथियारों दौड़ तथा बौद्धिक शक्ति के विध्वंसात्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनियोग ने मानव-भविष्य को अंधकार-मय बना दिया है।

तो क्या संहार-शक्ति के शिकंजे में बंद हम भूलोकवासी अपनी आखिरी घड़ियाँ गिन रहे हैं? क्या हमारी सृजन-शक्ति हमारी संहार-शक्ति पर विजय पा सकेगी? यदि पा सकेगी, तो किस तरह?

मनुष्य ने केवल रेल, वायुयान, कल-कारखाने और उद्योग-व्यवसाय को ही नहीं जन्म दिया है। उसने नवनिर्माण की आदर्श-वादी उमंग एवं उत्तरदायित्व की भावना में भरकर पुस्तकालय, अस्पताल, कला-भवन और अनुसंधानशालाएँ आदि भी रची हैं। अतः मानव को तुच्छ मानना उसका अपमान करना है। इस प्रकार मनुष्य को तुच्छ समझने से प्रतिक्रियात्मक भावनाओं को बल मिला है और सृजनात्मक शक्ति की तेजोहानि हुई है।

इस स्थिति से निस्तार पाने के लिए बुद्धि पर आत्मा का नियंत्रण आवश्यक है। आज के अदूरदर्शी विज्ञान ने धर्मबुद्धि और नैतिकता की उपेक्षा कर रखी है। जब तक धर्म और नैतिकता का विज्ञान के साथ समन्वय एवं सामंजस्य नहीं होगा, संहारात्मक शक्तियों एवं सर्वनाश की आशंका पर विजय नहीं पायी जा सकेगी।

मूलतः यह प्रश्न मनोवैज्ञानिक है। इसका सीधा सम्बंध हमारे मन एवं आचरण से है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में यह आदर्श ढालना होगा, आरम्भ में ही अपने बच्चों के व्यवहार में इसका समावेश करना होगा। इस तरह यह आदर्श हमारे सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में स्वयं समाविष्ट हो जायेगा।

मानव की सृजनात्मक शक्ति का वास्तविक उपयोग रचनात्मक आधार पर ही किया जा सकता है। आज मानव अपनी सारी सृजन-शक्ति का उपयोग विनाशकारी वस्तुओं के निर्माण में कर रहा है। इस प्रकार हिंसा के रथ पर चढ़कर मानव की सृजन-शक्ति ही मानव के विनाश के उपादान जुटा रही है।

आज एक ओर पृथ्वी पर पहले से कहीं अधिक बड़े पैमाने पर भुखमरी मिटाने, निराश्रितों को त्राण देने, ज्ञान और भौतिक सुख-साधनों का समान वितरण करने एवं अपराध व उत्पीड़न से मुक्ति पाने के प्रयास चल रहे हैं। परंतु साथ ही, दूसरी ओर भयंकर युद्ध लड़े जा रहे हैं, जिनकी नृशंसता पागलों और वहशियों की कल्पना से भी परे है। वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन तथा व्यवहार में इस प्रकार भयंकर अंतर्विरोध छाया हुआ है।

अंतर्विरोध के इस वातावरण में 'सृजनशील मानव' हमें पूर्ण आश्वासन न भी दे सके, परंतु उसे 'संहारक मानव' के आगे सिर नहीं झुका देना चाहिये। यदि मनुष्य में मानवीय भावनाएँ एवं सृजनात्मक गुण जीवित हैं, तो चाहे कितने ही विध्वंसकारी युद्ध क्यों न हों, मानव अमर रहेगा—वह सर्वनाश के खंडहरों पर भी नये सुखमय संसार की नींव डालेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दुर्लभ विभूति

अलपाईवाला

स्वयं नेत्रहीन होकर दूसरे नेत्रहीनों की अक्षमताओं के निवारण में सारा जीवन अर्पित कर देनेवाले सेवाव्रती का पुण्य-परिचय, जिस पर 'नवनीत' द्वारा आयोजित दुर्लभ विभूति-प्रतियोगिता में १००० का पुरस्कार प्रदान किया गया है।

ठाकुर विश्वनारायण सिंह

"टेनिस खेलने का मुझे शौक था। एक दिन अजीब घटना हुई। ज्यों ही मैंने बल्ला मारा, वह हवा में टकराकर रह गया। दो-तीन बार और भी ऐसा ही हुआ। खेल के समय कभी-कभी मुझे गेंद ही नजर नहीं आती।...पढ़ते समय भी ऐसा ही हुआ करता था। अचानक ही सारा पृष्ठ धुँधला हो जाता। कहीं कुछ दिखाई नहीं देता। फिर धीरे-धीरे धुंध हटती और पुनः प्रकाश की किरणें छा जाती। एक बार बम्बई हाई-कोर्ट में एक महत्वपूर्ण मामले में पैरवी करते समय मैं कानून की पुस्तकों में से कुछ संदर्भ पढ़ रहा था। अचानक अँधेरा छा गया और मैं सिर पकड़कर बैठ गया। मेरे नेत्रों की ज्योति धीरे-धीरे मंद हो रही थी और अंधकार का काला परदा दिनों-दिन गहरा होता जा रहा था।"

किंतु आँखों के समने घिरा चिरंतन काला परदा भी आत्मा के ज्वलंत प्रकाश को नहीं रोक पाया और इसी प्रेरणादायी आत्मिक प्रकाश की ज्योति से आलोकित, पक्षाघात-पीड़ित ७४ वर्षीय श्री रुस्तमजी मेहरवान अलपाईवाला आज भी अंधों के सामाजिक, व्यावसायिक तथा बौद्धिक विकास संबंधी पुनर्वास-कार्यों में संलग्न हैं। भारत में अंधों की शिक्षा-दीक्षा, उनके पुनर्वास-सम्बन्धी कार्यों का उल्लेख करते समय श्री अलपाईवाला का नाम बरबस होठों पर मुखरित हो उठता है।

गौर-वर्ण, लम्बा-चौड़ा शरीर, उठी हुई नाक, सम्मोहक मुस्कान, ज्योतिहीन परन्तु आकर्षक नेत्र, निरभिमान स्वभाव—पक्षाघात से कांपते हुए अंगोंवाले इस व्यक्ति के प्रति हृदय में गहरी श्रद्धा छलक उठती है।

सात मई १८८७ को बम्बई के एक सम्पन्न कानूनी पेशेवाले पारसी परिवार में श्री रुस्तमजी का जन्म हुआ। बाल्यकाल से ही आप मेधावी थे; परंतु आँखें कमजोर थीं। तेरह साल की उम्र में ही चश्मा लगने लगा। फिर भी इस विद्याव्रती ने सोलह साल की आयु में मैट्रिक पास की। बाद में एलफिन्स्टन कालेज से विज्ञान विषय लेकर बी० ए०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससम्मान उत्तीर्ण किया। एक साल बाद सालिसिटर थे। आर्टिकल क्लर्क के रूप में उसी फर्म में आपने कार्यारम्भ किया और सन् १९११ में एल-एल० बी० की परीक्षा ससम्मान पास की।

तेरह वर्ष की आयु से ही आँखें धोखा देने लगी थीं। धीरे-धीरे ज्योति मंद पड़ने लगी और कानून की परीक्षा पास कर लेने के बाद उन्हें यह महसूस होने लगा कि, इस तरह अधिक दिन नहीं खींचे जा सकते।

एल-एल० बी० कर लेने के बाद आपकी प्रबल इच्छा सालिसिटर बनने की थी। परंतु आँखें साथ नहीं दे रही थीं और इस परीक्षा के लिए अधिक पढ़ना आवश्यक होता है। अतः सालिसिटर बनने का इरादा छोड़कर आपने इंग्लैंड से बार-एट-ला बनने का निर्णय किया।

रुस्तमजी मेहरवानजी अलपाईवाला

इंग्लैंड में आपने आँखों का उपचार भी करवाया; परंतु सफलता नहीं मिली। १९१३ में बैरिस्टर बनकर आप स्वदेश लौटे और बम्बई हाई कोर्ट में वकालत आरम्भ की। मुश्किल से चार वर्ष वकालत चली होगी कि, आँखों की निरंतर मंद होती हुई ज्योति ने उन्हें इस काम से छुटकारा लेने को बाध्य कर दिया। और..."धीरे-धीरे दृष्टि जाती रही। मैं तीस वर्ष का भी नहीं हुआ था। घर में बैठने से तो दम ही घुट और असहाय, अपंग की तरह जीना मैं नहीं चाहता था। इसका एक ही उपाय था – सार्वजनिक कार्यों में अपने को जुटा दूँ।"

न्यायालय जाना बंद कर देना पड़ा। वकालत से मन ऊबने लगा। इधर-उधर कहीं भी आते-जाते हर जाना-पहचाना व्यक्ति उनकी दशा पर सहानभूति प्रकट कर उनकी व्यथा को उभार देता और मन में निराशा प्रबल होने की आशंका होने लगती।

कालेज जीवन से ही थियोसाफी में रुचि थी। वर्षों इससे संतोष पाना चाहा; परंतु वह इतना पर्याप्त नहीं था।

"कई लोग अंधे होने पर एकाएक प्रखर ज्ञानवान्, महात्मा या चमत्कारी पुरुष बन जाते हैं, संगीत या साहित्य में नाम कमा लेते हैं। परंतु मेरे साथ ऐसा कहीं कुछ न हुआ। जीवन सादा और सरल था। पेशे की ओर अधिक ध्यान देना पड़ा था। दिमाग में तरह-तरह की योजनाएँ व अस्तव्यस्त विचार थे। कहीं कुछ भी सिलसिलेवार नहीं। मैं भी सरल व सीधी-साधी स्वाभिमानपूर्ण जिंदगी जीना चाहता था। न तो साधु बनने का चाव था न महात्मा।"

थियोसाफी के प्रति रुचि बनी रही। कानून से छुटकारा पाकर ट्यूशन करना तथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा-संस्थाओं में पढ़ना प्रारम्भ किया। दस वर्ष तक न्यू ईरा स्कूल-बम्बई के मंत्री-पद पर काम करते रहे। पंचगनी में एक शिक्षण-संस्था में काम करते समय आपकी भेंट तहमीना पांथाकी से हुई और शीघ्र ही परिचय ने दाम्पत्य का रूप ले लिया।

१९१९ में श्री अलपाईवाला का परिचय बम्बई में पहली बार डाक्टर नीलकंठराय छत्रपति तथा उनके भाई हरिप्रसाद छत्रपति से हुआ। दोनों समाजसेवी भाई अंधों की शिक्षा के लिए विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल का संचालन कर रहे थे। तीनों ने मिलकर अंधे बच्चों की समस्याओं तथा विभिन्न ब्रेल लिपियों की दुरूहता तथा कतिपय अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार-विमर्श किया।

उन दिनों भारत के विभिन्न भागों में अंधों के लिए विभिन्न ब्रेल लिपियाँ प्रचलित थीं। एक स्कूल का पढ़ा हुआ दूसरे स्कूल की लिपि को समझाने या समझने में पूर्ण असमर्थ था। श्री अलपाईवाला ने दृढ़ निश्चिय किया इन सब विरोधाभासों को दूर करने का।

"दस से भी अधिक ब्रेल लिपियाँ प्रचलित थीं। यहाँ तक कि, एक भाषा के लिए दो या तीन लिपियाँ। आँखों से अंधे, उस पर भी ये परेशानियाँ। कोई आगे पढ़ना चाहता, तो कैसे पढ़ सकता? फिर नयी लिपि सीखो, नये सिरे से परिश्रम करो। नेत्रहीन बालक गणित आदि विषयों में भी कम रुचि लिया करते थे। मैंने स्वयं किंडरगार्टन-पद्धति सीखी। गणित में अरुचि के कारणों का अध्ययन किया। परंतु सबसे बड़ी समस्या विभिन्न ब्रेल लिपियों की।"

इस दिशा में कई प्रयत्न किये गये भाषाओं के आधार पर देश में केवल ही ब्रेल लिपि प्रचलित की जाये। में बहरों व अंधों के एक सम्मेलन श्री अलपाईवाला ने यह प्रश्न और इस सम्बंध में महत्वपूर्ण प्रस्तुत किये।

श्री अलपाईवाला के प्रयत्नों का श्रीगणेश मात्र था। १९२८ में आल इंडिया टीचर्स असोसिएशन 'भारतीय ब्रेल' के सम्बंध में महत्वपूर्ण प्रस्तुत किया। परंतु इस दिशा में कार के कान पर लम्बे समय तक कोई नहीं रेंगी। अंत में १९४१ में सरकार ने संकेत समिति की स्थापना की। अलप वाला ने भारतीय अंधशिक्षा तथा एक सम्बंधी महत्वपूर्ण पत्र समिति के सद के विचारार्थ भेजा; परंतु उन ने तनिक भी सहानभूति नहीं दरसाई।

"१९४७ की बात है। मेरे कुछ मित्रों ने सूरत में एक संस्था खोलने विचार किया। उनकी मान्यता थी संस्था के सभी पदाधिकारी व कार्य नेत्रहीन हों। मंगुलाल शाह, सिराज बन सरदार दावर मोदी-जैसे कर्मठ व्यक्ति ने जिम्मेदारी अपने कंधों पर उठा साहस व उत्साह ही समझिये कि चल निकला और ब्लाइंडमेन्स सो की स्थापना कर ली गयी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक वर्ष बाद श्री अलपाईवाला इसके अध्यक्ष बने। १९४८ में प्रांतीय सम्मेलन बुलाया गया। एक ही ब्रेल लिपि पर जोर डाला गया। परिणामस्वरूप केंद्रीय सरकार ने ब्रेल-विशेषज्ञ समिति का गठन किया। श्री अलपाईवाला इस समिति के सदस्य मनोनीत किये गये। विशेषज्ञ समिति में भी चर्चाएँ होती रहीं परंतु समान भारतीय ब्रेल लिपि के बारे में कोई निर्णय नहीं हुआ।

इन्हीं दिनों सौभाग्य से यूनेस्को ने विश्व ब्रेल विशेषज्ञ समिति की स्थापना की थी और विश्व ब्रेल लिपि के बारे में बुनियादी सिद्धांत स्थिर किये जा रहे थे। भारत सरकार ने भी युनेस्को का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और १९५२ में अलपाईवाला का चिरपोषित स्वप्न साकार हो उठा।

भारत के बीस लाख से भी अधिक नेत्रहीनों की शिक्षा के लिए भारतीय ब्रेल लिपि स्वीकार कर ली गयी।

एक लक्ष्य की पूर्ति का उत्साह अभी ठंडा पड़ा ही नहीं था कि, अलपाईवाला दूसरे कार्यों में जुट पड़े।

"नेत्रहीनों को पूर्णतया अपंग मान लेना उचित नहीं। कतिपय उद्योग, सामाजिक कार्य, खेती-बाड़ी व व्यवसाय ऐसे हैं, जिन्हें वे कुशलता से सम्पन्न कर सकते हैं। पिछले महायुद्ध में अंधे हो जानेवाले लोगों को यूरोप व अमरीका के कतिपय धंधों में काम पर लगाया गया है और उनकी कार्यशीलता के बारे में कहीं किसी तरह की शिकायत नहीं पायी गयी। भारत में भी नेत्रहीन उचित प्रशिक्षण मिलने पर समाजोपयोगी अधिकांश धंधे कर सकते हैं।"

१९५२ में अखिल भारतीय नेत्रहीन सम्मेलन बुलाया गया और नेशनल ब्लाइंड असोसिएशन की स्थापना की गयी। श्री अलपाईवाला आज भी इस संस्था के अध्यक्ष हैं। इसी संस्था की प्रेरणा से भारत-सरकार ने मूक, बधिर व अंध विदुषी हेलन केलर को भारत आमंत्रित किया।

सुखी परिवार, आज्ञाकारी संतति, पतिपरायण पत्नी व सार्वजनिक जीवन में कार्यरत यशस्वी अलपाईवाला का उत्साह व सुख प्रकृति को स्वीकार नहीं था। १९५६ में उन्हें पक्षाघात हो गया। यह दूसरी परीक्षा थी। शायद अन्य व्यक्ति खाट पकड़ लेता; परंतु बिस्तरों पर भी उन्हें चैन नहीं मिला। निरंतर लगन सूझबूझ तथा उसी तरुणोचित अदम्य उत्साह से वे आगे बढ़ते रहे। गाँवों में नेत्रहीन लोगों की समस्याओं पर उन्हें बेचैनी थी। सूरत के निकट फंसा नामक ग्राम में अंधे लोगों को कृषि का प्रशिक्षण देने के लिए एक स्कूल की स्थापना की गयी।

२१ जनवरी १९६० को भारत-सरकार ने श्री अलपाईवाला की सामाजिक सेवाओं का सम्मान करते हुए उन्हें 'पद्मश्री' से विभूषित किया।

वृद्धावस्था की अंतिम सीढ़ियों को वे ऐसी मोहक मुस्कान के साथ पार कर रहे हैं कि, आसपास सर्वत्र प्रकाश बिखर जाता है। अंतर के अँधेरे तक पहुँचकर यह मुस्कान सम्पूर्ण हृदय को आलोकित कर देती है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ालिब के ज़माने में

महाकवि गालिब के पारिवारिक जीवन एवं उनकी जीवन-सहचरी की एक मर्मस्पर्शी झाँकी।

प्रो० हमीद अहमद खाँ

उर्दू के प्रसिद्ध शायर असद उल्ला खाँ बेग 'मिर्जा गालिब' और उमराव बेगम के आपसी सम्बंधों की चर्चा किये बिना गालिब के व्यक्तिगत जीवन की झलक नहीं पायी जा सकती है। स्वयं गालिब की शायरी व उनके लेखों में इस बारे में जिक्र आया है। परंतु यह कहना कठिन है कि, इनमें कितना अंश वास्तविक है और कितना व्यंग्यपूर्ण।

सन् १७९९ में दिल्ली के कुलीन और खुशकिस्मत घराने में उमराव बेगम ने जन्म लिया। बेगम के बाप मिर्जा इलाही-बख्श खाँ को शहजादों-जैसा ऐश व आराम हासिल था। जवानी में उनके शहजादों-जैसे रंग-ढंग थे और वे लोगों में 'शहजाद-ए-गुलफाम' के नाम से मशहूर थे। उमराव बेगम की परवरिश बड़े ही नाज-ओ-नेमत से हुई। जमाने के दस्तूर के मुताबिक ग्यारह की होते ही बेगम का निकाह आगरे के एक अमीरजादे सफैद-फाम, खुश-शक्ल, खुश-गुफ्तार मिर्जा असद उल्ला बेग खाँ से हुआ। मिर्जा उम्र में बेगम से दो बरस बड़े थे।

खयाल यह था कि, मिर्जा जवान होते ही सेना में ऊँचे पद पर काम करके बाप-दादों की तरह नाम व ऐशो-असरत हासिल करें और बेगम को मैके-जैसा ही अमीराना ससुराल में भी हासिल होगा। मगर उम्मीदें पूरी न हुईं। मिर्जा ने न तो दौलत ही कमाने की फिक्र की और सेना में रुतबा पाने की कोशिश।

शेर-ओ-शायरी के चस्के ने उन्हें का न रखा और तमाम उम्र उन्हें बेकारी में गुजार दी।

ससुराल में बेगम के मन की मुराद पूरी न हुई। बचपन-जैसे बेफिक्री के दिन फिर कभी देखने को नहीं मिले। शौहर की ओर से आराम न था, तो दूसरी ओर औलाद का सुख भी नसीब नहीं। नौ बच्चे पैदा हुए: मगर किसी की उम्र बरस सवा बरस से ज्यादा न हुई। सभी एक-करके माँ के दिल को स्थायी जुदाई दाग दे गये। बुढ़ापा भी तंगदस्त रोते-बीता। किस्मत ने यहाँ तक बेवफाई कि, शौहर के हाथों पैवंदे-खाक होना को नसीब न हुआ। वैधव्य के साथ आर्थिक परेशानियाँ भी विरसे में मिलें आठ सौ रुपये का कर्ज चुकाना था। दरबारों में सहायता के लिए दर्द मजमूनों की अर्जियाँ पेश की गयीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई असर नहीं हुआ। इस तरह जमाने से तंग, परेशान-रोजगार, बअीलाद, बशौहर उमराव बेगम दुनिया से रुखसत हो गयीं।

गालिब के निकटवर्ती लोगों ने उमराव बेगम व मिर्जा गालिब के आपसी सम्बंधों पर बहुत कुछ रोशनी डाली है।

मौलाना हाली ने लिखा है—"हास्य और चंचलता उनकी घुट्टी में पड़ी थी। उनकी जबान और कलम से बीवी के सम्बंध में बहुधा ऐसी बातें निकल जाती थीं, जिनको अपरिचित आदमी नफरत या बेताअल्लु की पर कल्पित समझने की भूल कर सकता है। परंतु मिर्जा गालिब भी एक ही थे। वे शादी को सख्त फंदा ही समझते रहे और उड़ने से पहले गिरफ्तार हो जाना उन्हें बहुत नागवार था।

महाकवि गालिब

नवाब सरवरुल मुल्क ने, जो गालिब की सगी बहन के पोते थे और जिनकी शादी बाद में बेगम गालिब के सगे भाई की पोती से हुई, उन दोनों के आपसी सम्बंध का जिक्र इस तरह किया है :

दादा मिर्जा नौश की शादी नवाब इलाही-बख्श की बेटी से हुई। बचपन में जब मैं आपकी माँ के साथ उनके यहाँ जाया करता तो दादी मुझको एक दुअन्नी दिया करती थीं। अजीब बात है कि, उन दोनों मियाँ-बीवियों में हमेशा अनबन रही। इस खानदान की बीवियाँ सुशील व सभ्य, मगर पहले दर्जे की गर्वीली व इतरानेवाली थीं।

इसी तरह की चर्चा नवाब मुअज्जम जमानी बेगम, नवाब जियाउद्दीन खाँ नय्यर रखशाँ की बेटी ने की है।

मियाँ-बीवी की लड़ाई होती थी। मिर्जा साहब गुस्से में आते, तो उनकी जबान से इसी प्रकार की बातें निकलती थीं—"मेरी तो नाक में दम कर दिया है! हजरत मूसा की बहन!" दूसरी तरफ बेगम गालिब नाराज होती थीं; मगर खामोश रहती थीं। अपनी भतीजी (मुअज्जम जमानी बेगम) से कहती थीं—"तू तो बच्ची है, बुड्ढे की बातों का खयाल न कर। बुड्ढा तो दीवाना हो गया है।"

कम उम्र में शादी। और पिछली शताब्दी में मर्जी और पसंद का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता था। दुल्हा-दुल्हन दोनों खुशपसंद और तेज तबीयत। स्वाभाविक ही दोनों ने एक-दूसरे पर गालिब आने के लिए कशमकश की और दोनों में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किसी ने भी आखिरी दम तक हार न मानी।

मिर्जा [illegible] ने जब दुनिया से मुँह मोड़कर संन्यासी की जिंदगी स्वीकार की, तो उमराव बेगम को स्वाभाविक सदाचारका अधिक समर्थन मिला। इधर गालिब की आजादी को जिंदगी के इस खयाल से कोई वास्ता ही न था। जवानी के आरम्भ से लेकर बुढ़ापे की आखिरी मंजिल पर भी उनकी तबीयत इधर न आयी। नौबत यहाँ तक पहुँची कि, परहेजगार बीवी ने शौहर के खाने के बर्तन तक अलग कर दिये।

अनबन की एक वजह भी थी कि, एक दिल्लगी पसंद था और दूसरी गम्भीर। गालिब की ठट्ठे की आदत उमराव बेगम को नाकाबिले बर्दाश्त मालूम होती थी। बदकिस्मती व फाकामस्ती के आलम में यह थोथा हँसोड़पन दुश्मन बन गया। क्योंकि बेगम को अपनी बड़ी बिरादरी से इज्जत वा आबरू का ताल्लुक कायम रखने के लिए खुदा जाने किस-किस तरह के जतन करने पड़ते थे।

शादी के कुछ साल बाद जब मियाँ-बीवी जवानी की उम्र को पहुँचे, तब एक ऐसी घटना हुई, जिससे दोनों दिलों को बाँधनेवाली गाँठ खुल गयी। गालिब ने एक दूसरी औरत से बेताबाना इश्क कर लिया। बेगम गालिब को जब यह हाल मालूम हुआ, तो उनके दिल की क्या हालत हुई, इसके बारे में यकीन से कुछ कहना मुश्किल है। सम्भव है कि, उनका स्वाभाविक अभिमान उस वक्त आड़े आया हो। स्वभाव का मजहबी रंग जो बाप से विरसे में मि[illegible] नायद कुछ और गहरा हो गया। ऐसी [illegible] में तरह-तरह के विरोधों की बुनियाद [illegible] आये दिन झगड़े होते रहते थे। अगर [illegible] कमाऊ होता, तो यह विरोध किसी [illegible] दब जाता। लेकिन कमाई का यह हा[illegible] कि, शादी के बारह-चौदह बरस बाद [illegible] में जो सामान था, वह भी बिकने [illegible]

अपने जमाने में गालिब की शायरी [illegible] कद्र नहीं मिली। उमराव बेगम ने [illegible] उसकी कद्र न की। गालिब को [illegible] दिल्लगी और छेड़छाड़ का जो [illegible] था, वह उमराव बेगम के लिए जान [illegible] बवाल हो गया। बुढ़ापे तक गालिब [illegible] यह आदत न गयी और उमराव बेगम [illegible] चिढ़ भी बुढ़ापे तक कायम रही। [illegible] मुअज्जम जमानी बेगम ने एक [illegible] बताया कि, मिर्जा गालिब ने जब उनसे [illegible] मजाक किया, तो उमराव बेगम ना[illegible] होकर बोलीं—"ऐ तोबा! बुड्ढा तो दीवा[illegible] है। इसे तो ठट्ठे के लिए कोई चाहि[illegible] अब बहू मिल गयी है।"

अक्सर इन्हीं छोटी-छोटी बातों पर [illegible] में झड़प हो जाती थी। मौलाना हाली [illegible] कहना है कि, एक बार गालिब ने [illegible] बदलना चाहा। नये मकान का दीवानख[illegible] तो खुद पसंद कर आये और महल[illegible] देखने के लिए उमराव बेगम गयीं। [illegible] आयीं, तो गालिब ने पूछा—"कहो, [illegible] पसंद आया?" बेगम ने जवाब दिया—"[illegible] घर में तो लोग बलायें बताते हैं।" गा[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने फौरन कहा—"मगर क्या दुनियाँ में तुम से भी बढ़कर 'बला' है ?" इसके बाद जो कुछ गुजरी होगी, उसका अनुमान लगाना आसान है ।

इन बातों के होने पर भी यह नहीं समझना चाहिये कि, मियाँ-बीवी के ये झगड़े कभी किसी स्थायी झगड़े या मनमुटाव की नौबत लाये । भले दूसरे कारण भी रहे हों। बीवी के लिए वे अपना वतन छोड़कर दिल्ली में रहने लगे । और सारी उम्र यहीं गुजार दी । अपने खानदान से कहीं ज्यादा उनके ताल्लुकात बीवी के खानदान के थे और अमली नतीजों को ध्यान न देते हुए उनकी दिली ख्वाहिश यह थी कि, बीबी के सुख और आराम के लिए जो मुमकिन हो सके, वे हालात पैदा करें ।

मिर्जा साहब हमेशा मर्दाने मकान में रहते थे । अधिकांश समय दीवानखाने में गुजारते थे । फिर भी बेगम उनकी सेवा व सेहत का पूरा खयाल रखती थीं । खाना घर में पकता और समय पर गालिब को दीवानखाने में पहुँच जाता । जब बीमार होते, तो दवाएँ जोशांदे वगैरह पूरे इंतजाम से तैयार करके उन्हें पहुँचाये जाते ।

गालिब भी दिन में एक बार जरूर जनानखाने में जाते थे । जब तक बदन में ताकत रही सुबह का खाना वहीं खाते । बुढ़ापे में उसकी पाबंदी न रह सकी ।

फिर भी लकड़ी टेकते-टेकते आम तौर पर सुबह या दोहपर को, कभी-कभी असर के करीब जरूर घर में जाते ।

बुनियादी बेगम के भाई नवाब खिज्र मिर्जा, जिन्होंने बचपन में गालिब और उमराव बेगम को देखा था, उस जमाने का एक किस्सा इस तरह बयान करते थे—"मैं एक दिन मिर्जा साहब के दीवानखाने में खड़ा था कि, वे ऊपर से उतरे, मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा—"आ तेरी दादी के घर चलता हूँ । दादी से मुराद उमराव बेगम थीं । अंदर जाकर मामा से दादी के बारे में पूछा कि, कहाँ है । मालूम हुआ कि, नमाज पढ़ रही हैं । कहने लगे, हैं यह क्या—जब आओ नमाज ! अरे हजरत, तेरी दादी ने तो घर को फतहपुरी की मस्जिद बना दिया है ।"

उमराव बेगम की जिंदगी के दर-मियानी बीस-पच्चीस साल जिस तन्हाई बल्कि वीरानी के आलम में गुजरे, उसकी तरफ मौलाना हाली ने इस प्रकार इशारा किया है :

"मिर्जा साहब के कोई औलाद न थी । इसलिए बहुत दिनों तक वे और उनकी बीवी अकेले जिंदगी गुजार रहे थे...।" सन् १८५६ में जैनुल आबेदीन खाँ आरिफ का देहांत हुआ, तो आनेवाले दस-बारह साल तक उनके बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करने में गुजर गये । इसके बाद फिर वही एकांत का समय आ गया ।" नवाब मुअज्जम जमानी बेगम का बयान है कि, बुढ़ापे के दिनों में जानमाज पर बैठे उनके मुँह से अक्सर यह अलफाज निकलते थे—"अरे अल्लाह ! तू कब बुलायेगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब मौत की दुआएँ कबूल होने का वक्त आ पहुँचा था। [illegible] मिर्जा गालिब रुखसत हुए। मिर्जा साहब की मौत दीवानखाने में हुई। बेगम जनानखाने में थीं। इसी समय में दरोगा कल्लू को उन्होंने बाहर की खबर पूछने के लिए कई बार बुलाया। गालिब साहब चल बसे। सयापा उन पर छाया हुआ था। सफेद दुपट्टा ओढ़े तख्त पर बैठी रो रही थीं।

साठ बरस की जो वफादारी, लड़कपन से शुरू हुई थी, उसका इस तरह अंत हुआ। मगर जब तक जिंदगी है, जिंदगी के धंधे भी जारी हैं। वैधव्य के साथ तंगदस्ती की तकलीफों ने नयी शक्ल पा ली। रामपुर की तनख्वाह और अँग्रेजी पेन्शन, जो गालिब को मिलती थी, दोनों एकदम बंद हो गयी। उमराव बेगम की तरफ से कमिश्नर देहली और नवाब साहब रामपुर को मदद करने के लिए दरख्वास्तें भेजी गयीं। कमिश्नर [illegible] लिखा कि, गालिब की बेवा के [illegible] दस रुपये की पेन्शन मंजूर हो सकती [illegible] बशर्ते कि, वे खुद कचहरी में हाजिर [illegible] उमराव बेगम ने इस शर्त को कबूल न [illegible] और कहा कि, मैं कचहरी में हरगिज [illegible] जाऊँगी, चाहे फाकों से मर क्यों न जाऊँ। रामपुरवाली दरख्वास्तों से भी कोई नतीजा जल्द निकलता नजर न आया। इसी [illegible] शानी की हालत में मरहूम शौहर की [illegible] का दिन आ पहुँचा और उमराव [illegible] दुनिया की अदालतों से काम निकलने [illegible] पहले आजाद हो गयीं। मियाँ-बीवी [illegible] जिंदगी के मामलातों में हमेशा एक-दूसरे [illegible] विरोध रहा। लेकिन मौत ने इस तरह [illegible] की कि, गालिब के मरने के एक साल [illegible] चाँद के महीने की ठीक उसी तारीख [illegible] उमराव बेगम शौहर के पीछे रवाना हुई।

विख्यात जर्मन कवि एमानुएल गाइबल (१८१५-८४) को उनकी प्रसिद्ध कविता 'वसंत की आशा' (देखिए–'नवनीत', जून ६१) के विषय में मिले पत्रों में एक यह [illegible]

"मान्यवर! आज हमने आपकी कविता 'वसंत की आशा' पूरी कंठस्थ कर ली। आठ दिन पहले हममें से छः को यह कविता याद न करने के कारण स्कूल में आधा घंटा ज्यादा बैठना पड़ा। कविता लिखते समय आपने यह बात सोची भी नहीं होगी फिर भी आप अच्छे आदमी हैं। आप शिलर की तरह लम्बी कविताएँ नहीं लिखते। उनकी कविताएँ हमें अगले साल सीखनी पड़ेंगी। मास्टरजी कहते हैं कि, 'वसंत की आशा' सुंदर कविता है। सुंदर कविताएँ बहुत हैं और सभी हमें याद करनी पड़ती हैं। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि, अब और कविताएँ न लिखें। हमें हर कवि के जन्म और मृत्यु के वर्ष भी याद रखने पड़ते हैं। गनीमत है कि, हमें आपका मृत्यु-वर्ष नहीं याद करना पड़ेगा; क्योंकि हम आपके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

हम हैं आपके – व्ल्यूखर स्कूल की पाँचवीं कक्षा के छात्र

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुजली-महाभाष्य

ज्योतींद्र दवे

हमारे शास्त्रकारों ने चित्तवृत्ति की एकाग्रता में विक्षेप उत्पन्न करनेवाली जिन वस्तुओं का वर्णन किया है, उनमें खुजली को न जाने क्यों स्थान नहीं दिया गया। सम्भव है, वे खुजली को रोक सकनेवाले आसन जानते हों; किंतु हठयोग में ऐसे किसी भी आसन का उल्लेख नहीं मिलता।

यहाँ कुछ लोगों को शंका हो सकती है कि, भला खुजली और आसनों का क्या सम्बंध? पर खुजली को रोकने के उद्देश्य से न सही, तो भी उसके शमन के लिए कई बार तरह-तरह के आसन करने पड़ते हैं। तनिक खुजली के वक्त की कल्पना करके देखिये। कैसी हालत हो जाती है आदमी की! कभी यह हाथ पीठ पर, तो कभी वह हाथ। गर्दन कहीं तो, तो पीठ कहीं। अँगुलियाँ जैसे एक बार में ही सारे शरीर का काम कर डालना चाहती हों। इस तरह पहले धीरे-धीरे, फिर जोर से रगड़ने की प्रक्रिया में एक नहीं, बल्कि चार-पाँच आसनों का अंतर्भाव एक साथ हो जाता है। खुजाने के इस आसन में रीढ़ तो मजबूत होती ही है, गर्दन का भाग भी पुष्ट होता है और अगर खुदा-न-खास्ता पेट में वात का रोग हो, तो वह भी दूर हो जाता है।

कई आसनों के नाम जानवरों के नामों पर आधारित हैं—जैसे कूर्मासन, मत्स्यासन, शलभासन, मयूरासन आदि। चूँकि इन आसनों को करते समय बाह्याकृति पशुओं से मिलती-जुलती है, शायद इसीलिए इनके ऐसे नाम रखे गये हैं।

खुजली की इस महिमा का कहाँ तक बखान किया जाये? एक दिन मेरा छोटा लड़का एकाएक अपनी माँ को पुकारकर कहने लगा—"माँ, ओ माँ, देख तो पिताजी कोई नयी कसरत कर रहे हैं। देखना हो, तो जल्दी-जल्दी आओ।" और वह झट 'उन्हें' बुला लाया। श्रीमतीजी ने मुझे दीवार के समानांतर खड़े होकर और उससे पीठ रगड़ते देखकर कहा—"वाह जी, यह क्या कर रहे हो तुम? आग लगे इस कसरत को! दीवार का रंग छूट जायेगा, कमीज में दाग पड़ जायेंगे और पीठ छिल जायेगी सो अलग।"

"अरे भई, मैं कसरत थोड़े ही कर रहा हूँ—मैं तो खुजला रहा हूँ।"

इसी बीच हमारे सपूत महोदय ने जिज्ञासा प्रकट कर दी—"तो क्या बाबूजी, दीवार को खुजली उठा करती है?"

"नहीं बेटा, मैं तो दीवार के सहारे खुद अपनी पीठ खुजा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमतीजी ने चुटकी लेते हुए कहा—"क्या यह भी कोई तरीका है ! मुझसे कहते तो मैं ही खुजा देती । कहीं दीवार के सहारे इस तरह से भी पीठ रगड़ी जाती है ? कोई देखेगा, तो क्या समझेगा ?"

मैंने सफाई देते हुए कहा—"तुम्हारी बात तो ठीक है । वैसे भी मेरा काम दूसरे करें, तो मुझे बड़ी खुशी होती है—इससे तो सेवा-भावना का ही विकास होता है । लेकिन मैं खुजलाने का काम दूसरों को सौंपने से डरता हूँ । दरअसल दूसरों के खुजलाने पर चैन नहीं पड़ता । वह या तो गुदगुदी-जैसा लगता है या फिर नाखून की चुभन जैसा ।"

"अच्छा तो आपका खयाल है कि, मैं खुजला नहीं सकती ।"

"नहीं, यह बात नहीं, भला मैं ऐसे कैसे कह सकता हूँ । तुम्हें खुजलाना जरूर आता है । शायद बचपन से ही तुमने इसका अभ्यास किया है, तभी तो कभी-कभी रात में बैठकर तुम घंटों अपने पैर खुजाती रहती हो । उस समय मैं सोचा करता हूँ—भगवान् न करे तुम्हारा अगर यही क्रम रहा, तो किसी दिन सुबह तक तुम्हारे पैर की अँगुलियाँ घिस जायेंगी या खुजाते-खुजाते तुम्हारे हाथ के नाखून ! ऐसी हालत में तुम्हारा खुजाने का अभ्यास ज्यादा है या मेरा ? तुम तो इस कला में सिद्धहस्त क्या, सिद्धनख भी हो चुकी हो । लेकिन वास्तविकता यह है कि, जीवन के दूसरे अत्यंत महान् तथ्यों के समान इसमें भी स्वाश्रय के बिना सिद्धि नहीं है । इसमें भी अपने मरे ही स्वर्ग दीखता है ।"

"अजी छोड़ो भी इस दार्शनिकता [illegible] आपकी यह कसरत बड़ी भद्दी लग [illegible] कोई आकर देखे, तो क्या कहेगा [illegible]

"तुम क्या समझती हो कि, यह [illegible] आसान काम है ! अरे इसे सीखने [illegible] मुझे गुरु करना पड़ा है—गुरु !"

"गुरु ! अजी कहीं गुरु भी ऐसा [illegible] हैं ! आप भी क्या छोटे बच्चों-जैसी [illegible] कर रहे हैं ?"

"नहीं, सच मानो । यह मजाक [illegible] नहीं है । दत्तात्रेय की तरह मैंने भी [illegible] समय पर कई गुरु बनाये हैं । उनमें से [illegible] एक गुरु है साँड़ ।"

"वाह, कहीं गुरु को साँड़ भी कहते [illegible]

"जो गुरु मरकने होते हैं, उन्हें साँड़ [illegible] में हर्ज भी क्या है ? लेकिन मैं गुरु को [illegible] नहीं कहता, साँड़ को गुरु कहता हूँ [illegible]

"इसका क्या मतलब ?"

"यही कि, दो-तीन दिन से मेरी [illegible] बड़ी खुजली चल रही थी; लेकिन मैं [illegible] नहीं पाता था । आज सुबह रास्ते में साँड़ को पेड़ से खुजलाते देखा । बस [illegible] सारी समस्या हल हो गयी—मैं समझ [illegible] कि, उस अंग को कैसे खुजलाना चाहिए [illegible] हाथ या पैर की पहुँच से बाहर हो । [illegible] तभी तो मैं दीवार पर पीठ लगाकर [illegible] की कोशिश कर रहा हूँ । अहा...हा [illegible] अब जाकर कहीं कुछ चैन मिला है । [illegible] मैं फिर दीवार से पीठ रगड़ने लगा ।

कई बार खुजाते वक्त मनुष्य को [illegible] की चेष्टाओं की नकल करनी पड़ती [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी संस्कृत-कवि का कहना है कि, आहार, निद्रा, भय व मैथुन आदि प्रवृत्तियाँ मनुष्य और पशु में समान हैं। मेरी समझ से इसमें खुजली को भी स्थान दिया जा सकता है। यद्यपि आहार, निद्रा व भय आदि वृत्तियाँ, वृत्ति के रूप में दोनों में समान हैं, किंतु उनका आविर्भाव दोनों समान ढंग से नहीं करते। लेकिन खुजली के विषय में तो मनुष्य व पशुओं में वृत्ति एवं प्रवृत्ति दोनों का साम्य है।

बस, खुजाने की दृष्टि से थोड़ा-बहुत फर्क दीखता है, तो सिर्फ माध्यम का है। मनुष्य खुजाने का काम हाथ से करता है और पशु त्वचा को जीभ से चाटकर खुजली मिटाता है। अतीत में, मेरा खयाल है कि, शायद इसकी भी कुछ समता रही हो। खैर, अब भी हमारी पीठ पर यदि कोई तेजी स जीभ फिराये, तो सम्भवतः हमें भी कुछ हद तक खुजलाने का संतोष प्राप्त हो जाये। यह प्रयोग भी करने लायक है। वैसे मैंने अभी तक नहीं किया है; कर सकूँगा या नहीं, यह भी मैं नहीं कह सकता।

मेरा सुझाव है कि, संसार की दर्शनीय वस्तुओं में खुजलाते हुए मनुष्य की भी गणना की जानी चाहिये। बस उसमें शर्त यही रहे कि, वह खुजली किसी कायर की प्रतिज्ञा के समान क्षण-भर चमक देकर अदृश्य होनेवाली न हो, ऐसी खुजली हो, जिसे घंटों खुजाते चले जायें, मगर चैन न लेने दे। एक जगह से हल्की पड़े तो अन्य दस जगहों से खुजलाहट आने लगे। सचमुच जिस व्यक्ति का एसी खुजली से पाला पड़ा हो, उसे खुजलाते देख दूसरों को कितना आनंद आता होगा!

इतना ही नहीं, खुजली की क्रिया में प्रवृत्त व्यक्ति तो रंगमंच पर ऐसा भाव-प्रदर्शन कर सकता है कि, किसी सिद्धहस्त अभिनेता को भी मात दे दे। पहले वह धीरे-धीरे खुजाते हुए संतोष का, फिर अधीरता का भाव मुख पर लाता है। बाद में वह धीरोदात्त नायक के समान बड़े गौरव एवं धैर्य के साथ हाथ की गति का नियमन करता है। फिर किसी ध्यानमग्न प्रेमी या योगी के समान तल्लीन होकर वह आस-पास के लोगों की उपस्थिति को भूल जाता है। इतने पर भी खुजली शांत नहीं होती, तो वह धीरोद्धत होकर दोनों हाथों से खूब जोर का घर्षण शुरू कर देता है। अब उसके होंठ कसकर बंद हो जाते हैं, आँखें फैल जाती हैं। हाथों में वेग व आवेग दोनों का समावेश हो जाता है। इस तरह ससुराल के तानों व मार को सहनेवाली हिन्दू परिवार की असहाय निर्धन कुलवधू के समान उस व्यक्ति की त्वचा खून के आँसू बहाने लगती है। फिर थोड़ी ही देर में उसका क्रोध उतर जाता है और वह रणक्षेत्र में वैराग्यभाव में डूब जानेवाले अर्जुन की तरह विषाद का अनुभव करने लगता है।

अब आप ही अनुमान लगाइये। भला इतने कम समय में ऐसा भाव-परिवर्तन बड़े-से-बड़ा अभिनेता भी कर सकेगा? यह सब इस खुजली-प्रक्रिया की कृपा का ही तो प्रसाद है!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्माद : सामाजिक समस्या

अमरीका-जैसे साधन-सम्पन्न देशों में भी उन्माद के रोगियों के प्रति समाज जो बेरुखी दिखाता है, वे यह चित्र सूचित करता है कि, साधनहीन देशों में दशा कितनी शोचनीय होगी।

राबर्ट एस० डी राप

आर्थिक और शैक्षणिक दृष्टि से विकसित देशों में जन-स्वास्थ्य की शायद सबसे बड़ी समस्या मस्तिष्क की विकृति है। इन देशों में कैंसर, हृद्रोग और क्षय इन तीनों के जितने रोगी अस्पतालों में मिलेंगे, उनके योग से भी अधिक रोगी मस्तिष्क की विकृति के मिलेंगे। और मस्तिष्क-विकार के जितने रोगी अस्पतालों में होंगे, उससे कम-से-कम दुगुने बाहर मिलेंगे।

अनुमान है कि, अकेले संयुक्त राज्य अमरीका में ९० लाख व्यक्ति किसी-न-किसी मस्तिष्क-सम्बंधी रोग के शिकार हैं। इनमें से केवल २।। लाख रोगी प्रतिवर्ष अस्पतालों में चिकित्सा पाते है; शेष यों ही भटका करते हैं।

मस्तिष्क-विकारों में सबसे अधिक जोर 'सीजोफ्रेनिया' का है। मुख्यतया यह युवकों का रोग है। कभी-कभी किशोर-वय के लोगों और बच्चों को भी हो जाता है।

'सीजोफ्रेनिया' के स्वरूप को समझने के लिए आपको कोई पागलों का चिकित्सालय देखना पड़ेगा, जहाँ आपको उग्र प्रकृति के पागल सीखंचों में बंद मिलेंगे।

ऐसे ही एक बड़े अस्पताल की नि[illegible] है—मेरी। उसकी उम्र है अट्ठाईस [illegible] पिछले आठ वर्षों से यहाँ है। वह [illegible] लकड़ी की बेंच पर सर्वथा निश्चेष्ट [illegible] रहती है। बाल उसके बिखरे रहते हैं। [illegible] इतनी दुर्बल है कि, मुट्ठी-भर हड्डि[illegible] बंडल जान पड़ती है। हमेशा वह एक [illegible] फटा 'नाइट गाउन' पहने रहती है। [illegible] पड़ने पर उसे भी उतार डालती है। [illegible] और हाजत के लिए भी वह तब तक [illegible] उठती, जब तक कोई हाथ पकड़कर [illegible] न दे। नली के द्वारा उसके पेट में [illegible] पहुँचाया जाता है। उसके चार्ट पर रो[illegible] का नाम दिया गया है—'केटाटोनिक [illegible] फ्रेनिया'। 'सीजोफ्रेनिया' की मुख्य [illegible] किस्मों में यह भी एक है।

अस्पताल की फाइलों से मेरी के [illegible] यह जानकारी प्राप्त होती है। बचपन में [illegible] माँ-बाप का प्यार प्राप्त नहीं हुआ। माँ [illegible] अरुचि की नजर से देखती थी। पिता [illegible] और क्रोधी था; बात-बात पर डाँटता [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटता था। सो वह गम गलत करने के लिए सपनों में खोयी रहती थी।

सोलह वर्ष की उम्र में वह स्नायु-दौर्बल्य की शिकार हुई। एक दिन वह घर से भाग निकली; बहुत खोजने पर जंगल में अदृश्य व्यक्तियों के साथ जोर-जोर से बातचीत करती हुई मिली। चिकित्सक की सलाह पर उसे एक 'नर्सिंग होम' में रखा गया, जहाँ अनुकूल वातावरण के कारण बिना विशेष चिकित्सा के उसकी स्थिति में काफी सुधार देखने में आया।

बाद में उसका विवाह हुआ और वह एक बच्चे की माँ भी बनी। परंतु पत्नी और माता की भारी जिम्मेदारी को उसका मस्तिष्क सह न सका। एक दिन शाम को घर लौटने पर उसके पति ने देखा कि, वह काठ के पुतले की तरह निश्चेष्ट बैठी है। बहुत बुलाने पर भी वह कुछ न बोली। हाथ पड़कर उठाया, तो हाथ ऊँचा करके खड़ी रही। तभी से वह अस्पताल में है। वैसे प्रायः मेरी निश्चेष्ट बैठी रहती है; लेकिन दौरा पड़ने पर बहुत उग्र हो जाती है।

एक और रोगी को लीजिये। नाम है जार्ज। उसे एक और किस्म का, 'सीजोफ्रेनिया' है, जिसे शास्त्रीय भाषा में 'पेराणाइड सीजोफ्रेनिया' कहते हैं। जार्ज के मस्तिष्क में ऐसा कोई दर्पण है, जो हर एक वस्तु का विकृत प्रतिबिम्ब पेश कर देता है। खाना खिलानेवाला उसे दुश्मन लगता है। वह डरता है कि, वह उसे कहीं जहर न खिला दे।

'सीजोफ्रेनिया' की और भी कई किस्में हैं। परंतु ये सभी शरीर और मस्तिष्क दोनों के सम्मिलित रोग हैं। इनमें शरीर का नाजुक संतुलन बिगड़ जाता है। रोगी के हाथ-पाँव ठंडे रहते हैं। त्वचा का रंग कुछ नीला-सा पड़ जाता है। कभी-कभी तो रोगी की दर्द अनुभव करने की शक्ति भी जाती रहती है।

चिकित्सा की नवीन खोजों ने रोगी के स्वस्थ होने की सम्भावनाएँ बहुत बढ़ा दी हैं। फिर भी 'सीजोफ्रेनिया' चिकित्साशास्त्र की सबसे विकट समस्या है।

फिर भी समाज इस रोग के प्रति कितना कम जागरूक है, इसका ज्ञान इन आँकड़ों से हो जायेगा। इस रोग से सम्बद्ध अनुसंधान-कार्य पर सारे संसार में मिलकर जितना पैसा खर्च होता है, वह एक बम-वर्षक जेट विमान खरीदने के लिए भी काफी नहीं है। आँकड़े बताते हैं कि, अमरीका में चिकित्सा-शास्त्रीय अनुसंधान से पोलियो के प्रत्येक रोगी को २८.८० डालर का, क्षय के रोगी को २६.८० डालर का और कैंसर के रोगी को २७.७० डालर का लाभ पहुँचता है। लेकिन 'सीजोफ्रेनिया' का रोगी केवल ४.१५ डालर का लाभ उठा पाता है।

अमरीका के २९ सरकारी चिकित्सालयों में 'सीजोफ्रेनिया'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लगभग ३० हजार रोगी हैं। ये सभी प्रायः बहुत विलम्ब से अर्थात् रोग के विकट अवस्था धारण कर लेने पर यहाँ भरती किये गये हैं। इस रोग की आरम्भिक अवस्था में चिकित्सा करने पर पूर्ण स्वास्थ्य-लाभ की काफी सम्भावना रहती है; बाद में बहुत कम।

वैसे भी ये चिकित्सालय जेलखानों से मिलते-जुलते हैं। वहाँ रोगी का रहा-सहा मानसिक स्वास्थ भी चौपट हो जाता है। कारण यह है कि, वहाँ रोगियों और पागलों को एक साथ रखा जाता है। 'सीजोफ्रेनिया' के रोगी को उसकी रुचि के अनुसार कोई काम अवश्य देना चाहिये। लेकिन इस सामान्य नियम का भी वहाँ पालन नहीं किया जाता।

एक दृष्टि से ये चिकित्सालय जेलों से भी बुरे हैं। न्यूयार्क राज्य की जेलों में औसत कैदी पर ४.४० डालर दैनिक व्यय किया जाता है। परंतु उसी राज्य के चिकित्सालयों में मस्तिष्क के रोगियों पर सरकार की ओर से केवल ३.७० डालर प्रति व्यक्ति दैनिक खर्च होता है।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि, शरीर में उत्पन्न कोई विष 'सीजोफ्रेनिया' उत्पन्न करता है। यह विष मस्तिष्क के संचालन में खलल पैदा कर देता है, जिससे बाहर से पहुँचनेवाला प्रत्येक संवेदन मस्तिष्क में विकृत रूप धारण कर लेता है।

इस सिद्धांत के अनुसार इस विष को रासायनिक तत्वों द्वारा नष्ट करके रोगी को स्वस्थ किया जा सकता है। 'रेसरपाइन' और 'क्लोरोप्रोमाजाइन' आदि नयी दवा के बड़े उत्साहवर्धक नतीजे निकले हैं। 'सीजोफ्रेनिया' की कोई अक्सीरी अभी नहीं निकली है।

औषध से लाभ न होने पर निम्नलि तीन उपचारों का सुझाव डाक्टर देते हैं

प्रथम उपचार है, रक्त में शकर का अभाव कर देना कि, रोगी का मस्तिष्क पड़ जाये। इसे 'इन्सुलीन कोमा' कहते हैं देखा गया है कि, 'सीजोफ्रेनिया' और एक साथ नहीं होते। यदि होते भी हैं मृगी के दौरे के बाद 'सीजोफ्रेनिया' के की उग्रता कम हो जाती है। इसी जानकारी के आधार पर 'इलेक्ट्रो कन्वल्सिव' का जन्म हुआ।

धमनियों में कपूर की किस्म के रासा निक द्रव्य 'मेट्राजोल' या 'कार्डियाजोल' इंजेक्शन देते हैं। इससे तीस सेकेंड के रोगी को मृगी के से दौरे पड़ने लगते हैं लेकिन रोगी इससे डर जाता है और इं क्शन लेने से इन्कार कर देता है। इसलि अब इंजेक्शन क बजाय हल्की बिजली झटके दिये जाते हैं।

तीसरी पद्धति 'लोबोटोमी' एक प्रकार की शल्यक्रिया है। मस्तिष्क में कुछ स्नायु का सम्बंध काट दिया जाता है। इसमें बड़ा यह भय रहता है कि, रोगी आकांक्षा, संकल्प शक्ति और अंतर्दृष्टि खो बैठता है काहिल हो जाता है। और इस उपचार रोगी स्वस्थ हो ही जायेगा, इसकी भी गारंटी नहीं है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य का निरूपक हेनरी मूर

विख्यात ब्रिटिश मूर्तिकार सर जेकब इप्स्टीन ने तीस वर्ष पूर्व हेनरी मूर को "भावी मूर्तिकला के लिए अति महत्वपूर्ण" कलाकार कहा था। मूर की प्रतिभा ने मूर्तिकला ही नहीं, चित्रांकन के क्षेत्र में भी इस भविष्यवाणी को चरितार्थ किया है।

कालिंदी मित्रा

मजदूर-बस्ती के एक स्कूल में इतिहास की कक्षा लगी थी। अध्यापक बच्चों को वेसारी के प्रसिद्ध 'कलाकार-चरितावली' में से यह किस्सा सुना रहा था :

बालक माइकलेंजेलो अपने गुरु के साथ लारेंजो द मैग्निफिसेंट के महल में जाया करता था, जहाँ मूर्तियाँ बनायी जा रही थीं। एक बार वहाँ माइकलेंजेलो ने एक पुरानी कलाकृति के आधार पर एक बूढ़े रोमन देवता की संगमरमर की बड़ी मूर्ति बनायी। इस में देवता को हँसते हुए दिखाया गया था; उसकी सुघड़ दंत-पंक्ति बड़ी सुंदर बन पड़ी थी। लारेंजो मूर्ति को देखकर खुश हुआ; पर हँसी-हँसी में बोला—"देवता बूढ़ा है; बूढ़ों के तो एक-आध दाँत टूटे होते हैं।' यह सुनते ही चौदह-वर्षीय कलाकार माइकलेंजेलो ने हथौड़ी उठायी और मूर्ति के दो-तीन दाँत तोड़ डाले; छेनी से मसूड़े भी छीलकर खुरदरे कर दिये, जिससे देवता बूढ़ा दीखने लगा।

ग्यारह वर्ष का एक छात्र कहानी को बड़े ध्यान से सुन रहा था। उसने वहीं मन-ही-मन संकल्प किया—"मैं भी बड़ा होकर कलाकार बनूँगा – माइकलेंजेलो-जैसा। यह बालक था हेनरी मूर – आज का मूर्धन्य ब्रिटिश चित्रकार और मूर्तिशिल्पी।

हेनरी मूर कैसलफोर्ड (ब्रिटेन) की एक कोयले की खान के मजदूर के घर १८९८ में जन्मे। जब वे अभी सोलह साल के थे, स्कूल-मास्टर बन गये। कुछ समय बाद प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया। तीन साल बाद उन्हें सेना में भरती होकर फ्रांस में मोर्चे पर भी जाना पड़ा। युद्ध की समाप्ति पर जब छँटनी आरम्भ हुई, वे घर लौट आये। कुछ दिन अध्यापन किया, फिर लीड्स की कलाशाला में भरती हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापकों से रटाये हुए कला सिद्धांतों
और गुरों से संतुष्ट होकर बैठ जानेवाले छात्र नहीं थे मूर। शहर में जितनी भी चित्र-प्रदर्शिनियाँ लगती, वे उनमें अवश्य जाते; स्थानीय पुस्तकालयों में कला-विषयक जो भी किताबें मिलतीं, उन्हें वे पढ़ते। इसी तरह उन्होंने एक पुस्तक पढ़ी—रोजर फ्राइ-लिखित 'विजन एंड डिजाइन'। इसने उनका परिचय नीग्रो और मेक्सिकी कला से कराया और उन्हें प्रसिद्ध ब्रिटिश म्यूजियम की ओर आकृष्ट किया।

कुछ समय बाद वे रायल कालेज आव आर्ट्स में कला की उच्च शिक्षा लेने के लिए लंदन आये। उनका अवकाश का अधिक समय ब्रिटिश म्यूजियम में बीतने लगा। वहाँ उन्होंने संसार के विविध देशों और जातियों की आदिम और विकसित कलाओं के नमूनों का अध्ययन किया। इससे भी बड़ी बात है कि, यहीं उन्होंने विभिन्न प्राकृतिक रूपों में—लोहे की कच्ची धातु, बजरी के पशु-पक्षियों के अस्थि-पंजर, वृक्षों की के रचना-क्रम और मानव-शरीर के आदि में—निहित सौंदर्य और संतुलन को चानने की शिक्षा पायी। इन सबसे शिल्प-प्रतिभा समृद्ध बनी।

कोयले की खान में

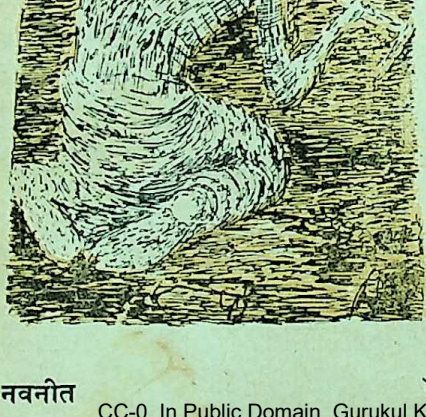

तभी रायल कालेज ने उन्हें विदेश के लिए एक छात्रवृत्ति दी। वे इटली लेकिन वे एक दृढ़ संकल्प के साथ वहाँ थे—पुनर्जागरण-कालीन कला-दृष्टि के मारण अवशेषों को नहीं बटोरना है।

इटली में उन्हें सबसे अधिक प्रभा किया फ्लारेंस के सांटा मारिया गिरजे अंकित मसाचियो के चित्रों ने। मूर ने भव किया कि, वेसारी ने यह गलत नहीं था—"मसाचियों के बाद के सभी विख्य शिल्पकार इस गिरजे में अंकित चित्रों अध्ययन से ही उतने श्रेष्ठ और प्रति शाली कलाकार बने।"

और भी कई कलाकारों ने मूर को प्र वित किया है। इनमें मुख्य हैं—गियो ब्लेक, टर्नर और पिकासो। उनकी कला प्रभावित करनेवाले दूसरे तत्व हैं—मेक्सि मिस्री और सुमेरियन आदिम कला, प्रा ब्रिटिश कुम्हारी कला, वर्षा एवं हवा घर्षण से अद्भुत आकार धारण किये शिलाखंड और प्राचीन आस्थियाँ।

आदिम कला का विवेचन करते मूर ने कहा है—"आदिम कला का आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिल्कुल सीधा होता है। उसका सम्बंध है प्राणशक्ति से; और उसकी सरलता का मूल है अपरोक्ष एवं तीव्र संवेदन। आदिम कला में सर्वत्र मिलनेवाला एक प्रमुख लक्षण है प्राणमयता। वह उन लोगों की सृष्टि है, जिनका जीवन से सीधा, अपरोक्ष सम्बंध था।... सुमेरियन मूर्तियाँ जीवन के कौतुक तथा रहस्य की प्रत्यक्ष अनुभूति के प्रमाण हैं।"

निद्रा-निमग्न

उनकी कला किसी का अनुकरण नहीं करती; क्योंकि प्रत्येक वस्तु को वे अपनी ही नजरों से देखते हैं। एक समीक्षक ने उनकी तुलना प्रशांत सागर की उन विद्युन्मय मछलियों से की है, जो आवश्यकता पड़ने पर अपने चारों ओर प्रकाश फैलाकर सब वस्तुओं को देखती हैं और काम हो जाने पर बत्ती बुझा लेती हैं।

वस्तुतः हेनरी मूर ने प्रत्येक वस्तु और विषय को अपनी प्रतिभा के प्रकाश में देखा है, अपनी ही शैली में प्रस्तुत किया है। शैली की दृष्टि से उन्हें किसी एक वाद के खूंटे से नहीं बाँधा जा सकता। न वे कोरे यथार्थवादी हैं, न ही पूरे अव्यक्तवादी।

मूर मूलतः मूर्तिशिल्पी हैं। अतः मूर्तिकला के अनेक तत्व उनके चित्रों में भी देखने को मिलते हैं। वस्तुतः बहुत समय तक वे मूर्ति-निर्माण की भूमिका के रूप में ही चित्र रचना करते रहे। अवकाश और द्रव्य (मास) के उपयोग से वे अपनी कलाकृतियों में अवर्णनीय उदात्तता भर देते हैं।

उनकी मूर्तियाँ बहुत ही सादी होती हैं, और अवास्तविक भी। एक असहृदय समीक्षक ने इन मूर्तियों का वर्णन इस प्रकार किया है—"लहरों, पालिश किये हुए वृक्ष-प्रकांडों व रेत से घिसकर चिकनी हुई रेगिस्तानी चट्टानों जैसे धड़ों पर सुई के सिर जैसे आकृतिहीन सिर।"

उनके चित्रों या मूर्तिशिल्पों में मिलनेवाली मानवाकृतियाँ तर्कबद्ध चिंतन की किसी कड़ी को प्रतिबिम्बित नहीं करतीं। वे तो प्राण के प्रवाह के बुद्बुद, आवर्त और तरंगों के प्रतिम्बिब हैं। वस्तुतः वे बीसवीं सदी के कर्तृत्ववान्, बुद्धिदृप्त, प्रकृतिजयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव का नहीं, अमित मन और तिमिर की अंधशक्तियों से अभिभूत मानव का चित्रण करते हैं। लेकिन उनकी प्रत्येक कृति में अथाह चैतन्य भरा है। एक समीक्षक ने उनकी मूर्तियों के बारे में कहा था—"मेरी उनसे बातचीत करने की इच्छा होती है। मैं उत्तर की तो आशा नहीं करूँगा; क्योंकि वे पत्थर की बनी हैं। फिर भी उनसे बोलूँगा; क्योंकि वे जीती-जागती हैं।"

'अधलेटी नारी' (१९२०), 'माता और शिशु' (१९३१), 'अधलेटा व्यक्ति' (१९३९), 'मेडोना एवं शिशु' (१९४४) तथा 'परिवार' (१९४४) उनकी प्रसिद्ध मूर्तियाँ हैं।

मूर्ति-विधान की तरह ही वर्ण-रंजन में भी मूर का ढंग अपना ही है। वे रंग को चित्र के अलंकार के रूप में नहीं, अपितु मौलिक उपादान के रूप में उपयोग करते हैं। रंग भी वे वही पसंद करते हैं, जो स्वयं प्रकृति को भी प्यारे हैं—काई की हरियाली, धधकते अंगारों की ललाई, और पत्थरों की भूरी कालिमा। रहस्य का गहरा परदा पड़ा रहता है उन मानवों के मुखड़े पर। वस्तुतः मानव के भीतर और बाहर व्याप्त महारहस्य उनकी कला का विषय है। टामस हार्डी के इन शब्दों में हेनरी मूर की कला-दृष्टि को आत्मा मिल जाती है:

"सौंदर्य की दृष्टि से प्रकृति परिसमाप्त है; रहस्य के रूप में अक्षय। ...मैं उस यथार्थ को—उसके दृश्य रूप को—नहीं देखना चाहता। मैं तो दृश्यमान के भीतर छिपे सत्य को देखना चाहता हूँ, जिसकी अभिव्यक्ति को कई बार अमूर्त कल्पना का नाम दिया जाता है।"

★

मैं मानता हूँ—कलाकृति में अपना चैतन्य होना चाहिये। मेरा आशय जीवन के चैतन्य, गति और भौतिक सक्रियता की परछाईं से, या उछलती-नाचती आकृतियों आदि से नहीं है। बल्कि कलाकृतियों में अपना ही—अर्थात् जिनकी वे अनुकृतियाँ हैं उनसे असम्बद्ध—चैतन्य व जीवन भरा हो सकता है। जब किसी कलाकृति में यह सजीव चैतन्य होता है, हम उसके लिए 'सौंदर्य' शब्द का उपयोग नहीं करते।

परवर्ती यूनान में या पुनर्जारण-काल में सौंदर्य का जो अर्थ हो गया, उस अर्थ में सौंदर्य मेरी मूर्तिकला का लक्ष्य नहीं है। अभिव्यक्ति का सौंदर्य और अभिव्यक्ति की ओजस्विता दोनों के पृथक्-पृथक् व्यापार हैं। एक इंद्रियों को तृप्त करती है; दूसरी में आत्मिक चैतन्य होता है, जो मेरी दृष्टि में अधिक मार्मिक और इंद्रियों से अधिक गहरी चीज को छूनेवाला होता है।

—हेनरी मूर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु-पथ

जीवन के 'उस पार' के इस आँखों देखे वर्णन की गीता में वर्णित आलोकपूर्ण 'उत्तरायण-मार्ग' से विस्मयकारी समता है।

पीटर माइकलमोर

धर्मग्रंथों के अनुसार आत्मा का शरीर से अलग होने की घड़ी का नाम मौत है। इस परिभाषा को न मानने पर भी आधुनिक चिकित्साशास्त्री अनुभव कर रहे हैं कि, मौत के स्वरूप का सवाल वैज्ञानिक अनुसंधान का नया क्षेत्र प्रस्तुत कर रहा है।

बात यह है कि, हृद्रोग से हृदय की गति रुक जाने के बाद मंथन-क्रिया से रोगी में पुनः जीवन-संचार करने की घटनाएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं; और इस प्रकार मृत्युलोक से लौटे हुए लोगों के निजी अनुभव और संस्मरण प्राप्त करना सम्भव हो गया है।

हाल में डिट्रायट (अमरीका) में अखबारों के प्रतिनिधियों ने ऐसे रोगियों से "उस पार" के संस्मरण पाने की कोशिश की है।

लेकिन देखा गया है कि, इन लोगों के मन में जीवन के इन क्षणों की कोई स्मृति-रेखाएँ अंकित नहीं रहीं और वे मृत्यु के स्वरूप के बारे में कुछ भी नहीं बता पाते।

चिकित्सकों का एक दल कहता भी है कि, ऐसे प्रश्न करना बेकार है। बात यह है कि, प्राण का दारोमदार आक्सिजन पर है। जब हृदय-क्रिया रुक जाने से मस्तिष्क में खून के साथ आक्सिजन का पहुँचना बंद हो जाता है, तब भी पाँच-छः मिनिट तक मस्तिष्क-तंतुओं में कोई विशेष विकार नहीं पैदा होता; परंतु उसके बाद से मृत्यु तक मनुष्य की स्थिति वनस्पति-जैसी होती है। वह न कुछ सोच सकता है, न कर सकता है।

मस्तिष्क की विद्युत्-तरंगों को मापनेवाले उपकरण 'इलेक्ट्रो-एन्सिफेलोग्राफ' से भी यही सिद्ध होता है। मस्तिष्क में ताजा आक्सिजन आना रुक जाने के १२ क्षण बाद तक मस्तिष्क सामान्य-स्वस्थ अवस्था में रहता है। उसके बाद उसकी विद्युत्-तरंगें शिथिल और मंद होने लगती हैं, जैसा गहरी मूर्छा (कोमा) में होता है। होते-होते ये तरंगें सर्वथा बंद हो जाती हैं। अतः कुछ याद रहने का सवाल ही नहीं उठता।

लेकिन मियामी (अमरीका) की एक गृहिणी लिन मेलविन ने मृत्यु और जीवन के बीच की अवस्था का जो वर्णन निजी अनुभव के आधार पर किया है, वह बड़ा विचित्र है। पूरे पाँच दिन, पाँच रात तक वे १०८ डिग्री के बुखार में तड़पती रहीं। वे बताती हैं:

"उस समय मेरे मस्तिष्क में बड़े विस्फोट के साथ भड़कीले और डरावने रंग उठते थे और आँखों के सामने छा जाते थे। ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लगता था कि मस्तिष्क में तेज लौ सी जल रही हैं और अब खोपड़ी फटने ही वाली है।

"मैं बेहद थक गयी थी। मुझे लगा कि, अब और यह गाड़ी मुझ से नहीं खिंचेगी। क्षण-भर के लिए मुझे अंग-प्रत्यंग में तीव्र वेदना की अनुभूति हुई। कितनी पीड़ा भरी थी उस एक क्षण में। दर्द प्राण हर लेगा, ऐसा लग रहा था। तभी अचानक दर्द रुक गया।

"मुझे बड़ी शीतलता और स्वतंत्रता अनुभव हुई। आश्चर्यपूर्वक मैंने अपने चारों ओर देखा। मेरे चारों ओर बड़ा सुहावना रंगीन वन था। सब चीज मुझे बहुत स्पष्ट दिख रही थीं। ज्यों-ज्यों मैं इस स्वर्गोपम वन को देखने लगी, मुझे पता चला कि, केवल मेरी आत्मा ही उनमें पहुँच पा रही है।

"मेरा शरीर पीछे छूट रहा था। मैं जानती थी कि, अब मौत पास ही है। लेकिन मैं मरना नहीं चाहती थी। मैंने देखा जी-जान से लड़ रही हूँ और अपने आप अपने दर्द-भरे शरीर में वापस धकेल रही हूँ।

"इसके बाद फिर मैंने अपने को दर्द सागर में निमग्न पाया। लेकिन यह खला नहीं। मैं वापस आ गयी थी उस क्षण से मैं समझ गयी कि, मैं अच्छी जाऊँगी।"

श्रीमती मेलविन अब पूर्ण स्वस्थ हैं डाक्टर उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति को श्रेय देते हैं। परंतु प्रश्न यह है कि, सचमुच वे "उस पार" की झाँकी आयी हैं?

श्रीमती मेलविन का तो यही विश्वास है वे मानती हैं कि, वे भगवान् की कृपा अपनी संकल्प-शक्ति से ही मृत्यु-पथ पर वापस लौट पायीं।

पुरस्कृत अपराधी

लंदन की स्काटलैंड यार्ड पुलिस बड़ी दौड़-धूप के बाद एक अपराधी को पकड़ पायी जो बड़ी-से-बड़ी तिजोरी तक को बगैर किसी चाबी के पलक मारते खोल देता था। पहले तो पुलिस ने उसे जेल भिजवा दिया। फिर वह डरने लगी कि, कहीं यह आदमी जेल में अपराधियों को यह हुनर न सिखा दे। सो अफसर जेल में उससे मिले। अपराधी ने कहा कि, यदि उसे जेल से छोड़ दिया जाये और एक बड़ी रकम पुरस्कार में दी जाये, तो वह यह रहस्य किसी को नहीं बतायेगा। शर्तें पूरी की गयीं और आज वह आदमी तिजोरियाँ बनाने के एक कारखाने में नियुक्त है।

फ्रांस के जाँ स्पेरटी संसार के किसी भी डाक-टिकट की नकल कर सकते थे। उन्होंने घर पर बहुत-से जाली टिकट बनाये और उनके पीछे यह बात लिख भी दी। फिर भी जब ये टिकट धड़ल्ले से बिकने और उपयोग में आने लगे, तो पुलिस ने उन्हें बहुत-सा पैसा देकर यह पेशा बंद करने पर राजी कर लिया। — कुँअरानी सरला देवी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय के साथ

दुनिया का सबसे बड़ा निजी टेलीफोन-संगठन अमरीका के बरबैंक शहर की लाकहीड कम्पनी का है। कंम्पनी के ६५ दफ्तर अमरीका के विभिन्न भागों में हैं और उनके बीच एक लाख मील विस्तृत टेलीफोन-तारों का जाल बिछा हुआ है। २१,७२७ टेलीफोन केंद्रीय कार्यालयों को शाखा-कार्यालयों से जोड़ते हैं।

इस संगठन से संदेश-वहन शीघ्रता स होने के कारण कम्पनी की कार्यक्षमता ही नहीं बढ़ी है, उसे ढाई लाख डालर की बचत भी हुई है।

—०—

नयी मोटरों को अधिक वेगवान् बनाने में सफलता मिली है। मेनहैटन के पाँचवें अंतर्राष्ट्रीय मोटर-प्रदर्शन में ४० कम्पनियों ने लगभग ४०० नये माडल प्रस्तुत किये। इनमें ब्यूक का शक्तिशाली इंजनवाला स्काइलार्क माडल, पांटियाक का लेमान्स, फोर्ड का फ्यूच्युरा और कामेट तथा क्राइस्लर का टर्बोफ्लाइट मुख्य थे। परंतु सबसे आकर्षक था जैग्वार का एक्स-रे-ई माडल। इसका इंजन २६५ हार्स-पावर का है और और इसकी गति १५० मील प्रति घंटा है।

—०—

कला को जीवन से युक्त करने में ही अब कलाकार कला का सार्थक्य मानने लगे हैं। मेन हैटन की स्टेंफली गैलरी की दीवारों पर दिखायी गयी रचनाएँ अपने ही ढंग से भ्रम पैदा करती थीं। इनमें एक कृति झरने की थी, जो छत से गिरता हुआ दिखाया गया था। कई शिल्पकृतियाँ छूने पर इस तरह हिल उठती थीं, जैसे पौधे पानी के नीचे नाच रहे हों। अन्य कृतियाँ गा उठती थीं।

ये सब इटली में जन्मे कलाकार हेनरी बेर्तोइया (उम्र ४६ वर्ष) की रचनाएँ हैं। वेल्डिंग टार्च की सहायता से वे धातु से इनका निर्माण करते हैं। पंद्रह वर्ष की अवस्था में वे अमरीका आये और १९३७ में केनब्रुक कला अकादमी में दाखिल हुए। बहुत समय तक वे कुर्सियों की डिजायनें और धातु की जालियाँ बनाकर जीविका चलाते थे।

अन्य अनेक भाववाही (एब्स्ट्रैक्ट) कलाकारों की तरह बेर्तोइया सारे विश्व को चैतन्य का एक कटोरा मानते हैं। अंतरिक्ष में वेग से उड़नेवाले कणों के विचार पर वे मुग्ध हैं। उन्होंने पीतल के तारों से इस विचार को अभिव्यक्त करनेवाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक कलाकृति भी गैलरी में रखी थी ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जड़ चित्रों में चेतनता लाने की भी योजना हो गयी है । लेनविल शहर की कालार्ट कम्पनी ने एक ऐसी खोज की है, जिसके द्वारा स्थिर चित्रों को ध्वनियुक्त करके उन्हें परदे पर दिखाया जा सकता है। ध्वनिपट्टी (साउंड-स्ट्रिप) के प्रोजेक्टर में ३५ मिलीमीटर का चित्र फिल्म-स्ट्रिप में लगा दिया जाता है। चित्र का विवरण देने-वाले शब्दों को रिकार्ड करके फिल्म के साथ के भाग में छाप दिया जाता है । जब चित्र परदे पर दिखाया जाता है, उसका परिचय भी प्रकाश-किरणों की सहायता से एप्लिफा-यर द्वारा १८ सेकेंड के लिए सुनाई देता है। यह यंत्र श्रवण-दर्शन-विधि से शिक्षा-प्रसार करने तथा माल की बिक्री बढ़ाने के उपायों के लिए बहुत उपयुक्त साधन है ।

—०—

आज के मानव को यंत्र-चालित होना ही स्वीकार है। क्या सवेरे दाँतों में ब्रश करते समय आपके हाथ थक जाते हैं ? ओलिन, मेडीसन की स्क्विब कम्पनी ने बिजली से चलनेवाला दाँतों का एक ब्रश बनाया है । इसमें ब्रश का अगला भाग एक हत्थे पर लगा दिया जाता है, जिसके नीचे बिजली से चलनेवाली एक छोटी-सी मोटर छिपी रहती है। ब्रेक के दो बटनों पर से जब अँगुली हटा ली जाती है, तब यह ब्रश ऊपर-नीचे घूमकर सफाई करने लगता है।

—०—

सूर्य की परिस्थिति का ज्ञान एक [illegible] और [illegible] है । पिछले दिनों अमरीकी वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के चारों ओर [illegible] विकिरणशील पट्ट का पता लगाया है। अवकाश की माइक्रो-मीटियोराइट [illegible] नापी है । और पिछले मास सबसे [illegible] बात यह पता लगी है कि, प्रोटोनों [illegible] हवा सूर्य की ओर से प्रति सेकेंड १८०० [illegible] की गति से बहती है और हमारी सौर-[illegible] में संचरित होती है ।

इस हवा का अस्तित्व अमरीकी [illegible] 'एक्सप्लोरर-१०' ने साबित कर दिया [illegible] यह राकेट २५ मार्च १९६१ को [illegible] गया था । भ्रमण-कक्षा में १,४५,०[illegible] मील की सीमा तक पहुँचकर वह पृथ्वी [illegible] लौट आया । इसके तीन मैग्नेटोमीटर [illegible] रेडियेशन-गणकों ने सूर्य के चुम्बकीय क्षेत्र [illegible] शक्ति और सौर कणों की गति को [illegible]

—०—

भारत-सरकार जनता के स्वास्थ्य [illegible] ओर अधिक सावधान हो रही है। [illegible] सरकार ने राज्य-सरकारों को आदेश [illegible] है कि, जनता के सहयोग से सारे देश [illegible] पहली जुलाई से सातवीं जुलाई तक [illegible] विरोधी सप्ताह मनाया जाये ।

हिसाब लगाने से पता चला है [illegible] अप्रैल और सितम्बर महीनों के बीच [illegible] वातावरण में गर्मी और आर्द्रता [illegible] मात्रा अधिक होती है, एक मादा [illegible] ५,५८,९७,२०,००० वंशज पैदा [illegible] सकती है । मक्खी छूत की बीमारियों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सबसे सशक्त वाहन है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—०—

अब शहद अधिक स्वच्छ और सुलभ होगा। एक जापानी मौन-पालक ने इस प्रकार के मक्खीघर बनाये हैं, जिनमें प्राकृतिक छत्तों की अपेक्षा अधिक मधु-संचय हो सकेगा।

केनजी तादा ने ये प्लास्टिक के छत्ते बनाये हैं। देखने में ये बिल्कुल कुदरती छत्तों-जैसे प्रतीत होते हैं। मक्खियों ने भी इन्हें पसंद किया है। मोम से छत्ते बनाने में मक्खियों का काफी श्रम और समय लग जाता है। उस दौरान में वे अपना संग्रह किया हुआ ७० प्रतिशत शहद खा जाती हैं। नये प्लास्टिक के छत्तों से यह शहद बचाया जा सकता है। इन छत्तों को आसानी से धोया और कीटाणुमुक्त रखा जा सकता है। मधुमक्खी-पालकों के लिए ये बहुत उपयोगी हो सकते हैं।

—०—

सम्पूर्ण विश्व में व्योम-विहार का व्यसन बढ़ रहा है। पिछले साल अमरीका के सान डियागो से लेकर सेडर रैपिड्स तक के शहरों में बड़े धड़ल्ले के साथ हेलिकाप्टरों की बिक्री होने के समाचार आये हैं। अब ये हेलिकाप्टर उस इलाके में जगह-जगह उड़ते दिखाई देते हैं।

इन स्वयं निर्मित हेलिकाप्टरों में खतरा कम और आनंद अधिक होता है। प्रायः हेलिकाप्टर की कीमत २०,००० डालर होती है।

लेकिन वेनसन एयरक्राफ्ट कम्पनी (रैले) ने "अपना हेलिकाप्टर आप बनाओ" योजना के एक लाख सदस्य बनाये हैं। सदस्यों को दो डालर की कीमत पर हेलिकाप्टर के नक्शे दिये जाते हैं। डगलस एयरक्राफ्ट का एक भूतपूर्व कर्मचारी बफ टाम एडम्स भी ऐसे नक्शे बनाता और बेचता है। एक नक्शे के वह पैंतीस डालर लेता है। इन नक्शों की सहायता से बहुत-से युवक अपने हाथों हेलिकाप्टर तैयार करने में लग गये हैं।

सैनिक डाक्टर बहुत वर्षों से ऐसी दवा की कल्पना करते आये हैं, जिसे खिलाने से डरपोक सैनिक साहसी हो जायें। अब येल विश्वविद्यालय के डाक्टर मिलर का कहना है कि, चूहों और बिल्लियों पर किये गये प्रयोगों से ऐसी दवा के आविष्कार की सम्भावना उपस्थित हो गयी है। डाक्टर मिलर ने एक प्रयोग में बहुत-से चूहे एक डिब्बे में बंद किये। डिब्बे के फर्श के एक छोर को छूने पर बिजली का झटका लगता था। झटका लगने के पूर्व तेज रोशनी भी होती थी। अनुभव से चूहों ने रोशनी से डरना और उस ओर न जाना सीख लिया। लेकिन जब उन्हें 'सोडियम एमाइटल' खिलाया गया, वे निर्भीक हो गये और रोशनी की चेतावनी की उपेक्षा करके बारबार उस ओर बढ़ने लगे, जिधर झटका लगता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल भी काँटे भी

स. का. वि.

न्यूयार्क से एक मित्र का पत्र मिला—"एक युवक पर्यटक भारतीय मध्यम वर्ग के परिवारिक जीवन का अध्ययन करने भारत आना चाहता है। क्या आप उसे अपने घर अतिथि बना सकेंगे ?" दूसरी डाक से पर्यटक का भी पत्र मिल गया—"मैं हूँ ५ फुट ९ इंच ऊँचा, वजन १६५ पौंड; शौक है : जल-विहार और पर्यटन। घर में जहाँ तक बने नग्नदेह रहना पसंद करता हूँ। सोने की आदत रात्रि २ बजे। आशा है, आप अतिथि रूप में स्वीकार करेंगे।"

मामला गृह-विभाग का था, इसलिए गृहिणी से चर्चा की। पत्नी को नवीन प्रयोगों से अरुचि नहीं। केश-विन्यास के अनेक असफल प्रयोग करके वह ब्यूटी सैलून्स का उपकार कर चुकी है; किंतु सारे घर को प्रयोगशाला बनाने का विचार उसे भी पसंद नहीं आया।

—०—

कुछ दिन पहले पिम्परी के कारखानों में चूहों पर पेनिसीलीन की प्रयोग-विधि देखी थी। उस मूषक-परिवार जैसी अवस्था में रहना—चाहे वह 'यूनो' की विश्वशांति योजना के अंतर्गत ही क्यों न हो—और मेरी पत्नी को बिल्कुल पसंद नहीं। सो, मैंने पत्र में लिख दिया कि, आप प्रबंध किसी अच्छे होटल में कर दिया जायेगा। हमारे घर में पहले ही प्रति वर्ग आबादी का घनत्व 'अंतर्राष्ट्रीय आवास कमेटी' की सिफारिशों से अधिक है।

—०—

एक बात बड़ी विचित्र है। आज पर्यटक आज का भारत देखने आते हैं; लेकिन या तो वे हजारों साल पहले, या हजार साल बाद का भारत देखकर लौट जाते हैं। आज के भारत पर निगाह डालने की फुर्सत किसी को नहीं मिलती।

—०—

अभी तक मुझे केवल एक ही पर्यटक नहीं मिला था, जिसने ताज और एलोरा देखने से इन्कार कर दिया था। उसने कहा था—"मैं भारत के जीवित अधिष्ठान देखने आया हूँ, कब्रिस्तान नहीं।" वह पर्यटक पूर्वी जर्मनी का था। सचमुच वह व्यक्ति बड़ा साहसी था—तभी तो टूरिस्ट विभाग के नियमित गाइडों से नजर बचाकर स्वतंत्र विचरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रण कर पाता था ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यथा ये गाइड जब किसी पर्यटक के सामने बयान शुरू करते हैं, तो ग्रामोफोन-रिकार्ड की सुई की तरह चिटक जाते हैं। मथुरा-काशी के पंडों की पकड़ इनकी पकड़ के सामने हेय है ।

—०—

एक गाइड ने दिल्ली का लाल किला दिखाते हुए एक पर्यटक को कहा था—"यह लाल किला सबसे पहले लालचीन ने बनवाया था, बाद में औरंगजेब ने इसे लाल चीन से जीता ।

—०—

सच तो यह है कि, भारत के सभी रमणीक स्थान अब पर्यटकों के स्वर्ग रह गये हैं। रेल्वे स्टेशनों की दीवारें इन पोस्टरों से भरी पड़ी हैं-'पर्यटकों का स्वर्ग कश्मीर', 'पर्यटकों का स्वर्ग नैनीताल' । इन स्थानों के निवासियों की स्वर्ग-वीथियाँ शायद बम्बई, कलकत्ता और मद्रास की अँधेरी गलियाँ हो चुकी हैं।

—०—

पर्यटन को और भी प्रवहमान बनाने के लिए सरकार सिरतोड़ कोशिश कर रही है। बम्बई में पर्यटन-प्रदर्शनी हुई। एक पर्यटक ने बतलाया कि, प्रदर्शनी देखकर उनकी पर्यटन-लालसा सर्वथा शांत हो गयी। तोरण-द्वार पर सुशोभित गलावी रंग की त्रिमूर्ति को देखकर उन्होंने एलिफेंटा जाने का विचार छोड़ दिया। मैं तो ईश्वर से यही प्रार्थना किया करता हूँ कि, ऐसी प्रदर्शनियाँ हर साल हुआ करें, जिससे इन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों से देश और देशवासियों को राहत मिले ।

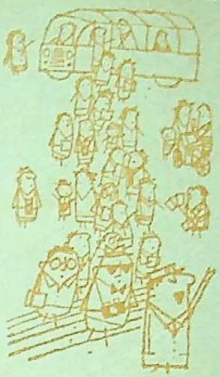

पर्यटकों की टोली

—०—

व्यक्तिगत रूप से मैंने तो अब पर्यटन मात्र से वैराग्य ले लिया है। क्योंकि कोई भी रमणीक स्थान पर्यटक सेना के आक्रमण से नहीं बचा। डीलक्स से उतरकर इनके गिरोह जब इन स्थानों पर तैमूर की फौज के समान छा जाते हैं, तो स्थान की रमणीयता तत्क्षण लुप्त हो जाती है।

—०—

अँग्रेजी शासन में जो पर्यटक आते थे, वे भारत के जादूगरों, सपेरों और हाथियों के चित्र खींचते थे। आज के विदेशी पर्यटक खजुराहो, कोणार्क, अजंता के चित्र खींचकर 'रति-रहस्य' और 'कामकल्प' पुस्तक तैयार करते हैं। इन भित्ति-चित्रों और मूर्तियों से ही वे भारत के अंतर्मन की कल्पना करते हैं। यही क्रम रहा, तो आश्चर्य नहीं कि, कुछ वर्ष बाद भारत केवल पर्यटकों की प्रयोगशाला बनकर रह जाये।

★

अगर आपका तर्क गलत हो, तो विपक्षी पुरुष से क्षमा माँग लीजिये; और जब आपका तर्क सही हो, तो विपक्षी स्त्री से। यही सभ्यता है। —राबर्ट बेन्सन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रमा का अदृश्य भाग

चंद्रलोक के विषय में संकलित नवीन वैज्ञानिक तथ्य

टी० जे० ब्रिनिकूम्ब

चंद्रमा के कलंक पर जितनी उत्प्रेक्षाएँ कवियों ने की हैं, उतनी ही कल्पनाएँ आधुनिक वैज्ञानिकों ने चंद्रमा की पीठ के बारे में की हैं।

वैज्ञानिकों को एक तथ्य तो चंद्रमा के बारे में बहुत पहले ही ज्ञात हो चुका था—हमेशा उसका एक ही पार्श्व पृथ्वी की ओर रहता है, जिसे चाँद का 'मुख' कहते हैं। खाली आँख से देखें या दूरबीन से, सदियों से यही 'मुख' पृथ्वीवासियों को दिखाई देता रहा है।

चंद्रमा २७ दिन, ७ घंटे, ४३ मिनिट, ११.४७ सेकेंड में धरती का एक चक्कर पूरा करता है। अपनी धुरी पर एक बार घूमने में भी उसे इतना ही समय लगता है। तभी उसका पृष्ठभाग हमें दिखाई नहीं देता। वास्तव में चंद्रमा और पृथ्वी एक ही केंद्र के चौगिर्द घूमते हैं; और यह केंद्र पृथ्वी में ही स्थित है।

अपने परिक्रमा-पथ का चक्कर पूरा करने में चंद्रमा को हमेशा इतना ही समय लगता है। परंतु उसका परिक्रमा-पथ पूर्णतया गोलाकार नहीं है। पृथ्वी से उसकी दूरी जैसे घटती-बढ़ती है, उसी हिसाब से उसकी गति भी घटती-बढ़ती रहती है।

पृथ्वी के सबसे निकट आने पर चंद्रमा हमें जितना दिखाई देता है, उसका ५९ भाग अधिकतम दूरी पर पहुँचने पर नहीं दीखता। इसीलिए चंद्रमा कभी इधर और कभी उधर झुका हुआ दीखता है। कभी-कभी उसके ध्रुवों के उस पार का कुछ भाग हमें दीख जाता है। इस प्रकार कुल मिलाकर पृथ्वी से चंद्रमा का ५९ प्रतिशत भाग देखा गया है। वैसे ५० प्रतिशत से अधिक भाग कभी एक साथ दिखाई देता।

शेष ४१ प्र० श० भाग देखने के लिए चंद्रलोक जाने की बात सोच रहा है। तो मनुष्य दो बार अंतरिक्ष की सैर आया है। उससे आशा होती है कि, यह हमारे जीवन-काल में ही हो जाय।

चंद्रमा का जो हिस्सा पृथ्वी के निकट है, वहाँ एक गुम्बद-सा बना हुआ है। इससे अनुमान होता है कि, जब चंद्र द्रव-अवस्था में था और उसमें ज्वालामुखी क्रिया बहुत जोरों से हो रही थी, तब पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण ने उसके धरातल-निर्माण पर बहुत असर डाला होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इसके आधार पर यह अनुमान किया गया कि, चंद्रमा का पृष्ठभाग [illegible] के प्रभाव से मुक्त रहा होगा; लिहाजा उसकी सूरत-शक्ल दूसरे ढंग की होगी। खगोल-शास्त्री मेन्सन की धारणा थी कि, चंद्रमा की सारी वायु और पानी उसी पृष्ठभाग में स्थित हैं; अतः वहाँ जीवन-तत्व कायम रह सकता है।

लेकिन ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने पर ऐसा नहीं प्रतीत होता कि, चंद्रमा का जो धरातल दिखाई नहीं देता, वह उसके दृश्य-भाग से ज्यादा भिन्न होगा। दूरदर्शक से यह देखा जा सकता है कि, चंद्रमा के टाइको-सेंटर से किरणें निकलती हैं और मीलों तक उनका प्रकाश फैला रहता है। ऐसी ही किरणें पृष्ठभाग से भी निकलती हुई दिखाई देती हैं। किरणों के दर्जन-भर उद्गमस्थान अब तक ज्ञात किये जा चुके हैं।

सन् १९५६ में छपी एक वैज्ञानिक पुस्तक में लिखा गया था—"अधिक सम्भव यही है कि, चंद्रमा का पृष्ठभाग भी वैसा ही है, जैसा कि उसका मुख है।" १९६० तक हमारा ज्ञान यहीं तक सीमित रहा।

२६ अक्तूबर १९५९ को रूसी वैज्ञानिक एक राकेट को चाँद की परली ओर भेजने में सफल हो गये। राकेट के कैमरों ने चंद्रमा के चित्र भी लिये, जो सारी दुनिया में प्रकाशित किये गये।

बहुत बड़ी विजय थी यह। और इसे सम्भव बनाया यंत्र-तंत्र के विकास ने। यह आवश्यक था कि, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से मुक्त करनेवाली रफ्तार (७ मील प्रति सेकेंड या [illegible] मील प्रति घंटे की रफ्तार) प्राप्त की जाये। तभी राकेट चंद्रमा के निकट पहुँच सकता था। फिर यह भी निश्चित नहीं था कि, चंद्रमा के निकट पहुँचकर राकेट उसके पास से गुजरते हुए कहीं और निकल जायेगा, या चंद्रमा पर ही गिर पड़ेगा, या उसका चक्कर काटकर पृथ्वी पर वापस आ जायेगा।

जो राकेट चंद्रमा के पृष्ठभाग में पहुँचा, वह था रूस का भेजा हुआ 'लूनिक-३' राकेट। पहले प्रयोग में 'लूनिक-१' नामक राकेट चंद्रमा से कोई ४ मील के फासले से गुजरकर सूर्य की कक्षा में चला गया। दूसरे प्रयोग में 'लूनिक-२' रूसी राकेट चंद्रमा पर उतरा।

'लूनिक-३' छोड़ा गया ४ अक्तूबर को। उसने ३४ घंटों में १,५०,००० मील की दूरी तय की। ६ अक्तूबर की संध्या को वह चंद्रमा के सबसे निकट—४,३५० मील—था। अपनी विशेष गति एवं दिशा और चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से वह चंद्रमा की परली ओर चला गया। अगले दिन तो वह उसी ओर और ३०,००० मील दूर चला गया।

जब यह राकेट चंद्रमा, सूर्य और पृथ्वी के बीच ऐसी स्थिति में पहुँचा, जहाँ से चंद्रमा की तस्वीरें ली जा सकती थीं, तब उसके अंदर रखी मोटरें चालू हो गयीं और उसके दो कैमरे चंद्रमा पर केंद्रित हो गये। एक कैमरे में २०० मिलीमीटर का और

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूसरे में ५०० मिलीमीटर का लेंस लगा था। एक कैमरा अंधेरे का दृश्य चित्र लेने लगा और दूसरा उसके कुछ अंश के। ४० मिनिट तक दोनों कैमरे चित्र लेते रहे। राकेट में फिल्में अपने आप धुलीं और सूखीं।

जब 'लूनिक-३' अनुकूल स्थिति में आ गया, तब पृथ्वी से रेडियो-संकेत भेजे गये और वे चित्र टेलीविजन से रूस आ गये और वहाँ से सारे संसार में वितरित किये गये। चंद्र का ४१ प्रतिशत भाग अनदेखा रह गया था, उसका लगभग ७० प्रतिशत भाग इन चित्रों में देखा जा सकता था।

इन चित्रों का अभी बारीकी से अध्ययन किया जा रहा है। लेकिन कुछ चीजें इनसे स्पष्ट हो गयी हैं। कुछ पहाड़, पुराने ज्वाला-विवर आदि पहचाने गये हैं और रूसियों ने उनका नामकरण भी किया है। [illegible] झील, [illegible] सागर और [illegible] कोव्स्की, लोमोनोसोव तथा जोलियो-[illegible] ज्वाला-विवर इनमें मुख्य हैं। इन [illegible] वैज्ञानिकों की इस धारणा को पुष्ट क[illegible] है कि, कुल मिलाकर चंद्रमा का पृ[illegible] भी उसके मुख जैसा ही है। दोनों [illegible] समान रूप से उजाड़ और सूने हैं।

करोड़ों रुपये और वर्षों की मेहनत [illegible] क्या फल है? यही कि, चंद्रमा के पृ[illegible] के सम्बंध में पहले हम केवल अनुमा[illegible] कर सकते थे, अब निश्चयपूर्वक कुछ [illegible] कह सकते हैं। और यह कोई छोटी [illegible] नहीं है; क्योंकि वैज्ञानिकों के ल[illegible] का एक कण करोड़ों मन सोने से [illegible] कीमती होता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★

पक्षियों का पार्क

स्त्री-पुरुषों और बच्चों के लिए दुनिया के विभिन्न भागों में बने पार्क[illegible] बात तो सभी ने सुनी होगी। पर गेरार्ड-फान-डेन ब्रिक ने पक्षियों के लिए सर्वांग-सुंदर पार्क की स्थापना की है। इसका आरम्भ ब्रिक के बगीचे के कुछ [illegible] से हुआ था। पर आज वहाँ ४०० भिन्न-भिन्न जातियों के ४,००० पक्षी हैं। [illegible] चारों ओर उनका सुपरिचित प्राकृतिक वातावरण देने की पूरी चेष्टा की गयी [illegible] पार्क में पाँच एकड़ में तो सिर्फ गुलाब लगाये गये हैं। एक बहुत बड़ा [illegible] बनाया गया है, जिसमें से प्रति घंटा ३०० टन पानी गिरता न है। कई जगह [illegible] रोशनी पहुँचाने की व्यवस्था है। जगह-जगह ताल-तलैया बने हैं, जिनमें पेलिकन [illegible] पेंगुविन पक्षियों के साथ मछलियाँ, कछुए आदि भी हैं। हंस और बगुलों के [illegible] अलग ताल बने हैं। बीच-बीच में पहाड़ और नदियाँ भी बने हैं। पार्क के [illegible] ही पक्षियों का एक अस्पताल भी है, जहाँ उनके स्वास्थ्य की जाँच-पड़ताल [illegible] बीमारियों की चिकित्सा होती है। इसमें प्रकाश की ऐसी व्यवस्था है कि जब [illegible] रात और जब चाहें दिन किया जा सकता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान का दिवाला

मनुष्य इस सृष्टि का केंद्र नहीं है, यह सिद्ध करने के बाद अब विज्ञान विद्युत्-चलित मस्तिष्क द्वारा यह सिद्ध करने लगा है कि, चिंतन और कलात्मक सृजन पर मानव का एकाधिकार नहीं है।

देशबंधु शर्मा

बिजली के आधुनिक दिमाग मनुष्य की अपेक्षा लाखों गुना अधिक तेजी से गणित के पेचीदा-से-पेचीदा सवाल हल कर लेते हैं। और अब तो ऐसे आश्चर्य-जनक दिमाग बनाये जा रहे हैं, जो किताबें पढ़ सकते हैं, अनुवाद कर सकते हैं, शतरंज खेल सकते हैं, गानों की सैकड़ों धुनें तैयार कर सकते हैं और सेनापतियों की तरह युद्धों का संचालन कर सकते हैं। और ऐसे भी दिमाग बनाये जा रहे हैं, जो मनुष्य की तरह सोच-विचार भी सकते हैं।

आजकल पृथ्वी, चाँद, और सूर्य की परिक्रमा करने के लिए अनेक स्पुतनिक (उपग्रह) और राकेट छोड़े जा रहे हैं। यह भी आप जानते हैं कि, प्रायः जब कोई उपग्रह छोड़ा जाता है, तो वैज्ञानिक पहले से यह भविष्य-वाणी कर देते हैं कि, उपग्रह अमुक समय पर न्यूयार्क के ऊपर से गुजरेगा, अमुक समय पर दिल्ली के ऊपर से गुजरेगा आदि।

इस प्रकार की भविष्यवाणियाँ करने में और उपग्रह के भावी मार्ग का पता लगाने में प्रति सेकेंड ४०,००० गणनाएँ करनी पड़ती हैं। निश्चय ही इतनी गति से गणनाएँ करना मनुष्य के बस की बात नहीं है। और इस कार्य के लिए तथा ऐसे ही दूसरे जटिल और पेचीदा सवालों को तेजी से हल करने के लिए जिस साधन का उपयोग किया जाता है, उसे बिजली का दिमाग यानी 'इलेक्ट्रानिक ब्रेन,' 'कम्प्यूटर' या 'डेटा-प्रोसेसिंग मशीन' कहते हैं।

आस्ट्रेलिया में राकेटों और उपग्रहों की उड़ान-विषयक गणना करने के लिए लगाया गया बिजली का दिमाग 'आई० बी० एम० ७०६०' प्रति सेकेंड सवा दो लाख राशियों को जोड़ और घटा सकता है, प्रति सेकेंड ४०,००० संख्याओं का गुणन कर सकता है और ७१,००० संख्याओं को विभाजित कर सकता है। यह दिमाग हिसाब लगाने के ३३,००० गुर याद रखता है एवं कब कौन-सा गुर प्रयुक्त करना चाहिये, इसके सम्बंध में प्रति सेकेंड ४,५८,००० निर्णय कर सकता है। अमरीका और रूस के पास तो इससे भी अधिक तेजी से काम करनेवाले दिमाग हैं।

बिजली का दिमाग और मनुष्य का दिमाग, इन दोनों में काफी समानता होती है। मनुष्य के दिमाग में लाखों-करोड़ों छोटे-छोटे 'न्यूरान' (नाड़ी-घटक) होते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनमें से होकर विद्युत् (प्रेरणाएँ) प्रवाहित होती हैं।

इसी प्रकार बिजली के दिमाग में भी बिजली के तारों के लाखों छोटे-छोटे 'सर्किट' (विद्युत्-चक्र) होते हैं। इनमें से बहने-वाली बिजली की धाराएँ ही के प्रेरणाएँ हैं, जो बिजली के दिमाग को संचालित करती हैं।

बिजली का दिमाग हमारे बोलने की सामान्य भाषा को नहीं समझ सकता। यदि हम उसे कहें कि, अमुक संख्या को अमुक से गुणा कर दो, तो यह आदेश उसके लिए बेकार है। उसे जो भी आदेश देने हों, वे विद्युत्-संकेतों के रूप में होने चाहिये। वैज्ञानिकों ने १ व ० के संकेत निर्धारित किये हैं और ऐसी पद्धति खोज निकाली है, जिससे कोई भी संख्या इन दो अंकों के प्रयोग से ही लिखी जा सकती है। उदाहरण के लिए, इस पद्धति में ९ = १००१, १८ = १००११, २३४=१११०-१०१० हैं।

बिजली के दिमाग में इन संकेतों का रूपांतर इस प्रकार होगा :

९=१००१, अर्थात् पहले सर्किट में बिजली बह रही है, दूसरे और तीसरे में नहीं बह रही, और चौथे में बह रही है। इसी प्रकार

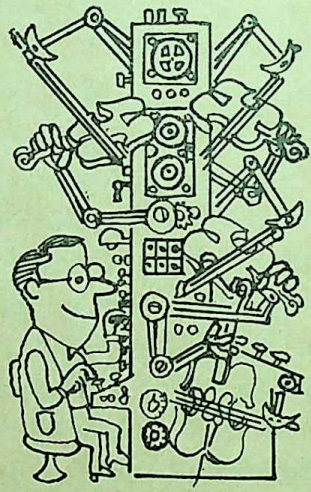

यंत्र स्वयं संगीत रचेंगे और वाद्य-वृंद का संचालन भी करेंगे।

[illegible] संकेतों को भी विद्युत्-रूप में आसानी से तैयार किये जा सकते हैं। पद्धति बड़ी सरल है और कोई भी व्यक्ति चंद ही घंटों में उसे अच्छी तरह [illegible] सकता है। दैनिक प्रयोग के लिए ऐसे [illegible] उपलब्ध हैं, जो प्रत्येक संख्या के दैनिक संकेत बतलाते हैं।

पहले प्रश्न को उपरि-लिखित [illegible] के रूप में प्लास्टिक 'टेप' (फीते) में [illegible] करके भर दिया जाता है। इस प्रकार फीता अपनी पूरी लम्बाई में सूराखों के रूप में संख्याओं और आदेशों से [illegible] होता है। फिर फीते की फिरकियाँ [illegible] बिजली के दिमाग में उनके निश्चित स्थान पर लगा दिया जाता है।

कई दिमागों में संख्याओं और आदेशों को फीते में नहीं, [illegible] विशेष रूप से निर्मित [illegible] कार्डों' में भरा जाता है।

अब फीते या पंच-कार्डों में भरे हुए संकेतों को बिजली के दिमाग में [illegible] 'स्मृति ड्रम' (मेमोरी ड्रम) पर उतार लिया जाता है। 'स्मृति ड्रम' को 'चुम्बकीय ड्रम' (मैगनेटिक ड्रम) भी कहते हैं।

'चुम्बकीय ड्रम' विद्युत् के दिमाग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है।

(१) सबसे पहले [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ड्रम' गणनाओं के आदेश फीते से या पंच-कार्डों से उत्पन्न करके अपने ऊपर अस्थायी रूप से अंकित कर लेता है। यह 'ड्रम' फीते या कार्डों के सामने से घूमता रहता है और जहाँ-जहाँ फीते या कार्ड पर सूराख होते हैं, ठीक उन सूराखों के सामने ड्रम के बिंदु 'चुम्बकीय' बनते जाते हैं। इस प्रकार ड्रम पर अस्थायी चुम्बकीय बिंदु के रूप में आदेशों-का पैटर्न तैयार हो जाता है।

अब दिमागों में उपस्थित बिजली के लाखों सर्किट इस 'चुम्बकीय ड्रम' पर अंकित आदेशों के अनुसार गणनाएँ करते हैं। जिस समय गणनाएँ होती हैं, उस समय भी यह 'स्मृति ड्रम' प्रत्येक गणना के परिणाम को अपने ऊपर अस्थायी रूप से अंकित करता जाता है; ताकि बाद की गणनाओं में ये परिणाम काम आते रहें। अंत में जब गणनाएँ पूरी हो जाती हैं, तो उत्तर को भी यह अपने ऊपर ही अंकित कर लेता है और इस तरह विशेष उत्तर को विद्युत्-संकेत के रूप में हम प्राप्त करते हैं।

एक बार 'चुम्बकीय ड्रम' पर प्रश्न अंकित कर देने के बाद बटन दबाते ही दिमाग बड़ी तेजी से काम करना शुरू कर देता है और पलक झपकाने जितनी देर में ही बड़ी-बड़ी गणनाएँ पूरी हो जाती हैं। गणना-सम्बंधी सभी क्रियाएँ एक-आध सेकेंड या इससे भी कम समय में पूरी हो जाती हैं।

विजली के दिमाग द्वारा गणनाएँ करने की तेजी तो आश्चर्यजनक है ही, परंतु वैज्ञानिकों को इससे भी संतोष नहीं है। अब वे ऐसे विजली के दिमाग बना रहे हैं, जो इन आधुनिक दिमागों से भी सैकड़ों गुना अधिक वेग से गणनाएँ पूरी करेंगे। अर्थात् वे प्रति सेकेंड २० लाख से लेकर एक करोड़ तक गणनाएँ कर सकेंगे।

प्रति सेकेंड २० लाख या उससे अधिक गणनाएँ करनेवाले दिमागों की रचना इतनी जटिल है कि, उनकी डिजाइन तैयार करना मनुष्य के दिमाग की क्षमता से बाहर है। उनकी डिजाइन तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों को बिजली के वर्तमान दिमागों की सहायता लेनी पड़ रही है।

बिजली के दिमागों के कई अनोखे प्रयोग किये जा रहे हैं। जैसे शतरंज खेलनेवाले

पत्नी चुनने का यंत्र

लंदन के एक छब्बीस वर्षीय इंजीनियर ने एक विद्युत्-यंत्र 'क्युपिड कंप्यूटर' तैयार किया है और उसका दावा है कि, यह पत्नी चुनने में सहायता देता है। उससे सहायता लेने का ढंग यह है – यंत्र के डायल पर लड़की के रूप-रंग से लेकर खाना पकाने आदि सबके विषय में प्रश्न हैं। अपनी जानकारी के अनुसार 'अच्छा', 'सामान्य' आदि के बटन दबाइये। मशीन सब उत्तरों की गणना करके बिजली के संकेतों में उत्तर देगा–'आगे बढ़ो', 'रुक जाओ' या 'सावधान'। मूलतः यह यंत्र निर्यात-व्यापार की समस्याएँ सुलझाने के लिए बनाया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिमाग । 'इंटरनेशनल बिजनेस मशीन्स कम्पनी' ने ऐसे बिजली के दिमाग बनाये हैं, जो शतरंज और 'चैकर्स' जैसे दिमागी खेल बहुत अच्छी तरह खेल सकते हैं और बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों को आसानी से हरा देते हैं ।

बिजली के दिमागों को शतरंज या चैकर्स खिलाना कोई शौकिया प्रयोग नहीं है, बल्कि उसके पीछे एक गहरा रहस्य है । और वह रहस्य यह है कि, बिजली के दिमागों को भावी युद्धों के संचालन के लिए तैयार करना है । राकेटों, मिसाइलों और चालक-रहित विमानों द्वार बम गिरवाकर, दूर-नियंत्रण द्वारा किये जानेवाले भावी युद्धों में बहुत कम समय में एवं अचूक निर्णय करने होंगे, जो केवल बिजली के दिमाग ही कर सकेंगे । शतरंज और चैकर्स खेलाना तो बिजली के दिमागों को इस दिशा में विकसित करने का पहल कदम मात्र है ।

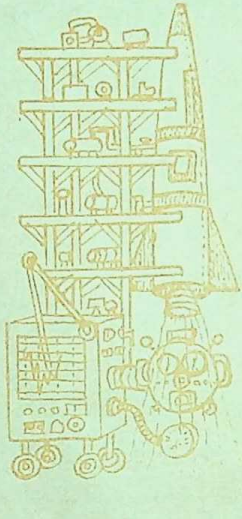

अब ऐसे बिजली के दिमाग भी बनाये जा रहे हैं, जो एक भाषा की मोटी-मोटी पुस्तकों को, कुछ ही मिनिटों में दूसरी भाषा में अनूदित कर देंगे । इस उद्देश्य से 'रेमिंगटन रैंड कम्पनी' रूसी भाषा के ढाई लाख शब्दों का इतना व्यापक व्याकरण तैयार कर रही है, जितना कि कभी रूस में भी किया गया । इस व्याकरण के द्वारा 'वाद-मशीनों' को रूसी भाषा को अंग्रेजी अनुवाद करने के लिए निर्देश दिये जाते

कुछ ही मिनिटों में किसी कवि गीत के लिए सैकड़ों नयी धुनें बना देना अच्छे-से-अच्छे संगीत-निर्देशक के लिए सम्भव नहीं है । परंतु बिजली के दिमाग के लिए यह महान् असम्भव नहीं है । संगीत धुनें बनानेवाले दिमाग लगभग पूर्णावस्था तक पहुँच चुके हैं और शीघ्र ही आ मशीनों के प्रयोग से किया हुआ संगीत को मिलेगा ।

जिन बिजली के दिमाग का वर्णन ऊपर किया गया वे यांत्रिक कार्य ही कर सकते हैं, । अर्थात् उनमें जो फार्मूले पहले से तैयार करके दिये जाते हैं, उन्हीं फार्मूलों का प्रयोग करके वे गणित व अन्य विविध कार्य कर सकते हैं । परंतु ये दिमाग स्वतः फार्मूले तैयार नहीं कर सकते । उनमें रचनात्मक विचार की शक्ति नहीं है । परंतु 'मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट आव टेक्नालाजी' में ऐसा दिमाग तैयार कर लिया गया जो कुछ अत्यंत सरल रचनात्मक सोच-विचार कर सकता है ।

होते-होते मनुष्य की आवश्यकता ही नहीं रहेगी; यांत्रिक मस्तिष्क स्वयं अणुयुद्ध का संचालन करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी न भूलूँ

चाचाजी के सख्त बीमार होने का तार पाकर, मैं मुँह-अँधेरे ही पहली बस पकड़ने के लिए चल पड़ा। गाँव से आठ मील का फासला तय करके मैं किसी प्रकार पौने दस बजे बसस्टैंड पर आ गया; मगर कचहरीवालों की भीड़ देखकर सन्न रह गया। परेशानी बताकर जगह पाने की कल्पना बेकार थी। इसलिए चुपचाप खड़ा हो गया।

थोड़ी देर में वहाँ चार आदमियों के कंधे पर लदकर एक औरत आयी। उन लोगों ने अन्य मुसाफिरों से प्रार्थना की—"भाइयो, इस बेचारी की स्थिति बड़ी गम्भीर है। यदि समय से शहर न पहुँची, तो इसका परिवार उजड़ जायेगा, पाँच बच्चे अनाथ हो जायेंगे।" लोगों ने सुना और एक-एक कर सभी ने मुँह फेर लिया।

आखिर दस बजे बस आयी, ऊपर-नीचे से बिल्कुल ठसाठस! उस पर एक भी आदमी नहीं चढ़ सका। तभी कुछ लोगों ने उस अंतिम साँस लेती औरत के विषय में कंडक्टर से बात की। उसने यात्रियों से प्रार्थन की कि, जिसे बहुत जरूरी काम न हो, वह उतरकर पीछे की मोटर से आ जाये; इस बेचारी की जान बच जायेगी। मगर कोई भी यात्री नहीं उतरा। मैं मोटर के चल पड़ने पर जैसे-तैसे उस पर लटक गया।

शहर पहुँचने पर मालूम हुआ कि, हमारी गाड़ी ढाई घंटे लेट आनेवाली है। स्टेशन पर ही बस-स्टैंड था; अतः टिकिट लेकर मैं वहीं नाश्ता करने लगा। लगभग डेढ़ घंटा बाद दूसरी बस भी आ गयी और मैंने औरत को उतारे जाते देखा। परंतु भाग्य की विडम्बना! उस बेचारी ने उतरते-उतरते ही इस दुनिया और यहाँ की निष्ठुरता से सदा के लिए अपनी आँखें फेर लीं।

—ए० बी० सिंह, कोदहूँ

० ० ०

घटना सन् ५२ की है। मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। हमारे प्रधानाध्यापक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। सो परीक्षा के पहले उन्होंने हमसे चींटियों को कसार डालने को कहा। हम सब छात्रों ने यह काम शुरू कर दिया; लेकिन एक महीने के बाद मेरे अलावा सभी ने इसे बंद कर दिया। परीक्षा का समय आया। हमारा परीक्षा-केंद्र दो मील दूर बहादुरगढ़ में था। हम सब एक दिन पहले प्रधानाध्यापकजी के साथ वहाँ पहुँच गये। मैंने नियमपूर्वक शाम को चींटियों को कसार जिमाया और रात को बचे हुए कसार की पोटली सिरहाने रखकर सो रहा। आधी रात को मेरे शरीर में काँटे-से चुभने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने झटपट उठकर देखा, तो सारे बिस्तर पर लाल चीटियाँ फैली हुई थीं। जैसे-तैसे उन्हें झाड़ा। सुबह होते-होते मेरी आँखें और दाहिना हाथ बुरी तरह सूज गये। मैं बड़ा परेशान हुआ। साथियों के चिढ़ाने पर मैं क्रोधित होकर अपने प्रधानाध्यापकजी को उल्टी-सीधी सुनाने लगा। वे शांत चित्त से सुनते रहे। खैर.....मैंने ज्यों-त्यों परीक्षा दी। अगले ही दिन परिणाम निकल गया। प्रधानाध्यापक महोदय खुद मेरे पास आये। उनकी आँखों में आँसू तैर रहे थे। उन्होंने मुझे गोद में उठाकर कहा—"सिसा, तुम सारे केंद्र में सर्वप्रथम आये हो बेटा!"

—कुँवर सिसौदिया, झाझड़

० ० ०

वह लड़का मेरी दुकान पर आकर बार-बार शो-केस व काँच पर जोर से हाथ मारा करता था। मैं जब कभी उसे पकड़ने को लपकता, वह नौ-दो ग्यारह हो जाता। उसे पकड़कर कुछ डराया-धमकाया भी; लेकिन यह शायद उसकी आदत-सी हो गयी थी। अंत में मैंने प्रेम का आश्रय लिया। वह जब कभी दुकान के पास आता, मैं उसे पकड़ने या डाँटने-डपटने की कोशिश नहीं करता। एक-दो बार उसने पहले-जैसी हरकत की; लेकिन बाद में वह भी शायद थक गया। एक दिन वह धीरे-से आकर बोला—"मुझे खाली डिब्बा दो।" मैंने भी उसे प्रेमपूर्वक कहा—"अच्छी बात है, कल आकर ले जाना।" तब से हम दोनों अच्छे मित्र हैं।

— लक्ष्मण घनश्याम तिलवाणी, बम्बई

सहश्रम

ए० सी० सी० का 'सामाजिक शिविर' लगा हुआ था। मेरी देख में हमारे विद्यालय के भी तीस विद्यार्थि उसमें भाग लिया। उन्हें करनपुर के कारी स्कूल की दीवार-निर्माण में श्रम करना था। मेरे दल की जब भी आती, तो एक दुबला-पतला लड़का आगे रहता। उसकी इस तत्परता और को मैं प्रतिदिन बड़े ध्यान से देखता। दिन उससे पूछ भी बैठा—"भाई श्रम कौन-सी शक्ति है, जो औरों से छोटे होते भी तुम्हें इतना सब करने को प्रेरित है?" उसने सहज भाव से उत्तर "मास्टरजी यह काम न आपका है, न ए० सी० सी० के अधिकारियों का। सबका काम है। फिर इसमें मेरे ही भा तो पढ़नेवाले हैं। वे गंगानगर के हों करनपुर के, हैं तो अपने ही। इसमें अप लगन से काम कर रहा हूँ, तो कोई किसी पर एहसान कर रहा हूँ।"

— कृष्णदेव स्नातक, श्रीगंगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे एक सम्बंधी मजिस्ट्रेट महोदय एक बार अपने बँगले के सामनेवाली सड़क पर टहल रहे थे। मई के अंतिम सप्ताह की रात थी। सड़क के दोनों ओर आम के वृक्ष थे, जिनसे रह-रहकर पके आम नीचे टपक पड़ते थे। आमों की ललचानेवाली महक से उनके मन में लोभ आ गया। वे चार आम उठा लाये और उन्हें बच्चों को बाँट दिया।

दूसरे दिन अदालत में पुलिस ने एक १४ वर्षीय अर्धनग्न बालक को पेश किया। मजिस्ट्रेट महोदय ने चालान देखते ही पूछा—"इसे किस जुर्म में पकड़कर लाये हो?" पुलिसवाले ने जवाब दिया—"हुजूर, इसने कल रात सड़क की अमराई के ठेकेदार के चार आम चुराये थे।" मजिस्ट्रेट साहब क्षण-भर को स्तब्ध रह गये। उनके सामने पिछली रात की सारी घटना घूम गयी। फिर वे सिर नीचा किये हुए लज्जित स्वर में बोले—"मैं इस मामले को दफा ९५ (भारतीय दंड-विधान कुछ छोटी-मोटी बातों को अपराध नहीं मानता) के अंतर्गत खारिज करता हूँ। इस लड़के को फौरन छोड़ दिया जाये।"

— तारादेवी तिवारी, जबलपुर

० ० ०

मैं उस समय सेकेंड इयर में पढ़ता था। हमारे वाइस प्रिंसिपल डा० मालीरामजी बड़े उदारचेता और सीधे-सादे व्यक्ति थे। वर्ष के अंतिम दिनों में मुझे फीस जमा करवानी थी और मुझ पर दस रुपये फाइन के थे। प्रिंसिपल साहब बड़े कठोर थे। इसलिए जब वे छुट्टी पर चले गये, तब फाइन माफ करवाने के लिए मैं डा० साहब के पास पहुँचा। प्रार्थनापत्र में मैंने सात रुपये लिखे थे। उन्होंने उनमें से सिर्फ दो रुपये जुर्माना भरने को कहा। कालेज से लौटकर इस बात का जिक्र मैंने अपने दोस्तों से किया। वे कहने लगे—"अरे, तूने सात ही क्यों लिखे?" और उन्होंने मजाक-मजाक में मेरे प्रार्थनापत्र में सात की जगह दस रुपये कर दिये। कुछ अंश ब्लेड से साफ कर दिया। अब मेरे मन में पाप जागा और मैं प्रार्थना पत्र लेकर फौरन क्लर्क के पास पहुँचा। वह तुरंत ताड़ गया। उसने कहा—"मुझे कुछ शक है। तुम जाकर किसी पर्ची पर डा० साहब से यह लिखाकर लाओ कि, उन्होंने कितने रुपयों में से ये माफ किये हैं।" अब तो मेरे मन की बड़ी अजीब दशा हुई। लेकिन और कोई चारा भी न था। मेरे दिल की धड़कन बढ़ गयी। मैंने अपनी परेशानी एक मित्र के सामने रखी कि, अब मैं डा० साहब को मुँह दिखाने लायक नहीं रहा। तब वह खुद वाइस प्रिंसिपल के पास गया। वे हमारी चोरी को न पकड़ सके और उन्होंने लिख दिया कि, दस में से आठ रुपये माफ किये गये हैं।

लेकिन मुझे बड़ी ग्लानि हुई। उस दिन के बाद मैंने फिर कभी ऐसा काम न करने की कसम खा ली। बाद में जब यह बात मैंने खुद ही डा० साहब से कही, तो वे बड़े प्रसन्न हुए और समझाने लगे—"बेटा, गलती मान लेना ही गलती का सच्चा प्रायश्चित्त होता है।"

—'कुंदन', सीकर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो वैज्ञानिक करोड़ों का त्राण

बी० सी० जी० के गुण-दोष के विषय में विशेषज्ञों में भले मतभेद हो; लेकिन भारत-जैसे मा[illegible] देश के लिए, जहाँ लगभग आधा करोड़ क्षय-रोगियों की चिकित्सा के लिए अस्पतालों में केवल [illegible] शय्याएँ हैं, बी० सी० जी० बहुत बड़ा सहारा है। इसी महौषध के निर्माण की पुण्यकथा यहां दी गई[illegible]

प्रकाश खन्ना

बी० सी० जी० – क्षय-दैत्य के उच्चाटन का बीजमंत्र! लेकिन कितने लोग यह जानते होंगे कि, इन तीन अक्षरों में उन दो वैज्ञानिकों के नाम शाश्वत रूप से अंकित हैं, जिन्होंने क्षय के उन्मूलन का यह महास्त्र मानव के हाथ में दिया।

बी०सी०जी०यानी बैसिलस काल्मे गुएराँ। काल्मे और गुएराँ वे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने बी० सी० जी० का आविष्कार किया।

डाक्टर काल्मे विश्वविख्यात वैज्ञानिक लुई पाश्चर के शिष्य थे। लेकिन यह निरा दैवयोग ही था कि, डा० गुएराँ अनुसंधान के क्षेत्र में आये। वे पोइतू (फ्रांस) के एक पशु-चिकित्सक के पुत्र थे और अल्फोर्त वेटरिनेरी स्कूल में इस विचार से भरती हुए थे कि, डिग्री पाकर अपने पिता की प्रैक्टिस सम्भाल लें।

लेकिन प्राध्यापक नोकार्द ने उनके मन में अनुसंधान के प्रति ऐसी तीव्र रुचि जगा दी कि, वे उनके साथ मिलकर प्रयोग व परीक्षण करने लगे। नोकार्द ऐसे पशु तैयार कर रहे थे, जिनसे रोगों तथा विषाणुओं के निरोधक 'सीरम' निकाले जा सकें। प्रा[illegible]पक ने शिष्य को खूब ठोक-बजाकर [illegible] और लिली के पाश्चर इंस्टिट्यूट में [illegible] अल्बेर काल्मे के सहायक के रूप में नि[illegible] करा दिया।

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के संधि[illegible] में क्षय रोग औद्योगिक बस्तियों का [illegible] अभिशाप था। लिली के श्रमिक-वर्ग को [illegible] रोग घुन की तरह भीतर-ही-भीतर खो[illegible] कर रहा था। रोगी और चिकित्सक [illegible] अपने को सर्वथा असहाय अनुभव कर [illegible]

इसके एकमात्र अपवाद थे डा० का[illegible] उन्होंने निश्चय कर लिया था कि, [illegible] की रोकथाम का ही नहीं, बल्कि [illegible] उन्मूलन का अभियान छेड़ना हो[illegible] वे जानते थे कि, क्षय संक्रामक रोग है[illegible] वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी नहीं चलता। अत[illegible] के संक्रमण को रोकना इस अभियान [illegible] पहला कदम होना चाहिये।

इसी विचार से उन्होंने नवम्बर [illegible] में एक सम्मेलन बुलाया, जिसमें चिकि[illegible] शास्त्री, स्वास्थ्य-विभाग के अधि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उद्योगपति और प्रमुख नागरिक सम्मिलित हुए। इसमें डा० काल्मे ने क्षय-निरोध की एक योजना प्रस्तुत की। उपचार-गृहों की स्थापना, स्वास्थ्य-निरीक्षकों की नियुक्ति और पीने के लिए स्वच्छ पानी की व्यवस्था इसके मुख्य अंग थे। पिछले वर्ष ओपोर्तो में ऐसी ही योजना द्वारा उन्होंने प्लेग की महामारी का सफलता से मुकाबला किया था। इसलिए क्षय-निरोधक आंदोलन को सबने उत्साह से अपनाया।

डा० काल्मे के मन में एक और विचार चक्कर काट रहा था। वे क्षय का टीका तैयार करना चाहते थे; वैज्ञानिक भाषा में कहें, तो वे क्षय के कीटाणुओं की सर्वथा निरापद किस्म तैयार करना चाहते थे। सैंतीस वर्ष की अवस्था में वे इस कार्य में जुट गये। इस कार्य में उनके सहयोगी थे २८-वर्षीय डा० कैमिले गुएराँ, जिनका विवाह उसी वर्ष सम्पन्न हुआ था।

लिली की नगर-पालिका ने उन्हें शक्कर मंडी में एक जीर्ण-शीर्ण मकान प्रयोगशाला के रूप में दिया। उसकी निचली मंजिल में एक अस्तबल था। इसमें चार घोड़े थे, जिनसे डा०काल्मे डिप्थीरिया-निरोधक 'वैक्सीन' तैयार करते थे। कुछ गायें थीं और खरगोश भी थे।

डा० गुएराँ प्रयोगशाला में

लेकिन इस भवन के सबसे भयंकर निवासी थे ४० विषैले साँप। प्रति-मास इनका विष निकाला जाता था और थोड़ी-थोड़ी मात्रा में घोड़ों के शरीर में पहुँचाया जाता था, ताकि सर्पविष का 'सीरम' तैयार किया जा सके। विष को दुहने का काम डा० काल्मे स्वयं करते थे। इन मौकों पर डा० गुएराँ उनके पास खड़े रहते थे—विष-निरोधक 'सीरम' से भरी इंजेक्शन की नली हाथ में लेकर। तीन बार उन्हें इंजेक्शन का उपयोग करना भी पड़ा—एक बार काल्मे पर और दो बार अपने आप पर।

अब भी डा० गुएराँ सुनाया करते हैं कि, किस प्रकार साँप अनशन कर बैठते थे और तब उनके गले में नली अटकाकर मुर्गी के अंडे उनके पेट में पहुँचाये जाते थे।

क्षय-निरोध के प्रयोग इसी टूटे-फूटे मकान में तब तक चलते रहे, जब तक १९०४ में हालेंड के राजदूत लीदू डुपे की सहायता से लिली के पाश्चर इंस्टिटयूट के बगीचे में नयी प्रयोग-शाला नहीं बन गयी।

काल्मे और गुएराँ के साथ एक और वैज्ञानिक थे—लियों मासोल। सब रसायनशास्त्रीय प्रयोग इन्हीं के जिम्मे थे। तीनों वैज्ञानिकों ने १९०६ में यह सिद्ध कर दिखाया कि, जिनके शरीर में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षय के कीटाणु जीवित किंतु निष्क्रिय अवस्था में विद्यमान हों, उन्हें क्षय-रोग नहीं होता। आगे की कार्य-दिशा स्पष्ट थी—क्षय के कीटाणु (ट्यूबर्कल बैसिलस) की ऐसी कोई प्रभावहीन नस्ल तैयार करना, जिसके गुण पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलें।

सैकड़ों प्रयोगों के बाद १९०८ में उन्होंने वह मूल 'कल्चर' बना लिया, जिससे आगे चलकर बी० सी० जी० तैयार हुआ। इस 'कल्चर' के लिए पशुओं के शरीर से क्षय-कीटाणुओं को बैल के पित्तरस और ग्लीसरीन में उबले हुए आलुओं पर पाला गया। पचीस दिन बाद देखा गया कि, कीटाणुओं की शक्ति घट गयी है और उनके गुणों में भी अंतर आने लगा है।

गुएराँ इन प्रयोगों को तीन-तीन सप्ताह बाद दोहराते गये और परिणामों को पशुओं पर परखते गये। प्रयोग मंद गति से चल रहे थे; परंतु उनमें अगर कहीं कुछ मिनिटों की भी रुकावट आ जाये, तो वर्षों की मेहनत मिट्टी में मिल जाने का खतरा था।

और ऐसा खतरा प्रथम महायुद्ध के दौरान में पैदा हो गया। लिली जर्मन सेना के कब्जे में था। शेष फ्रांस से उसका सम्बंध टूट गया था। काल्मे क्षय पर पुस्तक लिखने में निमग्न थे और गुएराँ प्रयोगों को आगे बढ़ा रहे थे। एक दिन उन्होंने देखा कि, प्रयोगशाला में बैल का पित्तरस बहुत थोड़ा रह गया है। यदि पित्तरस खत्म हो जाता, तो सारा काम फिर नये सिरे से शुरू करना पड़ता। बड़ी मुश्किल से गुएराँ जर्मन पशु-चिकित्सा-शास्त्रियों को सूचना भेज [illegible] उन्होंने [illegible] पित्तरस भिजवाने [illegible] की व्यवस्था कर दी।

लगभग तभी जर्मनों ने डा० काल्मे [illegible] गिरफ्तार कर लिया। उनकी प्रयोगशा[illegible] में कुछ कबूतर थे; और जर्मनों का कहना [illegible] कि, ये कबूतर शत्रुओं के पास संदेश भेजने [illegible] लिए रखे गये हैं। गुएराँ ने बहुत कहा [illegible] ये पक्षी क्षय के टीके की जाँच के लिए [illegible] गये हैं। अंत में जर्मन सेना के डाक्टरों ने कहा कि, कबूतरों की चीर-फाड़ कर [illegible] इस बात को सिद्ध कर दिखायें। ये डाक्टर क्षय के विशेष जानकर नहीं थे; फिर गुएराँ ने कबूतरों का आपरेशन करके अ[illegible] जो लक्षण दिखाय, उनसे उन्हें संतोष [illegible] गया। काल्मे मुक्त कर दिये गये।

सैनिक घेरे के दौरान में ही गुप्त [illegible] पता चला कि, डा० काल्मे को पेरिस [illegible] पाश्चर इंस्टिटचूट का अध्यक्ष नियुक्त कि[illegible] गया है। कुछ दिन बाद श्रीमती गुएरा[illegible] स्वर्गवास का समाचार भी मिला। [illegible] गुएराँ का हृदय टूट गया; परंतु उन्[illegible] अपने प्रयोग-कार्य में किसी प्रकार [illegible] शिथिलता न आने दी। युद्ध बंद होने [illegible] १९१९ में जब काल्मे नया पद सम्भा[illegible] पेरिस आये, तो गुएराँ को भी साथ ले आ[illegible]

अंत में १९२१ में बी० सी० जी० [illegible] हुआ। बैल के पित्तरस पर पूरे २३० [illegible] करने पर ऐसे क्षय-कीटाणु (ट्यूब[illegible] बैसिलस) जीवित अवस्था में मिल [illegible] जो शरीर में प्रविष्ट होकर वहाँ क्षय-वि[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैक्टीरिया पैदा कर सकते थे और अधिक मात्रा में उपयोग होने पर [illegible] थे। पशुओं पर किये गये परीक्षणों से सिद्ध हो चुका था कि, वे 'बैसिलस' सर्वथा विश्वसनीय हैं। अब केवल मनुष्यों पर प्रयोग करना शेष रह गया था।

प्रश्न यह था कि, इसका पहला टीका लगवाने की जिम्मेदारी कौन ले। पाश्चर इंस्टिट्यूट पर तो सबको विश्वास था; लेकिन टीका बिल्कुल नया था।

अंत में पेरिस के एक बड़े अस्पताल के शिशु रोग-विशेषज्ञ डा० बेंजामिन वेलहिल इसका उत्तरदायित्व उठाने को तैयार हो गये। अस्पताल में एक बच्चा था, जिसकी माँ उसे जन्म देकर क्षय से मर गयी थी। इस अनाथ बच्चे को अपनी बूढ़ी नानी के पास रहना था और वह भी क्षय से पीड़ित थी। डा० वेलहेल ने बच्चे को जन्म के तीसरे, पाँचवें और सातवें दिन कोई २५ करोड़ 'बैसिलस' खिला दिये।

तीन महीने तक डाक्टर साँस रोककर इस बच्चे को देखते रहे। वे तभी चैन की साँस ले सके, जब यह निर्विवाद रूप से प्रमाणित हो गया कि, बच्चे में क्षय का कोई लक्षण नहीं है। फिर तो सैकड़ों बच्चों को बी० सी० जी० का टीका लगाया गया।

इतने से ही बी० सी० जी० का मार्ग निष्कंटक नहीं हो गया। अभी कुछ वर्ष पूर्व भारत में जैसा बी०सी०जी० विरोधी अभियान चला था, उससे भयंकर आंदोलन १९३० में हुआ। उस वर्ष लुबेक, पश्चिम जर्मनी में, मुल २४२ बच्चों को बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था, जिनमें से ६८ की मृत्यु हो गयी और १०० को क्षय हो गया। तहलका मच गया। अखबारों में बी० सी० जी० के विरुद्ध लेख लिखे गये और चूँकि टीके की दवा पेरिस की पाश्चर इंस्टिट्यूट से आयी थी, इसलिए पत्र-पत्रिकाओं में उस पर भी आक्षेप होने लगे।

गुएराँ स्तब्ध रह गये। वृद्ध डा० काल्मे को तो ऐसा आघात पहुँचा कि, तीन वर्ष बाद उसी से उनकी मृत्यु हो गयी। निंदा-

स्वप्नदर्शी

समाज को ऐसे व्यावहारिक मनुष्य अवश्य चाहिये, जो अपने प्रयत्नों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हैं और परार्थ में बाधा न डालते हुए स्वार्थ भी सिद्ध कर सकते हैं। लेकिन समाज को ऐसे स्वप्नदर्शी भी चाहिये, जो सर्वहित की योजनाओं के विकास में इस तरह डूब जाते हैं कि, निजी लाभ-हानि की बात सोच भी नहीं सकते। निश्चय ही इन स्वप्नदर्शियों को धन-दौलत नहीं मिलनी चाहिये; क्योंकि उन्हें उसकी दरकार नहीं होती। लेकिन समाज को इसका प्रबंध अवश्य कर देना चाहिये कि, ये लोग सांसारिक चिंताओं से मुक्त होकर अपना सारा समय उपयोगी शोधकार्य में लगा सकें।

—मदाम क्यूरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्मक-पत्र रोज हजारों की संख्या में आते थे; लेकिन उसमें से एक भी डा० काल्मे के हाथ तक नहीं पहुँचता था। डा० गुएराँ चुपचाप ऐसे सारे पत्र निकाल लेते थे।

अंत में ल्युबेक में एक न्यायाधिकरण ने सारे मामले की जाँच की और निर्णय दिया कि, पेरिस से आयी दवा ठीक थी; ल्युबेक नगरपालिका की प्रयोगशाला में वह खराब हो गयी थी। गुएराँ को सबसे अधिक खुशी इस बात की हुई कि, उनके हाथों पाश्चर इंस्टिटयूट और डा० काल्मे की बदनामी नहीं हुई। बी० सी० जी० का फिर निर्भीकता से उपयोग होने लगा।

बी० सी० जी० से करोड़ों मनुष्य लाभान्वित हुए हैं; परंतु डा० काल्मे और डा० गुएराँ ने उससे एक पाई का भी लाभ नहीं उठाया। न तो उन्होंने बी० सी० जी० की निर्माण-विधि को पेटेंट कराया और न कोई रायल्टी ली। वे लुई पाश्चर के उच्च आदर्शों के अनुयायी जो थे!

आज भी पेरिस के पाश्चर इंस्टिटयूट डा० कैमिले गुएराँ अनुसंधान-कार्य का निर्देशन करते हैं। आज से सत्रह वर्ष इंस्टिटयूट से जब वे निवृत्त हुए, उन्हें वेतन पर आजीवन मानद प्राध्यापक नियुक्त किया गया।

जब कोई गुएराँ से मिलने जाता है उसे संस्था के सभा-कक्ष में अवश्य ले जाते हैं और वहाँ रखे चित्रों और कांस्य-मूर्तियों का परिचय देते हैं—"ये लुई पाश्चर हैं, प्रोफेसर नोकार्द! ये रहे डा० काल्मे" और उनका सिर श्रद्धा से झुक जाता है।

इंस्टिटयूट की प्रयोगशाला के ही छोर पर उनका निवासस्थान है। निवास-स्थान क्या एक कमरा है, किसी विद्यार्थी के कमरे जैसा ही—अस्तव्यस्त...पुस्तकों, शोध-पत्रिकाओं और काँच के टेस्ट-ट्यूबों से भरा हुआ।

✱

सन् १९५८ में इंडियन कौंसिल आव मेडिकल रीसर्च द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग ५० लाख व्यक्ति क्षय से पीड़ित हैं। इनकी चिकित्सा के लिए (१९६० में) देश-भर में कुल ७१ सेनेटोरियम, ७० अस्पताल, २२३ उपचार-गृह हैं, जिनमें कुल २५ हजार शय्याएँ हैं। क्षयोपचार के बाद रोगियों की शुश्रूषा के लिए १५ आरोग्य-धाम भी हैं।

देश में बी० सी० जी० कार्यक्रम १९५८ में आरम्भ हुआ। कुल १७ करोड़ व्यक्तियों को, विशेषतः २० वर्ष से कम की अवस्था के सब नागरिकों को टीका लगाने की योजना है। १७० दल टीका लगाने का काम कर रहे हैं। इनमें ११९ डाक्टर और ८१९ तकनीशियन हैं। अक्तूबर १९६० तक ये दल १५.५२ करोड़ व्यक्तियों को बी० सी० जी० का टीका लगा चुके हैं। इस कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय क्षय-निरोध आंदोलन, विश्व शिशु-संरक्षण संस्था और संयुक्त-राष्ट्र स्वास्थ्य संघटन आर्थिक सहायता दे रहे हैं। —'इंडिया १९६१'

✱

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गति

कौन करता इसका अनुमान,
किसे होता इसका अनुमान !

कि जब दुख पहरा देता है
न रहता सुख को अपना ध्यान !
होंठ पर धरे व्यथा वंशी,
हर्ष छेड़ा करता है तान ।

कराती कटुता है जब स्नान,
ताप के शीतल होते प्राण
शीश जब गौरव नत करता
तभी लघुता पाती सम्मान ।

कठिनता लक्ष्य खोजती है,
राह कोमलता की अनजान
फूल से मिलकर ही पाषाण
अर्चना के पाते वरदान ।

तभी होती है गति गतिमान
अगम से जब करती पहचान
सदा विष के प्याले में ही,
किया जाता अमृत का पान ।

कौन करता इसका अनुमान !

— सुमित्राकुमारी सिन्हा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विनोद से आत्म उपचार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा कोई मनोरोग नहीं, जिसका उपचार विनोदवृत्ति से असम्भव हो।

रेक्स होवाट

प्रायः लोग यह कहत सुने जाते हैं—"अमुक आदमी को देखो, उसका व्यवहार कैसा आक्रामक है। उससे किसी विषय पर चर्चा करो, वह तुरंत तुम्हारी बात काटने को तैयार हो जायेगा। उसे अपनी श्रेष्ठता का बड़ा गर्व है।" वास्तव में उनकी इन बातों में परस्पर विरोध है। उन्होंने जो उदाहरण दिये हैं, वे श्रेष्ठता के गर्व के नहीं, बल्कि हीन-भावना के लक्षण हैं।

यह हीन-भावना क्या है? अपनी सुरक्षितता और योग्यता में विश्वास न होना ही हीन-भावना है। यह अविश्वास क्यों पैदा होता है? बारबार आशा-भंग होने से। आशा-भंग के कई कारण हो सकते हैं—अभिभावकों का अविवेकपूर्ण नियंत्रण या सतत शारीरिक पीड़ा आदि। ये मनुष्य की प्रकृति पर गहरा घाव छोड़ जाते हैं। परिणाम यह होता है कि, मनुष्य अपने को छिपाने या मिटा देने का प्रयत्न करने लगता है।

इसी प्रयास में बहुधा वह आक्रामक या आत्म-श्लाघापूर्ण व्यवहार करने लगता है। परंतु इसका दोहरा उल्टा असर होता है। वह अपना खोया हुआ आत्मवि[illegible] वापस प्राप्त नहीं कर पाता और [illegible] लोग उससे मिलने से कतराने लगते [illegible] इससे मन में तनाव पैदा हो जाता है। [illegible] अशक्तता की भावना के कारण वह [illegible] रक्षा के लिए शक्की, ईर्ष्यालु और [illegible] दुःख-विनोदी बन जाता है।

लेकिन ये सब आत्मरक्षा के गलत [illegible] हैं। कई महीने पहले की बात है। एक [illegible] वान मेरे पास आया। पिछले महायु[illegible] उसे गहरी चोट लगी थी, जिससे उसे [illegible] तब सख्त दर्द उठा करता था। वह [illegible] लिखा था, हँसमुख था। सो युद्ध के बाद [illegible] बहुत अच्छी नौकरी मिल गयी। [illegible] उस दर्द के कारण कुछ समय बाद [illegible] नौकरी छोड़ देनी पड़ी। इसने उसके स्व[illegible] पर दुष्प्रभाव डाला। धीमे-धीमे वह चि[illegible] चिड़ा हो गया। नशा करने की ल[illegible] उसे पड़ गयी। इलाज से यह लत छो[illegible] गयी। परंतु उसका हँसमुखपन नहीं [illegible] मुझसे सलाह लेकर वह चला गया। [illegible] भी उसे भूल गया।

दो-तीन महीने पूर्व एक मित्र के [illegible] एक चायघर गया। मैनेजर बड़ा [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सार प्रतीत हुआ। हमसे बातें करने लगा। बड़ी विनोदपूर्ण बातें। हम दोनों मित्र हँसते रहे। परंतु मुझे उसका चेहरा कुछ परिचित-सा लग रहा था। अंत में उसी ने बातचीत शुरू की और मुझसे कहा—"आप मुझे भूल गये ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी स्मृति जाग उठी। यह वही युवक था, जो मेरे पास आया था हीनभावना का इलाज कराने। उसका नया रूप देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसी के निमंत्रण पर मैं एक बार फिर चायघर गया। तब उसने बीच के महीनों की अपनी यह दिलचस्प कहानी सुनायी :

"आपके यहाँ से जाने के कुछ समय बाद मुझे एक नौकरी मिल गयी, जिसमें मुझे अपनी ही उम्र के एक आदमी के साथ काम करना पड़ता था।

"यह आदमी घोर उदासी के दौरे से पीड़ित होता रहता था। ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, मैंने अनुभव किया कि, उसकी उदासी मुझ पर भी असर करने लगी है। उससे बचने के लिए और अपने साथी को प्रसन्न रखने के लिए प्रसन्नवृत्ति धारण करना शुरू किया। उसे चुटकले सुनाने का कोई मौका मैं खाली जाने नहीं देता था। जिन कामों में उसकी दिलचस्पी नहीं थी, उनकी मैं हँसी उड़ाता था। इससे कभी-कभी उसके मुँह पर हल्की मुस्कान फैल जाती थी।

"पहले तो मैं प्रयत्नपूर्वक यह प्रसन्नता का आडम्बर रचा करता था। लेकिन धीरे-धीरे मैंने आश्चर्य के साथ यह अनुभव किया कि, 'विनोदवृत्ति मेरे स्वभाव का अंग बनती जा रही है।"

मैं नहीं कहता कि, विनोद-वृत्ति हीन-भावना का रामबाण इलाज है। लेकिन वह आशाभंग से पैदा होनेवाली कुंठा का अच्छा निवारणोपाय अवश्य है।

हेराल्ड डियर्डन का अनुभव है कि, कार्यव्यस्त रहना भी हीन-भावना का अच्छा उपचार है। अकर्मण्यता से चिंता बढ़ती है, जो प्रायः आत्मविश्वास का हनन करती है।

ये संकल्प हीन-भावना को जीतने में काफी सहायक होंगे :

१. मैं शक्तिशाली बनूँगा; अपनी मानसिक शांति भंग नहीं होने दूँगा। सदा उत्तम काम और उत्तम विचार करूँगा, ऊँची आशा मन में रखूँगा।

२. अपनी पिछली भूलों को भूल जाऊँगा और भविष्य पर ध्यान दूँगा।

३. आत्म-सुधार पर इतना अधिक समय दूँगा कि, दूसरों की आलोचना करने का मुझे मौका ही न मिले।

४. दूसरों की सफलता पर उतना ही प्रसन्न होऊँगा, जितना अपनी सफलता पर।

५. सबका मुस्कराहट के साथ स्वागत करूँगा, उदास चेहरों पर मुस्कान लाने की चेष्टा करूँगा।

६. इस विश्वास के साथ जिऊँगा कि, मुझमें जो-अच्छाइयाँ हैं, उन्हें मैं जब तक अक्षुण्ण बनाये रखूँगा, मेरा कुछ भी नहीं बिगड़नेवाला है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसीयतनामे के रूप में व्यक्ति बिना किसी भय अथवा प्रलोभन के अपने अंतस को बिल्कुल नग्न प्रकट कर देने की चेष्टा करता है; और इस प्रयास में कभी-कभी उसकी सनक भी प्रकट हो जाती है। प्रस्तुत लेख में कुछ ऐसे ही अजीबोगरीब वसीयतनामों की कहानी है।

श्रीकांत साठे

कुछ समय पूर्व फिनलैंड का एक वृद्ध अपने वसीयतनामे में यह लिखकर मरा कि, उसकी सारी सम्पत्ति का अधिकारी उसकी मृत्यु के बाद शैतान हो। उसके मरने के बाद उसका वसीयतनामा देखनेवाला हर व्यक्ति हैरान रहा! भला शैतान कहाँ मिले कि, उसे सम्पत्ति सौंपी जाये। अंत में सरकार बीच में पड़ी और उसने उसकी सारी सम्पत्ति पर कब्जा कर लिया!

फ्रांस के एक वकील ने अपनी सारी सम्पत्ति एक पागलखाने को वसीयत की थी। उसने लिखा था—"मुझे वकील बनानेवाले व्यक्ति वस्तुतः पागल ही थे। उनके प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन का मेरे पास इससे अच्छा और कोई उपाय नहीं है।"

न्यूयार्क की वाल-स्ट्रीट का एक निवासी अभी हाल ही में ब्यौरेवार यह वसीयत छोड़कर मरा :

"मेरी पत्नी को मेरी वसीयत से एक डालर मिले। अपनी वसीयत में मैं उसके लिए यह जानकारी भी छोड़ जाना चाहता हूँ कि, मैं उतना बेवकूफ नहीं था, जितना वह समझती थी।

"अपने पुत्र को मैं कमाना और मौजें उड़ाना वसीयत करता हूँ। विगत वर्षों से वह यही कल्पना करता रहा है। मैं मजे कर रहा हूँ। लेकिन वह गलती पर था।

"अपनी पुत्री के लिए मैं १ लाख छोड़ रहा हूँ। उसके पति ने जीवन में कोई नेक काम किया, तो वह यही उसने मेरी पुत्री से विवाह किया।

"अपने नौकर को मैं वे कपड़े वसीयत कर रहा हूँ, जिन्हें पिछले १० वर्षों से वह मुझसे निरंतर छिपाता फिरता है। मैं उसे अपना 'फर-कोट' भी देता हूँ। पिछले जाड़े में मेरे पास-बीच जाड़े वह पहना करता था।

"अपने मोटर-ड्राइवर को अपनी मोटर उसने उन्हें सत्यानाश कर डालने की कोशिश की। जो कुछ कमी रह गयी है, उसे पूरा करने का मैं उसे अवसर देना चाहता हूँ।

"अपने भागीदार को मैं यह वसीयत करना चाहता हूँ कि, यदि वह व्यवसाय करना चाहता हो, तो वह अन्य चतुर व्यक्ति को अपना भागीदार बना ले।"

इतना ही नहीं, कभी-कभी किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधारने की दृष्टि से ही लोग बड़ी अजीब वसीयतें करते हैं। नाटिंघम के जार्ज बेकन अपनी मातृभूमि अमरीका छोड़कर इंग्लैंड में जा बसना चाहते थे। इसलिए उनके धनी पिता ने उनके लिए वसीयत में केवल १ डालर छोड़ा।

लंदन के एक धनी व्यक्ति अपने पुत्रों के लिए बड़ी सम्पत्ति छोड़ गये। पर वसीयत में वे यह शर्त रख गये कि, उनके लड़के न तो पार्लमेंट के कभी सदस्य होंगे, न कोई सामाजिक पद सम्भालेंगे और न वादे के बाजार में सौदा करेंगे। यहूदी से भिन्न किसी लड़की से विवाह करने अथवा धर्म बदलने के प्रति भी उस वसीयतनामे में रोक लगी थी। मरते समय वृद्ध पिता यह भी लिख गया था कि, यदि इनमें से कोई काम उसके लड़के करें, तो वे वसीयतनामे में मिली सम्पत्ति से वंचित माने जायेंगे।

एक व्यक्ति मरने से पूर्व यह लिखकर मरा कि, उसके मरने के बाद पाँच मृत्यु-दिवसों तक उसके एक-एक डाबर को बारी-बारी से खोला जाये। इसके अतिरिक्त उसके वसीयतनामे में और कुछ भी नहीं लिखा था। प्रति वर्ष एक-एक दराज खोला जाता था। चार वर्ष तक दराज में एक कागज निकलता, जिस पर सिर्फ इतना ही लिखा होता—"विश्वास और आशा बनाये रखिये! आपकी आशाएँ पूरी होंगी।" [illegible] की मृत्युतिथि पर जब पाँचवाँ दराज खोला गया, तब विधिवत् लिखा वसीयतनामा मिला।

अभी कुछ समय पूर्व एक व्यक्ति ने अपनी बीवी के लिए वसीयतनामे में केवल एक पैसा छोड़ा और उसने यह भी लिखा कि, यह रकम मेरी पत्नी को बिना टिकिट लगे लिफाफे में भेज दी जाये।

मेरा यश ही मेरी संतान को मेरी विरासत है। — कैटो

फ्रांस की रहनेवाली मदाम ए० क्लारा गुजमैन एक अजीब वसीयतनामा छोड़कर मरीं। उस वसीयतनामे में लिखा था कि, मंगल के अतिरिक्त किसी अन्य आकाशीय ग्रह के निवासी से कोई संदेश प्राप्त करनेवाला प्रथम व्यक्ति मेरी अधिकांश सम्पत्ति का भागी होगा। उस बड़ी रकम का अभी तक कोई हकदार ही नहीं मिला है।

फ्रांस का ही एक डाक्टर यह लिखकर मरा कि, उसकी सम्पत्ति से प्रति वर्ष उस स्त्री या पुरुष को पुरस्कार दिया जाये, जिसकी नाक सबसे अधिक सुंदर हो। उस प्रतियोगिता में रूसी को छोड़कर किसी भी देश का आदमी भाग ले सकता है; लेकिन शर्त यह होगी कि, उसके बाल लाल और भौंहें काली हों।

इटली का एक क्वाँरा व्यक्ति यह लिखकर मरा कि, मेरे सुंदर-से मकान में केवल वे बूढ़ी औरतें रखी जायें, जो विवाह की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आशा छोड़ चुकी हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत-से लोग मरने के बाद अपनी अंत्येष्टि के सम्बंध में भी वसीयत कर जाते हैं। कैलिफोर्निया का एक धनी व्यक्ति अपने वसीयतनामे में यह लिखकर मरा—"मेरी कब्र पर उगनेवाली घास जब पीली पड़ जाये, तो मैं जो ट्रस्ट कायम कर रहा हूँ, वह रद माना जाये।"

अंत्येष्टि-सम्बंधी बहुत-से वसीयतनामों का उल्लेख पुराने ग्रंथों में भी मिलता है। बौद्ध-ग्रंथों में ६ तीर्थंकरों का उल्लेख मिलता है। उनमें एक आजीवक मत का आचार्य गोशाल भी था। जब वह श्रावस्ती में मरने लगा, तो उसने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा—"मरने के बाद मेरे बायें पाँव में रस्सी बाँधकर मुझे श्रावस्ती नगर की सड़कों और चौराहों पर घसीटना; और कहना कि, गोशाल तीर्थंकर न होता हुआ भी अपने को तीर्थंकर कहता था और मेरे मुँह पर थूकना।"

शाहजहाँ की बेगम मुमताज मरते समय यह कह गयी थी कि, उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका अद्वितीय मजार बनवाया जाये। मुमताज की इस इच्छा का ही प्रतिफल आगरे का ताजमहल है। अकबर अपनी कब्र खुले आकाश के नीचे रखना चाहता था—उसकी इच्छा उसके पुत्र ने पूरी की और जहाँनारा अपनी मजार पर दूब लगाने को कह गयी थी।

एक व्यक्ति को भय था कि, कहीं प्राण रहते ही उसकी अंत्येष्टि न कर दी जाये; इसलिए वह अपनी वसीयत में लिख गया "मरने के बाद चार दिनों तक मेरी अंत्येष्टि न हो। चार दिन के बाद दो शल्य-चिकित्सक बुलाये जायें। उन चिकित्सकों को ६-६ पौंड फीस दी जाये। और वे चिकित्सक मेरा ऐसा आपरेशन करें कि, यदि मुझमें प्राण हों, तो भी निकल जायें और मैं निष्प्राण हो जाऊँ।"

वियना के एक आदमी को अंधेरे से डर लगता था। अतः वह अपने वसीयतनामे में लिख गया कि, मरने के बाद मुझे जिस 'काफिन' में रखा जाये, उस 'काफिन' में रोशनी की व्यवस्था हो।

ऐसे भी लोग हैं, जो अपनी मनपसंद पशुओं को वसीयत कर जाते हैं। एक व्यक्ति ३ हजार पौंड एक तोते और एक अन्य पशु को वसीयत कर गया। इस व्यक्ति के सम्बंधी बहुत लड़े; पर अंत में उन्हें हारना ही पड़ा। इसी प्रकार ७ वर्षीया श्रीमती कैथरीन ओल्वर्ग अपनी सारी सम्पत्ति अपने कुत्ते और दो बिल्लियों को वसीयत कर गयी थीं।

कई बार वसीयतनामों का माध्यम बड़ा अजीबो-गरीब हुआ करता है। फलक चर पर, गोलियों पर, घोंघे पर भी वसीयतनामे लिखे गये हैं। मानें या न मानें ब्रिटेन का एक सालिसिटर अपना वसीयतनामा बर्फ पर लिखकर मरा। स्कीइंग करते-करते वह बर्फ की ढाल पर फिसल गया। रास्ते में किसी टेक पर वह थोड़ी देर टिका, तो जेब से चाकू निकालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसने वहीं अपना वसीयतनामा लिख डाला।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सनकी ने एक दरवाजे पर लोहे खड़िया से ही अपना वसीयतनामा लिख रखा था और उस पर उसने दो साक्षियों के हस्ताक्षर भी करा रखे थे। अदालत में उसका फोटो पेश हुआ, तो अदालत ने उसे स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। साक्षी के लिए सम्बद्ध व्यक्ति को मजदूरन किवाड़ निकालकर अदालत में ले जाना पड़ा।

एक सनकी ने आटे की बोरी पर अपना वसीयतनामा लिख रखा था और एक दूसरे व्यक्ति ने अपनी घड़ी पर ही अपना वसीयतनामा खुदवा रखा था।

एक व्यक्ति नदी के तट पर मुँह के बल गिरा और मरा पाया गया। जब उसकी तलाशी ली गयी, तो उसकी जेब में सिगरेट का एक पैकट निकला और उसी पर उसने वसीयतनामा लिख रखा था।

संसार का शायद सबसे छोटा वसीयतनामा एक डाक-टिकिट की पीठ पर लिखा गया था। उस पर इतने छोटे अक्षर थे कि, आतशी शीशे से पढ़े गये। काउंट टाल्सटाय ने अपना वसीयतनामा एक पेड़ के तने पर लिख रखा था। सबसे लम्बा ज्ञात वसीयतनामा एक महिला का है। उस वसीनामे में ९५ हजार शब्द हैं। उसे तैयार करने में उस महिला को २० वर्ष लगे थे। मित्र लोग यही समझते कि, वह महिला कोई पुस्तक लिख रही है।

जब मृत्यु और जन्म के आँकड़े जमा किये जाते हैं, तो कई बार अजीब मनोरंजक घटनाएँ घटती हैं।

एक स्पेनवासी ने जब पादरी को अपने विवाह की अर्जी दी, तो उसने यह कहकर अर्जी को अस्वीकार कर दिया—"तुम्हारी मृत्यु तो कभी की हो चुकी है और जिस कब्र में तुम दफनाये गये थे, वह भी दिखायी जा सकती है।" वास्तव में कब्र पर उसी का नाम अंकित था। काफी जाँच-पड़ताल के बाद यह पता चला कि, निराश्रित बालक होने के कारण उसके लिए जो नाम चुना गया था, वही नाम कब्र में दफन होनेवाले किसी दूसरे व्यक्ति का था। इससे उसकी शादी खटाई में पड़ गयी; क्योंकि जब तक उसे न्यायालय जीवित घोषित न करे, वह कानूनन 'मृत' है। और आप ही सोचिये 'मृत व्यक्ति' के साथ कैसे एक कुमारी का जीवन-सूत्र बाँधा जा सकता है।

फ्रांस के एक सज्जन रोजर पोयरेर भी 'हैं या नहीं' के चक्कर में पड़े हुए हैं। उन्होंने जब लोकल बोर्ड से अपने लिए बर्थ-सर्टिफिकेट माँगा, तो उत्तर मिला कि, इस नाम का कोई व्यक्ति पैदा ही नहीं हुआ है। उसके मृत माँ-बाप ने बोर्ड को कभी यह सूचना नहीं दी कि, उनके यहाँ उपर्युक्त नाम का बालक जन्मा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...बाघ के गोली लगी; परंतु आक्रमण किसी और ने ही किया। शरीर को जगह-जगह डस लिया गया; फिर भी घायल बाघ को ढूँढ़ना जरूरी था...

घायल बाघ की तलाश में

खानबहादुर हकीमुद्दीन

पच्चीस वर्ष हिमालय की तराई में बिताने के बाद मेरा तबादला बुंदेलखंड डिवीजन को हो गया। चकराता से विदा होते समय चित्र की तरह तराई के हरे-भरे जंगल मेरी उदासी को और गहरी कर रहे थे। कहाँ विशाल वन-प्रांत और कहाँ बुंदेलखंड के सूखे काँटेदार जंगल? और कहाँ शिकार के लिए मस्त वनराज, बाघ-बाघिनें और भालू? सभी एक सपने की तरह धुँधलाने लगे थे।

मेरा नया सदर मुकाम झाँसी था। यहाँ पहुँचते ही ऐसा लगने लगा कि, अब मेरी बंदूक की कोई उपयोगिता शेष नहीं रह गयी है। पहले पहल इन कँटीली झाड़ियों को देखकर मन में निराशा हुई। परंतु कुछ भी हो, यहाँ के जंगलों में भी शेर-चीते तो थे ही।

उत्तरप्रदेश के शेर-चीतों के रहन-सहन का ढंग बुंदेलखंड के शेर चीतों से भिन्न है। जंगल भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटे हुए झाँसी व बाँदा तक फैले हुए हैं। इन्हीं के में शेर-चीते गहरी खोहों, पत्थरों चट्टानों के नीचे रहते हैं।

एक बार दौरा करते हुए मैं खालि रियासत की सीमा पर स्थित देवगढ़ बँगले पहुँचा। बँगले के नीचे होकर ही देव नदी बह रही थी। थोड़ी-सी दूरी पर एक छोटा-सा झाड़ियों का जंगल था और जंगल से सटी एक पहाड़ी थी, जिस ऊँचाई लगभग पाँच सौ फुट थी। पहा शिखर पर पठारनुमा मैदान में एक पुरा खँडहर किला था, जिसकी टूटी-फू बुर्जों, ऊँचे फाटक व खँडहरनुमा महलों देखकर सहज ही यह आभास होता था कि, अपने समय में यह किला अवश्य अत्यंत महत्वपूर्ण रहा होगा। इस लि सरकार ने आस-पास के क्षेत्र से जिस पुरातत्व के महत्व की मूर्त्तियों को एक जमा करके इसे अच्छा खासा अजायब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही बना दिया है। वैसे प्रवेश-द्वार के निकटवर्ती भाग को छोड़कर सारा किला वीरान व जनशून्य था। जहाँ कभी राजा-रानी विहार करते थे, दरबार लगा करते थे, महफिलें सजा करती थीं, वहाँ उत्तराधिकारियों के रूप में शेर, चीते व भालू बस रहे थे और खुशामदी चापलूसों की तरह उल्लू, अबाबीलें व चमगादड़ दिन को भी रात का रूप दिये वहाँ मुक्त विचरण कर रहे थे। पहाड़ी थी कोई आठ मील लम्बी तथा दो-तीन मील चौड़ी और चारों ओर जंगल-ही-जंगल था। नदी ठीक इसके नीचे से बहती है। पहाड़ी के ऊँचे शिखरों व किले के बचे-खुचे खंडहरों की दीवारों पर जंगली मधुमक्खियों के छत्ते थे।

सैगोन व बाँस की झाड़ियोंवाले इस वन-क्षेत्र को देखते ही मेरा शिकारी मन हरा-भरा हो उठा। ऐसे ही जंगल में तो शेर-चीते पाये जाते हैं। यह छोटा-सा भू-भाग काफी अच्छा आखेट-क्षेत्र सिद्ध हुआ।

देवगढ़ बँगले पर पहुँचते ही मेरा पहला सवाल वहाँ पाये जानेवाले बाघ, चीतों व तेंदुओं के बारे में था। मैंने रामलाल बँगले के चौकीदार भील को बुला लाया। भील जन्मजात शिकारी होते ही हैं। चौकीदार ने कहा—"पीने के लिए नदी का पानी है, शिकार व छिपने के लिए पहाड़ी और जंगल है ही। जगह भी सुनसान और वीरान है। ऐसे में यहाँ बाघ-चीते भला क्यों नहीं रहेंगे।" उसने विस्तार से बताया कि, पिछले दिनों एक सिपाही ने किले के निकट एक बाघ पर गोली चलाकर घायल कर दिया था, तब से वह खूँख्वार हो उठा है, और कई लोगों को मार चुका है। तब से उधर कोई नहीं जाता।

हिंसक पशुओं के विचरण का समय प्रातःकाल के पूर्व और सूर्यास्त के बाद हुआ करता है। अतएव पाँच बजे के पहले नाले पर जाना निरर्थक था। मैंने अर्दली भेजकर कटरे (भैंस के बच्चे) का इंतजाम करवा लिया था। सायंकाल ५-५॥ बजे मैं, अर्दली तथा कटरा व कटरे का मालिक नाले की ओर पहुँचे। कटरा काफी कमजोर था। उसका मालिक उसे खींच-खींचकर आगे धकेल पाता था। कटरे के मालिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को हमने एक रुपया अतिरिक्त देकर इसके लिए राजी कर लिया था कि, वह खुद अपने हाथों कटरे को बाँध देगा ।

जंगल के बीच की पगडंडी से हम चल रहे थे । थोड़ी दूर चलने पर अर्दली की सीटी सुनाई दी । उसके संकेत पर देखा, तो एक चीतल खड़ा था । गोली चलाकर मैं नाहक ही बाघ को अपने आगमन की सूचना नहीं देना चाहता था । फायर की आवाज से उसके भड़क जाने का भी भय था ।

हम करीब-करीब नाले के पास पहुँच गये थे । सतर्कतापूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे । अचानक ही पगडंडी की बाँयी ओर से ठीक कान के पास ही बाघ की दहाड़ सुनाई दी ।

एक क्षण के लिए हम सभी घबरा गये । मुझे समझते देर नहीं लगी कि, वनराज चीतल की ताक में थे । बँगले का चौकीदार लपककर एक पेड़ पर चढ़ गया । कटरे-वाला भी भागकर कहीं दुबक गया । अब हम दो ही—मैं और मेरा अर्दली रामलाल-पगडंडी के बीच निस्सहाय-से खड़े थे । पेड़ पर से चौकीदार ने संकेत द्वारा बताया कि, यही वह घायल बाघ है ।

बंदूक को सावधानी से दबाकर हम लोग दबे पाँवों दायीं ओर की ऊँची जमीन पर चढ़ गये; वहाँ से सामने का हिस्सा कुछ स्पष्ट दीख पाता था । । झाड़ियों के पीछे दुबककर हमने सामने की दिशा में अपनी सतर्क नजरें दौड़ायीं, मानो घास में गिरी सुई को ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहे हों । जहाँ हम दबके बैठे थे, वहाँ से पचास गज दूरी पर ठीक पहाड़ के नीचे ही मार्ग सावधानी से कान उठाये वनराज रहे थे । वे शायद अपनी गुफा या खोह लौटने का उपक्रम कर रहे थे ।

शिकार सामने होते हुए भी परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि, मैं फायर करूँ । क्योंकि एक तो वह पहले से ही किसी शिकारी द्वारा घायल किया हुआ और मनुष्य चिढ़ा हुआ बाघ था; दूसरे झाड़ियों की ओट में वह इस तरह नजरों से ओझल हो गया कि, उसने हमें निशाना ताकने भी अवसर नहीं दिया ।

शीघ्र ही मैं टेकरी से नीचे उतर आया और कटरे को वहीं बाँधकर चौकीदार को साथ ले, एक दूसरी पगडंडी पकड़ इस तरह आगे बढ़ा कि, मार्ग काटकर उसके सामने पहुँचा जा सके । परंतु कुछ दूर जाने पर हमारा मार्ग झाड़ियों से अवरुद्ध हो गया । मैं लौटकर वापस नाले पर आया और कहीं मौका हाथ से न निकल जाये, इस डर से नाले के किनारे की ऊबड़-खाबड़ चट्टानों पर भागने लगा । चौकीदार ने कहा कि, बाघ अपने छिपने की जगह पर पहुँच चुका होगा, अब आप उससे आगे नहीं निकल सकेंगे । परंतु मेरे सिर पर तो जिद्द का भूत सवार हो चुका था । इसके निकट, ऐसी परिस्थिति में मैं भला कैसे छोड़ सकता था । एक तो वैसे ही बाघ को खुले में लाने के लिए मचान, कटरा आदि की व्यवस्था करनी पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उस पर भी यह भरोसा नहीं रहता कि वह शिकारी की मचान के नीचे ही आकर ठहरेगा।

अर्दली और चौकीदार पीछे छूट चुके थे। तेज ढालवाले तट पर पहुँचते-पहुँचते मेरा दम फूल गया था। जूतों में कीलें जड़ी होने के कारण भी चलने में कठिनाई हो रही थी। आधे नाले तक चढ़ा होऊँगा कि, चौकीदार आ पहुँचा। वह नंगे पैरों था, इसलिए मुझ तक पहुँचने में उसे असुविधा नहीं हुई। वह मुझसे भी आगे निकलकर पहाड़ पर चढ़ने लगा। एक जगह वह ठिठककर खड़ा हो गया। जब मैं भी वहाँ पहुँचा, तो देखा कि, सामने ही दो सौ गज की दूरी पर बाघ झाड़ियों के बीच धीरे-धीरे व निश्शंक आगे बढ़ता जा रहा है।

मैंने जब चौकीदार से उसकी गुफा के बारे में संकेत से पूछा, तो उसने बताया कि, वह बिल्कुल समीप ही है। बाघ यदि अपनी गुफा में चला गया, तो अब तक का सारा परिश्रम ही निरर्थक हो जायेगा; यही सोचकर मैं लपककर झाड़ियों के बीच रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ चला। झाड़ियों की रगड़ से मेरे दोनों घुटने व पिंडलियाँ लहू-लुहान हो चली थीं। बाघ से तिरछा कतराता हुआ मैं एक आगे को उठी हुई चट्टान व एक पेड़ को लक्ष्य में रखते हुए आगे बढ़ता रहा। उस चट्टान से बिना अपने को प्रकट किये नीचे का कुछ क्षेत्र नजर आता था।

किसी तरह बेदम होते हुए भी मैं चट्टान तक जा पहुँचा। साँस बुरी तरह से फूल रही थी। नीचे झाँककर देखा, तो वनराज मस्तानी चाल से ठीक नीचे की ओर जा रहा था। उसे तनिक भी भान नहीं था कि, उसका अगला कदम उसे मेरी गोली का शिकार बना देगा। पसीने में तर, खून रिसते हुए चुटियाये घुटनों को टेककर मैंने निशाना साधा। बाघ डेढ़ सौ गज से अधिक दूर नहीं था और मेरी रायफल की मार में था। दम साधकर मैंने गोली दाग दी। तेज आवाज से सारा वन-प्रांत गूँज उठा। गोली खाकर बाघ पहाड़ी पर से लुढ़कने लगा। तत्काल मैंने बिना अवसर खोये दूसरा फायर कर दिया।

शिकारी तीरंदाज

एक प्राचीन ग्रीक शिल्प पर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे पता नहीं चला कि दूसरी गोली बाघ को लगी भी या नहीं। क्योंकि इसी समय मुझ पर चारों ओर से तीरों की वर्षा की तरह मधुमक्खियों ने आक्रमण कर दिया। जिस चट्टान पर मैं खड़ा था, उसके झूलते हुए सिरे के नीचे ही उनका छत्ता था और बंदूक की आवाज से वे भड़क उठीं थीं। मक्खियों ने कई जगह डंक मार दिये थे। तेज पीड़ा से बेचैन हो उठा। पेड़ की एक टहनी तोड़कर उससे मक्खियों को उड़ाता वापस नीचे की ओर लौटा और सड़क पर पहुँचकर धम-से गिर पड़ा। मेरे दूसरे साथियों पर भी यही बीती। वे भी इन संख्यातीत मधुमक्खियों से घिर गये। हम लोग एक जगह बैठकर टहनियों से मक्खियाँ उड़ाने लगे।

जब कुछ अँधेरा हुआ, तो मक्खियाँ कम हुईं। गिरते-पड़ते बँगले पर पहुँचे। अर्दली का तो सारा मुँह व आँखें ही सूज गयी थीं और तेज ज्वर चढ़ आया था। दूसरे लोगों की भी हालत बुरी ही थी।

मधुमक्खियों के दंश की पीड़ा से भी गहरी मानसिक पीड़ा से मैं रात-भर बेचैनी में डूबा रहा—बाघ मरा या नहीं? यदि घायल ही हुआ होगा, तो तलाश करनेवालों की हड्डियाँ तक चबा डालेगा। फिर भी तलाश करवाना जरूरी था। इधर मक्खियों का भी डर बना हुआ था।

दूसरे दिन अर्दली, दो खलासी, डाकवाला, मेहतर, ड्राइवर और दो कुलियों को लेकर घटनास्थल की ओर रवाना हो चला। साहस बनाये रखने के लिये मैंने यह भी घोषणा कर दी कि, भले ही मिले या न मिले, पंद्रह रुपये का पुरस्कार दिया जायेगा।

जहाँ बैठकर मैंने फायर किया था, उस जगह से नीचे नाले की ओर पत्थर लुढ़काये परंतु बाघ की आहट नहीं मिली। लाचार हम उसी नाले में उतरे। टोली बनाकर सतर्कता से एक-एक कदम आगे बढ़ने लगे। हमें यह डर था कि, कहीं घायल बाघ आक्रमण न कर बैठे। हमारी निगाह एक झाड़ी व चट्टान पर टिक रही थी। एक जगह कुछ खटका हुआ, सभी लोग भाग छूटे।

सभी को ऐसा लगा कि, बाघ अब अवश्य

आखेट

एक सुमेरियन शिल्प की सोनवलकर द्वारा अनुकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब झपटा। तलाश के लिए साथ में आये सभी आदमियों ने और बड़े ने समाचार इन्कार कर दिया।

हारकर मैंने ही आगे बढ़ने का निर्णय लेते हुए उन्हें कहा—"मैं बाघ को ढूँढ़कर ही लौटूँगा। इस बीच यदि खतरा उपस्थित हो जाये, तो आप लोग सुरक्षा के लिए पेड़ पर चढ़ जायें।" मुझे आगे बढ़ते देख बंदूक थामे हुए एक कुली को भी साहस हुआ और वह भी मेरे साथ हो लिया। हम दोनों फूँक-फूँककर एक-एक कदम रख रहे थे। मैंने कुली को समझा दिया कि, यदि बाघ नजर आ जाये, तो मुझे बचाते हुए तत्काल फायर करना। बीस गज पहुँचने में बीस मिनट लग गये। नाले में एक ओर कुछ चिड़ियाँ चहक रही थीं। ध्यान से देखा, तो वनराज खून से रंगी एक चट्टान के सहारे पड़े हुए थे।

फिर भी सावधान रहना जरूरी था। कुछ देर दम साधे रहे। फिर खाँसे और इस पर भी जब हिलने-डुलने की आहट नहीं हुई, तो पत्थर मारे। परंतु वनराज तो स्वर्ग सिधार चुके थे। नजदीक जाकर देखा, तो मेरी दोनों गोलियाँ ठीक निशाने पर लगी थीं। मृत बाघ आठ फुट पाँच इंच की अधेड़ मादा थी।

★

सत्य-असत्य

दुनिया में तीन तरह के असत्य होते हैं—१. केवल झूठ, २. सफेद झूठ, ३. आँकड़ों का झूठ। —बेंजामिन डिजराइली

यहाँ ऐसे भी चिंतक हैं, जो केवल सत्य की गहराई तक ही सोचते हैं। —वाल्टेयर

जब हम अपने विचारों में मग्न होते है, तो प्रायः सत्य का अनुशीलन नहीं कर रहे होते। —मार्क ट्वेन

क्रियात्मक राजनीति में सत्य की उपेक्षा अनिवार्य हो जाती है। —हेनरी एडम्स

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई अंधा न रहे

दृष्टिहीनता के काले परदे को वैज्ञानिक, डाक्टर और शल्य-चिकित्सक आधुनिक उपकरणों द्वारा धीरे-धीरे पीछे धकेल रहे हैं।

डा० जी० डी० श्रीवास्तव

चिकित्साशास्त्रियों ने एक अति गम्भीर आशंका प्रकट की है कि, भविष्य में अंधों की संख्या में व्यापक वृद्धि होगी। इसका कारण वे यह बताते हैं कि, जैसे-जैसे जीवनायु में वृद्धि होगी, शरीर के सचेतन अवयव व कोष जराग्रस्त व्याधियों के शिकार होंगे और इनका असर सीधा नेत्रों पर पड़ेगा; क्योंकि वे शरीर के बाह्य अंगों में सर्वाधिक सचेतन अंग हैं।

इन वैज्ञानिकों ने यह भी स्वीकार किया है कि, नेत्र-रोगों में से साठ प्रतिशत रोगों के बारे में उनको पर्याप्त जानकारी नहीं है। फिर भी वैज्ञानिक हताश नहीं हैं। नयी-नयी दवाओं, नये शल्य-तंत्रों, नवीन चिकित्सा-पद्धति तथा नये शोध-कार्यों द्वारा वे मानव-नेत्रों पर छा जानेवाले अंधकार के काले पर्दे को धीरे-धीरे पीछे धकेल रहे हैं और कतिपय असाध्य नेत्र-रोगों पर भी आश्चर्य-जनक सफलताएँ प्राप्त हुई हैं।

आँखों के रोगों में से अधिकांश रोग अवयव-विशेष से सम्बंधित नहीं हैं। शारीरिक व मानसिक रोगजन्य विकारों—मसलन शिराओं का कठोर हो जाना, कैंसर, उद्वेग, आघात, साधारण शीत, कीटाणुओं से नेत्र-ज्योति नष्ट हो जाती है।

चिकित्साशास्त्रियों ने दृष्टिनाशक प्रमुख तस्कर पैरासाइट, कीटाणु, मस्त आहार तथा आणविक प्रदाह का पता लिया है; परंतु अभी तक यह ज्ञात नहीं पाया है कि, नेत्रों के असंख्य सचेतन कोशों को ये किस तरह प्रभावित करते

वैज्ञानिक रंगीन पर्दों पर, टेलिविज़न इलेक्ट्रोनों के माध्यम से सतर्कतापूर्वक कोशों की जाँच कर रहे हैं। आणविक प्र से नेत्रों की ज्योति के नष्ट हो जाने तथा अंधकार को जन्म देनेवाले 'ग्लोको जैसे भयंकर रोग की प्रतिक्रिया की बारी से जाँच की जा रही है। इन शोध-कार्य कई महत्वपूर्ण परिणाम सामने आये

आँख की विकृत पुतली को हट मृत व्यक्ति की जीवित पुतली लगाने प्रक्रिया वास्तव में आश्चर्यजनक परंतु मृत व्यक्ति से प्राप्त नेत्रांगों को दिन से अधिक जीवित नहीं रखा जा सक यही एक सबसे बड़ी कमी थी। परंतु इन नेत्रांगों को लम्बे समय तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने की प्रणाली शोध ली गयी है। इसके अतिरिक्त नेत्रों के शल्यकों पर बड़े पैमाने पर प्लास्टिक पटल के सफल प्रयोग किये गये हैं। इस शोध के परिणाम इतने आश्चर्यजनक हैं कि, लाखों दृष्टिहीनों को, जिनके नेत्र-पटल बिगड़ जाने से आँखें जाती रही हैं, दृष्टि फिर से मिलने की आशा बँध गयी है।

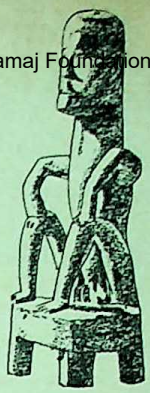

नेत्रहीन
नागा-कला का एक नमूना

ग्लोकोमा-जैसी भयंकर बीमारी पर भी चिकित्सा-शास्त्री विजय के सन्निकट पहुँच गये हैं। ग्लोकोमा का यदि आरम्भ में ही उपचार नहीं किया जाये,तो दृष्टि चली जाने में संदेह नहीं रहता है। डाक्टरों का कहना है कि, यह रोग पुतली को मस्तिष्क से जोड़नेवाली शिरा के मध्य भाग में स्राव जमा हो जाने के कारण होता है। गुर्दे से प्राप्त गंदे स्राव 'युरिया' में यह शक्ति पायी जाती है, जो आँख में इंजेक्शन द्वारा प्रवेश कराये जाने-पर तेजी से स्राव को सुखा डालता है। वैज्ञानिकों ने ऐसे उपकरण भी निकाल लिये हैं कि,पटल के बाहर व भीतर पैदा होनेवाले स्राव का अध्ययन आसानी से कर सकें।

पुतली में छिद्र हो जाने पर नेत्रों की ज्योति धीरे-धीरे नष्ट हो जाया करती है। डाक्टरों को इसे रोकने के लिए बड़ी सूक्ष्म व कठिन शल्य-क्रिया द्वारा इन छिद्रों को सीना पड़ता है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि, इस तरह की शल्य-क्रिया बहुधा सफल हुआ करती है। इस तरह के आपरेशन में घंटों लग जाया करते हैं और रोगी को भी कई दिनों तक बिस्तर में पड़े रहना पड़ता है। परंतु अब एक नयी विधि ने इस शल्यक्रिया को अत्यंत आसान बना दिया है।

सुई की नोक-जैसी पतली व तेज प्रकाश की किरण द्वारा चिकित्सक अब केवल पंद्रह मिनिट में इन छिद्रों को बंद कर लेता है। न तो आपरेशन की जटिल प्रक्रिया की और न रोगी को महीने-भर शय्याग्रस्त रखने की आवश्यकता है। चिकित्सा के पंद्रह मिनिट बाद ही रोगी रोग से छुटकारा पाकर सामान्य कामों में लग जाता है।

इसी तरह रंगांध नेत्रों पर भी प्रयोग जारी हैं। चिकित्सा-शास्त्री मछलियों के नेत्रों पर विभिन्न प्रयोग करके यह खोजकर रहे हैं कि, विभिन्न रंगों की नेत्रों पर कैसी प्रतिक्रिया होती है।

यद्यपि इस क्षेत्र में चिकित्सा-शास्त्री बड़े पैमाने पर कार्यरत हैं और कई मामलों में सफलता भी पा चुके हैं, फिर भी इसे हम श्रीगणेश ही कहेंगे। नेत्र-रोगों के उपचार सम्बंधी सिद्धांतों में व्यापक परिवर्तन हुआ है और नये-नये तथ्य सामने आये हैं। इन अश्विनीकुमारों की सही सफलता उसी दिन आँकी जायेगी, जिस दिन नेत्रों पर छानेवाला अँधेरे का पर्दा सदा के लिए हट जायेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विल्मा के पैरों में बिजली बसी है

"जाकी कृपा पंगु गिरि लंघे" वह शक्ति हमारे मन में छिपी हुई है–विल्मा गोल्डीन की जीत इसका प्रमाण है।

मोहिनी शर्मा

'संसार की सबसे तेज दौड़नेवाली युवती' और 'काला मोती' ये दो विशेषण हैं ओलिम्पिक-दौड़ाक विल्मा गोल्डीन रुडाल्फ के। टेनेसी (अमरीका) की २०-वर्षीय विल्मा को ये विशेषण १९६० में रोम में आयोजित ओलिम्पिक क्रीड़ा प्रतियोगिता के दौरान में प्राप्त हुए। पहला इसलिए कि, उसने १०० मीटर की दौड़ में ओलिम्पिक रिकार्ड की बराबरी की, २०० मीटर की दौड़ में २३.२ सेकेंड का संसार का नया रिकार्ड स्थापित किया और ४०० मीटर की रिले-रेस में अपने दल को जिताया। दूसरा इसलिए कि, उसका व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है और स्वभाव बड़ा मधुर। १९६० के ओलिम्पिक खेलों में एक और रिकार्ड भी विल्मा रुडाल्फ ने कायम किया–सैकड़ों पुरुष और महिला प्रतिस्पर्धियों में सोने के तीन पदक जीतने का सम्मान केवल उसी को प्राप्त हुआ।

यह है विल्मा रुडाल्फ की सफलता का एक पहलू; एक दूसरा पहलू भी है–साहस संकल्प, और साधना का।

लगभग पंद्रह वर्ष पहले ऐसी सफलता की कल्पना तो दूर रही, इसमें भी संदेह था कि, कभी विल्मा ठीक तरह से चल-फिर सकेगी। चार वर्ष की आयु में डबल निमोनिया और स्कारलेट फीवर के कारण विल्मा की एक टाँग बेकार हो गयी थी। श्रीमती रुडाल्फ छोटी-सी विल्मा को कम्बल में लपेटकर प्रति सप्ताह बस द्वारा चालीस मील दूर के एक अस्पताल में इलाज करवाने ले जाती थीं। यह क्रम दो वर्ष तक चलता रहा। उसके बाद विशेष प्रकार के जूते विल्मा को पहनाये गये और उन जूतों की सहायता से विल्मा ने आठ वर्ष की उम्र में चलना सीखा।

जब विल्मा ग्यारह वर्ष की थी, तो उसके एक भाई ने घर के पिछवाड़े बास्केटबाल का पोल खड़ा किया। इसके बाद विल्मा को मानो बास्केटबाल खेलने के अतिरिक्त कोई काम न रहा।

श्रीमती डाल्फ कहा करती हैं–"विल्मा के लिए उन दिनों दुनिया में कोई चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो बस बास्केटबाल। भोजन के लिए बुलाना हो या किसी और काम के लिए, उसके मिलने का एक ही ठिकाना था—बास्केटबाल का पोल।"

बास्केटबाल में उसने जो निपुणता प्राप्त की उसकी कहानी भी सुनने लायक ही है। बर्ट हाई स्कूल के जिम्नेशियम में एक दिन तेरह साल की यह सूखी-सी दुबली लड़की लड़खड़ाकर प्रशिक्षक सी० सी० ग्रे के पैरों के पास गेंद के ऊपर गिर पड़ी।

ग्रे ने अपना सिर हिलाया और कहा—'मच्छर! मच्छर ही है तू; छोटी-सी है, भागती फिरती है और बार-बार मेरे रास्ते में आती है।" ग्रे ने मच्छर ठीक ही कहा था। वह कहीं भी एक जगह चुप बैठती नहीं थी।

"मच्छर" तुरंत उठ खड़ी हुई और खेलने लगी। यही नहीं, अपनी प्रबल इच्छा-शक्ति और साधना से वह दो वर्ष में अपने राज्य की एक चुनिंदा खिलाड़ी बन गयी। १९५५ में उसने टेनेसी राज्य की क्रीडा-प्रतियोगिता में ८०३ पाइंट जीतकर उस वर्ष का रिकार्ड कायम किया। इस टूर्नामेंट में टेनेसी स्टेट कालेज की महिला दौड़ाकों के प्रशिक्षक एडवर्ड टेम्पल भी आये हुए थे। होनहार खिलाड़ियों को पहचानने की उनकी शक्ति अद्भुत थी। उन्होंने अनुभव किया कि, विल्मा बहुत अच्छी दौड़ाक बन सकती है। उन्होंने ग्रे को सलाह दी कि, बर्ट हाई स्कूल में दौड़ने-वाली लड़कियों की टीम बनायें। टीम बन गयी। बस विल्मा ने उस दिन से बास्केटबाल खेल बंद कर दिया; अब उसे बास्केटबाल से भी अधिक आनंद दौड़ने में आने लगा था।

तीन साल तक गर्मियों में ग्रे प्रतिदिन विल्मा के घर आते और अपनी मोटर में बैठाकर उसे ४५ मील दूर नेशविला के टेनेसी स्टेट कालेज ले जाते। वहाँ एडवर्ड टेम्पल उसे दौड़ने का प्रशिक्षण देते थे। परिणाम यह हुआ कि, विल्मा हाई स्कूल की हर दौड़-प्रतियोगिता में विजय प्राप्त करती रही।

विल्मा की दौड़ इतनी तेज क्यों है, यह वह स्वयं नहीं जानती। और वह अधिक-से-अधिक कितना तेज दौड़ सकती है, यह भी कोई नहीं जानता; उसके गुरु टेम्पल भी नहीं। क्योंकि, इसकी परीक्षा आज तक किसी ने नहीं की है। लेकिन निःसंदेह उसकी तेजी का बहुत-सा श्रेय टेम्पल को है। टेनेसी कालेज में टेम्पल ने बहुत-से दौड़ाकों की उम्दा टीम तैयार की है। रिले टीम तो संसार में बहुत बढ़िया है उनकी।

विल्मा रोम के क्रीडांगण में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओलिम्पिक में मिले स्वर्ण-पदकों के साथ

परंतु विल्मा की सबसे बड़ी खूबी है उसकी खेलने की स्पिरिट। अपने कालेज की ही नहीं, कभी-कभी तो बाहर की प्रतियोगिताओं में भी वह भागते-भागते बीच मैदान में रुककर दूसरे प्रतिस्पर्धियों को बढ़ावा देने लगती है।

प्रतियोगिता चाहे कितनी बड़ी हो, विल्मा को घबराहट कभी नाम को भी नहीं होती। सेमि-फाइनल और फाइनल के बीच के क्षणों में वह कभी-कभी झपकी ले लेती है। लेकिन दौड़ शुरू करने की रेखा से कदम उठाते ही मानो उसकी सारी ताक़त का रूप ले लेती है।

विल्मा आठ भाई-बहनों में पाँचवीं है। उसके ग्यारह सौतेले भाई-बहन हैं। इस प्रकार वह अपने पिता की संतानों में सोलहवीं है। चाहे कितने अच्छे दिन हों, उन्नीस बच्चों के परिवार चलाना आसान काम नहीं होता। फिर के माता-पिता अपने बच्चों को बहुत सुख-सुविधाएँ प्रदान करने में असमर्थ लेकिन उन्होंने उनमें एक तीव्र अभि अवश्य पैदा की है—अच्छी शिक्षा पाने हर काम को लगन से करने की आक

विल्मा आजकल टेनेसी कालेज में ले रही है। उसका इरादा शिक्षिका का है। पढ़ाई और दौड़ दोनों में वह रूप से प्रगति कर रही है। क्लास में अच्छे नम्बर प्राप्त करती है और घंटे दौड़ने का अभ्यास करती है। पढ़ाई का खर्च निकालने के लिए कुछ घंटे वह सेक्रेटरी का काम भी है। ओलिम्पिक खेलों में जीते हुए तीन पदक तथा अमेरिका की प्रमुख प्रति गिता में मिले हुए ६३ अन्य पुरस्कार साधना और संकल्प के साक्षी हैं।

★

एक ऐक्ट्रेस ने मेकअप-मैन से कहा—"पहले तुम बहुत अच्छा मेक-अप किया थे। अब तुम्हारे हाथों में वह जादू नहीं रहा, जो मेरे सौंदर्य को पहले की तरह न क्या हो गया तुम्हें ?"

मेकअप-मैन ने नम्रता से उत्तर दिया—"उन दिनों मैं जवान था, अब मेरे पंद्रह वर्ष बढ़ गयी है।"

— मगनी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पान

गुणचंद्र सेन

पान भारतीय संस्कृति व सत्कार के महत्वपूर्ण प्रतीकों में से एक है। प्रेम, आर्थ, भेंट-मिलाप, मंगलवेला व शुभ-नाक्षणिक प्रसंगों में एकाकी पान या बीड़ा शकुन व सत्कार के रूप में प्रस्तुत रहता है। इसकी उत्पत्ति तथा प्रयोगों के बारे में कई लोककथाएँ व प्रासंगिक किंवदंतियाँ भारतीय साहित्य में भरी पड़ी हैं।

आर्येतर मूल भारतीय संस्कृति में भी पान का अस्तित्व मिलता है। मोहंनजोदड़ो व हड़प्पा की चित्रित मुद्राओं में भी नागवल्ली व पीपल के पत्तों का चित्रण है।

अमर कोष में नागरवेल का 'ताम्बूल वल्ली, ताम्बूली, नागवल्लयपि' नाम से उल्लेख मिलता है। प्राकृत व पाली में इसे नागवल्ली, णागलप्पा, नागलता, ताम्बूली और नागवल्ली कहा गया है।

इस महत्वपूर्ण बहुचर्चित 'पान' की उत्पत्ति के विषय में भारतीय तथा दक्षिण एशियायी साहित्य में कई कथाएँ मिलती हैं। राजशेखर लिखित 'उदयन प्रबंध' के अनुसार नागराज वासुकि ने उदयन को दहेज में वीणा, तिलक, माला और ताम्बूली प्रदान की थी।

नागवल्ली की उत्पत्ति से सम्बंधित एक रोचक पौराणिक कथा है कि, सागर मंथन के पश्चात् अमृत वितरण के समय देव-दानव-विवाद उग्र होते देख ऐरावत ने अमृत-कलश को ही ठोकर से लुढ़का दिया था। फलस्वरूप जिस स्थल पर अमृत गिरा वहाँ कालांतर में नागवल्ली फूट निकली।

महाभारत के अनुसार जब विजयी पांडवों को राजसूय यज्ञ के लिए ताम्बूल की आवश्यकता पड़ी, तो सर्वत्र दूत भेजे गये। परंतु कहीं भी उसकी प्राप्ति नहीं हुई। दूतों के निराश लौटने पर अर्जुन पाताल लोक गये और वहाँ की राजरानी ने अपनी कनिष्ट अँगुली काट कर दी। यज्ञ-वेदी के निकट भूमि में उस अँगुली के आरोपण से ही नागलता फूट निकली।

पान के प्रयोगों के बारे में भी विभिन्न कथाएँ प्रचलित हैं। मैत्री, विग्रह, कूटनीति व प्रणय-व्यापार में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान था। आड़े समय में राजपूत पान का बीड़ा फेरकर शूरवीरों की परख किया करते थे और बहुधा यह पान इतना महंगा होता कि, शूरवीरों को इसकी लाली बनाये रखने के लिए अपने सिर का रक्त देना पड़ता। आज भी स्वागत समारोहों-में किसी को पान का बीड़ा न देना या किसी का पान अस्वीकार करना अपमान-सूचक माना जाता है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहारीलाल तुलस्यान

शेखावटी (राजस्थान) का एक स्थल—झुंझनू। वहाँ के श्री राणीसतीजी -मंदिर का प्रांगण। सुबह का समय। एक यात्री-परिवार ताँगे से उतरा और सामने बनियान-धोती पहने खड़े एक व्यक्ति से बोला—"लो यह सामान उठाकर जरा अंदर ले चलो।" उसने भी सरल भाव से बिस्तर व ट्रंक आदि उठाकर अंदर पहुँचा दिये।

बाद में उन यात्रियों को पता चला कि, वह व्यक्ति कोई सेवक नहीं, मंदिर के प्राण श्री बिहारीलाल तुलस्यान खुद ही थे। लेकिन वे 'कुछ' हैं, यह न तो वे स्वयं अनुभव करते हैं और न किसी को जताने की ही कोशिश करते हैं।

एक निर्धन वैश्य-परिवार में श्री तुलस्यान का जन्म हुआ। बचपन में ही उनके पिताजी चल बसे और सारे कुनबे का भार इस तेरह वर्ष के बालक के कंधों पर आ पड़ा। लेकिन श्री तुलस्यान ने हिम्मत न हारी। घर से निकलकर दिल्ली पहुँचे और वहाँ परिश्रम एवं पुरुषार्थ के सहारे उन्होंने अपने व्यवसाय को खूब चमकाया। अब तो सुख-सम्पन्नता व सफलता उनके पैर चूमने लगी। लेकिन बिहारीलालजी की आत्मा को सिर्फ इसी से संतोष नहीं मिला। उन्होंने सोचा, अपना पेट तो जानवर भी भर लेते हैं; इन्सान तो वह है, जो लिए भी कुछ करे—उनके दुःख-दर्द बटाये। बस, इसी संकल्प के साथ को अपना क्षेत्र बनाकर, वे तन-मन सेवा-कार्य में जुट गये। सबसे पहले मंदिर में व्याप्त पारस्परिक वैमन्स किया। इसके उपरांत उन्होंने व्यवस्था सुधारी।

फिर बिहारीलालजी ने भक्तों के मंदिर को लोकसेवा का माध्यम प्रस्ताव रखा। बात सबकी समझ में और विपुल धन-राशि भी एकत्रित देखते-देखते उस मरुप्रदेश में 'बलदेव' लहराने लगा। नलों द्वारा घर पानी पहुँचा और चारों ओर बल्ब भी जगमगाने लगे। बाद में अंतर्गत स्कूल, छात्रावास, पुस्तकाल कई बाग-बगीचे भी बने। उन सबमें श्री तुलस्यान की अडिग निष्ठा सेवा-साधना बराबर काम करती

बिहारीलालजी के धन-संग्रह भी एक अपना ढंग है। मेले यात्रियों का ताँता और स्थान की उन्होंने झट सेवक से कहा—"जा यात्रियों के लिए मेरा अपना खोल दो और मेरा सामान उठा बाहर रख दो।" जाने के वक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्री मंदिर के फंड में किराया देने का आग्रह करने लगे, तो श्री तुलस्यान बोले—"भाई, यहाँ किराया नहीं चुकता। यह तो जनसेवा का यज्ञ है—इसमें यथाशक्ति योग देने पर ही बात बनेगी।" इस तरह उन्होंने न जाने कितने यात्रियों का सहयोग-सम्बल इस यज्ञ के लिए प्राप्त किया है।

—'विक्रम'

स्वामी दयारामजी

विक्रम संवत् १९७२, मारवाड़ का अकाल। इस दुर्भाग्य से छुटकारा पाने के लिए एक मुसलमान-परिवार सिंध जा रहा था। रास्ते में ईद पड़ी और उन्होंने वहाँ के गाँववालों के बहकावे में आकर पशु-हत्या करने की ठानी। फलस्वरूप साम्प्रदायिक झगड़े की नौबत आ गयी। इसी परिवार के एक किशोर ने न जाने किस अंतःप्रेरणावश उनकी इस योजना का विरोध किया। अब तो उल्टे उस बेचारे पर ही बन आयी। लेकिन उसके दिन अच्छे थे कि, वह उन लोगों के पंजे से बचकर भागा और वहाँ से ८० मील पैदल चलकर जोधपुर आ गया। यहाँ वह महात्मा अचलरामजी का शिष्यत्व स्वीकार करके 'खाँ' से 'रामूला' बन गया।

अठारह वर्ष की उम्र में उसने रामदेवरा को अपनी साधना-स्थली बनाया और गाँव-वालों की गायें चराने का व्रत लिया। उधर गायें चरतीं और इधर वह रेत पर अँगुलियों से देवनागरी अक्षर बनाता। वृक्षों की छाँह उसका क्लास रूम, अँगुलियाँ उसकी कलम और यह [illegible] स्लेट!

वही रामूला आज स्वामी दयारामजी के नाम से लोकप्रिय है। वे लोकेषणा से कोसों दूर रहते हुए, पिछले चालीस वर्ष से रेतीले प्रदेश में तालाब, नालियाँ और हौज खोदने की अखंड साधना में लगे हुए हैं। स्वामीजी नित्यप्रति ब्राह्म मुहूर्त में दो घंटे 'परेड' करते हैं—जी हाँ, वे रेत डालने के काम को परेड ही कहते हैं। शुरू-शुरू में तो स्वामीजी 'परेड' के अलावा भी एक दिन में जितनी बार लघुशंका के लिए जाते, नियमपूर्वक हर बार समीपस्थ तालाब से पंद्रह बाल्टी रेत भरकर बाहर फेंकते थे। इससे उनकी तालाब खोदने की गति का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने अब तक अकेले ही लाखों घन फुट मिट्टी खोदकर ढोयी है; और आज बासठ वर्ष की अवस्था में भी वे नित्यप्रति पंद्रह घन फुट मिट्टी ढोते हैं। स्वामीजी का कहना है—"अगर किसी को सहज-मुक्ति की कामना है, तो वह इस मरु-क्षेत्र में आये और यहाँ तालाब खोदे।"

लोक-कल्याण द्वारा इस 'मुक्ति-प्राप्ति' की साधना का ही सुफल है कि, वे अब तक विभिन्न निर्जल क्षेत्रों में दसों छोटे-मोटे तालाबों का निर्माण एवं बीसों का जीर्णोद्धार कर चुके हैं; और आज भी बिना किसी प्रति-फल की कामना से वे रामदेवरा-स्टेशन के सामने स्थित अपने आश्रम के आस-पास उपर्युक्त 'मुक्ति' की अलख जगा रहे हैं।

—सुंदरलाल बोहरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदगी

अमृता प्रीतम

सच पूछिये तो मुझे यह कहानी नहीं लिखनी थी। मुझे तो बस एक तार देना था।

दिप्पी ने अपने आखिरी वक्त में एक तार देने का काम मेरे सुपुर्द किया था। लेकिन यह काम अपने जिम्मे लेते समय मुझे यह खयाल भी न था कि, उसका आखिरी वक्त इतनी जल्दी आ पहुँचेगा। तार में लिखनेवाली बात उसने मुझे बता दी थी। वह बस यह थी –

"तुम्हारी चाल सफल हो गयी है, तुम्हें बधाई।"

लेकिन तार किसे देना था, यह अभी मुझे दिप्पी ने नहीं बताया था कि, उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गयी।

दिप्पी, तुम जीने के लिए बनी थीं। मगर हाय! इस जीवन को क्या कहूँ, जो तुम्हारे अस्तित्व के सामने न टिक सका।

एक बार मैंने एक गजल लिखी थी, जिसमें एक शेर था –

जिंदगी की हमने सब मेहमाँवाजी देख ली,
मौत दावत दे रही है, उसको जाकर देख लें।

और मेरी अच्छी दिप्पी, आज मुझे अनुभव होता है कि, यह बात मुझ पर इतनी ठीक नहीं बैठती, जितनी खुद तुम्हें। सचमुच यह जिंदगी तुम्हारे आने पर की तरह मुँह फाड़े खड़ी रही और तुम्हें स्वागत-सत्कार करना भूल गयी।

आज यदि तुम कहीं से देख सको जरा झाँक लो। मैंने तुम्हें तार देने का वचन दिया था, उसे पूरा नहीं कर सकी यह मेरी विवशता है। लेकिन अब मैं तुम्हारी कहानी लिखकर ही यह वचन कर सकती हूँ।

दिप्पी का पूरा नाम बहुत लम्बा था मैंने उसके नाम को छोटा कर दिया। उसे केवल दिप्पी कहा करती थी। वह प्यार से मुझे इमी कहकर बुलाती थी। मेरे गीतों से प्यार था, और मुझे उसकी आवाज से।

जब वह मेरे गीत गाती थी, तो लगता था कि, मेरे गीतों का मूल्य बढ़ता है। यह एहसास मुझे ही नहीं होता था जिसके भी गीत गाती, उसे यही लगता। गीतों का मूल्य चुकानेवाली दिप्पी के ऐसी दौलत थी कि, वह जितना उन्हें को लुटाती, वह उतनी ही बढ़ती।

दिप्पी को अपने सुर पर वह वि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, जो केवल चोटी पर पहुँचे हुए कलाकारों में होता है। अधिकांश कलाकारों को अपने सुर पर विश्वास नहीं होता; इसलिए वे साजिंदों से ऊँची आवाज में साज बजाने को कहते हैं; लेकिन दिप्पी साजों के शोर में खोये हुए गीत को सुनकर कहती थी—"सुर क्या घर ही में छोड़ आये हो, जो साजिंदों से माँगते हो?"

दिप्पी के स्वस्थ-सुंदर चेहरे पर एक बुजुर्गाना ढंग का परतव था। मुझे याद है, हमारा एक बहुत ही हँसमुख अफसर रोजाना उसे आता देखकर कहा करता था—"पाँव छूता हूँ।" और दिप्पी भी बड़ी दया दिखाते हुए कहा करती थी—"जीते रहो।" हममें से अधिकांश की इच्छा होती कि, कुछ समय उसके साथ गुजारें, उसकी दिलचस्प बातें सुनें।

एक बार किसी चौराहे पर गाय खड़ी थी। ड्राइवर ने कई बार हार्न बजाया; लेकिन गाय टस-से-मस न हुई। दिप्पी हँसकर कहने लगी—"शायद आज कोई सिपाही अपनी जगह इसे ड्यूटी पर खड़ाकर चाय पीने चला गया है।"

एक बार एक साइकलवाला गाड़ी के आगे-आगे जा रहा था और एक तरफ नहीं हो रहा था। कभी दायें हाथ को साइकल चलाता, कभी बायें हाथ को। दिप्पी ने हँसते हुए कहा—"एक पाँव अमरीका में रखता है और दूसरा हिन्दुस्तान में।"

और दिप्पी का दिल भी ऐसा ही था। एक बार वह कार चलाना सीखने लगी। बायें हाथ को खड़ी कुर्सी के पास से जब वह गुजरी, तो अचानक बायीं तरफ के मोड़ से एक साइकलवाला निकलकर दिप्पी की गाड़ी के आगे आ गया। धक्का लगने पर वह गिरकर बेहोश हो गया। पुलिस के "उड़न दस्ते" वाले लोग उसे अस्पताल ले गये। दिप्पी के मुँह से सिर्फ यही निकलता रहा—"इसे कुछ नहीं हो सकता। मेरे हाथों कभी किसी को दुःख नहीं पहुँचा। इसे भी नहीं पहुँच सकता। यह बच जायेगा। जरूर बच जायेगा।"

लगभग दो साल हो गये इन बातों को। हम—सबने दिप्पी की कला से, उसके हँसते हुए चेहरे से और उसके मुहब्बत-भरे दिल से प्यार करनेवालों ने—देखा कि, दिप्पी बीमार रहने लगी है। जब मिलती, उसका चेहरा पहले से ज्यादा जाफरानी होता। बस उसके चेहरे पर सादगी और मासूमियत बाकी रह गयी थी। बाकी सब कुछ उड़ गया था। और फिर जीवन का सारा रंग गायब होते-होते उसके घरवालों ने उसे सफदरजंग अस्पताल में दाखिल कर दिया।

पिछले महीने हम दफ्तर के कुछ लोग उसकी अयादत के लिए गये। उसकी पुरानी प्रतिभा और शालीनता का परिचय हमें उस दिन भी हुआ। डाक्टर एक्स-रे का नतीजा लेकर आया था और दिप्पी की मुस्कराहट कह रही थी—"सभी हड्डियाँ साबित हैं? डाक्टर, अच्छी तरह देखो, कोई एक-आध तो कम हो गयी होगी।"

गत सप्ताह मैं अकेली ही अस्पताल गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। दिप्पी को मैंने अपना नया गीत सुनाया—

नूर की यह सारी फुलकारी
टाँका कौन लगाये।

दिप्पी रोती रही, रोती रही और फिर कहने लगी—"मैं जब भी तुम्हारा नया गीत सुनती हूँ, मेरे गले में सुर काँपने लगते हैं। और किसी के लिए नहीं, तो मैं तुम्हारी इस फुलकारी में टाँका लगाने के लिए ही काश कुछ दिन और जिंदा रहूँ।"

"तुम्हें इन गीतों की कसम है दिप्पी, एक बार बताओ तो तुम्हें हुआ क्या है? तुम्हारे सारे टेस्ट हो चुके हैं। सब कुछ ठीक है। मर्ज का पता किसी को नहीं चलता।" मैंने उससे आग्रहपूर्वक पूछा।

"नहीं इमी, मुझे गीतों की कसम न दिलाओ। मुझसे यह सहन नहीं हो सकेगी।"

"दिप्पी, कसम न सही, मेरे गीतों की मिन्नत ही सही। उन सबकी, जो तुमने गाये हैं और उन सबकी भी, जो तुम्हें अभी गाने हैं।"

"अच्छा तुम्हें सब बताये देती हूँ। कोई दो बरस हुए, मैं केले के छिलके पर से फिसल गयी थी।" और दिप्पी अपने पुराने और भुलाये हुए ढंग से हँस पड़ी।

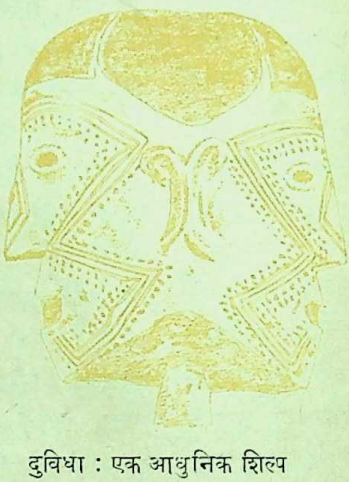

दुविधा : एक आधुनिक शिल्प

"चल हट, दिप्पी।"

"सच! कभी-कभी छोटी जगह गिरकर भी चोट लग जाती है।"

"तो तुम्हारी किस हड्डी पर चोट लगी है?"

"हड्डी, पर नहीं लगी, इमी! और बहुत कुछ टूट गया है। मेरा दिल टूट गया है।"

"दिप्पी!"

"इमी, वह केले का छिलका नहीं, एक लड़की थी।"

"कौन-सी लड़की? तुम्हारे रास्ते में सकती है, दिप्पी।"

"वह मेरे रास्ते थी या मैं उसके रास्ते में?...लेकिन फ़ने बेकार ही इतनी तकलीफ की। ही मुझसे कह देती मैं खुद उसके रास्ते से हट जाती।"

"क्या कह रही हो, दिप्पी?"

"मैं अपने आपको विश्वसनीय समझती हूँ ना, इसलिए दूसरों पर भी विश्वास नहीं होता। मुझे उस पर भी भरोसा था। लगभग दो वर्ष हुए, उसने पत्र लिखा कि, मेरी कुछ बहुत खराब की तस्वीरें किसी ने खींच ली और उसने मुझे पैगाम भिजवाया है किस्त के सौ रुपये दे दूँ, वरना मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे घरवालों को दिखा दी जायेंगी ।"

"फिर ?"

"रुपये तो मैंने नहीं दिये; लेकिन एक चिंता मेरे दिल को जोंक की तरह लग गयी । ये तस्वीरें किसने खींचीं ? कैसे खींच ली? मैंने अपने घरवालों को यह बात बता दी । एक तो मुझे यह विश्वास था कि, मेरी इस तरह की तस्वीर किसी के पास नहीं है, और दूसरे यह कि, अगर किसी ने मेरा सिर और किसी दूसरी लड़की का धड़ जोड़कर तस्वीर बना भी ली है, तो वह कल सामने आयेगी ही ।"

"अजीब परेशानी होगी ?"

"सच इमी ! दिन में तीन बार डाक आती थी। कोई नया लिफाफा देखती, तो मेरे हाथ-पैर काँपने लगते कि, पता नहीं इसमें मेरे लिए क्या निकलेगा ? जिससे मैं मुहब्बत करती थी, उसे भी मैंने यह बात बता दी । मुझे विश्वास था कि, मेरी सच्चाई को वह पहचान लेगा; लेकिन कोई शाम ऐसी नहीं होती थी, जब यह तस्वीरोंवाला मनहूस जिक्र न होता हो । अब उसकी बातें शुष्क होने लगीं । वह कहता, कोई तो बात होगी ही, जिस पर यह तूमार खड़ा है । ... इमी, मुझे पानी पिलाना जरा ...।"

मैंने दिप्पी को पानी पिलाया और उसका हाथ दबाने लगी ।

"हाथ न दबाओ, इमी ! ... इसी खाने की मेरे दिल में बहुत बुरी याद है । मैं इधर बीमार होती रही और उधर वह लड़की अपने शहर से चलकर मेरे शहर में बार-बार आती रही । मेरा हाथ दबाती और कहती, डॉक्टरों के पास लेकर जाती, आस बँधाती...अब जो मेरा हाथ यदि कोई दबाता है, तो मेरे तन में छुरियाँ चलने लगती हैं ।"

"तो यह सब कुछ वह करती रही ?"

"हाँ इमी, मेरी बीमारी बढ़ गयी । उस के खतों की धमकियाँ जोर पकड़ती गयीं । एक बार उसने यह भी लिख दिया कि, दो तस्वीरें उसे किसी ने डाक में भेज दी थीं । उसने खुद अपनी आँखों से देखी हैं ।"

"मगर दिप्पी, तुमने उससे तस्वीरें नहीं माँगीं ?"

मैंने माँगी थीं इमी; लेकिन उसने लिखा कि, तस्वीरें इतनी बुरी थीं कि, उसने उसी वक्त उन्हें आग में जला दिया ।"

"और दो साल तक वह इसी तरह तुम्हारे दिल और दिमाग को झुलसाती रही ?"

"हाँ इमी ! उसका विचार था, मैं रोज-ब-रोज जिस तरह सूखती जा रही हूँ, दो-तीन बरसों में आखिर मर ही जाऊँगी । कितना सीधा तरीका है इमी, किसी को मारने का ! सिर्फ मरना तो मुश्किल नहीं होता इमी; मगर 'उसकी' निगाहों में गिर-कर मरना, जिसे कोई प्यार करता हो । कितना दर्द नाक है ।"

"लेकिन अब तो दिप्पी तुम्हें पता लग गया है कि, यह सब वह खुद करती थी । और तुम्हारे 'उस' को भी मालूम हो गया होगा ।"

"हाँ, इमी, अब लगभग चार महीने हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

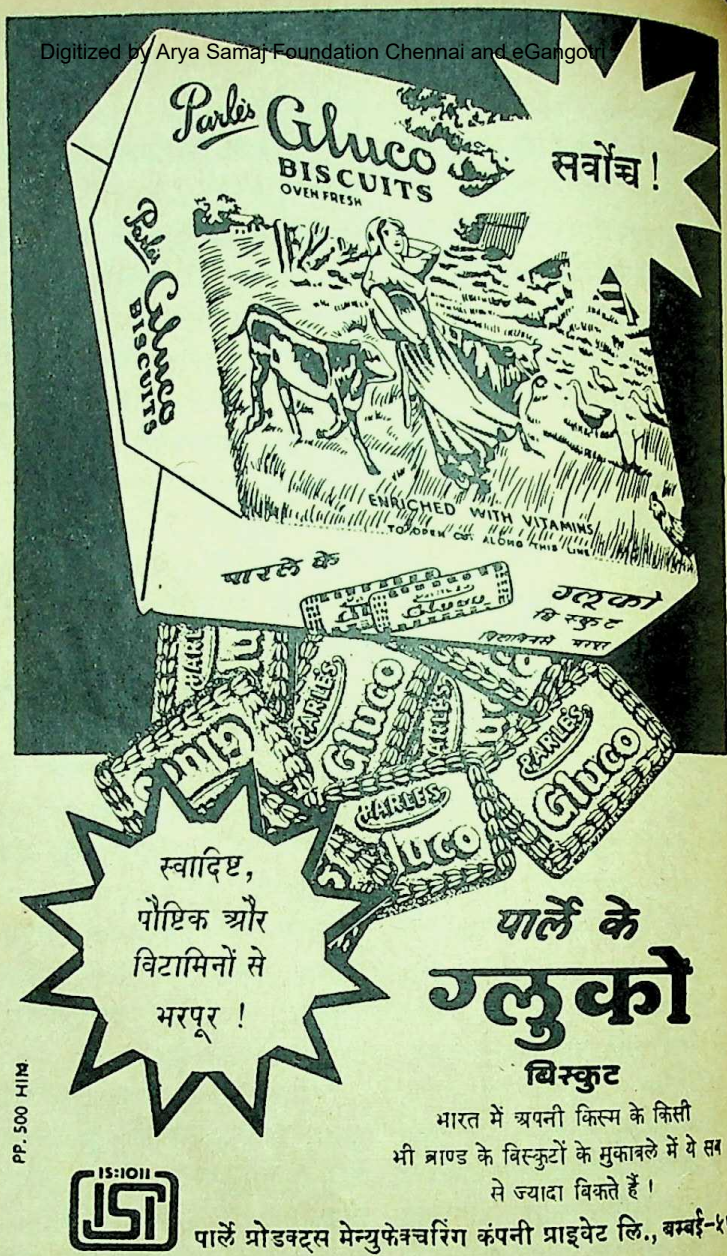

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। एक बात की मुझे खुशी है कि, मैं सबकी नजरों में सुर्खरू होकर मर रही हूँ। अपनी नजरों में तो पहले ही सच्ची थी। मगर दो बरस मैंने किस प्रकार काटे हैं... जिससे मुझे प्रेम है, उसने भी तो मुझे एक बार दिल से निकाल दियाथा। ...और इस अर्से में मैं किस तरह अपनी मौत की दुआएँ माँगती रही। ....अब ये दुआएँ कबूल हो चुकी हैं इमी।"

"दिप्पी, तुम्हारे साथ भी कोई ऐसा कर सकता है? तुम, जिसके हाथों कभी किसी को कोई कष्ट नहीं पहुँचा?"

"इमी, भला कभी दुःख भी किसी का ईमान देखकर आता है? हमारी दुनिया का इतिहास तो बेगुनाहों की मौत से भरा पड़ा है।"

लेकिन दिप्पी, तुम्हें मारकर उसे क्या मिला था?"

"तुम तो औरत हो इमी! औरत होकर भी यह बात पूछती हो?"

मेरे दाँतों तले दबे हुए होठों में तकलीफ होने लगी। मैं सिर्फ इतना कह सकी-"औरत का यह रूप मुझसे बिल्कुल सहन नहीं हो सकता दिप्पी।"

"तुम यही गनीमत समझो इमी कि, मैं इस दुनिया से जाने के पहले सुर्खरू हो चुकी हूँ।"

"लेकिन दिप्पी, आखिर यह राज खुला कैसे? चाल तो ऐसी थी कि, जिसका कोई पहलू पकड़ में आ ही नहीं सकता था।"

"यह तो एक हँसी की बात है इमी। पंद्रह नये पैसों की बचत की बात—उसने पंद्रह नये पैसों की बचत की और उसकी बचत ने मेरे हाथ में शक की बाग दे दी।

"उसने बनावटी लिखावट में मुझे भी धमकी के तीन-चार खत लिखे थे। एक बार उसका लिफाफा आया। ऊपर मेरा पता लिखा हुआ था। फिर सारा काटा हुआ था। और फिर दुबारा मेरा ही पता लिखा हुआ था। मैं समझ न सकी कि, यदि नये सिरे से मेरा ही पता लिखना था, तो फिर पहले लिखा हुआ पता काट डालने की क्या जरूरत पड़ गयी थी।

"ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि, पहले काटा हुआ पता किसी और के हाथ का लिखा हुआ था और दुबारा लिखा हुआ पता उसके अपने हाथ का। जब मैंने कटे हुए पते की लिखावट को मिलाया, तो वह बिल्कुल वही निकली, जो उसके धमकी-भरे खतों में थी। ....वे खत जो मैंने पहले किसी और के लिखे हुए समझे थे।

"मैंने उसे तार दिया। जब वह आयी, मैंने पुलिस को सूचना देने के लिए टेलीफोन उठाया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और सब कुछ बता दिया, सब कुछ सच-सच।"

"दिप्पी! दिप्पी!! तुम नहीं मरोगी। जिन्होंने यह धोखे की आग लगायी है, उन्हें ही इस आग में जलने दो। तुम जिंदा रहोगी अपने फन के लिए।"

"मैंने तुमसे कहा है न इमी। दो साल तक मरने की जो दुआएँ मैंने माँगी थी, अब कबूल हो चुकी हैं। दो साल तक तो उसे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ!

लाइफ़बॉय से नहाइये ... स्नान का आनंद
इसी में है! लाइफ़बॉय से नहा कर क्या मज़ा आता है ...
तन मन तरोताज़ा हो जाता है! लाइफ़बॉय,
गंदगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है। लाइफ़बॉय से
आपका सारा परिवार तंदुरुस्त रहेगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

L 23-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझ पर भरोसा नहीं रहा, जिसके लिए जीना चाहती थी। मेरी जिंदगी की वो दो साल तक थरथराती रही। अब बुझने पर आ गयी है। अब मैं फिर से यह शमा नहीं जला सकूँगी। हाँ इसी, मैं जब मर जाऊँ, तो उसे एक तार दे देना—

"तुम्हारी चाल सफल हो गयी, तुम्हें बधाई।"

आँखों में आँसू लिये उस दिन मैं दिप्पी के पास से लौट आयी थी। मुझे नहीं मालूम था कि, उसी रात उसके सिर की कोई रग फट जायेगी।

चाल चलनेवाली को तो दिप्पी की मौत ने ही खबर दे दी होगी। लेकिन दिप्पी की इच्छा थी कि, मैं उस लड़की को तार दे दूँ। मुझे उसका नाम तक नहीं मालूम! इसलिए मैं उसे तार दूँ, तो कैसे दूँ? सिर्फ अपने आँसुओं में भिगोकर दिप्पी की कहानी लिख रही हूँ। उसकी आखिरी इच्छा को पूरा करने के लिए अपने दिल से निकलती हुई इस दुआ के साथ कि अब और कोई दिप्पी-जैसी लड़की इस केले के छिलके पर से न फिसले।

— रूपांतर : मुगनी अब्बासी

५ चापलूसी

एक भैंस का जब दिमाग खराब हो जाता था, तो वह बहुत उत्पात मचाती थी। एक दिन उसे फिर गुस्सा आ गया, उसने अपनी रस्सी तोड़ डाली और खेतों में पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ने लगी। उसने आधी से ज्यादा फसल नष्ट कर दी।

किसानों ने उसे पकड़ने के लिए एक घेरा बना लिया; लेकिन जैसे-जैसे उस घेरे में आदमी बढ़ते जाते थे, भैंस का गुस्सा भी उसी हिसाब से बढ़ता जाता था। उसने अपने सींगों से किसानों पर हमला किया और बहुतों को घायल कर डाला। इतने पर भी लोग उसे पकड़ नहीं पाये।

तभी संयोग से उधर एक लड़का दौड़ा-दौड़ा आया। आते ही उसने बड़े-बूढ़ों की तरह लोगों का मजाक उड़ाया और कहा—"तुम सबके-सब बेवकूफ हो।" इसके बाद वह भैंस की तरफ मुसकराते हुए ऐसे बढ़ा, जैसे कुछ हुआ ही न हो। वह अपने साथ घास का एक गट्ठर भी लाया था। अब वह भैंस को गट्ठर दिखाकर ललचाने लगा। धीरे-धीरे भैंस उसके काबू में आ गयी और वह मौका देखकर उसकी पीठ पर जा बैठा। इसके बाद वह भैंस को हाँकते हुए उसके बाड़े की तरफ ले गया। यह देखकर लोगों ने चैन की साँस ली और साथ ही यह भी स्वीकार किया कि, सचमुच हम बेवकूफ हैं; तभी तो चापलूसी का महत्व नहीं समझ पाये।

— एक चीनी लघुकथा : प्रतिभा शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस क्षण तक विशिष्ट 'सेफ्टी ट्रेड'

आपको ज्यादा अर्से तक ज्यादा सुरक्षा देता है जब आपकी कार में

Firestone

न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर हों

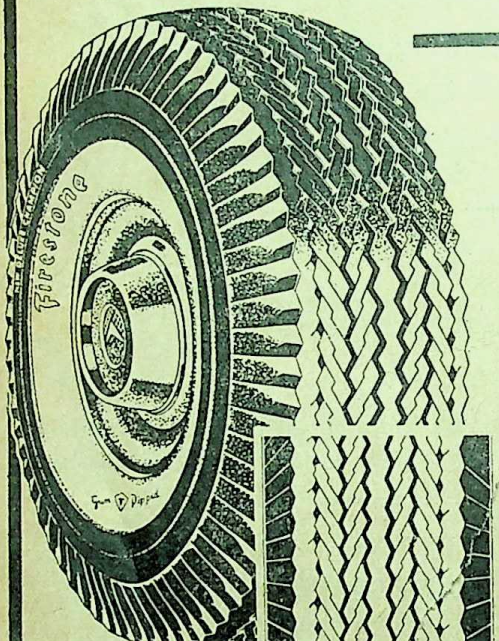

फायरस्टोन न्यू डिलक्स चैम्पियन टा
में न फिसलनेवाले हजारों कोण हैं, जि
से आप सक्रिय रूप से ब्रेक-नियंत्रण क
सकते हैं—जो कार से रुकने या चलने
लिए आपके आदेश का पालन करते
हैं। और दीर्घकाल तक टिकाऊ, ज
न घिसनेवाला **फायरस्टोन** ट्रैड रबर
ऐसी बनायी गयी है कि आप ज्यादा
तक ज्यादा सुरक्षित रहें।

फायरस्टोन टायर

इस्तेमाल कीजिये

आज सोना - कल सोने में सुहाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊँचा कुत्ता

विलियम ब्रैंडन

बोर्जोई नस्ल के उस कुत्ते का नाम था 'ओल्ड डाग'। 'ओल्ड डाग' का मालिक मेरा दोस्त जुआन इजक्वर्डो था। बोर्जोई नस्ल के कुत्ते बड़े शानदार होते हैं। इन्हें श्वान-समाज का अभिजात-वर्ग कहा जा सकता है। लेकिन ओल्ड डाग बोर्जोई होकर भी लंबाये चेहरेवाला एक अजीब कुत्ता था, जिसे देखकर तरस आता था। बाल गंदे, चटमैले, और शक्ल मरगिल्ली-सी। वह किसी एक पैर से लंगड़ाकर भी चलता था—किस पैर से लंगड़ाता था, इस जानकारी से आपका कोई लाभ नहीं होनेवाला है। उसे एक चीज का विशेष शौक था, और वह शौक था सोना। जहाँ जगह मिली पड़ गये।

ओल्ड डाग अक्सर जुआन इजक्वर्डो के साथ मेरे घर आया करता था, और आते ही वह गठरी की तरह बारामदे के एक कोने में पड़कर सो जाता था। जब जुआन जाने लगता, तब वह ओल्ड डाग को हिलाकर जगाता और वह उठकर लंगड़ाता हुआ अपने मालिक से सटा-सटा चल पड़ता।

ओल्ड डाग के मन में जुआन के लिए शायद विशेष प्रेम और आदर था। और किसी के जगाने या हिलाने से वह अपनी जगह से टस-से-मस नहीं होता था। उसे रास्ते से हटाने का केवल एक तरीका था—उसे सशरीर उठाकर किनारे कर देना। लेकिन ओल्ड डाग को उठाना भी आसान नहीं था। वह बहुत ही वजनी था।

और रहा जुआन इजक्वर्डो। वह दुनिया की तमाम चीजों से अधिक प्यार अपने ओल्ड डाग से करता था। जुआन के न कोई बहन थी, न भाई। घर में भी उसके बड़ी अशांति रहती थी। घर में जिसे वह अपना संगी, आत्मीय या मित्र कह सके, वह ओल्ड डाग ही था।

मजा यह कि, जुआन इजक्वर्डो के घर में सदा छायी रहनेवाली अशांति का मूल कारण भी जुआन खुद था। बात यह थी कि, उसकी नानी भी उसी घर में थी और जुआन के पिता और नानी में अक्सर इन बातों को लेकर झगड़ा होता रहता था कि, जुआन की शिक्षा-दीक्षा कहाँ और किस प्रकार होनी चाहिये, उसे क्या खाना देना चाहिये और क्या नहीं, उसे घर में क्या काम करना चाहिये क्या नहीं।

एक दिन जुआन के पिता बहुत रुँआसे-से होकर मेरी माँ से बोले—"जरा देखिये न, मेरी सास कैसी ज्यादती करती है। उसे अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफेद बाल के लिए प्रकृति को दोष मत दीजिये

"महाशय, जब प्रकृतिने ही मेरे बालोंको सफेद कर दिया है, तब किया ही क्या जा सकता है" हम लोग पुरुषोंको ऐसी ही बातों द्वारा विषाद की भावना व्यक्त करते हुए देखते और सुनते हैं। पर जो लोग सफेद बाल के लिए प्रकृति को दोष देते हैं, उन्हें यह जानना चाहिए कि बाल सफेद क्यों हो जाते हैं। अनुसंधान से यह पता चला है कि ९० प्रतिशत मामलों में बाल समय से पहले इस कारण सफेद हो जाते हैं कि उनकी उचित देख-भाल नहीं की जाती। इसके अलावा अस्वास्थ्यकर वातावरण तथा निम्न कोटि के तेलों का अंधाधुंध प्रयोग भी बाल सफेद होने के कारण है।

"लोमा" में, जो अहमदाबाद में सर्वाधिक आधुनिक कारखाने में वैज्ञानिक पद्धति से तैयार किया जाता है, बाल की सफेदी को खत्म कर देने के सभी तत्व मौजूद हैं। "लोमा" के लिए क्वालिटी सम्बंधी नियमों का पूरा-पूरा पालन किया जाता है। आज से ही "लोमा" का उपयोग करना प्रारंभ कर दें और आप को शीघ्र यह मालूम हो जायगा कि देश तथा विदेश में लाखों लोगों का "लोमा" में क्यों विश्वास उत्पन्न हो गया है। स्मरण रखिये

'लोमा' का अर्थ क्वालिटी है—वह क्वालिटी
जिसकी आप आशा रखते हैं।

आकर्षक व्यक्तित्व के लिए लोमा इस्तेमाल कीजिये

एकमात्र एजेंट और निर्यातक: एम. एम. खंभातवाला अहमदाबाद-१ (भारत)
एजेंट्स: सी. नरोत्तम एंड कम्पनी, बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे-बच्चे जैसे पालने थे, पाल चुकी। अब अपने बच्चे को कैसे पालूँ-पोसूँ, कमसे कम इसकी आजादी तो मुझे होनी चाहिये थी नहीं ?" मेरी माँ उनकी बात से सहमत हुई, पर उनकी ही भाँति बेबसी से सिर हिलाकर रह गयी। दूसरे घर के झगड़े में वे अपनी सम्मति दें भी तो क्या पड़नेवाला था !

रोज-रोज के इस घरेलू झगड़े का नतीजा हुआ कि, जुआन इजक्वर्डो की ओर ध्यान की किसी को भी फुरसत नहीं मिलती। कभी-कभी जुआन की माँ भी अपनी और अपने पति के विवाद में कूद पड़ती और कभी एक पक्ष का साथ देने लगती कभी दूसरे का। लेकिन बहुत बार ऐसा होता कि, बजाय किसी एक पक्ष का साथ देने के वह स्वयं अपनी स्वतंत्र राय लेकर मैदान में उतर पड़तीं। और ऐसे मौकों पर तीनों में अपनी-अपनी बात को लेकर देर तक तकरार चलती रहती। जिसके लिए यह सब अशांति मचती, वह बेचारा जुआन बिना किसी का लाड़-प्यार पाये ज्यों-त्यों उपेक्षित रह जाता। उसे घर की अशांति से बड़ी चिढ़ थी। अक्सर उसका मन घर छोड़ जाने को करता, पर.....

और यदि जुआन घर छोड़कर भाग नहीं सका था, तो इसका एकमात्र कारण वह ओल्ड डाग था ही। मुझसे जुआन अक्सर कहा करता था कि, मैं किसी दिन पहाड़ को पार करके उस पार के पेकास शहर में घोड़ों के सईस की नौकरी करने चला जाऊँगा। पर ओल्ड डाग बहुत बूढ़ा था और उसे नींद भी बहुत आती थी, इसी-लिए वह जुआन के साथ नहीं भाग सकता था। और ओल्ड डाग के ही कारण जुआन भी घर से भाग नहीं पा रहा था।

इधर तो जुआन के मन की यह दशा थी, और उधर उसकी नानी, माता और पिता अपनी तकरार से घर को नरक बनाये हुए थे। एक ही चीज थी, जिसके बारे में ये तीनों एकमत थे। वह चीज थी—ओल्ड डाग। तीनों को ओल्ड डाग से सख्त नफरत थी। ओल्ड डाग एक बेकार का जीव था। जब देखो रास्ते में पड़ा रहता था। फिर उस पर खर्च भी तो कितना होता था ! दो आदमियों की पूरी खूराक वह अकेला खा जाता था।

ये सब चीजें बहुत दिनों तक चलती रहीं, झगड़े चलते रहे, ओल्ड डाग के प्रति तीनों बुजुर्गों की घृणा बढ़ती, पनपती रही। अंत में एक दिन वह फूट पड़ी।

जुआन को पिछले कई दिनों से ठंड लगने के कारण तेज बुखार चढ़ा हुआ था। उसके पिता एक डाक्टर बुला लाये थे। उधर जुआन की नानी ने चुड़ैल का असर दूर करने के लिए जो कुछ उपाय हो सकता वह सब कर डाला था। जुआन के पिता को भी भूत-प्रेतों पर कम आस्था नहीं थी।

डाक्टर ने जुआन को देखकर कहा कि, निमोनिया होने का डर है; इसलिए लड़के को बिस्तर में अच्छी तरह ओढ़ा रखा जाये। और जब बेचारा जुआन इस प्रकार बिस्तर पर लाचार पड़ा था, तभी उसके तीनों बुजुर्गों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आधुनिक घरों में सर्फ़...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आजकल हमारे रहन-सहन का ढंग...' ___

बम्बई की श्रीमती प्रेमा सुन्दरजी कहती हैं—।

वालकेश्वर रोड, बंबई की श्रीमती प्रेमा सुन्दरजी कहती हैं कि 'आज के रहनसहन के लिए हमें नित नई और अधिक काम आनेवाली चीज़ों की ज़रूरत है। जैसे अब सर्फ़ ही को लीजिए। मेरे घर के सभी कपड़े—कमीज़ें, साड़ियां, चादरें और तौलिये—सर्फ़ में धुलकर जगमगा उठते हैं।'

फिर आप के घर में सर्फ़ क्यों न हो? सर्फ़ से धुलाई की मेहनत आधी हो जाती है और कपड़ों में नई अनदेखी चमक दमक आ जाती है। आज ही घर में सर्फ़ इस्तेमाल कर के देखिये।

सर्फ़ से कपड़े बहुत नीले धुलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

.U. 18-X29 HT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

–उसकी नानी, माँ और पिता को–न
ने कैसे यह सूझ गया कि, ओल्ड डाग से
ड छुड़वाने का यह अच्छा मौका है।
जन यह हुआ कि, एक दिन जुआन के
ना अपनी लारी में ओल्ड डाग को लाद
र चल पड़े। योजना यह थी कि, वे उसे दूर
नी कस्बे में अपने एक दोस्त को दे आयेंगे
र दोस्त उसे मार डालेगा। कई सालों में
ह पहला अवसर था, जब ओल्ड डाग अपने
रे जुआन के बिस्तर से दूर था। कुछ
ा संयोग हुआ कि, हमारे घर के सामने
गहरी कीचड़ में जुआन के पिता की लारी
गयी। हम लोग बाहर निकल आये।
ने पर उन्होंने सारा किस्सा बता दिया
र अंत में बोले–"इस कुत्ते से हम लोग
आ गये हैं। अब यदि यह हमारे यहाँ
ा तो हम सब पागल हो जायेंगे। हमें
का यह काम बड़ा जघन्य लगा; किंतु
की बात में हमें टाँग अड़ाने का भला
हक था? मेरी इच्छा हुई कि, दौड़कर
ी बात जुआन को बता आऊँ; पर
ी माँ ने रोक लिया।

लेकिन जाने किसने जुआन को सूचित
या, या हो सकता है कि, उसे ही कोई दैवी
नुभूति हुई हो, ओल्ड डाग के ले जाने की
त उसे मालूम हो ही गयी। और उसके
ा खाली लारी लिये वापस घर पहुँचे,
ब पता चला कि, लड़का अपने बिस्तर से,
में लापता है।

जुआन की माँ रोती हुई हमारे घर
ुँची। "मेरा बेटा, हाय मेरा जुआ। मेरा
बच्चा घर छोड़कर इस बरसते पानी में
कहाँ गया होगा।"

हम लोग अपनी पुरानी मोटर में बैठकर जुआन के घर पहुँचे। वहाँ जाकर देखा, जुआन की नानी जुआन के कमरे में खाली बिस्तर के पास जमीन पर औंधी पड़ी सुबक रही है। जुआन के कमरे की खिड़की पूरी खुली थी?

जब हमें पता चला कि, जुआन के पिता उसे खोजने के लिए अपनी लारी पर पहाड़ की तरफ गये हैं, तो हम लौट आये। घर आकर मेरी माँ ने पुलिस और डाक्टर को टेलीफोन किया और उन्हें लड़के के लापता होने की सूचना दी। मैंने अपना घोड़ा खोला और निकल पड़ा तलाश में। दूर-दूर तक खोजने पर भी मुझे जुआन का कोई पता नहीं मिला। जब मैं निराश होकर लौट रहा था कि, रास्ते में जुआन के पिता लारी पर जाते दिखाई पड़े। वे पागल की तरह गाड़ी बेतहाशा चला रहे थे–इतनी तेज रफ्तार से कि, मेरे देखते-देखते मोड़ पर गाड़ी कई बार उलटते-उलटते बची।

मेरी माँ के टेलीफोन के जवाब में कुछ देर बाद डाक्टर, एक पुलिस अधिकारी और एक आदिवासी रेड-इंडियन जुआन के घर पहुँचे। तीनों जुआन की तलाश में निकलने की तैयारी करके आये थे। कुछ देर बाद ही जुआन के पिता भी लारी समेत वापस पहुँच गये। उनके साथ लारी में था गहरी नींद में सोता हुआ ओल्ड डाग, जिसे वे अपने दोस्त के पास मार डालने की हिदायत देकर छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनवान और गरीब सभी किसी न किसी रूप में तम्बाकू इस्तेमाल करते हैं। भारत में भी अब नास सूंघने या तम्बाकू खाने के मुकाबले धूम्रपान दिनोंदिन अधिक लोकप्रिय हो रहा है। भारत में सिगरेटों की वर्तमान वार्षिक खपत अन्दाजन ३२०० करोड़ सिगरेटों से भी ज्यादा है।

तम्बाकू की कहानी....नं. ८

GTC GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD

बम्बई—४७

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है —

यह आखिरी कश तक मजा देती है।

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Greens' Advtg.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...। उन्होंने बताया कि, उनका दोस्त ...समय घर पर नहीं था और वे उनके ...को सारी हिदायतें दे आये थे। जब ...वापस लेने पहुँचे, उस समय तक भी ...दोस्त घर नहीं पहुँचा था। इस ...ओल्ड डाग अभी जिंदा बचा हुआ था। ...उन्होंने ओल्ड डाग को गोद में उठाया ...जुआन के कमरे में धीरे-से जमीन पर ...दिया। ओल्ड डाग जाग उठा और ...हुआ जुआन के खाली बिस्तर की ...गया। सभी कमरे में उपस्थित थे ...सबकी नजरें उसी पर लगी थीं। खाली ...के पास पहुँचकर ओल्ड डाग कूँ-कूँ ...बड़ी दयनीय आवाज में रो उठा। ...क्या उसे भी इस दुर्घटना का आभास ...गया था ?

सहसा जुआन के पिता चिल्ला उठे—...ओल्ड डाग, जुआन कहाँ है ? जुआन को ...ढूँढ़कर लाओ !"

ओल्ड डाग उत्तेजित हो उठा और ...हुआ इधर-उधर कमरे में टक्करें ...लगा। पुलिस अधिकारी बोला—...बारिश हो चुकी है। इसके बाद भी ...चला सके, ऐसा कुत्ता कहाँ होगा ?"

"लेकिन दोपहर के बाद तो कोई खास ...नहीं हुई है।" डाक्टर ने कहा।

...आया हुआ रेड-इंडियन चुप ही रहा। ...ओल्ड डाग को गर्दन से पकड़ा, खिड़की ...घसीटता हुआ ले गया और फिर ...खिड़की के बाहर फेंक दिया। वह ...खिड़की के बाहर कूद गया। बाकी लोग भी दरवाजे के रास्ते बाहर निकल ...। ओल्ड डाग की नाक जमीन से सटी हुई थी, और वह आगे बढ़ रहा था। रेड-इंडियन उसके बगल-बगल चल रहा था। अचानक ओल्ड डाग दौड़ने लगा। इससे पहले किसी ने इस कुत्ते को दौड़ते नहीं देखा था। एकाएक वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा। रेड-इंडियन ने उसे सहारा देकर खड़ा किया और वह फिर दौड़ने लगा। कई बार वह गिरा, कई बार सहारा देकर उसे खड़ा किया गया। वह बराबर दौड़ता गया। रेड-इंडियन भी साथ-साथ दौड़ता रहा। हम लोग पीछे-पीछे दौड़ते रहे।

हम अब उन पहाड़ियों के नीचे पहुँच चुके थे, जिनके उस पार घोड़ों की सईसी करने की इच्छा जुआन प्रकट किया करता था। सहसा ओल्ड डाग और रेड-इंडियन एक मोड़ पर जाकर हमारी नजरों से ओझल हो गये। जब हम लोग मोड़ पार करके आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूट मे परिवेष्टित आश्चर्यजनक भविष

प्रेमचन्द का व्यवसाय बढ़ती पर है और इसके पहले वह कभी भी इतना अधिक खुश नहीं रह सका! जूट के थैलों में से सुनहले दानों को उझलते समय उसे थोड़ा भी महसूस नहीं होता कि जूटका महत्व भी अत्यधिक है ... यह साधारण सा रेसा, जो उसकी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के भविष्य को परिवेष्टित करता है। निर्यात के बहुत बड़े मद-जूट द्वारा भारत करोड़ों में बहुमूल्य विदेशी विनिमय अर्जित करता है।

राष्टकी बढ़ती हुई जरुरतोंको मद्दे नजर रखते हुए मफतलाल ग्रुप देशकी आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति में हाथ बटाकर अग्रसर होने में प्रयत्नशील हैं। आज, देश-भरमें सभी प्रकार की जनता के लिए मफतलाल ग्रुप विभिन्न प्रकार के अनेकों उत्पादन—सूती कपड़े, जूट, शक्कर, रंग रसायन निर्माण करते हैं।

मफतलाल ग्रुप

शोरॉक, अहमदाबाद. **न्यु शोरॉक**, नडियाद. **स्टैंडर्ड**, बम्बई. **स्टैंडर्ड**, देल **न्यु चायना**, बम्बई. **सासून**, बम्बई. **न्यु युनियन**, बम्बई. **सूरत कॉटन**, सूरत. **मफतलाल फाईन**, नवसारी. **गगलभाई जूट**, कलकत्ता. **इंडियन डायस्टफ**, बम्बई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े, तब देखा कि, वे दोनों एक चट्टान के पास खड़े हैं और चट्टान के नीचे जुआन गहरी नींद में सो रहा है। हमारा शोरगुल सुनकर वह जाग उठा। फिर उसने ओल्ड-डाग को देखा; पर एक शब्द भी नहीं कहा। जुआन की माँ ने लपककर बेटे को समेट लिया। उसके पिता ने देखा कि, लड़का बिल्कुल तरबतर है। वे अपनी पत्नी से बोले—"यह तो बिल्कुल भीग गया है।" पर डाक्टर ने देखा तो बोला,—"घबराइये नहीं। यह पसीना है। अच्छा ही लक्षण है।"

इस घटना के बाद हमारा परिवार कुछ दिन के लिए किसी रिश्तेदार के यहाँ चला गया। लौटने पर हमें पूरा किस्सा मालूम हुआ। हमने देखा कि, जुआन और ओल्ड-डाग हमेशा की तरह एक-दूसरे के साथी हैं। जुआन के घर की तो बिल्कुल कायापलट ही हो गयी थी। अब वहाँ अशांति का नाम नहीं था। जुआन के पिता अपनी सास के साथ बड़ी नम्रता से पेश आते थे, और सास जी भी अब सबको बड़े प्रेम-भाव से देखती थीं। घर में किसी बात पर झगड़ा-टंटा होता ही नहीं था। सब कहते थे कि, यह चमत्कार है। किंतु जुआन ने हमें सच बात बता दी कि, घर के सब लोग मानते हैं कि, ओल्ड-डाग किसी चुड़ैल का अवतार है और उसे संतुष्ट रखने के लिए ही भले लोगों की तरह रहते हैं।

और उनके ऐसा समझने का कारण भी था। जुआन के लौटने के बाद ही उन्हें एक भेद का पता चला, जिसका ज्ञान जुआन को पहले ही था। ...उसका प्यारा दोस्त ओल्ड डाग अंधा था।

दर्शनीय

एक वृद्ध सज्जन अपनी पत्नी और बच्चों को प्रदर्शनी दिखाने ले गये। घूमते-घामते वे एक तम्बू के पास पहुँचे, जिसके बाहर एक व्यक्ति ढोल पीट-पीटकर चिल्ला रहा था—"आइये आइये, दो आने में दुनिया का सबसे बड़ा बारहसिंगा देखिये।"

वृद्ध अपनी पत्नी और बच्चों सहित वहाँ खड़े बड़ी गम्भीरता से उस व्यक्ति को देख रहे थे।

"क्या, आप अंदर जाकर बारहसिंगा नहीं देखेंगे? सिर्फ दो आने टिकिट है।"

"नहीं भाई, मैं, गरीब आदमी इतना खर्च नहीं कर सकता। तुम देख रहे हो न, हम दोनों के अलावा हमारे १९ बच्चे हैं।" वृद्ध ने उत्तर दिया।

"ये सब बच्चे आप के ही हैं?" ऐलान करनेवाले ने आश्चर्य से पूछा।

"बेशक!"

"तब आप यहीं ठहरिये। मैं अंदर से बारहसिंगे को ले लाता हूँ, ताकि वह आपको देख ले।"

— अमरोहवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ब दिन त्वचा पर नई बहार

नये रेक्सोना का चमत्कार

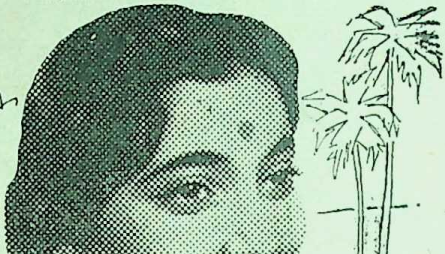

रेक्सोना आप की त्वचा पर वही जादू जगाता है जो सोने पर सुहागा ! रेक्सोना के कोमल झाग में सौंदर्यवर्धक तेलों का विशेष मिश्रण, कॅडिल, मिला है जो आपकी त्वचा में रच बस कर आप के रंगरूप को अधिक कोमल, अधिक मुलायम और अधिक सुंदर बनाता है !

रेक्सोना की विशेष सुगंध आप को देर तक तरोताज़ा रखती है। रेक्सोना आप के दैनिक सौंदर्य-स्नान के लिए आदर्श है।

नये आवरण, नये रूप और नये हरे रंगवाला नया रेक्सोना आपके मन भा जायेगा !

नया रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RP. 169-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटिड ने रेक्सोना प्रोप्राइटी लिमिटिड ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

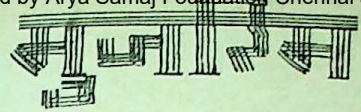

"योर आनर !" सरकारी वकील की गम्भीर आवाज गूँज उठी—"अभियुक्त पर खून का अभियोग है—एक कलवार का खून का।"

"खून का ?" जज साहब के मुँह से अनायास ही निकला और उन्होंने अपनी पैनी नजर अभियुक्त पर डाली।

वकील की आवाज फिर सुनाई पड़ी—"योर आनर !"

किंतु जज साहब का ध्यान कहीं और था। वे एकटक अभियुक्त के चेहरे की ओर देख रहे थे। कठघरे में चौदह वर्ष का एक किशोर खड़ा था—स्वस्थ और सुंदर ! देखने से किसी भले घराने का जान पड़ता था।

"यह मासूम लड़का खूनी ?" जज साहब के मन से अनायास ही यह आवाज उठी—"अभी तो इसके खेलने-खाने के दिन हैं—इसने खून किया ! वह भी एक कलवार का !"

पर कानून तो बिना पूरा मुकदमा सुने अभियुक्त के सम्बंध में कोई राय कायम करने की इजाजत नहीं देता। और न अपनी निजी राय अथवा मन की आवाज का कानून की नजर में कोई महत्व है।

सरकारी गवाह का बयान जारी था—"जिस दिन रामण्णा कलवार का खून हुआ; उसी दिन सुबह दस बजे मैंने इस लड़के किशोर को उसकी दूकान से निकलते देखा था। उस वक्त उसका चेहरा तमतमाया हुआ था। आँखें लाल थीं और क्रोध से दोनों हाथों की मुट्ठियाँ भिंची हुई थीं। मैंने रोककर वजह भी पूछी; लेकिन वह कुछ बोला नहीं। क्षण-भर रुककर अजीब-सी नजरों से मुझे घूरता हुआ आगे बढ़ गया . . .।"

अदालत की कार्रवाई चलती रही। गवाह पेश किये गये और सरकारी पक्ष ने किशोरप्पा को खूनी प्रमाणित करने के लिए अपने सारे प्रमाण अदालत के सामने रख दिये। जब जिरह समाप्त हो गयी; जज साहब ने फैसला अगले दिन सुनाने की घोषणा करके अदालत बर्खास्त कर दी।

उस शाम को जज श्री तिरुवेंगडम् रोज की तरह अदालत से क्लब नहीं गये; घूमने भी नहीं निकले। अपने कमरे में लेट-लेटे उसी मुकदमे की बात सोचते रहे। रह-रहकर किशोरप्पा का भोला चेहरा उनके सामने आ जाता था और उनकी अंतरात्मा बोल उठती थी—"उसने खून किया है, यह तो लगभग प्रमाणित हो चुका है; पर उसने खून क्यों किया ? ऐसी क्या चीज थी, जिसने इस भोले बालक को खून-जैसा घृणित काम करने को मजबूर कर दिया ? और...और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का उल्हास

छोटे बड़े खेत,
पानी का कारोबार
और कारखाने

पंप

के जरिये।

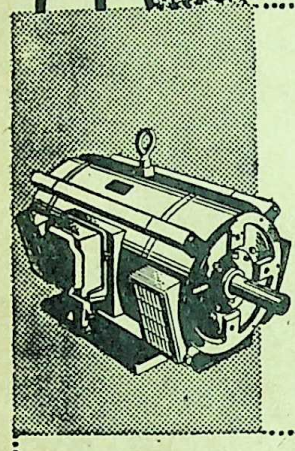

जीवन में समृद्धि

मोटर

के विविध
उपयोग के जरिये।

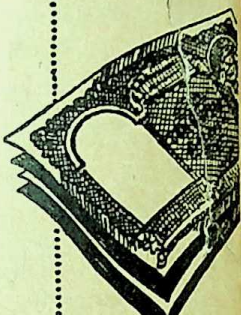

ज्योति

आभियान्त्रिक प्रगति का प्रतिक।

वर्टिकल टर्बाइन पंप, 'युनिबिल्ट' और अन्य
पंप तथा विद्युत मोटरें।

Quality is our Creed

ज्योति लि.,

बड़ौदा-३

ब्रांच आफिस : लोटस हाऊस, मरीन लाइन्स, बम्बई-१

फ़ोन : २४२६३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न के लिए वही जिम्मेदार है ?... रा मन तो नहीं मानता।" तिरुवेंगडम् ने बेचैनी से करवट –"मान लें कि, खून उसने ही किया र यह एक प्रकार से प्रमाणित हो चुका र खून के लिए जिम्मेदार भी वही है; फिर भी, क्या इसके लिए उसे दंड उचित होगा ?" बीच में ही जज बुद्धि बोल उठी–"क्यों नहीं ? उसे दंड न देकर तुम कानून का उल्लंघन करोगे, अपराधियों को बढ़ावा दोगे।" लेकिन अंतरात्मा ने बुद्धि को टोका–"कानून का उद्देश्य है, अपराधों की रोक-थाम–अपराधियों का सुधार। किशोरप्पा अभी बच्चा है। कोई ऐसी बात जरूर हुई होगी, जिससे भावावेश में आकर उसने खून कर दिया होगा। माना, किसी की जान लेना बहुत बड़ा जुर्म है; पर खूनी को सजा देने से मृत व्यक्ति तो फिर जिंदा होने से रहा और न ही इससे खूनी का जुर्म धुल जायेगा। उल्टे होगा यह कि, वह पेशेवर अपराधी बनकर समाज का कोढ़ बन जायेगा। अभी तो उसे सुधारा जा सकता है..."

न्यायदेवता
आदिवासी कल्पना में

सारी रात जज तिरुवेंगडम् इन्हीं विचारों को लेकर उलझते रहे। दूसरे दिन उन्होंने अदालत में फैसला सुनाया–"गवाहों के बयान से यह निश्चित रूप से प्रमाणित नहीं हो सका कि, रामण्णा कलवार का खून अभियुक्त किशोरप्पा ने किया है। अतः प्रमाणों के अभाव में अभियुक्त को रिहा किया जाता है।"

उस शाम को जज साहब की मोटर उनके बँगले की ओर जाने के बजाय उस ओर जा रही थी, जिधर किशोरप्पा रहता था। और कोई दो घंटे बाद जब वे अपने बँगले पर मोटर से उतरे, तो उनके साथ किशोरप्पा भी था। अब तो वह जज साहब के घर पर ही रहनेवाला था। उसकी देखभाल और पढ़ाई-लिखाई की सारी जिम्मेदारी उन्होंने ले ली थी। किशोरप्पा के पिता को तो इससे प्रसन्नता हुई। उसने कहा भी–"बड़ी खुशी से ले जाइये, जज साहब ! मैं तो इसके चलते मुँह दिखाने लायक नहीं रहा–खूनी का बाप कहलाना कौन पसंद करेगा ?...ना ना, आप कुछ न बोलिये। आपने इसे निर्दोष तो कर दिया है; पर मैं जानता हूँ खून इसी ने किया था। यकीन न हो तो पूछ देखिये।" फिर वह किशोरप्पा की ओर मुड़ा–"बोल न अभागे ! अब तो अदालत में नहीं है–अब क्यों चुप्पी साधे है ?"

लेकिन तिरुवेंगडम् ने कुछ रूखी आवाज में टोका–"रहने दीजिये। जो भी हो, इसे अपने संरक्षण में रखना चाहता हूँ।... मेरे साथ चलोगे, बेटा ?" उन्होंने किशोरप्पा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगरूप का निखार
आप की
उंगली के इशारे पर

हर रोज़ हिमालय बुके स्नो मलिए-और देखिए यह आपकी त्वचा को कैसे मुलायम और तरोताज़ा रखती है ! हिमालय बुके स्नो आप की त्वचा को रूखेपन, झुर्रियों और साधारण फुन्सियों से भी बचाती है ! अपने रंगरूप के निखार के लिए हिमालय बुके स्नो इस्तेमाल कीजिये ।

शानदार नई शीशी
सुंदर नई डिबिया

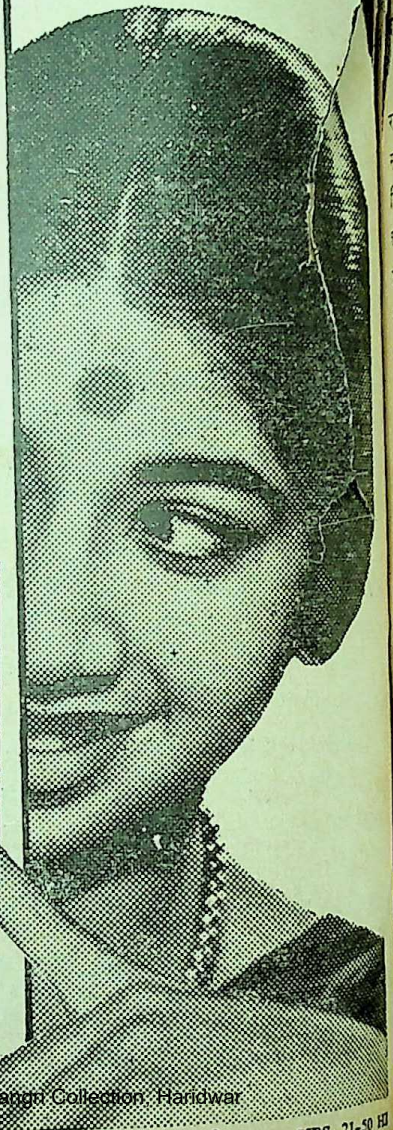

हिमालय
बुके
स्नो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदुस्तान लीवर लिमिटिड ने इरॅस्मिक लण्डन के लिए भारत में बनाई

HBS. 21-50 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था ।

शोरप्पा तैयार हो गया। सिर्फ उसकी र बहन की आँखें डबडबा आयीं; पर वे भी कुछ नहीं—कौन जाने, घर के के डर से, या यह सोचकर कि, जज के यहाँ किशोरप्पा अधिक आराम सकेगा ।

किशोरप्पा को श्री तिरुवेंगडम् के साथ रहते कई साल बीत गये और जैसी कि जज साहब को आशा थी, उनके संरक्षण में किशोरप्पा दिन-दिन अधिकाधिक सुशील और सभ्य बनता गया। यों भी आरम्भ से ही उसमें कोई बुरी आदत नहीं थी; और अब तो उसे पुत्र के रूप में पाकर कोई भी पिता स्वयं पर अभिमान कर सकता था। अब अगर किसी से कहा जाता कि, किशोरप्पा ने एक आदमी का खून किया था, तो लोग कहनेवाले को पागल समझ बैठते। सब उस मुकदमे की बात को भूल चुके थे।

किंतु जज साहब उसे नहीं भूले थे। एक दिन किशोरप्पा को अपने निकट बैठाकर उन्होंने बड़े स्नेह से कहा—"बेटा! आज मैं एक बात तुमसे पूछना चाहता हूँ। बतलाओगे न?"

"क्यों नहीं चाचाजी!" किशोरप्पा ने आदर के साथ जवाब दिया—"आप पूछें, तो क्या मैं बिना बताये रह सकता हूँ?"

"नहीं, पर बात कुछ ऐसी ही है बेटा। पहली बार तुम्हें अदालत में देखकर मैंने तुम्हारे बारे में जो सोचा था, तुम उसके अनुरूप ही निकले—सुशील और समझदार! पर एक सवाल आज तक मेरे मन में चक्कर काट रहा है—क्या तुमने ही उस कलवार का खून किया था?"

क्षण-भर मौन रह किशोरप्पा ने जवाब दिया—"जी हाँ!"

"लेकिन क्यों?" तिरुवेंगडम् ने प्रश्न किया—"अवश्य ही इसके पीछे कोई ऐसा रहस्य होगा; कोई ऐसी बात होगी, जो... क्या तुम मुझे बताओगे नहीं?"

किशोरप्पा की आँखें डबडबा आयीं। निमिष-मात्र के लिए उसके चेहरे पर जैसे दुःख और क्रोध की मिली-जुली रेखाएँ उभर आयीं। पर शीघ्र ही उसने स्वयं पर काबू पा लिया और स्थिर-गम्भीर शब्दों में अपनी कहानी प्रारम्भ की :

"मेरे पिताजी पहले किसी एक दफ्तर में साधारण मुलाजिम थे। स्वभावतः और बहुत से लोगों की तरह वे भी अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं थे और धनी बनने की नयी-नयी योजनाएँ बनाते रहते थे। एक बार उनकी कोई योजना एक धनी आदमी को पसंद आ गयी और वह उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गया। दोनों ने मिलकर एक कम्पनी खोली—उस आदमी का पैसा, पिताजी का दिमाग। किस्मत ने साथ दिया, कम्पनी चल निकली और पिताजी के सपने एक-एक कर पूरे होने लगे।

"किंतु".....किशोरप्पा क्षण-भर के लिए हिचकिचाया—"एक दिन पिताजी के दिमाग में एक खयाल उठा—"सारी मेहनत तो मैं करता हूँ और वह आदमी बैठे-बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

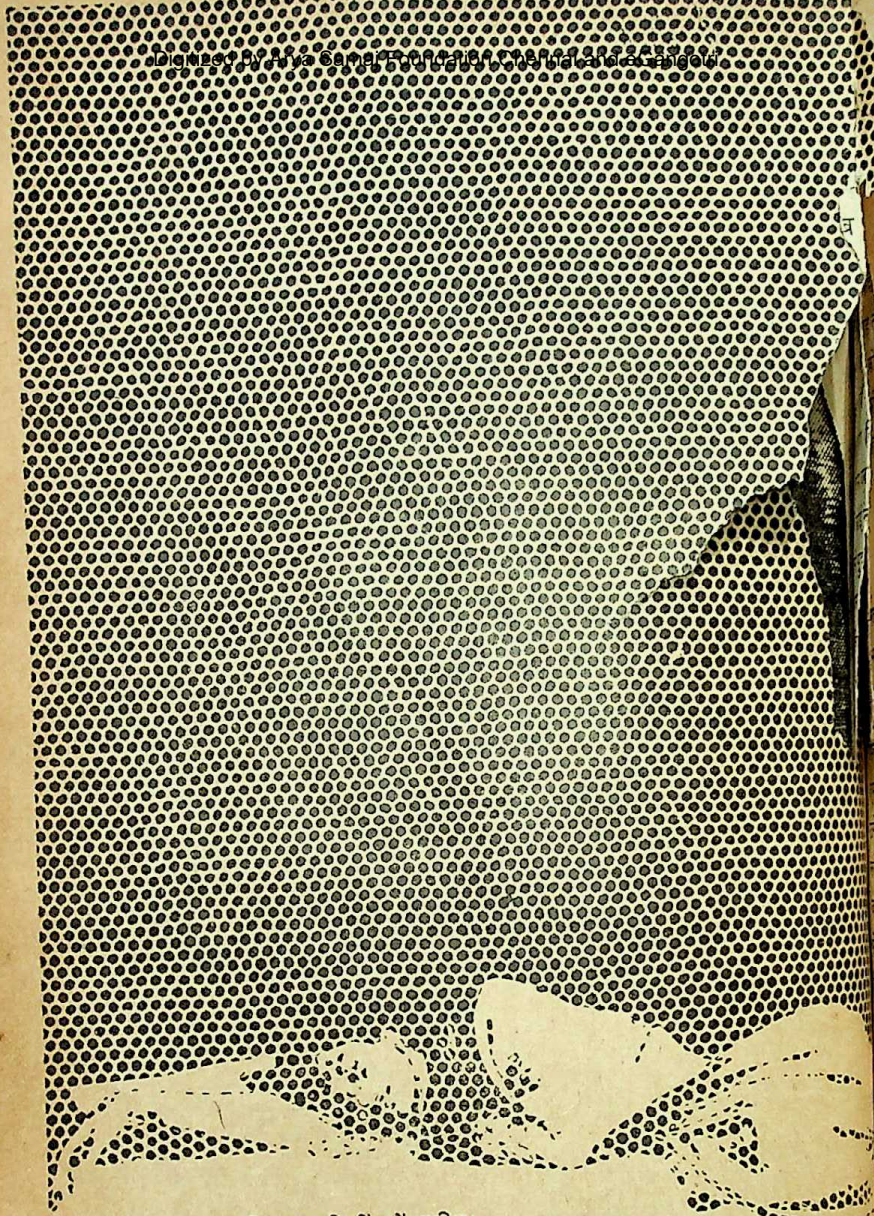

विश्वास की नींद में तल्लीन!

Shilpi 89

call—net केलिको मिल्स, अहमदाबाद की बनी हुई सर्वश्रेष्ठ मच्छरदानी 'केलिनेट' के अन्दर सुख की नींद!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में अधिक हिस्सा ले लेता है।

ी का ऐसा सोचना एक प्रकार था; पर उन्होंने इस बात की नहीं दिया कि, पूँजी का पलड़ा व भारी रहा है। उन्होंने उस ास जाकर स्पष्ट शब्दों में मुनाफे । वह आदमी था एक नम्बर का मुस्कराते हुए आश्वासन दिया— बस अगले महीने ही सारी लेंगे; पर यों भी कम्पनी की ही है।'

में जी फूल उठे। उस न्हें धीरे-धीरे पतन के केलना आरम्भ किया। ो सामग्रियाँ दे-देकर वह के भीतर सोये हुए आल जगाने लगा। फिर शराब पिलाकर उसने रही-सही भी पूरी कर दी। पिताजी अपना सबसे बड़ा शुभचिंतक मानने और एक दिन इसी शुभचिंतक ने रखा, उन्हें अपनी कम्पनी से निकाल और स्वयं सर्वेसर्वा बन बैठा। जी ने बहुत हाथ-पाँव मारे; पर अब होना था।

धीरे-धीरे बेकारी ने पिताजी की रही- विवेक-शक्ति भी नष्ट कर दी। अब वे रात को शराब के नशे में चूर घर पर ते। मुझे बड़ा आश्चर्य होता—आमदनी जरिया नहीं, फिर भी इन्हें शराब कैसे पीने को मिलती है? हिम्मत कर माँ से पूछा; पर वह बेचारी क्या जाने? साहस बटोरकर पिताजी से ही पूछा, तो उन्होंने डाँट दिया। एक दिन पता लगाता-लगाता मैं रामण्णा कलवार के यहाँ पहुँचा, जहाँ पिताजी शराब पीने जाया करते थे। मैंने उसी से पूछा—'भाई तुम पिताजी को इतनी शराब पिलाते हो, उसके पैसे तुम्हें कहाँ से मिलेंगे? पिताजी के पास तो .....'

"वह बड़ी कुटिलता से मुस्कराया और बोला—'अरे, तेरे पिता के पास तो ऐसी चीज है, जिसके लिए इतनी शराब क्या, पूरे शहर की शराब भी कम पड़ेगी। तुझे पीना है, तो आ तू भी मुफ्त पी ले!' बड़े प्रयत्न से मैंने अपने पर संयम रखा और उससे पूछा—'ऐसी कौन-सी कीमती चीज है पिताजी के पास?' कलवार रामण्णा एक आँख दबाता हुआ बड़े अश्लील ढंग से हँसा—'अरे, नहीं समझा? नल्लमुत्तु—तेरी बहन! तेरे पिता ने वादा किया है कि, नल्लमुत्तु को मुझे सौंप देंगे।'

स्वर्गीय कल्कि

"आप सोच सकते हैं..." किशोरप्पा ने एक गहरी साँस लेकर कहा—"उस क्षण मेरे ऊपर क्या बीती होगी? पतन की कैसी पराकाष्ठा! एक नीच कलवार मेरी बहन पर कुदृष्टि डाले और पिताजी को उसके लिए शराब पिला-पिलाकर प्रोत्साहित करे! मेरा सारा शरीर क्रोध से जल उठा। उस क्षण चुपचाप घर लौट आने के सिवा मैं कुछ कर नहीं सकता था। बाद में उसी दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप हैं एक बिगड़े हुए नवाब...'

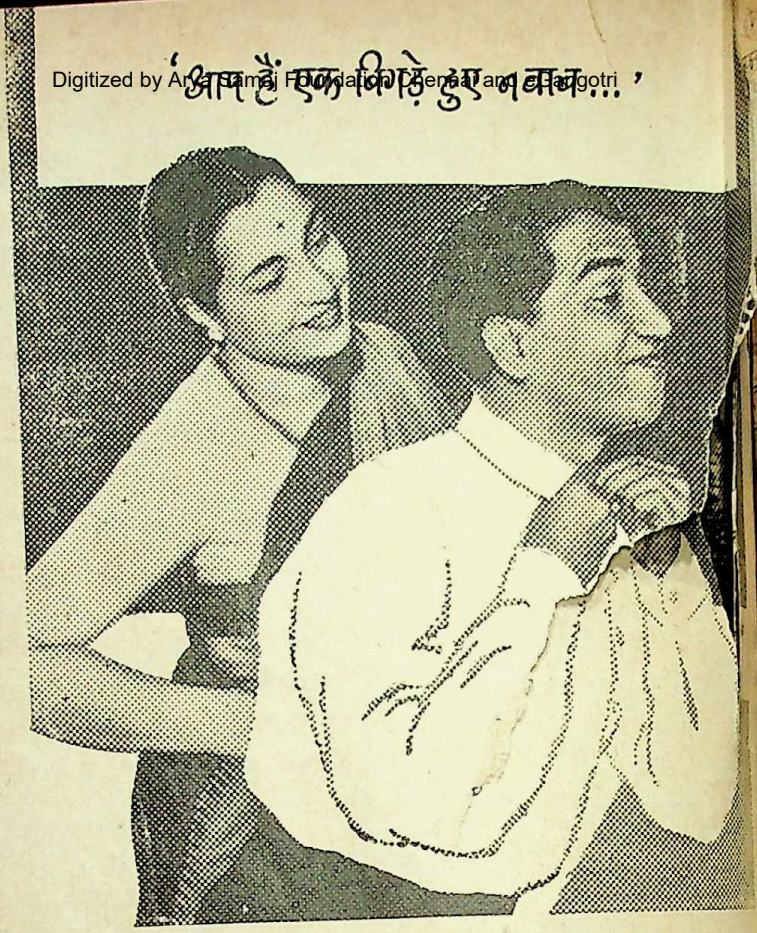

'मेरे पतिदेव एक बिगड़े हुए नवाब से कम नहीं,' डी/८, यूनियन हाउस, माहिम, बम्बई १६ की श्रीमती आर. आर. प्रभु कहती हैं, 'और कपड़ों की धुलाई पर तो इन का माथा मैला होते देर नहीं लगती। लेकिन जब से इन के कपड़े मैं ने सनलाइट से धोने शुरू किये हैं, यह भी ख़ुश हैं और मैं भी। सनलाइट से कपड़े शानदार सफ़ेद और उजले धुलते हैं और इस का ढेरों झाग मैल का कण कण बहा ले जाता है!

गृहिणियाँ जानती हैं कि शुद्ध, मुलायम झागवाले सनलाइट की धुलाई में उन के कपड़ों की भलाई है। आप भी उन से सहमत हो जायेंगी।

सनलाइट

आपके कपड़ों की असली सुरक्षा के लिए

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया और रामण्णा को असाव-
चाकू भोंक दिया
सोस न था, न है। बस....."
चुप हो गया। जज साहब भी
है। उस रात उन्होंने अपनी
खा :
प्पा ने आवेश में आकर हत्या
सही है; किंतु वैसी परिस्थिति
ी यही करता—शायद मैं भी!
अपने सम्मान पर चोट
है।

"हाँ, हत्या तो हत्या ही है। पर रामण्णा की हत्या के लिए जिम्मेदार कौन है? वह व्यक्ति जिसने कि, किशोरप्पा के पिता को धोखा दिया, किशोरप्पा का पिता अथवा स्वयं कलवार?.....जिम्मेदार कोई भी हो, कम-से-कम किशोरप्पा तो नहीं है—मेरी आत्मा उसे मुजरिम नहीं स्वीकार करती। मुझे तो खुशी है कि, मेरी अदालत का फैसला गलत नहीं हुआ और मेरी अंतरात्मा कहती है, ऊपर की अदालत भी यही फैसला करेगी।"

★

ओ शिल्पकार!

र तोड़ रहे हो लिये हथौड़ी
कर

तुम
अनगढ़ पत्थर में
शिल्पकार ओ!
छेनी के बल पर
अद्भुत संसार रचाया
निर्मम निष्ठुर पत्थर में
सरलतम प्यार दिखाकर
कर दिया
भी तो कर सकता है जीवन धारण
इसे जगाने का करना प्रयास है।
रोको हाथ
को रोको तुम
पाषाणों पर जीवन अंकित करना
निर्जीवों में प्राण फूँकने से क्या होगा?
केवल धरती पर जीवन का भार बढ़ेगा
किंतु नहीं जीना आयेगा पाषाणों को
जगती जीवित पाषाणों से भर जायेगी।
इसी लिए ओ शिल्पकार!
तुम जागो भी अब
पाषाणों में प्राण फूँकना
अब छोड़ो तुम
और चलाओ जादू की वह अजब शलाका
मानव के बेडौल अनगढ़े
अंतर मन पर,
दूर करो औ'
अंतर की बेडौल कलुषता।
अंकित कर दो
त्याग प्रेम के मधुमय अनुभव
जिससे मानव सीख सके धरती पर जीना।

—नवल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल तभी तक सुन्दर हैं जब तक स्वस्थ हैं

—यही राज़ है भारतीयों के घने, काले और स्वस्थ बालों का। उसे सिर में मलना बालों की जड़ों को तेल खुल कर मिलना चाहिए। इस से वे घने उगेंगे और वहाँ जो प्राकृतिक तेल पहले-से ही हैं, उन की पूर्ति भी होगी। इसलिए आप जो तेल इस्तेमाल करना चाहेंगे, उसे सावधानी से चुनना महत्वपूर्ण है।

टाटा के कोकोनट और कैस्टर हेअर ऑयल शुद्ध और पौष्टिक होने से बालों की जड़ों को ताकत पहुंचाते हैं...घने और स्वस्थ-सुंदर बाल उगाने में मदद करते हैं...और उन्हें खास चिपचिपा किये बिना एक नयी शोभा प्रदान करते हैं।

टाटा के कोकोनट और कैस्टर हेअर ऑयल की भीनी-भीनी सुगंध बड़ी प्यारी है और ये तीन साइज़ की शीशीयों में मिलते हैं।

टाटा के हेअर ऑयल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट वाङ्मय

भारतीय इतिहास की मीमांसा

लेखक : जयचंद्र विद्यालंकार; प्रकाशक : हिन्दी भवन, इलाहाबाद; पृष्ठसंख्या:७११; मूल्य :१२ रुपये ।

१९४१ में पटना यूनिवर्सिटी में श्री जयचंद्र विद्यालंकार ने 'भारतीय इतिहास में विकास की प्रक्रिया' विषय पर दस व्याख्यान दिये थे। इन व्याख्यानों का उद्देश्य भारतीय इतिहास की घटनाओं की मूल प्रवृत्तियों तथा तत्सम्बंधी प्रश्नों की व्याख्या करना था। इन व्याख्यानों के निम्नलिखित विषय थे :

१–क्या भारतीय जाति की आधुनिक अवस्था सनातन रही है ?

२–वैदिक एवं उत्तर-वैदिक, महाजनपद तथा नंद-मौर्य युग;

३–सातवाहन, शुंग व शक ;

४–भारशिव, वाकाटक एवं गुप्त;

५–पहला मध्य युग ।

६–पिछला मध्य युग या सल्तनत युग ;

७–मुगल-मराठा युग : भीतरी विकास;

८–मुगल-मराठा युग : यूरोपीयों के मुकाबले में भारतीय;

९–अँग्रेजी प्रभुता का युग;

१०–उपसंहार ।

इन व्याख्यानों में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्नों पर प्रकाश डाला गया, जो कई शताब्दियों बाद आज भी इतिहासज्ञों के कौतूहल के विषय बने हुए हैं । उनमें कुछ निम्न हैं : १–क्या भारतीय दृष्टि मूलतः आध्यात्मिक और यूरोपीय दृष्टि भौतिक है? २–आर्य फैलाव का सांस्कृतिक पहलू; ३–अशोक की धर्म-विजय नीति की आलोचना; ४–गुप्त-युगीन भारत का समकालीन जगत् में स्थान; ५–मध्य एशिया पर तुर्क और चीनी आधिपत्य ; ६–पिछले मध्य युग में हिन्दुओं और तुर्कों की राजनीतिक मनो-

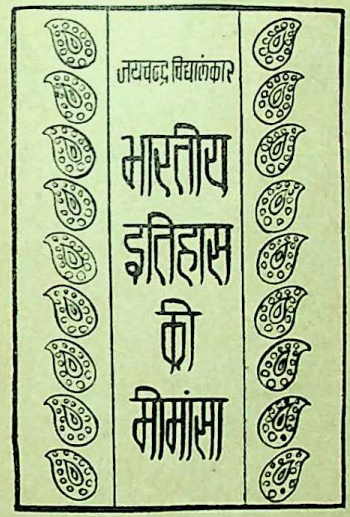

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं जी, अपनी हर्क्युलिस को खतरे में नहीं डालूंगा —अगल-बगल में नहीं चलाऊंगा"

एक हर्क्युलिस खरीदने के लिये ये और इनके परिवार के लोग तरह-तरह के त्याग करते—बस के किराये और दोपहर के भोजन से, साड़ियों और गहनों से पैसे बचाते। तभी तो ये इसे ठीक से संभालकर रखते हैं।

हर्क्युलिस ऐसी साइकिल है कि दुनिया के १३४ से अधिक देशों में इसकी बेहद माँग रहती है। इसकी जगमग सुन्दरता, अनायास एकरस चाल, इसे सबसे उत्तम साइकिल बनाती है जो बाजार में मिल सकती है।

हर्क्युलिस का एक-एक पुर्जा अत्यन्त कठोर मानदण्ड के अनुसार भारत के सबसे बड़े, सबसे सज्जित कारखाने में बनाया जाता है। एक विशेष 'सुप्रा ग्रेनोडाइजिंग' प्रणाली से इसे जंग लगने से बचाया जाता है और सुपर ग्लॉस एनामेल का फिनिश देता है जो बनी रहती है।

आपकी साइकिल आपकी पूँजी है और हर्क्युलिस से बेहतर साइकिल भला कहाँ मिलेगी?

हर्क्युलिस

साइकिल से कहीं बढ़कर है—यह तो जीवन-साथी है

प्रस्तुतकारः
टी० आई० साइकिल्स आफ इण्डिया
अम्बातुर—मद्रास के निकट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

JWTTIC 1147

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ति; ७–महाराष्ट्र के नवजीवन की अन्य
ातों पर प्रतिक्रिया; ८–भारतीय राज-
नाओं की विचारहीन राजनीति; ९–
ारतीय मोहनिद्रा की व्याख्या; १०–
नानिया के भारतीय साम्राज्य का
विश्वस्थिति पर प्रभाव।

श्री जयचंद विद्यालंकार ने इन प्रश्नों पर
ौलिक विवेचन किया है। आज के पाठक
इस विवेचन से नया ज्ञान मिलेगा,
के अनेक भ्रमों का मूलोच्छेद होगा,
हम निश्चय से कह सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में इन व्याख्यानों के साथ
परिशिष्ट भी जोड़े गये हैं। ये परिशिष्ट
ारतीय इतिहास की अनमोल निधि हैं।
में कुछ ऐसे तथ्य दिये गये हैं, जो
ी तक अज्ञात थे।

पुस्तक के साथ १६ नक्शे भी हैं। उनके
छ विषय हैं: १–भारतवर्ष की भाषाएँ,
–आर्यों का भारत में फैलना, ३–गंगापार
हिन्द, ४–भारत का उत्तर-पश्चिमी
मांत, ५–भारत की तुर्क सल्तनतें,
–भारत का पच्छिमी सीमांत।

पुस्तक की विशिष्ट उपयोगिता निर्वि-
द है। श्री जयचंद विद्यालंकार ने इससे
'भारतीय इतिहास की रूपरेखा पुस्तक'
खी थी। श्री काशीप्रसाद जायसवाल,
नीलकंठ शास्त्री, श्री सुनीतिकुमार
दि प्रमुख विद्वानों ने मुक्तकंठ से पुस्तक
अद्वितीय कहा था। हमें विश्वास है कि
स्तुत पुस्तक यशस्वी लेखक की कीर्ति को
र करने में सहायक होगी। प्रस्तुत ग्रंथ
को हम निस्संकोच भारतीय इतिहास पर
सर्वश्रेष्ठ पुस्तक कह सकते हैं।–स०का०वि०

★

तपस्विनी

लेखक : कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी; मूल गुजराती से हिन्दी में अनुवाद; अनुवादक : पद्मसिंह शर्मा कमलेश; खंड–१ (प्रणय); प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली; पृष्ठसंख्या २४८; मल्य ५-५० रुपये।

'तपस्विनी' कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी का नया गुजराती उपन्यास है। प्रस्तुत खंड–१ (प्रणय) इस उपन्यास का एक अंग है। गुजराती उपन्यासकारों में चोटी के लेखकों में मुंशीजी का स्थान है। धूमकेतु, गुणवंत राय आचार्य की भाँति मुंशीजी को भी स्वर्णिम अतीत से प्रेम है। उसी से दिवास्वप्न के पुनः अवतरण की कल्पना इस खंड में की गयी है। वर्तमान के प्रति तीव्र असंतोष व्यक्त किया गया है। दैवी चमत्कार शुद्ध ब्राह्मणत्व के आधार पर देवदुर्लभ भारत-भूमि पर पुनः रामराज्य की स्थापना की कल्पना की गयी है।

उपन्यास के घटनाचक्र इतने रोचक व सजीव हैं कि, पाठक कहीं भी नहीं ऊबता। घटनाचक्र के साथ ही साथ प्रेरणादायी सजीव चरित्रों की सृष्टि की गयी है। १८५७ के स्वातंत्र्य-यज्ञ में दीक्षित कर्मकांडी सनातनी ब्राह्मण गणपति शास्त्री, महत्वाकांक्षी रवि, राज-वंश के अवशेष उदय, समर, हंसकुँवर बा, महारानी, स्वच्छंद प्रणयिनी एलिस, मीरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

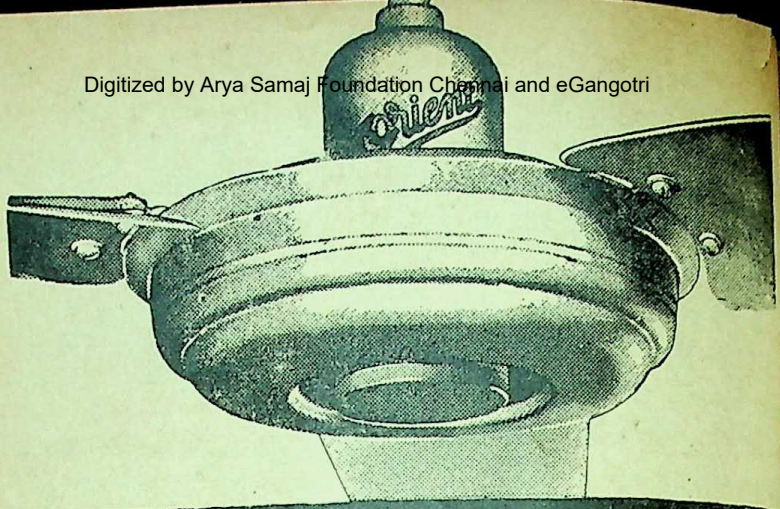

अनुपम निर्माण-कला के योग से उत्तम
पंखे बनते हैं

यही है
ओरिएन्ट
प्रणाली

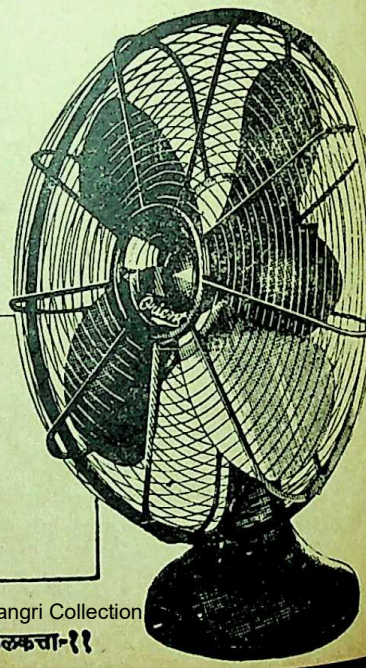

ओरिएन्ट
पंखा

सौन्दर्य और सेवा में
सदा अग्रगामी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

ओरिएन्ट जेनेरल इण्डस्ट्रीज लि०, कलकत्ता-११

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की-सी भक्ति से अनुप्राणित राजोबा, नांदेड के स्वामीजी, बैरिस्टर राधा रमण, पतिपरायणा साध्वी शीला, गांधीवादी मास्टरजी तथा उनके लड़के आदि इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं।

गणपति शास्त्री के हृदय में देश को स्वाधीन करने की आग धधक रही है। रवि में वे इसी हुताग्नि को प्रज्वलित करते हैं। पढ़ा-लिखाकर उसे योग्य बनाकर आतंकवादी सान्याल को सौंप देते हैं। वह रवि को कम्यूनिस्ट दल में उतार ले जाता है, जहाँ उसका परिचय कम्यूनिज्म, हड़तालों, गुप्त संगठन प्रक्रिया व सोना-जैसी स्वच्छंद लड़की से होता है।

इसी घटनाचक्र की एक कड़ी बैरिस्टर राघवरमण व शीला हैं। बैरिस्टर 'माडर्न' है। नये फूल तोड़ने व नये जाम चखने का उसको चस्का है। शीला इस 'माडर्निज्म' से घबरा जाती है। वह भागकर गांधीजी की शरण में पहुँचती है। परंतु पति का तार पाकर फिर लौट आती है और घर के ही एक कोने में नैतिक जीवन व्यतीत करने लगती है।

राजवंशी उदय अभारतीय एलिस को [illegible] भारतीय वातावरण में वह छटपटा उठती है और रणचंदानी नामक 'रोमियो' के चक्कर में आकर उसे देह-दान दे बैठती है। वह उसके साथ विलायत रवाना हो जाती है; पर रणचंदानी जहाज पर ही नहीं पहुँचता। अंततः उदय से वह सम्बंध-विच्छेद की माँग करती है।

राजवंश में गद्दी-प्राप्ति के लिए होनेवाली कूट मंत्रणा, रियासती ठिकानों के संघर्ष, डाकुओं के उपद्रव, अनाचार में से मार्ग निकालकर कुंदन की तरह दमकनेवाले संत, जो पाप-पुण्य की परिभाषा करते हैं, उपन्यास की ये घटनाएँ अत्यंत रोचक हैं। यह अवश्य कहा जा सकता है कि, विरोधी राजनीतिक दलों का चित्रण पर्याप्त तटस्थता के साथ नहीं किया गया।

अनुवाद भी सुंदर बन पड़ा है तथा कहीं भी अटपटा नहीं लगता। मुंशीजी की लेखनी का लोहा मानना ही पड़ेगा कि, वे पाठक को कहीं ऊबने नहीं देते हैं। साथ ही उनके उपन्यासों का मूल आदर्श तेजस्विता, अंत तक बन रहत है।

★

मांटेन कहा करता था कि, तीन समागमों को वह आवश्यक समझता है—प्रेम-समागम, मित्र-समागम और ग्रंथ-समागम। तीनों में बड़ी समता है। लेकिन शायद इन तीनों में ग्रंथ सबसे वफादार हैं। मैंने यह भी पाया है कि, ग्रंथ प्रायः अपने लेखकों से अधिक सयाने और वाक्पटु होते हैं।

—आंद्रे मोरवा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुलाबी जैसे उषाकी लजीली लालिमा
गुलाबी जैसे गुलाबकी शर्मीली कलियाँ
गुलाबी रंगमें अब आपका
ब्रीज़
सौंदर्य साबुन

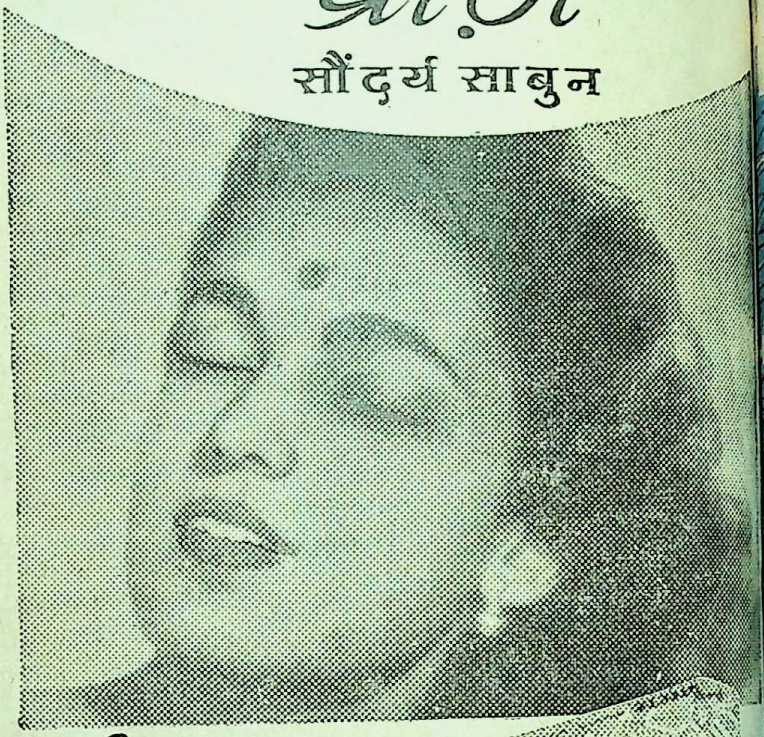

ब्रीज़...सुंदर, अति सुंदर...
गुलाबी आवरणमें अब गुलाबी
रंगकी टिकिया! अनुपम गुलाबी
ब्रीज़...सुगंधित, मुलायम झाग-
वाला ब्रीज़...आपकी सुंदरताको
संवारता है...निखारता है!

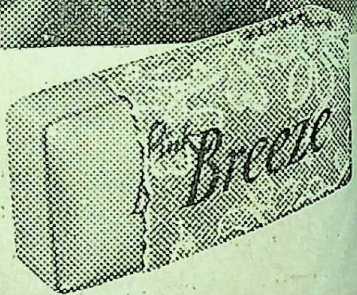

ब्रीज़ – अधिक सुंदर रंगरूप के लिए
हिंदुस्तान लीवर लि. ने इरस्मिक लण्डन के लिए भारतमें बनाया
BZ. 19-10

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनमोल मोती

जान स्टीनबेक

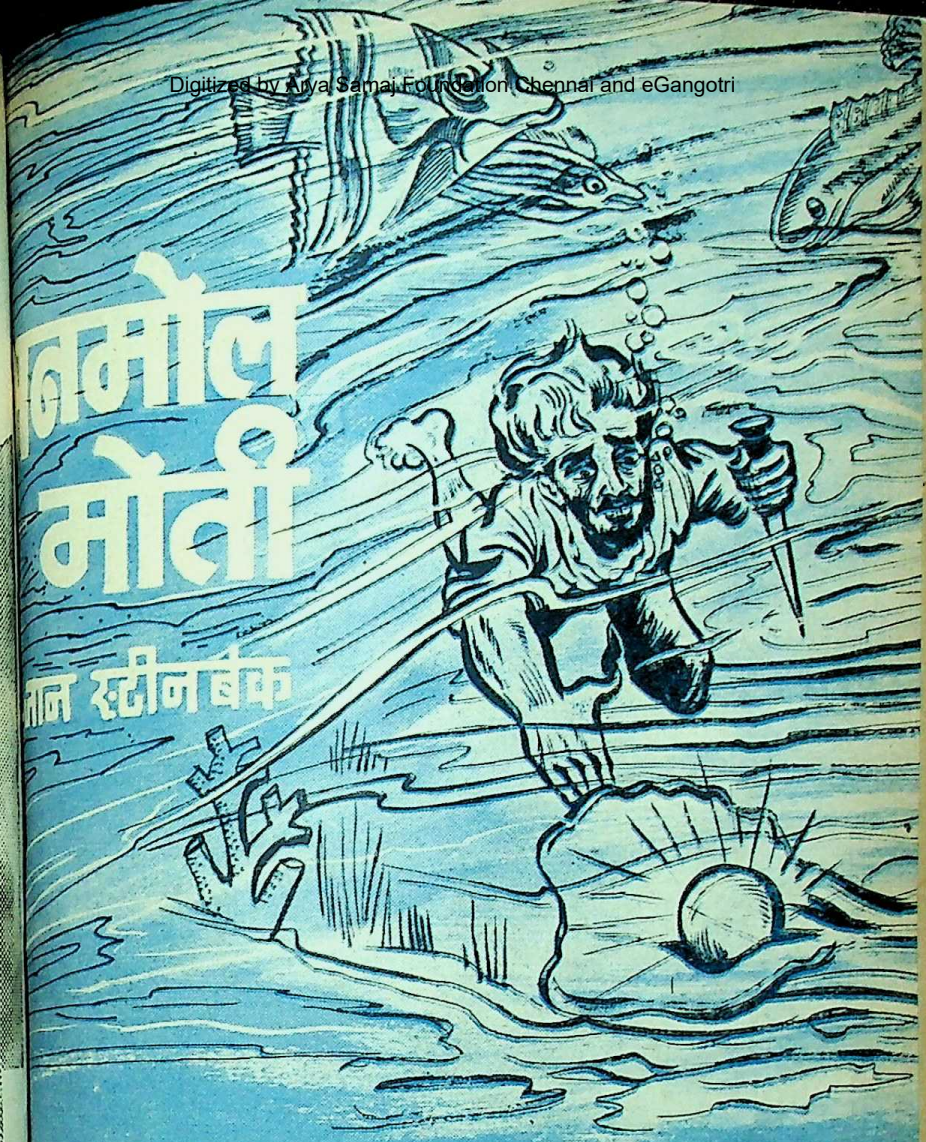

चित्त में यदि सहज-सात्विक शुचिता है, तो अभाव की मरुभूमि में भी जीवन-जल प्रकर्दम होकर बह सकता है; परंतु जब वैभव की अभाग्यपूर्ण व्यग्रता जीवन-जल को कर्दमित कर देती है, तो उस शुचिता को सर्वस्व आहुति देकर ही पुनः पाया जा सकता है। मेक्सिकी मछुवा-परिवार के सन्निवेशी में इसका सबल सहृदय चित्रण।

रूपांतर : विजयलक्ष्मी गौर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोज की तरह आज भी कीनो की आँखें सवेरे-सवेरे खुल गयीं। कोपड़ी के बाहर हल्की-हल्की रोशनी चटखने लगी थी। मुर्गे की बाँग और सागर-तट से टकारती लहरों की आवाज सुनाई दे रही थी। सामने रस्सी से झूलते हुए लकड़ी के बक्से में नन्हा कोमोटीटो आराम से सो रहा था।

जुआना भी रोज की तरह उसी के साथ जाग गयी और शरीर पर से नीला शाल हटाकर उठ खड़ी हुई; बक्से में लेटे कोमोटीटो का मुखड़ा चूमा और फिर रोज की तरह नाश्ता तैयार करने में जुट गयी। वह एक गीत गुनगुना रही थी—सागर का गीत, जिसे उसके पुरखों से रचा था।

कीनो भी उठा और कम्बल लपेटकर सागर की गोद में खिलती सुबह को देखने के लिए झोपड़ी से बाहर निकल गया। आज की सुबह भी दूसरी सुबहों-जैसी ही थी; पर आज की सुबह में कीनो एक प्रकार की पूर्णता का आभास पा रहा था।

अच्छा तगड़ा और मजबूत जवान था कीनो। उसके घने काले बाल उसके माथे पर सदा झूलते रहते थे। बड़ी देर तक वह उषा के फैलते हुए प्रकाश को देखता रहा और जब धूप झोपड़ियों पर उतर आयी, सवेरे की शीतल समुद्री हवा ने विदा ले ली, उसने कम्बल उतार दिया और नाश्ता करने झोपड़ी में चला आया।

आज भी जुआना ने रोटी और चटनी का नाश्ता तैयार किया था। रोज की तरह उसे खाकर कीनो ने संतोष की गहरी साँस ली। यही मानो उनके परस्पर प्रेम [illegible] करने के लिए पर्याप्त था।

तभी अचानक कीनो और जुआना [illegible] की नजर झूले की ओर उठी। वे भय से [illegible] उठे। बच्चा खुशी से किलकारी [illegible] हुआ हाथ पैर उछाल रहा था; उधर [illegible] काला बिच्छू रस्सी पर से रेंगता हुआ [illegible] की ओर आ रहा था। उसका डरावना [illegible] सीधा तना हुआ था।

कीनो ने बिच्छू को पकड़ने के लि[illegible] हाथ बढ़ाया। लेकिन इतने में बच्चे [illegible] नन्ही बाँह के झटके से झूले की [illegible] हिली, बिच्छू बच्चे के ऊपर गिरा और [illegible] डंक बच्चे के कंधे में घुस गया। क्षण-[illegible] में कीनो की बलिष्ठ हथेली ने बिच्छू [illegible] मसल डाला; लेकिन बच्चा चीखने ल[illegible]

जुआना ने बच्चे को गोद में उठा लि[illegible] और घाव को चूसकर जहर निकालना [illegible] किया। बच्चे का रोना-तड़पना सुनकर [illegible] का बड़ा भाई जुआन टामस और [illegible] पत्नी अपोलोनिया दौड़े आये। जरा-सी [illegible] में झोपड़ी पड़ोसियों से भर गयी।

जुआना ने कीनो को पुकारकर [illegible] "डाक्टर को बुलाओ।"

सामने खड़े पड़ोसियों ने आश्चर्य [illegible] दोहराया—"जुआना तो डाक्टर बुलाने [illegible] कह रही है!"

डाक्टर! डाक्टर तो इस बस्ती में [illegible] तक कभी नहीं आया। गरीबों की बस्ती [illegible] डाक्टर भला आये भी क्यों?

लोगों ने कहा—"डाक्टर तो यहाँ [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...योगा।" इस पर जुआना दृढ़ता से बोली—
...वह नहीं आयेगा, तो हम ही वहाँ चलेंगे।
...बच्चे को शाल में ढँके आगे बढ़ी।

जुआना का डाक्टर के यहाँ जाना सारी ...ली के लिए बड़े महत्व की बात थी। ...वह वहाँ जा रही थी, जहाँ सिर्फ पैसेवाले ...ग ही जा सकते हैं। सो क्या होता है, ...देखने के लिए भीड़ भी जुलूस बनाकर ...के पीछे चल पड़ी।

धीरे-धीरे झोपड़ियाँ पीछे रह गयीं, ...की इमारतें दीखने लगी। ...जुलूस गिरजे के सामने ...गुजरा, तो दरवाजे पर ...भिखारी भी जुलूस के ...थ हो गये। वैसे भी आज ...व के धंधे में मंदी थी।

...डाक्टर की हवेली के ...टक के सामने कीनो पल-...र हिचकिचाया। डाक्टर ...नो कौम का था, जो ...छले चार सौ वर्षों से ...नो की जाति का शोषण करती आ ...ही थी। इसलिए उसके द्वार पर कीनो ...मन दीनता, भय और क्रोध की मिली-...भावनाओं से एक साथ ही भर उठा। ...टर की हत्या कर देना उसके लिए ...सान था; पर सहायता की याचना करना ...ल। उसने फाटक की साँकल को ...खटखटाया और टोप सिर पर से उतारकर ...नों के आने की प्रतीक्षा करने लगा। ...ना बच्चे को शांत कराने में लगी थी।

कुछ क्षण बाद विशाल फाटक जरा-सा खुला। कीनो की ही जाति के एक सेवक ने गर्दन निकालकर बाहर देखा। कीनो ने मछुवों की बोली में कहा—"मेरे बच्चे को बिच्छू ने काट लिया है। इलाज कराना है। यह मेरा पहला ही बच्चा है।"

"जरा ठहरो, मैं जाकर कहता हूँ।" नौकर ने शोषक वर्ग की भाषा में कहा और फाटक बंद कर लिया।

भीतर मोटा-ताजा डाक्टर चाँदी के बर्तनों में नाश्ता कर रहा था। दरवाजे पर खड़े नौकर पर नजर पड़ते ही बोला—"क्या है?"

"बच्चे को लेकर एक आदमी आया है। कहता है, बिच्छू ने काटा है।"

"पूछो, क्या उसके पास पैसा है?"

नौकर लौट आया और फाटक में से गर्दन निकालकर अपनी बोली में पूछाने लगा—"फीस का पैसा लाये हो?"

मैले कम्बल की तहों में हाथ डालकर कीनो ने मटमैले कागज की एक पुड़िया निकाली और खोलकर आगे बढ़ा दी। उसमें सात-आठ छोटे-छोटे बदसूरत मोती थे। उन पर नजर पड़ते ही नौकर बोला—"डाक्टर साहब घर पर नहीं हैं।" और फटाक-से फाटक बंद हो गया।

भिखारी वापस गिरजे की ओर मुड़

जान स्टीनबेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गये। पड़ोसी भी वापस लौट गये, जिससे उनकी उपस्थिति में बेटी को विदाई न उठानी पड़े। बड़ी देर तक कीनो फाटक के सामने सिर झुकाये खड़ा रहा। फिर टोप सिर पर रख लिया और फाटक पर एक घूँसा मारा। हाथ की अँगुलियाँ कट गयीं और खून वह निकला।

× × ×

दिन चढ़ आया था; लेकिन सागर के तट पर अभी कोहरा फैला हुआ था, जिसके परदे में से सभी कुछ धुँधला दीख रहा था। कीनो और जुआना धीरे-धीरे तट पर आये और अपनी नाव के पास खड़े हो गये। उनके पास नन्हे कोमोटीटो के बाद यही एक कीमती चीज थी। नाव काफी पुरानी थी और कीनो को बाप-दादों से विरासत में मिली थी। यही उनकी जायदाद थी और यही उनका रोजी-रोटी का जरिया।

कीनो पत्थर, रस्सियाँ और टोकरी नाव में रखकर गोता लगाने की तैयारी करने लगा। जुआना ने नाव में कम्बल बिछाकर बच्चे को उस पर लेटा दिया। बच्चे का शरीर बुखार से खूब तप रहा था। उसने समुद्री सिवार की पुलटिस बनाकर बच्चे के कंधे पर लगा दी थी। वह मन में प्रार्थना कर रही थी—"हे भगवान्, कीनो को आज बढ़िया-सा मोती मिल जाये, जिससे बच्चे का इलाज करा सकें।"

कीनो और जुआना नाव में बैठ गये और पल-भर में नाव लहरों पर तैरती दूर निकल गयी। कीनो रस्सी के सहारे उतर-कर सागर की गोद में उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ सीप और घोंघे बिखरे थे। यही वह मोती-क्षेत्र था, जिसने कीनो के सम्राट् को मालामाल बनाया था।

कीनो ने एक पैर रस्सी में अटका लिया और जल्दी-जल्दी सीपियों को टोकरी में भरना शुरू किया। उसका दिल प्रसन्नता से धड़क रहा था।.....हो सकता है, हर सीप में मोती हो!

ऊपर नाव में बैठी जुआना गले में लटके तावीज पर अँगुलियाँ फिरा रही थी। उसके चेहरे पर दृढ़ता थी—वह शान्त मानवीय दृढ़ता, जो ईश्वर के हाथों भाग्य को छीन लाती है।

अचानक कीनो के सामने ही एक चट्टान पर एक सीप ने धीरे-से मुँह खोला और बंद कर लिया। कीनो ने देखा—उसकी चमक निराली थी। उसने सीप को उठाकर छाती से चिपका लिया और रस्सी को खींच कर देखते-देखते ऊपर पहुँच गया।

कीनो की आँखों की चमक पर से जुआना समझ गयी कि, कोई बड़ा मोती मिल गया है। फिर भी कुछ कहा नहीं। वह जानती थी कि, अधीरता दिखाने पर कभी-कभी भगवान् दिया हुआ वरदान भी वापस ले लेता है।

कीनो भी बड़ी देर तक उस सीप को काटने की हिम्मत न कर सका; तब जुआना अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं कर सकी, बोली—"इसे खोलो।" चाकू सीप में घुस गया। घोंघे की मांसपेशियों में हरकत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पन्न हुआ और बंद हो गया। सीप के दो खोलों के बीच गोल-गोल बड़ा-सा मोती चमक रहा था।

कीनो ने अनुभव किया, जैसे यह मोती उसके सपनों का प्रतीक है। जुआना भी पास आकर मोती को देखने लगी, जो कीनो के हाथ में था। यह वही हाथ था, जो खबर डाक्टर के फाटक से टकराकर लहू-लुहान हो गया था।

खबर की रफ्तार तो औरतों की जबान से भी तेज होती है। पल-भर में सारे कस्बे में यह खबर फैल चुकी थी। हर मछुवे की जबान पर उसी की चर्चा थी। बगीचे में टहलते पादरी ने सुना – कीनो ने एक बहुमूल्य मोती पाया है। और उसे याद आया कि, गिरजे की मरम्मत करानी है।

डाक्टर ने सुना और सामने बैठी मरीज को बताने लगा –"मैं ही तुमके बच्चे का इलाज कर रहा हूँ। उसे बिच्छू ने काटा लिया है।"

गिरजे के दरवाजे पर बैठनेवाले भिखमंगों ने भी सुना और सुनकर मुस्करा दिये। वे यह जानते थे कि, निर्धन से जो अचानक धनी बन जाता है, वह बड़ा उदार होता है।

कस्बे के मोती के व्यापारियों ने भी सुना। वे अंदाज लगाने लगे कि, मोती का अधिक-से-अधिक कितना मूल्य देना है और कम-से-कम कितना। बहुत कम देने में खतरा था। कई बार मछुवों ने थोड़े दाम पर बेचने के बजाय मोती गिरजे को दे देना बेहतर समझा था।

हर आदमी का सम्बंध कीनो के मोती से हो गया था। प्रत्येक के सपनों, विचारों और इच्छाओं का केंद्र बन गया था मोती। बीच में एक ही बाधा थी–कीनो, जिसे अब हर कोई अपना दुश्मन समझने लगा था।

लेकिन कीनो और जुआना इन बातों से अनजान थे। वे तो खुश थे और समझ रहे थे कि, सब उनकी खुशी में खुश हैं।

शाम को कीनो और जुआना के घर लौटते ही झोपड़ी पड़ोसियों से भर गयी। मोती कीनो की मुट्ठी में बंद था और सब लोग टकटकी बाँधकर उसी के चेहरे की ओर देख रहे थे। जुआन टामस ने पूछा–"अब तो कीनो, तुम अमीर हो गये हो। इस धन से क्या-क्या करोगे? धन मिलने पर आदमी बहुत कुछ करता है।"

जीवन में कीनो ने न जाने क्या-क्या पाना चाहा था और फिर उनका मिलना असम्भव समझकर छोड़ दिया था। वे सारी इच्छाएँ आज फिर उस मोती के रूप में जाग उठी थीं। मोती में उसे दिखाई दिया–वे दोनों पति-

सागर-देवता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पत्नी बच्चे को लिये सूली के सामने सिर झुका रहे हैं। उनकी शादी गिरजे में हो रही है।.....खर्च की वजह से अभी तक वे गिरजे में शादी नहीं करा पाये थे। उसने धीमे-से कहा—"पहले हम गिरजे में शादी करेंगे।"

उसने फिर मोती में देखा—वह और जुआना श्वेत वस्त्र धारण किये हैं और नन्हा कोमोटीटो नीला सूट पहने है। और वह बोल उठा—"फिर हम बढ़िया नये कपड़े सिलवायेंगे।" मोती पर नजर गड़ाये ही वह फिर बोला—"और मैं एक पिस्तौल खरीदूँगा।" नये अमीर को अपने धन की रक्षा भी तो करनी होगी। पड़ोसियों में काना-फूसी होने लगी—"पिस्तौल.....कीनो पिस्तौल खरीदेगा।" और कीनो कह रहा था—"हमारा बच्चा पढ़ना-लिखना सीखेगा और अज्ञान के बंधन से छूट जायेगा। इस बंधन के कारण तो हम अन्याय के शिकार होते रहे हैं।"

आज तक किसी ने कीनो को इतना बोलते नहीं सुना था। अपनी बातों पर वह स्वयं भी चकित हो उठा। उसने मोती को कस कर मुट्ठी में बंद कर लिया।

अँधेरा हो जाने पर जुआना ने उठकर चूल्हा सुलगाया। तभी पीछे से किसी ने कहा—"पादरी साहब आ रहे हैं।" पुरुषों ने सिर पर से टोप उतारे, स्त्रियाँ जरा पीछे सरककर खड़ी हो गयीं।

अधेड़ उम्र के पादरी ने आशीर्वाद दिया—"कीनो, तुम श्रेष्ठ पुरुष हो—चर्च के रक्षक। मैंने सुना है, तुम्हें मोती मिला है।"

कीनो ने मुट्ठी खोल दी और पादरी की आँखें चौंधिया गयीं। वह बोला—"ईश्वर को धन्यवाद दो, जिसकी कृपा से तुम्हें अनमोल मोती प्राप्त हुआ है। ईश्वर से प्रार्थना करो कि, आगे भी वह मुझे सुरक्षित रखे।" इसका जवाब जुआना ने दिया—"हाँ, पिता, हम ऐसा ही करेंगे और अब हम चर्च में शादी भी करेंगे..."

"बड़ी खुशी की बात है कि, तुम्हारे मन में पवित्र विचार उठ रहे हैं। बच्चो, ईश्वर तुम्हें सुखी रखे।" पादरी ने कहकर मुड़ा और धीरे-धीरे चला गया।

कीनो ने फिर कसकर मुट्ठी बंद कर ली और संदेह-भरी दृष्टि से अपने चारों ओर देखा। एक-एक करके सब पड़ोसी चले गये। जुआना खाना बनाने लगी और कीनो झोपड़ी के दरवाजे में खड़ा बाहर की ओर देखने लगा।

कुछ देर बाद उसने देखा—सामने से दो आदमी चले आ रहे हैं.....एक के हाथ में लालटेन है। वे झोपड़ी के सामने आकर रुक गये। उनमें से एक था डाक्टर और दूसरा उसका नौकर। उन्हें देखते ही उसके हाथ का घाव जैसे जलने लगा।

"बच्चा अब कैसा है? सवेरे मैं घर पर नहीं था। अब खबर मिलते ही चला आया हूँ।" डाक्टर ने कहा। कीनो दरवाजे के बीचों-बीच खड़ा रहा। उसकी आँखों में एक साथ भय की छाया भी थी और क्रोध की लपटें भी। पर वह अपने प्रथम बच्चे की

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान का खतरा उठाने को तैयार नहीं था। वह दरवाजे से हट गया और डाक्टर भीतर आ गया।

लालटेन की रोशनी में डाक्टर ने बच्चे के सूजे हुए कंधे और आँखों को देखा और बोला—"जहर अंदर चला गया है।"

वाकई कंधा नीला पड़ गया था।

डाक्टर सहानुभूति-भरे शब्दों में बोला—"मैं जहर निकलने की दवा दिये देता हूँ। इसका असर एक घंटे के अंदर होगा। थोड़ी देर बाद मैं फिर आऊँगा। अच्छा हुआ, जो मैं वक्त पर आ गया; वरना..... पर अब कोई डर नहीं।"

डाक्टर के जाते ही कीनो ने एक फटे कपड़े में मोती को लपेटा और एक कोने में गढ़ा करके उसमें दबाकर मिट्टी ढँक दी।

घंटे-भर बाद खाना खाकर कीनो ने सिगरेट जलायी ही थी कि, जुआना ने कातरता से पुकारा और बच्चे की ओर इशारा किया। बच्चे के मुँह से झाग-सी निकल रही थी। शीघ्र ही बात आसपास की झोपड़ियों में भी फैल गयी। धीरे-धीरे पड़ोसी फिर आ जुटे और ईश्वर की इच्छा की दुहाई देने लगे।

तभी भीड़ को हटाता हुआ डाक्टर नौकर के साथ फिर आ पहुँचा। बच्चे को गोद में लेकर बोला—"जहर का असर हो गया है।" उसने तुरंत चिकित्सा शुरू कर दी। कुछ देर में बच्चा शांत होने लगा। जुआना श्रद्धा-भरे नेत्रों से उसे देखती रही।

बैग बंद करके चलते हुए डाक्टर बोला—"डरने की बात नहीं; बच्चा ठीक हो जायेगा.....फीस कब तक दे सकोगे?"

"मोती बिक जाये, तब।"

"मोती!" आश्चर्य-सा प्रकट करते हुए डाक्टर बोला—"अरे, क्या तुम्हारे पास कोई मोती भी है?"

"हाँ हाँ, बड़ा कीमती मोती....." सारे पड़ोसी एक साथ बोल उठे।

"अच्छा, मुझे तो पता ही नहीं था। तुमने उसे हिफाजत से तो रखा है न? चाहो तो मेरे पास भी रखवा सकते हो।"

"नहीं मैंने हिफाजत से रखा है। कल तो बेचना ही है, तब आपकी पूरी फीस चुका दूँगा।"

डाक्टर की नजरें कीनो की आँख पर जमी थीं। वह बखूबी जानता था कि, मोती झोपड़ी में ही कहीं गड़ा होगा और उस तरफ कीनों की नजर बातचीत के दौरान में अवश्य जायेगी। उसने कहा—"जरा ध्यान रखना, चोरी न हो जाये।" और बरबस कीनो की नजर एक कोने की

रूपरानी

एक मेक्सिकी शिल्प

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एनासिन'

चार दवाइयों के कारण

दर्द से आराम देती है

स्नायुओंकी घबराहट दूर करती है

सुस्ती भगाती है

बुखार घटाती है

'एनासिन' में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक सम्मिश्रण है और इसी कारण वह दर्द से शीघ्र पूर्ण आराम देती है। 'एनासिन' (१) सिरदर्द, सर्दी-जुकाम, बुखार, दाँतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र आराम देती है, (२) स्नायुओं की वजह से होनेवाली घबराहट व बेचैनी को दूर करती है—आप सुख व चैन अनुभव करते हैं, (३) सुस्ती-उदासी को भगाती है (४) बुखार को घटाती है। 'एनासिन' उसकी चार दवाइयों के कारण दर्द से आराम पाने के लिए बेहतर है। अपने घर में हमेशा 'एनासिन' रखिए।

साफ-स्वच्छ सीलबंद सेलोफेन के थैलों में मिलती है। २ टिकियों के सिर्फ १३ नये पैसे

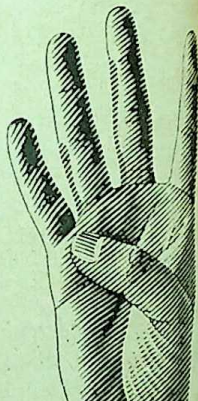

'एनासिन' ही बेहतर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LIMITED

Z.43-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरफ उठ गयी।

डाक्टर और पड़ोसियों के जाने पर कीनो ने मोती को खोद निकाला और चटाई के नीचे नया गढ़ा खोदकर गाड़ दिया। जुआना, जो यह सब देख रही थी, बोली—"किसका डर है तुम्हें ?"

"हर किसी का।" सशंक भाव से कीनो ने उत्तर दिया।

उस रात को कीनो ने सपने में देखा—कोमोटीटो किताब पढ़ रहा है; किताब दुकान के बराबर बड़ी है और उसके ऊपर कुत्ते-बिल्लियों की तरह उछल-कूद रहे हैं। फिर सारा पृष्ठ काला पड़ गया।

कीनो एकदम चौंककर उठ बैठा। उसकी नस-नस में संदेह और सतर्कता छायी थी। कहीं उसे कोने में हल्की-सी आहट सुनाई दी—इतनी हल्की कि, अगर जुआना ने सांस छुआकर सावधान न किया होता, तो शायद उधर उसका ध्यान भी न जाता। लगा—कोई अँगुलियों से जमीन को खोद रहा है। कीनो चाकू उठाकर उस ओर लपका और किसी के हाथ से टकराकर गिर पड़ा। किसी के भागने की आवाज हुई, फिर सन्नाटा छा गया।

जुआना ने बत्ती जलायी और कीनो के माथे पर से खून पोंछने लगी। जो बात उसके मन को बेचैन कर रही थी, अब उसे कहे बिना वह न रह सकी—"कीनो, यह मोती बड़ा अभागा है, हमें बरबाद कर देगा। देखो, कितनी मुसीबतें ला रहा है। फेंक दो इसे समुद्र में।"

कीनो ने कुछ सोचकर दिया—"नहीं, सवेरे इसे बेच देंगे, फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

× × ×

ला पाज में आज सवेरे ही यह खबर फैल गयी थी कि, कीनो आज मोती बेचने जायेगा। मंडी के सौदागर, गिरजे का पादरी, भिखारी और छोटे-छोटे बच्चे तक मोती की ही चर्चा कर रहे थे। मोती का हर व्यापारी सामने काली मखमल की तश्तरी रखे कीनो की प्रतीक्षा कर रहा था। लोग तो यह समझते थे कि, अलग-अलग दुकानों में बैठे ये व्यापारी एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी हैं और हर एक व्यापारी अलग-अलग भाव लगाता है। लेकिन सारी बस्ती में मोतियों का असली खरीदार एक ही था। उसी की ओर से ये व्यापारी अलग-अलग दुकानों पर बैठते थे। उन्हें तो अपने निश्चित वेतन से अधिक कुछ नहीं मिलता था। फिर भी कम-से-कम दाम में मोती खरीदने में उन्हें आनंद आता था—ठीक वैसा ही आनंद, जैसा शिकारी को आखेट में आता है।

मछुवों की बस्ती में आज सब नावें तट पर यों ही खड़ी थीं। आज गोताखोर मोती खोजने नहीं गये। आज कीनो मोती बेचने जानेवाला था न !

जुआना आज के महत्व को समझ गयी थी। यह उनकी गरीबी और अभावग्रस्तता का अंतिम दिन था; कोमोटीटो के सुखमय जीवन का पहला दिन था। उसने शादी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

माँ के स्नेह-संसार में केवल सर्वोत्तम ही स्वीकार है...
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार के लिए माँ की पसंद डालडा

माँ की ममता का सुनहला स्वप्न...ऐसा स्वादिष्ट भोजन जो उस के लाड़लों का मन ललचाये... उन्हें स्वस्थ और हंसमुख बनाये...इसी लिए वह किस मेहनत और देखभाल से खान पान की सामग्री चुनती है...साफ़, शुद्ध, ताज़ा, बढ़िया... और इन्हीं गुणों के कारण अपने परिवार के लिए उसे डालडा पसंद है...शुद्ध वनस्पति तेलों से बना हुआ डालडा, माँ के लाड़लों के लिए विशेषकर गुणकारी है, क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं! आज से अपने लाड़लों को आप भी डालडा में पका स्वादिष्ट भोजन खिलाइये!

डालडा वनस्पति - एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय की पोशाक पहनी और बच्चे को उसके सबसे बढ़िया कपड़ों में सजाया।

आखिर कीनो मोती की पोटली को सावधानी से अपनी गुदड़ी में छिपाकर झोपड़ी से निकला। पीछे बच्चे को गोद में लिये जुआना चल रही थी और बगल में भाई जुआन टामस था। पीछे-पीछे चल रहे थे पड़ोसी।

"जरा होशियार रहना होगा। कहीं व्यापारी ठग न लें।" जुआन टामस ने भाई को सावधान किया।

"हाँ, बहुत होशियार....."

मछुवों के झोपड़े पीछे छूट गये और पक्की इमारतें दीखने लगीं। गिरजे के सामने बैठे भिखारी एक बार फिर उठे और जुलूस के साथ हो गये। बनियों ने जल्दी-जल्दी ग्राहकों को निबटाया और दुकान बढ़ाकर भीड़ में शामिल हो गये।

जुलूस के आने की खबर मोती के व्यापारियों तक पहले ही पहुँच चुकी थी। वे सतर्क हो गये थे। लेकिन सामने अखबार फैलाकर पढ़ने का यों बहाना कर रहे थे, मानो कुछ जानते ही न हों। अपने सब मोती उन्होंने अलमारियों में बंद कर दिये थे; क्योंकि कीमती माल के सामने अपना घटिया माल प्रदर्शित करना ठीक नहीं।

बाजार की पहली बड़ी दुकान में एक मोटा-सा व्यापारी बैठा था। कीनो को दरवाजे से भीतर आते देखकर वह बोला-"नमस्कार भैया, क्या खिदमत कर सकता हूँ तुम्हारी?" व्यापारी के होठों पर मुस्कान थी; पर आँखों में गिद्ध की-सी क्रूरता खेल रही थी।

"मेरे पास एक मोती है।" कीनो ने कहा। उसकी बगल में जुआन टामस खड़ा था। दरवाजे में से पड़ोसी झाँक रहे थे। लड़के खिड़की के सींखचों से लटक रहे थे। सबकी नजरें व्यापारी पर लगी थीं।

"तुम्हारे पास एक मोती है!..... यहाँ तो लोग दर्जनों मोती लेकर आते हैं। खैर दिखाओ....."

"दूसरे मोतियों जैसा नहीं है मेरा मोती।" यह कहते हुए कीनो ने मोती को मखमली तश्तरी में डाल दिया।

व्यापारी ने मोती को हाथ में लिया, उलट-फेरकर देखा और तश्तरी में डाल दिया। फिर अवज्ञा की मुस्कान चेहरे पर लाकर बोला-"बड़ा बेडौल मोती है। किसी काम का नहीं। शायद कोई अजायबघर इसे खरीद ले। मैं एक हजार पेसो दे सकता हूँ इसके।"

कीनो का चेहरा फक पड़ गया। वह उद्विग्नता से बोला-"इस मोती के दाम पचास हजार पेसो से कम नहीं होंगे, यह आप भी जानते हैं.... आप मुझे ठगना चाहते हैं?"

व्यापारी आवाज में नरमी लाकर बोला-"मुझे दोष मत दो भाई। मैंने अपनी ओर से एक दाम लगाया है। अगर संतोष न हो, तो दूसरे व्यापारियों से पूछ लो।" और उसने अपने नौकर से तीन व्यापारियों को यहाँ का वाकया बताये बिना बुलाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लूकोविटा

अतिरिक्त शक्ति देता है

दैनिक आहार के पौष्टिक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए ग्लूकोविटा आदर्श है। आप के शरीर में जिसकी बहुत ही आवश्यकता है, उस रक्तशक्कर की पूर्ति भी यही करता है।

मेहनत करनेवाले व्यक्तियों, खेलाड़ियों, बढ़ते हुए बच्चों, उम्मीदवार और बच्चों को पिलानेवाली माताओं के शरीर में शक्ति-भण्डार पैदा करने के लिए ग्लूकोविटा एक आदर्श साधन है।

ग्लूकोविटा चाय, कॉफी, दूध और ठण्डे पेय पदार्थों में लीजिये। एक प्याले या गिलास में इसे एक से तीन चाय चम्मच भर डाल कर हिलाइये। यह आसानी से घुल-मिल जाता है।

अतिरिक्त शक्ति के लिए

ग्लूकोविटा

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्राइवेट लि.

मुहासों से मैं परेशान थी ...

जिल्द की बीमारियों का शीघ्र इलाज — लिचेन्सा

अब दवाइयों की दुकानों में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने को कहा।

कुछ देर में व्यापारी भीतर आये। उन्होंने न आपस में बातचीत की, न मोती पर नजर डाली। दुकानदार ने उनसे कहा—"मैंने इस मोती की जो कीमत लगायी है, वह उसके मालिक को कम लगती है। जरा आप लोग भी दाम लगाइये।" फिर कीनो की ओर मुड़कर बोला—"देखो, मैंनेअपना-लगाया हुआ मूल्य इन्हें नहीं बताया है।"

पहले व्यापारी ने मोती को उठाया, चारों ओर घुमाकर देखा और मुँह बिचका-कर वापस मखमली तश्तरी में रखते हुए कहा—"यह मोती क्या है, अजायबघर के लायक चीज है।"

दूसरे व्यापारी ने जेब से आतिशी शीशा निकालकर मोती को परखा और बोला—"इसका पानी कुछ ही महीनों में खत्म हो जायेगा। चाहे तुम भी देख लो।" उसने शीशा कीनो की ओर बढ़ा दिया।

कीनो ने कभी मोती को आतिशी शीशे से नहीं देखा था। उसमें से मोती की अजीब सतह देखकर वह हैरान रह गया।

अब तीसरा व्यापारी कीनो के हाथ से मोती लेते हुए कहने लगा—"मेरा एक ग्राहक है। उसे ऐसी अजीब-अजीब चीजें खरीदने का शौक है। मैं तुम्हें पाँच सौ पेसो दे सकता हूँ। शायद वह ग्राहक छः सौ में इसे खरीद ले।"

कीनो ने फौरन झपटकर मोती छीन लिया और गुदड़ी में छिपा लिया। दुकानदार मौके को सम्भालते हुए बोला—

मेक्सिकी किशोर

सर्जी आइसेंस्टाइन-कृत स्केच

"चलो, मैं तुम्हें बारह सौ पेसो दूँगा।"

लेकिन कीनो "नहीं, मैं इसे यहाँ नहीं, राजधानी में बेचूँगा" कहता हुआ दुकान से बाहर हो गया।

× × ×

कीनो की आँखों में भय छाया हुआ था। न जाने क्यों उसे प्रतीत हो रहा था कि, बाहर कुछ अनिष्ट होनेवाला है, कोई खौफनाक जानवर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। भयंकर छायाएँ उसकी आँखों के सामने घूम रही थीं, उसे धमका रही थीं। वह हाथ में चाकू लिये बाहर निकल गया।

कुछ ही क्षण बाद जुआना ने सुना—बाहर से मार-पीट होने की आवाज आ रही है। बच्चे को उसने फर्श पर एक कोने में लिटा दिया और मसाला पीसने का बट्टा हाथ में लिये बाहर की ओर दौड़ी।

लेकिन तब तक सब समाप्त हो चुका था। कीनो जमीन पर से उठने की कोशिश कर रहा था। उसके आसपास कोई नहीं था। पर जैसे सारे वातावरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2000/- रुपयों के नक़द आय पुरस्कार

'मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर' की भाग्यवान बच्चों की स्पर्द्धा में शामिल हो जाइए।

१ ला पुरस्कार—४६ रु. प्रतिमास ७ वर्षोंतक
२ रा पुरस्कार—२९ रु. प्रतिमास ७ वर्षोंतक
३ रा पुरस्कार—२२ रु. प्रतिमास ५ वर्षोंतक
इसके अतिरिक्त ५ रुपयों के सरकारी बाण्डों के अन्य १०० पुरस्कार

क्या आपका बच्चा भाग्यवान है? मॅनर्स की भाग्यवान बच्चों की स्पर्धा में हिस्सा लीजिए—यह स्पर्धा मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर के सब ग्राहकों के लिये खुली है। इसमें शामिल होना बिल्कुल आसान है। निम्नलिखित कूपन में बच्चे का जन्म-समय, दिनांक और वर्ष लिखिए। फिर यह कूपन काट कर मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर के बक्स के सिरे के साथ १६ अगस्त १९६१ को या उसके पूर्व भेजिए। पता है:—"मॅनर्स लकी बेबी फेस्टिवल, पो. बा. नं. ९७६, बम्बई १."

चुनाव समिति के चुने हुए समय, दिनांक और वर्ष के निकटतम आंकडों से मेल खानेवाली प्रवेश-पत्रिकाएँ ही पुरस्कृत होंगी। भाग्यवान बच्चों की स्पर्धा के नियम निकटतम विक्रेता से प्राप्त कीजिए। ये नियम जून १८ तारीख के अखबारों में भी प्रकाशित किये गये हैं।

प्रवेश-पत्रिका

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर की भाग्यवान बच्चों की स्पर्धा

(निम्नलिखित विवरण साफ़ साफ़ अक्षरों में लिखिए)

मेरा बच्चा (नाम)..... दिनांक .....

मास..... वर्ष १९..... को सुबह/शाम/रात को..... घण्टे..... मिनिट पर पैदा हुआ है। "मैंने प्रतियोगिता के नियम ध्यान पूर्वक पढ़े हैं वे सारे मेरे लिए बंधन कारक होंगे" यह बात मुझे मंजूर है। मैं अपने शिशु को मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर देता हूं। इस बात के सबूत के रूप मे बक्स का सिरा भेज रहा हूं।

हस्ताक्षर (पिता या संरक्षक)

नाम और पता.....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शत्रुता भरी थी। जुआना ने सहारा देकर कीनो को झोपड़ी में पहुँचाया। उसके सिर से खून की धार बह रही थी, जबड़े से कान तक की त्वचा कट गयी थी। जुआना ने खून पोंछा और पानी पिलाते हुए पूछा—"कौन था ?"

"मालूम नहीं, अँधेरे में साफ दिखाई नहीं दिया।"

"कीनो मेरी बात मानो, यह मोती बड़ा अभागा है। यह हमें खत्म करे, उसके पहले ही इसे तोड़ दो, या समुद्र में फेंक दो।"

यह सुनना था कि, कीनो की आँखों में चेतनी लौट आयी। वह तमककर बोला—"नहीं, नहीं।" उसकी मांसपेशियाँ तन गयीं। उसने कहा—"मैं लड़ूँगा, इस पर विजय पाऊँगा। यह मौका मैं नहीं खोऊँगा। मेरी किस्मत को कोई मुझसे छीन नहीं सकता।" फिर उसकी आँखों में कोमलता आने लगी। जुआना के कंधे पर हाथ रखकर वह बोला—"याद रखो, मैं सुखी हूँ। कल ही हम दोनों राजधानी चले चलेंगे।"

जुआना फिर कुछ न बोली।

× × ×

मुर्गे की बाँग से रात के अंतिम पहर में कीनो की आँखें खुल गयीं। छत में से छनकर आती हुई पीली चाँदनी में उसने देखा कि, जुआना बिस्तर से उठी और कुटी के पास पत्थर के नीचे से मोती को निकालकर दबे पाँव समुद्र की ओर जाने लगी। कीनो भी पीछे चल पड़ा। उसके पैरों की आहट सुनकर जुआना दौड़ने लगी। उसने मोती को समुद्र में फेंकने के लिए ज्यों ही हाथ उठाया, कीनो ने झपटकर मोती छीन लिया और उसके गाल पर जोर का घूँसा मारा। धम-से वह चट्टान पर गिरी। और उसकी भयभीत आँखें कीनो को घूर रही थीं।

व्यथित मन से कीनो झोपड़ी की ओर चल पड़ा। तभी अँधेरे में से एक छाया उसकी ओर लपकी और वह अपना चाकू सम्भाले इसके पूर्व ही धक्का खाकर जमीन पर गिर पड़ा। किसी ने उसके कपड़ों में हाथ डाला, मोती की खोज की। इस छीना-झपटी में न जाने कब वह मोती कीनो के हाथ से छूटकर एक चट्टान की ओट में जा गिरा।

जुआना उठी, लहर के पानी से मुँह धोया। दर्द के मारे उसका अंग-अंग टूट रहा था। जैसे-तैसे वह झोपड़ी की ओर चल पड़ी। तभी एक क्षण के लिए बादल हटे, चाँदनी तेज हुई और एक चट्टान के पीछे से चमकता हुआ मोती उसे दीख गया। उसने उसे उठा लिया। मन में आया कि, उसे समुद्र में फेंक दे और सारा किस्सा खत्म कर दे। इतने में बादल फिर हटे, रोशनी हुई और उसने देखा—सड़क पर दो काली छायाएँ पड़ी हैं। आगे बढ़कर जो देखा, तो उसमें एक कीनो था। दूसरा कोई अपरिचित था, जिसके मुँह से खून की धार बह रही थी।

स्थिति को भाँपने में उसे देर न लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

TESY-14 HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टाटा का
ओ डि कोलोन
साबुन

ओ डि कोलोन की खुशबू से युक्त और सुनहरे रैपर में बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह समझ गयी कि, अब उस परिवार की हुई जुआना भी दिखाई दी। उसकी गोद
शांति की नहीं, अपितु परिवार के प्राणों में बच्चा था। कीनो के पास आते ही
की रक्षा की चिंता करनी चाहिये।

अपरिचित आदमी के शव को खींच-कर उसने झाड़ी की ओट में कर दिया। कीनो अब कुछ होश में आ रहा था और बड़बड़ा रहा था—"वे मेरा मोती छीन ले गये.....।" जुआना ने झुककर उससे कहा—"वह देखो, मोती मेरे पास है। पर तुमने एक आदमी को मार दिया है। .....अब उठो। हमें दिन निकलने के पहले भाग जाना चाहिये यहाँ से।"

कीनो भी स्थिति को समझकर बोला—"जाओ, तुम झोपड़ी से बच्चे को ले आओ। घर में जो अनाज है, वह भी ले आओ। अपनी नाव में चल देंगे।" उसने अपना चाकू सम्भाला और तट की ओर चल दिया। जुआना झोपड़े की ओर भागी।

नाव पर दृष्टि पड़ते ही कीनो चौंक उठा। नाव के तले में बड़ा-सा छेद कर दिया गया था। अब तो उसके परिवार की सुरक्षा भी समाप्त। बेजबान नाव पर भी कोई हमला कर सकता है, यह उसकी कल्पना से परे था और न ही वह यह सोच सकता था कि, किसी दूसरे की नाव लेकर भी भागा जा सकता है।

वह झोपड़े की ओर मुड़ा। उसके एक हाथ में मोती था, दूसरे में चाकू। उसे दूर से लपटें उठती दिखाई दीं। वह समझ गया—उसी की झोंपड़ी में आग लगी है। और तभी उसे सामने से दौड़ी आती

में बच्चा था। कीनो के पास आते ही वह हाँफते-हाँफते बोली—"सारा फर्श खुदा पड़ा था, बच्चे का बक्सा भी उलटा पड़ा था। देखते ही-देखते आग लगा दी।"

"किसने?"

"कुछ दीखा नहीं। अँधेरा था।"

अब तक पड़ोसी बाहर निकल आये थे। उनकी नजरों से बचते हुए, झोपड़ों की छाया में से होकर कीनो और जुआना ने जुआन टामस के झोपड़े में प्रवेश किया और जब जुआन टामस की पत्नी शाल को लेने भीतर आयी, तो कीनो ने कहा—"हम बच गये हैं। चुपचाप जुआन को बुला लाओ।"

अपोलोनिया के साथ ही जुआन टामस आया और भाई के पास बैठ गया। कीनो ने सारी बातें सुनायीं।

जुआन बोला—"यह सब उसी मोती की करामत है। उसमें राक्षस बसा है। उसे बेच दो और राक्षस से अपना पिंड छुड़ाओ। अब भी समय है।"

"पर अब रह ही क्या गया है? नाव तोड़ दी गयी, घर जल गया और रास्ते में वह मुर्दा पड़ा है। मेरे लिए सब रास्ते बंद हैं। इस वक्त मेरी मदद करो। हमें यहाँ छिपा लो।"

जुआन के चेहरे से प्रकट हो रहा था कि, वह साफ "न" कहनेवाला है। इसलिए कीनो बोल पड़ा—"ज्यादा दिन के लिए नहीं। सिर्फ एक दिन के लिए। रात को ही हम यहाँ से चले जायेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रधान मंत्री के सुवर्ण पदक-विजेता

व्ही. शांताराम और राजकमल

के

"फूल और कलियाँ"

का एक गीत

ये धागा है प्यार का—ये धागा है दुलार का
इस धागे से बंधी हुई हैं मन मधुबन की गलियाँ
बंधा डाल से फूल—फूल से बंधी हुई हैं कलियाँ
जाने कहाँ से आता है ये धागा पता नहीं
जाने अंत कहाँ होगा इसका भी पता नहीं
काले दिल के ज़हर को पीना चलता है
टूटे दिल के घाव को सीना चलता है
स्नेह भरे संसार का —
ये धागा है प्यार का—ये धागा है दुलार का
कोमल कोमल कलियाँ थिरकें झूम रहे हैं फूल
लो गुलाल बनकर उड़ती है इस धरती की धूल
बड़ा मधुर है प्यार के इस धागे का बंधन
इसमें बंध कर नाच रहे हैं छोटे-बड़े सभी मन
फूल कली के हार का — ये धागा है प्यार का
ये धागा है दुलार का

लिबर्टी (बम्बई) और अन्य छबिघरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुआन टामस ने कहा—"अच्छी बात है।"

सारे दिन वे उस घर में खामोश बैठे रहे और पड़ोसियों को तरह-तरह की बातें कहते सुनते रहे। जुआन टामस भी बीच-बीच में बाहर जाता और अपने भाई के परिवार के सर्वनाश का शोक मनाता, ताकि किसी को शक न हो।

उस दिन समुद्र में भीषण तूफान उठा। जुआन पड़ोसियों से कह रहा था—"अगर झोपड़ी जलने के पहले वे लोग नाव से भाग गये होंगे, तो भी अब तक डूब चुके होंगे।"

दोनों भाई बड़ी देर तक भागने की राह की चर्चा करते रहे। तय हुआ कि, कीनो और जुआना उत्तर की सड़क से भागें।

रात को अँधेरा होते ही कीनो और जुआना रवाना हो गये। विदा करते हुए जुआन ने कीनो को बाँहों में भरकर कहा और पूछा—"क्या मोती को तुम अब भी नहीं छोड़ोगे?"

"नहीं, मोती मेरी जिंदगी बन गया है। मेरे कोमोटीटो का सारा भविष्य उसी पर निर्भर है। जान भले छूटे जाये; लेकिन मोती नहीं छोड़ूँगा।"

और जुआना तथा सोते हुए कोमोटीटो के साथ वह झोपड़ी से बाहर हो गया।

× × ×

रात-भर वे चलते रहे। जब उषा की लालिमा आकाश में फैलने लगी, तो कीनो सड़क के किनारे किसी गुप्त स्थान की खोज करने लगा, जहाँ दिन में छिपा जा सके। पास ही एक माँद थी, जिसका मुँह झाड़ियों से ढँका हुआ था। वे उसमें गये। जुआना बच्चे को दूध पिलाने लगी। कीनो ने आते समय, वृक्ष की एक टहनी लेकर सड़क से माँद तक बने हुए पैरों के निशान मिटा दिये।

जुआना कम्बल बिछाकर सो गयी। कीनो बैठा पहरा देता रहा। कई घंटे बाद जुआना उठ बैठी और कीनो सो गया। सोते-सोते वह बड़बड़ाने लगा। जुआना ने जगाकर पूछा—"कोई भयंकर सपना पड़ा क्या?"

"शायद सपना ही था।" कीनो ने कहा वह बेचैनी के साथ उठ बैठा और बोला—

एक मत्स्यजीवी मेक्सिकी

"सुनो।" वह कुछ सुनने की कोशिश करने लगा। फिर माँद में से निकला और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ती हुई व्याज दर, बढ़ती हुई सुविधाएँ।

दि बैंक आफ महाराष्ट्र लि०

स्थापना १९३५, रजि० कार्यालय, ११७७ बुधवार, पूना –२ अब ३ प्रतिशत
बढ़ी हुई व्याज की दर, स्पेशल सेविंग्ज डिपॉझिट स्कीम, नये सुविधाजनक नियम
इस बैंक में जमा किया हुआ प्रत्येक रुपया महाराष्ट्र के आर्थिक विकास में सहायक होगा

बैंक की ६६ शाखाएँ

पूना शहर ७, महाविदर्भ १६, मैसूर राज्य ३, बम्बई एवं उपनगर ११, मराठवाड़ा
महाराष्ट्र के अन्य क्षेत्र १९, आन्ध्र प्रदेश १, मध्य प्रदेश २।

विशेष उपलब्ध सुविधाएँ

स्टर्लिंग एवं डालर के प्रवासी चेक मिलते हैं।
विश्व के सभी महत्वपूर्ण नगरों में एजेंसियाँ।
विदेशी मुद्राओं की सभी प्रकार की सुविधाएँ।

मुख्य कार्यालय के अतिरिक्त ११ शाखाओं में सेफ डिपाजिट वाल्टस् की व्यवस्था
बैंक ने पिछले वर्ष के लिए हमेशा की तरह ९ प्रतिशत डिविडेंड और
प्रतिशत रजत जयन्ती बोनस भागीदारों को वितरित किया है।

(पॅरेमाउंट) **चिं. वि. जोग**, जनरल मैनेजर

कब्जियत और बवासीर

हमेशा कब्जियत रहने से बवासीर अथवा खूनी बवासीर की बीमारी हो सकती है। इसमें गुदा के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं। दर्द के कारण मल निकलने में बड़ी कठिनाई और परेशानी होती है। कब्जियत जोर पकड़ लेती है और बवासीर भी कष्टदायक हो जाती है। इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि बवासीर के कारण उत्पन्न दर्द और परेशानी दूर हो जाये तो मल निकलना आसान हो जाये। हाडेन्सा ठीक यही काम करता है। यह दर्द और खुजली से तुरंत आराम पहुँचाता है। इसके लगातार इस्तेमाल से बवासीर दब जाती है और पूर्ण आराम मिलता है। बवासीर की सुप्रसिद्ध जर्मन दवा हाडेन्सा में कोई नशीली चीज नहीं होती। इससे किसी प्रकार का धब्बा नहीं लगता और इसका इस्तेमाल भी आसान है। हर पेकेज के साथ प्लास्टिक की एक छोटी नली भी होती है और उसमें इसके इस्तेमाल का तरीका भी लिखा होता है। यदि बवासीर आपकी समस्या है तो हाडेन्सा उसका हल है। आज ही हाडेन्सा का इस्तेमाल कीजिये।

अब भारत में निर्मित

DZ 9

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी दूर जाकर सड़क की ओर देखने लगा। उसने देखा—दूर सड़क पर तीन आदमी चले आ रहे थे। दो पैदल थे, एक घोड़े पर सवार था। कभी-कभी वे रुक जाते और झुककर सड़क पर कुछ देखने लगते। कीनो काँप उठा। वह जानता था कि, वे लोग किस लिए आ रहे हैं। ये शिकारी हैं—आदमियों को पकड़नेवाले शिकारी। साथ के घुड़सवार के हाथ में बंदूक थी।

अब बचने की एकमात्र सूरत थी भाग निकलना। वह बिना आहट किये माँद से लौट आया, बोला—"पीछा किया जा रहा है हमारा।" उसका चेहरा वेदना और बेबसी से काला पड़ गया। "अब शायद यही अच्छा है कि, मैं आत्मसमर्पण कर दूँ।"

जुआना ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया। "नहीं तुम्हारे पास मोती है। वे मोती ले लेंगे और तुम्हारी जान भी। वे तो मुझे और मेरे बच्चे को भी मार डालेंगे।"

यह सुनते ही कीनो की आँखों में पहले की-सी चमक आ गयी। वह बोला—"तो चलो, पहाड़ की ओर भाग चलें।"

वे पश्चिम की पहाड़ियों की ओर बढ़ चले। बड़ी सख्त चढ़ाई थी; ऊबड़-खाबड़ पथरीली भूमि; सूरज आग बरसा रहा था। कदम-कदम पर ठोकरें लगतीं, पैर फिसल-फिसल जाते। पाँवों के नीचे सूखे पत्ते चरमराते, टहनियाँ चटखकर शोर करतीं। पर वे उनकी परवाह किये बिना बढ़े जा रहे थे पहाड़ की सबसे ऊँची चोटी की ओर। कीनो बार-बार पीछे मुड़कर देखता जाता था।

घंटा-डेढ़ घंटा चलने के बाद कीनो ने कहा—"जुआना, बच्चे को गोद में उठाये तुम मेरे साथ तेज नहीं चल सकोगी। तुम यहीं कहीं छिप जाओ।"

"नहीं," जुआना दृढ़ता से बोली—"हम साथ ही चलेंगे।"

"बच्चा खतरे में पड़ जायेगा जुआना, मान जाओ।"

"मैंने कह दिया न—नहीं।" जुआना के चेहरे पर न निर्बलता थी, न घबराहट। कीनो को हारकर कहना ही पड़ा—"अच्छा, तुम्हारी मर्जी।" और दोनों साथ चल पड़े। पहाड़ी ढाल के उस पार एक दर्रा था, जहाँ पानी के लक्षण दिखाई दे रहे थे। वे उसी ओर बढ़ चले।

माँ-बेटे

दर्रे में एक पतला-सा झरना था। जो थोड़ी दूर बहकर एक छोटे जलाशय का रूप ले लेता था। रात को यहाँ हिंस्र पशु पानी पीने और शिकार के लिए आते थे।

जब कीनो और जुआना उस जलाशय के निकट पहुँचे, तो सूरज पहाड़ों को लाँघ चुका था। जुआना ने बच्चे को नहलाया और बोतल में पानी भरा। कीनो बहुत देर तक किनारे पर बैठा पानी पीता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसिकों की पसं

धोती

सच्चाहीरा • ब्रेसलेट • किंग वेअर

इंद्र धनुष • प्युअर गोल्ड • राज राजे

केम्ब्रिक

नोबल लार्ड • नोबल नाइट • २७१

१९७ • ३५६ • १६१ • ७८७

निर्माता फिनले - उत्कृष्ट वस्त्रोंके उत्पाद

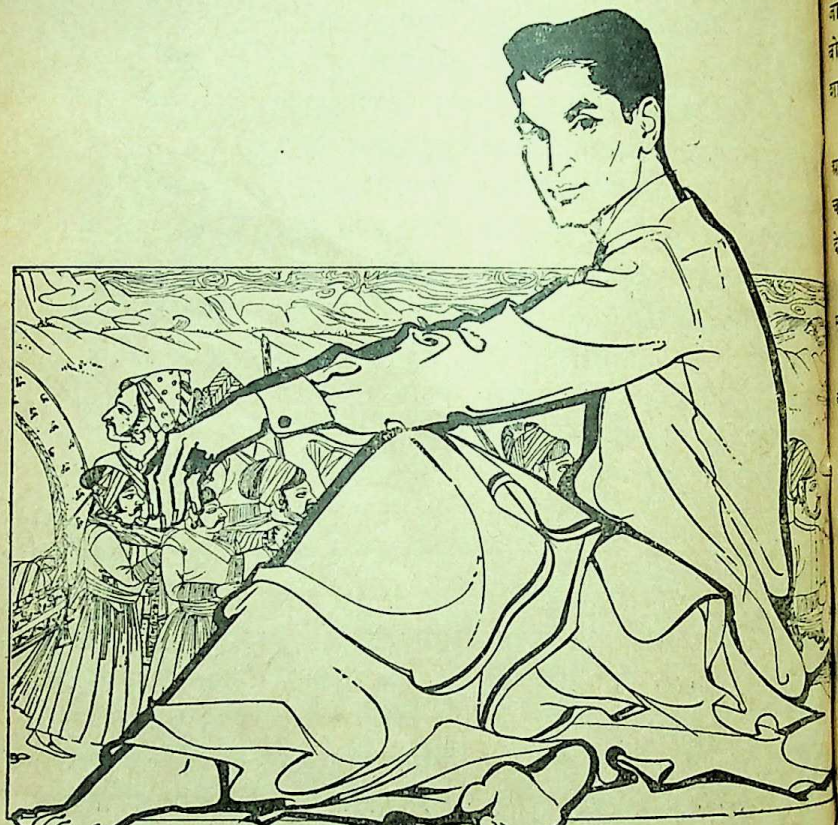

दि फिनले ग्रुप आफ मिल्स

ASP/JF-74

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ देर तक वृक्ष की छाया में आराम करने के बाद वह एक चट्टान पर चढ़कर दूर धूप में चमकते मैदान की ओर देखने लगा। पहाड़ की तलहटी में दो आदमी चले आ रहे थे। उनके पीछे तीसरा आदमी घोड़े की नुकेल पकड़कर चल रहा था।

जुआना ने पूछा—"कितनी दूरी पर हैं।"

"शाम तक यहाँ आ पहुँचेंगे। उसके पहले ही हमें पश्चिम की ओर रवाना हो जाना चाहिये।" फिर विचार बदलकर बोला—"तुम उन गुफाओं में छिप जाओ। शायद वे हमें वहाँ न खोज पायें।"

वे गुफाओं में पहुँच गये। कीनो ने अपनी योजना समझायी—"जब वे ऊपर चढ़ आयेंगे, हम नीचे उतर जायेंगे। पर देखना, बच्चा रो न दे।"

"नहीं रोयेगा, बड़ा समझदार है..... सब समझता है।"

कीनो गुफा के दरवाजे पर लेटकर मैदान की ओर देखता रहा।

खोजनेवाले तीन सूर्यास्त के समय वहाँ आ पहुँचे। घोड़े को वे पीछे ही छोड़ आये थे। पानी के पास रेत पर बने पैरों के निशान देखकर उन्होंने संतोष की साँस ली। फिर बैठकर आराम करने लगे।

अँधेरा हो चुका था। रात को जलाशय के किनारे बसेरा करनेवाले प्राणी आदमी की गंध पाकर दूर जा छिपे थे। गुफा के अंदर जुआना धीरे-धीरे रोते हुए कोमोटीटो को चुप कराने में लगी थी।

जलाशय के पास दियासलाई सुलगी। पल-भर की उस रोशनी में कीनो ने देखा—दो आदमी तो सो गये हैं और तीसरा घुटनों के बीच बंदूक रखे बैठा है।

आहिस्ते-से उसने जुआना से कहा—"मैं नीचे जाकर उस पर हमला कर दूँ, तो सब मामला समाप्त हो जायेगा।"

"वे तुम्हें मार डालेंगे।"

"नहीं, मैं झपटकर बंदूक छीन लूँगा।"

"चाँदनी में तुम्हारे कपड़े दीख जायेंगे।"

"नहीं, मैं कपड़े उतारकर जाऊँगा।"

वह कपड़े उतारने लगा। इच्छा हुई जुआना से प्यार-भरी दो बातें कहे; पर मन की कमजोरी को दबाकर बोला—"अगर वे मुझे मार डालें, तो तुम रात-भर छिपी रहना और उनके जाते ही लौट जाना।"

जुआना ने काँपते हाथों से उसकी बाँह पकड़ ली। पर वह बोला—"कोई चारा नहीं है जुआना। सवेरा होते ही वे हमें पकड़ लेंगे।" और बच्चे के सिर पर एक बार हाथ फेरकर कीनो गुफा के बाहर निकल गया। बच्चे को छाती से चिपकाये जुआना बाहर देखती रही और ईश्वर से कीनो की सुरक्षा की प्रार्थना करती रही।

चिकनी चट्टानों पर से छिपकली की तरह रेंगते-रेंगते कीनो जब नीचे पहुँचा, आसमान में चाँद चमकने लगा था। वह समझ गया—अब ज्यादा वक्त नहीं है।

तभी गुफा से बच्चे के रोने की आवाज आयी। पहरेदार आकर खड़ा हो गया। सोनेवालों में से एक ने करवट बदलते हुए पूछा—"क्यों, क्या है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"कोई बच्चा-सा रो रहा है।"

दूसरा आदमी बुदबुदाया—"अरे, कुत्ते का पिल्ला होगा ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीनो के माथे पर पसीने की बूँदें छलक आयीं। बच्चे के रोने की आवाज फिर आयी। उसे सुन पहरेदार बोला—"हाँ, शायद कोई पिल्ला-विल्ला ही है।"

पल-भर में लपककर कीनो ने उसकी बंदूक छीन ली और दनदन गोलियाँ दाग दीं। तीन शव पानी में लुढ़क गये। सिर उठाया, तो पहाड़ी पर दो भयभीत आँखें चमकती दिखाई दीं। उसने उधर भी एक गोली चला दी।

धीरे-धीरे हत्या की गर्मी उतरी। उसने अनुभव किया—उससे बड़ी कोई भयंकर भूल हो गयी है। झींगुरों तक ने गूँजना बंद कर दिया था। उसे गुफा की ओर से आती हुई कराह सुनाई दी—मृत्यु की कराह।

× × ×

उस दिन दोपहर को खबर फैल गयी कि, कीनो और जुआना वापस आ रहे हैं। सब उन्हें देखने के लिए दौड़ पड़े।

पहले सदा कीनो आगे चला करता था और जुआना पीछे। आज दोनों बराबर चल रहे थे। कीनो के हाथ में बंदूक थी और जुआना के कंधे से एक गठरी झूल रही थी—खून से लथपथ शाल में बँधी गठरी।

कीनो के चेहरे पर थकान और कठोरता के भाव थे। जुआना की बड़ी-बड़ी आँखें जैसे बाहर नहीं, बल्कि अपने ही अंतर में झाँककर देख रही थीं।

लोगों ने देखा—जैसे वे दम्पति मान[illegible] अनभतियों से बहुत परे चले गये थे, [illegible] दर्द के दरिया में से तैरकर निकल आये [illegible] वे बिल्कुल खामोश चले आ रहे थे।

उनके झोपड़ियों के पास आने [illegible] जुआन टामस ने हाथ हिलाकर स्वा[illegible] किया; पर वह बोला कुछ नहीं। वे दम्प[illegible] भी कुछ बोले नहीं, चुपचाप नजर नी[illegible] किये आगे बढ़ गये। वे सीधे समुद्र-तट [illegible] ओर बढ़े जा रहे थे।

पानी के पास पहुँचकर वे रुके। कीनो ने बंदूक नीचे रख दी और गुदड़ी में [illegible] मोती निकाला। आज जैसे मोती का [illegible] ही बदल गया था। आज वह सौभाग्य और उज्ज्वल भविष्य का नहीं, दुर्भाग्य का चिह्न था। उसकी आभा में आज उ[illegible] सौंदर्य नहीं, डरावनी घटनाओं का प्रति[illegible] बिम्ब दीख रहा था..... तालाब में गिरी लाशों की डरावनी आँखें..... गुफा में कराहता हुआ कोमोटीटो।

कीनो ने अपना हाथ जुआना की ओर बढ़ा दिया, जो बच्चे के शव को चिपकाये खामोश खड़ी थी। उसने एक बार मोती की ओर देखा, फिर कीनो की आँखों को। उन आँखों में एक प्रश्न था। जुआना की आँखों में उसका उत्तर था—"नहीं।"

सारी शक्ति के साथ कीनो का हाथ उठा। क्षण-भर के लिए मोती सूरज की किरणों में चमका और फिर सागर के गर्भ में समा गया। देर तक खड़े-खड़े वे उसके डूबने के स्थान को देखते रहे।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐंड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमानी

बाडी और फेस पाउडर

भारत में विख्यात जनप्रिय

हिमानी प्राइवेट लि०

कलकत्ता–२

मिठाई, टॉफी, शृंगार की चीजें, ज़ेवरात वगैरह के लिये खास उपयुक्त

बनानेवाले - बॉम्बे टिन प्रिन्टर्स

२२१/२२३, ठाकुरद्वार रोड, मुंबई-२ फोन २३५८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन की दुनिया के दो नये रेडियो

नेशनल एक्को के

दो नये रेडियो

...जो आपको आनन्द-विभोर कर देंगे!

...न, आपके बढ़िया मनोरंजन के लिए ख़ास ...से बनाये गये दो शानदार नये नेशनल-एक्को ...वो! इनमें से एक सेट बिजली से चलता है और ...ना बैटरी से। सुन्दर विनियर्ड कैबिनेट, उत्तम ...'हाई-फ़ाइ' लाउडस्पीकर, मनमोहक डायल, सुमधुर हूबहू ध्वनि...ये हैं इन सेटों की कुछ विशेषताएँ! इसके अलावा, ये दोनों सेट पूरी तरह मॉन्सूनाइज़्ड भी होते हैं!

अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ आज, ही इन्हें मुफ़्त बजवा कर सुनिए!

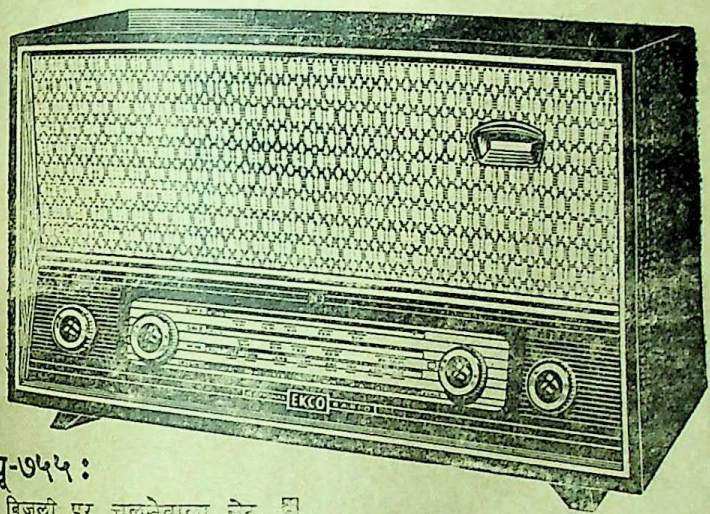

...डल यू-७५५ :

...बीसी बिजली पर चलनेवाला सेट. ...वाल्व, ३ बैण्ड, टोन कण्ट्रोल। क़ीमत : ...एक्साइज ड्यूटी के साथ ...-००स्थानीय टैक्स अलग

...डल बी-७५५ :

...बैटरी सेट। ५ वाल्व, ३ बैण्ड, टोन ...ट्रोल। बैटरी बहुत ही कम ख़र्च होती ...। क़ीमत :

एक्साइज ड्यूटी के साथ

...-००स्थानीय टैक्स अलग

नेशनल-एक्को रेडियो ज़्यादा अच्छे हैं...ये मॉन्सूनाइज़्ड होते हैं!

NE

GRA

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड

बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • पटना

बंगलोर • सिकन्दराबाद

JWT-GRA. 2259

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर ! नवनीत पढ़ते समय, मैं एक बार दाँत का दर्द ही भूल गया ।

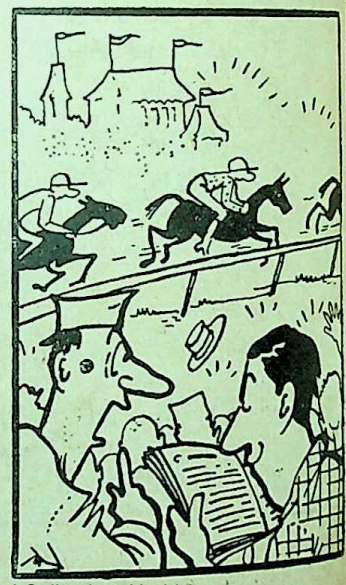

ऐ ! रेस देखने आये हो या नवनीत पढ़ने ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र के विकास में सीमेंट का महत्व

एक बार, दो बार, बार-बार

अपने देश की जल-सम्पत्ति को ध्यान में रखते हुए हम थोड़ा-सा भी पानी बरबाद नहीं कर सकते; क्योंकि मनचली वर्षा ने कहीं एक बार भी हम पर कृपा न की तो हमारी फ़सलें सूख जाएँगी और हमारे उद्योग-व्यवसाय बन्द हो जाएँगे! तथापि, उपलब्ध पानी का बार-बार उपयोग करने में हमारे कारख़ानों को इन सुडौल, गगनगामी 'कूलिंग टावर्स' की सहायता मिलती है।

इन 'कूलिंग टावर्स' को मूर्तरूप देनेवाली सीमेंट कंक्रीट, औद्योगिक विकास द्वारा भारत को नयी समृद्धि प्रदान करनेवाले बड़े-बड़े बाँधों और जल-विद्युत योजनाओं के निर्माण के लिए भी अत्यावश्यक है।

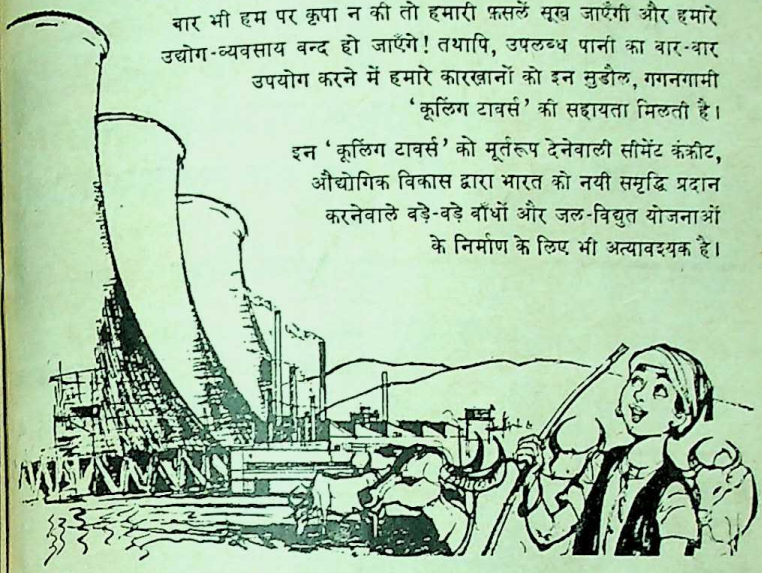

दि एसोसिएटेड सीमेंट कंपनीज़ लिमिटेड

दि सीमेंट मार्केटिंग कंपनी ऑफ़ इंडिया लिमिटेड

एसीसी

सीमेंट उद्योग में अग्रणी

JWT-CMI 1695

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण
रचनाओं का मासिक संकलन

- समसामयिक विषयों पर ठोस लेख
- भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कहानियां
- संस्कृत के अमर नाटकों का अविकल अनुवाद

इन के अतिरिक्त ३५ अन्य रोचक
और महत्त्वपूर्ण रचनाएं

एक प्रति १ रु. • वार्षिक १० रु.

दिल्ली प्रेस

कैरेवान व सरिता के प्रकाशक
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली.

अपनी प्रति आज ही खरीदिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेशक, यह है बिन्नी का . . ."

...ितना ड्रील मैंने देखा है, उनमें यह सबसे ...है। मेरा काम ही ऐसा है कि ठाट-बाट ...—बेशक सबसे अच्छी चीज़ ही हो—फिर ...चीज़ जो टिके भी। मेरे पास इतने पैसे ...कि ऐसे सुन्दर कपड़े लूं जो टिकें नहीं।

...के कपड़ों में ये दोनों गुण हैं—...वसूल हो जाता है—यही तो बात ...मुझे बिन्नी के कपड़े पसन्द हैं...

बिन्नी का ड्रिल

सफेद, रंगीन
या खाकी जो भी लीजिये

WE STOCK

QUALITY FABRICS

THE BUCKINGHAM & CARNATIC CO LTD MADRAS.
THE BANGALORE WOOLLEN, COTTON & SILK MILLS CO LTD BANGALORE
Managed by
BINNY & CO. MADRAS LTD.

अपनी जरूरत के मुताबिक बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकारप्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहां यह साइनबोर्ड लगा है।

बकिंघम ऐण्ड कर्नाटिक कम्पनी लिमिटेड
...ो ऐण्ड कं० (मद्रास) लिमिटेड की सहायताप्राप्त

JWTBY/D/1303

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे. बी. मंघाराम के

एनर्जी फूड बिस्कुट

बच्चों को निरंतन स्फुर्ति से स्फुरित रखने के लिए ये ही उपयुक्त बिस्कुट हैं। **एनर्जी फूड** बिस्कुट दूध, माल्ट, ग्लुकोज़ और अन्य शक्तिवर्धिनी वस्तुओं के सम्मिश्रण से बनाये जाते हैं।

जे.बी. मंघाराम एण्ड कं.

ग्वालियर

"देश की भावी पीढ़ी के लिये पौष्टिक"

जे. बी. मंघाराम एण्ड कं., १२ गनबो स्ट्रीट, हार्नबी व्यू बिल्डिंग, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारबार की खांसी और सर्दी से जीवनशक्ति कम होती है.... फेफड़े की बीमारी को रोकने की ताकत घटती है।

[illegible] और सर्दी कष्टकर ही नहीं बल्कि [illegible] सताने के कारण प्रचण्ड बीमारी [illegible] संभव है। इसलिये सावधान रहिये। [illegible]रबरीज़ कम्पाउन्ड का सेवन करना शुरू कीजिये।

वाटरबरीज कम्पाउन्ड

★ खांसी और फेफड़े की तकलीफोंसे आराम पहुंचाता है।
★ खून की पुष्टि करता है।
★ खांसी और सर्दी-जुकाम का मुकाबला करने की ताकत देता है।
★ शरीर के सभी अवयवों को स्फूर्ति देता है।

क्रियोसोट तथा गुयेकाल युक्त, वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड फेफड़े की तकलीफों को हटाकर खांसी और सर्दी को खोल देता है। सारे शरीरको स्वस्थ बनाकर बीमारी से बचते रहने की ताकत पैदा करता है और हमेशा तन्दुरुस्त बनाये रखता है। बच्चे और बूढ़ों के लिये समान रूपमें गुणकारक है।

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये सुस्वादु

वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड

(लाल रंगीन लेबल)

लीजिये

केसरी रंगीन लेबल का वाटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड भी प्राप्त है जो अक प्रसिद्ध टॉनिक है

वार्नर-लैम्बर्ट फार्मस्यूटिकल कम्पनी (सीमित दायित्व के साथ यू. एस. ए. में संस्थापित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेरा मनपसंद
लक्स
इंद्रधनुष के
७ रंगों में
और सफ़ेद भी!'

वहीदा रॅहमान कहती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LTS. 88-50 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितम्बर

नवनीत

[हिन्दी डाइजेस्ट]

१९६१

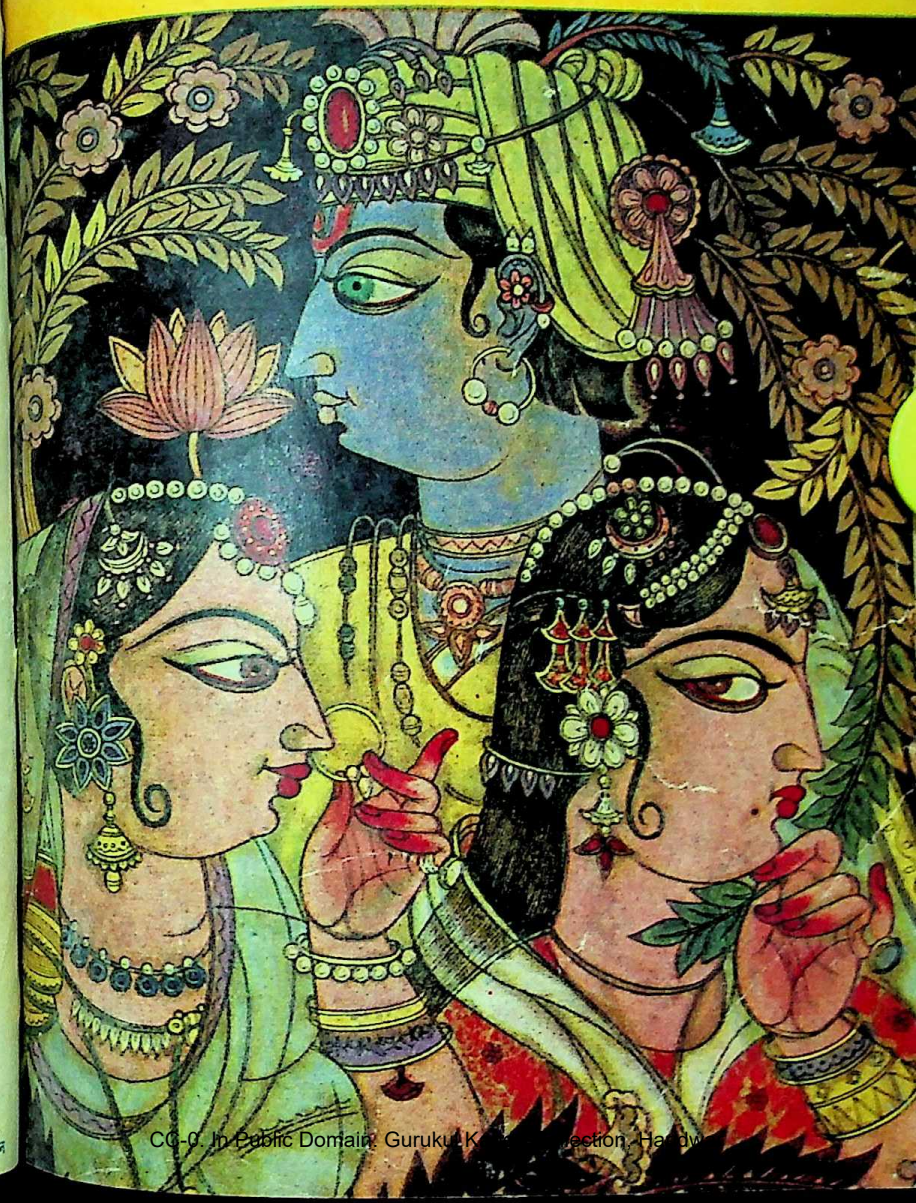

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप का मुन्ना ...स्वस्थ और हंसमुख ... ऑस्टरमिल्क के कारण—क्योंकि यह माँ के दूध के समान है। ऑस्टरमिल्क विशुद्ध दूध से बनता है, और मुन्ने को जल्द हजम होने के लिए ऑस्टरमिल्क विशेष विधि से बनाया जाता है। रक्तहीनता की रोकथाम के लिए लोह और मज़बूत हड्डियों और दाँतों के लिए विटामिन डी इस में मिलाये जाते हैं।

मुफ़्त: 'ऑस्टरमिल्क पुस्तिका' (अंग्रेज़ी में)...इस में बच्चों की देखभाल के बारे में सभी आधुनिक सूचनायें दी गई हैं। डाकख़र्च के लिए ५० नये पैसे इस पते पर भेजिये: 'ऑस्टरमिल्क,' पोस्ट ऑफ़िस बक्स नं. २०२, बम्बई १

OS. 8-50-B. HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवरण-पृष्ठ 'नवनीत प्रकाशन लि० मुद्रण विभाग' द्वारा मुद्रित—

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली सितम्बर से

रॉयल ग्रापेरा हाऊस

जयहिन्द – लोटस – रिवोली – बम्बई

जया – बोरिवली

घराना

जेमिनी चित्र

निर्माता-निर्देशक

एस.एस.वासन

संगीत **रवि** गीत **शकील**

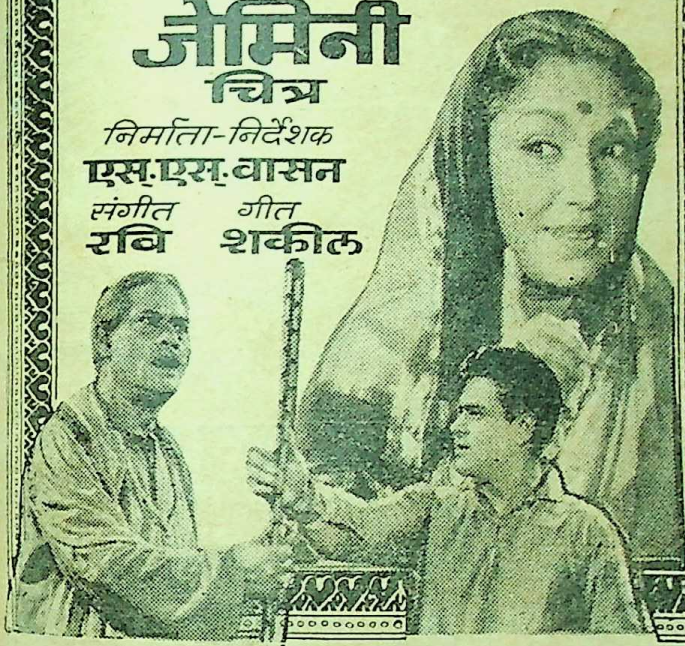

पेरामाउन्ट – पूना शहर, केपिटल – पूना शहर, मोहन – हुबली, लक्ष्मी – धारवार, अनुपम – जामनगर, अल्का – भावनगर,

और भारत के अन्य प्रमुख नगरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र यातायात सेवा निर्धारित समय में सामान पहुँचाती है

पश्चिम रेल्वे द्वारा नियंत्रित की जानवाली महत्वपूर्ण सेवाओं में से कुछ निम्नलिखित हैं

पश्चिम रेलवे से

		यातायात का समय					यातायात का समय
कर्नाक ब्रिज से नई दिल्ली		५	दिन	अहमदाबाद से		विजयवाडा (उधना, भुसावल होते हुए)	६½
"	से अहमदाबाद	३	"	नई दिल्ली	से	अहमदाबाद	६
"	से इंदौर	४	"	अहमदाबाद	से	नई दिल्ली	६
"	से सूरत	३	"	बेलनगंज	से	कर्नाक ब्रिज	६
"	से बेलनगंज	६	"	इन्दौर	से	"	५
"	से बड़ौदा	३	"	सूरत	से	"	३
"	से अमृतसर	८	"	कंडला	से	जयपुर	५
"	से लुधियाना	८	"	सुरेन्द्र नगर	से	"	५
"	से जालंधर शहर	८	"	अजमेर	से	"	२
"	से मुरादाबाद	८	"	आस्रवा	से	"	६
"	से रतलाम	३	"	राजकोट	से	बीकानेर	७
नई दिल्ली	से कर्नाक ब्रिज	५	"	मुरादाबाद	से	कर्नाक ब्रिज	८
बड़ौदा	से "	३	"	जयपुर	से	अजमेर	२
रतलाम	से "	३	"	"	से	कांडला	५
अमृतसर	से "	८	"	"	से	सुरेन्द्र नगर]	५
लुधियाना	से "	१०	"	"	से	आस्रवा	६
जालंधर शहर	से "	८	"	अहमदाबाद	से	मुजफ्फरपुर	१३
अहमदाबाद	से "	३	"	"	"	तीनसुकिया]	२५

रेल से यह शीघ्र एवं सुरक्षित है ।

अन्य विवरण के लिए कृपया गुड्स सुपरिन्टेन्डेट, कर्नाक ब्रिज से सम्पर्क स्थापित कीजिये ।

पश्चिम रेलवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

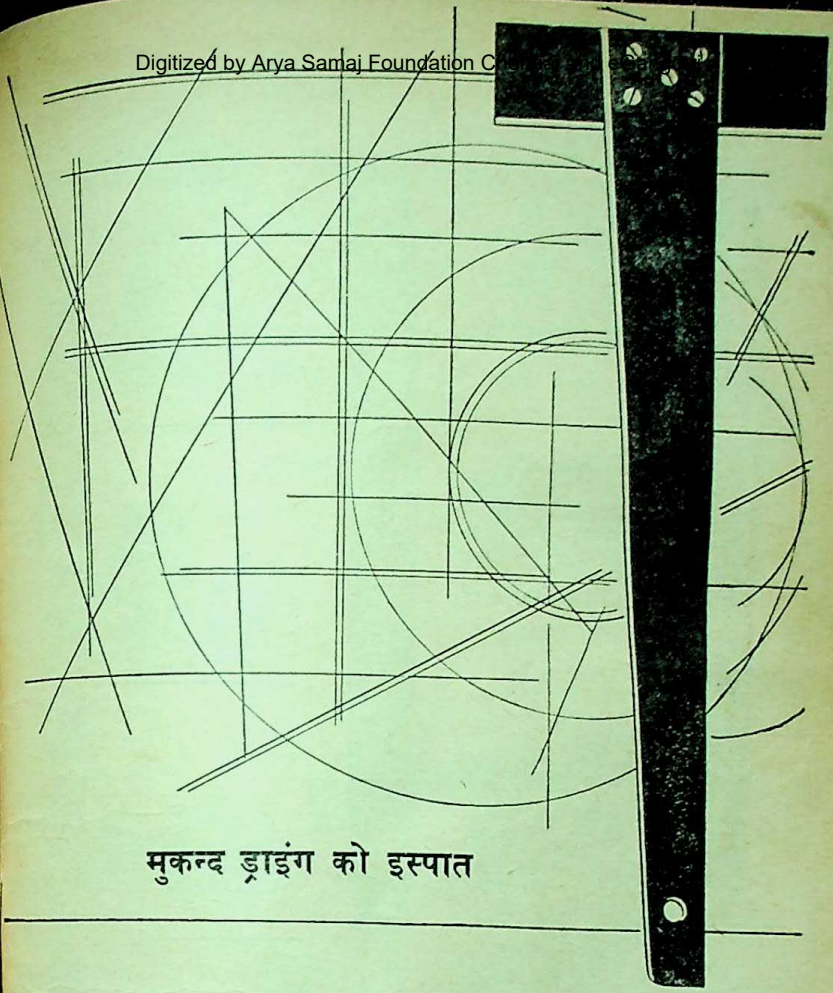

मुकन्द ड्राइंग को इस्पात

में बदलता है

मुकन्द इस्पात है

अनेकों उपयोगी कार्य के लिए इस्पात की छड़ें, शलाकें, पहिये, अनेक प्रकार की ढलाई—करीब करीब प्रत्येक नाप और आकार में.....

मुकन्द इस्पात बाँध बनाने, जटिल इस्पात के कारखाने खड़े करने बड़ी-बड़ी नदियों पर पुल बनाने आदि में मदद करके देश को गतिशील बनाने के प्रयत्न में अमूल्य योग देता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में

सुपरिचित

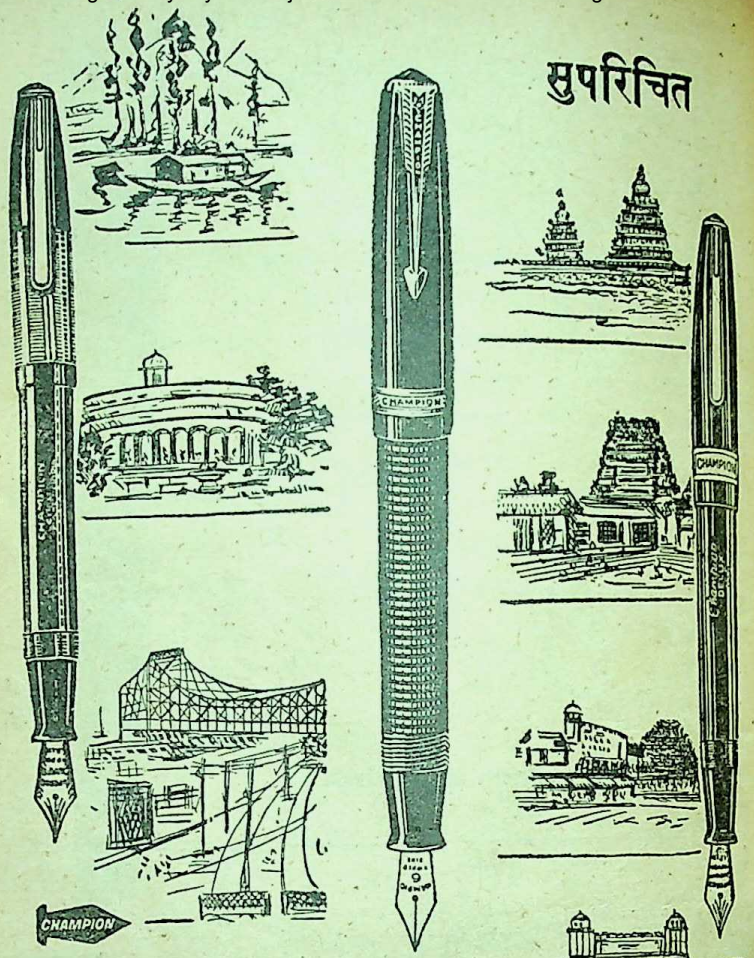

चैम्पियन

(रजिस्टर्ड)

सबकी पसन्द

निर्माता : गुजरात इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह लीजिये, धुलाई की अतिरिक्त शक्ति:

अधिक घुलनशक्ति और अधिक झाग के कारण नये निर्मल में धुलाई की अत्यधिक शक्ति मौजूद है।

वैकुअम से लगातार ठण्डा करने की नवीनतम प्रणाली नमी के स्थान पर क्रियाशील ताव उत्पन्न करती है और इससे निर्मल बार सोप और भी अच्छा काम करता है।

न हाथों को कष्ट, न कपड़ों पर जोर, फिर भी मैल नदारद। निर्मल से धोइये तो परिश्रम नहीं, भले ही पानी खारा ही क्यों न हो।

*हर बार पर घै बराबर टुकड़ों के निशान

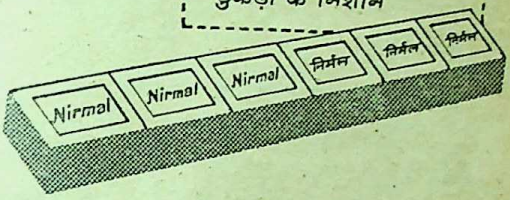

नया

निर्मल बार सोप

कम खर्च में अच्छा काम

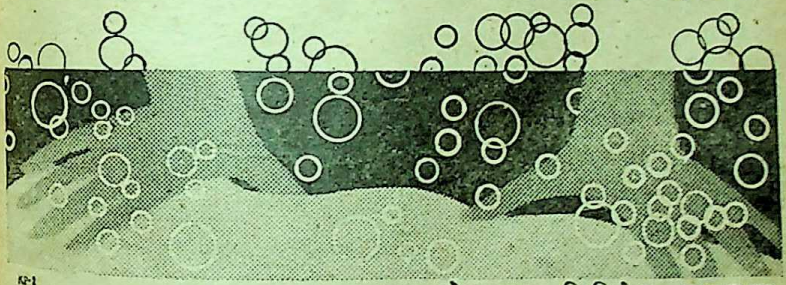

KP-1

कुसुम प्रोडक्टस लिमिटेड, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाधीनता-दिवस

पर

हमारा अभिनन्दन स्वीकार करें

स्वाधीन भारत की राष्ट्रभारती हिन्दी के गौरव ग्रंथों से यदि आप अपने मन, प्राण, बुद्धि को आप्यायित एवं आलोकित करना चाहते हैं, तो हमारे प्रकाशनों के लिए स्थानीय पुस्तक-विक्रेताओं से मिलें अथवा सीधे लिखें।

हमारे नूतन उपायन

"भारतीय अब्दकोश"

ईयर बुक १९६१–६२

देश विदेश के आद्यतन ज्ञान-विज्ञान का बृहद् प्रकाशन, पक्की जिल्द, नयनाभिराम आवरण, पृष्ठ ७५०, मूल्य– ८) रु०

साहित्य-संस्कृति-साधना की त्रैमासिक

"परिषद्-पत्रिका"

राष्ट्र के मूर्धन्य सुश्रीचिन्तकों का विद्याविलास जो आपके अन्तस्थल को आलोकित करता रहेगा।

वार्षिक मूल्य– ६) रु०

बिहार–राष्ट्र-भाषा–परिषद्

पटना–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास की नींद में तल्लीन!

call—nel

केलिको मिल्स, अहमदाबाद की बनी हुई
सर्वश्रेष्ठ मच्छरदानी 'केलिनेट' के अन्दर सुख की नींद में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरूरी
जरूरी
जरूरी

बहुत जरूरी खबर भेजनी है,

क्योंकि कोई सख्त बीमार है।

यह अग्रता तार (प्रायोरिटी टेलीग्राम) से भेजी जा सकती है।

बीमारी, दुर्घटना, या मृत्यु जैसे अवसरों पर अग्रता तार का प्रयोग कर सकते हैं।

इस तरह के तार तुरत (एक्सप्रेस) व आवश्यक (अर्जेण्ट) तारों से पहले भेजे जाते हैं, पर शुल्क केवल एक्सप्रेस तार का ही लिया जाता है।

इस तरह का तार भेजते समय फार्म पर अग्रता या प्रायोरिटी शब्द लिख दीजिए।

हमें उत्तम सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

डीए ६०/१११८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरुचिपूर्ण जीवनका अनिवार्य अंग...

वॉयल

प्रिन्सेस • ए-१ • रातरानी • राजनन्दिनी

मलमल

गोल्डन ब्रूच • हाई सोसाइटी • एफ ७४

फिनले – उत्कृष्ट वस्त्रोंके उत्पादक

दि फिनले ग्रुप आफ मिल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

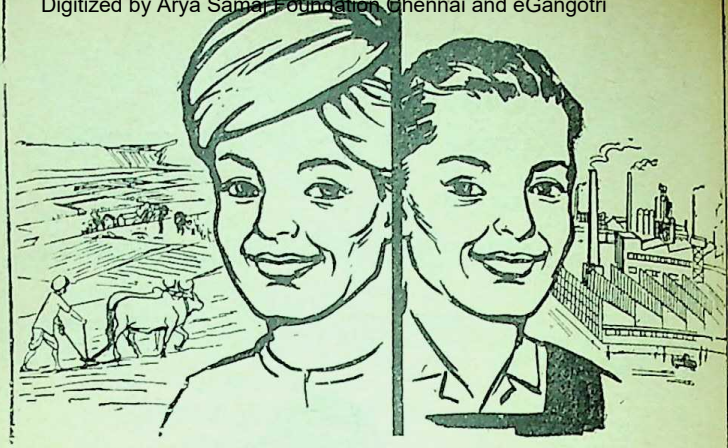

हमारी अर्थ-व्यवस्था के दो पहलू

कृषि एवं उद्योग हमारी अर्थ-व्यवस्था के दो पहलू हैं। पंचवर्षीय योजनाओं का उद्देश्य कृषि-औद्योगिक क्रान्ति साध्य करने की दृष्टि से उनका विकास करना है, जिससे हम लोगों का जीवनस्तर उन्नत हो सके।

प्रकाशन संचालक, महाराष्ट्र सरकार, बम्बई

विज्ञापन की हुई वस्तुएँ खरीदें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भी चाहेंगी
कि 'मेरे भी बाल
ऐसे सुंदर हों!'

मुड़के जरा एक नजर देखा। उसके सुंदर बालों की ओर आंखें बरबस खिंच गयीं-दिल में तमन्ना जाग उठी कि मेरे बाल भी ऐसे ही सुंदर होने चाहिए। अनोखी खुशबूवाला 'केशा' बालों के पोषक तत्वों से भरपूर है। इसे इस्तेमाल करने से सुंदर बाल उगते हैं। आप के बालों पर अनोखी बहार आ जाती है-ऐसी बहार जिसकी आप तमन्ना करते हैं।

आज ही अपने बालों
की रक्षा के लिए इस्तेमाल करें

केशा

एकमात्र एजेंट्स :
एम. एम. खम्भातवाला,
अहमदाबाद-१
एजेंट्स:
सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,
बम्बई-२

ओमा के उत्पादकों
की एक और बढ़िया भेंट

HIN.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगिये !

रंगिये !!

रंगिये !!!

लकड़ी को रंगिये !!!

शालीमार वुडकोट

लगाइये

१९०५ से बिकने में सब से आगे

पहले से ही मिलाकर तैयार यह शानदार पेन्ट ५० वर्षों से भी अधिक समय से बराबर मैदान मारता आया है, क्योंकि

- यह महीन पिसा हुआ है और इस में एक विशेष वार्निश माध्यम है जिससे यह हर काम के लायक और टिकाऊ है ;
- यह सतह को कड़ा और चिकना बनाता है ;
- बाहर और भीतर सर्वत्र लगाने के लिये बिल्कुल ठीक है ;
- और २६ शानदार रंगों में मिलता है ।

विस्तृत विवरण के लिये हमारी डाटा शीट डी० एस० १/३/६० भेजने के लिये पोस्ट बक्स ६८, कलकत्ता को लिखिये

SHALIMAR PAINT

शालीमार सुपरलैक सिन्थेटिक इनैमल के निर्माता

SHALIMAR PAINT

JWTSPW 615 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दृष्टि में

जुलाई ६१ के 'नवनीत' में 'भाग्य का बीज' पढ़ा। स्वामी दयानंद के जीवन की भी एक सुंदर घटना इस सम्बंध में है, जो हिन्दी पुस्तक 'अमरवाणी' (पृष्ठ ४३-४४) में इस प्रकार दी गयी है :

लोई ओढ़े एक साधु स्वामी दयानंद से पूछने लगा—"क्यों महाराज, पुरुषार्थ और प्रारब्ध में किसकी महानता है?" उत्तर मिला—" प्रारब्ध पिछले जन्म के कर्मों और संयोग का नाम है; पुरुषार्थ इस जन्म के कर्म का।" मगर वह साधु कह उठा—"पुरुषार्थ तो व्यर्थ है।" ऋषि ने पास बैठे एक भक्त को संकेत किया कि, जाओ इसकी लोई उतारकर सड़क पर फेंक दो। लोई उतरी, तो संत और भक्त में कशमकश हुई। अंत में साधु स्वामीजी के चरण पकड़कर कहने लगा—"महाराज, आज आपने सिद्ध कर दिया कि, जीवन में पुरुषार्थ करना कितना आवश्यक है।"

— बाबूराम गुप्त आर्य, लुधियाना

—०—

मुनि सूर्योदय विजय के पत्र के उत्तर में (जुलाई ६१) आपने लिखा है कि, उच्च कोटि की जासूसी कहानियों का हिन्दी में अभाव है। वास्तविकता यह नहीं मालूम पड़ती। बात दरअसल यह है कि, इस प्रकार की कहानियों को उच्च श्रेणी की पत्रिकाएँ—जैसे नवनीत—हेय दृष्टि से देखती हैं। क्या यह उचित है?

— शम्भु प्रसाद साव, जगदलपुर

—०—

'नवनीत' में वैज्ञानिक लेख अन्य लेखों की तुलना में बहुत कम होते हैं — सारे अंक में एक दो; और कभी-कभी तो वह भी नहीं।.....भारतीय वैज्ञानिकों की जीवनियाँ प्रकाशित करनी चाहिये। मेरी हार्दिक इच्छा यह भी है कि, आप प्रति वर्ष एक विज्ञान-विशेषांक निकालें, जिसमें वर्ष-भर के वैज्ञानिक अनुसंधान का परिचय हो। — आनंद प्रकाश, श्रीनगर

—०—

आजकल भारतीय सिनेमा-उद्योग जो दिन-प्रति दिन अवनति की ओर जा रहा है, उसकी रोकथाम सच्ची समालोचना द्वारा ही हो सकती है। हमारी पत्र-पत्रिकाओं में आलोचना के नाम पर जो कुछ छपता है, वह प्रचार ही होता है। 'नवनीत' में एक स्तम्भ खोलिये, जिसमें फिल्मों की सच्ची समालोचना हो। एक बड़ी कमी की पूर्ति होगी। — एस० कुमार, सहारनपुर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब चाहे जितने कपड़े बना लूं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

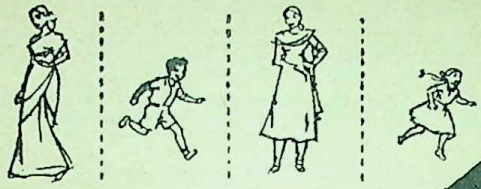

क्योंकि मेरे पास है

उषा

सिलाई मशीन

वह देख कर आप दंग रह जायेंगी कि अपने कपड़े आप बनाने से कितना फायदा होता है। और सीने का आनन्द अलग ! अब चूंकि मेरे पास उषा है, इसलिये मैं इतने कपड़े बना लेती हूं कि पहले सोच भी नहीं सकती थी। विश्वास कीजिये, मेरी उषा अब तक अपने मूल्य से अधिक काम कर चुकी है, और चलती भी है तुरन्त आश्चर्यजनक तेजी से, भले ही आप चलाने में नई हों।

अगर आपने पहले कभी सिलाई न की हो

तो उषा एमब्रायडरी ऐण्ड टेलरिंग स्कूल में दाखिल होकर जल्दी और सस्ते में सीख सकती हैं। पूरी जानकारी अपने पास के उषा डीलर से लीजिये या इस पते पर लिखिये : पो० आ० बक्स नं० २१५८, कलकत्ता

ज ध इं जि नी अ रिं ग घ र्स लि मि टे ड, क ल क त्ता - ३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
सम्पादक
रामकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
रामराय भटनागर
★
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोवे
★
प्रबंध-संचालक
शिवप्रसाद नेवटिया
★
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता
★

कुंज-विहार
कलाकार : अलमेलकर

विषय-सूची

सारपूर्ण रिक्तता	स्वामी रामतीर्थ	१७
मानव की नियति	फ्रेडरिक स्पीडलबर्ग	१८
* सुख के वे क्षण	... ...	२०
* बूँदों का मौसम	माखनलाल चतुर्वेदी	२३
शांति का स्वप्नद्रष्टा जिलार्ड	नार्मन किजन्स	२४
सम्पन्नता का तृतीय संकल्प	श्री वणिक	२७
चित्रों में शिशु-जीवन	ई० डी० वकील	३२
* मज्जा-संक्रमण	जान बार्टलेट	३४
* इंद्रनाथ	शरत् चंद्र	३६
बचत-आंदोलन की भूमिका	मधुकर कोरेगांवकर	४१
सेल : एक दिमागदार कारखाना	देशबंधु शर्मा	४३
स्वप्नों की सृष्टि	संतराम बी० ए०	४७
* एक वाक्य जीवन-दीप बन गया	कन्हैयालाल भणोत	४९
* दुश्मन नहीं, दोस्त	अल्फ्रेड पीटर	५३
बौनों के द्वीप में	एडवर्ड ए० सालिसबरी	५९
अक्षय यौवन का सूत्र	हारवे जेम्स	६३
* कभी न भूलूँ	... ...	६५
* प्रसाद और बंधन	रावी	६७
* जिगर की प्रेयसी का दुर्भाग्य	मुगनी अब्बासी	६८
गजल	जोश मलस्यानी	७१
तलवार की मूठ	अरुण कुमार	७२
* है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ	देवराज 'दिनेश'	७३
* मेरे जीवन का पहला संघर्ष	स्वामी सत्यदेव परिव्राजक	७७
गैंडों का पूर्वज 'बलूचिथेरियम'	अमरेंद्र झा	८०
पूँजा बाबा	श्यामू संन्यासी	८४
* जीवन-क्षण	रमा सिंह	८५
* मलेरिया से गलेरिया का इलाज	डा० मनसुखलाल	८७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जीवन-संगीत की सफल साधिका	जान कोट्रेल
बाप की भूल	... ...
चौरासी सीढ़ियाँ	सुखबीर
मुस्कराहट का मूल्य	वजाहत अली सदींलवी
मैं : एक परिचय	तारादत्त 'निर्विरोध'
गिरजे का नौकर	सामरसेट माम
मामी	प्रो० धीरेंद्र
विशिष्ट वाङ्मय	मन्मथनाथ गुप्त
चिट्टा लहू (पुस्तक-संक्षेप)	नानक सिंह
कन्यादान	अमृता प्रीतम
तटस्थ-नीति	स्वामीशरण सक्सेना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

– चित्रसज्जा –

रूबेन्स, कैसेट, रोदाँ, आर्मस्ट्रांग, जेम्स थर्बर, फेंग त्से-काई, हेब्बार, चावड़ा, रामचंद्र शुक्ल, ओके, प्रभा डोंगरे, सुरेश शेठ, शणै, विवेक।

अगले पृष्ठ का चित्र : राधा-कृष्ण

आगामी अंक के आकर्षण

१. **जीवन ने मुझे क्या सिखाया**
– डा० पी० सी० राय

२. **राजस्थानी भाषाविद् तैस्सितोरि**
– मनोहर प्रभाकर

३. **पढ़ने की रफ्तार बढ़ाइये**
– हरिशंकर

४. **रुदन-रहस्य (अँग्रेजी कहानी)**
– फुल्टन आर्सलर

५. **बापू की छाया में**
– बलवंत सिंह

६. **उमर खैयाम**
– परदेशी

७. **मेरे क्रांतिकारी जीवन के संस्मरण**
– पं० परमानंद

८. **'द नार्दन लाइट' (पुस्तक-संक्षेप)**
– ए० जे० क्रोनिन

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए **प्रकाशित** तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६।४८ खेतवाडी बैक रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ष : १० नवनीत सितम्बर
अंक : ९ [हिन्दी डाइजेस्ट] १९६१
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...र के नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान का प्रतिनिधि मासि...

सारपूर्ण रिक्तता

बाँसुरी से पूछा—"अरी बाँसुरी, क्या बात है कि, वह कृष्ण, वह प्यारा मुरली-मनोहर' जिसकी भौंह के इशारे से शहंशाह काँपते हैं; भीष्म, अर्जुन, दुर्योधन जैसे जिसके चरणों के छूने के भूखे हैं; जिसकी पदरज को अभी तक राजा-महाराजा मस्तक पर धारण करते हैं; चंद्रमुखियाँ जिसकी मृदु मुस्कान को देखने के लिए तरसती हैं—वह कृष्ण तुझे बड़ी चाह और प्यार से खुद बारम्बार चूमता है ! एक जरा-सी बाँस की लकड़ी, तूने ऐसे बड़े भगवान् कृष्ण पर क्या जादू डाला ? तुझमें यह करामात कहाँ से आयी ?"

बाँसुरी ने जवाब दिया—"मैं सिर से पाँव तक बीच से खाली हो गयी। नतीजा यह है कि, कृष्ण खुद आकर मुझे बोसे देता है—जिसके चरणों के चूमने को लोग तरसते हैं, वह शौक से मुझे चूमता है। मुझसे दिलकश नगमे क्यों न निकलें ! मुझमें राम का दम है; मेरी सुरीली आवाज उसी के स्वर हैं।"

तेही जेखेशचो नय शो ज़े पाय तासरे खुद।
वगरनः बोसे लबे लाले यार आसाँ नेस्त ॥

—बाँसुरी की तरह सिर से पाँव तक खुदी से खाली हो जा; अन्यथा प्रेममूर्ति के लाल होंठों का चूमना सहज नहीं है।

— स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव की नियति

शुद्ध सत्ता की ओर अभिसंक्रमण मानव का नियति-निर्धारित लक्ष्य है; वहाँ तक पहुँचने का मार्ग है जीवन को पूरी तरह जीना।

फ्रेडरिक स्पीडलबर्ग

अस्तित्ववादी चिंतन में एक व्यक्ति का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। वह है हाइडैगर, जिसने अस्तित्ववाद को नयी दीप्ति और नया अर्थ दिया है।

मार्टिन हाइडैगर का कहना है कि, कोई भी मनुष्य यथार्थ को तब तक नहीं जान सकता, जब तक वह उसमें से होकर नहीं गुजरता, उसका अंग नहीं बन जाता। ये उसके शब्द हैं—"जो आदमी खेतों और जंगलों में विहार करता है, जो वहाँ रंगों और फूलों की, बादलों और सूर्य-किरणों की रास-क्रीड़ा को देखकर मुग्ध होता है, वह वास्तव में खेतों और जंगलों को नहीं जानता। उन्हें तो जानता है किसान, जिसके लिए वे जीवन-मरण का प्रश्न हैं।"

योगी अरविंद

दिलीपकुमार राय के एक प्रश्न के उत्तर में अरविंद ने कहा था—"जिसे तुम सोचना कहते हो, वह मैं कभी नहीं करता हूँ। मैं देखता हूँ या नहीं देखता...बस!" यह हाइडैगर की भी दृष्टि है। वह सोचता नहीं। सोचने की उपयोगिता में उसे विश्वास नहीं। यथार्थ को जीने में उसका विश्वास है।

हाइडैगर के [illegible] में जर्मन भाषा [illegible] एक शब्द बार-बार आता है, जिसका संस्कृत पर्यायवाची 'सत्' है। सब कुछ सत् है; कोई वस्तु ऐसी नहीं हो सकती जो इस सर्वव्यापी सत्ता का अंश नहीं। यही मान्यता अरविंद की भी है—"जब मैं तर्क की संकीर्ण सीमा से ऊपर उठ जाता हूँ और अपनी [illegible] सत्ता के रहस्यमय विस्मय को यहीं-[illegible] धरती पर, इसी क्षण—अनुभव करने के लिए प्रेरित होता हूँ, उस क्षण मैं अस्तित्ववादी हो जाता हूँ।" यहाँ फिर हाइडैगर और अरविंद एक-दूसरे के दर्शन से [illegible]

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित न होते हुए भी सहमत हो जाते हैं।

हाइडैगर कहता है– धीरे-धीरे दर्शन-शास्त्र विलुप्त हो जायेगा; इसी प्रकार धर्म भी। क्योंकि वे नितांत बौद्धिक हैं, क्लिष्ट हैं।" अरविंद भी एक पत्र में लिखते हैं–"ऐसा लगता है, आज सभी धर्म किसी-न-किसी रूप में निष्प्रभाव हो गये हैं।" यहाँ भी अरविंद और हाइडैगर में ऐकमत्य है। अरविंद कहते हैं–" मुक्ति गौण वस्तु है। इसलिए प्रायश्चित्त और मोक्ष की ऊसर भूमि की ओर न बढ़कर हम अपने वास्तविक कार्य की ओर उन्मुख हों, जिससे हम प्रायश्चित्त और मोक्ष की आवश्यकता ही भूल जायें।"

सभी धर्मों ने मानव के लिए ईश्वर की आवश्यकता बतायी है। लेकिन क्या अब इस धारणा को उलटकर प्रस्तुत करने का समय नहीं आ गया है? मनुष्य केवल ईश्वर में सुख मानकर न रह जाये, ईश्वर से सांत्वना पाकर चुप न बैठ जाये–इस गहन सत्य की अभिव्यक्ति अकेले अरविंद ने नहीं की है। यही अस्तित्ववाद का भी मत है। कवि रिल्के ने ईश्वर से कहा है–

ओ पड़ोसी ईश्वर,
तुम शैलशृंग पर अपनी पुरानी
कुटिया में रहते हो–
अपने आप, अकेले।
काश पहुँच में सकता तुम तक!
किंतु वह डगर, जो वहाँ तक जाती थी,
उसे काल की रेत और आँधी ने
मेट दिया है।
फिर भी किसी तरह वहाँ पहुँचकर
अगर द्वार खटखटा पाऊँ–
तो मैं यह खूब जानता हूँ,
तुम कितने पुलकित होगे।

निम्न से निम्न स्तर का जीवन अस्तित्व-वाद को स्वीकार है, यदि वह सत् के किसी पहलू को अभिव्यक्त करता हो। अरविंद भी कहते हैं–"हमें सब कुछ अंगीकार करना होगा; पर सभी कुछ बदलना होगा। उस बदली हुई, अंतर्जीवन से आलोकित स्थिति में सभी चीजों का अपना अर्थ है।"

हाइडैगर का अभिमत है कि, प्रगतिशील विज्ञान अस्तित्व की रहस्यात्मकता की अनुभूति में बाधक नहीं है; विज्ञान जितना ही गहरा उतरेगा, वह रहस्य की उप-स्थिति का उतना ही स्पष्ट संकेत पाकर उसके उद्घाटन का उतना ही पुष्ट साधन बन जायेगा। अरविंद ने अपनी 'सावित्री' में यह बात कई बार कही है।

आज 'सत्' हमारी तुच्छ सत्ता में अंधकारग्रस्त पड़ा है; अवचेतन के निम्न स्तर पर उसने अपने को लुप्त कर रखा है। हमें उसे खींचकर ऊपर लाना है।

हाइडैगर का दर्शन सत्ता की खोज का दर्शन है। हम अपने आप से भागने की कोशिश में रहते हैं और हमारा अंतःकरण हर बार हमें अपने आपकी ओर लौटने को बाध्य करता है। यह बाध्यता इसलिए है कि, मानव की जड़ इतिहास में है; उसकी एक नियति है–शुद्ध अस्तित्व की ओर अभिसंक्रमण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख के वृक्ष

भौतिक सुख-सम्पदा के परे जीवन की रस-धारा में अवगाहन करानेवाला एक यात्रा-प्रसंग एक फ्रांसीसी महिला के शब्दों में।

शहरी जीवन की भाग-दौड़ से पिंड छुड़ाकर मैं किसी शांत-एकांत स्थान की खोज में थी। मेरे पास सिर्फ बीस दिन का समय था और बहुत थोड़ा पैसा! लेकिन प्रस्थान से पहले मेरे भाग्य ने पलटा खाया—एथेंस से लौटे हुए एक यात्री से मेरी अचानक मुलाकात हो गयी। मैंने बताया कि, मैं कोई शांतिपूर्ण स्थान ढूँढ़ रही हूँ।

"अपने लिए ?"

"हाँ, अपने लिए ही। परंतु खास तौर से अपनी पुस्तक के पात्रों के लिए। इस संसार में तो अब ऐसे स्थान कहाँ रहे हैं ?"

इस पर मेरा मित्र हँस पड़ा और बोला—"आप चाहे जितनी जगह देख लीजिये—इनका तो कोई अंत है नहीं। लेकिन क्या आप सचमुच इस कृत्रिम संसार को छोड़ना चाहती हैं ? मैं आपको वह स्थान बता सकता हूँ, जो आप अपने और अपने पात्रों के लिए ढूँढ़ रही हैं। मेरी निगाह में एक ऐसा गाँव है, जहाँ जाकर आप अवश्य प्रसन्न होंगी।"

इसके बाद वह यात्री गम्भीर हो गया।

× × ×

हवाई जहाज के नीचे बादल अदृश्य हो गये थे। सिर्फ एक रंगीन, बड़ी काँच की खिड़की-सी दिखाई देती थी, उसमें जैसे हरे और लाल रंगों के टापू कलात्मक रूप से जड़ दिये गये हों। पृथ्वी मानो मेरा स्वागत करने के लिए ऊपर उठ रही थी, नीचे बंदरगाह में हिलते हुए जाल और मस्तूल दिखाई देने लगे। पहाड़ी पर जैतून वृक्षों का कम्पन भी मैं अनुभव करने लगी।

मिटिलीन में एक हँसमुख युवती ने मुझे नमस्कार किया और वह मुझे अपने घर बुला ले गयी। मेरे आराम में उसने कोई कसर न उठा रखी।

इसी बीच एक डाक्टर मुझे मोलिवोस नामक गाँव में ले आया। हाँ, यह वही गाँव था, जिसका उस यात्री ने जिक्र किया था। यहाँ की धरती से ही गम्भीर शांति प्रकट हो रही थी। पर्वतों की श्रेणियाँ और वातावरण का हलकापन शुरू हो गये थे। जैतून के नीचे उगे लाल, जामनी और सफेद फूल गलीचे के समान प्रतीत हो रहे थे। दूसरी तरफ आकाश और पर्वतों के बीच दायें-बायें और सामने समुद्र था। उसके नीले रंग की उपमा मिलना मुश्किल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अपने अभीष्ट स्थान पर पहुँच गये थे। माता की छाती से चिपके बच्चे के हाथ की तरह पर्वत के साथ चिपका मोलिवोस गाँव सूर्य के प्रचंड प्रकाश में स्नान कर रहा था। वहाँ प्रवेश करते ही श्रमिक हमारा अभिवादन करने लगे।

तभी मेरे मित्र ने कहा—"चलिये, आपका यहाँ के मेयर से परिचय कराऊँ। वे आपके आराम का सारा प्रबंध करेंगे।"

यहाँ मुझे अपने दस दिन के प्रवास में प्रतिक्षण एक आश्चर्य का अनुभव हुआ। इस अद्भुत गाँव में मुझे दो बातों ने विशेष रूप से प्रभावित किया। एक तो इन लोगों का आत्मसम्मान, जिसके कारण ये लोग पदारूढ़ व्यक्ति के साथ भी समान स्तर पर बातचीत कर सकते हैं; और दूसरे मेयर की विनयशीलता। वह उन लोगों की इस समानता की भावना को बिल्कुल स्वाभाविक बात मानता था।

दोपहर का भोजन हमने समुद्र-तट पर बने एक मामूली-से रेस्टोरैंट में किया। इसके बाद मिटिलीन के डाक्टर ने मेरा अन्य लोगों से परिचय कराया। अपने स्कूल में सीखी टूटी फूटी फ्रेंच भाषा में उन लोगों ने विश्वास दिलाया कि, मुझे जब भी जरूरत होगी, वे मेरी सेवा के लिए हाजिर रहेंगे। और वे हँसते हुए चले गये।

मुझे एकाएक ऐसा अनुभव हुआ, जैसे मैं सारे मानव-समाज की एक अमूल्य भेंट—मित्रता—प्राप्त करने जा रही हूँ। मेरी घड़ी के काँटे घूम रहे थे। पर कितने बज गये हैं, आज कौन-सा दिन है—यह सब मैं सचमुच भूल गयी थी। पेरिस में तो रोज समय के साथ दौड़ने की होड़ लगती थी; पर यहाँ मैं जानती थी कि, सारा काम बिना किसी जल्दबाजी के पूरा हो जायेगा।

वास्तव में भय, त्रास, संघर्ष या दुर्गुणों का वर्णन करने के लिए हमें आसानी से शब्द मिल जाते हैं; पर सुख का वर्णन करना कितना मुश्किल होता है! फिर ऐसा सुख, जो मानव-मन के सौंदर्य एवं सरलता से प्राप्त हो, उसकी तुलना ही क्या?

पहले तो मुझे इस सुख का विश्वास तक न हुआ! पर मोलिवोस ने मेरा मन जीत ही लिया। मैंने अपने मन में जिस चीज की कल्पना की थी, वह मुझे वहाँ मिल गयी। मुझे न तो यहाँ के लोगों से निराशा हुई; और न यहाँ की चीजों से।

रात हो चुकी थी। चमकती चाँदनी में मैंने एक-दूसरे से बंधी, थोड़ी-थोड़ी देर बाद हिलती छोटी-छोटी बीस नौकाएँ देखीं। रात्रि की निःस्तब्धता में एक प्रकार की दाहकता थी, एक प्रकार की आग थी, जो ऐसी निस्सीम शांति के अनभ्यस्त आदमी के मन में अक्सर विश्वास लौट आने पर सुलग जाया करती है। साथ चलते हुए मेयर को मेरी घबराहट का आभास मिल गया। वे अचानक ही पूछ बैठे—"क्या आपको विश्वास नहीं होता? पिछले दस वर्षों में यहाँ किसी कैदी के लिए जेल के दरवाजे नहीं खोले गये। और इसका श्रेय मुझे नहीं—मैं तो सिर्फ आठ मास से ही यहाँ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मेयर हूँ ! दरअसल हमारे यहाँ ऐसा अपराध होता ही नहीं, जिसके लिए दंड दिया जाय। मैं जानता हूँ कि, यहाँ के बहुत-से आदमी गरीब हैं; ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें रोटी तक नहीं नसीब होती। पर हम इस अभाव को भी खत्म करना चाहते हैं।"

"तो क्या आपके यहाँ एक भी चोर नहीं! शराबी नहीं! खूनी नहीं! ओह....." उत्तर में उन्होंने नकारात्मक सिर हिलाया।

और तभी मुझे अखबारों, रेडियो और फिल्मों का खयाल आया, जिनमें ऐसी घटनाएँ अक्सर आया करती हैं।

उनकी बातें सुनकर मेरी उत्कंठा और बढ़ी, मैंने पूछा—"क्या आप इन सद्गुणों पर विस्तार से कुछ बता सकेंगे? अभी आपने बताया कि, दूकानदार बिना ब्याज लिये हमेशा उधार देते रहते हैं। देनदार बिना ठगी के अपना कर्ज चुका देता है। जिन लोगों के पास कुछ भी नहीं है, वे भीख माँगने के बजाय भूखे रहना पसंद करते हैं। इन सबका क्या कारण है?"

"यह आदत भी हो सकती है और अच्छा आदर्श सामने रखने की शक्ति भी! इसके अलावा गाँव के कानून को—भले ही वह अलिखित हो—तोड़ने पर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। और कौन भला आदमी समाज से बहिष्कृत होना चाहेगा! अपने लोगों के बीच रहते हुए भी एकांत सेवन करना पड़े, इससे बढ़कर और क्या सजा हो सकती है?"

मैं समझ गयी कि, उनके सद्गुणों के पीछे कौन-सी भावना काम करती है।

कुछ वर्ष पहले वहाँ पानी की तंगी थी। अब वहाँ पाइप द्वारा पानी का प्रबंध हो गया है। लेकिन रोटी की समस्या अभी भी हल नहीं हुई है। मच्छीमारों की खस्ता हालत है। वर्षा भी पर्याप्त नहीं होती।

इतना सब होते हुए भी वहाँ एक भिखारी नहीं दिखाई देता। किसी के मुख पर कटुता की छाया तक नहीं। कभी कोई शिकवा-शिकायत करता नहीं दीखता। मैं जहाँ-जहाँ गयी, हर घर में ग्रीक प्रथा के अनुसार मुझे काफी, एक चम्मच मुरब्बा और फूल की टहनी दी गयी।

मैं जिस घर में रहती थी, उसकी मालकिन सवेरे छः बजे मुस्कराती हुई मेरे लिए रोटी, भेड़ के दूध का पनीर, एक ग्लास गरम दूध और काफी ले आती थी! खिड़की के बाहर सड़क पर लोग बिना किसी जल्दी के अपने-अपने कामों पर जाते दिखाई देते थे। मैं भी नाश्ता करके वहाँ की गलियों की भूल-भुलैयों में सैर करने निकल पड़ती थी।

मुझे अच्छी तरह याद है—एक मजदूर की दी हुई माला और गाँव की युवतियों की मुस्कराहट।

आज स्वनिर्मित आवश्यकताओं के पीछे करोड़ों मनुष्य समय और मशीन के गुलाम बने हुए हैं। परंतु दुनिया में ऐसे भी लोग हैं, जो अपनी आत्मा को नहीं खोना चाहते। ऐसे लोगों को चिंतन करने, प्रेम करने और जीने के लिए इस तरह के उन्मुक्त वातावरण में आना चाहिये।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूँदों का मौसम

मातृभूमि है यह , बूँदों का मौसम काँप रहा है
सावन-भादों के घर आकर पोथी बाँच रहा है ।
हरी बिछावन, हरी सजावट दूर-दूर तक फैली
भू की और गगन की शोभा हरी और मटमैली ।
गिरि, वन, नद पर सुंदरता की वेणी खुली-खुली है
इस जड़ पर चैतन्य धार-सी कितनी ढुली-ढुली है !
पैंज बजे नवल पौधों के, झिल्ली की झनकारें
दिन में साँझ लौट आयी है, लो आरती उतारें ।
कुछ-कुछ सर्दी में गर्मी है, गर्मी में है सर्दी
बच्चे दौड़ रहे हैं, गँदले पानी में है जरदी ।
पागलपन, बादल-दल पर, चढ़ आया है घनघोर
टूक-टूक होकर गिर आया इस बरसन का जोर ।
कभी-कभी धूपों में चिड़ियाँ पाखें सेंक रही हैं
कल-कल की बोली वसुधा के शीशों फेंक रही हैं ।
कुछ पंखिनियों की सुस्तानें उड़ना भूल उठी हैं
और घोंसलों के झूलों पर झूले झूल उठी हैं ।
कौन देवता सिर पर आकर रिमझिम बरस उठा है
घनश्याम तेरी शोभा को मन है, परस उठा है ।
हिमगिरि के सफेद सिर पर से उतरी सुरसरि धारा
कुछ अपना, कुछ तरल पराया भर-भर लायी धारा ।

— माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं मृत्युद्वार पर खड़े होकर भी मानवता के संरक्षण के लिए चिंतित विज्ञान-मनीषी की जीवन-रेखाएँ—पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके।

नार्मन कजिन्स

टेलीफोन पर एक मित्र ने मुझे बताया कि, लियो जिलार्ड न्यूयार्क हास्पिटल में कैंसर से मरणासन्न अवस्था में पड़े हैं। शीघ्र ही मैं उनसे भेंट के लिए दौड़ पड़ा। अस्पताल के बरामदे में तेज आवाज सुनाई दे रही थी, ठीक जिलार्ड जैसी।

उनके कमरे का दरवाजा अधखुला था। मैंने अंदर झाँका, तो दंग रह जाना पड़ा। बिस्तर से सटी कुर्सी पर बैठे हुए जिलार्ड टेलीफोन पर किसी को 'सीधा' कर रहे थे। सामने बिस्तर पर ढेर सारी फाइलें जमाकर उन्होंने उसे मेज का रूप दे दिया था। उस समय वे कुछ नोट्स भी लिख रहे थे।

मुझे देखते ही मुस्कराहट उनके सारे चेहरे पर बिखर गयी। उन्होंने बैठने के लिए सामने की कुर्सी की ओर इशारा किया। मैंने सावधानी से कुर्सी पर फैले कागज-पत्र उठाये और यह चाहा कि, उन्हें कहीं तरतीब से रख दूँ। परंतु कमरे में कहीं भी तो उन्हें रखने की जगह नहीं थी। हारकर मैंने उन्हें फिर से कुर्सी पर ही रख दिया और उस पर ही बैठ गया।

अभी तक जिलार्ड फोन पर ही व्यस्त थे। पहले जब मेरी उनसे भेंट हुई थी, तब वे इतने अधिक दुबले व पीले नहीं थे। पर बीमारी की इस हालत में भी उनके भव्य, आकर्षक व्यक्तित्व में कहीं कुछ कमी नहीं नजर आ रही थी।

जिलार्ड को इतना व्यस्त देखकर मुझे लगा कि, उनके प्रमुख संघर्ष–विश्व-शांति-अभियान के समक्ष उनका अपना जीवन-संघर्ष गौण है।

अणु के विघटन में पहली बार जो चार वैज्ञानिक सफल हुए, उनमें जिलार्ड भी एक थे। अमरीका में पहली बार इस आविष्कार का पेटेंट भी फरमी और जिलार्ड के नाम हुआ। जिलार्ड ने ही आइंस्टीन को अणु-शक्ति के अपार स्रोत की व्यावहारिक सम्भावनाओं से परिचित कराया था। इसी आधार पर रूजवेल्ट ने मैनहटन प्रयोजना स्वीकार की और अणुबम जन्मा।

द्वितीय विश्व-युद्ध के समाप्त होते ही जिलार्ड एक नये अभियान में जुट गये। उनकी समूची विचारधारा और क्रिया-शक्ति एक ही दिशा में अग्रसर हो उठी–अणु-शस्त्रों की घातक होड़ से मानव-जाति की रक्षा करना। इस तनावपूर्ण वातावरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

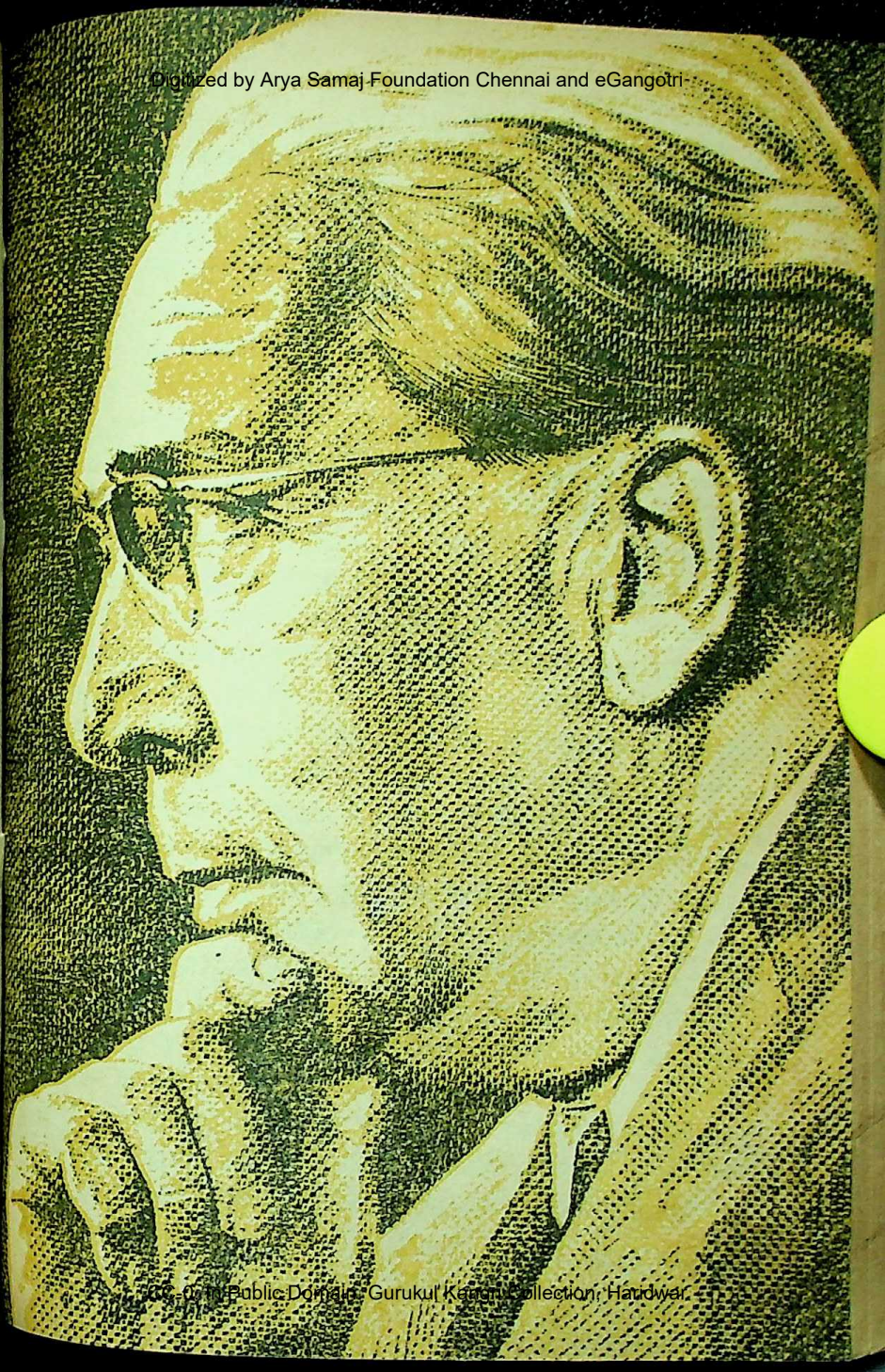

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

व राजनीतिक शीत-युद्ध की आँच में भी जिलार्ड ने अपनी महत्वता और सम्मान नहीं खोयी । परंतु जिलार्ड पिछड़ चुके थे । काल हावी होता जा रहा था—उन पर और उनके द्वारा छेड़े गये अभियान पर भी।

फोन पर जैसे-तैसे बातचीत समाप्त करके वे मेरी ओर देखकर खिल उठे । फिर हल्की-सी निराशा स्वरों में भरकर कहने लगे—"कैसे हैं ये रेडियोलाजिस्ट भी ! एक्स-रे के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं । मुझे इन लोगों को रेडियोलाजी सिखानी पड़ रही है । बड़े मजे की बात है । मैं बीमार हूँ और मुझे अपने ही इलाज के बारे में जरूरी निर्देशन देने पड़ रहे हैं ।"

मैं उनसे उनका हाल पूछने लगा । उत्तर में वे चुटकुले सुनाने लगे । और अपनी ही बातों पर हँसी बिखेरने लगे । फिर उन्होंने फर्श व कमरे में फैले कागज-पत्रों पर नजर डालते हुए बताया कि, उन्हें क्या-क्या करना है । 'न्यू अमरीका लाइब्रेरी' के लिए वे संस्मरण लिख रहे थे । कुछ कहानियों व स्वतंत्र लेखों के प्रकाशन की योजना थी । निश्शस्त्री-करण अभियान सम्बंधी कुछ पुस्तिकाएँ तैयार करनी थीं । ढेरों डाक निबटानी थी । चिकित्सा से क्या नतीजा निकलनेवाला है, यह स्पष्ट हो चुका था । लियो जिलार्ड डाक्टरों से खिलवाड़ कर रहे थे । वे भेंट करनेवालों से दिल बहलाव करते और ठहाके मारकर हँसी से सारा वातावरण उद्वेलित किये रहते, जैसे आस-पास कहीं भी मृत्यु की छाया तक न हो ।

लदाख के अस्पताल से भाग निकलकर और अपने मित्रों से मिलने पहुँच जाते अथवा किसी अधूरे काम को पूरा करने निकल पड़ते । कागजों के फैले हुए ढेर तथा उनकी योजनाओं को देखते हुए मुझे तो लगा कि, यह काम तीन वर्ष से कम में नहीं निबटाया जा सकेगा । कैंसर और मृत्यु को भी लियो जिलार्ड को परास्त करने के लिए तीन वर्ष तो ठहरना ही होगा ।

× × ×

उपर्युक्त मुलाकात को गुजरे एक वर्ष हो चुका है । जिलार्ड और भी अधिक मुस्तैदी से अपने काम में जुटे हुए हैं । उन्हें वे बाहर भागदौड़ नहीं कर रहे होते हैं, तो विभिन्न राष्ट्रों को निकट लाने की पेचीदगीपूर्ण समस्या में उलझे रहते हैं ।

जिलार्ड का मस्तिष्क एक कारखाना है । विभिन्न योजनाओं, नये-नये आविष्कारों व विज्ञान से लेकर राजनीतिक गुत्थियों के हल वहाँ से सदा निःसृत होते रहते हैं । चोटी के अणु-वैज्ञानिकों में जिलार्ड का स्थान है । उन्होंने अणु-रसायन, प्राणिशास्त्र, जीवशास्त्र, भूगर्भ, अणु-विकिरण तथा रेडियोलाजी, एक्स-रे सम्बंधी अनेक महत्वपूर्ण शोध किये हैं । रोग-शय्या पर मृत्यु से जूझते हुए भी वे एक महत्वपूर्ण आविष्कार में निरत हैं । परंतु इस आविष्कार के प्रयास में अभी उन्हें सफलता के दर्शन नहीं हुए हैं । और वह अधूरा आविष्कार है—विश्व-शांति की स्थापना ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पन्नता का तृतीय संकल्प

भारतीय कोटि भारतीय अपने और अपनी कोटि-कोटि भावी संतति के लिए सुखमय एवं सार्थक जीवन के निर्माण के संकल्प में भरकर प्रथम और द्वितीय पंचवर्षीय योजना के रूप में दो चरण उठा चुके हैं और अब तीसरा चरण उठाने को उद्यत है। 'नवनीत' अपनी परम्परा के अनुसार यहाँ तृतीय पंचवर्षीय योजना की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत कर रहा है।

श्री वणिक

प्रथम पंच-वर्षीय योजना का परिचय देते समय हमने 'नवनीत' (जनवरी, ५३) में जो लिखा था, उसे यहाँ तनिक भिन्न शब्दों में पुनः दोहराना अनुचित न होगा : पुरातन काल में सम्पुट में जल, अक्षत, पुष्प लेकर भारत-सम्राट् ने संकल्प किया था स्वर्ग से गंगा को आर्यावर्त में लाकर देश को धन-धान्य से पूर्ण करने का। ७७४ पृष्ठ के ग्रंथ पर लोह-लेखनी से हस्ताक्षर करके देश का प्रधान मंत्री संकल्प करता है-देश में जगह-जगह नये पन-बिजली-केंद्र, कल-कारखाने, सड़क-रेल, स्कूल-अस्पताल इत्यादि स्थापित करने का।

ऐसे दो संकल्पों के उद्घोष और कार्यान्वय के बाद, आज सम्पन्नता-सम्पादन के तीसरे शुभ संकल्प का समारम्भ हुआ है। 'नवनीत' अपनी परम्परा के अनुसार इस तीसरे पंच-वर्षीय आयोजन की रूपरेखा पाठकों के समक्ष उपस्थित कर रहा है।

पहली पंच-वर्षीय योजना ३,१०० करोड़ रुपये की थी और दूसरी ६,७५० करोड़ की; तीसरी १०,४०० करोड़ की होगी। यह सही है कि, कीमतों की तेजी के कारण बीस वर्ष पहले का रुपया अब २५ नये पैसे के बराबर ही रह गया है। फिर भी ये करोड़ों-अरबों के लेखे-जोखे देश के आय-व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के लिए ऐतिहासिक महत्व के हैं। किंतु

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समृद्ध देशों के लेखे-जोखों के आगे ये बहुत ही मामूली हैं; परंतु गरीब अनुन्नत देशों के समुदाय में आय-व्यय के हमारे ये संकल्प सर्वथा सराहनीय हैं।

साधारण नागरिक अपनी मेहनत से उपार्जित धन में से कुछ बचाकर, कुछ कर्ज लेकर घर बाँधता है और पीढ़ी-दर पीढ़ी उसकी संतान उस मकान का सुख भोगती है। स्वतंत्र होने के बाद से सारा देश अपनी कमाई में से कुछ कर के रूप में और कुछ कर्ज के रूप में धन-राशि एकत्र कर तथा विदेशियों से कर्ज व सहायता लेकर एक ऐसे विशाल घर—देश—के निर्माण के लिए कृतसंकल्प है, जिसमें प्रत्येक निवासी को आवश्यकता के अनुसार अन्न, वस्त्र, शिक्षा, आवास-स्थान, चिकित्सा-उपचार और सुख एवं शांति उपलब्ध हो।

तैंतीस करोड़ देवों का देश अब नौ

अनुमोदित व्यय (करोड़ रुपये)	द्वितीय योजना में व्यय	तृतीय योजना में अनुमानित
कृषि व सामुदायिक विकास	५३०	१,०२०
सिंचाई की छोटी-बड़ी योजनाएँ	४२०	[illegible]
बिजली	४४५	१,०१०
ग्राम व छोटे उद्योग	१७५	२६०
बड़े उद्योग व खानें	९००	१,५२०
यातायात व संवाद-वहन	१,३००	१,४८०
समाज-सेवा व विविध	८३०	१,३००
अन्य	—	२००
जोड़	४,६००	७,५००

द्वितीय-तृतीय योजनाओं में सरकारी व्यय—तुलनात्मक आंकड़े

द्वितीय-तृतीय योजनाओं में कई प्रमुख उत्पादक सामग्रियों का उत्पादन

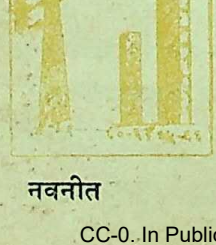

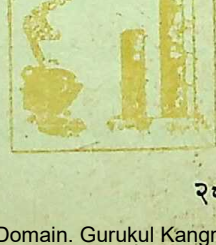

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्नीस करोड़ का देश हो चुका है। और जनवृद्धि की रफ्तार बढ़ती की ही और है। ऐसी अवस्था में दाँत और चनों की, उपभोग और उत्पादन की यह होड़ और दौड़ देश के भगीरथों को काफी परेशान कर रही है और करती रहेगी। पर प्रयास तो यही होना है कि, खानेवाले मुँह कम और खाने की सामग्री खूब बढ़े।

यहाँ कतिपय कोष्ठक दिये जा रहे हैं, जिनसे तृतीय पंच-वर्षीय योजना का स्वरूप जाना जा सकेगा।

योजना-व्यय का मुख्य स्रोत जनता ही है। उपभोग्य वस्तुओं पर, अपनी आमदनी पर कर देकर देशवासियों को केंद्र और राज्य-सरकारों का पेट भरना होगा। अनुमान है कि १७ अरब रुपया इन पाँच वर्षों में जनता से नये करों द्वारा लिया जायेगा, २२ अरब रुपया विदेशों से प्राप्त करना होगा, ५॥ अरब के नये नोट छापने होंगे और बाकी ३०॥ अरब वर्तमान साधनों से प्राप्त किया जायेगा।

सरकारी क्षेत्र में ७५ अरब रुपया यों खर्च किया जायेगा :

कृषि-सुधार-वृद्धि तथा सिंचाई मद में २७ अरब; विद्युत्-उत्पादन, छोटे-बड़े कारखानों तथा सदनों में १८ अरब; रेल-सड़क आदि में ९ अरब; अन्य कार्यों में १५ अरब।

इस सरकारी खर्च के अतिरिक्त इस योजना में निजी क्षेत्र में ४३ अरब रुपये लगाये जाने का अनुमान है। उसका ब्यौरा इस प्रकार है :

खेती व सिंचाई में ८॥ अरब; बिजली-उत्पादन में आधा अरब; यातायात में २॥ अरब; छोटे उद्योगों में ३। अरब; बड़े

[illegible]	६०\६१	६४\६५		[illegible]
अन्न	७६०	१०००	लाख टन	३२
भूमि-सिंचाई	७००	९००	लाख एकड़	०९
इस्पात	३५	९०	लाख टन	१६७
खनिज तेल	७७	९९	लाख टन	७०
मिल-कपड़ा	५१३	५८०	करोड़ गज	७३
खादी, करघा कपड़ा	२३५	३५०	करोड़ गज	५९
कच्चा लोहा	१०७	३००	लाख टन	१८०
कोयला	४४६	६७०	लाख टन	५६
बिजली	५७	१२७	अरब किलोवाट	१२३
रेल से माल ढुलाई	१५	२५	करोड़ टन	५९
डाकघर-पोस्ट	८०	११०	लाख [illegible]	३७
पाठशालाओं में विद्यार्थी	५३५	[illegible]	लाख	[illegible]
निर्यात	६४५	८५०	करोड़ रुपये	३०
[illegible] दैनिक औसत [illegible]	२१००	२३५०		[illegible]
[illegible] कपड़ा	१५॥	१७	गज	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम दो योजनाओं की प्रगति	५०/५१	५५/५६	६०/६१		१०वर्षों में वृद्धि
राष्ट्रीय-आमदनी (६०/६१ की कीमतों पर)	१०२	१२१	१४५	अरब रुपये	४३
प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष (६०/६१ की कीमतों पर)	२८४	३०६	३३०	रुपये	१६
कृषि-उत्पादन इंडेक्स (४९/५०=१००)	९६	११७	१३५	....	४१
अन्न-उत्पादन	५२२	६५८	७६०	लाख टन	४६
भूमि-सिंचाई	५१५	५६२	७००	लाख एकड़	३६
औद्योगिक उत्पादन इंडेक्स (५०/५१=१००)	१००	१३९	१९४	....	९४
इस्पात-उत्पादन	१४	१७	३५	लाख टन	१५०
मिल कपड़ा	३७२	५१०	५१३	करोड़ गज	३८
खादी-करघा कपड़ा	९०	१७७	२३५	करोड़ गज	१६२
बिजली	२३	३४	५७	लाख किलोवाट	१४८
रेल से माल-ढुलाई	९	११	१५	करोड़ टन	६८
सड़कें	९७	१२२	१४४	हजार मील	४८
पाठशालाओं में विद्यार्थी	२३५	३१३	४३५	लाख	८६
उच्च शिक्षण में विद्यार्थी	४१	५९	१३८	लाख	२३०
अस्पतालों में शय्याएँ	११३	१२५	१८६	हजार	६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारखानों में १०० अरब; मकानात में ११। अरब और अन्य कार्यों में ६ अरब।

पूरे १ खरब १६ अरब की लागत के इस महावृक्ष के क्या फल होंगे? अनाज आज के मुकाबले एक तिहाई ज्यादा पैदा होगा; लोहा डेढ़-पौने दो गुना ज्यादा उपलब्ध होगा। कपड़े के निर्माण में सवा गुना वृद्धि होगी, तो विद्युत्-शक्ति में दो-गुने से भी ज्यादा; रेल की परिवहन-शक्ति आज के मुकाबले डेढ़ गुना अधिक होगी और स्कूल-कालेजों में डेढ़ गुना ज्यादा विद्यार्थी होंगे। अन्य उपभोग्य एवं उत्पादक माल के उत्पादन और सामाजिक सुविधाओं में भी इसी प्रकार की अभिवृद्धि का अनुमान है।

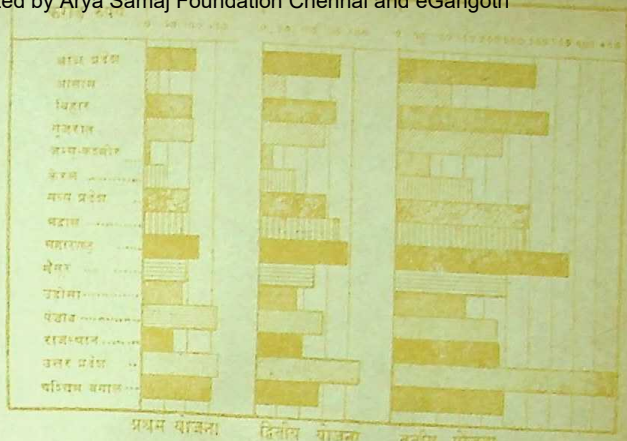

तीनों योजनाओं में राज्य सरकारों द्वारा आर्थिक विनियोग

अंत में एक बार फिर हमें लगभग एक दशक पूर्व लिखी अपनी बात को दोहराना उचित प्रतीत होता है:

"यह सब सिद्ध होगा तभी, जब सारा देश, देश का प्रत्येक कर्त्तव्यपरायण नागरिक इसका बोझ अपने कंधों पर उठायेगा और सविवेक, सपरिश्रम इस काम में ईमानदारी से लग जायेगा।"

तृतीय योजना के स्रोत (करोड़ रु०)	राज्यों से	केंद्र से	जोड़
चालू व रेल्वे बजटों की बचत	१४०	५१०	६५०
सरकारी कारखानों की बचत	१५०	३००	४५०
सरकारी कर्ज	३२५	४७५	८००
अल्प बचत व प्राविडेंट फंड	२९५	५७०	८६५
लोहे का फंड व विविध	(–) २५८	५३३	२७५
नये कर, सरकारी कारखानों से अतिरिक्त आय	६१०	११००	१७१०
विदेशी सहायता	.....	२२००	२२००
मुद्रा-प्रसारण	२६	५२४	५५०
जोड़	१४६२	६०३८	७५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रों में शिशु-जीवन

बच्चे यों ही प्यारे होते हैं; कलाकार की प्रतिभा का सहारा पाकर वे और भी प्यारे बन जाते हैं।

ई० डी० वकील

यूरोप के अनेक ख्यातिप्राप्त कलाकारों ने बाल-सुलभ भाव-मुद्राओं का चित्रण बड़ी सफलता से किया है। रूबेन्स उनमें अग्रणी हैं। रूबेन्स की बाल-कला की संवेदनशीलता एवं तेजोमयता का प्रमाण उनकी कृति 'स्टडी फार एन इन्फैंट क्राइस्ट' से मिलता है। इस कलाकृति में बाल-भाव की सहज-सुचारु अभिव्यक्ति बड़ी सरलता से की गयी है। रूबेन्स ने इस चित्र में अपने पुत्र निकलस की मुखाकृति का चित्रण किया है। बालक के चेहरे पर जो भाव-गम्भीर मुद्रा चित्रित हुई है, वह किसी प्रौढ़ और सौम्य संत का स्मरण दिलाती है। इस अमर कृति को देखकर हम कलाकार की दक्षता, उदात्तता और कल्पना की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते।

इस चित्र में नन्हे बालक के कपोलों पर जो माधुर्य का भाव है, उसका सलोनापन देखते ही बनता है। उसके विचारपूर्ण नेत्र, मुख की कोमल मुद्राएँ और माथे की नपी-तुली तरंगित रेखाएँ—ये सब कलाकार की मंजी हुई तूलिका की निशानी हैं। वास्तव में यह एक महान् कृति है और सूक्ष्म अध्ययन का नमूना है।

'ला टायलेट' (शृंगार) शीर्षक चित्र में एक छोटी बालिका की सहज-सरल एवं मधुर छवि है। माँ और बेटी दोनों की शांत-शिथिल भाव-मुद्राओं से चित्र बड़ा हृदय-स्पर्शी हो गया है। इस कलात्मक और पारिवारिक कृति का चित्रण अमरीका में जन्मी चित्रकार कैसेट ने किया है। पार्श्वभूमि के गूढ़तम भावों के साथ माँ और बेटी की कोमल भावनाओं के सामंजस्य ने चित्र को और भी आकर्षक बना दिया है।

रूबेन्स और कैसेट की कलाकृतियों का तुलनात्मक अध्ययन करते समय कैसेट की कृति में पेरिस की शैली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। किंतु सिर्फ इतने से ही उसे "प्रभाववादी" नहीं कहा जा सकता।

कैसेट की इस कृति में भाव-मुद्राओं की अपेक्षा आकृति की रेखाओं पर विशेष

कैसेट का 'टायलेट'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल दिया गया है, और ये रेखाएँ कलाकार की बाल-चेष्टाओं के अध्ययन का प्रमाण देती हैं। यद्यपि कलाकार का ध्येय यहाँ नारी का चित्रांकन करना ही है, तथापि छोटी बालिका का चित्र ही अपेक्षाकृत उसने अधिक सरल, स्वाभाविक, कोमल और प्राणवान् बनाया है।

रूबेन्स के चित्र का बालक भावपूर्ण मुद्रा में है; किंतु कैसेट का चित्र अधिक वास्तविक है।

तीसरा चित्र इस दृष्टि से और भी ज्यादा प्रभावोत्पादक है। यह एक वैयक्तिक शैली का चित्र है। इस पेन्सिल-निर्मित चित्र में मर्मस्पर्शी आकर्षण की अचूक शक्ति है। हाथ में गितार लिये खड़े हुए इस बालक में छोटी-छोटी बारीक रेखाओं का उपयोग न करके सशक्त रेखाओं द्वारा भाव प्रदर्शित किये हैं और यह बात चित्र पर प्रथम दृष्टिपात से ही स्पष्ट हो जाती है।

जल्दी टिकट दो, रेल छूट रही है !
फ्रेंग त्से-काई की शिशु-चित्रावली से

को देखते ही जैसे हमारे कान में संगीत के मधुर स्वर गूँजने लगते हैं। अमरीकी चित्रकार टामस हार्ट बेन्टन ने इस कृति

रूबेन्स का 'स्टडी फार एन इन्फेंट क्राइस्ट'

बेन्टन के इस चित्र का शीर्षक भी उतना ही महत्वपूर्ण है। 'संगीत-शिक्षण' शीर्षक से बालक की संगीत की आराधना का भाव और भी स्पष्ट हो उठता है।

चित्रकला में अपनी वैयक्तिक शैली के साथ-साथ बेन्टन ने मानव के नाना रूपों के भावों का सामंजस्य करके अपनी गहन अभिव्यक्ति और शैली-सामर्थ्य का परिचय दिया है।

उपर्युक्त तीनों कलाकारों के इन चित्रों का एक ही विषय है—शिशु। विषय तो यद्यपि छोटा-सा है; किंतु इसके हजारों-लाखों रूप हो सकते हैं; इसलिए जब इन तीनों कलाकारों के ये चित्र एक साथ देखते हैं, तो उनकी भावाभिव्यक्ति, चित्रण-शैली और वैयक्तिक रुचियों की भिन्नता से यह बात सरलता से समझी जा सकती है। और फिर यही कल्पना-शक्ति एवं मौलिकता ही तो किसी कलाकार की अपनी विशेषता होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नयी चिकित्सा-विधि
मज्जा-संचरण

असाध्य समझी जानेवाली व्याधियों पर विजय पाने के वैज्ञानिक अभियान में एक नया चरण।

जान बार्टलेट

युगोस्लाविया की राजधानी बेलग्रेड के बाहर चीड के घने जंगलों के बीचों-बीच एक गुप्त और सुरक्षित स्थान पर पाँच वैज्ञानिक किसी परमाणु-प्रयोग में लगे थे। कुछ असावधानी हो गयी और उन पर विकिरण का असर पड़ गया। दूसरे वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाया, तो उस विकिरण की शक्ति ५०० रोंटजेन थी। ७०० रोंटजेन मनुष्य के लिए प्राणघातक होता है।

डाक्टरों ने कहा कि, इन वैज्ञानिकों के जीने की केवल ५० प्रतिशत सम्भावना है। सो पाँचों वैज्ञानिकों को तुरंत पेरिस के मदाम क्यूरी अस्पताल भेजा गया।

शुरू में तो पाँचों आदमी बिल्कुल खुश और तंदुरुस्त नजर आते थे। जलवायु-परिवर्तन से उनका वजन भी बढ़ गया। लेकिन कुछ ही दिन बाद वे दुबले होने लगे। अब वे जरा-सी मेहनत से थक जाते थे। रात को उन्हें ठीक नींद नहीं आती थी, पढ़ने में भी कठिनाई महसूस होने लगी, बाल झड़ने लगे।

चिकित्सकों ने जाँच की। पता चला कि, उनकी मज्जा में खून को ताजा करने की शक्ति समाप्त हो गयी है। इसका यह मतलब था कि, यदि रोगियों के शरीर में नयी मज्जा डाली जाये, तो खून को ताजा करने का आवश्यक कार्य फिर आरम्भ होगा और रोगी स्वस्थ हो जायेंगे।

सिद्धांत तो ठीक था। लेकिन अब तक का शरीर-विज्ञान और अनुभव बताता था कि, शरीर बाहर से डाली गयी मज्जा को अपनाता नहीं, बाहर निकाल देता है।

लेकिन आशा की एक किरण बाकी थी। क्या यह सम्भव नहीं कि, विकिरण के असर से जैसे मज्जा की शक्ति नष्ट हो गयी, उसी तरह नयी मज्जा को बाहर निकाल देने की शक्ति भी नष्ट हो गयी हो।

डाक्टरों ने प्रयोग करके देखने का निश्चय किया। उन्होंने अपील निकाली और बहुत-से युवक अपनी मज्जा दान करने के लिए आये। उनमें से ऐसे स्वयंसेवक चुने गये, जिनका रक्त रोगी वैज्ञानिकों के रक्त से मेल खाता था। स्वयंसेवकों के कूल्हे और छाती की हड्डियों में पतले सूराख किये गये और इंजेक्शन की पिचकारी (सिरिंज) द्वारा थोड़ी-सी मज्जा निकाली

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रोगियों के शरीर में पहुँचायी गयी। हो गयी थी।

इस प्रयोग का जो परिणाम निकला, उसकी डाक्टरों ने स्वप्न में भी आशा नहीं की होगी। कुछ ही हफ्तों में रोगी उठ बैठे। पेरिस के सभी दर्शनीय स्थान उन्होंने देख डाले और दो महीने बाद बेलग्रेड लौट गये।

पेरिस के एक और अस्पताल के डाक्टरों के सामने एक विकट समस्या थी। तेरह वर्ष की एक बालिका को 'ल्यूकेमिया' हो गया था, जो मज्जा की रक्त-निर्माण शक्ति को कुंठित कर देता है।

ताजी मज्जा द्वारा उसका उपचार किया जा सकता था। लेकिन प्रश्न था कि, शरीर बाहर से आये ताजे मज्जा-कणों को अस्वीकार न करे, इसकी व्यवस्था कैसे की जाये।

यह हल निकाला गया। जानबूझकर लड़की को अणु-विकिरण से प्रभावित किया गया। इससे शरीर बाहर से आयी मज्जा को बाहर निकालने में असमर्थ हो गया। वास्तव में युगोस्लाव वैज्ञानिकों की तुलना में कहीं अधिक मात्रा में और सशक्त विकिरण से उसे प्रभावित किया गया था। लेकिन कोई दुष्प्रभाव नहीं हुआ। लड़की के शरीर ने नयी मज्जा को अपना लिया और तीन हफ्ते बाद लड़की घर चली गयी।

लंदन के कई डाक्टर मिलकर एक ३५-३६ वर्षीय अँग्रेज महिला का इलाज कर रहे थे। महिला को फेफड़े का कैंसर था। एक्स-रे से कैंसर के १९ दाग उसके फेफड़ों पर देखे गये थे। एक्स-रे उपचार काम में लाने से रोगी की मज्जा के नष्ट

इस बार एक नयी विधि अपनायी गयी। इस महिला की मज्जा अभी बिल्कुल स्वस्थ अवस्था में थी। इसलिए मज्जादाता स्वयंसेवकों की आवश्यकता नहीं हुई। सर्जनों ने उसी की हड्डियों से काफी मात्रा में मज्जा निकाली और रेफ्रिजरेटर में रख दी।

फिर महिला का एक्स-रे उपचार आरम्भ किया गया। कई हफ्तों के दौरान में लगभग ३,००० रोंटजेन जितना विकिरण उसने झेला। कैंसर के धब्बे गायब हो गये।

अब डाक्टरों ने जमी हुई मज्जा को फिर गर्म होने दिया और रोगी के शरीर में वापस डाला। परिणाम आश्चर्यकारी निकला। महिला स्वस्थ हो गयी।

इन सब प्रयोगों ने चिकित्सा की एक नयी विधि को जन्म दिया है। उसे 'रक्त-संक्रमण' की तरह 'मज्जा-संक्रमण' कह सकते हैं।

वैसे उसे पूर्णतया विकसित और वैज्ञानिक रूप से सर्वसम्मत होने में अभी कई वर्ष लगेंगे। फ्रेंच चिकित्सकों ने कहा है कि, वे इस विधि को तभी पक्की और विश्वसनीय मानेंगे, जब इस उपचार से पचास प्रतिशत रोगियों को लाभ हो और कम से कम दस वर्ष तक उन पर चिकित्सा का गुणकारी प्रभाव रहे।

फिर भी इससे मानव के दो महान् शत्रुओं– कैंसर और ल्युकेमिया–को हराने का एक प्रबल शस्त्र हाथ में लगने की आशा है। सम्भव है, अणुयुद्ध में भी यह मानव की प्राण-रक्षा में सहायक सिद्ध हो।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्रीकांत' उपन्यास के अमर पात्र साहसी किशोर 'इंद्र' का वास्तविक परिचय स्वयं शरत् के शब्दों में।

शरत् चंद्र

श्रीकांत उपन्यास में मैंने इंद्र का जो चरित्र-चित्रण किया है, वह काल्पनिक नहीं है। मेरे बचपन के दिनों का अनन्य लँगोटिया मित्र इंद्र ही था, जिसका मैंने वास्तविकता के साथ चित्रण किया है। एक धूमकेतु की तरह वह मेरे जीवन में उदय और अस्त हुआ; परंतु मन पर सदा के लिए एक अमिट छाप छोड़ गया।

जिस व्यक्ति ने इंद्र को निकट से नहीं देखा, उसके लिए यह कहना नितांत असम्भव है कि, प्रकृति ने उसे किस फौलाद से गढ़ा था। इंद्र का नाम राजू था और वह भागलपुर के एक भले घर का लड़का था। हम लोग जिस जगह भयाक्रांत हो भाग खड़े होंगे, ऐसी जगह भी वह अकेला ही सीना ताने आगे आकर खड़ा हो जाता था। बचपन की एक ऐसी ही सच्ची घटना मैं यहाँ बता रहा रहा हूँ।

उन दिनों मैं स्कूल जाता था। राजू कुछ दिन पहले ही स्कूल छोड़कर समाज-सेवा में रम गया था। संकटग्रस्त लोगों को उबारने व जरूरतमंदों की सहायता का भार उसने कर्तव्य मानकर अपने कंधों पर खुद ही डाल लिया था।

रोगियों की सेवा-शूश्रूषा, मृतकों की अंत्येष्टि-क्रिया, असहायों की रक्षा आदि कामों में वह जुट चला था। यह उसके जीवन का नियमित कार्यक्रम बन गया। इन कामों में मैं उसका दाहिना हाथ था। जब भी उसे सहायता की आवश्यकता पड़ती, वह मुझे बुला लेता। विशेषकर मृतकों की दाह-क्रिया के लिए उसका बुलावा आता ही रहता था; क्योंकि यह कार्य अकेले एक व्यक्ति के लिये सम्भव नहीं था।

एक बार जगद्धात्री पूजा के अवसर पर भागलपुर में मामा के घर बाहर के दालान में रामलीला-मंडली द्वारा बड़े धड़ल्ले से नाटक खेला जा रहा था। कलकत्ता से एक प्रसिद्ध नाटक-मंडली आयी हुई थी। पास-पड़ोस के गाँवों तक से लोग नाटक देखने आते थे। एक रात मैं भी दर्शकों के बीच बैठा नाटक का मजा ले रहा था। अचानक ही राजू आया और मेरे कान में कहने लगा –"उठ, मेरे साथ चल।"

मैं बाहर आ गया। राजू ने बताया– "तू दक्षिणपाड़ा के तारापद बनर्जी को तो जानता है न। उनका बच्चा अभी-अभी हैजे से मर गया है। छोटा-सा शिशु है तीन माह का। मैंने उसके प्राण बचाने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कोशिश की; परंतु असफल रहा। तारा-पद और उनकी पत्नी तो शोक से विक्षिप्त हो गये हैं और दहाड़ें मारकर बुरी तरह से रुदन कर रहे हैं। ऐसी हालत में बच्चे की लाश को उनके पास अधिक देर तक खुला छोड़ना ठीक नहीं है। तू जानता है रे कि, यह बीमारी छूत की है। इसीलिए मैंने तय किया है कि, उसे तत्काल श्मशान-घाट ले जाऊँ। उनके पास-पड़ोसी सभी यहाँ नाटक देखने चले आये हैं और मुहल्ले में भी कोई नहीं है। तू जरा मेरे साथ चल।"

मैं तो बच्चे की तरह कोरा था और उन दिनों इंद्र की तरह इन मामलों का विशेषज्ञ भी नहीं था। उससे तर्क-वितर्क करना निरर्थक समझ, मैं सीधा उसके पीछे हो लिया। नाटक देखने की बलवती इच्छा मुझे छोड़ देनी पड़ी।

बहुत कुछ कहने-सुनने और सांत्वना के सामान्य शब्दों को दोहराने के बाद हम दोनों किसी तरह माता की गोद से वह शव छीन सके। अंत में हम श्मशान-घाट के लिए रवाना हुए। मेरा विश्वास है कि, उस समय रात आधी से अधिक बीत चुकी थी।

घर से बाहर निकल-श्मशान घाट की ओर पग बढ़ाते समय मैंने इंद्र से कहा—"इंद्र! कितना अच्छा होता, यदि हम लोग एक लालटेन साथ ले लेते?"

"बात तो तेरी ठीक है; परंतु भला लालटेन इतनी रात को मिलेगी कैसे? और यहाँ कौन हमको लालटेन देगा? तू चिंता मत कर। मेरे पास दियासलाई है। यदि जरूरत पड़ी, तो उसे जला लेंगे।"

मैंने फिर इस कमी का जिक्र करना उचित नहीं समझा। राजू बच्चे की मृत-देह को गोदी में उठाये आगे-आगे चल रहा था और मैं फावड़ा लिये चुपचाप उसका अनुकरण कर रहा था।

साहस

कोणार्क की एक सुविख्यात प्रस्तर कलाकृति

श्मशान-घाट गंगातट पर था। वह जितना विस्तृत था, उतना ही भयावना। यहाँ तक कि, दिन में भी इस ओर आने का साहस किसी को नहीं होता था। मीलों तक आदमी का निशान नहीं था। चारों ओर केवल कंटीली झाड़ियाँ व कुछ खजूरों के पेड़ों का साम्राज्य था, जो इस निर्जीव बालुका-तट के शोक व भयजन्य वातावरण को और भी गहरा कर रहे थे।

उस दिन कृष्ण-पक्ष की रात तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं थी; परंतु बादलों के कारण चाँद ओट में आ गया था और चुप्पी हल्की चाँदनी छिटकी हुई थी। रास्ते में इधर-उधर नर-कंकाल, हड्डियाँ और अधजले शव बिखरे हुए थे। चारों ओर अर्थी के बाँस, मिट्टी के टूटे घड़े, तकिये, रजाई, गद्दे व कफन-काठी अस्त-व्यस्त छितराये पड़े थे। दूर कहीं एकाकी चिता धीरे-धीरे धुँधुआ रही थी। पेड़ पर लटका चमगादड़ ऐसे चीख रहा था, मानो कोई नवजात शिशु रो रहा हो। जैसे ही हम चिता के निकट पहुँचे, एक जानवर शायद गीदड़ या कुत्ता होगा, हमें देखकर झाड़ी की ओर भाग गया। शायद हमारी पद-चापों से वह शंकित हो उठा था। वह किसी शव के मांस का लोथड़ा चिंचोड़ रहा था। अचानक उसने आगे आकर हमारा रास्ता काट लिया।

मैं वैसे ही भय से काँप रहा था; परंतु ऐसे में सियार के रास्ता काटने से मन में यह संदेह जड़ जमाने लगा कि, अवश्य ही कुछ अशुभ होनेवाला है। हम उस जगह पहुँच गये, जहाँ मुर्दे जलाये जाते थे। वहाँ एक कच्ची झोपड़ी बनी हुई थी कि, मेह-आँधी या तेज धूप से बचने के लिए शोकार्त लोग सुस्ता सकें। भले ही इस काम के लिए यह झोपड़ी ठीक थी; परंतु उसमें स्वेच्छापूर्वक प्रवेश करने का साहस शायद ही किसी का होता था। लोग-बाग श्मशान से भी अधिक उस भुतहे घर से घबराते थे। दिन दहाड़े की तो बात छोड़िये, यदि कई लोग साथ हों, तो भी उस घर की देहरी पर भी कदम रखने का साहस किसी का नहीं हो पाता था।

राजू ने कभी भी इन बातों की परवाह नहीं की। श्मशान पहुँचते ही सबसे पहला काम उसने यह किया कि, वह सीधा इस भयावह घर में घुस गया। उसका अनुसरण करते हुए मैं भी उसके पीछे-पीछे उस घर में घुसा; परंतु मेरी हालत तो ऐसी थी, जैसे कोई पत्ता हवा में काँप रहा हो। बदन में अजीब-सी हरारत होने लगी थी। यहाँ तक कि, हाथ-पैरों में ऐंठन हो चली। ऐसी हालत में मुझे केवल इतना ही आसरा था कि, राजू मेरे साथ था।

गोद में से शव को उतारकर उसने फर्श पर रख दिया। फिर थोड़ा सुस्ताते हुए उसने कहा—"घंटों हो गये मैंने सिगरेट नहीं पी है। तेरी क्या राय है, एक दम लगा लूँ?"

मैं उसके प्रस्ताव के समर्थन में कुछ कहने ही जा रहा था कि, इतने में ही पास से स्पष्ट और शांत ध्वनि सुनाई दी। गहन अंधकार और रात के सन्नाटे को भंग करते हुए अनुनय-भरे ये शब्द मेरे कानों में पिघले शीशे की तरह पड़े—"भाई! मुझे भी एक बीड़ी दे देना। दोगे न!"

इन शब्दों के सुनते ही मुझ पर क्या बीती होगी, यह आप अच्छी तरह अनुमान लगा सकते हैं। मुझे लगा, जैसे ये शब्द किसी पार्थिव नर-देह के नहीं है। भय के मारे मेरे रोंगटे खड़े हो गये। रगों में मानो खून ही जम गया और सारे बदन से ठंडा पसीना छूटने लगा। परंतु राजू! उसने

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेघड़क होकर पूछा—"क्यों ?"

सन्नाटे को चीरती हुई उसकी निर्भय सबलवाणी गूंज उठी—"कौन है ?" प्राणों को मुग्ध कर देनेवाला वैसा ही उत्तर मिला—"मैं हूँ।"

"यह 'मैं' कौन है? ज़रा देख तो लूं।"

भय देवता—जावा का एक काष्ठशिल्प

इतना कहकर राजू ने तत्काल दियासलाई जलायी। उस प्रकाश में हमने देखा कि, निकट ही फर्श पर गंदे चिथड़ों व रजाई में सिर से पैर तक लिपटी एक नर-देह पड़ी थी।

राजू ने सतर्कतापूर्वक उस नर-देह को देखा, फिर बोला—"अरे, यह तो कोई लाश दीखती है। शायद इसे लानेवाले चिता की लकड़ी बटोरने गये हुए हैं!"

इस पर हमें फिर वही ध्वनि सुनाई दी। रात के सन्नाटे को भंग करते हुए किसी ने कहा—"नहीं! नहीं! मैं लाश नहीं हूँ।"

भय से काँपते हुए मैंने राजू के दोनों हाथ कसकर पकड़ लिये। मैंने कुछ कहने का प्रयत्न किया; परंतु मेरी जीभ तालू से सट गयी और मुँह से एक भी शब्द नहीं निकल सका।

परंतु राजू! मैं उसके साहस की किन शब्दों में सराहना करूँ? उसने उस ध्वनि को सम्बोधित करते हुए केवल यही कहा—"तब तुम हो कौन ?"

पहली तीली जल चुकी थी। उसने दूसरी जलायी। अब मैंने अनुमान लगाया कि, वह ध्वनि उस रजाई में से आ रही थी.....।

"मैं मरणोन्मुख व्यक्ति हूँ। रिश्तेदार मुझे यहाँ उठा लाये हैं कि, मेरी आखिरी साँस गंगातट पर निकले।"

अदम्य साहस का पुतला राजू आगे बढ़ा और बिना डरे तथा बिना किसी हिचकिचाहट के उसने रजाई का एक कोना उघाड़ा।

हमने देखा, वह एक अस्सी-वर्षीय बुड्ढा था, जो बड़ी कातर दृष्टि से हमें ताक रहा था। उसके चेहरे पर कहीं भी मौत की छाया नहीं थी।

डर के मारे मेरा बुरा हाल हो गया था। हाथ पैर काँप रहे थे। मुझे हिम्मत दिलाते हुए राजू ने कहा—"तू डर मत। लाश नहीं है। यह तो गंगा-यात्री है। सनातनी लोग हिन्दू-शास्त्रों के अनुसार मरणोन्मुख वृद्ध को गंगा के पवित्र तट पर ले आते हैं, इस दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

से कि, यहाँ प्राण छूटने पर आत्मा सीधी स्वर्ग को चली जाती है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कहकर उसने सिगरेट जलायी और उसे बुड्ढे के होठों में ठूँस दी।

दो-तीन दम लगाकर कुछ खाँसने-खखारने के बाद उस वृद्ध ने कहा—"मेरे बच्चो! तुमने मुझे बचा लिया। मैं कई दिनों से यहाँ पड़ा हूँ। मैं कई बार गिड़गिड़ाया अरे, एक बीड़ी ही दे दो। परंतु उन निर्दयी कमीनों ने.....।"

राजू अब उससे पूछ-ताछ करने लगा।

"तुम यहाँ कब लाये गये थे? तुम्हारे साथ कितने लोग आये हैं और वे कहाँ गये हुए हैं?"

वृद्ध ने बताया—"मुझे यहाँ तीन दिन हो गये हैं। परंतु मेरे जल्दी ही मरने के कोई लक्षण नहीं हैं। मेरे दो पौत्र और एक पड़ोसी मुझे यहाँ उठा लाये हैं। वे लोग भी मेरे पास टिके हुए हैं। जल्दी छुट्टी नहीं हो पाने के कारण, वे बुरी तरह से मुझ पर झुँझला रहे हैं।"

एक गहरा निश्वास छोड़कर वह कहने लगा—"न जाने अब आगे और क्या भुगतना पड़ेगा। वे लोग कहते हैं कि, गंगा-यात्री को गंगा-तट पर ले आने के बाद वापस घर ले जाना शास्त्रों की दृष्टि से अशुभ है, चाहे वह भला-चंगा ही क्यों न हो जाये।"

राजू ने कहा—"अरे, यह सब तुम्हें किसने कहा है? जहाँ तक मुझे लगता है, तुम अभी नहीं मरनेवाले हो। ठीक भी हो चले हो। मुझे अपने घर का पता बताओ। हम तुम्हें वापस ले चलेंगे। नहीं तो कहीं वे लोग, जो तुम्हें यहाँ उठाकर लाये हैं, अंधविश्वास के वशीभूत हो मार न डालें कि, शास्त्रों के अनुसार गंगा-यात्री को वापस घर ले जाना अशुभ होगा।"

वृद्ध बोला—"मेरे लाल! तुम ठीक कह रहे हो। वे इन दिनों ऐसी ही बातें कर रहे हैं और साथ-साथ मुझे धमकाते भी जाते हैं कि, मैं जल्दी मरता क्यों नहीं? बेटा! मुझे डर है कि, कहीं वे मेरा गला न घोंट दें।"

राजू ने कहा—"डर की कोई बात नहीं। हम पहले अपना काम पूरा कर लें, फिर तुम्हें ले चलेंगे। आज की रात तुम हमारे घर रह जाना और कल हम तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा देंगे।"

इसके बाद हमने नदी तट-पर एक गहरा गड्ढा खोदा और उसमें बच्चे की मृत-देह को लिटाकर रेत से ढँक दिया। फिर हम दोनों ने गंगा-स्नान किया। राजू ने वृद्ध को अपनी पीठ पर चढ़ा लिया और मुझे आदेश दिया कि, मैं उसका बिस्तर लपेटकर अपनी बगल में ले लूँ।

जिस तरह श्मशान-घाट जाते समय उसने नेतृत्व किया था, ठीक उसी तरह लौटते समय भी वह मेरे आगे-आगे चला। इस बार उसकी पीठ पर वृद्ध का भार था और मेरी बगल में गंदा बिस्तर।

मामा के घर के निकट जब हम लोग पहुँचे, तो देखा कि, नाटक अभी तक चल रहा था और दूर कहीं मुर्गा बाँग दे रहा था कि, सुबह होने ही वाली है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचत आंदोलन की भूमिका

विश्व में बचत-आंदोलन के विकास का इतिहास का प्रथम पृष्ठ।

मधुकर कोरेगाँवकर

बचत आंदोलन का सूत्रपात सबसे पहले जर्मनी में १८-वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। प्रारम्भ में इस आंदोलन का रूप बहुत शैक्षणिक तथा समाज-सुधारक था। आधुनिक सेविंग्स बैंकों की स्थापना की यही पूर्व-पीठिका थी।

इसके कुछ ही समय बाद सन् १८१० में स्काटलैंड के रूथवेल नामक स्थान में आय से बचाकर पैसे संग्रह करने के उद्देश्य से एक बैंक की स्थापना हुई। वस्तुतः यही संसार का प्राचीनतम सेविंग्स बैंक है। इस बैंक ने गत वर्ष अपनी १५०-वीं वर्षगाँठ मनायी है।

इस बैंक की स्थापना के कुछ ही मास बाद यानी २ नवम्बर, १८१० को डेन्मार्क में होल्सटीन वर्ग-सेविंग्स बैंक की स्थापना हुई। नेपोलियन के युद्ध के पश्चात् डेन्मार्क में जो महत्व-पूर्ण परिवर्तन हुए, उसमें इस बैंक की स्थापना की भी गणना की जा सकती है। इसकी स्थापना डेन्मार्क के एक समाज सुधारक तथा शिक्षा के क्षेत्र में काम करने-वाले काउंट फेडरिक एडाल्फ होल्सटीन नामक व्यक्ति ने की थी। आज उनके ही प्रपौत्र काउंट एरिक होल्सटीन इसके अध्यक्ष हैं।

संसार के प्रथम सेविंग्स बैंक का संस्थापक काउंट होलस्टीन

होल्सटीनवर्ग-सेविंग्स बैंक की गणना संसार के प्राचीनतम सेविंग्स बैंकों में की जाती है। इस बैंक की एक विशेषता और है। डेन्मार्क में यह पहला गैरसरकारी बैंक था। उसके पहले वहाँ केवल सरकारी बैंक था। होल्सटीन बैंक की स्थापना के लगभग ३६ वर्ष बाद वहाँ सबसे पहले व्याव-सायिक बैंक की स्थापना हुई थी।

इस प्रकार यह बैंक बराबर पथ-प्रदर्शन करता रहा। इसका ही अनुकरण करके १८१८ से १८२२ के बीच फिनलैंड, नार्वे, स्वीडन, फ्रांस, आस्ट्रिया, इटली और अम-रीका आदि देशों में सेविंग्स बैंकों की स्थापना हुई।

डेन्मार्क में एक समाज-सुधारक द्वारा सेविंग्स बैंक की स्थापना का यह फल हुआ कि, यह बैंक कम आय-वालों को बचत का प्रोत्साहन देने के साथ ही साथ अपने यहाँ जमा रकम को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उत्पादन-कार्यों के लिए ऋण देकर देश का जीवन-स्तर ऊंचा उठाने में भी उनका योग रहा। खेती के लिए यंत्र खरीदने तथा गृह-उद्योग की स्थापना के लिए ऋण देकर होल्सटीनबर्ग काउंटी सेविंग्स बैंक ने देश का बड़ा उपकार किया। इसके विपरीत स्काटलैंड में स्थापित रूथवेल का बैंक केवल पैसे जमा करने-भर का काम करता था।

होल्सटीनबर्ग काउंटी सेविंग्स बैंक की परम्परा आज भी डेन्मार्क के बैंकों में कायम है। अपनी पूँजी का ७० प्रतिशत भाग वे ऋण में लगा देते हैं। लोगों की चीजें गिरवी रखकर ये बैंक ऋण भी देते हैं। लोगों को निजी रूप में ऋण देने के अतिरिक्त वे सहकारी समितियों तथा सरकार को भी ऋण देते हैं।

डेन्मार्क के ये सेविंग्स बैंक मुनाफाखोर संस्था के रूप में नहीं हैं। उनका लक्ष्य अपने लिए आवश्यक संरक्षित धन से अधिक आय करना नहीं रहता। अपने भागीदारों में उन्हें मुनाफा भी नहीं बाँटना पड़ता। अतः डेन्मार्क सरकार ने इन बैंकों को कर से भी मुक्त कर रखा है।

इन बैंकों की तीसरी विशेषता यह है कि इनको जो आय होती है, उस का कुछ भाग ये जन-कल्याण के लिए सहायता रूप में दिया करते हैं।

भारत में आधुनिक ढंग के सबसे पहले बैंक की स्थापना सन् १७७० में मेसर्स अलेक्जेंड्रिया एंड कम्पनी ने 'बैंक आव हिंदुस्तान' नाम से की थी। लगभग ६२ वर्ष चलने के पश्चात् यह बैंक बंद हो गया। उसके बाद बैंक की स्थापना का सबसे बड़ा प्रयास कलकत्ते की कुछ व्यापारिक कम्पनियों ने किया। लेकिन उनके द्वारा स्थापित यूनियन बैंक भी १८४८ में फेल हो गया। पर उसी वर्ष उसी नाम से दूसरा बैंक पुनः एक करोड़ की पूँजी से स्थापित हुआ।

१८०६ में प्रेसिडेंसी बैंक आव बंगाल के नाम से खुला। इसकी पूंजी पचास लाख रुपये थी, जिसमें दस लाख रुपये ईस्ट इंडिया कम्पनी के थे। उसके बाद १८४० में बैंक आव बम्बई तथा १८४३ में बैंक आव मद्रास खुले। २४ वर्ष बाद बैंक आव बम्बई फेल हो गया।

चार्टर्ड बैंक आव इंडिया, आस्ट्रेलिया एंड चाइना तथा नेशनल बैंक आव इंडिया नामक दो ब्रिटिश बैंकों ने १८५३ तथा १८६३ में अपनी शाखाएँ भारत में खोलीं। पर जाइंट स्टाक कम्पनी के रूप में भारत में सबसे पुराना बैंक इलाहाबाद बैंक है, जिसकी स्थापना १८६५ में हुई थी।

सर्वप्रथम भारतीय जाइंट स्टाक बैंक अवध कमर्शियल बैंक है। उसकी स्थापना १८८१ में फैजाबाद में हुई। परंतु इस बैंक ने अपनी गतिविधि बहुत कुछ फैजाबाद में ही सीमित रखी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सेल' एक दिमागदार कारखाना

खाली आँख से नजर में न आनेवाले 'सेल' विशालतम औद्योगिक प्रतिष्ठानों से भी जटिल और सुनियोजित संगठन हैं।

देशबंधु शर्मा

मनुष्य शरीर में कुल जितने कोशाणु (सेल) होते हैं, यदि उतनी ईंटें इकट्ठी की जायें, तो उनसे चीन की दीवार से सत्रह गुना मोटी और सत्रह गुना ऊँची दीवार सारी भूमध्यरेखा पर बनायी जा सकती है।

इतना छोटा होता है मनुष्य शरीर का प्रत्येक 'सेल'! कुछ प्राणियों के (इनमें वनस्पतियों को भी सम्मिलित कर लीजिये) 'सेल' इससे भी छोटे होते हैं, तो कुछ के इससे बड़े भी। लेकिन उनका औसत परिमाण इतना कम होता है कि, एक इंच लम्बी सीधी रेखा में २,५०० 'सेल' एक-दूसरे को छूते हुए रखे जा सकते हैं।

लेकिन इतना छोटा होते हुए भी प्रत्येक 'सेल' अपने आप में एक फैक्टरी होता है—ऐसी फैक्टरी, जिसमें छोटे-मोटे कई विभाग हों। उदाहरण के लिए मनुष्य के जिगर के 'सेल' को लें। अब तक की जानकारी के अनुसार इसमें ११ विभाग होते हैं। और जैसे किसी कागज या खाँड की फैक्टरी में एक विभाग में तैयार हुई वस्तु अगले विभाग में प्रयुक्त होती है, इसी प्रकार 'सेल' रूपी कारखाने में भी होता है।

'सेल' कैसी अद्भुत फैक्टरियाँ हैं, यह इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जायेगा। पेनिसिलिन का उत्पादन एक प्रकार के 'सेलों' से ही होता है, जिन्हें 'मोल्ड' कहते हैं। पेनिसिलिन के 'मोल्ड' का वैज्ञानिक नाम है 'पेनिसिलिन नाटेटम'। गन्ने के पौधे के सेल अपने आहार को खाँड के रूप में बदल देते हैं। यह सेल-फैक्टरी का ही चमत्कार है कि, एक ही आहार को अलग - अलग पौधे अलग-अलग वस्तुओं का रूप दे देते हैं।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि, अपनी फैक्टरी को सुचारु रूप से चलाने के लिए 'सेल' को किसी बाहरी मैनेजर की जरूरत नहीं पड़ती। प्रत्येक 'सेल' में फैक्टरी को संचालित करने की बुद्धि निहित होती है।

'सेल' बुद्धिपूर्वक काम करते हैं, इसे अमरीका की राकफेलर इंस्टिटयूट के डा० पाल वीस और डा० सेसिल टेलर ने एक प्रयोग द्वारा सिद्ध कर दिया है।

उन्होंने मुर्गी के अंडे में से ८ दिन का भ्रूण लेकर उसमें से भिन्न-भिन्न 'टिश्युओं' के नमूने निकाले। प्रत्येक नमूने में कई प्रकार के 'सेल' थे। हर नमूने को उन्होंने खूब बारीक काटकर, अच्छी तरह मिलाकर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उसका मलीदा तैयार कर लिया । इस मलीदे में उन्होंने खास-खास एनजाइम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

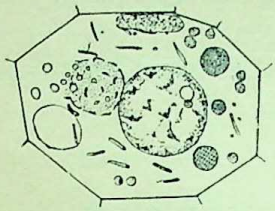

मस्तिष्क का एक सेल

इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप से देखने पर

डाले । इससे उसमें उपस्थित 'सेल' जीवित रहे और अलग-अलग हो गये ।

इस रस-जैसी चीज को उन्होंने नाइलान के बारीक फिल्टर में से छाना । अनछने भाग को फेंक दिया और छने हुए मिश्रित 'सेलों' को गाढ़ा बनाकर, एक खास तरह की झिल्ली (कोरियो-एलैंटोइक) पर उसकी चित्तियाँ डालीं । फिर आठ दिन के इस नष्ट-भ्रष्ट भ्रूण को उन्होंने सेने के लिए 'इन्क्युबेटर' में रख दिया ।

नौ दिन बाद चित्तियों को 'इन्क्युबेटर' से निकालकर देखा, तो यह पाया गया कि, उलट-पुलटकर मिला दिये गये 'सेलों' ने अपने को काफी क्रमबद्ध कर लिया है । झिल्ली में उपस्थित खून से पोषण पाकर 'सेलों' ने फिर बढ़ना आरम्भ कर दिया था । गुर्दे के 'सेल' इकट्ठे होकर एक छोटा-सा गुर्दा बन गये और यह छोटा-सा गुर्दा अस्तित्वहीन मुर्गी के बच्चे के खून को शुद्ध करने की कोशिश करता हुआ मालूम हुआ ।

इसी प्रकार जिगर के 'सेलों' ने क्रमबद्ध होकर छोटे-से जिगर का रूप धारण कर लिया था । और यह एक बटा पाँच इंच लम्बा जिगर पित्त-रस स्रवित करने के लिए तैयार था, ताकि मुर्गी का बच्चा भोजन को हजम कर सके । त्वचा के 'सेल' भी क्रमबद्ध होकर एक चादर-सी बन गये थे और उस चादर पर एक बटा दस इंच लम्बे पर भी पैदा हो गये थे ।

डा० वीस और डा० टेलर यह नहीं पता लगा पाये कि, अलग-अलग छितराये हुए 'सेल' किस तरह व्यवस्थित होकर भ्रूण-विकास-कार्य में पुनः लग जाते हैं । परन्तु इतना निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि, खून की खूराक देनेवाली झिल्ली से 'सेलों' को आदेश नहीं प्राप्त हो सकते; क्योंकि झिल्ली तो 'सेलों' का आहार मात्र है । इसलिए इन वैज्ञानिकों का कहना है कि, भ्रूण के अर्धनिर्मित अंगों के 'सेलों' में ये सूचनाएं और आदेश निहित रहे होंगे कि, कौन-सा काम करना है और कैसे करना है । तभी वे अव्यवस्थित कर दिये जाने के बाद भी अपने आपको पुनः व्यवस्थित कर सके ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि, 'सेलों' में सिर्फ चेतना ही नहीं, बुद्धि भी होती है ।

ऊपर बताया गया है कि, 'सेल' एक बहु-चरणीय फैक्टरी की तरह काम करते हैं । वे अपने पोषण के लिए रासायनिक पदार्थ तैयार करते हैं, फिर उनका आहार के रूप में उपयोग करके अपनी जीवन-क्रिया जारी रखते हैं । वे बीच के किसी चरण में काम में आनेवाले (इंटर-मीडियरी) पदार्थों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उत्पादन और उपयोग करते हैं।

मान लीजिये, कोई अंग अपनी जीवन-प्रक्रिया में किसी 'ऐमिनो ऐसिड' को पैदा करता है। यदि यह 'ऐमिनो ऐसिड' उसे खूराक में दिया जाये, तो वह फौरन उसका उत्पादन बंद कर देगा। यदि अंग मशीन मात्र होता, तो ऐसिड का उत्पादन जारी ही रखता।

जिस तरह फैक्टरी का प्रबंधक विपत्ति आने पर फैक्टरी की रक्षा करने में अपनी सूझ-बूझ का परिचय देता है, उसी तरह 'सेल' भी संकट-काल में अद्भुत समझदारी दिखाते हैं। जब पहले-पहल डी० डी० टी० का प्रयोग शुरू हुआ, तो मक्खियाँ उससे फौरन मर जाती थीं। इस विपत्ति से त्राण पाने के लिए 'सेलों' ने मक्खी में प्रतिरोध-शक्ति पैदा करनी शुरू कर दी और दो-तीन वर्षों में ही मक्खियों की ऐसी पीढ़ियाँ तैयार हो गयीं, जो डी० डी० टी० को सहने में समर्थ थीं।

इसी तरह चोट लग जाये या कोई रोग आक्रमण कर दे, तब भी 'सेलों' की दुनिया शरीर को कष्ट से छुटकारा दिलाने के लिए सक्रिय हो जाती हैं। उनकी यह सक्रियता ही तो प्राकृतिक-चिकित्सा की बुनियाद है।

हमने देखा कि, फैक्टरियों की तरह 'सेल' में भी विभाग-उपविभाग होते हैं। किसी-किसी उपविभाग में इतनी पेचीदा और अद्भुत मशीनरी होती है कि, आश्चर्य होता है। 'जीन' के उदाहरण से यह बात

दुनिया में हर मनुष्य का अलग-अलग रूप-रंग और व्यक्तित्व होता है; कोई मनुष्य किसी दूसरे मनुष्य-जैसा नहीं होता। यहाँ तक कि, एक ही माता-पिता की संतानों में भी बहुत अंतर होता है। इस अंतर का कारण है, माता और पिता के रज एवं वीर्य के 'सेलों' (डिम्ब और शुक्राणु) के 'जीन'।

डिम्ब में २४ 'क्रोमोसोम' होते हैं और प्रत्येक 'क्रोमोसोम' में २०० 'जीन'; यानी एक डिम्ब में कुल ४,८०० 'जीन' होते हैं। इसी प्रकार शुक्राणु में भी ४,८००'जीन' होते हैं। डिम्ब और शुक्राणु के मिलने से जो एक 'सेल' बनता है (मनुष्य के जीवन का आरम्भ इसी 'सेल' से होता है), उसमें ४,८००+४,८००=९,६०० जीन होते हैं।

इनमें से प्रत्येक 'जीन' में हमारे शरीर

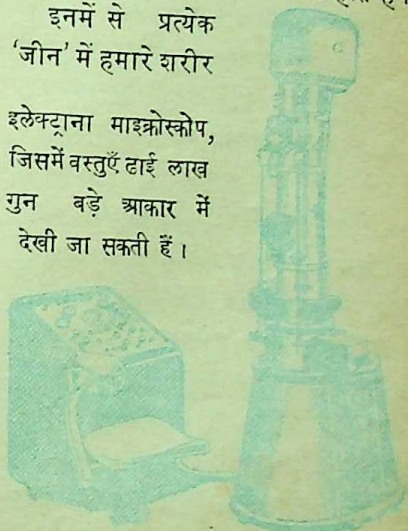

इलेक्ट्रोना माइक्रोस्कोप, जिसमें वस्तुएँ ढाई लाख गुन बड़े आकार में देखी जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के विभिन्न अवयवों के निर्माण के विषय में आदेश निहित रहते हैं, वे उन्हीं आदेशों के अनुसार पालन करते हैं ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जीन' इतने छोटे होते हैं कि, उन्हें अब तक आविष्कृत किसी भी अणुवीक्षण-यंत्र से नहीं देखा जा सका है । तथापि विज्ञानियों ने उनकी क्रियाओं के अध्ययन से उनकी रचना के बारे में बहुत-कुछ जान लिया है ।

'जीन' के अणु (मालिक्यूल) में भिन्न-भिन्न तत्वों के परमाणु विभिन्न नमूनों (पैटर्न) में जुड़े रहते हैं । यह विभिन्नता ही वह संकेत-लिपि है, जिसमें व्यक्तित्व-निर्माण-सम्बंधी आदेश लिखे होते हैं ।

एक ही 'जीन' में जितने आदेश लिखे होते हैं, उन्हें यदि हम अपनी भाषा में लिखना चाहें, तो इस पत्रिका के १०० पृष्ठ भी थोड़े होंगे ।

वस्तुतः मनुष्य के एक 'सेल' में दस हजार से एक लाख तक आदेश भरे होते हैं, जिन्हें छापा जाये, तो 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' के आकार की २,००० जिल्दें तैयार हो जायेंगी ।

'सेल' की भीतरी दुनिया की जानकारी का एक नया अध्याय अभी ६-७ वर्ष पूर्व शुरू हुआ । तब ऐसी विधि का आविष्कार हुआ, जिससे 'इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप' द्वारा 'सेल' का अध्ययन करना सम्भव हो गया । 'इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप' से चीजें ढाई लाख गुना बड़ी देखी जा सकती हैं ।

जीवशास्त्रियों ने इस यंत्र की सहायता से तथा 'सेल' के विभिन्न घटकों के रासायनिक अध्ययन से 'सेल' के भीतर लगभग एक दर्जन चीजों और अनेक प्रक्रियाओं का पता लगाया है ।

इसी ज्ञान के आधार पर वे 'सेल' को एक पूर्ण फैक्टरी मानते हैं—ऐसी फैक्टरी कि, जिसमें प्रोटीन के उत्पादन के लिए रासायनिक एसेम्बली लाइन है; खाँड को जलाकर उच्च शक्ति रसायनों में परिवर्तित करने वाला पावर-हाउस है; इन रासायनिक द्रव्यों के संचय के लिए स्टोर रूम है; अलग-अलग कामों के लिए तरह-तरह के पम्प, फिल्टर, पाइप और टंकियाँ हैं, तरह-तरह के पुर्जे हैं; और इन सबसे बढ़कर, इन सबका नियंत्रण और संचालन करनेवाला मस्तिष्क (मैनेजर) भी है।

यह तो इस फैक्टरी का स्थूल परिचय हुआ । अभी तक उसके अनेक पुर्जे और उनके काम वैज्ञानिकों के लिए प्रश्न बने हुए हैं । एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि, अलग-अलग पौधों के 'सेलों' में वे कौन-से खास यंत्र हैं; जो उनके सर्वसामान्य आहार को भिन्न-भिन्न रसों रंगों, रासायनिक पदार्थों और विटामिनों आदि में बदल देते हैं।

जब ये प्रश्न सुलझ जायेंगे, तब हम बिना ईख और चुकंदर के खाँड और बिना वृक्षों के लकड़ी तैयार करसकेंगे । वंशानुगति से पैदा होनेवाले रूप, रंग, व्यक्तित्व आदि की भी कुंजी हमारे हाथ में आ जायेगी और हम रासायनिक साधनों द्वारा अपनी इच्छा के अनुसार भावी पीढ़ी का निर्धारण कर सकेंगे ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्नों की सृष्टि

उसका एक चरण पृथ्वी पर और शेष तीन चरण अंतरिक्ष में (हमारी पहुँच से परे) हैं – यह ब्रह्म-विषयक ऋषिवाक्य स्वप्न-विज्ञान पर भी लागू होता है।

संतराम बी० ए०

दैनंदिन जीवन में होती रहनेवाली घटनाएँ अनुभूति के द्वारा हमारे मस्तिष्क-पट पर फिल्म की तरह चित्रित होती रहती हैं। उत्तेजना पाकर निद्रा की अर्ध-चेतन अवस्था में यह फिल्म चल पड़ती है। इसी को हम स्वप्न कहते हैं। जो घटनाएँ जागृत अवस्था में मस्तिष्क पर छायी रहती हैं, वे ही स्वप्न की भूल-भुलैयों में मचलने लगती हैं। प्रेमी अपनी प्रेमिका के स्वप्न देखता है, व्यापारी सोते-सोते क्रय-विक्रय करता है। यों कहिये कि, स्वप्न में बिल्ली को चूहे ही दीख पड़ते हैं।

फ्रायड ने बताया है कि, जो आकांक्षाएँ व्यावहारिक जीवन में पूरी नहीं होतीं, उनकी पूर्ति के लिए हम स्वप्न देखते हैं। इस प्रकार स्वप्न हमारी इच्छा-तृप्ति का साधन है।

फ्रायड ने यह भी बताया है कि, स्वप्न में कल्पना की देन सबसे अधिक होती है। तभी तो हम स्वप्न में सेब के पेड़ पर गुलाब के फूल देख लेते हैं; जीवन का संघर्ष सिंह से मुठभेड़ का रूप धारण कर लेता है। घटना के ब्यौरे को कल्पना स्वप्न में इस प्रकार प्रस्तुत करती है कि, कई बार तो स्वप्न का अर्थ समझना बहुत कठिन हो जाता है। फिर भी उनका विश्लेषण करने पर उसके मूल में हमारी कोई अतृप्त आकांक्षा मिलती है।

स्वप्न के विषय में लोगों ने सुनी-सुनायी बातों या व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर बहुत-सी मान्यताएँ बना ली हैं। उनमें से कुछ ये हैं :

१. कुछ लोग बिल्कुल स्वप्न नहीं देखते।

२. स्वप्न मानसिक, शारीरिक अथवा भावनागत अव्यवस्था के द्योतक होते हैं।

३. स्वप्न में हर एक वस्तु मुहूर्त-भर में ही दीख जाती है।

४. करवट बदलना इस बात का सूचक है कि, सोनेवाला स्वप्न देख रहा है।

५. स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक स्वप्न देखती हैं।

६. चिंतक और भावुक प्रकृति के लोग दूसरों की अपेक्षा अधिक स्वप्न देखते हैं।

परंतु आधुनिक वैज्ञानिकों ने इस विषय पर जो प्रकाश डाला है, उससे इन सब बातों का खंडन हो जाता है। जाँच से यह सिद्ध होता है कि, प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक रात को थोड़े-थोड़े समय के अंतर से अवश्य स्वप्न देखता है। यह बात और है कि, ये स्वप्न याद न रहें। आठ घंटे की निद्रा में स्वप्नों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का काल लगभग डेढ़ घंटे का होता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वप्न मानसिक, शारीरिक या भावनागत अव्यवस्था के परिणाम नहीं होते। हाँ, इन अव्यवस्थाओं का उन पर प्रभाव अवश्य हो सकता है। स्वप्न में भी हर काम उतना ही समय लेता है, जितना कि जागृति की अवस्था में। लिंग, जाति या व्यवसाय का स्वप्नों के आने या न आने से कोई सम्बंध नहीं होता।

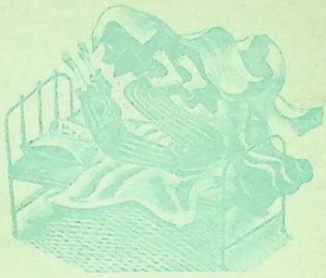

दुःस्वप्न
बुडकट : मार्टिन आर्मस्ट्रांग

वैज्ञानिकों के प्रस्तुत किये इन तथ्यों के पीछे अध्ययन और अनुसंधान की विशाल शृंखला है; विभिन्न जाति, वृत्ति, देश और लिंग के मनुष्यों की गतिविधियों का सर्वेक्षण एवं विश्लेषण करनेवाले असंख्य बिंदु हैं।

शिकागो विश्वविद्यालय के मानसशास्त्रियों और चिकित्सकों ने प्रयोगशाला में सोनेवालों का पर्यवेक्षण सूक्ष्म यंत्रों द्वारा किया। वे इस परिणाम पर पहुँचे कि, प्रत्येक व्यक्ति रोज रात को स्वप्न देखता ही है। जब कोई स्वप्न देखता है, तब उसकी आँखों में एक विशेष प्रकार की गति उत्पन्न होती है। आँखों के तारों से सम्बंद्ध यंत्रों पर आँख की गति को अंकित करने का प्रबंध किया गया। जब आँखें बहुत सक्रिय प्रतीत हुई, तब सोनेवालों को जगाया गया। उन्होंने स्वीकार किया कि, वे स्वप्न देख रहे थे।

इस विषय में एक मनोरंजक बात यह है कि, आँख की पुतलियों की गति स्वप्न में प्रकट होनेवाली घटनाओं के अनुरूप ही होती है। यदि आप स्वप्न में बच्चों को मंडलाकार घूमते हुए देख रहे हैं, तो आपकी पुतलियाँ भी मंडलाकार घूमेंगी। इसी प्रकार स्वप्न में फुटबाल मैच देखते समय आँखों की गति गेंद के उठने-गिरने के साथ ऊपर-नीचे होगी।

निद्रा की गहनता सदा एक-सी नहीं रहती। नींद धीरे-धीरे मस्तिष्क पर अधिकार जमाती है। थोड़ी देर के लिए वह बहुत गहरी हो जाती है; फिर क्रमशः कम गहरी होती जाती है। स्वप्न गहरी नींद में नहीं दीखते; बल्कि वे दीखते हैं कच्ची नींद में।

कई बार ऐसा होता है कि, बाह्य जगत् की किसी घटना का हमारे स्वप्न से सम्बंध जुड़ जाता है। उदाहरणार्थ, एक आदमी स्वप्न में देख रहा था कि, एक रूपवती कुमारी रसोईघर में बैठी आलू छीलते-छीलते उससे बातें कर रही है। कुछ देर बाद वह उसके गले में बाहें डालने के लिए उठा। परंतु तभी द्वार की घंटी बज उठी और वह कुमारी दरवाजा खोलने चली गयी। आदमी उठ बैठा। उसने देखा कि, टाइम-पीस का अलार्म बज रहा है। बात यह थी कि, अलार्म बजने के पहले ही उसका मस्तिष्क सुषुप्ति से जागृति की ओर आ रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्हैयालाल भणोत

बी० ए० इन इकोनामिक्स (फर्स्ट क्लास) का सर्टिफिकेट भी जब मुझे १५० रु० मासिक से अधिक की नौकरी नहीं दिला सका, तो मेरा यह विश्वास चकनाचूर हो गया कि, डिग्री की चाबी से सब ताले खुल जाते हैं। और यह भी मेरी समझ में आ गया कि, जन्म के समय सही पिता और चाचाओं का चुनाव करना कितना महत्वपूर्ण होता है।

और इस चुनाव में मैंने बहुत बुद्धिमानी नहीं दिखायी थी। मेरे पिताजी को सन् ४७ में दूसरे लाखों लोगों की तरह सम्पूर्ण पंजाब छोड़कर आना पड़ा था। परन्तु दूसरे लाखों लोगों की तरह वे वहाँ तीन-तीन बँगले और दो-तीन सौ मुरब्बा खेती जमीन छोड़कर नहीं आये थे, जो सरकार से कुछ मुआवजा ही ले लेते। वे तो अपनी सारी सम्पत्ति—यानी पाँच बच्चे, एक विधवा बहन, बूढ़ी माँ, ईमानदारी और गरीबी—सुरक्षित बचाकर हिन्दुस्तान ले आये थे। पाकिस्तान में वे लोकल बोर्ड के स्कूल के हेडमास्टर थे। सौभाग्य से यहाँ भी शरणार्थी-बस्ती के प्राइमरी स्कूल में हेडमास्टरी मिल गयी।

हाँ, तो जब एक आयात-निर्यात कम्पनी में १५० रुपये की असिस्टेंट की नौकरी 'जाइन' करने घर से चलते समय पिताजी के चरण छुए, तो वे पीठ पर हाथ रखकर बोले—"कन्हैया, मैं जानता हूँ कि, यह वह नौकरी नहीं है, जिसकी तूने उम्मीद की थी। पर यह मत भूल कि, मैं पचीस साल चलने के बाद जहाँ पहुँचा हूँ, वहाँ से तू चलना शुरू कर रहा है। अगर अपनी पूँजी से ठीक काम लेगा, तो बहुत आगे जा सकेगा। ईमानदारी और मेहनत ही हमारी पूँजी है।"

उस वक्त तो यह सब मुझे स्कूल-मास्टर की लेक्चरबाजी ही लगी। लेकिन यह अनुभव करते देर न लगी कि, यह पूँजी, जिस पर पिताजी को इतना भरोसा था और जो मुझे उनसे विरसे में मिली थी, सचमुच कामधेनु है।

मेरे कामकाज से कम्पनी के सेक्रेटरी श्री शंकर अय्यर इतने प्रसन्न हुए कि, छः महीने बाद मेरे 'कन्फर्मेशन' का समय आने पर मुझे ५० रु० की वेतन-वृद्धि दी गयी। तीन ही साल बाद मैं आफिस-सुपरिंटेंडेंट बन गया। श्री अय्यर ने स्टाफ-मीटिंग में कहा भी था—"कम्पनी को कन्हैयालाल जैसे उत्साही कर्मचारी चाहिये।"

उत्साह मुझ में बहुत था और जिम्मेदारी का एहसास भी। हाई स्कूल में पढ़ते समय ही ट्यूशन करके गृहस्थी के संचालन में पिताजी की सहायता करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कितना भी काम हो, बिना शिकवा-शिकायत के करता था। यह कहना ठीक होगा कि स्वयं आगे बढ़कर काम हाथ में लेता था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदवृद्धि के साथ काम भी बढ़ता गया। अक्सर मैं ८।। बजे ही दफ्तर पहुँच जाता। ९ बजे रात को दफ्तर से लौटते हुए ढेर-सी फाइलें घर भी ले जाता। लेकिन काम का 'बैक लाग' बढ़ता ही जाता था। दो फाइलें निपटाता, तो चार टेबुल पर आ धमकतीं। अय्यर ने कहा—"कुछ फाइलें श्रीनिवासन् को दे दिया करो।" (यह श्रीनिवासन् अय्यर के रिश्ते का वह 'स्मार्ट' लड़का था, जिसे पिछले ही साल असिस्टेंट-सुपरिटेंडेंट नियुक्त किया गया था,) लेकिन दूसरों से सहायता लेने में मुझे अपनी कार्य-शक्ति का अपमान-सा अनुभव होता था।

मैं अधिकाधिक समय दफ्तर और दफ्तर के काम में लगाने लगा। माँ या बुआ कभी प्रतिरोध करतीं, तो पिताजी मेरी वकालत करते—"अभी इस उम्र में मेहनत नहीं करेगा, तो कैसे आगे आयेगा!" पर कितना समय देता दफ्तर को! दिन में कुल चौबीस ही तो घंटे होते हैं। काम के बोझ के कारण मेरे स्वभाव में परिवर्तन आने लगा।

सन् १९५८ में कम्पनी ने एक असिस्टेंट सेक्रेटरी नियुक्त करने का निश्चय किया। चेयरमैन भरूचा बाहर से किसी को लाने के पक्ष में थे; लेकिन श्री अय्यर के जोर देने पर मुझे ड्यौढ़े वेतन पर कार्यवाहक असिस्टेंट सेक्रेटरी बना दिया गया। श्रीनिवासन् सुपरिंटेंडेंट हो गये। नियुक्ति की खबर देते हुए चेयरमैन ने अय्यर के सामने ही मुझसे कहा कि "मिस्टर अय्यर का बहुत आग्रह था कि, 'पोस्ट' आपको ही दी जाये; आशा है अगले छः महीने में आप इनके विश्वास के अनुरूप काम करके दिखायेंगे।"

मेरा माथा ठनका। पहली बार लगा चला कि, चेयरमैन मुझसे खुश नहीं हैं। मैंने इसका यही अर्थ लगाया कि, अय्यर वे किसी और को – किसी पारसी को यह पोस्ट देना चाहते होंगे। मैंने देखा था कि, वे बहुत-सी फाइलें सीधे किसी क्लर्क को बुलाकर दे देते थे। अब अय्यर भी बहुत-से महत्वपूर्ण काम सीधे श्रीनिवासन् को देने लगे। मैंने सोचा—"बूढ़ा अब अपने भतीजे को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।" मैं यह बात बिल्कुल भूल गया कि, चेयरमैन साहब की अनिच्छा के बावजूद मेरी जो उन्नति हुई, वह इसी 'बूढ़े' की बदौलत हुई थी। इससे भी ज्यादा मुझे जो बात परेशान कर रही थी, वह थी श्रीनिवासन् की योग्यता।

एक बार केंद्रीय वाणिज्य-मंत्रालय को कोई मेमोरेंडम भेजना था। अय्यर ने पूछा तो मैंने कहा कि, ड्राफ्ट तैयार करने में मुझे तीन दिन लगेंगे। वे बोले—"शायद दूसरों को बहुत काम हैं आपके पास; रहने दीजिये। श्रीनिवासन् ड्राफ्ट बना देगा।" और मैंने अगले दिन देखा कि, श्रीनिवासन् का बनाया ड्राफ्ट स्वीकृत होकर टाइप करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दिया गया है। गाल पर करारी चपत पड़ दी गयी है, ऐसा महसूस हुआ मुझे। अब मेरा रविवार भी दफ्तर में ही कटने लगा। पर काम का बोझ घटने में न आया। अय्यर श्रीनिवासन् की टेबुल खाली रहती। वह जरूरी काम हाथ में रखकर बाकी दूसरे कर्मचारियों में बाँट देता।

अब मुझे रात को ठीक से नींद न आती; आती तो भी सपने पड़ते। सपने में मैं अक्सर देखता कि, श्रीनिवासन् के चार हाथ निकल आये हैं और वह चारों से चार-चार फाइलें एक साथ निपटा रहा है, जबकि मेरी पीठ पर फाइलों का पहाड़ लदा है। मेरा आत्मविश्वास क्षीण होने लगा।

एक दिन किसी काम से चेयरमैन के कमरे में दाखिल हुआ, तो उनके ये शब्द सुनाई दे गये—"मिस्टर अय्यर, आप कन्हैया-लाल की तारीफ करते हैं; पर उसका काम करने का ढंग बिल्कुल गलत है।" अय्यर बोले—"लड़का बड़ा समझदार है, उत्साही है; काम का सही ढंग अनभव से सीख जायेगा।"

अगले दिन मुझसे चेयरमैन ने कहा कि, कॉन्सटेंट सेक्रेटरी के ओहदे पर मुझे 'कन्फर्म' कर दिया गया है। पदवृद्धि तो हो गयी; लेकिन दिल में शूल चुभ गया कि, मैं अय्यर साहब की कृपा के कारण ही इतनी उन्नति कर सका हूँ, अपनी योग्यता के बल पर नहीं। मैं यह भी जानना चाहता था कि, मेरे काम के तरीके में क्या खराबी है। अय्यर साहब से कुछ नहीं पूछ सकता था; उनके प्रति अपने मन में एक बार क्षुद्र विचार जो आये थे, सो उनके सामने सिर नहीं उठा पाता था। पिताजी से बात करना मैं व्यर्थ समझता था। वे ठहरे रिटायर्ड स्कूल मास्टर; एक कम्पनी के प्रशासन की बातें वे क्या जानें! सो मन-ही-मन घुलता रहा। स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया; अधनीस्थ कर्मचारी भी खिंचे-खिंचे रहते। दो साल यों निकल गये।

एक बार बहुत थकान के कारण पिताजी के जिद करने पर हफ्ते-भर की छुट्टी ली। दोपहर को खाना खाकर कोई पत्रिका उलट रहा था। चार दिन की बारिश के बाद धूप निकली थी, सो सहन में सीला ईंधन सूखने के लिए डाल दिया गया था। अचानक ही बादल घिर आये और पानी बरसने लगा। माँ और बुआ ईंधन को जल्दी-जल्दी भीतर पहुँचाने लगीं। मैं भी सहायता करने पहुँचा। मैंने बहुत-सी लकड़ियाँ बटोरीं और उठाकर चलने को हुआ। पर बोझ बहुत था; पैर लचक गये। अगर लकड़ियाँ हाथ से न छोड़ दी होतीं, तो गिर ही पड़ता।

दादी दूर से सब देख रही थीं; बोलीं—"क्यों बेटा, यह भी भूल गया कि, तेरे दो ही हाथ हैं। दो हाथ से जितना उठे उतना उठा, नहीं तो गिर पड़ेगा।"

मैं दादी के मुँह की ओर देखता रह गया। उन्होंने किसी दूसरे ही अर्थ में यह बात कही थी; पर मुझे लगा कि, यह मेरी सारी कार्यविधि की टीका है। बड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

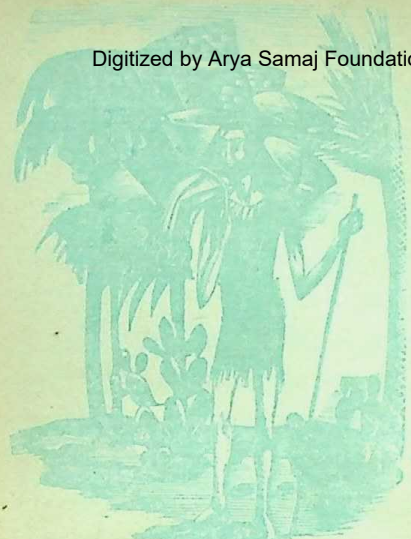

भारी बोझ - दुर्बल कंधे

देर तक इसी विषय में सोचता रहा ।

दो दिन बाद दफ्तर लौटा, तो सुना कि, तीन मास बाद अय्यर साहब रिटायर हो रहे हैं । शाम को जब उन्होंने बहुत-सी फाइलें दीं, तो अधिक जरूरी अपने पास रखकर, बाकी मैंने उन्हीं के सामने श्रीनिवासन् को दे दी । दोनों को मेरे इस व्यवहार से आश्चर्य-सा हुआ ।

मैंने देखा कि, काम बाँट देने से [illegible] दिन-भर के लिए पर्याप्त काम रहता है, और मुझे रात को फाइलों से नहीं जूझना पड़ता ।

एक महीने में सारा 'बैक लाग' [illegible] निपट गया । निवृत्त होने के पूर्व अय्यर साहब बीवी-बच्चों समेत मेरे यहाँ दावत पर आये । पिताजी के सामने मेरी [illegible] तारीफ करते रहे । अंत में बोले–"आपके बेटे में एक ही नुक्स मैंने देखा था–अपने सामर्थ्य से अधिक काम ले बैठना । अब वह दोष भी दूर हो रहा है ।" फिर मेरे कंधे पर हाथ धरकर बोले –". मैंने सेक्रेटरी-पद के लिए तुम्हारी ही सिफारिश की है, चेयरमैन भी मान गये हैं ?"

उनके जाने के बाद सबसे पहले मैंने दादी के पाँव छुए । वे हँसकर बोलीं–"क्यों क्या हुआ रे, जो बरसों बाद आज अचानक ही तुझे मेरे खुर छूने की सूझ गयी !

पिताजी उन्हें सुनाने के लिए जोर से बोले–" कन्हैया अब और भी बड़ा अफसर बननेवाला है माँ ।"

परंतु पाँव छूने का असली कारण तो मैं ही जानता था ।

★

उस दिन मैं एक लेख लिख रहा था । इतने में एक किसान आया और कुछ बातें पूछने लगा । मैंने लेख को एक ओर रखा । उसकी बातों का जवाब दिया और पुनः लिखने में जुट गया । उसके जाने के बाद मेरे एक अंतरंग मित्र, जो वहीं बैठे थे, बोले–"भाई साहब, यदि आपने उसे मना कर दिया होता, तो अच्छा रहता । इससे लेख का 'लिंक' टूट जाता है ।"

मैंने कहा–"लेख का 'लिंक' तो फिर भी जुड़ सकता है; लेकिन मनुष्य से हमारा जो स्नेह-सम्बंध है, वह टूटकर नहीं जुड़ा करता ।" –रामनारायण उपाध्याय

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मन नहीं, दोस्त

बिना किसी शस्त्रास्त्र के जंगली जीवों के शिकार का रोमांचकारी विवरण।

अल्फ्रेड पीटर

जंगल में बंदूक लेकर धाँय-धाँय करते हुए पशु-पक्षियों के शिकार में मेरी रुचि ज़रा भी नहीं है। यद्यपि मैं इससे भी भयंकर मुहिम नर-हत्या के मोर्चे पर भी चार साल तैनात रहा हूँ। अर्थात् युद्ध में अपनी आँखों के आगे भीषण नर-संहार भी गुजरते देख चुका हूँ। परंतु आप आश्चर्य करेंगे कि, वहाँ भी मैंने गोली चलाने का काम नहीं किया।

मुझे शिकार करने का शौक है; परंतु बंदूक से नहीं। वैसे मुझे भी निशाना साधना पड़ता है। मोर्चे-बंदी भी करनी पड़ती है। खतरनाक जानवरों के बीच जंगल में भटकना पड़ता है। परंतु मेरा शिकार कैमरे द्वारा होता है। आप हँसेंगे कि, यह भी कोई शिकार है। परंतु सच मानिये, यह सबसे खतरनाक शिकार है। निहत्थे होकर कभी मेरे साथ चलिये। मैं सच कहता हूँ, आप चाहे कितने ही चतुर शिकारी क्यों न हों, आपको पसीना छूटने लगेगा।

सरकार द्वारा सुरक्षित वन तो ऐसे हैं, जैसे पशुओं के बाड़े। जीप में बैठकर इन पशुओं के बीच में से गुजरना तो किसी चिड़ियाघर की सैर की तरह है। खुले जंगल में चलिये, जहाँ वे स्वच्छंद विहार करते हों। उन्हें डराइये नहीं। ऐसी भावना उनमें पैदा नहीं कीजिये कि, वे यह समझने लगें कि, यह मनुष्य नाम का दोपाया प्राणी उनके लिए खतरनाक है।

कैमरे से लैस होकर मैं अफ्रीकी सिंह, भारतीय बाघ, आसाम के जंगली हाथियों और गैंड़ों तथा मेक्सिको के घड़ियालों और जग्वार (चीतों) के बीच रह चुका हूँ। चौकड़ी भरते हुए हिरन, बारहसिंघे, चीतल, नील गायों की टोली के बीच मैंने चित्र खींचे हैं और इस तरह उनकी स्वाभाविक छबियों को मैंने सदा के लिए अमरता प्रदान की है। इन चित्रों को खींचने के लिए मुझे कई बार मृत्यु के मुँह में उतरना पड़ा। परंतु ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि, मौत ने मुझ पर झपट्टा मारने की कोशिश की हो।

उन दिनों जब कि, मैं सेना के साथ बर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में तैनात था, मेरा काम लंदन स्थित अपने समाचार-पत्र [illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगड़ाई लेते व्याघ्रराज

सम्बंधी चित्र भेजना था। जापानी आक्रमण की भयंकरता बढ़ जाते ही हमें पीछे हट जाना पड़ा और बम-वर्षा के फलस्वरूप बर्मा में तो यह हालत पैदा हो गयी कि, हमें सिर पर पैर रखकर जंगलों में भागना पड़ा। दुर्भाग्य से इस हड़बड़ी में मेरा सम्पर्क अपनी उस सैनिक-टुकड़ी से कट गया, जो जंगल के मार्ग से कोहिमा की ओर पीछे हट रही थी। अब मैं एकाकी वन-प्रांतर में निरुद्देश्य भटकने लगा। सड़क पर चलना खतरे से खाली नहीं था। दिशा-ज्ञान केवल इतना ही शेष था कि, मुझे ध्रुवतारा देखकर भारत की ओर बढ़ना था।

घनघोर जंगलों, दलदली जमीन और खतरनाक जंगली पशुओं के बीच मैं तीन माह तक भटकता रहा। बेल्ट में मारक-शस्त्र के रूप में केवल एक पिस्तौल थी। उसे भी मैंने पंद्रह दिन बाद एक नदी में फेंक दिया। क्योंकि मुझे यह भय लगने लगा था कि, कहीं यात्रा की मुसीबतों से घबराकर मैं आत्महत्या न कर बैठूं। फोटोग्राफी का सामान मुझे अपने [illegible] भी अधिक प्यारा था और वही [illegible] ऐसा सहारा था, जिसने मुझे उन विपत्ति[illegible] जंगलों में थकान, क्लांति और एकाकी[illegible] पन के दिनों में ऊबने से बचाया।

दो दिन लगातार एक टेढ़ी-मेढ़ी [illegible] डंडी पर चलते हुए मैं एक परित्यक्त [illegible] में पहुँचा। सैनिक आक्रमण से भय[illegible] होकर गाँववाले कहीं दूर भाग गये [illegible] खेतों में मक्का की फसल खड़ी-खड़ी [illegible] गयी थी। भूख से मैं बेहाल था; परंतु [illegible] भी अधिक मुझे नींद की जरूरत थी। पिछले एक सप्ताह से पलक नहीं झप[illegible] थी। यदि आप इसमें विश्वास रखते [illegible] कि, पशु खड़े-खड़े सो सकते हैं, तो मैं आप[illegible] विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि, मैंने [illegible] सात दिनों में कई बार चलते-चलते [illegible] नींद ली।

एक टूटी-सी झोपड़ी के बीच गोबर [illegible] लिपी जमीन पर बिना जूते उतारे ही [illegible] लेट गया और कोई आठ-दस घंटे बाद [illegible] जब मच्छरों ने बुरी तरह चेहरे को लाल-सुर्ख बना दिया, तब नींद खुली। फिर [illegible] से सारे शरीर में ताजगी आ गयी थी। भूख के मारे मेरा बुरा हाल हो चला था और अब समझ में आने लगा कि, [illegible] जंगली पशु दो बातों में (भूख और नींद के लिए) बेचैन हो उठते हैं। सुबह जैसे-तैसे आग जलाकर मक्का भूनकर खाया तब कहीं जाकर हाथ-पैरों में जान आयी। थकान पूरी तरह से दूर नहीं हुई थी। [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर सो गया। दोपहर को मेरी नींद चिघाड़ और शोरगुल से खुली। बाहर के सामने खुले मैदान में दो भीमकाय पशु लड़ रहे थे। दोनों ही निरामिष प्राणी। परंतु विशालकाय प्राणियों में दोनों ही एक-दूसरे की टक्कर के थे। मैंने यह सुयोग नहीं खोया और कैमरा लेकर उस द्वंद्व-युद्ध के चित्र लेने दौड़ पड़ा।

पचास गज की दूरी रखते हुए मैं गैंडे और हाथी के बीच हो रहे घमासान युद्ध के चित्र लेने लगा। द्वंद्व-युद्ध एक-दो घंटे तक जारी रहा और फिर दोनों रक्त-लुहान क्षत-विक्षत होकर भूमि पर गिर पड़े। यह सारा दृश्य मैं अकेला ही नहीं देख रहा था। पास ही वृक्षों व भूमि पर बैठी हुई लँगूरों की एक टोली भी यह तमाशा देख रही थी। उसे मानो इस संघर्ष से कोई रुचि नहीं थी। परंतु रुचि लेनेवाले थे गिद्ध। संघर्ष आरम्भ होते ही वे दूर ऊँचाई पर चक्कर काटने लगे। ज्योंही सब कुछ शांत हो चला, एकाएक जिन की तरह सनसनाते हुए दो-तीन गिद्ध नीचे उतर कर शवों के निकट के पेड़ पर टिक गये और लाशों को घूरने लगे। फिर वे उड़कर उन शवों पर जा बैठे। चीं-चीं की आवाज के साथ चोंचें चलनी आरम्भ हो गयीं। देखते-देखते सैकड़ों गिद्धों ने उन लाशों को ढँक लिया। अनुकूल समय पाकर दो-तीन सियार भी इस महाभोज में जुट गये।

अब बंदरों की टोली उकता चुकी थी। मेरा भी जी भर चुका था। मैं भी इस टोली के साथ रवाना हो चला।

बंदरों की समाज-व्यवस्था बड़ी ही विचित्र है, जो हम लोगों से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। ठीक आदिम मानवों जैसी उनकी हरकतें थीं। मुझे उनके सह-वास में दो-तीन दिन रहना पड़ा और मेरी यह भ्रांति मिट चली कि, पशुओं की टोलियाँ केवल यौन-संसर्ग और भूख से ही संयोजित हुआ करती हैं।

वानरों की इस टोली में ऐसी कोई बात नहीं पायी गयी। इनका केवल एक ही यूथपति था। जिस समय टोली चलती, तो आगे-आगे नर-वानर रहते, बीच में बंदरियों की जमात और यूथपति, अंत में फिर नर-वानरों का समूह। इस तरह की व्यूह-रचना से उन्हें आकस्मिक संकट के

यूथपति द्वारा भोजन

समय सुरक्षा मिल जाया करती थी।

यूथपति चौकन्ना एवं सतर्क चाल से चला करता। जब तक वह आदेश नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

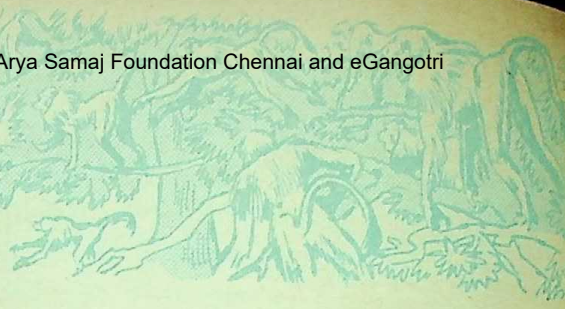

शाखामृगों द्वारा वृक्ष पर विहार

देता या खाना आरम्भ नहीं करता, अन्य वानर अपना कार्यक्रम आरम्भ नहीं करते। ऐसी टोलियों में मादा वानरों की परिवार में काफी जिम्मेदारी पूर्ण स्थिति होती। शिशु वानरों की देखरेख, पालन-पोषण उन पर निर्भर करता है। जब तक शिशु तीन माह का नहीं हो जाता, माँ की छाती से चिपका रहता है। उसके बाद वह उसकी पीठ पर भी आसानी से सवारी गाँठकर चला करता है। यूथपति उद्दंड बच्चों को कड़ी शिक्षा भी देता है।

मेरा कैमरा इनके लिए कौतूहल की चीज थी। आरम्भ में मेरी उपस्थिति वानर यूथपति को गवारा नहीं हुई। दाँत किटकिटाकर उसने विरोध और रोष दर्शाया। मुझे टालने के लिए उसने यूथ का मार्ग बदला। आखिर जब यह देखा कि, मैं निरापद प्राणी हूँ, तो उसने अनमनेपन से यह स्वीकार कर लिया कि, मैं यूथ के साथ-साथ चल तो सकता हूँ, परंतु उनसे थोड़ी दूरी बनाये रख कर ही।

वानरों की टोली पीछे छूट गयी और मुझे आगे बढ़ना पड़ा। एक दिन इरावा नदी की घाटी में मेरी मुलाकात जंगली हाथियों से हुई। जिस पगडंडी पर मैं चल रहा था, ठीक सामने से उसी पर दो हाथियों की एक टोली चली आ रही थी। जब वे हाथी निकट आ पहुँचे, तब कुछ जाकर उन्हें मेरी उपस्थिति का भान हुआ। झुंड के अग्रभागवाले हाथी ने सूँड उठा कर एक चिंघाड़ मारी अर्थात् 'सावधान हो जाओ।' फिर उसने हवा में इधर-उधर सूँड लहरायी और जब मैं उसके दृष्टि पथ में समा गया, तो उसने मुड़कर पीछे लौटने का निर्णय किया। झुंड लौट पड़ा।

छोटे-छोटे हाथी समूह के बीच में चल रहे थे। उनकी अगल-बगल में हथिनियाँ थीं और इनका नेतृत्व एक विशालकाय दंतैल गजराज कर रहा था। कोई घंटे-भर तक वे चलते रहे और मैं भी उनका पीछा करता रहा। वे मुड़-मुड़कर मुझे देखते और आगे बढ़ते जाते। उनका वेग भी घटता जा रहा था और दूरी भी। अंत में वे निश्चित नदी-धारा में जलस्नान कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी। नदी के किनारे खड़ा एक शिशु पानी में उतरने से घबरा रहा था। अचानक एक हाथी ने उसे सिर की टक्कर दी और वह पानी में लुढ़क गया। यों शिक्षा दी गयी उसे तैरने की।

इस यूथ के नायक गजराज को अभी तक मेरी उपस्थिति के कारण संदेह बना हुआ था। वह मुझ पर बराबर निगाह रखे हुए था। स्नान और जल-क्रीड़ा के बाद पेड़ के पेड़ों और लताओं से हाथियों ने अपना पेट भरना आरम्भ किया और फिर आगे को चल पड़े। मैं भी उनके साथ-साथ चलता रहा। एक स्थल पर वह झुंड शंकित होकर चुपचाप खड़ा हो गया। इतना शांत कि, तनिक भी शब्द नहीं सुनाई दे पाता था। इसी समय एक शिशु हाथी रिरियाने लगा और साथ की हथिनी ने उसके पेट पर सूँड की मार मारकर उसे चुप किया। अचानक ही निकट की पहाड़ी पर सिंह की गर्जना सुनाई दी और वह गज-समूह तेजी से भाग छूटा। वह रात मैंने पेड़ पर चढ़कर गुजारी।

सुबह सामने का रास्ता खाली था। जंगली फलों से पेट भरता हुआ मैं आगे बढ़ने लगा। मुश्किल से डेढ़-दो मील ही चला होऊँगा कि, एक सिंह-दम्पति बीच में लेटे हुए मिल गये। मेरे आगमन की भनक उन्हें पहले से मिल चुकी थी; क्योंकि सिंह अपना सिर उठाये मुझे ही देख रहा था। मादा वहाँ कुतूहल से कौतूहल से घूर रही थी। परंतु सिंह की आँखों में तनिक रोष था। मानो कह रहा हो—"क्यों जी! यह क्या हरकत है? भले आदमी हम मियाँ-बीवी यहाँ लेटे हुए कमर सीधी कर रहे हैं और तुम हमारे आराम में दखल देने आ पहुँचे। यह अच्छी बात नहीं है।"

दोनों उठ खड़े हुए। बदन को हल्की सी जुम्बिश देकर सुस्ती झाड़ी और रास्ता छोड़कर एक ओर लेट गये। मादा और नर आमने-सामने लेटे पंजे मार-मारकर खिलवाड़ कर रहे थे।

मैं भी पचास गज की दूरी छोड़कर वहीं जम गया। पहले तो मुझे यह सब बड़ा ही अटपटा लगा; परंतु निश्चित होकर मैंने कैमरे का उपयोग करना शुरू कर दिया। दूरी घटाते-घटाते मैं बीस गज की निकटता तक पहुँच गया। अब सिंहनी भी सशंकित हो चली। कैमरे की गतिविधि से सिंह-दम्पति कुछ परेशान से हो चले थे। परंतु मैं भी टलनेवाला जीव नहीं था। वहीं जमा रहा। अचानक सिंह तन-कर बैठ गया। वह दुम फटकारने लगा। हल्की-सी गुर्राहट करते हुए वह सचकर फिर वे दोनों भिड़ गये...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खड़ा हो चला और झाड़ी की दिशा में खिसक गया। सिंहनी वैसे ही लेटी रही। मैं कैमरा सम्भाले उसी झाड़ी की ओर बढ़ा, जिस दिशा में सिंह गया था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृश्य देखने जैसा था। दस हिरनों का एक परिवार चर रहा था और सिंह शिकार की मुद्रा में तना खड़ा था। अचानक बिजली की तरह कौंधकर उसने झुंड पर छापा मारा। हिरन चौकड़ी भूल गये। पलक झपकने जितनी देर भी नहीं लगी होगी कि, सिंह ने एक मोटे-ताजे हिरन को धराशायी कर दिया। मृत हिरन के गर्दन में मुँह मारकर वह रक्त पीने लगा। फिर वह दो-तीन बार दहाड़ा। सिंहनी ऐंठती हुई बल खाती वहाँ आ पहुँची। सिंह एक ओर हट गया और मुझे घूरने लगा। सिंहनी हिरन के ताजे मांस पर मुँह मार-मारकर पेट भरने लगी। सिंह तब तक प्रेम से पूंछ हिलाते हुए चौकसी करता रहा। फिर दोनों मिलकर खाने लगे। आध-घंटे बाद वे वहाँ से उठ गये। और इठ-लाते हुए चल दिये।

सिंहनी की धीमी चाल को देखने से ऐसा लग रहा था, मानो वह गर्भवती हो। नदी की कगार से उतरकर दोनों ने भर-पेट पानी पिया और सामने की घनी झाड़ियों में ठीक उसी तरह छिप गये, जिस तरह विशाल इरावती नदी के जल को रक्तिम करता हुआ सूरज छिप रहा था। नदी का जल ऐसा लग रहा था, जैसे सिंह-सिंहनी ने अपना रक्तस्नात मुँह उसमें धोया है और सारा पानी लाल हो चला है। [illegible] लगी थीं। पहाड़ी [illegible] सिमटा हुआ अँधेरा नीचे मैदान की [illegible] अपनी काली चादर फैलाने लगा था। [illegible] भी रात्रि-वास के लिए एक पेड़ [illegible] शरण ली। अभी अँधेरा नहीं हुआ [illegible] हल्का-सा सांध्य पीतवर्ण वनों पर [illegible] लगा था। पास ही घहराती इरावती [illegible] रही थी।

साँझ के झुटपुटे में मैंने डाल पर से [illegible] कि, सिंह-दम्पति भी वहीं सामने की [illegible] में चट्टान के सहारे टिके हुए हैं। [illegible] रात्रि को सारी घाटी गर्जना से काँप उठी। उस गर्जना में तड़प थी और पीर भी।

प्रातःकाल सूर्योदय की प्रथम किरण के फूटते ही जो दृश्य दिखाई दिया, [illegible] मेरे जीवन का अभूतपूर्व दृश्य था। [illegible] नवजात सिंह-शावक सिंहनी के थनों [illegible] मुँह मार रहे थे। मैं यह लोभ-संवरण नहीं कर सका। चित्र लेने के इरादे से कैमरा साधकर ज्यों ही मैं सिंहनी के निकट पहुँचने लगा, तो अचानक मेरे निकट की झाड़ी में क्रोध-भरी हुँकार सुनाई दी। वनराज की क्रुद्ध आँखें अंगारे उगल रही थीं। मैं समझ गया कि, मेरी यह अनधिकार चेष्टा वे अब जरा भी सहन नहीं कर सकेंगे।

उन नवजात सिंह-शिशुओं की बाल-लीला को नजर भरकर मैंने आखिरी बार देखा और फिर वहाँ से अपने गंतव्य मार्ग की ओर चल पड़ा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्यारों के द्वीप में

आज से तीस वर्ष पूर्व का अंडमान द्वीप एक अमरीकी पर्यटक की नजरों में।

एडवर्ड ए० सालिसबरी

एक दिन मैं न्यूयार्क के एक क्लब में बैठा हुआ था। मेरे निकट ही एक सज्जन बैठे थे, जो पृथ्वी प्रदक्षिणा कर चुके थे। उन्होंने कहा—"गोरों को गोरों के ही देश में रहना चाहिये; क्योंकि पीले, भूरे अथवा काले लोगों के बीच रहकर गोरे कभी प्रसन्न नहीं रह सकते। उन्हें महसूस होने लगता है कि, वे खो गये हैं। उनके हृदय से संतोष का लोप हो जाता है।"

मैंने उनकी बात काटी—"मैं यह मानने को तैयार नहीं हूँ। काली या भूरी चमड़ी-वालों के बीच भी गोरे परम संतुष्ट जीवन बिता सकते हैं और बिता भी रहे हैं।"

"असम्भव है," उन्होंने कहा—"आप किस देश की चर्चा कर रहे हैं?"

"हत्यारों के द्वीप, मर्डरर्स आईलैंड की।"

नाम सुनते ही वे चौंके। उन्हें विश्वास दिलाते हुए मैंने कहा—"उस एकांत द्वीप में केवल एक ही बस्ती है और उसमें भूरे व काले रंगवाले १० हजार हत्यारे रहते हैं। वहाँ सब जंगल है, जिसमें नाटे-नाटे काले लोग रहते हैं, जो लगभग नंगे फिरते हैं। द्वीप पर गोरों की आबादी बहुत कम है—लगभग ५०। पर वे परम प्रसन्न रहते हैं।"

"कैसे?" उन्होंने साश्चर्य पूछा। और मैंने अपनी कहानी प्रारम्भ की:

"दो वर्ष पहले की बात है। मैं सुमात्रा द्वीप से बंगाल की खाड़ी में उत्तर की ओर अपने छोटे-से जहाज 'विज्डम' में यात्रा कर रहा था कि, सूर्योदय के समय मुझे क्षितिज पर छोटी-छोटी पहाड़ियाँ दिखलायी पड़ीं। जहाज को पास ले गया, तो देखा, एक द्वीप था। उसके तट पर एक भी प्राणी दृष्टि-गोचर नहीं हो रहा था। लगता था कि, वहाँ कोई बस्ती ही नहीं है। समुद्र में भी

तीर से मछली का शिकार करता हुआ अंडमान का मूल निवासी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूर-दूर तक कहीं कोई किश्ती नहीं दीख रही थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हम लोग कहाँ हैं, यह जानने के लिए मैंने नक्शा निकाला। पता चला कि, हम एक बंदरगाह के निकट हैं। सूर्य बादलों को चीरकर आकाश में चढ़ रहा था। आगे बढ़े, तो एक पहाड़ी पर कुछ लाल-लाल बँगले नजर आये और उनसे कुछ दूरी पर लाल ईटों की एक ऊँची-सी दीवार थी। मैंने दूरबीन से देखा—दीवार की हर खिड़की में लोहे की छड़ें लगी हुई थीं। इमारत की बुर्जी पर दो आदमी राइफलें लिये नजर आये। दोनों के भरपूर दाढ़ी थी और सिर पर सिक्खों की-सी पगड़ियाँ। तभी समुद्र-तट पर एक झंडा हिलने लगा। यह जहाज किनारे लगने का सांकेतिक आदेश था।

"जहाज किनारे लग गया। गठीले शरीरवाला एक आदमी बाहर आया। वह भारतीय समुद्री विभाग का कर्मचारी और इस बंदरगाह का सर्वोच्च अफसर था। वह हमारे जहाज पर आया। उसी के साथ कूपर और मैं उस भूमि पर उतरे और समुद्र के निकट स्थित एक बँगले तक गये, जो एक क्लब था। वहीं पर हम दोनों ने जलपान किया।

वहाँ एक और सैनिक अफसर भी था, जिसकी छाती पर 'डी० एस० ओ०' का बिल्ला लगा था। उसने हमसे पूछा—'कैसा लगा यह द्वीप?'

"मैंने कहा कि, हमने अभी देखा ही क्या है। और उससे पूछा कि, द्वीप पर देखने योग्य क्या चीजें हैं?

"'कोई खास चीज नहीं, केवल १० हत्यारे हैं। भारत में हत्या के अभियोग में जिन्हें काले पानी की सजा मिलती है, वे यहाँ भेजे जाते हैं। इस बंदरगाह का नाम पोर्ट ब्लेयर है। सभी तरह के हत्यारे यहाँ देखने को मिलेंगे।' यह कहते-कहते उसने आवाज दी—'बाय'। दूसरे ही क्षण एक युवक सामने आकर खड़ा हो गया। वह व्यक्ति भी हत्यारा था।

"अभी हम बातचीत कर ही रहे थे कि वह अफसर, जो बंदरगाह पर हमसे मिला था, पास आया और बोला—'गवर्नर साहब आपसे मिलना चाहते हैं।' उसके साथ हम चक्करदार पहाड़ी सड़क पर से होकर गवर्नर के बँगले की ओर चल पड़े। बीच में दो पहियों की एक गाड़ी हमारे बगल से गुजरी। गाड़ी को घोड़े नहीं, बल्कि आदमी खींच रहे थे—आधे नंगे, पसीने से तर। एक गोरी महिला गाड़ी में बैठी थी।

"मैंने उस औरत की ओर देखा। उसने हमारे अभिवादन का उत्तर दिया। उसके चेहरे से ऐसा लगता था कि, उसका जीवन बहुत सुखमय है।

"गवर्नर की बैठक में से होकर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय की ओर मैं मन-ही-मन विचार चक्कर काट रहा था—दिमाग में यह विचार कैसा होगा यह आदमी, जो दस हजार हत्यारों की देखरेख करता है ? कोई क्रूर चेहरा देखने को मिलेगा।' पर पुस्तकालय में पहुँचने पर वहाँ हाथ में किताब लिये जो व्यक्ति हमसे मिला, वह हत्यारों का अफसर नहीं, बल्कि किसी कालेज का प्राध्यापक-सा लगा। हमें देखकर वह बोला—'इस अंडमान द्वीप में आपका आगमन शुभ हो। मैं आपका स्वागत करता हूँ।' उस नाटे और अधेड़ व्यक्ति की वाणी से शिष्टता टपक रही थी। उसका नाम था कर्नल बेडन। एक ढंग से वह वहाँ का सर्वोसर्वा था। "कर्नल बेडन की पढ़ने में बड़ी रुचि थी।" वह हत्यारे कैदियों की देख-रेख तो करता ही था; पर उसके लिए समस्या कैदी नहीं, इस द्वीप पर बसनेवाले बौने थे। उसने कहा भी—'यहाँ के मूल निवासी बौने जंगलों में रहते हैं। कई बार उनमें से कुछ लोग हमारी बस्ती से कुछ मील निकट तक चोरी-छिपे चले आते हैं और कभी-कभी हमारे एक-आध कैदी को मारकर फिर जंगल में भाग जाते हैं। हम उन्हें पकड़ना तो दूर रहा, ठीक से देख भी नहीं पाते।'

"मैं बौनों को देखने के लिए उत्सुक था। नृतत्वशास्त्रियों का कहना है कि, मानव-जाति की प्राचीनतम शाखा दक्षिण एशिया में बसती है। मैं जानना चाहता था कि, क्या ये बौने भी उसी शाखा के हैं।"

"मुझे पता चला कि, कैदखाने से तीन

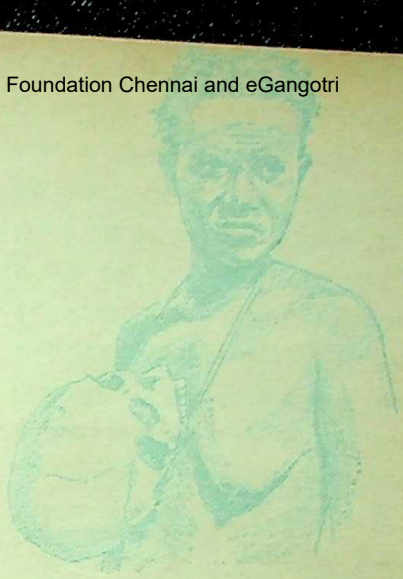

पति की खोपड़ी धारण करनेवाली पतिव्रता

मील दूर जंगल में सरकार ने एक झोपड़ा बनवा रखा है, जहाँ ये बौने प्रायः एकत्र होते हैं। क्लब में मेरी भेंट एक ऐसे व्यक्ति से हो गयी थी, जिसकी उन बौनों तक पहुँच थी। एक दिन उसे साथ लेकर उस झोपड़ी की ओर चल पड़ा।"

"जब हम झोपड़ी के निकट पहुँचे, तब वहाँ लगभग छः बौने एकत्र थे। उनमें सबसे पहले मेरा ध्यान एक औरत पर गया। वह मुश्किल से ४ फुट ३ इंच लम्बी रही होगी। मैं जब उसके निकट पहुँचा, तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा—उसने आभूषण के रूप में आदमी की खोपड़ी गले में लटका रखी थी।

"पथ-प्रदर्शक ने बताया कि, ये नारियाँ निशानी के रूप में अपने मृतक पति की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोपड़ी गले में लटकाये रहती हैं। उसी ने यह भी बताया कि, वहाँ लोगों ने जब कोई व्यक्ति मर जाता है, तो लोग तुरही बजाते हैं और शव को गाड़कर गाँव से भाग जाते हैं। कुछ महीने बाद वे पुनः लौटकर आते हैं और शव को कब्र से निकालते और समुद्र-जल से धोकर साफ करते हैं। फिर मृतक के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए अस्थि-पंजर के चौगिर्द नृत्य किया जाता है। अंत में खोपड़ी अलग करके मृतक के सबसे निकट के रिश्तेदार को दे दी जाती है, जिसे वह रस्सी से बाँधकर गले में लटका लेता है।

"मेरी दृष्टि एक और स्त्री पर पड़ी। वह बहुत ध्यानमग्न होकर अपने बच्चे की भुजा देख रही थी। जब हम उसके निकट गये, तो हमने देखा कि, वह बच्चे की बाँह खरोंचकर खून निकाल रही है। बच्चे के सारे बदन पर खरोंचों के निशान थे। पूछने पर पता चला कि, ये लोग ऐसा मानते हैं कि, छोटे बच्चों के शरीर में भूत-प्रेत रहते हैं और इस प्रकार खरोंचकर रक्त निकाल देने से वे निकल जाते हैं। माताएँ हर दूसरे-तीसरे महीने इस प्रकार खून निकालकर बच्चों के शरीर में से भूतों को भगाती रहती हैं। इस कारण हर बौने के शरीर पर खरोंचों के असंख्य निशान देखने को मिलते हैं।

"मेरे पथ-प्रदर्शक के कहने पर उन लोगों ने अपनी विवाह की रस्म का अभिनय करके दिखाया। एक नवविवाहित दम्पति वर-वधू बन गये। वर जंगल में भाग गया। बाकी लोग उसे पकड़कर ले आये और वधू की गोद में धकेल दिया। फिर फुटबाल के खिलाड़ियों की तरह सब लोग वर-वधू पर टूट पड़े।

"एक लड़की निकट खड़ी थी। उसने विवाह के खेल में भाग नहीं ले रही थी। मुझे पता चला कि, अभी इस लड़की का यौवनोत्सव नहीं हुआ, अतः वह विवाह की रस्म में भाग नहीं ले सकती। जब कोई लड़की पहली बार ऋतुमती होती है, तो तीन दिन तक उत्सव मनाया जाता है और लड़की का नया नामकरण होता है। नया नाम किसी फूल के नाम पर होता है। इस नये नामकरण के बाद लोग उसे फिर बचपन के नाम से सम्बोधित नहीं करते।

"मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि, ये बौने अभी आग उत्पन्न करना नहीं जानते। हर घर में आग हरदम जलती रहती है, उसे कभी बुझने नहीं दिया जाता। यात्रा के समय भी वे अपने साथ आग लेकर चलते हैं। आग उनकी दृष्टि में देवताओं का प्रसाद है।"

इतनी कहानी सुनकर उन सज्जन का धैर्य टूट गया और उन्होंने कहा—"आपका कहना है कि, उन हत्यारे कैदियों और अपने बौनों के बीच भी गोरे संतुष्ट रहते हैं? उनकी औरतें प्रसन्न रहती हैं?"

"जी हाँ।" मैंने कहा—"आँखों देखी बात बता रहा हूँ और स्वयं मैं भी उनके बीच में रहकर आया हूँ।"

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्षय यौवन का सूत्र

आज का बुद्धिवादी मानव मध्य युग के कीमियागरों पर भले हँसता हो; पर उन्हीं की तरह वह चिर यौवन के रहस्य के उद्घाटन में लगा हुआ है।

हारवे जेम्स

एक शतायु पुरुष से मैंने उनके दीर्घ जीवन का कारण पूछा, तो बोले—"मैं अविवाहित हूँ, खूब मेहनत करता हूँ, शराब और तम्बाकू को कभी हाथ नहीं लगाता।" मैं बड़ा प्रभावित हुआ।

कुछ दिन बाद मैंने एक और शतायु पुरुष को देखा। वह बड़ा शराबी था, बड़ी घटिया किस्म की सिगरेट पिया करता था और ८० वर्ष की उम्र में अंतिम बच्चे का पिता बना था। पिछले चालीस बरस से वह बिल्कुल निठल्ला था।

दीर्घ जीवन के कारणों को खोजने-वालों के सामने ऐसी असंगतियाँ अक्सर आती हैं। जो बातें आयुष्यवर्धक कही जाती हैं, उनसे बिल्कुल उलटी बातें भी दीर्घजीवियों में देखी जाती हैं।

हजारों वर्षों से मनुष्य दीर्घ जीवन के रहस्य की खोज में लगा है। प्राचीन मिस्र में यह विश्वास प्रचलित था कि, घोड़े का मांस खाने से उम्र लम्बी होती है। रोम-वासी दीर्घायुष्य के लिए गाय का दूध और मछली का सेवन किया करते थे। मध्ययुग के ईसाई साधु 'पाइक' मछली को हड्डी समेत चट कर जाया करते थे।

पोप इन्नोसेंट ८-वें ने बुढ़ापे में नवयौवन और लम्बी उम्र पाने के लिए तीन युवकों के ताजे रक्त का अपने शरीर में प्रवेश करवाया। लेकिन दुर्भाग्य से उसी आप-रेशन में उसकी मृत्यु हो गयी।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद के वर्षों में इस बात की बड़ी चर्चा थी कि, बंदर और चिम्पैंजी की गिल्टियाँ मनुष्य के शरीर में लगा दें, तो उम्र तो लम्बी होती है, खोयी जवानी भी वापस मिल जाती है। ब्राउन सीकर्ड नामक एक डाक्टर ने अपना आपरेशन कराकर ये गिल्टियाँ लगवा लीं और कहना शुरू किया कि, उनकी जवानी लौट आयी है। लेकिन थोड़े ही दिन बाद उनकी मृत्यु हो गयी।

स्टेइनैच नामक एक सर्जन ने बहुत-से बूढ़ों के शरीर में ये बंदर की गिल्टियाँ लगायीं। इन आपरेशनों का बड़ा चमत्कारी परिणाम देखा गया। वे सब बूढ़े चुस्त और सक्रिय हो गये। लेकिन यह नयी जवानी ज्यादा दिन नहीं टिकी।

इधर कुछ अरसे से रूस से दीर्घजीवियों के सम्बंध में बहुत खबरें आ रही हैं। किसी हफ्ते १५० साल की उम्र में भी खेतों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में मुस्तैदी से काम करनेवाले किसान की जीवनी [illegible] यह [illegible] आती है कि, १२० की एक बुढ़िया बिना चश्मे के 'प्रवदा' पढ़ा करती है।

स्वयं स्टालिन को आखिरी बीमारी से पूर्व तक यौवनदायक औषधों का सेवन कराया जा रहा था।

रूस और साम्यवादी देशों के वैज्ञानिक साहित्य में और पत्र-पत्रिकाओं में 'एच-३' नामक दवा की बड़ी चर्चा है। रूमानिया की प्रो० अन्ना असलन नामक एक खुशनुमा महिला चिकित्सक ने हाल में यूरोप की यात्रा की और इस दवा का प्रचार किया। उनका दावा था कि, उन्होंने 'एच-३' द्वारा बहुत से चमत्कारी इलाज किये हैं।

पत्र-पत्रिकाओं ने तो उनका काफी स्वागत किया; लेकिन चिकित्सकों और वैज्ञानिक संस्थाओं ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखायी। ब्रिटिश मेडिकल एशोसिएशन ने एलान किया कि, यह 'एच-३' और कोई चीज नहीं, बल्कि प्रोकेन नामक रासायनिक द्रव्य है, जिसका उपयोग दर्द-निवारण के लिए दंत-चिकित्सक पिछले पचास वर्ष से करते आ रहे हैं। एसोसिएशन ने यह भी कहा कि, 'एच-३' से नयी जवानी प्राप्त की जा सकती है, इसका कोई प्रमाण नहीं है।

पश्चिमी देशों में 'रायल जेली' अधिक लोकप्रिय है। यह कर्मी मधुमक्खियों के शरीर से निकलनेवाला एक सफेद दूधनुमा स्राव है, जिसे रानी मक्खी खाती है।

कर्मी मक्खी शहद और पराग खाती है और उसका जीवन-काल ४० से ६० [illegible] तक का होता है। लेकिन 'रायल जेली' [illegible] खानेवाली रानी मक्खी चार-पांच वर्ष [illegible] जीती है। इस आधार पर यह [illegible] चल पड़ी कि, 'रायल जेली' में कोई [illegible] शक्तिशाली जीवनदायक तत्व होगा।

यदि सचमुच 'रायल जेली' में ऐसा [illegible] जादुई तत्व होता हो, तो उसका [illegible] वैज्ञानिक अब तक नहीं लगा पाये [illegible] रासायनिक विश्लेषण तो यही बताता [illegible] कि, इस जेली में तीन चौथाई अंश पानी [illegible] का होता है। शेष मुख्य घटक हैं-प्रोटीन [illegible] कार्बोहाइड्रेट और विटामिन आदि।

विज्ञानवेत्ता इस परिणाम पर पहुंचे [illegible] कि, रानी मक्खी के दीर्घ जीवन का [illegible] 'रायल जेली' नहीं, बल्कि उसकी आराम-पूर्ण जिंदगी है।

आहार-विज्ञान और चिकित्साशास्त्र [illegible] इतनी उन्नति के बावजूद, मनुष्य के जीवन-मान में कोई वृद्धि नहीं हुई है। बेशक [illegible] पहले से अधिक आदमी अधिक उम्र तक जीते हैं; क्योंकि महामारियों पर मनुष्य ने काफी नियंत्रण पा लिया है। लेकिन पश्चिम के समुन्नत देशों में भी स्वस्थ और सुखी मनुष्य का औसत जीवन काल ६८-७० वर्ष से अधिक नहीं होता। आज से पचास या सौ साल पहले भी इतना ही था।

अक्षय यौवन या अमरता का सूत्र अभी तक मनुष्य खोज नहीं पाया है; और न ही इसकी आशा है कि, यह सूत्र निकट भविष्य में उसके हाथ आ जायेगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

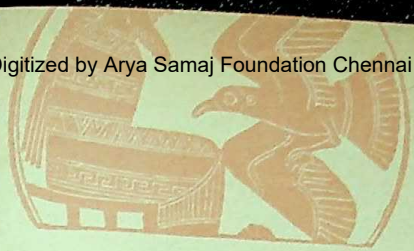

कभी न भूलूँ

मेरा छोटा भाई एक दिन पतंग उड़ाते उड़ाते कहीं से चोट खा आया। मुझे उस पर यों ही क्रोध आ गया और मैंने उसे मारा; क्योंकि एक तो हमारे रोकने पर भी पतंग उड़ाता है और दूसरे चोट खाकर सारे घरवालों को तंग करता-फिरता है।

कुछ ही दिन बाद, एक रात वह सो रहा था। हम तब तक जाग रहे थे कि, उसके बड़बड़ाने की आवाज आयी—"भैया.....मैं अब कभी पतंग नहीं उड़ाऊँगा, मेरे पैर में मोच आ गयी है।" हम सभी दौड़कर गये। उसके पैर में सचमुच मोच आयी हुई थी; लेकिन घर में किसी को कुछ भी पता न था। मुझे बड़ी शरम आ रही थी कि, यदि मैं उसे उस दिन न मारता, तो मोच आने पर वह घर आकर अपनी पीड़ा अवश्य बताता।

— हरीशप्रसाद, जगराओं

पहल

मेले की धकापेल में एक गरीब बुढ़िया का बटुआ गिर गया। उसमें सात रुपये थे। उस बेचारी के लिए तो वे सात ही बहुत कुछ थे! काफी ढूँढ़ने के बाद भी जब उसे बटुआ नहीं मिला, तो वह बड़ी परेशान हुई और एक तरफ खड़ी होकर बिलखने लगी। लोग आते और सहानुभूति दिखाकर उसकी बगल से निकल जाते; लेकिन उस गरीब की समस्या हल नहीं हुई। तभी मेरे एक मित्र को बड़ी अच्छी युक्ति सूझी। उन्होंने झट जेब से चवन्नी निकाली और उसे अपनी हथेली पर रखकर दूसरों से भी कुछ-न-कुछ देने की अपील की। देखते-ही-देखते सात रुपये इकट्ठे हो गये। हम लोग बुढ़िया को रुपये देकर मेला देखने के लिए आगे बढ़ गये।

— श्यामविहारी, मेरठ

सेवा

सन् १९४५ में हमारे गाँव में बहुत जोरों का प्लेग फैला। हमारा भंगी भी बुरी तरह शिकार हुआ। उसके घर में और कोई नहीं था; इसलिए उसने लाचार होकर मुझसे ही प्रार्थना की कि, मैं किसी डाक्टर को बुला लाऊँ।

मैं तुरंत एक हिन्दू डाक्टर के पास पहुँचा। उन्होंने सारा हाल सुनकर उस 'अछूत' को देखने से इन्कार कर दिया। इसके बाद एक-आध डाक्टर के पास और गया, उन्होंने भी टाल-मटोल कर दी। अंत में एक अँग्रेज डाक्टर के पास गया। उन्हें यह नहीं बताया था कि, मरीज कौन है। वे फौरन मेरे साथ हो लिये। हम जब घर पहुँचे, तो मैंने देखा कि, वे रुष्ट होने के बजाय कुछ खुश ही थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

उन्होंने बड़े प्रेम से मरीज को देखा और दवा दी और मेरे लाख कहने पर भी उन्होंने रुपये नहीं लिये। बस इतना ही कहा—"जब मैं छोटा था, तब पिताजी ने गरीबों की सेवा करने को कहा था। आज जाकर मुझे उसका कुछ सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

—सत्येंद्र खरे, इलाहाबाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहानुभूति

हम लोग रोजाना पड़ोस की ११-१२ वर्षीया लड़की रमा को घरेलू काम में व्यस्त देखते। सुबह से रात तक वह कभी अपनी भाभी की घुड़कियाँ सुनती, कभी कपड़े धोती, कभी बर्तन साफ करती, तो कभी उसके रोते हुए बच्चे को बहलाती हुई नजर आती। भाभी के इस कठोर व्यवहार के कारण अनायास ही हम सबका हृदय रमा के प्रति स्नेह और दया से भर गया। एक दिन दीदी उससे बोली—"रमा, ले जरा बाजार से हमारा एक सेर घी ला दे। तुझे बहुत बढ़िया गुड़िया दूँगी।"

रमा मुस्कराते हुए बर्तन लेकर चली गयी। थोड़ी देर बाद वह खाली बर्तन लिये ही लौट आयी। दीदी ने साश्चर्य पूछा—"क्यों रमा, वापस कैसे आ गयी? दूकान बंद है क्या?" उसने बहुत ही घबराये हुए स्वर में कहा—"नहीं, रास्ते में ठोकर लग जाने से घी गिर गया।" अब तो घर के सब लोग चिल्ला पड़े—"कैसी बेवकूफ लड़की है, जरा-सा काम भी ठीक से नहीं कर सकती।" इसी बीच छोटी बहन बोली—"यह बेवकूफ है, तभी तो इसकी भाभी इसे गालियाँ सुनाती है और ठीक करती है, जो इससे खूब काम लेती है।"

—गिरीश बख्शी, राजनांदगाँव

झिझक

उस समय मैं दसवीं में पढ़ता था। कक्षा में यद्यपि एक सुयोग्य विद्यार्थी माना जाता था; किंतु भाषण देने के नाम पर मेरी नानी मरती थी। मैं हद से ज्यादा झेंपू था। अतः मुझे साहस नहीं हो रहा था कि मैं भी प्रतियोगिता में अपना नाम लिखाऊँ। तभी आठवीं कक्षा का एक छोटा-सा विद्यार्थी खड़ा हुआ और चिल्लाकर बोला—"मास्टर साहब, मेरा नाम भी लिख लीजिये।" मैंने मन में सोचा"—जब यह छोटा लड़का भाषण देने से नहीं डरता, तो मैं ही क्यों घबराऊँ? नहीं, मैं अवश्य भाषण दूँगा।"

गृहकार्य में तत्पर

एक यूनानी शिल्प की शर्णे द्वारा अनुकृति

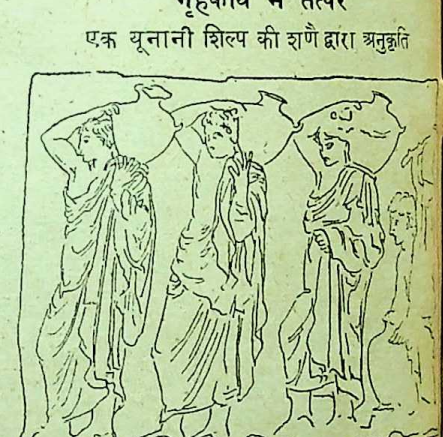

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मुझमें न जाने कहाँ से साहस आ गया। मैंने अपना नाम व्याख्यानदाताओं की सूची में लिखा लिया। नाम पुकारे जाने पर मैं डरते-डरते मंच पर गया। विश्वास नहीं था कि, एक शब्द भी बोल सकूंगा। लेकिन दो-चार वाक्य बोलते ही मेरी झिझक दूर हो गयी और मैं करीब दस मिनिट तक धाराप्रवाह बोलता रहा। अंत में जब प्रतियोगिता का परिणाम घोषित किया गया, तो अपनी कक्षा में मुझे ही इनाम मिला।

—प्रवेशनारायणसिंह, कल्याणपुर

प्रसाद और बंधन

एक साधक नगर के समीप वनस्थली में कुटिया बनाकर रहता था। एक बार नगर की एक समृद्ध तरुणी उसकी कुटिया में उपस्थित हुई—हाथों में भोजन का पर्ण-पात्र, आँखों में अनुरागमयी श्रद्धा लिये। साधक ने उसकी भेंट स्वीकार की। वह लौट गयी। किंतु तरुणी अत्यंत रूपवती थी। साधक का मन उसमें अटक गया था। आश्रम छोड़, उसने नगर की राह ली और बहुत कोशिश से उस सुंदरी को खोज लिया। उससे उसने जो चाहा, वह सभी उसे मिल गया।

साधक अब सुंदरी के प्रेम-पाश में था। दिन वह जैसे-तैसे अपनी कुटिया में काटता और रात्रि अपनी प्रिया के साथ।

एक दिन वह अपनी कुटिया में अन्यमनस्क बैठा था कि, महागुरु नारायण स्वामी उसी ओर आ निकले। उन्हें देख साधक की चेतना में पूर्व साधन-संस्कारों के साथ गहरी आत्म-ग्लानि का उदय हुआ। कुटी-द्वार से उठकर वह उनकी ओर बढ़ा। महागुरु उसे अपनी ओर आता देख रुके और लौट पड़े।

अपने पतन के प्रति आत्म-ग्लानि और गुरु के प्रति श्रद्धा से आतुर वह रोता-बिलखता उनके पीछे लगा। साधक की गति के साथ गुरु की चाल भी तीव्र हुई। सामने नदी थी। गुरु उसी में कूदकर गहरे जल में जा पहुँचे।

साधक का मार्ग रुक गया। उसने तट पर से बिलखकर पुकारा—"गुरुदेव।"

गुरु परम सिद्ध थे। जल के ऊपर सिद्धासन से अवस्थित होकर उन्होंने कहा—"वत्स, जिसके पीछे भागकर तू कुछ पाना चाहता है, वह चाहे नारी हो या नारायण, बंधन के अतिरिक्त तुझे और कुछ नहीं दे सकता। तेरे द्वार पर आयी नारी मुक्त रहती, तो वह तेरे लिए नारायण का प्रसाद थी; और द्वार पर आया नारायण यदि तेरे हाथ आ जाता, तो वह नारी के वमन से अधिक कुछ न रहता। तेरे स्पर्श का बचाव मैंने तेरे हित के लिए ही किया है।"

इतना कहकर महागुरु जल के गर्भ में अदृश्य हो गये।

— रावी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिगर की प्रेयसी का दुर्भाग्य

गजल के बादशाह जिगर मुरादाबादी की जिंदगी की एक दर्द-भरी तस्वीर, जो हिन्दी पाठकों के लिए बिल्कुल नयी चीज है।

मगनी अब्बासी

आज गजल का बादशाह जिगर हमारे बीच नहीं है और न उसकी प्रेमिका रौशन फातमा ही। लेकिन उनके इश्क की यह दास्तान, जो बहुत कम लोगों को मालूम है, दिलचस्पी से खाली नहीं है। यह कहानी जिगर साहब के मुहल्ले के मुहम्मद आबिद शमसी साहब को एक बुजुर्ग महिला ने सुनायी थी, जो कुछ वर्ष पूर्व लगभग सौ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हो गयीं। यह दास्तान उन महिला के शब्दों में ज्यों-की-त्यों पेश की जा रही है :

आबिद ! हम औरतें जब किसी की सुंदरता का जिक्र करती हैं, तो यों कहती हैं—सैकड़ों में एक—हजारों में एक—लाखों में एक। रौशन फातमा के बारे में क्या बताऊँ? ऐसी हसीन औरत हमने आज तक नहीं देखी। हाँ, कहानियों में जरूर सुना है। जिगर की प्रेमिका सचमुच एक हूर थी। जिगर की नौजवानी का जमाना था। खुलता हुआ गेहुँआ रंग (बाद में शराबनोशी ने रंग को बुझाकर काला कर दिया था।) तीखे नकूश और तबीयत का एक अजीब आलम। वह उस जमाने में 'एस० एम० आकिल एंड संस' का एजेंट (ट्रैवलिंग एजेंट) था। रौशन फातमा आगरा के एक रौशन-खयाल घराने की लड़की और एक बड़े सरकारी अफसर की बेटी थी। जिगर को देखा और दिल-ही-दिल में उसकी पूजा करने लगी। जिगर के शायराना अंदाज और जादू-भरी आवाज का जितना ही असर होता, कम था।

कुछ दिन गुजरे और रौशन फातमा के दिल में मोहब्बत की चिनगारी शोला बनकर भड़कने लगी। दुनिया को हमेशा ऐसे मिलाप से बैर रहा है। आखिर लोगों ने दोनों के बीच जुदाई की दीवारें खड़ी करनी शुरू कीं, लेकिन इन दीवानों के आगे किसी एक की न चल सकी। और जब खानदानवाले रौशन फातमा को किसी भी तरह जिगर से वाबस्ता करने पर आमादा न हुए, तो जिगर की इस मनचली प्रेमिका ने अपने मुहब्बत के लिए हमेशा-हमेशा के लिए घर को खैरबाद कह दिया।

वह जिगर की जात में गुम हो गयी थी। उसे दुनिया और दुनियावालों का होश ही न था। मोहब्बत करनेवाली हो तो ऐसी हो ! वह जिगर की ! जात, उसकी शायरी, उसकी आवाज और उसके अंदाज

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जान देता था। आखिर रौशन तमाम बंधन तोड़कर और सब कुछ छोड़कर जिगर की बाहों में आकर छुप गयी। और ये दोनों घूमते-फिरते रियाज खैराबादी के घर पहुँचे। वहाँ उन्होंने चार दिन भी शांति से न गुजारे थे कि, रियाज खैराबादी को सब हालात का पता चल गया। और साथ-ही-साथ यह भी मालूम हुआ कि, मामला पुलिस तक पहुँच चुका है। आखिर उन्होंने डर के मारे कोई बहाना बनाकर इस जोड़े को रवाना कर दिया। अब इन दोनों ने मुरादाबाद की राह ली और एस० एम० आकिल को अपना राजदार बनाकर उनसे मदद चाही। उन्होंने बड़ी उदारता के साथ अपने घर के दरवाजे उनके लिए खोल दिये। यह मकान जिसमें उस वक्त एस० एम० आकिल रहते थे, मुहल्ला रिफअतपुरा में स्थित है।

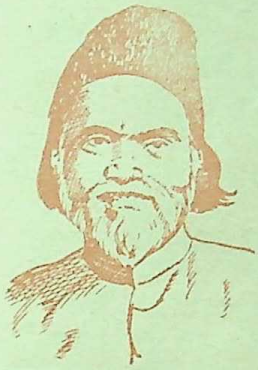

मरहूम जिगर साहब

जिगर बड़ा ही मासूम था, और वह तो अब भी उतना ही मासूम है। वह समझ ही न सकता था कि, जिस पर उसने विश्वास किया है वही व्यक्ति आस्तीन का साँप सिद्ध होगा। यही हाल रौशन फातमा का था। वह मासूम लड़की यही समझ रही थी कि, हम अपने एक मोहसिन की पनाह में हैं और वह व्यक्ति मेरे महबूब का सच्चा दोस्त है। उसने आनेवाले दिनों के लिए नये-नये खाके बनाये थे। जिंदगी के हसीनतरीक ख्वाब देख थे—वह जिंदगी अब [illegible] कहलायेंगे और सब रूठे हुए सम्बंधी उसका अपराध माफ करके उसे गले लगा लेंगे। लेकिन इस मासूम लड़की को क्या मालूम था कि, हालात क्या साजिश करनेवाले हैं।

आकिल साहब ने जब रौशन फातमा को देखा, तो उस पर फिदा होने लगे। आदमी 'व्यापारी' थे। यद्यपि उनकी शादी हो चुकी थी, मगर सोचा कि, अच्छी चीज पर कब्जा क्यों न जमाया जाये। मतलब साधने के लिए एक मन्सूबा बनाया और उस पर अमल किया। यानी रौशन फातमा के पिता को कुछ इस प्रकार का पत्र लिखा कि, आपकी बेटी मेरी हिफाजत में है। आप बाइज्जत लोग हैं। पुलिस तक बात पहुँचाना मुनासिब नहीं। इसमें व्यर्थ बदनामी होगी। आप यहाँ तशरीफ ले आयें और खामोशी के साथ लड़की को ले जायें।

ये दोनों बदनसीब, दुनिया से बेखबर एक-दूसरे में गुम थे कि, एक दिन अचानक आकिल साहब के दरवाजे के सामने एक ताँगा आकर रुका। किसी ने अंदर आकर कहा—"कोई साहब आगरे से तशरीफ लाये हैं।" ये रौशन फातमा के बड़े भाई थे। इसके बाद आकिल साहब ने सोची-समझी योजना के अनुसार जिगर को, जिनका वारंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आगर से जारी हुए काफी दिन हो चुके थे, इगवा के जुर्म में पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आकिल साहब ने रौशन के भाई को कई दिन अपने यहाँ मेहमान रखा और उन्हें बताया कि, उनकी बहन कुछ दिन बाद माँ बननेवाली है और अपने आपको रौशन के लिए पेश किया, ताकि और ज्यादा बदनामी न हो और इस घटना पर परदा पड़ जाये। रौशन के भाई, जाहिर है, इस बात को मान ही जाते। आकिल साहब तो मानो उनके खानदान पर एहसान कर रहे थे। यह तो उनका त्याग था, वरना अब रौशन को भला कौन स्वीकार करता! अतएव रौशन फातमा को आकिल के हवाले कर दिया गया। अब आकिल अपने दोस्त की प्रेमिका के पति थे।

बेचारा जिगर सजा भुगतकर बाहर आया, तो इस घटना ने उसके होश-हवास छीन लिये। दुनिया उसकी निगाहों में अँधेरी हो गयी। फटेहालों आकिल साहब के यहाँ अपनी महबूबा की खबर लेने आया। वह दृश्य बड़ा दर्दनाक था, जब अली सिकंदर जिगर दीवानों की तरह आकिल के दरवाजे से अपना सिर फोड़ रहा था। आँखों से मालूम होता था कि, कई रातों का जागा हुआ है। कपड़े फटे हुए थे। सिर के कई हिस्सों से खून बहकर लकीरों की सूरत में जम गया था। अब शराब के अलावा इस गम का और कोई इलाज नहीं था। तमाशाइयों का हुजूम उसके साथ होता और वह शराब के नशे में धुत कभी शेर कहता और कभी उस मकान की दीवारों से सिर फोड़ता। यह था [illegible] ए-हिन्दुस्तान–जिगर।

एक जमींदार जिगर के इस हालेज़ार पर रहम खाकर उसे अपने गाँव ले गया। इस अदब-नवाज जमींदार ने जिगर को अपनी एक वजीफाख्वार तवाइफ के हवाले कर दिया, जो संगीत-कला में महारत ही न रखती थी, बल्कि आवाज में जादू भी रखती थी। यहीं से जिगर ने उन बेसुध कर देने वाली धुनों में गजलें पढ़नी सीखीं, जिन्हें सुनकर श्रोता अपना होश खो बैठते थे और मुशायरे उलट जाते थे।

और रौशन फातमा! उस नसीबोंजली की जिंदगी ही क्या, जिसकी रूह कुचल दी गयी हो और जो फरियाद भी न कर सकती हो! वह अपने भाई के आने और जिगर के खिलाफ आकिल की साजिश से पहले गुलाब की तरह तरोताजा थी और फिर उसका बेमिसाल हुस्न! लेकिन अब रौशन फातमा वह पहली-सी रौशन फातमा न रही थी। खाना-पीना छूट चुका था। आँखें रोते-रोते खुश्क हो गयी थीं। अब वह न जिंदों में थी न मुर्दों में। आकिल साहब दोस्त बनकर एक मासूम शायर को धोखा देने में तो जरूर कामयाब हो गये; लेकिन अपने फरेबखुर्दा और तबाहहाल दोस्त की प्रेमिका को पराजित कर देना उनके लिए कभी सम्भव न हो सका। उन्होंने रौशन को अपनी पत्नी बना लिया–ठीक है; लेकिन वह उन्हें पति न बना सकी। आकिल ने प्रकट रूप से इसकी कोई चिंता न की; लेकिन

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके जमीर (अंतःकरण) को यह पराजय स्वीकार करनी ही पड़ी।

रौशन ने एक दिन आकिल साहब को बुलाकर पास बैठने को कहा। आकिल साहब को बड़ा ताज्जुब हुआ। वे पास बैठ गये। रौशन ने बड़ी गम्भीरता और नर्मी से कहा कि, जो कुछ होना था, वह हो चुका। अब मैं चाहती हूँ कि, दुनिया छोड़कर ख्वाजा मोइनउद्दीन चिश्ती अजमेरी की दरगाह चली जाऊँ। इस सूरत में हमारे वैवाहिक रिश्ते को बरकरार रखने से क्या फायदा ?

आकिल साहब सब-कुछ करके हार गये थे। वे तलाक देने पर तो राजी न हुए; लेकिन उन्होंने रौशन को अजमेर जाने की इजाजत दे दी। इस शर्त के साथ कि, अली सिकंदर (जिगर) को इसकी खबर न हो।

जो दुनिया और उसकी माया को छोड़कर एकांतवास को जा रहा हो, उसे सफर की तैयारी ही क्या करनी थी ! लोगों ने सुना कि, रौशन फातमा अजमेर चली गयीं। दिन गुजरते गये—फिर एक दिन खबर आयी कि, वह अल्लाह को प्यारी हो गयीं—यह थी गजल के बादशाह हजरत जिगर मुरादाबादी की गैरतेहूर महबूबा और जाँनिसार रौशन फातमा !

यह दास्तान सुनने के बाद जिगर का वह शेर याद आ जाता है :

कुछ इधर से भी सिवा है उधर की मजबूरी
कि हमने आह तो की, उनसे आह भी न हुई।

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ—
वरना क्या बात कर नहीं आती।

अब आप खुद ही बताइये, बात का बतंगड़ बना देनेवाली इस दुनिया में मैं चुप रहूँ, तो और करूँ भी क्या ?

जीवन में हर क्षेत्र का यही हाल है। सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक—यानी जीवन के जितने भी रूप हो सकते हैं, उनकी यही दशा है। हर जगह बिना जरूरत की परेशानी है।

जी, माफ कीजिये। यदि मैं यह कहूँ कि, मेरी इस बदलती हुई दशा के जिम्मेवार आप और आप-जैसे ही कई मित्र हैं, तो अत्युक्ति न होगी। अमरबेल की तरह नारद की शिष्य-परम्परा फैल रही है। वह दोनों को एक-जैसी दाद देनेवाली इस दुनियाँ से मैं बहुत परेशान हो उठा हूँ।

जी, क्या कहा ? अपने पड़ोसी रामलखावन के बारे में आपको कुछ बताऊँ ? क्यों, क्या कोई शादी-वादी की बात है ? आप उसके दफ्तर जाकर पता लगा लें, तो ठीक रहेगा। पहले तो मिर्जा गालिब का ऊपर लिखा शेर पूरी तरह आज मुझ पर घट रहा है। मेरा पक्का विचार है, उनका जमाना भी काफी नाजुक रहा होगा। वरना महाकवि मिर्जा गालिब ऐसा शेर कभी न कहते। पर यह हमारा जमाना उससे भी ज्यादा नाजुक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तलवार की मूठ

तलवार के धनियों की तलवार से भी मूल्यवान् कलाकृति तलवार की मूठ।

अरुण कुमार

एक युग था, जब तलवार के धनी पूजे जाते थे। अब वे चित्रों और अजायब-घरों के विषय रह गये हैं। तलवार का स्थान पहले छड़ी ने लिया, फिर छाते ने। उपयोगितावाद के इस युग में छाता आवश्यकता की पूर्ति करने लगा, तलवार नहीं। तलवार केवल चिह्न मात्र बनकर शेष रह गयी है।

परंतु किसी समय लोग तलवार को अपने सम्मान का प्रतीक [illegible] उसकी निगाहों में अँधेरी हो गयी। फटेहालों आकिल साहब के यहाँ अपनी महबूबा की खबर लेने आया। वह दृश्य बड़ा दर्दनाक था, जब अली सिकंदर जिगर दीवानों की तरह आकिल के दरवाजे से अपना सिर फोड़ रहा था। आँखों से मालूम होता था कि, कई रातों का जागा हुआ है। कपड़े फटे हुए थे। सिर के कई हिस्सों से खून बहकर लकीरों की सूरत में जम गया था। अब शराब के अलावा इस गम का और कोई इलाज नहीं था। तमाशाइयों का हुजूम उसके साथ होता और वह शराब के नशे में धुत कभी शेर कहता और कभी उस मकान पर भी सोने व चाँदी का पानी चढ़ा दिया जाता था। सोने की मूठें बहुधा रत्नजटित भी हुआ करती थी।

अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में जापानी सोने व अन्य धातुओं के मिश्रण 'शाकुडो' से काली मूठें तैयार करते थे और वे कई देशों में बहुत लोकप्रिय हुईं। भारतीय शिल्पकार देश-काल के अनुसार मूठ पर नक्काशी व चित्रण किया करते थे [illegible] तरह तरोताजा थी और [illegible] उसका बेमिसाल हुस्न! लेकिन अब [illegible] फातमा वह पहली-सी रौशन फातमा रही थी। खाना-पीना छूट चुका था। आँखें रोते-रोते खुश्क हो गयी थीं। अब वह न जिंदों में थी न मुर्दों में। आकिल साहब दोस्त बनकर एक मासूम शायर को धोखा देने में तो जरूर कामयाब हो गये; लेकिन अपने फरेबखुर्दा और तबाहहाल दोस्त की प्रेमिका को पराजित कर देना उनके लिए कभी सम्भव न हो सका। उन्होंने रौशन को अपनी पत्नी बना लिया—ठीक है; लेकिन वह उन्हें पति न बना सकी। आकिल ने प्रकट रूप से इसकी कोई चिंता न की; लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ

देवराज 'दिनेश'

जी, क्या कहा ? यह देखकर आपको ताज्जुब हो रहा है कि, मैं मुखर और वाचाल व्यक्ति आज इतना शांत कैसे हो गया हूँ ?

जी हाँ, है तो यह ताज्जुब की ही बात; पर इसका सही उत्तर यही है कि, जमाना ही नाजुक है ।

जी हाँ ! यह सच है । आज अपने चारों ओर बिखरे वातावरण को देखकर विवश होकर यही कहना पड़ता है:

है कुछ ऐसी ही बात जो चुप हूँ—
वरना क्या बात कर नहीं आती ।

अब आप खुद ही बताइये, बात का बतंगड़ बना देनेवाली इस दुनिया में मैं चुप न रहूँ, तो और करूँ भी क्या ?

जीवन में हर क्षेत्र का यही हाल है । सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक—यानी जीवन के जितने भी रूप हो सकते हैं, उनकी यही दशा है । हर जगह बिना जरूरत की परेशानी है ।

जी, माफ कीजिये । यदि मैं यह कहूँ कि, इसी इस बदलती हुई दशा के जिम्मेवार आप और आप-जैसे ही कई मित्र हैं, तो अत्युक्ति न होगी । अमरबेल की तरह बरद की शिष्य-परम्परा फैल रही है । वह खुद फलती-फूलती-फैलती है और जिस भी हरे-भरे पेड़ पर अपनी कृपा की छाया कर देती है, उसे कुछ ही दिनों में सुखा डालती है ।

तो समझे जनाब, इसीलिए बहुत सम्भल-सोचकर मैं अपनी चोंच खोलता हूँ । मैं देख रहा हूँ, बहुत देर से इस बात का अनुभव कर रहा हूँ कि, मैं किसी तरह के भी दो वाक्य अपने मुँह से निकालूँ और आप "वाह वाह, क्या कहने हैं" कहकर दाद दें ।

पर माफ कीजिये, मैं ऐसा मौका आपको देने के 'मूड' में नहीं हूँ । कौए और कोयल दोनों को एक-जैसी दाद देनेवाली इस दुनियाँ से मैं बहुत परेशान हो उठा हूँ ।

जी, क्या कहा ? अपने पड़ोसी रामलखावन के बारे में आपको कुछ बताऊँ ? क्यों, क्या कोई शादी-वादी की बात है ? आप उसके दफ्तर जाकर पता लगा लें, तो ठीक रहेगा । पहले तो मिर्जा गालिब का ऊपर लिखा शेर पूरी तरह आज मुझ पर घट रहा है । मेरा पक्का विचार है, उनका जमाना भी काफी नाजुक रहा होगा । वरना महाकवि मिर्जा गालिब ऐसा शेर कभी न कहते । पर यह हमारा जमाना उससे भी ज्यादा नाजुक है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारदीय परम्परा का आजकल बहुत जोर है; इसलिए मुंह खोलते हुए डर लगता है। नारद जब इस धरती पर अकेले ही थे, तब भी उन्होंने इस धरती के बाशिंदों को चैन से नहीं बैठने दिया था। और आज की तो बात ही अलग है। उनकी शिष्य-परम्परा इस कदर फैली हुई है कि, क्या कहने। बात का बतंगड़ तो फिर भी कुछ हुआ; गुरु लोग बिना बात का बतंगड़ बना देते हैं।

तुम्हारी मुझसे, मेरी तुमसे, इनकी उनसे उनकी इनसे—इसी काम को करते-करते भगवान् नारद के शिष्यों की जिंदगी बीत जाती है।

मैं रामलखावन के बारे में कुछ जानता ही नहीं; और जो थोड़ा-बहुत जानता भी हूँ, वह आपको बताऊँगा नहीं। मैं नहीं चाहता कि, अपने पड़ोसी के बारे में कोई भी बात अपने मुँह से निकालूँ; बिना जरूरत गलतफहमी बढ़ती रहे। वैसे लड़का बहुत भला है; कमाऊ है, सुंदर है, देखने-सुनने में ठीक है।

जी क्या कहा? "मैं सब समझ गया?"

क्या खाक समझ गये आप! अजीब मुसीबत है! मैंने अपनी जुबान भी नहीं खोली और आप सारी बात समझ भी गये। आप-जैसे लोग ही तो जानेबवाल बने हुए हैं। भगवान् की कसम, मुझ पर रहम खाइये। मेरी तोबा, जो मैं आपसे इतनी बात भी कर बैठा। भविष्य में जो भी सज्जन आयेंगे, उनसे बिना मुख खोले, बिना एक भी शब्द बोले, हाथ जोड़कर ही माफी माँग लिया करूँगा जनाब।

अब उस दिन की बात ही लीजिये। [illegible] साहब आये, मिले। बीवी ने मेज पर [illegible] सजाकर रखी ही थी। शिष्टतावश उन्हें [illegible] भी पूछ बैठा। चाय भी पिलायी। बाद में बोले—"इधर के पड़ोसी हरिभजनजी के बारे में कुछ बताइये, बड़ी कृपा होगी।"

अब कुछ जानता होता, तो बताता भी। अब आप ही सोचिये, इस विशाल और व्यस्त नगर में किसके पास इतनी फुरसत है कि, अपने पड़ोसियों के बारे में जानता फिरे। बस जी, मजाक के 'मूड' में बरबस मुँह से निकल ही तो गया—"हरिभजनजी तो बस हरिभजनजी ही हैं। इससे ज्यादा जानने की जरूरत ही क्या है?"

सुनते ही उठकर हाथ जोड़ते हुए बोले—"आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। आपने कुछ न कहते हुए भी बहुत-कुछ कह दिया। मैं सब समझ गया।"

अजीब आफत है। कहीं से हरिभजन के बारे में कुछ सुनकर आये थे; मेरी बात को उसका समर्थन मान बैठे।

बहुत मिन्नत-समाजत की—"जनाब! मैं उनके बारे में कुछ भी नहीं जानता। पर नहीं, उनके कान पर जूँ तक नहीं रेंगी। अजीब आफत में जान फँसी।

अब उस दिन एक मित्र किस्म के व्यक्ति मिले, बोले—"बहुत जरूरत है। पाँच रुपये तो दीजिये, कल लौटा दूँगा।"

मैंने बटुए से रुपये निकालकर उन्हें [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

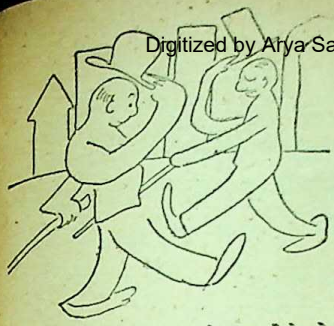

दो दूर से ही सलाम-बंदगी कर लेने से हुज्जत और काफी का खर्च दोनों से आसानी से बचा जा सकता है।

हुए कहा—"जरूरत है, तो रुपये ले लीजिये; पर इन्हें लौटाने की बात न कीजिये।"

अब बताइये, मैंने क्या बुरा कहा। सुनते ही भन्ना उठे। रुपये जेब में रखते हुए बोले—"कमाल है यार, क्या अपने आपको तुम धन्नासेठ समझते हो? किसी जरूरतमंद का मजाक उड़ाते तुम्हें शर्म नहीं आती? कल शाम यहीं मिलना और अपने रुपये ले जाना।"

डाँट खायी, चुप हो गया। दूसरे दिन निश्चित समय पर उनके दर्शन किये। बेतकल्लुफी से बोले—"काफी पिलाओ।"

काफी पी, पिलायी। काफी पीकर बोले—सुनो यार, आज तो रुपयों का इंतजाम नहीं हो सका। दो रुपये और दो, कल सब इकट्ठे ही ले लेना। यहीं कल शाम को मिलेंगे।"

दो रुपये दिये। पर आप क्या समझते हैं, मैं फिर तीसरे दिन उनसे मिला हूँगा? मैंने तो पहले दिन ही उनसे कहा था—लौटाने की बात मत करो। पर वे बिना जरूरत नाराज हो गये।

अब आप ही बताइये, इसमें नाराज होने की कौन-सी बात है। एक आप अपने रुपये गवाँइये, दूसरे मित्रों से बोलचाल भी बंद कीजिये। मुँह मत्थे लगने से भी जाइये। भला यह कहाँ की अक्लमंदी है!

इस नाजुक जमाने में इसी बात से काम चल सकता है कि, नेकी कर और कुएँ में डाल। हर तरफ यही हाल है। बिना जरूरत परेशानी के अलावा यहाँ कुछ नहीं है।

जी क्या कहा? इस नये निकले कहानी-संग्रह पर अपने विचार प्रकट करूँ?

कमाल है, आप भी काफी सनकी आदमी हैं! मुझे किसी-न-किसी फंदे में फँसाना ही चाहते हैं। पर नहीं जनाब! मुझे पागल कुत्ते ने काटा है, जो इस कहानी-संग्रह पर या और किसी किताब पर, जो मित्र किस्म के लेखक ने लिखी हो, अपने विचार प्रकट करूँगा? किताब पढ़ी हुई होने पर भी फर्राटे से यह नहीं कह दूँगा कि, अभी मैंने इस किताब को पढ़ा ही नहीं! जिंदगी इतनी व्यस्त है कि, इस किताब को पढ़ने की बात तो अलग, ठीक ढंग से इसके पृष्ठ भी पलटकर नहीं देखे।

कौन बैठे-बिठाये आफत मोल ले! जिंदगी को सीधे ढंग से काटने का तरीका एक ही है कि, आलोचना वर्जित है। किसी व्यक्ति की, किसी भी वस्तु की, किसी तरह की भी आलोचना करना मुझे पसंद नहीं; क्योंकि आलोचना वर्जित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी क्या कहा ? आप इस कहानी-संग्रह के बारे में मेरे विचार जानना चाहते हैं ? हद है ! मैं बेचारा किस्मत का मारा कहाँ आपके चक्कर में फँस गया ! आप बात सुनते पीछे हैं, जान पहले जाते हैं ।

शक्ल-सूरत से तो नहीं लगते ; पर शायद आप ज्योतिषी हैं । या हो सकता है, किसी ज्योतिषी के साथ रहने का सौभाग्य ही आपको मिला हो ।

आप-जैसे महापुरुषों के कारण ही तो यह जमाना नाजुक बना हुआ है । बिना सुने ही आप बात के दस अर्थ निकाल लेते हैं ।

जी क्या कहा ? आपका सिद्धांत है ?

वाह, वाह ! कमाल है ! तो आपका कोई सिद्धांत भी है ? यह हुई सौ बातों की एक बात । जी हाँ, तो वह क्या है आपका सिद्धांत ? इधर की सुन उधर कह, उधर की सुन इधर कह । नमक-मिर्च-मसाला पास से लगा । बी जमालो के रूप में [illegible] का मजा उठा ।

मतलब कि, सुन और पेट में डाल [illegible]

जी हाँ, अक्सर लोग ऐसा ही करते [illegible] सुनते हैं और पी जाते हैं; पर पचा [illegible] पाते । कहीं-न-कहीं उसे जरूर उगल [illegible] हैं । खुद आनंद लेते हैं और दोस्तों [illegible] फजीहत करा देते हैं ।

हाँ तो जनाब, अभी-अभी आप सिद्धांत की बात कर रहे थे न ! सिद्धांत के बारे में अपने विचार ये हैं –

शब्द वह घायल जिसे सिद्धांत कहते हैं
कोश के ही अर्थ उसके साथ रहते हैं ।

जी हाँ, सिवा डिक्शनरी अर्थात् शब्द कोश के सिद्धांत और कहीं सुरक्षित नहीं हैं जी, बुरा मत मानिये–जमाना नाजुक है ।

अब आप ही बताइये, चुप न रहूँ तो और क्या करूँ ?

★

एक दिन बर्नार्ड शा ने अपने एक चीनी मित्र से कहा–" वैंग, मैं चीनी लिखना भूल गया हूँ ।" वैंग ने आश्चर्य से कहा–" हाँ तो मुझे कुछ चीनी में लिखकर दिखाइये ।" शा ने कागज पर कुछ टेढ़ी-मेढ़ी रेखाएँ खींच दीं और कहा–" देखो ।" उन टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं को देखकर मित्र हँस पड़ा और बोला–" अब जनाब, जरा इसे पढ़कर भी तो सुनाइये ।" शा ने जवाब दिया–" मुझे चीनी में लिखना आता है, पढ़ना नहीं ।" – प्रकाश [illegible]

★

दान की महिमा के सम्बंध में बातचीत चल रही थी । एक सज्जन बोले–" मुझे भगवान् की दया पर बड़ा विश्वास है – एक दो, तो दो वापस देता है ।" मित्रों ने पूछा–" कैसे ?" वे बोले–" साहब, अभी कुछ दिन पहले मैंने एक खोटा सिक्का दान में दिया । अगले दिन सबसे पहले ही जो ग्राहक आया, वह दो खोटे सिक्के मेरे मत्थे मढ़ गया ।..... [illegible] अपनी बेटी का कन्यादान किया । दो ही महीने बाद मेरी बेटी और दामाद मेरे घर [illegible] के लिए आ गये । मुझे तो सदा ही एक का दो होकर मिलता रहा है ।" – [illegible]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे जीवन का पहला संघर्ष

जीवन संघर्ष है; परंतु ऐसा संघर्ष जिसका मुस्कान का साथ स्वागत करना चाहिये—इस सिद्धांत को लेकर अपने भाग्य से खेलनेवाले लेखक द्वारा अपने जीवन के प्रथम संघर्ष का वर्णन, जो 'नवनीत' के लिए विशेष रूप से लिखा गया है।

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक

मेरा जन्म मई सन् १८७९ में हुआ था। माता-पिता ने चार वर्ष की छोटी अवस्था में ही मेरी मँगनी कर दी थी; किंतु जब मेरी अवस्था सोलह वर्ष की हुई, तो पिताजी ने बिना मुझे कुछ बताये मेरे विवाह की तैयारियाँ शुरू कर दीं। हमारे देश में विवाह को जिम्मेदारी के रूप में नहीं देखा जाता, इसमें भी स्वार्थ-सिद्धि की बात सोच ली जाती है। उदाहरण के तौर पर, जब कोई लड़की अपनी ससुराल जाती है, तो वह अपना रुतबा बढ़ाने के लिए पति अथवा उसके किसी रिश्तेदार के लड़के के लिए अपने कुटुम्ब की किसी लड़की का नाता जोड़ने का यत्न करती है। ऐसा करने से ससुराल में उसका मान बढ़ जाता है और पति तथा परिवार के अन्य लोग उसका विशेष आदर करने लगते हैं। मुझ गरीब के साथ भी ऐसा ही हुआ। इसी कारण मेरी सगाई इतनी छोटी उम्र में ही हो गयी और मुझे उसका कुछ भी पता नहीं लगा। मैं उन दिनों डी० ए० वी० हाई स्कूल, लाहौर में पढ़ता था। जब मेरी सगाई विवाह के रूप में परिणित होने लगी और वह भी मेरी सलाह के बिना, तो मैंने इस अत्याचार का विरोध करने के लिए लंगर-लँगोटे कस लिये।

संघर्ष के लिए उद्यत यूनानी योद्धा

लुधियाने (पंजाब) में मेरा जन्म हुआ था और उसी जिले के रायकोट ग्राम में मेरी मँगनी हुई थी। तो सबसे पहले मैंने लड़की के परिवारवालों को पत्र भेजकर यह सूचना दे दी कि, वे अपनी लड़की का विवाह मेरे साथ न करें; क्योंकि मैं संन्यासी हो जानेवाला हूँ। साथ ही एक पत्र अपने पिताजी के पास दीपालपुर (जिला मांटगुमरी) भेज दिया, जिसमें उन्हें विवाह न करने की सूचना दे दी। पिताजी उस समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिडिल स्कूल के हेड मास्टर थे और उनका स्वभाव बड़ा उग्र था। मेरा पत्र पहुँचते ही वे आपे से बाहर हो गये और गालियों से भरा हुआ उत्तर भेजकर मुझे घर से निकल जाने की धमकी दे दी। मैं पिताजी के स्वभाव से परिचित था; इसलिए कुछ भी भयभीत नहीं हुआ और अपने लिखने-पढ़ने में लगा रहा।

एक रोज शाम के समय मैं लाहौर के गोलबाग से कबड्डी खेलकर जब घर लौटा, तो नीचे दरवाजे पर ही मेरी बुढ़िया मालकिन से भेंट हुई। उसने मुझे ताना देकर कहा—"ऊपर जाओ, तुम्हारे पिता आ गये हैं—वे तुम्हें रेशमी मिठाई देंगे।" मैं समझ गया कि, आज मेरी पिटाई होनेवाली है। मुझे दो मंजिलें चढ़कर ऊपर जाना था। उतने समय में ही मैंने सब कुछ सोच लिया। जब अंतिम सीढ़ी पर पहुँचा, तो मैंने वहाँ खड़े-खड़े ही पिताजी के चेहरे को देख लिया। वे हुक्का पी रहे थे और सिर्फ धोती पहने बैठे थे। सीढ़ी से निकलकर जब मैं ऊपर पहुँचा, तो उन्होंने क्रोध-भरे शब्दों में कहा—"आ गया है सा....,जो कहता है कि, मैं शादी नहीं करूँगा।" मैं चुप रहा और उनके पास जाकर धीरे से प्रणाम करके चटाई पर बैठ गया।

पिताजी बोले—"क्यों लड़के, अब तेरी क्या सलाह है? तेरी शादी में सिर्फ एक महीना रह गया है। हमने सब तैयारियाँ कर ली हैं और लड़कीवालों ने हमें कहला भेजा है कि,हम बारात पहुँचने की तिथि शीघ्र लिख-कर भेजें। जो चिट्ठी तुमने उनको भेजी थी, वह भी मेरे पास आ गयी है। वे बेचारे दुविधा में पड़े हुए हैं; इसलिए मैं छुट्टी लेकर लाहौर आया हूँ। हमारी बिरादरी में कोई जैसा नालायक लड़का कोई नहीं हुआ, जो माँ-बाप के विरुद्ध इस किस्म की हरकत करता। तू ही पहला ऐसा निकम्मा लड़का निकला है, जो माँ-बाप के हुक्म के खिलाफ बगावत करने चला है। मैं आज इसी बात का फैसला करने आया हूँ। अब तुझे एक रात और सोचने के लिए देता हूँ। कल सवेरे अपना आखिरी फैसला मुझे बता देना। और यह बात भी याद रखना कि अगर तूने मेरा कहना न माना, तो मैं तुझे घर से निकाल दूँगा।"

मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया और चुपचाप वहाँ से उठकर अपनी माताजी के पास चला गया। वे सामने के कमरे में खाना बना रही थीं। जब मैंने उनसे इस विषय की चर्चा की, तो वे बड़े प्यार से बोलीं—"देख बेटा, तुझे विवाह के लिए कोई मजबूर नहीं कर सकता। अगर तेरी मर्जी विवाह करने की नहीं है, तो मत करना। तेरे पिता गालियाँ गलौज करके चले जायेंगे और बात खत्म हो जायेगी।"

माताजी के इन प्रेम-भरे शब्दों ने मुझे बड़ी सांत्वना दी और मैंने समझ लिया कि अब मेरा कोई जबरदस्ती विवाह नहीं कर सकता। मेरी पूज्य माताजी बड़ी बुद्धिमती और समझदार नारी थीं। पिताजी के स्वभाव को जानती थीं और इस बात से भी

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भली प्रकार परिचित थीं कि, छोटी उम्र में विवाह करने से कैसे भयंकर परिणाम निकलते हैं। मेरे बड़े भाई शिवरामजी का विवाह छोटी उम्र में हो गया था और उनकी विधवा स्त्री निहालदेवी घर में बैठी थीं। उस वैधव्य ने कैसी-कैसी आफतें ढायी थीं, यह सब उन्हें मालूम था। इसलिए वे नहीं चाहती थीं कि, उनका कोई दूसरा लड़का ऐसी आफत में फँसे।

दूसरे दिन मैंने पिताजी को स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि, उन्हें जबरदस्ती मेरा विवाह करने का कोई अधिकार नहीं है। बस, बात खत्म हो गयी। वे निराश होकर दीपालपुर लौट गये और उन्होंने लड़कीवालों को भी मेरे दृढ़ संकल्प की सूचना दे दी। करीब एक महीने बाद उस लड़की का विवाह उनकी बिरादरी के किसी दूसरे लड़के से हो गया। थोड़े अरसे के बाद ही वह लड़की बीमार होकर चल बसी। तब पिताजी ने खुश होकर मुझसे कहा—"तुम बड़े अक्लमंद निकले। लड़की को तो मर ही जाना था।" उनके ऐसे दकियानूसी विचार सुनकर मुझे बड़ा खेद हुआ।

स्वार्थी मनुष्य तो केवल अपना ही मतलब देखता है; और वर्तमान हिन्दू समाज ऐसे स्वार्थी माता-पिताओं से भरा पड़ा है, जो केवल अपना ही स्वार्थ देखते हैं और जिन्हें सर्वांगपूर्ण दृष्टि रखने का जरा भी अभ्यास नहीं। इसी कारण हिन्दू समाज की ऐसी भयंकर दुर्गति भी हुई है।

★

तुम सफल मत बनना

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन' अपनी थीसिस के अध्ययन के लिए शांति निकेतन गये हुए थे। जब उन्होंने अपना अध्ययन समाप्त कर लिया, तो वहाँ से प्रस्थान करने से पूर्व वे संस्था के आचार्य स्वर्गीय श्री क्षितिमोहन सेन के चरण छूने गये। आचार्यजी ने उन्हें देखा और गम्भीर होकर बोले—"तुम जीवन में कभी सफल मत बनना।" आचार्यजी के वचन सुनकर सुमनजी हतप्रभ हो गये। सोचने लगे, आखिर उनसे ऐसी क्या गलती हो गयी, जिससे आचार्यजी रुष्ट हो गये। उन्होंने साहस करके पूछ ही लिया। आचार्यजी कहने लगे—"भाई, सफल तो हजारों होते हैं। प्रत्येक वर्ष लाखों व्यक्तियों की सफलता के समाचार छपते हैं। लेकिन उनमें से सार्थक कोई विरला ही हो पाता है। अतः मैं चाहता हूँ कि, तुम जीवन में सार्थक बनो।" —गेंदालाल राजावत 'राजीव'

★

कंकड़ को सड़क पर कुटते देख संगमरमर बोला—"एक मैं हूँ कि, राजमहलों और ताजमहलों में जड़ा जाता हूँ, एक तू है जो दिन-रात सड़कों पर हथौड़ों से कुटता रहता है।" कंकड़ ने कड़ककर जवाब दिया—"अरे विलासी, तू किसी भवन की दीवार से चिपककर ही रह जाता है, जब कि मैं दूसरों के लिए मार्ग तैयार करता हूँ। —ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गैंडों का पूर्वज 'बलूचिथेरियम'

तीस लाख वर्ष पूर्व धरती पर विचरण करके विलुप्त हो जानेवाले एक भीमकाय प्राणी का वैज्ञानिकों द्वारा पुनरुद्धार।

अमरेंद्र झा

जब सन् १९२२ में अमरीका के विख्यात म्यूजियम आव नैचुरल हिस्ट्री की ओर से एक अनुसंधान-दल मंगोलिया और मध्य एशिया पहुँचा, तब उसका यही खयाल था कि, उसे तो चट्टानों और रेत के नमूने ही बटोरने होंगे। उसके ऐसा सोचने का कारण भी था।

उसके पूर्व तीन महान् अन्वेषक मंगोलिया में घूम चुके थे। वे थे राफेल पम्पली (१८७०), फर्डिनेंड वान रिचथाफेन (१८७७) और वी० ए० ओब्रुचेव (१८९४-१८९६)। इनमें से केवल ओब्रुचेव को गैंडों की कुछ अस्थियाँ वहाँ मिली थीं।

इसलिए जब अमरीकी दल को मंगोलिया की सीमा में प्रवेश करते ही इरेन डबासू के समीप जीवाश्मों (फासिल) के तीन खजाने मिले, तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही।

यहीं इन अमरीकी खोजियों को मध्य एशिया के विलुप्त गैंडों के अवशेष मिले। उन विशाल हड्डियों को देखते ही उन्हें पूरा विश्वास हो गया कि दस-बारह वर्ष पूर्व बलोचिस्तान में डॉ० एफ० कूपर को जिस विशाल प्राणी के अवशेष मिले थे, उससे इन गैंडों का जातीय सम्बंध रहा होगा।

कूपर केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के स्नातक थे और अमरीका के म्यूजियम आव नैचुरल हिस्ट्री में उन्होंने प्रशिक्षण पाया था। पुरातत्व और ऐतिहासिक अनुसंधान के क्षेत्र में ब्रिटेन का नाम उजागर करने की महत्वाकांक्षा के साथ वे बलोचिस्तान आये

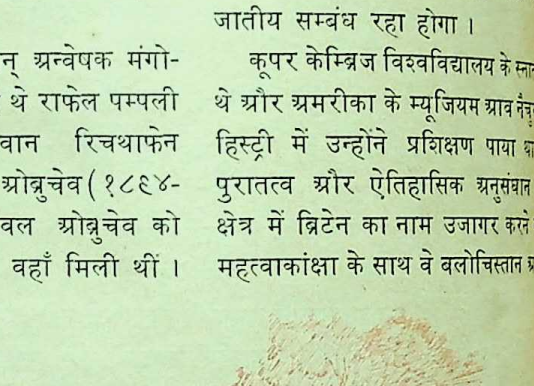

सितम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। पूर्वी बलोचिस्तान में बुगटी पहाड़ों में उन्हें और बहुत-से जीवाश्मों के साथ किसी अत्यंत विशाल स्थलचर स्तनपायी प्राणी के तीन बड़े मेरुदंड (गर्दन का भाग) और पैर की हड्डियाँ मिलीं।

अगले दस वर्ष तक कूपर ने इन हड्डियों का सूक्ष्म अध्ययन किया और यह परिणाम निकाला कि, वे एक सर्वथा अपरिचित प्राणी के अवशेष हैं। उन्होंने अवशेषों के प्राप्तिस्थान (बलोचिस्तान) तथा अमरीकी विद्वान् प्रो० आसबोर्न के नामों को अमर करने के लिए इस प्राणी का नाम रखा 'बलूचिथेरियम आसबोर्नी'। 'थेरियम' शब्द ग्रीक शब्द 'थेरियन' से बना है, जिसका अर्थ है वन्य पशु। उन्होंने यह भी परिणाम निकाला कि, यह प्राणी कुछ अंशों में घोड़े और दरियाई घोड़े (हिप्पोपोटेमस) से और बहुत अंशों में गैंडे से मिलता था।

लगभग उसी काल में रूसी भूगर्भवेत्ता ए० बोरिसियाक को उत्तरी तुर्किस्तान के तुरगाई प्रांत में एक वैसे ही दैत्याकार पशु का अवशेष मिला। बोरिसियाक को कूपर के खोज-कार्य की जानकारी नहीं थी; इसलिए उन्होंने इस पशु का नाम 'इंड्रिकोथेरियम एशियाटिकम' रखा। 'इंड्रिक' एक कल्पित पशु है, जिसका वर्णन तेरहवीं-चौदहवीं सदी की रूसी लोककथाओं में मिलता है। यह मान्यता है कि, 'इंड्रिक' चलने और दौड़ने के अलावा उड़ने में भी समर्थ होता था।

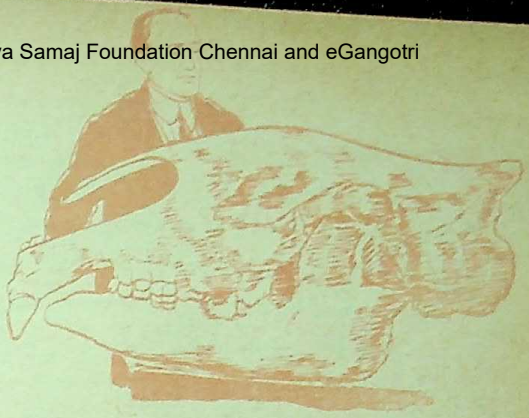

'बलूचिथेरियम' की खोपड़ी; साथ में हैं वैज्ञानिक ओटो फ्लैकेनबाक, जिन्होंने खोपड़ी के ३६०टुकड़ों को श्रमपूर्वक जोड़ा।

बोरिसियाक अधिक भाग्यशाली थे। उन्हें इस पशु के चारों पैरों की हड्डियाँ और बहुत-से दाँत भी प्राप्त हुए। कहा तो यह भी जाता है कि, उन्हें इस प्राणी की खोपड़ी भी मिली थी। दाँतों की बनावट और आकार-प्रकार से सिद्ध हुआ कि, ये गैंडे की जाति के किसी भीमकाय प्राणी के हैं। जब अमरीकी खोजी-दल मंगोलिया पहुँचा, उसे इस अनोखे प्राणी के बारे में यह सब जानकारी प्राप्त थी।

इरीन डबासू के निकट कुछ हड्डियाँ प्राप्त होने के बाद ५ अगस्त १९२२ को जब अलताई पहाड़ों के उत्तर-पूर्व में लोह के पास त्सागान नोर की घाटी में 'बलूचिथेरियम' की खोपड़ी मिल गयी, तो खोजियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के आश्चर्य और आनंद का पार न रहा ।

खोपड़ी को खोदकर निकालने में कई दिन लग गये और फिर उसके ३६० टुकड़ों को पेकिंग के रास्ते अमरीका भेजा गया । १९ दिसम्बर १९२२ को यह खोपड़ी अमरीका के म्यूजियम आव नैचुरल हिस्ट्री में पहुँची । जीवाश्म-विज्ञान के इतिहास में यह बड़ा महत्वपूर्ण दिन था ।

अब तक इस प्राणी के जितने भी अवशेष प्राप्त हुए थे, उन सबको म्यूजियम में जोड़ा गया और उसके आधार पर शेष अवयवों की कल्पना की गयी । इस प्रकार 'बलूचिथेरियम' का जो ढाँचा बना, उसका चित्र यहाँ दिया गया है । चित्र में 'बलूचिथेरियम' की बगल में गैंडा भी दिखाया गया है, जिससे दोनों प्राणियों की तुलना की जा सके ।

पहले अंदाज किया गया था कि, 'बलूचिथेरियम' की कंधे तक की ऊँचाई १[illegible] फुट रही होगी । अब यह निश्चय से कहा जा सकता है कि, खुर से कंधे तक उसकी ऊँचाई १३ फुट थी । उसकी गर्दन लगभग ७ फुट रही होगी जिराफ की तरह । लेकिन उसका सिर जिराफ के सिर की तरह छोटा नहीं होता था । गर्दन भी घोड़े की गर्दन की तरह मोटी और मजबूत होती थी ।

'बलूचिथेरियम' शाकाहारी था । लेकिन वह घास नहीं चरता था; बल्कि वृक्षों की टहनियाँ व पत्ते तोड़कर खाता था । उसके चौड़े, मजबूत और कम लम्बे दाँतों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट सिद्ध होती है । पौधों और झाड़ियों को खाकर जीनेवाले एशियाई गैंडों और 'बलूचिथेरियम' के दाँतों में बड़ी समता है ।

गैंडे और 'बलूचिथेरियम' में और भी कई महत्वपूर्ण अंतर हैं । 'बलूचिथेरियम' की टाँगें अधिक लम्बी होती थीं । उसके पाँव गैंडे के पाँवों की तरह चौड़े या हाथी के पाँवों की तरह गद्दीदार नहीं, बल्कि सरल और तंग होते थे ।

मंगोलिया में 'बलूचिथेरियम' की जो खोपड़ी मिली है, वह एकदम चिकनी है । उसमें कोई गाँठ या

'बलूचिथेरियम' का ढाँचा, जो अमरीका के म्यूजियम आव नैचुरल हिस्ट्री में तैयार किया गया है । खुदाई में प्राप्त अंग गहरे काले रंग में दिखाये गये हैं । प्राणी की विशालता का अंदाज कराने के लिए उसके साथ उसी पैमाने में वर्तमान गैंडे को चित्रित किया गया है ।

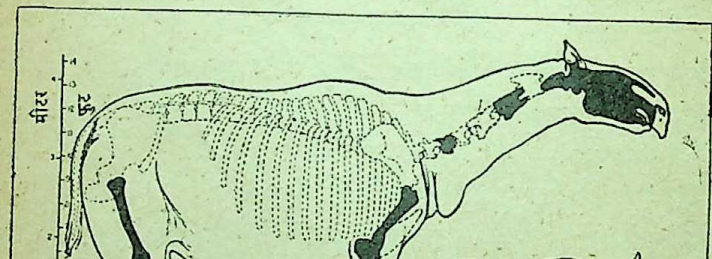

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठाव नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि, उसके सींग नहीं होते थे। परंतु बनैले सुअरों की तरह उसके मजबूत दंतौली होती थी। उसी से वह आत्मरक्षा करता था। उसकी पूँछ लम्बी होती थी।

काला हिस्सा 'बलूचिथेरियम' और उनके वंशजों के मूलस्थान का सूचक है। यहीं से गैंडे सारे संसार में फैले। १, ३, ४ और २ क्रमशः बलोचिस्तान, तुर्किस्तान और मंगोलिया को सूचित करते हैं, जहाँ 'बलूचिथेरियम' के अवशेष मिले हैं। गैंडे अब तो केवल अफ्रीका और दक्षिण-पूर्वी एशिया में मिलते हैं; परंतु कभी वे यूरोप और उत्तरी अमरीका में भी पाये जाते थे।

'बलूचिथेरियम' के इन सब लक्षणों के अध्ययन से एक महत्वपूर्ण परिणाम और निकला है। उस जमाने में मध्य एशिया, बलोचिस्तान, तिब्बत और मंगोलिया आज की तरह सूखे व उजाड़ प्रदेश नहीं थे। वे उसी प्रकार वृक्ष-वनस्पतियों से भरपूर और उपजाऊ इलाके थे, जैसे दक्षिण अमरीका के सवाना मैदान या अफ्रीका के हाइलैंड के पठार हैं। इन प्रदेशों में दलदल भी नहीं थी। वहाँ दक्षिणी समशीतोष्ण कटिबंध की-सी जलवायु थी। समुद्र से उसकी सतह कई हजार फुट ऊँची थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि, 'बलूचिथेरियम' और उसके वंशज गैंडों का मूल स्थान यहीं था और यहीं से वे बाद में संसार के दूसरे प्रदेशों में पहुँचे।

वस्तुतः आज से तीस लाख वर्ष पूर्व 'ओलिगोसीन' युग में मध्य एशिया विकासवाद की सबसे बड़ी प्रयोगशाला थी। वहाँ 'बलूचिथेरियम' जैसे स्तनपायियों के ही नहीं, अपितु विशालकाय सरीसृपों की भी अनेक नस्लों के अवशेष मिले हैं।

★

घास पर पलनेवाले कई किस्म के टिड्डे आपस में ही नहीं, दूसरों से भी बात कर सकते हैं। मिशीगन के एक वैज्ञानिक को इस प्रकार के कई टिड्डे मिले। इनमें से जब एक अपना मुँह हिलाकर शब्द करता, तो दूर-दूर से दूसरे टिड्डे जवाब देते। वैज्ञानिक ने स्वयं जब लोहे के दो टुकड़ों की मदद से ऐसा शब्द उत्पन्न किया, तब भी टिड्डों ने जवाब दिया। यह बात और है कि, वैज्ञानिक उसका अर्थ न समझ सका।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दुर्लभ विभूति

पूँजा बाबा

जीव मात्र की सेवा में निरत एक करुणा-मूर्ति की जीवन-झाँकी। दुर्लभ विभूति-प्रतियोगिता में इस पर सौ रुपये का पुरस्कार दिया गया है।

श्यामू संन्यासी

पूँजा बाबा लँगड़े और लूले, घायल और बीमार वन्य पशुओं तथा पक्षियों का सेवक और संरक्षक है। आधुनिक सभ्यता से बहुत दूर, विंध्य और सतपुड़ा के मिले-जुले घनघोर जंगलों में डेढ़ेक मील के घेरे में, उसने अपना बाड़ा-सा बना रखा है। इसी बाड़े में वह मूक साधक रहता है और अपने मूक 'जीवड़ों' की सेवा करता हुआ करुणा को साकार कर रहा है।

जंगल के घायल और रोगी जीव-जंतुओं का सम्भवतः सारे विश्व में यह अपने ढंग का निराला आश्रय-स्थल है। निराला इसलिए कि, मानव-सेवकों की अनेक संस्थाओं के बारे में हम जानते हैं; पालतू पशुओं पर दया दिखाने और उनकी सेवा करनेवाले व्यक्तियों और संगठनों के बारे में भी प्रायः सुनाई दे जाता है; परंतु वन्य पशुओं पर करुणा करनेवाला और उनकी सतत सेवा के द्वारा उस करुणा को चरितार्थ करनेवाला तो यह एक ही व्यक्ति मैंने देखा।

स्वयं मुझे भी आकस्मिक रूप से ही पूँजा बाबा के नाम और काम का पता चला। अपने तीन भील सहयोगी—माटेला, गोभला और डूँगर बाबा के साथ लोक-कथाओं की खोज में एक पाड़े से दूसरे पाड़े की ओर जाते हुए जंगल में एक घायल लोमड़ी तड़पती हुई मिली। उसके अगले बायें पंजे में घाव था। हमें देख उसने भागना चाहा; पर तीन पांवों के बल थोड़ा-सा उचककर गिर पड़ी और चीखने लगी। मैंने कहा—"इसे तो गोली मारकर इसकी पीड़ा का अंत कर देना चाहिये।" इस पर डूँगर बाबा बोला—"नहीं, इसे पूँजा बाबा के आईठाण (आश्रय-स्थल) में पहुँचा देना चाहिये। वे इसकी पीड़ा को अच्छा कर लेंगे।"

और मेरे परम कौतूहल के बीच, डूँगर बाबा के आदेशानुसार, माटेला और गोभला ने बड़े परिश्रम से घायल लोमड़ी को अधिकार में किया, चादर की झोली में लपेटा और उठाते-धरते पूँजा बाबा के आईठाण पर ले आये।

जब हम आईठाण में पहुँचे, तो एक मझोले कद का, छरहरे डील का भील उखड़े सींगवाले हिरन को गोद में लिये उसकी

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरहम-पट्टी कर रहा था। उसने अपनी कमर में एक लँगोटी और [illegible] लपेट रखी थी। शेष सारा शरीर नंगा था। सिर, दाढ़ी और मूँछों के बाल खिचड़ी हो रहे थे। आहट पाकर उसने हमारी ओर देखा। बाँयें कपाल से नाक की सीध में होता हुआ दाहिने कपोल तक घाव का एक लम्बोतरा निशान उसके चेहरे पर खिंचा हुआ था। उसने हँसकर हमारा स्वागत किया। मोतियों की तरह दमकती हुई उसकी बत्तीसी ने खिलकर उस घाववाले चेहरे को अत्यंत सुंदर बना दिया था।

हिरन को बड़ी सावधानी से समीपवाले नर्म दूब के बिस्तरे पर रखकर वह उठ खड़ा हुआ। 'आओ मोटा' कहकर वह डूंगर बाबा से गले मिला, शोभला और मोटला के बढ़े हुए हाथों को छुआ, मेरी ओर जिज्ञासा से देखा और तब स्नेह-करुण स्वर में बोला- "माँदा-झोली लाया के !" (बीमार को झोली में उठाकर लाये हो !)

यही व्यक्ति पूँजा बाबा थे।

पूँजा बाबा ने सबसे पहले लोमड़ी को झोली से मुक्त कर उसके पंजे की मरहम-पट्टी की। उनकी दृष्टि और स्पर्श में ऐसा क्या जादू था कि, उस जंगली लोमड़ी ने एक बार भी विरोध नहीं किया, दाँत नहीं दिखाये; नोचने को साबुत पंजा तक आगे नहीं बढ़ाया।

मेरा परिचय पाकर और कुतूहल जानकर पूँजा बाबा ने बड़े उत्साह से अपना आईठाण और उसके जीवड़ों को दिखलाया। उस समय वहाँ लगभग सवा-सौ पशु-पक्षी उनकी स्नेह-शुश्रूषा में बसेरा लिये हुए थे।

दसेक हिरन थे। किसी के खुर में चोट थी, तो किसी का घुटना टूटा हुआ था। कइयों के सींग उखड़े हुए थे। दो की पीठ पर घाव थे। एक का कान फट गया था।

चार नील गायें थीं। तीन बंदर थे। हमारे द्वारा लायी हुई लोमड़ी समेत चार लोमड़ियाँ थीं। खरगोश सबसे ज्यादा, लगभग बारह होंगे। आठ-दस जंगली चूहे थे। एक गिलहरी थी। एक लँगड़ा गधा भी था। एक गढ़े में टूटी कमरवाला सूअर भी पड़ा था। दो कछुए भी थे—एक के केवल तीन टाँगें थीं और दूसरा शायद चंगा था।

पक्षियों में लँगड़ा मोर था, जिसके पर टूट गये थे। टूटे पंजों और नुचे परोंवाले

जीवन-क्षण

यदि नहीं मैंने जिया
यह दीर्घ जीवन
यदि नहीं मैंने जिये हैं
वर्ष-कल्पांतर
तो क्या हुआ ?
सिर्फ बिजली की तरह से
कौंधकर
यदि एक लघु क्षण ही जिया मैंने,
सिर्फ हल्की-सी हँसी से
ऊँघते अवकाश को
ज्योतित किया मैंने—
तो क्या हुआ ?
एक क्षण तो जी लिया मैंने।

— रमा सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तोते, कौए, मैना, कोयल, कावरें, नीलकंठ और मेरे कई जाने-अनपहचाने पक्षी थे। सारस का एक जोड़ी भी था, पता नहीं उस जंगल में कहाँ से आ गया था और मादा के दाहिने पाँव में घुटने के ऊपर पट्टी बँधी थी और वह खड़ी नहीं हो पा रही थी और नर-पक्षी की चिंता और व्यथा बड़ी ही हृदय-विदारक थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब देख चुकने के बाद मैंने कहा—"आप तो बहुत बड़ा काम कर रहे हैं पूँजा बाबा!"

इस पर वह खिलखिला पड़े और बोले—"इसमें बड़ा काम क्या हुआ? अबोले पशु-पक्षी हैं बेचारे। किसी के पास हाथ नहीं। मैं अपने हाथों से उनकी जरा-सी मदद कर रहा हूँ। इसमें बड़ा काम क्या हुआ?"

थोड़ी देर रहकर मैंने पूछा—'क्या कभी कोई पशु-पक्षी आप पर हमला नहीं करता?'

"करता क्यों नहीं?" जवाब दिया डँगर बाबा ने, "एक बार लकड़बग्घे की मरहम-पट्टी कर रहे थे, उसने वह पंजा मारा कि, सारा चेहरा नुच गया। बाबा को वह निशान देख रहे हो न? पर पूँजा बाबा अपनी बान क्यों छोड़ने लगे?"

"बान कभी किसी से छूटी भी है?" पूँजा बाबा ने खिलकर कहा—"जनावर की जनावर की बान (पशुता) पर ही चलेंगे उनकी बान ठहरी; मनख को अपनी बान (मनुष्यता) पर रहना चाहिये।"

मैंने मनुष्यता की बान पर अडिग रहने वाले उस 'जंगली' महात्मा को मन-ही-मन प्रणाम किया और सोचने लगा—कैसा विचित्र है मेरा देश और इसमें कैसे-कैसे अद्भुत और विरल नर-रत्न सभ्यता की चमकदमक से कोसों दूर पड़े हुए हैं!

★

स्वर्ग के सात द्वार

नारुन्तुदः स्यान्न नृशंसवादी न हीनतः परमभ्याददीत।
ययास्यवाचा पर उद्विजेत न तां वदेद् रुशतीं पापलोक्याम्॥

कभी किसी के मर्म को चोट न पहुँचाये; दूसरे से हल्का व्यवहार न करे; दूसरों को उद्वेग पहुँचानेवाले कठोर और पापपूर्ण वचन न कहे।

नहीदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते।
दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक्॥

सबकी प्रसन्नता का इससे बढ़कर कोई साधन नहीं है: सब प्राणियों के प्रति दया, मैत्री, दान और मधुर वाणी का प्रयोग।

तपश्च दानं च शमो दमश्च ह्रीरार्जवं सर्वभूतानुकम्पा।
स्वर्गस्य लोकस्य वदन्ति सन्तो द्वाराणि सप्तैव महान्ति पुंसाम्॥

साधुजनों का कहना है कि, तप, दान, शम, दम, लज्जा, सरलता और सब प्राणियों के प्रति करुणा—ये स्वर्गलोक के सात द्वार हैं। — 'महाभारत' से

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलती से गलती का इलाज

अपनी ही आदतों से परेशान व्यक्तियों के लिए एक मनोवैज्ञानिक संकेत।

डा० मनसुखलाल

एक मानसशास्त्री को कुछ ऐसी आदत पड़ गयी थी कि, जब भी वह अँग्रेजी का शब्द 'ई' टाइप करना चाहता, तो उसका हाथ सबसे पहले 'एच' की कीली पर पड़ता था और 'टी एच ई' के बजाय 'एच टी ई' टाइप हो जाता था। यह आदत छुड़ाने की उसने बहुत कोशिश की; पर सफल नहीं हुआ।

अंत में उसने एक प्रयोग किया। वह 'टी एच ई' की जगह जानबूझकर 'एच टी ई' टाइप करने लगा। पर अब बार-बार 'एच' के बजाय, उसका हाथ पहले 'टी' पर पड़ने लगा और 'एच टी ई' के बजाय 'टी एच ई' टाइप होने लगा।

उस प्रयोग के पीछे मनोविज्ञान के दो सीधे-से नियम थे। जिस चीज को हम बिना गलती के करना चाहते हैं, प्रायः उसी में गलती होती है। इसी प्रकार गलती को जानबूझकर दोहराना कठिन होता है। इन नियमों के आधार पर गलतियों और अप्रिय आदतों से छुटकारा पाने का एक विज्ञान ही खोज निकाला गया है।

मान लीजिये, आपको दाँत से नाखून काटने की आदत पड़ गयी है और आप उससे छुटकारा पाना चाहते हैं। आपको इस तरीके को काम में लाना चाहिये। अपनी दिनचर्या में पाँच मिनिट पृथक् रख लीजिये दाँत से नाखून काटने के लिए। ये पाँच मिनिट आप जानबूझकर, पूरी जानकारी के साथ, नाखून कुतरने में लगाइये। यह जरूरी है कि, आप क्या कर रहे हैं, इस पर पूरा ध्यान दें। आप अपने से कहें—"मैं ऐसा नाखून कुतरने की आदत को छोड़ने के लिए कर रहा हूँ।"

हो सकता है, दाँत से नाखून काटने की आदत आपको न हो; बल्कि आप अत्यधिक धूम्रपान करते हों और उसे कम करने की पूरी कोशिश कर हार गये हों। तो इसी गुर का उपयोग आप इस प्रकार कर सकते हैं। सप्ताह में कोई एक दिन मुकर्रर कर लीजिये। उस दिन शाम को पूर्ण सजगता के साथ शृंखलाबद्ध धूम्रपान कीजिये। आराम-कुर्सी पर लेट जाइये। दस सिगरेट पास रख लीजिये। ज्यों ही एक सिगरेट खत्म हो, उसी जलती सिगरेट से दूसरी सिगरेट जला लीजिये; और जब तक पैकेट खाली न हो जाये, उठिये नहीं। हर कश के साथ मन में कहते रहिये—"मैं अधिक सिगरेट पीने की आदत को छोड़ने के इरादे से जानबूझकर ऐसा कर रहा हूँ।"

इस प्रयोग द्वारा धूम्रपान पर नियंत्रण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानेवाले एक व्यक्ति का कहना है—"ऐसा करना कठिन जरूर था, लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। बहुत शीघ्र मुझे अनुभव होने लगा कि, मैं केवल अँगुलियों, फेफड़ों और गालों की कसरत के लिए सिगरेट पी रहा हूँ, न कि उसका आनंद लेने के लिए। अब धूम्रपान की आदत पर मेरा पूरा नियंत्रण है। कई बार तो मुझे सिगरेट पिये हफ्तों गुजर जाते हैं।"

बमतलब मुँह बिचकाना, बिना किसी शारीरिक अव्यवस्था के बार-बार मूत्रालय जाना, अस्पताल व आपरेशन का विचार आने मात्र से जी मिचलाना और कै होना, अकारण रोना, होंठ काटना आदि अनेक आदतें छुड़वाने में ऐसे प्रयोग सफल हुए हैं। तुतलाना, स्नायविक और मांसपेशीय तनाव, कंधे उचकाना आदि के इलाज के लिए भी यह तरीका मौजूँ है।

एक सज्जन को अस्पताल का नाम सुनते ही उबकाई आने लगती थी। वे अस्पताल की गंध को बार-बार यादकर कै करने की कोशिश करने लगे। अब उन्होंने देखा कि, बहुत चाहने पर भी कै नहीं आती। और उन्होंने अपनी आदत पर काबू पा लिया।

इसी तरह एक महिला को अकारण रोने की आदत पड़ गयी थी। मानस-चिकित्सक ने सुझाव दिया कि, हर दिन पाँच मिनिट तक डिकन्स के उपन्यासों के वे स्थल पढ़ो, जिनमें मृत्यु का वर्णन है और रोया करो। इसने उसकी आदत छुड़ा दी।

चिंता, भय, जुबानबंदी, मन का भटकना, बार-बार एक ही विचार का आना, किसी हुनर को सीखने में गलतियाँ करना, किसी की भूलें, दिवास्वप्न आदि में भी यह तरीका बराबर सफलतापूर्वक बरता गया है।

एक युवक का कहना है कि, उसने इस तरीके से अपनी स्मरण-शक्ति को बढ़ाया है। उसे एकाग्रचित्त होने में बड़ी कठिनाई अनुभव होती थी। कारण यह था कि, उसका मन सदा भटकता रहता था। युवक ने रोजाना कुछ समय तक जानबूझकर मन को भटकने देना शुरू किया। यों मन का भटकना कम हो गया।

जिन्हें दूसरों से वार्तालाप करने में कठिनाई होती हो, उन्हें कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के मानस-शास्त्र विभाग के प्रोफेसर नाईट डनलप ने यह सलाह दी है—"किसी सामाजिक समारोह में जाइये, वहाँ लोगों से बातचीत करने के बजाय चुप रहने का प्रयत्न कीजिये। तभी बोलिये जब आप कुछ कहना चाहें। आप देखेंगे कि वाक्संयम रखना बहुत कठिन है।" जिन लोगों ने इस युक्ति को अपनाया, वे दो मिनिट या आधा घंटा तक तो किसी प्रकार चुप्पी रख सके, उसके बाद फूट पड़े। उनकी झिझक दूर हो गयी।

किसी भी आदत से छुटकारा पाना हो तो ये दो सामान्य सिद्धांत ध्यान में रखिये: (१) जिस आदत से छुटकारा पाना हो उसे जानबूझकर दोहराना है; (२) आदत तक जो चीज असावधानी से हो जाती थी उसे पूरे ध्यान के साथ करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-संगीत की सफल साधिका

भयंकर दरिद्रता की निष्ठुर कठोर घाटियों के बीच संगीत की रसधारा प्रवाहित करनेवाली लगनशील महिला का परिचय।

जान कोट्रेल

पिता सोना खोजने के लालच में सब कुछ खो बैठे। जमा पूँजी स्वाहा हो गयी और घोर दरिद्रता के बीच एक तम्बू में एलीन जाय्स ने जन्म लिया। बचपन बड़ी ही गरीबी में बीता। कभी-कभी खाना जुटाने के लिए खिलौने भी बिकने के लिए छिन जाते। आठ साल की उम्र तक जूते भी पहनने को नसीब नहीं हुए। आस्ट्रेलिया के तस्मानिया प्रदेश के जीहान क्षेत्र में जितने आदमी नहीं थे, उससे कहीं अधिक संख्या में साँप बसते थे। नीरस-शुष्क वातावरण, बानों में काम करनेवाले मजदूरों की गंदी बस्तियाँ, जहाँ संगीत की रस-धारा शराबियों के चहकती मदशालाओं में ही बहा करती थी। जीवन में शायद ही इतनी गरीबी कहीं रही होगी। एलीन-परिवार को अपने चाचा के होटल से फेंके जानेवाले अन्न पर पेट पालना पड़ता।

एलीन जाय्स ने जब चाचा के होटल में पहली बार पियानो देखा, तो स्तब्ध रह गयी। संगीत की मोहक ध्वनि ने उसे मोह लिया और आत्मा के तार सदा के लिए नींड बनकर झंकृत हो चले।

किंतु गरीबी की उदास संध्या ने उसके जीवन को उन दिनों इतना घेर लिया था कि, वह अँधेरे भविष्य के अतिरिक्त अन्य कल्पना ही नहीं कर पाती थी। उसने कभी शायद ही यह सोचा हो कि, एक दिन वह विश्व-विख्यात कांसर्ट पियानो-वादक बनकर यश और धन अर्जित करेगी।

पियानो पाने की ललक बनी ही रही; लेकिन अपनी संगीत की लालसा को एलीनने दूसरा ही रूप दे दिया। 'माउथ आरगन' से वह राग निकालने लगी और श्रम से थके मजदूरों के बीच, रेस्ट्राओं के निकट वह गाना सुना-सुनाकर पियानो संगीत-शाला में शिक्षा के लिए पैसे भी बटोरा करती। सड़कों पर प्रदर्शन करके उसने छः पेनी संगीत-शिक्षा कार्यक्रम में अपनी शिक्षा-दीक्षा पायी।

बेटी की उत्कट लालसा देखकर बाप का दिल भर आया। उसने एक पौंड जैसे-तैसे बचाया और बटी के जन्म-दिवस पर रेस्ट्राँ में पड़ा पुराना जर्जर पियानो खरीद उसे उपहार में दे दिया। जाय्स को मानो भगवान् ही मिल गये। अनंत साधना के साथ वह इस पियानो पर देर रात तक घंटों संगीत का अभ्यास करन लगी। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दिन से एलीन का जीवन ही संगीत-साधना में ढल गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचपन में उसके चेहेरे पर काले दाग थे और बच्चे उसे कोढ़िन कहकर रुलाया करते थे। कान्वेंट में प्रवेश कर वह संगीत की प्रारम्भिक परीक्षा के लिए तैयारी करने लगी; परंतु वह सबसे छुपाकर संगीत की ऊँची परीक्षा के लिए प्राणपण से जुट गयी और उसने इतनी कम उम्र में संगीत 'इंटर मीडिएट' परीक्षा ससम्मान पारित कर ली कि, सब आश्चर्यचकित रह गये।

जाय्स की इस प्रतिभा ने खनिकों का मन हर लिया। अब वे उसकी संगीत-शिक्षा में रुचि लेने लगे। लोरेटो स्कूल में दो वर्ष तक वह निःशुल्क शिक्षा पाती रही। इन्हीं दिनों गीतकार पर्सी ग्रेजर ने उसे सुना। वह मंत्र-मुग्ध रह गया। गरीबी और अँधेरे में, छिपे रत्न को पाकर जिस तरह किसी का मन ललक उठता है, ठीक वैसा ही ग्रेजर के साथ हुआ। अपने कार्यक्रम की समाप्ति के बाद उसने समाचार-पत्रों में वक्तव्य दिया कि,संगीत-क्षेत्र में उसने इतनी विलक्षण बालिका पहले कभी नहीं देखी। उसने सुझाया कि, एलीन को संगीत में पारंगत होने के लिए अमरीका जाना चाहिये।

अब मजदूरों की यह 'बुलबुल' उन लोगों के लिए गौरव की वस्तु बन गयी। भाग्य भी एलीन का साथ दे रहा था। प्रख्यात जर्मन पियानो-वादक विल्हेम बाक्स ने पियानो पर उसे गाते सुना और उसने उसे संगीत-शिक्षा के लिए लिपजिग भेजने का सुझाव दिया। सुझाव तो ठीक था; परन्तु गरीब जाय्स-परिवार के पास पैसा कहाँ कि, वे इतना कर पाते। आखिर मजदूर आगे आये। 'एलीन फंड' के नाम से रकम एकत्रित की जाने लगी। उदारतापूर्वक मजदूर अपने वेतन में से कुछ राशि इसके लिए देने लगे। सभी जगह यह अभियान जोर पकड़ने लगा—'एलीन को लिपजिग भेजना ही होगा'। वेतन से तो मजदूर बचत ही थे, यहाँ तक कि, जुआरी लोग अपने जीत में से भी कुछ रकम एलीन-फंड में जमा कराने लगे। इस तरह नौ सौ पौंड से भी अधिक की राशि बटोर ली गयी और एलीन जर्मनी पहुँच गयी।

लिपजिग में अपनी संगीत की अधूरी शिक्षा को पूरी करने में वह तल्लीन हो चली। शिक्षा अधूरी ही थी कि, संचित राशि समाप्त होने को आ गयी। अभी बहुत कुछ सीखना बाकी था। निराश एलीन के पास केवल आस्ट्रेलिया लौटने-भर का किराया रह गया। इसी उधेड़बुन में देवताओं के आशीर्वाद की तरह श्रीमती लेस्ली एंड्रू उनके पति आड़े आये। एलीन को उन्होंने अपनी पुत्री की तरह माना और मुक्तहस्त से आर्थिक व शैक्षणिक सहायता दी। उन्होंने उसका परिचय प्रसिद्ध संगीतज्ञ टेक्मुल्लर से करा दिया और उसने सहर्ष उसकी शिक्षा का भार वहन कर लिया। उस वृद्ध संगीतज्ञ ने अपना हृदय उड़ेलकर उसे सिखाया कि, कैसे वाद्यों से करुण संवेदना और आनंदातिरेक की रागिनियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्वेलित की जाती है। एलीन समझती रही कि, गुरुजी को उसकी शिक्षा की कीमत उसके परिवार से बराबर मिलती रही होगी; परंतु शिक्षा पूर्ण कर लेने के कई वर्षों बाद, जब वह प्रख्यात वाद्य-कलाकार के रूप में पूजी जाने लगी, तब यह भेद खुला कि, टेक्मुल्लर ने एक भी कानी कौड़ी नहीं ली थी और केवल एलीन की प्रतिभा से प्रभावित हो, एक कलाकार के नाते उसे पूरा ज्ञान प्रदान किया। कई लोगों ने उसकी इसलिए सहायता की कि, वे उसके संगीत से प्रभावित हुए थे, तो कइयों ने उसकी सहायता केवल इसलिए की कि, उन्हें इस धुन की पक्की गरीब लड़की से सहानुभूति थी।

एंड्रे-परिवार के साथ एलीन जाय्स लंदन चली आयी और वहीं वह व्यावहारिक कला-क्षेत्र में प्रविष्ट हुई। उसे प्रतिष्ठित समाज में अपना कार्यक्रम प्रदर्शित करने का अवसर मिला और शीघ्र ही उसकी चर्चा सुनी जाने लगी।

परंतु सफलता शीघ्र नहीं मिली और वह राह चलते ही हाथ लगी। इंग्लैंड के हर कस्बे व शहर में उसने अपने कार्यक्रम आयोजित किये। पारिश्रमिक भी दो-तीन गिनी से अधिक नहीं मिल पाता था। रात-दिन की यात्रा, रद्दी भोजन और सस्ते होटलों में आवास; परंतु एलीन जाय्स [illegible]

१९३९-४५ के काल में युद्ध-जर्जर इंग्लैंड का एलीन ने दौरा किया और सर्वत्र उसकी प्रशंसा व्याप्त हो गयी। अब लक्ष्मी भी उसके चरण चूमने लगी। उसके संगीत के रेकार्ड सर्वत्र धूम मचाने लगे। बढ़ते-बढ़ते इस गरीब संगीत-साधिका की आय सत्रह हजार पौंड वार्षिक हो चली।

एलीन ने जीवन में खोया भी बहुत। युद्ध में उसके पति का देहांत हो गया। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी। संगीत की ध्वनियों में एक नयी ही समवेदना और करुणा मुखर हो उठी।

संगीत जीवन का अंग बन चला। फिर भी एलीन अपने पारिवारिक जीवन तथा कतिपय अन्य कामों में भी रुचि लेती रही। आज वह चोटी के संगीतज्ञों में मानी जाती है। उसका कहना है—"यदि मेरे बाग में कहीं भी बुलबुल कुहक उठती है, तो मेरा मन बेचैन हो जाता है। घर काटने लगता है और तब तक चैत नहीं मिलता, जब तक पियानो पर अँगुलियाँ थिरकने नहीं लग जातीं। यही मेरी सफलता का रहस्य है। मैं जब तक अपनी धुन को पूर्ण नहीं कर लेती, बेचैन व खोयी-खोयी-सी रहती हूँ।"

★

जीनेवालों को अपना भ्रम छलता है, मरघट की मिट्टी मनहूस नहीं होती।
चुटकी-भर अरमान नहीं दें जीने को, उम्र कभी इतनी कंजूस नहीं होती।
मृत्यु वस्तुतः अपनी सतत उपस्थिति से, जीने का सुख और बढ़ाया करती है।
अगर जिंदगी बिना मौत की मिलती तो, कभी जिंदगी-सी महसूस नहीं होती। —'मनहर'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी बच्चे के प्रति कोई बाप क्या भूल कर सकता है—इसका मार्मिक चित्र देखिये प्रस्तुत में। यह लाहौर के 'उर्दू डाइजेस्ट' से साभार संकलित है।

बेटा सुनो! मैं तुमसे उस समय बात कर रहा हूँ, जबकि तुम सो रहे हो। तुम्हारे घुँघराले बाल तुम्हारे मुँह पर पड़ रहे हैं और तुम्हारा नन्हा-सा हाथ तुम्हारे सिर के नीचे दबा हुआ है। मैं चुपके-से अकेला तुम्हारे कमरे में आ गया हूँ। अभी कुछ देर पहले जब मैं लाइब्रेरी में बैठा हुआ था, तो मुझे स्वयं क्रोध आने लगा और अपने किये पर लज्जित होकर तुम्हारे कमरे में चला आया। मैं सोच रहा था कि, तुमसे क्यों नाराज हुआ। जब तुम स्कूल जाने के लिए तैयार हो रहे थे, तो मैंने तुम्हें झिड़का था; क्योंकि तुमने मुँह नहीं धोया था। बस, तौलिये को जरा गीला करके मुँह पर फेर लिया था। और फिर तुमने अपने जूते भी साफ नहीं किये थे। इसके साथ ही तुमने अपनी सब चीजें जमीन पर बेतरतीब फेंक दी थीं, तो मैंने तुम्हें बहुत बुरा-भला कहा था।

नाश्ते पर भी मैं तुम पर गुस्से हुआ था; क्योंकि तुम चीजें इधर-उधर बिखेर रहे थे और खाते समय मुँह से आवाज निकाल रहे थे। तुमने अपनी कोहनियाँ मेज पर रखी हुई थीं। और फिर जब तुम खेलने के लिए छत पर चले गये और मैं दफ्तर जा रहा था, तो तुम जंगले पर झुक-कर पुकारने लगे थे—"डैडी...डैडी ... डैडी चले" और मैंने तुम्हें झिड़ककर कहा था—"चलो परे रहो—परे!"

फिर तीसरे पहर भी यह सिलसिला शुरू हो गया। जब मैं दफ्तर से आ रहा था, तो देखा कि, तुम जमीन पर घुटने टेक कर गोलियाँ खेल रहे थे। तुम्हारे कपड़ों में छेद हो गये थे। मैं तुम्हें डाँटकर अपने साथ घर ले आया और इस प्रकार तुम्हारे मित्रों के सामने ही तुम्हारा अपमान किया। "तुम्हें क्या पता कि, मोजे कितने महँगे आते हैं। तुम्हें खरीदना पड़े, तो पता चले!" भला क्या कोई बाप भी अपने बेटे को ऐसा कह सकता है?

फिर इसके बाद तुम्हें याद है, जब मैं लाइब्रेरी में बैठा पढ़ रहा था, तुम मेरे पास आये थे! डरते-डरते बिल्कुल चोरों की तरह...और जब मैंने इस खलल से नाराज होकर दृष्टि ऊपर उठायी, तो देखा कि, तुम अंदर आना चाहते थे; लेकिन झिझक रहे थे। "क्यों क्या है?" मैंने झिड़कर पूछा था।

और तुम कुछ बोले नहीं; बल्कि सीधे तीर की तरह मेरी तरफ भागे और अपनी बाहें मेरे गले में डाल दीं, प्यार से मुझे चुम्बन दिया। और तुम्हारी नन्ही-नन्ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मेली साइकिल'

चीनी चित्रकार त्सेन-काई के प्रसिद्ध बाल-जीवन सम्बंधी चित्रों में से एक।

चाहें उस भावना में डूबी मेरे गले से चिमटी हुई थीं, जो भगवान् ने तुम्हारे नन्हे-से मासूम दिल में पैदा की थी और जिसे मेरी उदासीनता भी न दबा सकी थी। और फिर तुम ऊपर कमरे में भाग आये। मैं कितनी देर तुम्हारे सीढ़ियाँ चढ़ने की ठप-ठप सुनता रहा; लेकिन यह निश्चय न कर सका कि, मुझे तुम पर गुस्सा अधिक आ रहा था या प्यार!

हाँ बेटा! थोड़ी देर बाद ही मुझे अपने बाप पर दुःख होने लगा और तुम पर प्यार आने लगा – मेरी आदत ने मुझे क्या बना दिया है? इस झिड़कने और गुस्सा होने की आदत ने! क्या तुम्हारे मासूम प्यार का मैं यही बदला दे रहा था? वास्तव में इसका कारण यह न था कि, मुझे तुमसे प्रेम न था; बल्कि यह था कि, मैं तुम्हें अपनी आँखों के अनुसार देखता रहा। मैं तुमसे एक बड़े-बूढ़े की समझ-बूझ का तकाजा करता रहा।

और तुम्हारे काम कितने प्यारे और अच्छे-अच्छे होते थे! तुम्हारा नन्हा-सा दिल भी कितना उदार था! और इसे तुमने आज शाम भी मेरे पास आकर और मुझे चुम्बन देकर सिद्ध कर दिया।

बेटा! आज से तुम मुझे बदला हुआ पाओगे। मैं आज अँधेरे में तुम्हारे पास आया हूँ; लेकिन फिर भी लज्जा से सिर नहीं उठा पा रहा हूँ।

लेकिन यह प्रायश्चित्त बहुत कम है। मैं जानता हूँ कि, अगर मैं सवेरे ये बातें तुम्हें बताऊँ भी, तो तुम नहीं समझोगे। लेकिन कल से मैं तुम्हारा सच्चा "अब्बू" हूँगा। मैं तुम्हारा मित्र सिद्ध हूँगा। यदि तुम्हें कोई पीड़ा होगी, तो मुझे भी उसकी अनुभूति होगी और जब तुम खुश होगे, तो मैं भी खुश हूँगा। मैं अपनी जबान काट लूँगा, यदि उस पर कठोर शब्द आये तो। मैं हमेशा यही कहा करूँगा – "वह तो अभी बच्चा है–नन्हा-सा बच्चा!"

मुझे दुःख है कि, मैं तुम्हें भूला रहा। मैंने तुम्हें एक प्रौढ़ व्यक्ति समझा; लेकिन अब जबकि, तुम मेरे सामने अपना नन्हा-सा बाजू सिर नीचे दबाये सो रहे हो, तो मैं समझा हूँ कि, तुम अभी बच्चे हो! अभी कल ही तो तुम अपनी मम्मी की गोद में सो रहे थे। अफसोस! मैंने तुमसे बहुत अधिक चाहा–बहुत अधिक!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौरासी सीढ़ियाँ

सुखबीर

उन दिनों मैं अपने गाँव के स्कूल में पाँचवीं में पढ़ता था। वह साल मुझे कभी नहीं भूलेगा।

उस साल हमारे गाँव में एक के बाद एक नौ मौतें हुई थीं। एक हफ्ते में नौ मौतें! लोगों को लगा था जैसे गाँव पर कोई कहर आ गया है। लोग घबराये थे कि, पता नहीं गाँव से क्या अपराध हो गया है कि, उस पर ईश्वर का इतना बड़ा प्रकोप हुआ है। और इस प्रकोप का कोई अंत नहीं दिखाई दे रहा था।

उसी हफ्ते संत नारायणसिंहजी ने गाँव में चरण रखे थे। संतजी के नाम की दूर-दूर तक चर्चा थी। वे बड़े करनी-वाले माने जाते थे। बहुत पुण्य-प्रताप था उनका। सुना था, वे जिस घर में पाँव रख दें, उस घर के सारे दुःख और क्लेश दूर हो जाते हैं। वे गाँव में आये, तो गाँववालों ने अपने भाग्य को सराहा था। उन्हें विश्वास था कि, गाँव पर पड़ा हुआ ग्रह अब टल जायेगा। और संतजी ने भी जब एक ही हफ्ते में नौ मौतें होने की बात सुनी, तो देखते-देखते वे ध्यानस्थ हो गये और देर तक समाधि में लीन रहे। लोगों का खयाल था, संतजी किसी दूसरे लोक में चले गये थे। अंत में आँखें खोलते ही उन्होंने वहाँ इकट्ठे हुए लोगों को कहा था—"प्रेमियो, ईश्वर की आज्ञा हुई है कि गाँव में श्री गुरु ग्रंथ साहबजी महाराज का अखंड पाठ कराया जाये। गाँव की भूमि में दूषित पदार्थ मिल गये हैं। उसे फिर से पवित्र करना चाहिये।"

लोगों को विश्वास हो गया कि, ईश्वर ने स्वयं संतजी को उनके पास भेजा है। सौ दुःखों का एक इलाज उन्होंने बताया था। लोग उनके चरणों की धूल माथे पर लगा रहे थे। उनके पुण्य-प्रताप की बातें कर रहे थे।

दूसरे दिन ही गाँव में गुरु ग्रंथ साहब का अखंड पाठ शुरू किया गया। गुरुद्वारे के अंदर पाठ होता रहता। गुरुद्वारे के बाहर आँगन में संतजी आसन जमाकर बैठे लोगों को उपदेश देते रहते-प्रवचन करते रहते। हर समय लोग उनके पास जमा रहते। अपना जन्म सफल करने के लिए उनकी सेवा में लगे रहते।

उपदेश में संतजी बार-बार एक बात पर जोर देते। वे कहते—"यह संसार मिथ्या है। संसार की हर वस्तु मिथ्या है। मनुष्य का जीवन-मरण मिथ्या है। मनुष्य

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौरासी के चक्कर में पड़ा हुआ है। उससे मुक्ति प्राप्त करनी है। ... योनियों से छुटकारा पाना है .....।" और वे बताते—"इतिहास में एक प्रसंग आता है कि, पुराने जमाने में गुरु का एक सिख था। उसने श्री तरनतारन साहब के पवित्र सरोवर की सीढ़ियों पर चौरासी बार 'जपुजी' साहब का पाठ और चौरासी ही बार स्नान किया था। और उसकी चौरासी काटी गयी। वह जन्म-मरण के बंधनों से मुक्त हो गया और उसे ईश्वर के चरणों में स्थान मिला .....। फिर संतजी एक दूसरा प्रसंग सुनाते कि, कैसे गुरुघर के एक और श्रद्धावान् सिख ने सरोवर की सीढ़ियों पर चौरासी पाठ और चौरासी स्नान किये और मन इच्छित फल पाया .....।

दो दिन तक अखंड पाठ का और संतजी के उपदेशों का प्रवाह चलता रहा। अंत में अखंड पाठ की समाप्ति पर लोग फिर अपने-अपने कामकाज में लग गये। गाँव में दो दिन कुशलता रही। कोई मौत नहीं हुई।

उसी दिन शाम का समय था। चिंतू और मैं और लड़कों के साथ चौक में खेल रहे थे। चिंतू मुझे संतजी के बारे में बता रहा था। वह घर में अपने पिता से सुनी बातें दोहरा रहा था कि, संतजी बड़े करनीवाले हैं। वे मुर्दों को जीवित कर सकते हैं; मनुष्य को जन्म-मरण के बंधन से मुक्त करा सकते हैं; चौरासी के चक्कर से छुटकारा दिला सकते हैं.....इत्यादि।

तभी सारे गाँव में शोर मच गया। लोग पागल होकर गाँव की गलियों में भागदौड़ रहे थे। "पकड़ लो, बचो, मार डालो" की आवाजें आ रही थीं। पहले तो पता ही न लगा कि, क्या हो गया है। हर कोई घबराया हुआ था। जो आदमी लाठियाँ लिये हो-हो करते हुए भाग-दौड़ रहे थे, उन्हें भी पता नहीं था कि, आखिर बात क्या है। क्या गाँव में कोई चोर घुस आया है या डाका पड़ गया है। आखिर पास के गाँव से जब बहुत-से लोग लाठियाँ उठाये भागते हुए गाँव में आये, तो पता लगा कि, एक पागल कुत्ता इस गाँव में घुस आया है।

और इससे पहले कि, कुत्ता लोगों के हाथ लगता, उसने चिंतू की छोटी बहन गुड्डी को काट लिया।

गुड्डी को उठाकर घर ले जाने तक उसकी हालत बिगड़ गयी। गाँव के वैद्य ने बहुतेरी कोशिश की; पर गुड्डी की हालत बिगड़ती ही गयी। उसे दौरे पड़ने लगे।

उसी समय लोगों की भीड़ को चीरते हुए संतजी वहाँ पहुँचे। उन्होंने गुड्डी को देखा और यह कहकर कि, गुरु भली करेगा, आँखें मूँद लीं। काफी देर तक वे इसी तरह बैठे रहे। पर गुड्डी की हालत में कोई फर्क नहीं पड़ा।

उसी समय गुड्डी की माँ की चीखें उठीं-"हाय कोई मेरी बेटी को बचाओ। हाय...."

चिंतू मेरा हाथ पकड़े खड़ा था। वह रो रहा था। माँ की चीखें सुनते ही वह वहाँ से बाहर निकला। मैं भी उसके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया। बाहर आकर उसने मुझसे कहा—"किसी को बताना नहीं, मैं तरनतारन के सरोवर पर जा रहा हूँ, उसमें नहाने। अभी वापस आ जाऊँगा।" और यह कहते हुए वह वहाँ से गोली की तेजी से भागा और देखते-देखते आँखों से ओझल हो गया।

रात हो गयी। गुड्डी की हालत उसी तरह थी। कुछ लोग कह रहे थे—"इसे शहर ले जाओ। डाक्टर को दिखाओ और बड़ा सुआ लगवाओ। पागल कुत्ते का काटा आदमी....."

तभी चिंतू के पिता को चिंतू का खयाल आया। पर वह वहाँ कहाँ था! देखते-देखते सबको फिक्र पड़ गयी। उसकी खोज होने लगी। पर उसका कहीं पता न लगा।

आखिर मेरे पिताजी ने घर आकर मुझसे पूछा—"तुझे पता है, चिंतू कहाँ है?"

मैं बताने से कुछ झिझका। पिताजी ने भाँप लिया। और जब उनकी झिड़की सुनी, तो मैं बोल उठा कि, वह तरनतारन गया है।

शीतकाल की उस काली रात में कुछ आदमी तरनतारन की ओर भागे, जो हमारे गाँव से अढ़ाई कोस की दूरी पर था।

वहाँ सरोवर पर जाकर उन्होंने देखा—चिंतू सरोवर में से नहाकर निकला है और एक सीढ़ी पर बैठ गया है। जब वे उसके पास पहुँचे, तो वह वहाँ बैठा पाठ कर रहा था। वह तन से नंगा था। उसके दाँत [illegible] रहे थे [illegible] भीगा हुआ सारा [illegible] तप रहा था। और जब लोगों ने उसे [illegible] उठाया, तो उसने कहा—"बस दस सीढ़ि[illegible] और रह गयी हैं। फिर चौरासी पूरी [illegible] जायेंगी। गुड्डी बच जायेगी।"

बीच में ही किसी ने उसकी बाँह पकड़ कर उठाते हुए कहा—"पागल, कोई [illegible] तरह भी बचा है? उठ, घर चल। गुड्डी [illegible] बसी है।"

सुनकर चिंतू की आँखें खुली-की-[illegible] रह गयीं। फिर वह ऐसे काँपा कि, [illegible] आदमियों के पकड़ने पर भी उसका [illegible] थामा नहीं जा रहा था। वह बेहोश [illegible] गया। लोग उसे कम्बल में लपेटकर घर लाये।

गाँव का वैद्य रात-भर उसे दवाइयाँ [illegible] रहा। पर सुबह होते-होते वह भी चल बसा।

संतजी दस दिन और गाँव में रहे। उन्होंने गुरु ग्रंथसाहब का एक साधारण पाठ और कराया। पाठ अंदर होता रहता। वे बाहर बैठे प्रवचन करते रहते। एक बार चिंतू का जिक्र आया, तो उन्होंने शोक प्रकट करते हुए कहा—"धन्य है यह [illegible] का सिख। इस बचपन की आयु में चौरासी सीढ़ियाँ नहीं लीं; चौरासी का चक्कर काट गया। ईश्वर के चरणों में निवास पायेगा.....।"

*

किफायतशारी का सूत्र यह है कि, महीने के पहले हफ्ते में भी वैसे ही संकोचपूर्वक पैसा खर्च करें, जैसा कि महीने के आखिरी हफ्ते में करते हैं।

*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्कराहट का मूल्य

वजाहत अली सदींलवी

पानी बड़े जोरों से बरस रहा था। बड़ी-बड़ी बूँदें टीन और तारकोल की सड़कों से टकरा-टकराकर अजीब-सा स्वर पैदा कर रही थीं। सावन की पूरी बहार थी। बड़े-बड़े काले बादलों से आकाश भरा पड़ा था। चारों ओर से अंधेरा घिरा चला आता था। मैं कुछ लिखने का इरादा कर रहा था। अचानक मुझे याद आया कि, मेरे पास सिगरेट खत्म हो गयी है; और सिगरेट के बिना मैं कुछ भी नहीं लिख सकता था। मैंने घड़ी पर निगाह डाली, तो अभी नौ बजे थे। अभी तो दुकानें खुली होनी चाहिये। परंतु चारों ओर अंधकार था और पानी पहले से अधिक जोर से बरसने लगा था।

कुछ भी हो, मुझे सिगरेट लानी चाहिये—यह सोचकर मैंने लपककर कंधों पर बरसाती ली और घर से निकल खड़ा हुआ। मन कह रहा था कि, यह बेवकूफी है; परंतु एक जगह दो घंटों से बैठे-बैठे मैं उकता गया था। सड़क पर एक-एक कदम चलना कठिन था। बार-बार मेरे जूते गढ़ों में पड़कर छप-छप करते। बरसाती के होते हुए भी मैं खूब भीग रहा था। सड़क सुनसान थी। सारे दुकानदार अपनी-अपनी दुकानें बंद किये दुबके बैठे थे। दूर से मुझे पान की एक दुकान दिखाई पड़ी; सौभाग्य से अभी खुली थी। मेरा साहस बढ़ गया और मैं लपककर जा पहुँचा। "प्लेयर्स की एक डिबिया" मैं करीब-करीब चीख पड़ा।

"बहुत अच्छा"—एक लचकदार जनानी आवाज सुनाई पड़ी। मैं चौंक पड़ा। अपने मुख पर से पानी पोंछते हुए मैंने देखा कि, एक १८-१९ वर्ष की सुंदर लड़की मुस्करा रही है। उसने सिगरेट की डिबिया मेरी ओर फेंक दी। मैंने एक रुपया उसके हाथ पर रख दिया। उसने बड़े आश्चर्य से रुपया देखा और कहने लगी—

"पैसे नहीं हैं।"

"नहीं ?" मैं चकित खड़ा था।

"तो आप पाँच डिबियाँ खरीद लीजिये," मुस्कराहट पहले से अधिक आकर्षक होती जाती थी।

"नहीं, रुपया तुम रख लो।"

मैं चल खड़ा हुआ; परंतु फिर मैंने पलटकर कहा—"रात को दुकान किस समय तक खुली रहती है ?"

"नौ बजे तक" उसने अंतिम समय फिर मुस्कराकर कहा।

मैं घर लौट आया। रात को कहानी क्या लिखता ? मेरे जीवन में स्वयं एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कपड़ों की धुलाई को लीजिए तो हमारा मुन्ना सात बेटों के बराबर है—इतने कपड़े मैले करता है वह! लेकिन सनलाइट के कारण मुझे कपड़े धोना बिल्कुल आसान हो गया है।

'सनलाइट जैसे शुद्ध और भरपूर झागवाले साबुन ही से कपड़ों की इतनी अच्छी धुलाई इतने आराम से हो सकती है! फिर इसमें आश्चर्य ही क्या अगर मैं अपनी सारी धुलाई सनलाइट से करती हूँ।'

नईदिल्ली की श्रीमती कमला वाधवानी कहती हैं: घरभर की धुलाई के लिए सनलाइट के समान दूसरा साबुन नहीं।

सनलाइट

आपके कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए
हिन्दुस्तान लीवर ने बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी आरम्भ हो चुकी थी। मैं उस दुकान [illegible] बन में पड़ा था कि, उस दुकानवाली की मुस्कराहट में क्या जादू है, जिसने अचानक मेरे हृदय पर एक बिजली गिरा दी थी। वह वास्तव में कोई बाजारू औरत है। पान के व्यापार की ओट में वह अपने शरीर का व्यापार भी करती होगी; सैकड़ों को विया-चरित्र दिखा चुकी होगी, हजारों को लूट चुकी होगी। परंतु इतना सब होते हुए भी उसकी मुस्कराहट में जाने क्या आकर्षण था, जिसने मेरे हृदय में एक खटका पैदा कर दिया। आज तक किसी की मुस्कराहट मेरी रग-रग में नश्तर के समान न चुभी थी। सच मानिये, मेरे लिए यह बिल्कुल नया अनुभव था।

दूसरे दिन रात को फिर मैं उसी दुकान पर सिगरेट खरीद रहा था। मैं बार-बार सुंदर और कोमल दुकानवाली के मुख पर निगाहें जमाता। उसमें कोई विशेष बात वैसे दिखाई न देती। पर जवानी ने अपनी सारी पूँजी-उस पर लुटा दी थी—इस [illegible] भी कहीं न थकती थी।

परंतु यह कोई आश्चर्यजनक बात न थी। फिर क्यों उसकी मुस्कान मुझे इस प्रकार दीवाना बनाये हुए थी? मैं बार-बार सोचता। उसकी मुस्कराहट में कुछ चंचलता थी, पाप की लगावट के साथ-साथ कुछ निराशा भी थी—कुछ भोलापन, कुछ निवेदन। मैं समझ न पाता कि, वह मुस्कराहट क्या बला थी। परंतु वह बला अवश्य थी। मैंने उसका नाम पूछा। उसने हँसकर कहा—"प्लेयर्स।" उसी सिगरेट का नाम, जो मैंने उससे खरीदा था। मैं हँस पड़ा। मेरी जिद पर उसने अपना नाम बताया—"बनफशा।" न जाने सच या झूठ।

अब मैं हर रोज रात को नौ बजे बनफशा की दुकान से सिगरेट खरीदता और वह अपनी मुस्कराहट से मुझ पर दो-एक बिजलियाँ गिरा देती। नहीं मालूम वह मेरा खेल था या मैं उसका। लाख अपने मन को समझाता कि, वह कोई बहुत नीच बाजारू औरत होगी, हर ग्राहक पर इसी प्रकार

मैं : एक परिचय

कौन था मैं, कौन हूँ मैं,
और क्या हूँगा कभी?
—यह न अब तक सोच पाया,
यह न अब भी सोचता हूँ,
यह न सोचूँगा कभी।
सिर्फ इतनी परख मुझको
जिंदगी मेरी बिरानी—
कल किसी के घर रहन थी,
आज उस पर चढ़ गया है
मूल धन से ब्याज ज्यादा;
और लगता कल तलक तो
यह परायी धरोहर-सी ही रहेगी
और मैं तो इस तरह से
जी रहूँगा :
जो न कुछ था, जो न कुछ है
जो न कुछ होगा कभी।

—तारादत्त 'निर्विरोध'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एनासिन'

चार दवाइयों के कारण

दर्द से आराम देती है

स्नायुओंकी घबराहट दूर करती है

सुस्ती भगाती है

बुखार घटाती है

'एनासिन' में डाक्टर के सुरक्षित नुस्खे जैसा चार दवाइयों का वैज्ञानिक सम्मिश्रण है और इसी कारण वह दर्द से शीघ्र पूर्ण आराम देती है। 'एनासिन' (१) सिरदर्द, सर्दी-जुकाम, बुखार, दाँतदर्द और रगपुट्ठों के दर्द से शीघ्र आराम देती है, (२) स्नायुओं की वजह से होनेवाली घबराहट व बेचैनी को दूर करती है—आप सुख व चैन अनुभव करते हैं, (३) सुस्ती-उदासी को भगाती है (४) बुखार को घटाती है। 'एनासिन' उसकी चार दवाइयों के कारण दर्द से आराम पाने के लिए बेहतर है। अपने घर में हमेशा 'एनासिन' रखिए।

साफ-स्वच्छ सीलबंद सेलोफेन के थैलों में मिलती है। २ टिकियों के सिर्फ १३ नये पैसे

'एनासिन' ही बेहतर है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Registered User: GEOFFREY MANNERS & CO. LIMITED

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्कराती होगी; परंतु उसकी मुस्कराहट मेरा जाना न छूटता। उसकी मुस्कराहट उसके शरीर और वातावरण से बिल्कुल अलग वस्तु जान पड़ती थी। मैं इस भेद को जानना चाहता था और इसी कारण धीरे-धीरे उसके निकट होता गया। मैं जब उससे उसके घर का हाल पूछता, तो वह मुस्कराकर चुप हो जाती, कुछ न बोलती। परंतु एक दिन मैंने कह ही दिया—"मुझे अपने घर कब ले चलोगी?" वह इस प्रश्न पर मुस्करायी नहीं, चुप हो गयी।

मुझे इस विचार ही से घृणा थी कि, मैं किसी शरीर का खरीदार बनूं। परंतु मैं बनफशा की मुस्कराहट के भेद को जरा निकट से जानना चाहता था।

वह मेरे उपहारों को प्रसन्नता से मुस्कराकर ले लेती; परंतु जब कभी मैं उसके घर चलने को कहता, तो केवल मुस्कराकर चुप हो जाती। अब मैं जब भी दुकान पर जाता, तो यही प्रश्न करता—"मुझे अपने घर कब ले चलोगी?" और वह कुछ न बोलती, मुस्करा-भर देती।

उसकी खामोशी से मेरे दिल में झुँझलाहट पैदा हो गयी और धीरे-धीरे उससे मन फिरने लगा। अचानक मैंने उसके यहाँ आना-जाना बंद कर दिया। पहले दिन तो मैंने देखा कि, उसने मेरी राह देखते-देखते दस बजे रात तक दुकान खुली रखी; परंतु उसके बाद वह नौ बजे ही दुकान बंद करके चली जाती।

मैं अपने हृदय से बार-बार उसकी

खोयी आँखें

चित्रकार : रामचंद्र शुक्ल

खामोशी का कारण पूछता; परंतु कोई बात समझ में न आती। क्या वह कोई भली स्त्री है? फिर वह इस प्रकार पान क्यों बेचती है? बेधड़क हर आने-जानेवाले पर मुस्कराती क्यों है? सम्भव है, वह कुछ शोहदों के साथ फँसी हो और उनके भय से मुझसे अधिक मेल-जोल न बढ़ाना चाहती हो। यह कारण सबसे विशेष जान पड़ा।

दो सप्ताह गुजर गये उसके यहाँ बिना गये। परंतु एक दिन मैंने सोच लिया कि, जब वह दुकान बंद करके अपने घर चलेगी, तो मैं पीछे-पीछे उसका घर देख आऊँगा।

जैसे ही घड़ी ने रात के नौ बजाये, उसने अपनी दुकान बढ़ा दी। वह घर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Arvind

QUALITY FABRICS

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
सफेद पोपलीन
कोल्ड ड्रिंक

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
रंगीन पोपलीन
ब्लू बर्ड

मर्सराइज्ड
लान
एवरेस्ट
५५३१ (रजिस्टर्ड)

बुट्टास

«SANFORIZED»
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT PEABODY & CO. INC., U.S.A.

अरविंद मिल्स लि.
अहमदाबाद-२

REGISTERED USER OF THE TRADE MARK 'SANFORIZED'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली। मैं पीछे-पीछे [illegible] हो गया। वह छोटी-छोटी अँधेरी, बदबूदार गलियों में होती हुई एक छोटे-से टूटे घर के सामने खड़ी हो गयी। मैं अपनी बेवकूफी में बिल्कुल उसके निकट जा पहुँचा। उसने पलटकर मुझे देखा और पहचान गयी। कहने लगी—"आओ।" मैं अँधेरे में देख न सका कि, उसके तेवरों पर बल थे या होठों पर मुस्कराहट। उसने किवाड़ खोले और मैं भी उसके पीछे-पीछे एक छोटे-से गंदे मकान में चला गया। ताक पर एक चुँधिया दिया जल रहा था।

छोटे-से कमरे में दो चारपाइयाँ बिछी हुई थीं। उसने एक हाथ से संकेत करके कहा—"यह मेरा बूढ़ा बाप है और यह मेरा बीमार आदमी और यह मेरी छोटी बहन! बताओ तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

मैं चुपचाप खड़ा था। उस मकान के मैले-कुचैले, बूढ़े, बीमार बाशिंदों को देख रहा था। मैं उसके प्रश्न से चौंक पड़ा। कुछ नहीं, कुछ नहीं! तुम मुस्कराती क्यों हो? तुम्हारी मुस्कराहट में क्या जादू है?"

"मैं मुस्कराती हूँ, जिससे मेरी जवान बहन को मुस्कराना न पड़े।"

उसने कमरे के एक कोने की ओर संकेत किया—पंद्रह-सोलह साल की एक लड़की वहाँ जमीन पर दुबकी पड़ी थी।

वह बोलती गयी—"आज मैं मुस्कराकर दूसरों से पैसा वसूल करती हूँ। ऐसा न करूँ, तो कल मेरी जवान बहन को कहीं और मुस्कराना पड़ेगा।" उसकी आखों में आँसू छलक आये थे—"मेरा बूढ़ा बाप सड़क के किसी कोने पर भीख माँगता होगा; और मेरा बीमार पति कहीं नाली में पड़ा सड़ रहा होगा।"

मेरा हृदय चाहता था कि, उस बहादुर पवित्र और स्वावलम्बी स्त्री के चरणों पर अपना सिर रख दूँ। शीघ्र ही मैंने अपना बटुआ निकाला और उसके पाँवों के सामने रख दिया। उसने बटुआ उठाकर मेरे हाथ पर रख दिया, बोली—"मैं मुस्कराहट का मूल्य लेती हूँ, आँसुओं का नहीं।"

—रूपांतर : एस० ए० सदींलवी

एक वाक्य जीवन-दीप बन गया

कभी-कभी हमें सुझाव के रूप में कोई ऐसा वाक्य सुनने का संयोग मिल जाता है, जो हमारे भावी जीवन में मार्ग-दर्शक का कार्य करता है।

अपने जीवन-अनुभव के आधार पर आप भी किसी ऐसे वाक्य का संकेत और अपने जीवन की कुछ घटनाओं के दृष्टांत देते हुए एक संस्मरण लिख सकें, तो 'नवनीत' उसका सहर्ष स्वागत करेगा। प्रकाशित रचना पर उसकी श्रेष्ठता के अनुसार पचीस से सौ रुपये तक पुरस्कार दिया जायेगा। —सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ के स्नेह-संसार में केवल मनोरंजन ही नहीं है...

परिवार के लिए माँ की पसंद डालडा

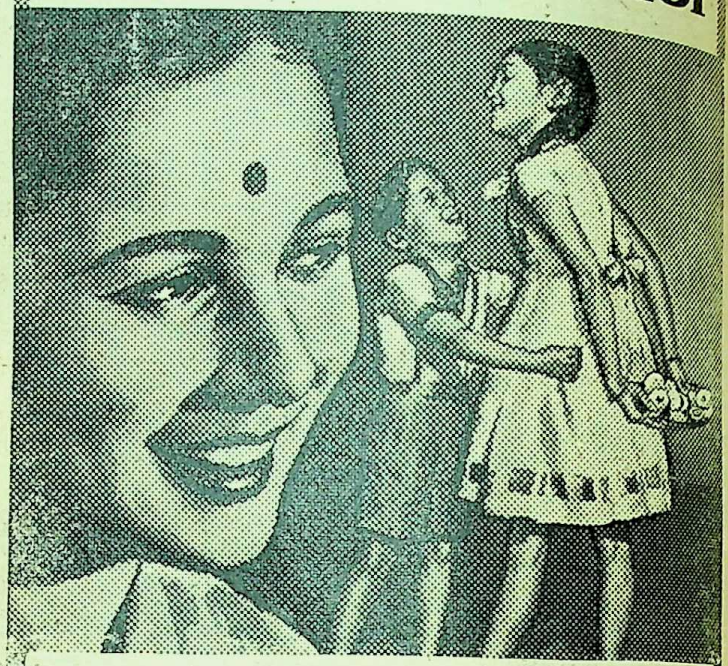

हंसता खेलता परिवार माँ की संतुष्ट ममता का सजीव चित्र है... और विशेषकर भोजन के समय माँ अपनी देख रेख की सफलता पर फूली नहीं समाती ! क्योंकि खानपान की हर चीज—जैसे कि खाना पकाने की चिकनाई—वह पूरे ध्यान से चुनती है। इसी लिए डालडा में पकी स्वादिष्ट सब्जियाँ उस के घर भर के मन भाती हैं ! डालडा शुद्ध वनस्पति तेलों से बनता है और आप के बाल-परिवार के लिए विशेषकर गुणकारी है क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं। स्वादिष्ट खानों के लिए ममता की कसौटी पर सर्वोत्तम...

डालडा वनस्पति-एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 : Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरजे का नौकर

सामरसेट माम

सेंट पीटर्स गिरजाघर में उस शाम किसी बच्चे को बप्तिस्मा दिया गया था और अल्बर्ट एडवर्ड फोरमैन अभी तक अपना चोगा पहने खड़ा था। उसने यह बेहतरीन चोगा ब्याह या मौत की रस्म के लिए रखा हुआ था।

समय बिताने के लिए उसने छोटे-मोटे काम करने शुरू कर दिये। पादरी अभी तक आया नहीं था। फिर उसने देखा कि, पादरी ऊँची सलीब के सामने झुककर उठा और गिरजे के अंदरूनी रास्ते से होता हुआ उसकी तरफ आया।

"यह अभी तक यहाँ क्यों घूम रहा है?" अल्बर्ट बुदबुदाया—"क्या इसे यह भी नहीं पता कि, अभी मुझे चाय भी पीनी है?"

पादरी हाल में उस गिरजे में आया था। उसका चेहरा लाल था। आयु चालीस के लगभग थी। अल्बर्ट को पिछले पादरी की बदली का बहुत अफसोस था। पिछला पादरी पुराने जमाने का बुजुर्ग किस्म का आदमी था। बहुत आहिस्ते बोलता था। और अमीर शागिर्दों के यहाँ भोजन पर बढ़-चढ़ कर हाथ साफ करता था। जहाँ तक अल्बर्ट के काम-धाम का सवाल था, नये पादरी के आने से उसमें कोई फर्क नहीं पड़ा था। फिर भी पिछला पादरी व्यर्थ की नुक्ताचीनी नहीं करता था, नये पादरी की तरह हर बात में टाँग नहीं अड़ाता था। पर अल्बर्ट को आशा थी कि, धीरे-धीरे नया पादरी भी उसे पसंद करने लगेगा।

पादरी नजदीक आकर अल्बर्ट से बोला—"फोरमैन, एक मिनिट के लिए उस बड़े कमरे में आना। मुझे कुछ बातें करनी हैं।"

"अच्छा," कहकर वह पीछे चल पड़ा।

"बहुत अच्छा बप्तिस्मा हुआ है। मुझे हैरानी हुई कि, बच्चा तुम्हारी बाँहों में आते ही कैसे एकदम रोना भूल गया।"

"मेरे पास आकर बच्चे अक्सर रोना भूल जाते हैं।" अल्बर्ट मुस्कराया—"बच्चों को सम्भालने का मुझे काफी अभ्यास है।"

उसे इस बात का सदा गर्व रहा। उस का कहना था कि, रोते हुए बच्चे उसके पास आते ही झट चुप हो जाते हैं।

बड़े कमरे में अल्बर्ट पादरी से पहले दाखिल हुआ। वहाँ गिरजे के दोनों 'वार्डन' भी थे। अल्बर्ट ने उन्हें अंदर आते हुए नहीं देखा था। इसलिए उसे आश्चर्य हुआ।

वे दोनों बड़ी उम्र के व्यक्ति थे। एक पेन्शनयाफ्ता फौजी जनरल था, दूसरा लार्ड। जब से अल्बर्ट गिरजाघर में 'वरजर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

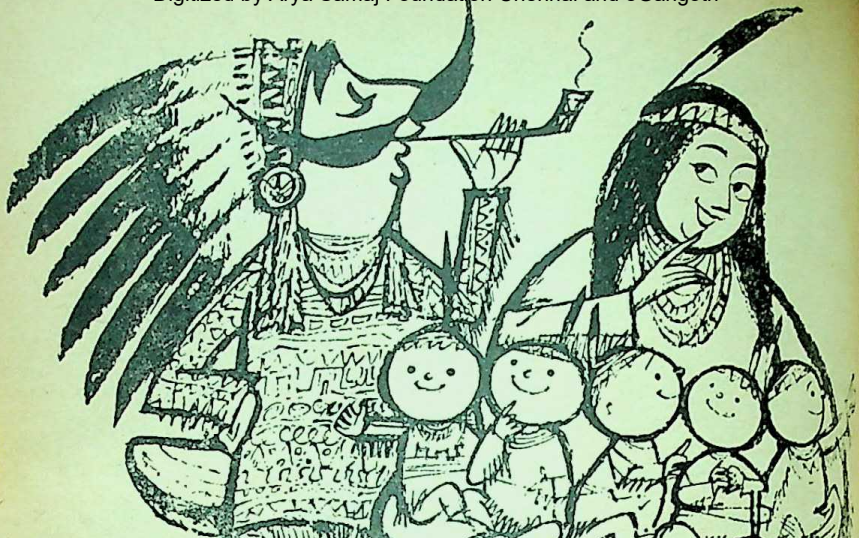

न्यू यॉर्क के लिए

हर हफ़्ते

५

बोइंग सर्विसें

(मध्य पूर्व, यूरोप और इंग्लैण्ड होते हुए)

एयर-इंडिया

सहयोगी : बी.ओ.ए.सी. और कैण्टस

SWT-AII 2339

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के तौर पर आया था। [illegible] समय से काम
'वार्डन' के रूप में चले आ रहे थे। दोनों कर रहे हो। मेरा खयाल है कि, लार्ड साहब
वार्डन मेज के पास पड़ी हुई कुर्सियों पर और जनरल साहब भी मुझसे सहमत होंगे
बैठे थे। पादरी उनके बीच कुर्सी पर कि, तुमने अपना फर्ज पूरी ईमानदारी से
बैठ गया और अल्बर्ट मेज के पास खड़ा निभाया है।"
हो गया। वह अपने बुलाये जाने का वार्डनों ने सिर हिलाकर समर्थन किया।
कारण सोच रहा था।

पादरी के लाल चेहरे पर गम्भीरता छा गयी; पर वार्डनों के चेहरों पर डर की छाया थी। "शायद पादरी वार्डनों की किसी गलती पर बिगड़ गया है। और क्या बात हो सकती है?—उसने सोचा।"

पर उसने अपने विचारों की झलक चेहरे पर न आने दी और आज्ञाकारी नौकर की भाँति सीधा खड़ा रहा। गिरजे की नौकरी से पहले उसने कई जगह छोटी-बड़ी नौकरियाँ की थीं। एक व्यापारी के पास रहते हुए उसने काफी उन्नति की थी। फिर एक साल तक वह एक अमीर विधवा का नौकर रहा था। गिरजे में आने से पहले साल भर एक पेन्शनयाफ्ता सरकारी अफसर का खानसामा भी रह चुका था, जहाँ कई नौकर उसके नीचे काम करते थे। उसका कद लम्बा था, शरीर दुबला-पतला और चेहरे पर गम्भीरता थी। उसकी शक्ल-सूरत असली नवाब से नहीं तो नाटकों के नवाबों से जरूर मिलती थी। उसमें आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ था। चाल-चलन का भी वह अच्छा था।

पादरी ने कहना शुरू किया—"फोरमैन, हमने तुम्हें एक बात कहने के लिए बुलाया

"पर कुछ दिन पहले मैंने एक अजीब बात सुनी है, जिसे गिरजे के वार्डनों तक पहुँचाना मेरा फर्ज है। मुझे यह जानकर हैरानी हुई है कि, तुम शिक्षा से बिल्कुल ही कोरे हो।" पादरी ने कहा।

अल्बर्ट के लिए अपनी हैरानी को छिपाना अब कठिन था।

"पिछले पादरी साहब को इस बात का पता था," उसने रुक-रुककर कहा—"और वे कहा करते थे कि, पढ़े-लिखे होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। बल्कि उनकी राय तो यह थी कि, आज की दुनिया में शिक्षा जरूरत से ज्यादा ही है।"

"यह तो बहुत हास्यास्पद बात है!" जनरल ने अपनी रोबदार आवाज में कहा—"तुम्हारा यह मतलब है कि, तुम अनपढ़ होते हुए भी इस गिरजे में सोलह साल तक 'वरजर' रहे?"

"मुझे बारह साल की उम्र में ही नौकरी करनी पड़ी थी। जहाँ मैंने सबसे पहली नौकरी की, वहाँ के खानसामे ने बहुत कोशिश की कि, मैं कुछ पढ़-लिख जाऊँ। पर मैं पढ़ना-लिखना बिल्कुल न सीख सका। फिर ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो गयीं कि, पढ़ने-लिखने की फुरसत ही न मिली। और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश करते हैं

उर्मि

बंगाल पॉटरीज के चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तनों मे यह दूसरी नयी आकर्षक आकृति है। हल्के 'समर' टोन में मनोहर 'फार्न' डिज़ाइन मन को मोह लेती है। किनारे पर सुन्दर सुनहरी रेखा है। यह. टी. कॉफी. और डीनर सेट के रूप में पायी जाती है। सेट न० डी ५४५

BENGAL POTTERIES BP INDIA

बंगाल पॉटरीज लिमिटेड

चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तनों के निर्माता

BPC-37 HIN

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि : एलायड डिस्ट्रीब्यूटर्स ऐण्ड कं० ३३ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्ता १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच तो यह है [illegible] शिक्षा प्राप्त करने की कोई खास जरूरत महसूस नहीं हुई। मेरी तुच्छ राय में तो हमारे नौजवान जितना समय पढ़ने-लिखने में लगाते हैं, अगर उसी समय में कोई काम-धंधा सीखें, तो बहुत अच्छा हो।"

"क्या तुम्हें कभी अखबार पढ़ने की जरूरत महसूस नहीं हुई।" लार्ड ने पूछा—"क्या तुम्हें कभी पत्र लिखना नहीं पड़ा?"

"मैं बिना शिक्षा प्राप्त किये अपने फर्ज पूरी तरह निभा रहा हूँ। अखबारों में तस्वीरें देखकर मुझे खबरों का पता लग जाता है। बाकी रहा चिट्ठी-पत्री का काम, वह मेरी घरवाली कर लेती है।"

दोनों वार्डनों ने पादरी की ओर देखा। उनके चेहरों पर घबराहट और बढ़ गयी।

"देखो फोरमैन, हम तीनों ने इस मसले पर अच्छी तरह सोचा-विचारा है और ये दोनों सज्जन मुझसे सहमत हैं कि, इस मामले को यों ही नहीं छोड़ा जा सकता। सेंट पीटर्स जैसे गिरजे में अनपढ़ 'वरजर' नहीं रह सकता।"

अल्बर्ट का चेहरा लाल हो गया। पर उसने पादरी को कोई जवाब नहीं दिया।

"फोरमैन, तुम्हारा काम पूरी तरह संतोषजनक है। इस बारे में हमें तुमसे कोई शिकायत नहीं है। चाल-चलन में भी तुम बहुत ऊँचे व्यक्ति हो। पर गिरजे के उसूलों के अनुसार 'वरजर' को अनपढ़ नहीं होना चाहिये।"

अल्बर्ट अभी भी चुप खड़ा था।

[illegible] तुम लिखना-पढ़ना सीख सकते हो।" जनरल ने अल्बर्ट को राय दी।

"नहीं, अब इस उम्र में कोई भी नया काम सीखना मेरे लिए असम्भव है। जब सीखने का समय था, तब न सीखा, तो अब क्या सीखूँगा।" अल्बर्ट ने कहा।

"हम तुम्हारे साथ जबर्दस्ती नहीं करना चाहते।" पादरी ने नर्मी से कहा—"हमने फैसला किया है कि, तुम्हें तीन महीने का समय दिया जाये। अगर इसमें तुमने लिखना-पढ़ना न सीखा, तो हमें मजबूर होकर तुम्हें नौकरी से अलग कर देना पड़ेगा।"

अल्बर्ट सीधा तनकर खड़ा हो गया। वह इस तरह रोब में आनेवाला नहीं था।

आखिर उसने कहा—"मुझे अफसोस है कि, मैं आपकी इस राय पर अमल नहीं कर सकता। इससे कोई फायदा नहीं होगा। बिना शिक्षा के मैंने जीवन का बड़ा भाग बिता दिया है। अपनी प्रशंसा करना ठीक नहीं; लेकिन मैं कहूँगा कि, मैंने अपने फर्ज पूरी ईमानदारी से पूरे किये हैं। अब यह पढ़ने-लिखने का झंझट मोल लेना मेरे बस की बात नहीं है।"

"तो तुम्हें नौकरी छोड़नी पड़ेगी।"

"जी हाँ, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। आप किसी नये 'वरजर' का इंतजाम कर लें। मैं इस्तीफा आपके हवाले कर दूँगा।"

पर जब अल्बर्ट कमरे के बाहर निकला, तो उसके पाँव डगमगा गये, होंठ फड़कने लगे। वह हौले-हौले चलता हुआ अपने कमरे तक पहुँचा। चोगा उतारकर टाँग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

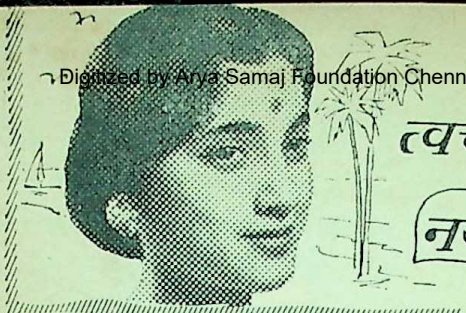

दिन ब दिन त्वचा पर नई बहार

नये रेक्सोना का चमत्कार

रेक्सोना आप की त्वचा पर वही जादू जगाता है जो सोने पर सुहागा ! रेक्सोना के कोमल भाग में सौंदर्यवर्धक तेलों का विशेष मिश्रण, कैंडिल, मिला है जो आपकी त्वचा में रच बस कर आप के रंगरूप को अधिक कोमल, अधिक मुलायम और अधिक सुंदर बनाता है !

रेक्सोना की विशेष सुगंध आप को देर तक तरोताजा रखती है। रेक्सोना आप के दैनिक सौंदर्य-स्नान के लिए आदर्श है।

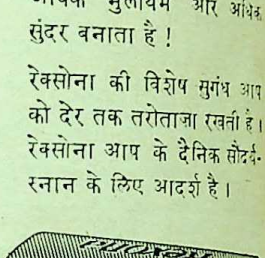

नये आवरण, नये रूप और नये हरे रंगवाला नया रेक्सोना आपके मन भा जायेगा !

नया रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

RP. 169-50 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटिड ने रेक्सोना प्रोप्राइटी लिमिटिड ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में बनाया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया और कमरे से निकल गया ।

गिरजे से बाहर आकर वह चौक की ओर चल पड़ा । वह विचारों में इतना खोया हुआ था कि, घर की ओर जानेवाली सड़क के बजाय किसी और ही सड़क पर चल पड़ा । भविष्य का भयानक रूप उसे डराने लगा । यद्यपि उसने काफी अच्छी रकम जमा कर ली थी, फिर भी बाकी जीवन निठल्ले बिताने का विचार उसके दिमाग में कभी आया ही नहीं था । वह मानता था कि, सेंट पीटर्स गिरजे का 'बरजर' और रोम का पोप जीवन-भर के लिए होते हैं ।

"एक सिगरेट इस समय मेरे लिए फायदे-मंद साबित हो सकती है ।" उसने सोचा ।

उसने इधर-उधर देखा । पर गली में कहीं सिगरेट की दुकान दिखाई नहीं दी । उसने सोचा, शायद आगे चलकर कोई दुकान मिल जाये । वह आगे बढ़ता गया । गली में और कई तरह की दुकानें थीं, पर सिगरेट की दुकान कोई नहीं थी ।

"औरों को भी तो इस गली में से जाते समय मेरी तरह सिगरेट की जरूरत पड़ती होगी ।" उसने दिल में सोचा—"अगर कोई यहाँ छोटी सी दुकान सिगरेट की खोल ले, तो अच्छे पैसे कमा सकता है ।"

फिर एकदम एक विचार उसके दिमाग में चमका । वह मुड़ा और तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा ।

"अल्बर्ट, आज तुम खोये-खोये-से लगते हो ? क्या बात है ?" उसकी पत्नी ने पूछा ।

"कुछ सोच रहा हूँ ।" कहकर वह अपने विचारों में खो गया ।

दुकान के विचार को उसने बार-बार अपने दिमाग में घुमाया, उसे हर दृष्टि से सोचा । वह अगले दिन फिर उसी गली में गया । सौभाग्य से एक छोटी-सी दुकान किराये पर मिल गयी । दुकान ठीक मौके पर थी और अगले दिन से उसने किराये पर ले ली । महीने-भर के बाद गिरजे की नौकरी से जवाब मिल गया, तो उसने तम्बाकू और अखबारों का काम शुरू कर दिया । पत्नी का कहना था कि, 'बरजर' रहने के बाद सिगरेट की दुकानदारी करना बहुत बुरी बात है । पर अल्बर्ट ने यह कहकर उसका मुँह बंद कर दिया कि, जमाने के साथ-साथ आदमी को भी बदलना पड़ता है; और फिर अगर तम्बाकू पीना धर्म-विरुद्ध है, तो धर्म के ठेकेदारों ने ही तो उसे यह काम करने के लिए मजबूर किया है ।

अल्बर्ट का कारोबार कुछ ही दिनों में चमक उठा । एक साल बाद उसने सोचा, क्यों न ऐसी ही एक और दुकान किसी और गली में खोल दी जाये । उसने एक और लम्बी गली ढूँढ़ी, जिसमें कोई सिगरेट की दुकान नहीं थी और उसमें भी दुकान खोल दी । वहाँ उसने एक मैनेजर रख दिया ।

जब दूसरे साल पहले साल से तीन गुना लाभ हुआ, तो उसने सोचा कि, जैसे वह दो दुकानें चलाता है, वैसे छः भी तो चला सकता है । सो उसने लंदन की गलियों के चक्कर काटने शुरू किये । जहाँ किसी लम्बी गली में उसे सिगरेट की दुकान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी सुरक्षा का श्रेय इन्हें है
फायरस्टोन लगाइये—ज्यादा अर्से तक सुरक्षित रहिये।

Firestone

फा य र स्टो न

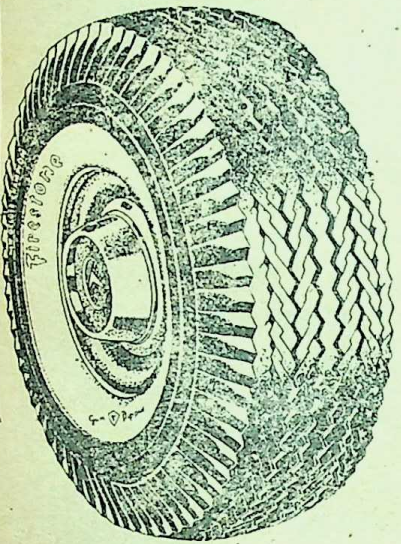

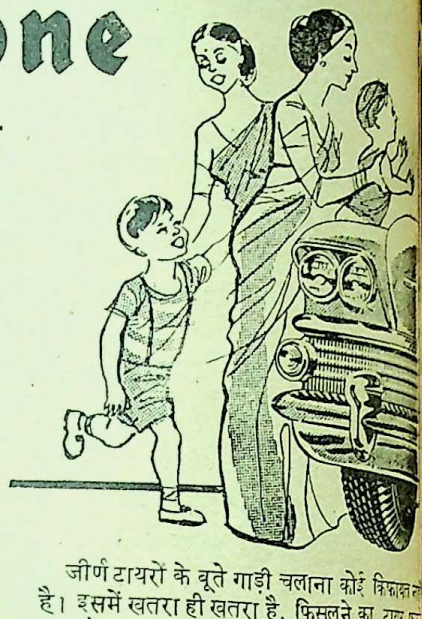

जीर्ण टायरों के बूते गाड़ी चलाना कोई किफायत नहीं है। इसमें खतरा ही खतरा है, फिसलने का, टायर फटने का और ब्रेक न लगने का।

ऐसी हालत में आप और परिवार के लोग भी उतने ही खतरे में रहते हैं, जितने में आपकी गाड़ी के टायर।

फायरस्टोन टायर खरीदिये और ये लाभ भी:

★ फायरस्टोन के सेफ्टी ट्रेड अब भी अद्वितीय हैं, ज्यादा से ज्यादा ब्रेक-नियंत्रण के लिए इसमें न फिसलने की विशेषतावाले हजारों कोण हैं।

★ लम्बे अर्से तक सेवा : सहज ही न घिसनेवाली फायरस्टोन रबड़ के ये टायर आपको लम्बे अर्से तक अधिक सुरक्षित रखने के लिए बनाये गये हैं।

★ मोटर-रेस के विश्वविजेता जिसके भरोसे अपनी जान को दाव पर लगाते हैं, वही इंजीनियरिंग विशेषता इन टायरों की भी प्रणेता है।

फायरस्टोन न्यू डिलक्स चैम्पियन टायर आज सोना—कल सोने पे सुहागा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई न देती, वह उसमें एक दुकान खोल दिया। दस साल के बाद उसकी दस दुकानें चल रही थीं; वह दोनों हाथों से धन बटोरने लगा था। हर सोमवार को दुकानों पर जाता और सप्ताह-भर की आमदनी इकट्ठी करके बैंक में जमा कर आता।

एक दिन वह जब बैंक में रुपये जमा कराने गया, तो खजांचीं ने उससे कहा—"मैनेजर साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

वह मैनेजर के कमरे में गया। मैनेजर ने कुर्सी देते हुए कहा—"मिस्टर फोरमैन, मैं आपके धन के बारे में बात करना चाहता हूँ। आपके हिसाब में आज की रकम के अलावा तीस हजार पौंड से कुछ ऊपर जमा हैं। यह काफी बड़ी पूँजी है। इसे व्यापार में क्यों नहीं लगा देते ?"

"मेरे खयाल में यह रकम आपके बैंक में अधिक सुरक्षित है। मैं कोई ऐसा काम नहीं करना चाहता, जिसमें नुक्सान का डर हो।"

"आप बिल्कुल बेफिक्र रहें। हम आपको पक्की जमानतोंवाले व्यापारियों की एक सूची दे देंगे। इस तरह आप ब्याज से कई गुना ज्यादा रकम मुनाफे में कमा सकेंगे।"

अल्बर्ट के चेहरे पर एक घबराहट पैदा हुई। कहने लगा—"मुझे असल में व्यापार का बिल्कुल तजरुबा नहीं है; मैं यह सारी जिम्मेदारी आप पर छोड़ता हूँ।"

"आप बिल्कुल यकीन रखें। मैं सब कुछ ठीक कर दूँगा। अगले हफ्ते जब आप धन जमा कराने आयें, तो जरूरी कागजों पर अपने दस्तखत करते जायें।" मैनेजर ने मुस्कराते हुए कहा।

"दस्तखत तो मैं कर दूँगा," अल्बर्ट ने जवाब दिया—"पर मुझे यह कैसे पता चलेगा कि उन कागजों में क्या लिखा है?"

"क्यों, आप पढ़ लीजियेगा!" मैनेजरने हैरानी से जवाब दिया।

अल्बर्ट मैनेजर की ओर देखकर मुस्कराया और फिर बोला—"यही तो बात है, मैं लिखना-पढ़ना नहीं जानता। यह बात आजकल के जमाने में अजीब-सी लगती है; पर सचमुच मुझे लिखना-पढ़ना बिल्कुल नहीं आता। अपने दस्तखत करना भी मैंने सिगरेट का धंधा करने के बाद सीखा है।"

मैनेजर अल्बर्ट की बात सुनकर कुर्सी पर से उछल पड़ा।

अल्बर्ट ने फिर कहा—"बात असल में यह है कि, बचपन में मुझे पढ़ने-लिखने का मौका नहीं मिला। और फिर बाद में मैंने परवाह ही नहीं की।"

"क्या आपका मतलब है कि, बिल्कुल अनपढ़ होते हुए भी आप यह शानदार कारोबार, जिसमें आपने तीस हजार पौंड कमाये हैं, इस खूबी से चला रहे हैं? बड़ी हैरानी है! अगर आप पढ़े-लिखे होते, तो पता नहीं, क्या बन जाते!"

"अगर मैं पढ़ा-लिखा होता, तो मैं क्या बन जाता? इसका जवाब भी जानता हूँ।" अल्बर्ट ने बड़े गर्व से कहा।

और मैनेजर के पूछने पर बोला—"अगर मैं पढ़ा-लिखा होता, तो सेंट पीटर्स गिरजाघर में 'वरजर' होता।" —रूपांतर: सुखबीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह एक आम ख्याल है कि ऊंचे दामों की सिगरेटें उनके दाम के कारण बढ़िया होती हैं। हमेशा या हर हालत में यह बात सही नहीं है, क्योंकि इन सिगरेटों के दामों में अधिकतर भाग हमारे देश द्वारा लगाये गये आयात तथा आबकारी करों का रहता है।

तम्बाकू की कहानी....नं. १०

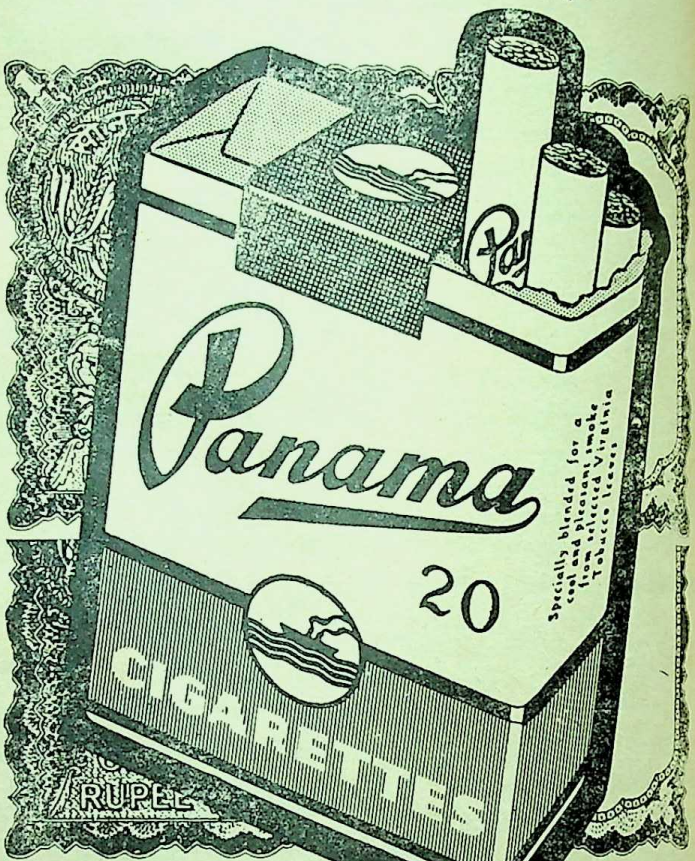

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है —
यह आख़िरी कश तक मज़ा देती है!

GTC
GOLDEN TOBACCO COMPANY PRIVATE LTD.

बम्बई—४७

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामी

प्रो० धीरेंद्र

जब वे दोनों रहिका पहुँचे, सूर्य एक बाँस ऊपर उठ चुका था। रात में वर्षा हो जाने के कारण इतना दिन निकल जाने पर भी धूप में गर्मी नहीं आयी थी। हवा में आर्द्रता थी। मिट्टी से सोंधी-सोंधी महक आ रही थी। गाँव का दृश्य बड़ा मनमोहक लग रहा था।

गाँव के इसी मोह ने तो कभी टस-से-मस न होनेवाले रमण को घुमक्कड़ बना दिया था। किसान का बेटा रमण पता नहीं क्यों, चार वर्ष तक शहर में रहने के बावजूद 'शहरी बाबू' नहीं बन सका—शहर में भी गाँव के ही स्वप्न देखता। यही वजह थी कि, कालेज की पढ़ाई खत्म करके वह घर के नजदीक के ही स्कूल में मास्टर हो गया।

अब चूँकि वह पढ़-लिख गया था, अतः रिश्ते-सम्बंधी जब-तब अपने यहाँ बुला लेते थे। इसी तरह एक दिन जब दूर के रिश्ते के 'बेचारे मामा' ने उसे बुला भेजा, तो वह अपने मँझले मामा के साथ रहिका चल पड़ा। कम-उम्र होने के कारण वह मँझले मामा को 'संगी मामा' कहता था। जीवन में आज तक वह रहिका नहीं आ सका था। रहिका में उसके बेचारे मामा और कनिया मामी रहती थीं।

तो आज रमण की वह साध पूरी हो रही थी, जिसके लिए वह बड़ा प्रसन्न था।

"बस आ गये!" अड़ियल घोड़ों की तरह एकाएक रुककर संगी मामा ने अपना जूता इस प्रकार पटका, मानो अभी भी 'नेशनल केडेट कोर' की परेड कर रहे हों।

"बस!" रमण जैसे और चलना चाहता था, बोला—"किधर है बेचारे मामा का घर संगी मामा?"

"देखते नहीं.....!" संगी मामा ने उसी तरह सैनिक ढंग से एक घर की ओर इशारा किया। रमण ने दृष्टि घुमायी। उपेक्षित बुढ़िया-जैसा खपरैल का एक टूटा-फूटा घर! उसके पास ही सुपारी का एक पेड़ था, जो अपनी समस्त हरीतिमा के बाद भी उस घर में रहनेवालों की दयनीय स्थिति को ढाँप सकने में असमर्थ था।

किसी तरह दोनों ने ओसारे में पैर रखा। बाहर कोई नहीं था। भीतर से दो स्त्री-पुरुषों की आवाज आ रही थी। पुरुष कह रहा था—"कम खर्च में चलना तो तुम्हें आता ही नहीं।"

"तो फिर आप ही सिखा दीजिये न।" स्त्री ने हँसकर जवाब दिया था।

"देखो, मैं अभी 'सीरियस मूड' में हूँ, हँसो मत!" और क्रोध से पुरुष का स्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक घरों में सर्फ़

'आजकल हमारे रहन-सहन का ढंग...'—

बम्बई की श्रीमती प्रेमा सुन्दरजी कहती हैं—!

वालकेश्वर रोड, बंबई की श्रीमती प्रेमा सुन्दरजी कहती हैं कि 'आज के रहनसहन के लिए हमें नित नई और अधिक काम आनेवाली चीज़ों की ज़रूरत है। जैसे अब सर्फ़ ही को लीजिए। मेरे घर के सभी कपड़े—कमीज़ें, साड़ियां, चादरें और तौलिये—सर्फ़ में धुलकर जगमगा उठते हैं।'

फिर आप के घर में सर्फ़ क्यों न हो? सर्फ़ से धुलाई की मेहनत आधी हो जाती है और कपड़ों में नई अनदेखी चमक दमक आ जाती है। आज ही घर में सर्फ़ इस्तेमाल कर के देखिये।

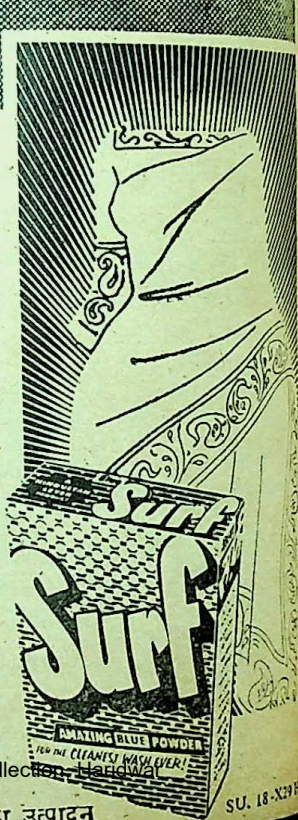

सर्फ़ से कपड़े

ज़्यादा सफ़ेद

धुलते हैं।

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

SU. 18-X-59

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकृत हो गया। उसने [illegible] हाँक लगायी—"बेचारे भाई साहब हैं ?"

"हाँ, हाँ यह आया," भीतर से आवाज आयी और एक सेकेंड के भीतर ही काँख के नीचे पटिया दबाये बेचारे मामा हमारे सामने आ पहुँचे।

"प्रणाम भाई।"

"प्रणाम मामा।"

"चिरंजीव। चिरंजीव।"

और फिर रमण ने बेचारे मामा की ओर गौर से देखा। खूब लम्बे-चौड़े; मगर दुर्बल इतने कि, लगता था, जैसे विधाता ने उन्हें लम्बा बनाने के बदले उनकी मोटाई छीन ली हो। धँसी हुई आँखें, दाढ़ी-मूँछ और सिर के ऊबड़-खाबड़ बाल। खुले शरीर पर खुजली के दाग भी स्पष्ट अंकित थे। घुटने तक की बड़ी गंदी धोती पहने हुए थे।

"अरे, मैं तो सोच रहा था कि, तुम लोग नहीं आओगे। अगर तुम्हारा थोड़ा-बहुत भरोसा होता भी था तो रमण का! भला वह आयेगा? मेरा ग्रैजुएट भानजा रमण!"

यह कहकर बेचारे मामा के मुख पर हास्य की रेखा फैल गयी।

"नहीं मामा, ऐसी बात नहीं थी। पहले फुरसत ही नहीं मिली। आज छुट्टी मिली, तो आपके दर्शन करने चला आया।"

अब वे तीनों बैठ गये थे। धूप में गर्मी आने लगी थी, बेचारे मामा कभी कुछ कहते थे, तो कभी कुछ। रमण थोड़ी देर में ही समझ गया कि, सचमुच बेचारे मामा "बेचारे" ही हैं।

तभी रमण ने चूड़ी खनखनाने की आवाज सुनी। "गय माये, आप लोग हैं? पता नहीं आज सूरज इस ओर कैसे उग आया?" मुख पर सूरजमुखी की ताजगी थी और हँसी में गुलाब की खिलखिलाहट। बोली में सरसता और चुस्ती इस प्रकार मिली थी कि, उसे पृथक् करना असम्भव-सा था। रमण का थका और उचाट मन न जाने क्यों क्षण-भर में ही सरस हो उठा।

"प्रणाम करता हूँ मामी।" और उसने हँसते-हँसते कनिया मामी के चरण छुए।

"खूब खुश रहो, बेटा खूब।" मामी ने उसे आशीर्वाद दिया और संगी मामा की ओर दृष्टि करके बोली—"अच्छा। बड़का बाबू। बच्चा की कनियाँ कैसी हुई है?"

संगी मामा ने दाढ़ी खुजलाते हुए उत्तर दिया—"सुंदर, बड़ी सुंदर जोड़ी मिली है।

गृहिणी

चित्रकार : प्रभा डोंगरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके लिए

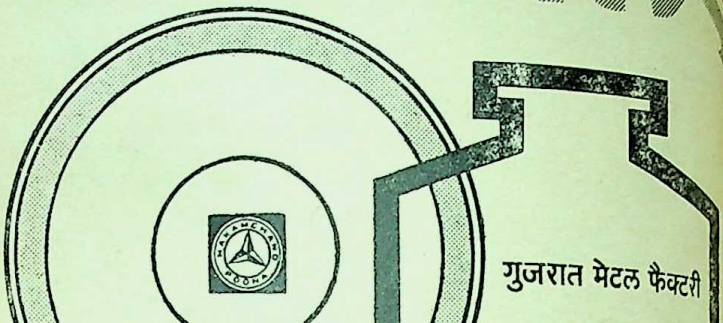

सुन्दर आकारके

बर्तनों की पूर्ति करती है, क्योंकि सुगृहिणियों के संसारको सुखद बनाने के लिए सुसज्जित रसोईघर एक आवश्यक अंग है। आधुनिक रसोईघर की शोभा बढ़ाने लिए चतुर गृहिणी हमारे सुन्दर आकार के ताम्बे, पीतल और स्टेनलेस स्टील के बर्तन ही पसंद करती हैं।

हकमचन्द ईश्वरदास, १६७, गुरुवार पेठ, पूना-२.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम लोगों में ऐसा बहुत कम होता है।" "मगर, हे मगर बहुत कम होता।"

"क्यों? अपने सबमें ऐसा क्यों नहीं होता है? मैं तो बहुत प्रसन्न हूँ इस विवाह से।" मामी का मुख जैसे अनायास ही मलिन पड़ गया और उसने दीर्घ निःश्वास छोड़ा। रमण इस मलिनता का अर्थ नहीं समझ सका; मगर दीर्घ निःश्वास के भीतर जो हृदय की पीड़ा मचल रही थी, उसे समझने में देर नहीं लगी। वातावरण की गम्भीरता तोड़ते हुए मामी ने झट दूसरा प्रश्न कर डाला—"और आप बड़का बाबू, इस बीच सरिसब भी गये थे कि, नहीं?"

"मैं? हाँ, गया तो था; मगर....."

"मगर क्या? अच्छा समझी, तो झगड़ा कर लिया शायद।" कहकर मामी हँसने लगी। उस समय की हँसी बड़ी सरस और मधुर लगी।

"अच्छा अब मैं रसोई तैयार करती हूँ। तब तक आप लोग खूब बातें करिये!" और वह रसोईघर में चली गयी।

वे दोनों बड़ी देर तक बेचारे मामा से इधर-उधर की बातें करते रहे। इसी दौरान में रमण कोठरी के इधर-उधर भी नजर दौड़ाता रहा और थोड़ी देर में ही उसने जो निर्णय किया, वह गरीबी, घोर गरीबी के अंतराल में डूबी एक गृहलक्ष्मी की कला की सजीवता का यथार्थ चित्र था।

रसोईघर से मामी के गाने की आवाज आ रही थी। ऐसे लग रहा था, जैसे कोई थकावट दूर करने के लिए गुनगुना रहा हो—

खाना तैयार हुआ, बिल्कुल सादा भोजन। दाल, भात और चाट तरकारी। मगर खाने के पहले उसके सजाने का ढंग देखकर ही रमण को खाने का स्वाद आने लगा।

खाते-खाते रमण को अपनी माँ की याद आयी और मन-ही-मन मामी की तुलना वह अपनी माँ से करने लगा। कितना साम्य है दोनों में! उसे मालूम पड़ा कि, घोर गरीबी और अभाव के बीच भी उसकी संस्कृति मरी नहीं है। बिना किसी स्कूल या कालेज में गृह-विज्ञान पढ़े भी कुशल गृहणी होती हैं। टूटी-फूटी झोपड़ी में भी प्रासाद से बढ़कर सरसता प्रवाहित होती है।

फिर उसे अपनी पत्नी का स्मरण हो आया। कितनी दृढ़ विचार-शक्तिवाली और हिम्मती है वह!

सोचते-सोचते उसे महसूस हुआ कि, उसकी पत्नी ही नहीं, सारी मैथिल लड़कियाँ इसी प्रकार सोचती हैं; मगर इस पापी समाज ने क्या कभी इस पर विचार किया है?

"अरे, क्या सोच रहे हो बच्चा?... लो चटनी लो। ....क्या तिलकोड़ा (तली भाजी) अच्छा नहीं लगा। लो थोड़ा और लो।" और मामी के आग्रह पर वह झटपट खाने लगा।

भोजन के उपरांत बेचारे मामा ने दाँत निपोरकर मेहमानों के प्रति अपनी शिष्टता प्रकट की—"हाँ, तो जल्दी में गरीब के घर कुछ खास प्रबंध नहीं हो सका। ....दूध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

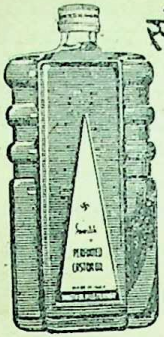

सौंदर्य का निखार संवारे बालों में ही है

भली प्रकार से संवारे केश
कितने मनमोहक व आकर्षक लगते हैं।
स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल
से अपने बाल आकर्षक रखिये।

स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

स्वस्तिक हेयर स्टाइल - "शोभा"

थोड़ा स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल लगा के बालों में अच्छी तरह कंघी करें और रिबन से बांधें। फिर अपने बालों के दो भाग करें। एक भाग को गोल करें और पिन लगा दें। फिर दूसरे को गूंथ कर गोल किये हुए बालों पर जमा लें।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि. बम्बई

Shilpi S.O.M. 9 H.N

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी नहीं, तुम लोग विचार मत करना।" रमण को उनकी यह शिष्टता कुछ जँची नहीं। मामी के स्नेह में उसने जिस स्वाद का आस्वादन किया था, उसके सामने तो ५६ प्रकार के व्यंजन भी नीरस थे।

सूरज अब ठीक सिर पर आ गया था। बेचारे मामा खूब उत्साहित थे और मामी हँस-हँसकर उन्हें और उकसा रही थी। इसी बीच बचिया जाग गयी, मामी उसे सुलाने लगी।

बेचारे मामा बोले—"लो, अब मैं तुम्हें फोटो का स्टाक दिखाता हूँ रमण! तुम तो श्यामू, शायद पिछली बार देख ही चुके हो?"

"तो क्या हुआ, फिर देख लूँगा। भाई, वह फोटो निकालिये, वह....जिसमें आप और भाभी हैं।" इतना कह संगी मामा ने बेचारे मामा के उत्साह में स्पीरिट भर दी।

"बस, यही मुझे रत्ती-भर पसंद नहीं है। अब कभी भी फोटो नहीं निकलवाऊँगी। सबको दिखाकर मुझे लज्जित करते हैं। उफ आँख बंद कर लो बच्चा!... आप भी बड़े ऐसे हैं बड़का बाबू!..."मामी के ऐसा कहने पर बेचारे मामा 'ही ही ही ही' करके जोर से हँसने लगे। साथ ही और भी अधिक फुर्ती से मामी का फोटो खोजने लगे। "लो देखो, मिल गया।" और वह फोटो उन्होंने रमण की ओर बढ़ा दिया। रमण फोटो देखने लगा। फोटो में केवल दो आदमी थे—मामी और बेचारे मामा। बेचारे मामा धोती, कमीज और जूता ही नहीं, कोट भी पहने थे। (शायद जबरदस्ती पहना दिया गया था उन्हें) बगल में मामी बैठी थीं, बिल्कुल सौम्य-शांत!

"इसमें बचिया नहीं है मामा?" रमण ने हँसते हुए सहज भाव से प्रश्न किया।

"हें हें हें? वह .....वह तो उस समय पेट में ही थी।" इतना कहकर मामा ठहाका मारकर हँसने लगे और मामी शरमा गयी। वह अधफुटे स्वर में बोली—"...ओह सब बातें खोल देते हैं... बच्चों के सामने तो...।" फिर वह तीनों की ओर देखकर हँस पड़ी।

आज की दोपहरी रमण को अपने गत बीस वर्ष के जीवन में सबसे अच्छी लगी। शाम होने पर दोनों चलने के लिए तैयार हुए। मामी ने भरे दिल से कहा—"जाते तो हो बच्चा? मगर जाते ही हमें भूल मत जाना।"

रमण ने आगे बढ़कर मामी को प्रणाम किया। वह कुछ बोल नहीं सका—कोई जबरदस्त भावना उसके कंठ को अवरुद्ध कर चुकी थी; उसने मन-ही-मन कहा—"यह कैसे हो सकता है मामी? तुम्हें तो मैं जीवन-भर याद रखूँगा। सचमुच तुम प्यार एवं वात्सल्य की प्रतिमा हो! भला तुम्हें कोई कैसे भूलेगा? तुम तो सीता की परम्परा की जीती-जागती प्रतिमा हो! तुम्हें नहीं भूलूँगा मामी..तुम्हें भूलने का अर्थ है जिंदगी को भूलना!"

— रूपांतर : गोविंद झा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

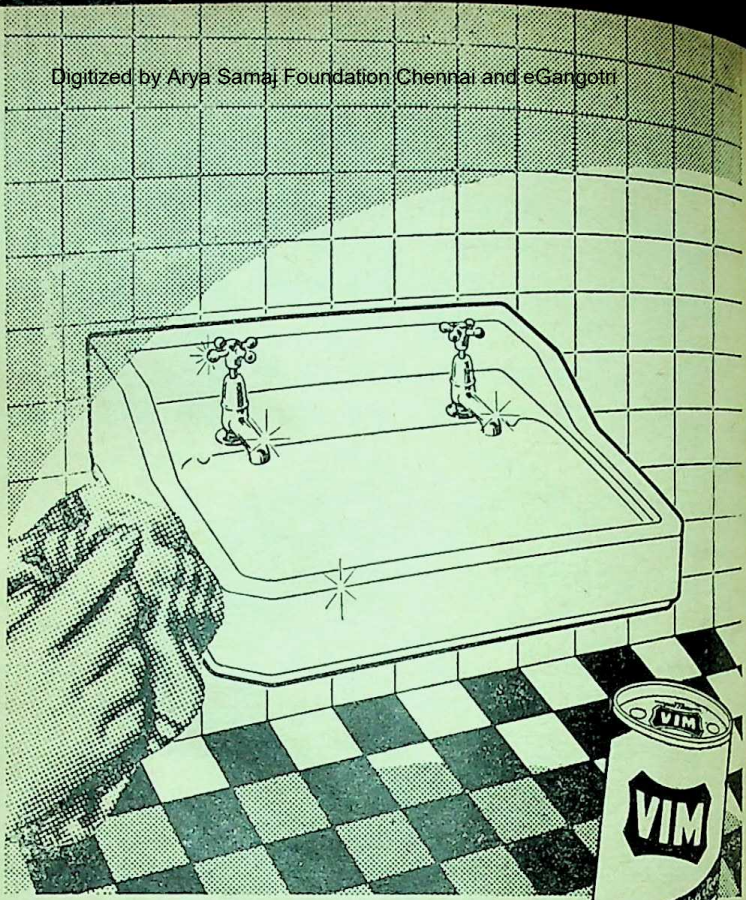

आपके घर को विम की ज़रूरत है!

वाश-बेसिन, नहाने के टब, फ़र्श ... स्टेनलेस स्टील, चीनी के बर्तन ... चुटकियों में चमक उठते हैं! और विम से साफ़ कीजिये तो इनकी जगमगाहट कितनी देर तक रहती है।

विम से हर चीज़ चमक उठती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशिष्ट वाङ्मय

उर्वशी

रचयिता : रामधारीसिंह 'दिनकर'; प्रकाशक : उदयाचल, आर्यकुमार रोड, पटना-४; पृष्ठसंख्या: १६८; मूल्य: १२ रुपये।

इस ग्रंथ का ढाँचा है पद्य-नाटक का; किंतु उसकी आत्मा महाकाव्य की है। इस पुरातन देश की विराट् मनीषा ने सौंदर्य की जो अनंत-अपराजेय कल्पना की थी, उर्वशी उसी कल्पना का नाम है।

पुरूरवा और उर्वशी की कथा ऋग्वेद में भी है तथा ब्राह्मण और पुराणों में भी; और हमारे कई महाकवियों ने उससे प्रेरणा लेकर कई अमर काव्यों का विधान किया है। कालिदास का 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक, रवींद्रनाथ की बहुविदित 'उर्वशी' कविता और साधक अरविंद का अँग्रेजी में विरचित 'उर्वशी' नामक खंड-काव्य—ये तीन कृतियाँ इस विषय की सर्वोत्तम रचनाएँ हैं। इस कथा को चौथी बार काव्य में आँकने का प्रयास दिनकरजी ने किया है और इसमें कोई संदेह नहीं कि, भारत के तीन महान् कला-साधकों ने उर्वशी के सौंदर्य को जिस उच्चता पर प्रतिष्ठित किया था, दिनकरजी की कविता में भी वह उसी ऊँचाई पर गौरवपूर्वक आसीन है।

दिनकरजी का कथानक पुराणों पर आधारित और कालिदास के कथानक से मिलता-जुलता है। किंतु उनकी कल्पना के पुरूरवा और उर्वशी पुराणों के पुरूरवा और उर्वशी नहीं हैं; वे सनातन नर और सनातन नारी के प्रतीक हैं। मनुष्य ज्यों-ज्यों प्रगति करता है, उसकी अन्य अनुभूतियों के समान प्रेम और अध्यात्म की अनुभूतियाँ भी परिवर्तित होती हैं। बढ़ते-बढ़ते मनुष्य अब जहाँ आ गया है, वहाँ प्रेम की अनेक झंकारें मन और आत्मा के आकाश में सुनाई पड़ने लगी हैं। इसी प्रकार आज का अध्यात्म नारी से उतना भय नहीं मानता, जितना वह पहले मानता था। प्रेम और प्रेम से परे भावनाओं का, जिसे अध्यात्म का रूप दिया गया, यह सामीप्य (कहना चाहिये यह आलिंगन) 'उर्वशी' काव्य में जिस गहराई, जिस ऊँचाई, तथा जिस कौशल से चित्रित हुआ है, वह इससे पहले कहीं और दिखाई नहीं पड़ा था।

इस काव्य में पाँच अंक हैं। प्रथम अंक में स्वर्ग से अवतीर्ण अप्सराएँ परस्पर जो वार्तालाप करती हैं, उसी से पुरूरवा और उर्वशी के पूर्वराग की सारी कथा विदित हो जाती है और यह सूचना भी मिल जाती है कि, उर्वशी पुरूरवा के राजोद्यान में चली गयी है। दूसरे अंक से यह पता चलता है कि, उर्वशी को प्राप्त करते ही राजा उसे साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन की दुनिया के दो नये

नेशनल एक्को के दो नये रेडियो

...जो आपको आनन्द-विभोर कर देंगे!

लीजिए, आपके बढ़िया मनोरंजन के लिए ख़ास तौर से बनाये गये दो शानदार नये नेशनल-एक्को रेडियो! इनमें से एक सेट बिजली से चलता है और दूसरा बैटरी से। सुन्दर विनियर्ड कैबिनेट, उत्तम 'हाइ-फ़ाइ' लाउडस्पीकर, मनमोहक डायल, सुमधुर हूबहू ध्वनि...ये हैं इन सेटों की कुछ विशेषताएँ! इसके अलावा, ये दोनों सेट पूरी तरह मॉन्सूनाइज़्ड भी होते हैं!

अपने पास के नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ ख़ुद ही इन्हें मुफ़्त बजवा कर सुनिए!

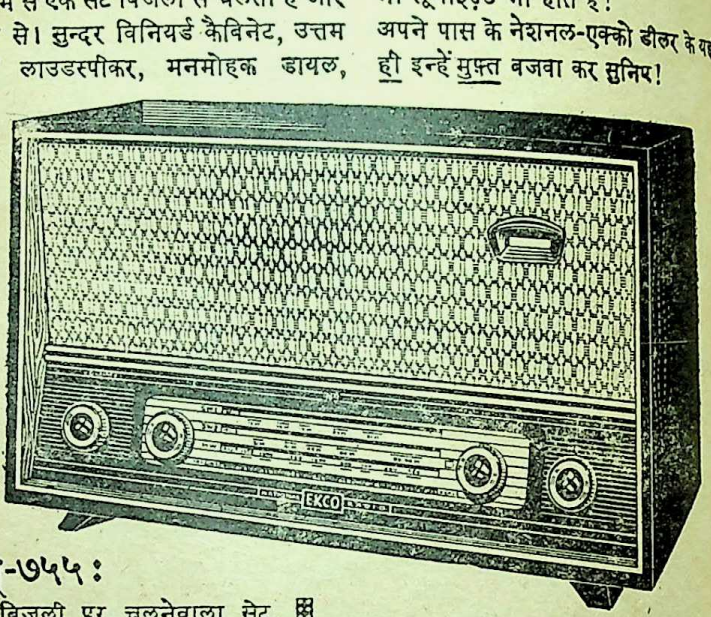

मॉडल यू-७५५:

एसी/डीसी बिजली पर चलनेवाला सेट. ६ वाल्व, ३ बैण्ड, टोन कण्ट्रोल। क़ीमत: एक्साइज ड्यूटी के साथ रु. ३५१-०० स्थानीय टैक्स अलग

मॉडल बी-७५५:

ड्राइ बैटरी सेट। ५ वाल्व, ३ बैण्ड, टोन कण्ट्रोल। बैटरी बहुत ही कम ख़र्च होती है। क़ीमत : एक्साइज ड्यूटी के साथ रु. ३५१-०० स्थानीय टैक्स अलग

नेशनल-एक्को रेडियो ज़्यादा अच्छे हैं...ये मॉन्सूनाइज़्ड होते हैं!

जनरल रेडियो एण्ड एप्लाएन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई • कलकत्ता • मद्रास • दिल्ली • पटना
बंगलोर • सिकन्दराबाद

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. An eGangotri Initiative

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकर गंधमादन पर्वत पर पुरूरवा के मन में प्रेम की जन्मभूमि के इस परस्त्री-प्रेम का प्रभाव उनकी महारानी औशीनरी के मन पर किस रूप में पड़ा, इसका वर्णन दूसरे अंक की प्रमुख विशेषता है। तीसरे अंक में गंधमादन पर्वत पर पुरूरवा और उर्वशी के विहार का वर्णन है। चौथे अंक में यह दिखलाया गया है कि, उर्वशी के जब पुत्र उत्पन्न हुआ, तब उसके भीतर मातृत्व और सखीत्व के बीच उत्पन्न संघर्ष से उसकी क्या अवस्था हुई। पाँचवें अंक में उर्वशी का पुत्र आयु आता है और ज्यों ही पुरूरवा उसे देखता है, उर्वशी अदृश्य हो जाती है। परिणामतः राजा भी संन्यास ले लेते हैं।

नाटकीयता और कथा-तत्व की प्रधानता की दृष्टि से प्रथम और अंतिम अंक अत्यंत रोचक उतरे हैं। किंतु 'उर्वशी' काव्य की वास्तविक विशेषता तो उसके तृतीय अंक को लेकर है। यह अंक इस काव्य का शिखर है और अभिनय की दृष्टि से गर्त; और सहसा यह समझ में नहीं आता कि, जो विलक्षण अनुभूतियाँ इस अंक में चित्रित हुई हैं, उससे इस फ्रायडीय मतवाद का समर्थन होता है कि, काम और अध्यात्म एक ही भावना-भूमि के दो पहलू हैं। इन सूक्ष्म अनुभूतियों को कवि ने जिस कौशल से शब्दों में व्यक्त किया है, उससे उसकी कठोर साधना और हिन्दी भाषा की अपरिमित शक्ति दोनों पर श्रद्धा बढ़ जाती है।

शरीर है; किंतु उसकी सारी क्रीड़ा-भूमि शरीर तक ही सीमित नहीं है। वह प्रेमियों के मन और आत्मा के गहन-गुह्य लोकों में फैली हुई है। यही नहीं, योग मनुष्य को जिस ऊँचाई पर ले जाता है, वह ऊँचाई प्रेम की भी पहुँच के भीतर है और प्रेमी जब प्रेम की समाधि में निमग्न होते हैं, तब वे भी योगियों के समान देश और काल की सीमा से बाहर निकल जाते हैं। उर्वशी जब इस अद्भुत स्थिति में पहुँचती है, उसके मुख से रहस्यवादियों के से उद्गार निकलने लगते हैं :

किस समाधि का शिखर
चेतना जिस पर ठहर गयी है ?
उड़ता हुआ विशिख अम्बर में
स्थिर समान लगता है।

किंतु यह रहस्यवाणी खोखली नहीं, साधार है। वस्तुतः यह उस स्थिति का वर्णन है, जब काल का वर्तमान रूप भी चेतना से लुप्त होने लगता है।

'उर्वशी' काव्य का दार्शनिक धरातल भी बड़ा ही बलशाली और पुष्ट है। इस सम्बंध में पुरूरवा की उक्तियाँ परम्परा से प्रभावित लगती हैं; किंतु उर्वशी के उद्गार उस कथित आधुनिक दृष्टिकोण का आभास देते हैं, जो नयी भौतिकी और मनोविज्ञान से अपने को उत्पन्न मानता है। उर्वशी मायावाद में विश्वास नहीं करती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

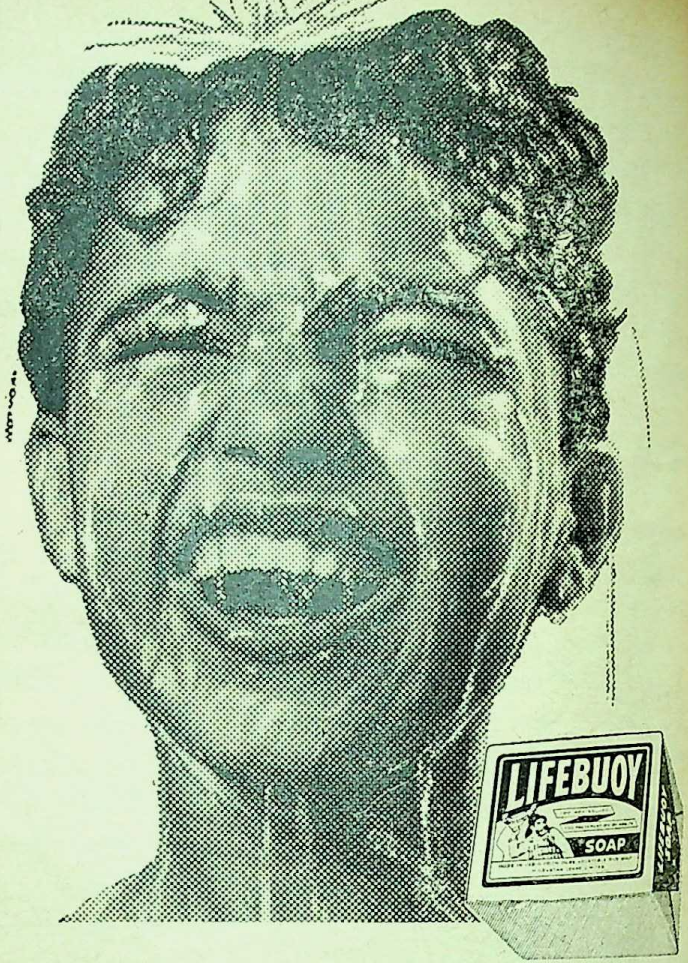

लाइफ़बॉय है जहां, तन्दुरुस्ती है वहां!

लाइफ़बॉय से नहाने का आनन्द ही अनोखा है!
ऐसी ताज़गी मिलती है कि तबीअत खिल उठती है।

आप काम-काज में लगे हों या खेल-कूद में, गन्दगी से नहीं बच सकते। लाइफ़बॉय का भरपूर झाग गन्दगी में छिपे कीटाणुओं को धो डालता है और आपकी तन्दुरुस्ती की रक्षा करता है। आज ही से घर भर की तन्दुरुस्ती के लिए लाइफ़बॉय इस्तेमाल कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दुस्तान लीवर का उत्पादन

L. 16-X29 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह पदार्थ और आत्मा (मैटर और स्पिरिट) दोनों को सत्य मानती है और दोनों को एक ही महासत्य के अविभाज्य अंग समझती है। पुरूरवा आत्मा का पुजारी और विवेकपूर्ण चिंतन पर आसक्त है; किंतु उर्वशी का विश्वास रक्त में है, जीवन की प्रत्यक्ष अनुभूतियों में है, जिसे वह यों बड़े ही प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती है :

रक्त बुद्धि से अधिक बली है
और अधिक ज्ञानी भी,
क्योंकि बुद्धि सोचती और
शोणित अनुभव करता है।
पढ़ो रक्त की भाषा को,
विश्वास करो इस लिपि का
यह भाषा, यह लिपि मानस को
कभी न भरमायेगी।

अध्यात्मवाद के साथ पदार्थवादी दर्शन की एकता उर्वशी में जिस विदग्धता से दिखायी गयी है, वह केवल कवित्व की दृष्टि से नहीं, इस युग की चिंतनधारा की दृष्टि से भी अत्यंत मूल्यवान् है।

'उर्वशी' काव्य में प्रेम का चित्रण जिस ऊँचाई पर किया गया है, वह वस्तुतः धर्म और अध्यात्म का शिखर स्थान है। 'उर्वशी' के पुरुष पात्र पंख खोलकर आकाश में उड़ने की उमंग से चंचल हैं और स्त्री-पात्र वे अद्भुत नारियाँ हैं, जिनके मुख-मंडल में कोई अव्यक्त कमल झलकता है :

जहाँ त्रिया कामिनी नहीं,
छाया है परम विभा की,
जहाँ प्रेम कामना नहीं
प्रार्थना-निदिध्यासन है।

नाम से तो यह काव्य अप्सरा-चरित का ही काव्य भासित होता है; किंतु महारानी औशीनरी तथा सती सुकन्या की अवतारणा करके कवि ने मानो यह संदेश दिया है कि, नर-नारी समस्या का असली समाधान अप्सराएँ नहीं, बल्कि वे सती नारियाँ लाती हैं, जिनका जन्म ही त्याग और तपस्या के लिए हुआ है। नारी का सबसे बड़ा त्याग यह है कि, अंचल की वायु से आग की लपटों को बुझा देने पर भी वह कीर्त्ति नहीं माँगती :

त्यागमयी हम कभी नहीं
रुकती हैं अधिक समय तक
इतिहासों की आग बुझाकर भी
उनके पृष्ठों में।

'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' के कवि ने विषय तो अपने स्वभाव से बहुत भिन्न चुना; किंतु शृंगार के बहाने उसने कविता ऐसी रच डाली, जिसकी तुलना किसी और काव्य से नहीं की जा सकती। यदि कभी विश्व के सर्वश्रेष्ठ काव्य ग्रंथों की सूची में हिन्दी को अपने सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों की सूची भेजने का अवसर प्राप्त हुआ, तो उस सूची में 'उर्वशी' काव्य का नाम अत्यंत उज्वल अक्षरों में लिखा जायेगा।

इसे जिस सजधज से प्रकाशित किया गया है, वह भी अभूतपूर्व है। काव्य के भावों को मूर्त करने के लिए प्राचीन भारतीय चित्रों की जो अनुकृतियाँ इसमें दी गयी हैं, वे बहुत ही मनोज्ञ हैं। — **मन्मथनाथ गुप्त**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गठियावात?

जरा-सा

अमृतांजन

आपको तुरन्त आराम पहुंचायेगा

सर्दी-खाँसी, बुखार और गठियावात की तकलीफों से अपने परिवार को बचाइए। जरा-सा **अमृतांजन** तकलीफ मिटाने के लिए काफी है इसलिए एक शीशी महीनों चलती है।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास-४
इसके अलावा बम्बई-१, कलकत्ता-१ और नई दिल्ली-१

JMTAM 1126A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिट्टा लहू

नानक सिंह

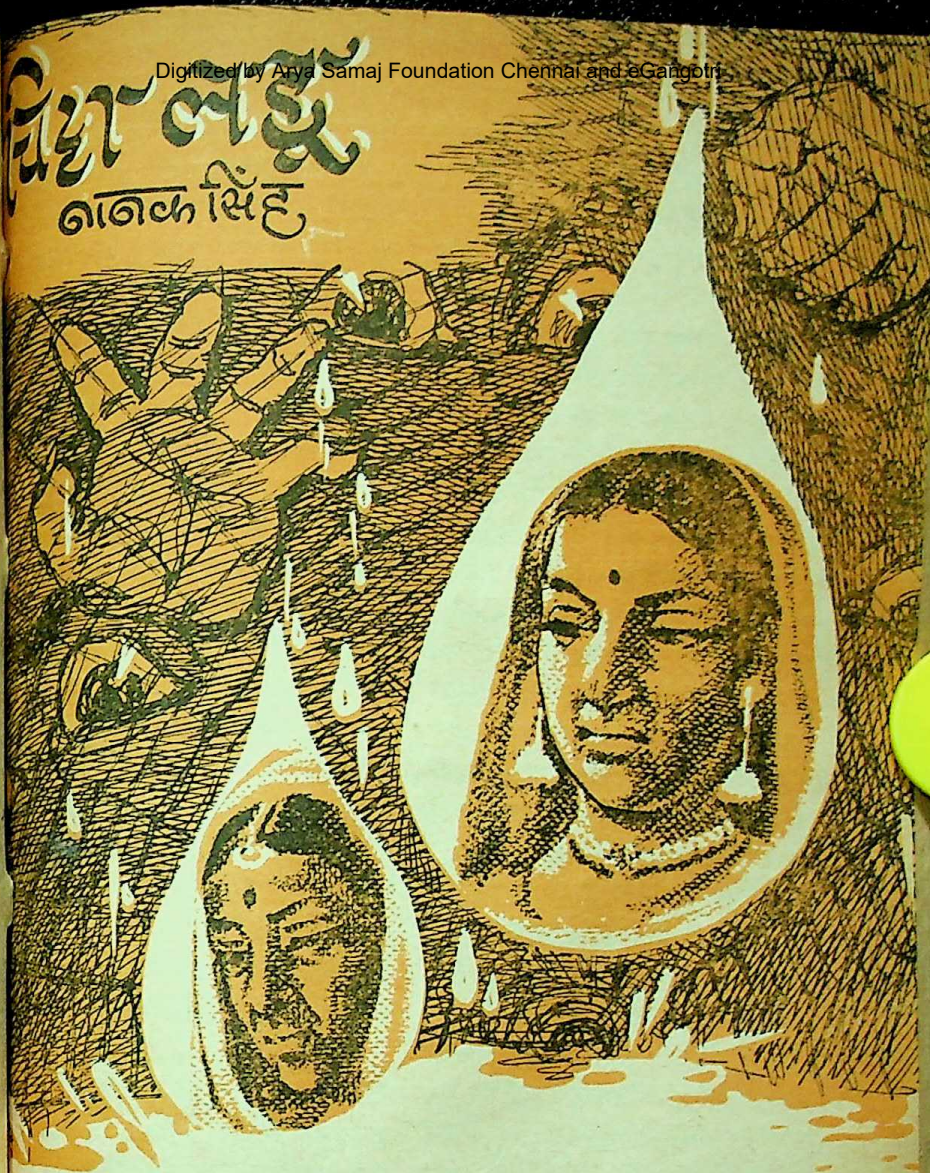

लहू यानी जीवन की लाली – सौंदर्य एवं स्पंदन ! और मानव-मन इस सौंदर्य का स्रष्टा तथ
जीवन के शाश्वत मूल्यों का केंद्र-बिंदु है । इन मूल्यों से अछूता जीवन, जीवन नहीं; जै
अपनी स्वाभाविक लाली के बिना रक्त, रक्त नहीं । पंजाबी के वयोवृद्ध उपन्यासकार श्री
नानक सिंह के 'चिट्टा लहू' (सफेद खून) उपन्यास की यही भावभूमि है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रूपांतरकार : सुखबीर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाम का समय था। स्टेशन मास्टर खुद ही मुसाफिरों के टिकिट ले रहा था। जब एक बिना-टिकिट का मुसाफिर गेट से बाहर निकलने लगा, तो स्टेशन मास्टर ने उसे पकड़ लिया।

उस नौजवान मुसाफिर के पास कोई सामान नहीं था। देखने में वह सिक्ख लगता था। उसके कपड़े बड़ी खस्ता हालत में थे। उन पर कई जगह पैबंद लगे हुए थे। नौजवान ने डरते-डरते अपनी गरीबी का हवाला दिया। इस पर स्टेशन मास्टर हँसा, कुछ गालियाँ दीं और उसे जेल भिजवाने की धमकी दी। नौजवान ने फिर मिन्नतें की; लेकिन स्टेशन मास्टर ने उसकी एक न सुनी। पर अचानक जब उसकी दृष्टि नौजवान की आँखों पर पड़ी, तो वह हैरान रह गया। नौजवान की आँखों से खून टपक रहा था। स्टेशन मास्टर को लगा कि, दरअसल यह कोई निर्दोष और इज्जतदार व्यक्ति है। अंत में उसने उसे अपने साथ आने को कहा और स्टेशन से बाहर की ओर चल पड़ा। बाहर जाकर वह एक मैदान में बैठ गया। नौजवान को इस सब पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

और फिर बातों के सिलसिले में पता लगा कि, यह नौजवान लाहौर से आ रहा है। यहाँ अमृतसर में उसका घर है। पर उसकी यह हालत! पूछने पर नौजवान ने कहा—"यह मेरे हक में अच्छा नहीं हुआ। अच्छा था आप मुझे हवालात भिजवा देते।" और उसने कोट की जेब से कागजों का एक पुलिंदा निकालकर कहा "यहाँ कम-से-कम मेरे इस उपन्यास का अधूरा अध्याय तो पूरा हो जाता।"

स्टेशन मास्टर ने सब बातें खोलकर समझाने को कहा। नौजवान ने बताया "मैं शहर में एक खस्ता-हाल कोठरी में रहता हूँ। एक साधारण-सा लेखक हूँ। मेरी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे बिकी भी हैं; पर मेरी गरीबी दूर नहीं कर सकीं। अभी परसों मेरे पास कागज खरीदने तक के लिए पैसे नहीं थे। मेरे उपन्यास का अंतिम अध्याय बाकी था। सौभाग्य से मुझे एक रद्दी कापी में कुछ कागज मिल गये। उन पर मैंने अंतिम अध्याय का आधा भाग लिखा। मुझे उस उपन्यास बेचने की बहुत जल्दी थी। किसी तरह एक रुपये का प्रबंध किया और इसे बेचने लाहौर पहुँचा। सोचा, वहीं इसे पूरा कर लूँगा। पर किसी प्रकाशक से बात न बनी। हर प्रकाशक इसे बहुत कम कीमत पर खरीदना चाहता था। इस उपन्यास में मैंने एक-दो पात्रों को छोड़कर बाकी सबका खून सफेद दिखाया है। अगर आपका भी खून सफेद होता, तो यह एक बहुत अच्छा दुःखांत उपन्यास बन जाता...!"

स्टेशन मास्टर की जिज्ञासा और बढ़ी। उसने उपन्यास सुनने की तीव्र उत्सुकता प्रकट की और नौजवान को अपने घर ले गया। खाना खाकर वे उपन्यास सुनने सुनाने बैठ गये। नौजवान ने शीर्षकवाला पन्ना उठाकर तिपाई पर रखा। स्टेशन

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्टर देखकर हैरान हो गया। उस पन्ने पर लिखा था :

चिट्टा लहू – लेखक: गुप्तेश्वर

गुप्तेश्वर का नाम स्टेशन मास्टर के रोम-रोम में समाया हुआ था। उसने गुप्तेश्वर की रचनाओं को बड़ी श्रद्धा से पढ़ा था। उन रचनाओं ने तो उसका जीवन ही बदल दिया था। स्टेशन मास्टर ने उठकर उसी क्षण नौजवान के पैर छू लिये और बोला–"तो क्या आप ही गुप्तेश्वर हैं? भाई, मैं कैसे बताऊँ कि, मैं आज आपसे मिलकर कितना खुश हूँ।"

और फिर उसने बताया कि, वह कभी शराबियों और जुआरियों का जीवन बिता रहा था; पर गुप्तेश्वर की रचनाओं ने उसके जीवन में ऐसा परिवर्तन किया कि, आज वह कुछ-का-कुछ बन गया है।

लेखक

खैर, गुप्तेश्वर ने अपना उपन्यास पढ़ना शुरू किया :

जाड़े की अँधेरी रात। बारिश हो रही थी। एक स्त्री बेहोशी की हालत में गाँव के बाहर पड़ी थी... ।

जब उसे होश आया, तो उसने देखा कि, वह किसी घर में है। उसके सिरहाने एक मुसलमान औरत बैठी थी। सामने एक मुसलमान नौजवान खड़ा था। हाँ, रात के समय वे घर आ रहे थे, तो उन्होंने उसे रास्ते में बेहोशी की हालत में पड़े हुए देखा था और उसे उठाकर जैसे-तैसे अपने घर ले आये थे।

उनके पूछने पर उस स्त्री ने बताया कि, उसका नाम गुरदई है। बचपन में उसकी माँ मर गयी थी। पिता शराबी था। जब वह बड़ी हुई, तो पिता ने दो हजार रुपये लेकर एक धनवान बूढ़े से शादी कर दी। ब्याह के दूसरे ही वर्ष वह मर गया। उसके दो बेटे थे। बड़े का नाम करमचंद था। पिता के मरने के बाद वह नहीं चाहता था कि, उसकी सौतेली माँ उसकी जायदाद में हिस्सा बँटाये। वह उसे तंग करने लगा। और अंत में उसने एक दिन साफ कह दिया कि, वह अपना हिस्सा लेकर अलग हो जाये। गुरदई मान गयी। गाँव के तीन-चार आदमियों के सामने लिखत-पढ़त हुई और कागज पर गुरदई ने अँगूठा लगा दिया।

बाद में पता चला कि, जिस कागज पर गुरदई ने अँगूठा लगाया था, उस पर कुछ और ही लिखा हुआ था। वह जायदाद से हाथ धो बैठी। जब उसने शोर मचाया और अपनी जान दे देने की धमकी दी, तो उसे खूब पीटा गया। अंत में हाथ-पाँव बाँधकर उसे गाँव से बाहर छोड़ दिया गया। उस समय मूसलाधार बारिश हो रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

थी, वह वहीं पड़ी-पड़ी बेहोश हो गयी थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी दुःख-भरी कहानी सुनकर मुसलमान स्त्री ने अपने बेटे से कहा कि, वह उसे गाँव छोड़ आये। गुरदई ने करमचंद के यहाँ जाने की अपेक्षा गाँव के पंडित राधेकृष्ण के यहाँ जाना उचित समझा, ताकि वह उनकी सहायता से फैसला करवा सके।

पंडित राधेकृष्ण का सारे गाँव में दबदबा था। वे धर्म की कमाई पर ऐश करते थे। गाँव के हर काम में वे अगुवा होते। शराब पीते थे, जुआ खेलते थे, मांस खाते थे; और इन सबको वेद-शास्त्रों का हवाला देकर सही सिद्ध करते थे।

जब गुरदई मुसलमान नौजवान के साथ पंडित राधेकृष्ण के यहाँ पहुँची, तो पंडितजी पूजा में लीन हो गये। काफी समय के बाद वे उसके पास आये। जब उन्हें यह ज्ञात हुआ कि, गुरदई मुसलमानों के घर रही है, तो वे आग-बबूला हो गये। कहने लगे—"तेरा तो धर्म भ्रष्ट हो गया है। अब तू हिन्दू समाज में कैसे रह सकती है?" पर अचानक कुछ सोचकर वे चुप हो गये और बड़े दया-भाव से गुरदई की हालत पर दुःख प्रकट करने लगे।

दूसरे दिन गाँव की पंचायत बैठी। पंचायत में सभी की आँखें पंडितजी पर थीं कि, वे क्या फैसला करते हैं। पहले तो उन्होंने सारे गाँववालों को फटकार बतायी कि, यह सब कुछ उनकी अधार्मिक प्रकृति का फल है। फिर उन्होंने करमचंद को डाँटा कि, उसी के कारण गुरदई को मुसलमानों के घर रहना पड़ा और उसका धर्म भ्रष्ट हुआ। अब भला ऐसी स्त्री को हिन्दू समाज में कैसे रहने दिया जा सकता है?

इस बात पर पंडितजी से सब लोग सहमत थे। कालेज में पढ़नेवाले गाँव के कुछ युवकों ने जब इसका विरोध किया भी, तो पंडितजी ने डाँट-डपटकर चुप कर दिया।

जब सब लोग वहाँ से चले गये, तो करमचंद ने चुपके से पंडितजी की मुट्ठी गर्म करते हुए कहा—"महाराज, हम पर दया-दृष्टि रखियेगा।"

पंडितजी करमचंद को आशीर्वाद देकर घर आये और गुरदई से बोले—"देख, तेरे खातिर मैं सारे गाँव घूमा हूँ। जिसका मुँह नहीं देखना था, उसके पाँव भी देखे। पंचायत इकट्ठी की। पर पता नहीं, लोगों के दिमाग पर कैसा परदा पड़ गया है, कोई कुछ सुनता ही नहीं। हरि ओम्।"

कुछ देर चुप रहकर उन्होंने फिर कहा—"खैर कोई बात नहीं, अब इसका फैसला अदालत में ही होगा। वहीं करमचंद लोगों को तरह मानेगा।.....पर बेटी, इस काम के लिए धन की जरूरत पड़ेगी।"

गुरदई के पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी। वह निराश बनी चुप बैठी रही। लेकिन जब पंडितजी ने उसकी सोने की चूड़ियों का जिक्र किया, तो उसने उन्हें भी उतारकर उनके हवाले कर दिया।

बहुत देर के बाद जब वे लौटे, तो उनके साथ एक व्यक्ति और था। पंडितजी ने गुरदई से कहा—"बेटी, मेरी सलाह है कि

सितम्बर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू कुछ दिन के लिए मेरे इस मित्र के साथ स्यालकोट चली जा। इन दिनों तेरा यहाँ रहना ठीक नहीं है। करमचंद को तो तू जानती ही है।"

गुरदई पंडितजी की बातों में आ गयी। स्यालकोट पहुँचने के कुछ ही दिनों में गुरदई को पता लग गया कि, वह पंडितजी के हाथों छली गयी है। वास्तव में उन्होंने ताराचंद नाम के इस व्यक्ति के हाथ उसे बेच दिया था। वह माथा ठोककर रह गयी। अब यहाँ से छूटना आसान नहीं था। वैसे छूटकर वह जाती भी कहाँ? अंत में उसने ताराचंद के साथ ही जीवन के शेष दिन काटने का फैसला किया।

लेकिन ताराचंद ऐसा व्यक्ति नहीं था, जो जीवन-भर उसका साथ देता। उन्हीं दिनों उसकी नौकरी छूट गयी। अब घर का खर्च कैसे चले? वह अपना गुजारा तो किसी तरह कर भी लेता; पर गुरदई व्यर्थ में उस पर बोझ बन गयी। फिर निकट भविष्य में ही वह और बड़ा बोझ बननेवाली थी—वह गर्भवती थी। सो एक दिन ताराचंद घर से लापता हो गया और फिर नहीं लौटा।

अछूत कन्या

उसके जाने के कुछ ही दिन बाद, गुरदई ने एक लड़की को जन्म दिया। उस समय पड़ोस की कुछ मुसलमान स्त्रियाँ ही थीं, जिन्होंने उसे सम्भाला। कुछ दिनों तक गुरदई इन्हीं की देख-भाल में रही। उनमें रहते हुए उसे घर का-सा सुख और प्यार मिला।

× × ×

गुरदई जिस गाँव में ब्याही गयी थी, उससे कुछ दूर एक और गाँव था। वहाँ बचनसिंह नाम का एक युवक रहता था। उसकी आसपास के गाँवों में भी चर्चा थी। जब वह कालेज में था, तभी से सामाजिक और राजनीतिक कार्यों में भाग लेता था। गाँव आने पर उसकी समाज-सेवा की लगन और भी तीव्र हो गयी। उसने पहले अपने गाँव को ही आदर्श गाँव बनाना चाहा। एक दिन वह गाँव के गुरुद्वारे में गया। गुरुद्वारे के भाई (पुजारी) से मिला। भाई सारा दिन भाँग पीकर पड़ा रहता था। बचनसिंह ने भाई को गुरुद्वारे की ठीक तरह से देखभाल करने और गाँव के बच्चों को पढ़ाने के लिए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादिष्ट खाना बनाने की आसान विधि

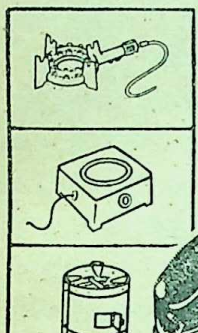

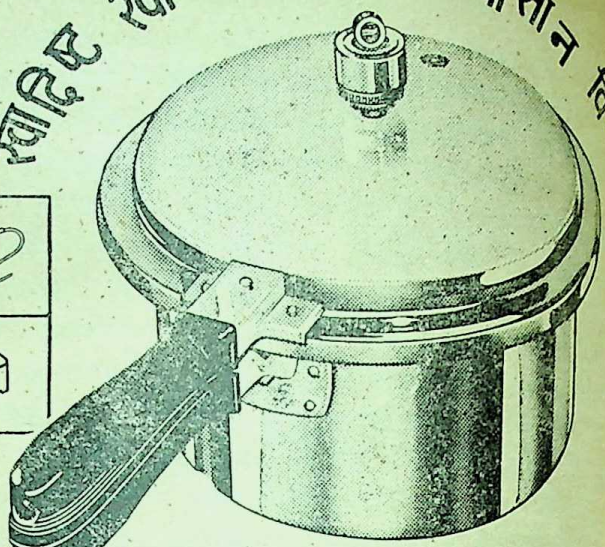

प्रेस्टीज प्रेशर कुकर को अपनाइये

आप प्रेस्टीज प्रेशर कुकर को गैस, बिजली, लकड़ी, कोयला, तेल से चलनेवाले स्टोव और प्रेशर स्टोव-यानी हर तरह की आंच पर इस्तेमाल कर सकते हैं।

कम वक्त :-प्रेस्टीज विधि से आप उस भोजन को मिनटों में पका सकते हैं, जो आम तौर से घण्टों में पकेगा।

कम ईंधन:-चालू ढंग से खाना बनाने में जितना ईंधन खर्च होता है, प्रेस्टीज विधि में उस से २/३ से ३/४ ईंधन की बचत होती है।

ज्यादा स्वाद:-प्रेस्टीज कुकर में जो खाना बनता है, वह ढक्कनबंद हालत में बनता है, इस तरह वह ज्यादा स्वादिष्ट रहता है।

मुफ़्त ! हर 'प्रेस्टीज' कुकर के साथ आप को आसानी से काम करने वाले 'सेपरेटरों' का एक सेट और पाक-पुस्तिका मुफ़्त मिलेगी

Prestige

प्रेस्टीज प्रेशर कुकर

हर घर की शान

दि प्रेस्टीज ग्रुप लिमिटेड, लंदन
के लाइसेंस के अन्तर्गत भारत में बनानेवाले :

टी टी. (प्राइवेट) लिमिटेड

Aiyars-P-65-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई के सिर [illegible] पड़ा। उसने सारी बात गाँव के बदमाश पालासिंह से कह सुनायी। पालासिंह प्रायः भाई के साथ मिलकर भंग पिया करता था और बचनसिंह उसे फूटी आँखों नहीं सुहाता था। पालासिंह ने भाई को धीरज दिया कि, उसके रहते बचनसिंह से घबराने की जरूरत नहीं।

इसके बाद पालासिंह ने भाई के साथ भंग घोटने का प्रोग्राम बनाया। साथ में गाँव के दो-तीन व्यक्ति और थे। गुरुद्वारे में ही खूब छनी। फिर नशे की हालत में जिसका जिधर मुँह उठा, चल पड़ा। इनमें प्रतापसिंह नाम का युवक भी था, जो गाँव के एक घर का दामाद था और यहाँ पहली बार ही आया था। वह भी जब वहाँ से चला, तो रास्ते में ही बेहोश होकर गिर पड़ा।

दूसरे दिन सारे गाँव में हलचल मच गयी। घर-घर में भंग की चर्चा थी। प्रतापसिंह अभी तक बेहोश था। उसे रास्ते में से उठाकर बचनसिंह उसके घर लाया था। जब उसकी बेहोशी दूर न हुई, तो डाक्टर को बुलाया गया। डाक्टर ने बताया कि, इसे जहर दिया गया है, इसलिए तुरंत पास के सरकारी अस्पताल में पहुँचाया जाये।

इधर पालासिंह की टोली को चिंता होने लगी कि, कहीं वह न फँस जाये। तभी प्रतापसिंह ने सोचा कि, क्यों न एक ईंट से दो शिकार किये जायें। उसने झट थाने में जाकर रिपोर्ट कर दी कि, बचनसिंह ने ही प्रतापसिंह को [illegible] जहर दिया है। फलस्वरूप बचनसिंह पकड़ लिया गया।

कोर्ट में मुकदमा चला। गवाही में भाई कुछ उलटी-सीधी बक गया। वकील ने उसके मुँह से असली बात निकलवा ली। बस, सारा पाँसा पलट गया। बचनसिंह छूट गया। पालासिंह अपने दोनों दुष्ट साथियों और गुरुद्वारे के भाई के साथ पकड़ लिया गया।

इस बीच बचनसिंह ने ज्ञानी दीदारसिंह को बुला भेजा। उन्होंने ही बचनसिंह में देश सेवा की भावना को जन्म दिया था। गाँव आने पर दीदारसिंह ने गुरुद्वारे की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और उन्होंने उसे एक नया रूप दे दिया।

एक दिन दीदारसिंह और बचनसिंह ने देखा, गुरुद्वारे के बाहर एक तेरह-चौदह

पय-पान

चित्रकार : सुरेश शेठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूट मे परिवेष्टित आश्चर्यजनक भविष्य

प्रेमचन्द का व्यवसाय बढ़ती पर है और इसके पहले वह कभी भी इतना अधिक खुश नहीं रह सका! जूट के थैलों में से सुनहले दानों को उझलते समय उसे थोड़ा भी महसूस नहीं होता कि जूटका महत्व भी अत्यधिक है ... यह साधारण सा रेसा, जो उसकी राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के भविष्य को परिवेष्टित करता है। निर्यात के बहुत बड़े मद-जूट द्वारा भारत करोड़ों में बहुमूल्य विदेशी विनिमय अर्जित करता है।

राष्टकी बढ़ती हुई जरुरतोंको मद्दे नजर रखते हुए मफतलाल ग्रुप देशकी आर्थिक एवं औद्योगिक प्रगति में हाथ बटाकर अग्रसर होने में प्रयत्नशील हैं। आज, देश-भरमें सभी प्रकार की जनता के लिए मफतलाल ग्रुप विभिन्न प्रकार के अनेकों उत्पादन— सूती कपड़े, जूट, शक्कर, रंग रसायन - निर्मित करते हैं।

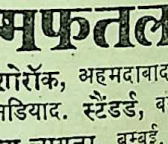

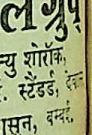

मफतलाल ग्रुप

शोरॉक, अहमदाबाद. **न्यु शोरॉक**, नडियाद. **स्टैंडर्ड**, बम्बई. **स्टैंडर्ड**, देवल **न्यु चायना**, बम्बई. **सासून**, बम्बई. **न्यु युनियन**, बम्बई. **सूरत कॉटन**, सूरत. **मफतलाल फाईन**, नवसारी. **गगलभाई जूट**, कलकत्ता. **इंडियन डायस्टफ**, बम्बई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल की लड़की बैठे हुए गाँव में कुछ लिख रही है। उसके पास ही एक टोकरी पड़ी थी। पूछने पर पता लगा कि, वह कोई अछूत लड़की है। गाँव में जो बंदर नचाने-वाला मदारी है, उसी की बेटी है। सुंदरी उसका नाम है। उसे पढ़ने का बहुत शौक है; लेकिन अछूत होने के कारण वह गुरुद्वारे के अंदर नहीं आ सकती। इसलिए बाहर बैठकर ही पढ़ा करती है।

बचनसिंह और दीदारसिंह उस लड़की की बातें सुनकर बड़े खुश हुए। अगले दिन से दीदारसिंह ने गाँववालों की परवाह न करते हुए सुंदरी को गुरुद्वारे में आकर पढ़ने के लिए कह दिया। गाँववालों को जब इसका पता लगा, तो उन्होंने बड़ा शोर मचाया। अंत में सुंदरी का वहाँ आना बंद हो गया। हाँ, बचनसिंह उसे उसके घर जाकर ही पढ़ाने लगा।

इस प्रकार दो वर्ष बीत गये। इसी बीच पालासिंह, भाई और दूसरे लोग जेल से छूटकर आ गये। अब वे सब बचनसिंह से बदला लेने पर तुले हुए थे। धीरे-धीरे उन्होंने गाँववालों को यह कहकर बचनसिंह के खिलाफ कर दिया कि, गुरुद्वारे पर कब्जा करने के लिए ही उसने उन्हें जेल भिजवाया था और वह एक अछूत लड़की से सम्बंध जोड़ रहा है। अब ज्ञानी दीदारसिंह का गाँव में रहना ठीक नहीं था। वे गुरुद्वारे का काम-धाम भाई को सौंपकर गाँव छोड़कर चले गये।

पालासिंह और उसके साथियों ने सोचा, क्यों न अब वे भी कोई ऐसा काम करें, जिससे उनका बचनसिंह और दीदार-सिंह से भी ज्यादा नाम हो। सो उन्होंने उस साल बड़ी धूमधाम से गुरु-पर्व मनाने का फैसला किया। खूब जोर-शोर से तैयारियाँ होने लगीं। साथ ही उन्होंने यह भी सोचा कि, गुरु-पर्ववाले दिन जब सब लोग इकट्ठे हों, तो उनके सामने बचनसिंह का मामला भी पेश कर दिया जाये।

इधर सुंदरी भी अब पहलेवाली सुंदरी नहीं रही थी। पिछले दो-तीन वर्षों में वह काफी लिख-पढ़ गयी थी।

गुरु-पर्व निकट आ रहा था। सुंदरी की बड़ी लालसा थी कि, इस मौके पर वह गुरुद्वारे के अंदर जाकर सब कुछ देख-सुन सके। पर उसे गुरुद्वारे में कौन जाने देगा? आखिर उसने एक तरकीब सोची कि, वह किसी प्रकार गुरुद्वारे की एक कोठरी में छिप जाये और वहीं से दरवाजों की दरारों में से झाँककर सब कुछ देख ले। उसने यही किया भी।

सुबह हुई, तो रागी कीर्तन करने लगे। धीरे-धीरे लोग एकत्रित होते गये। तभी एकदम कोठरी का दरवाजा खुला, जिसमें सुंदरी छिपी हुई थी। अचानक सबका ध्यान उस ओर गया। उसे देखकर हैरानी और गुस्से से वे लोग लाल-पीले होने लगे। उसी गुस्से के जोश में कुछ व्यक्तियों ने सुंदरी को मारा-पीटा भी। चारों ओर से आवाजें आने लगीं कि, सब भ्रष्ट हो गया, अब इस हलवे (प्रसाद) का क्या बनेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रंग रूप का निखार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप की उंगली के इशारे पर

बड़े प्यार से... बड़े दुलार से... अपने रंगरूप की देखभाल कीजिये ! इस में सुंदरता का निखार लाने के लिए हिमालय बुके स्नो की सहायता लीजिये। रूखी सूखी, मुरझाई हुई त्वचा को यह तरोताज़ा करके एक नवजीवन प्रदान करती है। और हिमालय बुके स्नो आप की त्वचा को धूप, हवा, झुर्रियों और साधारण फुन्सियों से भी बचाये रखती है ! अपने रंगरूप के नाज़ उठाइये। हिमालय बुके स्नो से इस में एक नया निखार ले आइये !

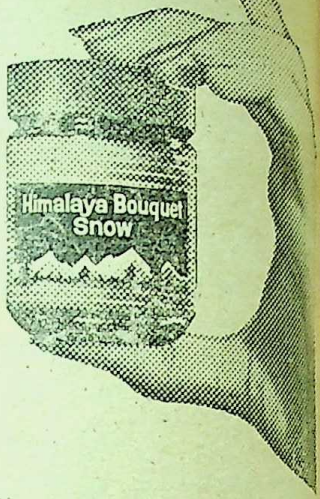

हिमालय बुके स्नो

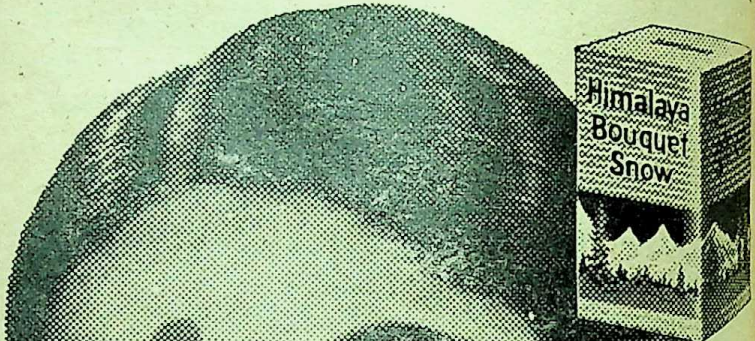

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड ने इंग्लैण्ड के लिए भारत में बनाई

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी कठिनाई से वहाँ से छुड़ाकर अपने घर ले गया। बाद में लोग बचनसिंह के विरुद्ध बातें करने लगे कि, यह सब उसी की करतूत थी। पालासिंह बहुत खुश था कि बचनसिंह के खिलाफ उसे स्वयं कुछ नहीं करना पड़ा। वह खुद ही फँस गया।

पालासिंह की टोली तो पहले ही उसके पीछे हाथ धोकर पड़ी हुई थी। उन्होंने एक रात मदारी की बँदरिया को उठाकर कुएँ में फेंक दिया, जहाँ वह मर गयी। मदारी खूब बिलख-बिलख-कर रोया। अब उसे सुंदरी के बारे में भी भय होने लगा कि, कहीं वह भी पालासिंह के काबू में न आ जाये। सो बचनसिंह ने सुंदरी को लाहौर की एक कन्या पाठशाला में दाखिल करवा दिया और वहीं उसके रहने का भी प्रबंध कर दिया।

इस बीच जब पालासिंह से और कुछ न बन पड़ा, तो उसने एक रात बेचारे मदारी की झोंपड़ी में ही आग लगा दी। मदारी अंदर सोया पड़ा था। उठते-उठते आग की लपटों में घिर गया और बुरी तरह से जल-भुन कर मर गया।

कन्यादान

मेंहदी से रंगे हुए हाथ
लाल दुपट्टे में लिपटी हुई
अमूल्य स्वर्ण के आभूषण पहने
मांस की बोटी, कोख की बेटी।
वाह वाह दानी! वाह वाह दाता!
कितने भाग्यशाली!
जो कुछ मिल जाये, उसमें ही राजी।
दान करते जाते, पुण्य कमाते जाते,
गंगा स्नान करते जाते।
अब भी समझ रहे हैं,
उच्चतम दान—कन्यादान,
महादान महाकल्याण
कन्यादान—कन्यादान!
हो जाये कल्याण!
हीरा बोलता नहीं,
गाय कुछ कहती नहीं,
कन्या बेजुबान,
दान करो, खूब दान दो
दान देनेवालो जी-भर दान दो
कन्यादान—कन्यादान!

पंजाबी से रूपांतर : हरिवंश

—अमृता प्रीतम

सुंदरी ने जैसे-तैसे शिक्षा समाप्त की और लाहौर से वापस बचनसिंह के पास आ गयी। पास के गाँव के स्कूल में उसे अध्यापिका की नौकरी भी मिल गयी।

इन्हीं दिनों बचनसिंह के गाँव में लाला रामलाल की बेटी का ब्याह था। इस अवसर पर दिल्ली की प्रसिद्ध वेश्या अनवरजान का मुजरा भी होनेवाला था। दूर-दूर के गाँवों तक इसकी खबर फैल चुकी थी और लोग इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

परंतु बचनसिंह इसके विरुद्ध था। वह नहीं चाहता था कि, गाँव में ऐसा बेशर्मी-भरा मुजरा हो। पर गाँव का कोई व्यक्ति उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था।

और फिर जिस दिन बारात आयी, उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लूकोविटा चाय, कॉफी, दूध और ठण्डे पेय पदार्थों में लीजिये। एक प्याले या गिलास में इसे एक से तीन चाय चम्मच भर डाल कर हिलाइये। यह आसानी से घुल-मिल जाता है।

ग्लूकोविटा

अतिरिक्त शक्ति देता है

दैनिक आहार के पौष्टिक तत्वों की कमी को दूर करने के लिए ग्लूकोविटा आदर्श है। आप के शरीर में जिसकी बहुत ही आवश्यकता है, उस रक्तशक्कर की पूर्ति भी यही करता है।

मेहनत करनेवाले व्यक्तियों, खेलाड़ियों, बढ़ते हुए बच्चों, उम्मीदवार और बच्चों को पिलानेवाली माताओं के शरीर में शक्ति-भण्डार पैदा करने के लिए ग्लूकोविटा एक आदर्श साधन है।

अतिरिक्त शक्ति के लिए

ग्लूकोविटा

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्राइवेट लि.

कब्जियत और बवासीर

हमेशा कब्जियत रहने से बवासीर अथवा खूनी बवासीर की बीमारी हो सकती है। इसमें गुदा के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं। दर्द के कारण मल निकलने में बड़ी कठिनाई और परेशानी होती है। कब्जियत जोर पकड़ लेती है और बवासीर भी कष्टदायक हो जाती है। इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि बवासीर के कारण उत्पन्न दर्द और परेशानी दूर हो जाये तो मल निकलना आसान हो जाये। हाडेन्सा ठीक यही काम करता है। यह दर्द और खुजली से तुरंत आराम पहुँचाता है। इसके लगातार इस्तेमाल से बवासीर दब जाती है और पूर्ण आराम मिलता है। बवासीर की सुप्रसिद्ध जर्मन दवा हाडेन्सा में कोई नशीली चीज नहीं होती। इससे किसी प्रकार का धब्बा नहीं लगता और इसका इस्तेमाल भी आसान है। हर पेकेज के साथ प्लास्टिक की एक छोटी नली भी होती है और उसमें इसके इस्तेमाल का तरीका भी लिखा होता है। यदि बवासीर आपकी समस्या है तो हाडेन्सा उसका हल है। आज ही हाडेन्सा का इस्तेमाल कीजिये।

DZ 95

अब भारत में निर्मित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन शाम को मुजरा हुआ। यह बारात करमचंद के छोटे भाई की थी। जब मुजरा हो रहा था, तो करमचंद और पंडित राधे-कृष्ण, जो अब बूढ़े हो चुके थे, सबसे आगे बैठे हुए थे। वे शराब पी रहे थे और अनवर-जान पर रुपये न्योछावर कर रहे थे। अनवरजान बड़ी ही शोख अदाओं से खुद उनके जामों में शराब उड़ेल रही थी। लोग एक पर एक आवाजें कस रहे थे। अनवर-जान भी पूरी बेहयाई से नाच रही थी।

जब सुंदरी को बचनसिंह से पता लगा कि, मुजरा किसी हालत में भी नहीं रुक सका है, तो वह उस रात अनवरजान के डेरे पर खुद गयी। अनवरजान उस समय बेहद थकी हुई थी। पर सुंदरी को देखकर उसकी आँखों में चमक आ गयी। सुंदरी ने पूछा—"आखिर आपको इस काम से नफरत क्यों नहीं है?"

अनवरजान बोली—"नफरत? नफरत मुझे इतनी है कि, मैं बता नहीं सकती।"

"तो फिर बताइये, आप यह काम छोड़ क्यों नहीं देतीं?"

"छोड़कर जाऊँ कहाँ? मेरे लिए इस दुनिया में और कहाँ ठौर है?"

और फिर बातों-बातों में अनवरजान ने सुंदरी को अपनी सारी दुःख-भरी कहानी कह सुनायी। इस तरह अपनी-अपनी कहानी सुनाते-सुनाते एक क्षण ऐसा आया, जब दोनों को पता चला कि, वास्तव में वे आपस में माँ-बेटी ही हैं। हाँ, सुंदरी अनवरजान की बेटी थी और अनवरजान वास्तव में गुरदई थी। सुंदरी का स्यालकोट में उन दिनों जन्म हुआ था, जब ताराचंद गुरदई को निस्सहाय छोड़कर चला गया था। तब पड़ोस की मुसलमान स्त्रियों ने ही गुरदई को सम्भाला था। बाद में मुहल्ले के हिन्दुओं के आपत्ति उठाने पर वहाँ के चौधरी ने दया दिखाते हुए उससे कहा था कि, वह दिल्ली के किसी विधवाश्रम में चली जाये, वरना यहाँ जीना दूभर हो जायेगा। गुरदई के लिए अब

नृत्यांगना – एक वियेतनामी शिल्प

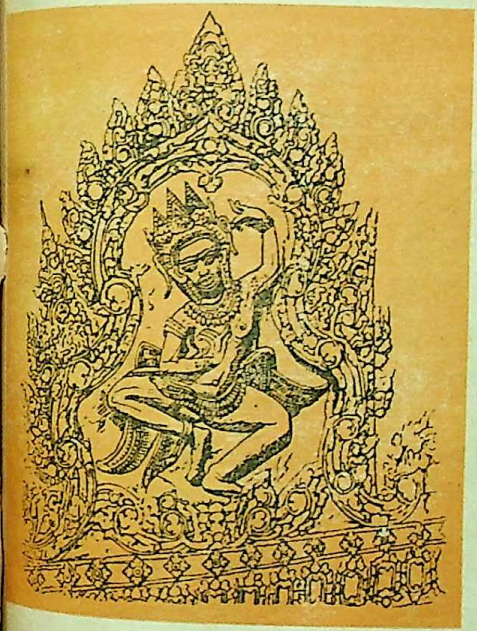

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके सिवा और क्या चारा था। दूसरे ही दिन वह चौधरी के साथ अपनी बच्ची को लेकर दिल्ली के लिए चल पड़ी। लेकिन रास्ते में चौधरी ने कहा कि, दूध पीती बच्ची के होते हुए उसे आश्रम में स्थान नहीं मिल सकेगा। इसलिए अगर वह चाहे, तो अपनी बच्ची को एक गाँव में उसके एक रिश्तेदार के यहाँ छोड़ दे। बड़ी होने पर वह उसे अपने साथ आश्रम में ले जा सकेगी।

सो गुरदई को अपनी बच्ची वहीं छोड़ देनी पड़ी। पर चौधरी की तो यह चाल थी। बजाय किसी रिश्तेदार के यहाँ छोड़ने के वह बच्ची को गाँव के बाहर एक पेड़ के नीचे रख आया था। यही बच्ची सुंदरी थी, जिसे मदारी ने अपनी बेटी की तरह पाला-पोसा था।

दिल्ली पहुँचने पर चौधरी गुरदई को एक सजे-सजाये घर में ठहराकर चला गया था। बाद में उसे पता चला कि, वह घर तो एक कोठा था, जहाँ वेश्याएँ रहती थीं। दरअसल चौधरी उसे वहाँ बेच गया था। गुरदई कई दिनों तक रोती रही। पर अब क्या हो सकता था? आखिर गुरदई ने अपना नाम अनवरजान रख लिया और नाचने-गाने का पेशा अपना लिया.....।

अनवरजान और सुंदरी एक-दूसरे से गले लगकर खूब रोयीं। माँ ने बेटी को गोद में लेकर बार-बार प्यार किया और बोली—"बेटी, अब मैं यह पेशा छोड़ रही

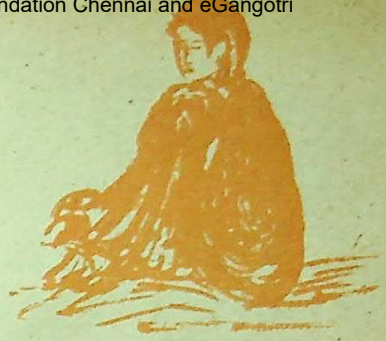

असहाय

चित्रकार : 'विवेक'

हूँ। वैसे भी मैं जो काम करना चाहती थी, वह अब पूरा हो जायेगा। मेरे दिल की आग आज रात को ठंडी हो जायेगी। मेरा सौतेला बेटा करमचंद, जिसने मेरी जायदाद हड़पकर मुझे घर से निकाल दिया था, आज यहाँ आया हुआ है। उसके साथ ही पंडित राधेकृष्ण भी है, जिसने मुझे ताराचंद के हाथ बेच दिया था। तुम जानती हो कि, वे मेरे पास क्यों आ रहे हैं? वे आ रहे हैं मेरे रूप व प्यार का दान माँगने और आज रात को मैं उन्हें दिल खोलकर यह दान दूँगी। मुझे बहुत दिनों से इस मौके का इंतजार था। बस, आज मैं करमचंद और राधेकृष्ण दोनों का खून पिऊँगी। स्यालकोट के उस चौधरी का खून तो मैं कब का पी चुकी हूँ, जो मुझे दिल्ली बेच गया था। आज करमचंद और राधेकृष्ण की बारी है। बस एक ही अफसोस है कि, ताराचंद आज तक नहीं मिला। यह अर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सशक्त साथी...

किर्लोस्कर

डिझेल एंजिन्स

प्रत्येक छोटे-बड़े राष्ट्र-निर्माण कार्य
कृषि, उत्पादन, खदान, मछली पकड़ने, निर्माण
में किर्लोस्कर डिझेल एंजिन
अपनी कमखर्ची, पोर्टेबल, विश्वसनीय शक्ति से
अत्यावश्यक रूपसे हाथ बटाती है
जहां कहींभी जरूरत हो, आवश्यकतानुसार
इसका इस्तेमाल किया जा सकता है

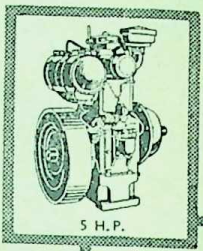
5 H.P.

20 H.P.

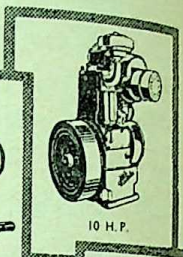
10 H.P.

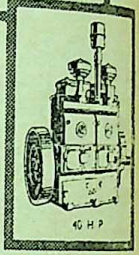
40 H.P.

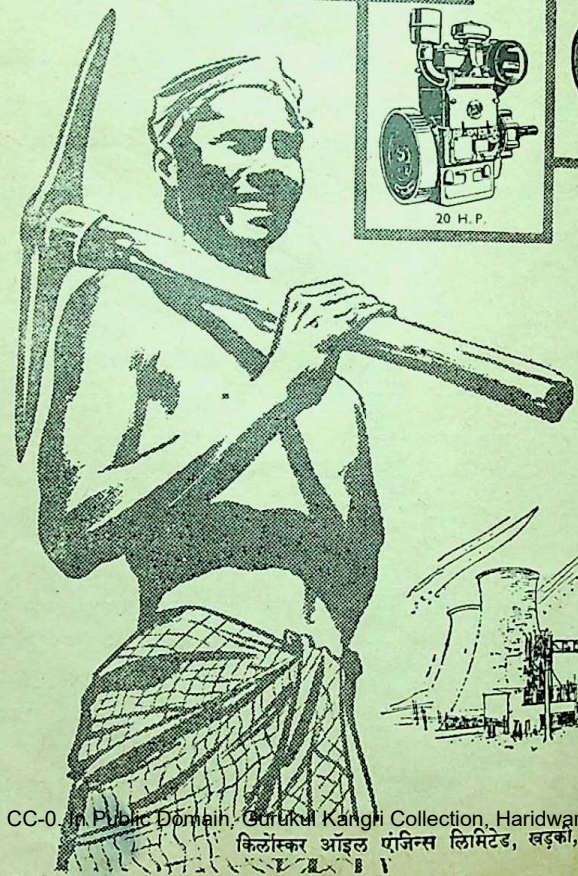

किर्लोस्कर ऑइल एंजिन्स लिमिटेड, खड़की, पूना-३, (भारत)

KOEL/H/1/61

TOM & BAI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान मेरे दिल में ही रह जायेगा। ओह, वह एक बार भी मिल जाती तो...!

तभी सुंदरी ने कहा—"माँ, तुम चिंता न करो। उसका लहू मैं पिऊँगी।"

इसके बाद सुंदरी लौट गयी। बचनसिंह से मिलने पर सुंदरी ने केवल इतना ही बताया कि, अब मुजरा नहीं होगा।

सुबह होने पर लोग मुजरा देखने की तैयारियाँ कर ही रहे थे कि, सारे गाँव में शोर मच गया कि, गाँव में तीन हत्याएँ हो गयीं—करमचंद, पंडित राधेकृष्ण और अनवरजान की। जिसने भी सुना, आश्चर्य-चकित रह गया।

पालासिंह ने इस मौके को स्वर्ण अवसर समझा। उसने सोचा, क्यों न हत्या के जुर्म में बचनसिंह को फँसा दिया जाये और उसने अपने साथियों के साथ गाँव-भर में फैला दिया कि, ये तीनों खून बचनसिंह ने ही किये हैं। क्योंकि वह शुरू से ही इस मुजरे के खिलाफ था।

अंत में पुलिस आयी और शक में बचनसिंह को पकड़ लिया गया। मुकदमा शुरू हुआ। पालासिंह ने पुलिस के साथ साँठ-गाँठ करके बचनसिंह के खिलाफ गवाही वगैरा का सारा इंतजाम किया हुआ था। बचनसिंह छूटता नजर नहीं आ रहा था। सुंदरी ने अदालत में अनवरजान की सारी कहानी सुनायी। उस रात की अपनी मुलाकात का भी जिक्र किया और बताया कि, ये तीनों खून उसके हाथों हुए हैं। पर उसकी इन बातों पर कौन विश्वास करता! बचनसिंह को फाँसी की सजा सुना दी गयी।

इसी दौरान में ज्ञानी दीदारसिंह बचनसिंह के गाँव में आये हुए थे। उन्होंने बहुत दौड़-धूप की; पर बचनसिंह नहीं बच सका। जिस दिन बचनसिंह को फाँसी होनेवाली थी, उसी दिन सुंदरी और दीदारसिंह उससे आखिरी बार मिले। दीदारसिंह ने जेल में ही बड़ी साधारण रीति से बचनसिंह और सुंदरी का विवाह कराया। दोनों ने एक-दूसरे को फूलों के हार पहनाये।

बचनसिंह को फाँसी लगने के बाद, सुंदरी के सामने प्रश्न था कि, अब वह कहाँ जाये। दीदारसिंह की सलाह से उसने बचनसिंह के घर जाना ही ठीक समझा। बचनसिंह की माँ अब अकेली ही रह गयी थी। लेकिन गाँव पहुँचने पर उसे पता लगा कि, अब पालासिंह उसका पीछा छोड़नेवाला नहीं है।

उसे रात-भर नींद नहीं आयी। बड़ी देर तक बेचैनी से करवटें बदलती रही। फिर अचानक उसे न जाने क्या सूझा। वह उठी और चुपके-से घर के बाहर निकल पड़ी। वहाँ से वह पालासिंह के खेतों में पहुँची, जहाँ एक छोटी-सी झोपड़ी थी। उसे अंदर कुछ आदमियों के बातचीत करने की आवाज सुनाई दी। उसने एक तरफ से झाँककर देखा, पालासिंह अपने दो साथियों के साथ शराब पी रहा है और नशे में झूमता हुआ अभिमान से बता रहा है कि, किस तरह सुबह होते ही वह सुंदरी को उड़ा ले जायेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूंजी लगाने वालों को निमन्त्रण

आन्ध्र प्रदेश में शक्तिशाली और परिश्रमी व्यक्तियों के अलावा अपनी भौगोलिक स्थिति, कई प्राकृतिक विशेषताओं और विशाल खनिज धन के कारण पर्याप्त औद्योगिक सम्भावनाएँ हैं। प्रान्त में प्रचुर मात्रा में कोयला प्राप्य है और सिंगरेनी की खानें शीघ्रता से अपना उत्पादन बढ़ा रही हैं। पंचवर्षीय योजनाओं में बिजली का उत्पादन बढ़ाया जा रहा है –दूसरी पंचवर्षीय योजना के अन्त में जो १२९,५७० कि. वा. है तीसरी पंचवर्षीय योजना काल में ५४२ कि० वा० और अधिक बढ़ जाने की सम्भावना है।

साहसी व्यक्तियों को प्रान्त में नए उद्योग आरम्भ करने में प्रोत्साहित करने के लिए राज्य की सुनिश्चित योजना के अन्तर्गत सरकार ने तीन नये निगमों की स्थापना की है जो उचित उद्योग-धन्धों के लिए आर्थिक सहायता देंगे :- एक बड़े उद्योगों के लिए, एक लघु उद्योगों के लिए और एक खनिज के लिए।

इस प्रकार आन्ध्र प्रदेश नये उद्योगों के लिए एक अच्छा क्षेत्र और पूंजी लगाने वालों के लिए लाभप्रद अवसर है।

डी. आई. पी. आर. ए. पी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदरी ने मौका देखकर जेब से दियासलाई निकाली और झोपड़ी में आग लगा दी। अंदर से चीखन-चिल्लाने की आवाजें आयीं और बचने की दौड़-धूप होने लगी। तभी झोपड़ी की छत धड़ाम से नीचे गिरी और अंदर की आवाजें सदा के लिए बंद हो गयीं।

सुंदरी वहाँ कुछ देर खड़ी जलती हुई झोपड़ी को देखती रही। फिर उसने उधर से आनेवाले बहुत-से लोगों के कदमों की आवाज सुनी। वह वहाँ से भागी। जब कुछ लोग उसके नजदीक आये, तो सुंदरी ने पास के पुल से उछलकर नीचे नदी में छलाँग लगा दी। वह डूबी....और फिर ऊपर न आयी। लोग कुछ देर तक उसी ओर देखते रहे। फिर उन्होंने सोच लिया कि, अवश्य ही सुंदरी नदी की तेज धारा में बह गयी और मर गयी।

व्यथा-विमूढ़

रोदाँ का एक शिल्प

× × ×

यहाँ आकर गुप्तेश्वर ने पढ़ना बंद कर दिया। स्टेशन मास्टर की आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे।

गुप्तेश्वर ने कहा—"अरे रे! आप तो रो रहे हैं। अच्छा अंतिम अध्याय मैं अभी रहने देता हूँ। यों भी वह अभी अधूरा है।"

"नहीं नहीं।" स्टेशन मास्टर ने आँसू पोंछते हुए कहा—"सुनाइये, अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। पूरी कहानी सुनकर ही मुझे संतोष होगा।"

गुप्तेश्वर ने फिर पढ़ना शुरू किया। और जब उसने उपन्यास समाप्त करके स्टेशन मास्टर की ओर देखा, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

स्टेशन मास्टर ने चौंककर कहा—"अरे, रुक क्यों गये गुप्तेश्वरजी, आगे पढ़िये न।"

"बस....।" गुप्तेश्वर ने कहा—"यह खत्म हो गया है। इसका अंतिम अध्याय अधूरा ही है।"

स्टेशन मास्टर कुछ देर चुप रहा। फिर उसने पूछा—"गुप्तेश्वर साहब, एक बात पूछूँ? इस उपन्यास में सचाई कहाँ तक है? यह कहानी कोरी काल्पनिक तो नहीं हो सकती।"

"नहीं नहीं, यह बिल्कुल सच्ची कहानी है। खुद सुंदरी ने ही मुझे सुनायी थी।"

सुंदरी का नाम सुनते ही स्टेशन मास्टर के चेहरे पर पसीने की बूँदें चमकने लगीं। उसने पूछा—"तो क्या सुंदरी जीवित है?"

"नहीं, नदी में डूबने से एक-दो दिन पहले ही उसने मुझे यह सारी कहानी सुनायी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सॅफोला

विवेकी
गृहिणी सिर्फ
सर्वोत्तम वस्तु ही
खरीदती है....

रीफाइन्ड (सफ्लाअर) करडी तेल

एक मात्र 'एल' तत्ववाला आदर्श पकाने का तेल है। खून में कालेस्ट्रोल की मात्रा को कम करता है। सॅफोला से पकाया हुआ भोजन आपको तन्दुरुस्त और उत्साही रखता है।

दी बोम्बे आईल इन्डस्ट्रीज प्रा० लि० बम्बई ३
द्वारा निर्मित

मुहासों से मैं परेशान थी...

जिल्द की बीमारियों का शीघ्र इलाज --- लिचेन्सा

सब दवाइयों की दुकानों में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी । पर . . . पर यह उपन्यास मेरे भी जीवन की तरह ही अधूरा रह गया है । मैं चाहता था कि, मरने से पहले ही इसे समाप्त कर लेता । अब मेरे जीवन का भी अंतिम अध्याय ही बाकी है ।"

"यह क्या कह रहे हैं गुप्तेश्वर साहब ?"

"ठीक ही कह रहा हूँ । अब मेरी मौत बहुत नजदीक है । पर एक अरमान अभी भी मेरे मन में बाकी है । अगर आप मेरी कुछ सहायता कर सकें, तो . . . ."

"कहिये, कहिये, मैं अगर कुछ भी कर सका, तो अपना परम सौभाग्य मानूँगा ।" स्टेशन मास्टर ने उत्सुकता से पूछा ।

"आप यहाँ बहुत अर्से से रह रहे हैं । आपकी बहुत जान-पहचान होगी । अगर आप एक आदमी को ढूंढ़ने में मेरी मदद कर सकें, तो मैं मरने से पहले उससे एक बार जरूर मिलना चाहता हूँ । उसकी शक्ल-सूरत का मुझे कुछ भी पता नहीं है । बस, नाम ही जानता हूँ—ताराचंद । पहले वह स्यालकोट में रहता था ।"

छलना
एक प्राचीन-ईरानी चित्र की अनुकृति

स्टेशन मास्टर कुछ देर चुप रहा । फिर उसने कहा—"हाँ, हाँ, याद आ गया । इस आदमी को तो मैं जानता हूँ । हमारी कभी-कभी मुलाकात भी होती रहती है ।"

गुप्तेश्वर सुनकर उछल पड़ा—"तब तो मुझे उससे जरूर मिलाइये । मैं आपका सारी उम्र आभारी रहूँगा ।"

स्टेशन मास्टर ने कहा—"आप कहें, तो मैं उसे यहीं बुलवा देता हूँ । अच्छा, उसे कल शाम को यहाँ बुला लाऊँगा । आप तब तक इस उपन्यास का शेष भाग भी पूरा कर लें ।"

दूसरे दिन शाम को दरवाजे पर दस्तक हुई । गुप्तेश्वर ने दरवाजा खोला, तो सामने एक व्यक्ति खड़ा था । उसने कहा—"मेरा नाम ताराचंद है । स्टेशन मास्टर साहब को कुछ काम पड़ गया है । इसलिए मैं अकेला ही आ गया हूँ । वे कुछ देर में आयेंगे ।"

गुप्तेश्वर ताराचंद को कमरे में ले गया । उसकी आँखों पर काला चश्मा था । सिर पर बेढंगी-सी पगड़ी थी । ओवरकोट के कालर ऊपर उठे हुए थे ।

कुछ देर दोनों चुप रहे ।

आखिर गुप्तेश्वर ने कहा—"मैं बहुत दिनों से तुम्हारी तलाश में था । दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ऐसा कोमल, ऐसा शीतल
ऐसा शानदार...जी चाहता है
कि मैं खुद ही पहन लूं"

अफसोस है, क्योंकि बिन्नी की दूध-सी सफेद कंकरर शर्टिंग व पंखुड़ियों-सा कोमल कंसल साटिन ड्रील केवल पुरुषों के लिये हैं। इन्हें पहनकर ये सब लोग कैसे प्रतिष्ठित और सुन्दर लगते हैं! दोनों कपड़े ऐसे मजबूत हैं कि वर्षों टिकते हैं।

कंसल* — सफेद साटिन ड्रील

कंकरर* — शानदार पापलिन शर्टिंग

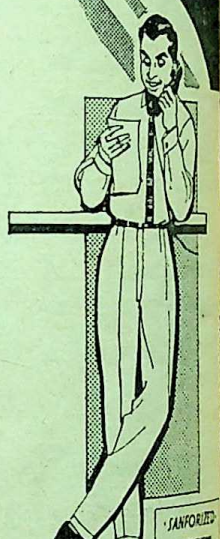

*सनफोराइज़्ड क्लुयेट, पीबाडी ऐण्ड कं. यू० एस० ए० के रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क

अपनी जरूरत के मुताबिक बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकारप्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइनबोर्ड लगा है।

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कम्पनी लि०
बिन्नी ऐण्ड कं० (मद्रास) लि० की सहायतायुक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शब्दों में मैं तुम्हारा खून पीने के लिए तरस रहा था। इसीलिए आज तक जिंदा हूँ।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

गुप्तेश्वर गुस्से से काँप रहा था। वह उठा—"ठहरो, अभी मतलब समझाता हूँ।" और उसने ताराचंद को कमीज के कालर से पकड़ लिया। और पूछा—"तुम गुरदई को जानते हो?"

"हाँ, वह मेरी पत्नी थी।"

"और तुम उसे दुःखों में छोड़कर भाग गये थे न?"

ताराचंद कुछ न बोला।

"आज मैं उसका बदला लूँगा। वह तो मर गयी है; पर उसके बदले आज मैं तुम्हारा खून पिऊँगा।" यह कहते हुए गुप्तेश्वर ने अपनी जेब में से कटार निकाली।

ताराचंद अभी भी चुप था।

"बोलते क्यों नहीं?" गुप्तेश्वर ने उसे जोर से झकझोरा और झकझोरते ही ताराचंद की ढीली-सी पगड़ी सिर से उतरकर नीचे गिर पड़ी और साथ ही उसका काला चश्मा भी उतर गया। गुप्तेश्वर उसकी शक्ल देखकर हैरान रह गया। यह तो खुद स्टेशन मास्टर ही था। गुप्तेश्वर का कटारवाला हाथ नीचे आ गया।

स्टेशन मास्टर अभी भी चुप खड़ा था।

एक क्षण के लिए गुप्तेश्वर का कटारवाला हाथ फिर ऊपर उठा; पर दूसरे ही क्षण फिर नीचे आ गया। और उसने हाथ से कटार दूर फेंक दी।

अब सारा भेद खुल चुका था। गुप्तेश्वर स्टेशन मास्टर के रूप में ताराचंद को पहचान चुका था और फिर कुछ बातचीत के बाद ताराचंद ने भी गुप्तेश्वर के रूप में अपनी बेटी को पहचान लिया था। दोनों एक-दूसरे से गले लगकर मिले। ताराचंद ने अपने पापों का पश्चात्ताप करते हुए एक बार कटार उठाकर आत्महत्या करनी चाही; पर सुंदरी ने उसे रोक दिया।

बाद में सुंदरी ने बताया कि, नदी में कूदने के बाद वह डूबकर मरी नहीं थी। आगे जाने पर उसे एक माँझी ने बचा लिया था। बच जाने पर उसे डर था कि, कहीं उसे पुलिस न पकड़ ले। इसलिए उसने मर्दाना वेश धारण कर लिया। लिखने का उसे पुराना शौक था। सो उसने लिखना शुरू कर दिया। बचनसिंह की माँ को उस पर जिम्मेदारी थी। वह उसे हर महीने कुछ रुपये भेजती थी। अगर यह जिम्मेदारी न रहती और ताराचंद से बदला लने की भावना न होती, तो वह कभी की आत्महत्या कर लेती।

ताराचंद ने भी अपनी सारी राम-कहानी सुंदरी को बता दी। कुछ समय तक वह शराबियों और जुआरियों के साथ रहा। बाद में उसमें परिवर्नन आया और यहाँ नौकरी मिल गयी। तभी से वह यहाँ रह रहा था।

इसके बाद ताराचंद बाजार से सुंदरी के लिए कपड़े लाया, ताकि वह मर्दाना वेश बदलकर असली रूप में आये।

काफी रात गये तक बातें होती रहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर वे सो गये। ताराचंद को बड़ा चाव था कि, सुबह होने पर वह अपनी बेटी को असली रूप में देख सकेगा।

सुबह होने पर ताराचंद बेटी सुंदरी को जगाने गया। लेकिन उसके कमरे में जाकर देखा, तो देखता रह गया। सुंदरी जनाने लिबास में लेटी हुई थी और उसकी छाती में कलवाली कटार घुसी हुई थी। चारों ओर खून फैला हुआ था। पास ही एक [illegible] पड़ा था, जिसमें सुंदरी ने लिखा था कि, [illegible] अब इस संसार से सदा के लिए जा [illegible] है। उसके सारे काम पूरे हो गये हैं। [illegible] वह अपने प्रियतम के पास जा रही है। [illegible] उसके बिना वह इस दुःख-भरे संसार [illegible] अब उसके लिए रहना सम्भव नहीं है।

ताराचंद फूट-फूटकर रोने लगा।

तटस्थ - नीति

महर्षि उतथ्य यज्ञवेदी पर बैठे थे। उनके हाथ में घृतपात्र था। हवन-कुंड में प्रज्वलित अग्नि की शिखाएँ उनके तेजस्वी मुख को और भी दीप्ति प्रदान कर रही थीं। वे तारस्वर से ऋचाओं का उच्चारण कर रहे थे। दायीं ओर उनकी कुटी थी, जिसे स्पर्श करता हुआ प्रशस्त अरण्य-मार्ग था। बायीं ओर माँ नर्मदा की सहस्र धाराएँ तरंगों से कगारों को थपथपाती हुई बह रही थीं।

सहसा किसी के तेजी से दौड़ने का शब्द सुनकर महर्षि की दृष्टि कुटी के द्वार की ओर उठ गयी। उन्होंने देखा कि, एक भयग्रस्त मृगशावक शीघ्रता से कुटी में घुस रहा है। उनका मन व्यग्र हो उठा। तभी एक व्याध आकर उनके सामने खड़ा हो गया, बोला– "हे ऋषि, क्या तुमने मेरे शिकार को यहाँ से गुजरते देखा है? वह किस दिशा में गया है, क्या बता सकते हो?" महर्षि ने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला था। मिथ्या-भाषण उनके लिए आत्मघात से गुरुतर अपराध था। एक निरीह प्राणी का पता उसके जीवन-घाती को दे दें, यह भी उनके लिए असम्भव था। सत्य और अहिंसा के वे उपासक थे; सत्य और अहिंसा में से एक का वरण करने का अवसर आ पहुँचा था। वे अभी असमंजस में थे कि, व्याध ने अपना प्रश्न फिर दोहराया।

महर्षि कुछ निश्चित कर पाते, इसके पूर्व उनकी वाणी फूट पड़ी –"हे व्याध, मैं क्या बताऊँ। देखने का कार्य आँखें करती हैं; वे बोल नहीं सकतीं। बोलने का कार्य जिह्वा करती हैं; वह देख नहीं पाती। तू तो बोलनेवाली इंद्रिय से प्रश्न कर रहा है। भला वह क्या बोले? उसने कुछ देखा ही नहीं है।" व्याध हतबुद्धि हो चला गया।

कहते हैं, महर्षि के मुख से निकले इस वचन से बौद्धिक क्षेत्र में एक नवीन साधना का जन्म हुआ, जिसका विकसित रूप आजकल के तटस्थ देशों की विदेश-नीति में देखने को मिलता है।

– स्वामी शरण सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वापुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मीलता है.

GUJARAT

बी. ए. ऐंड ब्रदर्स : बम्बई-२

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनसदा से पौष्टिक आहार बनाइये

वनसदा

अ और ड
विटामिनयुक्त वनस्पति

वनसदा से आहार की पोषणशक्ति बढती है। वनसदा पौष्टिक और ताजा होता है। वनसदा इस्तेमाल कीजिये और देखिये यह सात्विक आहार कितने स्वाद से खाया जाता है।

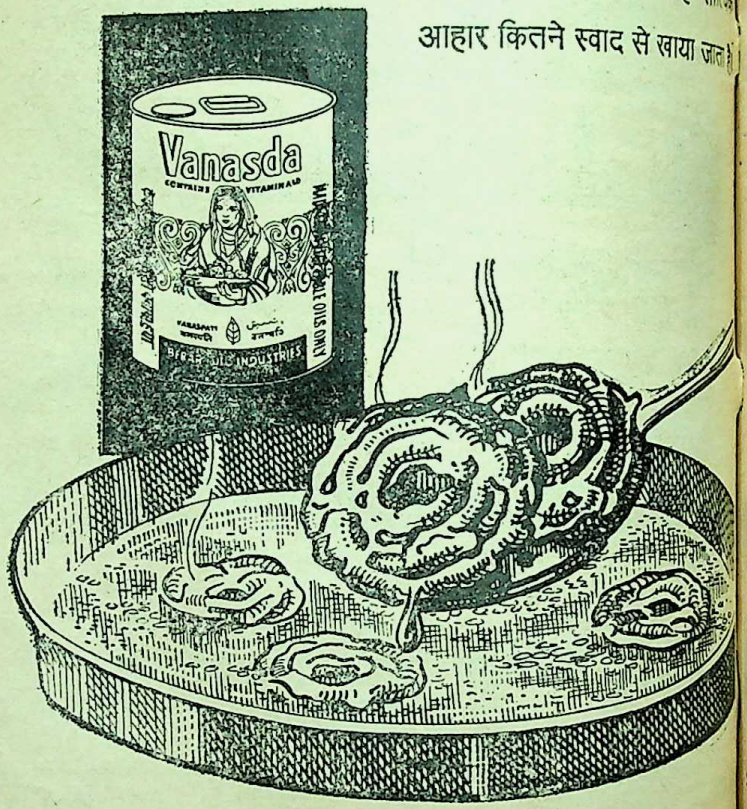

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बेरार आईल इंडस्ट्रीज, अकोला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंकिंग

राष्ट्रीय सम्पदा को बढ़ाती है

पंजाब नैशनल बैंक राष्ट्र के उद्योग, कृषि और व्यापार की सेवा करता है।

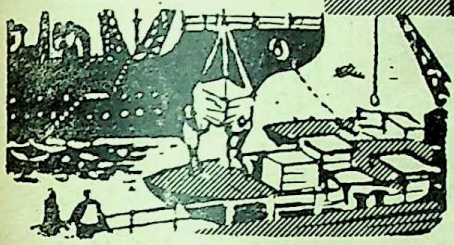

प्रत्येक प्रकार का बैंकिंग व्यापार होता है।

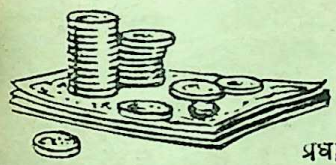

दि पंजाब नैशनल बैंक लि०

संस्थापित १८९५

प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी
खाँसी जल्द
ही मिटा
जायगी

गले और सीने
का कष्ट मिटानेवाली

पेप्स टिकियाँ लीजिए

पेप्स टिकियां चूसिए और फिर अनुभव कीजिये कि इनकी गुणकारी भाप दर्द मिटाने में किस खूबी से कारगर है और गले का दर्द, ब्रोंकाइटिस, खाँसी या सर्दी–जुकाम पैदा करनेवाले रोगाणुओंका कितनी जल्दी नाश करती है। पेप्स फौरन आराम देकर इन शिकायतों को शीघ्र दूर करती हैं।

FPY 54 HIN

पेप्स में
कोई नुकसानदेह
दवा नहीं
ये बच्चों को बेखटके दी
जा सकती हैं
ब्रांकाइटिस,
गले का दर्द,
नज़ले, जकड़न,
सर्दी और खाँसी
में शीघ्र आराम
पहुँचाती हैं
सभी औषधि-विक्रेताओं
के यहाँ प्राप्य

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट
केम्प एन्ड कं. लि., पो. बा. ९३७

भारत सरकार से रजिस्टर्ड

सफेद दाग

यह हमारी दवा सन १९३६ से प्रसिद्ध है। इस दीर्घकाल में हजारों ने इसकी परीक्षा कर हमें प्रशंसा के भेजे हैं। आप भी एक बार अनुभव कर देखिये। दवा का मूल्य ५) रु० डाकव्यय १।) रु०। अधिक विवरण मुफ्त मंगाकर देखिये।

वैद्य के. आर. बोरकर (नीति)
आयुर्वेद भवन,
मु० पो० मंगरूलपीर
जिला **अकोला** (महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेक्स जेली

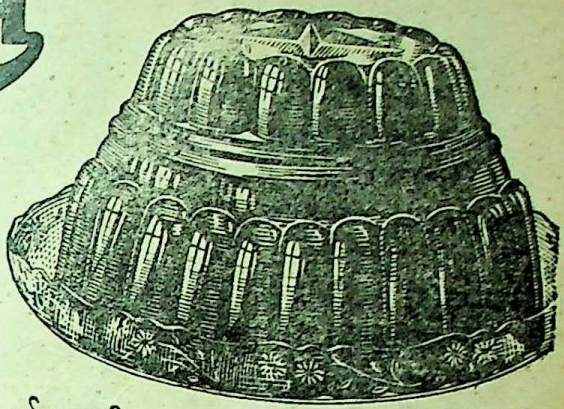

देखने में अच्छी...

खाने में अच्छी...वाकई अच्छी...

यह रहा स्वादिष्ट और फलों की खुशबू से भरपूर पकवान! आप इसे बड़ी आसानी से तैयार भी कर सकते हैं। गर्म पानी में रेक्स जेली क्रिस्टल्स को घुलने दीजिये। फिर उसमें इतना ठंडा पानी मिलाइये कि घोल १ पाइंट (२० औंस) तैयार हो जाय। अब इसे बर्तन में डाल दीजिये और जेली को बर्फ पर जम जाने दीजिये।

यह पचने में आसान, पौष्टिक और घर में सब को सुहानेवाली चीज है। बीमारी के बाद तो खाने के लिए आदर्श!

रेक्स जेली क्रिस्टल्स इन ६ फलों के मधुर स्वाद में आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं: रसबेरी, स्ट्राबेरी, लेमन, पाइनेपल, ऑरेंज़, चेरी।

कॉर्न प्रॉडक्ट्स कं. (इण्डिया) प्रा. लि., बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य के लिये..

त्वचा सुकोमल रखता है

रेमी स्नो

ए. व्ही. आर. ए. ॲण्ड कं

बम्बई १

परिवार नियोजन के लिए

सरल और सुरक्षित साधन

प्लानीटैब

टिकियां

+ डाक्टरी राय लीजिए

हिन्द केमिकल्स लि., कानपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी

युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूँजी ८,००,००,०००
लागत पूँजी ४,००,००,०००
चुकती पूँजी २,००,००,०००
सुरक्षित कोष २,०५,००,०००

शाखाएँ

भारत में :—सभी प्रमुख नगरों तथा व्यापारिक व औद्योगिक महत्व के सभी कस्बों में ।
पाकिस्तान में :—चटगांव व करांची ।
बर्मा में :—रंगून, मोलमेन, मांडले ।
मलाया में :—पेनांग, क्वालालुमपुर, क्लांग ।
सिंगापुर में :—दी आलमीड़ा स्ट्रीट, सेरांगून रोड ।
यू० के० – लंदन ।
अन्य – हांगकांग और काझलून ।
एजेंट – विश्व में हर जगह ।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक सम्बंधी सेवा प्रदान करती है ।

जी० डी० बिड़ला
चेयरमैन

एस० टी० सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्मोल

सफेद बालों को काला और चमकीला बनाता है

वस्मोल एक असली वैज्ञानिक नुस्खा है जो अपने एक ही फ़ार्म्युले में सही ढंग से बालों को काला करता है, बालों को निरोग रखता है और बालों के सुगठित विन्यास के लिए उत्कृष्ट है—तो भी इसकी कीमत किसी भी अच्छे केशतेल से ज़्यादा नही है।

वस्मोल

केश काला करनेवाला जो अपना वादा पूरा करता है

वस्मोल तेलयुक्त सफेद तिल केशतेल और पोमेड इन दो रूपों में सभी स्टोर्स व केमिस्टों के यहां मिलता है।

लेनोलिन से परिपूर्ण-वस्मोल आपके बालों के लिए सर्वोत्तम है।

उत्पादक :

हाइजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट,

पोस्ट बॉक्स ११९२, बम्बई-१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

TESY-14 HIN

टाटा का
ओ डि कोलोन
साबुन

ओ डि कोलोन की खुशबू से युक्त और सुनहरे रैपर में बन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसे मत भूलिए !

'नवनीत' के ग्राहकों को सूचना

१) पत्र-व्यवहार में अपना ग्राहक-क्रमांक या रसीद-संख्या अवश्य लिखें।

२) ग्राहक-क्रमांक देने से आपकी शिकायत और सूचनाओं पर हम शीघ्र और सुभीते से ध्यान दे सकेंगे ।

३) 'नवनीत' की प्रतियाँ पिछले माह के आखिरी सप्ताह में आपको भेजी जाती हैं। प्रति न मिलने की शिकायत मास की १० तारीख के बाद की जा सकती है।

४) यदि आपको अपने पते में परिवर्तन कराना हो, तो उसकी सूचना माह की १५ तारीख तक हमारे दफ्तर में भेज दें ।

५) बहुत थोड़े समय के लिए हम पते में परिवर्तन नहीं कर सकेंगे । अतः आप अपने डाकघर से ऐसी व्यवस्था कर लें कि, वह आपकी डाक नये पते पर भेज दे।

६) नये ग्राहकों को चंदा भरते समय पूरा पता साफ अक्षरों में लिखना चाहिए।

हर वर्ष की भाँति

नवनीत

का नवम्बर अंक

दीपावली विशेषांक होगा

मूल्य १)५०

अपनी प्रति सुरक्षित कर लें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

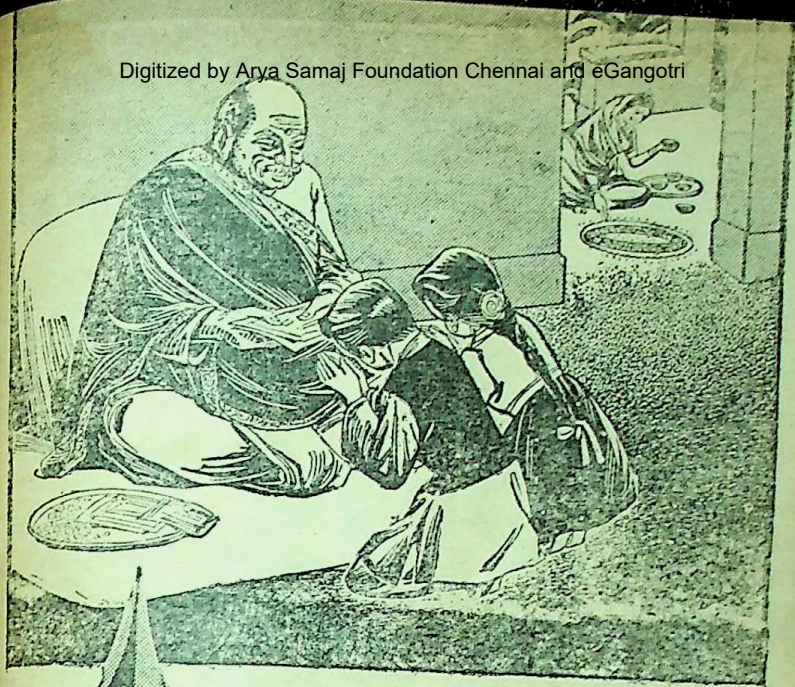

सब शुभ अवसरों पर भेंटस्वरूप

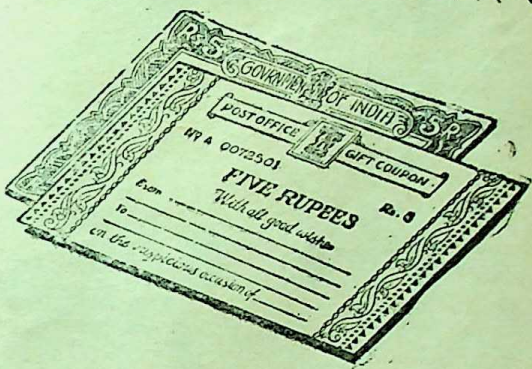

प्राइज़ बांड

और

भेंट कूपन दीजिए

किसी भी पोस्ट आफिस से खरीदें।

गुजरात सरकार द्वारा प्रकाशित

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

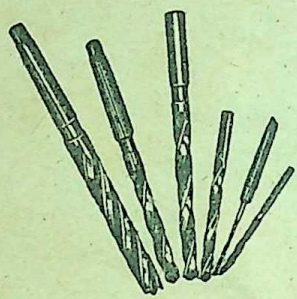

ड्रिल

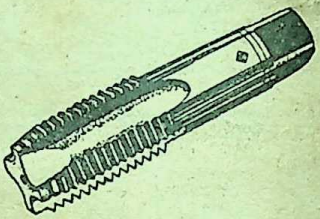

टैप

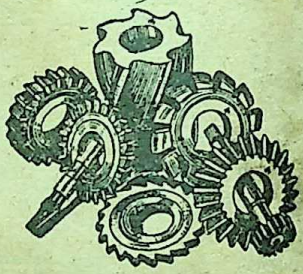

कटर

दी इंडियन टूल
मैन्यूफेक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्यों न आप सबसे बढिया मोटर ऑयल ही खरीदें...

इस ऑयल के इस्तेमाल से इंजिन की शक्ति की हानि में ५०% कमी हो जाती है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया मल्टिग्रेड

(यह राख नहीं छोड़ता!)

इस नये मोटर ऑयल के इस्तेमाल से इंजिन की शक्ति की हानि में ५०% कमी हो जाती है। विशेषज्ञों का यह कहना है कि इंजिन को लुब्रिकेट करनेवाले तेलों में से यह पिछले दस वर्षों की सर्वोत्तम खोज है। वर्षों की खोज, अनुसंधानशाला में कठोर से कठोर जाँच-परख और सड़कों पर १२½ लाख मील इंजिनों को चला चुकने के बाद नया शेल X-100 मल्टिग्रेड तैयार किया गया है।

नया मल्टिग्रेड आप की कार के लिए क्या कुछ कर सकता है

नया मोटर ऑयल आप के इंजिन को साफ़ रखता है, जिस से:

* मोटर पहिले से जल्दी स्टार्ट होती है
* एक्सिलेरेशन जल्दी पकड़ती है
* लिटर से पहिले से अधिक किलोमीटर चलती है
* बैटरी ज़्यादा दिन चलती है
* इंजिन की आयु ज़्यादा लम्बी हो जाती है
* कार को पहिले की अपेक्षा अधिक समय के बाद ओवहारल कराने की आवश्यकता पड़ती है

नया शेल X-100 मल्टिग्रेड राख नहीं छोड़ता।

क्यों न आप सब से बढ़िया मोटर ऑयल ही खरीदें।

चूँकि इस से इंजिन की आयु कई गुना अधिक बढ़ जाती है इस लिए यह महँगा होते हुए भी अन्त में सस्ता पड़ता है।

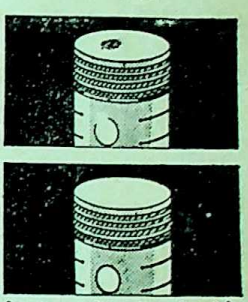

चित्र 'A', सामान्य तेल अपनी राख छोड़ जाते हैं। चित्र 'B', शेल X-100 कोई राख नहीं छोड़ता। यही कारण है कि इससे नई कारों की शक्ति की हानि में ५०% कमी हो जाती है। जिन कारों में राख संचित से जमी हुई हो उनके इंजिनों की खोई हुई शक्ति फिर मिल जाती है।

शीघ्र परिणामों के लिए इंजिन का पुराना तेल निकालिए, साफ़ कीजिए और फिर नया शेल X-100 मल्टिग्रेड डालिए। क्यों न आप सब से बढ़िया मोटर ऑयल ही खरीदें।

और शेल-शेल जो दावा करता है वह पूरा करता है।

वार्षिक मूल्य १०) मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जैसे उषा की लजीली लालिमा
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जैसे गुलाब की शर्मीली

गुलाबी

रंग में अब आपका ब्रीज़

सौंदर्य साबुन

ब्रीज़...सुंदर, अति सुंदर...गुलाबी रंग में रचा हुआ! ब्रीज़...ऐसे सुहाने, मनमोहने गुलाबी रंग में, जो इस के छबीले गुलाबी आवरण की तरह आकर्षक है! अति कोमल, अति मुलायम, भोर के शीतल झोंके जैसी मनोहर सुगंधवाला...ब्रीज़!

जी हाँ...आपका संपूर्ण सौंदर्य जगमगा उठेगा...अनुपम गुलाबी ब्रीज़ से!

गुलाबी ब्रीज़ – अधिक सुंदर रंगरूप के लिए

BZ 17-796 III

हिंदुस्तान लीवर लि. ने इंग्लैंड कम्पनी लि. लन्दन के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेहनत का नाम नहीं चिन्ता का काम नहीं !

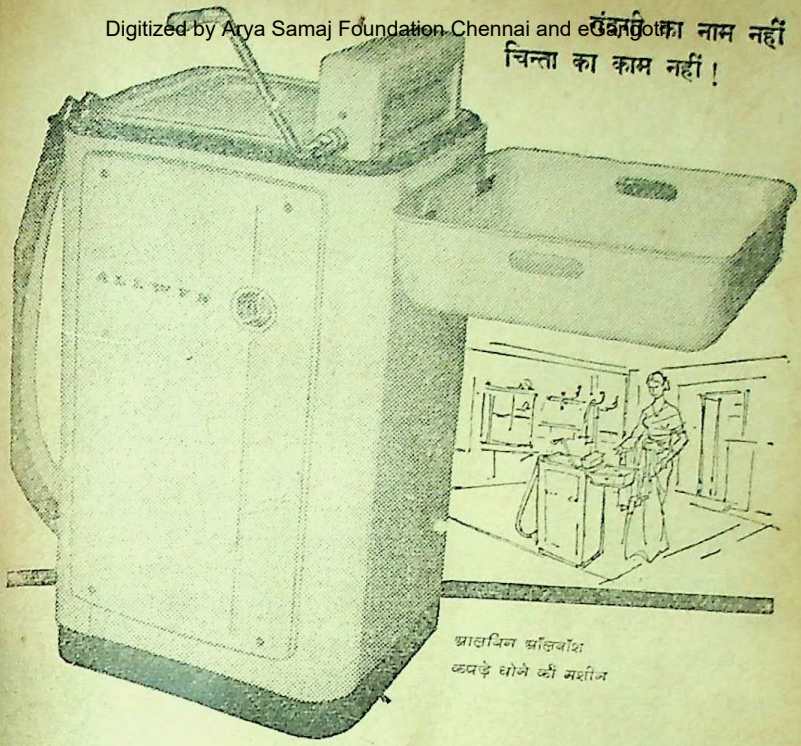

आलविन ऑलवॉश
कपड़े धोने की मशीन

जब नौकर मिलना दिन प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है तब कम मेहनत वाली घरेलू मशीनें भारतीय गृहणियों के लिए वास्तविक आनन्द की बात होगी। मैले कपड़ों का धोना उनके लिए एक अप्रिय दैनिक कार्य रहा है। पुनः हमारे देश में मशीन का उपयोग हाल तक शून्य के बराबर था।

भारत में प्रस्तुत, सर्वप्रथम व एकमात्र कपड़े धोने की मशीन —आलविन ऑलवॉश—भारतीय गृहणियों की सुविधाओं को विशेष रूप से ध्यान में रख कर बनायी गयी है।

सरलता इस मशीन की एक विशेषता है। इसकी कार्य-प्रणाली अत्यन्त सरल है। बिजली का प्रग लगाकर स्विच दबाते ही कपड़े पहले साबुन के पानी में और फिर साफ पानी में धुल जाते हैं। हैन्डिल घुमाते ही वे इतनी जल्दी से निचोड़े जाते हैं कि अगर हाथ से निचोड़े जाँय तो दुगुना समय लगे। फिर सब कपड़े एक बड़े बर्तन में जमा हो जाते हैं—धूप में पसार कर सूखने के लिए।

इस मशीन में एक हल्की, मगर शक्तिशाली मोटर लगी है जिसमें बिजली का अत्यन्त निर्भरयोग्य यंत्र फिट है।

इसकी अपूर्व 'ओवर फ्लो'-प्रणाली, चौड़ा हैंडिल, बड़े और मोटे रोलर, पानी के छींटों से आपको बचाने वाला ढकन और ४ चक्के जिन पर मशीन आसानी से हटाई जा सकती है। इन्हीं कारणों से यह ऑलवॉश गृहणियों के लिए अत्यन्त उपयोगी और तुरन्त काम लेने लायक मशीन है।

हैदराबाद आलविन मेटल वर्क्स लिमिटेड
सनतनगर—हैदराबाद-१८

AP-HAM-8-61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

प्रधान कार्यालय २, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

अधिकृत पूंजी	.....८,००,००,०००
लागत पूंजी	.....४,००,००,०००
चुकती पूंजी	.....२,००,००,०००
सुरक्षित कोष	.....२,०५,००,०००

शाखाएँ

भारत में :–सभी प्रमुख नगरों तथा व्यापारिक व औद्योगिक महत्व के सभी कस्बों में।

पाकिस्तान में :–चटगांव व करांची।

बर्मा में :–रंगून, मोलमेन, मांडले।

मलाया में :–पेनांग, क्वालालुमपुर, क्लांग।

सिंगापुर में :–दी आलमीड़ा स्ट्रीट, सेरांगून रोड।

यू० के० – लंदन।

अन्य – हांगकांग और काझलून।

एजेंट – विश्व में हर जगह।

कार्य और सेवा

बैंक डिपाजिट लेती है, मान्य जामिन के एवज में एडवांस देती है, बिल खरीदती है, ड्राफ्ट तथा तार के ट्रांसफर बेचती है, तथा सभी प्रकार के विदेशी एक्सचेंज का काम करती है। अपनी शाखाओं व विश्वव्यापी प्रबन्ध द्वारा हर प्रकार की बैंक सम्बंधी सेवा प्रदान करती है।

जी० डी० बिड़ला
चेयरमैन

एस० टी० सदाशिवन
जनरल मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बालक खुश होकर पढ़ने गया

जब उसे
मॉर्टन की मिठाई मिली !

एक क्या, सभी बच्चे खुश होकर पढ़ने जायेंगे अगर उन्हें उनकी अत्यधिक मनपसन्द मॉर्टन की मिठाई मिलेगी—कारण, मॉर्टन की मिठाईयाँ इतनी सुमधुर, इतनी रसपूर्ण और इतनी स्वास्थ्यवर्द्धक तत्त्वों से भरपूर जो हैं !

क्रीम टॉफी

MORTON

सी० एण्ड ई० मॉर्टन (इण्डिया) लि०

ASP/M—1/61

सर्वश्रेष्ठ मिठाइयों के निर्माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्मोल

सफेद बालों को काला और चमकीला बनाता है

वस्मोल एक असली वैज्ञानिक नुसखा है, जो अपने एक ही फ़ार्म्युले में सही ढंग से बालों को काला करता है, बालों को निरोग रखता है और बालों के सुगंधित विन्यास के लिए उत्कृष्ट है—तो भी इसकी कीमत किसी भी अच्छे केशतेल से ज़्यादा नहीं है।

वस्मोल

केश काला करनेवाला जो अपना वादा पूरा करता है

वस्मोल तैलयुक्त सफेद मिश्रण केशतेल और पोमेड इन दो रूपों में सभी स्टोर्स व केमिस्टों के यहां मिलता है।

लेनोलिन से परिपूर्ण वस्मोल आपके बालों के लिए सर्वोत्तम है।

उत्पादक :

हाइजिनिक रिसर्च इन्स्टिट्यूट,

पोस्ट बॉक्स ११९२, बम्बई-१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगति के पथ पर

१९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति के ४ वर्ष बाद १९५१ में हमने बेहतरीन, सम्पूर्ण तथा खुशहाल जिन्दगी की ओर कदम बढ़ाया। तभी से हमारी पञ्च-वर्षीय योजनाएँ राष्ट्र-जीवन के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में विशेष परिवर्तन ला रही हैं, जिनका उदाहरण इसके पहले कभी नहीं मिला।

राष्ट्र-निर्माण एवं निर्माण के कार्य साथ ही साथ चलते हैं। नई सड़कें, नए राजपथ—हमारे जीवन के स्रोत का हर जगह निर्माण हो रहा है। बाँध, जलाशय, फैक्टरियाँ, मिलें, अस्पताल तथा मकान विद्यालय तथा कला-केन्द्रों का निर्माण सर्वत्र बढ़ता जा रहा है।

कोनार्क मार्का डालमिया सीमेंट ही इनमें से अनेकों के निर्माण का मुख्य आधार रहा है। सर्वत्र उत्तम निर्माण के लिये मांग है कोनार्क मार्का डालमिया सीमेंट

उड़ीशा सिमेंट लिमिटेड

डालमिया उद्योग
राष्ट्र की सेवा में

राजगंगपुर (उड़ीशा राज्य)
प्रधान कार्यालय :– ४, सिंधिया हाउस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

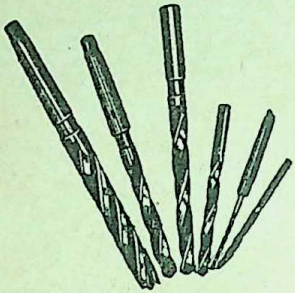

ड्रिल

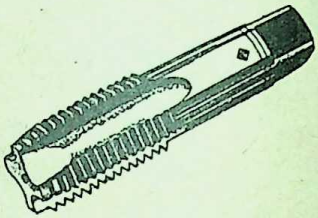

टैप

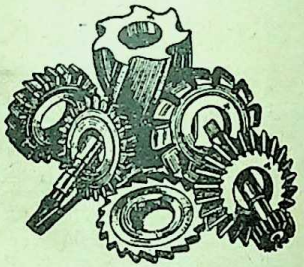

कटर

दी इंडियन टूल
मैन्यूफेक्चरर्स लि.

१०१, शीव रोड, बम्बई २२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

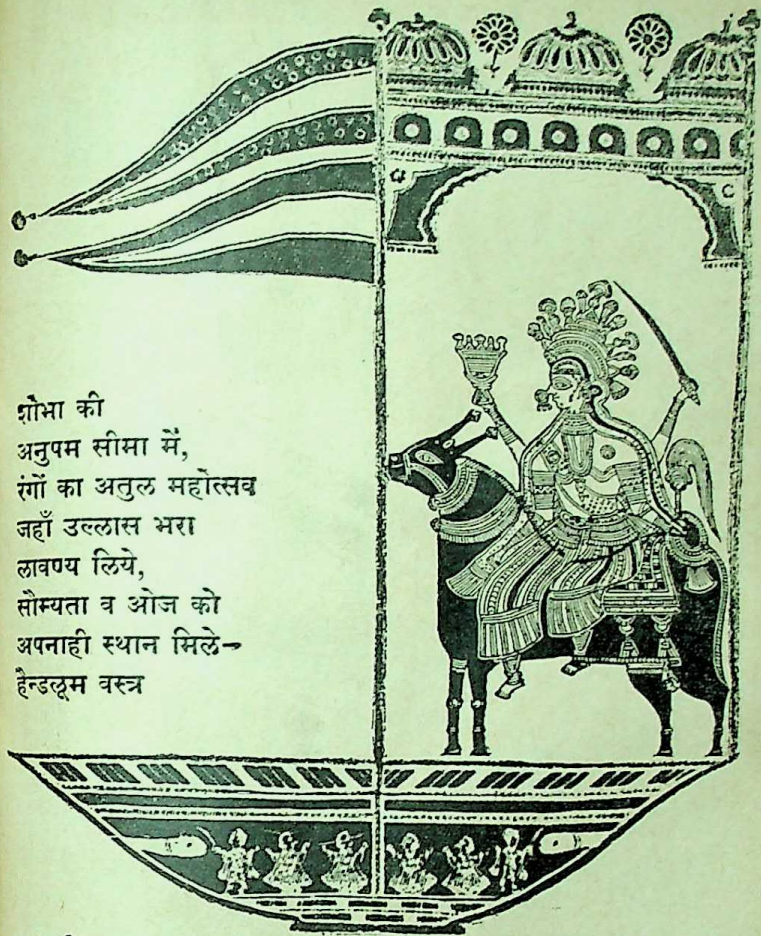

शोभा की
अनुपम सीमा में,
रंगों का अतुल महोत्सव
जहाँ उल्लास भरा
लावण्य लिये,
सौम्यता व ओज को
अपनाही स्थान मिले—
हैन्डलूम वस्त्र

हैन्डलुम हाऊस

२२१, डॉ. दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई-१
९ रतन बजार मद्रास-३
३ लिन्डसे स्ट्रीट, कलकत्ता-१६
९ए कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-१

प्रधान कार्यालय: ऑल इन्डिया हैन्डलूम फ़ेबरिक्स मार्किटिंग कोऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड
जलभूमि चेम्बर्स, फोर्ट स्ट्रीट, बम्बई-१. विदेश में दुकानें: अदन, कुआला लम्पुर, कोलम्बो, सिंगापुर, और बैंकॉक.

SHILP-HH-207 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रांकाइटिस
जल्द ही
ठीक हो जायगी

गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
जग-प्रसिद्ध

पेप्स टिकियाँ लीजिए।

पेप्स की गले और सीने का कष्ट मिटानेवाली गोलियाँ बहुत शीघ्रता से गले की तकलीफ़, ब्रांकाइटिस, खाँसी और सर्दी ठीक करने में सहायक होती हैं। पेप्स की गोलियाँ चूसिए और उनका करिश्मा देखिए—दर्द को मिटाने और कीटाणुओं का नाश करने में वे कितनी सहायता देती हैं।

FPY 56 HIN

पेप्स

गले और सीने का
कष्ट मिटानेवाली
टिकियाँ

सभी औषधि-
विक्रेताओं के यहाँ
मिलती हैं।

सी. ई. फ़ुलफ़ोर्ड (इण्डिया) प्राइवेट लि.

बम्बई के सोल एजेन्ट
केम्प एण्ड क. लि.; पो. बा. ९३७

यह शानदार है
यह सुंदर है
यह आश्चर्यजनक है
क्यों कि यह है...शिमाडा

SHIMADA

अन्तरराष्ट्रीय ख्याति
का वैकुअम
फ्लास्क

शिमाडा
ग्लास एंड
फ्लास्क
फैक्टरी
प्राइवेट
लिमिटेड
मद्रास-२३

MPS-HIN

सब एजेन्ट्स : महाराष्ट्र स्टेट-कार्ल्स
शावजी पारेख, ५१, मंगलदास रोड, बम्बई
नार्दन इंडिया एंड गुजरात स्टेट-बम्बई सि
एंड जिप मन्यूफक्चरिंग कम्पनी (प्रा. लि.,
५१, मंगलदास रोड, बम्बई २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्यवीर गृहिणी

अपना संसार बडी
काट-छाँटसे
करती हैं।

'निर्भय'—
बातका स्टोव:
पिन, पंप और स्पिरीट की आवश्यकता नहीं लगती। बिना आवाज़ ज्यादह उष्णता देता है। योग्य कीमतमें उपलब्ध। भभकनेका या स्फोट का धोका नहीं है।

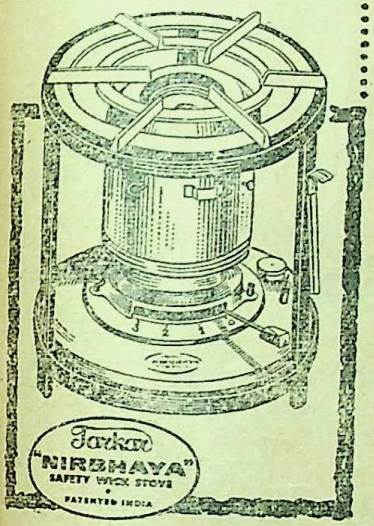

'निर्भय' डबल चुला: अति सुरक्षित, कार्यक्षम और सुविधापूर्ण रचाओका।

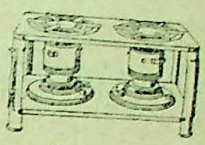

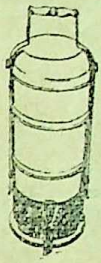

एकानामिक तारकर कूकर: बर्तनोंकी मितव्ययता होती है। थोडे समय में और कम खर्चमें पोषक आहार पकाता है। घरमें टिफिन करिअर, कूकर, मोदकपात्र और कढ़ाओ जैसा अति उपयुक्त।

तारकर बर्तन: आदर्शरसोओ-घर के लिए हर प्रकारके छोटे बड़े बर्तन।

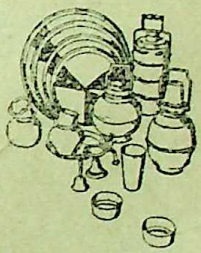

बढ़ीया और खात्रीलायक मालके प्रतीक

B.A. TARKAR
बा. अ. तारकर
ॐ
मुंबई
BOMBAY
TRADE MARK

मेसर्स: बी. अे. तारकर

कचेरी: ५०, कासार चाल, बम्बई २
बिक्री केन्द्र:
लालबाग, मुम्बादेवी और ठाकुरद्वार.
शुक्रवार पेठ, मंडआके सामने, पूना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी **सल्फ्यूरिक एसिड**

की आवश्यकता के लिए

कृपया लिखिये अथवा मिलिये :-

★

दि ग्वालियर रेयान् सिल्क

मेन्यु० (वीव्हिंग) कंपनी

लिमिटेड

★

पो. आ. बिर्लाग्राम, नागदा (पश्चिम रेल्वे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास कीजिये

केरोसॉल के

प्रयोग से

आपका स्टोव
वास्तवमें ज्यादा अच्छा जलेगा।

केरोसीन पूरा पूरा जलेगा,
ज़्वाला काले धुएं से रहित
जोरदार और निली होगी,
पिन और पम्प करने की कम
तकलीफ,
बर्तन काले न होंगे,
बर्नर अधिक समय तक चलेगा।

आजही अपने दुकानदार से
केरोसॉल खरीदिये।
एकमात्र वितरक:
डब्ल्यू.आर. तळवलकर ब्रदर्स, प्रा. लि.,
लेन्टिन चेम्बर्स, दलाल स्ट्रीट, मुंबई १.
टेलिफोन २५४७१० और २५३३६७
शाखा: सिंगापुरी बिल्डींग,
स्टेशन रोड, सुरत. टेलिफोन: २२९०

KEROSOL
केरोसॉल
मिट्टीके तेलमें
मिलानेकी चीज

stusa wk-7/61

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवश्य खरीदिए
सेन्चुरी की

प्रसिद्ध फैशन फैब्रिक्स

दी सेंच्युरी स्पिनिंग एण्ड मैन्यू. कं. लि.

"इन्डस्ट्री हाउस" १५९ चर्चगेट रिक्लेमेशन, बम्बई-१
मेनेजिंग एजेन्ट्स—बिरला ग्वालियर प्रा० लि०
तार—"सेन्चुरी" बम्बई. टेलीफोन नं० २४६२४०/२४६२४६-४९.

मरकरी

अर्थात सर्वश्रेष्ठ

पेन्सिल

* सब किस्मों
* और रंगों में सभी
* बड़ी दुकानों में मिलती है।

निर्माता

दी मद्रास पेन्सिल फेक्ट्री

३, स्ट्रीन्जर्स स्ट्रीट, मद्रास-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनसाधारण के लिए...
न कुछ दामों में एक ऐसा रेडियो जिसमें
क़ीमती बड़े सेट की खूबियाँ हैं

नया

नेशनल एक्को

जनता

मूल्य केवल रु. १२५, टैक्स अलग

नया नेशनल-एक्को 'जनता' अवश्य ही आपका मनचाहा रेडियो साबित होगा। कम से कम दामों में मिलते हुए भी यह रेडियो एक क़ीमती बड़े सेट जैसा बढ़िया काम देता है। और फिर, इस पर आनेवाला बिजली का खर्च तो २३० वोल्ट बिजली पर चलनेवाले दुनिया के किसी भी रेडियो के मुक़ाबले में कम है!

अपने नेशनल-एक्को डीलर के यहाँ इसे मुफ़्त बजवाकर सुनिए...
और अपना ऑर्डर आज ही लिखवा दीजिए।

मॉडल सू-७५६: एसी/डीसी सेट। २ बैण्ड, शॉर्ट और मीडियम वेव; ५" का हाइ-फ़्लक्स लाउडस्पीकर। नयी-नयी खूबियाँ जो अब तक सिर्फ़ ऊँचे दामों के सेटों में ही होती थीं। मॉन्सूनाइज़्ड। पूरे एक साल की गारंटी। 'मरून' रंग का सुन्दर कैबिनेट।

जनरल रेडियो एण्ड एप्लायन्सेज़ लिमिटेड
बम्बई · कलकत्ता · मद्रास · दिल्ली · पटना · बंगलोर · सिकन्दराबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

JWT-GRA 2820A

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

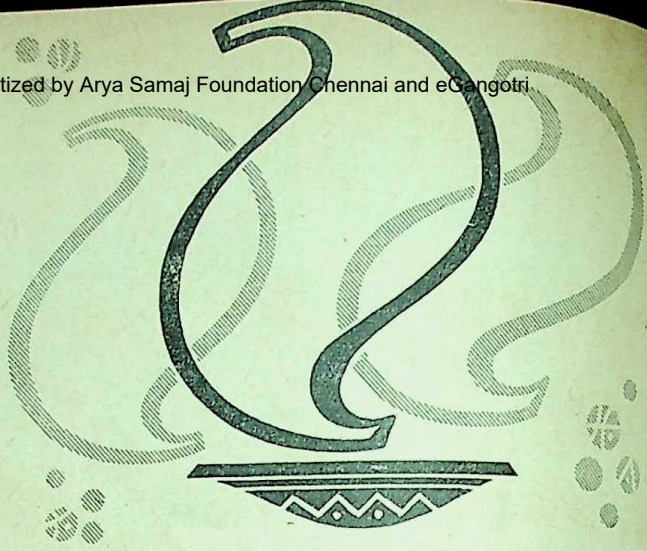

दुरिताचें तिमिर जावो।
विश्व स्वधर्मसूर्ये पाहो।
जो जें वांछील तो तें लाहो।
प्राणिजात॥

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स चेंबूर प्रायव्हेट लिमिटेड
साण्डूवाडी, सायन ट्रॉम्बे रोड, चेंबूर, मुंबई ७१

सुख और समृद्धिपूर्ण
नववर्षकी शुभकामनाओं
के साथ
स्टेट बैंक आफ जयपुर
(स्टेट बैंक आफ इन्डिया
की सब्सिडियरी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15 नवम्बर 1961 से 1 जनवरी 1962 तक

फेडरेशन आफ इंडियन चेंबर्स आफ
कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा भारत
सरकार के सक्रिय समर्थन से
आयोजित

एशिया का महान औद्योगिक व व्यापारिक मेला

NEWFIELDS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्रपती

शिवाजी विडी

REGD. TRADE MARK

SABLE WAGHIRE & CO. KURLA BOMBAY.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज का फैशन
सरसिल्क का रेशम

भारत की अपने रेशम के उत्पादन के लिए प्राचीन काल से ही वैभवता प्राप्त है और उसी परम्परा को आज के मानव निर्मित एसीटेट सूत्र से नवीन कलेवर प्राप्त हुआ है। सुन्दरता, कोमलता, रंगों की शानदार चमक-दमक, इन सारी दृष्टियों से सरसिल्क एक ऐसा रेशम है जिसका कोई जोड़ नहीं। व्यवहार में उपयुक्त, टिकाऊ व आधुनिक फैशन का होते हुये भी मूल्य अधिक नहीं।

सरसिल्क
क्वालिटी फैब्रिक्स

सरसिल्क लिमिटेड सरपुर-कागज़नगर, आन्ध्र प्रदेश

कलकत्ता कार्यालय : ८, इन्डिया एक्सचेंज प्लेस

सोल सेलिंग एजेन्ट : मेसर्स तुलसीदास कानोड़िया ऐण्ड कम्पनी
इण्डिया एक्सचेंज बिल्डिंग, कलकत्ता
बम्बई कार्यालय : २६४।२६८ कालबादेवी रोड

3/67

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्लुकोविटा आप को

अधिक शक्ति देता है – वह भी बहुत जल्दी

हर रोज़ इस का सेवन कीजिये !

* पौष्टिक और स्फूर्तिदायक
* रक्त के लिए शक्कर, जो शरीर क्रिया के लिए आवश्यक है, वह प्रदान करता है
* शरीर में शीघ्र ही रच जाता है।

ग्लुकोविटा

कॉर्न प्रॉडक्ट्स क. (इण्डिया) प्राइवेट लि.

सफेद दाग

सतत परिश्रम एवं खोज के बाद सफेद दाग की औषधि का निर्माण किया है । हजारों ने इसका अनुभव करके लाभ उठाया है । दवा का मूल्य ६) रु० विशेष जानकारी के लिए विवरण पत्र मुफ्त मंगावें ।

नक्कालों से सावधान रहें ।

वैद्य बी० आर० बोरकर
आयुर्वेदिक भवन (नं. ६)
मु० पो० मंगरूलपीर
जिला–अकोला (महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हें अपनी मां से
टिनोपाल के बारे में
कहना चाहिए !

सभी लोग टिनोपाल का इस्तेमाल करते हैं।

आप चाहेंगी कि आपकी लड़की की सफ़ेद पोशाक सचमुच में सफ़ेद हो, किन्तु कभी कभी साफ धुले हुए कपड़े भी गंदे और मटमैले दिखायी पड़ते हैं। अपने सफ़ेद सूती और रेयान कपड़ों को केवल धोना ही पर्याप्त नहीं है। कपड़ों को धोने के बाद उसे बर्फ की तरह सफ़ेद बनाने के लिए टिनोपाल का इस्तेमाल कीजिये। यह बहुत ही किफायती है। टिनोपाल आज ही खरीदिये।

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए., बाल, स्विटज़रलेन्ड का रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है

थोड़ा सा **टिनोपाल** सफेद कपड़ों को अत्यधिक सफेद बनाता है।

निर्माता:
सुहृद गायगी लिमिटेड, बड़ी बाड़ी, बड़ोदा.

एकमात्र वितरक:
सुहृद गायगी ट्रेडिंग लिमिटेड, पो. आ. बॉक्स ९५५, बम्बई-१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्ता

भारतीय भाषाओं की महत्त्वपूर्ण
रचनाओं का मासिक संकलन

- समसामयिक विषयों पर ठोस लेख
- भारतीय भाषाओं की श्रेष्ठ कहानियां
- संस्कृत के अमर नाटकों का अविकल अनुवाद

इन के अतिरिक्त ३५ अन्य रोचक
और महत्त्वपूर्ण रचनाएं

एक प्रति १ रु. • वार्षिक १० रु.

दिल्ली प्रेस

कैरेवान व सरिता के प्रकाशक
रानी झांसी रोड,
नई दिल्ली.

अपनी प्रति आज ही खरीदिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवा के हमारे आराध्य

卐

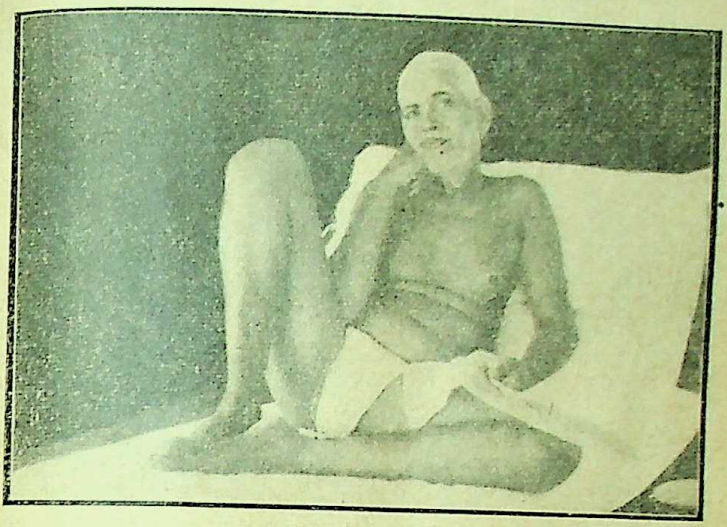

卐

नववर्ष सबके लिए मंगलमय हो

कलात्मक लाईन, हाफटोन एवं रंगीन ब्लाकों के सुप्रसिद्ध शिल्पी

शंकर ऐंड कम्पनी

धोबीवाड़ी, ठाकुरद्वार रोड, बम्बई–२

टेलिफोन नं. २९६५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्दी से जल्दी

डाक छांटने और बांटने का काम जल्दी से जल्दी करने के लिए बड़े-बड़े शहरों को डाक-वितरण क्षेत्रों या जोनों में बांट दिया गया है। यदि आप अपनी चिट्ठियों पर पता पूरा लिखने के साथ ही जोन नम्बर भी लिखा करें, तो आपकी डाक बहुत शीघ्र पहुँचेगी।

आप स्वयं पत्र लिखते समय अपने पते में जोन नम्बर लिखना न भूलें

जोन नम्बर

से चिट्ठी जल्दी पहुँचती है

हमें उत्तम

सेवा का अवसर दीजिए

डाक-तार विभाग

डीए ६०/४७५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिर्फ संकट के समय ही
खतरे की जंजीर खींचिए।

डिब्बे में चढ़ने के पहले
यात्रियों को उतर जाने दीजिये।

रेलगाड़ी में भिखमंगों और
फेरीवालों को उत्साहित न कीजिए।

सिर्फ थूकदान में ही थूकिये।

अपने भारी सामानों को
ब्रेक-वान में बुक कराइए।

दीपावली की शुभ-कामनाएं

आगामी वर्ष के लिए आपके सुख और समृद्धि की हम कामना
करते हैं। जब कभी भी आप यात्रा करें,
तो कृपया ऊपर लिखी करने योग्य और
न करने योग्य कुछ बातों की ओर ध्यान दें।
इनसे आपकी यात्रा अधिक सुखद बनेगी और
आप तथा आपके सहयात्री अधिक आराम अनुभव करेंगे।

पश्चिम ओ मध्य रेल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

AI-14A

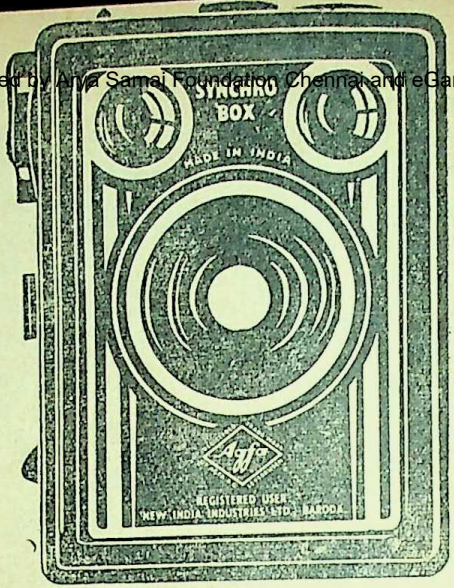

क्या आपने इसे पहचाना ?

यह वह अत्यधिक प्रचलित केमेरा है – आगफा सेन्क्रो-बोक्स। एक लीजिये और अपने आपको एक अति उत्तम प्रेरणादायक अभिरुचि में लगाइये। विश्वसनीय आगफा सेन्क्रो–बोक्स केमेरे से बिना खर्च सुन्दर तस्वीरें लेना आसान है। इसे आप अपने साथ छुट्टियों की यात्रा में और दावतों में ले जाइये– वे दिन आप कभी नहीं भूलेंगे।

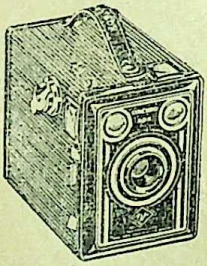

® Agfa

२९ रुपया ५० नये पैसे, स्थानीय कर अतिरिक्त, यदि कोई।

आगफा
सेन्क्रो बाक्स केमेरा

भारत के प्रथम उच्च दर्जे के फोटोग्राफिक उद्योग द्वारा निर्मित।

सोल डिस्ट्रीब्यूटर : **आ ग फा इं डि या लि मि टे ड**

बम्बई * नई दिल्ली * कलकत्ता * मद्रास *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नॉरटन

सायकलींग का लुत्फ.
नॉरटन से लूटिए

साइकिलें

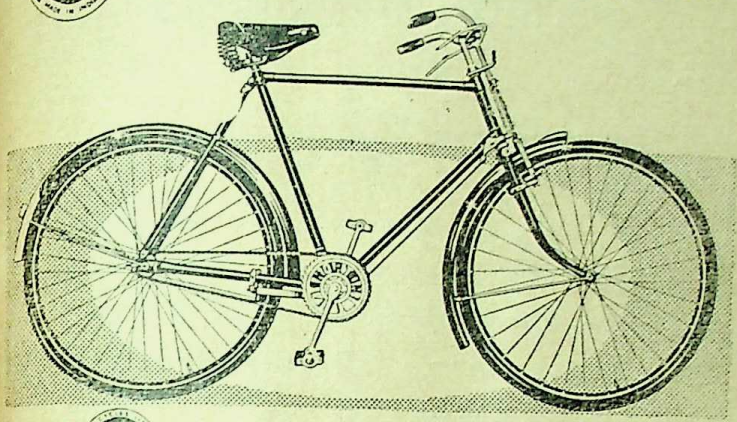

हिन्द साइकिल्स लि., २५० वरली, बम्बई १८.

ASP/HC/177

हिन्द के फ्रेम और फोर्क सम्पूर्ण भारत में अपनी मजबूती के लिये प्रसिद्ध हैं। इसीलिए ९० प्रतिशत रिक्शावाले 'हिन्द' साइकिल्स के फ्रेम और फोर्कका उपयोग करते हैं। क्योंकि ये बेहद मजबूत और टिकाऊ होते हैं। कारण : ये इंडियन स्मेलटिंग एन्ड रिफायनिंग कंपनी लिमिटेड द्वारा बनाये गये सोल्डर द्वारा जोड़े जाते हैं।

प्रमुख बिक्री प्रबन्धक

मेसर्स नवभारत ट्रेनिंग कारपोरेशन,
पोदार चेम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट,
फोर्ट, बम्बई –१.

हायर पर्चेज के लिये कृपया सम्पर्क साधिये

मेसर्स माडर्न एमेनीटीज,
पोदार चेम्बर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट,
फोर्ट, बम्बई –१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत [हिन्दी डाइजेस्ट]

नवतीत [मराठी डायजेस्ट]

और अब

नवनीत [गुजराती डाइजेस्ट]

नवनीत के हिन्दी और मराठी संस्करणों की सफलता ने हमें नवनीत का गुजराती संस्करण निकालने को प्रोत्साहित किया है। गुजराती संस्करण का प्रथम अंक जनवरी १९६२ में निकलेगा। इस वर्ष दिसम्बर ६१ में हिन्दी नवनीत के दस और मराठी नवतीत के दो वर्ष पूरे होंगे

नवनीत पाठकों को सदैव प्रेरणात्मक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक साहित्य देता रहा है। इसीलिए नवनीत ने अपने पाठकों के मन में अमिट स्थान बना लिया है। सत्साहित्य का प्रचार-प्रसार ही नवनीत का ध्येय रहा है। इसकी पूर्ति में नवनीत को कितनी सफलता मिली, यह तो नवनीत की ४०,००० प्रतियों के पाठक ही बता सकेंगे।

हमें आशा है कि, इस नवीन प्रयास में हमें गुजराती पाठकों का भी उतना ही स्नेह मिलेगा, जितना हिन्दी और मराठी पाठकों से प्राप्त हुआ।

दीपावली और नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ 'नवनीत-परिवार'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत
हिन्दी डाइजेस्ट

के पाठकों को विशेष आमन्त्रण

× × ×

१२५) में आजीवन ग्राहक बनने का सुभअवसर

× × ×

दिसम्बर १९६१ में **नवनीत (हिन्दी) डाइजेस्ट** के प्रकाशन के दस वर्ष पूरे हो जायेंगे। इस अवधि में कई पाठकों ने **आजीवन ग्राहक** बनने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु अभी तक हमने यह जवाबदारी लेना उचित नहीं समझा था।

नवनीत की दिनोंदिन बढ़ती हुई लोक-प्रियता और पाठकों की माँग को ध्यान में रखते हुए हमने सीमित संख्या में **आजीवन ग्राहक** बनाने का निश्चिय किया है।

नवनीत के वर्तमान ग्राहक भी १२५) भेजकर आजीवन ग्राहक बन सकते हैं। उनका चालू चन्दा समाप्त हो जाने के बाद उनको **आजीवन ग्राहक** बना लिया जायेगा। परन्तु उन्हें भी १२५) अभी भेजना होगा।

निर्धारित संख्या पहुँचने पर अथवा ३० दिसम्बर ६१ के बाद **आजीवन ग्राहक** बनाना बन्द कर दिया जायेगा।

यदि आगे कभी नवनीत का चन्दा बढ़ाया गया तब भी, अभी बने हुए आजीवन ग्राहकों से अतिरिक्त चन्दा नहीं लिया जायेगा।

१२५) का ड्राफ्ट या मनीआर्डर "**नवनीत प्रकाशन लि०**, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के पते पर भेजिये। वर्तमान ग्राहक अपना चालू ग्राहक नम्बर लिखना न भूलें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दिनों त्योहारों के मौकों पर अकसर सिलाई मशीन क्यों भेंट की जाती है ? क्या इसलिये कि घर में इसे खुशी से रखा जायेगा, इससे काम लिया जायेगा ? या इसलिये कि आपके प्रिय जनों को इस पर नाज़ होगा, फख्र होगा, वे इसे जीवन भर साथ रखेंगे ? निश्चय यही बात है। इसके अलावा, यह प्राचुर्य तथा समृद्धि का प्रतीक भी तो है। आपके परिवार के लिये—अवसर के उपयुक्त उपहार ! इस वर्ष नई उषा स्ट्रीमलाइंड माडेल देकर अपने परिवार को आश्चर्यित कर डालिये। अपूर्व सुन्दरता और शानदार काम के लिये ४० से अधिक देशों में इस माडेल की प्रशंसा हो रही है। अब पहले पहल भारत के बाज़ार में भी मिलने लगी है।

उषा

सिलाई मशीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जय इंजिनीयरिंग वर्क्स लि०, कलकत्ता-३१

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संचालक
श्रीगोपाल नेवटिया
★
सम्पादक
सत्यकाम विद्यालंकार
सहकारी
नारायण दत्त
सत्यनारायण मिश्र
श्यामराय भटनागर
★
शिल्पी
गोपालकृष्ण भोबे
★
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया
★
विज्ञापन-व्यवस्थापक
महेंद्र मेहता
★

दीपक राग
[illegible] वेल्स म्यूजियम के सौजन्य से

विषय-सूची

जयगान	... ...	३३
नया समाज—पुराना धर्म	राजगोपालाचारी	३५
मेरे उत्तराधिकारी ..	नार्मन कजिन्स	३७
संधियाँ नहीं, सौजन्य	डा० राधाकृष्णन्	४१
अंतःप्रज्ञ सुखलालजी	... ...	४३
तरल ज्वाला	महादेवी वर्मा	४४
अकेले ही	वियोगी हरि	४५
दुर्भाग्य से वे सज्जन थे	फ्रैंक मोराइस	४६
शोक का आलोक	भवानीप्रसाद मिश्र	४८
जार्ज केट	ए० एस० रामन्	४९
कस्मै देवाय	जैनेंद्र, अज्ञेय, अमृता प्रीतम	५३
अंतर्ज्योति	रवींद्रनाथ ठाकुर	५५
अजीब देश है बाली	ए० ए० अलमेलकर	५६
चीन के सुभाषित	... ...	५९
मेरी पुस्तक	जी० शंकर कुरुप	६०
पीला फूल	टामस मार्टन	६०
सच बोलने की भूल	यशपाल	६१
आनंद भवन की एक सांझ	महावीर त्यागी	७०
क्या खायें, कितना खायें ?	डा० जस्सावाला	७५
पेट्रोल के लिए पृथ्वी-मंथन	देशबंधु शर्मा	७८
विघटन रोकना ही होगा	जे० बी० कृपलानी	८१
मेरी अंजुली	नीरज	८४
स्वीकारोक्ति	रमा सिंह	८४
क्रांतिकारी परमानंद	... ...	८५
तटस्थ भाव	मोहनलाल मेहता सोपान	९१
[illegible]	...	९२
फूल की वेदना	अंचल	९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जिंदगी की राहें और मंजिलें	कालेलकर, दिनकर, बनारसीदास चतुर्वेदी, नरेंद्र शर्मा
खाबीदा, हसीना	अमृता प्रीतम
सूरज तपे रसोई	ई० आर० यरहम
परिवार में, अकेले नहीं	स० का० वि०
मजदूर से मंत्री	आबिद अली
सोनिस्कोप	डगलस कापर
पृथ्वी पर स्वर्ग	... ...
रक्तचाप के नये उपचार	डा० ए० वी० बालिगा
काल-पुरुष	कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह
दीप-गीत	बच्चन
कहाँ तक ?	पुरुषोत्तम खरे
ज्योतिषीजी	आर० के० नारायण
यक्ष-पर्व	ज्ञानचंद्र
मशीनी आदमी	चार्ली चैपलिन
फूल भी काँटे भी	स० का० वि०
नीला दांत	कृष्णचंद्र
धरा-तीर्थ	माखनलाल चतुर्वेदी
क्या हम समृद्ध हो रहे हैं ?	... ...
आइंस्टाइन और इंदुबाला	विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय
धरती अन्नपूर्णा है	बाइरन टी० शा
खुदा और खुदी	... ...
नगमे की मौत	करतारसिंह दुग्गल
आओ माँ, आओ	स्वामी विवेकानंद
उपद्रवी हाथियों के घेरे में	हरिवंश वेदालंकार
उर्वशी (पुस्तक-संक्षेप)	रामधारी सिंह ' दिनकर '
एक वाक्य जीवन-दीप बन गया	विट्ठलदास जेराजाणी
मक्खन-पनीर का देश	श्रीगोपाल नेवटिया
कोयम्बत्तूर का विलक्षण व्यवसायी	र० शौरिराजन्

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लि०, ३४१ तारदेव, बम्बई-७ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस**, ३६।४८ खेतवाडी बैक् रोड, बम्बई ४ में मुद्रित।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयगान

यस्यां गायन्ति नृत्यन्ति भूम्यां मर्त्याः व्यैलबाः,
युध्यन्ते यस्यामाक्रन्दो यस्यां वदति दुन्दुभिः।
सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नानसपत्नं,
मा पृथिवी कृणोतु ॥

जननी ! तेरे वीरपुत्र जय राष्ट्रगीत हैं गाते ।
करते नृत्य मोद मदमाते उत्सव नित्य रचाते ।।
विविध प्रांत भाषा के भाषी लोक-लोक के वासी ।
रणभेरी सुन मातृभूमि की रक्षाहित बलि जाते ।।
शत्रुसैन्य-विध्वंस पूर्ण कर विजय-ध्वजा फहराते ।
जननी ! तेरे वीरपुत्र जय राष्ट्रगीत हैं गाते ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यास्ते प्रचीः प्रदिशो या उदीचीः
यास्ते भूमे अधराद्यश्च पश्चात्।
स्योना स्ता महयं चरते भवन्तु
मा निपप्तं भुवने शिश्रियाणः॥

पूरब पश्चिम दक्षिण उत्तर विस्तृत सभी दिशाएँ
अविजित रहें मातृभूमि की आसमुद्र सीमाएँ।
धरा उर्वरा रहे राष्ट्र की, रहे विपुल धन-धान भरा,
विचरें शांतिदूत बन त्रिभुवन, करें विश्वकल्याण सदा॥

असंबाधं बध्यतो मानवानां, यस्यां उद्वतः प्रवतः समं बहु।
नानावीर्या औषधीर्यो बिभर्ति, पृथिवी नः प्रथतां राध्यतां नः॥

तेरे नेह भरे आंचल में मानव सब रहते निर्बाध
तेरा आशिष पाकर सारे मिट जाते अवरोध, विषाद
प्रगति करें या विगति, गोद मै तेरे हैं हम सभी समान
कामधेनु बन नाना औषधि अक्षय तू देती धन-धान॥

पद्यानुवाद – सत्यकाम विद्यालंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया समाज पुराना धर्म

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

यह आवश्यक है कि, वैयक्तिक प्रतिस्पर्धा पर आधारित अर्थ-तंत्र का स्थान नियंत्रित सहकारी अर्थ-तंत्र ले; और इस नये अर्थ-तंत्र के लिए एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जरूरी है। वेदांत-मूलक नीतिशास्त्र और संस्कृति निश्चय ही इस पृष्ठभूमि का काम दे सकती हैं।

यह तो अब हर कोई समझ गया है कि, जो व्यवस्था अभी कुछ समय पहले तक थी और जिसने उन्नीसवीं सदी की तथाकथित समृद्धि को जन्म दिया, उससे अब काम नहीं चल सकता। वैयक्तिक प्रतिस्पर्धा पर आधारित अर्थ-व्यवस्था ने जो समृद्धि-सम्पन्नता उत्पन्न की, उसमें और असमान वितरण में चोली-दामन का-सा सम्बंध रहा है।

वास्तव में वह समृद्धि थी ही असमान वितरण पर आधारित। उस समृद्धि को बनाने और बनाये रखने के लिए उसी देश में अथवा संसार के कुछ भागों में कुछ मनुष्यों को दरिद्रता में जीवन गुजारना पड़ता था।

परंतु अब दृष्टिकोण ही बदल गया है। अब यह बात बड़ी लज्जास्पद समझी जाती है कि, समाज का कोई अंग अथवा संसार का कोई भाग अभावग्रस्त और दुःखी रहे। अधिकाधिक भौतिक और नैतिक सुख प्राप्त करना आज प्रत्येक वर्ग का लक्ष्य बन गया है। विषमता अब अनावश्यक ही नहीं, बल्कि असहनीय मानी जाने लगी है। वैयक्तिक होड़ व सरकारी अहस्तक्षेप पर आधारित अर्थ-व्यवस्था को अब अराजकता समझा जाता है—जंगल के कानून का संशोधित संस्करण। अब तो यह स्वीकार किया जाने लगा है कि, अभी तक जो वैयक्तिक जीवन की अलंघ्य चहार-दीवारी मानी जाती थी, उसका अतिक्रमण और नियंत्रण समाज को करना होगा। सर्वहित अब राष्ट्रीय सरकारों का ध्येय बन गया है। अब विश्व के तमाम राष्ट्र और उनके हित इतने परस्परावलम्बी हो गये हैं कि, आर्थिक नियंत्रण को राष्ट्रीय सीमाओं तक महदूद नहीं रखना चाहिये, यह विचार जोर पकड़ने लगा है।

फिर भी एक बड़ा तबका यह अनुभव करने लगा है कि, नियंत्रण बेशक आवश्यक है; परंतु नियंत्रित अर्थ-तंत्र का स्वरूप ऐसा होना चाहिये कि, उसमें व्यक्तिगत स्वातंत्र्य और वैयक्तिक उपक्रम कुचले न जायें, उस स्वातंत्र्य और उपक्रम से प्राप्त होनेवाला आनंद नष्ट न हो जाये।

कुछ लोग इसे असम्भव समझते हैं; पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूसरों का दावा है कि, यह सर्वथा सम्भव है और ऐसी अर्थ-व्यवस्था [illegible] जा सकता है जिसमें सामाजिक नियंत्रण और वैयक्तिक स्वातंत्र्य का सामंजस्य हो।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुत: वैयक्तिक उपक्रम इतनी आनंद-दायक वस्तु है कि, ऐसी किसी अर्थ-व्यवस्था को खोज निकालने का प्रयत्न सर्वथा लाभकारी है, जिसमें सामाजिक हित की दृष्टि से नियंत्रण होने पर भी वैयक्तिक उपक्रम – पूर्णतया नहीं तो आंशिक रूप में सही – अवश्य बचा रहे।

चाहे इनमें से कोई भी दृष्टिकोण अंत में खरा सिद्ध हो, एक बात असंदिग्ध है–नियंत्रित अर्थ-तंत्र में हमें इसीलिए कष्ट अनुभव होता है कि, वह नियंत्रण आंतरिक नहीं होता, बाहरी सत्ता द्वारा थोपा हुआ होता है। बाह्य नियंत्रण कष्टकर ही नहीं होता, वह पूर्णतया प्रभावकारी भी नहीं होता।

इसलिए नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था में ऐसी किसी आचार-संहिता या संस्कृति का अंगीकार आवश्यक है, जो आंतरिक नियम का काम दे और जो भी बाह्य नियंत्रण अनिवार्य एवं सम्भव हों, उनकी पुष्टि करे। ऐसी आचार-संहिता या संस्कृति जटिल सरकारी नियंत्रणों के बीच वैयक्तिक स्वतंत्रता एवं उपक्रम की भावना को जीवित रखने में बहुत सहायक [illegible]

जो लोग वैयक्तिक स्वातंत्र्य को [illegible] फैशन की चीज और भ्रम मात्र मानते [illegible] वे भी यह तो स्वीकार करेंगे ही कि आंतरिक नियम बाह्य नियंत्रण से अधिक प्रभावकारी होता है। निकृष्ट और [illegible] जन बाह्य नियंत्रण का दुरुपयोग कर [illegible] बटोरने और सत्ता हथियाने की [illegible] चेष्टा करते रहते हैं। इन्हें कैसे [illegible] जाये ? यह नियंत्रित अर्थ-व्यवस्था की जटिलतम समस्याओं में से एक है।

सो प्रश्न यह है कि, क्या ऐसी [illegible] आचार-संहिता या संस्कृति सच्ची [illegible] जनता द्वारा मनवायी जा सकती है [illegible] यह काम करे ? क्या हम ऐसे धर्म का [illegible] और प्रचार कर सकेंगे, जो समष्टि-[illegible] के लिए व्यष्टि-जीवन का व्यापक [illegible] उचित नियंत्रण करने में सहायक हो [illegible] यह लौकिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए [illegible] धर्म की स्थापना का कार्य है। इसे मान [illegible] मान लें, तो भी यह आसान काम नहीं है।

मेरी आस्था है कि, वेदांत इस धर्म का [illegible] स्थान ले सकता है। और वह कोई [illegible] धर्म भी नहीं है; वह तीस करोड़ [illegible] का मार्ग-दर्शन करनेवाली एक [illegible] प्राणवंत आस्था है। *

श्रद्धांजलि

जो महाकवि आयु-पर्यंत संसार के समस्त विषों को आत्मसात् कर केवल [illegible] गीत गाता रहा, वह अब सदा के लिए मौन हो चुका है। किंतु वह अपने गीतों के गुंजन [illegible] सदा अमर रहेगा – इस विश्वास के साथ नवनीत-परिवार स्वर्गीय निरालाजी [illegible] श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

– सम्पादक

नवनीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरे उत्तराधिकारी

चालीस करोड़

"आप भी गांधीजी की तरह अपना उत्तराधिकारी क्यों नहीं नियुक्त कर देते ?" किसी पत्रकार ने नेहरूजी से पूछा। उत्तर मिला–"गांधीजी बादशाह आदमी थे। मैं हूँ अदना-सा प्रजातंत्रवादी!" प्रजातंत्र में, जनता की योग्यता में नेहरूजी की यह जीवंत निष्ठा इस संदर्शन में मुखरित हो उठी है, जो उन्होंने अमरीका की प्रसिद्ध पत्रिका 'सैटर्डे रिव्यू' के सम्पादक को दिया था।

नार्मन कजिन्स

हाल में अपनी भारत-यात्रा में मैंने श्री जवाहरलाल नेहरू को दो बार देखा – पहले बम्बई में टैगोर-शताब्दी-वर्ष के उद्घाटन पर, बाद में नयी दिल्ली में उन्हीं के घर।

बम्बई के समारोह में नेहरूजी बहुत संक्षेप में और बिना किसी तैयारी के बोले। पिछली छः-सात मुलाकतों को याद करके मुझे लगा कि, वे उतने प्रफुल्ल नहीं हैं। चिर-स्थायी थकान ने उनके मुखड़े पर गहरी रेखाएँ खींच दी थीं।

नेहरूजी का भाषण बिल्कुल अनौपचारिक था। जो-जो विचार मन में उठते गये, उन्हें वे कहते गये। शुरू में ही उन्होंने कहा कि, टैगोर और गांधी आधुनिक भारत की बुद्धि और आत्मा पर सबसे गहरा प्रभाव डालनेवाले दो व्यक्ति हैं। उन्होंने टैगोर की बौद्धिक और सांस्कृतिक तथा गांधीजी की राजनीतिक और आध्यात्मिक देन का विवेचन किया। एक निजी बात भी उन्होंने कही। वह यह कि, बौद्धिक दृष्टि से वे अपने को गांधीजी के बजाय टैगोर के अधिक निकट पाते हैं।

फिर वे एक नये विषय पर बोलने लगे। क्या उनका यह खयाल ठीक है कि, भारतवासियों में अब पहले जैसी आदर्शवादिता नहीं रह गयी है ? कहाँ चली गयी आजादी की लड़ाई के दिनों की वह लौ ? उस वक्त देश को स्वतंत्र करना ही सब कुछ था; और कहाँ आज लोगों को निजी शिकवा-शिकायतों से ही फुर्सत नहीं !

इसके बाद बड़ी सहजता से "मुझे और कुछ नहीं कहना है" कहकर वे बैठ गये।

सभा के बाद मैं कुछ देर के लिए उनसे मिला। उन्होंने कहा–"अगले हफ्ते मैं दिल्ली ही रहूँगा; उधर आयें, तो मिलियेगा।" मुझे लगा–बस यही चीज मुझे नहीं करनी चाहिये। मुलाकात में जो श्रम लगता, उससे उन्हें बचाना मेरे हाथ में था। फिर भी दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

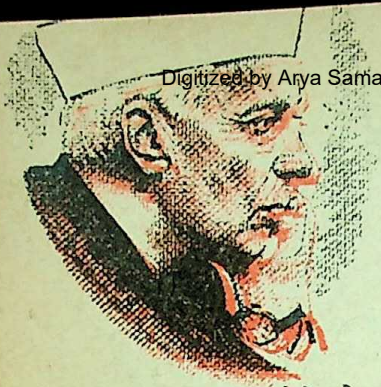

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचते ही मैंने निर्लज्ज होकर प्रधान मंत्री के कार्यालय को फोन किया और मुलाकात पक्की कर ली।

× × ×

नेहरूजी एक बड़ी-सी गद्दीदार कुर्सी पर बैठे हुए थे। रोज की तरह वे सुबह से शाम तक काम करके लौटे थे, फिर भी अधिक शांत और ताजे प्रतीत हो रहे थे। बातचीत टैगोर-समारोह पर से शुरू हुई। मैंने कहा—मुझे उनकी यह बात बड़ी दिलचस्प लगी कि, वे अपने को गांधीजी के बजाय टैगोर के अधिक निकट अनुभव करते हैं।

वे बोले—"मेरा यह मतलब नहीं था कि, गांधीजी का असर मुझ पर कोई कम है। मैं तो उन दोनों व्यक्तियों के अंतर पर विचार कर रहा था और सोच रहा था कि, मुझे उनसे क्या-क्या मिला। रवींद्रनाथ बौद्धिकता को जो महत्व देते थे और उनकी जो विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा थी, उसीके कारण वे मुझ पर इतना गहरा असर डाल सके। जो बात मैं गांधीजी के बजाय टैगोर तथा उनके दृष्टिकोण को अधिक जल्दी समझ सकता था।

"हमारे इतिहास को टैगोर की बनिस्बत गांधीजी के विचारों ने ज्यादा प्रभावित किया है। टैगोर ने लोगों की जड़ें नहीं हिलायीं; उनके सोचने और जीने के ढंग में हलचल उथल-पुथल नहीं मचायी, जैसी गांधीजी ने मचायी। कोई भौतिक शक्ति थी गांधीजी के प्रभाव में। वे हमसे ऐसे-ऐसे काम करा लेते थे, जो हमें नामुमकिन लगते थे। इस दृष्टि से वे आग के गोले थे। पर स्वयं कितने शांत थे! टैगोर अंतर्राष्ट्रीय विचारक थे, शिक्षक और कवि थे; पर थे ठेठ भारतीय। भारत की परम्परा उनके कंठ से बोलती थी; फिर भी वे विश्व-नागरिक थे और हमें याद दिलाते रहते थे कि, हम भारत के ही नहीं, दुनिया के हैं।

मैंने पूछा—"उस रोज बम्बई में आप बहुत निराश-से जान पड़े; क्या आप सचमुच संसार के भविष्य के विषय में उतने निराश हैं?" वे मुस्करा उठे।

"मुझे तो भविष्य के बारे में बहुत आशा रखने का कोई कारण नहीं दीखता। लेकिन दलील से भी ऊपर कोई चीज है; और वह हमें मजबूर करती है आशा बनाये रखने को। भारत में ही ऐसी बहुत-सी बातें हो रही हैं, जिनसे मुझे निराशा होती है। लेकिन समूची तस्वीर को देखने पर मैं पाता हूँ कि, बहुत-सी अच्छी बातें भी हो रही हैं, जो आशा बढ़ानेवाली हैं। वैसे भी भविष्य में गहरा विश्वास रखे बिना आदमी कुछ नहीं कर सकता। मैं तो कर ही नहीं सकता। बम्बई में मैं जैसा भी लगा होऊँ, मैं तो आशावादी हूँ।"

फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि, पिछली यात्राओं के मुकाबले इस बार मुझे भारत में क्या फर्क नजर आया। मैंने बताया कि, लोगों का जीवन-यापन-स्तर अब अधिक ऊँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दीखता है; सरकार की आलोचना भी पहले से अधिक पढ़ने व सुनने को मिलती है। हो सकता है, जनता की हालत में जो सुधार हुआ है, वही इसका कारण हो।"पर मेरा खयाल है कि, अखबारों से आपको जो शिकायत है, उसे आप जनता से मिलकर दूर कर लेते हैं।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, सबसे अधिक आराम मुझे भीड़ के सामने महसूस होता है। मैं जनता का हो जाता हूँ, जनता मेरी। जनता से मुझे नयी ताकत मिलती है। बदले में मैं उसे अपने विचारों में साझीदार बनाने की कोशिश करता हूँ। इसे एक किस्म का लेन-देन समझ लीजिये।"

"परंतु आप लेखक भी तो हैं; आपके शब्द इतिहास का निर्माण करते हैं।"

"ऊँह" वे हँस पड़े—"मैंने लेखक बनने के लिए लिखना नहीं शुरू किया था। मुझे तो कुछ विचार पेश करने थे। शैली, साहित्यिक अभिव्यक्ति आदि सवाल, जो सृजनशील साहित्यकार के लिए बड़े महत्त्व के हैं, मेरे सामने नहीं उठे। मेरा उद्देश्य था कुछ कराना।"

"आजादी की लड़ाई आपको न उलझा लेती, तो क्या आप लेखक न बने होते?"

"मुझे तो इसमें शक है। जैसा अभी-अभी मैं कह रहा था, मैं तो लोगों को क्रियाशील बनाने के लिए लिखने की ओर झुका था। परंतु लेखन सदा गौण रहा है, साधन-भर। लिखने में आनंद मुझे जरूर आता है; लेकिन उसे पेशा बनाना मुझे पसंद नहीं।"

जब वे इस 'मूड' में थे, तभी मैंने प्रश्न किया कि, क्या भारत के प्रधान मंत्री-पद के अनुभव उनकी आशा के अनुरूप निकले? वे गद्दी से सिर सटाकर आराम से बैठ गये।

"जब मैंने प्रधान मंत्री का पद सम्भाला, तब उसके बारे में मैंने शायद ही कुछ सोचा होगा। और शायद यह अच्छा ही हुआ। हाँ, मैंने उसे आसान काम तो कभी नहीं समझा था। मैं जानता था कि, हमें कामयाबी भी मिलेगी, नाकामयाबी भी। हाँ, उम्मीद यही थी कि, नाकामयाबियाँ कम मिलेंगी।"

"अब तलपट क्या है?"

"तलपट मिलाना जरा कठिन है मेरे लिए। इन सब चीजों में मैं बहुत ज्यादा उलझा हुआ हूँ न। लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर आप यह पायेंगे कि, इस अरसे में तरक्की भी हुई है और उतना निराश होने की कोई बात नहीं है। अलबत्ता रोजमर्रा के मसले जरूर सिरदर्द पैदा कर देते हैं और लगने लगता है कि, मामला बिगड़ रहा है।"

मैंने कहा—"फर्ज कर लीजिये, कोई फरिश्ता आकर आपसे कहे—'जवाहरलाल, अब तुम्हें काम का जुआ उतार फेंकने का हक है। मैं तुम्हें पाँच साल देता हूँ—जो काम तुम प्रधान मंत्री रहते हुए नहीं कर पाये, वे इसमें कर सकते हो' तो?"

वे थोड़ी देर कुछ न बोल सके। वर्षों के परिचय में मैंने पहली बार उन्हें शब्द टटोलते पाया। "मेरा काम समाप्त हो जायेगा—इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। अपना काम मुझे बोझ नहीं लगता। फिर भी अगर आपके सवाल का जवाब देना ही पड़े तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहूँगा—किताबें पढ़ूँगा, पहाड़ों की सैर करूँगा। हो सकता है, व्यस्त जीवन का अभाव
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
खले भी; क्योंकि इन्सान कुछ चीजों का आदी हो जाता है सो भी कभी-कभी बहुत
वट महसूस होती है। तभी दो साल पहले मैंने प्रधान मंत्री-पद से छः महीने की छुट्टी लेने
बात उठायी थी। लेकिन तूफान-सा खड़ा हो गया और मुझे वह खयाल छोड़ देना पड़ा।

अब मौका था कि, वह सवाल पूछ लूँ, जो भारत का सवाल नम्बर एक है—"प्रधान
मंत्रीजी, भारत को गांधीजी की विरासत बहुत बड़ी है; और शायद इतिहास कहेगा कि
उनकी सबसे कीमती विरासत खुद आप हैं। पर भारत को आपकी विरासत कौन है?"

प्रधान मंत्री ने गहरी साँस ली। "भारत को मेरी विरासत कौन है? ...अरबों
हुकूमत कर सकनेवाले चालीस करोड़ भारतीय ..... कम-से-कम मुझे तो यही उम्मीद
है। लोग अक्सर पूछते हैं, मेरा उत्तराधिकारी कौन होगा? शायद लोग चाहते हैं कि
मैं किसी को, या किन्हीं को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दूँ। पर मैं तो इस दृष्टि से
सोचता नहीं। मेरा विश्वास थोड़े-से नेताओं के बजाय सारी जनता को स्वशासन करने
की शिक्षा देने में है। मैं तो यही मानता हूँ कि, मैं लाखों लोगों के साथ तीर्थयात्रा कर रहा
हूँ। मुख्य चीज है मंजिल; और उस मंजिल की ओर चालीस करोड़ लोगों का आगे बढ़ना।

"मैं किसी को अपना उत्तराधिकारी चुन लूँ—यह मेरे सारे सोचने के दर्रे से मेल नहीं
खाता। मुझे कोई राजवंश थोड़े चलाना है। प्रजातंत्र पर इतना सब लिखने और बोलने के
बाद, मैं किसी को उत्तराधिकारी नियुक्त कर जाऊँ—यह कितनी खौफनाक चीज होगी!
मेरी सबसे बड़ी देशसेवा यह होगी कि, समय की आवश्यकता के अनुसार नेता पैदा करने
में मैं जनता की मदद करूँ।"

वक्त काफी हो चुका था। प्रधान मंत्री के भोजन में विलम्ब हो रहा था। चलते
चलते मैंने आखिरी सवाल पूछ लिया—"प्रधान मंत्रीजी, मेरा खयाल है कि, अफलातून ने
दार्शनिक राजा की जो कल्पना की थी, आज के राजनीतिज्ञों में आप उसके सबसे निकट
हैं। अगर कोई तरुण दार्शनिक सरकार में आना चाहे, तो उसे आप क्या सलाह देंगे?"

"यही कि, दर्शन बघारना छोड़ो, कुछ काम करो।" प्रधान मंत्री का मुख खिल उठा।

मैं सदेह भारत हूँ। सारा भारत मेरा शरीर है। रास कुमारी मेरा पैर है,
हिमालय मेरा सिर है। मेरे बालों से गंगा बह रही है। विध्याचल मेरा कमरबंद है। मैं
सम्पूर्ण भारत हूँ। पूर्व और पश्चिम मेरी दो भुजाएँ हैं, जिनको फैलाकर मैं अपने देशवासियों
को गले लगाता हूँ। हिन्दुस्तान मेरे शरीर का ढाँचा है और मेरी आत्मा
भारत की आत्मा है। चलता हूँ, तो अनुभव करता हूँ कि, तमाम हिन्दुस्तान चला रहा है।
जब मैं बोलता हूँ, तो तमाम हिन्दुस्तान बोलता है।

— स्वामी रामतीर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्प सुख के त्याग से यदि विपुल सुख मिलता हो, तो बुद्धिमान् मनुष्य विपुल सुख के लिए अल्प सुख का त्याग कर दे। – धम्मपद

संधियाँ नहीं, सौमनस्य

डा० राधाकृष्णन्

अच्छे आदर्श ही पर्याप्त नहीं हैं, अच्छी कार्य-प्रणाली भी चाहिये। कैलाग पैक्ट के रचयिताओं ने कहा था–"केवल राष्ट्र ही यह निर्णय कर सकता है कि, जिन परिस्थितियों में आत्म-रक्षा के लिए युद्ध का अवलम्ब किया जा सकता है, वे उपस्थित हैं या नहीं।"

यदि हमें राजनीतिक साधन के रूप में युद्ध का उपयोग बंद करना है, तो ऐसा कोई अपवाद नहीं माना जा सकता। और न्याय-संगत युद्ध तो हो ही नहीं सकता। युद्ध को हमें छोड़ ही देना होगा। जब वह रक्षा के लिए किया जाये, तब भी उसे हमें न्याय्य नहीं ठहराना चाहिये। क्योंकि 'रक्षा' सम्भावित और आशंकित खतरों के विरुद्ध भी हो सकती है।

और जहाँ धुँधलका छाया हो, वहाँ हम प्रकाश और अंधकार के बीच में लकीर कैसे खींचेंगे? फिर हिंसा के पीछे प्रतिहिंसा चलती है और सत्य को सिर उठाने का अवसर ही नहीं मिलता। जब तक राष्ट्र, अपनी ही राहों पर चलते रहेंगे, संघर्ष चलता रहेगा। जब तक राष्ट्र अपनी प्रभु-सत्ता रंचमात्र भी तजने को तैयार नहीं हैं, तब तक हम सब देशों के परस्पर विरोधी हितों और आकांक्षाओं का सामंजस्य नहीं कर सकेंगे। संधियाँ, कूटनीतिक समझौते और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आवेश को थोड़ी देर के लिए शांत कर सकते हैं, वे भय का निवारण नहीं कर सकते। उसके लिए तो संसार को प्रेम से रंगना होगा।

हमें आवश्यकता है ऐसे धार्मिक वीरों की जो सारी दुनिया में विचार-परिवर्तन होने की प्रतीक्षा नहीं करेंगे, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की सत्यता प्रमाणित करने के लिए प्राण भी अर्पित कर देंगे। स्टैवथोल्डर का यह वाक्य इन सूरमाओं का नारा होगा–"मुझे कार्यरत करने के लिए आशा की आवश्यकता नहीं; न अध्यवसाय के लिए सफलता की।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

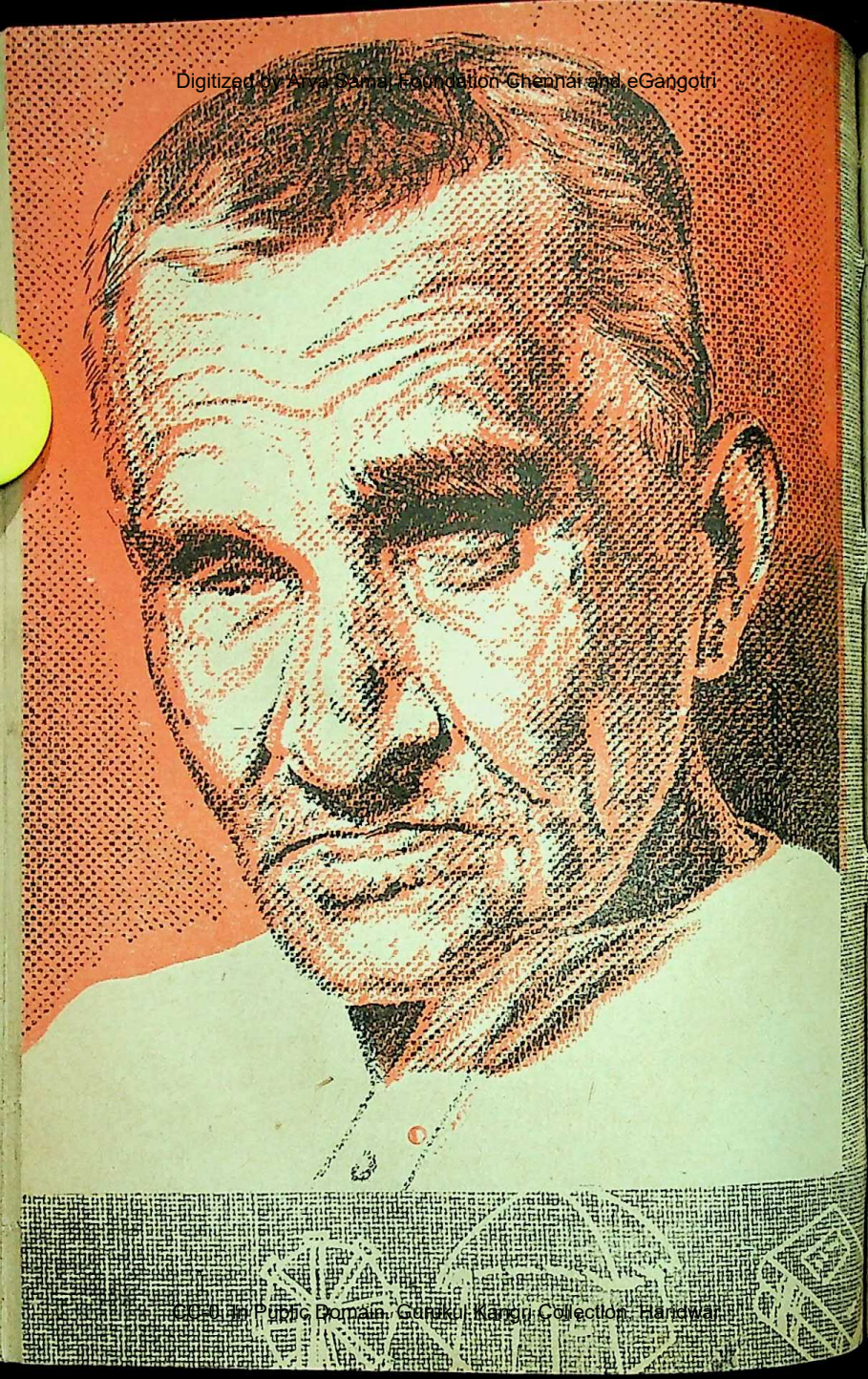

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तःप्रज्ञ सुखलालजी

अखंड ज्ञान-यज्ञ के एक ऋत्विक की जीवनी—पोर्ट्रेट : वी० एन० ओके।

तैरना सीखने की इच्छा मन में उठते ही वह बालक घर से एक लम्बी मजबूत रस्सी ले आया। उसका एक छोर पास के पेड़ से और दूसरा अपनी कमर से बाँधकर तालाब में कूद पड़ा। दो-चार डुबकियाँ खायीं, हाथ-पाँव मारे और तैरने लगा। पंडित सुखलालजी के शैशव की यह घटना उनके सम्पूर्ण जीवन का प्रतीक है।

लीमली (सौराष्ट्र) के एक जैन वणिक्-परिवार में सुखलालजी संघवी का जन्म ८ दिसम्बर १८८० को हुआ। बचपन से ही वे तेजस्वी थे – खेल-कूद में चुस्त और पढ़ाई में सबसे आगे। किंतु सातवीं कक्षा पास करते ही स्कूल से उठाकर दुकान पर बैठा दिये गये। वे ज्ञान के लिए तड़प उठे; फिर भी कुछ ही महीनों में कुशल व्यापारी बन गये।

लेकिन सोलहवें वर्ष में उन पर चेचक का उग्र आक्रमण हुआ। प्राण तो बच गये; लेकिन जीवन का नमक–आँखों का प्रकाश –छिन गया। इसका परिणाम बिल्कुल अद्भुत हुआ। बाहरी अंधकार ने तरुण सुखलाल को भीतरी आलोक की ओर उन्मुख कर दिया।

जिज्ञासा की मजबूत रस्सी पकड़कर इस बार सुखलालजी सागर में कूद पड़े – विद्या के सागर में। काशी और मिथिला में सीलन-भरी अँधेरी कोठरियों में घोर अभावों के बीच सोलह साल तक रहकर ब्राह्मण व जैन गुरुओं की सेवा-शुश्रूषा करते हुए उन्होंने संस्कृत और अर्धमागधी वाङ्मय में असाधारण पांडित्य प्राप्त कर लिया।

व्यक्ति और समाज को स्वतंत्र करनेवाले सब सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक हलचलों में उनकी शुरू से ही अभिरुचि थी। वही उन्हें साबरमती-आश्रम ले गयी, जहाँ उन्होंने बापू के सान्निध्य में गुजरात विद्यापीठ के छात्रों को ज्ञानदान दिया। पढ़ाने के साथ पढ़ना भी जारी रहा और वे पाली तथा अँग्रेजी सीखकर बौद्ध एवं पाश्चात्य ज्ञान-धारा का भी अवगाहन करने लगे। बाद में कई वर्ष हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे।

पचास से अधिक, महत्वपूर्ण शास्त्र-ग्रंथों का संशोधन, अनुवाद और सम्पादन उन्होंने किया है। हिन्दी और गुजराती में उनके लेख प्राचीन पद्धति के ठोस पांडित्य और नवीन ऐतिहासिक-वैज्ञानिक दृष्टि के समन्वय के नमूने हैं।

सात्विकता, स्वावलम्बन और सतत ज्ञान-साधना–ये सुखलालजी के अस्सी-वर्षीय जीवन के आधार-स्तम्भ हैं; **'सच्चस्स आणाए उवट्ठिये से मेहावी मारं तरइ'** (सत्य की आज्ञा पर खड़ा हुआ बुद्धिमान् मनुष्य मृत्यु को पार कर जाता है), यह उनकी आस्था। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरल ज्वाला

महादेवी वर्मा

नहीं हलाहल शेष, तरल
ज्वाला से अब प्याला भरती हूँ!

विष तो मैंने पिया, सभी को
व्यापी नीलकंठता मेरी,
घेरे नीला ज्वार गगन को
बाँधे भू को छाँह अँधेरी,
सपने जमकर आज हो गये
चलती फिरती नील शिलाएँ,
आज अमरता के पथ को मैं
जलकर उजियाला करती हूँ।

क्या कहते हो अंधकार ही
देव बन गया इस मंदिर का?
स्वस्ति! समर्पित इसे करूँगी
आज अर्घ्य अंगारक उसका,
पर यह निज को देख सके औ'
देखे मेरा उज्ज्वल अर्चन,
इन साँसों को आज जला मैं
लपटों की माला लरती हूँ।

नहीं हलाहल शेष, तरल
ज्वला से अब प्याला भरती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेले ही–

पीछे-पीछे लाखों करोड़ों कंठ
जयकार बोलते जाते थे–
पर वह तो अकेला ही चुपचाप अंधकार
को चीरता हुआ आगे बढ़ा ,
और ऊँचे-ही-ऊँचे चढ़ता गया ।
सारे पंथियों का रास्ता अकेले ही
उसने माप डाला ।
सबका बोझ अकेले ही उसने ढोया ।
क्योंकि उसकी यात्रा
'सर्वोदय'– देश की जो थी ।
उसने कहा था –
"राष्ट्र अपने अंतर को स्वच्छ
और स्वच्छतर बनाये,
और अपने आपको सर्वोदय के आंगन में
निस्संकोच बिखेर दे,
स्वाधीनता स्वयं उसका द्वार
खटखटायेगी।"
और हुआ भी यही –
जैसे, स्वतः रस-स्निग्ध पुष्प के
अंतर्द्वार खुल गये ।

– वियोगी हरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

दुर्भाग्य से वे सज्जन थे
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रैंक मोराइस

दाग हैमरशोल्ड हमारे बीच नहीं रहे। राजनीतिज्ञ उन्हें 'मिस्टर यू० एन०' (राष्ट्रसंघ महोदय) कहा करते थे। राष्ट्रसंघ की गतिविधियों को परिचालित रखने तथा संगठन को नष्ट होने से बचाने में इस व्यक्ति ने कोई कोर कसर नहीं उठा रखी। रूस और पश्चिमी देशों के आपसी तनाव को कम करने और दोनों के बीच संतुलन बनाये रखने के लिए उन्हें सदा सरकस के नटों से भी अधिक परिश्रम करना पड़ा। वास्तव में अपनी सेवाओं और कर्त्तव्य-परायणता से वे राष्ट्रसंघ में ही रम गये और एक-दूसरे को पृथक् करना सम्भव नहीं रहा।

पिछली बार जब मैंने उन्हें राष्ट्रसंघ-भवन में जनरल असेम्बली के अध्यक्ष के साथ बैठे देखा, तो एक कार्यवाही अफसर जैसी छाप पड़ी। परंतु शीघ्र ही यह भ्रांति उनके साथ बातचीत करते ही मिट चली। कहाँ वे रूखे, फाइलों में डूबे, कार्यवाही-संचालक व अनुशासनबद्ध कठोर एकाकी, नीरस हैमरशोल्ड और कहाँ सरल हृदय, मिलनसार विद्वत्ता से विनीत व्यक्तित्व!

स्वर्गीय हैमरशोल्ड

हमारी बातचीत एक घंटे तक हुई। इसी दौरान में मैं उनके व्यक्तित्व को अधिक निकटता से परख पाया। प्रश्न उठता है—क्या वे राजनीतिज्ञ थे अथवा कार्यवाही अधिकारी या अफसर। सीधा-सा स्पष्ट उत्तर एक शब्द में दिया जा सकता है—नहीं। वे न तो राजनीतिज्ञ ही थे और न अफसर ही। वे तो एक दूसरे ही ढंग के व्यक्ति थे। वे विशाल हृदयवाले विद्वान् थे और उनकी अपनी स्पष्ट विचार-धारा थी। उनकी चिंतन-धारा आर्थिक, राज-नीतिक और सांस्कृतिक धरातलों पर विकसित व उदार थी।

हम दोनों ने कई विषयों पर चर्चा की। उन्होंने विस्तार से जीवन के प्रति अमरीकी दृष्टि-कोण, युद्धोत्तर यूरोप की चिंतनधारा, कांगो अफ्रीकी कला, श्री डलेस तथा श्रीमती पंडित की चर्चा की। श्री राजेश्वर दयाल के प्रति उनके हृदय में आदर का स्थान था और वे उन्हें हृदय से चाहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुराण कथाओं का आधुनिक चित्रकार

जार्ज केट

ए० एस० रामन्

एशिया के दो महान् चित्रकारों ने चित्र-कला की शिक्षा किसी भी स्कूल या गुरु के चरणों में बैठकर नहीं ली। एक थे कलागुरु रवींद्रनाथ टैगोर और दूसरे हैं सिंहलवासी जार्ज केट। टैगोर की महत्व-पूर्ण चित्र-शैली बहुत कुछ विस्मृत कर दी गयी है; परंतु केट की विवादग्रस्त शैली आज भी चर्चा का विषय बनी हुई है। आधुनिक भारतीय चित्रकला पर इन दोनों की आत्मप्रेरित तथा विशिष्ट शैली-बंधनों से रहित कला की छाप स्पष्ट परिलक्षित है।

जिस तरह पिकासो की चित्र-शैली कटु आलोचना का विषय रही है, वही स्थिति केट के चित्रों की है। तुलनात्मक आलोचना में बहुधा केट के नाम के साथ पिकासो को भी जोड़ दिया जाता है। केट पर प्रमुख दोषारोपण यह है कि, उनके चित्रों में मौलिकता नहीं है। परंतु यह कहना कि, केट अपनी आकृतियों के अंकन में पिकासो का अनुकरण करते हैं, हास्यास्पद है।

सीधी-सी बात तो यह है कि, केट की कलाकृति का अध्ययन करते समय हम उनका मूल्यांकन पिकासो की शैली व अभिव्यंजना के आधार पर क्यों करें। केट के चित्रों में ऐसा क्या है, जिनका आधार पिकासोशैली हो। यद्यपि हाल के उनके कई चित्रों की आकृतियाँ, रेखांकन व पार्श्व दृश्य में पिकासो की झलक अवश्य मिलती है; परंतु इसी एक आधार पर पिकासो और केट की शैली को एक-दूसरे के साथ जोड़ना कहाँ तक उचित है?

केट की प्रेरणा का आधार मौलिक रूप से विशुद्ध भारतीय है। परंतु उनके चित्रों पर जो दूसरे प्रभाव हैं, वे ही

कच-देवयानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

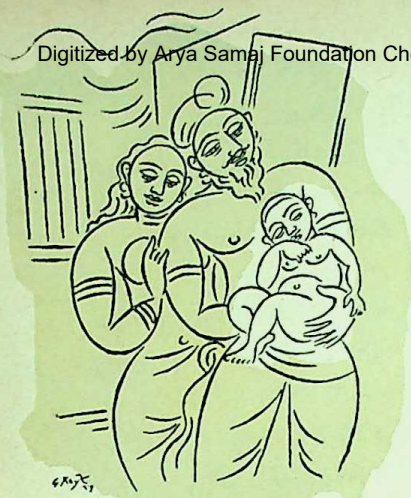

कृष्ण-जन्म

इन तर्कों व विशिष्टताओं के द्योतक हैं। पर इस तरह के प्रभावों से किसी भी कल्पनाशील सृजनात्मक अभिरुचिवाले चितेरे की कला अछूती नहीं रह सकती। ठीक उसी तरह केट की शैली पिकासो की अनुकृति नहीं है, जैसे पिकासो की शैली को हम रेवेना-शैली की अनुकृति नहीं ठहरा सकते।

वास्तव में केट ने कभी भी आकृतियों का चित्रण तत्कालीन स्वरूप में नहीं किया। इसका यह अर्थ नहीं है कि, वे अपने चित्रों के लिए मौलिक आधार न लेकर तैयार विदेशी शैली अपनाते हैं। उन्हें अपने चित्र में प्रभाव लाने के लिए आधुनिक विशिष्टताओं का उपयोग करने में हिचकिचाहट नहीं होती है।

एक राष्ट्र की कला या शैली-विशिष्ट तब तक अछूती बनी रहती है, जब उस राष्ट्र की संस्कृति में अन्य राष्ट्रों की संस्कृति का संगम न हो। कोई भी कला क्यों न हो, तत्कालीन संस्कृति या कला में उन सभी विजातीय संस्कृतियों की छाप मिलेगी, जिनके संसर्ग में वह कला आई है। उदाहरण के तौर पर प्राचीन चीन की बौद्ध-कलाकृतियाँ भारतीय कला से प्रभावित हैं। परंतु आज के युग में एशिया और यूरोप सांस्कृतिक आधार पर उससे पृथक् नहीं है।

केट की शैली विभिन्न प्रभावों की देन है। सिजेन, गोगाँ, पिकासो, अफ्रीका सिगिरिया कला, दक्षिण-भारत की नाट्य-मूर्तियाँ, लोक-कला और रवींद्रनाथ टैगोर की शैली ने उन्हें प्रभावित किया है। प्रारम्भिक आकृति-अंकन में सिजेन ने उन्हें प्रभावित किया है। गोगाँ से उन्होंने

कर्ण-जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

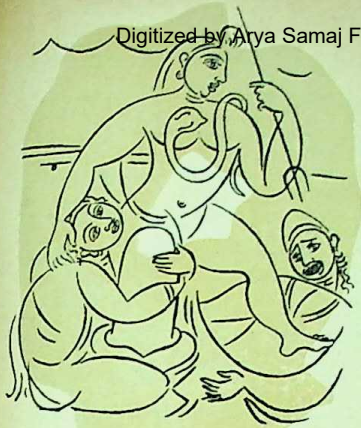

यम-मार्कंडेय

सुभावने रंगों के चयन की शैली अपनायी है। रेखाओं के प्रौढ़ अंकन में उन्हें अजंता व सिगिरिया शैली ने प्रभावित किया है। दक्षिण की ताम्र-मूर्तियों से आकृति में गति व लय, लोककला से सजीवता और रवींद्रनाथ टैगोर से विविध-रंगी सपनों को स्थिर करने की क्षमता मिली है।

केट की विशिष्टता उनके रेखांकन में है। चित्र के मेरुदंड व आधार की निश्चित् व स्पष्ट आकृति इन रेखाओं में रहती है। चाहे वे सरल, सीधी, वक्र या वर्तुलाकार ही क्यों न हों, कहीं भी अटपटी या शिथिल नहीं होतीं, अपने आपमें एक-एक रेखा पूर्णता लिए रहती है।

केट के रंगों के चयन के बारे में आलोचकों का यह मत है कि, वे फावे-शैली से अधिक प्रभावित हैं; परंतु हम इन्हें यथार्थतः नहीं कह सकते। क्योंकि फावे-शैली के भी रंगों के चयन का आधार पूर्वी-कला रहा है।

विभिन्न विषय केट की तूलिका ने चित्रित किये हैं। उनकी सबसे ललित अभिव्यक्ति हिन्दू और बौद्ध दर्शन को चित्रित करने में हुई है। हमारे साहित्य व कला में भी यही विषय – नायिका, राग-रागिनी, कृष्ण-गोपियाँ, लीला, जातक-कथाएँ – सर्वोत्तम सुंदरता के साथ अभिव्यक्त की गयी हैं। पुरातन कला-महर्षियों ने इनको सुंदरतम बनाने में इति कर दी।

ये ही विषय केट की तूलिका के स्पर्श से आधुनिक रूप ग्रहण कर लेते हैं। यद्यपि केट ने हिन्दू देवी-देवताओं को दिगम्बर रूप में चित्रित किया है; परंतु इनकी पूजनीयता व पवित्रता में इससे श्रीवृद्धि ही हुई है, कुत्सा नहीं।

नहुष-पतन

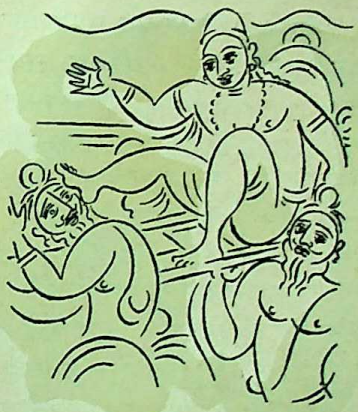

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कट्टर धार्मिक लोगों को केट के धार्मिक चित्रों से कुछ ठेस अवश्य लगी है; परंतु इसका आशय यह कदापि नहीं कि, उन्होंने इनके चित्रण में उच्छृंखलता बरती है। वे उन्हीं सीमाओं में रहे हैं, जिन सीमाओं व मर्यादाओं के अंतर्गत हमारे प्राचीन कलाकारों ने भारतीय-दर्शन को चित्रित किया।

दुर्भाग्यवश यह उदार दृष्टिकोण धीरे-धीरे लुप्त हो चला। आरम्भ में इस्लाम की कट्टरता ने इस पर चोट की। बाद में अंग्रेजी शासकों की अहम्‌वादी ईसाइयत ने इसे विनष्ट कर दिया। हिन्दू धर्म सदा समन्वयवादी रहा। देवी-देवताओं को सदा दार्शनिक प्रतीकों के रूप में लिया गया और उन्हें सम्पूर्ण मानव-जीवन के रूप में स्वीकार किया गया।

केट की पारदर्शी कल्पना, ललित सौंदर्य-प्रधान अभिरुचि, कवि की भावना और सुंदर अभिव्यक्ति द्वारा चित्रित कृतियाँ हमें पिकासो की नहीं; पुराने कला-मनीषियों की स्मृति दिलाती हैं। कृष्ण-लीला पर आधारित केट के कुछ चित्र जिनमें गोपियाँ वस्त्राभरण रहित चित्रित की गयी हैं, कुछ कामोत्तेजक अवश्य हैं; परंतु जयदेवरचित गीतगोविंद में कवित्व पद इतने कामोत्तेजक हैं कि, केट की अभिव्यक्ति उनके सम्मुख नहीं के समान है।

केट जन्मजात सिंहली अवश्य हैं; परंतु उनकी आत्मा का नाता तो भारत से जुड़ा हुआ है। आजकल वे शहरों से दूर अज्ञात-नाम कंडयान ग्राम के एकांत व शांत वातावरण में रहते हैं। जीवन में उनकी अभिरुचि तीन चीजों से है – चित्रकला, कविता और दर्शन। इन अभिरुचियों से सम्पन्न कलाकार कितना गम्भीर हो सकता है, उसका अनुमान हम सहज ही लगा सकते हैं।

★ प्रसिद्ध चित्रकार पिकासो से एक मित्र मिलने आये। वे अगले सप्ताह ही अमरीका जा रहे थे। कुशल-क्षेम व औपचारिक वार्तालाप के बाद पिकासो स्वाभाविक मनोरंजन पर उतर आये। उन्होंने एक तार लिया और उसे मोड़-माड़ कर आकृति का रूप देने लगे। आखिर एक अटपटी चीज बन ही गयी। अपने मित्र के हाथों में उसे थमाकर उन्होंने कहा–"लो, इसे किसी भी धनी अमरीकी को बेच देना और कहना कि, यह पिकासो की कलाकृति है। यदि मुँहमाँगे दाम न मिले तो मुझे कहना।"

★ रोम के एक कुशल चित्रकार ने अपनी श्रेष्ठ कृति चौराहे पर लटका दी और नीचे यह नोट लिख दिया कि, "कला–मर्मज्ञ इसमें जहाँ खामी हो, वहाँ चिह्न लगा दें। सायंकाल तक सारा चित्र बिंदु-चिह्न से इस तरह ढंक गया, मानो चित्र न हो आकाश हो असंख्य तारे हों। निराश चित्रकार ने अगले दिन एक दूसरा चित्र इस नोट के साथ लटकाया कि, "इस चित्र में जो कमी रह गयी हो उसे सुधार दें।" चित्र एक सप्ताह तक ज्यों-का-त्यों लटका रहा। उस पर कहीं भी कोई चिह्न या रेखा खिंची हुई नहीं मिली।

नवभारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा देवता

यहाँ हम साहित्य-सृजन के ध्येय पर कुछ शीर्षस्थ लेखकों का अभिमत उन्हीं के शब्दों में दे रहे हैं। इस लेखमाला में अन्य प्रतिभावान् लेखकों के विचार भी अगले अंकों में दिये जायेंगे।—सम्पादक

कौन देवता मेरा लक्ष्य है ? इस प्रश्न का संकुचित सीमा में उत्तर देना ठीक न होगा। कौन-सी स्थायी प्रेरक भावना मुझे कृतित्व की प्रेरणा देती है ? इस प्रश्न को भी यथार्थ उत्तर की सीमा में लाना कठिन है। वह भावना इतनी व्यापक है कि, हम उसके ज्ञाता हो ही नहीं सकते।

किस देवता के अर्पित है हमारा कृतित्व ? इसके उत्तर में यदि मैं किसी भी पार्थिव या मूर्त अस्तित्व के प्रति अपना अर्पण निर्दिष्ट करता हूँ, तो मेरा अहं असंतुष्ट हो जाता है।

किसी मूर्त वस्तु के प्रति एकांतिक श्रद्धा रखने का यत्न ही अतृप्ति और अज्ञान का हेतु बन जायेगा। किसी अमूर्त के प्रति अर्पित रहने से ही हम में पूर्ण तृप्ति आ सकती है। श्रद्धा–केंद्र का देवता भी मूर्त-रूप होगा, तो वह केंद्र स्वयं असंतुष्ट-अतृप्त हो जायेगा। यदि पुरुष स्त्री के प्रति एकांतिक प्रेमवश आकृष्ट होता है, तो स्त्री की परितृप्ति अपूर्ण रहेगी।

असंतोष एकांतिकता में है। कोई अमूर्त देवता भी यदि किसी मूर्तरूप व्यक्ति के प्रति एकांतिक बनता है, तो भी अतृप्ति रहेगी।

इसलिए मेरा कृतित्व–देवता तो अमूर्त ही है। उसे आप ईश्वर कहें या कोई दिव्यशक्ति कहें, नाम-भेद से अर्थ-भेद नहीं होगा।

मेरा विश्वास है कि, श्रद्धा ही मनुष्य को सत्य के स्वरूप का साक्षात्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

करवाती है। जो श्रद्धा बतलाती है, वही बुद्धि भी बतलाये—यही मेरा साहित्यिक प्रयत्न रहा है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी पाप-पुण्य की परिभाषा भी कुछ अलग है। संदर्भ-भेद से वह बदलती रहती है। मूल रूप से मैं इंद्रिय-ग्राह्य विषयों में किसी को अनीश्वरी नहीं मानता। इसीलिए मैं कहीं भी सेक्स का तिरस्कार नहीं करता। जो व्यक्ति स्त्री के विशेष अवयवों में ही स्त्रीत्व मानते हैं, वे अल्पज्ञ हैं। उनकी दृष्टि संकीर्ण है।

'मैं उस अध्यात्म को जो संसार की विमुखता में साधा जाता है, अपूर्ण और आंशिक मानता हूँ। उसमें समग्रता नहीं है, संकीर्णता और विभक्तता है।

अपनी समग्र दृष्टि में हम भोक्तापन को नष्ट नहीं कर सकते। ज्ञानी बनने के यत्न में हम अपना भोक्तापन नष्ट करना चाहते हैं, तभी विकर्म होता है।

साहित्यिक व्यक्ति कर्म-विमुख न हो, इसके लिए उसमें आवेश और संयम दोनों की मात्रा चरम सीमा में होनी चाहिये।

साहित्यिक यदि केवल संयमशील होगा, तो चिंतक बन जायेगा। चिंतन ही किसी को कृतिशील नहीं बनाता। कृतित्व के लिए उसमें भोक्ता का मन तो रहना ही चाहिये।

मैं अपने कृतित्व की सार्थकता इसी में मानता हूँ कि, उसके द्वारा मैं अपने अहं का द्वार विशाल अस्तित्व के लिए खोलता हूँ। वस्तुतः यह प्रवृति—अपने से इतर के प्रति खुलने की प्रवृति भी अहं के लिए अनिवार्य है।

अपना 'स्व' सर्वव्यापी 'स्व' बन जाये यही ध्येय रहता है सामने। शेष सब लक्ष्य तो तत्कालिक ही रह जाते हैं। उनकी प्राप्ति के तत्काल बाद लक्ष्य की रेखा आगे खिंच जाती है।

— जैनेंद्र कुमार

★

देवता कौन? दूसरे शब्दों में प्रश्न यह है कि, मेरे विचार में कृतित्व का ध्येय क्या है। मैं तो समझता हूँ कि, ध्येय के पूर्ण ज्ञान के साथ मेरा कृतित्व नष्ट हो जायेगा; सृजन-प्रेरणा ही समाप्त हो जायेगी। ज्ञान-ग्रंथियों को खोलने का आनंद ही तो सृजन का प्रेरक हो जाता है। ज्ञाता होने के बाद कर्तृत्व ही क्या रह जायेगा?

मेरी कला का कोई सामाजिक ध्येय तो हो ही नहीं सकता। कोई साहित्य मानव को कुकर्म या सत्कर्म में प्रवृत्त करता है—यह बात मैं नहीं मानता।

साहित्यकार, विशेषतः उपन्यासकार की मनोविश्लेषण में रुचि होती है। किंतु उसका ध्येय मनोविश्लेषण चिकित्सक से सर्वथा भिन्न होता है। चिकित्सक का ध्येय बहुत

नवभा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्पष्ट है। वह व्यक्ति के उस आचार-व्यवहार को सुधारता है, जो असामाजिक माने जाते हैं। जीवन से समाज-विरोधी तत्वों को दूर करना ही चिकित्सक का ध्येय है, उसके व्यक्तित्व को स्वतंत्र रूप से परखना नहीं। इसके विपरीत उपन्यासकार केवल मंथन करता है, व्यक्ति के मन का। उसका कार्यक्षेत्र व्यक्ति है, समाज नहीं।

साहित्य-सृजन में मेरी रुचि होते हुए भी मेरे परम सुख की अनुभूति का आधार दूसरा ही है। वही आधार है मुझे पुनरुज्जीवित करने का, उदासी हटाने का। कितनी भी उदासी हो, कर्म-विमुखता हो, लयबद्ध गति मुझे नवीन जीवन देकर मेरी उदासी दूर कर देती है।

— अज्ञेय

★

मैं क्यों लिखती हूँ? इस प्रश्न के उत्तर में आएन रैंड के एक उपन्यास के मुख पात्र की जुबानी दूँगी: "क्योंकि, मैं इस धरती को प्यार करता हूँ। और चूँकि इस धरती पर बनी हुई चीजों की शक्लें मुझे पसंद नहीं, इसलिए मैं उन्हें बदलना चाहता हूँ।"

मेरे मन में भी वही चाह है, वही प्यार है। और सच तो यह भी है कि, कलम मेरा शौक ही नहीं, यह मेरी नाड़ियों में बहते हुए खून की-सी हकीकत है और उसी की तरह मेरी जिंदगी की जरूरत। समय-समय पर कोई शौक मुझ में जागता जरूर रहा है; परंतु कोई भी शौक कुछ समय बाद मेरे साथ नहीं चल सका। केवल कलम ही रही।

— अमृता प्रीतम

अंतर्ज्योति

जो चेतन आलोक
दीप्यमान मेरे अंतर्नभ में
प्राण-संकुचित सीमा में
वह नहीं रहा आकस्मिक बंदी;
आदि शून्य है जिसका
और अंत भी निधन-निरर्थक
जो कुछ भी है कुछ क्षण इनके बीच
अर्थ उसीका करता वह नित उद्भासित
यह चैतन्य विराजित है नभ-नभ में
यही है अमृत रूप आनंद
आज सुबह उठते ही
मेरे अंतरतम में यही गिरा-
फूटी है बारम्बार:
इसी गिरा में गुँथे हुए हैं चंद्र-सूर्य-ग्रह
सारी दुनिया के उत्सव-आयोजन
इसीके छंदसूत्र में रहते हैं अच्युत।

— रवींद्रनाथ ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीब देश है, बाली

ए० ए० अलमेलकर

मैं स्वभाव से घुमक्कड़ हूँ या नित नूतनता की खोज ने मुझे घुमक्कड़ बना दिया है, यह कहना कठिन है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि, लोक-जीवन की नानाविध झाँकियाँ देखने, समझने और चित्रित करने की लालसा मेरे मन में सदैव बनी रहती है। पिछले दिनों जब मैंने पूर्वी द्वीपों की यात्रा की, तो ऐसी कई कल्पनातीत छबियाँ देखने का सुअवसर मिला, जो मेरे मानस-पटल पर सदा-सदा के लिए अंकित हो गयीं—उनमें से कुछ को तो मैं तूलिका के माध्यम से चित्रों में उतार भी चुका हूँ।

बहुत से लोगों का खयाल है कि, भारत केवल इतना ही है, जितना राजनैतिक मानचित्रों में दिखाया जाता है। पर दरअसल यह बात नहीं है। भारत उससे कई गुना बड़ा और विशाल है। कम-से-कम मुझे तो इन द्वीपों की यात्रा में यही साक्षात्कार हुआ है। भारतीय संस्कृति की अमिट छाप जगह-जगह दिखायी देती है। जब बाली, मलाया, इंडोनेशिया और वियतनाम आदि में पहुँचकर मुझे ऐसा लगा ही नहीं कि, मैं किसी अजाने देश में हूँ। सब कुछ परिचित-सा—जाना-सा! वहाँ के नगर ऐसे लगे, जैसे भारत के अयोध्या या सारनाथ।

और सच्ची अयोध्या तो वास्तव में बाली द्वीप में ही है। हमारे यहाँ तो लोगों को अब राम-जानकी के चरित्र-गान की फुरसत ही नहीं रह गयी है। खुद अयोध्यावासी दिन-भर के काम-धंधे से छुट्टी पाकर शाम को सिनेमा आदि में चले जाते हैं या घर जाकर सो रहते हैं। बस, कोई बेचारा दीन दुःखी ही राम को याद कर लेता है। मगर बाली में तो चाहे जिधर निकल जाइये हर स्थल राममय दीख पड़ेगा। वहाँ पुरुष को 'राम' नारी को सीता और हर घर को

जोगन-नृत्य (बाली)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'पंचवटी' के नाम से पुकारा जाता है । प्रत्येक घर के [illegible] बनी होती है ।

बाली का प्रत्येक नागरिक दिन में न सही, तो रात में 'राम चरित्र' के प्रदर्शन में भाग लेता ही है । वहाँ हर गली और चौराहे पर रामलीला होती दिखाई पड़ती है । कहीं सीता स्वयंवर, तो कहीं अशोक-वाटिका में जनकदुलारी का विलाप । कहीं राम के वन-वास से लौटने पर दीप-पर्व, तो कहीं 'लंका दहन' का दृश्य । सुमधुर संगीत की अलौकिक लय में श्रोता व अभिनेता दोनों जैसे ओतप्रोत हो जाते हैं । लेकिन सबसे मजेदार बात तो यह है कि इस 'रामचरित' में भाग लेनेवाले लोगों में बहुत से इस्लाम के अनुयायी भी होते हैं । अपने यहाँ तो शायद इसकी कल्पना भी नहीं की जा सके ।

जब मैंने एक मेजबान को यह बताया कि, भारत में ऐसा होना असंभव है, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने बड़े गौर से मेरी शक्ल देखी और दाँतों तले अंगुली दबा ली । हालाँकि वहाँ वर्ण-व्यवस्था अभी तक आदि रूप में चल रही है—उच्च वर्ण के वैष्णवों से बात करते समय शु [illegible] को दोनों हाथ पीछे बाँधकर तथा आँखे झुकाकर खड़ा रहना पड़ता है । फिर भी वहाँ साम्प्रदायिकता नाममात्र को नहीं है । इसीलिए तो कहता हूँ कि, बड़ा अजीब देश है बाली ! वहाँ के लोगों ने धर्म की समस्या को बड़ी आसानी से सुलझा लिया है । उनके मनों में इतनी उदारता घर कर चुकी है कि, किसी वैष्णव का

अर्जुन

जावा के नृत्य-नाटक में

पुत्र मुसलमान तथा पौत्र ईसाई हो सकता है । इस बारे में न किसी को कोई आपत्ति होती है, न कोई दुराग्रह ।

कला और सौंदर्य की दृष्टि से बाली द्वीप मानो स्वर्ग ही है । पुराणों में वर्णित नंदन वन शायद इसी द्वीप के आधार पर चित्रित किया गया होगा । यहाँ के नर-नारियों की सुंदरता और सुरुचिप्रियता देखते ही बनती है । भगवान जाने वे ऐसा स्निग्ध सौंदर्य एवं कांति कैसे बनाये रखते हैं ?

डेन्सपसार जैसे बड़े शहरों में यद्यपि वक्ष पर आँचल रखना कानूनी तौर पर जरूरी है; लेकिन शहर से पंद्रह-सोलह मील दूर निकलते ही स्त्रियाँ अपने वक्ष को निरावरण कर लेती हैं । तब तो चारों ओर जैसे निर्विकार सौंदर्य का सागर उमड़ पड़ता है । प्रकृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

की गोद में निर्मल झरनों या झीलों में विहार करना बाली निवासियों के जीवन का प्रमुख अंग है। वहाँ पहुँचकर सब नर-नारी अबोध शिशुओं के समान अनावृत हो जाते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाली वास्तव में प्रकृति की अनुपम क्रिड़ा-स्थली है। वहाँ की हवा में फूलों की गंध आती है। सरोवरों का ऐसा निर्मल एवं पारदर्शक जल है कि, एक पैसा डाल दो, तो करीब तीस फुट नीचे तक साफ नजर आ जाये।

हरी-भरी लताओं और वृक्षों से वहाँ की शोभा दुगनी हो गयी है। ऐसे सघन कुंजों के बीच स्फटिक शिलाओं पर लहराते निर्मल जल में विहार करती हुई बालाएँ सचमुच देव-कन्याओं सी ही प्रतीत होती हैं।

दीप-नृत्य (जावा)

पूर्वी द्वीपों की इस यात्रा के दौरान मलाया भी गया। उसका एक छोटा-सा द्वीप पान्कोर है। वहाँ पहुँचकर मुझे ऐसा लगा, मानो पाताल लोक में पहुँच गया हूँ। पान्कोर में मीलों तक फैले पानी के बीच-बीच में गाँव बसे हुए थे। ग्रामवासियों ने अपने घर नाव या लकड़ी के खम्भों पर बना रखे थे, जो तीन चार मंजिल तक ऊँचे थे। ऊपर से देखने पर ऐसा प्रतीत होता था, जैसे सारा गाँव एक शतदल कमल हो। वीकर-ललनाओं को देखकर सहज ही संत कबीर की 'नलिनी' का स्मरण हो आता था, जिसके सम्बंध में 'जल में उत्पत्ति, जल में वास' कहा गया है।

मलाया के इपोनगर की तो क्या कहूँ! वहाँ की बौद्ध-गुफाएँ भारत की अजंता और एलोरा की याद ताजा कर देती हैं। उनकी एक परम्परा मुझे बड़ी अच्छी लगी। उन्होंने एक बड़ी गुफा कलाकार-अतिथियों के लिए सुरक्षित कर रखी है, जिसमें विश्व के अनेक कलाकारों ने अपने चित्र अंकित किये हुए हैं। मैंने भी उनसे प्रेरित होकर तथागत का एक छः फुट ऊँचा और पाँच फुट लम्बा तैल-चित्र बनाया, जिसे देखकर वहाँ के अधिकारी तथा नागरिक श्रद्धा-विभोर हो गये और मेरे प्रति कृतज्ञता से झुक गये। उस समय मुझे लगा कि, सचमुच भारत का विराट् वैभव उसकी सीमाओं से परे, न जाने कितनी दूर सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देश-देशांतरों में बिखरा पड़ा है। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीनी सुभाषित

* चीन उस कमरे की तरह है—जिसकी दीवारें अदृश्य हैं। वही व्यक्ति विजयी हो सकता है जो पीड़ा की परवाह किये बिना ही इनसे सर टकराये।

* चीनी लोग समझौताप्रिय हैं। यदि उन्हें कहा जाय कि कमरे में अंधेरा रहता है इसलिए खिड़की को बड़ी कर दी जाय तो वे सब आपका विरोध करेंगे। अगर उन्हें कहा जाय कि अंधेरे के कारण छत ही क्यों न हटा ली जाये तो वे खिड़की बड़ी करने को राजी हो जायेंगे।

* रेशम का कड़ा बंदी बनता है—क्योंकि वह अपने ही चारों ओर जाल बुनता है। मकड़ी स्वतंत्र है—क्योंकि वह जाल बुनकर भी उसमें नहीं रहती।

* जो लड़की अपना चेहरा चमकाती रहती है, उसके सती होने में संदेह है। जो विद्वान अपना ज्ञान बघारता है, वह ईमानदार नहीं कहा जा सकता।

* धूर्त व्यक्ति को दिनरात चिंता खाये जाती है, स्वामीभक्त तो गधे की तरह लदा रहता है।

* दौलत कभी कभी कष्टों से छुटकारा दे देती है, परंतु अधिक धन कष्टों को जन्म देता है

* चुपचाप देखते रहो कि फूल कैसे खिलते हैं और कैसे मुरझाते हैं। यह न कहो कि, अमुक व्यक्ति भला है और अमुक बुरा।

* जब भगवान किसी को कष्ट देना चाहते हैं तो पहले सुख देते हैं-यह देखने के लिए कि वह कहीं अपना आपा तो नहीं खो देगा। इसी तरह जब उन्हें किसी को सौभाग्य देना होता है तो वे पहले कष्ट देते हैं-यह देखने के लिए कि वह कहीं विचलित तो नहीं हो जायेगा। सुख और दुख कभी अकेले नहीं आते।

* बुरा काम करके जो व्यक्ति लोकचर्चा से भय खाता है वास्तव में उस व्यक्ति से कहीं अधिक भला है जो भले काम केवल प्रशंसा के लिए करता है।

* खटिया पकड़ने पर ही स्वास्थ्य के महत्त्व याद आते हैं। घर में कलह होने पर ही शांति का महत्त्व समझा जाता है।

* यह दुनिया एक सराय है, इसमें कहीं भी शांति व चैन से रहने की जगह ढूंढना बेकार है। सभी मुसाफिर हमारे रिश्तेदारों की तरह ही है, अतएव उनकी ओर से कष्ट मिलना स्वाभाविक ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

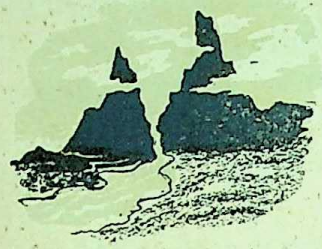

मेरी पुस्तक

सूनी शिलाएँ और ऊँचे शिखर
कहते हैं: ऊँचा सोचिये
दूधिया सफेद फूल बरसाता है;
बेदाग और पवित्र जीवन की मिठास
सागर के घोष में है गहन विचारों का संदेश
धुँधली साँझों में झलकता है सौम्य जीवन
और चंचल वायु के झोंके
कहते हैं: सेवा करो, सेवा करो
बहती हुई नदी पुकारती है:
बिसर जाओ पतन के क्षण
और बढ़ते जाओ अबाध गति से प्रवाह में।

—जी० शंकर कुरुप

पीला फूल

एक पीला फूल
(प्रकाश और रूह)
गाता है अपने आप में
किसी के लिए नहीं।
एक सुनहली आत्मा
(प्रकाश और शून्यता)
बिन बोले गाती है
अपने आप में।
इस सूर्य को कोई न छुये
जिसकी सोयी आँख में
कोई जाग रहा है।
(न प्रकाश, न सोना,
न नाम, न रंग
कोई न कोई विचार
ओ पूर्ण जागृत!)
एक सुनहरा स्वर्ग
गाता है अपने आप में
अपने ही लिए।

— टामस मार्टन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

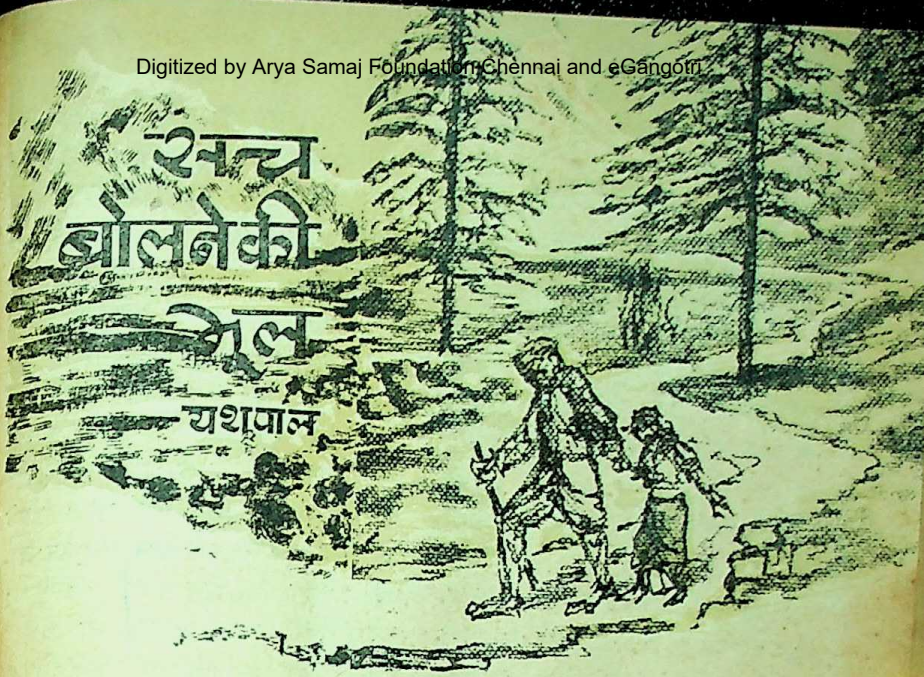

सच बोलने की भूल

यशपाल

चार वर्ष पूर्व मैं आसाम में था। शरद ऋतु के आरम्भ में दफ्तर से दो मास की छुट्टी ले ली थी और स्वास्थ्य-सुधार के लिए पहाड़ी प्रदेश में चला गया था। मेरी पत्नी और सात वर्ष की पुत्री भी साथ थीं। उस प्रदेश में बहुत छोटे-छोटे पड़ाव हैं। एक खच्चर किराये पर ले लिया था। असबाब खच्चर पर लाद लेते थे और तीनों हँसते-बोलते, पड़ाव-पड़ाव पैदल यात्रा कर रहे थे। रात पड़ाव की किसी दुकान में या डाक-बँगले में बिता देते थे। कोई स्थान अधिक सुहावना लगता, तो वहाँ दो रात ठहर जाते।

एक पड़ाव पर हम लोग डाक-बँगले में ठहरे हुए थे। वह बँगला छोटी-सी पहाड़ी के पूर्वी आँचल में है। बँगले के चौकीदार ने बताया कि पहाड़ी की चोटी से पश्चिम की ओर सूर्यास्त का दृश्य अवश्य देख लेना चाहिये। पहाड़ी तक एक जंगलाती सड़क, बिल्कुल डाक-बँगले के सामने से ही जाती थी।

पत्नी सुबह आठ मील पैदल चल चुकी थी। उसे संध्या फिर पैदल तीन मील चढ़ाई पर जाने और लौटने का उत्साह न हुआ; परंतु बेटी साथ चलने के लिए मचल गयी। चौकीदार ने आश्वासन दिया था—लगभग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

डेढ़ मील तक प्रायः सीधी सड़क है और पहाड़ी पर [illegible] है। बड़े जंगली जानवर इधर नहीं है। सूर्यास्त के बाद कभी-कभी छोटे भेड़िये जंगल से निकल आते हैं। भेड़िये भेड़-बकरी के मेमने या मुर्गियाँ उठा ले जाते हैं, आदमियों के समीप नहीं आते।

मैं बेटी को साथ लेकर सूर्यास्त से तीन घंटे पूर्व ही चोटी की ओर चल पड़ा। सावधानी के लिए टार्च साथ ले ली। पहाड़ी तक डेढ़ मील रास्ता बहुत सीधा और साफ था। चढ़ाई भी अधिक नहीं थी। पगडंडी से चोटी तक चढ़ने में भी कुछ कठिनाई नहीं हुई।

चोटी पर पहुँचकर पश्चिम की ओर बरफानी पहाड़ों की शृंखलाएँ फैली हुई दिखाई दीं। पश्चिम में उतरता सूर्य बरफ से ढंकी पहाड़ी की रीढ़ को छूने लगा, तो हिमाच्छादित पर्वत-श्रेणियाँ, आगे-पीछे ऊँची-नीची, अनेक इंद्र-धनुषों के समान जगमगाने लगीं। हिम के कणों की स्फटिक धूलि पर रंगों के चमत्कार से मन उमग-उमग उठता था। उसे देख बच्ची उल्लास से किलक-किलक उठती थी।

सूर्यास्त के चमत्कार दृश्य के सम्मोहन के बावजूद खयाल था—रास्ता दिखाई दे सकने योग्य प्रकाश रहते ही डाक-बँगले को जाती जंगलाती सड़क पर पहुँच जाना उचित होगा। अँधेरे में उतरने में असुविधा हो सकती है।

सूर्य आग की बड़ी थाली के समान लग रहा था। वह थाली बरफ की चोटी के [illegible] जलती हुई [illegible] किनारे पर वेग से [illegible] रही थी। आग की उस थाली का [illegible] शनैः बरफ के कँगूरों की ओट में [illegible] जाना बहुत ही मनोहारी लग रहा था। हिम के अगम विस्तार पर प्रतिक्षण [illegible] बदल रहे थे। बच्ची उस दृश्य को विस्मय से मुँह खोले, अपलक देख रही थी। [illegible] से समझाने पर भी वह सूर्य पहाड़ी की ओट में हो जाने से पहले लौटने के लिए तैयार नहीं हुई।

सूर्यास्त होते ही चोटी की बरफ पर सहसा श्यामल नीलिमा फैल गयी। पहाड़ी की चोटी पर अभी प्रकाश था; पर हम [illegible] ज्यों पूर्व की ओर नीचे उतरने लगे, अँधेरा घना मिलने लगा। आपको भी अनुभव होगा—पहाड़ों में सूर्यास्त का झुटपुट उजाला देर तक नहीं बना रहता। सूर्य पहाड़ की ओट में होते ही उपत्यकाओं में सहसा अँधेरा हो जाता है।

मैं पगडंडी पर बच्ची को आगे किये पहाड़ी से उतर रहा था। झुटपुटे में [illegible] स्थान-स्थान पर कई पगडंडियाँ जान पड़ने लगीं। हम अपनी पगडंडी पहचानकर नीचे जिस रास्ते पर उतरे, वह डाक-बँगले की पहचानी हुई जंगलाती सड़क नहीं थी। अँधेरा हो गया था। रास्ता खोजने के लिए चोटी की ओर चढ़ने में अँधेरा अधिक घना हो जाने और अधिक भटक जाने की आशंका थी। हम अनुमान से पूर्व की ओर जाती पगडंडी पर चल पड़े।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगल में घुप्प अँधेरा था। टार्च से प्रकाश का जो गोलाकार पगडंडी पर बनता था, उससे कँटीले झाड़ों और ठोकर से बचने में तो सहायता मिल सकती थी; परंतु मार्ग नहीं ढूँढ़ा जा सकता था। चौकीदार से सुनी बात से आँचल में आस-पास काफी बस्ती होने का आश्वासन था। सोचा—समीप ही बस्ती या कोई झोंपड़ी मिल जायेगी, रास्ता पूछ लेंगे।

हम टार्च के प्रकाश से कँटीली झाड़ियों से बचते पगडंडी पर चले जा रहे थे। बीस-पचीस मिनिट चलने के बाद हमारा रास्ता काटती एक अधिक चौड़ी पगडंडी दिखाई दे गयी। सामने एक के बजाय तीन मार्ग देखकर दुविधा और घबराहट हुई—ठीक मार्ग कौन-सा होगा? अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की अपेक्षा भटकाव का ही अवसर अधिक हो गया था। जंगल के बीच अँधेरे में दिशा पहचान सकने का भी कोई उपाय नहीं था। आकाश में तारे उजले हो गये थे; परंतु मुझे तारों की स्थिति से दिशा पहचान सकने की समझ नहीं है। पूर्व दिशा दायीं ओर होने का अनुमान था। इसलिए चौड़ी पगडंडी पर दायीं ओर चल दिये। आधे घंटे तक चलने पर एक और पगडंडी रास्ता काटती दिखाई दी। समझ लिया, हम बहुत भटक गये हैं। मैंने सीधे सामने चलते जाना ही उचित समझा।

जंगल में अँधेरा बहुत घना था और उत्तर से हवा चल पड़ने से सर्दी भी काफी हो गयी थी। मैंने अपनी घबराहट बच्ची पर

सर्दी की ठिठुरन—चित्रकार : योगी

प्रकट नहीं की। बच्ची भयभीत न हो जाये, इसलिए उसे बहलाने के लिए और उसे थकावट न अनुभव होने देने के लिए कहानी सुनाने लगा। परंतु बहलावा थकावट को कितनी देर सहारता? बच्ची थकावट के कारण शिथिल हो गयी थी। वह चल नहीं पा रही थी। कुछ दूर तक उसे शीघ्र ही बँगले के बाहर पहुँच जाने का आश्वासन देकर उत्साहित किया और फिर उसे पीठ पर उठा लिया। वह मेरे कंधे के ऊपर से सामने टार्च का प्रकाश डाल रही थी और मैं बच्ची के बोझ और थकावट से हाँफता हुआ अज्ञात मार्ग पर, अज्ञात दिशा में आगे बढ़ता जा रहा था। मेरी पीठ पर बैठी बच्ची सर्दी से सिहर-सिहर उठती थी और मैं हाँफ-हाँफकर पसीना-पसीना हो रहा था। कुछ-कुछ समय बाद मैं बच्ची

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

को पगडंडी पर खड़ा करके घड़ी देख लेता था। अँधेरे में अजाने जंगल में साहस से कुछ साहस मिलता था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अजाने जंगल के घने अँधेरे में ढाई घंटे तक चल चुके थे। मेरी घड़ी में साढ़े नौ बज गये, तो मन बहुत घबराने लगा। बच्ची को कहानी सुनाकर बहलाना सम्भव न रहा। वह जंगल में भटक जाने के भय से ठुसक-ठुसककर माँ को याद कर रोने लगी। हमारी प्रतीक्षा में बँगले में अकेली बैठी पत्नी को घबराहट के विचार ने मुझे और भी विक्षिप्त कर दिया। थकावट से मेरी टाँगे काँप रहीं थीं। उतनी सर्दी में, जंगल में वृक्ष के नीचे रात काट सकना भी सम्भव नहीं था। उस आँचल के भेड़िये चाहे जितने छोटे रहे हों, वहाँ के लोग चाहे उनसे न डरते हों; पर मेरे लिए छोटी बच्ची साथ होने पर भेड़िये से भेंट की आशंका रक्त जमा देने के लिए काफ़ी थी।

यशपाल

हम जंगल से निकलकर खेतों में पहुँचे, तो दस बज चुके थे। कुछ खेत पार कर चुके, तो तारों के प्रकाश में कुछ दूरी पर एक झोपड़ी का आभास मिला। झोपड़ी में प्रकाश नहीं था। बच्ची को पीठ पर उठाये फसल-भरे खेतों को लाँघकर झोपड़ी की ओर बढ़ने लगा। झोपड़ी के कुत्ते ने हमारे उस ओर बढ़ने पर एतराज किया, तो कुत्ते की उस ललकार से मुझे कुछ सांत्वना ही मिली। अब विश्वास हो गया झोपड़ी सूनी नहीं है।

झोपड़ी वैसी ही थी, जैसे गरीब पहाड़ी किसानों के ढालू छत के नीचे दो कमरे घर होते हैं। मिट्टी की दीवारें, फूस की छत और चारों ओर काँटों की ऊँची बाड़। किसान लोग नीचे के तल्ले में अपने ढोर बाँध लिया करते हैं और ऊपर तल्ले में उनकी गृहस्थी रहती है।

मैं झोपड़ी की बाड़ के मोहरे पर पहुँचा तो कुत्ता मालिक को चेताने के लिए बहुत जोर से भौंका। झोपड़ी का दरवाजा और खिड़की बंद थे। मैंने कई बार पुकारने पर और कुत्ते के बहुत उत्तेजना से भौंकने पर झोपड़ी के ऊपर के भाग में छोटी-सी खिड़की खुली और झुँझलाहट की ललकार सुनाई दी—"कौन है?.....इतनी रात गये कौन आया है?"

झोपड़ी के भीतर अँधेरे में से सुनाई देती ललकार को उत्तर दिया—"मुसाफिर हूँ। रास्ता भटक गया हूँ। छोटी बच्ची साथ है। पड़ाव के डाक-बंगले पर जाना चाहता हूँ।"

खिड़की से एक किसान ने सिर बाहर निकाला और क्रोध से फटकार दिया—"तुम शहरी हो न; तुम आवारा लोगों का देहात में क्या काम? चोरी-चकारी करने आये हो। भाग जाओ, नहीं तो काटकर दो टुकड़े कर देंगे और कुत्ते को खिला देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने अपनी और बच्ची की दयनीय अवस्था किसान को दिखाने के लिए अपने ऊपर टार्च से प्रकाश डाला और विनती की—"बाल-बच्चेवाला गृहस्थ हूँ। चोटी से सूर्यास्त देखने गये थे, भटक गये हैं। पड़ाव के बँगले में बच्ची की माँ हमारी प्रतीक्षा कर रही है। बँगले का चौकीदार बता देगा। पड़ाव के डाक-बँगले पर जाना चाहता हूँ। रास्ता दिखाकर घर पहुँचा दो, तो यथाशक्ति तुम्हारी इस कृपा का मूल्य चुका दूँगा।

किसान और भी क्रोध से झल्लाया—"वह पड़ाव तो यहाँ से सात मील है। कौन तुम्हारे बाप का नौकर है, जो इस अँधेरे में रास्ता दिखाने जायेगा। भाग जाओ यहाँ से, नहीं तो कुत्ते को छोड़ता हूँ।"

क्रुद्ध किसान झोपड़ी की खिड़की से मुझे भाग जाने के लिए ललकार रहा था, तो झोपड़ी के ऊपर के भाग में दिया जल जाने से प्रकाश हो गया था और दिया खिड़की की ओर बढ़ आया था। दिये के प्रकाश में किसान की छोटी घुँघराली दाढ़ी और लम्बी-लम्बी सामने झुकी हुई मूँछों से ढँका चेहरा एकदम डरावना और बड़ा खूँखार लग रहा था। खिड़की की ओर दिया लानेवाली स्त्री थी।

किसान की बात सुनकर मेरे प्राण सूख गये। समझाया कि, अँधेरे में बहुत भटक गया हूँ। उस अँधेरे, सर्दी और थकान में बच्ची को उठाकर सात मील चल सकना मेरे लिए सम्भव नहीं है। बच्ची के कष्ट के विचार से मन और भी अधीर हो गया।

मैंने बहुत गिड़गिड़ाकर किसान से प्रार्थना की—"मेरे भाई, दया करो। मैं अकेला होता, तो जैसे-तैसे जाड़े और ओस में भी रात काट लेता; परंतु इस बच्ची का क्या होगा? हम पर दया करो। हमें कहीं भीतर बैठ जाने भर की ही जगह दे दो। उजाला होते ही हम चले जायेंगे।"

खिड़की में किसान के समीप आ गयी स्त्री का चौड़ा चेहरा भी उसकी तरह ही बहुत रूखा और कठोर था; परंतु उसके स्वर से आश्वासन मिला। स्त्री बोली—अच्छा-अच्छा, उसके साथ बच्ची है। इस समय पड़ाव तक कैसे जायेगा? शहर के बड़े लोग इतना नहीं चल सकते। आने दो, कुछ हो ही जायेगा।"

किसान स्त्री पर झुँझलाया—"क्या हो जायेगा, तू कहाँ टिका लेगी इन्हें? शहर के लोग हैं, इनकी मेहमानदारी हमारे बस की बात नहीं।"

स्त्री ने उत्तर दिया—"अच्छा-अच्छा तुम नीचे जाकर कुत्ते को पकड़ो, उन्हें पास आने तो दो।"

किसान ने नीचे आकर झोपड़ी का दरवाजा खोला। कुत्ते को डाँटकर चुप कर दिया और हमारे लिए बाड़े का मोहरा खोल दिया। उसकी स्त्री भी हाथ में दिया लिये नीचे आ गयी थी। किसान और कुत्ता स्त्री के विरोध में असंतोष से गुर्राते जा रहे थे। किसान बोलता जा रहा था—"बड़े शौकीन नवाब हैं सैर करनेवाले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चले आये आधी रात में रास्ता भूलकर। कहाँ टिकी लगी तू इनकी !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्त्री ने पति को समझाया—"बेचारे भटककर परेशानी में आ गये हैं, तो कुछ करना ही होगा। आने दो, ये लोग ऊपर लेट रहेंगे। हम लोग यहाँ नीचे फूस डाल कर गुजारा कर लेंगे।"

किसान बड़बड़ाया—"हम नीचे कहाँ पड़े रहेंगे ? गाय को बाहर निकाल देगी कि, मुझी को बाहर फेंक देगी ?"

झोपड़ी के दरवाजे में कदम रखते समय मैंने टार्च से उजाला कर लिया कि, ठोकर न लगे। झोपड़ी के भीतर दीवार के साथ जुगाली करती गाय ने अपने विश्राम में विघ्न पड़ने के कारण फुँकार दिया। दूसरी दीवार के साथ ऊँची टोकरी के नीचे ढँके मुर्गे-मुर्गियों ने भी अपनी नींद में विघ्न पड़ने पर कुड़कुड़ाकर असंतोष प्रकट किया। स्त्री ने दिये से दीवार के साथ बने जीने पर प्रकाश डालकर कहा—"हम गरीबों के घर ऐसे ही होते हैं। बच्ची को हाथ पकड़कर ऊपर ले आओ। मैं रोशनी लेकर चलती हूँ।"

किसान असंतोष से बड़बड़ाता ही रहा। ऊपर के तल्ले में छत बहुत नीची थी। छत को सम्भाले धन्नी के ठीक नीचे भी गर्दन सीधी करके खड़े होना कठिन था। एक खाट पर गंदा-सा बिस्तर था। स्त्री ने बिस्तर की ओर संकेत किया—"तुम इस पर लेट रहो। हम नीचे गुजारा कर लेंगे।"

"स्त्री ने कोने में रखे कनस्तरों और डिब्बों में टटोलकर गुड़ का टुकड़ा [illegible] कोने [illegible] "बच्ची को [illegible] पानी पिला दो।" और उस कोने में [illegible] घड़े से लेकर एक लोटा जल निकाल [illegible] के समीप रख दिया।

स्त्री ने दिया लेकर जीने की ओर [illegible] हुए कहा—"क्या करूँ, इस समय घर [illegible] आटा भी नहीं है। साँझ को ही चुक गया। सुबह ही पनचक्की पर जाना होगा।"

स्त्री जीने की ओर बढ़ती हुई [illegible] गयी। विस्मय से भौंह उठाकर बोली—"[illegible] इतनी-सी लड़की के गले में मोतियों की कंठी !" उसका स्वर कुछ भीग गया—"[illegible] भी किसके लिए ? लड़का-लड़की घर [illegible] थे, तब कुछ हौंसला रहता था। लड़की सयानी होकर अपने घर चली गयी। लड़का को शहर का चस्का लगा है। दो बरस [illegible] उसका कुछ पता नहीं। जहाँ भी हो [illegible] कुमारी माता, लोग उसको भी शरण दें।"

स्त्री नीचे उतर गयी। तब भी असंतुष्ट किसान के बड़बड़ाने की और कुछ उसे धरने की आहट आ रही थी।

बच्ची थोड़ा गुड़ खाकर और जल [illegible] तुरंत सो गयी। मुझे गँधाते गंदे बिस्तर [illegible] उबकाई अनुभव हो रही थी। अपनी [illegible] विधा की चिंता से अधिक चिंता थी [illegible] बँगले में हमारी प्रतीक्षा करती [illegible] पत्नी की। हम दोनों के न लौट सकने [illegible] कारण वह कितनी विक्षिप्त होगी... उसने कल्पना कर ली हो कि, हम भीड़ [illegible] या आतताइयों के हाथ पड़ गये।...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजने के लिए डाक-बँगले के चपरासी को लेकर कहीं चोटी की ओर न चल पड़ी हो।

मस्तिष्क में चिंता की वेदना थी और पीठ थकान से इतनी अकड़ी हुई थी कि, करवट लेने में दर्द अनुभव होता था। झपकी आती, तो पीठ के दर्द और बिस्तर की असुविधा के कारण टूट जाती। करवटें बदल रहा था कि, रास्ता दिखाई देने योग्य उजाला हो जाये, तो उठकर चल दें।

खिड़की की साँधों में पौ फटती-सी जान पड़ी। सोचा, जरा उजाला और हो जाये। नीचे सोये दया करनेवाले लोगों की नींद में विघ्न न डालने का भी ध्यान था। एक झपकी और ले लेना चाहता था कि, नीचे के तल्ले से दबी-दबी फुसफुसाहट सुनाई दी।

मर्द कह रहा था—

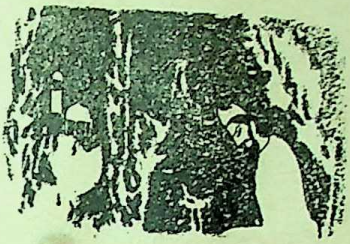

सब कहाँ कुछ लाल-ओ-गुल
में नुमाया हो गयीं।
खाक में क्या सूरतें होंगी
कि पिनहाँ हो गयीं।
—गालिब

"..... बहुत थके हुए हैं। सूरज बाँस-भर ऊँचा जायेगा, तब भी आज उनकी नींद नहीं टूटेगी।"

स्त्री साँस के स्वर में बोली—"पर तुम्हें उनकी नींद टूट जाने से क्या लेना है। ... नहीं उठते तो मैं जाऊँ?"

"अच्छा जाता हूँ।"

"आह, जरा सम्भलकर! ..... आहट करो! ..... गर्दन ही भींच दो! ..... छुरा ताक में रखा है।"

स्त्री-पुरुष का परामर्श सुनकर मेरे रोम-रोम से पसीना छूट गया—मैं शरण माँगकर पिंजड़े में फँस गया था। सोचा कि, कह दूँ ... मेरे पास जो कुछ है ले लो, लड़की के गले की कंठी ले लो और हमारी जान बख्शो।

फिर मर्द की आवाज सुनाई दी—"बेचारी को रहने दूँ, ...मन नहीं करता।"

स्त्री बोली—"ऊँह, मन न करने की क्या बात है? उसे रहने देकर क्या होगा; कहाँ बचाते-छिपाते फिरोगे?"

मैंने आतंक से नींद में बेसुध बच्ची को बाहों में ले लिया। भय की उत्तेजना से मेरा हृदय धक्-धक् कर रहा था। सोचा—उन्हें स्वयं ही पुकारकर, गिड़गिड़ाकर प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना करूँ; परंतु गले ने साथ न दिया। यह भी खयाल आया कि, वे यह जान लेंगे कि, मैंने उनकी बात सुन ली है, तो कभी छोड़ेंगे ही नहीं। अभी तो वे बात ही कर रहे हैं। भगवान् उनके हृदय में दया दे। सोचा.....यदि किसान के ऊपर आते ही मैं उसे धक्के से नीचे गिराकर चीख पड़ूँ? ..... पर वे दो जने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं। जाने आस-पास मील-दो-मील तक कोई लोग हैं भी या नहीं !

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसा दबे हुए गले से मुर्गी के कुड़-कुड़ाने और पर फड़फड़ाने की आवाज आयी। स्त्री का उपालम्भ-भरा स्वर सुनाई दिया—"देखो, कहा भी था कि, सम्भलकर गर्दन पर हाथ डालना।"

ओह ! यह तो मुर्गों के काटे जाने की मंत्रणा थी। अपने भय के लिए लज्जा से पानी-पानी हो गया।

स्त्री का स्वर फिर सुनाई दिया—"इन मरे मुर्गों के लिए इतना क्यों बिगड़ रहे हो ? शहर के बड़े लोगों की बड़ी बातें होती हैं। खातिर से खुश हो जायें, तो बख्शीश में जो चाहे दे जायें ! मामूली आदमी नहीं हैं, लड़की के गले में मोतियों की कंठी नहीं देखी ?"

दूसरी चिंता और लज्जा ने मस्तिष्क को दबा लिया। उस समय मेरी जेब में क्या था ? केवल ढाई रुपये ! बँगले से सूर्यास्त का दृश्य देखने आया था, बाजार में खरीदारी करने के लिए तो नहीं। लड़की के गले में मोतियों की कंठी के मोती नकली थे। दिये के उजाले में वे देहाती लोग क्या पहचानते। बहुत दुविधा में सोच रहा था ..... इन लोगों को क्या उत्तर दूँगा। मोतियों के बारे में कुछ बताये बिना कंठी दे जाऊँ। बाद में चालीस पचास रुपये मनीआर्डर से भेज दे सकता हूँ।

खिड़की की साँधों से काफी सवेरा हो गया जान पड़ा। सोच ही रहा था, लड़की को जगाकर नीचे ले चलूँ कि, जीने पर [illegible] की चाप सुनी। दो और किसान का चेहरा ऊपर उठता दिखाई दिया।

किसान का चेहरा रात की भाँति [illegible] और डरावना न लगा। वह मुस्कराता [illegible] "नींद खुल गयी ? मैं तो जगाने के लिए ही आ रहा था। धूप हो जाने पर बच्ची को इतनी दूर ले जाने में परेशानी होगी।"

"किसान ने पुराने अखबार में लिपटी एक बड़ी-सी पुड़िया मेरी ओर बढ़ा [illegible] और बोला—"यह लो, यह तुम्हारे [illegible] भाग्य के थे। घर में आटा भी नहीं था जो दो रोटी बना देते। इसीलिए [illegible] मैं तुम्हें रात में ही हाँके दे रहा था; पर [illegible] वाली को बच्ची पर तरस आ गया। [illegible] के लिए जमीन ही कितनी है। अंडे बेच कर ही गुजारा करते थे। बरसात के [illegible] में पड़ोसी बेईमान लोगों की मुर्गियों [illegible] बीमारी फैली, तो हमारी मुर्गियाँ भी [illegible] गयी। उन्हें बचाने के लिए सभी कुछ किया। मठ में घी के दिये जलाये, मुर्गियों को [illegible] सुन खिलाया, सरकारी अस्पताल से [illegible] भी लाकर दीं; पर उनका काल आ [illegible] था, बचीं नहीं। हाँ यह मुर्गा बड़े जीवट [illegible] था। बीमारी झेलकर भी बच गया। [illegible] लिए तुम आ गये। एक छोटी-सी [illegible] मौत की नजर से बचकर छिप रही [illegible] वह बच्ची के लिए हो जायेगी। इस [illegible] तुम्हारा तो काम चले, हमारा हो जायेगा।"

किसान ने पुड़िया मेरे हाथ में दे दी और बोला—" रात के भूखे हो, चाहो [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे चलकर मुँह धो लो और अभी खा लो। मन चाहे तो रास्ते में खा लेना।"

बच्ची को उठाया। उठते ही उसने भूख की व्याकुलता प्रकट की। स्त्री ने गर्म पानी ला दिया। हम दोनों ने अखबार की पुड़िया खोलकर नाश्ता कर लिया।

पेट भर नाश्ता करके मैं संकोच से मरा जा रहा था। किसान और उसकी स्त्री ने बहुत आशा से हमारी खातिर की थी। अपने अंतिम मुर्गा-मुर्गी भी हमारे लिए काट दिये थे। मैंने संकोच से कहा—"इस समय मेरी जेब में कुछ है नहीं, केवल ढाई रुपये हैं। अपना नाम-पता दे दो, मनीआर्डर से रुपये भेज दूँगा।" मैंने बच्ची के गले से कंठी उतारकर स्त्री की ओर बढ़ा दी—"चाहो तो यह रख लो।"

स्त्री कंठी लेकर प्रसन्नता से किलक उठी—"हाय, इसे तो मैं मठ में चढ़ाकर मानता मानूँगी कि, देवता हमारी मुर्गियों को सदा रोगमुक्त रखें।"

स्त्री की सरलता मेरे मन को छू गयी; रह न सका, कह दिया—"तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता, ये मोती नकली हैं।"

स्त्री ने कंठी मेरी ओर फेंक दी और [illegible] उँगलियाँ छिटका कर बोली—"रखो, इसे तुम्हीं रखो। धोखा नहीं दिया, तो और क्या दिया? शहर के लोग धोखे के सिवा और देंगे क्या?"

किसान ठगे जाने के क्रोध में डाक-बँगले का रास्ता दिखा आने के लिए तैयार न हुआ, न अपना नाम-पता देने के लिए। दिन का उजाला था, इसलिए हम राह पूछते-पूछते दोपहर तक पहुँच गये।

पत्नी डाक-बँगले के सामने, बेहाल धरती पर बैठी दिखाई दी। उसका चेहरा सूखे पत्ते की तरह पीला और आँखें गुड़-हल के फूलों की तरह लाल हो रही थीं। वह बच्ची को कलेजे पर दबाकर चीखकर रोयी और फिर मुझसे चिपटकर रोती रही।

पत्नी के सम्भल जाने पर मैंने उसे रात के दोनों अनुभव सुना दिये।

पत्नी ने मुझे उलाहना दिया—"ऊँह, मोतियों के बारे में बताने की क्या जरूरत थी? उसकी भावना तो पूरी हो जाती!"

सोचा, दोनों बार भूल हुई। किस भल के लिए अधिक लज्जा अनुभव करूँ?

एक गाँव को पक्की सड़क से जोड़नेवाला एक सात फर्लांग लम्बा कच्ची सड़क का टुकड़ा था। जब भी किसी योजना के अंतर्गत श्रमदान-पक्ष मनाने का सरक्युलर आता, गाँव-वाले उस पर अपना श्रमदान बता दिया करते। श्रमदान के आँकड़ों से प्रभावित होकर राज्य सरकार ने वहाँ पर पक्की सड़क बनवा दी। जब उसके उद्घाटन का अवसर आया, तो मंत्री महोदय ने गर्व से पूछा—"लीजिये आपके यहाँ पक्की सड़क भी बन गयी। अब तो आपको कोई शिकायत नहीं रही।" इस पर एक गाँववाले ने कहा—"लेकिन अब हम अपना श्रमदान कहाँ बतायेंगे।"

— रामनारायण उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद भवन जी एक खांभ

त्यागीजी ने सत्य की रक्षा के लिए बहुत कुर्बानियाँ कीं; किंतु एक दिन उन्होंने सत्य को भी कुर्बान कर दिया... पचीस वर्ष पहले का एक मार्मिक प्रसंग।

सन् १९३६ में यू० पी० असेम्बली के चुनाव लड़ने के लिए जो कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्ड बना, स्व० रफी अहमद किदवई उसके सभापति और श्री जवाहरलाल नेहरू, टंडनजी, पंतजी, बाबू श्रीप्रकाश, सम्पूर्णानंदजी और आचार्य नरेंद्रदेव आदि सदस्य थे। मैं भी इसका एक सदस्य था और मुझे इस बोर्ड ने मेरठ का चुनाव-कमिश्नर भी बना रखा था। मेरा काम था कि, जिले-जिले में घूमूँ और कार्यकर्ताओं से बातचीत करके इस बोर्ड को ऐसे साथियों का नाम सुझाऊँ, जिन्हें कांग्रेस का टिकिट दिया जाये।

एक दिन पंडित गोविंदवल्लभ पंत ने, जो केंद्रीय असेम्बली के मेम्बर थे, बातों-बातों में कहा—"चुनाव लड़ना क्या कोई आसान काम है? बिना रुपये के सूबे में जल्से और दौरा करना तो क्या, इश्तहार बाँटने भी मुश्किल हो जायेंगे।"

हमारे कोष में उस दिन केवल ७० या ८० रुपये थे। मेरी तेज जबान और फिर काटपेंच का शौक, बोल उठा—"बीस या इक्कीस सीटें खाली रह गयी हैं, जहाँ से ताल्लुकेदार और जमींदार खड़े हो रहे हैं। हमें तो वहाँ से कामयाबी की आशा है ही नहीं, फिर उनसे कुछ रुपया ही क्यों न झटक लिया जाये?" पंतजी ने हँसते हुए कहा—"तुम्हें मिले, तो ले आओ।"

मुझे तो बस इशारे की देर थी। बुलन्दशहर के जिले में दस हजार रुपये पर एक सीट का सौदा पक्का कर लिया। रफी साहब को उसकी खबर की, तो वे बोले—इस सीट से हम अपने उम्मीदवार को हरगिज न हटायेंगे, क्योंकि यह जीतनेवाली सीट है। केवल उसी सीट से उम्मीदवार को वापस ले सकते हैं, जहाँ हमें जीतने की आशा न हो और जहाँ पर विरोधी उम्मीदवार रुपये के अलावा असेम्बली में भी हमारा साथ देने का वायदा करे।" मेरा वह सौदा रद्द हो गया। इसी तरह एक सौदा शाहजहाँपुर जिले में पंतजी ने ठप्प करा दिया।

मैं हताश न हुआ। लम्बा हाथ मारने की इच्छा से एक और ताल्लुकेदार की रियासत में जल्से शुरू कर दिये। दो-तीन जल्से हो किये होंगे कि, ताल्लुकेदार साहब ने बुला भेजा खाने पर। फिर बोले—"त्यागीजी, आप मेरे पीछे क्यों पड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है, मैंने आपका क्या बिगाड़ा है ?" मैंने कहा—"राजा [illegible] आप तो ताल्लुकेदारों में सबसे अच्छे माने जाते हैं; पर हमारी मुश्किल यह है कि, अँग्रेज के मुकाबले में हमें अपना बहुमत बनाना है। इसीलिए एक-एक सीट पर लड़ना जरूरी है।"

ताल्लुकेदार साहब ने पूछा—"अच्छा सच बताओ, आपको यहाँ से जीतने की उम्मीद है ?" मैंने कहा—"कतई नहीं; पर हम यहाँ जीतने के लिए थोड़े ही लड़ रहे हैं। हम तो इसलिए लड़ रहे हैं कि, आपको यहाँ कील दें। अगर आपको यहाँ कील न सके, तो आप हमें अपने ही जिले में नहीं, बल्कि और भी आस-पास के जिलों में सतायेंगे।" उन्होंने कहा—"अगर आप लड़ेंगे, तो हमारा दो लाख से ज्यादा खर्च हो जायेगा। फर्ज कीजिये, मैं आप ही का साथ दे दूँ, असेम्बली में जाकर ?" मैंने कहा—"फिर क्या बात है, लिखकर दे दीजिये।" राजा साहब बोले—"लिखकर कैसे दे दें ? ताल्लुकेदार हैं, हमारी सनद जो जब्त हो जायेगी।" मैंने कहा—"हम तो आपकी जबान को ही दस्तावेज समझते हैं; बस, हो चुकी बात। पर कुछ सहायता भी तो करो कांग्रेस की। बयाने के रूप में कुछ दो, ताकि इस दस्तावेज की रजिस्ट्री करा सकें लखनऊ के दफ्तर में।" [illegible] "आप जो भी कहें।" मैंने कहा—"आप जब कांग्रेस में आ गये, तो मेरे बताने का क्या सवाल ? जितनी आपकी श्रद्धा हो, दे दो।" राजा साहब ने लम्बी साँस लेकर कहा—"तो त्यागीजी, मैं बीस हजार दे सकता हूँ।"

लेखक

बीस हजार ! बीस हजार सुनकर तो मेरे फरिश्ते तर गये। मैं तो केवल ९ या १० हजार की आशा से आया था। फिर भी अपने रिवाज के अनुसार मैंने कहा—"है तो कम; पर अब आप पर छोड़ ही चुका, तो जो आप कहें, मंजूर है।"

दिल में लालच आया कि, मोटा आसामी है, कुछ और बढ़ाओ। नीची-सी गर्दन करके मैंने कहा—"कुछ दक्षिणा के रूप में इस ब्राह्मण को भी मिले, बीबी चुनाव लड़ रही है देहरादून से।" शरीफ आदमी थे और फिर ठाकुर, एकदम जोश में खड़े हो गये और छाती ठोककर बोले—"बस, अब ठाकुर की परीक्षा हो जाये। बहनजी के चुनाव को मैं अपना चुनाव समझता हूँ। कितने रुपये की जरूरत होगी ? अपने मुँह से बताइये, शमारइये ना। पहले आपने मुझ पर छोड़ा था, मैंने जो कहा, आपने मंजूर कर लिया। अब मैं आप पर छोड़ता हूँ।" अपने नाम से माँग रहा था, मुझे सचमुच

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कुछ शर्म आ गयी । आदत मांगने की थी नहीं, मैंने दो हजार कह दिया । वे बोले—"बस ? दो नहीं, तीन ।" मैंने कहा—"तो २३ हजार का एक ही चेक काट दें ।" अगले दिन चेक रफी अहमद किदवई के सुपुर्द करके मैं देहरादून लौट आया ।

महीने-बीस दिन बाद कुछ ऐसा हुआ कि, पार्लमेंटरी बोर्ड की बैठक इलाहाबाद बुलायी गयी । हम लोग आनंद भवन के गोल कमरे में इकट्ठे हुए । श्री जवाहरलाल नेहरू जरा देर से आये । कमरे में घुसते ही बोल पड़े—"रफी, मेहरबानी करके त्यागी को कमरे से बाहर निकाल दीजिये, जिस मीटिंग में यह बैठेगा, उसमें मैं नहीं बैठ सकता ।" मैंने उनका मुँह चिढ़ाते हुए जरा जोर से कहा—"अमा, भाँग पी रखी है ? रफी साहब, जरा इनसे कहिये कि, वापस चले जायें । एक तो १५ मिनिट देर करके आये और फिर उस पर यह मिजाज ?" सब लोग हँस पड़े; लेकिन जवाहरलालजी और जोर से बोले—"अभी आपको मजा चखाता हूँ ।"

उन्होंने अपने चमड़े के थैले से एक पत्र निकालकर रफी साहब के हाथ में दे दिया—"हजरत कांग्रेस के झंडे बेचते फिरते हैं ।" उस खत के लिफाफे को देखकर मैं भाँप गया कि, उन्हीं का है, जिनसे चंदा लाया था । मेरा माथा ठनका कि, आयी कोई आफत । अभी पता नहीं था कि, खत में लिखा क्या है ; पर रफी साहब ने जो पढ़कर यह कह दिया कि, "मुझे इसकी कोई इत्तिला नहीं," इससे मेरी [illegible] बढ़ गयी । फिर वह पत्र जोर से पढ़ा [illegible] सार यह था कि, "इस-इस तरह से त्यागी [illegible] यहाँ पर आये थे, मुझसे कुछ बातचीत [illegible] की और २० हजार रुपये इस वायदे [illegible] ले गये कि, हमारे मुकाबले पर कांग्रेस [illegible] उम्मीदवार खड़ा न होगा । अब [illegible] कहते हैं कि, कोई साहब कांग्रेस की [illegible] से खड़े हो रहे हैं । मैं आपसे [illegible] करता हूँ कि, यदि उस फैसले पर कांग्रेस [illegible] कायम नहीं है, तो कम-से-कम मेरा [illegible] हजार रुपया तो वापस करा दिया जाये । [illegible] शरीफ आदमी थे, बीस हजार का ही [illegible] किया, उन तीन का नहीं, जो मुझे दिये [illegible]

मैंने जो यह मजमून सुना, तो पंतजी के कान में कहा—"देखिये, रफी का यह [illegible] उचित नहीं था ।" पंतजी मेरे बराबर [illegible] बैठे हुए थे । उन्होंने चुपके से मुँह [illegible] अखबार ढँककर कहा—"महावीर, [illegible] मामले में किसी भी दूसरे का नाम [illegible] ठीक न होगा ।" मैंने कहा—"पंतजी, [illegible] हजार रुपये की चोट मैं अकेला [illegible] बर्दाश्त करूँगा, गरीब आदमी हूँ ।" इस [illegible] पंतजी ने एक ऐसी ऊँची बात कह दी कि, जो उम्र-भर के लिए मेरे चरित्र का हिस्सा बन गयी । पंतजी ने कहा—"महावीर, देखो, दो मित्रों के बीच में परीक्षा का [illegible] जीवन में केवल एक ही बार आता है ।" पंतजी के ये शब्द मेरे दिल को पार कर [illegible] इतने में जवाहरलालजी ने पूछा—"कहिये जनाब, आप रुपया लाये थे ?"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जी, लाया था।"

"कहाँ गया ?"

"क्या बताऊँ, मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। बरसों से अपनी जायदाद बेच-बेचकर खा रहा था और कर्जा बहुत चढ़ गया था। झूठ कैसे बोलूँ ? बीवी चुनाव लड़ रही है, मेरी नीयत डिग गयी और मैंने रुपया अपने कर्ज में दे दिया। आहिस्ता-आहिस्ता करके मैं सारा रुपया उतार दूँगा।"

पार्लमेंटरी बोर्ड की निगाहें फिर गयीं। पल-भर में मित्रों की घृणा का पात्र बन गया। सब हक्केबक्के रह गये।

जवाहरलालजी वैसे तो लाल-पीले हो गये; पर बहुत दुखित हृदय के साथ धीमे से बोले—"अब इनको निकालिये।" किदवई साहब ने अजीब ठंडे ढंग से कह दिया—"त्यागीजी, अब आपको बाहर चले जाना चाहिये।" कैसा ठंडा लोहा था वह, भट्ठी में डाल दो; लाल हो जायेगा, पर निकलेगा ठंडा।

खैर, मैं चल दिया। चप्पल पहन ही रहा था कि, बहुत दुःख और दमन के साथ द्रवित स्वर में जवाहरलालजी ने कहा—"याद रखिये, या तो कल तक रुपया जमा कर दीजिये, वरना मैं अखबार में छपवा दूँगा कि, आप कांग्रेस के नाम पर जालसाजी करते फिरते हैं। रुपया माँगते हैं कांग्रेस के नाम से और गबन करते हैं।"

सुनकर चला गया। कानों में पंतजी के ये शब्द गूँज रहे थे—"मित्रों के बीच में परीक्षा का समय जीवन में केवल एक ही बार आता है।" इरादा कर लिया कि, दुनिया में काली मुँह भले ही हो जाये; पर रहस्य को अपने मुँह से न खोलूँगा। जाकर बैठ गया, उसी बेंच पर जिस पर कभी 'भाईजी' (पंडित मोतीलाल नेहरू) के वक्तों में बैठा करता था। आँखों के आगे अँधेरा छा गया। सोचने लगा, दोस्त भी छूटे घर भी छूटा, अब जाऊँ तो कहाँ जाऊँ। संगम में डूब मरूँ ? अगर घर गया, तो कल तक रेल के कुली भी पढ़ चुकेंगे कि, यह ढोंगिया लीडर था उनका। पर जितनी-जितनी परेशानियाँ दिमाग में आयीं, उतना ही इरादा पक्का होता गया। चाहे कुछ भी हो, इस रहस्य को अपने मुँह से न कहूँगा। पंतजी कहें तो कहें।

थोड़ी देर बाद क्या देखा कि, पार्लमेंटरी बोर्ड की बैठक खत्म हो गयी और एक-एक करके सब सदस्य सीढ़ी नीचे से उतरकर चाय के कमरे की ओर जाने लगे। केवल केशवदेव मालवीय, जिन्हें सब हाल मालूम था, मेरी तरफ चले आये। जैसे ही उन्होंने मुझे आवाज दी, मैं रो पड़ा।

केशवजी ने कहा—"अरे पागल हो गये हो ? वहाँ तो मजा आ गया। तुम्हें कुछ पता भी है ?" उन्होंने बताया कि, मेरे बाहर चले आने के बाद पंतजी ने रफी अहमद किदवई से पूछा—"भाई, मेरे पास तुमने पच्चीस सौ रुपया भेजा था। मेरा खयाल है कि, महावीर रुपया जरूर लाये होंगे।" इस पर जवाहरलालजी बौखला उठे और बोले—"फिजूल की बात है, वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुद अपने मुँह से कह गये कि, रुपया कर्ज में दे दिया।" पंतजी ने कहा– "फिर भी पूछने में क्या हर्ज है ?" नीचे से मुनीम बुलाये गये। उन्होंने कहा–"त्यागीजी जो तेईस हजार रुपया लाये थे, उसी में से भेजा था।"

श्री बालकृष्ण शर्मा से बर्दाश्त न हुआ। उन्हें गुस्सा आ गया। जवाहरलालजी को बहुत कुछ कह डाला। बोले–"आइंदा से कभी कोई मीटिंग किसी के घर पर नहीं होगी। कांग्रेस के दफ्तर में मीटिंग होनी चाहिये। क्या इख्तियार था इन्हें, यह कहने का कि, त्यागी को बाहर निकालो ? कौन माई का लाल है, जो इस तरह से अपने ऊपर बदनामी ओढ़कर चला जाये। यह अकेले का काम नहीं, इसमें सब शरीक हैं।"

अपनी सफाई देते हुए जवाहरलाल बोले–"तुम मुझ पर गुस्सा करते हो, उन्हें कुछ नहीं कहते, जो ड्रामा करके चले गये।" सबकी राय हुई कि, अब उसे बुलाया जाये और चाय के लिए उठ गये।

केशवजी ने जो यह किस्सा सुनाया, तो इससे मेरे मन पर क्या-क्या असर पड़ा, यह बता नहीं सकता। तसल्ली हुई, गम दूर हुआ, मोहब्बत उमड़ आयी, नखरे की तबीयत हुई, मचलने को जी चाहा।

मैंने कहा–" केशव, चाहे कुछ भी हो, पर अब चाय न पी सकूँगा। तुम जवाहरलालजी से जाकर कह दो कि, त्यागी कहता है कि, उसके हिस्से में आनंद भवन की जितनी चाय बदी थी, 'भाईजी' के वक्तों में वह पी चुका। घोड़े मर गये, गधों का राज आ गया।" केशव ने कहा–"[illegible] ही कह दूँ ?" मैंने कहा– " हाँ।"

केशव गये और उन्होंने मेरी बात दोहरा दी। सब लोग बहुत हँसे; पर अकेली मात्र स्वरूपरानी, जो चाय बना रहीं थीं, नहीं हँसीं। उनको यह सुनकर दुःख हुआ। बहन विजयलक्ष्मी को भेजा–"उनके (मोतीलालजी के) समय के चाय पीनेवालों को आनंद भवन में चाय न मिले ?"

विजयलक्ष्मी ने आकर कहा–"अम्मा बुला रही हैं।" मैं पीछे-पीछे हो लिया।

अब सुनिये हमारे लीडर की बात, जिसने अपने जीवन में माफी तो किसी से माँगी न होगी, सिवाय इसके कि, चलते हुए धक्का लग जाने पर कह दिया हो, माफ कीजिये। पर उसे माफी की जरूरत भी क्या है ? हृदय स्वच्छ, पुण्यात्मा, द्वेष-रहित, निर्दोष जीवन माशूक आदमी है। मेरे कमरे में दाखिल होते ही बड़े अंदाज से मुस्कराते हुए बोले– "प्याले से क्या होगा अम्मा, बाल्टी मँगाओ। देखती नहीं हो, घोड़े आ गये।"

यह कहना था कि, सब लोग ठहाका मारकर हँस पड़े। मैं ठहरा उस कूचे का पुराना आशिक, मेरा सारा प्यार उमड़ पड़ा। बोला–"बस रहने दो अपनी आल्टी-बाल्टी, आपने तो निकाल ही दिया था।"

"यह कौन है निकालनेवाला? अभी तो मैं बैठी हूँ। आनंद भवन मेरा है, जवाहरलाल तो किरायेदार है।" कहते हुए अम्मा ने मीठे गुस्से से जवाहर की ओर देखा और प्याला मेरी ओर बढ़ा दिया। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या खायें, कितना खायें ?

डा० जे० एम० जस्सावाला

'जीने के लिए खाओ, न कि खाने के लिए जीवित रहो।' हममें से अधिकांश यह लोकोक्ति भुला चुके हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि, संक्रामक रोग और दुर्घटनाओं के अतिरिक्त नब्बे प्रतिशत लोगों की मृत्यु या बीमारी गलत आहार के कारण होती है। मानव के शरीर का स्वस्थ या बीमार रहना बहुत कुछ गलत व सही आहार पर निर्भर करता है।

स्वास्थ्य-सम्बंधी चर्चाओं में आहार का विशिष्ट स्थान है। शरीर को आवश्यक पोषण-तत्त्व उचित आहार के सेवन से उपलब्ध होते हैं।

उचित व संतुलित आहार बीमारी के दिनों में महत्वपूर्ण माना जाता है; परंतु शरीर को निरंतर स्वस्थ रखने के लिए भी उचित व संतुलित आहार आवश्यक है।

सभी लोग यह जानते हैं कि, पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए ठीक मात्रा में पोषण तत्वोंवाला आहार दिया जाता है; परंतु मानव-शरीर को स्वस्थ रखने के लिए इस यह फार्मूला अपने पर कदाचित् ही लागू कर पाते हैं।

हमारे अपने दैनिक भोजन को ही ले लीजिये। इसमें जो आहार है, उसमें प्राप्त अधिकांश पोषण-तत्व पकाने में ही नष्ट कर दिये जाते हैं। खनिज तत्व इनमें नहीं के बराबर रहते हैं। जिस आटे की रोटी बनायी जाती है, उसमें से छालन निकाल लेते हैं। जबकि इसी छालन में शरीर को स्वस्थ रखनेवाले प्रचुर खनिज व विटामिन भरे हैं।

आजकल भोजन को सुस्वादु व रंग-बिरंगा बनाने के लिए स्वाभाविकता सर्वथा नष्ट कर दी जाती है और उनमें रासायनिक रंगों का मिश्रण किया जाता है, जो शरीर के लिए अत्यंत हानि-कारक हैं। यह इतना पोषणहीन व अशुद्ध होता है कि, मनुष्य तो क्या पशुओं की खुराक के लिए भी इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। केवल सुस्वादु, लुभावने व आसानी से तैयार हो जाने के कारण ही हम इसे खाने लगे हैं।

ये सत्वहीन आहार पुरुषार्थ को क्षीण कर डालते हैं। स्वास्थ्य गिरने लगता है और शरीर में रोग-निरोधक शक्ति घटने लगती है। ऐसी स्थिति में बीमारियाँ बिना बुलाये ही शरीर में प्रवेश कर लेती हैं।

प्राकृतिक आहार का उचित चयन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैज्ञानिक ढंग से इनका मिश्रण तथा उचित मात्रा में इनकी उपयोगिता शरीर को रोग मुक्त रखा जा सकता है। उचित आहार से शरीर को वे सभी आवश्यक लवण प्राप्त होते हैं, जो रोग-निरोधक शक्ति बढ़ाते हैं। इनसे शरीर के तंतु अस्त-व्यस्त व विनष्ट होने से बचे रहते हैं और पुरुषार्थ, स्वास्थ्य व तरुणाई को पुनः प्राप्त किया जा सकता है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानव-शरीर सोलह रासायनिक तत्वों से बना है। और ये सोलह तत्व हैं– आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बन, क्लोरिन, फ्लोरिग, फास्फोरस, आयरन, कैल्शियम, पोटाशियम, मग्नेशियम, हाइड्रोजन, सोडियम, सल्फर, सिलिकन, आयडिन और मैंग्नीज। प्रत्येक की अपनी अलग-अलग भूमिका भी है। शरीर में यदि रक्त-उत्पादक तत्व तथा तंतु-निर्माण तत्वों का अभाव हो जाये अथवा इनमें से किसी एक तत्व का ही अभाव हो, तो काया के क्षीण होने में विलम्ब नहीं होगा। इन्हीं तत्वों के आधार पर प्रकृति रचनात्मक व संहारक क्रियाओं के बीच संतुलन बनाये रखती है।

लेखक

फल, शाक-सब्जी, कंद और अन्नों में रासायनिक लवण की अधिक मात्रा होती है; अतएव हमारे दैनिक आहार में ये चीजें पर्याप्त मात्रा में रहनी चाहिये। खनिज लवण के अतिरिक्त दूसरे भी कतिपय पोषण-तत्व हैं–प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और हेमोग्लोबिन।

प्रोटीन रक्त, स्नायु, नाड़ी, तंतु आदि के निर्माण में योग देता है। यह तत्व मांस, मछली, अंडे, पनीर, कंद, मेवे, फलियों और मटर में अधिकांश मात्रा में होता है। आवश्यकता से अधिक प्रोटीन का उपयोग अपच व अन्य पेट-सम्बंधी विकार उत्पन्न करता है। आवश्यकता से अधिक प्रोटीन-आहार ग्रहण करने से यकृत और गुर्दों पर अधिक भार पड़ता है। यकृत और गुर्दे का काम प्रोटीन-तत्वों को शुद्ध करके विषाक्त तत्वों को बाहर निकाल देने का है। अतएव वे लोग जिन्हें शारीरिक श्रम नहीं करना पड़ता है प्रोटीन तत्व संतुलित मात्रा में ही लें।

कार्बोहाइड्रेट तत्व से शरीर-संचालन, खेल-कूद व शारीरिक श्रम की शक्ति प्राप्त होती है। यह तत्व आहार में प्राप्त स्टार्च और शर्करा से बनता है। स्टार्च लगभग सभी अन्नों, आलू, शकरकंद, केले, अनन्नकंद, तरबूज और गूदेवाले फलों में मिलता है। अधिक स्टार्च कब्ज पैदा करता है। इसकी अधिक मात्रा मोटापा, अपचन, टान्सिल, सर्दी के प्रकोप व थकावट जैसे रोगों को जन्म देती है।

शरीर के लिए उपयोगी आहार-तत्व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शर्करा गन्ने के रस, शक्कर, गुड़, शर्बत, मिठाई, पके केले तथा [illegible] फलों में प्राप्त होती है। अधिक शर्करा से आंत्ररोग, जलन, मधुमेह और यकृत की बीमारियाँ हो जाया करती हैं।

प्रोटीन, स्टार्च और शर्करा की तरह वसा भी शरीर के लिए आवश्यक तत्व है। शक्ति उत्पादन में वसा स्टार्च और शर्करा से भी अधिक क्षमतावाली है। शरीर में खपने-वाली शक्ति की पूर्ति वसा करती है। मक्खन, घी, तेल, मेवे और चर्बी में यह तत्व रहता है। अधिक वसा के आहार से अपचन, थकावट, मोटापा और अम्लरोग आदि हो जाते हैं।

इसी तरह शरीर-रचना में विटामिन भी महत्वपूर्ण हैं। महत्वपूर्ण होने के साथ-साथ वे रहस्यपूर्ण भी हैं। न तो इनका कोई निश्चित स्वरूप ही है और न नाप आदि ही, न इनका विशिष्ट नामकरण ही हो पाया है। केवल ए, बी, सी, डी, ई, आदि नामों से इन्हें पहचाना जाता है।

यह जानना आवश्यक नहीं कि, विटामिन कितने हैं। केवल इतना जानना ही पर्याप्त है कि, सभी आवश्यक विटामिन प्रकृति-प्रदत्त आहार में उपलब्ध हैं। अतएव आहार स्वाभाविक होना चाहिये। अधिक पकाने या भोजन को सुस्वादु बनाने से ये तत्व नष्ट हो जाते हैं। शरीर के खनिज तत्व व विटामिन का संतुलन हम ताजे फल, शाक-सब्जियों के साथ दूध के उपयोग द्वारा रख सकते हैं।

सेल्युलोज भी शाक-सब्जियों व फलों से मिलता है। [illegible] के कारण आँतों को मल-शुद्धि की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। इनकी कमी से आँतों में गड़बड़ी, कब्जियत, उदर-विकार तथा आँव आदि रोग हो जाते हैं। आटे का चोकर महत्वपूर्ण सेल्युलोज है। इसके अतिरिक्त उसमें महत्वपूर्ण खनिज तत्व व विटामिन भी होते हैं।

जिस तरह आवश्यकता से अधिक ईंधन भरने पर चूल्हे की आग बुझ जाती है, उसी तरह अधिक आहार से, भूख न होने पर भी स्वाद की तृप्ति के लिए बार-बार खाते रहने से पाचन-क्रिया भी अस्त-व्यस्त हो जाती है। शरीर के लिए अनावश्यक आहार का पेट में भरे रहना अत्यंत हानिकर है। पाक-कला भी एक महत्वपूर्ण कला है। इसमें पारंगत व्यक्ति की तुलना किसी भी सक्षम कलाकार से की जा सकती है। श्रेष्ठ पाक-कला वह है जिसमें आहार की पौष्टिकता व पोषण-तत्व, नष्ट न हो, वह स्वाभाविक रुचिकर हो।

भूखे रहने से जितने लोग मरते हैं, उससे कहीं अधिक संख्या में ज्यादा खानेवालों की मृत्यु होती है। ये लोग ही अधिकतया बीमार रहते हैं। अतएव हमें अपनी संस्कारगत पुरानी आदतों को बदलना होगा और एक नयी पद्धति को जन्म देना होगा—'कब खायें, कितना खायें और क्या खायें।' संतुलित आहार पर आधारित व्यक्तिगत जीवन स्वस्थ एवं सुखी राष्ट्रीय जीवन की आधारशिला है। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेट्रोल के लिए पृथ्वी-मंथन

पेट्रोल आधुनिक जीवन का ऐसा अंग बन गया है कि, लार्ड कर्जन ने कहा था–"मित्र राष्ट्रों ने पेट्रोल के सागर को पार कर विश्व-युद्ध जीता है।" द्वितीय विश्व-युद्ध में यह कहावत चल पड़ी थी–

"पेट्रोल खून से ज्यादा कीमती है।"

देशबंधु शर्मा

पेट्रोलियम मशीन-युग की प्राणधारा है। हमारे औद्योगिक और दैनिक जीवन में उसने इतने रूपों में प्रवेश कर लिया है कि, बीसवीं सदी को पेट्रोलियम-युग कहना अनुचित न होगा।

पेट्रोलियम-युग का आरम्भ २७ अगस्त १८५९ को हुआ। उस दिन पेनसिलवानिया (अमरीका) के टिटुसविल नामक स्थान पर प्रथम तेल-कूप खोदा गया। उसे खोदने और पेट्रोलियम-युग का सूत्रपात करने का श्रेय एडविन एल० ड्रेक को है। ड्रेक पहले रेल्वे-कर्मचारी रहा था। उसी ने पहले-पहल जमीन में सूराख करने के लिए भाप के इंजन का उपयोग किया और सूराख की दीवारों को मजबूत रखने के लिए लोहे के पाइप इस्तेमाल किये।

आजकल तेल-कूपों की खुदाई के लिए लोहे के स्तूप (डेरिक) बनाये जाते हैं; परंतु ड्रेक के कुँए का स्तूप लकड़ी का बना था।

काफी पुराने जमाने से मनुष्य को ज्ञात था कि, जमीन पर कई जगह गड्ढों में रिस-रिसकर प्राकृतिक रूप से पेट्रोलियम जमा हो जाता है। ड्रेक का पहला तेल-कूप भी ही एक प्राकृतिक तेल-स्रोत पर था।

प्राकृतिक स्रोतों से बहुत कम मात्रा में तेल निकलता है – बहुत हुआ तो दिन में ४-५ गैलन। लेकिन ड्रेक का तेल-कूप प्रतिदिन लगभग १,२५० गैलन तेल देने लगा। तेल के दाम अच्छे मिलते थे। ३६ गैलन तेल का पीपा करीबन २०० रुपये में बिकता था। इसलिए लोग इस काले तेल को 'काला सोना' कहने लगे। तेल की खोज जोरों से होने लगी। स्कॉटलैंड के व्यापारी जान डी० राकफेलर ने तेल-शोधन का काम बड़े पैमाने पर शुरू किया। १८८० तक राकफेलर की स्टैंडर्ड आइल कम्पनी ने अमरीका के तेल-उद्योग पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया, जो कई वर्ष तक कायम रहा।

अब तक यह पता लग गया था कि तेल के प्राकृतिक स्रोतों के नीचे बहुत में तेल-भंडार होते हैं। फिर तो अमरीका, मेक्सिको, रुमानिया, पोलैंड, रूस और ईस्ट इंडीज में बहुत अच्छे तेल-क्षेत्र खोजे निकाले गये। इसके साथ ही तेल के इंजनों का विकास और प्रचलन बहुत तेजी से होने लगा, जिससे तेल-उद्योग को अपने माल की बिक्री की चिंता नहीं करनी पड़ी।

कुँओं से निकलनेवाले कच्चे तेल (कूड आइल) के शोधन से तीन वस्तुएँ प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एडविन एल० ड्रेक

होती है–(१) [illegible] का तेल और (३) गाढ़ा तेल। आरम्भ में पेट्रोल को निकम्मी चीज समझकर प्रायः फेंक दिया जाता था। जलाने पर यह चीज भभक उठती थी और विस्फोट का खतरा पैदा कर देती थी। किसी को न सूझता था कि, उसका क्या उपयोग किया जाये।

बीसवीं सदी के आरम्भ में मोटर-गाड़ियों के विकास से यह समस्या हल हो गयी। पेट्रोल मोटर-गाड़ियों के ईंधन के रूप में बरता जाने लगा। मोटरों की लोकप्रियता बढ़ने के साथ पेट्रोल की माँग भी बढ़ती गयी और यह समस्या उपस्थित हो गयी कि, कच्चे तेल से किस प्रकार अधिक-से-अधिक पेट्रोल निकाला जाये।

इसके समाधान के लिए डा० विलियम बटन ने १९१३ में तेल-शोधन की एक नयी प्रक्रिया विकसित की, जिसे 'क्रैकिंग' कहते हैं। 'क्रैकिंग' का अर्थ है–भारी व्यूहाणुओं (मालिक्यूल) को तोड़कर हल्के व्यूहाणु प्राप्त करना। कच्चे तेल का व्यूहाणु भारी होता है, पेट्रोल का हल्का। 'क्रैकिंग' में रासायनिक क्रिया द्वारा कच्चे तेल (क्रूड आइल) के व्यूहाणु में स्थित कार्बन और हाइड्रोजन के परमाणु छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और नये सिरे से जुड़कर पेट्रोल को जन्म देते हैं। इस प्रक्रिया से कच्चे तेल से पहले की अपेक्षा दुगुने परिमाण में पेट्रोल प्राप्त होने लगा।

पेट्रोलियम-उद्योग के शैशव-काल में वैज्ञानिकों को इतना ही पता था कि, कुछ खास ढंग की चट्टानों में ही तेल के भंडार होते हैं। लेकिन भूगर्भ में कहाँ कैसी चट्टानें हैं, यह पता लगाने का उनके पास कोई साधन नहीं था।

परंतु आज के तेल-खोजियों के पास ऐसे सूक्ष्म एवं जटिल यंत्र हैं, जिनके द्वारा वे पता लगा सकते हैं कि, धरती के नीचे कहाँ पर तेल मिलने की अधिक सम्भावना है। ये यंत्रोपकरण हैं – (१) ग्रैविमीटर, (२) मैग्नेटोमीटर; और (३) सीज्मोग्राफ यानी भूकम्प-मापक यंत्र। इनके द्वारा पृथ्वी के ऊपर से भूगर्भीय चट्टानों का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए यंत्रों को जीप में रखकर जमीन पर घुमाया जाता है। जमीन यदि बहुत ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम है, तो हवाई जहाज में यंत्र रखकर उस इलाके पर उड़ान भरी जाती है, जहाँ का

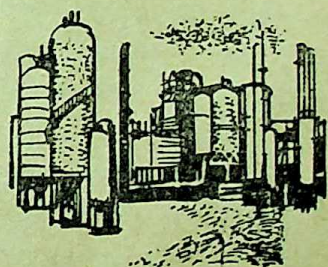

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अध्ययन करना होता है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रैविमीटर से भूगर्भीय चट्टानों के हल्कापन व भारी पन का पता चलता है । मैग्नेटोमीटर के द्वारा पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र की तीव्रता मापी जाती है । वैज्ञानिक जानते हैं कि, तेल-भंडारों से युक्त चट्टानें कितनी हल्की-भारी होती हैं, वहाँ पृथ्वी का चुम्बकीय क्षेत्र कैसा होता है ।

सीज्मोग्राफ यंत्र बताता है कि, चट्टानी सतहें कितनी गहराई पर हैं । उसे नापने के लिए जमीन में सुराख करके उसमें डाइनामाइट का विस्फोट किया जाता है । उससे छोटा-सा भूकम्प होता है । भूकम्प के धक्के की लहरें भूगर्भीय चट्टानों से टकराकर धरातल पर वापस लौटती हैं । लौटने में उन्हें जितना समय लगता है, उसके आधार पर चट्टानों की गहराई पता लगा ली जाती है ।

जहाँ तेल का अस्तित्व सिद्ध हो, वहाँ कुँआ खोदा जाता है । फिर भी तेल-प्राप्ति का कोई भरोसा नहीं होता । कुँआ सूखा भी निकल सकता है । यदि उसमें तेल है तो कितना है और क्या उसे आर्थिक दृष्टि से लाभदायक ढंग से निकाला जा सकता है—यह सब बाद में पता लगता है । इसलिए तेल-खुदाई एक जुआ है । बारह कुँओं के पीछे औसतन एक कुँआ तेल-उत्पादन के योग्य सिद्ध होता है ।

और यह जुआ है भी बड़ा खर्चीला । किसी नये क्षेत्र में तेल खोजने में वर्षों लग जाते हैं और एक तेल-सर्वेक्षण-दल का एक मास का खर्च होता है—दस लाख रुपये । एक कुँआ खोदने में आठ लाख रुपये खर्च हैं । चूँकि प्रायः बारह कुँओं में से एक कुँआ कामयाब होता है, इसलिए, कह सकते हैं कि, एक कुँए की खुदाई में एक करोड़ रुपये खर्च हो जाते हैं । यदि जुए में सफलता मिल गयी, तो फिर तेल-कारखाने की स्थापना की जाती है ।

पेट्रोल की माँग बढ़ने के कारण भूगर्भ ही नहीं, समुद्रों में भी तेल-कूप खोदे जा रहे हैं । कई कूप तो पाँच से दस मील तक गहरे हैं । आजकल पम्पों द्वारा भारी दबाव के साथ तेल-भंडारों में पानी पहुँचाकर तेल निकाला जा रहा है । इससे भंडार का ९० प्रतिशत तक तेल प्राप्त हो जाता है । इस विधि से जो भंडार खाली हो जायेंगे, शायद भविष्य में उनमें छोटे परमाणु-बम फोड़कर उनका बचा-खुचा तेल भी निकाल लिया जायेगा ।

धरती का तेल-भंडार सीमित है । इसलिए कोयले से पेट्रोल तैयार करने की विधि निकाल ली गयी है । लकड़ी के बुरादे और मकई के डंठल से भी परीक्षण के तौर पर पेट्रोल तैयार किया गया है । लेकिन अभी यह कृत्रिम पेट्रोल बहुत महँगा पड़ता है ।

परमाणु असीम शक्ति का स्रोत हो सकते हैं । फिर भी विशेषज्ञों का विचार है कि, पेट्रोल अभी कई दशाब्दियों तक शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत और औद्योगिक जीवन का आधार बना रहेगा । *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विघटन रोकना ही होगा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश को भाषा, जाति, धर्म के नाम पर पुनः खंड-खंड करनेवाली घातक प्रवृत्तियों पर अंकुश की आवश्यकता है।

जे० बी० कृपलानी

देश के स्वतंत्र होने के बाद विघटनकारी प्रवृत्तियाँ अधिक बलवती हो चली हैं। और जब तक इन्हें रोका नहीं जाता, हमारे सभी विकास कार्य—चाहे वे किसी भी क्षेत्र में क्यों न हों—निरर्थक हैं। इन प्रवृत्तियों के कारण हमारी प्रजातांत्रिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जायेगी और हम सीमान्त विदेशी शत्रुओं के मुकाबले संगठित मोर्चा प्रस्तुत करने में भी असफल रहेंगे।

हम लोगों में फूट पैदा करनेवाला संकट केवल साम्प्रदायिक ही नहीं है। भाषाई, जातिगत, प्रादेशिक, वर्गवादी, राज्यों के सीमा-विवाद, असंगत आर्थिक विकास, नदी जल-प्रदाय सम्बंधी विवाद भी प्रमुख हैं। यदि इन आंतरिक विवादों को शीघ्र ही बिना किसी वैमनस्य व हिंसा के शांतिपूर्ण तरीकों से हल नहीं किया गया, तो हम शक्तिहीन हो जायेगा और जिन विशाल रचनात्मक कार्यों की पूर्ति का भार हमने स्वीकार किया है, वे सबके सब महत्वहीन हो जायेंगे।

इन विवादों का हल प्रजातांत्रिक ढंग से होना चाहिये अन्यथा जनता की रुझान निरंकुश तानाशाही की ओर उन्मुख हो जायेगी।

विघटनवादी प्रवृत्तियों पर अंकुश लागू करने के लिए अल्पसंख्यक, पिछड़ी व परिगणित जाति को विशेष सुविधाएँ प्रदान करना समस्या को सुलझाना नहीं, उसे और भी जटिल बनाना है।

भारतीय संविधान में सभी नागरिकों को समान माना गया है। जाति, वर्ण, धर्म, लिंग, भाषा, प्रदेश-विशेष के कारण कोई गौण या उच्च नहीं है। भारतीय नागरिकता का अर्थ किसी एक राज्य विशेष की नागरिकता नहीं है। सभी नागरिकों के समान अधिकार एवं कर्तव्य हैं। कानून की दृष्टि में सभी समान हैं। सबको वयस्क-मताधिकार, भारत में कहीं भी नौकरी व धंधा करने तथा सम्पत्ति ग्रहण करने के अधिकार हैं। यदि इन्हें ही दृढ़ता व पूर्ण निष्पक्षता से लागू किया जाये, तो विघटनवादी प्रवृत्तियों को बहुत कुछ दबाया जा सकता है।

जब कानून के अंतर्गत सभी नागरिकों के समान अधिकार व कर्तव्य हैं, तो फिर अल्प-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात नहीं होनी चाहिये। केंद्र और राज्यों के जन-सेवा आयोग सरकारी पदों पर बहुधा प्रत्यर्थियों का चयन योग्यता के आधार पर करते हैं। प्रशासनिक कार्यों के उत्तरदायित्व व सुचारु प्रबंध के लिए यह व्यवस्था ठीक है; परंतु कई क्षेत्रों में राजकीय सेवाओं के लिए भी कुछ जाति या धर्म-विशेष के लोगों के लिए स्थान सुरक्षित रखे जाने लगे हैं। वास्तव में यह कदम अत्यंत घातक व अनुचित सिद्ध होगा।

अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक के नाम पर धर्म, सम्प्रदाय व जाति विशेष को प्रतिनिधित्व देने की प्रणाली उस शासन के लिए ठीक थी, जिसका उद्देश्य 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति अपना कर साम्राज्यवादी विस्तार करना था। परंतु स्वतंत्र, प्रजातांत्रिक व धर्म-निरपेक्ष भारत के लिए—जहाँ नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त है — नौकरियों में संरक्षण जैसी कदापि नहीं होनी चाहिये।

तर्क यह दिया जाता है कि, कुछ जातियाँ पिछड़ी हुई हैं। परंतु वास्तविक पिछड़ेपन को मिटाने के लिए उन्हें पृथक् कर देना और पिछड़ेपन के नाम पर निहित स्वार्थों की सृष्टि करना, कहाँ तक उचित है? इससे एकता को बल मिलना तो दूर रहा, नयी पृथकताएँ भी जन्म ले लेंगी।

कुछ दिनों पहले मैसूर सरकार ने एक आयोग इसकी जाँच के लिए नियुक्त किया था कि, राज्य में फिलहाल जो पिछड़ी अनुसूचित जातियाँ हैं उनके अलावा और जातियाँ और कितनी हैं। आयोग ने घोषणा की कि, जनसंख्या में पचास प्रतिशत लोग और भी हैं जिन्हें पिछड़ी जातियों में शामिल किया जाना चाहिये। इसके बाद हम यदि ईसाई, मुसलमान आदि अल्पसंख्यकों को जोड़ लें, तो यह संख्या

जीवन-सूत्र

जिंदगी का प्रत्येक क्षण मुझे जीने की प्रेरणा देता रहा है। मैं एक पल भी कभी निरर्थक नहीं खोना चाहता हूँ, क्योंकि यहाँ की सभी चीजें नाशवान् हैं अतः क्यों न एक-एक पल का पूरा उपयोग कर लिया जाये। देश की पराधीनता ने मुझे राजनीति में उतारा। स्वतंत्रता-संघर्ष का बीजमंत्र मेरे खून में घुल गया है। इसी से मुझे संघर्ष और संकटों में आनंद आने लगा। वे मेरे जीवन के ही अंग बन चले। उन्हें मैं जीवन से अलग नहीं रख सकता।

यदि रोजमर्रा के संकटों से फुर्सत पा जाऊँ, तो मुझे जिंदगी का प्रत्येक क्षण आत्म-संतोष दे सकता है। मुझे उन लोगों पर हँसी आती है, जो जीवन की वास्तविकता समझे बिना ही निरर्थक दौड़-धूप करते हैं। मैं कभी भी निराशावादी नहीं रहा हूँ; क्योंकि मुझे सदा ही अपने जीवन की निःसारता से प्रेरणा मिलती रही है।

—कृपलानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिशत से भी अधिक तक पहुँच जायेगी। अर्थात् राज्य के अस्सी प्रतिशत लोगों को विशेष सुविधाएँ देनी होंगी। इस तरह के लोग अल्पसंख्यक न रहकर बहुसंख्यक होंगे। यदि यही व्यवस्था रही तो, शेष बीस प्रतिशत को भी पिछड़ी जाति के बनने में देर नहीं लगेगी।

इस तरह पिछड़ी जाति के नाम पर निहित स्वार्थी वर्ग की सृष्टि का एक और भी उदाहरण है। आंध्र सरकार ने इन लोगों के लिए केवल पद ही सुरक्षित नहीं रखे, बल्कि एक आदेश जारी करके यहाँ तक व्यवस्था कर दी कि, इन पदों को तब तक रिक्त रखा जाये जब तक कि, पिछड़ी व अनुसूचित जाति में से ही कोई योग्य उम्मीदवार न मिल जाये।

आचार्य कृपलानी

प्रश्न तो यह है कि, पिछड़ी जातियों का पिछड़ापन कैसे मिटाया जाये? पहले तो यह तर्क ही असंगत है कि, किसी जातिविशेष का प्रत्येक सदस्य पिछड़ा हुआ है। सभी जातियों में शिक्षित-अशिक्षित, धनी और गरीब होते हैं। सवाल कम या अधिक का हो सकता है। पिछड़ापन समाप्त करने के लिए हमें भी वही तरीका अपनाना पड़ेगा, जो विकसित देशों ने अपना रखा है।

सभी पढ़ने योग्य उम्रवाले बच्चों के लिए चौदह वर्ष की उम्र तक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क करनी होगी। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए योग्य व जरूरतमंद विद्यार्थियों को उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति के आधार पर विशेष छात्रवृत्तियाँ व सुविधाएँ देनी होंगी। धनी लोग अपने बच्चों की शिक्षा का भार स्वयं ही उठायें। यहाँ पर भी योग्यता के आधार पर चयन होना चाहिये। कोई इसी कारण शिक्षा पाने का हकदार नहीं है कि, उसके माता-पिता धनी होने के कारण शिक्षा का भार उठाने में समर्थ हैं।

जो व्यवस्था सुझायी गयी है, वह सब पर समान रूप से लागू हो सकती है और पिछड़ी जातियों पर इसका दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ेगा। तथ्य तो यह है कि, पिछड़ी जातियों के सभी सदस्य गरीब नहीं हैं और न सवर्ण जाति के सभी सदस्य अमीर ही। चपरासी, चौकीदार, रसोइये या मजदूर में जातिगत कहीं कोई विशेष अंतर नहीं होता। चाहे ये सवर्ण हों या पिछड़ी जाति के, इनका आर्थिक धरातल एक-सा है।

परंतु आज जो स्थिति है, उसके अनुसार सभी मुसलमान, भारतीय ईसाई पिछड़ी या अनुसूचित जन-जाति में पैदा होनेवाले बच्चे जाति-विशेष में जन्म लेने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मात्र से ही इन विशेष सुविधाओं के अधिकारी हो जायेंगे । भले ही इनके माता-पिता मंत्री, उच्च अधिकारी, कुशल व्यापारी व धनी व्यक्ति ही क्यों न हों । इसके विपरीत सवर्ण हिन्दू गरीब परिवार में पैदा होनेवाला बच्चा इन सब रियायतों से वंचित रहेगा । इस उलटी व्यवस्था को न्यायसंगत कैसे माना जाये ?

इसी तरह भाषाई विवाद का मसला है । जहाँ कहीं इस विवाद का वास्तविक आधार हो, वहाँ राज्य-पुनर्गठन-आयोग के सुझावों पर इसे हल किया जाय । जिस राज्य में अन्य भाषा-भाषी अल्पसंख्यकों की संख्या तीस प्रतिशत या उससे अधिक हो, उसे द्विभाषी राज्य बनाना चाहिये । अन्यत्र जहाँ इससे कम प्रतिशत हों, वहाँ उन लोगों के बच्चों की शिक्षा का माध्यम उनकी मातृभाषा रहे । इन्हें राज्यभाषा भी अवश्य सिखायी जाये, जिससे राजकीय सेवाओं के चुनाव, धंधे-व्यवसाय में सुविधा रहे ।

समानता को व्यवहार में लाने के लिए सरकार सार्वजनिक जीवन में जाति, धर्म, सम्प्रदाय व वर्ग पर आधारित भेदभाव को दृढ़ता से अस्वीकार करे । धर्म, जाति व व्यक्ति का निजी मामला रहे । सार्वजनिक स्कूलों व दफ्तरों में भी यही प्रणाली हो ।

आंतरिक विघटन का घुन देश को खोखला बना रहा है । विघटनवादी तत्वों का यदि कड़ा उपचार नहीं किया गया, तो देश की शांति, समृद्धि व विकास के लिए संकट पैदा हो जायेगा । *

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अंजुली

दानी !
तुमने तो बहुत कुछ किया,
विष से लगाकर अमृत तक दिया !
पर मेरा भाग्य–
मेरी अँगुली में संधि थी,
और मेरी लोभी दृष्टि–
तुमने जो दिया
उसे छोड़,
तुमने जो नहीं दिया
उस पर थी ।
इसीलिए तुम्हारा दान
अनदेखा बिखर गया
बह गया,
और मैं निर्धन का निर्धन
ही रह गया ।

– नीरज

स्वीकारोक्ति

अतिलघु हूँ, छोटा हूँ–
इसमें भी संशय क्या ?
निपट अकेला हूँ पत्रहीन,
करूँगा संचय क्या ?
ऊपर ये काले बादल हैं,
ढायेंगे प्रलय क्या ?
बीज हूँ नन्हा-सा–
फिर भी इनसे भय क्या ?

–रमा सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रांतिकारी परमानंदजी

अदालत में मौत की सजा सुनकर परमानंदजी हँस दिये थे। ऐसे जन्मजात क्रांतिकारी ने अपने संस्मरण 'नवनीत' के लिए विशेष रूप से लिखे हैं। उनके कुछ और संस्मरण अगले अंकों में दिये जायेंगे।

पेनांग की घटना है। नवम्बर १९१४ के अंतिम दिन होंगे। अमरीका से गदर पार्टी के बहुत से लोगों को क्रांति के उद्देश्य से पंजाब भेजा जा चुका था। मैं गदर पार्टी के अंतिम दल के साथ 'तोसामारू' जहाज से स्वदेश लौट रहा था। उस दल में गदर पार्टी के पदाधिकारी और प्रमुख कार्यकर्ता शामिल थे। हमने अपना कार्य हांगकांग तथा शंघाई से ही शुरू कर दिया था। इस कारण हम पर तिरछी नजर थी। कलकत्ता के पास बजबज में बाबा गुरुदत्त सिंह के 'कोमागाता मारू' जहाज के साथ कुछ ही दिन पहले गोलीकांड हुआ था। इसलिए हमें भी दुर्घटना की आशंका बनी हुई थी और वह वही भी निकली। हमारा जहाज वहाँ रोक लिया गया और उस पर कड़ा पहरा लग गया। हमने सोचा कि, जो कुछ पंजाब पहुँचकर करना है, वह यहाँ से ही क्यों न शुरू कर दिया जाये? यदि इस घेरे में गिरफ्तार कर लिये गये, तो आगे की सारी योजना यों ही रह जायेगी।

रविवार को हम सब गुरुद्वारे गये। वहाँ कुछ भाषण हुए। कुछ लोगों से परिचय भी हुआ। गुरुद्वारे में अधिकतर फौजी सिख जमा थे। दूसरे दिन जहाज पर यह योजना बनायी गयी कि, यहाँ की फौजी छावनी का ठीक-ठीक भेद लिया जाये और देखा जाये कि, क्या किया जा सकता है? मुझे और मेरे साथ सरदार रोड़ासिंह को यह काम सौंपा गया। हम दोनों पहरेदारों की आँख बचाते हुए किसी तरह किले के घेर में पहुँच गये। आगे बढ़ने के बारे में अभी हम सोच ही रहे थे कि, अंदर से एक नौजवान अफसर निकला और उसने मेरा नाम लेकर

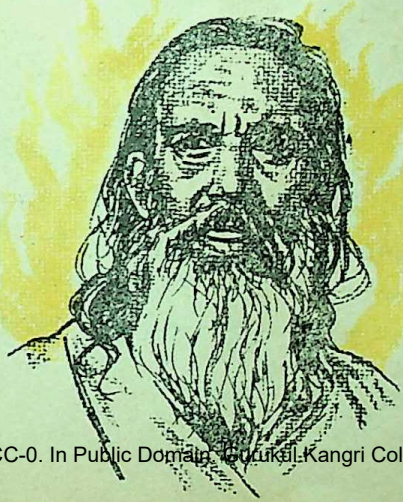

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवाज दी। मैं हक्का-बक्का-सा रह गया। वह और आगे बढ़ और मेरे कान के पास मुँह रखकर अपना परिचय दिया। वह कलकत्ता से अमरीका जाने के लिए मेरे साथ एक ही जहाज पर सवार हुआ था। मेरा हाथ पकड़कर किले के भीतर अपने दफ्तर में ले गया। बिना किसी भूमिका के उसने कहा—"कहिये, क्या योजना है ? क्या कुछ साथी आपके साथ हैं ?" यह कहते-कहते उसने चाबियों का एक गुच्छा मेरे हाथ में रख दिया। फिर उसने बताया कि, दस हजार फौजियों के लिए एक वर्ष की सैन्य-सामग्री इस किले में जमा है। कुछ करना हो, तो इससे काम लिया जा सकता है।

उसका नाम सरदार इंद्रसिंह था। जैसे ही उसने चाबियाँ मेरे हाथ में रखीं, मेरी प्रसन्नता का पारावार न रहा। मेरे क्रांतिकारी जीवन की वह सबसे बड़ी सफलता थी। मुझे ऐसा लगा, जैसे कि सारा किला ही मेरे हाथ में आ गया हो। पर मुझे इस बात का भी पूरा भान था कि, हम जहाज पर सवार मुट्ठी-भर साथी वहाँ कुछ अधिक काम नहीं कर सकेंगे। इसलिए मैंने सरदार इंद्रसिंह से कहा—"अभी तो हमें इस घेरे से निकलकर स्वदेश पहुँचने का रास्ता बताओ। अपना काम लाहौर पहुँचने के बाद ही शुरू करना बेहतर होगा।" उसने बड़े सरल भाव से उत्तर दिया—"यहाँ का गवर्नर बड़ा कमजोर है। उसको जाकर किसी तरह घेर लो और डरा-धमकाकर उससे कह दो कि, यदि हमें हिन्दुस्तान नहीं जाने दिया गया, तो हम यहीं तमाम गड़बड़ी फहरा देंगे।"

वहाँ से लौटकर गवर्नर के जहाँ जाने की योजना बनायी गयी। हममें से कुछ लोग बाजार जाने के बहाने उसके बँगले पर जा पहुँचे। बातचीत चल ही रही थी कि, हमारे एक साथी ने रिवाल्वर निकालकर कुछ गर्मी दिखायी कि, गवर्नर एकदम ढीला पड़ गया। उसने कहा—"जर्मनी के 'एमडन' जहाज के कारण आगे का रास्ता सुरक्षित न होने से तुम्हारे जहाज को यहाँ रोका गया है। यदि तुम लोग जोखिम उठाकर भी आगे जाना चाहते हो, तो जा सकते हो।" साथ-ही-साथ उसने रास्ते के लिए हमारे राशन आदि का भी इंतजाम कर दिया।

जहाज पर लौटते हुए हम लोग इतने प्रसन्न थे, जैसे हमने किला ही फतह कर लिया हो। इतनी बड़ी कामयाबी की हमें उम्मीद नहीं थी। इस आशातीत सफलता को अपने लिए शुभ मानकर हमने पेनांग से स्वदेश के लिए प्रस्थान किया।

पेनांग से रंगून होते हुए कलकत्ता के खिदरपूर बंदरगाह पहुँचकर जहाज से उतरना भी मामूली समस्या न थी। यह आशंका सिर पर डोल रही थी कि, कहीं 'कोमागाता मारू' की तरह हमारे साथ भी न बीते। जहाज किनारे पर लगा, तो सामने बिल्कुल वही दृश्य उपस्थित था, जो 'कोमागाता मारू' के साथ घटा था। हम सबको गिरफ्तार करके जेलों में पहुँचाने के लिए फौज के सिपाही और स्पेशल गाड़ी मौजूद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

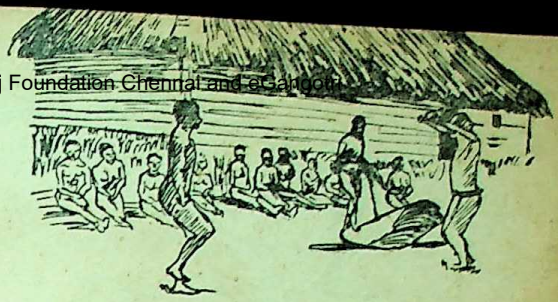

अंदमान के मूल निवासियों का नृत्य

कुछ पढ़-लिख जाने के बाद बड़े भाई ने मुझे लोकमान्य तिलक के 'केसरी' पत्र का श्री माधवराव सप्रे द्वारा सम्पादित हिन्दी संस्करण दिखाना और पढ़ाना शुरू कर दिया। उसके लेख व कवित्त आग बरसाया करते थ। हमारे देहात के ठाकुर मनराखन-सिंह महाभारत सुनन के बड़े शौकीन थे। मुझे बुलाकर वे सबलसिंह चौहान की दोहे-चौपाई में लिखी हुई महाभारत सुनाया करते थे। वह मुझे ऐसी याद हो गयी थी कि, आज भी प्रायः सारी याद है। महाभारत के पाठ का मुझ पर बड़ा गहरा असर पड़ा। गीता में आत्मा को अजर-अमर बताने का मुझ पर कुछ ऐसा असर पड़ा कि, बचपन में ही मरने का डर मेरे दिल स उठ गया।

मेरे जन्म से कुछ ही दिन पहल माँ के साथ जो दुर्घटना घटी थी, उसके कारण मैं यह कहा करता हूँ कि, मेरा जन्म एक तरह से विनाश की ढेरी में से हुआ है। माँ छज्जे पर भाभी के साथ बैठी खाना बना रहीं थीं। छज्जा टूट गया। वे नीचे गिरीं और मलवे में दब गयीं। बेहोशी की हालत में उनको बाहर निकाला गया। उनकी तीन दिन की बेहोशी के बाद मैं पैदा हुआ। वे भी ठीक हो

थी। मेरे पास जापान
जाल किये गये भारत के वे 'वार-मैप्स'
थे, जिनके आधार पर यहाँ देशव्यापी क्रांति
की योजना बनायी जानेवाली थी। मैंने
अंतत कुलियों का वेश पहन लिया। अपने
कुछ कपड़े, नक्शे और जूते एक बाल्टी में
रख और उसको हाथ में लटका एकाएक
उन कुलियों में शामिल हो गया, जो रंगून
से हिन्दुस्तान लाने के लिए जहाज पर
सवार किये गये थे। मैं चुपके से उन्हीं के
साथ नीचे उतर गया। बाकी साथी गिर-
तार करके स्पेशल ट्रेन से लाहौर व मुल्तान
आदि पहुँचाकर वहाँ की जेलों में बंद
कर दिये गये।

मेरे सक्रिय क्रांतिकारी जीवन की यह
हकीकत-ला थी। मुझमें क्रांति की यह भावना
कब व कैसे पैदा हुई और क्यों मैंने अपने
जीवन को उसमें लगा दिया, इन प्रश्नों का
उत्तर थोड़े में नहीं दिया जा सकता।
मेरे दादा १८५७ की महान् क्रांति में
शहीद हुए थे। चरखारी राज्य ने अँग्रेजों का
साथ दिया था; और मरे दादा न चरखारी
लूटने में नेतृत्व किया था। उनको २०
साल की सजा हुई और जेल में ६ वर्ष के
बाद उनका देहांत हो गया। इसी प्रकार
कोटा और मझगाँवा के आपसी संघर्ष
में मेरे पिताजी को भी जेल की सजा हुई
और मेरे जन्म के एक ही वर्ष पहले वे
मर गये थे। मेरी माँ मुझे गोद में लेकर
लोरियाँ सुनाया करती थीं, उन्होंने भी
मेरे जीवन-निर्माण में बड़ा योग दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयीं। इस विनाशकारी दुर्घटना ने मुझे बड़ा निर्भय बना दिया। बचपन में ही मैंने यह कहना शुरू कर दिया था कि, मौत मुझे नहीं खा सकती। यह निर्भयता मेरे बड़े काम आयी।

अपने गाँव से बड़े भाई के साथ कुछ अधिक पढ़ाई के लिए मैं इलाहाबाद आया और कायस्थ पाठशाला में भरती हो गया। १९०७ की घटना है। पंजाब-केसरी लाला लाजपतराय मांडले की नजरबंदी से लौटे थे। इलाहाबाद में उनके स्वागत का विराट् आयोजन किया गया। उनका व्याख्यान सुनकर मैं कुछ विद्यार्थी साथियों के साथ लौट रहा था। गवर्नर की कोठी के सामने पहुँचे। गवर्नर अपनी कोठी के बगीचे में सेक्रेटरी के साथ खड़े कुछ बातचीत कर रहे थे। उनको देखकर मैं बोल उठा—"यू आर सन्स आव पिग" (तुम सुअर के बच्चे हो)। सेक्रेटरी ने सुन लिया और मुझे पकड़ना चाहा। विद्यार्थियों ने मुझे घेर लिया और गिरफ्तारी से बचा लिया।

दूसरे दिन सवेरे ही पाठशाला में इस घटना की चर्चा शुरू हो गयी और तीसरे दिन मुझे इस अपराध की यह सजा मिली कि, पाठशाला से निकाल दिया गया। पंडित सुंदरलालजी भी इन्हीं दिनों मेयो कालेज से एल-एल० बी० की अंतिम [illegible] से निकाले गये थे।

इलाहाबाद से उन दिनों श्री [illegible] स्वरूप भटनागरने सरकारी नौकरी छोड़कर और अपनी पत्नी के सारे गहने बेचकर १८५७ की अर्ध-शताब्दी के उपलक्ष में 'स्वराज्य' नाम का एक उर्दू साप्ताहिक निकाला था। पं० सुंदरलालजी हिन्दी में 'कर्मयोगी' निकाला करते थे। मैं दोनों पत्र बड़े चाव से पढ़ा करता था। एक दिन [illegible] नागरजी के दफ्तर में एक साथी के साथ पहुँचा। मैंने उनसे कहा कि, हमें भी देश-सेवा का कोई काम बताइये। उन्होंने अपने [illegible] कमरे में चक्की लगायी हुई थी। मुझे बोले—"रोज आकर यहाँ चक्की पीसा करो और १० सेर तक हर रोज पीसने का अभ्यास करो। बस, देशसेवा का यही पहला पाठ है। दो मास तक चक्की चलाकर उसमें [illegible] हो जाओगे, तो दूसरा पाठ सिखाया जायेगा।" दूसरा पाठ यह था कि, हाथ में घंटी लेकर बाजार में जाकर 'लो स्वराज्य' 'लो स्वराज्य' के नारे लगाकर अखबार बेचा करो। सम्भवतः सारे हिन्दुस्तान में 'स्वराज्य' ही ऐसा पत्र था, जिसके ९ सम्पादकों को लगातार गिरफ्तार किया गया और कई को काले पानी की सजाएँ दी गयीं।

कायस्थ पाठशाला में पढ़ते हुए एक बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम बनाने की थी सही। लेकिन बम बनाते-बनाते विस्फोट हो गया। सारा हाथ झुलस गया और चेहरे पर भी कुछ असर हुआ। डर के मारे मैं हाथ पर कपड़ा लपेट पं० सुंदरलालजी के पास पहुँचा। उन्होंने अपने पास रखकर मेरा उपचार किया।

इलाहाबाद से बनारस जाकर श्री केशव देवजी शास्त्री, श्री रामनारायण मिश्र, बाबू शिवप्रसाद गुप्त और पंडित बालकृष्ण भट्ट आदि के सम्पर्क में आया। बाबू शिवप्रसादजी की प्रेरणा, प्रोत्साहन और सहायता से ही मुझे अमरीका जाने का अवसर प्राप्त हुआ था। वे मुझे स्वयं कलकत्ता ले जाकर जहाज पर बैठाकर आये थे।

× × ×

तो पेनांग से कलकत्ता और कलकत्ता से लाहौर पहुँचकर मैं साथियों के साथ छावनियों में क्रांति की तैयारी में लग गया। पेनांग की सफलता के कारण हमने यह समझ लिया था कि, भारत में भी क्रांति की भूमिका तैयार है—केवल कुछ प्रयत्न करने की आवश्यकता है। श्री शचींद्र सान्याल को कलकत्ता भेजकर श्री रासबिहारी बोस को लाहौर बुला लिया गया। कपूरथला के महारानी मंदिर में श्री रासबिहारी बोस, सरदार करतारसिंह सराबा, श्री विष्णु गणेश पिंगले, श्री शचींद्र सान्याल और मैंने बैठकर जापान के जर्मन दूतावास के प्राप्त किये गये 'वार मैप्स' को सामने रखकर क्रांति की सारी योजना तैयार की। २१ फरवरी १९१५ को देशव्यापी क्रांति का श्रीगणेश करने का निश्चय किया गया। पर भेद खुल जाने के कारण जहाँ-तहाँ गिरफ्तारियाँ शुरू हो गयीं। लाहौर सेंट्रल जेल के ११ नम्बर अहाते में ६३ प्रमुख क्रांतिकारियों पर षड्यंत्र करने का मुकदमा चला। मुझ सहित २७ को फाँसी की सजा हुई। सजा सुनायी जाने के बाद मुझे हँसता देखकर सरकारी वकील पिट्मैन ने ट्रिब्यूनल के प्रेसिडेंट मि० ए० आर्विन से कहा था—"सी माई लार्ड, ही इज लाफिंग ऐट हिज डेथ" (देखिये साहब, यह अपनी मृत्यु के साथ खिलवाड़ कर रहा है)।

इसके बाद हममें से सात को तो फाँसी पर लटका दिया गया और २० की सजाएँ काले पानी में बदल दी गयीं।

काले पानी की लम्बी कहानी तो यहाँ क्या दी जाये! फिर भी वहाँ की एक दो घटनाएँ दिये बिना मैं नहीं रह सकता। वहाँ पहुँचते ही जेल के डिप्टी सुपरिंटेंडेंट मि० बैरे के साथ मेरी जो गुत्थम-गुत्था हुई, उससे सारी जेल में सनसनी फैल गयी। वह वहाँ २० वर्ष से था और अपने को जेल का 'खुदा' मानता था। मुझे दफ्तर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाकर उससे कुछ भला-बुरा कहा कि, मैंने उसकी कुर्सी की टाँग पकड़कर उलट दी और छाती पर सवार हो उसकी गर्दन दबोच ली। मुँह पर चपत जमाये और पेट पर घूसों से वार किये। मुझे इस पर २० बेंत लगाये गये और एक साल के लिए १० सेर की बेड़ियाँ पहनाकर कालकोठरी में बंद कर दिया गया। इससे इतना लाभ अवश्य हुआ कि, उस दिन से मुझ-सरीखे कैदियों से चक्की पिसवाना और कोल्हू चलवाना बंद कर दिया गया।

अपने लम्बे जेल-जीवन के ७ वर्ष मैंने साबरमती जेल में भी काटे थे। वहाँ एक दिन अचानक काले पानी के एक पुराने डाकू साथी कल्लू को पीली टोपी में सजा काटते देखा, तो अवाक् रह गया। १९१६-१७ में काले पानी की जेल में एक वार्डन के साथ उसका झगड़ा हो गया था। वह उससे बदला लेने के लिए जेल से निकल भागा। अंडमान के घन जंगलों में लुक-छिपकर उसने पुलिस और फौज के साथ ६ महीने तक गुरिल्ला लड़ाई जारी रखी।

साबरमती जेल में वह किसी और मामले में २ साल की सजा काट रहा था। परंतु बार-बार मैं यह अवश्य सोचता था और अब भी सोचता हूँ कि, परिस्थितिवश डाकू बन जानेवाले ऐसे वीरों के साहस और वीरता का यदि सदुपयोग किया जा सके, तो उनसे कितना बड़ा काम लिया जा सकता है!

मैंने २३ वर्ष काले पानी की सजा में काटे, जबकि सामान्य रूप में १३-१४ वर्ष के बाद छोड़ दिया जाता है। १९३७ में इस सजा के बाद जेल से छूटने पर आठ वर्ष और जेलों में काटने पड़े। इस तरह ७० वर्ष की आयु में से ३१-३२ वर्ष जेलों में बिताने के बाद भी देश के भविष्य में मेरा विश्वास वैसा ही बना हुआ है। मैं यह अनुभव करता हूँ कि, देश के भाग्य में अभी एक और क्रांति से गुजरना लिखा है। उसके बिना आज के प्रजातंत्र का रूप निखर ही नहीं सकता। २३ वर्ष बाद जब मैं लाहौर जेल से छूटा था और ब्रैडला हाल में मुझे अभिनंदन-पत्र देने का आयोजन किया गया था, तब मैंने यह कहते हुए उसे लेने से इन्कार कर दिया था कि, मैं एक घायल पराजित सिपाही की तरह अँग्रेजों की कृपा के फलस्वरूप जेल से छोड़ा गया हूँ। यदि विजयी सिपाही की तरह स्वतंत्रता प्राप्त करके आया होता, तो आप द्वारा किया गया मेरा यह सम्मान और अभिनंदन कुछ सार्थक हो सकता। दूसरे दिन गांधीजी ने वर्धा में आश्रम की प्रार्थना में कहा था—"मुझे परमानंद के रूप में मेरा पहला भाई मिला है, जिसने अपने को घायल व पराजित सिपाही मानकर अभिनंदन-पत्र लेने से इन्कार कर दिया है। देश को ऐसे ही सिपाही चाहिये।"

और आज भी मैं अपने को वैसा ही घायल सिपाही मानता हूँ; क्योंकि हम स्वतंत्र देश को अभी तक अपने सपनों का भारत नहीं बना सके हैं। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तटस्थ भाव

मोहनलाल मेहता सोपान

अनुभूति के दो पहलू होते हैं—सुख और दुःख। जीवन में ऐसे कई प्रसंग आते हैं, जबकि व्यक्ति इन अनुभूतियों के प्रवाह में खिंचा चला जाता है। ऐसे क्षणों में हमारी एक विशेष मानसिक भूमिका होती है, जिसके आधार पर हम दूसरे व्यक्तियों के कार्यों का मूल्यांकन करते हैं। लेकिन हम यह भूल जाते हैं कि, ऐसे मानसिक आवेशों के आधार पर किसी भी वस्तु का सही-सही मूल्यांकन नहीं हो सकता।

अनुभव और अवलोकन से एक बात और सिद्ध होती है कि, हम लोग कई बार किसी व्यक्ति-विशेष के ऊपर अकारण ही अपना अधिकार समझने लगते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि इस अधिकार की भावना से प्रेरित होकर हम उससे बहुत-सी अपेक्षाएँ भी रख लेते हैं और फिर जब हमारी वे अपेक्षाएँ फलीभूत नहीं होतीं, तो हमें उसका दुःख होता है।

कोई व्यक्ति हमारी कुछ मदद करे और हमारे मन में उसके प्रति स्नेहभाव उत्पन्न हो जाये, तो उसमें कोई बुराई की बात नहीं है। किंतु आश्चर्य तो तब होता है, जब हमारा कोई प्रिय मित्र हमें कुछ मदद करता है और हम तब भी उसे दोष ही देते रहते हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है?

इस क्यों का उत्तर पाने के लिए आत्म-विश्लेषण की पद्धति उपयोगी है। हमें अपने मन से कुछ प्रश्न पूछने चाहिये—जैसे कि हम उस व्यक्ति से विशेष रूप से आशा क्यों रखते हैं? क्या हमारा उससे कोई विशेष सम्बंध है अथवा भूतकाल में कभी हमने उसका कोई काम किया है, जिसका कि, हम प्रतिदान चाहते हैं? इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर से हमारे मन का अपने आप समाधान हो जाता है। अगर हमारे कार्य में किसी तरह के प्रतिकार या प्रतिफल की भावना हो, तो इतना निश्चित है कि, हमने उसके लिए जो कुछ भी किया था, वह प्रेम-सम्बंध या स्नेहभाव से नहीं किया था।

वास्तव में हम न तो किसी से प्रतिकार माँगते हैं, न किसी ने हमें झूठी आशा ही दिलायी है; बल्कि हमारे मन में जो अधिकार का भाव या स्वार्थ छिपा रहता है, उसी से हम ऐसा मान लेते हैं। अतः तटस्थ भाव से इन सब बातों पर विचार करने पर हमारे मन में यदि किसी व्यक्ति, समूह या संस्था के प्रति कोई दुःख का भाव होता है, तो वह समाप्त हो जाता है और उत्तरोत्तर स्नेह, सद्भाव एवं सहकार की भावनाएँ विकसित होती हैं। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रीछ ममताशून्य?

मानत्युफेल के लेखों के आधार पर

मनुष्य के नवजात बच्चे का वजन लगभग सात पौंड होता है। भेड़ के मेमने का वजन लगभग दस पौंड होता है। गाय के बछड़े का वजन लगभग पंद्रह पौंड होता है।

इस हिसाब से रीछ के नवजात बच्चे का वजन क्या होगा, जब कि रीछ वजन में गाय के बराबर ही होता है?

आप कहेंगे कि, उसका वजन लगभग पंद्रह पौंड होना चाहिये। पर नहीं। आप जानकर हैरान होंगे कि, रीछ के नवजात बच्चे का वजन लगभग एक पौंड होता है और वह साधारण घरेलू चूहे जितना बड़ा होता है।

अपने जन्म के पहले दस दिनों में रीछ का वजन लगभग आधा पौंड ही बढ़ता है; जब कि मेमनों और बछड़ों का वजन कई पौंड बढ़ जाता है।

इसका क्या कारण है? इसमें प्रकृति का क्या रहस्य है?

रीछ के बच्चे जनवरी के महीने में जन्म लेते हैं। सर्दियों में पूरे महीने रीछनी अपनी माँद में ही रहती है और अपने शरीर में संचित चर्बी पर निर्वाह करती है। यह चर्बी गर्मी के मौसम में उसके अंदर जमा हो जाती है, जो बाद में घुल-घुलकर उसका पेट भरती है। यहाँ तक कि, सर्दी के महीनों में रीछनी पानी भी नहीं पीती। उसकी चर्बी से ही उसकी पानी की जरूरत भी पूरी हो जाती है।

ऐसी हालत में अगर रीछ के बच्चे छोटे-छोटे न हों, तो रीछनी के लिए उनका पेट भरना असम्भव हो जाये। अगर वे मेमनों या बछड़ों जितने बड़े हों, तो उन्हें रोज जितने दूध की जरूरत पड़े, वह कहाँ से आये? इसलिए प्रकृति उन्हें शुरू से ही इतना छोटा बनाती है कि, सर्दी के महीनों में वे भूखे नहीं रह जायें। रीछनी के थोड़े से दूध से ही उनका पेट भर जाता है। अगर वे बड़े-बड़े हों, तो कुछ ही दिनों में रीछनी का दूध सूख जाये और बच्चे भूखे मर जायें।

सर्दी के महीनों में तो रीछ के बच्चे बहुत धीरे-धीरे बढ़ते हैं। पर जब वे अपनी माँद छोड़कर बाहर धूप में जाना शुरू करते हैं, तो वे बहुत बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों से अपना पेट भरना शुरू कर देते हैं। फल, कीड़े-मकोड़े, चींटियाँ, चूहे, मछलियाँ—जो भी उन्हें मिलता है, सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटकर जाते हैं। इस प्रकार अब वे बहुत जल्दी बढ़ना-फूलना शुरू करते हैं।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि, रीछ अपने नये जन्मे बच्चे से बेहद घृणा करते हैं। वे उन्हें फूटी आँखों नहीं देख सकते। इसलिए बच्चों को जन्म देने से पहले रीछनी को जंगल में कहीं छिप जाना पड़ता है। और फिर बच्चों को जन्म देने के बाद, जब तक कि, बच्चे बड़े नहीं हो जाते, उसे अलग मांद में रहना पड़ता है। हर दो साल के बाद रीछनी को प्रसव के समय इसी प्रकार छिपना पड़ता है।

एक बार मास्को के चिड़ियाघर में कोशिश की गयी कि, रीछ अपने बच्चों के पास रहे और उन्हें चाहने लगे। सो उसे उसी अहाते में रखा गया, जहाँ रीछनी रहती थी। सर्दी के मौसम में रीछनी ने तीन बच्चों को जन्म दिया। रीछ को तो उनसे बेहद घृणा थी और उसने कई बार उन्हें मारने की कोशिश की। पर उनकी माँ हमेशा चौकन्ना रहती थी और उन्हें हर बार बचा लेती थी। जब भी वह बच्चों की ओर बढ़ता, माँ बीच में आ जाती। रीछ रीछनी से दुगना बड़ा था और उससे कहीं शक्तिशाली भी। पर क्रोधित होने पर रीछनी बहुत भयानक बन जाती थी। वह रीछ से इस जोश से लड़ती कि, उसे हरा देती। जब मादा के पंजों की मार उस पर पड़ती, तो वह पीछे हटता-हटता अपनी पिछली टाँगों पर बैठ जाता और मार से बचने के लिए अपने पंजों से सिर को ढँक लेता। एक बार तो वह मार खाते-खाते खाई में गिर पड़ा।

यह लड़ाई हर रोज होती। आखिर कई दिनों के बाद रीछ को हार मानकर चुप हो जाना पड़ा। वह रीछनी से इतना डरा हुआ था कि, जब भी बच्चे माँद में से निकल कर उसके पास जाते, तो वह रीछनी की तरफ देखता हुआ डर के मारे वहाँ से भागता और पंजों से अपना सिर ढँक लेता।

अंत में यह खयाल किया गया कि, रीछ ने अपने परिवार के साथ रहना पसंद कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया है। पर नहीं, उसकी प्रकृति कैसे बदल सकती थी ? जिस अहाते में पाँचों रीछों का यह परिवार रहता था, उसके बीच में वृक्ष का एक ऊँचा तना खड़ा था। एक बार एक बच्चा उस तने पर चढ़कर धूप सेकने लगा। उस समय रीछनी सो रही थी। जब रीछ ने उसे नींद में देखा, तो वह धीरे-धीरे उस तने पर चढ़ा और ऊपर जाकर उसने बच्चे को ऐसा जोर का थप्पड़ मारा कि, वह चीखता हुआ हवा में उछल गया। उसी समय रीछनी जाग गयी और उसने रीछ की वह मरम्मत की कि, वह एक कोने में जाकर दुबककर बैठ गया।

कुछ दिनों तक शांति रही। अब रीछनी पहले की-सी चौकन्नी नहीं रहती थी। एक दिन सुबह वह सो रही थी। रीछ ने एक बच्चे को खाड़ी के पास बैठे हुए देखा। बच्चा अपने आगे के पंजों से पानी उछाल रहा था। रीछ आहिस्ता-आहिस्ता उसके पास गया और अचानक उसकी गर्दन के बालों को अपने दाँतों से पकड़कर उसे गहरे पानी में गोता खिला दिया। बच्चे ने चीखने-चिल्लाने के लिए मुँह खोला पर चीख नहीं सका। पानी से उसका गला रुँध गया था। रीछ भी अधिक समय तक पानी में नहीं रह सका। उसने साँस लेने के लिए जैसे ही पानी से मुँह निकाला, उसके दाँतों से लटकता बच्चा बहुत भयानक रूप से चीखा। सुनते ही रीछनी उस तरफ भागी।

वह दृश्य देखने लायक था। मादा ने रीछ की वह पिटाई की कि, उसके लिए अपना बचाव करना मुश्किल हो गया। अंत में खाड़ी के दूसरे सिरे पर जाकर उसने रीछ को छोड़ा। इसके एक घंटे बाद तक रीछ पानी में बैठा रहा। रीछनी गुस्से में भरी हुई खाड़ी के इधर-उधर घूम रही थी। रीछ की बाहर आने की हिम्मत नहीं थी।

उस दिन के बाद रीछ ने फिर कभी गड़बड़ नहीं की। उस पर रीछनी का सिक्का जम गया। अब रीछनी को भी उसका डर नहीं रहा था। वह उसकी तरफ से बिल्कुल लापरवाह थी। रीछ भी बच्चों की ओर से निश्चिंत था।

सर्दी का मौसम आया। रीछनी अपने बच्चों के साथ सोती और रीछ उससे दूर अपनी माँद में रहता। बच्चे कभी-कभी निडर होकर रीछ की माँद तक चले जाते; लेकिन रीछ यही चाहता कि, किसी तरह वे अपनी माँ से अलग हो जायें। पर अब वे बड़े हो गये थे और स्वयं ही दुश्मन से अपना बचाव कर सकते थे।

इसके बाद फिर शांति रही और बच्चे निडर होकर घूमने लगे। पर कुछ अर्से के बाद वहाँ एक विचित्र दृश्य देखने में आया। रीछ खाड़ी में था और वह बच्चा, जिसे उसने मारा था, ऊपर खड़ा देख रहा था। रीछ ने खाड़ी में से बाहर आने की कोशिश की, तो उसी समय बच्चे ने उस पर हमला कर दिया। रीछ के चेहरे पर एक साथ तीन थप्पड़ मारकर वह अपनी माँ की तरफ दौड़ आया। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फूल की वेदना

निष्ठुर देवचरण जी-भरकर मुझे नहीं झुकने देते
अपने घिरे पुजापे में क्यों मुझे नहीं रुकने देते
रोज तुम्हारे चरणों पर चढ़-चढ़कर मैं गिर जाता हूँ
ओ मेरे अधपुजे देवता ! फिर भी तुम्हें मनाता हूँ

तुम कैसे पूजा के पत्थर तुम कैसे देवत्व शिखर,
बोलो, किसने तुम्हें बनाया इतना ज्योतिर्मय सुंदर
अपनी साँस-साँस में मैं इस छबि का दिया जलाता हूँ
पर अधजले पतंगे-जैसा तरस-तरस मर जाता हूँ

सुख के भीगे मंद स्वरों-सी इनकी श्यामल छाँह मुझे
इनके सिजदे में ही शायद छुए तुम्हारी बाँह मुझे
कहाँ चुराकर ले जाऊँ मैं इनके भीतर उमड़ा रस
ये लाचारी-सी-लाचारी में क्या बेबस-सा-बेबस
मैं इनके मधुभरे कगारों से प्यासा फिर आता हूँ
छूकर पद-नख ज्योति तुम्हारी मैं नीचे गिर जाता हूँ

टेक नयी गढ़ता प्राणों में फिर भी नये समर्पण की
बीत-बीतकर फिर चरणों में चढ़ने के अनुवर्तन की
ओ अधद्रवे देवता ! तुमको ज्यादा नहीं गलाऊँगा
बुझी साँझ के रुँधे गीत से अधिक न तुमको गाऊँगा

कल आऊँगा फिर लेकर बौराई-बढ़राई आशा
कल फिर अपने से टूटूँगा मैं अर्पण का चिरप्यासा
पहले छूने से डरता था, अब कुछ तो पा जाता हूँ
रोज तुम्हारे चरणों पर चढ़-चढ़कर मैं गिर जाता हूँ

—अंचल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हर जीवन अपनी राह आप बनाता है। सबके अपने कुछ स्वप्न होते हैं। पूरे हुए तो सुख मिला, टूट गये तो बरबादी मिली। यही जीवन की राह है, जो टूटे सपनों और खंडहरों के बीच से गुजरती है। इसकी एक झलक दिखाने के लिए कुछ विचारकों और लेखकों के पास कुछ सांकेतिक प्रश्न भेजे गये थे। लेखकों की जिंदगी खुद ही रंगीन टूटे सपनों की इमारत होती है, इसलिए वे ही जिंदगी का सच्चा अर्थ कह सकते हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदगी की राहें और मंजिलें

कई चिंतकों ने उन प्रश्नों का उत्तर दिया है, उनका हम उपकार मानते हैं। इस लेखमाला में हम उनकी कलम से लिखे लेखांशों को थोड़ा-बहुत क्रम-परिवर्तन के साथ प्रकाशित कर रहे हैं।

पहली किस्त के लेखक हैं : सर्वश्री काकासाहब कालेलकर, रामधारी सिंह दिनकर, बनारसीदास चतुर्वेदी और नरेंद्र शर्मा।

★

मेरी मान्यता है कि, साहित्यसेवी को अपनी लेखनी के बल पर आजीविका प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिये। हर एक सेवक को, जिस किसी भी क्षेत्र में वह काम करता हो, अपनी आजीविका प्राप्त करनी ही पड़ती है। लेकिन उसे "प्रेरक भावना" मानने को तैयार नहीं हूँ। मनुष्य काम करता है आत्म-संतोष के लिए या समाज-सेवा के लिए? तब क्या जिस क्षेत्र में उसकी अभिरुचि है, उसका काम करते आत्म-संतोष और समाज-सेवा दोनों एक साथ सिद्ध होते हैं?

मेरा प्रेरणा स्रोत? मैं अपने जीवन का स्मरण करता हूँ, तो ऐसा कोई क्षण नहीं याद आता जबकि मैं धनाभाव से पीड़ित हुआ या अर्थ-प्राप्ति के हेतु कुछ भी करने को प्रेरित हुआ। मैंने गरीबी के दिन देखे हैं; लेकिन मैं उससे कभी चिंतित नहीं रहा। अध्ययन और संत-समागम ही मेरे लिए प्रेरक तत्व रहे। देश की आजादी, समाज-सेवा और आध्यात्मिक आत्मानुभूति इन तीन आदर्शों से मैंने जीवन-यापन किया है।

मेरा जीवन-कार्य? देश की आजादी के लिए कुछ-न-कुछ क्रांति करनी चाहिये, इस भावना से लोक-जागृति की ओर नजर गयी। उसमें से वृत्त-विवेचन (पत्रकारिता) और राष्ट्रीय शिक्षण के क्षेत्र मुझे मिले। इन्हीं में से मेरा जीवन-कार्य निश्चित हुआ।

भक्ति की प्रेरणा महाराष्ट्र के संत-साहित्य से और माता-पिता के जीवन से मिली। किंतु उसमें उत्कटता आयी सावंतवाड़ी के एक सेवक की बातों से। था तो वह चपरासी या 'बैरा'; लेकिन उसने मेरे बाल-मानस में भक्ति की उत्कटता बो दी। अध्यात्म की प्रेरणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी सुबह, नयी जिंदगी

— काका कालेलकर

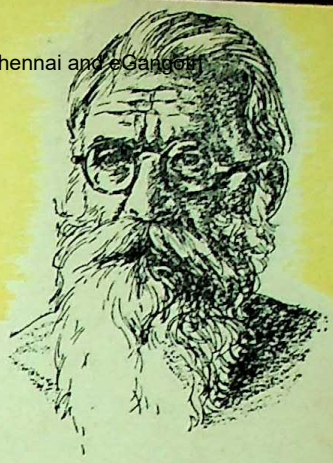

मुझे एक गरीब बूढ़े तीर्थ-यात्री से मिली। इन दोनों का जिक्र मैंने अपनी 'स्मरण-यात्रा' में भी किया है। क्रांतिकारी देशभक्ति की प्रेरणा मुझे मिली एक युवक पुलिस हवलदार से, जिसने आगे जाकर अँग्रेज सरकार को अनेक षड्यंत्र तोड़ने और अनेक युवकों को सजा दिलवाने में मदद की थी। कैसे आश्चर्य की बात यह है!

मेरे जीवन में बाह्य संघर्ष विशेष है नहीं। जीवन में आंतरिक आलस्य, अव्यवस्था और प्रमादशीलता से हमेशा संघर्ष करना पड़ा। उन पर अभी तक भी विजय नहीं पा सका हूँ।

अत्यधिक आनंद कब ? मुझे जब कभी मुसाफिरी, प्रवास या यात्रा करने का मौका मिलता है तब अत्यधिक आनंद आता है। स्वभाव से भी मैं घुमक्कड़ हूँ। इसलिए आमकथा को मैंने 'स्मरण-यात्रा' कहा है। 'हिमालय की यात्रा', 'ब्रह्मदेश का प्रवास', 'उस पार के पड़ोसी' (पूर्व अफ्रीका), 'सूर्योदय का देश' (जापान), 'शर्करा द्वीप : मारिशस' आदि ग्रंथों में वही आनंद व्यक्त हुआ है। नदियाँ, सरोवर, समुद्र-तट, प्रपात आदि मुझे सदैव आनंद देते हैं।

उदासी के बाद ? रोज रात को थककर सोने के बाद, सुबह नया प्राण लेकर मुझे जगाती है। मेरे जीवन में गहरी उदासी और नये उत्साह का यही क्रम है। उपनिषद्-ग्रंथों की भावना मुझे हमेशा नया बल देती आयी है।

स्थिर-शांत रहने का उपाय ? जो मनुष्य जानता है कि, उसका व्यक्तित्व (आत्मा) जो नाम्य के उतार-चढ़ाव से अनेक गुना समर्थ है, श्रेष्ठ है—उसे तुरंत स्वास्थ्य हासिल करना आसान होता है। मनुष्य के मन में अशांति और चंचलता का थोड़ा माद्दा तो होना ही चाहिये। लेकिन वह केवल पृष्ठभाग पर हो। समुद्र के अंतस्थल में तो गम्भीर शांति होती है।

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँखों से रेशमी नगर

-दिनकर

मेरा बीजमंत्र क्या है—इसके सम्बंध में कुछ विशेष नहीं बता सकता। केवल एक शब्द जानता हूँ—'प्रवृत्ति' यानी जीवन को स्वीकार करने का भाव। जीवन की स्वीकृति मेरी कर्मठता है, कर्मयोग है, अध्यवसाय है। स्थायी क्रिया ही मेरी क्रिया की प्रेरणा रही है।

मेरा प्रेरक भाव ? आर्थिक आवश्यकता के अतिरिक्त मेरा प्रेरक भाव है—आत्माभिव्यक्ति का सुख, रचना की प्रक्रिया में खोकर सब कुछ से मुक्त हो जाने का आनंद। पुस्तकों में आनंद मुझे मिलता है, रचना के ही समय प्राप्त हो जाता है। बाद में जो सुख मिलता है, प्रशंसा सुनने का सुख है—यानी कान की गुदगुदी का सुख है।

मेरा जीवनव्यापी संघर्ष ? वास्तव में कोई भी प्रसंग ऐसा नहीं है, जिसे मैं सर्वोपरि करुणा समझूँ अथवा जिसे सबसे बड़ा संकट मानूँ। निर्धनता में उत्पन्न व्यक्ति बड़े कष्ट से बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है। मैं भी कीचड़, खड्ड, कंटक-कानन और रेगिस्तान से ही निकलकर रेशमी नगर तक आ सका हूँ। मेरा सारा जीवन भयानक संघर्षों में ही बीता है और संघर्ष में मैं आज भी हूँ। शायद निरंतरता से चलनेवाले इन्हीं संघर्षों ने मेरे भीतर सुख और दुःख के बीच की विभाजक रेखा को मिटा दिया है। कोई ऐसा सुख याद नहीं, जो दुःख से बिल्कुल भिन्न रहा हो, न किसी ऐसे दुःख को जानता हूँ कि, जो सुख के बिल्कुल विपरीत था।

पूर्ण संतोष मिला ? अब तक तो किसी भी कार्य से नहीं मिला, चाहे वह कार्य अन्य से सम्बद्ध रहा हो अथवा कीर्ति से। जहाँ तक आत्माभिव्यक्ति का प्रश्न है, पहले 'रसवंती' से संतोष मिला था। फिर 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' से। किंतु इधर 'उर्वशी' काव्य रचते समय जो आनंद मिला, वह पहले के सभी आनंदों से श्रेष्ठ था। किंतु 'उर्वशी' के प्रकाशित होते-होते मैं फिर असंतुष्ट हूँ। मैं आज भी हाथ बढ़ाकर हवा में टटोल रहा हूँ। जिसे निराकार से खींचकर साकार करना चाहता हूँ, वह कभी पकड़ाई देगा या नहीं, नहीं जानता। कुछ सीढ़ियाँ पार कर चुका हूँ और बहुत-सी सीढ़ियाँ अभी आगे बिछी हुई हैं, जिनमें से कुछ पर तो पूर्वज कवियों के चरण-चिह्न दिखाई देते हैं और कई ऐसी हैं, जिन पर कोई भी निशान नहीं है। नहीं जानता कि, क्या करने से मुझे पूर्ण संतोष प्राप्त होगा।

मति अति नीच ऊँच रुचि आछी, चहिय अमिय जग जुरै न छाछी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब भी यदि रिल्के के स्वप्न को तुलसी की सरलता से कभी लिख सका, तो अपने आपको कृतकृत्य मानूँगा ।

मेरी आस्था और रुचि ? ऐसी कोई भी एक घटना याद नहीं आती, जिसका जीवनव्यापी प्रभाव माना जा सके । वैसे अनेक घटनाएँ ऐसी हैं, जिनसे कुछ सीखा है, जिन्होंने आगे के लिए मुझे सतर्क किया है और जिनसे मेरे विश्वास में परिवर्तन आया है । मैं जो भूत-प्रेत के अस्तित्व और दृश्य वास्तविकता में विश्वास करता हूँ, वह विश्वास ऐसी ही घटनाओं से उत्पन्न हुआ है ।

मुझे सितार सुनना पसंद है । मेरी प्रिय पुस्तकें हैं–'तुलसीकृत रामायण', 'कबीर ग्रंथावली', और एलेक्सिस कैरेल की 'मैन द अननोन' और विल डुरांट की 'स्टोरी आव फिलासफी' और बर्ट्रेंड रसल के सभी ग्रंथ ।

मुझे वृक्षों के दृश्य अच्छे लगते हैं । कमल के फूल भी पसंद हैं । डल झील में नाव पर घूमते-घूमते जब कमल-वन में पहुँच जाता हूँ, तब मानो धरती की याद नहीं रहती । वैसे सावन-भादों में अपने गाँव के पास की गंगा का उद्वेलित रूप बचपन से ही मन में बसा हुआ है और आज भी गंगा का वह रूप बहुत अच्छा लगता है ।

× × ×

धूप और पानी

ये वृक्ष इतने हरे भरे क्यों ? ये इतने ऊँचे कैसे चढ़ गये ? इनकी शाखाएँ आसमान में फैली हैं और जड़ें जमीन के नीचे गयी हैं । इन्हें ऊपर आसमान से धूप मिलती है, नीचे पाताल से पानी । इन दोनों की मदद से ये गर्मी में भी हरे-भरे दीख रहे हैं ।

अगर ऊपर सिर्फ धूप होती और नीचे से पानी न मिलता, तो ये सूख जाते । अगर ऊपर धूप न होती और सिर्फ पानी पानी मिलता, तो ये वृक्ष एकदम सड़ जाते ।

इसी तरह हमारे जीवन में प्रेम और भक्ति का पानी चाहिये । और बाहर से मेहनत मशक्कत, सतत तपस्या और सेवा होनी चाहिये । चंदन के मुआफिक शरीर पिसता रहे, तपस्या की अग्नि में जलता रहे, तो जीवन में बड़ा गहरा रस आयेगा, जिंदगी में लुत्फ आयेगा ।

– विनोबा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं देवता ही रहूँगा

—बनारसीदास चतुर्वेदी

जिन आकस्मिक घटनाओं ने मेरे क्षुद्र जीवन को कुछ मोड़ें दी हैं, उनका श्रेय मेरे माता-पिता तथा गुरुजनों को ही है। मेरी माताजी ने इक्कीस बार महाकवि तुलसीदास जी की रामायण का पारायण किया था और मेरी नानी ने भी अनेक बार अपने मायके में रामायण सुनी थी और पूज्य पिताजी को तो हिन्दी के सहस्रों ही कवित्त कंठस्थ थे और वे उनका प्रयोग निरंतर किया करते थे। उन्होंने ग्रामीण स्कूलों में पूरे ५५ वर्ष तक मुदर्रिसी की थी। मगर ऐसे थे कि, जिंदगी में दो लाख मील तो वे पैदल चले ही होंगे। औसतन दस रुपये मासिक वेतन पानेवाले अध्यापक के पास रेल-यात्रा के लिए पैसे आते भी कहाँ से?

इसी प्रकार पंद्रह-पंद्रह वर्ष तक उन्होंने घी का स्पर्श नहीं किया--रूखी रोटी खाते रहे, जो भी बेझर की—चने और जौ की। एक बार तो वे अपनी ससुराल मैनपुरी में किसी विवाह-उत्सव में शामिल होने के लिए दिन-भर में ४३ मील पैदल चलकर पहुँचे थे।

हमारी माँ और ताई के पास केवल एक ही दुपट्टा था, जिसे पहनकर वे बाहर जा सकती थीं और जाड़े के पूरे कपड़े तो सन् १९१३ तक भी नहीं बनवाये जा सके, जब कि मैं तीस रुपये मासिक पर फर्रुखाबाद गवर्नमेंट स्कूल में नौकर हो गया था। हम चार भाई-बहनों तथा ताई इत्यादि की अन्न-वस्त्र की समस्या का हल करना कक्का (पिताजी) के लिए कठिन था, इसलिए उनके पास किसी भी प्रकार के व्यसन के लिए साधन ही नहीं थे।

विरासत में क्या मिला? कक्का साधु-संतों और कवियों के दर्शन के लिए सदैव तत्पर रहते थे और महापुरुषों के दर्शन करने (या उनका वक्त बरबाद करने?) की बीमारी मुझे विरासत में ही मिली है। उसे ही मैं अपने जीवन की सबसे बड़ी कमाई मानता हूँ। देश-विदेश के महापुरुषों का जितना समय मैंने लिया है, उतना शायद हिन्दी-जगत् के कुछ कम व्यक्तियों ने लिया होगा। "दीन क्या है किसी कामिल की इबादत करना" चकबस्त की ये पंक्तियाँ मेरे धर्म की परिभाषा को प्रकट करती हैं।

जीवन-संघर्ष का श्रेय किसे? बर्नार्ड शा से जब किसी ने उनके जीवन-संघर्षों के बारे में पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया—"मैंने तो कोई संघर्ष नहीं किया। हाँ, अपने बजाय अपनी पूज्य माताजी को संघर्षों में जरूर डाल दिया।" सम्भवतः उस महान् कलाकार ने मजाक में ही ऐसा कहा होगा। पर मैंने वस्तुतः पूज्य कक्का पर ही सारे कुटुम्ब का भार डाल दिया था और वे सन् १८७५ से १९४४ तक यानी ७५ वर्ष तक गृहस्थी की गाड़ी खींचते रहे। मैंने कई बार अपनी लगी-लगाई नौकरियाँ छोड़ दीं और एक बार तो गांधीजी के गुजरात विद्यापीठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नौकरी छोड़कर ढाई साल महकमा बेकारी में घर बैठा रहा। पर कक्का ने कभी एक शब्द भी मेरे विरोध में नहीं कहा। अपने जीवन के साथ जो खिलवाड़ मैं कर सका, 'गधा पचीसी' को 'गधा बावनी' तक ले जा सका, उस सबका श्रेय वास्तव में पिताजी को ही मिलना चाहिये।

वैसे मैं इस परिणाम पर पहुँच चुका हूँ कि, तथाकथित क्षुद्रों में महत्व को तलाश करना महापुरुषों के गुणगान करने से कहीं अधिक उपयोगी है।

घृतमिव पयसि निगूढ़ं भूते भूते च वसति विज्ञानम्, सततं मन्थयितव्यं मनसा मानदण्डेन।

मेरे स्वप्न? उपाकालीन चाय के समय अथवा वन-उपवन में टहलते हुए मुझे स्वप्न आया करते हैं और उनमें कितने ही चरितार्थ भी हुए हैं। यह भी मैं मानता हूँ कि, उन स्वप्नों की पूर्ति में बीसियों भाइयों और बहनों का हाथ रहा है। यदि आप शांतिनिकेतन के हिन्दी भवन, कुंडेश्वर के गांधी भवन और सम्मेलन (प्रयाग) की सत्यनारायण कुटीर और दिल्ली का हिन्दी भवन एक बार देखें, तो आपको मेरे इस प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। इसी प्रसंग में एक आश्चर्यजनक घटना आपको सुना दूँ। स्वामी भवानीदयाल संन्यासी के 'हिन्दी' नामक पत्र में मैंने एक लेख सन् १९२३ में लिखा था 'मेरे स्वप्न का आश्रम'। उसमें मैंने प्रवासी प्रेस से 'विशाल भारत' नामक पत्र के निकालने की कल्पना की थी। ताज्जुब की बात यह है कि, तब तक श्री रामानंद चट्टोपाध्याय ने प्रवासी प्रेस कायम भी नहीं किया था; वह एक वर्ष बाद कायम हुआ और 'विशाल भारत' जो सन् १९२८ की जनवरी में निकला था। 'विशाल भारत' का नाम स्वयं रामानंदजी चटर्जी ने प्रस्तावित किया था, मैंने नहीं। उस लेख में 'प्रवासी भवन' की भी कल्पना की गयी थी, जिसे आगे चलकर स्वयं भवानीदयालजी ने अजमेर में स्थापित किया था।

मेरे इस प्रकार के स्वप्नों से कम-से-कम बीसियों रजिस्टर और नोटबुक भरे पड़े हैं। अपनी सीमाओं को मैं जानता हूँ और यह भी मुझे मालूम है कि, उनमें से कितने ही स्वप्न कथवा अधूरे ही रह जायेंगे। फिर भी स्वप्न देखना मैंने नहीं छोड़ा है।

नवीन उत्साह का प्रेरणा-स्रोत? मैं नित्य प्रति प्रातःकाल घंटे-डेढ़ घंटे स्वाध्याय किया करता हूँ। कभी एमर्सन तो कभी थोरो, कभी क्रोपाटकिन तो कभी एडवर्ड कारपेंटर, कभी टालस्टाय तो कभी गांधीजी, कभी रोमाँ रोला तो कभी स्टीफिन ज्विग। इन महान् कलाकारों और साहित्यकारों के नित्यप्रति सत्संग से मेरे चित्त को जो प्रसन्नता होती है, उससे उदासी को दूर करने में मुझे बड़ी मदद मिलती है। जीवन का वही घंटा-डेढ़ घंटा, जिसे मैं सर्वथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एकांत में बिताता हूँ, मेरे लिए सबसे बड़ी कीमती चीज है, सबसे बड़ी पूंजी है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा अंतिम लक्ष्य? शहीदों का श्राद्ध मेरा अंतिम संकल्प है। कुल मिलाकर मैं ग्यारह पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन कर चुका हूँ, जो मुख्यतया शहीदों के विषय में ही निकले हैं और इस विषय के कई ग्रंथ इस समय मेरे पास मौजूद हैं। यह कार्य मैं किसी परोपकार की भावना से नहीं कर रहा हूँ, बल्कि उसके पीछे शुद्ध स्वार्थ है। इस समय मेरे जीवन की केवल एक ही साध है, वह है आनंदमय दीर्घ जीवन व्यतीत करना। बाकी सब चीजें गौण हैं। दूसरों को आनंद देना और स्वयं आनंद लेना, यही एक सर्वोत्तम उपाय है, जिससे मनुष्य दीर्घजीवी हो सकता है और सफलतापूर्वक जीवन जी सकता है।

× × ×

इसके अलावा भी कुछ है....

–नरेंद्र शर्मा

आर्थिक आवश्यकताओं ने मेरी जीवन-धारा को प्रवाहित नहीं किया–यह मैं कैसे कह सकता हूँ? किंतु यह सत्य है कि, मैं अपनी आर्थिक आवश्यकताओं के प्रति अत्यधिक सजग, सावधान और प्रयत्नशील नहीं रहा हूँ। आज के प्रयोजनशील, नियोजनशील और योजनाबद्ध युग में मुझ-जैसे नासमझ लोग ही अपने योग-क्षेम के लिए परोक्ष के विश्वासी होते हैं।

वास्तव में मैं अपने आप से अधिक दूसरों का विश्वास करता हूँ और यह अन्ध विश्वास ही जाने-अनजाने में मुझे प्रेरणा और उत्साह देता रहा है। ऐसा भी हुआ है कि, मैंने स्वयं दूसरों का विश्वास प्राप्त करके, उन्हें निराश किया है। और इस प्रकार औरों ने भी मेरे विश्वास को ठेस पहुँचायी है। किंतु इस या उस व्यक्ति की भूलों ने मुझे अन्यान्य के प्रति अविश्वासी कभी नहीं बनाया।

अपने सिवा और भी कुछ है, जिस पर मैं निर्भर हूँ।
मेरी प्यास हो न हो जग को, मैं प्यासा निर्झर हूँ।

"मेरी प्यास हो न हो जग को" में उद्दंडता का अंतर्भाव है। निर्झर शब्द में गर्व की ध्वनि है। ये दोष मुझमें हैं। किंतु यह सत्य है कि, मैं प्यासा हूँ--सौहार्द्र, स्नेह, सत्य और शांति का प्यासा। कविता मेरी इस प्यास की ही अभिव्यक्ति है।

प्यास तो अव्यक्त रूप में पहले भी रही होगी, जिससे प्रेरित होकर मैं अपने कैशोर में सामाजिक और राजनीतिक हलचल के प्रति आकर्षित हुआ था। वही प्यास मुझे कविता के निकट ले आयी। सामाजिक और राजनीतिक हलचल का सम्बंध कर्म-क्षेत्र से होता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विता का मर्म-क्षेत्र से [illegible] की शैली [illegible] बदल जाती है; किंतु ध्येय वही रहता है, जो पहले था – सौहार्द, स्नेह, य और सौंदर्य ।

प्रेरणा कहाँ से मिली ? मैं पंतजी की 'वीणा' और महादेवीजी की क 'नीहार' से प्रेरणा प्राप्त करके कविता की ओर उन्मुख हुआ। न-सम्बंधी मेरी रुचि पंतजी से प्रभावित हुई । और भाव-क्षेत्र में महादेवीजी की वेदना-संवेदना ने अभिभूत किया ।

'वीणा' और 'नीहार' की प्रतियाँ मुझे अपने शिक्षक-प्राध्यापक श्री महेशप्रसाद शुक्ल ने को मिली थीं और मैं इस हेतु उनके प्रति हृदय से अभारी हूँ । मैं नहीं जानता आज शिक्षक और प्राध्यापक अपने छात्रों के प्रवृत्तियों के प्रति सजग और संवेदनशील होते हैं नहीं । अहेतुक कृपा देव का दान है । अपनी अहेतुक कृपा के कारण ही गुरुजन पूज्य हैं। गुरुजन से कृपा और सुहृद्जन से स्नेह मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा है । मुझसे गुरु-दक्षिणा र, गुरुजन ने मुझे ऋण-मुक्त कभी नहीं किया । जब मैं पितृहीन बालक था, मेरे ताऊजी ा स्नेह-पूर्ण पालन-पोषण किया । उनके एक वयोवृद्ध सहयोगी ने मुझे बाल्यावस्था में यास अक्षर ज्ञान कराया । औषध-उपचार करनेवाले वैद्यों ने कई बार मुझे नया जीवन ा । हाईस्कूल में प्रवेश से पूर्व ही मेरे ग्राम के एक सुशिक्षित गृहस्थ ने मुझे अँग्रेजी की म्भिक श्रेणी से उत्तीर्ण कराया । हाईस्कूल में हेडमास्टर साहब ने मेरी रुचि और मेरे ार को परिमार्जित किया, प्रयाग के साहित्यकों ने मुझे प्रोत्साहित किया, एक शुभचिंतक रेरणा से मैं गृहस्थ बना और अनायास ही मुझे समय-समय पर सुहृदों की सहायता ी रही । यदि मेरे जीवन में और मुझमें कुछ भला है, तो उसका श्रेय मुझे नहीं, मेरे ियों को ही मिलना चाहिये ।

रे जीवन-संघर्ष का रूप ? बहुधा यह आत्म-संघर्ष ही रहा है । अनेक बार यह संघर्ष और प्रेय के बीच भी रहा है । श्रेय की विजय से मुझे अधिक संतोष मिलता रहा है । प्रेय उपलब्धि जब हुई, तब श्रेय के माध्यम से । इसे मैं ईश्वर-कृपा का फल मानता हूँ । अपने असंगठित जीवन में घटित घटनाओं का क्या ब्यौरा दूँ ? धरती-तल पर रेंगने- ी चींटी के जीवन में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव क्या हो सकते हैं ? काठ का चमच ों का स्वाद क्या जाने ? मेरे लिए अपने विषय में अधिक कुछ कहना सुगम नहीं ।

दासी के क्षणों में ? मन में अनेक बार उदासी की काली घटाएँ छायी हैं और दूर भी ो रही हैं । आज विचार करता हूँ, तो उदासी से बचने का एक ही उपाय सूझता है, अपने ो बहुत ज्यादा मुँह न लगा । अपनी उदासी को बहुत मुँह न लगाना चाहिये । अपने आप पर और प्रेम करो अपने सिवा और किसी को–मेरा यही सिद्धान्त है । *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ख़ाबीदा हुसीना

लेखिका के रूस-प्रवास की एक रसभीगी अनुभूति।

अमृता प्रीतम

खाबीदा हुसीना (सोयी हुई सुंदरी) उजबेकिस्तान की एक घाटी का नाम था, जैसे किसी कुमारी लड़की का नाम होता है, और फिर उसका कामों से विवाह हो गया, अब उसका नाम है फरगाना घाटी।

पंजाब की लड़कियाँ जिस दूर-दूर के रेशम का गीत गाती हैं– **"मखमल की जूती तेरे पैरों में पहनाऊँ और अतलस का चोला सिलवाऊँ"**– तो यह फरगाना घाटी वही रेशम कातती है, जिसका एक किनारा यदि हम धरती पर रखें, तो दूसरा किनारा चाँद तक पहुँच जाता है।

यहाँ रेशम की मिलों की डाइरेक्टर औरतें हैं। मैं जब वहाँ पहुँची, तो दोनों डाइरेक्टर औरतों ने अपनी मिलें दिखायीं और मुझे अतलस की सौगात देते हुए बोलीं– "तेरे नगमों के पैरों के नीचे हम अतलस बिछाती हैं।" अगले दिन मई की पहली तारीख थी और उत्सव का चाव उन औरतों के चेहरों पर दिखाई देता था।

फरगाना जिले की डिप्टी भी औरत है और नगरपालिका की प्रधान भी औ[illegible] इसी दौरान में मैं सामूहिक फार्म की [illegible] औरत एनाखान से भी मिली, जि[illegible] पिछले पंद्रह साल में चार हजार [illegible] बंजर भूमि को आबाद किया है। [illegible] हजार छः सौ एकड़ में कपास, छः सौ [illegible] में घास-फूस, साढ़े चार सौ एकड़ में [illegible] साढ़े तीन सौ एकड़ में खुमानियों, [illegible] और सेबों के वृक्ष, डेढ़ सौ एकड़ में [illegible] लगे हुए हैं। एनाखान के नियंत्रण में [illegible] भग डेढ़ हजार श्रमिक काम करते हैं। [illegible] श्रमिकों के लिए इस फार्म में [illegible] शीपान (आरामगाहें) हैं। हर आराम[illegible] में अखबार, किताबें, रेडियो और टे[illegible] हैं। एनाखान की छाती पर सोने [illegible] लेनिन-पदक लगे हुए थे और उसका [illegible] किसान चेहरा श्रम की लाली के कार[illegible] कता था। एक शीपान के दस्तरख्वा[illegible] कोनियाक, शहद, अनारों का र[illegible] कई दूसरे पकवान परोसकर उन्होंने [illegible] "बताइये, मैं क्या गाऊँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने कहा—"अपने देश का यह गीत, जो कोनियाक जैसा तल्ख, शहद-जैसा मीठा और अनारों के रस की तरह लाल हो।"

"और भेड़ के भुने हुए मांस-जैसा आशकी गीत," उन्होंने हँसते हुए उस बात को आगे बढ़ाया और वे अपने दिल की सारी तहें खोलकर हँस पड़ीं और गाने लगीं :

इश्क का जुनून मेरे सिर में है
जुल्फें गिर-गिरकर मेरी पलकों को छू रही हैं
कोई मेरे प्यारे को बताये—
मेरी छाती में आग सुलग रही है
और उसे कहो, अपने हाथ सेक ले।
मेरे होठों में शहद भरा है
मेरे दिलदार से कहो—
यह शहद चख ले।

एक फरगानी युवती लालाखानम के गले में सोये हुए गीतों को जैसे इन पंक्तियों ने हाथ पकड़कर जगा दिया। लालाखानम ने दस्तरखान के आस-पास गीत-ही-गीत बिछा दिये :

मेरा दिल तुम्हें एक फूल देना चाहता है; पर आजकल बागों में कली नहीं खिलती। मेरे पाँव तेरे नगर से चले जाना चाहते हैं; पर मेरे पाँव को जाने के लिए राह नहीं मिलती।
मैं स्वर्ण-झील की बतख हूँ—
यदि मुझे मेरा प्यारा न मिला,
मैं इसी झील में डूब जाऊँगी।
तू मेरे अम्बर का तारा
मेरे बाग का गुलाब
मेरे फूलों का बुलबुल
मेरे दिल का नगमा
बहुत नाज न कर
काले नैनोंवाले
दिलदार! आ जा!

और फिर लालाखानम ने कहा—"आज मैं एक गीत अपने देश की मेहमान के लिए भी गाऊँगी :

यह हमारे माथे के भाग्य
कि हमने तुम्हें ढूँढ़ लिया
आज तू हमारे देश की मेहमान।

इस दस्तरखान को धन्यवाद देते हुए मेरे दिल की गहरी तहों से ये बोल निकले—"मैंने कभी गीत लिखा था, जिंदगी ने मुझे अपने घर बुलाया और फिर घर बुलाकर मेहमाँनवाजी करना भूल गयी; पर आज मैं अपना यह शिकवा वापस लेती हूँ....."

तभी लालाखानम मेरा हाथ पकड़कर बोली—"यहाँ से बड़ी दूर सामने पहाड़ों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखिका

पैरों में गुलाब की बेलों के साथ सेबों, खुमानियों, आलूचों, अनारों और गलासों के पौधों से भरा हुआ ! इस बगीचे की छाती में एक पहाड़ी नदी बहती है—शाहे मरदाना। चलो, जिंदगी के सब शिकवे उस नदी में बहा आयें।"

मैंने कहा—"लाला ! तेरे दिल में किस तरह की सुंदर मुहब्बत भरी हुई है—तेरे होठों पर तो कोई भी शिकवा-शिकायत नहीं।"

"शिकवे तो बहुत हैं; पर हैं उन पत्थरों की तरह, जो नदी में पड़े हुए हैं-कभी पिघले नहीं। शायद कभी पिघलेंगे भी नहीं। पर मुहब्बत का पानी इन पत्थरों के ऊपर से बह रहा है। यह राज मैं आपसे कह रही हूँ—मुहब्बत भी की थी किसी से।"

"फिर ?"

"मेरे माँ-बाप को वह मंजूर नहीं थी।"

"तो फिर आज तू वह गीत गा, जो पत्थरों पर से बहते पानी का गीत हो।"

"कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि, कोई गीत न गाया करूँ, अब शायद मुझे वह गीत गाने का अधिकार भी नहीं; पर.....गीत मेरे गले में अपने आप ही उग पड़ते हैं," और यह कहते-कहते लाला की आँखों में खुमार भर गया :

अपना दिल देने को मैं तुम्हें ढूंढ़ रही हूँ।
अपनी जान देने के लिए तेरा खंजर।

और मुझे महसूस हुआ, मुहब्बत करनेवाला हर दिल रेशम का वह कीड़ा होता है, जो शहतूत के पत्ते खा-खाकर रेशम की तारें कातता रहता है, गीत बुनता रहता है; और यह झिलमिलाती अतलस बुनती रहती है, जिसका एक किनारा अगर धरती पर रखें, तो दूसरा किनारा एकदम चाँद तक पहुँच जाता है। *

जवानी के सपने

हमारे दिलों के तहखाने में एक जगह है सुरम्य उद्यान-सी
चिनार के गर्वीले वृक्षों की तरह वहाँ जवानी के सपने पलते हैं।
सुबह की पहली किरण के साथ ही कोयल उन्हें जगाती है—
कि, आ इस गर्वीली उड़ान में मेरी प्रतिध्वनि का अनुकरण कर !

—अर्मादी कुलशोव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य-ताप से समोई

ई० आर० येरहम

सूर्य का ताप अब तक निरर्थक जाता था; परंतु वैज्ञानिकों ने उसका उपयोग भी ढूंढ निकाला है। सूर्य-चूल्हे, रेडियो-सेट, बिजली-घर, भाप, गैस, सुनने के यंत्र आदि बनने लग गये हैं। सूर्य-ताप के उपयोग का अभी श्रीगणेश ही हुआ है; परंतु वैज्ञानिकों ने सम्भावना प्रकट की है कि, शीघ्र ही ईंधन का महत्वपूर्ण स्थान सूर्य-शक्ति को मिल जायेगा। यह ऐसी अजस्र-शक्ति है—जो युग-युगांतरों तक अक्षय रहेगी।

पृथिवी को सूर्य से जो ताप प्राप्त होता है, उसकी समता करने के लिए दो अरब अणु-विद्युत्घरों की स्थापना करनी होगी। सहारा रेगिस्तान में प्रति वर्ष जो सूर्य-ताप बेकार जाता है, वह पृथ्वी पर प्राप्त कोयले की शक्ति से हजारों गुना अधिक है।

रूस और अमरीका में बड़े पैमाने पर सूर्य-ताप को केंद्रित कर उससे बिजली पैदा करने के प्रयोग जारी हैं। वैज्ञानिकों को इसमें आशातीत सफलताएँ प्राप्त हुई हैं। जिस दिन सूर्य-ताप से उत्पन्न विद्युती-करण जन-सुलभ हो जायेगा, उस दिन घरों को व उद्योगों को बिजली नाममात्र के मूल्य पर मिलने लगेगी। यह बिजली आणविक बिजली-घरों व थर्मल व हाइड्रो-पावर की अपेक्षा बहुत ही कम मूल्य पर और अधिक सरलता से उपलब्ध हो पायेगी।

परंतु सूर्य-ताप के उपयोग का दृष्टि-कोण नवीन नहीं है। प्रसिद्ध यूनानी विद्वान् आर्कमिडीस ने रोमन शत्रु-जहाजों को, जो लकड़ी के बने थे, विशाल शीशे पर केंद्रित सूर्य-किरणों द्वारा जलाकर नष्ट कर दिया।

युद्ध-सम्बंधी वैज्ञानिक प्रयोगों में भी सूर्य-किरणों पर शोध की जा रही है। यदि विशाल सूर्य-ताप को केंद्रित कर तेज ज्वाला-किरण के रूप में प्रवाहित किया जा सका, तो वास्तव में यह किरण मृत्यु-किरण ही होगी। जिस पर भी यह गिरेगी, उसे क्षणों में जलाकर राख कर देगी।

आधुनिक सूर्य-भट्टी में सूर्य की किरणों को एक-चौथाई इंच व्यासवाले छिद्र में प्रवाहित करने पर वे इतनी अधिक शक्ति-शाली होती हैं कि, विद्युत्-भट्टी या इले-क्ट्रिक टार्च से उत्पन्न किरण उसके मुकाबले में कमजोर ठहरती है।

इस्पात के पुर्जे इससे क्षण-भर में ही मक्खन की तरह पिघल जाते हैं। यहाँ तक कि, ताप-निरोधक ईंटें भी चूरा हो जाती हैं। यह किरण अत्यंत शक्तिशाली होती है।

लोहा २८०० अंश ताप पर पिघलता है। टंगस्टन ६१०० अंश ताप से और सर्वोत्तम ताप-निरोधक धातु ६९०० अंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर ही भाप बनकर उड़ जाती है। परंतु ८००० [illegible] सूर्य-ताप जो इनसे कई गुना अधिक शक्तिशाली है, अब प्राप्त कर लिया गया है।

रूस ने अर्मेनिया घाटी में १,३०० दर्पणों पर सूर्य-किरण केंद्रित करके बिजली-घर बनाया है। पाँच एकड़ क्षेत्र में यह बिजली-घर है। तेईस रेल-पटरियाँ बिछायी गयी हैं, जिनपर १,३०० दर्पणोंवाले विशेष स्वचालित वाहन सूर्य की दिशा में चक्कर लगाते हैं। १३० फुट ऊँची बुर्जी पर रखे बायलर पर सूर्य-किरणों का प्रकाश डालकर उससे २५ लाख किलोवाट घंटे बिजली तथा बीस हजार टन भाप वार्षिक उत्पन्न की जा रही है। रूस में इस योजना पर धड़ल्ले से काम जारी है और वहाँ कई विशाल सूर्य-ताप बिजली-घरों की स्थापना की जा रही है।

सूर्य-ताप से सीधे बिजली पैदा करने की प्रक्रिया भी प्राप्त की जा चुकी है। यह प्रक्रिया अत्यंत सरल है। घर में एक छोटा-सा यंत्र लगाकर घंटे-डेढ़ घंटे में सवा गैलन पानी खौलाया जा सकता है और पाँच व्यक्तियों के परिवार का भोजन [illegible] किया जा सकता है। चौबीस घंटे में [illegible] सी शक्ति से ही सवा गैलन समुद्री जल [illegible] योग्य बनाया जा सकता है। [illegible] दिनों में भी इनका उपयोग किया जा सकता है। फोटो-तत्वों द्वारा सूर्य-ताप को [illegible] में बदलकर आवश्यक बिजली प्राप्त की जा सकती है। अमरीका में भी इस दिशा में बड़े पैमाने पर शोध कार्य जारी है।

एक मिस्री कारखाने ने सूर्य-कूकर बाजार में बेचने के लिए तैयार भी कर लिया है। इसमें एक शीशा लगा है जो खाना पकाने के बर्तन लटकाने का काम भी। जिन देशों में जहाँ ईंधन की तो कमी है परंतु पर्याप्त धूप रहती है, वहाँ यह [illegible] सौदा अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

भारतीय राष्ट्रीय भौतिक रसायन शाला ने भी अल्युमीनियम के शीशेवाला प्रेशर-कूकर ग्रामों में उपयोग के लिए तैयार किया है। अब केवल इतना ही प्रयत्न करना शेष रह गया है कि, इन्हें इतना सस्ता में तैयार किया जाये कि, गाँववाले भी आसानी से खरीद सकें।

जब जड़ ही खोखली हो

एक दिन वृक्ष यकायक धड़ाम से गिर पड़ा। गुस्से में लाल-पीला होकर धरती से बोला—"देख री, तूने मुझे मिट्टी पानी देना बंद कर दिया था न! इसीलिए भूख-प्यास से तड़प-तड़प कर सूख गया और आखिरकार गिर ही पड़ा।"

वृक्ष का यह उलाहना सुनकर धरती कुछ तुनक-सी गयी; लेकिन धीरे से बोली "अरे, मैं क्या तुझे मिट्टी-पानी देना बंद कर सकती थी, तेरी जड़ ही खोखली हो गयी थी।"

— ठाकुरदत्त शर्मा 'पथिक'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिवार में अकेली नहीं

विवाह केवल दो आत्माओं के मधुर मिलन की नहीं, अनेक पारिवारिक ग्रंथियों में उलझे व्यक्तियों के सहयात्री बनने की समस्या है। लेख में इस समस्या को सरल बनाने का यत्न किया गया है।

स० का० वि०

विवाह के बाद पतिगृह जाते हुए नयी दुलहन के मन में प्रायः ये शंकायें जाग जाती हैं कि, वहाँ उसका तिरस्कार होगा। सास नहीं तो ननद अवश्य उसे तिरस्कार से देखगी। ऐसी आशंकाएँ व्यर्थ ही मन को विषाक्त कर देती हैं।

आशंकित मन से किये गये आचरण का प्रभाव यह होता है कि, ससुराल आते ही कलह शुरू हो जाता है। आदर्श घरों की बात छोड़ दें, तो प्रायः सब संयुक्त रहनेवाले घरों में कलह के बादल छाये रहते हैं। कलह का बीज प्रायः दहेज की चीजों के बँटवारे से प्रारम्भ होता है। ननदें बहू की साड़ियों में से अच्छी-से-अच्छी साड़ियाँ लूटने की कोशिश करती हैं। बहू अपनी पसंद से साड़ियाँ लायी है। ननदों की छीनाझपटी पर वह जल उठती है। प्रत्यक्ष तो कुछ नहीं बोलती, परंतु दिल में ननदों को शत्रु मान लेती है।

पहले पहल यह कलह प्रायः स्त्रियों में ही सीमित रहता है। परिवार का पुरुष-समुदाय उसमें भाग नहीं लेता। बहू को भी ससुर से इतनी शिकायत नहीं होती, जितनी सास से। सास भी अपने पुत्र को लाड़ला बनाये रखती है, लेकिन बहू को नागिन कहती रहती है। जिठानी भी देवर से तो कुछ नहीं कहती, हँसकर बोलती रहती है; लेकिन देवरानी के लिए दिल-ही-दिल में विष घोलती रहती है। देवरानी भी जेठ से तो परदा करती है, उसका मान करती है, लेकिन जिठानी से दिन में कई बार ले-दे हो जाती है। ननद भी भाई पर तो जान देती है, लेकिन भावज के लिए यही कहती रहती है—"जाने कहाँ से यह गँवार पल्ले पड़ गयी? इसका भी क्या कसूर? है ही छोटे घर की।" बहू भी अपने पति को कहती है—"ये देवतास्वरूप हैं," किंतु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हीं की बहन को कमीनी; और जब-तब कहा करती है–" सासजी ने अपनी लड़कियों को बिगाड़ दिया है। उन्हें अपने घर बसने ही नहीं देती। इनके पति चाहते ही नहीं। वे तो चाहते हैं कि, ये बलाएँ यहाँ से टली रहें।"

धीरे-धीरे यह जहर पुरुष समुदाय की ओर भी फैलने लगता है। जिठानी देवरानी की 'तू तू, मैं मैं' में एक-दूसरे के पतियों पर भी छींटे पड़ने शुरू हो जाते हैं। जिठानी कहती है–" जमींदारी का सारा काम तो बड़े बाबू के हाथ है, छोटे बाबू करते ही क्या हैं? दिन-भर पड़े रहते हैं। तू उन्हें लिये बैठी रहती है।"

देवरानी कहती है–" मेरा खर्चा ही क्या है? अकेली जान हूँ। जिसके चार-चार बच्चे हों, चिंता तो उसको हो।"

रात को पति के सिरहाने बैठकर छोटी बहू अपनी जिठानी की चुगली करती है–" मालूम है जिठानी क्या कहती थी? छोटे बाबू तो मुफ्त की खाते हैं।"

" सचमुच ऐसा कहती थी?" पति को आश्चर्य होता।

" हाँ, पूछ लो उसी से।" तमककर बहू जवाब देती।

" मैं भाई साहब से पूछूँगा।" पति वायदा करता है।

" पूछो तो यह भी पूछ लेना कि, जमींदारी का जो रुपया आता है, वह सबका सब कहाँ जाता है। मुझे तो तीज-त्योहार पर जो रुपये मिलते हैं, वे भी जिठानी की तिजोरी में ही जमा रहते हैं।"

बात तो ठीक है। आखिर जमींदारी का रुपया भाई साहब के अकेले का तो नहीं, मैं यह भी पूछूँगा।" पति के दिमाग में बात भर जाता।

" इसमें पूछने की क्या बात है, भाईजी के तो नित्य नये जेवर बनते हैं और उन्हें कहें, तो जवाब मिलता है, सोना जरा महंगा हो जाये तो बना देंगे।"

इधर छोटी बहू अपने नये ब्याहे पति को यह सुनाती है और उधर बड़ी बहू अपने पति को कुछ और ही कहती है। रात होते ही परिवार के प्रत्येक सदस्य का कमरा अच्छा खासा मंत्रणा-गृह बन जाता है। कलह का यही बीज वट-वृक्ष बनता जाता है।"

नयी आयी दुलहन का कर्तव्य है कि, वह इन प्रपंचों से मुक्त रहे। मुक्त रहने का अमोघ उपाय है केवल–प्रेम।

उसे ससुराल जाकर सबसे प्रेमपूर्ण बर्ताव रखना चाहिये। अब यही घर उसका घर है। यही घर उसे अपनाना है। जिस साफदिली से वह अपने माँ-बाप और अपने सगे भाई-बहनों से प्रेम करती थी, उनके कटु-तिक्त व्यवहार को सह जाती थी तीखे-तेज वाक्यों को सुनकर भी ममता बनाये रखती थी, उसी तरह यदि अपने पति के परिवारवालों को भी वह अपनायेगी तो ससुराल में कभी ईर्ष्या-द्वेष की चिनगारियाँ नहीं उठेंगी।

दुलहन को पूरे विश्वास के साथ पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गृह में रहना चाहिये ।

स्त्री को प्रेम, क्षमा, उदारता और सहिष्णुता की साकार प्रतिमा कही जाती है। बहन बनकर वह भाई के लिए प्रेम का अक्षय सरोवर अपने हृदय में रखती है, पत्नी बनकर वह पति की प्रसन्नता पर जीवन की बड़ी-से-बड़ी निधि का त्याग कर देती है और माँ बनकर तो अपने सारे जीवन को ही संतान के लिए मिटा देती है। ऐसी त्यागमयी, ममताभरी स्त्री किसी की बहू, ननद या सास बनकर क्यों नहीं प्रेम का प्रतिदान दे सकती ?

प्रेम-प्रतिदान में कुछ संकोच बहू की ओर से ही नहीं होता । सास और ननदें भी बहू को अपनाने में बड़ी कृपणता से काम लेती हैं। यह कृपणता स्त्रियों के स्वभाव में प्रकृतिगत नहीं हैं; किंतु परम्परागत कुछ सामाजिक कारणों से उनके स्वभाव का अंग बन गयी हैं। लेन-देन का मामला या बँटवारे का प्रश्न आते ही हमारे घरों की लड़कियाँ बहुत चौकन्ना हो जाती हैं । धन-लोलुपता पुरुषों में भी होती है, लेकिन पुरुषों को अपनी उपार्जन-शक्ति पर गर्व होता है । वह गर्व उनमें से कुछ को अतिशय कृपण होने से बचा लेता है । स्त्रियों को इस गर्व का सहारा नहीं मिलता ।

फिर भी, उनका हृदय करुणा और प्रेम से भरा होता है । यह प्रेम ही उनका सहारा है ।.....पति की प्रसन्नता के लिए वह सर्वस्व हार सकती है । दुलहन को समझ लेना चाहिये कि, पति की प्रसन्नता इसी में होगी कि, वह उसके सम्पूर्ण परिवार का अंग बनकर रहे । स्वयं उसे इस व्यवस्था से गृह-प्रबंध में अत्यंत सुविधा होगी । सच्चे दिल से प्रेम करे भी तो सास-ननद के प्यार में वह भी अपने माँ-बाप की बिछुड़न भूल जायेगी । हँसते-खेलते दिन बीतेंगे । दुःख की घड़ियों में उसे सहानुभूति मिलेगी और हँसने-खेलने को साथ मिलेगा । अलहदा घर बसाना बड़ी जिम्मेदारी का काम है । अकेले घर में पति के बाहर जाने पर दुलहन को सब सूना-सूना मालूम होता है । उपार्जन के लिए पति को विदेश भी जाना पड़ता है । इस लम्बे वियोग को काटने के लिए बहू को फिर अपने माता-पिता का आश्रय लेना पड़ता है। दुःख और कष्ट में वह अपने माँ-बाप को ही बार बार तंग करती है। वह भूल जाती है कि, उसका पति अपने सास-ससुर के उपकारों से दबना सहन नहीं करता । तब वह पड़ोसियों या सहेलियों से अवलम्ब लेने का यत्न करती है ।

अकेले घर बसाने के दुःखद अध्याय का अंत यहीं नहीं हो जाता। वह समय भी आता है, जब वह अपने पति के माता-पिता या भाई-बहन को घृणा और उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगती है । उसका सम्बंध उपेक्षा का सम्बंध नहीं है । वह भूल जाती है कि, इन सम्बंधों के रिक्त स्थान को प्रेम से नहीं भरा जाता,तो घृणा के काले नाग वहाँ अपना फन फैलाने लगते हैं । यह घृणा देर तक दबी नहीं रह सकती । शब्दों में या व्यवहार में वह प्रकट होकर रहती है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

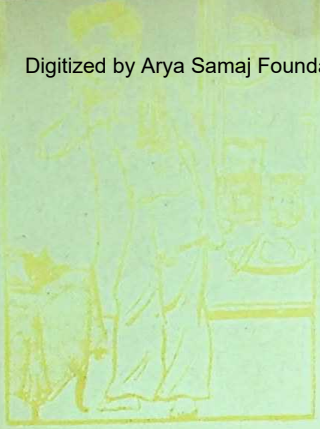

परिवार में अगर आप अकेले हैं, तो पत्नी के सांस्कृतिक कार्यक्रम में चले जाने पर आपको चूल्हा-चक्की भी संभालनी पड़ेगी ।

ऐसी अकेले घर बसानेवाली बहुओं से मैं कहूँगा कि, पति के आदरणीय माता-पिता से घृणा करके तुम पति के सम्पूर्ण प्रेम को कभी नहीं पा सकोगी । घृणा और प्रेम एक साथ नहीं रह सकते । पति का मन अपने माँ-बाप से कुछ देर के लिए रूठकर भी उनका प्यार पाने को सदा आतुर रहेगा । तुम्हारी जवानी का प्रेम और महान् बलिदान भी उसे माँ-बाप से विमुख नहीं कर सकेगा । उसके माता-पिता ने भी उसके लिए बलिदान किये थे । इसलिए मैं हर नयी बहू को सावधान करूँगा कि पति की माता के स्नेह को कभी अपनी तराजू पर तोलने की कोशिश मत करना । नवविवाहिता पत्नियों को मेरी सलाह है कि, आप अपनी आशंकाओं को दिल से दूर कर लेना । ससुराल में जाकर यदि आपके सास-ननद का व्यवहार अप्रीतिकर हो तो भी पति की प्रसन्नता का ध्यान रखकर संयम से काम लेना। प्रेम का मार्ग काँटों से भरा होता है। पति आपकी कुर्बानी का मान अवश्य करेगा। आपका दुःख उससे छिपा नहीं रहेगा। सास-ननद यदि आपसे अन्याय करती हैं तो वह भी उसकी निगाह में होगा। और आपकी सहिष्णुता-शालीनता उसके हृदय में आपके लिए अटूट प्रेम भर देगी। स्मरण रखें, यदि आपको अपने पति की प्रसन्नता की चिंता है, तो आपकी सास को भी अपने पुत्र की प्रसन्नता अभीष्ट है। वह भी उसके बुढ़ापे का सहारा है।

ससुराल में नयी आयी बहुओं से मेरा अनुरोध है कि, किसी भी अवस्था में सास के लिए कोई अपमानजनक शब्द नहीं कहें। दुर्भाग्यवश यदि आपको अलहदा घर बसाने को लाचार भी होना पड़े, तो भी सास-ससुर का आशीर्वाद लेकर ही अलग हों।

यह सत्य सदा स्मरण रखिये कि, कई बार स्थान की दूरी हृदयों को पास ले आती है। कई बार पास रहते हुए भी दिलों की दूरी बढ़ती जाती है और प्रायः दूर रहनेवाले भी दिल से पास रहते हैं। एक दूसरे की कठिनाइयों को समझने का यत्न करना चाहिये । क्या यह सच नहीं कि आपके पति पर सास का भी अधिकार है। उसने उसे जन्म दिया है। उस अधिकार का मूल्य समझते हुए ही पति को उसकी माँ से अलग करने की कोशिश करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत सरकार के श्रम विभाग में उपमंत्री के उत्तर दायित्वपूर्ण ऊँचे पद पर आसीन श्री आबिद अली की साधनापूर्ण आत्मकथा के कुछ अंश।

आबिद अली

मजदूर से मंत्री

मुझमें परिस्थितियों से संघर्ष करने की जो आदत पैदा हुई, वह यदि मैं भूलता नहीं हूँ, तो बचपन में झेली गयी मुसीबतों का ही नतीजा है। मेरे पिता बगदाद में बहुत बड़े व्यापारी थे। उनका व्यापार बम्बई, वर्धा, लखनऊ व रंगून तक फैला हुआ था। बम्बई, वर्धा व लखनऊ में पिताजी बहुत सारी चल-अचल सम्पत्ति भी बना गये थे। बगदाद में ही मेरा जन्म हुआ। चावल के व्यापार में बहुत बड़ा घाटा होने से उनका व्यवसाय बिगड़ गया। जो बचा, उसको पिता के देहांत के बाद चाचा नहीं सम्भाल सके और जायदाद को हड़पने की मन्शा से उस पर कब्जा करके बैठ गये। इसी वजह से मुझे माँ के पास वर्धा से हटा करके लखनऊ में उन्होंने अपने पास रख लिया।

उनका व्यवहार मेरे साथ बड़ा ही कठोर था। घर में चाकरों की तरह काम लिया जाता और जरा-सी भूल होने पर इतनी बुरी पिटाई होती कि, आज भी उसको याद करके रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस मार-पिटाई से तंग आकर मैंने घर छोड़ने का मन-ही-मन फैसला कर लिया और केवल पहने हुए दो कपड़ों के साथ घर से निकल-कर कानपुर चला आया। उस समय मेरे पास कुल चौदह पैसे थे। इन्हीं १४ पैसों की बुनियाद पर मेरे जीवन की मीनार खड़ी हुई। वे १४ पैसे भी मेरे अपने नहीं थे। चाचा ने सोडे की बोतल खाली करके उसकी कीमत के ३ पैसे देकर पनवाड़ी को बोतल लौटा देने और सोडे की कीमत चुका देने के लिए भेजा था। मैंने बोतल बेचकर पैसे प्राप्त कर लिये और १४ पैसे की उस पूँजी के साथ घर से निकल पड़ा।

कानपुर में आकर बड़ी मुश्किल से एक मिल के दफ्तर में झाड़ू लगाने की नौकरी नसीब हुई। रहने के लिए जब कहीं जगह न मिली, तो एक मरघट में अपने ही हाथों से एक छोटी-सी झोपड़ी बना ली। मिट्टी के दो-एक बर्तन जुटा लिये। शुरू में ज्वार की दो-तीन मोटी-मोटी रोटी बना लेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दोनों समय ठंडे पानी के साथ गले के नीचे उतारकर संतोष मान लेती। धीरे धीरे नौकरी में कुछ तरक्की होती गयी और आमदनी में भी दो-चार पैसों की बढ़ती होने लगी। मिल में ही मैंने अँग्रेजी का पहला सबक सीखा। वह था—१ से १० तक की गिनती का। गिनती सीख लेने के बाद पैकिंग का कुछ काम मिला। गिनती करने में अक्सर मैं 'टू' और 'थ्री' में घबरा जाता था। एक बार 'टू' की जगह 'थ्री' बोल गया और गाल पर ऐसा जोर का तमाचा पड़ा कि, ऊपर से नीचे तक सारा बदन झनझना उठा। उसके बाद 'थ्री' और 'टू' की गलती मैंने फिर कभी नहीं की। और न कभी पढ़ाई के नाम पर चपत खायी।

इन्हीं दिनों एक बार एक रिटायर्ड अँग्रेज सैनिक से मुठभेड़ हो गयी। कुछ अँग्रेज बच्चे एक मैदान में फुटबाल खेल रहे थे। उनकी गेंद हमारे सामने रास्ते पर आ पड़ी। मैंने उसको ठुड्डा मार दिया। वह कुछ दूर चली गयी। गेंद उठाने के लिए जो फौजी अँग्रेज खड़ा था, वह मुझ पर पागल कुत्ते की तरह गुर्राया और अँग्रेजी में बुरी गाली भी दे गया। मुझसे यह सहन न हुआ और मैंने उसको जमीन पर गिरा कर घूँसे जमा दिये। दूसरे दिन मिल के दफ्तर में पेशी होने और सजा मिलने से बचने के लिए मैंने नौकरी से ही सलाम कह दिया। फिर फाकेमस्ती आरम्भ हुई। बड़ी दौड़-धूप के बाद कहीं वैसी ही एक दूसरी नौकरी नसीब हो सकी।

इस प्रकार कानपुर में जैसे-तैसे दिन कट रहे थे कि, मुझे खोजते हुए चाचा के लड़के ने एक दिन झोपड़ी में मुझे आ पकड़ा। मेरा पता उन्हें इस वजह से चला कि, मैं कुछ दोस्तों के साथ एक कव्वाली में शामिल होने लखनऊ गया हुआ था। चाचा के लड़कों को इसका पता लग गया और वे मेरी खोज में निकल पड़े। मैं इस शर्त पर लौटने को राजी हुआ कि, मुझे पीटा न जायेगा और अपनी माँ के पास वर्धा पहुँचा दिया जायेगा।

माँ के पास वर्धा तो चला आया, परन्तु मुसीबतों के लम्बे सफर का नया दौर अब शुरू होने को था। वर्धा की सारी जायदाद पर चाचा के लड़के कब्जा किये हुए थे। माँ को गुजारे के लिए भी कुछ न मिलता था। मेरी बहन भी माँ के साथ ही रहती थी। अब हम तीन प्राणी हो गये। घर के तांबे के सब पुराने कीमती बर्तन एक-एक करके बेच दिये गये थे। मिट्टी के इने-गिने दो-तीन बर्तनों से सारा काम चलाया जाने लगा। इन बर्तनों में मिट्टी की एक तश्तरी थी, जो रोटी सेंकने व खाने दोनों ही के काम आती थी। हम तीनों उसी तश्तरी में खाना खा लेते थे। घर का दूसरा सब सामान भी इसी तरह बिक गया और केवल तीनों के पहनने के कपड़े बाकी बच गये। मैं दिन भर किसी काम-काज की खोज में सारे शहर की खाक छानता फिरता और माँ व बहन घर में बैठी अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदकिस्मती पर आँसू बहाया करतीं। तंग आकर एक दिन चाचा के लड़के के बँगले से दो भैंस और एक बछड़ा खोल लाया और १८-२० मील दूर हिंगनघाट के बाजार में बेच आया। जो पैसे हाथ लगे, वे लाकर माँ को दिये और सारी कहानी कह सुनायी। मुझे तो उम्मीद थी कि, माँ सौ-सवा सौ रुपये पाकर खुश होगी। लेकिन उसने बहुत मुझे डाँटा और पैसे चचेरे भाई को लौटा देने के लिए मुझ पर जोर डाला।

मैं तो चचेरे भाई की जायदाद को पिता की होने के कारण अपनी ही मानता था। इसलिए मेरी नजरों में वह चोरी नहीं थी। चचेरे भाई ने मुझ पर चोरी का इल्जाम लगाया और मुकदमा दायर कर दिया। मुकदमा चला। वकीलों की यह राय हुई कि, मुझे जायदाद को अपना साबित करने के लिए कोई दस्तावेज पेश करने चाहिये। चचेरे भाई से मुझे पहले यह मालूम हो चुका था कि, पुराने दस्तावेज लोहे के एक बक्स में बंद करके बँगले में एक खास जगह में रखे जाते थे। मौका पाकर एक दिन भाई की गैरहाजिरी में मैं उसके बँगले में पहुँच गया और वह बक्सा उठा लाया। शहर के एक पुराने पारसी दूकानदार मेरे पिताजी के बड़े गहरे दोस्त थे और मेरे साथ बड़ी हमदर्दी रखते थे। मैं बक्सा उनके पास ले गया। दस्तावेजों की छानबीन की गयी और मेरे काम के कई महत्वपूर्ण कागज हाथ लग गये। भैंसों की चोरी का मुकदमा इनके सहारे जीता गया और सारी जायदाद के लिए मेरी ओर से दावा पेश किया गया। छोटे नायडू नाम के एक व्यक्ति पिताजी के समय के पुराने वकील थे और मुझे बहुत चाहते थे। वे बिना कुछ लिये मेरी वकालत करते थे। जायदाद का मुकदमा भी उन्होंने ही बिना एक पैसा लिए लड़ा। नीचे की दोनों अदालतों में मेरे हक में फैसला हुआ। चचेरे भाई की ओर से नागपुर हाईकोर्ट में अपील की गयी।

यहाँ मेरे साथ जो बीती, वह और भी अधिक दिलचस्प है। नायडू साहब ने मुझे कह दिया था कि, उन्हें नागपुर ले जाने की जरूरत नहीं है। वे मुझे एक बयान लिखवा देंगे। उसको मैं स्वयं अदालत में पढ़ दूँ। यदि कहीं मेरे हक में फैसला न भी हुआ, तो रिवीजन की दरख्वास्त देकर दुबारा मामला लड़ लिया जायेगा। मैं उनका बयान लेकर नागपुर चल दिया।

अँग्रेजी पढ़ने-लिखने की कोई स्कूली शिक्षा न होने पर भी अँग्रेजी की टाँग तोड़ने का स्वयं जो अभ्यास कर लिया था, उसने भी मेरी मुसीबत बढ़ा दी। नागपुर पहुँचकर मैंने यह सोचा कि, अदालत में उस बयान को पढ़ने का कुछ अभ्यास तो कर ही लेना चाहिये। इतवारी बाजार से मैं तड़के ही हाईकोर्ट पहुँच जाता और खाली कमरे में घुसकर जज की खाली कुर्सी की ओर मुँह करके उस बयान को पढ़ने लग जाता। दो दिन यह नाटक चला। तीसरे दिन मुझे सिपाहियों ने पकड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया और सुपरिंटेंडेंट के सामने पेश किया। उन्होंने सारा वाकया सुनकर यह फैसला दे दिया कि, यह कोई पागल है। इसका दिमाग फिर गया है। इसको पागलखाने पहुँचा देना चाहिये। मैंने बहुत मिन्नत की कि, कल मेरी पेशी है, मुझे छोड़ दो। मैंने अपने पर तामील किया गया वारंट भी दिखा दिया। मेरी एक न सुनी गयी। कह दिया गया कि, यह पागल है, कहीं से वारंट उठा लाया है। आखिर मैंने जब यह कहा कि मैं इतवारी बाजार में अमुक सेठ के यहाँ ठहरा हूँ, तो मुझे एक सिपाही के साथ वहाँ भेजकर मेरी बात की सचाई मालूम की गयी व मुझे पागलखाने ले जाने के बजाय घर जाने की छुट्टी दे दी गयी।

मुकदमे का फैसला मेरे हक में हुआ और जो कुछ हाथ लगा, उस पर खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली कहावत पूरी उतरी। कुल छः हजार मेरे हाथ लगे, उसमें से भी दो हजार मुकदमे में खर्च हो चुके थे।

१४ पैसे की पूंजी लेकर घर से निकलने के बाद मैंने जिस जद्दोजहद के दिन गुजारे, कुछ उससे भी अधिक जद्दोजहद मुझे वर्धा आने के बाद करनी पड़ी। यहाँ झाड़ू लगाने की नौकरी भी नसीब न हुई। पिताजी के समय के मेरे एक दोस्त थे। वे टाइप का काम करते थे और कुछ पुराने टाइपराइटरों पर टाइपिंग भी सिखाया करते थे। मैं कोई और रास्ता न मिलने पर उनके पास पहुँचा। उन्होंने मेहरबानी करके मुझे टाइप सिखाना मंजूर कर लिया। दो रुपये की फीस के बजाय वे मुझसे बारह आने लेने पर राजी हो गये। मेरे पास तो बारह आने भी नहीं थे। घर का सामान बेचकर बारह आने का इंतजाम किया गया। जो काम दूसरे लोग तीन महीने में सीखते, वह मैंने लगन से एक महीने में सीख लिया और नागपुर से कुछ ही समय में सर्टिफिकेट भी हासिल कर लिया। यह सर्टिफिकेट रैमिंगटन मशीनवाले दिया करते थे।

प्रश्न यह नहीं है कि, अपने जीवनलक्ष्य की ओर आज कितने आगे बढ़े। प्रश्न यह है कि, किस तरह आगे बढ़े। रोज रात को अपने हाथ से यह पूछो कि, उसने आज किसी के मुँह का कौर तो नहीं छीना। अपने पैर से पूछो कि, किसी का सिर कुचलकर तो ऊपर नहीं चढ़ा वह। यदि उत्तर मिले नहीं, तो समझो, जीवन का वह दिन सार्थक हुआ। — टालस्टाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन टाइप करने के लिए किसी मुकदमे का बहुत बड़ा काम आ गया। मैंने दिन-रात एक कर उसको पूरा किया, तो बयालीस रुपये मेरे हाथ लगे। माँ के हाथों में जब मैंने वह रकम दी, तो उसने समझा कि, बेटे ने वकालत में कोई बहुत बड़ा मुकदमा जीत लिया है और उसकी यह फीस उसे मिली है। मेरा टाइप सीखना माँ की नजरों में वकालत पढ़ना और नागपुर से हासिल किया गया सर्टिफिकेट वकालत पास करना था। खुशकिस्मती यह थी कि, ईद सिर पर थी और इन पैसों के सहारे यह ईद बड़ी खुशी से मनायी गयी।

दौड़-धूप करके जिला मजिस्ट्रेट के दफ्तर में टाइपिस्ट का काम साढ़े अठारह रुपये महीने की तनख्वाह पर मिल गया। मेरे लिए यह नौकरी अंधे को लकड़ी का सहारा साबित हुई। इसी तरह घर-गृहस्थी का खर्च चलने लगा और पुराने कर्ज भी चुका दिये गये। मिट्टी के बर्तनों का स्थान तांबे के बर्तनों ने ले लिया। नया जूता और नया कपड़ा बदन पर दीखने लगा। किस्मत ने जो पल्टा खाया, वह कामयाब साबित हुआ। कचहरी की नौकरी की वजह से शहरवालों से मेल-मुहब्बत खूब बढ़ गयी। पिताजी के दिनों का दोस्ताना नाता फिर ताजा हो गया। काम अच्छा करने की वजह से अफसरों का भी कृपापात्र बन गया। जायदाद के मुकदमे में इन सबसे बड़ी मदद मिली।

लेकिन मुझे क्या पता था कि, जीवन में सबसे बड़ा उलट-फेर अभी बाकी है।

राष्ट्र-प्रेम और देशसेवा की उत्कट भावना ऐसी थी, जिस घर की गरीबी और माँ-बहन की तंग हालत भी नहीं रोक सकी। नौकरी पर लात मारकर मैंने कांग्रेस आंदोलन में अपना नाम लिखाया। यह जिंदगी का नया दौर था। कई जेलों की हवा खायी। बम्बई में शराब के विरुद्ध पिकेटिंग करते समय टाँग में गोली लगी और यहाँ तक कि, टाँग कटवाने की नौबत भी आ पहुँची थी; परंतु भाग्य से बच गया। मजदूरों से मेरा विशेष लगाव था; क्योंकि मैं स्वयं भी एक मजदूर था। अतएव मजदूर-आंदोलनों को संगठित करने का बीड़ा मैंने उठाया। जेल से छूटते ही मैं इसी काम में लग जाता।

मेरे स्वभाव की सबसे बड़ी खासियत यह थी कि, मैं जिस काम की करने की ठान लेता, उसमें जुट जाता और उसको पूरा किये बिना दम नहीं लेता। नहीं तो मेरी कमर कभी की टूट गयी होती। जिसको दुनिया हठ कहती है, उसको मैं अपना सबसे बड़ा गुण मानता हूँ। मैं अपनी जिंदगी के निचोड़ को तीन शब्दों में "मजदूर से मंत्री" कहा करता हूँ। इसमें मजदूरी का ही पलड़ा भारी है। सचाई, ईमानदारी, नेकनीयती आदि के गुण मुझे अपनी माँ और पिता से मिले हैं। पिता की गोद में तो मैं अधिक नहीं खेला; परंतु माँ के साये में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैंने देखा कि, बड़ी-से-बड़ी मुसीबत में भी वह चट्टान की तरह मजबूत रही। जो कुछ बन पाया हूँ, उसके लिए उसका जितना भी अहसान मानूँ, थोड़ा है।*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

श्रीनिवास

वायल

लॉन

प्रिन्ट

पॉपलिन

हमेशा चित्ताकर्षक...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोनिस्कोप

डगलस कापर

गर्भस्थ-शिशु भी साँस लेता है। डाक्टरों ने एक नया यंत्र 'सोनिस्कोप' प्राप्त कर लिया है, जिससे गर्भस्थ-शिशु की धड़कनें आसानी से सुनी जा सकती हैं। इन धड़कनों को सामान्य स्टेथिस्कोप से सुनना सम्भव नहीं था। अब डाक्टरों के लिए हृदय की धड़कनों व फेफड़ों की शिकायतों का निदान करना इस यंत्र की सहायता से आसान हो गया है।

सोनिस्कोप एक तरह से इलेक्ट्रोनिक स्टेथिस्कोप ही है। दो-तीन छटांक वजन के इस यंत्र में यह विशेषता है कि, अनावश्यक ध्वनियों को श्रवण-क्षेत्र से समाप्त करके केवल आवश्यक ध्वनि ही सुनी जा सकती है।

एक छोटी डिब्बी में बंद यह यंत्र आसानी से डाक्टर के गले में लटकाया जा सकता है। इसे मरीज के हृदय अथवा बिस्तर पर रखा जा सकता है। ध्वनि-विस्तारक यंत्रों की सहायता से इस यंत्र द्वारा डाक्टर या नर्स अपने कमरे में स्विचबोर्ड द्वारा या टेलिफोन पर रोगी के हृदय की धड़कनों को सुनकर रोग का निदान कर लेते हैं। इन ध्वनियों का टेपरिकार्डिंग करके भी अध्ययन किया जा सकता है। साथ ही आपरेशन के समय भी यह यंत्र डाक्टर को रोगी के हृदय की स्थिति की सही जानकारी निरंतर दे सकता है। कार्डियोग्राफ मशीन से सम्बद्ध करके रोगी के हृदय की धड़कनें अंकित की जा सकती हैं।

वायरलैस सेट की तरह इस यंत्र में भी तीन पुर्जे रहते हैं। एक हाई फ्रिक्वेंसी साउंड के लिए, दूसरा लो फ्रिक्वेंसी साउंड के लिए तथा तीसरा ट्यून व वोल्यूम के लिए। डायल को सही दिशा में घुमाकर डाक्टर ध्वनि ग्रहण कर लेता है और बाहरी बेकार ध्वनियों का सोनिस्कोप में प्रवेश नहीं हो पाता।

बालपक्षाघात के रोगियों के निदान में—जिन्हें 'यांत्रिक लंग्स' में रखा जाता है—मशीन की घरघराहट बाधक होती है और सामान्य स्टेथिस्कोप वहाँ काम नहीं दे पाता है। ऐसी स्थिति में सोनिस्कोप बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है, क्योंकि मशीन की आवाज को यह हृदय की धड़कनों की ध्वनियों से अलग कर देता है और केवल धड़कनें ही सुनाई दे पाती हैं।

अभी तक उत्पादन सीमित होने के कारण इनका प्रयोग केवल चिकित्सा-क्षेत्र में ही हुआ है। औद्योगिक-क्षेत्र में मशीनों की गड़बड़ी का पता लगाने में भी यह यंत्र उपयोगी सिद्ध हो सकता है। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वी पर स्वर्ग

हमारे प्रश्न के उत्तर में अनेक यात्रियों ने अपने सर्वाधिक प्रिय स्थानों के नाम और संक्षिप्त परिचय भेजे हैं। उनमें से अन्तरीय स्थानों का परिचय इस अंक में दिया जा रहा है। विदेशी स्थानों की चर्चा अगले अंक में होगी। विश्वास है, इस आयोजन से पाठकों को यात्रा-स्थान के चुनाव में सहायता मिलेगी।

कश्मीर : यहाँ सभी दर्शनीय है। कवि कल्हण ने ठीक कहा है—"यहाँ जैसी विद्या, ऊँचे-ऊँचे गृह, केशर हिममिश्रित शीत जल और घर-घर द्राक्षा—ये तो स्वर्ग में भी दुर्लभ हैं।" **—नरदेव शास्त्री**

यहाँ पहलगाँव स्थान बरफ से सफेद हुए पर्वतों के बीच हीरे का कटोरा-सा लगा। पूर्णिमा की रात में उसका दृश्य बड़ा ही मनोहर लगा। **— रामनरेश त्रिपाठी**

हिम-मंडित प्रदेश, संगीत से भरी नदी, भोले-भाले सुंदर शिशु तथा नर-नारियाँ, गुदगुदी से भरा समीर, बिना औषध का अस्पताल ! **— बेढ़ब बनारसी**

सोनमर्ग की सुंदर हिमाच्छादित पर्वत-मालाएँ, दुग्धोज्ज्वल जल-प्रपात, सर्पिली घाटी, भोजपत्रों की कतारें और तपोवन जैसा वातावरण बड़ा भाया। **— नीरज**

गुलमर्ग के पास १४ हजार फुट की ऊँचाई पर एक झील है, जिसका कोई नाम नहीं है। इसमें गर्मियों में भी हिमखंड तैरते रहते हैं। जुलाई के आरम्भ में इस झील के किनारों पर रंग-बिरंगे फूल लाखों की की संख्या में खिल उठते हैं। मरकत के रंग के पानी में फूलों और बर्फीली चोटियों का प्रतिबिम्ब दिव्य शोभा उत्पन्न करता है। **— चंद्रगुप्त विद्यालंकार**

उत्तर काशी : (हरिद्वार) पतली-सी रेखा और दो फुट गहराई की निर्मल स्फटिक जैसी भागीरथी, चारों ओर हिमालय की छटा, देवदारु के दृश्य और चारों ओर शांत वातावरण। **— किशोरीदास वाजपेयी**

गोमुख (गंगोत्री) : पंद्रह-सोलह मील लम्बे ग्लेशियर के नीचे बहती हुई गंगा पहली बार यहाँ दिखाई देती है। यह भव्य और दिव्य स्थान चौदह हजार पांच सौ फुट की ऊँचाई पर है। **— यशपाल जैन**

यह स्थान गंगोत्री से १८ मील दूर है। चारों ओर उत्तुंग हिमशिखर, पग-पग पर हिम-धाराएँ, क्षण-क्षण रजत, स्वर्ण, प्लाटिनम का रूप लेते झरने। बस उसका वर्णन नहीं हो सकता। **— विष्णु प्रभाकर**

उटकमंड : (कोयम्बटूर, मद्रास से ३२ मील दूर) ७५०० फुट की ऊँचाई पर स्थित यह 'क्वीन आव हिल स्टेशन्स' है। चारों ओर नीलगिरि के हरे-भरे मनोहारी दृश्य हैं। **— अवधबिहारी गुप्त**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर हरियाली-ही-हरियाली, कटोरे के आकार की विशाल झील नौकाविहार [illegible] पूर उपलब्ध ।

– अवनींद्र विद्यालंकार

कन्याकुमारी : (त्रिवेंद्रम्) बाँयी ओर विशुद्ध मरकत-नीले-महोदधि का हरित जल, दाहिनी ओर अरब सागर की शुभ्रफेनिल लहरें और सामने अंतरिक्ष तक रहस्यमय गहन नीलिम भारत महासागर । ऊँची-ऊँची उत्ताल तरंगें, तरंगों पर दो-दो हाथ ऊँची पानी के धुँए की मोर-पंखी अद्भुत छटा ।

– अमृतलाल नागर

यहाँ के सूर्योदय और सूर्यास्त का दृश्य तो एकदम अद्भुत, अनुपम और अमर है !

– उदयशंकर भट्ट

हेमकूट : (मानगढ़) मालिनी और रमासन नदियों के बीच खड़ा हुआ ५६४६ फुट ऊँचा पर्वत । नीचे घना वन । शिखर पर खड़े होकर अनंत पर्वत श्रेणियाँ और हरे वनों में बिखरी हुई गंगा की अनेक धाराएँ बहुत ही दिव्य प्रतीत होती हैं ।

– श्रीनिधि सिद्धांतालंकार

चित्रकूट : (प्रयाग के निकट) रामगिरी, मंदाकिनी, सतकूप, कामदनाथ महादेव आदि के दर्शन से प्राकृतिक सौंदर्य की जो अद्भुत् झाँकी मिली, उसमें अनिर्वचनीय रमणीयता थी ।

– शिवपूजन सहाय

चंद्रप्रभा और रिहंद बाँध : (मिर्जापुर के पास) । विंध्य पर्वतमालाओं की गोद में छोटी-छोटी नदियों पर बाँधे गये बाँधों के आस-पास की प्राकृतिक छटा अद्भुत है ।

– केशवचंद्र वर्मा

दार्जिलिंग : चतुर्दिक–विशेषकर पूर्वोत्तर दिशा में हिमाच्छादित शिखरों पर प्रातः- सायंकालीन सूर्य की रश्मियों का अनुपम बहुरंगी सौंदर्य ।

– राजबहादुर सिंह

केदारनाथ : उत्तराखंड के यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ चार धामों का पार्वत्य-पर्यटन यथार्थ में प्रकृति और पुरुष का परिचय प्राप्त करना है । इनमें भी केदारनाथ की प्रकृति की छबि-छटा अलौकिक, आश्चर्यजनक और आह्लादकारी है ।

– गोविंद दास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन ब दिन

त्वचा पर नई बहार

नये रेक्सोना का चमत्कार

रेक्सोना आप की त्वचा पर वही जादू जगाता है जो सोने पर सुहागा ! रेक्सोना के कोमल झाग में सौंदर्यवर्धक तेलों का विशेष मिश्रण, कॅडिल, मिला है जो आपकी त्वचा में रच बस कर आप के रंगरूप को अधिक कोमल, अधिक मुलायम और अधिक सुंदर बनाता है !

रेक्सोना की विशेष सुगंध आप को देर तक तरोताजा रखती है। रेक्सोना आप के दैनिक सौंदर्य-स्नान के लिए आदर्श है।

नये आवरण, नये रूप और नये हरे रंगवाला नया रेक्सोना आपके मन भा जायेगा !

नया रेक्सोना आपकी त्वचा के लिए गुणकारी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिंदुस्तान लीवर लिमिटिड ने रेक्सोना योग्राइट्री लिमिटिड ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत में बनाया।

RP. 170-80 HL

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानीखेत : हरा-भरा, फल-पुष्पों से लदा हुआ स्थान । **– मामा वरेरकर**

ऊँचे-नीचे पर्वत, बड़े-बड़े खड्ड, ऊँचे-ऊँचे वृक्ष, सघन हरियाली, दूरवर्ती हिमाच्छादित पर्वतश्रेणी ! **–वृंदावनलाल वर्मा**

कौसानी : (अल्मोड़ा से ३२ मील दूर मोटर मार्ग पर) ६ हजार से अधिक ऊँचाई, चीड़ आदि का सुरम्य वन, उभय पार्श्व में सोमेश्वर व गोमती की सदा-बहार शस्यश्यामल घाटियाँ, चौखम्भा से पंचचूली तक की हिमशिखरावलि का नयनाभिराम दृश्य । **– गिरीशचंद्र जोशी**

बद्रीनाथ : यहाँ से दो मील आगे माना गाँव के पास अलकनंदा और सरस्वती के संगम पर एक पहाड़ी में व्यास गुफा स्थित है। उसके पास की एक चट्टान पर खड़े होकर मैंने बद्रीनाथ पुरी की ओर दृष्टि-क्षेप किया – अपूर्व सौंदर्य, अपूर्व शांति और अपूर्व तृप्ति का अनुभव हुआ । दोनों ओर नर-नारायण पर्वत, जिनके शिखरों पर बर्फ पड़ी थी और बीच में अलकनंदा का कल-कल निनाद । **– अनंतगोपाल शेवड़े**

राँची : समुद्रतल से लगभग २,००० फुट ऊँचा, चारों ओर हरी-भरी पहाड़ियाँ, सुंदर जलवायु, २० मील की दूरी पर हुंडू जल-प्रपात । **– आरसीप्रसाद सिंह**

पिंडारी ग्लेशियर : बागेश्वर जिला अल्मोड़ा के निकट । **– जगदीश गुप्त**

अमरकंटक : (जबलपुर के निकट) नर्मदा तथा सोन का उद्गम स्थान है। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही

शम्भुनाथ शुक्ल

पुरी : (कलकत्ता और भुवनेश्वर के निकट) निर्बाध सागर के क्षण-क्षण नये होते रूप और लहरों के तेवर; विशेषकर रात को ग्यारह के बाद ... **– राजेंद्र यादव**

ऋषिकेश : यहाँ के स्थान गंगातटवर्ती होने के कारण प्राकृतिक सौंदर्य-सम्पन्न हैं । **– हरिशंकर शर्मा**

किलबा से मंगलाह तक : (हिमाचल प्रदेश का रामपुर बुशहर) सतलज नदी के किनारे-किनारे देवदार और अखरोटों का हरा-भरा वन, सामने हिमाच्छादित कैलाश पर्वत, नगरों की कोलाहलमयी अशांत बस्तियों से दूर, हिन्दुस्तान-तिब्बत मार्ग पर । **– संतराम**

मनाली : (कुल्लू के पास) शांत-सुंदर, देवदार के जंगल, व्यास का ठंडा कल-कल करता पानी, बरफ से ढँकी चोटियाँ' दिन के सैकड़ों रंग, सब्जी, धूप, और बारिश । **– संतोषसिंह धीर**

पेरियार लेक : (मदुरा के निकट) मद्रास और त्रावणकोर के बार्डर पर स्थित प्रकृति-स्थल ! **– गोपाल रेड्डी**

गंगतोक : (दार्जिलिंग के पास) क्षितिज के चारों ओर फैले हुए तुंग हिम-शिखर (जिनमें एवरेस्ट भी सम्मिलित है) एक अलौकिक रहस्यानुभूति से मन और प्राण को छा देते हैं । **– इलाचंद्र जोशी**

महाबलेश्वर : (पूना के पास) मार्ग में पहाड़ी यात्रा, पंचगनी आदि स्थान भी रमणीय हैं । महाबलेश्वर के विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

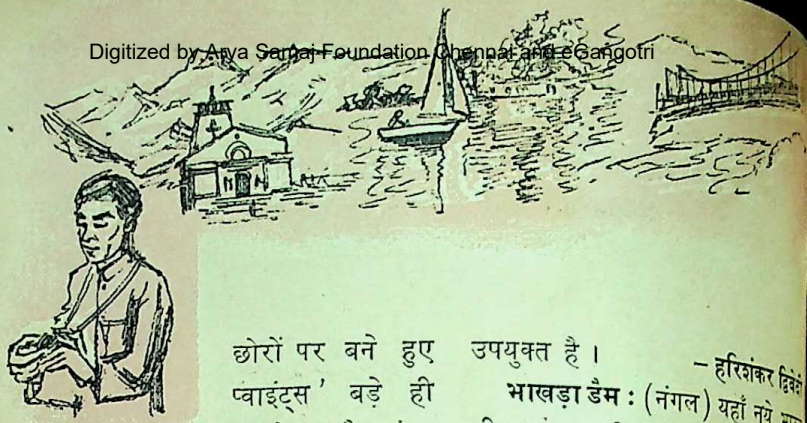

छोरों पर बने हुए प्वाइंट्स' बड़े ही मनमोहक और सुंदर लगते हैं। — **महीपसिंह**

जूहू : (बम्बई) समुद्र-तट पर पिकनिक करने के लिए यह आदर्श स्थान है और सभी आर्थिक वर्गों के लोगों के लिए उपयुक्त है। — **हरिशंकर द्विवेदी**

भाखड़ा डैम : (नंगल) यहाँ नये भारत की एक झलक मिलती है। — **कर्तारसिंह दुग्गल**

बेलूर : (हासन, मैसूर) यहाँ का चेन्नकेशव मंदिर दर्शनीय है। मोहिनीस्तम्भ तथा नृसिंह स्तम्भ अप्रतिम कलाकारी के नमूने हैं। — **महादेव शास्त्री जोशी**

पर्वत और प्रपात

उत्तर की ओर नंदादेवी और उसकी सहेलियाँ सफेद पोशाक में अपना सिर ऊँचा किये थीं। पहाड़ों के करारे बड़े डरावने थे और लगभग सीधे कटे हुए-से कभी-कभी नीचे की गहराई तक चले जाते थे; परंतु उपत्यकाओं के आकार तरुण पयोधरों की तरह बड़े गोल और कोमल थे। कहीं-कहीं वे छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गये थे, जिन पर हरे-हरे लहलहाते खेत इन्सान की मेहनत को जाहिर कर रहे थे।

आदमी की शठता से सर्वथा अछूते, सुनसान, अज्ञेय उन सफेद पहाड़ों को देखते-देखते मुझे फिर से शांति महसूस हुई। आदमी चाहे कुछ भी क्यों न करे, वे पहाड़ तो यहाँ रहेंगे ही। अगर मानव-जाति आत्महत्या कर ले, या और किसी प्रक्रिया से गायब हो जाय तो भी वसंत आकर इन पहाड़ी प्रदेशों का आलिंगन करेगा ही, चीड़ वृक्षों के पत्तों में लहराती हुई हवा भी बहा ही करेगी और पक्षियों का संगीत भी चलता ही रहेगा।

— **जवाहरलाल नेहरू**

मेरा देखा तीसरा अद्भुत दृश्य था गेरसोप्पा का जलप्रपात, जहाँ एक हजार फुट की ऊँचाई से शरावती नदी का जल सवेग गिरता है। मैं काफी देर तक बैठकर इस प्राकृतिक चमत्कार को देखता रहा।

— **राजेंद्र प्रसाद**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तचाप के नये उपचार

डा० ए० वी० बालिगा

रक्तवाहिनियों में रक्त का दबाव बढ़ जाना 'हाइपर-टेंशन' अर्थात् उच्च रक्तचाप कहलाता है। उच्च रक्तचाप के दौरे में हृदय पर बहुत दुष्प्रभाव पड़ने की आशंका रहती है; मस्तिष्क में रक्तस्राव होकर मृत्यु हो जाने का खतरा भी रहता है। ऐसा भी होता है कि, कभी-कभी मस्तिष्क में किसी धमनी में खून का चकत्ता जम जाता है और आधे शरीर को लकवा मार जाता है। मतलब यह कि, उच्च रक्तचाप के रोगियों का भविष्य बहुत आशामय नहीं होता। शांतिपूर्ण जीवन संयत खान-पान ही सामान्य-तया इस रोग के उपचार समझे जाते हैं।

परंतु अब कई प्रकार के उच्च रक्तचाप के उपचार में शल्यक्रिया का भी उपयोग होने लगा है। आजकल चिकित्सक रक्तचाप के रोगी की कई प्रकार से परीक्षा कर रोग के कारण और उसके स्वरूप का निदान करते हैं। इस विस्तृत और व्यवस्थित जाँच से उन्हें मालूम हो जाता है कि, शल्यक्रिया रोगी को पूर्ण या आंशिक लाभ पहुँचा सकेगी या नहीं।

गुर्दे में पथरी पड़ जाना हमारे देश में काफी सामान्य बात है। 'हाइड्रोनेफ्रोसिस' नामक एक और रोग भी हमारे देश में काफी पाया जाता है। इस रोग में पेशाब उतरने में रुकावट पैदा हो जाती है और गुर्दा पानी-भरा हुआ गुब्बारा-सा हो जाता है। इन रोगों से पीड़ित कुछ व्यक्ति उच्च रक्तचाप के भी शिकार हो जाते हैं। शल्य-क्रिया से ऐसे कई रोगी बिल्कुल ठीक हो जाते हैं; बहुत आराम तो सभी को मिलता है।

गुर्दों के निकट स्थित एड्रिनल-ग्रंथियों का एक रोग है 'फियोक्रोमो साइ-टोमा'। इस रोग में एड्रिनल ग्रंथि में एक प्रकार की गाँठ पड़ जाती है। इस रोग के कारण अपेक्षाकृत कम आयु के व्यक्तियों को भी उच्च रक्त-चाप के दौरे बार-बार पड़ने लगते हैं और सीने में दर्द होता है, साँस लेने में कठिनाई होती है तथा हृद्रोग के अन्य लक्षण भी प्रकट होते हैं। ये दौरे थोड़ी देर रहते हैं और उनके बाद रक्तचाप वापस सामान्य स्तर पर आ जाता है। परंतु इसकी उपेक्षा की जाये, तो समय बीतने के साथ उच्च रक्तचाप का स्थायी

लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्राचीन काल में अमेरिकन आदिवासी तम्बाकू की पूजा ईश्वरीय देन के रूप में करते थे। विशेष समारोहों पर तम्बाकू को पवित्र अग्नि में डालते, अकाल पड़ता तो उसे हवा में उड़ाते और मछलियां न मिलतीं तो तम्बाकू के टुकड़े पानी में डालते।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तम्बाकू की कहानी....नं. २

बम्बई—५७.

भारत में इस प्रकार का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्योग

पनामा

एक अच्छी सिगरेट है—

यह आखिरी कश तक मज़ा देती है!

CC-0. In Public Domain. Gurukul

GT 702 HIN.

Greens' Adv.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोग हो जाता है। [illegible] द्वारा गाँठ निकाल दी जाये, तो रोगी बिल्कुल स्वस्थ हो जाता है।

डा० गोल्डब्रैट ने पशुओं पर अनेक परीक्षण करके यह मत प्रतिपादित किया था कि, गुर्दों में रक्त कम पहुँचने से उच्च रक्तचाप का रोग होता है। चिकित्सा-ग्रंथों में ऐसे अनेक रोगियों के विवरण मिलते हैं, जिन्हें उच्च रक्तचाप था और साथ ही जिनका गुर्दा पूर्ण या आंशिक रूप का से बेकार हो गया था।

उच्च रक्तचाप के रोगियों के लिए एक और आशादायक चीज है एक नयी विधि, जिससे पेट के अंदर बड़ी रक्त-वाहिनी में एक अपारदर्शक द्रव का प्रवेश कराकर उसकी तथा उससे निकलकर गुर्दे में जानेवाली नालियों की अंदरी मोटाई का पता लगाया जा सकता है।

यदि इस जाँच से पता चले कि, समूची नाली अथवा उसके कुछ भाग की भीतरी दीवार मोटी होकर खून बहने का रास्ता सँकरा हो गया है और उसके कारण गुर्दे को पर्याप्त मात्रा में रक्त नहीं पहुँच रहा है, तो शल्यक्रिया करके समुचित रक्त-प्रवाह की व्यवस्था की जा सकती है। इससे रोगी की हालत सुधर जाती है; कभी-कभी तो रक्तचाप बिल्कुल सामान्य स्तर पर आ जाता है।

इधर डाक्टर माइकल डी बेकी ने जो परीक्षण किये हैं, उनके फलस्वरूप बहुत-से रोगियों को उच्च रक्तचाप से राहत दिलाना सम्भव हो गया है। यह उपचार ७५ रोगियों पर आजमाया जा चुका है।

इसमें गुर्दों का एक्स-रे चित्र लिया जाता है और अगर उसमें कोई खराबी प्रकट हो, तो बड़ी रक्तवाहिनी में अपारदर्शक द्रव पहुँचाकर पता लगाते हैं कि, कौन-सी नली संकुचित हो गयी है। उस नली की जगह प्लास्टिक की नलियाँ लगाकर रक्तप्रवाह को ठीक ढंग से जारी कर दिया जाता है।

प्लास्टिक की नली के प्रयोग से यह आपरेशन अपेक्षाकृत सहज और निरापद हो गया है। अलबत्ता इन रोगियों को बहुत समय तक डाक्टरी निरीक्षण कराते रहना पड़ता है। यह उपाय बहुत महत्वपूर्ण और आशाजनक है। परंतु अभी यह प्रामाणिक रूप से नहीं कहा जास कता कि, कितने रोगी इससे लाभान्वित होंगे और लाभ कितना स्थायी होगा। *

काल-पुरुष

दिन मेरे क्षणों को खाते हैं
हफ्ते दिनों को
ऐसे ही महीने हफ्तों को
वर्ष महीनों को खा जाते हैं :
और मैं इतने-इतने वर्षों को,
युगों को खाकर
आज जिंदा हूँ
कोयले की खान में हीरा-सा।

— कुमारेंद्र पारसनाथ सिंह

१९६१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप-गीत

बीत गये युग उन गुनियों के
जो थे वह आलाप उठाते,
अपने आप जिसे सुनते ही
सोये दीवे थे जग जाते,

दग्ध हृदय से निकला हर स्वर
दीपक राग हुआ करता है,
घोर अंधेरे की घड़ियाँ हैं
अपने को परखो परखाओ।
मेरे अंतर की ज्वाला, तुम
घर-घर दीपशिखा बन जाओ।

अंतर में प्रभ की करुणा के
चिह्न नहीं देते दिखलाई,
अवनी पर मानव के ऊपर
मानव आज बना अन्यायी,

किंतु नहीं नैराश्य पराजित
होने की आवश्यकता है,
गीत अभी कवि के कंठों में
जाकर, यह जग से कह जाओ।
मेरे अंतर की ज्वाला, तुम।
घर-घर दीपशिखा बन जाओ

— बच्चन

कहाँ तक ?

चरण बढ़ने के लिए ही उठ गये
तो पंथ में काँटे बिछाओगे कहाँ तक ?
सृष्टि ही सम्पूर्ण जिसका आयतन
उस ज्योति को धूमिल बनाओगे कहाँ तक ?
शब्द आखिर शब्द हैं, ऊपर उठेंगे,
तुम उन्हें नीचे दबाओगे कहाँ तक ?

— पुरुषोत्तम हरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिषीजी

आर० के० नारायण

एक दोपहर को उन्होंने झोला खोलकर अपने धंधे की चीजें फैला दीं—एक दर्जन कौड़ियाँ, एक चौकोर कपड़ा जिस पर धुँधले रहस्यपूर्ण चार्ट बने हुए थे, एक नोट-बुक और ताड़पत्रों का एक बंडल ! उनके माथे पर भभूत और रोली का टीका लगा हुआ था और उनकी आँखों में गाहकों की निरंतर खोज करते-करते एक असाधारण चमक आ गयी थी, जिसे उनके गाहक भविष्यवक्ता का तेज समझकर संतुष्ट होते थे। ऐसी 'सेटिंग' के बीच तो एक बेवकूफ की आँखें भी चमकदार मालूम पड़ेंगी। प्रभाव को और भी तगड़ा करने के लिए उन्होंने एक केसरिया साफा भी बाँध लिया था। रंगों की यह योजना भला चूक सकती थी ! लोग उन्हें उसी तरह घेर लेते, जैसे मधुमक्खियाँ छत्ते को या फुलवारियों को घेर लेती हैं।

वे इमली के एक घने पेड़ के नीचे बैठते, जो टाउनहाल पार्क के रास्ते में पड़ता था। यह कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण स्थान था—सुबह से शाम तक उमड़ती भीड़ इस सँकरी सड़क से रोजाना गुजरती। तरह-तरह के कारोबारी और धंधेवाले लोग वहाँ उपस्थित होते थे— दवाइयों के विक्रेता, माल चुराकर बेचनेवाले कबाड़ी, जादूगर और इन सबसे महत्वपूर्ण—सस्ते कपड़ों का नीलाम करनेवाले। ये लोग समूचे शहर को जगाये रखने के लिए काफी हल्ला कर लेते थे।

ज्योतिषीजी की बगल में एक मूँगफलीवाला बैठता था, जो अपने माल को नित्य नये नामों से पुकारता— कभी 'बम्बई का आइसक्रीम', कभी 'दिल्ली का सोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक घरों में सर्फ़...

'नई चीज़ें आज़माइये...'

बंगला गृहिणी श्रीमती नंदिता रॉय कहती है

'अब जैसे कि सर्फ़! मैं ने इसे अच्छी तरह आज़माया है। इसी लिए मैं सभी कपड़े सर्फ़ ही से धोती हूँ।' श्रीमती रॉय की रुची बहुत सी बातों में है। आप कहती हैं 'भला हो सर्फ़ का, मुझे काफ़ी फ़ुरसत मिल जाती है, क्योंकि सर्फ़ से धुलाई अत्यंत आसानी से होती है और अद्भुत सफ़ेद!'

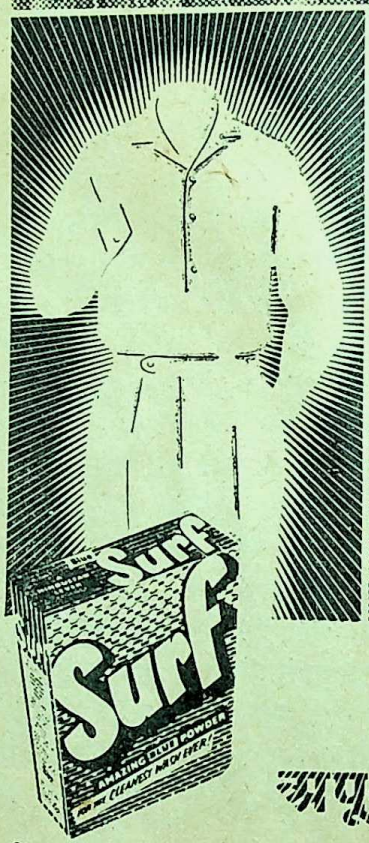

सर्फ़ से कपड़े

अद्भुत सफ़ेद धुलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हलुवा,' कभी 'राजाजी की नफासत' आदि। और लोग उसे घेर लेते। मूँगफलीवाले के काफी गाहक ज्योतिषीजी के पास भी रुकते। ज्योतिषीजी अपना कारोबार उस रोशनी और धुएँ के बीच चलाते, जो मूँगफली के ढेर पर रखी डिबरी से निकलते रहते। नगरपालिका की बत्ती का न होना, वहाँ का एक और आकर्षण था। वहाँ सिर्फ दुकानों की रोशनी में उजाला रहता। एक या दो के पास हिस-हिसाते पेट्रोमैक्स की रोशनी थी, कुछ के पास छोटे डंडों में डिबरियाँ थीं, कुछ साय-किल के लैम्पों को काम में लाते और एकाध लोग, मसलन ज्योतिषीजी, बिना रोशनी के ही काम चला लेते। यह रोशनियों और घूमती परछाइयों का बिचपिच चौरस्ता था।

ज्योतिषीजी के लिए यह फायदेमंद ही था; क्योंकि ज्योतिषी-जीवन प्रारम्भ करने के बारे में उन्होंने कभी सपने में भी न सोचा था; और दूसरों पर क्या गुजरनेवाला है, इसके बारे में वे इससे ज्यादा नहीं जानते थे कि, दूसरे क्षण खुद उन पर क्या गुजरनेवाला है। यहाँ से वे उतने ही अपरिचित थे, जितने उनके सीधे-सादे गाहक। तब भी वे ऐसी बातें करते, जो दूसरों को प्रसन्न और चकित कर देतीं। वह महज अध्ययन, अभ्यास एवं चतुर अनुमान का ही करिश्मा था। साथ ही यह उतनी ही मेहनत का काम था, जितना किसी ईमानदार आदमी का हो सकता है। जो मजदूरी वे पाते थे, वह उनकी मेहनत के सर्वथा उपयुक्त ही थी।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने अपना गाँव बिना किसी पूर्व विचार या योजना के छोड़ दिया था। अगर वे वहाँ रहते, तो अपने बाप-दादाओं का पेशा करते—मसलन मिट्टी गोड़ना, जीवन-यापन, शादी-ब्याह, खेत और पुश्तैनी मकान की सीमा में बूढ़े हो जाना। लेकिन ऐसा हो नहीं सका। उन्हें अपना घर बिना किसी को सूचित किये छोड़ देना पड़ा और कई सौ मील आगे निकल आने पर ही उन्होंने चैन की साँस ली। एक ग्रामीण के लिए इतनी दूरी समुद्र-पार करने से कम नहीं होती।

तो ज्योतिषीजी के पास मनुष्य की आपदाओं का काम-चलाऊ विश्लेषण मौजूद था—शादी, दौलत, आपसी रिश्ते। लम्बे अभ्यास ने उनकी विचार-शक्ति को तेज कर दिया था। पाँच मिनिट में ही वे समझ जाते कि, क्या गड़बड़ है। वे हर सवाल के तीन पैसे चार्ज करते थे। जब तक दूसरा आदमी दस मिनिट न बोल ले, वे अपना मुँह नहीं खोलते थे। इससे उन्हें एक दर्जन जवाबों और सलाहों का मसाला मिल जाता था। जब वे सामने बैठे व्यक्ति की हथेली पर नजर गड़ाकर कहते—"आपको अपनी कोशिशों का पूरा-पूरा फल नहीं मिल रहा है," तो दस में से नौ आदमी स्वीकृति में सिर हिला देते थे। या वे सवाल करते—"क्या आपके परिवार में कोई औरत है, दूर की ही क्यों न हो, जो आपकी ओर आकर्षित नहीं होती?" या वे चारित्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्लेषण करने लगते –" आपकी ज्यादा तकलीफें आपके स्वभाव के कारण हैं, नहीं तो शनि यहाँ कैसे पहुँच जाता, जहाँ कि वह इस वक्त है। आप भीतर से तो बहुत बेसब्र हैं, लेकिन बाहर से गम्भीर।" इससे वे अपने गाहकों के बहुत प्यारे हो जाते; क्योंकि हममें से हर एक यही सोचता है कि, वह ऊपर से गम्भीर है।

मूँगफलीवाले ने अपनी ढिबरी बुझायी और चलने के लिए उठ खड़ा हुआ। ज्योतिषीजी के लिए भी यह चलने की घंटी थी; क्योंकि उसके बाद वे एक तरह से अँधेरे में रह जाते थे– सिवा जरा-सी हरी रोशनी के जो कहीं से उन तक आ जाती थी। उन्होंने अपनी कौड़ियाँ सम्भालीं और अपने झोले में रख ही रहे थे कि, हरी रोशनी रुक गयी। उन्होंने देखा कि, एक आदमी उनके सामने खड़ा है। यह भाँपकर कि, वह कोई गाहक है, वे बोले–"आप तो बहुत परेशान मालूम पड़ते हैं! अच्छा हो कि, कुछ देर आप बैठकर मुझसे बातचीत कर डालें।" दूसरा व्यक्ति कुछ बुदबुदाया। ज्योतिषीजी ने अपना निमंत्रण फिर दिया। दूसरे व्यक्ति ने अपनी हथेली उनकी नाक के नीचे फैला दी और बोला–" तुम अपने को ज्योतिषाचार्य कहते हो न!" ज्योतिषीजी इस ललकार से सजग हुए और उन्होंने उस व्यक्ति की हथेली को हरी रोशनी में देखते हुए कहना शुरू किया– "आपका स्वभाव ....."

" ओह, चुप रहो," दूसरे व्यक्ति ने कहा –"कुछ काम की बात बताओ।"

ज्योतिषीजी ने इसे अपनी बेइज्जती समझा और बोले–" मैं फी सवाल तीन पैसे लेता हूँ। बदले में आप जो पाओगे, वह आपके पैसों से ज्यादा अच्छा ...।" इस पर दूसरे व्यक्ति ने अपना हाथ खींच लिया और इकन्नी निकाल कर ज्योतिषी की तरफ फेंकते हुए बोला –" मुझे कुछ प्रश्न पूछने हैं। लेकिन जहाँ मुझे शक हुआ कि, तुम बेवकूफ बना रहे हो, तुम्हें वह इकन्नी सूद समेत लौटा देनी होगी–समझ गये न तुम!"

" अगर आपको मेरे जवाब संतोषजनक मालूम पड़ें, तो क्या आप मुझे पाँच रुपये दोगे?"

" नहीं?"

" आठ आने दोगे?"

" ठीक है। लेकिन एक शर्त पर कि अगर तुमने गलत बताया, तो तुम्हें मुझे दूनी रकम लौटानी होगी।" कुछ बहस के बाद यह समझौता हो गया।

जैसे ही ज्योतिषीजी आकाश की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्र पढ़ने लगे, गाहक ने चुरुट निकालकर जलाया। माचिस की रोशनी में ज्योतिषीजी ने गाहक का देहरा देख लिया ग। सड़क पर मोटरें दौड़ती रहीं, इक्केवाले अपने घोड़ों पर बिगड़ते रहे और भीड़ का शोर पार्क के धुँधलेपन को गुँजाता रहा। गाहक अपना चुरुट पीता हुआ निश्चिंत बैठ गया। ज्योतिषीजी बेसब्र हो उठे – "यह लीजिये बाबू अपनी इकन्नी। मैं ऐसी बाजियाँ नहीं लगाता। मुझे काफी देर हो गयी है ..." इतना कहकर वे अपना सामान सहेजने लगे। दूसरे व्यक्ति ने उनकी कलाई पकड़ ली –"अब तुम नहीं जा सकते। तुमने ही मुझे फाँसा, मैं तो अपने रास्ते जा रहा था।"

ज्योतिषीजी भय से थर्रा उठे और उनकी आवाज लड़खड़ाने लगी। "आज मुझे जाने दीजिये। मैं कल आपका हाथ देख दूँगा।" दूसरे व्यक्ति ने अपनी हथेली सामने फैलाते हुए कहा–"बाजी, बाजी है। शुरू करो।" ज्योतिषीजी ने सूखते गले से कहा–"एक औरत ..."

"चुप रहो," गाहक बोला–"मैं वह सब नहीं जानना चाहता। मैं अपनी तलाश में सफल हो पाऊँगा या नहीं। सिर्फ इसका जवाब दो और छुट्टी पाओ। नहीं तो मैं तुम्हारे सारे पैसे छीन लूँगा।"

ज्योतिषीजी ने कुछ मंत्र पढ़े और बोले–"अच्छी बात है। मैं बताता हूँ। लेकिन क्या संतोषजनक उत्तर देने पर आप मुझे एक रुपया दोगे? नहीं तो मैं एक शब्द नहीं बोलूँगा और आपको जो करना हो, कर लेना।" काफी बकझक के बाद दूसरा व्यक्ति मान गया। ज्योतिषीजी ने कहा,–"तुम्हें मरा जानकर छोड़ दिया गया था। क्या मैं ठीक कहता हूँ?"

"ओह, आगे कहो।"

"तुम्हें कभी छुरा भोंक दिया गया था?"

"बहुत अच्छे!" उस व्यक्ति ने अपना सीना खोलकर दाग दिखलाया–"हाँ, आगे?

"और फिर तुम्हें मरा हुआ देखकर खेत के पासवाले कुएँ में फेंक दिया गया था।"

"अगर एक राही ने कुएँ में न झाँका होता, तो मैं मर ही गया था।" गाहक जोश में आकर बोला –"मैं उसे कब पकड़ पाऊँगा?" उसने मुट्ठी बाँधते हुए कहा–"दूसरे लोक में," ज्योतिषीजी ने उत्तर दिया – "दूर के एक शहर में वह चार महीने पहले मर गया। तुम उसे कभी नहीं पा सकते।" यह सुनकर दूसरे व्यक्ति ने

दिवाली

नाहक पैसे भी फुँकें,
फूटें कान बच्चों के
यदि इसे कहोगी पर्व
दुनिया क्या न हँसेगी!
पाप-तम को बुझाने
करुणा का घृत डाल
दीपक जगाओ बेटी
दीवाली औ' कुछ नहीं।

तमिळ कविता —सुरभि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
सफेद पोपलीन
कोल्ड ड्रिंक

Arvind

QUALITY FABRICS

मर्सराइज्ड सेनफोराइज्ड
रंगीन पोपलीन
ब्लू बर्ड

मर्सराइज्ड
लान
एवरेस्ट
५५३१ (रजिस्टर्ड)

बुट्टास

'SANFORIZED'
REGISTERED TRADE MARK
of CLUETT PEABODY & CO. INC., U.S.A.

अरविंद मिल्स लि.
अहमदाबाद-२

REGISTERED USER OF THE TRADE MARK 'SANFORIZED'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंडी साँस ली ।

ज्योतिषीजी ने कहा–"गुरु नानक"...

"अरे! तुम मेरा नाम भी जान गये ?" गाहक ने ताज्जुब से कहा ।

"एक क्या मैं सारी बातें जानता हूँ गुरु नानक । जो कहता हूँ, उसे सुनो । तुम्हारा गाँव इस शहर से दो दिन के रास्ते पर है । अगली गाड़ी पकड़ो और वापस चले जाओ । अगर घर से बाहर रहे, तो तुम्हारी जिंदगी पर फिर खतरा आ सकता है।" और ज्योतिषीजी ने एक चुटकी भभूत उठाकर उसे दी–"लो, अपने मस्तक पर मलकर चले जाओ । दक्षिण की तरफ कभी मत जाना और तुम सौ वर्ष जिंदा रहोगे ।"

"भला मैं क्यों घर छोड़कर जाने लगा," उस व्यक्ति ने गम्भीरतापूर्वक कहा– "मैं तो महज उसकी खोज में इधर-उधर घूम रहा था कि, पाऊँ तो उसका गला घोंट दूँ ।" और फिर उसने बड़ी उदासी से अपना सिर हिलाया–"पर वह मेरे हाथों से निकल गया । खैर, उसे उसकी करनी के माफिक ही मौत मिली ।"

ज्योतिषीजी ने कहा–"हाँ, वह तो एक नारी से कुचलकर मर गया ।" गाहक को यह सुनकर संतोष हुआ ।

ज्योतिषीजी ने जब अपने साज-सामान अपने झोले में रखे, तो जगह एकदम खाली हो चुकी थी । हरी रोशनी बुझ चुकी थी । चारों ओर अँधेरा था । गाहक ज्योतिषीजी को ढेर-सारे पैसे देकर जा चुका था ।

ज्योतिषीजी आधी रात होते-होते घर पहुँचे । पत्नी उनका इंतजार कर रही थी और उसने जवाब-तलब किया । सारे पैसे उसे देते हुए उन्होंने कहा–"गिन ले, एक ही गाहक ने ये सारे पैसे दिये हैं ।"

"साढ़े बारह आने" घरवाली ने गिनते हुए कहा । वह फूल उठी–"मैं कल कुछ शक्कर और नारियल खरीदूँगी । बच्चा कई दिन से मिठाई माँग रहा है । उसके लिए बढ़िया चीजें तैयार करूँगी ।"

"उस सूअर ने तो मुझे ठग लिया । एक रुपया देने को कहा था।" ज्योतिषीजी बोले ।

पत्नी ने पति की ओर देखा–"तुम कुछ परेशान से मालूम पड़ते हो । क्या बात है ?"

"कुछ नहीं ।"

खाने के बाद पुआल पर बैठकर उन्होंने पत्नी से कहा–"तू जानती है, आज मेरे सीने पर से एक बहुत बड़ा बोझ हट गया । मैं इतने वर्षों से सोचता था कि, मेरे हाथ एक आदमी के खून से रंगे हुए हैं । इसीलिए मैं घर से भागा और यहाँ आकर बस गया । फिर तुम से शादी कर ली । लेकिन वह आदमी मरा नहीं है, जिंदा है ।"

पत्नी ने भयातुर हो पूछा–"जिसने तुम्हें मारा था ?"

"हाँ, जब मैं गाँव का एक उजड्ड जवान था, हमने शराब पी थी, जुआ खेला था और आपस में एक दिन बुरी तरह मार-पीट की थी – खैर, छोड़ो उन बातों को । अब उसके बारे में क्या सोचना ! सोने का वक्त हो गया ।" उन्होंने जँभाई लेते हुए कहा और पुआल पर पसर गये । – रूपांतर : अनंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक्ष

दीपावली का दूसरा नाम यक्षरात्रि है। पिशाच, भूत, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, महोरग और गंधर्व—ये आठ वाणव्यंतर देवता माने जाते हैं। वाणव्यंतर वे देवता होते हैं, जो वनों के मध्य में रहते हैं। जैन शास्त्रों में इन्हें श्याम वर्ण का बताया गया है। उनका ध्वज-चिह्न वटवृक्ष होता है। यक्षों के रूप-रंग का वर्णन करते हुए जिनभद्रगणिक्षमा श्रमण ने लिखा है कि, यक्ष गम्भीर होते हैं, देखने में प्रिय होते हैं, मानोन्मानप्रमाणोपपन्न होते हैं, उनके हाथ, पाँव, तल, नख, तालु और जिह्वा रक्तवर्ण के होते हैं, वे किरीट धारण करते हैं तथा नाना प्रकार के रत्नमय आभूषणों से युक्त होते हैं।

यक्षों की पूजा भारत में अति प्राचीन काल से चली आ रही है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मणों और उपनिषदों में भी यज्ञों का उल्लेख मिलता है। हील बत ने इस शब्द के अर्थ के विकास पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, पहले यह शब्द चमत्कारी और अदृश्य आध्यात्मिक शत्रु के अर्थ में प्रयुक्त होता था; फिर उसका अर्थ 'श्रद्धास्पद अमानवीय देव' हुआ और अंत में वह प्रचलित अर्थ में प्रयुक्त होने लगा।

यक्ष शब्द का वेदों में जिस रूप में प्रयोग हुआ है, इस पर डा० आनंद कुमारस्वामी ने अपने ग्रंथ 'द यक्ष' में किया है। उनका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्व

कथन है कि, वेदों में जहाँ इसका प्रयोग भय और अविश्वासयुक्त के रूप में हुआ है, वहीं श्रद्धास्पद रूप में भी है। इससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि, यक्ष अनार्यों के देवता थे। इसी कारण ऋग्वेद में शंका तथा अविश्वास के साथ उनका नाम लिया गया है; परंतु अथर्ववेद में और उपनिषदों में यक्षों का नाम अति आदरपूर्वक आता है।

अथर्ववेद में वरुण और प्रजापति को महान् यक्ष के रूप में वर्णित किया गया है और पौराणिक साहित्य में कुबेर को यक्षों का राजा बताया गया है। यह कुबेर धन-धान्य का अधिपति है। हिन्दू पुराण तथा जैन-शास्त्रों के अनुसार कुबेर का आवास कैलासस्थित अलकापुरी है। वहाँ उसका विशाल प्रासाद तैरता रहता है। गुह्यक उसका संचालन करते हैं।

बौद्ध वाङ्मय में भी यक्षों के दोनों रूप मिलते हैं। कुछ ग्रंथों में वे दयालु देवता के रूप में वर्णित हैं; परंतु जातकों में उनका भयंकर रूप मात्र मिलता हैं। उनकी पहचान पलक न गिरने, परछाईं न पड़ने, अदृश्यता, अति विशाल शरीर तथा हाथी के से दाँतों से की जाती थी। कुछ बौद्ध-ग्रंथों में कहा गया है कि, वे मनुष्य तथा पशुओं के मांस से अपना पेट भरते हैं।

जैन-साहित्य में यक्षों की भयंकरता की कितनी ही कथाएँ आती हैं। कथा है कि,

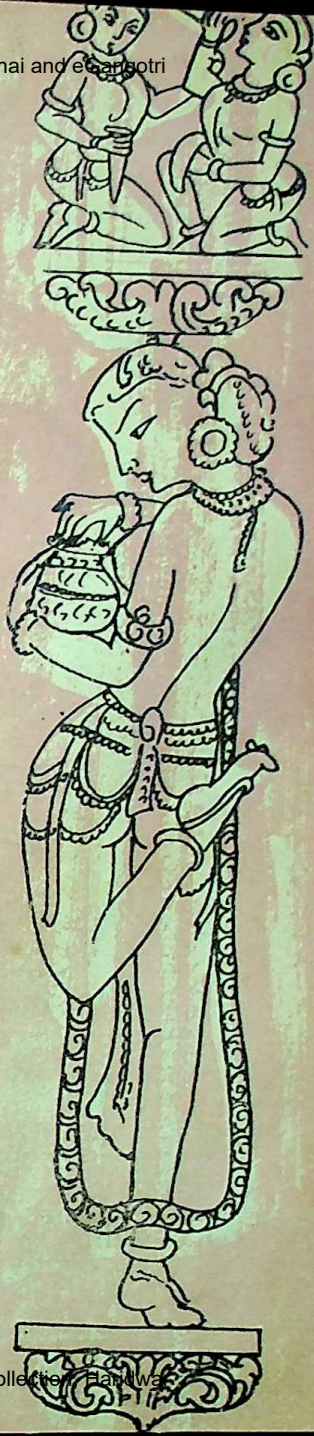

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कपड़ों की धुलाई को लीजिए तो हमारा मुन्ना सात बेटों के बराबर है—इतने कपड़े मैले करता है वह! लेकिन सनलाइट के कारण मुझे कपड़े धोना बिल्कुल आसान हो गया है।

'सनलाइट जैसे शुद्ध और भरपूर झागवाले साबुन ही से कपड़ों की इतनी अच्छी धुलाई इतने आराम से हो सकती है! फिर इसमें आश्चर्य ही क्या अगर मैं अपनी सारी धुलाई सनलाइट से करती हूँ।'

नईदिल्लीकीश्रीमती कमला वाधवानी कहती हैं: घरभर की धुलाई के लिए सनलाइट के समान दूसरा साबुन नहीं।

सनलाइट

आप के कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए

हिन्दुस्तान लीवर ने बनाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्द्धमान नामक नगर को एक यक्ष ने महा-
मारी फैलाकर इस तरह नष्ट कर डाला कि,
वहाँ हड्डियों का ढेर लग गया और वह
अस्थिकग्राम कहा जाने लगा । यह भी
कहा है कि, एक यक्ष मूर्ति थी। वार्षिक
उत्सव के दिन जो रंगता था, उसे वह यक्ष
मार डालता था ।

शूलपाणि नामक यक्ष के मंदिर में जो
रात को रहता, उसे वह यक्ष मार डालता
था। इसी प्रकार बौद्ध-ग्रंथों में मरुवदेव
यक्ष का उल्लेख है । जो उस यक्ष के इलाके
की हद में पहुँचता, उसे वह पूरा-का-पूरा
निगल जाता । एक बार वाराणसी के राजा
उसके चंगुल में जा फँसे । राजा ने उससे
विनती की कि, प्रतिदिन एक थाल चावल
खाया जायेगा, तब उनकी जान बची ।
तब से वह यक्ष वाराणसी नगरी के बाहर
रहकर रहने लगा ।

यक्षों के हितकारी रूप की भी चर्चा
धर्म-शास्त्रों में मिलती है । पुत्र के लिए
यक्षोपासना की कितनी ही कथाएँ पढ़ने को
मिलती हैं । विपाक-सूत्र में कथा आती है
कि गंगादत्ता नामक नारी निष्पुत्र थी । वह
फल, वस्त्र, माला, आभरण आदि लेकर
माणिभद्र नामक यक्ष की पूजा करने
लगी । उसने मोरपंख से मूर्ति को साफ
करके धोया और फिर कपड़े से सुखाया ।
इसके बाद पुष्प आदि से पूजा करके उसने
पुत्र माँगी ।

ऐसा ही आख्यान ज्ञाताधर्मकथा में आता
है । एक नारी प्रत्येक चतुर्दशी, अष्टमी,
अमावस्या तथा पूर्णिमा को यक्ष आदि
विभिन्न देवों की पूजा करती । उसके फल-
स्वरूप उसे जब पुत्र प्राप्ति हुई, तो उसने
उसका नाम देवदित्य रखा ।

रोग-निवारण के सम्बंध में यक्षों का
उल्लेख हमें मिलता है । समिल्ल नामक
नगर में एक बार माता की बीमारी फैली,
तो लोगों ने नगर के बाहर स्थित मणिभद्र
यक्ष की उपासना की । उसके फलस्वरूप
जब रोग शांत हो गया, तो लोग अष्टमी के
दिन उसके मंदिर को गोबर से लीपते थे ।

एक और कथा है कि, एक आदमी
समुद्र पार किसी दुष्ट नारी के चक्कर में
पड़ गया. तो वहाँ
का यक्ष घोड़े का रूप
धारण करके आकाश
मार्ग से उड़कर उसे
उसके ग्राम तक
पहुँचा गया ।

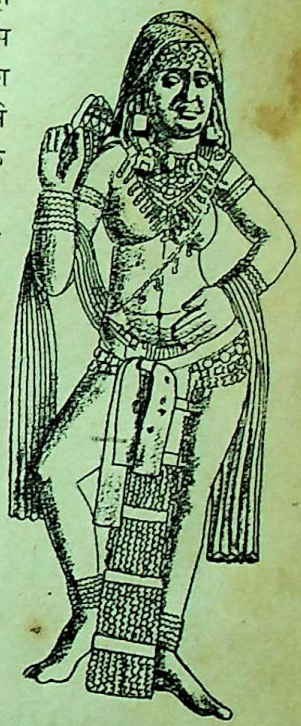

बौद्ध ग्रंथों में आता
है कि, वैशाली नगर
का द्वारपाल मरकर
यक्ष हुआ । यक्ष होने
के बाद उसने नगर-
निवासियों को परा-
मर्श दिया कि, वे
एक यक्षस्थान बना
दें और उसकी मूर्ति
के गले में घंटी बाँध
दें । जब कोई शत्रु
नगर में घुस आता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवाली व नूतन वर्षाभिनन्दन

★

लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

इतवारी

नागपुर

★

सूत के थोक व्यापारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह यक्ष घंटी बजाने लगता। फल-स्वरूप या तो शत्रु को भागना पड़ता या वह पकड़ लिया जाता। घंटिका यक्ष की ऐसी ही कथा दिव्यावदान में आती है। राजगृह तथा चम्पा की सीमा का कर वसूल करने-वाला मरकर यक्ष हुआ, तो उसने अपने पुत्र को वहाँ यक्षस्थान बनाकर मूर्ति के गले में घंटी बजाने को कहा। जब कोई कर बचाकर निकलता, तो वह यक्ष घंटी बजाने लगता। एक घंटिका यक्ष की कथा जैन-शास्त्रों में भी आती है। वह प्रश्नों का उत्तर माध्यम के कान में कह दिया करता था। जैन-ग्रंथों में यक्ष ग्रह का भी उल्लेख आता है। यक्षग्रह से पीड़ित लोगों का इलाज मंत्र-विद्या के जानकर किया करते थे। साधु और साध्वियाँ भी यक्षग्रह के शिकार हुआ करते थे। लोग यक्षग्रह के भय से रोगी को नजर से बचाने के लिए एकदम ढँककर रखा करते थे।

यक्षग्रह का उल्लेख वैद्यक-ग्रंथों में भी मिलता है। सुश्रुत-संहिता में आता है कि, यक्षग्रह-पीड़ित व्यक्ति की आँखें लाल होती हैं, उसमें बड़ी ताकत आ जाती है और वे भड़कीले लाल रंग के हलके कपड़े पहनना पसंद करते हैं।

चरक-संहिता में लिखा है कि, यक्षोन्माद से पीड़ित व्यक्ति को नींद सताये रहती है। वे कभी रोते हैं और कभी हँसते हैं। उनकी आँखें लाल होती हैं। नृत्य, संगीत और कथा-कहानी में उन्हें विशेष रूचि होती है। अच्छा भोजन, पेय, माल, गंध आदि उन्हें प्रिय होता है।

यक्ष-पूजन को समाप्त करने में वैदिक और बौद्ध दोनों ही धर्मों को बड़ा परिश्रम करना पड़ा। काशी में शिव के साथ ही मणिभद्र यक्ष के पुत्र हरि-केश यक्ष की भी पूजा होती थी। इससे स्पष्ट है कि, शैवों और यक्ष-भक्तों में कभी बड़ी प्रतिस्पर्धा रही होगी और यक्ष-पूजन की समाप्ति पर ही वह प्रतिस्पर्धा समाप्त हुई होगी। बुद्ध द्वारा ३,५०० यक्षों के शांत किये जाने का उल्लेख है।

यक्षिणियों के सम्बंध में कहा जाता है कि, वे अपने रूप, गंध और संगीत से पुरुषों को आकृष्ट किया करती हैं।

साँची में श्रीलक्ष्मी दो ऐसी दासियों के साथ दिखलायी गयीं है, जो भोजन ले जा रही हैं। ये दोनों दासियाँ वस्तुतः यक्षिणियाँ हैं। मथुरा, अमरावती आदि में भी इस प्रकार की यक्षिणियों की मूर्तियाँ मिलती हैं।

— ज्ञानचंद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मशीनी आदमी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैनिक जीवन की यांत्रिकता पर मार्मिक कटाक्ष।

चार्ली चैपलिन

उस छोटी-सी स्पेनिश जेल के आँगन में केवल उषा स्पंदित हो रही थी—उषा जो मौत की अग्रदूत बनकर आयी थी। वह तरुण देशभक्त, जिसे गोली से उड़ाया जानेवाला था, फौजी दस्ते के सामने खड़ा था। सब तैयारी हो चुकी थी। अफसरों की छोटी-सी टोली प्राणदंड के निरीक्षण के लिए तनिक हटकर खड़ी हो गयी थी। दर्द-भरा सन्नाटा छाया हुआ था।

एक-एक विद्रोही को उम्मीद थी कि, बड़े अफसर के यहाँ से प्राणदंड स्थगित करने का आदेश आ जायेगा। कैदी उनका विरोधी था; लेकिन वह सारे स्पेन में बहुत लोकप्रिय रहा था। बड़ा प्रतिभाशाली हास्य-लेखक था वह और अपने लेखों से स्पेनवासियों को आनंदित करता आया था।

गोली मारनेवाले दस्ते के कमांडर की उससे अच्छी जान-पहचान रही थी। गृह-युद्ध छिड़ने के पहले वे दोनों अच्छे मित्र थे। मैड्रिड विश्वविद्यालय से दोनों साथ ही ग्रैजुएट हुए थे। राजा और चर्च की सत्ता को उखाड़ने के लिए दोनों कंधे-से-कंधा भिड़ाकर जूझे थे। साथ बैठकर दोनों ने बोतलें उँड़ेली थी; कहवा-घरों में एक ही मेज पर बैठकर पूरी रातें गुजार दी थीं; साथ हँसे थे, गप-शप की थी, दार्शनिक विषयों पर घंटों आपस में बहस की थी। शासन के प्रश्न को लेकर उनमें जब-तब झड़प भी हो जाती थी। तब तो वे मतभेद दोस्ताना मतभेद थे; बाद में उन्हींने स्पेन को अशांति और कलह से भर दिया। अब कमांडर का वह दोस्त गोलीमार दस्ते के सामने खड़ा था।

परंतु अतीत को याद करने से क्या लाभ था? सोचने-समझने से क्या लाभ था? गृह-युद्ध छिड़ने के बाद सोचने-समझने का काम ही क्या रह गया था?...ये सब विचार कमांडर के मन में उबल उठे।

नहीं, अब अतीत को पोंछ डालना होगा। अब सिर्फ भविष्य का महत्व है ...भविष्य?...हाँ भविष्य, जिसमें उसके बहुत-से मित्र दुनिया से विदा ले चुके होंगे।

× × ×

युद्ध छिड़ने के बाद आज सवेरे ही पहली बार उन दोनों का सामना हुआ था। वे आपस में कुछ नहीं बोले। जेल के आँगन में आते-आते एक-दूसरे को देख मुस्करा भर दिये।

अभागिन उषा जेल की दीवारों को लाल और सफेद किरणों से लीप रही थी। हर चीज निःस्तब्ध थी, शांत थी। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शांति की अपनी ही लय थी, जो आँगन की नीरवता में घुलती जा रही थी—दिल की धड़कनों की-सी नीरव सस्पंद लय। उस शांति में अचानक कमांडर की आवाज दीवारों से टकराकर गूँज उठी—'एटेन्शन !'

आदेश मिलना था कि, सिपाहियों के हाथ बंदूकों पर अकड़ गये और शरीर तन गये। उस सामूहिक हरकत के बाद कुछ क्षणों का विराम, जिसमें दूसरा आदेश दिया जाना था।

लेकिन उसी बीच ऐसा कुछ हुआ कि, सारी लय टूट गयी। कैदी खाँस पड़ा, खँखार-कर गला साफ करने लगा, जिसने घटनाओं का सिलसिला तोड़ दिया।

कमांडर कैदी की ओर मुड़ा। वह इस प्रतीक्षा में था कि, कैदी कुछ बोले। लेकिन कैदी ने एक भी शब्द मुँह से नहीं निकाला। सिपाहियों की ओर मुँह फेरकर कमांडर दूसरा आदेश देने को उद्यत हुआ। परंतु तभी उसका मन नफरत से जकड़ गया; उसकी स्मृति विलुप्त हो गयी; दिमाग सूनी कोठरी की तरह रीता हो गया। वह गूंगा-सा, बेचैन खड़ा रहा सैनिकों के समक्ष। सारा आँगन उसके लिए अस्तित्वहीन था। उसे तो एक ही चीज दीख रही थी—दीवार से पीठ लगाये खड़ा कैदी और उसके सामने छः सिपाही...और कुछ नहीं। अजीब बौड़मपन छाया था उन सैनिकों के चेहरों पर, जैसे छः घड़ियाँ चलते-चलते बंद हो गयी हों। कोई न हिला, न डुला। सब कुछ अर्थहीन था, बेमानी था। कोई अनहोनी बात हो रही थी। कोई दुःस्वप्न था; और कमांडर को उस दुःस्वप्न से छुटकारा पाना था। पर धीरे-धीरे उसकी याददाश्त वापस लौटी—ऐं! मैं कब से यहाँ खड़ा हूँ ?...यह क्या हो रहा है ?...हाँ मैंने एक आदेश दिया था...अगला आदेश क्या देना है ?

'एटेन्शन' के बाद आता है 'शोल्डर आर्म्स', फिर 'प्रेजेंट' और अंत में 'फायर'—उसके अवचेतन मन को इन सबका खयाल जरूर था। लेकिन ये शब्द उसे बहुत दूर और अस्पष्ट से जान पड़ते थे।

इसी पसोपेश में वह कुछ बुदबुदाया—अस्पष्ट और असम्बद्ध। लेकिन उसे यह देखकर तसल्ली हुई कि, सिपाहियों ने बंदूकें कंधे की सीध में कर ली थीं। उनके अंग-चालन की लय से उसके मस्तिष्क की लय फिर चल पड़ी, वह फिर चिल्लाया। और सिपाहियों ने बंदूकें तान लीं।

फिर कुछ क्षण का विराम...जेल के बरामदे में किसी के तेजी से चले आने की आहट। कमांडर तत्क्षण भाँप गया—प्राणदंड स्थगित करने का आदेश आ पहुँचा है। वह फिर सचेत हो गया।

"ठहरो" तेजी और उतावली से वह चिल्ला उठा।

छः सिपाहियों के हाथों में बंदूकें थीं। छः सिपाहियों को लय में काम करना सिखाया गया था। छः सैनिकों ने सुना—"ठहरो"; और गोली दाग दी। *

रूपांतरकार : नरेंद्र नायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली व नववर्ष की
मंगल कामनाओं
के साथ

★

जुसुफ एन्ड कम्पनी

मसकता बाजार
नागपुर

सूत के थोक व्यापारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध और जूते भी

·स० का० वि०

आज फिर युद्ध के बादल उमड़ रहे हैं। युद्धों की विभीषिकाएँ तो सबको याद हैं; मगर उनकी दिलचस्प बातें भी सुन लीजिये; जिससे आपके डरे-सहमे दिल में कभी राहत की गुदगुदी भी महसूस होती रहे।

पहले सेक्स और जूते की एक बात सुनिये। यों दोनों में कुछ सम्बंध भी है; मगर यहाँ मैं सम्बंध की चर्चा नहीं करूँगा।

मिडिल सेक्स जूते : पिछले महायुद्ध के समय हिन्दुस्तान की एक गोरी पलटन—मिडिल सेक्स रेजिमेंट—ने कानपुर की एक शू फैक्ट्री (जूता बनानेवाली फर्म) को मिडिल सेक्स के लिए एक हजार जूते बनाने का आर्डर दिया। आर्डर अंग्रेजी में था। फर्म के अपढ़ मालिक ने आर्डर की कापी एक अंग्रेजी पढ़े बाबू को उसका मतलब समझाने को दी। बाबू उस आर्डर को बहुत देर तक पढ़ता रहा, मगर कुछ बोला नहीं। एक घंटा सिर धुनने के बाद बाबू खुद मालिक के पास आकर बोला—"हुजूर! मुझे तो कुछ समझ में नहीं आया। मेल सेक्स मैं जानता हूँ, आदमी को कहते हैं; फीमेल सेक्स का अर्थ है औरत, मगर यह मिडिल सेक्स कौन-सी बला है, मैंने कभी सुना नहीं।" फर्म के मालिक ने यह लिखकर वह आर्डर वापस कर दिया कि, 'मिडिल सेक्स' के जूते बनाने का काम हमसे न हो सकेगा। हमें उसकी जानकारी नहीं है।

सिंगल जूते : फौजी जूतों के सम्बंध में और भी कई प्रसंग सुने हैं। उनमें एक तो बहुत ही महत्वपूर्ण है। अर्मीनियन वार में तुर्की फौज रूसी सरहद के काफी अंदर सेबस्टापोल तक चली गयी थी। सर्दी का मौसम आ गया। सब ओर से बर्फ पड़ने लगी। बर्फीले मैदानों में पहुँचकर तुर्की फौज के कमांडर ने तुर्की से दस हजार जूते जोड़े मँगवाये। जूतों के व्यापारी

पिछले दो महायुद्धों के कई खंडहर आज भी मिल जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मिडिल सेक्स कौन-सी बला है,
मैंने कभी सुना नहीं ।"

ने दस हजार जोड़े भेजने के बजाय एक ही पैर के बीस हजार सिंगल जोड़े जूते भेज दिये । जोड़े न होने की वजह से सारे जूते बेकार गये । तुर्की की फौज को नंगे पैर बर्फ पर चलना पड़ा । फौजियों के पैर गल गये । तुर्की युद्ध में हार गया, केवल जूतों की वजह से ।

० ० ०

सिंगल पालिश : सिंगल जूते से इन्सान के सिंगल पैर यानी दो पाये होने के बजाय एक पाये होने के लाभ की भी एक बात याद आ गयी । १८१२ में लगभग १५० बरस पहले नेपोलियन की सेना के एक जनरल का पैर रूसी युद्ध के दौर में बहुत जख्मी हो गया था । डाक्टर ने उसे काट दिया । घायल जनरल को धीरज बँधाते हुए नेपोलियन ने उसे कहा—"यह तो चिंता की नहीं, खुशकिस्मती की बात है । अब तुम्हें आगे से केवल एक जूते पर ही पालिश करनी पड़ेगी ।"

अतिरिक्त जूते : फौज में जूतों का बड़ा महत्व है । यह बात फौज का हर आदमी जानता है । फ्रांस के एक मशहूर मार्शल सेक्से से जब यह पूछा गया कि, फौज में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण क्या वस्तु है, तो उसने कहा था—"फौजी पहनावे में जूतों की अहमियत सबसे ज्यादा है । क्योंकि युद्ध पैरों से चलकर लड़ा जाता है" डयूक आफ विलिंगटन से एक बार पूछा गया—"फौज की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु क्या है ?" उन्होंने उत्तर दिया कि, अच्छे मजबूत जूते । फिर पूछा गया—"दूसरी वस्तु कौन-सी है ?" उत्तर मिला —"अच्छे मजबूत जूतों की अतिरिक्त जोड़ी ।"

दिवाली की मिठाई : दिवाली के अवसर पर दीवाली की मिठाई के बँटवारे की बात भी याद आ गयी । फौजी दस्तों के आपसी झगड़ों की बाबत मेरे एक फौजी दोस्त ने विचित्र घटना सुनायी : पंजाब की सिख फौज की २४ वीं और २५ वीं टुकड़ी में झगड़ा हो गया । कारण था दिवाली के त्योहार की मिठाई का बँटवारा। नौबत यहाँ तक पहुँची कि, दोनों पक्षों के जवान बंदूकें लेकर मैदान में आ डटे । आखिर कमांडर-इन-चीफ ने मध्यस्थता की । नतीजा यह हुआ कि, एक दस्ते को जम्मू भेजना पड़ा, दूसरे को आसाम । अब भी यह खयाल रखा जाता है कि, दोनों एक मुकाम पर न आ सकें । दो पंजाबी दस्तों को एक साथ रखना कभी खतरे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाली नहीं।

जुगल बंदी : पंजाब के फौजी बहादुर तो होते हैं; मगर बड़े खुशमिजाज भी होते हैं। मैदान में लड़ते-लड़ते भी वे मनोरंजन के अवसर निकाल ही लेते हैं। बात पंजाब के दो फौजी दस्तों की है। एक बार पंजाब इन्फेंट्री के दो दस्तों में गालियों की लड़ाई बढ़ते-बढ़ते गोलियों तक पहुँच गयी। दोनों के फौजी जवान बीच में खंदकें खोदकर गोलंदाजी करने लगे। इसी बीच एक ओर के फौजी ने 'सोनी महिवाल' (पंजाब का मशहूर लोकगीत) के गीत का एक टप्पा गाया। दूसरी ओर एक रंगीले जवान ने उसका जवाबी टप्पा गा दिया। फिर तो दोनों ओर से गोलियाँ चलने के स्थान पर जवाबी गीतों की चाँदमारी होने लगी। यहाँ तक कि, थोड़ी देर में दोनों ओर के फौजी जवानों ने खंदकों से बाहर आकर भांगड़ा नाच की जुगलबंदी शुरू कर दी। मगर नाच समाप्त होते ही दोनों पक्ष के फौजी फिर खंदकों में लौट गये और युद्ध प्रारम्भ हो गया।

गणना : फौज में गणना का महत्व जनगणना से भी ज्यादा है। १८४९ में फ्रांस और आस्ट्रिया की सेनाओं का युद्ध हो रहा था। मार्शल बगौड फ्रांस के सैनिक दस्ते के अफसर थे। एक दिन एक स्टाफ अफसर ने समाचार दिया—'शत्रु के सैनिकों का एक भारी दस्ता बढ़ा चला आ रहा है।" सवाल हुआ कितनों का? "कहिये तो गणना के लिए जासूस—पर्यवेक्षक भेजूँ।"

"अब तुम्हें सिर्फ एक जूते पर ही पालिश करनी पड़ेगी।"

सैनिक ने पूछा मार्शल ने जवाब दिया—"नहीं, गिनती बाद में उस समय हो जायेगी, जब हम शत्रुगण का खात्मा कर चुकेंगे।"

० ० ०

आप ऊँट हैं : कैप्टन स.....बड़े तुंदमिजाज अफसर थे। मिस्र के रणक्षेत्र में उनका फौजी दस्ता शिविर डाले था। एक रात उन्होंने अपने संतरी की परीक्षा का विचार किया। संतरी को हिदायत थी कि, वह हर आगंतुक का रास्ता रोके और काफी तहकीकात के बाद शिविर के अंदर दाखिल होने दे। संतरी ने जब अफसर की रोक-टोक का कोई यत्न नहीं किया, तो अफसर संतरी की असावधानी पर बहुत लाल-पीला हुआ। उसने पूछा—"तुमने मेरा रास्ता क्यों नहीं रोका?" संतरी का जवाब था—"हुजूर, मैंने समझा आप आ रहे थे, तो ऊँट आ रहा है।" *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीला दाँत

कृष्णचंद्र

एक दिन मजीद अरदली बीमार पड़ गया, तो उसका बेटा कासम उसकी छुट्टी की अर्जी लेकर मेरे पिताजी के पास अस्पताल में आया । जब मेरे पिताजी ने मजीद अरदली की अर्जी मंजूर कर दी, तो कासम मुझे और तारा को नीचे बाग में खेलते देखकर हमारे पास आ गया ।

कासम उम्र में मुझ से कोई तीन साल बड़ा था। ताकत में दुगना था और कद में भी ऊँचा था । उसके बाल भूरे और सख्त थे । चेहरे का रंग पालिश किये हुए तांबे की तरह था । उसने गाढ़े के पाजामे के ऊपर गाढ़े की कमीज पहन रखी थी और उसके ऊपर भूरे पट्टू की सदरी पहन रखी थी, जो ऐसी मालूम होती थी, मानो उसके सिर के घने भूरे बालों से तैयार की गयी है।

लेकिन कासम को अपने बालों या अपनी ताकत पर इतना गर्व न था, जितना अपने नीले दाँत पर । कासम के सामने के दाँतों में एक दाँत नीला था और वह सारे इलाके में ऐसा एक ही लड़का था, जिसका एक नीला दाँत था ।

इस नीले दाँत की भी एक कहानी है । कासम का यह दाँत शुरू से नीला न था । बल्कि दूसरे दाँतों की तरह सफेद था । इस दाँत में दूसरे दाँतों से बढ़िया और अजीब बात न थी । लेकिन एक दिन कासम की अपने दो भाइयों से लड़ाई हो गयी, जो अलग-अलग तो उससे तगड़े नहीं थे; पर दोनों मिलकर उससे जरूर तगड़े थे। इसलिए बड़ी जोर की लड़ाई हुई। लातों से, घूसों से, मुक्कों से और अंत में पत्थरों से। इस लड़ाई के दौरान में कासम के मुँह पर एक पत्थर पड़ा । खुशकिस्मती से उस समय कासम का मुँह खुला था, वरना उसके दोनों होठ कट जाते । पत्थर की मार खाते ही कासम को ऐसा महसूस हुआ, जैसे उसका सारा जबड़ा हिल गया और उसके मसूड़ों से लहू बहने लगा । पानी से कुल्ले करके वह सूजे हुए जबड़े को लेकर अपने दोस्त दित्ते चरवाहे के घर गया और उसे अपने दाँत दिखाये । दित्ते ने उसे ध्यान से देखा और कहा—"बस सामने के सिर्फ तीन दाँत हिलते हैं। अगर तू डागदार (डाक्टर) के पास जायेगा, तो वह तेरे तीनों दाँत निकाल डालेगा; पर अगर तू मेरा लेप करेगा, तो तेरे तीनों दाँत रह जायेंगे और हिलने से बंद हो जायेंगे ।"

कासम बोला—"डागदार तो अलग रहा, इस वक्त अगर मैं इस हालत में घर गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मेरे अब्बा ही मुझे मार-मारकर मेरे ये तीनों दाँत निकाल देंगे। इसीलिए अच्छा यही है कि, अपना लेप मुझे दे दे।"

सो दित्ते चरवाहे ने अपने दोस्त कासम को घर में बैठाया और लेप तैयार करके उसे कासम के मुँह के अंदर दाँतों और मसूड़ों पर लगा दिया।

दूसरे दिन कासम के जबड़े की सूजन बिल्कुल उतर गयी। उसके मसूड़े अच्छी हालत में थे और वे तीनों दाँत अब हिलते नहीं थे। पर सामने के तीनों में से बीच का दाँत बिल्कुल नीला हो गया था। पता नहीं, यह उस लेप का असर था या पत्थर की मार का। पर यह एक सचाई है कि, इस घटना के पश्चात् कासम का यह दाँत नीला ही रहा।

अब कासम बड़े गर्व और अहंकार से अपना नीला दाँत दिखाते हुए हमारे पास आया। तारा उसका नीला दाँत देखकर बेहद प्रभावित हुई और प्रशंसा-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखकर बोली—"हाय, इसका यह दाँत कितना सुंदर है।"

मैंने जलकर कहा—" मेरे चाचा के लड़के के मुँह में तो तीन अलग-अलग रंग के दाँत हैं। एक लाल है, एक हरा है, एक नीला है।"

"वह लड़का कहाँ है?" कासम ने पूछा।

"वह लड़का पंजाब में है," मैंने झूठ बोलते हुए कहा।

"पंजाब में। हा हा हा ..." कासम जोर-जोर से हँसकर अपने नीले दाँत का और भी प्रदर्शन करते हुए बोला—"पंजाब में है, पर यहाँ तो नहीं है।"

इस पर तारा को और खुश करने के लिए कासम ने अपने भूरे पट्टू की सदरी की जेब में से लकड़ी का एक बाजा निकाला और उसे दोनों हथेलियों में दबाकर बजाने लगा। यह बड़ा अजीब-सा बाजा था। लकड़ी का था और उसने स्वयं बनाया था। और उसमें से ऐसी आवाजें निकलती थीं, जैसे तीन अलग-अलग सुरों की बाँसुरियाँ एक साथ बज रही हों।

"यह बाजा मैं लूँगी।" तारा खुशी से चिल्लायी।

कासम ने बाजे को जेब में रखते हुए कहा—"मैं तुम्हें नया बना दूँगा। यह अब पुराना हो गया है। और मेरा जूठा है।"

इसके बाद कासम ने अपने कंधे से अपने पालतू तोते को उतारा और उसे अँगूठे पर नचाते हुए बोला—"अल्लाह, अल्लाह।"

तोता भी बोला—"अल्लाह, अल्लाह।"

इसके बाद तो तारा ने अपना मुँह बिल्कुल मेरी ओर से फेर लिया और कासम की ओर प्रशंसा-भरी दृष्टि से देखती हुई बोली—"मैं तो कासम से शादी करूँगी।" आठ साल की तारा बिल्कुल एक स्त्री की तरह बोली।

"कासम तो मुसलमान है," मैंने जलकर कहा।

"मुसलमान है तो क्या हुआ?" तारा ने चुटिया झुलाते हुए और अपनी अँगुलियाँ नचाते हुए बड़े गर्व से कहा—" उसके पास एक नीला दाँत है, एक लकड़ी का बाजा है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाप्लिन्स

शर्टिंग्स

मर्सेराइज्ड धोतियाँ

छपी हुई वाइल्स तथा लान्स

रायपूर मिल्स लि.

अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पालतू तोता है, जो अल्लाह-अल्लाह कहता है। तुम्हारे पास क्या है ?" और तारा मुझे अलग करके कासम का हाथ पकड़कर चली गयी।

मैं गुस्से में जला-भुना आँखों में आँसू लिये अपने घर चला आया और किचिन में आकर जगतसिंह से कहने लगा—"मुझे ऐसा तोता ला दो जो अल्लाह-अल्लाह कहता हो।"

"जो 'वाहगुरु वाहगुरु' कहता हो ?" जगतसिंह ने पूछा।

"जो राम-राम कहता हो ?" दूसरे नौकर किरपाराम ने पूछा।

"नहीं जो अल्लाह-अल्लाह कहता हो," मैंने जिद करते हुए कहा—" और अगर ऐसा तोता मुझे लाकर नहीं दोगे, तो मैं आज खाना नहीं खाऊँगा।"

सो भोजन का समय बीत गया और मैंने भोजन नहीं किया। पिताजी ने मुझे देर तक समझाया। पर जब मैं नहीं माना, तो वे हारकर अस्पताल चले गये। उनके जाने के पश्चात् जैसा कि, मैं जानता था, माँजी ने मुझे दो-तीन तमाचे लगा दिये। पर मैं मार खाकर भी जिद करता रहा और भोजन करने से इन्कार करता रहा। आखिर जगतसिंह को एक बढ़िया तरीका सूझा। वह मुझे पुचकारते हुए बोला—"तू खाना खा ले, फिर मैं तुझे कोया चिड़िया दूँगा।"

कोया चिड़िया एक लम्बी गर्दनवाली चिड़िया होती है। गर्दन का रंग खाकी होता है और पंख भी खाकी होते हैं। पर पीठ लाल रंग की होती है और पूँछ ऊदे और गहरे नीले परों की होती है, और सुबह के समय जब वह किसी पेड़ पर गाती है, तो ऐसा लगता है, जैसे कहीं पियानो बज रहा हो।

कोया चिड़िया के आकर्षक शरीर और उसके मीठे गाने के बारे में सोचते ही मेरे आँसू रुकने लगे और मैंने मुस्कराकर कहा—"पर कोया चिड़िया मिलेगी कहाँ से ?"

भोजन करने के पहले मैं पूरी तसल्ली कर लेना चाहता था।

"अरे, वह कम्बख्त तो रोज किचिन में आती है," जगतसिंह ने कहा—"घोंसला बनाने की फिकर में है। माँजी मुझे चिड़िया मारने नहीं देतीं। नहीं तो मैं अब तक उस कम्बख्त का सफाया कर देता। सोचता

धरा-तीर्थ

हर अंग सुशोभित, शील वस्त्र-सा बनकर
आ रहा रूप धानी चुनरी से छनकर
भूलोक गगन से गर्वित हुआ यहीं, पर
घन तम में उतरा दिव्यालोक इसी घर
जिसको छू देंगे चरण कीर्ति ढुलकाकर
वह धन्य हो उठे धरा-तीर्थ बन-बनकर
श्वासें - निश्वासें जहाँ उतर आती हैं
मधु गंध वहाँ सस्ती हो शरमाती हैं
साहस, श्रम, संयम, स्नेह और कुर्बानी
इस ढब पूजन कर रही नवीन जवानी
अपराध-हीन लख बदन-सरोज किसी का
वृंदावन लगता आज नेह-सा नीका
राधा की लखी श्याम ने यह विकलई
अनहद के अंतर की कुंजी गुम गई ॥

—माखनलाल चतुर्वेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

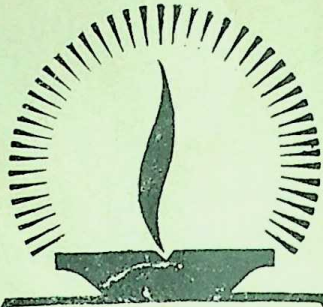

दीपावली

के शुभ अवसर पर.....

हम अपने सभी मित्रों, शुभचिन्तकों, व्यापारियों, ग्राहकों, कार्यकर्ताओं, सहकारियों, राष्ट्र नायकों और देश की कोटि कोटि जनता के लिये...

श्री समृद्धि की कामना करते हैं

राष्ट्र निर्माण की महान शृंखला में एक
महान कड़ी

स्वदेशी

कॉटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड
कानपुर · मैनी · पांडुचेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ कि, आज या कल में तो पकड़कर और उसके पर कतरकर तुम्हें दे दूँगा। फिर वह तुम्हारे कंधे पर बैठकर मीठे-मीठे गीत गाया करेगी।" मैंने संतोष की साँस ली और खाना खा लिया।

दोपहर के बाद जब मैं बाग में से उकताकर घर वापस आया, तो मैंने आते ही जगतसिंह से पूछा—"चिड़िया पकड़ी ?"

"हाँ, पकड़ी तो थी," जगतसिंह हाँफता हुआ बोला—"और उसके पर भी काट डाले थे; पर वह कम्बख्त फुदककर मेरे हाथों से निकल गयी और अब सोने के कमरे में जा छिपी है। माँजी घर पर नहीं हैं और उनका आर्डर है कि, जब वे घर पर नहीं हों, तो कोई भी उनके सोने के कमरे में न जाये।"

मैंने कहा—"तो मैं पकड़ता हूँ।" और यह कहकर मैं बेडरूम में चला गया और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। खिड़की को भी देख लिया कि, अंदर से बंद है और रोशनदानों को भी। कोया चिड़िया 'वार्ड रोब' पर बैठी थी। मैंने पलंग पर चढ़कर वार्ड रोब की ओर हाथ बढ़ाया, तो वह जरा-सा उड़कर सिंगार-मेज पर आ पहुँची। मैंने वहाँ झपट्टा मारा, तो तेल की शीशी टूट गयी और चिड़िया उड़कर दीवार पर लगे हुक पर जा बैठी, जिस पर पिताजी का ओवरकोट टँगा हुआ था। मैंने धीरे से एक कुर्सी को दीवार से लगाया और उस पर चढ़कर चिड़िया को पकड़ना चाहा, तो लकड़ी का वह हुक ओवरकोट के साथ नीचे गिर पड़ा और चिड़िया उड़कर तांबे के उस गुलदान पर जा बैठी, जो दो दीवारों के बीच एक कोने में रखा हुआ था। एक तरफ वार्ड रोब था। एक तरफ पलंग था। बीच के कोने में मेज पर गुलदान था। सो उस गुलदान पर वह कम्बख्त चिड़िया अपनी लम्बी गर्दन उठाये बैठी थी।

बालिका का पक्षी-प्रेम

मैंने बड़ी होशियारी से पलंग की मच्छरदानी गिरा दी और वार्ड रोब का एक पट खोल दिया। अब चिड़िया दोनों तरफ से घिर गयी। फिर मैं मच्छरदानी के अंदर घुसकर हौले-हौले घुटनों के बल चलकर दूसरी तरफ निकल गया। यहाँ से मेज मेरे बहुत नजदीक थी। तभी मैंने उसे पकड़ने के लिए तांबे के गुलदान की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया। कोया चिड़िया ने जब मेरा हाथ अपने ऊपर आते हुए देखा, तो डरकर उसने अपनी आँखें बंद कर ली और सहम कर अपनी गर्दन नीची करके अपने पंखों में छिपा ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

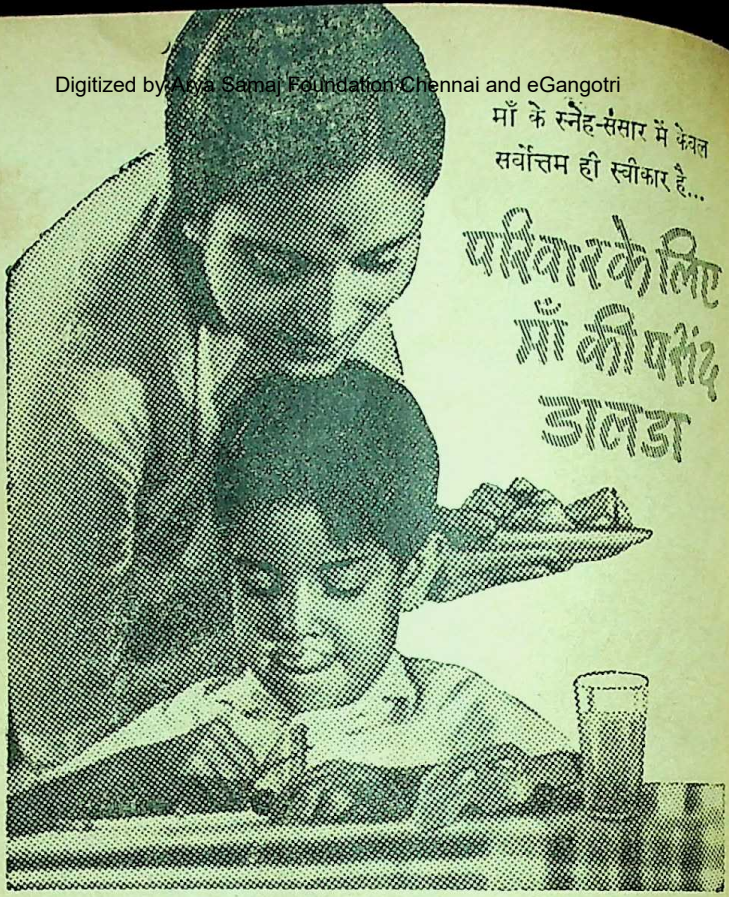

ममता की छाँव में मुन्ना अपने खेल में मग्न है...
उस के पास खिलौने हैं...जी बहलाने वाले,
सूझ बूझ बढ़ाने वाले ! और स्वादिष्ट खाने भी
...जो उसे अच्छे लगते हैं...मज़ेदार मिठाइयाँ,
मनपसंद सब्ज़ियाँ...जिन की सामग्री
माँ बड़े ध्यान से चुनती है...शुद्ध, ताज़ा,
सर्वोत्तम... जैसे कि डालडा वनस्पति !
शुद्ध वनस्पति तेलों से बना हुआ डालडा बढ़ते
हुए बच्चों के लिए विशेषकर गुणकारी है
क्योंकि इस में विटामिन मिले हैं ।
स्वादिष्ट खानों के लिए माँ की पसंद...

डालडा वनस्पति-एक विशेष, शुद्ध चिकनाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

DL. 70A-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय भी कोया चिड़िया की तरह उड़ता रहा और बचपन की इस घटना को वर्षों गुजर गये।

कई वर्ष के बाद मैंने बेहद गुस्से की हालत में अपने घर की नौकरानी पर हाथ उठाया। उसने मेरा एक बहुत कीमती गुलदान तोड़ दिया था, जिसे मैंने अपनी चीन की यात्रा में बड़ी कठिनाई से प्राप्त किया था। मैं गुस्से से भन्नाया हुआ उस नौकरानी के पीछे भागा और कमरे में चारों तरफ उसका पीछा करता रहा और आखिर एक कोने में मैंने उसे घेर लिया और ज्यों-ही मैंने उसे मारने के लिए हाथ उठाया, वह डरकर सहम गयी और उसकी आँखें अपने आप बंद हो गयीं और उसकी गर्दन नीचे को झुक गयी। मुझे अपने बचपन की वह कोया चिड़िया याद आ गयी।

वहीं खड़े-खड़े मैंने सोचा कि, मुझे इस बेबस स्त्री को मारने का भला क्या हक है, जिसके पर गरीबी ने काट डाले हैं। उस बेचारी ने कोई जानबूझकर तो गुलदान तोड़ा नहीं है।

रेल में सफर करते हुए एक अणु-वैज्ञानिक का बैग खो गया। जब उन्हें ध्यान आया, तो उन्होंने जंजीर खींचकर गाड़ी रुकवा दी। गार्ड और पुलिस को बस सूचना-भर मिलने की देर थी। तत्काल पुलिस के कई दस्तों ने कुछ ही मिनिटों में सारी गाड़ी को घेर लिया। एक-एक डब्बे की तलाशी ली जाने लगी। सरकारी मंत्री आदि भी सूचना पाकर चिंताग्रस्त हो गये।

सारे राष्ट्र में हलचल मच गयी, गुप्तचर सचेत हो चले। विदेशी शत्रु राष्ट्र ने कहीं अणु-सम्बंधी कागजात तो नहीं चुरा लिये। काफी दौड़धूप के बाद वह महत्वपूर्ण बैग मिला। बैग मिलने-भर की देर थी। वैज्ञानिक ने झट से उसे खोला और अंदर से कागज में लिपटा केक का टुकड़ा निकालकर खाते हुए कहने लगा—'बड़ी जोर की भूख लग आयी थी।'

बाल-बुद्धि

विनोबाजी उस समय पढ़ते थे। उनके एक दोस्त को चाय की लत पड़ गयी। एक दिन जब वह शौच गया, तो बालक विनोबा ने मौका देखकर पाखाने की सांकल लगा दी। दोस्त बड़ा परेशान हुआ। उसने घिघिया कर विनोबा से कहा—"अरे, दरवाजा खोल; मेरा दम घुटा जा रहा है।"

विनोबा ने कहा—"नहीं, ऐसे नहीं खोलूँगा।"

दोस्त ने पूछा—"तो कैसे खोलेगा?"

विनोबा बोला—"पहले तू चाय छोड़ने का वादा कर।" उसने कहा—"अच्छा भाई, अब मैं कभी चाय नहीं पीऊँगा। बस, अब तो दरवाजा खोल।" विनोबा ने झट दरवाजा खोल दिया।

— लक्ष्मी गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौंदर्य का निखार संवारे बालों में ही है

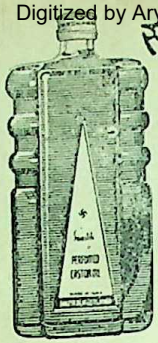

भली प्रकार से संवारे केश
कितने मनमोहक व आकर्षक लगते हैं।
स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल
से अपने बाल आकर्षक रखिये।

स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल

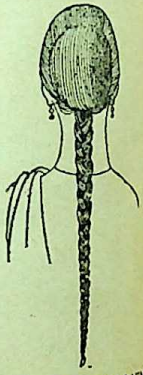

स्वस्तिक हेयर स्टाइल - "शोभा"

थोड़ा स्वस्तिक परफ़्यूम्ड केस्टर ऑइल लगा के बालों में अच्छी तरह कंघी करें और रिबन से बांधें। फिर अपने बालों के दो भाग करें। एक भाग को गोल करें और पिन लगा दें। फिर दूसरे को गूंथ कर गोल किये हुए बालों पर जमा लें।

स्वस्तिक ऑइल मिल्स लि. बम्बई

Shilpi S.O.M. 9 HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हम समृद्ध हो रहे हैं?

योजनाबद्ध आर्थिक विकास के पथ पर हमारी गतिविधि का लेखा-जोखा

दो पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो चुकी हैं, तीसरी का श्रीगणेश है। राष्ट्रीय जीवन में योजनाबद्ध आर्थिक विकास ने महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर लिया है। कई क्षेत्रों में हमारी प्रगति उल्लेखनीय रही है; परंतु तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र—बेकारी, मूल्यवृद्धि और निर्यात—अभी भी समस्या बने हुए हैं। ये ऐसी समस्याएँ हैं, जिनका निराकरण हमारी आर्थिक प्रगति की आधारशिला है।

पहली और दूसरी योजनाओं में बेकारी-निवारण के व्यापक प्रयत्न किये गये। देश के आर्थिक ढाँचे में थोड़ा-बहुत अंतर भी आया; परंतु हमारे कृषिप्रधान देश का औद्योगिक विकास अभी भी इतनी गति से नहीं हो पाया है कि, सभी लोगों को उत्पादन क्षेत्रों में व्यस्त किया जा सके। कृषि से सम्बद्ध ग्रामीण अर्थ-नीति के ढाँचे में भी ऐसा परिवर्तन नहीं हुआ कि, उसे उल्लेखनीय समझा जा सके। कृषिप्रधान क्षेत्रों में अभी भी उत्पादन-श्रम अधिकांशतः पुराने ढर्रे पर ही है। ग्रामीण क्षेत्रों में बेकार मानव-श्रम को जीविका व नौकरी के लिए आर्थिक क्षेत्रों में भटकना पड़ता है। कपास, गन्ना, जूट आदि का उत्पादन अवश्य बढ़ा; परंतु खाद्यान्न उत्पादन अभी भी पिछड़े स्तर पर ही है, यह हमें बाहर से आयात करना पड़ता है। इस तरह औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक पूँजी हमें खाद्यान्न आयात पर व्यय करनी पड़ रही है।

दूसरी योजना में देश के खाद्यान्न सम्बंधी आत्म-निर्भरता का जो लक्ष्य था, वह पूरा नहीं हो पाया। न ग्राम्य-क्षेत्रों में ग्रामोद्योग का ही इतना व्यापक विकास हुआ कि, ८ माह तक बेकार रहनेवाले मानव-श्रम को उत्पादनरत किया जा सके।

औद्योगिक स्तर पर हमारा विकास अभी पहले ही चरण तक सीमित है।। मशीनों आदि के निर्माण में तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं के उत्पादन में विकास के हम उस स्तर तक नहीं आ पाये हैं कि, राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति के बाद विदेशों को निर्यात के लिए अतिरिक्त उत्पादन कर सकें।

राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक बड़ा भाग विदेशों से मशीनें तथा आवश्यक सामग्री क्रय करने में व्यय हो रहा है। यद्यपि इसे बहुत कुछ अंकुश में रखा गया है; परंतु तेल, खाद्यान्न आदि ऐसी अनुत्पादक चीजें हैं, जिन पर बहुत बड़ा भाग खर्च हो जाता है। विकासशील राष्ट्र होने के कारण अभी हमें एक लम्बे समय तक विदेशों की आर्थिक सहायता पर निर्भर रहना पड़ेगा। दूसरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

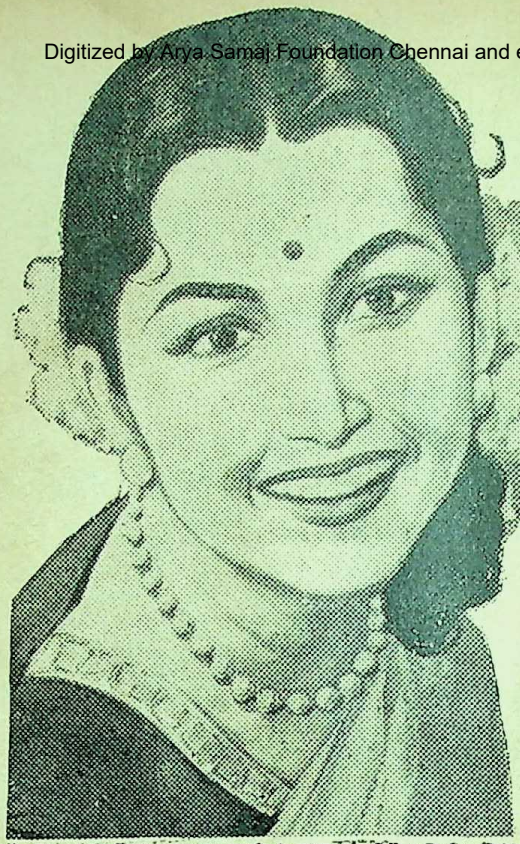

गजब की
तरोताजा
रहें...
वस्तुतः
सुंदर
बनी रहें

रेमी

स्नो और पाउडर

सौंदर्य और त्वचा की परिपूर्ण रक्षा के लिए

MPS-HIN

एकमात्र वितरकः ए. वी. आर. ए. एंड कं., बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जब तक हम विदेशों के ऋणी रहेंगे, हमारी देशी पूँजी भी बहुत कुछ संकुचित रहेगी। देशी पूँजी और विदेशी सहायता में इस तरह का संतुलन बनाना पड़ रहा है कि, मुद्रास्फीति की सीमा न आये। परंतु यह संतुलन अस्वाभाविक हो चला है। देश में तैयार माल की कमी है, अतएव उसका मूल्य अधिक है, अधिकांश लोगों की आय इतनी सीमित है कि, वे केवल आवश्यक जीवनोपयोगी वस्तुएँ ही कठिनाई से जुटा पाते हैं। तैयार माल के निर्यात पर सरकार जोर दे रही है, निश्चय ही यह कदम अत्यंत महत्वपूर्ण है; परंतु देश में अस्वाभाविक कमी की स्थिति इसके कारण बनी हुई है और विदेशी बाजारों में हमें दूसरे राष्ट्रों की होड़ में खड़े रहना पड़ रहा है। अतएव वहाँ हमें कम मुनाफे पर अपनी चीजें बेचनी पड़ती हैं। इस तरह हम मुद्रास्फीति और मूल्यवृद्धि में अस्वाभाविक संतुलन बनाये हुए हैं, जो लाभप्रद नहीं है।

राष्ट्रीय आय में वृद्धि अवश्य हुई है। व्यक्तिगत आय का अनुपात भी बढ़ा है; परंतु आय का यह क्रम मूल्य-वृद्धि के अनुपात में बहुत नीचे हैं। चीजों के दामों में व्यापक वृद्धि हुई है। ऐसी वृद्धि जो सामान्य नागरिक के पास दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के खरीद लेने के बाद बचत के लिए कुछ नहीं छोड़ती। यह वृद्धि ऐसी है, जो योजना के निर्धारित आँकड़ों पर भार बन चली है और हमें उन पर अधिक खर्च करना पड़ रहा है, जिसकी पूर्ति करों तथा विदेशों से प्राप्त ऋण द्वारा ही हो पाती है।

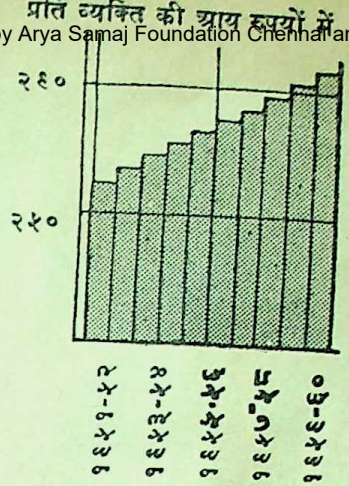

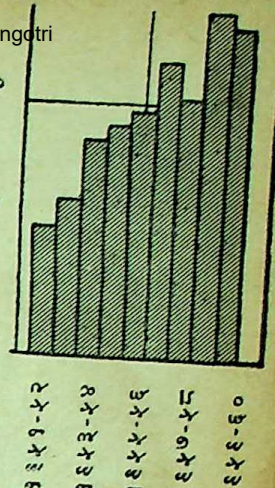

रिजर्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार द्वितीय योजना में मूल्यों में ३० प्रतिशत की वृद्धि हुई है। राष्ट्रसंघीय आर्थिक-समिति की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि, जिन देशों में मूल्यवृद्धि कल्पनातीत हुई है, उनमें भारत प्रमुख है। हमारी राष्ट्रीय व व्यक्तिगत आय की ठीक इससे विपरीत स्थिति है। भारत में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय २९०.१ रुपया (१९५७-५८) है; परंतु १९४८-४९ के आधार पर इसी राशि का मूल्य २७७.१ रुपया है। यह आय मूल्य-वृद्धि के अनुपात में बहुत कम है। पिछले छः वर्षों में प्रतिवर्ष ७ प्रतिशत के हिसाब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहासों से परेशान हैं ?

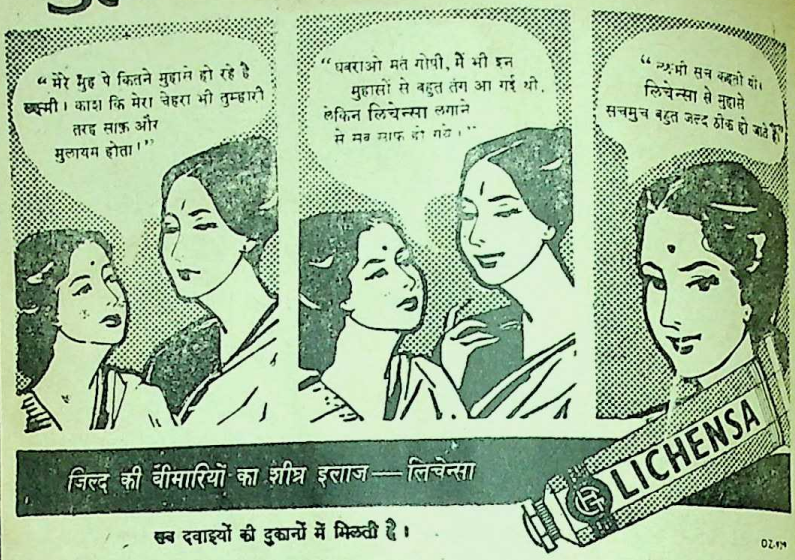

जिल्द की बीमारियों का शीघ्र इलाज — लिचेन्सा

सब दवाइयों की दुकानों में मिलती है।

मुफ़्त लीजिए

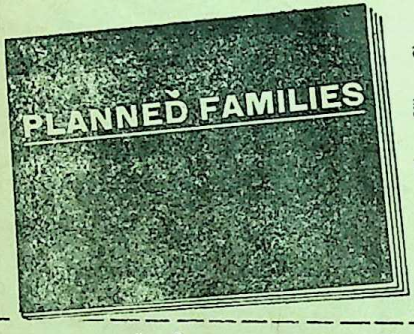

"प्लैण्ड फैमिलीज़" (नियोजित परिवार) ऐसी पुस्तिका है जिसे सभी पतियों, पत्नियों और नव-विवाहित दम्पतियों को ज़रूर पढ़ना चाहिए। इसे पढ़ने के बाद आप ठीक अपनी इच्छा के अनुसार अपने परिवार का नियोजन कर सकते हैं। इस पुस्तिका में कई "टेढ़े सवालों" के जवाब दिये गये हैं और पूरी जानकारी के आधार पर यह साफ़-साफ़ बताती है कि परिवार-नियोजन आपके लिए किस तरह सहायक हो सकता है।

आप इस पुस्तिका की उपेक्षा नहीं कर सकते।

आज ही यह कूपन भेजिए

एल. डी. सेपर एण्ड कंपनी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड,
विभाग B-12
वल्कन इन्श्योरेन्स बिल्डिंग, चर्चगेट बम्बई १
"डयूरेक्स" व "डयूरापेक" संततिनिरोधकों के लिए एजेण्ट
कृपया मुझे सादे लिफ़ाफ़े में "प्लैण्ड फैमिलीज़" (नियोजित परिवार) की एक मुफ़्त प्रति भेजिए। मैं वयस्क हूं।

नाम _____

पता _____

Aiyars LDS/2

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीमतें बढ़ी हैं ।

बेकारों की संख्या भारत में विश्व के दूसरे देशों की अपेक्षा सबसे अधिक है । केवल २९.३ व्यक्ति उत्पादन श्रम में रत हैं । १०.६ अनुत्पादन श्रम में । इस तरह एक बड़ी संख्या में शिक्षित व अशिक्षित व्यक्तियों का राष्ट्रीय-उत्पादन व श्रम में कोई स्थान नहीं है । उत्पादन में वृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि, बड़े पैमाने पर औद्योगिक विकास के साधन-स्रोत जुटायें जायें, साथ ही कृषि-व्यवस्था का यंत्रीकरण किया जाये और ग्रामोद्योगों को विशाल पैमाने पर व्यवस्थित किया जाये । आज कृषि की यह स्थिति है कि, वर्षा के चार महीनों के अतिरिक्त शेष समय कृषक-परिवार बेकार रहता है ।

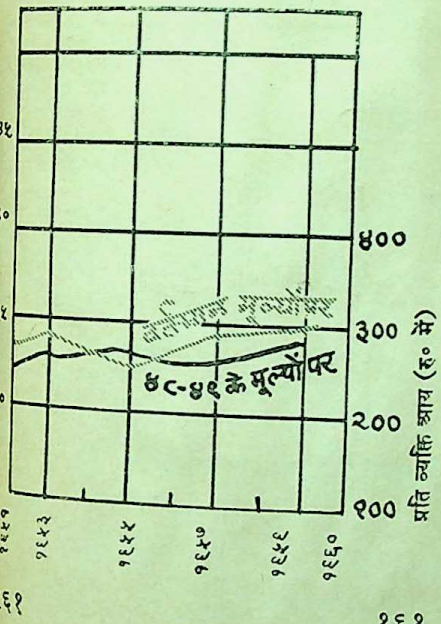

भूमि पर परिवार का पूरी तरह निर्भर रहना [illegible] से ग्रामों की आबादी का एक बड़ा भाग ग्रामोद्योगों के अभाव में औद्योगिक शहरों की ओर बढ़ चला है, जहाँ पहले से ही बेकारों की संख्या में कमी नहीं है । इस तरह विपरीत गति से देहाती-श्रम शहरों में निरर्थक भटकता है । तात्पर्य यह है कि, कृषि पर कम व्यक्ति निर्भर रहने लगे हैं । कृषि का यंत्रीकरण अभी नहीं हुआ है, फिर भी ग्राम-श्रम की यह स्थिति है कि, उसे शहर पर निर्भर रहना पड़ रहा है ।

श्रम-सम्बंधी हमारी परिवार-प्रथा तथा मध्यम वर्ग का दृष्टिकोण बेकारी घटाने की अपेक्षा उसकी वृद्धि में सहायता देता है । महिलाओं में से अधिकांश न तो राष्ट्रीय आय और न पारिवारिक आय की वृद्धि में योग दे पाती हैं । फलस्वरूप सामान्य परिवारों में कमानेवाले एक या दो व्यक्ति होते ही हैं, जबकि उन पर निर्भर तीन या चार व्यक्ति होते ह ।

राष्ट्र के समक्ष सबसे बड़ी समस्या उत्पादन-श्रम को खपाने की है । सभी लोगों को उत्पादन-कार्यों में लगाना टेढ़ी खीर है; क्योंकि हमारे साधन-स्रोत तो सीमित हैं और बेकार अधिक । तीसरी पंचवर्षीय योजना के अंत में भी यह सम्भव नहीं हो पायेगा; क्योंकि जनसंख्या-वृद्धि भी एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत के पाठकों को

दीपावली

की

शुभकामनाएँ

★

बंसीलाल शारडा

इतवारी

नागपुर

★

सूत के थोक व्यापारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

समस्या का रूप ले चुकी है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमुख औद्योगिक देशों में बेकारी अधिक यंत्रीकरण के कारण है। जबकि भारत में सीमित साधन-स्रोतों के कारण। इन देशों में मूल्य-वृद्धि का कारण संग्राहकों द्वारा उत्पन्न कृत्रिम कमी है, जबकि भारत में मूल्य-वृद्धि उत्पादन में कमी के कारण है। अल्पविकसित कृषि-प्रधान देश को औद्योगिक स्वरूप ग्रहण करते समय इन सभी दिक्कतों का सामना करना ही पड़ता है। पूंजी की कमी, निर्यात कम, आयात अधिक, बेकारी, साधन-स्रोतों में कमी और अंतिम परंतु सर्वाधिक कष्टप्रद है मूल्य-वृद्धि।

मूल्यों में स्थिरता तभी आ सकेगी, जब हमारा आयात नाममात्र का होगा व निर्यात बहुत बड़े पैमाने पर होगा। विदेशी पूंजी के एक बड़े भाग को चुकाने के लिए हमें निर्यात बढ़ाना होगा। जहाँ तक निर्यात सामग्री का प्रश्न है, भारत से कच्ची सामग्री ही अधिक मात्रा में निर्यात की जा सकती है। इसके लिए हमें कृषितंत्र को सबल व अधिक उत्पादक बनाना होगा।

अर्थ-शास्त्रियों का मत है कि, प्रत्येक विकासशील राष्ट्र के समक्ष ये समस्याएँ रहती ही हैं। अधिक से अधिक इस दिशा में केवल यही किया जा सकता है कि, मूल्य-वृद्धि व राष्ट्रीय आय में ऐसा संतुलन पैदा किया जाये कि, जीवनयापन की सामग्री खरीदने के बाद भी प्रति परिवार कुछ बचत हो सके। यही बचत हमारी योजनाओं में सहायक व मुद्रास्फीति के निराकरण की गारंटी सिद्ध हो सकती है।

आर्थिक राजनीति

एक मध्यमवर्गीय क्लार्क ने राजनीति का नया आर्थिक विश्लेषण किया है। उसने बताया—"महीने की पहली तारीख से लेकर सात तक मैं पूंजीवादी रहता हूँ—क्योंकि इस सप्ताह जेब में वेतन की गर्मी रहती है। सात से पंद्रह तक मैं प्रजासमाजवादी हूँ—क्योंकि इन दिनों मैं अपना काम बहुत कुछ उधार माँग कर चला लेता हूँ। पंद्रह से बीस तक मैं कम्युनिस्ट रहता हूँ और सर्वहारा की तरह शोषण और दोहन की निंदा करता हूँ। पच्चीस से तीस तक मैं गांधीवादी रहता हूँ – क्योंकि उन दिनों न तो कहीं कर्ज ही मिल पाता है और न कहीं से सहायता ही। मजबूरी से मुझे नीम की चटनी, उपवास, सादा भोजन और लंगोटी पर जीवन बसर करना पड़ता है।"

बजट

बजट शब्द वैसे आर्थिक लेख के सम्बंध में प्रयुक्त होता है, परंतु शब्दकोष में इसका अर्थ दूसरा ही है –'चमड़े का थैला'। ठीक उसी तरह जिस तरह पोर्टफोलियो का अर्थ है–'बस्ता'। इंग्लैंड में सर्वप्रथम राबर्ट वाल्पोल ने इसे आर्थिक रूप दिया था। वे सदा करप्रस्ताव अपने चमड़े के थैले में बंद करके लाते थे और पार्लिमेंट भवन में खोला करते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

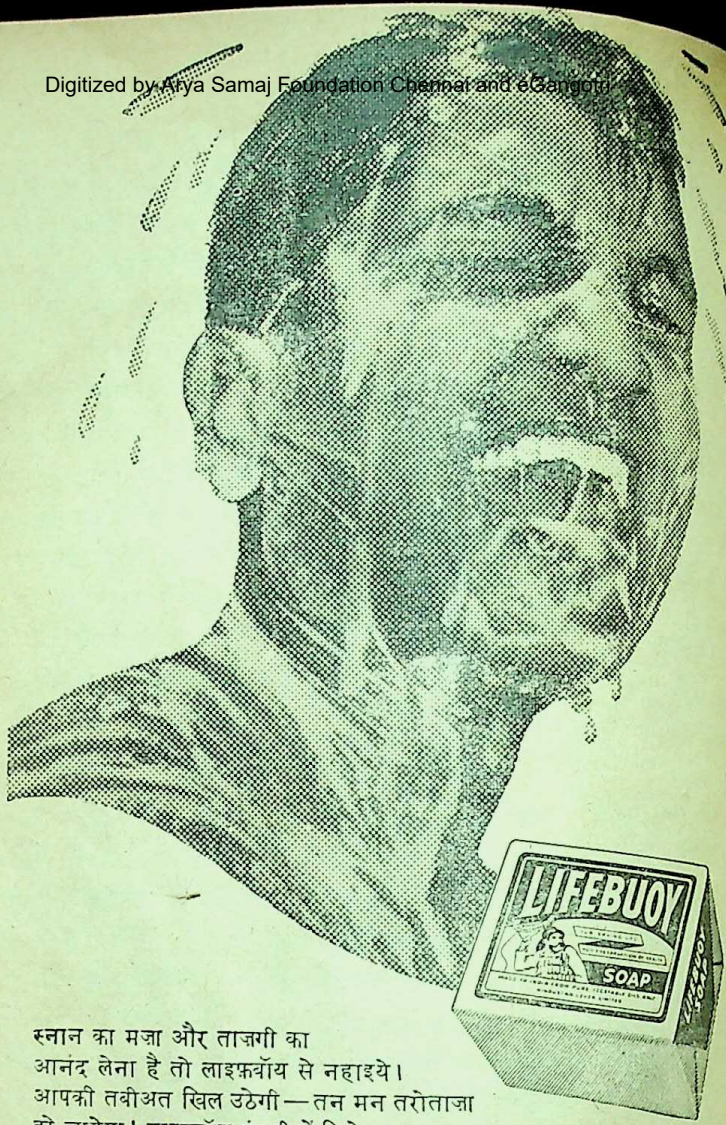

स्नान का मज़ा और ताज़गी का
आनंद लेना है तो लाइफ़बॉय से नहाइये।
आपकी तबीअत खिल उठेगी — तन मन तरोताज़ा
हो जायेगा! लाइफ़बॉय गंदगी में छिपे
कीटाणुओं को धो डालता है — और आप के सारे
परिवार को तंदुरुस्त रखता है!

लाइफ़बॉय है जहाँ, तंदुरुस्ती है वहाँ!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

L. 26-X29 HI

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आइंस्टाइन और इंदुबाला

विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय

दार्जिलिंग की राह में आइंस्टाइन रानाघाट में ही क्यों ठहरे या वहाँ के म्युनिसिपल हाल में भाषण देने को क्यों उत्सुक हुए, कहना कठिन है। उस वक्त मैं वहाँ मौजूद न था। अतः आपको प्रत्यक्षदर्शी-सा विवरण दे पाने में असमर्थ हूँ। फिर भी जैसा कि मैंने औरों की जुबानी सुना है, हूबहू सुना रहा हूँ।

दरअसल नात्सी जर्मनी से निर्वासित होने पर आइंस्टाइन को भी शायद आर्थिक कठिनाई का सामना करना पड़ा था, भाषण-देकर कुछ अर्थोपार्जन की लालसा से ही उनका भारत आगमन हुआ। वैसे वे विभिन्न स्थानों पर भाषण देते ही रहे हैं।

कृष्णनगर महाविद्यालय के तत्कालीन गणित के अध्यापक रायबहादुर नीलाम्बर चट्टोपाध्याय बड़े ही कर्मठ व्यक्ति थे। सिनेट हाल में आइंस्टाइन का अपूर्ण भाषण 'ऑन दि यूनिटी एण्ड युनिवर्सेलिटी आफ फोर्सेज' (ताकतों के ऐक्य और सार्वभौमता पर) सुनकर अन्य दस-पाँच चिंताशील श्रोताओं की भाँति आप भी मुग्ध हो गये और आइंस्टाइन को अपने कालिज में भाषण देने के लिए आमंत्रित कर लिया।

वालीगंज में विनोद के यहाँ उसी की चर्चा चल रही थी। विनोद, माने रायबहादुर का बड़ा साला, विनोद चौधुरी। बोला—"चाटुज्ये महाशय, मैं भी उस दिन रानाघाट जरूर आऊँगा। आइंस्टाइन को मैं इस युग का महान् ऋषि मानता हूँ। अच्छा, आप मध्याह्न-भोजन यहीं करियेगा।"

"नहीं-नहीं ठहरने की कोई गुँजायश नहीं। बहुत से काम पड़े हैं। किसी कदर बेचारे 'साहब' को दो-चार पैसे मिलें, इसका भार मुझ पर है। जाऊँ जरा म्युनिसिपल चेयरमैन, वाइस चेयरमैन की खुशामद करके देखूँ। पहुँचे हुए पीर हैं सब। कहीं कोई रास्ता निकल आये तो अच्छा है?"

"आपने भी खूब कहा चाटुर्ज्ये महाशय! आइंस्टाइन का नाम लेने पर भला कौन हाल नहीं देगा? हाय-हाय, सुनते ही कष्ट होता है, इतने महान् वैज्ञानिक को आज इस बुढ़ौती में भाषण दे-देकर अर्थोपार्जन करना पड़ रहा है!"

× × ×

उसके बाद कई दिन तक रायबहादुर चट्टोपाध्याय काफी व्यस्त रहे।

निर्दिष्ट दिन रायबहादुर कृष्ण नगर कालिज के कतिपय छात्रों को साथ ले सुबह की गाड़ी से रानाघाट पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बेशक यह है बिन्नी का..."

"...बिन्नी का लस्टलिन—कमाल की शर्टिंग, मुलायम, चिकनी, सुन्दर और टिकाऊ...इससे ज्यादा भला आप क्या चाहते हैं ? मैं बरसों से इसे पहन रहा हूं—और कुछ कभी खरीदता ही नहीं...कपड़ों से जब काम बनता है तो बिन्नी के ही खरीदिये। इनसे अच्छा आपको मिल ही नहीं सकता..."

WE STOCK

QUALITY FABRICS

THE BUCKINGHAM & CARNATIC CYCE MADRAS
THE BANGALORE WOOLLEN, COTTON & SILK MILLS LTD. BANGALORE
Subsidiaries of —
BINNY & CO. MADRAS LTD.

अपनी ज़रूरत के मुताबिक बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्य में बिन्नी के अधिकारप्राप्त स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनके यहाँ यह साइन बोर्ड लगा है।

बिन्नी का लस्टलिन

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कम्पनी लिमिटेड

बिन्नी ऐण्ड कं. (मद्रास) लिमिटेड की सहायक-संस्था

JWT&CA/1.29

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानाघाट स्टेशन [illegible]

पर नजर पड़ते ही रायबहादुर चौंककर खड़े हो गये। अरे यह क्या! दीवारों पर तिरंगा विज्ञापन था!

"बानी सिनेमा-गृह में आ रही है! आ रही हैं!! आ रही हैं!!!

सुप्रसिद्ध सिने सितारा इंदुबाला देवी आज रविवार २७ कार्तिक शाम को ५।। बजे, प्रवेश शुल्क—५, ३, २, व १ रुपया महिला—५ और २ रुपये"

हाय भगवान्! कार्तिक महीने की आखिरी सुबह को भी रायबहादुर ने रूमाल निकाल माथे से चूता पसीना पोंछा। फिर एक बार अच्छी तरह तारीख पढ़ ली। नहीं, आज ही है।

अन्यमनस्क हो कुछ दूर जाकर फिर वैसा ही विज्ञापन देखा। इस तरह जितना ही बढ़ते गये, हर जगह वैसे ही विज्ञापन दिखाई पड़े। म्युनिसिपैलिटी के वाइस चेयरमैन के मकान तक पहुँचते-पहुँचते रायबहादुर ने कम-से-कम छत्तीस तिरंगे विज्ञापन विभिन्न स्थानों की दीवारों पर चिपके देखे।

बगीचे के सामने छोटे बरामदे में श्रीगोपाल बाबू तेल मल रहे थे। रायबहादुर को आते देख सम्भलकर उठ बैठे। मुस्कराकर बोले—"अहा! अहोभाग्य हमारे, आज इतनी सुबह-सुबह? नमस्ते।"

"नमस्ते, नमस्ते! बात यह है श्रीगोपाल बाबू कि, यह कैसा अडंगा आ खड़ा हुआ? यह कौन इंदुबाला आ रही है, बानी सिनेमा

आइंस्टाइन ने इंदुबाला का नृत्य देखा

में आज ही।"

"अरे हाँ! देखा तो मैंने भी है।"

"पर आज ही?"

"सोच तो मैं भी यही रहा था। 'क्लेश' करेगा क्या?"

"अब तो हम दिन भी नहीं बदल सकते। सारा प्रोग्राम ठीक हो चुका है। हमारे परचे विज्ञापन भी बाँटे जा चुके हैं। इसी दार्जिलिंग मेल से आइंस्टाइन आ रहे हैं।"

"यह तो सचमुच आफत हो गयी!"

"पर मेरी समझ में तो जो लोग इंदुबाला के प्रेमी हैं, वे साहब का भाषण सुनने वैसे भी कभी नहीं आते। जो साहब की सभा में आनेवाले हैं, वे अब भी जरूर आयेंगे।"

आइंस्टाइन के लिए "साहब" शब्द के उल्लेख से रायबहादुर मन-ही-मन चिढ़ गये। भला यह भी कोई जगह है जहाँ के लोग विश्व के श्रेष्ठतम वैज्ञानिक आइंस्टाइन को नहीं जानते। वे क्या कोई जूट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल

• रंग

• रसायन

• और औषधि

अतुल ... ATUL

अतुल प्रॉडक्ट्स लि.

अतुल, (वाया बलसार)

पश्चिम रेलवे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल मैनेजर हैं या रेल्वे के टी० आई० हैं, जो 'साहब-साहब' कह रहा है ? जरा सोच-समझकर कहना चाहिये ।

वाइस चेयरमैन श्रीगोपाल बाबू अतिथि-सत्कार के लिए सुप्रसिद्ध थे । चाय आयी और साथ में जलपान की तश्तरी भी । चाय पीकर रायबहादुर यह कहते हुए उठ खड़े हुए कि, काफी जगह जाना है । बहुतों से मिलना है, बहुत कुछ इंतजाम भी करना है ।"

स्नान के बाद श्रीगोपाल बाबू के अंदर पैर रखते ही उनकी बड़ी लड़की बोली—"बाबूजी, हमें पाँच टिकिट ला दीजिये"

"कैसे टिकिट ?"

"वाह जी, शाम को वानी सिनेमा में इंदुबाला आयेगी—नाच गाना होगा । पड़ौस के सभी जा रहे हैं ।"

श्रीगोपाल बाबू ने खिन्न स्वर में कहा—"मेरे पास क्या रुपये का पेड़ लगा है ? १९०३ से जुता हूँ—सो अभी तक पार नहीं लगा । बस रुपये-रुपये और रुपये ।"

जरा नाराज हो श्रीगोपाल बाबू ने अलमारी खोलकर दस रुपये का नोट और कुछ खुले रुपये लड़की के हाथों में ठूँस दिये ।

थोड़ी देर बाद पड़ोसी राधाचरण नाग ने बैठकखाने में झाँककर पुकारा—"क्या हो रहा है गोपाल बाबू ?"

"अरे आइये-आइये, डाक्टर बाबू क्या हाल है ? शाम को जा रहे हैं न ?"

"जी, यही तो पूछने आया हूँ । आप भी जा रहे हैं तो ?"

"यह भी कोई पूछने की बात है ।

इंदुबाला को पुष्पहार

रानाघाट के भाग्य में ऐसा कभी नहीं हुआ । फिर कैसे चूक सकते हैं ?"

"मैं भी यही कह रहा था घर में । रुपयों का खर्च—सो तो लगा ही रहता है । पर यह सब देखने-सुनने का मौका जिंदगी में कितनी बार आता है ?"

"इसमें क्या शक है ? आजकल हर जगह इंदुबाला का ही नाम है ।

श्रीगोपाल बाबू मुँह बाये नाग महाशय की ओर ताकते रह गये । कुछ क्षणों के लिए तो उनकी बोलती ही बंद हो गयी । पूरे दो मिनिट बाद अस्फुट स्वर में बोले—"लेकिन मैं उसके बारे में नहीं कह रहा हूँ । मैं तो 'साहब' के भाषण की बात कर रहा हूँ, म्युनिसिपल हाल में ।"

भौंहों पर बल दे नाग बाबू बोले—"कौन साहब ?"

"क्यों आप नहीं जानते ? आइंस्टाइन,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

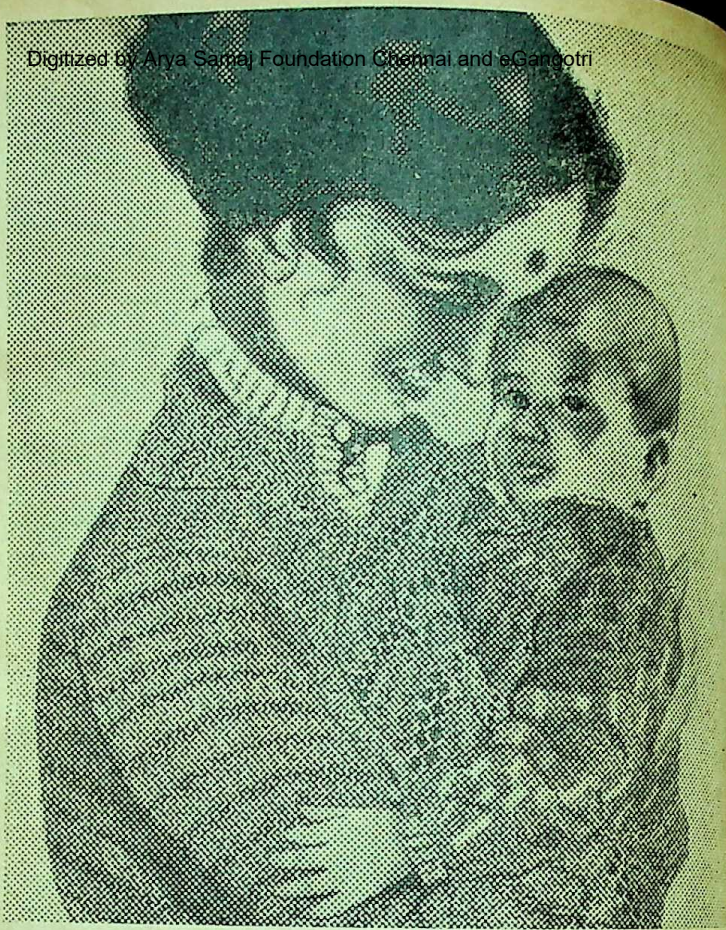

प्यार दीजिये, देखभाल कीजिये, **मॉडेला** से बुना पहनावा दीजि

माता की ममता दिखाई देती है। **मॉडेला** से बुना कपड़ा भी माता के प्यार दर्शाने के कई तरीकों से एक महत्वपूर्ण तरीका है। और मॉडेला आप के बाद पर बहुत ही खिलेगा...आप पर भी।

modella
KNITTING WOOL

शत प्रतिशत असली आस्ट्रेलियन ऊन • पक्का रंग, न सिकुड़ने वाला • १६ किस्म, ४० रं

मॉडेला प्राइवेट लिमिटेड, बम्ब

MDL-61A HIN EVEREST

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर आइंस्टाइन ..."

एकाएक याद पड़ जाने का सामान कर राधाचरण बाबू गिरे स्वर में बोले—"अच्छा उस जर्मन या कि, इटालियन साहब का नाम ? हाँ, सुना है, मेरा दामाद भी कह रहा था । कौन-से विषय पर भाषण देने वाला है ?

श्रीगोपाल बाबू ने तीव्र प्रतिवाद करना चाहा; पर राधाचरण बाबू फिर बोले—"हाँ, तो आप क्या करने की सोच रहे हैं ?"

"अपने घरवाले तो सिनेमा में जा रहे हैं। पर मुझे तो साहब के भाषण में जाना ही होगा । रायबहादुर नीलाम्बर बाबू स्वयं आकर आग्रह कर गये हैं..."

"कौन रायबहादुर ?

"कृष्ण नगर कालिज के प्रोफेसर । उन्हीं के आग्रह से तो यह सब हो रहा है । वे ही खुद आकर विशेष ..."

राधाचरण बाबू आँखें मटकाकर बोले—"अरे भैया, सुनो एक बात बताता हूँ । एक दिन का माजरा है, चलो देख आया जाये । चल-चित्र की इंदुबाला और सजीव इंदुबाला में काफी अंतर है । जीवन की साध पूरी हो जायेगी । ऐसे साहब-फाहब तो बहुत देखे हैं । तीनों वक्त रानाघाट स्टेशन पर खड़े रहो और फिर दार्जिलिंग-शिलोंग मेल के समय देख लो जितने साहब देखने हैं । पर भैया, मौका—समझे कि, नहीं ?"

श्रीगोपाल बाबू ने अन्यमनस्क हो कहा—"सो तो ठीक, पर रायबहादुर को तो वचन दिया है, वे क्या सोचेंगे ?"

राधाचरण बाबू मुँह बिचकाकर बोले—"हूँ । वचन दिया है रायबहादुर को । बड़े आये हैं राय बहादुर । ऐसा क्या आब्लिगेशन है भैया । कह देना, घरवाले गये इसलिए मुझे भी जाना पड़ा ।"

× × ×

रायबहादुर स्थानीय जमींदार नीरेन चाटुर्ज्ये के घर में बैठे सभा-सम्बंधित परामर्श तथा आयोजन कर रहे थे । नीरेन रायबहादुर के मौसेरे भाई थे । यहाँ के मशहूर जमींदार और वकील ।

मध्याह्न-भोजन के उपरांत नीरेन बाबू बोले—"हाँ, तो भैया आज के भाषण का मूल विषय क्या होगा ?"

'ठीक, ठीक नहीं बता सकता' 'आन दि यूनिटी आफ फोरसेज' यही है विषय-वस्तु । इसीसे अंदाज लगा लो ।"

तभी अंदर से नीरेन बाबू की लड़की मीना आकर बोली—"ताऊजी, पिताजी से कहकर टिकिट के पैसे दिलवा दीजिये ।"

रायबहादुर ने पूछा—"मीनू बिटिया कैसे टिकिट ?"

मीना बोली—"पता नहीं ताऊजी आप तो कहाँ खोये रहते हैं ?"

नीरेन बाबू पुनः डपटकर बोले—"ओह, बातूनी कहीं की । कह दिया न अभी जाओ । सर खा डाला आज । जानते हैं दादा किसके टिकिट के लिए कह रही है यह ? आज यहाँ के बीना सिनेमा में इंदुबाला आ रही है न ।"

"तो इसमें हर्ज क्या है, देख आने दो । आइंस्टाइन के भाषण में वे कहाँ जायेंगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली अभिनन्दन

★

जालूराम भीखूलाल

इतवारी

नागपुर

★

सूत के थोक व्यापारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो, यदि देख लेती, तो सारे जीवन याद रहता। क्यों री मीनू कहाँ जायेगी ?"

"वहीं ताऊजी, हम लोग तो सिनेमा में ही जायेंगी।" और मीना हँसते-हँसते अंदर भाग गयी।

× × ×

दार्जिलिंग मेल के आने का समय हो गया। शाम के साढ़े पाँच बज गये। रायबहादुर के कुछ छात्रों को लेकर नीरेन बाबू गोपाल बाबू के साथ प्लेटफार्म पर आ पहुँचे। पर यह क्या ? इतनी भीड़ कैसी ? प्लेटफार्म पर इतने छात्र, इतना-जन-समागम। तो क्या यह सच है कि, आइंस्टाइन के आगमन ने सोते हुए रानाघाट-वासियों को जगा दिया ? सभी तो दार्जिलिंग मेल के लिए खड़े हैं। उनका स्वागत करने ? इतने बड़े वैज्ञानिक का उपयुक्त स्वागत है, निःसंदेह उपयुक्त स्वागत !

प्लेटफार्म खचाखच भरा हुआ था। कुहराम मचा था। रायबहादुर पुलकित हो उठे कि, इतने में ही मेल प्लेटफार्म पर आ गयी। द्वितीय श्रेणी के कम्पार्टमेंट से एक छोटी-सी अटैची लिये लम्बे बाल और बड़ी-बड़ी आँखोंवाले आइंस्टाइन नीचे उतरे। साथ-ही साथ पास के प्रथम श्रेणी के कम्पार्टमेंट से एक अनिंद्य सुंदरी कीमती वायेल की साड़ी, सुनहरी के कश्मीरी सेंडल पहने--हाथ में वैनिटी बैग लटकाये नीचे उतरी। उस तरुणी के साथ और भी दो श्यामांगी युवतियाँ थीं। कुली नौकर लगेज उतारने में उलझ गये। एक आवाज आयी, वह देखो—"वह देखो। वही तो हैं [illegible] ।"

क्षण-भर में सारा प्लेटफार्म उस ओर दौड़ पड़ा। उस अथाह भीड़ से रायबहादुर बड़ी मुश्किल से आइंस्टाइन को लेकर गेट की ओर बढ़े।

आइंस्टाइन भी समझ नहीं पाये। सोचा शायद उन्हीं को देखने के लिए इतनी भीड़ खड़ी है। रायबहादुर से पूछा—"ये क्या स्थानीय विश्वविद्यालय के छात्र हैं ? इनसे मेरा परिचय नहीं करायेंगे मि० चटर्जी ?"

रायबहादुर ने इस उदार बाल-सुलभ विज्ञान-तपस्वी का भ्रम सुधारनेकी कोशिश नहीं की।

रानाघाट में यूनिवर्सिटी ? हाय रे, किस देश में विचर रहे हैं ये, शायद भूल गये कि, हर जगह यूरोप नहीं है।

नीरेन बाबू ने कोशिश करके प्रसिद्ध व्यवसायी गोपाल पाल की एक पुरानी १९५७ सन् के माडल की गाड़ी जुटाई थी। उसी पर सवार हो सभी म्युनिसिपल हाल की ओर रवाना हो गये। स्टेशन और भीड़ को पीछे छोड़कर कुछ दूर और अग्रसर होते ही रास्ते के घुमाव पर नीरेन बाबू व श्री गोपाल बाबू उतर गये। रायबहादुर बोले—"जल्दी आइयेगा।"

सामने म्युनिसिपल हाल था। स्टेशन के करीब ही। पर यह क्या ? साढ़े पाँच का समय दिया गया था। पौने छः बज रहे हैं, लेकिन कोई नहीं आया। एक भी नहीं ! केवल म्युनिसिपल दफ्तर का क्लर्क जीवन भादुड़ी एक छोटी-सी मेज पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कब्जियत और बवासीर

हमेशा कब्जियत रहने से बवासीर अथवा खूनी बवासीर की बीमारी हो सकती है। इसमें गुदा के भीतर और बाहर की नसें फूल जाती हैं। दर्द के कारण मल निकलने में बड़ी कठिनाई और परेशानी होती है। कब्जियत जोर पकड़ लेती है और बवासीर भी कष्टदायक हो जाती है। इससे हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि यदि बवासीर के कारण उत्पन्न दर्द और परेशानी दूर हो जाये तो मल निकलना आसान हो जाये। हाडेन्सा ठीक यही काम करता है। यह दर्द और खुजली से तुरंत आराम पहुँचाता है। इसके लगातार इस्तेमाल से बवासीर दब जाती है और पूर्ण आराम मिलता है। बवासीर की सुप्रसिद्ध जर्मन दवा हाडेन्सा में कोई नशीली चीज नहीं होती। इससे किसी प्रकार का धब्बा नहीं लगता और इसका इस्तेमाल भी आसान है। हर पैकेज के साथ प्लास्टिक की एक छोटी नली भी होती है और उसमें इसके इस्तेमाल का तरीका भी लिखा होता है। यदि बवासीर आपकी समस्या है तो हाडेन्सा उसका हल है। आज ही हाडेन्सा का इस्तेमाल कीजिये।

अब भारत में निर्मित DZ 952

गैस-वायु पेट दर्द के लिए

गैसहर पिल्स गैस-वायु, गोला, बादी, कब्ज, पेट का दर्द, शूल, डकारें, पेट का भारीपन और गैस-वायु विकृति के कारण पैदा होनेवाली शिकायतों के लिए उपयोगी-खूब हजम करके, दस्त साफ लाकर भूख बढ़ाती है। १९ वर्षों से गैस-वायु पेट दर्द के लिए उपयोग होनेवाली आयुर्वेदिक औषधि; वैद्य, डाक्टर तथा अस्पताल में इस्तेमाल की जाती है। ५० गोलियों की शीशी १.५० रु. और १५० गोलियों की बड़ी शीशी

बलवर्धक, रक्तवर्धक, स्फूर्तिवर्धक

दुग्धानुपान गोलियाँ पाचन-क्रिया सुधारकर दस्त साफ लाती हैं, रस रक्त रुधिर इत्यादि सप्त धातुओं को पोषण देकर दिमागी ताकत, जीवन शक्ति, यौवनशक्ति और वजन बढ़ानेवाली ३२ वर्ष की प्रसिद्ध शक्ति वर्धक आयुर्वेदिक औषधि, ३२ गोलियों की शीशी रु. १.५० और ९६ गोलियों की बड़ी शीशी रु. ४ वी० पी० खर्च अलग।

बनानेवाले—**दुग्धानुपान फार्मेसी**, गांधी चौक, **जामनगर** (सौराष्ट्र)

होलसेल स्टाकिस्ट—**वींछी ब्रदर्स कं.**, ७९ प्रिन्सेस स्ट्रीट, **बम्बई.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत-से टिकिट सजाये श्रोताओं के आने की बाट जोह रहा था।

आइंस्टाइन ने भी सविस्मय जनशून्य हाल की ओर ताककर कहा—"अभी कोई नहीं आया ? सारे-के-सारे स्टेशन पर ही भीड़ किये हैं ? मि० चटर्जी, एक ब्लैकबोर्ड का भी तो इंतजाम करना पड़ेगा।"

हाय रे ब्लैक बोर्ड ! रायबहादुर आखिर थे तो रानाघाट के ही। वहाँ की नस-नस से परिचित थे। वे शून्य तथा हताश दृष्टि से चारों ओर ताकने लगे।

जीवन भादुड़ी धीरे से बोला—"सिर्फ तीन रुपये के ही टिकिट बिके हैं और वे तीन रुपये भी अभी मिले नहीं हैं। क्या करूँ, सर ? मुझे कितनी देर और रुकना पड़ेगा। घरवालों को लेकर जरा बानी सिनेमा में जाना है।"

जीवन भादुडी बाकी टिकिटें उनके हवाले कर खिसक गया। हाल में कुर्सी-मेज के जन-हीन अरण्य में रह गये दो प्राणी रायबहादुर और आइंस्टाइन। आइंस्टाइन अटैची से सामान निकालकर मेज पर सजाने में व्यस्त थे, ये सारी चीजें उनके भाषण के वक्त काम आतीं। मौका देखकर रायबहादुर बाहर निकलकर रास्ते के एक सिरे से दूसरे सिरे तक परेशान-से देखने लगे।

भीड़ चली जा रही थी, खूब सज-धजकर बानी सिनेमा की ओर।

रायबहादुर के एक परिचित वकील भी हाथ में छड़ी लिये तेजी से भीड़ के पीछे आगे जा रहे थे, रायबहादुर को देखकर बोले—"क्या हाल है ? साहब आ गये हैं ? हाल के अंदर लोग आये या नहीं ? आज 'अनफारचुनेटली' उसके साथ 'क्लेश' हो गया। इसलिए दूसरा दिन होता—अहह, कोई गुंजायश नहीं। घर की औरतें सब गयी हैं, उनके साथ कोई नहीं है। बाध्य होकर मुझे तो...अच्छा....।"

आधा घंटा बीत गया। साढ़े छः बज गये। पौने सात.....सात। एक भी आदमी का पता नहीं चला।

बानी सिनेमाघर में सारा जन-समुद्र उमड़ पड़ा था। रायबहादुर नीलाम्बर चटर्जी भी भीड़ ठेलते हुए हाल में घुस गये श्रीगोपाल बाबू को सामने ही बैठा देख विस्मित हो उठे। पास ही थोड़ी दूर नीरेन बाबू भी बैठे थे। बोले—"वाह आपभी यहाँ।" अकस्मात भंडाफोड़ हो जाने से सर खुजलाते हुए गोपाल बाबू बोले—"आनेकी इच्छा नहीं थी, पर क्या करता, नहीं-नहीं, आप ही बताइये क्या उपाय था, घर की औरतें—उनको तो लाना ही था। हाँ तो, साहब का भाषण कैसा रहा ? श्रोता नहीं थे ?"

"कैसे होते ? जब आप सभी यहाँ पर हैं, तो श्रोता कहाँ से आयेंगे ?"

"साहब कहाँ है ? चले गये ?"

"ये रहे..." रायबहादुर के पीछे ही स्वयं आइंस्टाइन खड़े थे।

श्रीगोपाल बाबू हड़बड़ाकर खड़े हो गये, उन्होंने आइंस्टाइन को ससम्मान अपनी कुर्सी पर बैठा दिया।

बंगला से रूपांतरः दत्तात्रेय *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भी चाहेंगी
कि 'मेरे भी बाल
ऐसे सुंदर हों!'

मुड़के जरा एक नजर देखा। उसके सुंदर बालों की और आंखें बरबस खिंच गयीं-दिल में तमन्ना जाग उठी कि मेरे बाल भी ऐसे ही सुंदर होने चाहिए। अनोखी खुशबूवाला 'केशा' बालों के पोषक तत्वों से भरपूर है। इसे इस्तेमाल करने से सुंदर बाल उगते हैं। आप के बालों पर अनोखी बहार आ जाती है-ऐसी बहार जिसकी आप तमन्ना करते हैं।

आज ही अपने बालों की रक्षा के लिए इस्तेमाल करें

केशा

लोमा के उत्पादकों की एक और बढ़िया भेंट

HIN.

एकमात्र एजेंट्स:
एम. एम. खम्भातवाला,
अहमदाबाद-१
एजेंट्स:
सी. नरोत्तम एण्ड कम्पनी,
बम्बई-२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती अन्नपूर्णा है

बाइरन टी० शा

संसार के इतिहास में अब तक कभी ऐसा समय नहीं आया, जब सब कहीं, सब लोगों को उत्तम भोजन भरपेट उपलब्ध रहा हो। फिर भी धरती पर इतनी जमीन, इतना पानी और इतनी धूप मौजूद है कि, आज की तुलना में बहुत अधिक अन्न उपजाया जा सके।

अधिक अन्न उपजाने के दो उपाय हैं : (१) मौजूदा खेतों की उपज को बढ़ाना; और (२) नयी जमीन में खेती-बाड़ी शुरू करना।

संसार के कई देशों में हुई प्रगति ने सिद्ध कर दिया है कि, सुधरे हुए कृषि-विधानों से उपज बढ़ाना सम्भव है। लेकिन यह नयी बात है। यूरोप में रोमन साम्राज्य के समय से फ्रेंच राज्यक्रांति तक प्रति एकड़ लगभग दस बुशल अन्न उत्पन्न होता था। पर १८०० ई० के बाद से खेती के अधिक अच्छे तरीके खोजे और अपनाये गये और प्रति एकड़ उपज पहले से तीन गुना हो गयी। उत्तर-पश्चिमी यूरोप के अधिकांश भागों में जमीन की उर्वरता को बिना हानि पहुँचाये और लाभपूर्वक अधिक-से-अधिक जितना उत्पादन सम्भव है, लगभग उतना उत्पादन अब होने लगा है।

अमरीका में लगभग पिछली तीन सदियों से नयी-नयी जमीन में खेती शुरू कर अन्नोत्पादन बढ़ाया जाता रहा। १९४० तक वहाँ प्रति एकड़ उपज में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। द्वितीय विश्व-युद्ध के समय देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अमरीकी किसानों ने वैज्ञानिक जानकारी का लाभ उठाना आरम्भ किया।

अमरीका के विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न प्रकार की जलवायु और जमीन में उत्पादन में जो वृद्धि की जा सकी, उसके आधार पर १९४५ में अमरीकी कृषि-विभाग के वैज्ञानिकों ने अंदाज लगाने की कोशिश की कि, सन् १९६० तक संसार में खाद्य पदार्थों के उत्पादन में कितनी वृद्धि की जा सकेगी। उनका अंदाज था कि, १९६० तक आलू, चुकंदर, शकर आदि आवश्यकता से कुछ अधिक और अनाज, दालें, तिलहन आदि पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न किये जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

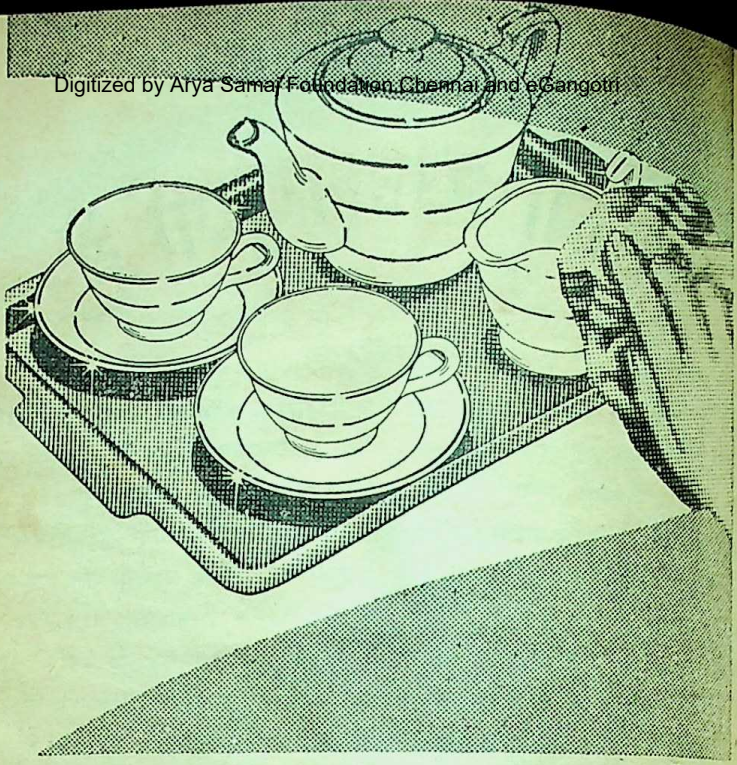

आपके घर को विम की ज़रूरत है!
चीनी के बरतन, स्टेनलेस स्टील, नहाने के टब,
वाश-बेसिन और फ़र्श...हर चीज़ विम
से चुटकियों में जगमगाने लगती है!

विम
से हर चीज़
चमक
उठती है

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकेंगे । अलबत्ता [illegible] दूध की थोड़ी कमी रहेगी ।

संसार के अधिकांश भागों में १९६० तक यह उत्पादन-वृद्धि नहीं हुई । लेकिन अमरीका में अंदाज से भी कहीं अधिक उत्पादन होने लगा है। जापान, मेक्सिको, तुर्की और फिलिपाइन्स में भी बहुत आश्चर्यजनक प्रगति हुई है । १९४५ में अमरीकी वैज्ञानिकों ने अनुमान किया था कि, १९६०तक चावल की उपज १३ प्र० श० बढ़ेगी; लेकिन वास्तव में ५८ प्र० श० वृद्धि हुई । गेहूँ में १८, मकई में ३१ और आलू में २३ प्रतिशत वृद्धि का अनुमान किया गया था, जबकि वास्तविक वृद्धि क्रमशः ९०, ७९ और १३७ प्रतिशत रही ।

इस वृद्धि के कारण क्या हैं ? पिछले पंद्रह में वर्षों में खाद का उपयोग दुगने से भी अधिक बढ़ा है । अधिक बढ़िया किस्म का खाद अधिक वैज्ञानिक ढंग से उपयोग किया [illegible] है । जो इलाके खुश्क नहीं थे, वहाँ भी सिंचाई की व्यवस्था की गयी है, ताकि ठीक मौके पर खेतों को पर्याप्त पानी मिल सके । अधिक बढ़िया किस्म के बीज पौधों का प्रचलन हुआ, जिससे पौधे खाद और पानी का अधिक लाभ उठा सके और उनमें प्रतिकूल जलवायु और बीमारी का अधिक अच्छी तरह प्रतिरोध करने की क्षमता आ गयी ।

इसी प्रकार पशुपालन के सुधरे हुए तरीकों के प्रचार से अब अमरीकी पशुपालक को हर गाय से ३० प्रतिशत अधिक दूध और हर मुर्गी से ३६ प्रतिशत अधिक अंडे प्राप्त होने लगे हैं।

संसार के विभिन्न भागों में उपज की मात्रा में बहुत अधिक तारतम्य है । इससे स्वभावतः उम्मीद की जा सकती है कि, जहाँ उपज कम है, वहाँ उसमें वृद्धि करना सम्भव है । सन् १९५७ में डेन्मार्क में गेहूँ की प्रति एकड़ उपज की मात्रा संसार की औसत मात्रा से चौगुनी, भारत से छः

मानव की कृतियाँ

युद्ध और भुखमरी ये दोनों मानव की सृष्टि हैं । यह बात ध्यान देने योग्य है कि, अब तक नृतत्वशास्त्रियों को अति प्राचीन आदि-मानवों के जो अवशेष मिले हैं, उनमें संघटित युद्ध के कोई उपकरण या चिह्न देखने में नहीं आते और न उनके पथराये कंकालों में अन्नाभावजनित विकार ही प्रकट होते हैं । इसके विपरीत, अधिक सभ्य और विकसित जातियों के मानवीय कंकालों में खाद्याभाव के लक्षण, यानी भुखमरी के जीवशास्त्रीय प्रमाण, स्पष्ट मिलते हैं। इसका अर्थ है कि, जब मानव पर्याप्त ऊँचे सांस्कृतिक धरातल पर पहुँच चुका, अर्थात् जब वह आवश्यकता से अधिक जोड़ने और अपनी जोड़ी हुई वस्तु की रक्षा करने लगा, तब युद्ध और भुखमरी का आगमन हुआ । दूसरे शब्दों में, ये दोनों अभिशाप असमान वितरण से उत्पन्न हुए । —डा० जोस्वे डी कास्ट्रो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुनी, अफ्रीका से आठ गुनी और अमरीका से लगभग दुगुनी थी। पूर्वी एशियाई देशों में धान की उपज विश्व की औसत उपज मात्रा के बराबर पहुँच गयी है, जो अफ्रीका की तुलना में दुगुनी है; पर उत्तरी अमरीका के मुकाबले केवल आधी है।

इससे सिद्ध होता है कि, आज से १५ साल पूर्व उत्पादन-वृद्धि का जो अनुमान किया गया था, उससे कहीं अधिक वृद्धि अब सम्भव है। केवल टेक्निकल दृष्टि से सोचें, तो भी बिना कृषि-भूमि बढ़ाये ही विश्व की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त ही नहीं, उससे भी अधिक खाद्य पदार्थ उत्पन्न करना सम्भव है।

और अभी कितनी नयी जमीन में खेती शुरू की जा सकती है, यह देखते हुए तो अन्न-वृद्धि की सम्भावना और भी बढ़ जाती है। संसार की समस्त भूमि के केवल २० प्रतिशत में अभी खेती होती है। ६० प्र० श० भूमि को पहाड़ों, रेगिस्तानों और बर्फ ने घेर रखा है। फिलहाल यह मान सकते हैं कि, इस भूभाग को खेती के लायक बनाना असाध्य है। इस प्रकार तीस प्रतिशत—आज की कृषि-भूमि से तीन गुना अधिक—भूमि ऐसी पड़ी है, जिसमें अभी खेती नहीं हो रही है, परन्तु जिसमें मिट्टी, पानी, अनुकूल जलवायु आदि सब उपलब्ध है। यदि इस जमीन का १० प्रतिशत भाग भी खेती के लिए उपयुक्त बनाया जाये, तो उत्तरी गोलार्द्ध में ३० करोड़ एकड़ और दक्षिणी गोलार्द्ध में ४५ करोड़ एकड़ नये खेत बन सकेंगे।

इस प्रकार हमारे पास संसार की वर्तमान आबादी को भरपेट भोजन देने के लिए पर्याप्त साधन हैं। लेकिन दुनिया की आबादी जिस रफ्तार से बढ़ रही है, उसे देखते हुए हमें यह सारी जमीन जोतनी पड़ जायेगी।

अन्नपूर्णा

लेकिन यह याद रखना आवश्यक है कि, हर खेत की मिट्टी अलग होती है, उपज अलग होती है। किसी मिट्टी में बिना मेहनत के खेती होती है, तो किसी में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और किसी-किसी में तो जी-तोड़ मेहनत के बाद भी उत्पादन में विशेष वृद्धि नहीं हो पाती। अतः सबसे पहला काम है मिट्टी को खेती के योग्य बनाना। इसके लिए सोचना पड़ेगा कि, कौन-सी भूमि किस फस्ल के लिए उपयुक्त है और कैसे उपयुक्त बनायी जा सकती है। एक प्रदेश की भूमि में चूना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलाने से उपज बढ़ती है, तो किसी जगह वही चूना मिलाने से उपज घट भी सकती है।

प्राय: सब कहीं किसान परम्परावादी होता है; और उसके कारण भी हैं। उसे नयी विधि की उपयोगिता का विश्वास दिलाना पड़ेगा। दूसरे देशों में आविष्कृत और उपयुक्त विधियों को अपनाते समय अपने देश की आवश्यकता के अनुसार उनमें क्या हेरफेर करना होगा – यह बात वैज्ञानिकों को सोचनी होगी।

बीज व खाद खरीदने के लिए ऋण, गोदाम, उचित दाम पर फस्ल बेचने की सुविधा भी जरूरी है। क्योंकि किसान नयी विधियाँ और उपकरण तभी अपनायेंगे, जब उन्हें उपज बढ़ाने से आर्थिक लाभ का पूरा आश्वासन हो।

यह उल्लेखनीय है कि, प्रति एकड़ उपज की मात्रा में सबसे अधिक वृद्धि उन्हीं देशों में हुई हैं, जिनमें औद्योगिक विकास तथा शहरी आबादी के कारण किसानों को कृषि-विकास के लिए आवश्यक उपकरण और उपज की बिक्री के लिए अच्छा घरेलू बाजार उपलब्ध हैं।

इस प्रकार अनुकूल सामाजिक-आर्थिक वातावरण और व्यापारिक संगठन उपज बढ़ाने और उसके समुचित वितरण दोनों के लिए आवश्यक। –'स्पान' से

जमीन की कोई कमी नहीं

संयुक्त राज्य अमरीका के सरकारी कृषि-विशेषज्ञों का यह कहना है कि, भूमि-नियोजन के जो उपाय अभी ज्ञात हैं, उनके द्वारा केवल २,५०,००,००० एकड़ जमीन का उपयोग कृषि में किया जा सकता है।

हमारी इस पृथ्वी पर कुल जितनी जमीन है, उसका यह लगभग आधा भाग होता है। रेगिस्तानों और पहाड़ी जमीन को कृषियोग्य नहीं माना गया है, गोकि इधर कुछ अर्से से इन प्रदेशों में भी खेती की नयी विधियों ने आश्चर्यजनक सफलता पायी है। सो यह गणना काफी अनुदार है; फिर भी इसके अनुसार हमें १६ अरब एकड़ अर्थात् विश्व की वर्तमान आबादी में प्रत्येक मनुष्य के पीछे आठ एकड़ जमीन खेती के लिए प्राप्त हो सकती है। आधुनिक आहार-शास्त्र की दृष्टि से कृषि-वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि, संतुलित भोजन के लिए आवश्यक समस्त खाद्य पदार्थ प्राप्त करने के लिए एक व्यक्ति के पीछे दो एकड़ जमीन पर्याप्त है।

यदि इस हिसाब से जमीन जोती जाये, तो भी संसार की तमाम कृषियोग भूमि का एक चौथाई भाग ही उपयोग में आयेगा। परंतु अभी तो पृथ्वी की तमाम कृषियोग जमीन के आठवें हिस्से में भी खेती नहीं हो रही है। – 'ज्याग्रफी आव हंगर' से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मफतलाल

ग्रुप की ओर से

शुभ कामनाएं

MAFATLAL GROUP

MIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदी और खुदा

इकबाल के काव्य के दार्शनिक पहलू की झाँकी।

खुदा और खुदी को ब्रह्म और जीव भी कह सकते हैं। वेदान्त की तरह फारसी कवियों ने भी अद्वैत की चर्चा की है। इकबाल की पर्शियन कविता पर भी इसकी छाया है।

तेरी खुदाई से है मेरे जुनूँ[1] को गिला, अपने लिए लामकाँ मेरे लिए चार सू[2]
फ़लसफ़ा और शेर की और हकीकत है क्या, हर्फे तमन्ना जिसे कह न सके रूबरू।

खिरदमंदों से क्या पूछूँ कि मेरी इब्तदा क्या है,
कि मैं इस फिक्र में रहता हूँ कि मेरी इन्तहा क्या है,
खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले,
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है ?

तू शब आफ़रीदी चिराग़ आफ़री दम,सफ़ाल आफ़रीदी अयाग़ आफ़रीदम,
बयाबानो कोहसार व राग़ आफ़रीदी, खयावानों गुलज़ार व बाग आफ़रीदम,
मनआनम कि अजसंग आइना साज़म, मन आनम कि अज ज़हेर नशीना साज़म

—तूने रात दी, मैंने दीया बनाया। तूने मिट्टी रची, मैंने प्याला बनाया।
तूने रेगिस्तान, पहाड़ और जंगल रचे। मैंने उद्यान, वाटिका और बाग लगाये।
यह मैं ही तो हूँ जिसने पत्थर को दर्पण बनाया।
और यह मेरी ही हस्ती है जिसने जहर को अमृत कर डाला।

पैकरे हस्तीज़ आसार खुदीअस्त, हरचे मी बिनी ज़ असरारे खुदी अस्त,
खिश्तन रा चुँ खुदी बेदार कर्द, आशिकारा आलमे पिंदार कर्द
सदजहाँ पोशिदा अंदर ज़ाते ऊ साज़द अज खुद पैकरे अगियार रा
ता फ़जायद लज्जते पैक़ार रा चूँ हयाते आलम अज़ ज़ोरे खुदी अस्त
पस बिक़द्रे इस्तवारी जिंदगी अस्त, चूँ जमीं बर हस्तिये खुद मुहमकमअस्त
माह पाबंदे तवाफ़ै पै हम अस्त, हस्तिए मेहर अज़ ज़मीं मोहकम तर अस्त
पस जमीं मशहूरे चश्मे, खावर अस्त।

—खुदाई का स्वरूप खुद का ही असर है। जो भी तुझे नज़र आता है खुद का

१ उन्माद, २ चारों ओर !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य है। जब खुद में चेतनता आ जाती है, तो खयालों की सृष्टियाँ प्रकट होती हैं। इसके राज में सैकड़ों सृष्टियाँ छिपी हुई हैं। अपने अस्तित्व का अहम् अनस्तित्व पर प्रकाश डालता है और खुद के जरिये ही इस दुनिया में अपने विरोध का बीज बोया जाता है। वह यों कि, खुद स्वंय कल्पना करने लगता है कि, वह इससे कोई भिन्न चीज है। वह अपने से ही दूसरे स्वरूपों को रचने लगता है, जिससे विरोधाभासों का मजा आये। चूँकि सृष्टि का जीवन खुद भी शक्ति से जन्म ग्रहण करता है, अतएव यह जीवन इसी शक्ति के अनुपात में है। चूँकि पृथ्वी अपनी कक्षा में दृढ़ है इसीलिए चंद्रमा उससे बँधकर चक्कर काटता है। परंतु सूरज का अस्तित्व पृथ्वी से अधिक शक्तिशाली है; इसलिए पृथ्वी सूरज से प्रभावित है।

सत्य और प्रीति

गाजु कुप्पेलोन गडगुचु दीपंबु एट्टुलुंडु ज्ञान मट्टुलुंडु ।।
उप्पु कप्पुरंबुलोक पोलिकनुंडुचुड रुचुल जाड वेरु
पुरुषुलुलो पुण्य पुरुषलु वेरया ।।
अनुवुगानि चोट अधिकुल मनराद्द कोचमुंडुटेल्ल कोदुव गादु
कोंड अद्दमंदु कोंच मै चुंडदा ।।

—वायुरहित शीशे की बोतल में रखने पर जैसे दीप निश्चल रहता है, उसी तरह मायारहित सिद्ध पुरुषों का ज्ञान स्थिर रहता है।

— नमक और कपूर देखने में एक से लगते हैं। चखकर ही उनके स्वाद का पता चलता है। उसी तरह सज्जन और दुर्जन का पता परिचय से ही मिल पाता है।

— दर्पण में प्रतिबिम्बित विशाल पर्वत की आकृति लघु लगती है; परंतु इससे पर्वत की महत्ता कम थोड़े हो जाती है!

— तेलुगु कवि वेमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगमे की मौत

करतारसिंह दुग्गल

यह गीत अम्बो बहन का है। एक दिन खेतों की ओर से लौटते मुझे उसने एक अमराई तले पकड़ लिया और अपनी शहद-जैसी मीठी आवाज में गा-गाकर सुनाया था :

पारे मैरे फुल सुणींदा
खिड़या नहीं पर खिड़सी ।

वह मेरी आँखों में देखती जाती और गाती जाती। मेरे हाथों को अपने गालों पर रख लेती और गाती जाती। गाती जाती और हँसती जाती। गाती जाती और रोती जाती। फिर जब भी कभी अपनी मुंडेर पर बैठी अम्बो बहन पड़ोस में मुझे आँगन में खेलता देख लेती, तो गीत के ये बोल गुनगुनाने लगती। गीत के ये बोल गुनगुनाती और मुस्कान जैसे उसकी नाक, कान, आँखों में से फूट-फूट निकलती।

जब भी छत पर बैठी अम्बो बहन यों गुनगुना रही होती, तो मुझे लगता, जैसे मुझे बुला रही हो। और मेरे कदम मन-मन के भारी हो जाते। मैं बिट-बिट उसकी ओर देखता रहता--अम्बो बहन का अटूट यौवन; साँवली-साँवली, प्याजी-प्याजी गालों पर एक तिल; बालों की कोई लट उड़-उड़कर उसके मुँह पर पड़ रही।

हर साल गर्मी की छुट्टी मैं अपने ननिहाल में गुजारा करता था। ननिहाल जाने की जब कभी बात चलती, तो मैं खिल-सा जाता। नाना नानी, ढेर-से मामू-मामियाँ; पर मुझे ननिहाल में केवल अम्बो बहन ही याद रहती।

एक बार गाँव में एक बेरी तले बेर ढूंढ़ रहा था। अम्बो बहन ने मुझे देखा और अपनी चुनरी मुझे पकड़ा, वह गिलहरी की तरह बेरी के ऊपर चढ़ गयी। एक-एक टहनी को झटकती। लाल बेरों से नीचे की धरती पट गयी। चुन-चुनकर मैं थका जा रहा था। मेरी जेब, मेरी झोली भर गयी। और ढेर-से बेर अभी बिखरे पड़े थे। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि, क्या करूँ, क्या न करूँ। न बेर छोड़े जाते, न बेर खाये जाते। और अम्बो बहन नीचे उतरी, काँटों से लहू-लुहान हो रही थी। उसके मुँह, माथे, हाथों, बाहों से लहू बह रहा था। हँसती-हँसती वह नीचे उतरी और मुझे छाती से लगा लिया।

दूध दुहने के लिए हवेली की ओर जाती हुई अम्बो बहन कभी जो मैं राह में मिल जाता, मुझे साथ ले लेती। हवेली में दूध दुहते वह मेरे मुँह में धारें छोड़ती रहती—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीघ्र, सुरक्षित निश्चित

घरेलू इलाज

Alembic

ग्लायकोडिन टर्प-वसाका

सूखी, साँस रोंधने वाली, और कष्टदायक
खाँसी का सुरक्षित और निश्चित घरेलू इलाज

A. 60.278 A. HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचकल्याण भैंस की धारें विलायती नस्ल की गाय की धारें। कभी धार मेरी आँखों में लगतीं, कभी धारें मेरे कानों में लगतीं, कभी धारें मेरी नाक में लगतीं, कभी धारें मेरे गालों पर लगतीं। आँखें मूँदे मैं दूध के लिए गर्दन को दायें-बायें नीचे-ऊपर घुमा रहा होता और अम्बो बहन हँसती भी जाती और धार-पर-धार छोड़ती भी जाती। दूध से भरे छलक रहे थनों को अपनी पोरों में पकड़कर इतनी लम्बी धार छोड़ती कि, पीते-पीते कई बार मुझे उबकाई आ जाती। पीता कम और गिराता ज्यादा। अम्बो बहन तो भी खुश! और यों दूध दुहते अक्सर हमें सायंकाल हो जाता। अम्बो बहन कहती—"जब तुम मेरे साथ होते हो, तो मुझे जरा डर नहीं लगता। नहीं तो अँधेरे में जवान लड़कियों को खौफ लगता है।"

यों खातिरों में खेलते-खेलते, मुझे पता भी न चलता और गर्मी की छुट्टियाँ खत्म हो जातीं। मैं शहर अपने घर लौट आता। फिर वही स्कूल का काम, फिर वही सड़कों की भीड़, फिर वही गली में चीत्कार और अगली गर्मी की छुट्टियाँ और ननिहाल की याद, जिंदगी को सुहाना बनाये रहती।

गर्मियों की एक दोपहरी। गाँव की नदी के उथले पानी में अपने साथियों के साथ नहा रहा था। घुटनों-घुटनों तक पानी में हम डुबकियाँ लगाते और एक-दूसरे पर छींटे मारते खेल रहे थे। अम्बो बहन ने मुझे देखा और मेरी उँगली पकड़ मुझे गहरे पानी की ओर ले गयी। अम्बो बहन मुझे तैरना सिखाने लगी। सारी दोपहर नदी के मोतियों-जैसे साफ पानी में हम आनंद से नहाते का रहे हम। अपनी बाहों, अपनी हथेलियों का सहारा देकर अम्बो बहन मुझे तैरना सिखा रही थी।

कभी वह मुझे अपने बाहुपाश में ले लेती, कभी मैं उसके कंधों पर हाथ रखकर पानी में लातें चलाने लगता। कभी वह मुझे अपनी पीठ पर चढ़ाकर कहीं-का-कहीं ले जाती। अम्बो बहन के जूड़े की भीनी-भीनी सुगंध..... नशे में मैं अपना सिर उसके रेशम-जैसी मुलायम बाहों पर टिका देता। उसकी पीठ पर पड़े, उसकी गर्दन के गिर्द अपनी बाहों को लपेटे मुझे लगता, जैसे मैं किसी सुरमई बादल के आँचल में लिपटा उड़ रहा हूँ। फिर अम्बो बहन मुझे एक हाथ से उसकी गर्दन और दूसरे हाथ से अपनी नाक पकड़ने के लिए कहती, और नदी के दायें किनारे से डुबकी लगाकर बायें किनारे पर जा पहुँचती, बायें किनारे पर डुबकी लगाती और दायें किनारे पर पहुँच जाती।

यों अम्बो बहन के साथ मुझे पानी में नीचे उतर जाना अच्छा-अच्छा लगता। यों अम्बो बहन के साथ मुझे पानी के ऊपर आना अच्छा-अच्छा लगता। कभी अम्बो बहन खुद किनारे पर बैठ जाती और मैं उसकी पानी में लटकी हुई टाँगों को पकड़कर मछली की तरह तैरने की कोशिश करता। सबसे मुझे अच्छा लगता, जब अम्बो बहन औंधी हो तख्ता-सा बनी, पानी की सतह पर लेट जाती, न हिलती, न डुलती,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी की लहरें-जैसे उसे झला-झला रही हों। यों अम्बो बहन का जूड़ा खुल जाता, और उसके गज-गज लम्बे बाल कभी इस तरफ से झाँकने लगते, कभी उस तरफ से झाँकने लगते। और अभी दोपहर ढली नहीं थी कि, अम्बो बहन ने मुझे तैरना सिखा दिया।

कोई भुट्टा मीठा निकलता, भुट्टे सेंकती अम्बो बहन मेरे लिए उसे सम्भालकर रख देती। बाजरे की कोई बाली मजेदार होती, बालियाँ तोड़ती अम्बो बहन मेरे लिए उसे अलग कर देती। जिस बेरी के बेर मुझे अच्छे लगते, उस बेरी के बेर और कोई नहीं तोड़ सकता था। तारा-मीरा अपने हाथों से बीनना मुझे अच्छा लगता था और अम्बो बहन खेतों की मेड़ों पर घूमती, फिर मुझे अपने साथ ले जाकर मेरे नन्हे-नन्हे हाथों से उसे चुनवाती।

सावन के दिनों में मेरे ननिहाल गाँव में झूले पड़ते थे। हर पीपल के नीचे झूला, हर अमराई के नीचे झूला, हर बूढ़ी बेरी के नीचे झूला। सुबह, शाम, दोपहर, लड़के-लड़कियाँ अपने-अपने काम से फारिग होकर झूला झूलते रहते। बड़ी गहमा-गहमी होती। चारों ओर रंग-बिरंगी चुनरियाँ, रंग-बिरंगे साफे, माहिए की तानें और ढोल के टप्पे।

और इन दिनों अम्बो बहन पोठोहारी जूता, लट्ठे की सलवार, डोरिये का कुर्ता और चितकबरा दुपट्टा लिये ऊँची-लम्बी यों लगती, जैसे झूला झूलती घिर-घिर आये बादलों में खो जायेगी। हर बार झूला झूलती ऊपर जाती, मुझे लगता अम्बो बहन लौट-कर नहीं आयेगी। पीपल की टहनियों को छू-छूकर आती, पीपल की पत्तियों को चूम-चूमकर आती। खिल-खिलाकर हँसती, और ऊपर पेंग चढ़ाये जाती। उसका दुपट्टा उसके गले में आन पड़ता, उसका कुर्ता उसके शरीर के साथ यों चिपकता कि, उसका अंग - अंग रेखांकित हुआ दिखाई देने लगता। कितनी-कितनी देर झूला झूलती अम्बो बहन न थकती, न हारती।

यों झूला झूलती हुई कभी वह मुझे पकड़ कर अपने साथ बैठा लेती। मैं उसकी छाती के साथ चिपक जाता। और घुँघरूओंवाली पेंग के मधुर संगीत में घंटों अम्बो बहन मुझे झूला झुलाती, अपने प्रिय गीत के बोल गुनगुनाती रहती। आँखें मूंदे ऊपर और ऊपर, आँखें मूँदे नीचे और नीचे। आँखें मूँदे फिर ऊपर और ऊपर, आँखें मूँदे फिर नीचे और नीचे।

हर बार यों झूला झूलकर हटती अम्बो बहन मेरी आँखों में आँखें डालकर कहती-"तुम जरा और बड़े हो जाओ। मैं तुम्हें झूला झुलाना सिखा दूँगी। पेंग पर बैठाकर तुम चाहे किसी को कहीं उड़ा ले जाना। और अम्बो बहुत दूर, बहुत दूर क्षितिज पर देखने लगती, जहाँ सूरज रंगों को लुटाता आँख-मिचौनी खेल रहा होता। तेरे मेरे बड़े होने में अभी कितने वर्ष बाकी थे।

और अम्बो बहन अपनी बाहों में उठाकर मुझे अपने सिर तक ले जाती और बार-बार कहती—"देखो तो सही, कितना बड़ा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है ! कैसा [illegible] है !" और फिर आप-ही-आप हँसने लगती, जैसे गलत सवाल को स्लेट पर से मिटा दिया जाये । हँसती-हँसती मेरे मुँह-सिर, मेरी नाक, मेरे कान, मेरे गले को चूमती रहती । अम्बो बहन को मुझे चूमना बहुत अच्छा लगता था । बात-बात पर लाड़ में मुझे प्यार करने लगती । मेरे होठों को अपने लबों में दबाकर चूसती रहती। मेरी उँगलियों को अपने दाँतों में लेकर चबाती रहती, मेरी हथेलियों को अपनी पलकों पर रखकर कितनी-कितनी देर तक नशे-नशे में उन्मत्त-सी, खोयी-सी पड़ी रहती ।

फिर किसी ने अम्बो बहन को याद दिलाया – " अरी, लड़के को यों दीवानों की तरह प्यार न करती रहा करो । यह अच्छा नहीं होता ।" मेरे ननिहाल गाँव में माना जाता था कि, जितनी बार कोई किसी को चूमे, उसकी उम्र के उतने पल कम हो जाते हैं । अम्बो बहन ने सुना और उसकी ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गयी । कितनी देर वह खड़ी सोचती रही । और फिर लाख उसे मुझ पर [illegible] मेरा चुम्बन नहीं लिया । उसके लब जैसे कँप-कँपाकर रह जाते; लेकिन उसने मेरा चुम्बन इसके बाद कभी नहीं लिया । कभी-कभी जब उसमें मेरे लिए मुहब्बत फूटती, तो वह अपने माथे को मेरे माथे के साथ जोड़ लेती । अपनी नाक को मेरी नाक के साथ रगड़ लेती । अपनी आँखों को मेरी आँखों में डाले दीवानों की तरह कितनी-कितनी देर देखती रहती।

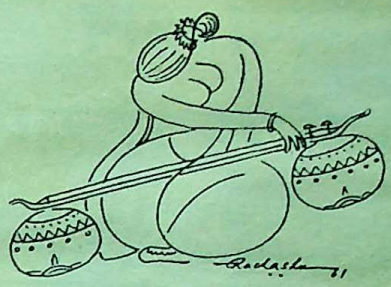

उत्सङ्गे वा मलिनवसने
सौम्य निक्षिप्य वीणां
मद्गोत्राङ्कं विरचितपदं
गेयमुद्गातुकामा ।
तन्त्रीमार्द्रां नयनसलिलैः
सारयित्वा कथञ्चिद्
भूयो भूयः स्वयमपिकृतां
मूर्च्छनां विस्मरन्ती ॥
– मेघदूत (उत्तरमेघ, २६)

मुझे अम्बो बहन का यह सब कुछ करना बहुत अच्छा लगता था । ननिहाल से लौटा । मुझे शहर में कभी अम्बो बहन का यों लबालब प्यार से भरी पलकों से देखना याद आ जाता और मैं खिल उठता । यों लगता, जैसे दिल के किसी कोने में एक स्वर्ग आन बसा हो । और अक्सर उस स्वर्ग में छुपकर बैठ जाता ।

नीचे गली में किसी बेलौस हँसी की आवाज आती और मैं खिड़की से झुककर देखता– कहीं अम्बो बहन तो नहीं । हर सुंदर लड़की के चेहरे में मुझे अम्बो बहन की झलक दिखाई देती । कभी स्कूल से लौटते जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध में पानी की मिलावट को रोकने के लिए क्या आप पानी में रंग मिलाएँगे?

दूध में पानी मिला हो तो हम दूधवाले को दोष देते हैं, न कि हमें पानी देनेवाली नगरपालिका को। और न हम यह सलाह ही देते हैं कि इस मिलावट को रोकने के लिए पानी में रंग मिलाया जाए।

लेकिन बिलकुल ऐसे ही एक और मामले में, यानी जब घी में वनस्पति की मिलावट की जाती है तो कुछ लोग वनस्पति में रंग मिलाने की ज़ोर-शोर से माँग करते हैं।

घी में मिलावट के लिए धोखेबाज़ लोग कई तरह की चीज़ें इस्तेमाल करते हैं—सिर्फ़ वनस्पति ही नहीं! मान लीजिए कि वनस्पति में रंग मिला कर या और कोई तरक़ीब से हम घी में वनस्पति की मिलावट को रोक भी सकें...तो भी मिलावट करनेवालों को तो खनिज तेल और मरे हुए जानवरों की चर्बी जैसी चीज़ें मिलती ही रहेंगी। ये चीज़ें अशुद्ध, घृणाजनक और स्वास्थ्य के लिए अक्सर हानिकारक भी होती हैं। इसलिए वनस्पति में रंग मिलाना बेकार है।

मिलावट को रोकने के दो अच्छे उपाय

घी में होनेवाली मिलावट को रोकने के लिए ये दो उपाय बहुत ही आसान और असरदार हैं:

१. घी को मुहरबन्द डिब्बों में ही बेचा जाए... वनस्पति और, कुछ शहरों में, दूध वग़ैरह जैसे दूसरे खाद्य-पदार्थ भी मुहरबन्द ही बेचे जाते हैं।

२. खाद्य-पदार्थों सम्बन्धी क़ानूनों को पूरी तरह व सख्ती से अमल में लाया जाए। लेकिन स्वास्थ्य के मामले में नरमी से काम नहीं लिया जा सकता!

वनस्पति-जैसी ही चिकनाइयाँ दुनियाभर में इस्तेमाल की जाती हैं

अल्बानिया, अल्जेरिया, अर्जेण्टीना, ऑस्ट्रेलेशिया, ऑस्ट्रिया, बेल्जियम, ब्राज़ील, ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका, बल्गेरिया, बर्मा, कैनडा, सेण्ट्रल आफ्रिकन फ़ेडरेशन, चेकोस्लोवाकिया, डेनमार्क, इथियोपिया, फ़िनलैंड, फ़्रान्स, पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी, ग्रीस, हंगेरी, भारत, ईरान, ईराक, आयरलैंड, इसराईल, इटली, जापान, लिबिया, मलाया, मेक्सिको, मोरक्को, नाइजीरिया, नॉर्वे, हॉलैंड, पाकिस्तान, पोलैंड, पुर्तुगाल, रुमानिया, सउदी अरेबिया, स्वीडन, स्विट्ज़रलैंड, तुर्की, दक्षिण अफ़्रीका, रूस, युनाइटेड अरब रिपब्लिक, इंग्लैंड, अमेरिका, धमन, यूगोस्लाविया

ज़्यादा जानकारी के लिए इस पते पर लिखिए:

दि वनस्पति मैन्युफ़ैक्चरर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया

इंडिया हाउस, फ़ोर्ट स्ट्रीट, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे देर हो जाती, ममता में बेचैन खिड़की में खड़ी मेरी अम्मी की नजरों में क्षण-भर के लिए मुझे अम्बो बहन की सूरत दिखाई दे जाती। मेरी सबसे प्रिय चीज मुझे दे रहे हाथ अम्बो बहन के हाथ लगते, और मैं उन्मत्त-सा हुआ पलकें मूंदे रहता।

यों सपनों से खेलते-खेलते फिर गर्मी की छुट्टियाँ हो जातीं। फिर मैं अपने ननिहाल पहुँच जाता।

इस बार जब मैं ननिहाल आया, मेरे पास छर्रों की एक बंदूक थी। बंदूक मुझे नयी-नयी लेकर दी गयी थी। और उसे मैं हर समय उठाये चलाता रहता। मुंडेर पर बैठी हर चिड़िया का, हर कबूतर का मैं निशाना बनाता। और हर बार मुझे महसूस होता, छर्रा जरूर अपने निशाने पर लगा है और पक्षी घर जाकर मर जायेगा। हर कोई मेरी हाँ में हाँ मिलाता रहता। किसी को किसी पक्षी का पर टूटा हुआ दिखाई देता, किसी को किसी पक्षी के लहू की बूँद टपकती नजर आती। सारा दिन मेरा इस नये खेल में मस्त बीत जाता।

बहुत दिन नहीं गुजरे थे कि, एक दोपहर मैं अपनी बंदूक थामे अम्बो बहन को ढूँढ़ने निकला। वह पिछले बरामदे में अकेली बैठी थी। पता नहीं, किस सोच में डूबी थी। मुझे आता देखकर खिल-सी गयी। उसके होंठ थिरकने लगे। मेरे हाथों में बंदूक देख कर अम्बो बहन बरामदे की छत पर बैठी एक मैना की ओर इशारा करके बोली—"मारो तो।" और आँख झपकते में मैंने निशाना साधकर बंदूक चला दी। छर्रा मैंने छोड़ा और बजान मैना औंधी हुई सामने फर्श पर आन गिरी।

अम्बो बहन का मुँह खुला-का-खुला रह गया। मैंने सचमुच मैना को निशाना बना दिया था। अम्बो बहन का जैसे लहू सूख गया हो। वह पीली-जर्द हो गयी—जैसे प्याज का छिलका हो।

और अगले क्षण टूटकर जैसे उसने मुझे अपने बाहुपाश में ले लिया। मेरे मुँह, माथे, गालों, पोर-पोर को प्यार करती वह दीवानी हो गयी। अपने घर के पीछे, उस चिल-चिलाती दोपहरी में अम्बो बहन ने मुझे इतना प्यार किया, इतना प्यार किया और फिर फूट-फूटकर रोने लगी। रोये जाती, रोये जाती।

उस शाम मेरी नानी के पास बैठी अम्बो बहन मैना की कहानी कहने लगी—"जैसे तीर किसी की छाती में जा लगता है, यों इसने दे मारी।" बार-बार अम्बो बहन ये कहती और बार-बार अपनी छाती पर हाथ रख लेती। "अब इसका ब्याह कर दो ताई, अब ये जवान हो गया है।" और अम्बो बहन की पलकें गीली हो गयीं। पहली बार आज मैं अम्बो बहन की ओर देख रहा था और वह मेरी ओर नहीं देख रही थी।

अगली सुबह जिन्होंने अम्बो बहन को सोकर उठते हुए देखा, उनका कहना है कि, उसकी आँखें सूजी हुई थीं।

वह दिन और आज का दिन—अम्बो बहन फिर मुझे कभी नहीं मिली। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ माँ, आओ

—स्वामी विवेकानंद

तारे लुप्त हुए, मेघों पर जमे मेघ,
घोर तमस् का फैल रहा है जटा-जाल,
निर्घोषित भीषण घूर्णि-वात में
भटक रही हैं आत्माएँ विक्षिप्त ,
कोटि-कोटि जनगण की—
कारागृह से हो जैसे सद्यःविमुक्त,
हिल रही जड़ें वृक्षों की,
पथ है प्राणि-शून्य ।
महासिंधु संघर्षण रत,
कर आवर्तित संवर्त-शैल,
महागगन छू लेने को हैं
अंधकार के उठे हाथ,
शत-सहस्र प्रतिबिम्ब मृत्यु के
मलिन कृष्ण—
आधि-व्याधि, अवसाद बाँटते
नाच रहे उन्मत्त नृत्य
अनुक्षण सहर्ष !
आओ, माँ, आओ !
(क्योंकि) है ' भीति ' तुम्हारा नाम
श्वास में स्वयं ' मृत्यु ' है,
छंदित चरणों की प्रति गति से
एक-एक संसृति हो जाती है विनष्ट,
फिर कभी न बसती !
सर्वध्वंसी महाकाल तुम स्वयं !
आओ, माँ, आओ !
साहस हो जिसमें, दुःखों को दुलराये जो
और मृत्यु के रौद्र वेश के
आलिंगन की जिसमें क्षमता,
द्वंद्वहीन जो प्रलय-काल के महानृत्य में
नर्तन करता,
माँ उसके ही शीश चूमती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपद्रवी हाथियों के घेरे में

हरिवंश वेदालंकार

अवकाश दिवस के घंटाध्वनि की गूँज अभी पूर्णतया शांत भी न हुई थी कि, महाविद्यालय के छात्रों का एक बड़ा दल धनुष-बाण, भाले-बर्छे लेकर आखेट के लिए हिमालय के सघन वनों की ओर बढ़ चला ।

वृक्ष-शिखरों का आलिंगन करते हुए उत्तर दिशा की ओर बढ़नेवाले श्यामल मेघों के कारण वह दिन ऐसा रमणीय बन गया था कि, उसकी शोभा देखते ही बनती थी। मादकता की निरंतर वर्षा करनेवाली ऐसी काली घटाएँ हरिद्वार के निकट कदली वन पर पहली बार घुमड़ी थीं । एक तो हृदय में नवयौवन का नशा; उस पर अनध्याय का आनंद; तिस पर अत्यंत उदार भावना से बादलों द्वारा उंड़ेला जाने-वाला उन्माद ।

हमारे सामने था हिमालय का महावन—महाकवि के हृदय की तरह विशाल । भीषणता, रमणीयता, हिंसा, दयालुता आदि परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों से भरपूर होता हुआ भी, जीवमात्र के लिए अपने अंतर में अखंड करुणा को बसाये हुए । यहाँ की वनस्थली, सहस्रों वर्षों से ऋषि-महर्षियों की तपस्याओं के लिए, शेर-चीतों की क्रूरताओं के लिए और मदोन्मत्त हाथियों के हुड़दंग के लिए सम्मिलित रंगभूमि रही है । इन पर्वतों में व्याघ्रों, भालुओं, अजगरों, विषधर नागों और बिच्छुओं के दल-के-दल निवास करते हैं ।

हमारा आखेटक दल उस गजयूथ को तीरों और बर्छों का मजा चखाने जा रहा था, जिसने विगत अनेक वर्षों से, हमारे आश्रम में आतंक का साम्राज्य स्थापित कर रखा था । हाथियों का यह खूँखार और उपद्रवी दल कभी तो पच्चीस मील दूर मालिनी तीरवर्ती कण्वाश्रम में लताओं और वृक्षों को तोड़ता-मरोड़ता और अगले दिन ही हरिद्वार के समीप हमारे विद्या-विहार में आकर आम्र-कुंजों और कदली-वाटिकाओं को उजाड़ता । इसी दल का एक भीषणा-कृति काना हाथी तो हमारी तपोभूमि के चारों ओर नित्य ही चक्कर काटता रहता ।

कल्पनाओं और विचारों में निमग्न छात्र-समूह हाथियों के झुंड और काने हाथी की खोज करता हुआ सघन-से-सघन और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी खाँसी?

जरा-सा

अमृतांजन

आपको तुरन्त आराम पहुंचायेगा

सर्दी-खाँसी, बुखार और गठियावात की तकलीफों से अपने परिवार को बचाइए। जरा-सा **अमृतांजन** तकलीफ मिटाने के लिए काफी है इसलिए एक शीशी महीनों चलती है।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास-४

इसके अलावा बम्बई-१, कलकत्ता-१ और नई दिल्ली-१

JWTAM 1425

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयानक-से-भयानक वनों में प्रविष्ट होता जा रहा था। दल के इक्के-दुक्के सदस्य मार्ग की पार्श्ववर्ती कंदराओं-गुहाओं में अपने पूर्व परिचित गीदड़ों, भेड़ियों, उल्लुओं, बानरों और लंगूरों से सलाम-नमस्कार करते और अनुपस्थित मित्रों के लिए प्रेम-संदेश छोड़ते आगे बढ़ रहे थे। कई घंटों के बाद यह दल सरिता के तट पर जलाशय के निकट एक भारी वटवृक्ष के नीचे पहुँचा। उस वृक्ष पर चालीस फीट की ऊँचाई पर एक बड़ी मचान बाँधी गयी, ताकि वहाँ क्रीड़ा को आनेवाले हाथियों से मुठभेड़ की जा सके। रात्रि का अंधकार आने से पूर्व ही, हाथों में दृढ़ता से भालों को पकड़कर और धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाकर हम मचान पर जा बैठे। हमारे कान वनों से उठनेवाली बारीक-से-बारीक और छोटी-से-छोटी ध्वनि को ग्रहण करने और उसकी परीक्षा करने में तत्पर हो गये।

अर्धरात्रि की नीरवता में अकस्मात् 'इ इ भ भ ह ह' का हृदयद्रावक नाद सुनते ही हम चौकन्ने हो गये। यह घोर ध्वनि गजराज की थी, जो अपने यूथ के साथ जलाशय की ओर आ रहा था। देखते-ही-देखते विशाल यूथपति अपनी मस्तानी चाल के साथ झूमता हुआ, मचान के नीचे से गुजरा। हमारे बाण एकाएक चंचल हो उठे; किंतु यूथ में हाथियों की संख्या जानने की इच्छा और गिरोह के बलाबल की जिज्ञासा के कारण उन्हें शांत करना पड़ा।

एक-एक करके लगभग सत्तर की संख्या में हथिनियाँ, छोटे बच्चे, वृद्ध गज हमारे नीचे से गुजर गये। इनमें तीन बच्चे तो बहुत ही छोटे थे, जो आकृति में भैंस के पाड़े के बराबर थे; किंतु शरीर भरा हुआ गोल-मटोल व सुंदर। उन्हें देखते ही किसी एक को पकड़ लेने का लोभ हमारे मन में समा गया। रात्रि की इस वेला में और उस डरावने वन में गज-शावकों को पकड़ने की चेष्टा करना यमराज को निमंत्रित करना था। अतः उन्हें अगले दिन पकड़ने का निश्चय कर वह रात्रि व्यतीत हुई।

अगले दिन हम प्रातः हाथियों के पद चिह्नों को देखते हुए और उनका अनुसरण करते हुए आगे बढ़े। दो घंटे की खोज के पश्चात् चारों ओर पर्वतों से घिरे हुए हरे-भरे वृक्षों से आच्छादित कानन-कुंजों में विश्राम करते हुए उस समस्त गज-यूथ को पाकर हमें परम आनंद हुआ। आत्म-रक्षा की सुविधा के साथ-साथ, गज-गिरोह पर आक्रमण करने का इससे अच्छा स्थान उस प्रदेश में कदाचित् ही कहीं उपलब्ध होता। जिस ऊँची शिला पर हम खड़े थे—गजराज उससे पंद्रह गज नीचे ही बाँस की पत्तियों को खा रहा था और हमारी ओर उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देख रहा था। थोड़ी देर में वह मस्ती के साथ पीछे मुड़ा और वृक्षों के पत्ते खाता हुआ नाले के रास्ते से निकलकर अपने झुंड से दूर हो गया। हमारी कार्य-सिद्धि के लिए यह बड़ा ही उत्तम अवसर हाथ आया।

बड़े-बड़े दाँतोंवाले दर्जनों मत्त मातंगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी इंडियन स्मैल्टिंग एंड रिफ़ाइनिंग कम्पनी लि०

"इन्डस्ट्री हाऊस", १५९, चर्चगेट रीक्लेमेशन, बम्बई—१

केबल : ISARC' ★ फोन : २४५००६
२४६२६१

ब्रेंजिंग सोल्डर इंगोट्स (धातुओं की सिलें), ग्रेनूल्ज़ (छोटे दाने) तथा कोल्ड-रोल्ड इन्डस्ट्रियल ब्रास शीट्स, स्ट्रिप्स (पत्तियां) व कोयल्स का निर्माण करके

उद्योग की सेवा करती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

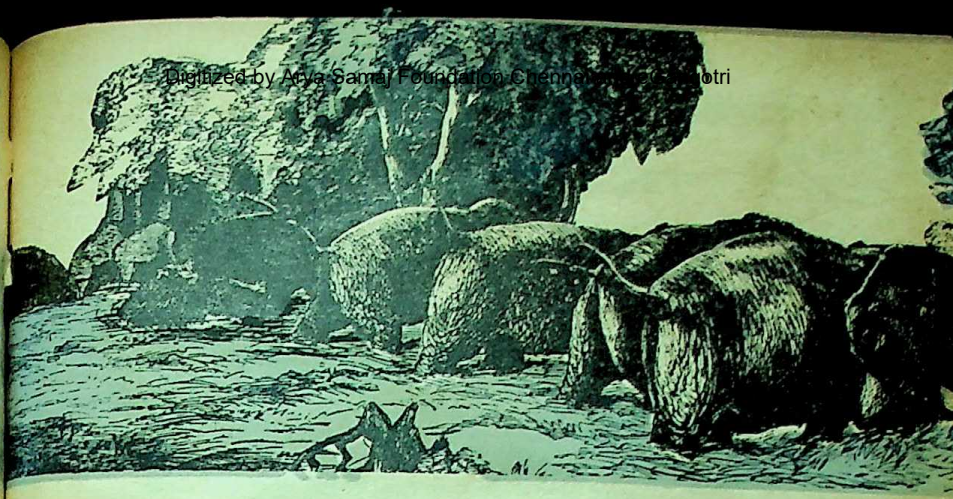

हाथियों का गंगा-विहार

से परिपूर्ण वह वन-प्रदेश हमारे द्वारा घेर लिया गया। छात्र-मंडल चारों ओर के पर्वतों पर छा गया। मोर्चा-बंदी दृढ़ कर ली गयी। दल-नायक का संकेत होते ही हाथियों पर बाण-वर्षा प्रारम्भ हुई। बर्छे फेंके गये। पाषाण-खंड लुढ़काये गये। हाँके के शोर से वन-पर्वत गूँज गये। इस आकस्मिक आक्रमण से विश्राम करते हाथी उठ खड़े हुए। तीरों की बौछार से वे बेचैन हो उठे। दलपति को न देखकर वे घबरा गये और उनमें भगदड़ मच गयी। जिस नाले में गजराज गया था, सब उसी ओर भागे। तीनों बच्चे अपनी माताओं से आगे बढ़कर भाग चले और कुछ ही क्षणों में दृष्टि से ओझल हो गये। बाकी रह गया गजयूथ के भागने के कारण उड़ता हुआ गर्द-गुबार। हमारा मन निराशा से भर गया।

सबसे पीछे भागनेवाली हथिनी के साथ एक पंद्रह दिन के गज-शिशु को देखकर चित्त प्रसन्न हो उठा। हथिनी अपनी सूँड का सहारा दे-देकर उसे पर्वत पर चढ़ा रही थी और उस कोलाहलमय संग्राम में अकेली पड़ जाने के कारण घबरा रही थी। चिकनी मिट्टी पर पैर फिसल जाने के कारण शिशु एक छोटी-सी खाई में लुढ़क गया और गड्ढे में उतर न सकने के कारण माता को वहाँ से भागने के लिए विवश होना पड़ा। हमने इस अवसर का यथेष्ट लाभ उठाया और शीघ्रता से खाई में उतरे। बाँसों और लकड़ियों को एकत्र करके हमने एक शिविका बनायी और उस पर बच्चे को बाँधकर कंधों पर उठाया और तेजी से उसे मचान की ओर ले चले।

अभी आधे रास्ते में ही थे कि, हथिनी तीन हाथियों को अपने साथ लिये शिशु को छुड़ाने के लिए दौड़ती हुई आयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल तभी तक सुन्दर हैं जब तक स्वस्थ हैं

भारतवासियों के घने मुलायम बालों की चर्चा संसारभर में है। काले, घने, चमकदार बालों वाली भारतीय नारी प्रतिदिन अपने बालों की देखभाल करती है। वह जानती है कि बालों की शोभा बनाये रखने के लिए इन की जड़ों को तेल से मज़बूत बनाना भी ज़रूरी है। हमारे बालों की जड़ों में कुछ प्राकृतिक तेल रहते हैं। इन में जो कमी होती रहती है उस को पूरा करने के लिए एक अच्छे तेल की ज़रूरत है। **टाटा के कोकोनट और कॅस्टर हेअर ऑयल** शुद्ध और पौष्टिक होने से बालों की जड़ों को ताकत पहुँचाते हैं... स्वस्थ सुन्दर बाल उगाने में मदद करते हैं...बालों को ख़ास चिपचिपा किये बिना एक नई शोभा प्रदान करते हैं...टाटा के कोकोनट और कॅस्टर हेअर ऑयल की भीनी भीनी सुगन्ध भी बड़ी प्यारी है और ये तीन साइज़ की शीशियों में मिलते हैं।

टाटा के हेअर ऑयल

THOY-12HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौभाग्यवश एक सैनिक की दृष्टि उस पर पड़ गयी और हम सब शिविका को भूमि पर रखकर, सिर पर पैर रखते हुए पर्वत की खड़ी चढ़ाई की ओर लपके। जान बची, लाखों पाये। अन्यथा उस संकीर्ण नाले में हाथियों द्वारा हमारी दुर्गति की जाती।

थोड़ी ऊँचाई पर पहुँचते ही बाणों और पत्थरों की वर्षा की गयी और हाथी मैदान छोड़ भाग खड़े हुए। तत्पश्चात् हम चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि रखते हुए चले और सायंकाल वटवृक्ष के नीचे आ पहुँचे।

गजराज के नेतृत्व में वारणदल का प्रबल आक्रमण सुनिश्चित था; अतः तनिक भी देर न करके गजशिशु के चारों पाँवों को वट की मोटी जड़ों के साथ रस्सी से दृढ़तापूर्वक बाँध दिया। उस अल्प समय में, जितने अधिक-से-अधिक पत्थर ऊपर चढ़ाये जा सकते थे, उतने मचान पर और वृक्ष की मोटी डालों पर रख दिये गये। सूर्यास्त होते ही हम सब अपने-अपने मोर्चे पर युद्ध के लिए तैयार हो गये।

नाले के मुहाने पर खड़ा सघन चीड़ वृक्ष अचानक एक जोरदार झटके से काँप उठा और क्रोधोन्मत गजराज अपनी सूँड ऊपर ऊठाये प्रकट हुआ और गगन-भेदी स्वर में चिंघाड़ उठा। गजेंद्र की उस गर्जना को सुनकर 'इभः" "इभः" की ध्वनि करते हुए विशताकार गज चारों ओर से हमारे मचान की ओर झपटे। अंतःकरण को दहलानेवाली हाथियों की यह चिंघाड़ पहाड़ों में प्रतिध्वनित होकर सौगुना भयानक हो उठी और हमें सब ओर से अपनी ओर बढ़-बढ़कर हमला करनेवाले विकराल हाथी-ही हाथी दिखाई पड़ने लगे। हमें इस बात का डर हो गया कि, यदि ये पाँच-सात दानव मिलकर वृक्ष को उखाड़ने की चेष्टा करें, तो यह वृक्ष कुछ ही मिनिटों में धराशायी हो जायेगा।

क्षण-प्रतिक्षण वृक्ष से आ जूझनेवाले हाथियों पर बाण-वर्षा की गयी; किंतु वे इनकी पीड़ा से और भी झुँझला उठे। वट के नीचे पहुँचते ही गजराज ने एक बड़ी ही जोरदार टक्कर दी। मचान समेत सारा वृक्ष हिल गया और डालों पर रखे गये पत्थर लुढ़ककर धड़ाधड़ उसकी पीठ पर गिरे। ओलों की वर्षा उस यूथपति ने अनेक बार झेली थी, किंतु इतने बड़े-बड़े ओलों का मजा आज पहली बार ही उसने चखा था। पाषाण-खंडों से घायल होकर वह कुछ पीछे हटकर खड़ा हुआ।

अचानक शेर के प्रचंड गर्जन से वन और पर्वत गूँजने लगे। गजराज ने पीछे मुड़कर देखा कि, वनराज उसे युद्ध के लिए ललकार रहा है। उसके निकट ही गजशावक बँधा खड़ा था। संतति-रक्षा की जिम्मेदारी पशुओं में विशेष रूप से अपनी जान पर खेल जाने का जोश भर देती है। यूथपति के साथ ही अनेक बड़े-बड़े दाँतवाले हाथियों ने मदोन्मत होकर शेर पर धावा बोल दिया। उसी ओर गुफा में शेरनी अपने तीन बच्चों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी पा व ली

एवं

नव - वर्ष

की

शु भ का म ना एँ

अगरचन्द चम्पालाल

अगर एजेंसी

हलवाई लेन

रायपुर

कपड़े के व्यापारी और कमीशन एजेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूध पिलाती हुई [illegible] उत्साह बढ़ा रही थी और विक्रांत शेर अपने अपूर्व युद्ध-कौशल से अकेला ही अनेक हाथियों से जूझ रहा था। दाहिनी ओर के नाले से निकलकर तीन विशालकाय हाथियों ने जब शेर को घेर लिया, तो शेरनी तमाशबीन की तरह केवल देखती ही नहीं रही, वह उन तीनों पर बगल से टूट पड़ी और बड़े संगीन मौके पर उसने शेर को बच निकलने का मौका दिया। शेर के बच्चों ने भी अपनी गुफा के निकट आये छोटे-मोटे हाथियों पर आक्रमण करके उन्हें दूर भगा दिया।

शेर हाथी के बच्चे का शिकार करके शेरनी की क्षुधा शांत करना चाहता था। उसकी इस इच्छा को जानकर हाथी शेर को खदेड़ते हुए उसकी गुफा तक पहुँचा देते। कभी शेर हाथियों को खदेड़ता हुआ वट-वृक्ष के निकट तक पहुँचा देता। कभी हाथी बच्चे को छुड़ाने के लिए वृक्ष के नीचे आते और वर्छा, बाण तथा पाषाण-वर्षा से भगा दिये जाते। कभी शेर बच्चे पर घात लगाता हुआ आता और तीरों की मार खाकर वापस लौट जाता। हम शेर और हाथी दोनों से ही बच्चे की रक्षा कर रहे थे। और हाथी भी शेर के आक्रमण से बच्चे की रक्षा करना चाहते थे; साथ ही हमारे हाथ से बच्चे को छीनने के लिए जोर भी लगा रहे थे। शेर का आक्रमण भी हमारे और हाथियों के विरोध में था। इस प्रकार तीनों पक्षों का यह युद्ध अविराम जारी था। [illegible] की दहाड़, हाथियों की चिंघाड़, और धमा-चौकड़ी से वन-भूमि काँप रही थी। चतुर्दशी की चाँदनी रात में हाथियों की काली-काली छायाएँ वन-प्रदेश में बादल की टुकड़ियों की भाँति मँडरा रही थीं। बीच-बीच में शेर की क्रूर चमकीली आँखें बिजली की तरह चमक जातीं। सारी रात यह तूफान इसी रफ्तार से चलता रहा।

आश्चर्य और खेद से हमने देखा कि, गजशावक के तीन पैरों की रस्सियाँ टूट चली हैं और चौथे पैर का बंधन भी टूटने-वाला है। अचानक वह शावक मुक्त होकर गज-यूथ की ओर लपक पड़ा; परंतु हमने मार्ग रोककर उसे पुनः बंदी बना लिया।

दस-ग्यारह घंटे की वह रोमांचकारी रात व्यतीत हो गयी। हाथी निराश होकर वनांतरों में चले गये और अब सूर्य की सुनहरी किरणें बर्फीली चोटियों को रंग रही थीं।

अठारह घंटों से भूखे कलभ को(गजशावक का नामकरण किया गया था)गुड़ चटाते-चटाते गुरुकुल काँगड़ी ले आये। अब वह भी हमारे आश्रम का एक नवप्रविष्ट लघु ब्रह्मचारी था। तीन दिन तक वह आर्तनाद करता हुआ अपनी माँ को पुकारता रहा। बाद में मानव-शिशुओं से दिन-रात मिलने-वाले प्यार में वह सब कुछ भूल गया। आकाश में उमड़ते बादलों को देख वह परमानंदित होता। पढ़ाकू विद्यार्थियों के हाथ से पुस्तक छीनकर दूर फेंक देता और उनके गले में सूँड डालकर अपना हार्दिक प्रेम जतलाया करता। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश करते हैं 'एम्बेसेडर'

बंगाल पॉटरीज के चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तनों में एम्बेसेडर एक नयी और सुन्दर आकृति है। 'अॅटम' की सुन्दर सजावट मन को मोह लेती है। किनारे पर सुन्दर सुनहरी रेखा हैं। इसकी टी, कॉफी और डीनर सेट पायी जाती हैं। सेट नं० डी ४२२

बंगाल पॉटरीज लिमिटेड

BENGAL POTTERIES BP INDIA

चीनी मिट्टी के सुन्दर बर्तनों के निर्माता

एकमात्र विक्रय प्रतिनिधि : एलायड डिस्ट्रिब्यूटर्स ऐण्ड कं०, ३३ ब्रेबर्न रोड, कलकत्ता-१

C-36 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसिकों की पसंद

धोती

सचाहीरा • ब्रेसलेट • किंग्ज वेअर

इंद्र धनुष • प्युअर गोल्ड • राज राजेंद्र

केम्ब्रिक

नोबल लार्ड • नोबल नाइट • २७१

१९७ • ३५६ • १६१ • ७८७

निर्माता फिनले - उत्कृष्ट वस्त्रोंके उत्पादक

दि फिनले ग्रुप आफ मिल्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्वशी

कवि दिनकर के बहुचर्चित नवीनतम काव्य का शिवसागर मिश्र-कृत

संक्षिप्त रूपांतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे पृथ्वी पर वसंत की कुसुम-विभा छायी है
ऊपर है चंद्रमा द्वादशी का निर्मेघ गगन में,
खुली नीलिमा पर विकीर्ण तारे यों दीप रहे हैं,
चमक रहे हों नील चीर पर बूटे ज्यों चाँदी के;
या प्रशांत निःसीम जलधि में जैसे चरण-चरण पर
नील वारि को फोड़ ज्योति के द्वीप निकल आये हों ।

[राजा पुरूरवा की राजधानी प्रतिष्ठानपुर के समीप एकांत पुष्पकानन में सूत्र-धार और नटी चंद्रिका-स्नात प्रकृति की शोभा का पान कर रहे हैं । तभी आकाश में नूपुर-ध्वनि सुनाई होती है । बहुत-सी अप्सराएँ नीचे उतरती हैं ।]

नटी–शांति-शांति सब ओर, किंतु यह क्वणन-क्वणन स्वन कैसा ?
अतल व्योम-उर में ये कैसे नूपुर झनक रहे हैं ?
कलकल करती हुई सलिल-सी गाती, धूम मचाती
अम्बर से ये कौन कनक-प्रतिमाएँ उतर रही हैं ?

सूत्रधार–देवों की रणक्लांति मदिर नयनों से हरनेवाली,
स्वर्गलोक की अप्सरियाँ, कामना काम के मन की ।

नटी–पर सुरपुर को छोड़ आज ये भू पर क्यों आयी हैं ?

सूत्रधार–यों ही, किरणों के तारों पर चढ़ी हुई क्रीड़ा में
इधर-उधर घूमते कभी भू पर आ जाती हैं ।
या सम्भव है, कुछ कारण भी हो इनके आने का ।
क्योंकि मर्त्य तो अमर-लोक को पूर्ण मान बैठा है,
पर कहते हैं, स्वर्ग-लोक भी सम्यक् पूर्ण नहीं है ।
पृथ्वी पर है चाह प्रेम को स्पर्शमुक्त करने की
गगन रूप को बाँहों में भरने को अकुलाता है ।

[सूत्रधार और नटी एक घने वृक्ष की छाया में छिपकर अप्सराओं का वार्तालाप सुनने लगते हैं ।]

अलका–कौन भेद है, क्या अंतर है धरती और गगन में
उठता है यह प्रश्न कभी रम्भे ! तेरे भी मन में ?

रम्भा–प्रश्न उठे या नहीं ; किंतु प्रत्यक्ष एक अंतर है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मर्त्यलोक मरनेवाला है, पर सुरलोक अमर है।

मेनका—क्या है यह अमरत्व ? समीरों-सा सौरभ पीना है,
मन में धूम समेट, शांति से युग-युग तक जीना है।
पर सोचो तो, मर्त्य मनुज कितना मधु-रस पीता है!
दो दिन ही हो, पर कैसे वह धधक-धधक जीता है।
इन ज्वलंत वेगों के आगे मलिन शांति सारी है,
क्षण-भर की उन्मद तरंग पर चिरता बलिहारी है।

सहजन्या—साधु ! साधु ! मेनके ! तुम्हारा भी मन कहीं फँसा है;
मिट्टी का मोहन कोई अंतर में आन बसा है ?
सखी उर्वशी-सी तुम भी लगती कुछ मदमाती हो,
मर्त्यों की महिमा तुम भी तो उसी तरह गाती हो।

रम्भा—आज हमारे साथ यहाँ उर्वशी क्यों नहीं आयी ?

[कुबेर-सदन से लौटती हुई उर्वशी के केशी नामक दानव द्वारा बलात् अपहरण किये जाने और प्रतिष्ठानपुर के राजा पुरूरवा द्वारा बचाये जाने का वृत्तांत सुनाकर सहजन्या कहती है।]

सहजन्या—इसीलिए तो सखी उर्वशी, ऊषा नंदनवन की,
सुरपुर की कौमुदी, कलित कामना इंद्र के मन की,
पुरुष-रत्न को देख न वह रह सकी आप अपने में,
डूब गयी सुरपुर की शोभा मिट्टी के सपने में।

रम्भा—प्रेम मानवी की निधि है, अपनी तो वह क्रीड़ा है;
प्रेम हमारा स्वाद, मानवी की आकुल पीड़ा है।
अपना है आवास, न जाने, कितनों की चाहों में,
कैसे हम बँध रहें किसी भी नर की दो बाँहें में ?
और वह भी इस पृथ्वी पर ?
जहाँ प्रेम राक्षसी भूख से क्षण-क्षण अकुलाता है,
प्रथम ग्रास में ही यौवन की ज्योति निगल जाता है;
धर देता है भून रूप को दाहक आलिंगन से,
छबि को प्रभाहीन कर देता ताप-तप्त चुम्बन से;
इसी देव की बाँहों में झुलसेंगी अब परियाँ भी,
यौवन को कर भस्म, बनेंगी माता अप्सरियाँ भी ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेनका—पर रम्भे, क्या बात कभी यह भी मन में आती है,
माँ बनते ही त्रिया कहाँ-से-कहाँ पहुँच जाती है ?
गलती है हिमशिला, सत्य है, गठन देह की खोकर
पर हो जाती वह असीम कितनी पयस्विनी होकर ?

[तभी अप्सरा चित्रलेखा वहाँ आकर उन्हें बताती है कि, किस प्रकार वह विरहातुरा उर्वशी को प्रतिष्ठानपुर के राजोद्यान में राजा पुरूरवा के समीप रानी औशीनरी की नजर बचाकर छोड़ आयी है।]

रम्भा—अरी एक रानी भी है राजा को ?
चित्रलेखा—.....तो क्या भय है ?
एक घाट पर किस राजा का रहता बँधा प्रणय है ?
सहधर्मिणी गेह में आती कुल-पोषण करने को,
पति को नहीं नित्य नूतन मादकता से भरने को।
किंतु पुरुष चाहता भोगना मधु के नये क्षणों से,
नित्य चूमना एक पुष्प अभिसिंचित ओस-कणों से।
मेनका—कौन जानता है, राजा का कितना तरल हृदय है ?
चित्रलेखा—धुआँ नहीं, ज्वाला देखी है, ताप उभयदिक् सम है;
जो अमर्त्य की आग मर्त्य की जलन न उससे कम है।

[इस उत्तर से आश्वस्त हो अप्सरा-दल गाता हुआ उड़ जाता है।]

द्वितीय अंक

[उर्वशी के साथ राजा पुरूरवा के गंधमादन पर्वत पर चले जाने के पश्चात् प्रतिष्ठानपुर के प्रासाद में रानी औशीनरी सखी निपुणिका एवं मदनिका के साथ।]

औशीनरी—तो वे गये ?
निपुणिका—....गये। उस दिन जब पति का पूजन करके
लौटीं आप प्रमदवन से संतोष हृदय में भरके।
तभी भाग्य पर देवि ! आपके कुटिल नियति मुसकायी,
महाराज से मिलने को उर्वशी वहाँ पर आयी।
औशीनरी—छला अप्सरा ने स्वामी को छल से या माया से ?
निपुणिका—प्रकटी जब उर्वशी चाँदनी में द्रुम की छाया से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा, सर्प के मुख से जैसे मणि बाहर निकली हो,
मानो स्वयं चाँदनी स्वर्ण-प्रतिमा में आ ढली हो ;
किसी सांद्र वन के समान नयनों की ज्योति हरी थी,
बड़ी-बड़ी पलकों के नीचे निद्रा भरी-भरी थी।
महाराज ने देख उर्वशी को अधीर अकुलाकर
बाँहों में भर लिया दौड़ गोदी में उसे उठाकर।
और प्रेम-पीड़ित नृप बोले—"क्या उपचार करूँ मैं ?
सुख की इस मादक तरंग को कहाँ समेट धरूँ मैं ?
प्राणेश्वरी! मिलन-सुख को, नित होकर संग वरें हम,
मधुमय हरियाले कुंजों में आजीवन विचरें हम।"

औशीनरी—आजीवन वे साथ रहेंगे ? तो अब क्या करना है ?
जीते जी यह मरण झेलने से अच्छा मरना है।

[परंतु औशीनरी के लिए मरण भी सुलभ नहीं। क्योंकि पुरुरवा मंत्रियों को आदेश दे गया है कि, गंधमादन से लौटते ही वह नैमिषेय नामक यज्ञ करेगा; और परिणीता पत्नी की उपस्थिति के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं हो सकता।]

हाय, मरण तक जीकर मुझको हालाहल पीना है।

निपुणिका—पर कैसी है कृपा भाग्य की इस गणिका के ऊपर !
बरस रहा है महाराज का सारा प्रेम उमड़कर !

मदनिका—इसमें क्या आश्चर्य ? प्रीति जब प्रथम-प्रथम जगती है,
दुर्लभ स्वप्न समान रम्य नारी नर को लगती है।
यही लग्न है वह जब नारी, जो चाहे वह पा ले
उडुओं की मेखला, कौमुदी का दुकूल मँगवा ले,
रँगवा ले उँगलियाँ पदों की ऊषा के जावक से,
सजवा ले आरती पूर्णिमा के विधु के पावक से।
किंतु हाय यह उद्वेलन भी कितना मायामय है !
उठता धधक सहज जिस आतुरता से पुरुष-हृदय है,
उस आतुरता से न ज्वार आता नारी के मन में।

औशीनरी—किंतु बंध को तोड़ ज्वार नारी में जब जगता है,
तब तक नर का प्रेम शिथिल, प्रशमित होने लगता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुरुष चूमता हमें अर्धनिद्रा में हमको पाकर
पर हो जाता विमुख प्रेम के जग में हम जगाकर ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुणिका—आप सदृश सन्नारी को यदि राजा तज सकते हैं,
आँख मूँद स्ववेश्या को कब तक वे भज सकते हैं ?

नीरी—कौन कहे, यह प्रेम हृदय की बहुत बड़ी उलझन है
जो अलभ्य, जो दूर, उसी को अधिक चाहता मन है ।

दनिका—प्रियतम को रख सके निमज्जित जो अतृप्ति के रस में,
पुरुष बड़े सुख से रहता है उस प्रमदा के बस में ।
प्रकृति-कोष से जो जितना ही तेज लिये आता है,
वह उतना ही अनायास फूलों से कट जाता है ।
जितना ही जो जलधि रत्नपूरित, विक्रांत, अगम है,
उसकी वाडवाग्नि उतनी ही अविश्रांत दुर्दम है ।

(इसी बीच राजा को गंधमादन पहुँचाकर लौटे हुए सैनिक रानी पुरुरवा का यह संदेश पहुँचाते हैं कि, रानी भगवान् से पुत्र के लिए
"करती रहें प्रार्थना, त्रुटि हो नहीं धर्म-साधन में
जहाँ रहूँ, मैं भी रत हूँ ईश्वर के आराधन में ।")

नीरी—हाँ, अनोखी साधना है !
अप्सरा के संग रमना ईश की आराधना है !
फिर भी मरुत अनुकूल हों, मुझको को मिलें जो शूल हों,
प्रियतम जहाँ भी हों, बिछे सर्वत्र पथ में फूल हों ।

तृतीय अंक

[एक वर्ष पश्चात् गंधमादन पर पुरूरवा और उर्वशी ।]

वा—जब से हम तुम मिले, रूप के अगम, फुल्ल कानन में
अनिमिष मेरी दृष्टि किसी विस्मय में डूब गयी है,
अर्थ नहीं सूझता मुझे अपनी ही विकल गिरा का;
शब्दों से बनती हैं जो मूर्तियाँ, तुम्हारे दृग से
उठनेवाले क्षीर-ज्वार में गलकर खो जाती हैं ।
-जब से हम-तुम मिले, न जाने, क्या हो गया समय को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी से तैयारी कीजिये : दिवाली अब दूर नहीं

उत्सव के बाजे यकायक बजने लगेंगे, दिवाली अब दूर नहीं। आज ही अपने बच्चों को बाटा की दूकान पर ले आइये। जूतों को चुनने में काफी समय और सावधानी की जरूरत है क्योंकि लड़कों को चाहिये बिल्कुल फिट, सुन्दर और मजबूत जूते; लड़कियों को चाहिये नये फैशन के शानदार जूते, सब को चाहिये लकदक, जगमग, टिकाऊ जूते।

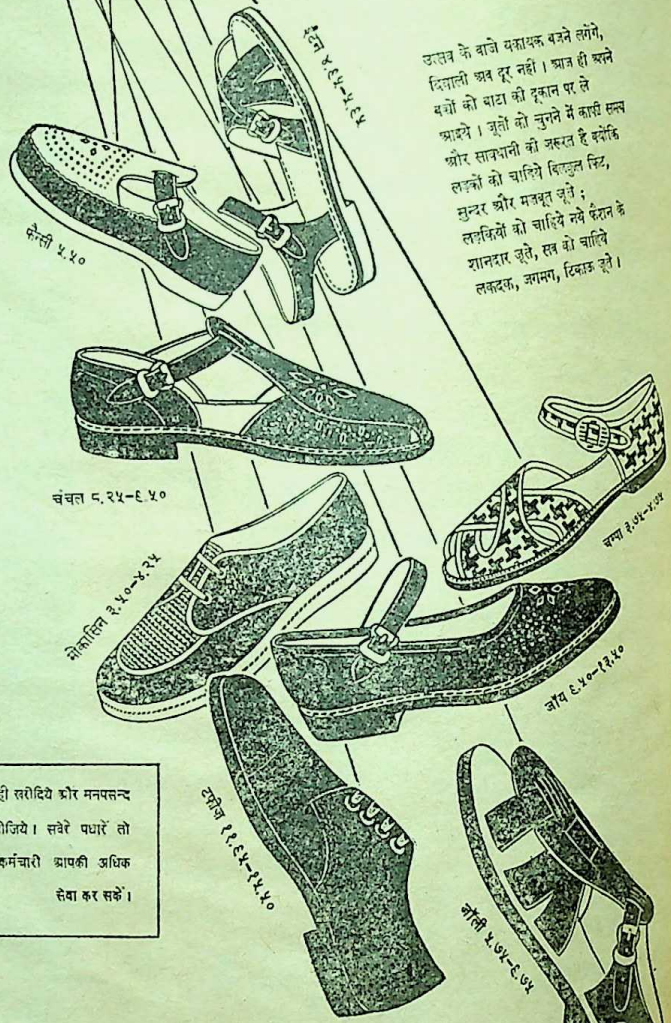

समय रहते ही खरीदिये और मनपसन्द माल चुन लीजिये। सवेरे पधारें तो दूकान के कर्मचारी आपकी अधिक सेवा कर सकें।

Bata

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लय होता जा रहा मरुद्-गति से अतीत-गह्वर में।
किंतु हाय, जब तुम्हें देख मैं सुरपुर को लौटी थी
यही काल अजगर समान-प्राणों पर बैठ गया था।

(फिर उर्वशी उलाहना देती है–"परंतु तुम तो मुझे तड़पती हुई छोड़ सुरपुर में आनंद भोगते रहे।)

पुरुरवा–कई बार चाहा, सुरपति से जाकर स्वयं कहूँ मैं,
अब उर्वशी बिना यह जीवन भार हुआ जाता है,
बड़ी कृपा हो उसे आप यदि भूतल पर जाने दें।
पर मन ने टोका – "क्षत्रिय भी भीख माँगते हैं क्या ?
और प्रेम क्या कभी प्राप्त होता है भिक्षाटन से ?"

उर्वशी–हरण किया क्यों नहीं, माँग लाने में यदि अपयश था ?

पुरुरवा–अयशमूल दोनों विकर्म हैं, हरण हो कि भिक्षाटन।
और हरण करता मैं किसका ? उस सौंदर्य-सुधा का
जो देवों की शांति, इंद्र के दृग की शीतलता थी ?
नहीं बढ़ाया कभी हाथ पर के स्वाधीन मुकुट पर,
न तो किया संघर्ष कभी पर की वसुधा हरने को।
नहीं इतर इच्छाओं तक ही अनासक्ति सीमित है,
उसका किंचित् स्पर्श प्रणय को भी पवित्र करता है।

(और पुरुरवा समझता है – "उर्वशी, मैं मनुष्य हूँ, कामना-वायु कभी-कभी मेरे मन के दीपक को बुझाकर, हृदय को तिमिराच्छन्न कर देती है। किंतु पुरुष तिमिर के शासन को नहीं मानता। फिर संघर्ष होता है, मन का दीपक फिर जल उठता है।)

उर्वशी–यह मैं क्या सुन रही ? देवताओं के जग से चलकर
फिर मैं क्या फँस गयी किसी नर के ही बाहु-वलय में ?

(उर्वशी पूछती है –" क्या मैं अंधकार की प्रतिमा हूँ ? क्या कला की बाढ़ उतरते ही तुम मेरा परित्याग कर दोगे ?")

तन से मुझको कसे हुए अपने दृढ़ आलिंगन में
मन से किंतु विषण्ण दूर तुम कहाँ चले जाते हो ?
अभी दृष्टि युग-युग के परिचय से उत्फुल्ल, हरी-सी;
और अभी यह भाव, गोद में पड़ी हुई मैं जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

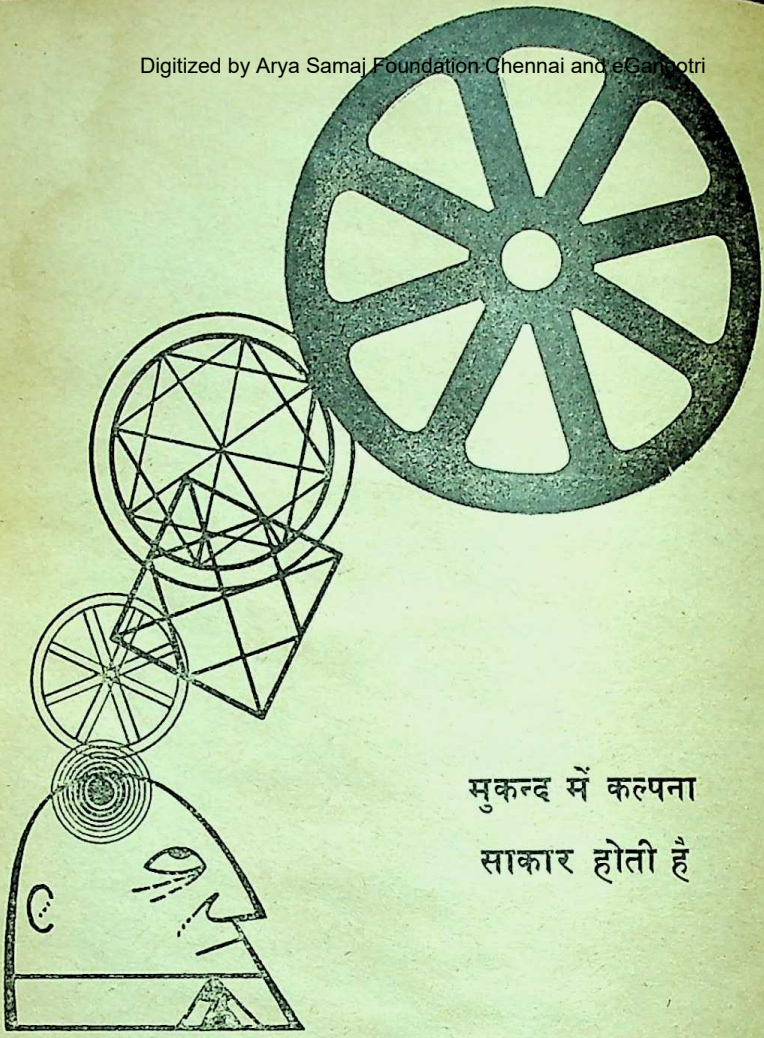

मुकन्द में कल्पना साकार होती है

विचारों का जन्म मनुष्य के मस्तिष्क में होता है। विचार का अर्थ है उन्नति। मुकन्द विकसित विचारों को इस्पात का रूप देता है। अनेकों प्रकार के उपयोग के लिए करीब-करीब प्रत्येक आकार और रूप में इस्पात की छड़ें, शलाकें, पहिये, अनेक प्रकार की ढलाई।

मुकन्द इस्पात बाँध बनाने, जटिल इस्पात के कारखाने खड़े करने, बड़ी-बड़ी नदियों पर पुल बनाने आदि में मदद करके देश को उन्नतिशील बनाने के प्रयत्न में अमूल्य योग देता है।

मुकन्द इस्पात है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवती नारी नहीं, प्रार्थना की कोई कविता हूँ ।

(वह पूछती है–" तुम पर यह कौन-सा अंकुश लटक रहा है ?)

पुरुरवा–कौन है अंकुश, इसे मैं भी नहीं पहचानता हूँ ।
पर सरोवर के किनारे कंठ में जो जल रही है
उस तृषा, उस वेदना को जानता हूँ ।
किंतु रस के पात्र पर ज्यों ही लगाता हूँ अधर को,
घूँट या दो घूँट पीते ही
न जाने किस अतल से नाद यह आता–
"अभी तक भी नहीं समझा ?
दृष्टि का जो पेय है, वह रक्त का भोजन नहीं है,
रूप की आराधना का मार्ग आलिंगन नहीं है ।"

(यह नाद सुनते ही हर बार पुरूरवा का बाहु-पाश शिथिल हो जाता है । वह खोजने लगता है कि, क्या रक्त की परिधि के पार कोई रूप है । तभी पृथ्वी पुकार उठती है–)

"ओ गगनचारी ! यहाँ मधुमास छाया है ।
भूमि पर उतरो – कमल, कर्पूर, कुंकुम से, कुटज से
इस अतुल सौंदर्य का शृंगार कर लो ।"
मर्त्य मानव की विजय का तूर्य हूँ मैं,
उर्वशी ! अपने समय का सूर्य हूँ मैं ।
अंध तम के भाल पर पावक जलाता हूँ,
बादलों के सीस पर स्यंदन चलाता हूँ ।
पर न जाने बात क्या है !
इंद्र का आयुध पुरुष जो झेल सकता है,
सिंह से बाहें मिलाकर खेल सकता है,
फूल के आगे ही वही असहाय हो जाता,
शक्ति के रहते हुए निरुपाय हो जाता ।

(पुरूरवा का कहना है, वास्तव में मानवों का मन गले-पिघले मोम की धार है ।)

उर्वशी–जब तक यह पावक शेष तभी तक सिंधु समादर करता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

म ल का बा त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से मिला तो कहने लगा—"जानती हो ! मैं
तुम्हारे लिए मनमोहक रंगोंवाली एक साड़ी
देखी है और बेचनेवाली बड़े गर्व से 'कहती' थी
कि वह साड़ी उसने अपने करघे पर बुनी है।"

—एक तमिल लोकगीत

''சேலத்துச் சந்தையிலே—பட்டு
''சிங்காரச் சேலை கண்டேன்.
''எங்கள் தறிச்சேலை' என்றாள்..
''பொங்கும் களிப்புடனே.''

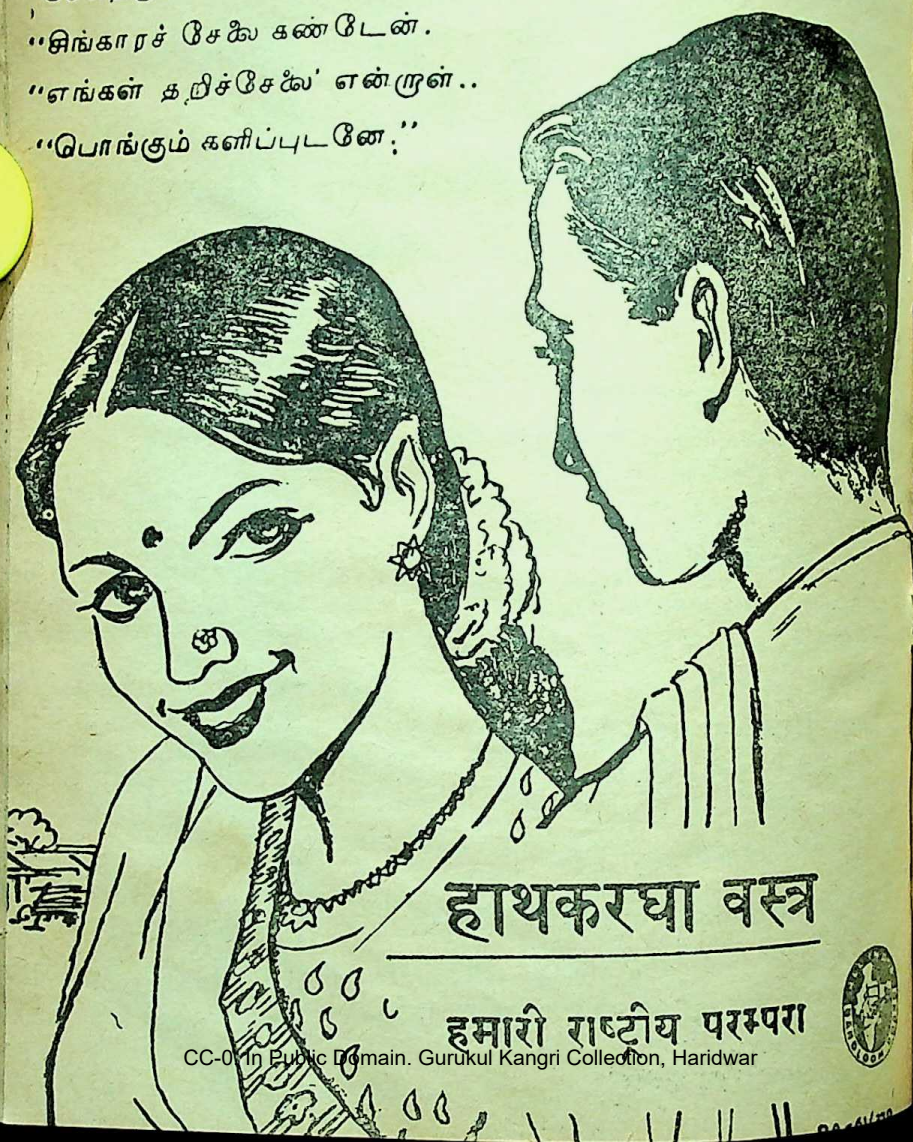

हाथकरघा वस्त्र

हमारी राष्ट्रीय परम्परा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना समस्त मणि-रत्न-कोष चरणों पर लाकर धरता है।

(उर्वशी इस पावक की महिमा समझाकर कहती है–"प्रिय, तुम बुद्धि के भँवर से निकलकर रक्त की भाषा को पढ़ो; बुद्धि भरमाती है, रक्त नहीं।" पुरूरवा कहता है– "रक्त बुद्धि से बली है, तभी हम अपने उद्गम तक उठ नहीं पाते। किंतु क्या प्रेम रक्त तक सीमित है?")

पुरूरवा–नारी जब देखती पुरुष को इच्छा-भरे नयन से,
नहीं जगाती है केवल उद्वेलन, अनल रुधिर में,
मन में किसी कांत कवि को भी जन्म दिया करती है।
मुझमें जिस रहस्य-चिंतक को तुमने जगा दिया है,
उड़ा चाहता है वह भावुक उस निरभ्र अम्बर में–
वह निरभ्र आकाश, जहाँ की निर्विकल्प सुषमा में
न तो पुरुष मैं पुरुष, न तुम नारी केवल नारी हो;
दोनों हैं प्रतिमान किसी एक ही मूलसत्ता के
देह-बुद्धि से परे, नहीं जो नर अथवा नारी है।

(देवत्व की कल्पना में भरमते हुए पुरूरवा को देख अधीर उर्वशी उसके बाहु-वलय में सिमिटकर उसे प्रकृति-छटा में आसक्त करना चाहती है। क्षण-भर पुरूरवा निसर्ग-शोभा को निहारता है। फिर उसका मन ऊँची भूमिका पर विचारने लगता है, वह परम-तत्व पर पहुँच जाता है।)

पुरूरवा–ऊपर जो द्युतिमान, मनोमय जीवन झलक रहा है,
उसे प्राप्त हम कर सकते हैं तन के अतिक्रमण से।

उर्वशी–अतिक्रमण सुख की तरंग, तन के उद्वेलित मधु का?
किसने कहा तुम्हें, जो नारी नर को जान चुकी है
उसके लिए अलभ्य ज्ञान हो गया परम सत्ता का;
और पुरुष जो आलिंगन में बाँध चुका रमणी को
देश-काल को भेद गगन में उठने योग्य नहीं है?
ईश्वरीय जग भिन्न नहीं है, इस गोचर जगती से;
इसी अपावन में अदृश्य वह पावन सना हुआ है।
शिखरों में जो मौन, वही झरनों में गरज रहा है;
ऊपर जिसकी ज्योति, छिपा है वही गर्त के तम में।

(पर पुरूरवा द्वंद्व-मुक्त नहीं हो पाता और अपने ही द्वंद्व की अगम्यता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहु-उद्देशीय पालिसी का चमत्कार

उसने, केवल एक बार ही २८८ रु. देकर अपने परिवार के लिए १,०१,८८० रु. का प्रबंध किया

घर के कर्त्ताधर्त्ता की मृत्यु होते की परिवार की आय की भी मृत्यु हो जाती है, वह तत्काल बंद हो जाती है। किन्तु बहु-उद्देशीय पालिसी लेने के बाद किसी बीमेदार की मृत्यु हो जाय तो उसके परिवार के लिए एक नई आय का प्रारंभ हो जाता है। इस अद्भुत पालिसी का जीता जागता उदाहरण हम यहाँ प्रस्तुत करते हैं:

● एक नौजवान केमिस्ट ने २०,००० रुपये की एक बहु उद्देशीय पालिसी (दुगुने दुर्घटना-लाभ के साथ) ली थी। और दुर्घटना के फलस्वरूप, कुछ ही दिनों में, उसका परिवार उसे खो बैठा। किन्तु इसी पालिसी से उसके परिवार को मिलीं निम्नलिखित सुविधाएँ:

- तुरन्त ही २०,०००) रु. की धनराशि (दुगुने दुर्घटना-लाभ)
- तथा २,०००) रु. अन्त्य-संस्कार, कानून और अन्य खर्चों के लिए
- २ वर्षों तक प्रतिमास ४००) रु.
- तथा २१ वर्षों तक प्रतिमास २००) रु.
- तथा संचित बोनस
- तथा १८,०००) रु., पालिसी की अवधि समाप्त होने पर।

उस नवयुवक ने प्रीमियम के रूप में केवल २८८) रु. ही दिये थे। और इतने से प्रीमियम के फलस्वरूप उसके परिवार को कुछ १,०१,८८० मिल गये—वह महान् धनराशि अत्यंत बुद्धिमत्ता से २३ वर्षों की अवधि तक फैला दी गई थी। और सौभाग्यवश यदि वह जीवित रहता तो निश्शंक उसे २०,०००) रु. तथा संचित बोनस, पालिसी की अवधि समाप्त होते ही, मिल जाते।

बहु उद्देशीय पालिसी तुरन्त ही लीजिए।
यह एक अनुपम सुरक्षा का प्रतीक, आपके परिवार के लिए, है।

जीवन बीमा

सुरक्षा का सब से बेजोड़ साधन है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ASP/LIC-E-33

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में ऊबकर उर्वशी [illegible] की तरह-तरह की उत्प्रेक्षाएँ करने लगता है। उर्वशी तो स्वप्न है; वह साकार सत्य बनकर अपना सौंदर्य खोना नहीं चाहती। राजा के प्रश्नों को वह टालती जाती है। अंत में राजा के अत्यधिक आग्रह पर अपना परिचय देती है, जो सनातन प्रेमिका का परिचय है।)

उर्वशी—मैं नाम-गोत्र से रहित पुष्प,
अम्बर में उड़ती हुई मुक्त आनंद शिखा
इतिवृत्त-हीन, सौंदर्य-चेतना की तरंग;
सुर-नर-किन्नर-गंधर्व नहीं, प्रिय! मैं केवल अप्सरा—
विश्व-नर के अतृप्त इच्छा-सागर से समुद्भूत।
पाषाणों के अनगढ़ अंगों को काट-छाँट
मैं ही निबिडस्तननता, मुष्टिमध्यमा
मदिरलोचना, कामलुलिता नारी
प्रस्तरावरण कर भंग, तोड़ तम को उन्मत्त उभरती हूँ।

(उर्वशी के रूप में पुरूरवा नारी के चिरंतन सत्य के दर्शन पा लेता है। प्रेम की अनुभूति शाश्वत और सार्वभौम बनकर उसके मन व प्राणों पर छा जाती है। अब वह पुरूरवा मात्र नहीं, सनातन पुरुष है; अनादि काल से आज तक के समस्त प्रेमियों का प्रतिनिधि। प्रेम की डोर में आदि-अंत, देश-काल, प्रकृति-पुरुष सब आबद्ध हो जाते हैं। गंधमादन पर पुरूरवा-उर्वशी की वह प्रेम-लीला सम्पूर्ण ब्रह्मांड की प्रेम-लीला का प्रतीक बनकर उद्भासित होती है। तभी सवेरा हो जाता है।)

पटाक्षेप

(स्थान महर्षि च्यवन का आश्रम; महर्षि-पत्नी सुकन्या उर्वशी के नवजात पुत्र को गोद में लिये खड़ी है। चित्रलेखा का प्रवेश।)

सुकन्या—अच्छा, तू आ गयी चित्रलेखे! निंदिया मुन्ने की
अकस्मात् तेरी आहट पाकर यों उचट गयी है,
मानो इसके अंतर में जो अम्बर का अंश छिपा है,
जाग पड़ा हो सुनते ही पदचाप स्वर्ग की भू पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप गर्व कीजिये

डेट धुले वस्त्रों पर

- **डेट-धुले वस्त्र अधिक चमकीले दीखते हैं—**
  डेट के विशेष स्वच्छताकारक गुण आप के कपड़ों को नवीन जैसी चमक देते हैं।
- **डेट-धुले कपड़े अधिक शुभ्र दीखते हैं—**
  आपको डेट-धुले कपड़ों में न तो अतिरिक्त नील लगाने की ज़रूरत पड़ती है और न सफेद करने वाली चीज़ की, क्योंकि डेट में 'आपटिकल ब्राइटनर' मिला रहता है।
- **डेट-धुले वस्त्रों का मतलब है आधुनिक ढंगकी धुलाई।**
  डेट से हल्के या भारी दोनों तरह के पानी में कपड़े उत्कृष्ट ढंग से धोये जा सकते हैं क्योंकि डेट से खूब झाग निकलता है। डेट से सूती, रेशमी, रेयॉन, ऊनी—सफ़ेद या रंगीन—सभी प्रकार के वस्त्र धोना सुरक्षित है।

स्वस्तिक ऑईल मिल्स लिमिटेड, बम्बई-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रलेखा—मही और नभ दो हैं, ये सब कहने की बात है

(फिर मही और नभ, तन और मन के द्वंद्व पर दोनों में बहस छिड़ती है। अप्सरा चित्रलेखा को उन्मुक्त प्रेम का तुलनात्मक ज्ञान है; तथापि वह स्वेच्छा से वृद्ध तपोधन महर्षि का वरण करनेवाली एकचारिणी सुकन्या के दाम्पत्य-भाग्य पर मुग्ध है।)

कीर्तिमान की कीर्ति, साधना भावुक तपोव्रती की
जो रसमय उद्वेग त्रिया के उर में भर सकती है,
वह उद्वेग भला जागेगा मणि, माणिक्य, मुकुट से ?
धन्य वही जो विभव नहीं, यश को अर्पित होती है।

(*सुकन्या*—पता है चित्रलेखा, जब महर्षि का तपोभंग हो जाने से मैं भयभीत हो गयी थी, उन्होंने क्या कहा था ?

" डरो नहीं, यह तपोभंग च्युति नहीं, सिद्धि मेरी है।
पहले भी जब हुआ पूर्ण कटु तप महर्षि कर्दम का,
स्वर्ग नहीं, ऋषि ने वर में नारी मनोज्ञ माँगी थी।
सो तुम सम्मुख खड़ी तपस्या के फल की आभा-सी,
अब होगा क्या अपर स्वर्ग, जिसका संधान करूँ मैं ?
हरि प्रसन्न यदि नहीं, सिद्धि बनकर तुम क्यों आयी हो ?"
लौट गये थे हो निराश शत-शत युवराज जहाँ से
वही द्वार खुल गया श्रवण कर यह प्रशस्ति तापस की।)

चित्रलेखा—नारी को पर्याय बताकर तपःसिद्धि भूमा का
सचमुच त्रिया-जाति को ऋषि ने अद्भुत मान दिया है।

(सुकन्या बताती है कि, महर्षि तो नारी को, विशेषतः उसके मातृरूप को, बहुत मानते हैं। वे कहा करते हैं :

"कितनी सह यातना पालती त्रिया भविष्य जगत् का ?
कह सकता है कौन पूर्ण महिमा इस तपश्चरण की ?
नारी ही वह महासेतु जिस पर अदृश्य से चलकर
नये मनुज, नव प्राण दृश्य जग में आते रहते हैं;
नारी ही वह कोष्ठ देव, दानव, मनुष्य से छिपकर
महाशून्य, चुपचाप, जहाँ आकार ग्रहण करता है।")

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंकिंग

राष्ट्रीय सम्पदा को बढ़ाती है

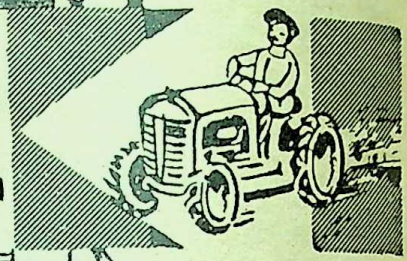

पंजाब नैशनल बैंक
राष्ट्र के उद्योग, कृषि और
व्यापार की सेवा करता है।

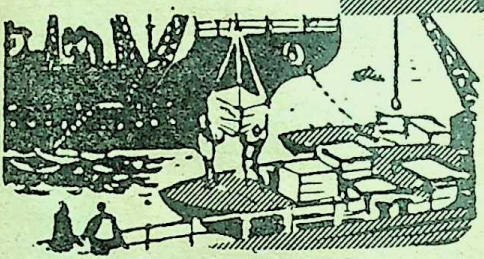

प्रत्येक प्रकार का
बैंकिंग व्यापार
होता है।

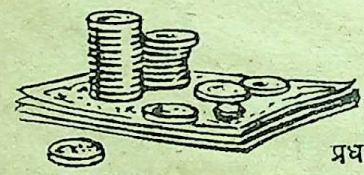

दि
पंजाब
नैशनल
बैंक
लि०

संस्थापित १८९५
प्रधान कार्यालय : नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तभी उर्वशी [illegible] आनंद-विभोर हो जाती है ।)

उर्वशी—जब होगा यह भूप, प्रचुर धनधान्यवती भू होगी,
रोग, शोक, परिताप, पाप वसुधा से घट जायेंगे;
सब होंगे सुखपूर्ण जगत् में, सबकी आयु बढ़ेगी,
इसीलिए तो सखी ! अभी से इसे 'आयु' कहती हूँ ।

किंतु सखियो, कल से यह सुख छिन जायेगा । कल महाराज का यज्ञ पूर्ण होगा । फिर वे मुझे क्षण-भर भी आँखों से ओझल न होने देंगे ।

और विवशता यह तो देखो, मैं अभागिनी नारी
दिखा नहीं सकती सुत का मुख अपने ही स्वामी को
न तो पुत्र के लिए स्नेह स्वामी का तज सकती हूँ ।
भरत-शाप कितना कटु था !

ओह, कितना विकट संघर्ष है ! या तो पुत्र को पाऊँ, या पुत्र को सदा गुप्त रख, उसका भविष्य नष्ट कर पति को पाऊँ ! नहीं, नहीं . . . .

अपना सुख तृणवत् नगण्य है, उसे छोड़ सकती हूँ ।
किंतु पुत्र का भाग्य भूमि पर रह कैसे फोड़ूँगी !
देना भेज उचित जब समझो ! मुझसे जनित तनय पर
जभी पड़ेगी दृष्टि दयित की वज्र आन टूटेगा;
गरज उठेगा भरत-शाप, मैं पराधीन पुतली-सी
खिंची हुई क्षिति छोड़, अचानक स्वर्ग चली जाऊँगी ।

(हा-हाकार करते हृदय से वह आयु को सुकन्या के हाथ सौंप-कर निष्प्राण-सी प्रतिष्ठानपुर चली जाती है ।)

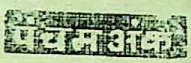

[स्थान-पुरूरवा का राजप्रासाद । पुरूरवा, उर्वशी, महामात्य, राजपंडित, राज-ज्योतिषी, अन्य सभासद, परिचारक-परिचारिकाएँ यथास्थान बैठे हैं । राजा चिंताग्रस्त मुखमुद्रा में है ।]

महामात्य—देव, क्षमा हो कुतुक, महामह के विशाल नयनों से
देख रहा हूँ आज नयी चिंता कुछ घुमड़ रही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र-निर्माण कार्यके लिअे
सशक्त साथी...

किर्लोस्कर
डिझेल एंजिन्स

प्रत्येक छोटे-बड़े राष्ट्र-निर्माण कार्य
कृषि, उत्पादन, खदान, मछली पकड़ने, निर्माण
में किर्लोस्कर डिझल एंजिन
अपनी कमखर्च, पोर्टेबल, विश्वसनीय शक्ति द्वारा
अत्यावश्यक रूपसे हाथ बटाती है
जहां कहींभी जरूरत हो, आवश्यकतानुसार
इसका इस्तेमाल किया जा सकता है।

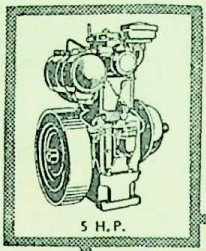

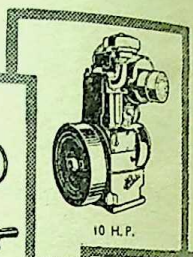

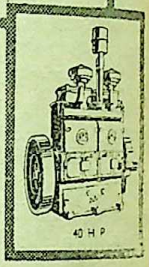

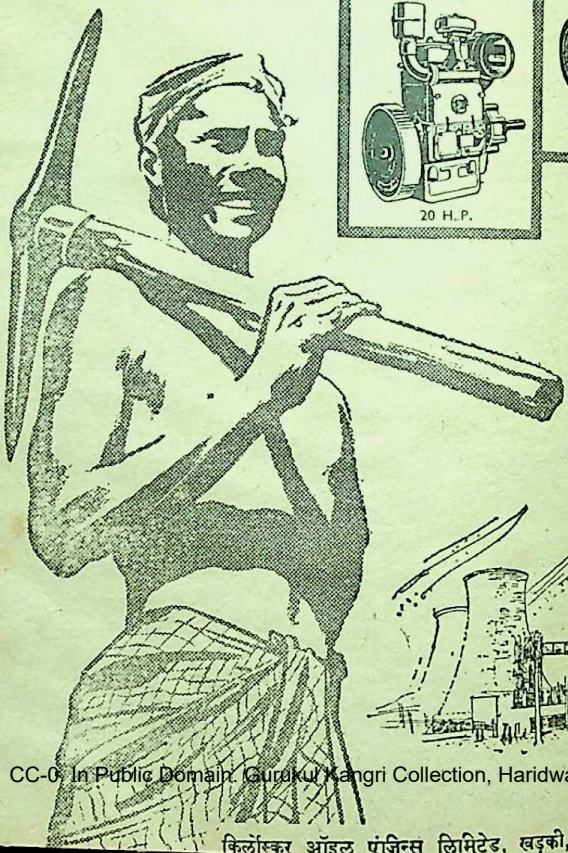

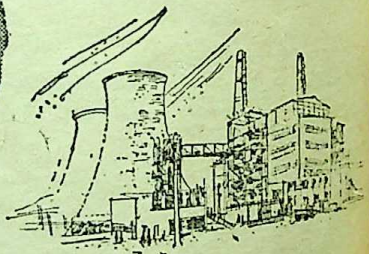

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

किर्लोस्कर ऑइल एंजिन्स लिमिटेड, खड़की, पूना-३, (भारत)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरूरवा—सभासदो, कल रात स्वप्न मैंने विचित्र देखा है।

(स्वप्न इस प्रकार था—नगरवासी कहीं से वट का नया पौधा ला उसे प्रेम से सींच रहे हैं। पुरूरवा भी उसे दूध से सींचता हूँ; पर कोई उसे आँख उठाकर भी नहीं देखता। फिर वह हाथी पर चढ़कर वन में पहुँचता है। शीघ्र ही हाथी अदृश्य हो जाता है और वह भटकता हुआ च्यवनाश्रम पहुँच जाता है। .... च्यवनाश्रम का नाम सुनते ही उर्वशी विवर्ण हो जाती है, दासी से जल माँगती है। राजा कुछ समझ नहीं पाता और च्यवनाश्रम में वधूसरा के तट पर देखे दृश्य का वर्णन करने लगता है।)

पुरूरवा—और पास ही एक दिव्य बालक प्रशांत बैठा था
प्रत्यंचा माँजते वीरकरशोभी किसी धनुष का।

उर्वशी—दुर्विपाक ! दुर्भाग्य ! अपाले ! और तनिक पानी दे।
उमड़ प्राण से कहीं कंठ में ज्वाला अटक गयी है।
लगता है, आज ही प्रलय अम्बर से टूट पड़ेगा।

पुरूरवा—देवि, स्वप्न से आप अकारण भीत हुई जाती हैं।
मैं हूँ जहाँ, वहाँ कैसे विध्वंस पहुँच सकता है ?

(राजा आश्रमवासी बालक के रूप-लक्षणों का विशद वर्णन सुना राजज्योतिषी से स्वप्न का फलादेश पूछता है। ज्योतिषी कहता है कि, आज ही महाराज पुरूरवा अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर प्रव्रज्या ग्रहण करेंगे। उर्वशी के सिवा कोई—स्वयं ज्योतिषी भी—इसका अर्थ समझ नहीं पाता।)

उर्वशी—आह ! क्रूर अभिशाप ! तुम्हारी ज्वाला बड़ी प्रबल है !

(एक ब्रह्मचारी के साथ तभी ऋषिपत्नी सुकन्या वहाँ पधारती है और अभिवादन-विधि के बाद उर्वशी को यों सम्बोधित करती है।)

सुकन्या—सोलह वर्ष पूर्व तुमने जो न्यास मुझे सौंपा था,
उसे आज सक्षेम सखी, तुमको मैं लौटाती हूँ।
बेटा, करो प्रणाम यही हैं माँ, वे देव पिता हैं।

(पुरूरवा विस्मय और आनंद से विह्वल हो जाता है। उर्वशी पुत्र-जन्म का संक्षिप्त वृत्तांत सुनाती है; परंतु पुरूरवा इसके सिवा कुछ नहीं सुन पाता कि, आयु उसका पुत्र है। भरत-शाप फलता है। उर्वशी आकाश में विलीन हो जाती है। भावावेश उतरने पर प्रेयसी के वियोग में पुरूरवा दुःख-सागर में आ गिरता है।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव वर्ष एवं दीपावली के
अभिनंदन और शुभकामनाएँ

चिमनलाल पेपर कं०

उच्च किस्म के कागज़ तथा बोर्ड के आयातकर्त्ता

और श्री गोपाल पेपर मिल्स लि० के वितरक

मेकमिलन बिल्डिंग २७६, डा० दादाभाइ नौरोजीरोड,

फोर्ट, बम्बई –१

पो. बाक्स नं. १४७५

टेलिफोन : २६२०४१-४२ टेलिग्राम SELECTION

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पुरूरवा—चली गयी ? सब शून्य हो गया ? मैं वियुक्त विरही हूँ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवों को [illegible]
लाओ मेरा धनुष, सजाओ गगन-जयी स्यंदन को,
सखा नहीं, बन शत्रु स्वर्गपुर मुझे आज जाना है।
उठो बजाओ पटह युद्ध के, कह दो पौर जनों से
उनका प्रिय सम्राट स्वर्ग से वैर ठान निकला है।

(महामात्य राजा को इस अकल्याणकारी युद्ध से विरत करने का प्रयत्न करता है; और तभी नेपथ्य से आवाज आती है :

"सावधान ! देवों से लड़ने में कल्याण नहीं है।
देव कौन हैं ? शुद्ध, दग्धमल, श्रेष्ठ रूप मानव के;
तो अपने ही श्रेष्ठ रूप से मानव युद्ध करेगा ?"

(पुरूरवा चकित और विमूढ़ होकर सुनने लगता है)

"चिंतन कर यह जान कि तेरे क्षण-क्षण की चिंता से
दूर-दूर तक के भविष्य का मनुज जन्म लेता है।
और प्रेम ? वह बना नहीं क्यों अश्रुधार करुणा की,
आराधन उन दिव्य देवता का, जो छिपे हुए हैं
रमणी के लावण्य, रमा-मुख के प्रकाश-मंडल में ?
बना नहीं क्यों वह अखंड आलोक-पुंज जीवन का,
जिसे लिये तू और व्योम में ऊपर उठ सकता था ?
विपद्व्याधिनी भी जीवन में तुझको कहीं मिली थी ?
पूछा जब तूने भविष्य, उसने क्या बतलाया था ?
त्रिया ! हाय, छलना मनोज्ञ वह ! पुरुष मुग्ध हँसता है,
जब चाहिये उसे रो उठना कंठ फाड़, चिल्लाकर।
पूछ रहा क्या भाग्य ज्योतिषी से, अंगविद, गणक से ?
हृदय चीरकर देख, प्राण की कुंजी वहीं पड़ी है।"

(पुरूरवा के ज्ञान-चक्षु खुल जाते हैं। वह तत्क्षण राजकुमार आयु के मस्तक पर राजमुकुट रख देता है।)

पुरूरवा—यह लो, अपने घूर्णिमान् सिर पर से इसे हटाकर
ऐल वंश का मुकुट आयु के मस्तक पर धरता हूँ।
लो, पूरा हो गया राज्य-अभिषेक ! कृपा पूषण की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आपके नेत्रों के ५ शत्रु
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

★ धूल
★ धुआं
★ गरमी
★ कीटाणु
★ चकाचौंध
और एक श्रेष्ठ मित्र

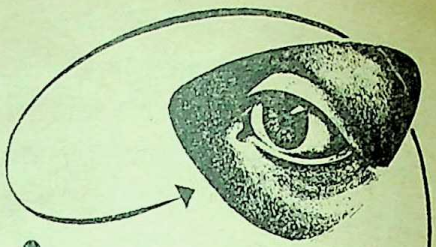

भीमसैनी काजल

जो आपकी इन सभी शत्रुओं से रक्षा करता है और आपके नेत्रों का आकर्षण बनाये रखता है।

मुरारी ब्रदर्स
कमला नगर, देहली-६

दो महत्वपूर्ण प्रकाशन

'भारत में अंग्रेजी राज'

लेखक – सुन्दरलाल

भारत पर अंग्रेजी शासन के प्रारम्भिक १०० वर्षों की दिलचस्प कहानी को बतानेवाली ऐतिहासिक पुस्तक दो खण्डों में।

मूल्य–प्रत्येक खण्ड : कपड़े की जिल्द : १० रुपये, कागज की जिल्द : ८ रुपये

भारत १९६१

हमारे राष्ट्रीय जीवन तथा गतिविधियों के विविध पहलुओं पर अधिकृत सूचना देनेवाला वार्षिक ग्रंथ।

मूल्य ३.५० रुपये

(डाक खर्च १२॥ प्रतिशत और रजिस्ट्रेशन खर्च ५० नये पैसे अलग)

आज ही अपनी प्रतियां मंगाइये।

पब्लिकेशन्स डिवीजन, पोस्ट बाक्स २०११, दिल्ली, –६

डी ए– ६१।३९३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐल-वंश अवतंस नये सम्राट् आयु की जय हो !

महाराज ! मैं भारमुक्त अब कानन को जाता हूँ ।

(और पुरूरवा अविलम्ब राजप्रासाद से बाहर निकल जाता है। उसी क्षण महारानी औशीनरी वहाँ भागी हुई आती है । लेकिन तब तक पुरूरवा जा चुका है । महारानी के दुःख की सीमा नहीं रहती। महामात्य पूरा हाल कह सुनाता है । सुकन्या को महारानी सम्बोधित करती है ।)

औशीनरी—मुझे बुलाये बिना अचानक कैसे चले गये वे ?
अकस्मात् ही मैं कैसे मर गयी कांत के मन में ?
शुभे ! गाँस यह सदा हृदय-तल में सालती रहेगी,
मेरा ही सर्वस्व हाय, मुझसे यों बिछुड़ गया है,
मानो उस पर मुझ अभागिनी का अधिकार नहीं हो ।

सुकन्या—देवि ! यही है नियम ; पाश जो क्षणिक, क्षाम, दुर्बल हैं,
वैराग्योन्मुख पुरुष नहीं उन बंधों से डरता है ।
जन्म-जन्म की जहाँ, किंतु शृंखला अभंग पड़ी है,
यती निकल भागता उधर से आँखें सदा चुराकर ।
परामर्श क्यों करे मुक्तिकामी अपने बंधन से ?
गृहिणी की यदि सुने, गेह से कौन निकल सकता है ?

(रानी औशीनरी पछताती है कि, उसने उर्वशी की सम्पूर्ण मादकता, आकर्षण एवं विभा लेकर पति के मनोनुकूल व्यवहार क्यों नहीं किया ।)

औशीनरी—जीत गयीं वे जो लहरों पर मचल-मचल चलती थीं,
उड़ सकती थीं खुली धूप में, मेघों-भरे गगन में ।
हारी मैं इसलिए कि, मेरे व्रीड़ा-विकल दृगों में
खुली धूप की प्रभा, किरण कोलाहल की गड़ती थी ।

सुकन्या—कहते हैं, जिसने सिरजा था हमें, प्रकांड पुरुष था;
इसीलिए, उसने प्रवृत्ति नर में दी स्वत्व-हरण की ।
और नारियों को विरचा उसने कुछ इस कौशल से,
हम हो जाती हैं कृतार्थ अपने अधिकार गँवाकर ।

(सम्राट् आयु जो अभी तक खड़ा-खड़ा अपनी विमाता की वेदना को मूक होकर देख रहा था, अधीर हो जाता है और कह उठता है —" माँ, मैं यहाँ राजमुकुट के लिए नहीं, तुम्हारे चरणों की धूल पाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

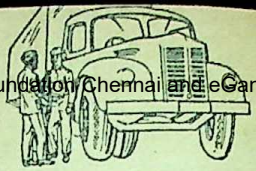

मेरी पसंद की ट्रक ? जी हाँ

डॉज

भैया, मैं एक लम्बे अरसे से ट्रक चालक रहा हूं और यह अच्छी तरह जानता हूं कि डॉज ट्रकों की श्रेष्ठता के बारे में दो मत नहीं हो सकते। उदाहरण के तौर पर धुरों को ही लीजिये। डॉज वाहन "टिमकेन" धुरों से युक्त होते हैं जिन्हें अब "रॉकवेल स्टेण्डर्ड" के नाम से जाना गया है। पूरे विश्व में इनकी ख्याति है। इन धुरों में भारी माल ढोने की क्षमता विद्यमान है और पूर्ण विश्वास योग्य हैं जो हम ट्रक चालकों के लिए एक बड़ी चीज है।

अतिरिक्त, इसकी अनेक विशेषतायें हैं। इन सब को मिला कर हम केवल एक निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि डॉज एक महान ट्रक है। यह परिवहन, सहनशीलता एवं अर्जन की क्षमता में बेजोड़ है। मुझे विश्वास है, आप भी डॉज को अपनी ट्रक बनायेंगे।

अपने निकटतम विक्रेता से सम्पर्क स्थापित करें।

डॉज

डीजल ट्रक

निर्माता

कि. कीर्लोस्कर ऑयलमोबाइल्स लिमिटेड, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ही आया हूँ। मेरी रचना पिता ने नहीं, माताओं ने ही की है। मैं पहले तेरा बेटा हूँ, फिर राजा का पुत्र।" और औशीनरी के चरणों पर गिर पड़ता है। औशीनरी सारा दुःख भूल पुत्र को हृदय से लगा लेती है।)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुकन्या—बरस गया पीयूष; देवि! यह भी है धर्म त्रया का,
अटक गयी हो तरी मनुज की किसी घाट-अवघट में,
तो छिगुनी की शक्ति लगा नारी फिर उसे चला दे;
और लुप्त हो जाय पुनः आतप, प्रकाश, हलचल से।
सो वह चलने लगी; आइये वापस लौट चलें हम,
मैं अपने घर, देवि! आप अपने प्रार्थना-भवन में।
त्यागमयी हम कभी नहीं रुकती हैं अधिक समय तक
इतिहासों की आग बुझाकर भी उनके पृष्ठों में।

चिरंतन सत्य का साक्षात्कार

उषा रानी ने अभी अँगड़ाई ही ली थी कि, नटखट अरुण ने उसकी अलकों को छेड़ा और उसका मुख चूम लिया। उषा लजायी, उसके कपोल अरुण हो उठे, ओढ़नी को समेट उठ खड़ी हुई। अरुण ने उसे अपनी ओर खींचा और फिर उसे अपने आलिंगन में बाँध लिया। प्रभात भी अरुण और उषा का यह खेल देखता रहा और हँसता रहा और जब उसने देखा कि, दोनों सैर को निकलने को हैं, तो दौड़कर उनसे लिपट गया और उनके साथ हो लिया। नन्ही किरण भी कब माननेवाली थी! वह भी छुमुक-छुमुक करती, अपनी हँसी बिखेरती उनके साथ हो ली। सारा परिवार जग के उद्यान में सैर करने आ गया।

मैं भी उसी उद्यान में एक ओर बैठी इस अनुपम दृश्य को देखती रही। दृश्य मनमोहक था। नन्ही किरण की चंचल रेखा मन हरती थी; प्रभात का निर्मल भोला मुख आकर्षक था; और उषा-अरुण की प्यार-भरी अठखेलियों में मादकता थी। कोयल की कूक ने मानो उनका स्वागत किया, हवा ने बलैयाँ लीं और फूल और कलियाँ प्रभात और किरण के साथ खेलने में विभोर से हो गये। शबनम ने मोती जुटाये, अम्बर ने पट खोल दिये। मेरे बगीचे के वृक्षों ने भी घोंसलों द्वारा उषा अरुण के आगमन का संदेश दिया।

निशा-तिमिर का अभिसार भी देखा था, तो उषा-अरुण का नेह-मिलन भी देखा। दो प्रेमियों का प्रेम-मिलन ऐसा ही नहीं है क्या? प्रकृति और मानव का यह शाश्वत मिलन है, जिसमें चिरंतन चिंतन का जन्म होता है।

—ज्ञानवती दरबार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा खरीदते समय इस बोधचिन्ह का अवश्य ध्यान करें

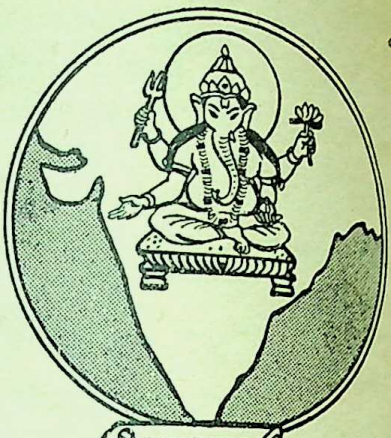

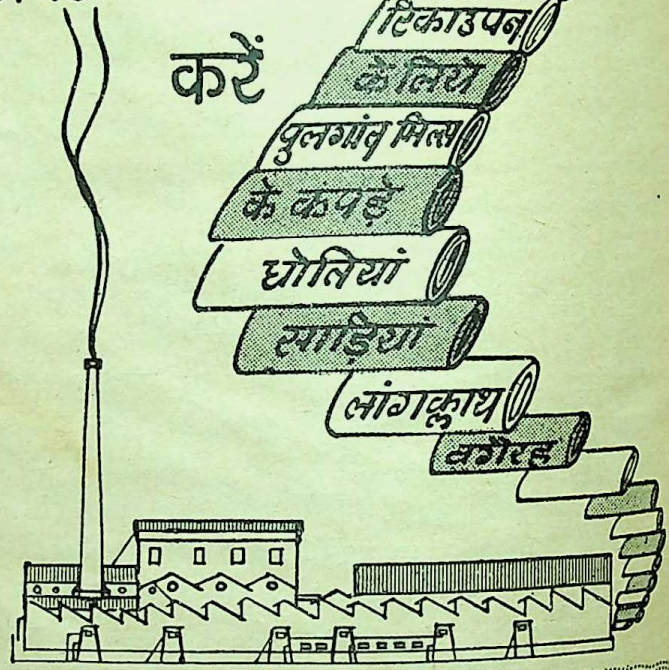

पुलगांव कॉटन मिल्स लि०, बम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बालक जीवन-दीप बन गया

काका जेराजाणी को खादी का 'हाइपावर सेल्समैन' कहा जाता है। देश में खादी बिक्री को विशुद्ध व्यावसायिक सिद्धांतों पर आयोजित करने में उनका बहुत बड़ा हाथ है। इस व्यापारिक सफलता की बुनियाद डालनेवाली यह घटना उन्होंने अपनी आत्मकथा 'खादी की कहानी' में दी है।

विट्ठलदास जेराजाणी

अफ्रीका के जंजीबार नगर में हमारी दुकान थी और मैं वहीं पढ़ता था। पाठशाला में एक बार छुट्टी थी। मेरे पिताजी ने बुलाकर कहा– "तुझे पढ़ाई के साथ-साथ व्यापार का ज्ञान भी प्राप्त करते रहना चाहिये।" और उन्होंने मेरे हाथ में लोहे के तार में पिरोयी हुई कोई पचास दाँत-कुरेदनी और कान-कुरेदनी देकर कहा कि, इस लच्छे को दिखाते हुए चलना और आवाज लगाते रहना–"दाँत-कुरेदनी, कान-कुरेदनी, दो-दो पैसे।" लोग आवाज सुनेंगे, तो खरीदेंगे।

व्यापार करने-जैसी मेरी उम्र उस समय नहीं थी। और मेरा मन भी उसमें नहीं लगता था। मेरा मन तो खेलने में लगता था। इसलिए अनायास मेरे मुँह से निकल गया–"पिताजी, मुझे तो खेलने जाना है। मित्र मेरी राह देखते होंगे।"

पिताजी का पुण्य प्रकोप प्रकट हुआ और वे चिल्ला कर बोले–"तू व्यापारी का लड़का है! तुझे व्यापार करके रोटी खानी है, या भीख माँगनी है? तुझे आज कुरेदनी बेचने जाना ही होगा।"

मैं घबराकर रो पड़ा, तो ऊपर से जोर का थप्पड़ भी पड़ा।

रोते-रोते मैंने आवाज लगायी–"दाँत-कुरेदनी . ...कान-कुरेदनी।" पिताजी ने उत्साहित किया–"ऐसी रोनी आवाज कौन सुनेगा भला! जोर से आवाज लगा, जिससे तीसरी मंजिल पर रहनेवाले भी सुन सकें।"

मैंने जोर की आवाज देना शुरू किया और दाँत-कान-कुरेदनी की बिक्री शुरू हो गयी। पहली जोड़ी बिकी और दो पैसे मिले। थोड़े ही समय में सब बिक गयीं और सौ पैसे जेब में हो गये। घर पहुँचकर प्रफुल्लित होते हुए पिताजी से कहा–"मैं सब बेच आया, ये लीजिये पैसे!" मैंने देखा कि, पिताजी के मुख पर संतोष की चाँदनी छा गयी।

यह पाठ मेरे जीवन के साथ दृढ़ता से जुड़ा है। "जोर से आवाज लगा, जिससे तीसरी मंजिल पर रहनेवाले भी सुनें"– ये शब्द कानों में इस तरह गूँजते रहते हैं, मानो कल ही बोले गये हों। मुझे सफल बिक्रीकार और यथार्थ व्यापारी बनाने में इस अनुभव का बड़ा हाथ है। *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके लिए

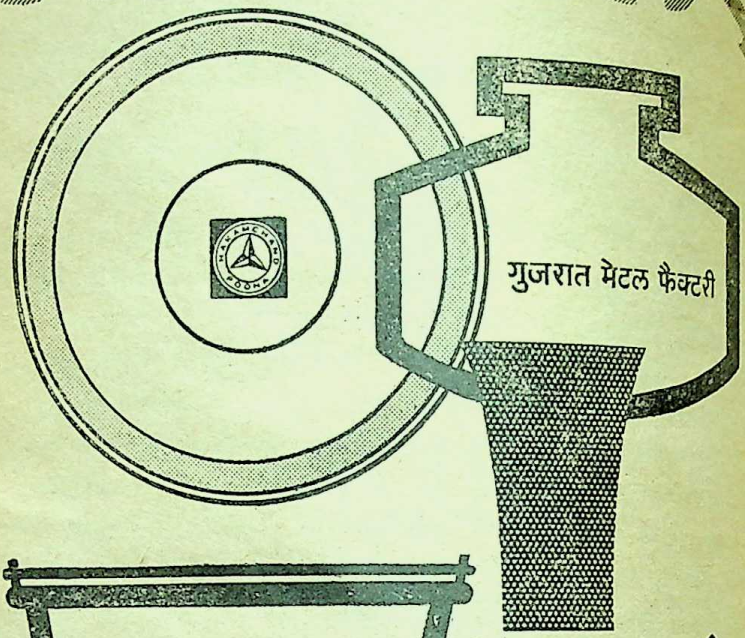

गुजरात मेटल फैक्टरी

सुन्दर आकारके

बर्तनों की पूर्ति करती है, क्योंकि सुगृहिणियों के संसारको सुखद बनाने के लिए सुसज्जित रसोईघर एक आवश्यक अंग है। आधुनिक रसोईघर की शोभा बढ़ाने लिए चतुर गृहिणी हमारे सुन्दर आकार के ताम्बे, पीतल और स्टेनलेस स्टील के बर्तन ही पसंद करती हैं।

हकमचन्द ईश्वरदास, १४७, गुरुवार पेठ, पूना-२.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगरजल-जलौर वग देश

हालैंडवासियों के पुरुषार्थ और सौजन्य की एक झाँकी; लेखक के यूरोप-प्रवास की डायरी का एक पृष्ठ ।

श्रीगोपाल नेवटिया

हमें बुडापेस्ट जाना था । कार्यक्रम कुछ ऐसा था कि, बीच में हमें पूरे दो रात और एक दिन का समय मिल गया । उसका सदुपयोग हमने एक नया देश – हालैंड– देखने में कर लिया । यों एक-दो दिन में ही किसी देश का चक्कर लगा आनेवाले टूरिस्टों की एक बार 'स्विस एयर पत्रिका' ने बड़ी मीठी चुटकी ली थी । लेकिन हर आदमी की अपनी कुछ विवशता और व्यस्तता रहती है । सो हमने यही सोचा, जितना समय हाथ लगा है, उतना ही सही; और हालैंड-भ्रमण का प्रोग्राम बन गया ।

आज के एटम-युग में इसे 'वास्तविक हालैंड' कहना तो जरा असंगत-सा ही है । पर यहाँ के राजप्रासाद, धनिकों के हरम, भोग-सामग्री से परिपूर्ण बाजार और कारों व मोटर-बोटों की भाग-दौड़ के वातावरण से बाहर निकलते ही हालैंड के प्राचीन या यों कहिये वास्तविक स्वरूप के दर्शन हो जाते हैं ।

हालैंड की एक विशिष्टता यह है कि, इसके उत्तर-पूर्वी कुछ भाग को छोड़कर सारा देश समुद्र की सतह से नीचे बसा हुआ है । मनुष्य ने सैकड़ों मील की लम्बाई में दस से पचास फुट ऊँचे डाइक (बाँध) बाँधकर प्रकृति को चुनौती दी है और अपने लिए जमीन प्राप्त की है । पहले जहाँ-जहाँ से समुद्र भीतर घुस आता था, वहाँ-वहाँ मनुष्य ने डाइक बाँधकर उसके अबाध वेग को रोक दिया है । कई स्थान तो ऐसे हैं, जिनके चारों ओर पानी-ही-पानी है और मनुष्य ने अपने प्रबल पुरुषार्थ द्वारा उसे चारों तरफ से बाँधा हुआ है । और फिर यह बात भी उल्लेखनीय है कि, ये टापू समुद्र-तल से नीचे हैं, जबकि सामान्यतया टापू की जमीन ऊँची होती है । ऐसी हालत में डच लोगों (हालैंडवासियों) ने कितनी हिम्मत और सूझबूझ का परिचय दिया है, इसका आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है ।

सारा एम्सटरडम शहर इसी तरह बसा है । चारों तरफ सड़कों की भाँति नहरें बिछी पड़ी हैं । मकान जल-प्रवाह को छूते हुए बने हैं, जिसके कारण मोटर-बोट घर के दरवाजे तक पहुँच जाते हैं और उनसे ही यहाँ का बहुत-सा यातायात होता है ।

एक जमाना था, जब समुद्र का पानी हालैंड में दूर तक फैला हुआ था । पानी से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय सांस्कृतिक साहित्य के प्रमुख मुद्रक व प्रकाशक

श्रीवेङ्कटेश्वर-प्रेस बम्बई

दीपावलीके पावनपर्व पर अपने कृपालु ग्राहकों व व्यापारियों का सम्पूर्ण शुभकामनाओं से हार्दिक अभिनन्दन करते हैं ।

इस वर्ष का हमारा नवीन प्रकाशन
श्रीवेंकटेश्वर शताब्दि पंचांग

(विक्रम सम्वत् २००१ से सम्वत् २१०० तक) उक्त पंचांग आगामी जनवरी १९६२ तक छपकर तैयार हो जायगा । छपजाने पर मूल्य ३० रु० डाक व्यय पृथक् होगा । अभी से २५) अग्रिम भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित कराने वालोंको प्रकाशित होजाने पर डाक व्यय सहित २५) में ही दिया जायगा ।

श्रीवेंकटेश्वर-समाचार बम्बई

राष्ट्रभाषा हिन्दीका प्राचीनतम सांस्कृतिक साप्ताहिक पत्र है, जो प्रति शुक्रवारको प्रकाशित होता है । यह श्रीवेंकटेश्वर-प्रेस का ही प्रकाशन है । पिछले ६३ वर्षोंसे अपनी सेवा द्वारा जनता का प्रिय बना हुआ है । वार्षिक शुल्क ५) मात्र, विशेषांक मुफ्त । इस वर्ष का कहानी प्रधान दीपावली विशेषांक "जीवन ज्योति" अंक है ।

विशेष जानकारी के लिये बृहत्सूची पत्र मुफ्त मंगा देखिये

अध्यक्षः-खेमराज श्रीकृष्णदास-बम्बई ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बचाव के लिए यद्यपि महानों तथा अन्य स्थानों पर 'डाइक' बँधे हुए थे; तथापि नदी का मीठा पानी समुद्र के खारे पानी से नहीं बच पाता था। किंतु आज वह समस्या नहीं है—अब यहाँ बड़ी-बड़ी झीलें और नहरें सब मीठे पानी की हैं। नदी और समुद्र के बीच लाक (दरवाजे) लगे हुए हैं, जिन्हें जरूरत पड़ने पर खोला भी जा सकता है और बंद भी किया जा सकता है।

समुद्र के प्रबल वेग को रोककर धीरे-धीरे नयी भूमि निकालने की प्रक्रिया यहाँ सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है। आज भी डच लोग इस दिशा में सतत प्रयत्नशील हैं। लेकिन विधि की विडम्बना देखिये—सन् १९५३ में यहाँ बड़ा भयंकर तूफान आया। घंटे-भर में ही समुद्र ने ऐसा सीमातिक्रमण किया कि, तीन सौ वर्ष पहले का 'रिकार्ड' भी तोड़ डाला। समुद्र के उस विकराल रूप के सामने सारे ड्यून और डाइक असमर्थ सिद्ध हो गये। देखते-देखते समुद्र सैकड़ों मील में फैल गया और अपने में हजारों नर-नारियों तथा करोड़ों की सम्पत्ति को समेट ले गया।

लेकिन मनुष्य के शुभ संकल्प ने भी कब हार मानी है? उसके हाथ फिर निर्माण का स्वप्न सँजोने लगे। आज भी उस जलमग्न स्थान—दक्षिण-पश्चिम के समुद्र-तट—पर पचास-पचास फुट ऊँचे डाइक बाँधे जा रहे हैं। उत्तरी भाग में भी डाइक बाँधकर सैकड़ों वर्ग-गज भूमि प्राप्त करने का प्रयास

आगामी अंकों में

कस्मै देवाय :—कृष्णचंद्र, चंद्रगुप्त, मोहनसिंह सेंगर, मन्मथनाथ गुप्त, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ अश्क आदि।

जिंदगी की राहें और मंजिलें :—सूर्यनारायण व्यास, संतराम, वियोगी हरि, रामेश्वरी नेहरू, इलाचंद्र, सोहराब मोदी, महाशय कृष्ण।

एक वाक्य जीवन-दीप बन गया :—पंजाबी उपन्यासकार नानक सिंह।

कहानियाँ :—जयकांतन्, मन्मथनाथ गुप्त, मोहन राकेश।

अन्य सामग्री :—देवयान (पुस्तक-संक्षेप) : विभूतिभूषण वंद्योपाध्याय; पृथ्वी पर स्वर्ग (विदेशी यात्रा-स्थानों की सूची); शक्ति का पूरा उपयोग कीजिये; दर्द और बगावत की शाइरा : फरोग फर्रुखजाद; वीरों की विरहिणियाँ (पर्वतीय लोकजीवन की गीत भरी झाँकी); हिमखंडों के घेरे में (शिकार प्रसंग)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ही साबुन में हैं गुण

नया

निर्मल

बार सोप

कम खर्च में अच्छी धुलाई

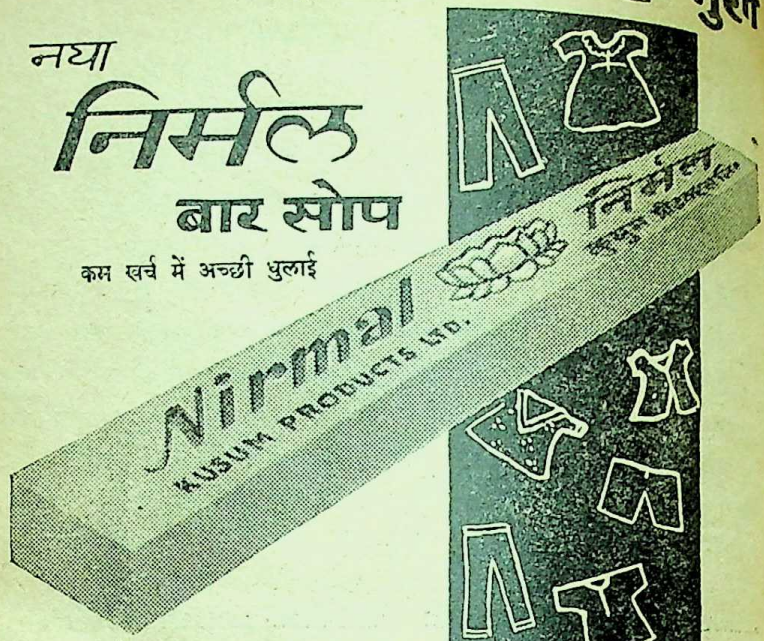

लगातार वैकुअम से ठण्डा करने के नवीनतम कौशल तथा दबाव से बाहर निकालने की प्रणाली के संयोग से निर्मित नये निर्मल बार साबुन को धुलाई की अतिरिक्त शक्ति प्राप्त है। इसकी पुष्ट, क्रियाशील झाग कपड़े की पोर-पोर में घुसकर जमकर बैठे मैल को भी बाहर निकाल फेंकती है। इससे धोने पर न तो जोर से रगड़ने-पटकने की ही जरूरत पड़ती है और न देर तक भिगोये रखने की, अतएव कपड़े की सुन्दरता और मजबूती बनी रहती है। इसकी धुलाई की अतिरिक्त शक्ति के बल पर एक एक बार अधिक से अधिक कपड़े धोता है। संक्षेप में, निर्मल का अर्थ है—**धुलाई में सचमुच बचत!**

कुसुम प्रोडक्ट्स लिमिटेड,
कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा रहा है। वर्तमान प्रगति-क्रम को देखते हुए सहज ही कल्पना की जा सकती है कि, जिस जलराशि पर आज मोटर-बोट दौड़ते नजर आते हैं, वहाँ बीस-पचीस वर्ष बाद खेती हुआ करेगी, पशु चरेंगे और कल-कारखाने लगे होंगे।

इस विशाल निर्माण-कार्य के पीछे डच लोगों के अथक परिश्रम तथा अपराजेय पुरुषार्थ की एक गौरवपूर्ण कहानी छिपी हुई है। यहाँ की विश्व-विख्यात पवन-चक्कियाँ (विंड मिल) भी इस समस्या को हल करने में बड़ी मदद देती रही हैं। आज भी खेत व चरागाहों के चारों ओर की पतली नहरों का पानी उलीचनेवाली ऐसी पवन-चक्कियाँ इधर-उधर देखने को मिल जाती हैं।

खेत और चरागाहों की ही चर्चा चल पड़ी, तो मेरी आँखों के सामने हालैंड के गाँवों के कुछ दृश्य सजीव हो उठे हैं। हम लोगों का एक गाँव में जाना हुआ था। यहाँ के स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा वही, जो सौ वर्ष पहले थी। हाँ, मकान जरूर अच्छे व पक्के बन गये हैं, जो छोटे होते हुए भी बड़े साफ-सुथरे हैं। धंधे की दृष्टि से यहाँ कुछ ग्रामीण मछली पकड़ते हैं, तो कुछ पशु पालते और पनीर बनाते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य का तो कहना ही क्या? इस जल-प्लावित क्षेत्र में खेत व चरागाह हरियाली से लहलहाते रहते हैं। कई स्थानों पर फूलों की खेती होती है। 'सीजन' के दिनों में बड़ा मनोहारी दृश्य होता है यहाँ का!

एक दूसरे गाँव में गये, तो यहाँ के निवासियों का वेश और भी आकर्षक था। छोटी बच्ची से लेकर बड़ी-बूढ़ी तक सभी काला चोगा, उस पर रंग-बिरंगी छींट की चोली और सिर पर जाली के काम की सफेद टोपी पहने मिलीं। वहाँ के पुरुष भी कुछ निराले ढंग की पोशाक पहनते हैं। रंग-बिरंगे वस्त्र और स्वस्थ-सुंदर गौर तनबदन, बस उनकी छवि देखते ही बनती है!

इसी तरह एक गाँव में एक और मजेदार बात देखी। यहाँ का रिवाज है कि, छः वर्ष तक बालकों को भी बालिकाओं के से ही कपड़े पहनाये जाते हैं, उनके बाल भी नहीं काटे जाते। इस प्रकार बालक-बालिकाओं के शृंगार में कोई अंतर नहीं होता। बस, बालकों की टोपी के पीछे एक सफेद पट्टी होती है, उसी से वे पहचाने जाते हैं। सातवें वर्ष में जाकर कहीं उन्हें सबसे पहले पतलून पहनायी जाती है। हमारी टोली की एक अमरीकी महिला ने जब यह दृश्य देखा, तो बोल पड़ी—"अरे, यहाँ तो बिल्कुल उल्टी बात है। हमारे यहाँ की लड़कियाँ तो लड़कों की-सी वेशभूषा पसंद करती हैं!"

अमरीका और हालैंड के गाँवों में यही क्या, और भी काफी फर्क है। एक बार किसी मनचले पर्यटक ने एक नवोढ़ा का चित्र लेने की कोशिश की, तो उसके पति ने इस 'हरकत' के लिए उस पर्यटक को उठाकर नहर में फेंक दिया। तो आज भी यहाँ ऐसी लाज-शर्म है! हालैंड के ग्रामीण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

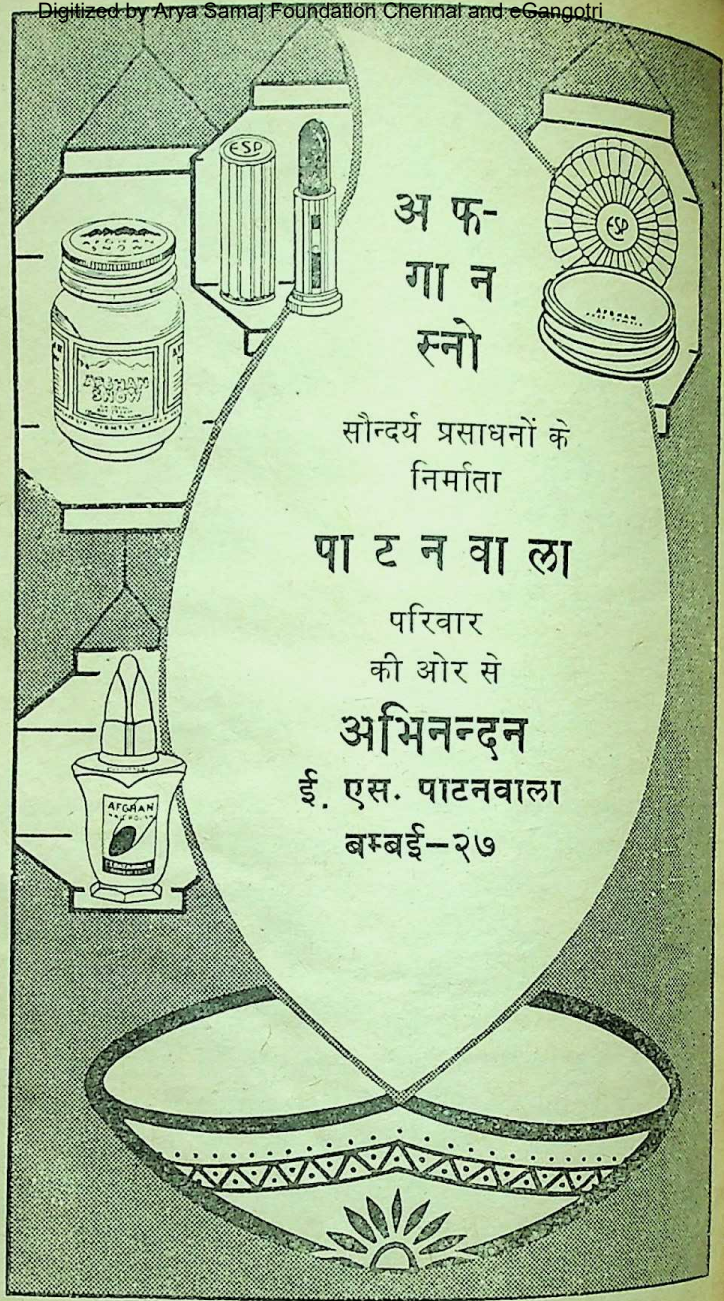

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर-नारियों के उन्मुक्त सौंदर्य-प्रदर्शन में भी सदाचार-शालिनता का जो पुट सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है, वह आज के शहरी जीवन के लिए सचमुच जानकारी की बात है।

यात्रा के इस दौरान में हमने एक पनीर बनानेवाले किसान का खेत व घर भी देखा। हालाँकि पनीर बनाने के लिए अब फैक्टरियाँ लग गयी हैं; मगर आज भी यहाँ सदियों पुराने तौर-तरीकों से काफी मात्रा में पनीर बनाया जाता है। हमारे 'गाइड' ने बताया कि, ताजे दूध से किसान के झोपड़े में जो पनीर तैयार किया जाता है, उसके निर्यात करने की इजाजत नहीं है—उसे यहाँ के निवासियों के लिए ही सुरक्षित रखा जाता है। हाँ, 'गिफ्ट पारसल' के रूप में जरूर उसे बाहर भेजा जा सकता है।

हालैंड की फैक्टरियों में बना मक्खन-पनीर दूर-दूर तक जाकर बिकता है। अभी पिछले दिनों ही अखबार में पढ़ा था कि, यहाँ के टमाटरों से इंग्लैंड के टमाटर-उत्पादक घबरा रहे हैं। किसी हद तक यह बात ठीक भी है—डच लोग हर प्रकार के कृषि-उत्पादन में बड़े दक्ष हैं। पानी उलीचकर खेत व चरागाह प्राप्त करने के लिए तो ये लोग सदैव तत्पर रहते हैं। देश में खूब औद्योगिक विकास हो रहा है। चारों ओर बड़े-बड़े नगर व कल-कारखाने बन रहे हैं और उनका बड़ी तेजी से विकास हो रहा है।

लेकिन हालैंड के सच्चे हृदय का स्पंदन तो वास्तव में उन गाँवों और वहाँ बने दूध-पनीर में ही मिलता है। *

बूढ़ा और उसका पोता

एक बूढ़ा आदमी मुश्किल से चल सकता था। उसके पैर लड़खड़ाते थे, कानों से कम सुनाई देता था और दाँत भी गिर चुके थे। जब वह टेबल पर खाने बैठता, तब चमचा हिल जाता था और सूप बाहर गिर पड़ता था। कभी-कभी प्लेट भी टूट जाती थी। इससे उसका लड़का और उसकी बहू बड़े गुस्से होते थे। इसलिए उन्होंने बूढ़े को एक कोने में बिठाना शुरू किया और उसको एक मिट्टी का बर्तन ला दिया। वे उसे खाना भी पूरा नहीं देते थे। डबडबायी आँखों से बूढ़ा सब कुछ चुपचाप सह लेता था।

एक दफा उसके काँपते हाथ प्लेट को सम्भाल न सके और वह जमीन पर गिरकर टूट गयी। जवान बहू बड़बड़ायी। बूढ़ा आह भरकर रह गया। अब वे उसके लिए एक लकड़ी की प्लेट ले आये। इसी में उसको खाना पड़ता था।

एक दिन इसी तरह वे बैठे खा रहे थे। उनका चार साल का लड़का कहीं से लकड़ी का टुकड़ा उठा लाया। माँ-बाप ने पूछा—"बेटा, क्या कर रहे हो?" बेटे ने जवाब दिया—"मैं एक प्याला बना रहा हूँ। जब तुम बूढ़े हो जाओगे, तब तुम दोनों को इसमें खाना खिलाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसोईघर में वनसदा का मतलब घर में स्वास्थ्य

अपने घर के लोगोंका स्वास्थ्य घर में बनाये जानेवाले खानेपर अवलंबित रहता है यह हरएक अकलमंद माता जानती है। वह यह भी जानती है कि पकाने के काम में सबसे अच्छा है वनसदा – अ और ड जीवनसत्त्वों से युक्त, लोकप्रिय वनसदा।

वनसदा

अ और ड

विटामीनयुक्त वनस्पति

बेरार ऑइल इंडस्ट्रीज, अकोला

ASP/V.9

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोयम्बतूर का विलक्षण व्यवसायी

र० शौरिराजन्

उस मामूली होटल के मालिक के सामने एक दुबला-पतला, पर फुर्तीला लड़का खड़ा था। ऐसे गँवार लड़कों से रोज ही साबका पड़ता रहता था, अतः होटल मालिक ने उपेक्षा-भरे स्वर में पूछा—"क्यों रे, खड़ा क्यों है?"

लड़के ने अदब के साथ कहा—"जी, मैं कुछ काम चाहता हूँ।"

"अरे, तेरे-जैसा गँवार यहाँ क्या काम करेगा?" टरकाने के इरादेसे मालिकने पूछा।

"यही, टेबल की सफाई, दुकान से सामान ले आना, जो भी काम देंगे, करूँगा। आप जो कुछ वेतन देंगे, मैं खुशी से ले लूँगा।" वह लड़का इत्मीनान के साथ बोला। मालिक ने तीन रुपये वेतन और भोजन पर उसे नौकरी पर रख लिया।

लड़का जब भी काम से छुट्टी पाता, सीधा रेलवे स्टेशन चला जाता और रेल के इंजन को बड़े विस्मय के साथ देखता रहता। उन लोहे के पुर्जों को सजीव की तरह चलते-फिरते देख, वह आत्मविभोर हो जाता। उसके मन में जाने कौन-सी कल्पनाएँ उभर आती थीं।

घटना सन् १९१७ की थी और घटना-स्थल था तमिलनाड का प्रमुख औद्योगिक केंद्र कोयम्बत्तूर। उस गँवार लड़के का नाम था गोपाल दुरैस्वामी नायुडु।

तीन साल की कड़ी मेहनत के फलस्वरूप दुरैस्वामी के हाथ में चार सौ रुपये जमा हो चले थे। होटल मालिक को कृतज्ञतापूर्वक नमस्कार कर वह वहाँ से चल पड़ा और सीधा एक अंग्रेजी अफसर के घर पहुँचा। अपनी सारी जमा पूँजी अंग्रेज के समक्ष रख दी और बड़ी विनय के साथ कहा—"साहब, आप यह रकम लेकर अपनी मोटर साइकिल मुझे दे दीजिये।"

अंग्रेज ने, जो उस समय कोयम्बत्तूर में सर्वे और सेंटिलमेंट का अफसर था, लड़के को कुछ क्षण तक एकटक देखा, गंदे कपड़े, दुबला बदन, गँवारपन, पर तेजस्वी नेत्र। "कहीं पागल तो नहीं है यह," अँग्रेज सोचने लगा। इतने में लड़के ने याद दिलाया—"साहब आप चार साल पहले मेरे गाँव कलंगन इसी मोटर-साइकिल पर आये थे। तब उसकी कुछ मरम्मत करनी पड़ी थी; और उसके लिए औजार और रद्दी कपड़े मैंने ही लाकर दिये थे।"

अँग्रेज को सारी घटना याद आ गयी। उसने स्नेह से पूछा—"मोटर-साइकिल लेकर तुम क्या करोगे?"

"आपकी तरह शान से सवारी करूँगा। फिर उसके कल-पुरजे अलग-अलग निकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार्दिक प्रशंसा का लक्ष्य

किसी भी समय.....,

किसी भी जगह.....

किसी भी अवसर पर.....

ख टा ऊ

वायल में

आप सर्वोत्तम लगतीं हैं।

दि खटाऊ मकनजी स्पिनिंग एण्ड विविंग कम्पनी लिमिटेड भायखला, बम्बई

ऑफिस : लक्ष्मी बिल्डिंग, बेलार्ड इस्टेट, बम्बई–१

दुकानें:–हाशिम बिल्डिंग, वीर नरिमन रोड, बम्बई–१, और गणेशवाड़ी, शेख मेमन स्ट्रीट, बम्बई–२, मिल अहाता : हेन्स रोड, भायखला, बम्बई–२८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कर पूर्ववत् जोड़ूंगा।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुमने मोटर इंजीनियरिंग सीखी है ?"

"जी नहीं" दुरैस्वामी ने संकोच के साथ कहा। उसे याद आ गया कि, किस प्रकार उसे उद्दंड व्यवहार के कारण स्कूल से निकाल दिया गया था। अंग्रेज भौचक रह गया। उसे लगा अवश्य यह लड़का आगे चलकर बहुत बड़ा यंत्रज्ञ बनेगा। उसने तुरंत मोटर-साइकिल लड़के को सौंप दी और उसके चलाने की रीति भी संक्षेप में सिखा दी।

अपना मनचाहा फौलादी घोड़ा पाकर दुरैस्वामी शहर के चक्कर काटने में लगा रहा। फिर अपने संकल्प के अनुसार उसने मोटर साइकिल का एक-एक पुर्जा अलग निकालकर रख दिया और दुबारा ठीक वैसे ही जोड़ भी दिया। जन्मजात प्रतिभा और स्वानुभव ने यंत्र-विद्या का पहला पाठ उस दिन दुरैस्वामी को पढ़ाया। कुछ ही महीनों में दुरैस्वामी दक्ष मोटर-मेकैनिक बन गया।

इस काम से कुछ सौ रुपये जमा होते ही दुरैस्वामी का ध्यान कपास की सट्टेबाजी ओर मुड़ा। अपनी महत्वाकांक्षा को साकार करने में सट्टा उसे कारूं के खजाने की चाबी-सा मालूम पड़ा। पर जब किस्मत ने साथ नहीं दिया और गाँठ खाली हो गयी, तो सीधे एक कपास के कारखाने में जाकर माहवार बारह रुपये पर मजदूर बन गया। परंतु नौकरी से संतोष मानकर बैठ जाने-वाला मन उसने नहीं पाया था। कुछ ही महीनों में उसने अपनी नेकी, योग्यता तथा परिचितों की सहायता से, तिरुप्पूर में कपास ओटने का निजी कारखाना खोल दिया। तब प्रथम विश्व-युद्ध समाप्तप्राय था। एक ही साल के भीतर सिर्फ सत्रह हजार रुपये की लागत पर शुरू किया वह कारखाना डेढ़ लाख रुपये की सम्पत्ति बन गया। सफलता में भाग्य का हाथ उतना नहीं था, जितना दुरैस्वामी की प्रतिभा, परिश्रम तथा प्रबंधकौशल का था। तब उसकी आयु सिर्फ बाईस की थी। उसी साल कांग्रेस के अधिवेशन में भाग लेने जानेवाले कुछ मित्रों के साथ दुरैस्वामी ने उत्तर भारत की यात्रा की। उसने कई कारखानों का निरीक्षण किया, नयी प्रेरणा पायी। कई लाख रुपये की लागत का एक मोटर कार-खाना खोलने की इच्छा उसके मन में प्रबल हो उठी। इतनी पूँजी कहाँ से आये ? एक बार फिर दुरैस्वामी अपना भाग्य आज-माने के लिए निकल पड़ा, बम्बई को। सट्टेबाजी का कुबेर-कोष वहीं तो खुला रहा है ! कारखाना बेचने से मिली डेढ़ लाख की रकम गाँठ में थी। बम्बई में पूरे डेढ़ साल तक भाग्य की भूल-भुलैयों में भटकने के बाद उसे यह बोधोदय हुआ कि, वही सम्पत्ति श्रेयस्कर है, जो मेहनत से कमायी जाये, न कि दाँव-पेंच से।

फिर दुरैस्वामी खाली हाथ कोयम्बत्तूर लौट आया और एक प्रतिष्ठित उद्योगपति के पास जाकर उसकी बस ट्रांसपोर्ट सर्विस में मोटर मेकैनिक का काम देने की प्रार्थना की। वह उदारचेता उद्योगपति होनहार युवक दुरैस्वामी की प्रतिभा तथा दक्षता से परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आर्यन
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने ग्राहक, मित्र एवं हितैषियों के लिये सुखद दिवाली एवं समृद्धशाली नववर्ष की शुभ कामना करता है।

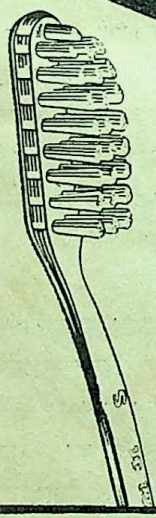

आर्यन

भारत का सर्वोत्तम **टूथ ब्रश** है

बेहतर ढंग से साफ करता है – अधिक दिनों तक रहता है

आर्यन ब्रश कंपनी लिमिटेड

लेन्टिन चेंबर्स, दलाल स्ट्रीट, बम्बई – १.

भारत के सर्वोत्तम टायलेट

एवं औद्योगिक ब्रशों के उत्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित था। अतः मेकैनिक की नौकरी के बदले दुरैस्वामी को घाटा सहन हुआ; पर उसका चार हजार रुपये कर्ज देकर दुरैस्वामी को संकल्प नहीं डिगा। लेकिन अंत में यह देख-कोई कारोबार शुरू करने की सलाह दी। दुरैस्वामी ने एक बस भाड़े में ले ली और स्वयं उसका ड्राइवर बनकर चालीस मील के मार्ग में अपनी बस सर्विस शुरू कर दी। यह थी १९२० की बात। एक साल के अंदर चार हजार रुपये में मोटर दुरुस्त करने का कारखाना भी उसने खोल दिया। अब वह कई बसों का भी मालिक था। मुसाफिरों की तकलीफों को दूर करने में उतना ध्यान शायद ही किसी बस सर्विस का मालिक देता था।

कोयम्बत्तूर में उन दिनों लगभग एक दर्जन बस सर्विस कम्पनियाँ थीं। जब उन्होंने दुरैस्वामी की उन्नति देखी, तो उसका व्यापार ठप करने के लिए उन्हीं मार्गों पर कम किराये पर बसें चलाना शुरू कर दिया।

चतुःसूत्री

१. कठिन श्रम : औसत भारतीय आराम-तलब है; सामान्यतया वह पर्याप्त श्रम नहीं करता। उसी अनुपात से देश की कार्य-शक्ति और आर्थिक क्षमता भी कम है।

२. नियोजित कार्य : काम के निश्चित घंटे बांधकर प्रतिदिन नियमित रूप से कार्य किया जाये, तो प्रयत्न अधिक फलप्रद होते हैं। अनुशासन-पूर्वक किया गया कठिन श्रम मनुष्य को कार्यक्षम और दीर्घजीवी बनाता है।

३. कार्यदक्षता : इसके लिए बड़े ऊँचे दर्जे की जागरूकता, महत्वाकांक्षा, नियमितता, अनुशासन, निश्चितता और अपना काम अच्छे-से-अच्छा करने की तमन्ना आवश्यक है। काम का स्तर जितना ऊँचा हो, प्रतिफल भी उतना ही उत्तम मिलता है।

४. सेवा और सौजन्य : पश्चिम में साथ मिल-जुलकर काम करने की क्षमता की बड़ी कद्र है। उस दर्जे की मैत्री हमारे यहाँ नहीं पायी जाती। अपने सहकर्मियों और पड़ोसियों के प्रति हर नागरिक का व्यवहार सौजन्य और मेल-जोल का होना चाहिये। —डा० विश्वेश्वरय्या

कर कि, अनुचित-स्पर्धा सबके लिए हानिकारक है, १९३३ में सभी कम्पनियों को इकट्ठा कर युनाइटेड मोटर सर्विस (यू० एम० एस०) नाम से सहकारी संस्था के रूप में संगठित किया। हिस्सेदारों ने उन्हीं को संस्था का डाइरेक्टर बनाया।

सहकारी संघ बनाने की बात नायुडु के मन में अपनी पहली यूरोप-यात्रा के अनुभवों से आयी। उन्होंने सन् १९३२ में कोई साल-भर का जो यूरोप भ्रमण किया, उसकी भी अपनी कहानी है। सन् १९२९ में कोई जर्मन दम्पत्ति भारत का भ्रमण करते हुए कोयम्बत्तूर आये। वहाँ जर्मन महिला को बुखार हो गया। रात का समय था। ट्रैवलर्स बँगलों और वेटिंग रूम में जगह न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

111289
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

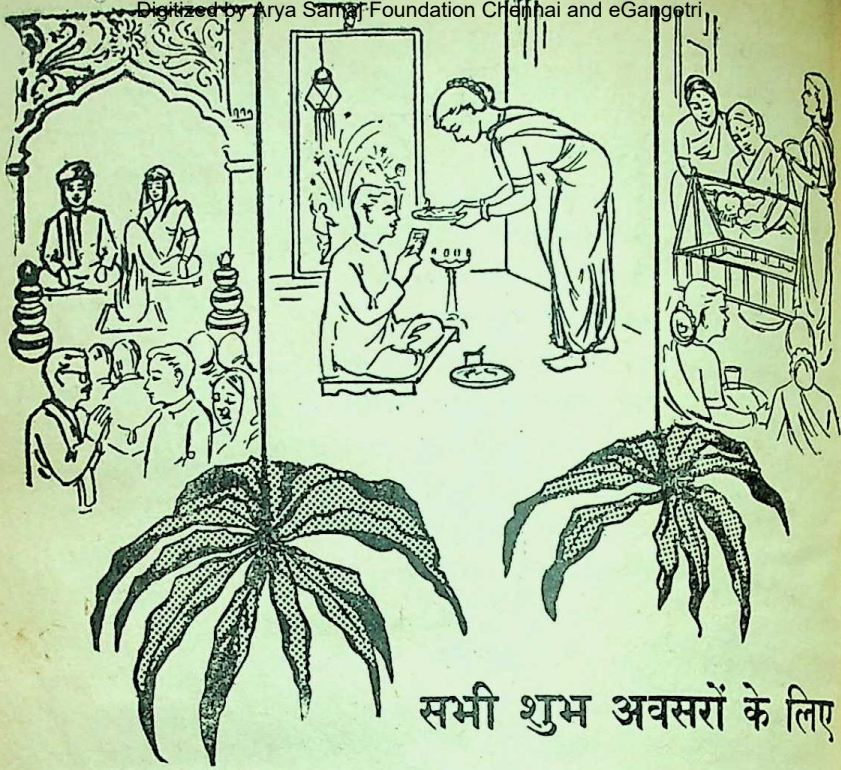

सभी शुभ अवसरों के लिए

दिवाली, विवाह, वर्षगांठ या इस प्रकार के अन्य कोई भी शुभ अवसर पर जब आप भेंट देना चाहते हैं तो डाकघर बचत भेंट कूपन ही दीजिए। यह ऐसी भेंट है जो बढती है तथा दीर्घकाल तक याद में रखी जा सकती है।

आपको डाकघरों से ५ रु., १० रु. ५० रु., १०० रु., एवं १,००० रु. के कूपन प्राप्त हो सकेंगे एवं १२ वर्षीय राष्ट्रीय योजना बचत प्रमाणपत्रों में उन्हें परिवर्तित करना चाहिए।

भेंट के रूप में इनामी बांड भी दिये जा सकते हैं।

SMALL SAVINGS SS SERVE THE STATE & YOUR FAMILY

अल्प बचत
सुअवसरों को और भी सुखदायक बनाती है

अल्प बचत संचालनालय, महाराष्ट्र सरकार, सचिवालय, बम्बई ३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकर वे ढूंढते-ढूंढते नायुडु के बस स्टैंड के विश्रामगृह पर नायुडु से मिलने चले, वे तुरंत वहाँ आये और महिला के पूर्ण स्वस्थ होने तक दोनों को सामान्य अतिथि के रूप में रखा। वे जर्मन सज्जन हर कुंस रबर के बड़े व्यापारी थे, उन्होंने उस बस स्टैंड के आरामघर की सफाई और आरामदेही से ही नायुडु की प्रबंध-पटुता और यंत्र-कला में उनकी प्रकृतिदत्त निपुणता को पहचान लिया। उन्होंने दुरैस्वामी नायुडु को यूरोप यात्रा के लिए प्रेरित किया।

जर्मनी में कुछ समय रहने के बाद नायुडु अमरीका गये। वहाँ वे जहाँ भी गये, वहाँ की बस सर्विस संस्थाओं तथा उनके कारखानों का निरीक्षण किया। उस समय उनका अंग्रेजी पर अच्छा अधिकार नहीं था, फिर भी कई उद्योगपतियों व पत्रकारों से मिले। अमरीका से जापान गये, वहाँ से मंचूरिया, कोरिया, मंगोलिया, चीन, हिन्द-चीन, मलाया और लंका होते हुए भारत वापस आये।

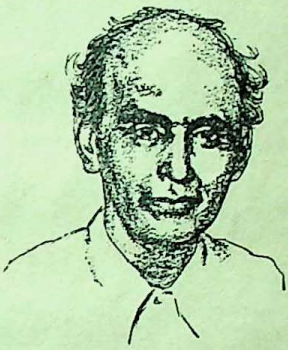

गोपाल दुरैस्वामी नायुडु

वे अपने साथ लाखों रुपये की नई मशीनें लाये। उन यंत्रों की रचना का अध्ययन कर मशीन-निर्माण में मौलिक प्रयोग करने की उनकी इच्छा थी। यह अनुभव कर कि, विदेश-यात्रा पुस्तकीय शिक्षा से कहीं अधिक लाभप्रद है, नायुडु ने सन् १९३६ में दूसरी बार विदेश-यात्रा की। इस बार उनका उद्देश्य था मोटर-उद्योग तथा यांत्रिक-विज्ञान का अनुभव प्राप्त करना। सन् १९३९ में जब अमरीका में अंतर्राष्ट्रीय उद्योग प्रदर्शिनी हुई, नायुडु ने दस दिन तक उसका औद्योगिक निरीक्षण किया।

अब उनकी इच्छा यंत्र-विज्ञान की प्रशिक्षा पाने की हुई और उन्होंने सेटलुई के प्रसिद्ध कार्टर कारबर्टर टेक्निकल स्कूल में विद्यार्थी के रूप में नाम लिखाया, तब उनकी आयु तैंतालीस की थी। अपने इस विद्यार्थी जीवन के बारे में उन्होंने लिखा है—"स्कूल में मैं ही सबसे बूढ़ा छात्र था। वैसे वहाँ विश्वविद्यालय से ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त स्नातक ही छात्र के रूप में लिये जाते थे। पर मैं ऐसा विद्यार्थी था, जिसने कालेज तो क्या प्राथमिक शाला की परीक्षा भी नहीं पास की थी। मेरा खयाल है, मैं ही उस स्कूल का पहला एशियाई विद्यार्थी था। परंतु सब विद्यार्थी तथा शिक्षक मुझसे प्रेम और आदर का बर्ताव करते थे।"

इस बार भी भारत लौटते हुए वे अपने साथ लाखों रुपये की मशीनें लाये। नायुडु की मौलिक प्रतिभा का परिचय सन् १९३२ में ही मिल चुका था। वे यूरोप में थे, हजामत की मंहगाई और असुविधा उन्हें बहुत अखरती थी। इलेक्ट्रिक सेफ्टी रेजर बनाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विचार उनके मन में उठा। जर्मनी के हैलब्रोन शहर के एक कारखाने में उन्होंने एक कमरा भाड़े पर लेकर सेफ्टी रेजर का अनुसंधान शुरू कर दिया। कुछ ही दिनों में सफल भी हो गये।

नायुडु के सेफ्टी रेजर ने ब्रिटेन के रेजर-व्यवसाय के क्षेत्र में खलबली मचा दी। नायुडु ने रेजर को पेटेंट बना लिया और उसका नाम रखा रासंट। एक रासंट सेट नौ रुपये का पड़ता था। टिकाऊ वह इतना होता था कि,एक ब्लेड से दो सौ बार आराम से हजामत हो जाती थी। भारत आते ही नायुडु ने कोयम्बत्तूर में रेजर-कारखाना खोल दिया। रासंट रेजरों का धड़ाधड़ निर्माण होने लगा। परंतु अंग्रेज सरकार ने इस स्वदेशी उद्योग को संरक्षण नहीं दिया। कालांतर में उपयुक्त लोहा न मिलने से नायुडु को कारखाना बंद करना पड़ा। आजकल कोयम्बत्तूर में आपकी सलाह पर यू० एम० एस० ब्लेड कारखाना चल रहा है और वहाँ 'सन् डेली शेव' नामक ब्लेड तैयार किये जाते हैं।

दूसरे विश्वयुद्ध के समय विदेशी मशीनों के आयात में कठिनाई हुई, तो देश की माँग पूरी करने के लिए नायुडु ने कोयम्बत्तूर में बिजली की मोटरों के निर्माण का कारखाना खोला। यहाँ की बनी मोटरें सारे भारत में उपयोग में आती हैं और अपनी उत्तमता और टिकाऊपन के लिए प्रसिद्ध हैं।

सन् १९४१ में नायुडु ने रेडियो कारखाना खोला। उनका वादा था कि, अंततः वे अस्सी रुपये की कीमत पर बढ़िया रेडियो दे सकेंगे। आज यू० एम० एस० रेडियो की जो माँग है, उसे देखते हुए इसमें संदेह नहीं कि, कुछ समय में वे इस लक्ष्य को पूर्ण कर लेंगे। सन् १९३६ में नायुडु ने नयी किस्म के ३ वाइबेटर टेस्टिंग मशीनों का आविष्कार किया। बाद में कम पानी में अधिकाधिक दूर चलानेवाले नये ढंग के 'आटो रेडियेटर' का डिजाइन बनाया।

नायुडु एक गरीब के इकलौते बेटे थे, आज अपनी मेहनत और प्रतिभा के बल पर लाखों रुपये के स्वामी हैं। लेकिन शुरू से ही धन के मामले में वे निःस्पृह हैं। सम्पत्ति के साथ-साथ उनकी उदारता बढ़ती गयी है। अपनी सारी खोजों को उन्होंने देश की सम्पत्ति बना दिया। जो चाहे उन चीजों का निर्माण करे, रायल्टी का कोई झगड़ा नहीं।

टेक्निकल शिक्षा के प्रचारार्थ नायुडु ने कोयम्बत्तूर में 'आर्थर होप पालिटेकनिक' कालेज की स्थापना कई लाख रुपये से की और उसे मद्रास सरकार को सौंप दिया।

अब भी वे प्रति वर्ष राज्य के इंजीनियरिंग कालेजों के विद्यार्थियों को छुट्टी के अवसर पर अपने यहाँ बुलाकर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया करते हैं। श्री जी० डी० नायुडु का निजी भवन 'गोपाल बाग' आज भी उद्योग-विज्ञान के उपासकों तथा साधकों के लिए एक तीर्थ स्थल है। वहाँ कई ऐसी अलभ्य अनोखी मशीनें हैं, जिन्हें देखकर यही अनुभव होगा कि, हम किसी विदेशी विज्ञान-भवन में आ गये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाबुलीन

बालकोंकी

तन्दुरुस्ती और ताकत बढाता है.

हरेक केमिस्ट और स्टोरसे मिलता है.

GL JARAT

बी. ए. ऐंड ब्रदर्स : बम्बई २

कलकत्ता, पटना और गौहाटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे परिवार के देखने योग्य चित्र

सदाशिव चित्र

मीनाकुमारी

बलराज साहनी

भाभी की चूड़ियाँ

अज़ीज़

सीमा

दुर्गा खोटे

ओमप्रकाश

और

सैलेश

निर्माता-दिग्दर्शक – **सदाशिव जे. राव कवि**

संगीत – **सुधीर**

कथा : **य. गो जोशी** * गीत : **नरेन्द्र शर्मा** * छाया : **अरविंद लाड**

भारत में पहली बार, सर्व प्रथम ७० मिलीमीटर पर्दे पर **शीला टाकीज**

नई दिल्ली में । **राक्सी** और **कोहीनूर** बम्बई में भी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri